110471

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

7A-28-S-4

RT 885

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

110471

वर्ष ६] वैशाख १९८१— मई १९२५ [खण्ड ६, संख्या १

Regd. No. L. 1240.

ज्योति

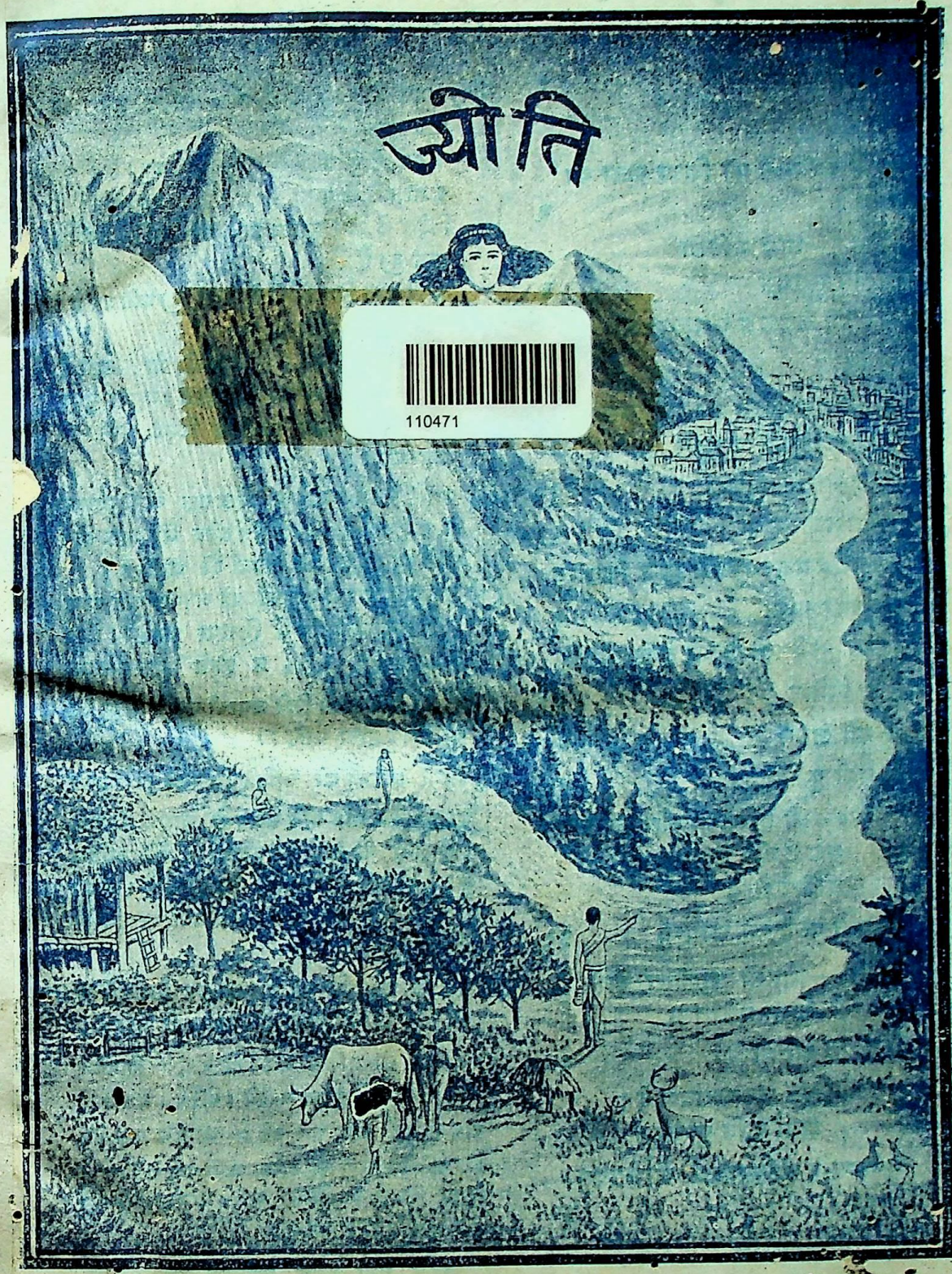

110471

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए०

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
१ नूतन वर्ष ले० श्रीहरि	१
२ वेद में कन्याओं की शिल्प कला का स्थान। लेखिका—आर्य महिला	२
३ नव वर्ष स्वागत ले०—श्री वैद्यराज संतलाल जी	६
४ स्त्री शिक्षा ले०—प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धान्तालङ्कार सम्पादक अलङ्कार	७
५ आनन्द—ले०—मुकुन्द	१२
६ श्री भारतचन्द्रराय ले०—श्री० वजरंग वली गुप्त विशारद	१३
७ नब्बो और राधा लेखिका—श्रीमती लक्ष्मी देवी जौहरी	१८
८ वनिता विनोद	२६
१ स्त्री जगत	२६
२ पुत्री पुकार ले०—श्री हरिशरण श्री० वास्तव मराल वी० ए० एल० वी० वकील मेरठ	३०
३ पति पत्नी का सम्बन्ध ले०—श्रीमती सुशीला देवी गुप्ता पटियाला	३१
४ माता की महिमा ले०—पं० जगन्नारायण देव शर्मा कवि पुष्कर।	३४
५ सम्वाद दो कन्याओं का आपस में ले०—मराल	३५
६ निर्दयी बाप का लोभ ले०—श्री० विश्वम्भर सहायप्रेमी	३६

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

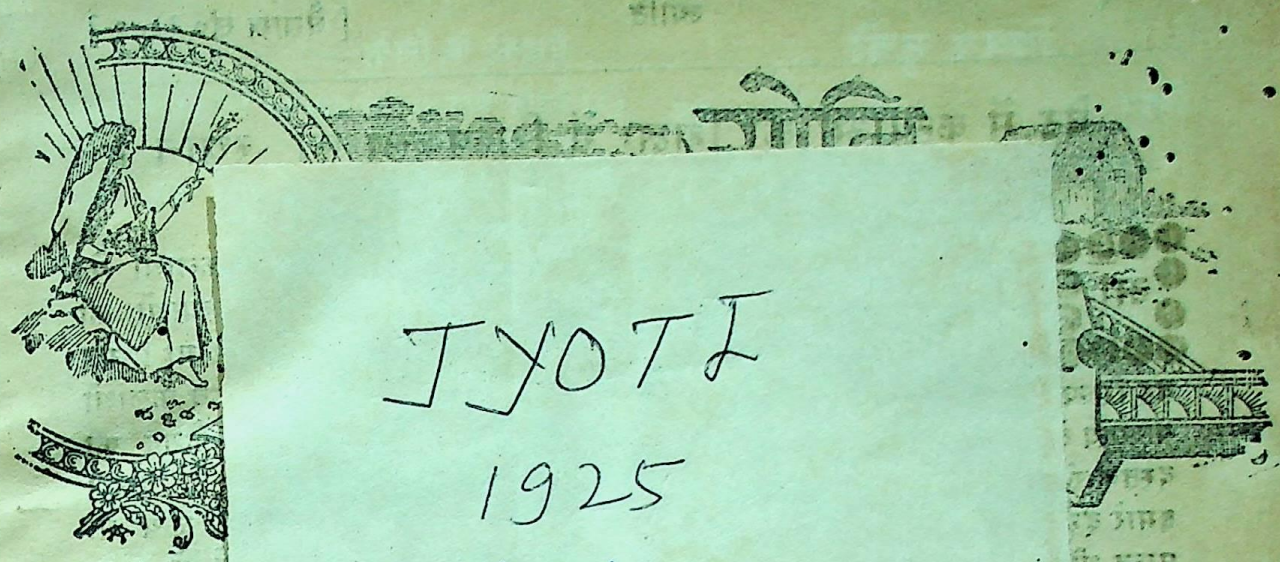

JYOTI
1925
1926
G. K. V.
Lib
HARDWAR

वर्ष ६ संख्या १

किंशुक कुसुमाली की लाली, विपिनाली में छाई है।
श्री वसन्त लक्ष्मी भी मानों, आली सी बन आई है॥
चारु चाह की चपल वीचियां, हृदय—सिन्धु लहराती हैं।
नव्य वर्ष—उत्कर्ष देख कर, हर्ष प्रकर्ष जताती हैं॥

जीवन ज्योति जगादे तू भी, 'ज्योति' आज ललनाओं की।
आशु भगा दे मोह निशा को, प्रीति रीति छलनाओं की॥
हों कुरीतियां दूर देश से, बनें देवियां यहां सभी।
आर्य ध्वजा फहरा कर होवें, सौख्य सेवियां यहां सभी॥

विद्या विनय शील सम्पन्ना, शुचिता का रखवारी हों।
प्रतिभा-प्रभा-प्रेम-प्रतिमा बन, निज कुल की उजियारी हों॥
मूर्तिमती धृति दया क्षमा हों, सौख्य शान्ति सरसाती हों।
अपने परम पुण्य जीवन से, प्रेमसुधा बरसाती हों॥

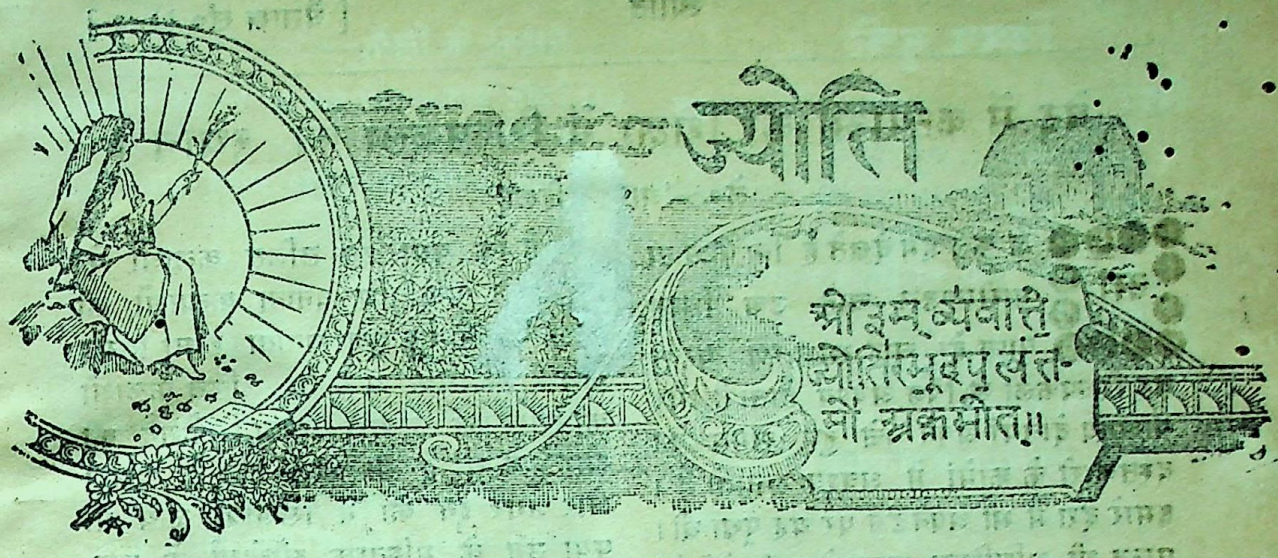

वर्ष ६ | वैशाख १९८२—मई १९२५ ई० | संख्या १

❀ नूतन वर्ष ❀

लेखक—"श्रीहरि"

अभिनव विभव विलास वास, बस वसुधा में दिखलाता है।
सकल चराचर एक रंग में, रंगा सौख्य सरसाता है॥
प्रकृति सुन्दरी प्रकृत वेष में, प्राकृत जन मन हरती है।
मानों नूतन वर्ष प्रेम में, आत्म समर्पण करती है॥

किंशुक कुसुमाली की लाली, विपिनाली में छाई है।
श्री वसन्त लक्ष्मी भी मानों, आली सी बन आई है॥
चारु चाह की चपल वीचियां, हृदय—सिन्धु लहराती हैं।
नव्य वर्ष—उत्कर्ष देख कर, हर्ष प्रकर्ष जताती हैं॥

जीवन ज्योति जगादे तू भी, 'ज्योति' आज ललनाओं की।
आशु भगा दे मोह निशा को, प्रीति रीति छलनाओं की॥
हों कुरीतियां दूर देश से, बनें देवियां यहां सभी।
आर्य ध्वजा फहरा कर होवें, सौख्य सेवियां यहां सभी॥

विद्या विनय शील सम्पन्ना, शुचिता का रखवारी हों।
प्रतिभा—प्रभा-प्रेम प्रतिमा बन, निज कुल की उजियारी हों॥
मूर्तिमती धृति दया-क्षमा हों, सौख्य शान्ति सरसाती हों।
अपने परम पुण्य जीवन से, प्रेमसुधा बरसाती हों॥

वेद में कन्याओं की शिक्षा में शिल्पकला का स्थान।

ले०—'आर्य्य महिला'

आज कल हम देखते हैं कि पाश्चात्य नारीमण्डल चाहे उच्च शिक्षा प्राप्त हो, चाहें साधारण, परन्तु वह शिल्पकला से विज्ञ अवश्य होता है और पाश्चात्य देवियां अपने बचे हुए समय को दस्तकारी के कामों में अवश्य लगाती हैं। हमारे देश में भी अपने ढंग पर यह पृथा थी। परन्तु थी अशिक्षिता कहलानेवाली देवियों में। वह घर के धन्धों से छुट्टी पाते ही क़सीदा, सीना परोना, ज़री का काम तथा अन्यान्य सजावट के मनोरञ्जक, परन्तु काम में आने वाले कार्य्य करती रहती थीं। पञ्जाब में चर्खे का इतना प्रचार था और अब भी बहुत स्थानों में है कि सारा बचा हुआ समय देवियां इकट्ठा बैठ कर इसी काम में लगा देतीं थीं। अब भी पाश्चात्य आदर्श के अनुसार बहुत से स्कूलों में लड़कियां अच्छी दस्तकारी के काम सीखती हैं परन्तु शोक है कि सादगी के नितान्त प्रेमी फैशन से तंग आकर शिल्पकला का नाश ही करना चाहते हैं। उनका का कथन है कि (fine arts) ललित कलाओं में समय लगाना व्यर्थ समय खोना है। लड़कियों को घर के धन्धों और कमीज, पैजामे, कोट आदि प्रति दिन के पहिराव के कपड़े सीने आने चाहिये। लेस ज़री का काम, फुलकारी, क़सीदा, तारकशी का काम इत्यादि व्यर्थ की चीज़ें नहीं सिखाना चाहिये। इन में रुपया भी लगता है और समय भी नष्ट होता है और लड़कियां फैशनेबुल बनती जाती हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पक्षपाती भोले भाले कई सज्जन कन्या गुरुकुल की पाठविधि से इन बातों को उड़ा देने के पक्ष में हैं। अब हमारे सामने प्रश्न है कि क्या इन ललित कलाओं को उड़ा कर पाठविधि बनाना कन्याओं की शिक्षा को सर्वाङ्ग पूर्ण बनाना होगा? यह सच है कि एक ओर तो ललित कलाओं को सीख कर हमारी कन्यायें फैशन की ओर झुक गई हैं या झुक रही हैं, दूसरी ओर अगर इन को न सिखाया जाय तो क्या उन के मस्तिष्क सौन्दर्य्य के उच्च, पवित्र, शिखर पर कभी चढ़ पावेंगे। ललित कलाओं की शिक्षा केवल सजावट मात्र नहीं है वरन उस से आंखें और हाथ ट्रेन होते हैं। जिन देवियों को दस्तकारी, चित्र लेखन इत्यादि कलायें आती हैं उन के हर एक काम में सफ़ाई और सौन्दर्य्य प्रियता रहती है। जो दूसरी स्त्रियों में भद्देपन का रूप लेती है। सफ़ाई और सौंदर्य-प्रियता बुरी चीज़ नहीं। परम पिता परमात्मा की सृष्टि में सर्वत्र ही सफाई और सौंदर्य है। जिन्होंने पहाड़ों पर पुष्प शोभा को, ख़ास करके उन स्थलों की जो कृत्रिम नहीं हैं, देखा है वह भली भांति समझ सकते हैं कि सृष्टि में कितना सौंदर्य है और सौंदर्य प्रियता की जीवन में कितनी आवश्यकता है! फूलों को रंग बिरंगे रूप देकर और बहुत प्रकार की सुगन्ध देकर परमात्मा ने यह दिखाया है कि सौंदर्य भी एक महती शक्ति है जिस से मनुष्य को मुंह नहीं मोड़ना चाहिये। इतना ही नहीं वरन वेदमंत्रों में स्पष्ट रूप से सुन्दर २ वस्त्रों का वर्णन जगह २ आता है और मंत्रों में स्पष्ट रूप से विधान है कि देवियाँ उन्हें बनावें। अब! अगर देवियों की शिक्षा से इन्हें निकाल ही दिया जावे तो देवियां इन्हें कैसे बना सकती हैं?

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्री पण्डित श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जी ने संवत् १९७८ में एक बड़ी उत्तम पुस्तिका 'वेद में चर्खा' नाम से निकाली थी उसके आठवें पृष्ठ पर एक शीर्षक है' अच्छे और बुरे कपड़े'। इसके अन्तर्गत आप वेद के प्रमाणों से सिद्ध करते हैं कि वेद में सर्वत्र सुवासा शब्द आता है जिसके अर्थ हैं उत्तम कपड़े और यह फुरसत के समय स्त्रियों द्वारा बनाये जाते थे। पाठकों के हितार्थ हम उस में से कुछ उदाहरण देते हैं:-

"वेद में केवल कपड़ों का ही उल्लेख नहीं है प्रत्युत अच्छे और बुरे कपड़ों का भेद बताया है, और अच्छे कपड़े पहिनने का ही उपदेश किया है। इस विषय में निम्न शब्द दर्शनीय हैं:-

(१) सु-वसन = (Splendid garment) उत्तम कपड़ा देखो ऋग्वेद ६। ५१। ४; ६। ६७। १५॥

(२) सु-वासाः (Well-dressed) उत्तम पोशाक करने वाला (ऋ. १। १२४। ७; ३। ८। ४; १०। ७१। ४) ये शब्द बतलाते हैं कि अच्छे बुरे कपड़ों तथा पोशाकों का विवेक वेद मंत्रों में है।

जायेव पत्य उशती सुवासाः॥ ऋ० १। १२४। ७। "धर्मपत्नी पति की इच्छा करती हुई उत्तम वस्त्र पहिन कर जाती है।" तथा-

युवा सुवासाः परिवीत आगात् सउ-श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

ऋ० ३। ८। ४

"(सु-वासाःयुवा) उत्तम कपड़े पहिने हुये जवान आता है वह (श्रेयान्) यशस्वी बनता है। (मनसा देवयन्तः) मन से देवता की उपासना करने वाले आत्मज्ञानी कवि उसी की उन्नति करते हैं।" तथा-

राज्ञःसु-वसनस्य॥ ऋ ६। ५१। ४।

"उत्तम कपड़े पहिने हुये राजा" इस मंत्र में वर्णन किया है। इस प्रकार उत्तम शोभादायक कपड़ों का वर्णन वेद में है। सिये हुये और न सिये हुये कपड़े हैं, और उनमें उत्तम और साधारण ऐसे भेद हैं। यह बात इन प्रमाणों से सिद्ध हो चुकी है। अब और एक बात देखनी है वह यह है कि कपड़ों पर नकशी करने की कल्पना भी वेद में है:-

यजुर्वेद ३०-६ में तथा तैत्तरेय ब्राह्मण ४। ५। १ में "पेशस्कारी" शब्द आया है उसका अर्थ (Female embroiderer) कपड़े पर नकशी का काम करने वाली स्त्री है। 'पेशस' शब्द का ही अर्थ (Embroidered garment) नकशी किया हुआ कपड़ा है। यह शब्द कई बार वेद में आया है इस से पता लगता है कि कपड़ों पर विविध प्रकार का नकशी काम करना वेद को अभीष्ट है, और यह फुरसत के समय स्त्रियों ने बनाना है। 'द्रापि' शब्द ओवरकोट का वाचक पूर्व स्थान में आया है, इस पर सुवर्ण के कलावत्तू की नकशी हुआ करती है, इसलिये इसको 'हिरण्ययं द्रापि" कहते हैं।

देखिये—

'विभ्रद्द्रापिं' हिरण्य यं वरुणो वस्त निर्णिजम्।

ऋग्वेद १। २५। १३।

"वरुण (हिरण्ययं द्रापिं) सोने के कलावत्तू का नकशी काम किया हुआ चोगा पहनता है और (निर्णिजं) सुन्दर वस्त्र धारण करता है।" ये शब्द अत्यन्त स्पष्ट हैं। तात्पर्य साधारण धोतियां, चादरें, कुरते, कोट, चोगे और नकशी काम किये कपड़े वेद में हैं। इन कपड़ों पर—

तुर्स = (, Fringe झालर, गोट, किनारी

किनारा-(तै० सं० १।८।१।१; २।४।६।१; ४।१।१३;) (काठक सं० १३।१)

दशा—(Border) किनारी (शत० ब्रा० ३।३।२।२६;)

दशापवित्र—,, ,, (ऐत० ब्रा० ७।३२ शत० ब्रा० ४।२।२।११)

किनारियां, गोट आदि से शोभा भी लाने की सूचना ये शब्द दे रहे हैं। इसके अतिरिक्त कपड़े के अन्त में तन्तु खुले रहते हैं उनको ग्रंथियां लगाकर शोभा लाने की सूचना "प्रगाथ" शब्द दे रहा है। यह तैत्त० सं० ४।१।१।३ (काठक सं० २३।१) में है। इसका अर्थ (end of cloth; closly woven ends of a cloth) कपड़े के अन्त के सूत्रों को विशिष्ट प्रकार से बनाना है।

इसके अतिरिक्त "प्रवर, प्रवार (बृ० उ० ६।१।१०) बरासी (कां० सं० १५।४); प्राचीनावीत (श० ब्रा० २।४।२।२)" इत्यादि अनेक शब्द हैं जो कि विविध प्रकार के छोटे और मोटे कपड़ों के दर्शक हैं।

"वातपान" शब्द (तै० सं० ६।१।१३) में आया है। इसका अर्थ खिड़की पर लटकाने के अथवा दर्वाजों पर लटकाने के विशेष प्रकार के कपड़े ऐसा है। ये विशेष प्रकार के नकशीदार अथवा सादे कपड़े श्रीमानों के घरों की खिड़कियों की शोभा को बढ़ाते हैं।

विविध प्रकार के संस्कारों के लिये भिन्न भिन्न प्रकार के कपड़े हुआ करते हैं। विवाह के लिए जो खास कपड़ा होता है उसे "वाधूयं वासः" (Bridal Garment) कहते हैं (ऋग्वेद १०।८५।३४) तथा (अथर्ववेद १४।२।४१) में इसका उल्लेख है। इस प्रकार सर्व साधारण और विशेष प्रकार के कपड़े वेद ने बताए हैं।

ये सब कपड़ों के नाम सूचित करते हैं कि वैदिक सभ्यता में अनेक प्रकार के कपड़े थे। विशेष अवसर पर विशेष प्रकार के कपड़े भी पहने जाते थे जैसे कि शादियों के कपड़े भिन्न प्रकार के होते थे, उपनयन के समय के अन्य प्रकार के, इसी प्रकार यज्ञ के समय पहनने के भी भिन्न प्रकार के होते थे। ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषादों की पोशाक और कपड़ों की बनावट विभिन्न प्रकार की थी। इस विषय में श्रुति और स्मृति के वचन स्पष्ट ही हैं"।

और भी देखिये वेद में एक मन्त्र आता है कि:—

वितन्वते धियो अस्मा अपांसि
वस्त्रा पुत्राय मातरो वयन्ति॥

१ मातरः पुत्राय वस्त्रावयन्ति = माताएं अपने बच्चों के लिये कपड़े बुनती हैं और:—

२ अस्मैधियः अपांसि वितन्वते = इस बच्चे के लिए सुविचारों और सत्कर्मों का उपदेश देती हैं।

जब माताएं अपने पुत्र के लिये कपड़े बुनती हैं तो उसमें प्रत्येक धागे के साथ उन का प्रेम भी तन्तुओं में बुना जाता है।

हमें प्रायः क्रिश्चियन माताओं में यह बात देखने में मिली है कि गर्भवती अवस्था में प्रत्येक माता अपने भावी सन्तान के कपड़े बुनकर और सींकर रखती हैं ताकि बच्चा पैदा होने पर पहिना सकें। गर्भवती माता के आवश्यक कार्यों में से एक यह भी समझा जाता है। इस से माता और सन्तान का प्रेम बढ़ता है। वैदिक काल में भी माताएं बच्चों के लिए स्वयं कपड़े बुनती रही हैं। परन्तु आज कल बाज़ार से ही सिली और बुनी हुई चीं माताएं खरीद कर बच्चों को पहिनाने में शान

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समझती हैं क्योंकि उन्हें स्वयं अच्छे सुन्दर वस्त्र बनाने आते नहीं हैं और वह इस कार्य को भी निर्धनता का चिन्ह समझती हैं। जो गरीब हों वह यह कार्य करें। प्रेम का चिन्ह नहीं समझतीं।

इनके अतिरिक्त यज्ञों में विशेष प्रकार के कपड़े पहिनने का विधान है। प्रत्येक संस्कार और धर्मविधि तथा प्रत्येक सामाजिक और राजकीय महोत्सवों के लिये अलग अलग तरीके के कपड़े जैसे कि वर्त्तमान समय में अंगरेजों की सामाजिक तथा राजकीय अवस्थाओं में भिन्न २ प्रकार के वस्त्रों की विधि है वैदिक समय में भी थी।

साध्वपांसि सनता न उद्भिते,
उषासानक्ता वयेव रण्वते।
तन्तुं ततं संवयन्ती समीची,
यज्ञस्य पेशः सुदुघे पयस्वती॥

ऋ० २।३।६

इस मन्त्र में 'यज्ञस्य पेशः' यज्ञ के समय पहिनने का कपड़ा the cloth of sacrifice शब्द वेद में प्रसिद्ध है। यह वस्त्र प्रायः बड़ी कुशल, कारीगर, चतुर स्त्रियों द्वारा ही बुने जाते थे और वह मिलजुल कर इसे बनाती थीं। वेद में जहां पर यह मन्त्र आता है कि पत्नी अपने पति के लिये कपड़ा बुने उस मन्त्र में जो शब्द हैं वह विशेष ध्यान से देखने योग्य हैं:—

ये अन्ताः यावतीसिचो य ओतवो ये च तन्तवः।
वासो यत्पत्नीभिरूत तन्नः स्योनमुपस्पृशात्॥

अथर्व १४। २। ५१

अर्थात् जो कपड़े के अन्तिम भाग हैं, जहां से धागे खुले हुए हैं जो किनारियों की नक्शियां हैं तथा कपड़े के ताने बाने हैं उसका सूत भी पत्नी द्वारा कता हुआ होना चाहिये। आजकल हमारी कई बहिनें अपने पुत्रों और पतियों तथा भाइयों के लिये प्रेम से स्वेटर मोजे, दस्ताने आदि तैयार करती तो हैं—कपड़े बुनने की प्रथा तो हट गई है—परन्तु उस में ऊन विदेशी लगाती हैं अथवा मिलों का, परन्तु चाहिये यह कि अपने हाथ से ऊन कातकर तब बुने। जो देवियां बड़े प्रेम से अपने प्रियजनों के लिये पहिनने के वस्त्र तैयार करती हैं वह उन के एक २ सूत्र और सीवन में अपना हार्दिक प्रेम गूंथती हैं अतः उनके वह पवित्र और प्रेमपूर्ण वस्त्र पहिनने से ऐसा भाव होता है मानो पहिनने वाला कपड़ा नहीं पहिने है वरन प्रेम ही धारण किये है। अहा! वह कैसा वैदिक काल होगा जब कि गृह देवियां अपने पति के लिये सुन्दर नक्शीदार शोभावर्धक वस्त्र तैयार करती होंगी और पति उनको प्रेम के साथ पहिनते होंगे। महाशय ग्रिफिथ अपने अथर्व वेद के अनुवाद में पृष्ठ १७६ में लिखते हैं कि:—

'The garment that the young husband is to wear on the first day of his wedded life and that apparently has been made for him by the bride."

अर्थात् विवाह के पहिले दिन जो कपड़ा पति पहिनता है यह पत्नी द्वारा बना हुआ ही हो।

वेद में स्त्री के कर्तव्यों का वर्णन उषा के कार्यों द्वारा बताया गया है। इसके अनेक मन्त्र हैं। इन में से एक में यह आता है जैसे उषा भिन्न २ प्रकार के रंगों को दिखलाती है उसी प्रकार भिन्न २ प्रकार के सुन्दर रंगों वाले सूत से सुन्दर कपड़े स्त्रियां अपने पति के लिये बनावें।

इस प्रकार हमारे पाठक और पाठिकाओं को बहुत अच्छी तरह पता लग गया होगा कि वेद भगवान् कन्याओं की शिक्षा में शिल्प-कला को कैसा उच्च स्थान देते हैं। कपड़ा-

बुनने की विद्या पर बड़ा ही बल है, और हर जगह सौन्दर्य प्रियता का भारी भाग है। अतः जबतक हमारी कन्याशालाओं और आश्रमों में शिल्पकला को उच्च पद न मिलेगा तबतक यह वैदिक आदर्श पूरा नहीं हो सकता। सुन्दर वस्त्र बनाने के विविध ढंगों का प्रचार करना, चर्खा कातने और कपड़ा बुनने के साथ २ है। कोई भी चीज़ जबतक मनोहर न हो चित्त को आकर्षित नहीं करती, हृदयग्राही नहीं बनती, तब तक उसका प्रचार नहीं होता। अतः कन्या-गुरुकुल की पाठविधि में भी शिल्पकला को उच्च-स्थान मिलना चाहिए। साथ ही बेल बूटे कसीदे आदि हाथ के कते सूत से, अपने आप ही विविध रंगों से रंग कर स्वयमेव बुने हुए कपड़ों पर करने का प्रयत्न होना चाहिये। यदि ऊन के वस्त्र बनाने हों तो ऊन स्वयं कातकर तैयार करना चाहिये। परन्तु इन बातों को उड़ा देना ठीक नहीं। आशा है कि विज्ञ सञ्चालक इस विषय पर मनन करके शिल्पकला की उन्नत शिक्षा का प्रचार करेंगे।

नव-वर्ष— स्वागत

[ले०—श्री वैद्यराज संतलाल जी]

नव—वर्ष ! नव वर्ष !!
प्रिय, स्वागत नव-वर्ष ! कुशलागत नव-वर्ष !!
शुचि समुपागत,
सुखद, सुखागत,
भव्य, शुभागत, वर्ष !
सुरुचि अचल-प्रद,
प्रतिभा -- बल -- प्रद,
मुद-मंगल-प्रद, वर्ष !!
नव—वर्ष ! नव—वर्ष !!
प्रिय, स्वागत नव-वर्ष ! कुशलागत नव-वर्ष !!

नव—वर्ष ! नव—वर्ष !!!
प्रगुण परस्पर प्रीति-प्रवर्षी—
दुःखद-द्रोह-द्वेष-अपकर्षी—
सुख-सञ्चारक समता-दर्शी—
अनाचार—अन्याय--अमर्षी--
बनें काव्य आदर्श ;
नव-वर्ष ! नव-वर्ष !!

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सहसा सब शैथिल्य भंग हो,
सबल कार्य हो, नव उमंग हो,
समता का सन्मान संग हो,
सत्-कृति से सब देश दंग हो,
हो बल अति—उत्कर्ष !
नव—वर्ष ! नव—वर्ष !!

सब सशक्त हों, जाति-भक्त हों,
सब के सब वेदानुरक्त हों,
सब अभद्र—भावना- त्यक्त हों,
सब सदगुण-संयुक्त व्यक्त हों,
बनें आर्य दुर्धर्ष !
नव—वर्ष ! नव—वर्ष !!

स्त्री शिक्षा

लेखक-प्रोफेसर सत्यव्रत जी सिद्धान्ता लंकार-सम्पादक 'अलंकार'

स्त्रियों को अशिक्षित रखने का ज़माना गया। इस का श्रेय माता पिता को नहीं है ! इस पुण्य कार्य के लिये आजकल के नयी रोशनी में पले अविवाहित नव युवकों को थपकी दी जानी चाहिये। सब लड़के शादी से पहले पूछते हैं:—"लड़की कितनी पढ़ी है ?" इसी प्रश्न के उत्तर में आज जगह २ कन्या पाठशालाऐं खुली हुई हैं। स्वार्थी मनुष्य-समाज को सीधा करने के लिये उस के किसी स्वार्थ को ही पकड़ना पड़ता है। माता पिता तो लड़की से किसी तरह पिण्ड छुड़ाना चाहते हैं। जब लड़कों की मांग रुपये पैसा होती है तब दहेज़ की कुप्रथा चल पड़ती है, जब लड़कों की मांग शिक्षा होती है तब लड़कियों के स्कूलों का सिलसिला जारी हो जाता है। इस समय के युवक-समाज की मांग शिक्षित लड़कियां के लिये है और इसलिये माता-पिता अपनी पुत्रियों को पढ़ाने के लिये बाधित हो रहे हैं।

खैर किसी तरह भी हो, स्त्री-शिक्षा का सूत्र-पात देश के भले के लिये ही हुआ है। लगभग हरेक शहर में कन्या पाठशालाएं खुली हुई हैं। बड़े २ शहरों में तो स्त्रियों को पुरुषों के समान उच्च-कोटि की शिक्षा दी जा रही है। साधारण पढ़ लिख लेने मात्र की, स्त्रियों की शिक्षा का फल, अभी तक अच्छा ही देखा गया है परन्तु स्त्री-समाज में उच्च-शिक्षा ने एक दूसरा प्रश्न खड़ा कर दिया है जिस की तरफ़ देर तक उपेक्षा वृत्ति धारण नहीं की जा सकती। पहिले लड़कियों को बिल्कुल नहीं पढ़ाया जाता था, परन्तु शादी उनकी भी होती थी, और पढ़े लिखे लड़कों के साथ होती थी।

अब लड़कियों को पढ़ाया लिखाया जाता है। स्वभावतः पढ़ी लिखी लड़कियां अपने भाग्य को अपनी अशिक्षित बहनों की अपेक्षा अधिक उज्वल बनाना चाहती हैं। अशिक्षित लड़कियां यदि सुशिक्षित लड़कों के साथ ब्याही जाती थीं तो सुशिक्षित लड़कियें को तो अति-सुशिक्षित लड़के ही मिलने चाहियें नहीं तो अनुपात टूट जाता है, त्रैराशिक के नियम का भङ्ग हो जाता है। उच्च स्त्री-शिक्षा से यह प्रश्न कई जगह उठ खड़ा हुआ है और कई जगह उठने वाला है। सदियों से हमारे दिमाग़ में यह भाव काम करता रहा है कि लड़के-लड़की की शिक्षा में ज़मीन-आस्मान का अन्तर रहना चाहिये। इसीलिये जिन लड़कियों को बहुत उंची शिक्षा मिल जाती है उन्हें बाधित होकर आजीवन ब्रह्मचारिणी रहने का संकल्प करना पड़ता है।

यूरुप में कई ऐसी देवियां हैं जिन्हें आजीवन ब्रह्मचारिणी रहना पड़ता है। उस का कारण है, स्त्री-पुरुषों की संख्या में विषमता। दुर्भाग्यवश भारत में 'स्त्री-शिक्षा' स्वयं ऐसा कारण बन रहा है जो अपने ही पांव आप कुल्हाड़ी चला रहा है। स्त्री-शिक्षा का प्रारम्भ विवाह की योग्यता को बढ़ाने के लिये हुआ था—यह कोई माने, न माने, पक्की बात है। वही स्त्री-शिक्षा, एक अवधि पर आकर, विवाह के लिये अयोग्यता उत्पन्न कर रही है—यह स्त्री शिक्षा के प्रेमियों के लिये चिन्तनीय विषय है। बाल-ब्रह्मचारिणी रहना बहुत अच्छा है। ऊंघते भारत को जगाने के लिये गले में झोली डाल कर ब्रह्मचारी तथा ब्रह्मचारिणियों के कोने २ में फिरने की ज़रूरत है। परन्तु स्त्री-पुरुषों की विषमता से उत्पन्न हुए तथा स्त्री-शिक्षा के परिणाम-भूत आजीवन ब्रह्मचर्य की आवश्यकता नहीं, यूरुप का प्रश्न तो युरुप हल करेगा, हमें भारत के प्रश्न पर विचार करना है। स्त्री-शिक्षा की बढ़ती के साथ, लड़कियों में गृहस्थ के प्रति भय तथा भय से उत्पन्न हुई गृहस्थ-जीवन के प्रति उपेक्षा भी बढ़ती जा रही है। आज पढ़ी लिखी लड़कियां शादी करने से पहले यही सोचती हैं—"यदि हम शादी न करें, तो ?" इस प्रश्न में कई भाव मिले रहते हैं। चारों तरफ़ का गन्दा गृहस्थ उनके हृदय को कंपा देता है। शिक्षा प्राप्त करने पर जो स्वाधीनता उन्होंने प्राप्त की होती है वह भी बहुत कुछ सताती है। परन्तु सब बातों की एक बात यह कि वे त्रैराशिक का नियम भी तो समझी हुई होती हैं। वे सोचती हैं—अशिक्षित लड़की, को सुशिक्षित लड़का तो सुशिक्षित लड़की को ?—बस, न वैसा लड़का मिले, न उन का व्याह हो! स्त्री-शिक्षा का यह परिणाम कहीं २ तो दिखाई देने लगा है और कहीं २ अभी भविष्यत् के गर्भ में छिपा हुआ है। इसका इलाज सोचना चाहिये।

पुराने ढर्रे के बूढ़े कह उठेंगे कि इसका सब से सीधा और सस्ता इलाज यही है कि अब से स्त्री शिक्षा की दुहाई न दी जाय। पढ़ लिख कर ही तो लड़कियों का मिज़ाज बिगड़ जाता है। कन्या पाठशालाओं को भी खोलते जाओ और यह भी आशा रखो कि लड़कियों की अकल ठिकाने रहे—यह भी भला हो सकता है? धर्म के बूढ़ों ने स्त्री-शिक्षा के प्रारम्भ होते भी हाय तोबा मचायी थी, अब भी-हमने तो पहले ही कहा था' की रट लगाऐंगे, परन्तु अफ़सोस! उनकी सुनता कोई नहीं! सनातन-धर्म अब पुरानी चीज़ हो चुकी है। पुरानी होने के कारण उसका आदर भी है, निरादर भी है। आदर इसलिये कि सब उसके सन्मुख सिर झुकाते हैं, निरादर इस लिये कि दिल से उसे मानता

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कोई नहीं ! शायद यही देख कर 'सनातन-धर्म' ने भी अपने सनातन धर्म से धीरे २ सरकना शुरु कर दिया है और वे पण्डित जिन्हें 'स्त्री शूद्रोनाधीयताम्' के अतिरिक्त अन्य कोई श्रुति ही याद न थी, सनातन-धर्म-कन्या-पाठशालाओं के लिये चन्दों की फ़िक्र कर रहे हैं। ज़माने की रफ़्तार ऐसी है कि अब लड़कियों का पढ़ाना तो रुक नहीं सकता। 'पुराण' और 'अनुभव' जांय चूल्हे, भाड़ में। नव-युवक-समाज की प्रबल मांग शिक्षित लड़कियों के लिये है। ख़रबूजे को देख कर ख़रबूजा रंग पकड़ता है। लड़कियां भी अपनी शिक्षिता बहनों को देख कर अब किसी के हाथ की कठपुतली नहीं बन सकतीं। स्त्री-शिक्षा तो चलेगी, अवश्य चलेगी और लाख किये भी न रुकेगी। कइयों का कहना है कि जिन लड़कियों ने इतनी उच्च शिक्षा प्राप्त की है उन्हें आजीवन ब्रह्मचारिणी रखा जाय। रखा जाय या न रखा जाय, इसमें सन्देह नहीं कि इतनी शिक्षा का भारतमें यही परिणाम दिखाई देताहै। एन्ट्रेंस तक पढ़ी लड़की को, ग्रेजुएट तो एक फ़िज़ूल सी चीज़ मालूम पड़ता है। पहले ही जात पात के दायरे बने हुए हैं--चुनाव का मौका ही थोड़ा रह जाता है। उस पर भी यदि लड़की एन्ट्रेन्स पास कर गई, तब तो उस बिरादरी में जो केवल ग्रेजुएट हैं वे उस की नज़रों पर उतरते ही नहीं। वह एन्ट्रेन्स है तो लड़का कम से कम बैरिस्टर तो चाहिये ही ! अब यह ज़रूरी थोड़ा ही है कि उस बिरादरी में कोई न कोई बैरिस्टर होना ही चाहिये और यदि हो तो यह ज़रूरी नहीं कि उसकी शादी न हो चुकी हो। नतीजा यह होता है कि बैरिस्टर के न मिलने के कारण एन्ट्रेन्स पास लड़की को आजीवन ब्रह्मचर्य्य का संकल्प करना पड़ता है। यह स्त्री-शिक्षा का स्त्रियों पर अत्याचार है। बाधित होकर हलवा खाने में भी मज़ा नहीं आता, समाज-सेवा तथा देश-सेवा में तो क्या ही आता है ! इसके अतिरिक्त यह मानी हुई बात है कि बालक के मस्तिष्क को बनाने के लिये पिता के संस्कारों की अपेक्षा माता के संस्कार अधिक प्रबल होते हैं। समझदार लोग लड़कियों को इस लिये भी पढ़ाते हैं कि आगामी सन्तति सुसंस्कारों को लेकर उत्पन्न हो। जानकारों का कहना है कि १८ बरस की अशिक्षित लड़की के दिमाग़ का वज़न ५.६ वर्ष की बालिका के दिमाग़ के वज़न से ज़्यादह नहीं होता। यदि इतने छोटे दिमाग़ वाली माताओं से बड़े २ दिमाग़ वाले लड़के अब तक पैदा होते रहे हैं तो उन्नत मस्तिष्क वाली माताओं की सन्तानें तो ग़ज़ब ढा देंगी। ऐसी अवस्था में जो लड़कियां पढ़ लिख जायं वही यदि 'विवाह' का नाम सुनते ही नाक भौं सिकोड़ने लगें तब तो देश का भला हो चुका। विवाहित होकर तो सुशिक्षित लड़कियां कुछ अनुरूप सन्तान उत्पन्न कर संसार का भला निश्चित कर सकती हैं, बाधित रूप से अविवाहित रह कर, १६ बरस में ही देश-सेवा का व्रत लेकर उसे पूर्ण निभा सकने में कुछ सन्देह बना ही रहता है। परन्तु वे बेचारी क्या करें ? —लाचार हैं। उनके माता पिता ने ही शिक्षा का भूत उनके सिर पर सवार कर दिया है। इतनी शिक्षा पाकर वे त्रैराशिक के साधारण से नियम को कैसे भुला सकती हैं ? परिणाम यह है कि स्त्री शिक्षा की बढ़ती के साथ २ गार्हस्थ्य जीवन की घटती हमारी आंखों के सामने है।

हां, तो फिर किया क्या जाय ? स्त्री-शिक्षा रुक नहीं सकती। लड़कियों को

बाधित रूप से ब्रह्मचारिणी रखना उनके तथा देश के भले की बात नहीं है। ऐसी अवस्था में इस रोग का क्या इलाज हो ?

कहते हैं विष की दवा विष ही है। कांटे से कांटे को निकाला जाता है। आग से जले के लिये सेक हितकर है। 'होमोपैथी' में ऐसा ही इलाज किया जाता है। क्या यही इलाज स्त्री-शिक्षा के रोग पर कारगर नहीं हो सकता।

शिक्षित होजाने पर भारत की कियां विवाह से क्यों परे हटती हैं ? क्योंकि हमारे देश में लड़की का शिक्षित हो जाना बड़ी भारी बात है, एक घटना है। लड़कियों में बहुत असमानता उत्पन्न होरही है। कई लड़कियां जिनकी संख्या देश में बहुत ही अधिक है—सर्वथा अशिक्षित हैं। मुट्ठीभर, उंगलियों पर गिनने लायक लड़कियों ने शिक्षा प्राप्त करली है। स्वभावतः शिक्षित लड़कियां अपनी किस्मत को शिक्षित लड़कियों की अपेक्षा बहुत अच्छा देखना चाहती हैं। बद किस्मती से उनकी ऐड़ी इतनी ऊंची हो जाती है कि सब पुरुषों के कद उन से छोटे दीख पड़ने लगते हैं। उन्हें अपने में और अपनी अशिक्षिता बहनों में साफ़ फ़रक दिखाई देता है। उनकी अशिक्षिता बहनों को सुपठित वर मिल ही जाते हैं। यदि उन्हें भी उनही जैसों से गुज़ारा करना है तो उनकी सारी पढ़ाई लिखाई मट्टी में मिल गई ! अपनी अशिक्षित बहनों से अपने भाग्य को बहुत अच्छा बनाने की फिक्र में ही देश की होनहार पुत्रियां अपने जीवन को सन्देह की दोला पर झुलाया करती हैं।

यूरुप में ऐसी अवस्था नहीं। यूरुप के जो प्रश्न हैं उन्हें सभी जानते हैं, उनकी व्यर्थ लम्बी चर्चा करने से क्या फ़ायदा ? कम से कम 'स्त्री शिक्षा' ने वहां यह प्रश्न नहीं खड़ा किया हुआ जो इस ने भारत में खड़ा कर दिया है। इसका कारण यही है कि वहां 'स्त्री-शिक्षा' का इतना प्रचार है जितना हमारे देश में बालकों की शिक्षा का भी नहीं। शिक्षा की दृष्टि से वहां की स्त्रियों के दो विभाग नहीं किये जा सकते, वे सभी शिक्षिता हैं। वहां की शिक्षिता स्त्रियों को अपने भाग्य का फ़ैसला करने के लिये अपनी अशिक्षिता बहनों के साथ मुकाबिला करने का मौक़ा ही नहीं। यहां एक लड़की ने एन्ट्रेन्स पास कर लिया तो सारे प्रांत में धूम मचगई, वहां हज़ारों एन्ट्रेन्स हुआ करती हैं, कोई पूछता भी नहीं। इस का यह अभिप्राय नहीं कि एन्ट्रेन्स पास करने वाली लड़की को पूछना ही नहीं चाहिये। नहीं, इसका इतना ही अभिप्राय है कि 'स्त्री शिक्षा' को इतना फैलाना चाहिये कि जैसे एन्ट्रेन्स की शिक्षा लड़कों के लिये साधारण समझी जाती है, वैसे ही इतनी शिक्षा लड़कियों के लिये भी साधारण ही समझी जानी लगे। एन्ट्रेन्स पास लड़की को जब सभी आंखें फाड़ २ कर देखेंगे तो उसका भी तो होश हवास ठिकाने नहीं रहेगा। वह फिर मनुष्यों के साथ क्यों कर शादी कराने लगी। उसे वरने के लिये तो आस्मान से देवता ही उतरने चाहिये। उन्होंने आस्मान से उतरना नहीं और इन्होंने आस्मान में जाना नहीं।

'स्त्री-शिक्षा' तो अब रोके रुकती नहीं। हां, 'स्त्री-शिक्षा' के दुष्परिणामों में से उसे जिस का यहां जिक्र होरहा है, 'स्त्री-शिक्षा' के अधिक प्रचार द्वारा ही रोका जा सकता है। दूसरा कोई उपाय नहीं सूझता। ज्यों २ शिक्षिता लड़कियों की संख्या अधिक बढ़ती जायगी त्यों २ वे सब एक ही बिरादरी में मिलती जायंगी और हवा में उड़ने की जगह

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ज़मीन पर चलना सीखने लगेंगी।

मैं जानता हूँ कि शिक्षिता लड़कियों के गृहस्थ से घबराने के अन्य अनेक कारण हैं। कई बहिन मौजूदा गन्दे गृहस्थ को देखकर कीचड़ की तरह इससे बचती हैं। यह सब कुछ ठीक भी है। परन्तु प्रश्न तो यही रह जाता है कि यह बिगड़ा हुआ गृहस्थ सुधरेगा कैसे? शिक्षिता लड़कियों के इस मैदान से हटने का परिणाम तो यही निकलेगा कि यह बोझ जैसे पहले था, वैसे अब भी अशिक्षित लड़कियों के ही कन्धों पर पड़ा रहे। फिर स्त्री-शिक्षा का लाभ ही क्या रहा? स्त्री शिक्षा के अन्य उद्देश्य भी बहुतेरे होंगे परन्तु मुख्य उद्देश्य जो सब की समझ पड़ जाता है, यही तो है कि स्त्रियों के सुशिक्षित होने से सन्तान भी योग्य तथा प्रतिभासम्पन्न होगी। यह नहीं भुलाना चाहिए कि गृहस्थ नरक के द्वार इसीलिए बने हुए हैं क्योंकि बुद्धुओं के साथ जुड़ जाने से भले-मानस, पढ़े लिखे लोगों को भी वैसा ही काठ का उल्लू बनना पड़ता है। इसका यह अभिप्राय कभी नहीं कि गृहस्थ को मलिन करने में पुरुषों का हाथ बिलकुल नहीं। ढूंढ़ की जाय तो सम्भवतः गृहस्थ को मलिन ही पुरुषों ने कर रक्खा है। परन्तु हां, यह बात निस्संदिग्ध है कि गृहस्थ को सुधारने में अधिक हिस्सा स्त्रियां ही ले सकती हैं। बिगड़े हुये गृहस्थों का यह तो कारण नहीं कि उन्हें स्त्रियों ने बिगाड़ा है, बिगाड़ा शायद पुरुषों ने ही हो; हां, उसका यह कारण अवश्य है कि स्त्रियां ऐसे गृहस्थों को सुधारने में बद्धपरिकर नहीं? इस लिए यदि किसी को यह भ्रम हो गया हो कि शिक्षित लड़कियों की गृहस्थ के प्रति अरुचि का कारण मैं स्त्री शिक्षा को समझता हूँ और इसका सारा दोष लड़कियों के सिर ही मढ़ता हूं तो उसे यह भी समझ लेना चाहिए कि मैं इस सम्बन्ध में स्त्रीजाति को किस रूप में दोषी ठहराता हूँ। स्त्रीजाति का दोष यही है कि जहां उसे अधिकाधिक शिक्षा प्राप्त करके गन्दे गृहस्थ को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिये था, वहां वह उससे पीठ फेर कर ही खड़ी होने को है। इसका कारण यही है कि भारत की स्त्रियों में शिक्षित तथा अशिक्षित—ये दो भेद बड़े बढ़े हुए रूप में दिखाई देते हैं। इसी भेद को मिटाने के लिये स्त्रीशिक्षा, पुरुषशिक्षा की तरह भारत भर में व्याप्त जानी चाहिये।

स्त्री शिक्षा के वर्तमान परिणाम का एक और भी कारण है। हमें आदत पड़ गई है कि हम स्त्री-पुरुष की मानसिक योग्यता में अत्यधिक विषमता का होना आवश्यक समझने लगे हैं। हमारी यूनिवर्सिटियों की उच्चतम शिक्षा प्राप्त किये हुए लड़के को यदि एन्ट्रेंस तक पढ़ी लिखी लड़की मिल जाय तो वह अपने अहोभाग्य समझता है। यह अवस्था अत्यन्त हास्यास्पद है। यूरुप में ऐसा नहीं। वहां स्त्री शिक्षा के सर्वत्र प्रचार होने के कारण स्त्री-पुरुषों का मानसिक विकास समान होता है। मानसिक विकास की अत्यधिक विभिन्नता के कारण गृहस्थ का दुःखी रहना स्वाभाविक है। स्त्री-शिक्षा का कमर कसकर प्रचार करना चाहिये ताकि यह भ्रम भी शीघ्र ही दूर हो सके।

आनन्द !

अह ! आनन्द !! अजब तू आया ।
रंग-बिरंगे, साज-बाज से, तड़क-भड़क से मन बहलाया ।
अह ! आनन्द !! अजब तू आया ॥

वह बात विपति की भूल गई । हृत्कली, हमारी फूल गई ॥
छवि क्षण में मन को हूल गई । मम-वृत्ति उसी में भूल गई ॥
नाना प्रकार के नृत्यों में अपने को—हम ने भटकाया ।
अह ! आनन्द !! अजब तू आया ॥ १ ॥

स्वजनों की कुछ भी चाह नहीं । धन जाने की परवाह नहीं ॥
ली दुनियां की कुछ थाह नहीं । दुःख करता दिल में दाह नहीं ॥
मिल जाये 'वह' यही वाञ्छा, हमें फेर में खूब फंसाया ।
अह ! आनन्द !! अजब तू आया ॥ २ ॥

आज सभी कुछ मैं कर लूंगा । जीत, जीत का भी धर—लूंगा ॥
प्रेम—पात्र, मधु से भर लूंगा । मुदुदधि[1], रुचि-त-रि[2] से तर लूंगा ॥
पान, रूप-रस कर, मतवाला—बन हमने है गजब ढ़हाया ॥
अह ! आनन्द !! अजब तू आया ॥ ३ ॥

धर्माधर्म सभी मन माना । हठ अपना ही हमने ठाना ॥
गाता—निज—सुगुणों का गाना । तन, अघ—गुण[3] का ताना-बाना—
निज कुकर्म के वायदण्ड[4] से, है विपत्ति का वसन बनाया ॥
अह ! आनन्द !! अजब तू आया ॥ ४ ॥

'मुकुन्द'

१-मुदुदधि=(मुद+उदधि) मोद रूपी समुद्र । २--तरि=नौका ।
३--गुण=सूत । ४--वायदण्ड=कपड़ा बुनने का औजार ।

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्री भारतचन्द्रराय

लेखक—श्री बजरंगबली गुप्त विशारद

आज मैं एक ऐसे बंगला कवि की रचनाओं को लेकर आप के सन्मुख उपस्थित हुआ हूँ जो बंगला के अतिरिक्त हिन्दी, संस्कृत और फ़ारसी में भी कविता कर सकता था। बङ्ग-भाषा के प्राचीन साहित्य में जिस कवि का स्थान अत्यंत उच्च है, जिस में कविता करने की शक्ति प्रकृतिप्रदत्त थी, न कि आज कल के अधिकांश हिन्दी-कवियों की भांति कृत्रिम। जो भारतचन्द्र अनुप्रास और ललित भाषा की दृष्टि से हिन्दी के पद्माकर के समान कहलाने के योग्य हैं उनकी कविताओं का कुछ स्वाद चखाना ही मेरे इस लेख का उद्देश्य है। परन्तु प्रत्येक कविता पर उसकी जीवन-घटनाओं का बहुत गहरा प्रभाव पड़ने के कारण पहिले कवि की जीवन-घटना का संक्षिप्त परिचय प्रदान करना परमावश्यक है।

इन के पिता नरेन्द्रनारायन राय वर्द्धमान प्रदेशान्तर्गत भुरसुट परगना के पान्डूया नामक ग्राम में रहते थे। इन्हों ने भारद्वाज गोत्र के मुखटी वंश में जन्म ग्रहण कर अपनी प्रचुर सम्पत्ति के लिये 'राय" और "राजा" की उपाधि पाई थी। नरेन्द्रराय के चार पुत्रों में भारतचन्द्र सब से छोटे थे। इनका जन्म १७७० विक्रमीय में हुआ था। एक बार भारत चन्द्र के पिता ने भूम्याधिकार के विवाद में वर्द्धमानाधिपति की माता को कुछ कटूक्तियां कहदीं, इस पर राजा की आज्ञानुसार सेनापतिने नरेन्द्रनारायण को सभी वस्तुओं पर अधिकार कर लिया। सुतरां नरेन्द्र नारायण दीन हीन होकर किसी प्रकार अपने दिन व्यतीत करने लगे। इस कष्ट के समय में भारतचन्द्र ने घर से भागकर अपने मामा के यहां संस्कृत व्याकरण और कोष का अध्ययन किया। चौदह वर्ष की अवस्था में व्याकरण और कोष का अध्ययन समाप्त कर भारतचन्द्र घर लौट आये और शारदा ग्रामवासी केशरकुणि आचार्य की कन्या से अपना विवाह किया। इसके बाद इन्होंने केवल संस्कृत जानने वाला कहकर चिढ़ाए जाने पर हुगली जिलान्तर्गत देवानन्दपुर वासी मुंशी रामचन्द्र के घर जाकर फारसी का अध्ययन किया।

इस समय भारतचन्द्र संस्कृत और बंगला में कविता करने लगे थे, परन्तु किसी के निकट प्रकाश न करते थे। वे एक दिन उक्त मुन्शी द्वारा सत्यनारायण की कथा कहने के लिये निमन्त्रित कियेगये। उस समय उन्हों ने सत्यनारायण की कथा का पद्यानुवाद बंगला में करके सभा में उसी का पाठ किया। यह कोई साधारण कार्य न था क्योंकि उस समय भारतचन्द्र का पन्द्रहवां वर्ष भी न व्यतीत हुआ था। इतनी कम आयु में पद्यात्मक पुस्तक की रचना भारतचन्द्र की साधारण प्रतिभा और प्राकृतिक कवित्व-शक्ति का अपूर्व परिचय देती है। यह भारत चंद्र की पहिली रचना थी। इसके बाद एक दूसरी जगह कथा कहने के निमित्त आमन्त्रित होकर उन्हों ने एक दूसरी सत्यनारायण पोथी का निर्माण किया था।

बीस वर्ष की अवस्था में अरबी, फ़ारसी में विज्ञ बन कर भारतचन्द्र अपने घर लौट आये। इनके माता पिता और भाई लोग इनकी विद्वत्ता देख कर बड़े प्रसन्न हुए। इस बीच में उनके पिताने फिर वर्द्धमानाधिपति

से कुछ भूमि इजारे पर लेली थी, उसका प्रबन्ध करने के लिये भारतचन्द्र भी वर्द्धमान में गये थे। उनके भाइयों ने एक बार नियमित समय पर कर चुकाने में असावधानी की, इस पर वर्द्धमानाधिपति ने उस भूमि पर अधिकार कर लिया। इस विषय में कुछ आपत्ति करने पर भारतचन्द्र कर्मचारियों के कुचक्र में पड़कर कैद होगये।

परन्तु कारागार रक्षक का कृपापात्र बन भारत चन्द्र ने शीघ्र ही कारागार से छुटकारा पाया और महाराष्ट्राधिपति की राजधानी कटक में एक सूबेदार के यहां आश्रय लिया। भारतचन्द्र ने वहाँ से श्री शंकराचार्य मठ में जाकर वैष्णव ग्रन्थों का अध्ययन किया, तत्पश्चात् ये वृन्दावन गये। वहां पर खानाकुल-ग्राम में इनके श्यालीपति रहते थे। वे लोग भारत चन्द्र को आया हुआ सुन कर अपने घर लिवा ले गये और इनका संन्यासी वेष परित्याग कराकर घर जाने के लिये कहा। परन्तु उन्हों ने कहा कि मैं जब तक धनोपार्जन न करलूंगा तब तक घर न जाऊंगा। इसके पश्चात् भारतचन्द्र प्रसिद्ध पालधिवंशीय इन्द्रनारायण चौधरी के यहां आकर रहने लगे। इनके यहां नवद्वीपाधिपति महाराज कृष्णचन्द्र आवश्यकता पड़ने पर दोचार लाख रुपये उधार लेने के लिये आया करते थे। इन्हीं के अनुरोध करने पर महाराज कृष्णचन्द्र ने भारतचन्द्र को ४० रु० वेतन पर राजकवि नियुक्त किया था। कृष्णचन्द्र ने भारतचन्द्र की कविता पर मुग्ध होकर उन्हें "रायगुणाकर" की उपाधि प्रदान कीथी।

कुछ दिन पश्चात् राजा कृष्णचन्द्र ने भारतचन्द्र से उनका विशेष परिचय पूंछा और सब बातें जानने पर उन्होंने भारतचंद्र को उनकी इच्छानुसार मूलाजोड़ ग्राम प्रदानकर ६०० वार्षिक कर नियत कर दिया। और १०० रु० गृह निर्माण के लिये दिये। परंतु कुछ दिन पश्चात् विशेष कारण वश कृष्णचंद्र को वह स्थान वर्द्धमान राजा के कर्मचारी रामदेव नाग को देना पड़ा। तब राजा कृष्णचन्द्र ने आनन्दपुर के गुस्त नामक ग्राम १०५ बीघा और मूलाजोड़ में १६ बीघा भूमि निष्कर प्रदान की।

रामदेव नागने गांव ग्रहण कर लोगों के ऊपर अत्याचार करना आरम्भ किया। तब भारतचन्द्र ने क्रोधित होर अपनी कवित्व-शक्ति द्वारा संस्कृत में नागाष्टक बना कर कृष्णचंद्र केपास भेजदिया। इस नागाष्टक में हास्यरस और करुणारस लबालब भरा हुआ है और भाषा भी बहुत ललित है। इसे पढ़ कर महाराज श्रीकृष्णचन्द्र ने नाग के अत्याचार को दूर कर दिया। कविवर भारतचन्द्रराय १८१७ विक्रमीय में मूत्ररोगाक्रांत होकर परलोक सिधारे।

इन्होंने कुल ६ पुस्तकों की रचना की है; जिन के नाम ये हैं—१ अन्नदामंगल, २—विद्यासुन्दर, ३—मानसिंह, ४—चौरपञ्चाशत् ५—रसमंजरी और ६—गोपाल उडेर गान। इन पुस्तकों के अतिरिक्त आप की कुछ स्फुट कविताएं भी हैं।

अन्नदामंगल में भारतचन्द्र ने यह दर्शाया है कि काली जी ही सब देवी देवताओं में श्रेष्ठ हैं। इस ग्रन्थ में पहिले कवि ने सती का देह त्याग, उमा जन्म, शिव विवाह, आदि का वर्णन किया है, तदनन्तर शिव जी की आज्ञा से कुवेर द्वारा काशी में अन्नपूर्णा मन्दिर का निर्माण करवा कर अन्नपूर्णा जी की मूर्ति स्थापना करवाई है। इस के बाद मूर्ति में प्राण—प्रतिष्ठा करने के लिये शिव जी से अन्नपूर्णाजी को प्रार्थना करवाई है। शिवजी की देखादेखी ब्रह्मा, विष्णु, इन्द्रादिक देवताओं ने भी अन्नपूर्णा

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जी की प्रार्थना की है, जोकि पढ़ने में सर्वथा असंगत प्रतीत होती है। इसे हमें भारतचन्द्र की कष्ट कल्पना, स्वेच्छाचारिता या दृढ़ भक्ति और विश्वास कुछ कहते नहीं बनता।

"विद्यासुन्दर" नामक ग्रन्थ कवि ने संस्कृत विद्यासुन्दर के आधार पर लिखा है। कहानी वही है परन्तु वर्णन-शैली निजी सम्पत्ति है, जिस का प्रयोग कवि ने स्वतन्त्रतापूर्वक किया है। इसे पढ़ते समय मुझे जो सब से बड़ी त्रुटि प्राप्त हुई वह अश्लीलता है। भारतचन्द्र ने विद्या और सुन्दर के बिहार वर्णन में अश्लीलता की पराकाष्ठा करदी है। यथाः—

नृपनन्दन काम रसे रसिया,
परिधान-धुति पेड़िछे खसिया।
तरुणी धरिया हृदये लइलो,
नलिनी जेनो मत्तकरी धरिलो॥

× × × ×

इस के आगे का वर्णन इससे भी अधिक अश्लील है जिसे उद्धृत करना सभ्यता के प्रतिकूल है।

"मानासह" नामक पुस्तक विद्यासुन्दर के बाद रची गई है, अतएव इस की भाषा विद्यासुन्दर से प्रौढ़ है। इस पुस्तक में कवि ने मानसिंह के जशोर (बंगाल में है) विजय का वर्णन किया है।

"चौरपंचाशत्" ५० श्लोकों की संस्कृत पुस्तक शिहलन उपनाम चोरकवि प्रणीत है। भारतचन्द्र ने इसके प्रति श्लोक का दो अर्थ किया है, जिस का एक अर्थ विद्या और दूसरा काली पर घटित होता है। भारतचन्द्र ने श्लोकों का अर्थ मनमाना बढ़ा कर किया है इसलिये श्लोकों के अर्थ में प्रायः जटिलता आगई है, जिस को समझना कठिन है। अर्थ सहित श्लोकों को उद्धृत करने से लेख विस्तार बहुत बढ़ जायगा, अतएव मैं उन्हें यहां पर स्थान देना उचित नहीं समझता।

"रसमंजरी" में कवि ने नवों रसों का नामोल्लेख करके सर्वप्रधान शृंगार रस का वर्णन किया है। भारतचन्द्र के शृंगार रस वर्णन में कुछ विशेषता है। इन्होंने अवस्थाभेद से नायिकाओं के जितने भेद होते हैं उन्हीं का [illegible]न किया है, जिस का वर्णन हिन्दी में पाया जाता।

भारतचन्द्र की कविता गम्भीर और सुन्दर भावों की दृष्टि से तो बहुत उच्चकोटि की नहीं है,; परन्तु वह ललित भाषा और अलङ्कारों के सुन्दर समावेश द्वारा पाठक का मन निःसन्देह अपनी ओर आकर्षित कर लेती है। भाव की दृष्टिसे विचार न कर यदि भाषा की दृष्टि से विचार किया जाय, तो भारतचन्द्र निःसन्देह प्राचीनकालीन कवियों में सर्वश्रेष्ठ स्थान पाने योग्य हैं। इनकी तरह सुन्दर वार्ता द्वारा चित्तहरण करने में प्राचीन काल का और कोई भी कवि समर्थ नहीं हुआ। परन्तु इतना होते हुए भी भारतचन्द्र की रचना अनेक स्थलों पर शिथिल होगई है, क्योंकि इन्होंने कहीं २ पर अनुप्रास के फेर में पड़ कर वर्णनों को बहुत बढ़ा दिया है।

मैं पाठकों के मनोरञ्जनार्थ भारतचन्द्र की कुछ कविताओं को नीचे उद्धृत करता हूँ।

दीनजने ताराइते यदि गो कातरा।
निर्गुणी तारिणी नाम धरेछो गो तारा॥
दयादाने त्रिलोचना
राखिले कि पितार धारा॥
तन्त्रे आछे शिव उक्ति, दुर्गानाम लइले मुक्ति।
तबे किसे मिछा युक्ति,
शुनो ओ गो तारः॥

तोमार तनय तवे सुन्दर ऐ भवाणवे।
पुनर्बार बद्ध होवे।
जननी जठरे तारा ॥

अर्थ—ऐ तारा, जब तुम दीनों को तारने में कातर (असमर्थ) थीं तब तुमने तारिणी नाम व्यर्थ ही रखा है। (क्योंकि तारने का गुण तो तुम है ही नहीं)। ऐ त्रिलोचना क्या तुमने दीनों को दया-दान करके पिता की मर्यादा (तारा नाम रखने की मर्यादा) स्थिर रक्खी है। तन्त्र में शिवजी ने कहा है कि दुर्गा का नाम लेने से मुक्ति होगी। तो ऐ शिवजी की भार्या! सुनो, क्या शिवजी का बतलाया उपाय झूठ है? (यदि ऐसा है) तो तुम्हारा पुत्र "सुन्दर" इस संसार सागर में आकर फिर माता के पेट में बंधेगा।

भारतचन्द्र ने अनेक स्थलों पर छन्द और शब्द के ऐश्वर्य से बहुत ही उत्तम चित्र खींचा है। वर्णित विषय को पढ़ते हो उसका चित्र नेत्रों के सामने उपस्थित हो जाता है। नीचे भैरवरूप महादेव जी का जो चित्र खींचा है वह बहुत ही उत्तम है; इससे कवि की छन्द और भाषा दोनों के ऊपर अद्भुत अधिकार प्रगट होता है। ऐसे ढंग के वर्णन बंगला-साहित्य में विरले ही हैं, परन्तु ये भारतचन्द्र की कविता में अधिकता से मौजूद हैं।

महारुद्र रूपे महादेव साजे।
भमम्भम् भमम्भम् शिङ्गा घोर बाजे ॥
लटापट जटाजूट संघट्ट गंगा।
छलच्छल ढलढ्ढल कलकल तरंगा ॥
फणाफण फणाफण फणी फण गाजे।
दिनेश प्रतापे विश्वनाथ साजे ॥
धकं धक धकधक ज्वले वन्हि भाले।
भमम्भम् भमम्भम् महा शब्द गाले ॥

अर्थ—महारुद्र के रूप में महादेव जी शोभयमान हो रहे हैं, वे भम् भम् भम् जोर से नरसिंहा बजा रहे हैं। उनके लट पट जटा जूट में गंगा जी विराज रही हैं जिस की तरंगे छल छल, ढल, ढल, कलकल, कर रही हैं। सर्प अपने फणों से फण फण करके गरज रहा है। शिवजी के मस्तक पर धक, धक, धक, अग्नि जल रहा है और वह भम्, भम्, भम्, शब्द कर रहे हैं।

उपरोक्त छन्द में "छलच्छल, ढलढ्ढल, कलकल तीन शब्दों-द्वारा गंगाजी की तरंगों का संक्षेप में बहुत ही उत्तम वर्णन किया गया है। छलच्छल गंगाजी की तरंगों का संक्षेप में बहुत ही उत्तम वर्णन किया गया है। छलच्छल गंगा जी के प्रवाह को ढलढ्ढल निर्मलता को और कलकल जलके शब्द की विशेषता को प्रगट कर रहा है।

भारतचन्द्र की बहुत सी कविताएं ऐसी हैं जिसे हिंदी-अक्षरों में होने पर बंगला न जानने वाले पाठक भी समझ सकते हैं। यथाः—

काली-स्तवन।

जय देवि जगन्मयि दीन दयामयि।
शैलसुते करुणानिकरे ॥
जय चण्ड विनासिनि मुण्ड निपातिनि,
दुर्ग विघातिनि मुख्यतरे ॥
जय कालि कपालिनि मस्तक मालिनि,
खर्पर धारिणि शूल धरे ॥
जय चण्डि दिगम्बरि ईश्वरि शंकरि,
कौशिकि भारतभीतिहरे ॥

उक्त कविता को समझने में पाठकों को तनिक भी असुविधा न होगी। बंगला के प्राचीन कवियों की अधिकांश कविताओं

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में संस्कृत शब्दों की अधिकता है उन में बोल चाल के ठेठ शब्दों का प्रयोग बहुत कम है। सुतरां उन्हें साधारण बंगला जानने वाले पाठक भली भांति समझ सकते हैं।

भारतचन्द्र या बंगला के अन्य प्राचीन कवियों में से किसी ने हिंदी में न तो कोई पुस्तक लिखी है, न फुटकर कविता ही की है। उन्होंने पुस्तक के बीच बीच में ही हिन्दी कविताएं लिखी हैं। मैं यहां पर भारतचन्द्र के पद्य उद्धृत करता हूं।

धाँ धाँ गुड़ गुड़ बाजे नगारा।
बाजे रबाब मृदङ्ग दोतारा॥
पयदल कलबल भूतल ढलमल।
साजिल दलबल अटल अबारा॥
दामिनी तकतक धानकी धक धक।
झकमक चकमक खर तरवारा॥
ब्राह्मण रजपूत क्षत्रिय राहुत।
मोभल माहुत रण अनिवारा।
भौड़ कलावत नाच गावत।
भारत अभिमत गीत सुधारा॥

पाठकगण, देखिए, कविता कितनी शुद्ध हिन्दी में लिखी गयी, है इस में बंगला के एक भी शब्द नहीं हैं। नीचे दूसरी कविता भी देखिए

एक समय वृषाभानु-कुमारी।
मातु पिता सन बैठि निहारी॥
होर लगा औ अब इती जो आयि।
भेट चल नन्दलाल बोलायि॥
देख नहिं आंख सुन नहिं कान।
का कुछ आई हो आड़त खानि॥

पाठकगण! उपरोक्त कविता हिन्दी ही है, परन्तु पाठ अशुद्ध होने के कारण उसका कुछ अंश समझ में नहीं आता; शुद्ध पाठ न मिलने के कारण कविताओं को उद्धृत करने में मुझे बड़ी माथापच्ची करनी पड़ी है। यदि कविताओं के शुद्ध शुद्ध पाठ मिलते तो मुझे विस्तृत लेख लिखने और आप लोगों को पढ़ने, दोनों में सुविधा होती।

अब भारतचन्द्र की एक संस्कृत कविता भी देखिए, इसकी भाषा कैसी मधुर है।

अन्नपूर्णा-स्तव

प्रसीद मातरन्नदे धराप्रदे धनप्रदे।
पिनांकि पद्मपाणि पद्मयोनि सङ्ग सम्मदे॥
करस्थ-रत्नदर्विका सुधानपात्र शर्म्म दे।
पुरस्थभुक्त भक्तशम्भु-नर्त्तने कटाक्षदे॥
सुधान्वि प्रभातभानु भानुदन्त कच्छदे।
स्मित प्रकाशित क्षुणप्रभांशु मुक्तिकारदे॥
विलोललोचनाञ्चलेन शान्तरक्तपारदे।
प्रसीद भरतस्य कृष्णचन्द्र भक्ति सम्पदे॥

पाठकगण! आप लोग भारतचन्द्र की बंगला-हिंदी और संस्कृत कविताओं का रसास्वादन कर चुके। समय और सुअवसर होने पर फिर कभी बंगला कवि को लेकर आपके सन्मुख उपस्थित होऊंगा।

नव्वो और राधा

(लेखिका—श्रीमती लक्ष्मीदेवी जौहरी)

प्रथम परिच्छेद

दो सखियों की भेंट

दिन थोड़ा चढ़ चुका है, दस बजने में अभी कुछ देर है सब कचहरी, दफ्तर तथा स्कूल-वाले घरों में स्त्रियों को स्वराज्य देकर चले गये। दिन बहुत न चढ़ने पर भी गर्मी और लूके कारण घरों से बाहर निकलना दुर्लभ जान पड़ता है। फिर भी विद्यार्थी शीघ्रता से पाठशालाओं की ओर दौड़े जारहे हैं। कन्यायें अपनी २ गाड़ियों पर सवार गाड़ीवानों से यह कहती हुई चली जारहीं हैं, जल्दी चलो कहीं घंटा न बजजावे तो हमारी अध्यापिका अप्रसन्न होंगी। कुछ गाड़ी में बैठकर अपना पाठ याद करने में तन मन से लगी हुई हैं। यह तो बाहर की हालत हुई, अब हम अपने पाठकों का चित्त गृहस्थियों के घरकी ओर आकर्षित करते हैं।

गृहदेवियां बड़ी शीघ्रता से ओफ बड़ी गर्मी है, कहती हुई अपने पुत्रों तथा पतियों के बिखरे हुये वस्त्रों को यथा स्थान पर रख रहीं हैं, फिर कहतीं हैं चलें जल्दी से भोजन करलें फिर बड़ी गर्मी हो जायगी, कुछ सोच रही हैं चल अमुक के घर चल कर आज मध्यान्हकाल को व्यतीत करेंगी, कुछ कह रही हैं अरे, इतने लम्बे दिन काटे नहीं कटते, कुछ कामकाजी स्त्रियां सोच रही हैं कि जल्दी से भोजन के पश्चात् कुछ सीना लेकर बैठें कहीं ऐसा न हो कि कोई निकम्मी स्त्री आजावे तो कार्य्य में विघ्न पड़े। कहां तक लिखें जितने घर जितनी स्त्रियां, उनके उतने ही विचार।.....

इसी समय रानी देवी भी रसोई के आवश्यकीय कार्य्यों से निश्चिन्त हो पान खाकर किंचित विश्रामार्थ हाथ में पुस्तक ले अपने विश्रामभवन की ओर जाने ही को थी कि एक अधेड़ युवती साधारण से कद की, गुलाबीरंग की साड़ी पहिने, आभूषणों से सुसज्जित, सिर से पांव तक चादर ओढ़े छम २ करती हुई आई, और रानीदेवी के हाथ में पुस्तक देख कर कहने लगी। "मालूम होता है कुछ पढ़ रही हो, तुम्हारे पास कोई आवे तो क्या आवे, तुम्हें तो किताब से छुट्टी ही नहीं मिलती"।

रा० दे०—राम राम बहिन आओ, बैठो तुम आगईं, बहुत दिनों में आईं, कहो कैसे भूल कर आगईं, सब कुशल तो है?

आई हुई युवती—कहो बहिन अच्छी तो रहीं, आजकल दोपहरी तो इतनी बड़ी होती है कि काटे नहीं कटती, कहो तुम दिन भर क्या करती हो।

रा० दे०—बहिन मुझे तो दिन मालूम भी नहीं पड़ता, मैं तो यही कहती हूं कि जरा दिन और बढ़ जावे, गर्मी के कारण वैसे ही काम कम होता है।

आ० यु०—समझ में नहीं आता कि तुम्हें इतना क्या कार्य्य होता है, जो न तो तुम कहीं आती जाती हो और नहीं किसी से मिलती हो, क्या तुम्हारा चित्त भी नहीं उदास होता। तुम्हारे क्या ऐसे काम बढ़गये हैं, जो न तो कहा आओ जाओ और न किसी से मिलो क्या तुम्हारा जी भी नहीं ऊबता?

रा० दे०—मैं यह सोचती हूं कि यदि कहीं जाऊं, इतनी देर में कोई अखबार या किताब पढ़ूं जिस से कुछ लाभ हो।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आ० यु०—राधा और उर्मिला कहां हैं?

रा० दे०—स्कूल पढ़ने गई हैं शाम तक आजावेंगी।

आ० यु०—(आश्चर्य से) स्कूल हैं। तुम तो ऊंच नीच कुछ भी नहीं सोचतीं स्यानी लड़की को अकेला स्कूल भेज कर क्या बदनामी उठाओगी। आज कल पढ़ी लिखी लड़कियों की कैसी २ बदनामी फैल रही है।

रा० दे०—क्या अकेली मेरी लड़कियां ही पढ़ने को थोड़ी ही जाती हैं वहां पर तो कोई दो ढाई सौ लड़कियां पढ़ने जाती हैं, और रही अकेले की सो साथ में स्कूल की दाई और २ कन्यायें गाड़ी में आती हैं, वही दाई ले जाती तथा पहुंचा जाती है, और स्कूल में तो कई २ अध्यापिकायें लड़कियों को शिक्षा देने तथा देखने भालने के लिये हैं, वहां बुरी बात क्या सीख सकी हैं। वहां तो जो कुछ सीखेंगी ढंग की बात ही सीखेंगी।

आ० यु०—देखो बहिन बुरा न मानना लड़कियों को पढ़ाने से क्या लाभ? क्या हमें उनकी कमाई खानी है? चार दिनकी मेहमान हैं। विवाह हो जावेगा, अपने घर चली जावेंगी।

रा० दे०—क्यों बहिन क्या कमाने ही के लिये पढ़ाते हैं। क्या अनपढ़ अपना पेट नहीं भर लेते, जानवर भी तो खाते और आनन्द करते हैं। मनुष्यों और पशु पक्षियों में इतना ही तो अन्तर है कि मनुष्यों में विद्या और बुद्धि अधिक है। किसी कवि ने भी कहा है—

श्लोक—माता शत्रु पिता वैरी येन बालो न पाठितः। न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा॥

अर्थः—कि वह माता पिता वैरी और शत्रु हैं, जिन्होंने बचपन में बालकों को नहीं पढ़ाया (वह बहुत सुन्दर होने पर भी) पंडितों की सभा में इस प्रकार शोभा नहीं पाते जैसे कि हंसों की सभा में बगुला शोभा नहीं पाता इस कारण माता पिता को बचपन से ही अपने पुत्र पुत्रियों को अवश्य ही पढ़ाना चाहिये, यह तो हमारे शास्त्रकारों का कहना है, वैसे भी देखो बहिन! पढ़ने लिखने से सभ्यता आती है, फिर कन्याओं को तो विशेष शिक्षा देनीही चाहिये, क्योंकि पुत्रोंके पढ़ाने और शिक्षा देने से एक ही कुल का नाम उज्वल होता है किन्तु कन्याओं के पढ़ाने से तो दो कुलों में उजाला होता है। पुत्र तो केवल एक ही कुल का दीपक है कन्या दो कुलों की दीपका है, इस कारण कन्याओं का पढ़ाना और शिक्षा देना अति आवश्यक है। पढ़ने लिखने से प्रथम तो सभ्यता आती है, दूसरे संसार की दशा ज्ञात होती है, तीसरे चाहे सब साथ छोड़दें, किन्तु विद्या एक ऐसी मित्र है कि कभी साथ नहीं छोड़ती। विपत्ति में सहायक दुःख में उद्धार करने वाली है, जैसा कि किसी कविने कहा है:—

कवित्त—विद्या समान नहीं जग में धन दूसर राज धनादि बखाना। चोर हरै न बटै न घटै कछु काम पड़े तो करै बल नाना।

प्यारी बहिन! और सब धन तो देने से घटते हैं, केवल विद्या ही एक ऐसा अनोखा धन है कि जितना ही इस को दान किया जाय बढ़ता है। प्राचीन काल में देखो जब स्त्रियां पढ़ी लिखी होती थीं तो हमारे गृहस्थ स्वर्गधाम बने रहते थे। जब से स्त्रियों की शिक्षा छूटी तब से ही गृहस्थ के सब सुख लुप्त गये और नरकधाम बन गया। घर २ आज कल यही देखने में आता है कि यदि आज सास बहू में अनबन है, तो कल पति पत्नी में झगड़ा है। आगे चल कर देखिये, देवरानी जिठानी के अलग चूल्हा चक्की रक्खे हैं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आ० गु०—वाह ! यह तो तुम ने खूब कहा, एक तुम पढ़ाने लगीं तो क्या सारी दुनियाँ अपनी लड़कियों को थोड़ा ही पढ़ावेंगी और क्या अनपढ़ स्त्रियां गृहस्थी नहीं चला सकीं। मैं तो देखती हूँ कि पढ़ने से कन्याय दिन प्रति दिन निकम्मी होती जाती हैं। गृहस्थीके कामों से घृणा करने लगती हैं। अभी उस रोज़ नब्बो को बाबूजी कहते थे कि उनके एक मित्रने पढ़ी लिखी कन्या से विवाह किया उनके नाक में दम आगया है। वह सास खसुर का कुछ भी सत्कार नहीं करती, पति का तनिक भी लिहाज़ नहीं करती। सब के सामने पति से बात करने को तैय्यार हो जाती है, बात २ पर नाक भौं चढ़ा २ कर कहती है, मैं रोटी पका कर क्या करूं। प्रत्येक समय कुर्सी पर बैठी २ अख़बार पढ़ा करती है। जहां कोई नये फ़ैशन का वस्त्र या आभूषण देखती है उसे बनवा कर तब चैन लेने देती है। इतना भी नहीं सोचती कि कहां से इतना रुपया आवेगा, और नाज़ुकपने के मारे तो दम निकला जाता है। पैर छूना तो वह किसी के जानती ही नहीं। घूंघट निकालना तो मानो उसके लिये महा जञ्जाल है। और क्या कहूं बहिन ! अपने कपड़े भी आप सीना नहीं जानती निर्लज्जता तथा निकम्मेपने की हद्द हो गई है। राम २ मैं तो कभी अपने नब्बो को पढ़ने न भेजूंगी। मुझे क्या पढ़ा कर अपनी बदनामी थोड़ी ही करानी है।

रा० दे०—राम २ ऐसा मत कहो क्या लड़की को मूर्ख रख कर उसका जन्म बिगाड़ोगी। भला मैं तो बातों में ऐसी लीन होगई कि पान तक देने की सुधि न रही, तनिक ठहरो पान लगा लाऊं तो तुम्हें सविस्तार यह सब बातें समझाऊं। इतना कह रानीदेवी पान लगाने के लिये वहां से उठगई, पाठकगण ! आप आगन्तुक स्त्री के बारे में जानने को उत्सुक होंगे। इस आई हुई स्त्री का मकान भी रानी देवी के मकान के पास ही बना हुआ है, यह जाति की ब्राह्मणी होने पर भी स्वर व्यंजन तक से अनभिज्ञ हैं। यह पं० हीरालाल की धर्मपत्नी पार्वती है। हीरालाल एक सामान्य दफ्तर में १००) मासिक पाते हैं। इनको भी अन्य कर्म्मचारियों की भांति सुबह दस बजे से पांच बजे तक कार्य्य करना पड़ता है। आज उन्हीं की स्त्री पार्वती अपने पति के दफ्तर चले जाने पर अपनी पुरानी सहेली रानीदेवी के पास मिलने को आई है, या यों कहिये अपनी लम्बी चैड़ी दोपहर काटने आई है। यह स्त्री शिक्षा से अभी बिलकुल अनभिज्ञ हैं, जैसा कि ऊपर के बार्तालाप से विदित होता है। इस की भी एक कन्या है, इसको न पढ़ाने के लिये वे ऊपर कह आई हैं।

रानीदेवी बड़ी शीघ्रता से कुछ पान लगा कर ले आई और इस प्रकार कहने लगी—"देखो बहिन ! पढ़ने से कोई थोड़े ही बिगड़ जाता है। यह सब बातें तो माता पिता की शिक्षा ही से आती हैं। क्या तुमने नहीं देखा कि घर २ मातायें जब कन्यायें छोटी होती हैं तब ही से उन्हें क्या सिखाती हैं, कहती हैं बेटी सास को गाली कैसे देगी, ससुर की डाढ़ी कैसे खींचोगी, पति जब कुछ कहेगा कैसे उत्तर देगी, इसी प्रकार कह कह कर अपने आप को गाली दिलवातीं तथा पिटवातीं और प्रसन्न होती हैं। कैसे शोक की बात है कि बचपन से ही ऐसे २ संस्कार डाल देती हैं तो फिर कन्यायें बड़े होने पर सुसराल जाकर कैसे सब के सभ्य अच्छा व्यवहार कर सकती हैं—और रही स्कूल की बात सो तुम्हीं सोचो बहिन ! कि स्कूल में तो केवल पांच घण्टे ही शिक्षा दी जाती है उस में भी ऐसी २ पुस्तकें पढ़ाई जाती हैं शिक्षा का भंडार है। रही बुरी आदतें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

110471

सो मैं ऊपर अभी कह आई हूँ कि जैसा कि अपनी माता आदि को व्यवहार करते देखती हैं वैसा ही करती है। ध्यान से विचार करो २४ घण्टे का दिन रात होता है उसमें पांच छः घंटे केवल पढ़ाई होती है, एक घंटा आने जाने का। इस हिसाब से ६ घंटे कन्यायें बाहर रहती हैं और १८ घंटे घरमें रह कर शिक्षा पातीं हैं, तो किस का प्रभाव अधिक पड़ेगा। और फिर शिक्षा भी आज कल कैसी दी जाती है कि जहां कन्यायें तीसरी चौथी कक्षा तक पहुंचीं पढ़ना शीघ्र रोक दिया जाता है और विवाह कर दिया जाता है। अपना ध्यान उन की शिक्षा की और तनिक भी नहीं देतीं, थोड़ा पढ़ कर उन में अपने आप घमण्ड आ जाता है। क्या तुमने यह कहावत नहीं सुनीं—अधजल गगरी छलकत जाय। इसके अतिरिक्त उनमें शिक्षा कुछ होती ही नहीं है, जहाँ दो चार किताबें पढ़ गईं बुरे २ किस्से कहानी पढ़ने लगतीं हैं जिस से रहे सहे आचरण तथा मन और भी बिगड़ जाते हैं। और रामू की बहू की बात जो तुमने कही सो वह पढ़ी ही क्या है? केवल थोड़ी सी हिन्दी पढ़ी है। देखो न श्रीराम की बहू जो अंग्रेजी की ऐन्ट्रेन्स पास है और मध्यमा तक संस्कृत पढ़ी है, तुम्हीं बताओ किस सभ्यता से रहती है। क्या तुमने उसे नहा देखा, जहां कोई गया नीची निगाह किये घूंघट निकाले, झट बिछौना बिछा कर सावधान होकर बैठ जाती है। चाहे कोई कितनी ही बातें क्यों न करे उसे, कुछ मतलब नहीं। घरके काम काज किस प्रीति और सुघड़ता के साथ करती है कि जो कोई देखे चकित रह जावे। सास सौतेली है किन्तु किस प्यार से रहती है कि मां बेटी क्या रहेंगी—उस की चतुराई सब को आश्चर्य्य में डाल देती है। सुबह सब से पहिले उठ कर सास के उठने तक अपने आवश्यकीय कार्यों से निवृत्त होकर घर में बुहारी दे रसोई आरम्भ कर देती है और रात को सब से पीछे एक घण्टे तक सास के पांव दाब कर सोती है। शिक्षा का प्रभाव कभी बुरा नहीं होता।

पार्वती—ऊंह बहिन! तुमने तो बड़ी लम्बी चौड़ी वक्तृता कही आखिर को पढ़ना आता किस काम है? विवाह हुआ और कन्यायें सुसराल में चली जाती हैं, फिर पढ़ी और अनपढ़ एक समान हो जाती हैं। जितना रुपया पढ़ाई में लगावें उस से कहीं अधिक विवाह में लगाकर विवाह करें जिस से चार मनुष्य देखें, प्रशंसा तो करें कि उसके घर से इतना दान दहेज़ आया।

रा० दे०—मुझे तो तुम्हारे ऐसे विचार देख कर शोक होता है। विचारो तो सही विवाह होने के बाद ही तो यह आवश्यकता होती है कि शिक्षिता कन्यायें हों। गृहस्थ में बात बात पर विद्या और बुद्धि की आवश्यकता पड़ती है कि यही कन्यायें भावी मातायें हैं। सुनो—पढ़ी लिखी कन्याओं से कितने लाभ होते हैं-(१) पढ़ी लिखी माताओं की सन्तानें अच्छी और सुशिक्षित होती हैं क्योंकि माता ही को सब से बड़ा गुरू हमारे शास्त्रकारों ने बतलाया है-"जैसी माता वैसी बेटी" यह कहावत भी तुमने सुनी ही होगी। जिस दिन से बालक गर्भ में आता है, मातायें यदि चाहें तो अपनी उत्तम शिक्षा द्वारा आदर्श बना सक्ती हैं। क्योंकि जो कुछ मातायें करती हैं उस का प्रभाव सन्तान के ऊपर अवश्य ही पड़ता है-क्या तुम वह महाभारत वाली अभिमन्यु की कहानी भूल गईं, जब कि कौरवों और पाण्डवों में युद्ध हो रहा था और अर्जुन दूसरी ओर लड़ने को गये थे।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

उस समय कौरवों के सेनापति (गुरु द्रोणाचार्य) ने पांडवों को पराजित करने के लिये चक्रव्यूह रचा था। जिसमें अर्जुन के अतिरिक्त कोई दूसरा घुसना और तोड़ना नहीं जानता था। पांडवों के लिये बड़े संकट का समय था ऐसे कठिन समय में युधिष्ठिर अपने भाइयों से कहते हैं कि "हे भीम! आज अर्जुन की अनुपस्थिति में कौरवों से हारना पड़ेगा, क्योंकि सिवाय अर्जुन के उसे कोई तोड़ना नहीं जानता।" अभिमन्यु अर्जुन का सुकुमार पुत्र, सिंह की भांति गर्ज कर कहता है—"हे चाचा आप अर्जुन की अनुपस्थिति में उन का अपमान क्यों करते हैं, क्या आपको नहीं मालूम कि इस समय यदि अर्जुन नहीं तो अर्जुन का अंश तथा माता सुभद्रा का गर्भ से ही शिक्षित बालक उपस्थित है। आप आज्ञा दें जिस से कि अपनी माता की शिक्षा तथा दूध को सफल करूं"। युधिष्ठिर—"हे पुत्र! तुम अभी सुकुमार हो तुम व्यूह और युद्ध की बात क्या जानो" अभिमन्यु—नहीं चाचा विदुषी माता का पुत्र गर्भ से ही सब सीख लेता है, जिस समय मैं अपनी माता के गर्भ में था तो पिता जी इसी व्यूह और युद्ध की बात कर रहे थे उन्होंने इस व्यूह को छेदने तथा घुसने का हाल ही कह पाया था कि मेरी माता को नींद आ गई और मैं निकलने की विधा से अनभिज्ञ रह गया।" अभिमन्यु चक्रव्यूह को तोड़कर घुस जाता है किंतु निकलने की युक्ति न जानने के कारण वहीं प्राण दे देता है। सो हे बहिन! ऐसे अनेकों उदाहरण पड़े हैं जिन से यह सिद्ध होता है कि गर्भ से ही माताएं बालकों को शिक्षा दे सकती हैं और यही कन्याएं भारत को सुधारने तथा उन्नति के शिखर पर पहुंचाने वाली हैं। (३) जब स्त्रियां आप पढ़ी हैं तो उन्हें यह आवश्यकता नहीं कि कन्याओं को पाठशाला भेजें क्योंकि वह स्वयम् पढ़ा सकती हैं। मुझे ही देखो न यदि स्वयम् इतनी पढ़ी होती तो उर्मिला और राधा को स्कूल क्यों भेजती। (४) पढ़ी लिखी कन्यायें यह भी ठीक २ जान लेती हैं कि रोगियों की सेवा कैसे करें। प्रायः देखा जाता है कि अनपढ़ माताएं झाड़ फूंक में ही बच्चों को मार डालती हैं। क्योंकि उन्हें इस बात का ज्ञान नहीं कि बच्चा किस रोग से पीड़ित है और उसे क्या औषधि दें।

आ० यु०—तो क्या तुम राधा को डाक्टरी भी पढ़ाती हो, चलो अब तुम्हें डाक्टर भी नहीं बुलाना पड़ेगा।

रा० देवी—स्कूल से आकर अपने पिता जी से कुछ वैद्यक भी पढ़ती हैं और प्रातःकाल स्कूल से जाने से पहले मैं भी कुछ धार्मिक शिक्षा देती हूँ और छुट्टी के दिन घर के काम काज तथा सीना पिरोना सिखाती हूं। पढ़ने के गुण तो बहुत हैं कहां तक कहूँ तुम तो इतने ही में ऊब गईं।

रानी देवी:—अपनी बात पूरी भी न करने पाई थी कि दोनों कन्याएं हाथ में पुस्तकों का बस्ता लिये आईं, और रानीदेवी तथा नन्हों की मां पार्वती को प्रणाम कर सभ्यता से बैठ गईं।

हमारी पाठिकाएं समझ गई होंगी कि यह आई, हुई कन्याएं रानीदेवी की होनहार पुत्रियाँ राधा तथा उर्मिला हैं, जिन्होंने दो रमणियों की बातों के तांते को तोड़ दिया। हमारी पार्वती ने भी बड़े ध्यान से उन कन्याओं की ओर देखा और मन ही मन सराहने लगी कि इतने ही में एक और कन्या जिस की आयु अनुमान से ६ वर्ष की होगी, दौड़ती हुई आई। इसके हाथ में गिट्टे होने से यह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जान पड़ता है कि अभी खेल कर आ रही है। सिर के बिखरे हुए बाल, मैले पसीने से तर कपड़े, दो चार स्थान पर फटे हुये थे। रंग गेहुंआ, नकशा अच्छा सुडौल, चञ्चल आंखें। आते ही कहने लगी-"अम्मा जल्दी घर को चलो, दादा आते होंगे।"

न० मा०-अरी नब्बो तू तो बड़ी खिलाड़िन है, देख राधा और उर्मिला कैसी अच्छी गुड़ियां सी सजी बैठी हैं। किन्तु तू तो कभी खेल के मारे कङ्घी भी नहीं देती। और यह नई धोती तूने कहां फाड़ डाली।

नब्बो—वह तो अंग्रेजों के साथ रहती हैं, अंग्रेजी स्कूल में पढ़ती हैं, कुछ दिनों में ईसाई हो जावेंगी। क्या मुझे ईसाई थोड़े ही बनना है?

न० मा०—चल हट बकवादिन! कहीं की बात बनाने में क्या नुकसान है?

नब्बो के उत्तर को सुनकर उसकी मां तो झुंझला गईं रानीदेवी तथा उनकी कन्यायें चुपचाप नीची गर्दन किये सुनती रहीं। पार्वती जाने के लिये तैयार हो गई कि कि रानीदेवी ने कहा-तनिक तो और ठहरो बहिन! बड़ी देर की आई हो, कुछ जलपान तो करलो। मैं तो बातों में ऐसी लग गई कि कुछ सुध भी न रही। राधा कुछ जलपान के लिये तो ले आओ।

माता की आज्ञा पाते ही राधा बड़ी शीघ्रता से उठी और रकाबी में फल तथा मीठा ले आई और बोली लो चाची जलपान तो करो। आओ बहिन नब्बो तुम भी कुछ थोड़ा सा खालो। नब्बो की माता भी रानी देवी के बहुत आग्रह से थोड़ा जलपान करने लगी, इतने में उर्मिला एक लोटे में जल तथा एक शुद्ध झाड़न ले आई, राधा पान लगाने चली गई।

न० मा०—क्यों बहिन! तुम राधा का विवाह कब करोगी? अब तो वह बहुत सयानी हो गई है, तुम्हें चैन कैसे पड़ता है?

रा० दे०—बहिन शीघ्रता क्या है अभी तो पढ़ रही है १५ साल की होकर अब १६ वीं में पड़ी है जब १६ वीं पूरी होकर १७ वीं साल लग जावेगी तब विवाह करूंगी इससे पहिले विवाह करना भी तो शास्त्रों में पाप कहा है—

न० मा०—मैंने तो अपनी नब्बो की सगाई बड़े अच्छे घर कर ली है अब की गर्मी में चाहे जो कुछ हो विवाह अवश्य ही करूंगी क्यों बहिन शास्त्रों में ऐसा भी तो लिखा है कि दश वर्ष के बाद भी तो कुमारी लड़की को घर में रखने से बड़ा पाप होता है। और पुराने जमाने से बचपन में विवाह होते चले आये हैं। फिर हम नई प्रथा क्यों चलावें न जाने कौन समय कैसा है?

रा० दे०—खूब कहा बहिन यही तो कहती हूँ यदि तुम स्वयम् पढ़ी लिखी होतीं तो शास्त्रों को देख सकती और कभी ऐसा न कहतीं। आजकल भेड़ चाल है जैसा जिसने कह दिया हमने विश्वास कर लिया क्योंकि हमारी बुद्धि में तो मोर्चा लगा हुआ है न। हम में तो शिक्षा ही नहीं जो धर्म और अधर्म को सोचें और जो तुम यह कहती हो जैसा हमारे पूर्वज करते आये हम भी करें। तो पहिले तो अवगुण किसी के भी न लेना चाहिये। दूसरे देखो प्राचीन काल में कैसे २ स्वयम्बर होते थे क्या रामायण में सीता जी का रामजी को जयमाल पहिनाने का हाल भूल गईं। क्या रुक्मिणी जी के कृष्ण जी को पत्र लिखने का समाचार नहीं सुना। पार्वती जी का शिवजी के लिये कई वर्ष घोर तपस्या करने की कथा भी तुम्हें याद नहीं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

अब तुम्ही सोचो यदि प्राचीन काल में बचपने में विवाह होते तो यह सब बातें कहां से होतीं, क्या बच्चों को भी कभी ऊंच नीच का विचार होता है। क्या गुड्डे गुड़ियों का भी स्वयम्बर हो सकता है। यदि समझ ही नहीं होती तो योग्य वर को कन्यायें कहां से से चुन सक्ती थीं। और जो आज कल बचपन के बिवाह तुम देखती हो। यह मुसलमानों के समय से प्रथा आरम्भ हो गई है, जब से यवनों ने अत्याचार आरम्भ किये तब ही से बाल विवाह की प्रथा आरम्भ हो गई। अभी रानीदेवी की बात पूरी न होने पाई थी कि नब्बो की मां उठ खड़ी हुई और बोलीं बहिन अब तो बड़ी देर होती है अब शाम होने में देर नहीं है, वह भी चाहें दफ्तर से आगये हों घर की चाबी भी मेरे पास है।

रा० दे०—क्यों बहिन चलीं अभी तो बात पूरी भी नहीं होने पाई।

न० मा०—बहिन किसी दिन तुम हमारे घर आना तब यह बात पूरी होगी।

रा० दे०—अच्छा देखो किसी दिन आने की कोशिश करूंगी राम २ बहिन इतना कह पार्वती अपने घर की ओर चल दीं।

उर्मिला--माता जी नब्बो किस बुरी तरह रहती है और अपनी मां को उत्तर देती है···

राधा—और उसे तो बात तक करने की अकल नहीं उस की मां विवाह करने को कहती है।

रा० दे०—बेटी मैंने उसे बहुतेरा समझाया किन्तु उस की समझ में कुछ नहीं आता आज का सब दिन भी इसी में व्यतीत हो गया। हाय! हमारे भारतवर्ष में किस प्रकार का अन्धकार छाया हुआ है भगवन्! अब तो दया कर सुबुद्धि दें। अन्यथा अबला जाति की नाव डूबी जा रही है।

द्वितीय परिच्छेद

लड़की पराया धन है।

पूस का महीना है, जाड़े खूब कड़ाके के पड़ रहे हैं, संसार की विचित्र लीला है। कितने ही लोग जाड़े में कांप रहे हैं, कितने ही अलाव पर ताप रहे हैं, कितने ही कमरा बन्द किये आनन्द से बैठे हुए चैन कर रहे हैं। कितने ही विचारे निर्धन और अनाथ जाड़े के मारे व्याकुल हो रहे हैं। कितनों ही ने अग्नि माता की शरण ली, कितनों ही से अग्नि माता भी रुष्ट हो गई है, वे विचारे एक मात्र भगवान का ही आश्रय लिये सिकुड़े हुए किसी वृक्ष का सहारा लिये रात काट रहे हैं। कोई जो सामान्य अवस्था के हैं खा पीकर निश्चिन्तताई से अपने २ बिस्तरों पर वार्तालाप करते २ रात्रि का कुछ भाग बिताने की चेष्टा कर रहे हैं। कितनी ही शिक्षित माताएं अपने बालकों को वीर पुरुषों तथा वीर देवियों की कथायें कह २ कर समय व्यतीत कर रही हैं। कितनी ही देवियें अपने पतियों से आवश्यक बातों को कहने लिये अवकाश का समय देख साहस कर रही हैं—ऐसे अवसर पर हम अपने पाठकों के मन को रानी देवी के गृह की ओर ले जाना उचित समझते हैं—देखें वहां क्या हो रहा है।

अब यहां हम को रानीदेवी का भी कुछ परिचय देना उचित जान पड़ता है। यह प्रेम बाबू की सुशीला पत्नी है। प्रेम बाबू जाति के कायस्थ हैं, अवस्था इनकी लगभग ४० वर्ष के होगी। आप दो कन्या और एक पुत्र के पिता हैं। कन्याओं से हमारे पाठकगण भलीभांति परिचित हैं, पुत्र भी यथोचित शिक्षा पा रहा है। आप बड़े ही उच्च विचार के सज्जन हैं, स्त्रीशिक्षा के तो अत्यन्त प्रेमी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हैं। इनका सदा से यही उपदेश चला आता है कि वैदिक धर्म पर चलना तथा पुत्र और पुत्री को समान जानना। हमारे पाठकों को ऊपर के वार्तालाप से इन के स्वभाव का परिचय भली भांति होगया होगा—अहा घर में प्रवेश करते ही मन कैसा प्रसन्न होता है, जिधर देखो शुद्धता दृष्टिगोचर होती है, कोने २ में सफाई हो रही है, प्रत्येक वस्तु यथा स्थान रक्खी हुई है। एक ओर आलमारी में पानदान रक्खा है तो दूसरी ओर मशीन रक्खी है, मेज पर एक ओर किताबें चुनी रक्खी हैं, तो दूसरी ओर हारमोनियम बाजा दिखाई देता है। प्रत्येक वस्तु यथा स्थान पर रक्खी हुई उस की शोभा बढ़ा रही है। क्यों न हो जहां पढ़ी लिखी बुद्धिमती स्त्रियां हैं वह गृहस्थ क्यों न स्वर्गधाम बने। रानीदेवी भी घर के कामों से निश्चिन्त होकर बैठी पान लगा रही थी कि इतने में बाहर से प्रेम बाबू आये और कहने लगे आज तो बड़ा जाड़ा है, अभी तुम लोग सोयी नहीं।

रा० दे०—अभी बजे ही कितने हैं, अधिक से अधिक सात बजे का समय होगा, बच्चे अपना पाठ याद कर रहे हैं।

प्रे० बा०—और तुम क्या कर रही हो (हंस कर) पान लगा रही हो।

रा० दे०—आप को तो बाहर से किसी समय अवकाश ही नहीं मिलता, कि घर में किसी बात पर विचार करें।

प्रे० बा०—आह! कहो, कौन सा कार्य्य तुम्हारा रह गया, जिस के लिये इतनी खिन्न हो रही हो।

रा० दे०—ईश्वर को धन्यवाद है कि आज जाड़ा पड़ा तो आप की सभा तो शीघ्र समाप्त हुई।

प्रे० बा०—आखिर कुछ कहो भी तो, ऐसी क्या विचारणीय बात है, इतना ठहरना पड़ा।

रा० दे०—विचारणीय कुछ भी नहीं यही कहना चाहती थी कि राधा आज १६ वर्ष की होगई कहीं उस के लियें वर की खोज करनी चाहिये।

प्रे० बा०—वाह! खूब, यही तनिक सी बात है, जिसके लिये इतनी व्याकुल हो रही थीं। अभी राधा को एन्ट्रेन्स और मध्यमा परीक्षा तो पास कर लेने दो।

रा० दे०—पढ़ाने को मैं कब रोकती हूं किन्तु कहीं वर की खोज तो करनी चाहिये फिर अच्छे लड़के खोजने में बड़ा परिश्रम करना पड़ता है। जब लड़की की उम्र अधिक हो जाती है तो योग्य वर भी मिलना कठिन हो जाता है।

प्रे० बा०—देखो तुमको इतनी शीघ्रता काहे की है-कन्याओं को सब से प्रथम शिक्षा देनी है, क्योंकि लड़कियें को दूसरे घर जाना पड़ता है-वहां पर सब नये २ मनुष्यों से काम पड़ेगा, और उस समय सब कोई आज्ञा देना चाहेंगे, उसके दोष और गुणों पर दृष्टि करेंगे तनिक २ सी बातों पर, धमकावेंगे, माता पिता की बुराई करेंगे कि कुछ सिखाया ही नहीं। इस लिये कन्याओं को ऐसी शिक्षा देनी चाहिये कि वे भी सुखी रहें और अपयश भी न हो।

रा० दे०—धार्मिक शिक्षा व गृहस्थ सम्बन्धी कार्य्य तो मेरी कन्यायें भली भांति सीख गई हैं-और राधा १६ वर्ष की भी होगई अब तो आप को घर की खोज ध्यानपूर्वक करनी ही चाहिये।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रे० बा०—यदि तुमने राधा को गृहकार्य में दक्ष कर लिया है तो मैं ने भी उसके लिये लड़का तलाश कर लिया है।

रा० दे०—खिज कर आप को तो हरदम ठठोली ही लगी रहती है। मुझे तो चिन्ता के कारण रातों रात नींद नहीं आती—कौन सा दिन होगा कि राधा का विवाह योग्य वर से कर के चैन से बैठूंगी। लड़की तो पराया धन है, तुम्हीं बताओ कब तक रक्खोगे।

प्रे० बा०—तो इतनी चिन्ता काहे की है, मछली तो हैं ही नहीं जो सड़ जावेंगी। न तुम्हारी राधा अनपढ़ या फूहड़ है, जो विवाह के लिये चिन्ता करो। पढ़ी लिखी लड़कियों के लिये अपने आप लड़कों की भांति विवाह के प्रस्ताव आते हैं। अभी उस रोज़ लीडर में मैंने कई एक लड़कों के नोटिस देखे हैं और लड़कों से पत्रव्यवहार भी कर रहा हूं।

रा० दे०—आख़िर दो एक का पता ठिकाना अथवा नाम मुझे भी तो बताओ।

प्रे० बा०—कुछ लड़कों के पत्र के उत्तर भी आये हैं, उन्हीं पर विचार करने तथा तुम्हारी सम्मति लेने ही को तो आज मैं बाहर से जल्दी आगया।

रा० दे०—तो मुझे खिजाने के ही लिये आपने इतने तर्क वितर्क किये। अच्छा अब आप लड़कों की बातें बतावें, मैं ध्यान से सुनूंगी।

प्रे० बा०—यह देखो एक तो यह सुरेश बाबू बैरिस्टर का पत्र है, (२) कृष्णलाल इञ्जीनियर का, (३) रमेश बाबू प्रोफेसर का।

रा० दे०—आप तो इतने बड़े २ घरानों के लड़कों से बात चीत करने लगे, शास्त्रों में कहा है कि विवाह वैर और प्रीति समान अवस्था वाले ही से करें—अपने से बड़े से करने में सदैव नीचा बनना पड़ता है, लड़की को भी सुख नहीं मिलता। बड़े घरों के लड़के दहेज़ भी अधिक मांगते होंगे।

प्रे० बा०—क्या तुमने नहीं सुना आज कल ऐसी बहुत सी सभायें खुल गई हैं कि जिसमें इस पिशाचिनी प्रथा को जड़ से नाश कर दिया गया। मैंने तो पहिले ही लिख दिया है कि केवल लड़की ही है। मैंने अपना सब धन लड़कियों की शिक्षा में व्यय कर दिया।

रा० दे०—अच्छा तो आप इन में से कौन से लड़के को योग्य समझते हैं, यह तो बहुत अच्छा हुआ कि दहेज़ प्रथा के विनाशार्थ भी सभायें खुल गईं। आशा है शीघ्र ही इस पिशाचिनी का नाश होगा। अभी कुछ दिन हुए तो कितनी ही कन्याओं ने आत्महत्या तक कर डाली। क्योंकि उनके माता पिता में इतनी सामर्थ्य नहीं थी कि अच्छे घर कन्यायें विवाह दें और नीच घर विवाह करना नहीं।

प्रे० बा०—हां जब से बंगाल प्रांत की स्नेहलता नामक बालिका ने मिट्टी का तैल डाल कर अपने आप को जला डाला, तब ही से इस दहेज प्रथा को दूर करने के लिये अनेक उद्योग होने लगे। अब लड़कों का हाल ध्यान से सुनो—

जो लड़का बैरिस्टर है अभी विलायत से आया है वैसे तो अच्छा है, शायद मांस मदिरा खाता हो, इसके रहन सहन और तरीके भी विलायती ढंग के मालूम पड़ते हैं, इस कारण मुझे ठीक नहीं जचता। और यह दूसरा लड़का जो प्रोफेसर है एक तो इस के माता पिता नहीं हैं दूसरे दुहाजू भी है। इस कारण

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस के बारे में विचार करना व्यर्थ है। यह तीसरा लड़का कृष्णलाल है यह मुझे बहुत ही अच्छा और योग्य जान पड़ता है। मेरी इच्छा है कि राधा का पाणिग्रहण इसी से करूं।

रा० दे०—मालूम तो मुझे भी यही अच्छा होता है—क्योंकि दुहाजू को तो मैं अपनी कन्या कदापि न विवाहूँगी, मैं तो दूसरों से कहती हूं कि कन्याओं को समानवयस्क तथा ब्रह्मचारी से विवाहनी चाहिये, और जब मैं ही उस नियम के विरुद्ध चलूंगी, तो संसार अपने आप मुझे बुरा कहेगा और कहने का असर तो तब ही पड़ सकता है, कि जब कि किसी कार्य्य को स्वयम् कर के दिखावें।

प्रे० बा०—यह तो है ही।

रा० दे०—और वह जो बैरिस्टर है उस को तो छोड़ ही दीजिये—वह अभी विलायत से लौट कर आया है, शिकार करता है और मांस मदिरा खाने वाला है इसे धर्म से क्या प्रेम होगा। मैं तो ऐसे से कभी विवाह न करूंगी। रहा इंजीनियर सो मुझे भी यही राधा के योग्य मालूम होता है। अच्छा यह तो बतलावें उस की आयु क्या होगी?

प्रे० बा०—लड़के की आयु जन्मपत्र से तो २६ साल की जान पड़ती है।

रा० दे०—प्रसन्न होकर तो साथ उसे मैं कभी न छोड़ूंगी। ईश्वर ने जैसी मेरी सुनी सब की सुने। जो सच्चे मन से ईश्वर की प्रार्थना करता है उसे दयासिन्धु भगवान कभी निराश नहीं होने देते।

प्रे० बा०—ओहो मालूम होता है तुम तो सिद्धनी होगई हो, जो चाहो मांगलो या यों कहो तुम्हारी इच्छा कामधेनु के समान है।

रा० दे०—आप तो साधारण बात का भी ठट्ठा उड़ाने लगते हैं, इन बातों को जाने दीजिये भला यह तो बतावें कि लड़के के माता पिता हैं या नहीं और क्या करते हैं?

प्रे० बा०—माता पिता सब हैं और इस लड़के के भी तीन भाई हैं—एक प्रोफेसर, दूसरा इंजीनियर और तीसरा भाई डिप्टी है, यह इंजीनियर सब से छोटा है।

रा० दे०—अहा! तो राधा भी इंजीनियरिंग हो जावेगी।

प्रे० बा०-तो तुम्हें भी यही लड़का पसन्द है। अब की बड़े दिन की छुट्टियों में चल कर हम तुम दोनों लड़के को स्वयम् देख आवें।

रा० दे०-मैं लड़के को देखने चलूं संसार क्या कहेगा, कहीं विवाह से पहिले दामाद को सासें देखती हैं, तुम्हारी सभी बातें अन्धेर की होती हैं। आवेग में आकर लोकरीति का एक साथ तोड़ देना उचित नहीं, इस में सब ही कुटुम्बीजन उपहास करेंगे।

प्रे० बा०—हैं इतनी पढ़ी लिखी होने पर भी तुम्हारे विचार अभी वैसे ही हैं। राधा की मां आज मुझे जान पड़ा तुम बड़े निर्बल दिल की हो।

रा० दे०—मेरे सब ही कुटुम्बी तो पुरानी लकीर पर चलने वाले हैं उन से पार पाना क्या सुगम है। हां मेरे विचार में यह आता है कि लड़के की फोटो मंगवाली जावे।

प्रे० बा०—बात तो ठीक मालूम पड़ती है किन्तु लड़के के रंग तेज तथा स्वास्थ्य का पूरा २ पता नहीं चल सकता। फोटो से प्रायः धोखा हो जाता है फिर पीछे पछतानः पड़ता है। रहा लड़के का स्वभाव और बोल चाल उसको यह फोटो क्या बतला सकी है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

रा० दे०—तो प्राचीन काल में भी तो यही प्रथा थी कि वर और कन्या का स्वयम्वर चित्र द्वारा होता था।

प्रे० बा०—मैं तुम से उस की हानी पहिले ही बता चुका हूँ इस कारण मुझे यह पसन्द नहीं। मुझे आश्चर्य तो यही है कि अभी तुम्हारे विचारों को भी सुधारने की बड़ी आवश्यकता है। अच्छा तुम्हीं बतलाओ उस में बुराई ही क्या है? यह सब बात तो पुरानी ही हैं? जैसे और कुप्रथायें जारी हो गईं वैसे ही यह भी प्रथा मूर्खता के कारण नाई और पुरोहितों ही ने निकाली है। अपने जी से ऐसे कुत्सित विचार निकाल डालो और लड़के को स्वयम् देख कर जांच करो तुम्ही सोच कर देखो बिना देखे विवाह करने में कितनी २ बुराइयां हैं।

रा० दे०—यदि आपकी यही इच्छा है तो यही सही, यह तो बतलावें लड़के के विचार कैसे हैं?

प्रे० बा—पत्रों से तो यही मालूम होता है कि उस के विचार आर्य्यसमाजी हैं, आज कल वह आर्य्यसमाज का मंत्री भी है। अब तो हर तरह से तुम्हारी इच्छा के अनुसार है केवल देखना ही रह गया है, अब तो प्रसन्न हो जाओ। ईश्वर ने तुम्हारी इच्छा पूर्ण की तथा चिन्ता दूर की।

रानी दे०—(एकाएक चौंक कर) मैं एक बात तो आपसे पूछना भूल ही गई और न आपने ही किशोरी के बारे में फिर कुछ बतलाया।

प्रे० बा०—कौन किशोरी?

रा० दे०—वही पंडित रामलाल की कन्या जिसके विवाह के विषय में आप उस दिन कह रहे थे, तो क्या उस बेचारी का विवाह उस बुड्ढे से हो ही गया?

प्रे० बा०—उसके विषय में तो मैं तुम से कहना भूल ही गया। उस रोज़ यही समाचार थे न, कि चार हजार पर उस के लोभी माता पिता ने उसे बेचना निश्चय किया है।

रा० दे०—हां उस रोज़ आप के ही मुंह से मैंने यह बात सुनी थी। अहो ऐसी समझदार पढ़ी लिखी कन्या और उसकी यह गति, फिर क्या हुआ?

प्रे० बा०—होता क्या सब बिरादरी वालों ने उसे धिक्कारा और वधिक के हाथ से गौ छुड़वाने का यत्न किया। उसका कहना था कि पर्य्याप्त धन न होने के कारण वह यह पैशाचिक कार्य्य करने को तैय्यार था और कहता था कि कचहरी में लिखा पढ़ा भी हो गई है। जिसके कारण अब वह सम्बन्ध छूटना असम्भव है।

प्रे० दे०—सुनो तुम को इतनी उतावली क्यों हो रही हो।

रा० दे०—तो फिर आगे को क्या हुआ?

रा० दे०—कुछ नहीं मुझे उन पिशाचों पर बड़ा क्रोध और शोक होता है। कौन सा दिन होगा कि इन की बुद्धि शुद्ध होगी और कन्याओं के दुःख दूर होंगे।

प्रे० बा०—फिर क्या होता उन पिशाचों से किसी प्रकार छुटकारा न देख कन्या ने अपनी गर्दन पर दोनों ओर से छुरा रक्खा देख कर विवाह से पांच दिवस पहिले व्रत रक्खा और तन मन से ईश्वर की शरण ली। उसी दिन सायंकाल कन्याहितकारिणी सभा के सभासद पहुंचे और कन्या के माता पिता को अनेक प्रकार से समझाने लगे और यह विश्वास दिलाया कि कन्या का विवाह सभा करेगी, तुमको एक पैसा भी खर्चना न पड़ेगा। और योग्य

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

घर से विवाह कर दिया जावेगा-फिर क्या था कसाई के हाथ से गौ छूट गई और एक देश प्रेम सज्जन से जो इस समय २००) मासिक का नौकर है। विवाह करा दिया गया। दूसरे दिन वह बूढ़ा भी आया और हताश हो अपनासा ले मुंह चला गया।

रा० दे०—तो क्या सचमुच कचहरी में लिखा पढ़ी हो गई थी-

प्रे० बा०—नहीं यह तो केवल उस लोभी की बनाई हुई बातें ही थीं और धन का लालच।

रा० दे०—हैं क्या ऐसे भी लालची और फ़रेबी दुनिया में होने लगे जो धनके लालच से कन्याओं को बेचते हैं। हे भगवान! अशरण को शरण में ले जाने वाले और दीनों का उद्धार करने वाले आप ही है शीघ्र ही भारत वासियों की दशा सुधारने और देवियें को सद्बुद्धि देने की कृपा करें।

इतने ही में घड़ी की ओर रानी देवी की निगाह गई और देखा कि दस बज गये हैं-तो पुत्रियों को बुला सब परिवार ने निद्रा-देवी की शरण ली।

बनिता विनोद

स्त्री जगत्

तुर्की स्त्रियां।

तुर्की देवियों ने जब से पर्दा हटा दिया है, और अपनी मुसलमान बहिनों की उन्नति की ओर झुकी हैं तब से उन्हों ने बहुत उन्नति करली है। अंगोरा की महा सभा में प्रतिनिधि बन कर भी दो तुर्की देवियां निर्वाचित हुई हैं।

बच्चों के अधिकार।

बच्चों की रक्षानिधि के अन्तर्राष्ट्रीय संघ' ने एक आवेदन पत्र निकाला है जिस में वह इस बात पर जोर देते हैं "कि मनुष्य समाज को चाहिये कि अपना सर्वोत्तम जो वह किसी को दे सकता है, बच्चे को दे" उसमें वंश, जाति या धर्म का ख्याल न करे उन्हों ने पांच वाक्यों में पांच बच्चों के अधिकार प्रगट किये हैं, जिन्हें हर एक सभ्य देश को यह समझना चाहिये कि कम से कम बच्चों के लिये इतना अवश्य करें।

(१) बच्चे की शारीरिक मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिये साधारण साधन उसे अवश्य प्राप्त कराये जायं।

(२) जो बच्चा भूखा हो उसकी भूख मिटाई जाय, जो बीमार हो उसको नर्स किया जाय, जो पीछे पड़ा है उसे मदद कर आगे लाया जाय जो ग़लती पर हो उसे रास्ते लाया जाये। जो अनाथ हो उसकी रक्षा की जाय। जो और अंग हीन हो उस की सहायता की जाय।

(३) तकलीफ़ के समय पहिले बच्चे की तकलीफ दूर की जाय।

(४) बच्चे को आजीविका उपार्जन करने योग्य बनाया जाय और हर प्रकार की लूट खसूट से उसे बचाया जाय।

(५) बच्चे के ऊपर यह संस्कार डाले जायं कि उस की बुद्धि इत्यादि सभी शक्तियां अपने देश भाइयों की सेवा के लिये ही हैं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कुपथ से सुपथ की ओर

बम्बई की विजिलेन्स असोसियेशन (निरीक्षक-सभा) ने दो वर्ष के अनथक कार्य के बाद अब नियमित रूप से कार्य करने का प्रोग्राम बनाया है। बहुत से रुपये तथा दृढ़ विश्वस्तरूप कार्य करने वाली कमेटी की सहायता से तथा कानून की मदद से वेश्याओं के मुहल्ले में ही किराये का मकान लेकर दो उदारचित्ता देवियां उस सभा के इस सुधार की ओर लगी हैं।

मद्रास में भी महिलामण्डल ने कुछ रोप-कारिणी देवियों की सहायता से यह कार्य प्रारम्भ किया है। परन्तु अभी बहुत कुछ करके नहीं दिखलाया है।

पतित देवियों को सुपथ पर लाना बड़ा भारी काम है क्योंकि वेश्यायें भी तो किसी मनुष्य की पुत्रियां ही हैं, उनका उद्धार कर उन में आत्मसम्मान का भाव पैदा करना बड़ा उत्तम कार्य है। व्यभिचार से जो रोग गृहस्थियों में फैल रहे हैं, गृहदेवियों की पवित्र जीवनी जिन संकटों में फंस जाती हैं। तथा बच्चों का जितना नाश होता है, उस पाप को दृष्टि में रख कर यह बड़ा भारी पुण्य का कार्य है। इस के लिये जो उद्योग कर रहे हैं वह बड़े धन्यवाद के पात्र हैं।

बम्बई में बच्चों की रक्षा का कार्य

बम्बई के एक धनाढ्य सज्जन म० वाडिया ने उत्तरीय बम्बई देश की स्त्रियों के लिये प्रसूतका अस्पताल खोलने के लिये १६ लाख रुपये दान दिये हैं। बम्बई की सरकार इस संस्था के लिये आवश्यक जमीन भी देने को तैयार है। म० वाडिया ने अपनी फैक्टरी की स्त्रियों के लिये प्रथम ही एक ऐसा अस्पताल खोल रक्खा है।

कोचीन का नेतृत्व

३ अप्रेल को कोचीन के महाराज ने अपने राज्य में व्यवस्थापक सभा की स्थापना की, जिस में वहां की देवियों को निर्वाचन के वही अधिकार हैं जो वहां के पुरुषों के हैं तथा वह कौंसिल की सदस्या भी बन सकती हैं।

❀ पुत्रि पुकार ❀

(ले०—श्रीहरिशरण श्रीवास्तव 'मराल' बी०ए०, एल०एल०बी० वकील, मेरठ)

विश्वमाता ! विनय ये हमारी,
भक्ति मन में सदा हो तुम्हारी।

यज्ञ, सन्ध्या करें, नित्य ध्यावें,
प्रेम तुझ से सभी का बढ़ावें,
वेद—विद्या पढ़ें, फिर पढ़ावें,

सारी बन जायं तव पुत्रि प्यारी ॥ विश्व० ॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

२

भाव मन में सदा शुद्ध आवें,
और दुर्गुण सभी दूर जावें,
गीत गावें, जनिन-जय मनावें,

दुःख सुख में तुम्हें लें पुकारी ॥ विश्व० ॥

३

सत्य बोलें, धरम को न छोड़ें,
कर्म अच्छे करें मुंह न मोड़ें,
बुद्धि दीजे कि भ्रम-फन्द तोड़ें,

रहयें अब सी न अबला दुखारी ॥ विश्व० ॥

४

शिल्प सीखें कला में कुशल हों,
कष्ट में धीर धारें अचल हों,
नष्ट हो जायं जो मन्द—मल हों,

करदें भारत को फिर से सुखारी ॥ विश्व० ॥

पति पत्नी का सम्बन्ध

(ले०—श्रीमती सुशीलादेवी गुप्ता पटियाला)

अर्द्धं भार्या मनुष्यस्य, भार्या श्रेष्ठतम सखा।
भार्या मूलं त्रिवर्गस्य, भार्या मूलं तरिष्यतः ॥

अर्थात् भार्या मनुष्य की अर्द्धाङ्गि है, पत्नी श्रेष्ठ में श्रेष्ठ मित्र है, भार्या तीनों वर्गों (अर्थात् धर्म अर्थ काम) का मूल है अर्थात् इस भवसागर से तरने की इच्छा रखने वाले का आधार भार्या है।

ईश्वर ने इस संसार को स्त्री पुरुष इन दो जातियों में विभक्त किया है, यदि इन दोनों जातियों के मनुष्य एक दूसरे का आश्रय न लेकर पृथक् २ रहें और एक दूसरे की सहायता न करें तो ईश्वर का संसार कभी सम्पूर्णाङ्ग न हो। क्योंकि स्त्री पुरुष ये दोनों संसार के दो अंग हैं, अगर अपने शरीर का कोई अवयव कम होजावे तो यह शरीर सुन्दर नहीं दिखाई देता और सर्वाङ्ग सम्पूर्ण मनुष्य की तरह कोई भी काम अच्छे प्रकार नहीं कर सकता। वैसे ही चाहे बड़ा विद्वान्,

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

शूरवीर धनवान, पक्षपात रहित क्यों न हो, स्त्रियों के आश्रय के बिना पुरुष सम्पूर्ण नहीं होता। एक दूसरे का सहारा लिये बिना कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं हो सकता।

क्योंकि जिस काम में उसे स्त्री की सहायता चाहिये, वह सहायता न मिलने से उस का मन व्यग्र हो जाता है, और सब कार्य का भार एक ही के ऊपर पड़ने से अधिक श्रम के कारण उस की प्रकृति बिगड़ कर बड़े २ अनर्थ हो जाते हैं। ऐसा ही हाल स्त्रियों का भी है। इस लिये ईश्वर ने स्त्री पुरुष दोनों के बीच में ऐसा सम्बन्ध रक्खा है कि जिससे उनका स्वार्थ बिना एक दूसरे के आश्रय के सिद्ध नहीं हो सकता। फिर "वह सम्बन्ध क्या है?" वह है "पति पत्नि का सच्चा प्रेम"। प्रेम तभी होता है जब कि दोनों की प्रकृति समान हो, स्त्री पुरुष का जीवन दोनों के परस्पर प्रेमके ऊपर निर्भर है।

परन्तु बड़े दुःख की बात है कि वर्तमान भारतमें विवाह करने के समय लड़की लड़के से उनके विवाह की सम्मत्ति नहीं लीजाती। शादी करने की रीति अनेक देशों में अनेक प्रकार की है। ऐसा नहीं कहा जा सकता कि वे सब रीतियां अच्छी हैं। दृष्टान्त के लिये अपने देश की रीति देखो—इस देश में यह चाल है कि बालक की अथवा बालिका की वय नौ या दस की होने पर भी नहीं आती कि इतने में उनका विवाह कर दिया जाता है। उस समय वह बालक बालिका अपना परस्पर का सम्बन्ध, उस सम्बन्ध को दृढ़ रखने की विधि परस्पर ऐक्य और सम्मान किस प्रकार रखना चाहिए—कुछ नहीं जानते। इस अज्ञानता के कारण उन के मन नहीं मिलते, इस से उन में लड़ाई होती है और जिस सुख के लिये लोगों ने उन का सम्बन्ध किया, वह तो उन्हें प्राप्त नहीं होता परन्तु उसके विपरीत बड़े २ अनर्थ होते हैं। आठ वर्ष से लेकर बीस वर्ष तक का समय मनुष्य को ज्ञान संपादन करने का होता है, यदि उस समय उनका विवाह हो गया तो वह सांसारिक झञ्झट में लग जाते हैं फिर उन से ज्ञान संचय करना कदापि नहीं बन सकता और यदि कदाचित् बना भी तो वह अधूरा रह जाता है। अत-एव बाल विवाह सब प्रकार से हानिकारक है। यदि बाल अवस्था में सन्तान हो तो आप तथा सन्तान दुर्बल निस्तेज होते हैं, और सम्पूर्ण आयु का उपभोग न करके अति तरुण अवस्था ही में मृत्यु के मुख में पड़ कर उसका आहार हो जाते हैं। क्योंकि छोटी अवस्था में उन के शरीर की सब वृत्तियां रुधिर, मांस, चरबी आदि और उन का बल, बुद्धि, स्वास्थ्य तथा आयुवर्द्धक धातु ये सब सम्पूर्ण दशा में नहीं आते हैं।

बाल्यावस्था में बुद्धि परिपक्व न होने से जिनका विवाह होता है, उन स्त्री पुरुषों को एक दूसरे की परीक्षा करके अपने समान योग्यता वाले मनुष्य के साथ अपनी इच्छानुसार विवाह करने की योग्यता नहीं होती। उस समय उनके माता पिता जिसके साथ उनका सम्बन्ध कर देते हैं उसी के साथ उन्हें जन्म भर रहना पड़ता है, फिर चाहे वह सम्बन्ध अच्छा हो या बुरा, कोई विचार भी नहीं करता। ऐसी रीति से बहुत ही खोटे परिणाम निकलते हैं, क्योंकि समान योग्यता वाले पति पत्नी में जैसा प्रेम होता है, वैसा ऊंच नीच के सम्बन्ध में कदापि नहीं हो सकता। ऐसी जगह यदि दूसरे मनुष्य ने अपनो इच्छानुसार सम्बन्ध पसन्द किया हो तो जिस का विवाह होने वाला है उन्हें वह सम्बन्ध पसन्द नहीं है; इस से

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आगे के लिये दोनों का जीवन दुःखमय हो जाता है। क्योंकि उनके मन का अभिप्राय दूसरों को मालूम न होने से दूसरा मनुष्य उनके गुणों अवगुणों की परीक्षा करने में समर्थ नहीं होता। ऐसे परस्पर विरुद्ध गुणों वाले तथा एक दूसरे को अच्छा न लगने वाले स्त्री पुरुषों का सम्बन्ध होने से वे किस प्रकार सुखी हो सकते हैं।

ऐसे विरुद्ध मन के स्त्री पुरुषों में कभी ऐक्य नहीं रहता, उनके मन सदा एक दूसरे से असंतुष्ट रहते हैं। उस स्थिति में उनके जो संतान होती है वह भी स्वच्छन्दी, दुष्ट, मूर्ख, कुरूप तथा अप्रसन्न मन होती हैं। ऐसी संतान की वृद्धि से संसार का मंगल न हो कर, अमंगल ही होता है। मनुष्य को इस ईश्वरीय नियम के विरुद्ध चल कर अपना अकल्याण कर लेना योग्य नहीं। विवाह का सम्बन्ध कहीं एक दो दिनके लिये होता कि जब आप से नहीं बनी, तब दूसरी जगह खोज लिया तो और बात थी, परन्तु जब यह सम्बन्ध जब तक दोनों जीवित रहें तब तक रहने वाला है। तो इस सम्बन्ध में अपनी स्वाधीनता ही होनी श्रेष्ठ है।

ऐसा न होने से हमारे देश में कितनी जगह कैसे अनर्थ होते हैं, जिस समय यह बात ध्यान में आती है शरीर में रोमाञ्च हो जाता है। बहुत सी साध्वी स्त्रियां पति के खोटे व्यवहार से सन्तप्त होकर आत्म-घात समान बड़े २ पापों से अपने जीवन को कलंक लगाती हैं। इसी तरह बहुत से सत्पुरुष अपनी पत्नियों के दुराचरण से दुःखित होकर स्त्री-हत्या, व्यभिचार आदि महा पाप करते हैं, यह किस का दोष है? यदि पुरुषों का दोष नहीं तो यह अयोग्य सत्ता चलाकर उन की पसंद से योग्य सम्बन्ध करने की स्वाधीनता हरण करने का दोष है। अतएव देश के लोगों को यह अपना दोष निकाल देना ही उत्तम है, नहीं तो सहस्रों उन्नति के उपाय करने से भी कुछ नहीं होगा।

कोई २ रूप अथवा धन ही देख कर विवाह करते हैं परन्तु ऐसा करना बिल्कुल अयोग्य है क्योंकि धन तथा रूप कहीं भी चिरस्थाई नहीं रहते। मुख्य करके धर्म, बुद्धि, सद्गुण, विद्या प्रेम तथा उदारता इतना देख कर विवाह करना योग्य है ऐसे योग्य सम्बन्ध से स्त्री पुरुष दोनों में अतिशय प्रेम होता है। ऐसे ही अनुपम प्रेमी पति-पत्नि एक दूसरे के दुःख में दुःखी सुख में सुखी होते हैं, वे ही इस संसार को स्वर्ग की शोभा देते हैं, और उन्ही से संसार की उन्नति की आशाहोती है।

ऐसे योग्य सम्बन्ध वाले स्त्री पुरुष ही इस जगत् में धन्य हैं। वे यदि बड़ी २ विपत्तियों में पड़ें, तब भी उन का परस्पर का प्रेम कभी कम नहीं होता। विपत्ति के समय भी वह एक दूसरे को देख कर सुखी होते हैं।

वास्तव में जगत् प्रेम ही सब सुखों का उत्पत्ति स्थान है। जिस मनुष्य के हृदय में प्रेम नहीं वह कभी सुखी नहीं हो सकता। इस प्रकार ऊपर कहे हुए प्रेम के प्रभाव से ही श्रीरामचन्द्र, नल आदि महा-पुरुष इस जगत् में अपने सदाचरण की कीर्ति अचल छोड़ गये हैं। उसी प्रकार सीता, सावित्री, दमयन्ती आदि साध्वी और सदाचारिणी स्त्रियां अपने पतिव्रत धर्म से तथा बड़ाई की सीमा करके सबका मनोरंजन करने वाली पुण्य कीर्त्ति अपने पीछे छोड़ गई हैं।

प्रेम मनुष्य के श्मसान उदास हृदय में स्वर्ग समान शोभा देने वाला है। प्रेम के भी अनेक रूप हैं। अपनी सन्तान के ऊपर

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जो प्रेम माता पिता का होता है, उसे वात्सल्य प्रेम कहते हैं, और संतान का माता पिता के ऊपर जो प्रेम होता है उसे भक्ति कहते हैं। भाई मित्रों में जो प्रेम होता है उसे स्नेह कहते हैं। प्राणों का वियोग होते समय परस्पर के दुःख सुख में समान भाग लेने वाले दम्पत्ति में जो प्रेम होता है उसे प्रेम ही कहते हैं। उस प्रेम का दूसरा नाम नहीं है क्योंकि प्रेम उसी में सम्पूर्ण होता है। प्रेम की सीमा समान गुण स्वभाव के दम्पत्ति में ही होती है। मनुष्य को ईश्वर के दिये हुवे तथा स्वर्ग सुख के मूल प्रेम का योग्य व्यवहार करना उचित है। यह धन ईश्वर ने मनुष्य को उसके योग्य स्थान पर खर्च करके फिर बढ़ाने के लिये दिया है। इस अमूल्य चीज़ को प्रयुक्त व्यय न करके नाश करने को नहीं दिया।

परन्तु बड़े दुःख तथा लज्जा की बात तो यह है कि सहस्रों स्त्री पुरुष इस प्रेम धन को बुरे ठिकाने व्यय करते हैं, अर्थात् व्यभिचारी और लम्पट होकर उस को अयोग्यपात्र में स्थापित करते हैं। यह बात तो प्रत्यक्ष ही है कि ऐसा करने से उनका कल्याण नहीं होता और बड़ी कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। अतएव प्रत्येक मनुष्य को भली भांति विचार करके योग्य सम्बन्ध करना ही उचित है। जिसके साथ विवाह हुआ हो उसका विश्वासघात न करके अपने प्रेम का मान कम न करना, विवाह करने का मुख्य उद्देश है। और यही पति-पत्नी का सच्चा सम्बन्ध है।

माता की महिमा

लेo—पंo जगन्नारायणदेव शर्मा कवि पुष्कर

(१)

मा! सा शब्द उचरते मुख से,
मन पाता आनन्द अमन्द।
उपजाता है अनुपम प्यारा,
भाव सौख्य दायक स्वच्छन्द॥
करते ध्यान प्रकट होती है,
मञ्जुल ममता वाली मूर्ति।
रक्त दौड़ने लगता नस में,
आजाती है अविरल स्फूर्ति॥

(२)

दिव्य दर्शनों से जननी के,
होता अतिशय अद्भुत मोद।
यही वासना बस होती है,
खेलूं बैठ सदा ही गोद॥
शिशु बन कहता रहूं प्रेम से,
अमृत से गुरुतर पय-पान।
उसी एक को सब कुछ जानूं,
उस की 'चुमकारी' को प्रान॥

(३)

उस की वाणी कल्याणी में,
निर्मल स्नेह भरा स्वर्गीय।
उसके करकमलों की थपकी,
होती अहो! अनिर्वचनीय॥
जो करुणा हे दया-क्षमा है,
जग में गुण रत्नों की खान।
तेजमयी सुख-शांति-ज्ञानदा,
प्रकृति रूपिणी दे वरदान॥

(४)

उससे बढ़ कर अन्य देवता,
आता नहीं दृष्टि साकार।
दोष-नाशिनी धर्म-बोधिनी,
भुक्ति-मुक्तिदा जन आधार॥
श्रीमाता के स्मरण मात्र से,
हो उठता है हृदय पवित्र।
जीवन-पथ निर्विघ्न भासता.
होता है आदर्श चरित्र॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

(५)

जिस की चितवन ज्योतिमयी में,
मिलता तीन लोक का राज्य।
जिसकी है मुसकान प्राणदा,
जिस के आगे नव निधि त्याज्य॥

सब विभूतियां जिसकी चेरी,
अम्बा अवलम्बन है सार।
जिस के यश गाने में रसना,
पाती नहीं कभी है पार॥

सम्वाद

(दो कन्याओं का आपस में)

ल०—'मराल'

प्रथम कन्याः—
बहिन! बताओ जग में आकर हम को क्या क्या करना है?
इसी भांति क्या खाते पीते, दिन बीते फिर मरना है?

द्वितीय कन्याः—
नहीं, बहिन! ये बात नहीं है, जीवन का तो ये उद्देश।
उन्नति करके यहां निरन्तर करे मुक्ति में जीव प्रवेश॥

१ थम कन्याः—
किन्तु, कहो तो उस के साधन, कैसे मिल सकती है मुक्ति?
वस्तु कौन सी ऐसी सुखकर? क्या फिर मिलने की है युक्ति?

२ तीय कन्याः—
सुनो, बहिन! ये बात गहन है, फिर भी कहती हूँ कुछ भेद।
ज्ञान, कर्म-शुभ, भक्ति ईश की, साधन तीन बताते वेद॥
ज्ञान—मुक्त वैदिक—कर्मों को जग जो कर जाता है।
धन्य जीव है सदा वही जो ईश्वर के गुण गाता है॥
और मुक्ति क्या है? बतलाये वाणी की ये नहिं सामर्थ।
योग ध्यान के करने वाले, मुनि जन समझें इसका अर्थ॥
किन्तु सत्य में वह केवल है परम पिता का ही आनन्द।
मग्न मोद से जिस में होकर जीव सुखी होता स्वच्छन्द॥

१ थम कन्याः—
अब समझी मैं, बहिन! किन्तु जो बातें चार बताते लोग।
धर्म, अर्थ, अरु काम मोक्ष का कैसा आपस में संयोग?

२ तीय कन्याः—
प्रश्न तुम्हारा ठीक, यही तो मुक्ति—मार्ग में चार विराम।
जिन पर पहुंच २ चलते हैं प्राणी कर कर कुछ विश्राम॥
धर्म करें, फिर अर्थ कमावें, धर्म अर्थ से भोगें काम।
अन्त ध्येय जो मोक्ष कहाता वही पहुंचना प्रभु के धाम॥

१ थम कन्याः—
बहिन! धन्य हो तुमने मुझ को आज बात वह बतलाई।
जिस से जीवन—धन की कुञ्ज मैंने बिन श्रम के पाई॥

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

निर्दयी बाप का लोभ।

लेo—श्रीयुत विश्वम्भर सहाय प्रेमी

आज तो केवल दो चम्मच दाल खाई है। आज ज्वर तो नहीं चढ़ा है, परन्तु शिर में पीड़ा बहुत हो रही है।

बा० ब्रजभूषण ने जेब में से निकाल कर लिफाफा कमला के पास पलंग पर रख दिया और बोले "क्यों प्राणेश्वरी! ये कल तुम ने ही लिखा था न?" कमला बोली "हृदयनाथ मैंने ही परसों पलंग पर पड़े २ लिख दिया था"।

ब्रज—"क्या बताऊं! संसार में घोर जीवन का संग्राम मचा हुआ है। लोग ऐसे भी हैं जिन के पेट में इतना भोजन पहुंच जाता है जिन्हें रात्रि दिवस डाक्टर हकीम की शरण में रहना पड़ता है। और हमारी तरह ऐसे भी हैं कि रात दिन बड़ी फ़िक्र में रहते हैं कि किसी तरह पेट भर अन्न मिल जाय। इस जीवन से तो मर जाना अच्छा है। क्योंकि—

हुई जब ज़िन्दगी ज़िल्लत,
तो मर जाना ही बेहतर है।"

कमला का चित्त न जाने किन २ चिंताओं में पड़ गया। परन्तु अपने पति के उपरोक्त सारे कथन पर विशेष टीका टिप्पणी न करते हुए यही उत्सुकता से पूछा—"क्या आमले के तेल की शीशी लाये हो? साबुन तो पहिले का आया हुआ सब खतम हो चुका। कई दिन से मुंह बिना ही साबुन धोना पड़ा है। अच्छा क्या थोड़े से चिट्ठी लिखने के कागज भी लाये हो?"

ब्रजभूषण ने बड़े प्रेम के साथ हाथ कोट की जेब में डाला और एक सुन्दर लेबिल लगी शीशी निकाल कर रख दी एक नहीं किंतु दो उम्दा साबुन की टिकियां जो उनके रूमाल में बंध रही थीं निकालीं और कमला को देते हुए कहा "क्यों प्राणेश्वरी! ठीक हैं ना?"

कमला की जान में जान आई और कृतज्ञता प्रगट करते हुए यही कहा "आप मेरे लिये बड़े कष्ट उठाते हैं। बड़ी चिन्ता करते हैं। आप का कल पत्र पढ़ कर बड़ा रंज हुआ। आप ने जो लिखा था कि तीन दिन तक केवल चार केले और थोड़े चने चाब कर रहा यह बात मुझे चिंतित करती रही। भला आप सोचिए कि कहां वह विवाह के समय का हृष्ट पुष्ट शरीर और कहां इस समय का यह सूखा बदन! आपने ऐसी ही तकलीफें उठाते २ अपने शरीर की हड्डियां तक कमजोर बनालीं। मेरे लिये तो आप लाहौर बैठे हुए भी इतनी चिंता करते हैं और अपने लिये कुछ भी नहीं आज १५ दिवस के पश्चात् आपके दर्शन हुये हैं।" बाबू ब्रजभूषण कातर स्वर से बोले "प्राणेश्वरी! मुझे तो बस तुम्हारे शरीर का अधिक सोच रहता है। अपने लिये तो कुछ परवाह नहीं। यह तो संसार की प्रसिद्ध कहावत ही है कि:—

कंगाली में इन्सान के सब ढंग बिगड़ जाते हैं। पर हमें भी तो देखना है कि ईश्वर कहां तक हम पर आपत्ति डालता है देखो तुम तो थोड़ा सा घी बूरा रोज खा लिया करो जिससे बदन में कमजोरी न होने पावे।

कमला ने ब्रजभूषण का हाथ अपने हाथ में लेते हुए कहा—"नाथ! मैं तो यहां सब तरह का सुख उठाती हूँ, और आप सब तरह की तकलीफें घर छोड़े हुए उठा रहे हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आप इससे तो घर ही का काम करने लगें; यहां पर रहते हुए इस तरह के कष्टों से तो पीछा छूटेगा।

"हां! कष्ट तो उठाने न पड़ेंगे पर मुश्किल तो यह है कि माता पिता सभी का तकाजा यही है कि जल्द नौकरी ढूंढो। इस तरह की बातें बड़ी दुखदायी हो रही हैं। क्या करूं? समझ में कुछ भी नहीं आता।

(२)

पाठको! हम आपको न मालूम क्या सुना बैठे। परन्तु आप हताश न होवें। हमारे बा० ब्रजभूषण के दुःखमय जीवन की ओर तनिक दृष्टि डालें। बिचारे पिता के इकलौते बेटे हैं। आपका विद्यार्थी काल बड़ी शान में बीता था। आप वस्त्रों की सजधज में काफी समय व्यतीत कर देते थे, परन्तु फिर भी अपनी कक्षा में अच्छे विद्यार्थियों में गिने जाते थे। दुर्भाग्य से उन्हें एन्ट्रेंस परीक्षा में एक दो बार नहीं किंतु लगातार पांच बार फेल होना पड़ा। आप जब तक पास होते रहे उस समय तक प्रति मास पचास साठ रुपये व्यय कर देते थे परन्तु फेल होने के समय का दुःखमय जीवन कोई पत्थर दिल ही कर सकता है।

आपका विवाह बड़ी मिन्नतों के साथ हुआ। आपकी पत्नी में पतिभक्ति का कितना अंश विद्यमान है, उसका अनुमान लगाना बड़ा कठिन है। आप सब कठिनाइयां उठाते हैं परन्तु कमला को तनिक भी कष्ट नहीं होने देते। साधारण कमला की रुग्णता को देख कर ही आप चार आंसू टपका देते हैं। घंटों उसके मन बहलाव के उपाय सोचते हैं। माता पिता की क्रूर दृष्टि बहुत काल से पड़ रही है परन्तु उसका अन्त नहीं होने पाता।

कमला को कई दिन से धुन सवार है कि, वह सुन्दर बेलदार किनारी की रेशमी धोती बांधे। हमारे ब्रज भूषण उसकी इच्छा की पूर्ति की चेष्टा में हैं। परन्तु कोई उपाय नहीं सूझता। आप इसलिये भी चिंतित हो जाते हैं कि कभी २ कमला की सास दो चार खरी खोटी बातें काम न करने के कारण कमला को सुना देती है। एक सन्तोष है कि आप इस वर्ष एन्ट्रेंस पास हो गये हैं दूसरे आपकी वृद्ध माता की इच्छा आपके पुत्र उत्पन्न हो जाने के कारण अधिकांशतया पूर्ण भी हो चुकी है।

ब्रजभूषण अपनी प्राण प्यारी को सब प्रकार से समझा बुझाकर फिर नौकरी की तलाश में चल दिये। परन्तु इस बार घर पर बड़ी भारी प्रतिज्ञा की कि "भारतवर्ष भर में चाहे घूमना पड़े परन्तु बिना नौकर हुये घर न लौटूंगा।

आपके पिता रामलाल को कुछ आपके कथन का विश्वास ही नहीं रहा। उन्होंने इसे साधारण बात समझी और भोजन करके अपने नित्य के काम के लिये चले गये। हमारे ब्रजभूषण ने भी मन मसोसकर अपना रास्ता लिया।

(३)

ब्रजभूषण के जाने की आज सारा दिन घर पर चर्चा रही। साथ ही आपके सहपाठियों में भी यही बातें होती रहीं कि, ये बहुत जल्द दक्षिण भारत की यात्रा को जावेंगे। बहुत से मनचले समझते थे कि भला वे कहां जाने वाले हैं? बहुत से जानते थे कि ऐसी यात्रा को घर का पैसा चाहिये, साथ ही कुछ ऐसे भी थे जो कमला के मोह से परिचित थे।

आप दस पांच दिन नौकरी की तलाश में दौड़े। कुछ दिन में ही मन उखड़ा और

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

फिर घर की राह ली। इस बार तो उनके दर्शनों से पिता को ज्वर ही चढ़ आया।

आपस में खूब झगड़ा रहा। परन्तु वश ही क्या चलता? फिर ब्रजभूषण ने लाहौर की राह ली।

आज आप गुरुदत्त भवन के सामने बाग में पड़े हुए विचारानिमग्न हैं कि क्या करें। कहां जायं? एन्ट्रेंस भी किया पर २०) रु० की नौकरी भी न मिली।

आपके मन में बड़ी २ अभिलाषाएं हैं। आप अमेरिका के दृश्य भी देखते हैं। साथ ही जापान, इंगलैंड की भी हवा स्वप्न में खाते हैं। कभी नैपोलियन बनते हैं कभी कानेगी बनने की स्कीम सहपाठियों को सुनाते हैं।

ज्यों त्यों करके निशानाथ निकले और साथ ही आप भी उठे। जाकर फिर उसी कोठरी में पड़ गये जिसमें बहुत दिन से दिन काटे जा रहे थे।

(४)

चिट्ठीरसां ने ब्रजभूषण को पत्र लाकर दिया। उन्होंने बड़ी उत्सुकता से पढ़ा। वे बड़े उत्सुक थे। समझ रहे थे कि न जाने पिता ने आज उन पर क्या कृपा कर दी है। पाठको! हम पत्र को आपके सन्मुख भी उपस्थित करते हैं।

"बेटा ब्रजभूषण! मैं आज मर रहा हूं। तुम्हारे सिवा पानी डालने वाला कोई नहीं। अगर नौकर हो गये हो तो छुट्टी लेकर एक दिन को चले आओ। वरना मैं अपनी जायदाद किसी दूसरे के नाम कर दूंगा। ज्यादे जीने की उम्मेद बिलकुल नहीं है।

आप बड़े चक्कर में पड़ गये। झट से फिर घर की राह ली। घर पर देखा कि पिता महाराज दूध निकाल रहे हैं। फिर क्या था पारा तेज हो गया और क्रोधित होकर पिता को दस पांच सुनाईं। ठीक है ईश्वर ने दोनों की "भली बनाई जोड़ी"।

बुखार तेज़ चढ़ गया। कमला अपने बाल संभाल कर पतिदेव की सुध लेने चली। रामलाल ने ज्वर को साधारण समझा।

सायंकाल को क्या देखते हैं कि, लड़का बड़े जोर से कह रहा है। "दो! रुपया दो!! जल्दी दो!!! मैं सील फैक्टरी कायम करूंगा न हुई तो क्या? लाओ! लाओ!! और निर्दयी.....लाओ।"

माता सान्त्वना दे रही थी। "बेटा घबड़ा मत। सब कुछ तेरे ही लिये है।" स्त्री उंगली मुंह में दबाये देख रही थी मगर पिता इन सब बातों को साधारण समझे हुये आंगन में क्रोधित बैठे थे।

ज़रा देर विश्वनायक ने अपनी विचित्र रचना का नाट्य-दर्शन दिखलाना प्रारम्भ किया। उसमें कितने ही नट नटी सम्मिलित हो गयें। विषय "निर्दयी पिता का लोभ" था। प्रारम्भ में कोई भी अपना अभिनय करने को उद्यत न हुआ। केवल मन्द २ स्वर से वायु ने ही कुछ सुरीला गान गाया। सन्नाटा छा गया। और बात की बात में ब्रजभूषण ने नेत्र बंद कर लिये और वह सदैव के लिये मौन हो गया। दर्शक लोग देखते के देखते ही रह गए। किसी को भी (Once more) (एक बार और) कहने का साहसन हुआ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रार्थना

लेखिका—श्रीमती शिवरानी देवी विदुषी, उन्नाव

विद्या पढ़ हे ईश बनें हम, योग्य विवेकी अरु विद्वान ।
मिल कर सब ही दूरहटादें, अन्धकार मय सब अज्ञान ॥
जब हम विद्या पढ़ हो जावें, धर्म युक्त गुण शील निधान ।
आर्य नीति पर चल कर हम सब, जीवन करलें उच्च महान ॥
भारत में जो दृष्टि पड़ें वह, कष्ट सभी हम दूर करें ।
गृह जीवन के कष्ट मिटा कर, उसको सुखमय आज करें ॥
विद्या को तज करके हमने, दीहें तज सब ही अधिकार ।
तब से हा ! भारत में कैसे, पड़े कष्ट और हाहाकार ॥
धर्म कर्म सब ही हैं त्यागे, त्यागी प्रेम भक्ति सब आज ।
धर्म पतीव्रत हमने छोड़ा, पूर्व जनों की सेवा काज ॥
अविवेकी हम स्वयं बने हैं, सन्तति का हा ! नाश किया ।
दुखी दरिद्र कष्टमय होकर, भारत का अविनाश किया ॥
दीन दयाल दीन हितकारी, पाप कर्म मम दूर करो ।
लोक लालित्य ' लक्ष्मी ' भरदो, विद्या दान प्रदान करो ॥
आओ बहिनों मिल कर हम तुम, विद्या को प्रचार करें ।
पढ़ें पढ़ावें वेद शास्त्र को, धर्म कर्म संचार करें ॥

कन्या गुरुकुल समाचार

स्वास्थ्य

ब्रह्मचारिणियों का स्वास्थ्य उत्तम है। गतवर्ष की अपेक्षा मच्छड़ बहुत कम हैं, क्योंकि सफाई इत्यादि का बहुत ध्यान रखा गया है। तथापि मच्छड़ों की संख्या अत्य अधिक है और जब हवा बन्द होती है तो रात्रि को निद्रा आना मुश्किल होता है।

अध्यापिका वर्ग

श्रीमती राजकुमारी जी तथा श्री आचार्या जी छुट्टा की समाप्ति पर स्वस्थ होकर गत मास ही आगई थीं, लगभग दो सप्ताह हुये प्रधान अधिष्ठात्री श्रीमती राधारानी जी अपनी पाठशाला के निरीक्षणार्थ विसवां गई हुई हैं।

विज्ञापनों के उत्तर में कई प्रार्थना पत्र आये हैं और दो एक देवियां भी कार्य्य संभालने के लिये आगई हैं, और भी आरही हैं। आगामी मास से नियुक्ति निश्चित होने पर उनकी सूचना दी जा सकेगी।

अर्ध वार्षिक परीक्षा

जून के अन्तिम सप्ताह में अर्ध वार्षिक परीक्षायें आरम्भ होंगी।

बाला समाज

बाला समाज दिनों दिन उन्नति कर रही है। कई कन्यायें उत्तम भाषण करना सीख रही हैं। गत साप्ताहिक अधिवेशन में दो कन्याओं ने बहुत उत्तम भाषण किया। जिन्हें एक महाशय ने एक एक रुपया पारितोषिक भिजवाया है।

चर्खा

चर्खे का खूब प्रचार हो रहा है बचे हुये समय में ब्रह्मचारिणियां बड़े उत्साह से चर्खा कातती हैं अगर यह उत्साह बना रहा तो हम शीघ्र ही खड्डी भी लगा सकेंगे। ब्रह्मचारिणियों ने सूत कातने की परीक्षा के लिये बहुत उत्तम सूत भी कात कर तैय्यार किया है। परीक्षा परिणाम के निकलने पर प्रथम निकलने वाली कन्याको पारितोषिक मिलेगा

अवकाश

स्वतन्त्रावकाश अगस्त के मध्य में प्रारम्भ होगा। उस समय ऐसा विचार है कि छात्रायें जल वायु परिवर्तनार्थ कहीं बाहर जावें। परन्तु खेद है कि बहुत से संरक्षकों को मोमूली मार्ग व्यय देना भी बहुत अखरता है, और गत वर्ष के मार्ग व्यय को भी मुश्किल से निकाल रहे हैं। चाहते हैं कि कन्या गुरुकुल यह भार उठा ले। यात्रा व्यय के अतिरिक्त जो भी अधिक व्यय हुआ वह गुरुकुलने उठाया और संचालकोंको इस बात से बढ़कर और क्या आनन्द होता कि, कोई एक और दानी सेठ रघूमल सामने आजाता और कहता लो कन्याओं को बिना भोजन वस्त्र आदि का व्यय लेकर ही इस फन्ड से शिक्षा दो, परन्तु 'सूखी क्या निचोड़े' कन्या गुरुकुल नई संस्था है। इसका प्रबन्ध, किराया कोठी आदि इतना व्यय है कि इसी भार को उठाना कठिन हो रहा है। फिर भला संरक्षकों को यह और क्या मदद दे। उल्टा संरक्षकों को इसे अभी पुष्ट करना चाहिये। अतएव जो संरक्षक महोदय यात्रा के लिये कन्याओं को भेजने के पक्षपाती हैं, उनसे प्रार्थना है कि वह अपनी स्वीकृति लिख भेजें ताकि यात्रा का प्रबन्ध किया जा सके। नियत तिथि तथा आनुमानिक यात्रा व्यय की सूचना उनके उत्तर आने पर दी जायगी। कार्यालय से इस सम्बन्ध में पत्र भी भेजे जारहे हैं।

कुसुमोद्यान।

(१) रेडिङ्ग बर्केन्हेड सम्वाद

(लेखक—बी० एफ० भकुचा)

लार्ड बर्केहेन्ड—कहो, रेडिंग! तुम्हारा क्या हाल है?

लार्ड रेडिंग—न बहुत अच्छा ही न बहुत बुरा!

ब०—क्यों रेडिंग, संचमुच तुम संकोच से बात करते हो। क्या तुमने असहयोग आन्दोलन को कुचल नहीं डाला?

रे०—बिलकुल नहीं।

ब०—लेकिन क्या तुमने असहयोगियों को विभक्त नहीं कर दिया?

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रे०—जी हां, एक तरह से हो ही गये हैं।

ब०—और क्या स्वराज्य पार्टी वाले स्वतन्त्र दल वाले परस्पर लड़ नहीं रहे हैं?

रे०—जी हां समय २ पर लड़ते ही हैं।

ब०—क्या यह सब हमारे लाभ के लिये नहीं है?

रे०—हां कुछ हद तक है ही।

ब०—तब इस खेल का भविष्य में दुष्परिणाम कुछ है?

रे०—वह यह है सुनो बर्केन्हेड, कि यद्यपि स्वराज्यवादी और स्वतन्त्रवादी लड़ते तो हैं तथापि हमारी वर्तमान शासन प्रणाली के लिये किसी को प्रेम नहीं है।

ब०—हूं! लेकिन माडरेटों के विषय में क्या कहते हो?

रे०—वह लोग भी तो दांत पीस रहे हैं।

ब०—हूं! तो मुसलमानों के विषय में क्या विचार है? वह तो हमारे इर्द गिर्द घूमते हैं।

रे०—उन में से कुछ ऐसे हैं। लेकिन मुसलमानों में से भी बहुतेरे हमारे बहुत विरोधी हैं।

ब०—क्या कहा? क्या वह उन गुर्राने वाले आन्दोलनकारी हिन्दुओं से भी बढ़ कर हमारे द्रोही हैं?

रे०—हां, हां बर्केन्हेड!

ब०—रेडिंग! यह हो कैसे सकता है?

रे०—क्यों नहीं। देखो हमारे विदेशी नीति जो कि मिश्र, ईराक, और हेडज़ाज़ में दीख पड़ती हैं उस से विचारशील मुसलमान बहुत तपे हुए हैं।

ब०—अच्छा तो पैलस्टाइन के सम्बन्ध में क्या राय है?

रे०—अरे वह भी उन्हीं में शामिल है।

ब०—लेकिन रेडिंग, भारत के मुसलमानोंकी बात जो तुम बताते हो वह मेरी समझ में बिलकुल नहीं आती। क्योंकि मलकम हेली के ऊपर तो मुसलमान अभिनन्दन पत्रों की वर्षा कर रहे हैं।

रे०—हां ठीक है लेकिन यह सब तो सर्कार द्वारा नियुक्त कमेटियों के काम हैं। जो कि हेली की अपनी ही पैदा की हुई हैं।

ब०—हूँ। हां तो मिस्टर गांधी टूटी हुई वीणा नहीं है?

रे०—हम चाहे ऐसा अनुमान करलें और कहें; लेकिन सच पूछो तो न तो वह वीणा ही है और न टूटा ही है।

ब०—तो क्या तुम नहीं समझते कि लिटन ने अपना कड़ा हाथ दिखलाया है?

रे०—हां उसने किया है, लेकिन उस से तो पुराने घाव और भी तेज़ होगये हैं।

ब०—अच्छा रेडिंग, तुम्हारी बातों से यह पता लगता है कि भारत में हमारी स्थिति न तो बहुत अच्छी है और न बहुत बुरी ही। सो हम क्यों चिन्ता करें?

रे०—चिन्ता। चिन्ता तो हमें करनी ही होगी नहीं तो शीघ्र ही हमें भारत को छोड़ देने पर तैयार रहना होगा।

ब०—रेडिंग यह हम कैसे कह सकते हैं। देखते नहीं हो कि ब्रिटेन में कितने ही श्रमजीवियों को कोई रोज़गार नहीं मिलता, चारों तरफ़ धन के लिये स्पर्धा और लड़ाई हो रही है। हम भारत को अपने चंगुल से कैसे खिसक जाने दे सकते हैं निःसन्देह रेडिंग! तुम्हारे जैसे योग्य अर्थ-शास्त्रज्ञ को मुझे लालच देने की आवश्यकता नहीं है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

रे०—मैं यहां पर तथा भारत में भी अपनी स्थिति को अच्छी तरह अनुभव कर रहा हूँ, इसी लिए तो इतनी दूर चलके तुम्हारे साथ दिल की बातें करने आया हूं।

ब०—लेकिन रेडिंग, यह तो बताओ कि हमारे गवर्नर और अफ़सर लोग हमें क्या करने की सलाह देते हैं?

रे०—उनका तो आपस में मतभेद है तथापि एक बात में सब का एकमत है।

ब०—रेडिंग, यह कैसे?

रे०—तुम यह देखो कि इस बात में लगभग सभी एक हैं कि १९२९ से पहिले बिलकुल नया परिवर्तन न होना चाहिये। लेकिन इस बीच में कोई तो दमन नीति को सम्मति देते हैं, कोई फुसलाने की, कोई फूट डालने की, और कुछ कहते हैं कि प्रतीक्षा करो और रुख देखो और कुछ टुकड़े देने ही हों तो फेंक दो।

ब०—तो इसमें तुम्हारी राय क्या है?

रे०—न्याय और राजनीतिज्ञता तो यह दावा करती है कि, बेधड़क बन कर भारत का स्वराज्य का अधिकार मान लिया जाय।

ब०—लेकिन यह तो बताओ कि हमारी पूंजी हमारा व्यापार, हमारे उद्योग धंधे तथा भारत में हमारे बड़े २ व्यापार के केन्द्र कैसे रहेंगे?

रे०—तभी तो ब्लैकेट को यहां लाया हूं कि उसकी रक्षा करे।

ब०—तब तुम्हारा यह मतलब है कि एक बड़ा भारी राजनीति संकेत किया जाय, लेकिन सब प्रकार का आर्थिक अधिकार तथा शक्ति हमारे अपने ही हाथ में रहे।

रे०—हां, अगर इससे अधिक नहीं हो सका तो कम से कम इतना तो अवश्य रहना चाहिये।

ब०—क्यों यह ठीक न होगा कि हम महाराजाधिराज को भारत आने की प्रार्थना करें, और वहां पर एक बड़ा दरबार लगा कर कुछ भारतीयों को कहीं का गवर्नर बना देवें और एक महाराजा को उनका मुखिया कर दें।

(दर्वाजे पर कोई खटखटाता है। और लार्ड हार्डिंग प्रवेश करते हैं)

हार्डिंग—मित्रो! मैंने आप लोगों के पिछले वाक्य सुन लिये हैं। अब तुम भारत को दर्बार और सजावटी तमगों से नहीं काबू रख सकते। महाराजाधिराज को तकलीफ न दो। और भारत के साथ बुद्धिमत्ता और समता से व्यवहार करो। नहीं तो हमारी धींगा धींगी और मतभेद की नीति से हमारी हानि ही शीघ्र होगी।

—(हिंदुस्तान टाइम्स)

(२) सात सामाजिक पाप

वेस्ट मिनिस्टर ऐबी के महन्त ने अपने एक उपदेश में सात सामाजिक पापों का इस प्रकार वर्णन किया है:—

१. कार्य विहीन राजनीति
२. सिद्धान्त रहित धन
३. अन्तरात्मा की आवाज़ के बिना आनंद
४. आचार के बिना विद्या
५. सदाचार के बिना व्यापार और उद्योग धन्धे
६. मनुष्य प्रेम के बिना विज्ञान
७. त्याग के बिना पूजा

यद्यपि उन्होंने अंग्रेज़ जाति को लक्ष्य करके यह बातें कही हैं तथापि यह मनुष्य मात्र के मनन करने वाली है अतः ज्योति के पाठकों के हितार्थ यहां दी गई हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिन्दी—आरती,

(ले० पं० चेतराम जी शर्मा)

आरती श्री हिन्दी जननी की,
वेद ब्रह्म निस्तृत अति नीकी। ध्रु०
संस्कृत रस पीयूस पायिनी,
चित्तवन चलनि ठवनि मुसकावनि-
सन्तन मन भावनि अति पावनि,
सुगम वर्ण अति जी की ॥ आरती०
कीरति ललित मदनमोहन की,
शंकर राम श्याम सुन्दर की।
सरस्वती भारती ज्योति की,
सत्य सनातन योगी यती की ॥ आरती०
विद्या पति कबीर नानक की,
चन्द, सूर, तुलसी, केशवकी।
गङ्ग बिहारी पद्माकर की,
रहिमन, रसनिधि भूषण जी की ॥ आरती०
ज्ञान लीन रस प्रेम परायण,
दयानन्द, हरिचन्द, नरायण।
मीरां बनी ठनी सरजो की,
भट्ट भिखारी पूरण जी की ॥ आरती०
नव-रस-सिंची राग रस रञ्जित,
षड्रसमयी अति सुरभित।
अति कोमल प्यारी गान्धी की,
जय जय जय हिन्दी जननी की ॥ आरती०

सत्यवादी से उद्धृत

नोट:—पं० चेतराम जी आज कल के सुयोग्य कवियों में से एक हैं। यह आरती पं० जी ने हिन्दी—साहित्य सम्मेलन फिरोज़पुर में बनाई है। शताब्दी कवि सम्मेलन में रचित "आओ मोहन प्यारे" शीर्षक कविता गत मास की ज्योति में छपी है किन्तु शोक है कि प्रूफ संशोधन में अशुद्धियाँ रह गई हैं जिसके लिये हम पं० जी से क्षमा प्रार्थी हैं आशा है कि वे हमें इस भूल के लिये क्षमा करेंगे। संपादिका:—

* ओ३म् *

ग्राहकों के प्रति नम्र निवेदन

आस फाल्गुन की ज्योति से हमारे कृपा शील ग्राहकों को विदित हुआ होगा कि इस मास से ज्योति नव वर्ष में पदार्पण करेगी। साथ में नव वर्ष के उपलक्ष्य में समारोह के साथ अङ्क निकलने की भी सम्भावना थी। इसमें सन्देह नहीं कि हमारे पाठक पाठिकाएं इस अङ्क की प्रतीक्षा करते होंगे, किन्तु हमें यह लिखते हुए अति दुःख हो रहा है कि हम अपनी इच्छानुसार कृतकार्य न होसके। मास फाल्गुन के अङ्क में पृष्ठ ६६२ के चतुर्थ कालम से हमारे कृपालु ग्राहकों को ज्ञात हुआ होगा कि श्रीमती सम्पादिका जी एक उन्मत्त कुत्ते के आक्रमण से चिकित्सार्थ कसौली चली गई थीं। और तब से अस्वस्थ चली आ रही हैं। इधर अन्यान्य दैवि दुर्घटनाओं के पड़ जाने से तथा कार्यकर्ताओं की अस्वस्थता के कारण कार्य में रुकावट तथा विलम्ब भी होता रहा। उपरोक्त दैवि दुर्घटना पड़ने से विशेष तैयारी तो अलग रही अपितुः नियमित पूर्ण अङ्क भी समय पर नहीं निकल सका। अन्त में असमर्थता प्रकट करते हुये अधूरा अङ्क भेंट करते हुए हम अपने दयालु पाठक पाठिकाओं से इस प्राकृतिक अनिवार्य बाधा के लिये क्षमा की याचना करते हैं। ज्योति के लिये यह पहिला ही मौक़ा होगा कि वह अपने भविष्य प्रोग्राम से असफल रही किन्तु आगामी के लिये हम विश्वास दिलाते हैं कि अङ्क सर्वाङ्ग पूर्ण और नियत समय में ग्राहकों की सेवा में प्रेषित करने का यत्न किया जावेगा।

मैनेजर ज्योति

* ओ३म् *

विज्ञापन।

बहुत सस्ता छपकर जल्दी तैयार होगया है

आर्य पाठावली का द्वितीय संस्करण

आर्य पाठावली (प्रथम भाग)

कुमारी विद्यावती सेठ द्वारा रचित।

यह लड़कियों और स्त्रियों के लिये बड़ी उपयोगी तथा सचित्र पुस्तक है। बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिये यह पुस्तक बड़े अच्छे ढंग से लिखी गई है। इस में चित्र भी बड़े खूबसूरत और मनोरञ्जक हैं। प्रथम चित्र रंगीन हैं, उसमें अध्यापिका बच्चों को "ओ३म्" का ज्ञान बता रही है। विद्या प्रेमी शूद्र और पोप की बहस का चित्र भी बड़ा रोचक है। इस की द्वितीयावृत्ति भी छपकर तैयार हो गई है। प्रथमावृत्ति में जो कुछ अशुद्धियां रह गई थीं वह भी ठीक कर दी गई हैं। मूल्य भी सस्ता कर दिया गया है। हम आर्य जनता से अनुरोध करते हैं कि वह इस ग्रन्थ रत्न को अपनावें। सब आर्य कन्या पाठशालाओं में धार्मिक शिक्षा देने के लिये इसका पढ़ाया जाना अत्यन्ता-वश्यक है। इसके प्रत्येक पाठ में चित्र हैं और पुस्तक में १३५ पृष्ठ हैं। कागज भी बढ़िया है। इस पर भी मूल्य बहुत थोड़ा रक्खा गया है। इकट्ठा खरीदने वालों के साथ विशेष रियाअत की जायगी।

मूल्य एक प्रति ॥) आना

मिलने का पताः—

मैनेजर ज्योति
नं० ४ दरिया गंज दिल्ली।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES.

This is the very newest style wristlet watch These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for

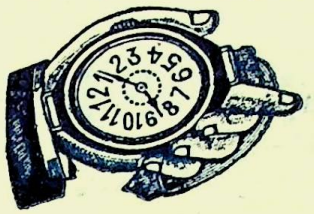

3 years. Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of much higsher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Bracelet for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra.

N.B—*Purchaser of 3 Watches at a time, will get one German-made 4-in. dial alarm Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses the most fragrant smell of the different kinds of fine flowers. Notice minutely the delightful-like freshlyplucked flowers-smell every now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed. ask for,

LILY OF THE VALLEY

1 oz. Bottle Re.1-8-0
1 Dram Bottle 0-12-0
Dram Bottle 0-8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0
" " Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,
P. B. 27, MADRAS

३५ साल का परिक्षित

भारत सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवाकी सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपात की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैजा, दमा शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्ल्यूएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है मूल्य ॥) डा० खर्च १ से २ तक ।=)

दद्दुगजकेसरी

(दाद की दवा)

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घंटे में आराम दिखाने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है, मू० फी शी० ।) आ. डा. खर्च १ से २ तक ।=) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये। बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शी० ॥) डाक खर्च ॥)

पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मंगाकर देखिये. मुफ्त मिलेगा।

यह दवाइयाँ सब दवा बेचने वाले वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कम्पनी. मथुरा

आवश्यकता

कन्या गुरुकुल के लिये कुछ ऐसी अनुभवी आर्यमहिलाओं की आवश्यकता है जो आश्रम में अधिष्ठात्री का कार्य कर सकें यदि पढ़ी लिखी न्यून हो किन्तु आश्रम के कार्य तथा कन्याओं की सेवा शुश्रुषा करने में दक्ष हो अतः जिन्हें इस धार्मिक संस्था के साथ प्रेम हो और श्रद्धा से कार्य करें ऐसी देवियां शीघ्र निम्न लिखित पते से प्रार्थना पत्र भेजदें ।।

आचार्या,
कन्यागुरुकुल न० ४ दरियागंज दिल्ली

मुफ़्त नमूना मंगाकर देखो

मुख विलास पान में खाने का मसाला:— पान में खाके देखो दुनियाँ में नई चीज़ है, इस की सिफ़त को आज़मा कर देखो। कीमत बड़ी डिब्बी ३।।), छोटी डिब्बी १।।=) फी दरजन।

पं० प्यारेलाल शुक्ल हूलागंज
कानपुर।

☞ BE REST ASSURED—
THAT OUR
WALL CLOCK
'TIC-TAK' (Regd.)
GIVE YOU PERFECT TIME.
OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.
PRICE Rs.
THREE only.
Order now if you have not already orderd.

Peter Watch Co.,
Post Box No. 27,
MADRAS.

अनन्तराम शर्म्मा के प्रबन्ध से सद्धर्म्म प्रचारक यन्त्रालय दिल्ली में छपा।
और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ६] ज्येष्ठ १९८१—जून १९२५ [खण्ड ६, संख्या २]

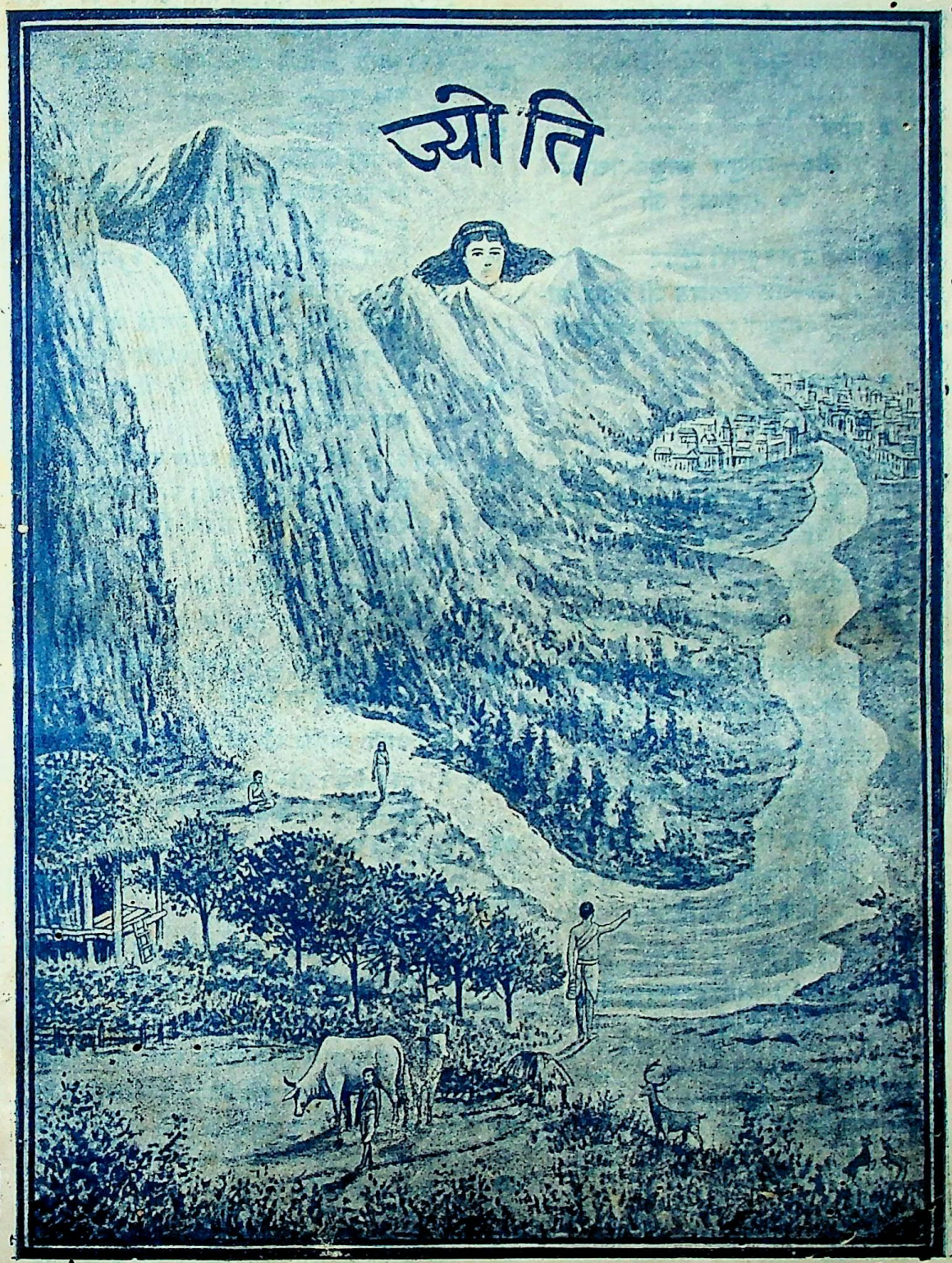

वार्षिक मूल्य ४॥) स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए० विदेश का मूल्य ६)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ
१ ध्येय --- ... ... लेo—श्रीयुत आयुर्वेदाचार्य्य पं० संतलाल जी	४५
२ जहाज का भारी लंगर ... लेo—प्रो० सत्यव्रत जी सिद्धांतालङ्कार सम्पादक (अलङ्कार)	४६
३ मालती --- ... लेo—मुकुन्द	५२
४ हृदय के कुछ भाव ... लेo—श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद बी० ए०	५३
५ महिला सप्तक ... ... लेo—सीताराम रावत 'कुशल'	५६
६ मुसलमानों के सिद्धांतों पर विचार लेo—श्रीयुत कृष्णानन्द जी	५७
७ नव्वो और राधा .... लेखिका—श्री० लक्ष्मीदेवी जौहरी	६७
८ आधुनिक शिक्षित स्त्री जाति लेखिका—कुमारी चन्द्रवती शुक्ल बिजनौर	७६
९ "सार नहीं" ... ... लेo—श्री-रत्नाम्भरदत्त चन्दोला 'रत्न' मेरठ	८१
१० वैज्ञानिक संसार	८३
११ कुसुमोद्यान	८५
१२ वनिता विनोद	८७
१३ हमारी मञ्जूषा	९५
१४ कन्या गुरुकुल समाचार ...	९७
१५ विचार प्रवाह	९८

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।

६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर **ग्राहक नं०** न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहिये

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्ष ६ | ज्येष्ठ १९८२—जून १९२५ ई० | संख्या २

ध्येय

ले०—श्रीयुत आयुर्वेदाचार्य पं० सन्तलाल जी

विश्वम्भर! विश्वाऽधार तुम्हीं;
करुणामय! करुणाऽगार तुम्हीं;
हो सार तुम्हीं;
अविकार तुम्हीं;
निधनी के धन—भण्डार तुम्ही;

जीवन—वीणा के तार तुम्हीं;
शुचि—वेदों के उद्गार तुम्हीं;
व्यापार तुम्हीं;
व्यवहार तुम्हीं;
हीनों[1] के प्रिय—परिवार तुम्हीं;

हर! हरि, श्री, शक्ति, सुरेन्द्र तुम्हीं,
महिमामय! मान्य, महेन्द्र तुम्हीं;
देवेन्द्र तुम्हीं;
भूपेन्द्र तुम्ही;
लीलामय! लीला-केन्द्र तुम्हीं;

गीता कहती—'हो गेय तुम्हीं'!;
विन प्रीति, परेश! अजेय तुम्हीं;
श्रद्धेय तुम्हीं;
विज्ञेय तुम्हीं;
ध्याता हम हैं,—'हो ध्येय तुम्हीं!';

१—हीन—अनाथ।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

जहाज़ का भारी लंगर

ले०—प्रोफ़ेसर सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार सम्पादक 'अलंकार'

संसार समुद्र में 'पुरुष जाति' एक बड़े भारी जहाज़ के समान है। इस जहाज़ का लंगर है "स्त्री-जाति"। लंगर का काम जहाज़ को चलते २ ठहरा देना है। स्त्री जाति भी चलते हुए समाज को ठहराया करती है। इसी लंगर ने आज हिन्दू जाति के विशाल पोत को जहां का तहां खड़ा किया हुआ है लंगर इतना भारी हो गया है कि जहाज़ सदियों से एक ही जगह खड़ा है। अन्दर खाने पीने को कोई सामग्री नहीं रही, चारों तरफ खारी पानी है। जहाज़ के यात्री तड़फ २ कर, व्याकुल हो २ कर प्राणों के बोझ को हलका कर रहे हैं। जो लंगर जहाज़ को दुनिया की सैर कराने का एक मात्र सहारा था वही आज उसको इञ्च भर भी हिलने नहीं देता। क्या हमारे देश के स्त्री समाज ने हमारी जाति की यह हीन अवस्था नहीं कर रक्खी ?

समाज की तुलना चलती गाड़ी से भी की जा सकती है। भागती हुई गाड़ी के वेग को रोकने के लिए उसमें ब्रेक लगा होता है। वह लगाते ही गाड़ी खड़ी होजाती है। 'स्त्री-जाति' को इस समय हिन्दू जाति की चलती गाड़ी का ब्रेक कहा जा सकता है। हमारी जाति आज या कल से नहीं परंतु सदियों से खड़ी है। 'स्त्री जाति' का ब्रेक इस पर ऐसा ज़बरदस्त लगा है कि आज एञ्जिन में कितनी ही स्टीम क्यों न भरें यह टस से मस नहीं होता। हवा से बातें करने वाली गाड़ी बिना किसी-स्टेशन के आए जंगल में ही रुक गई है। ब्रेक ने पहियों को जकड़ कर पकड़ लिया है और देर तक यही अवस्था रहने के कारण अब जंगाल भी लग गया है।

हम उन्नति क्यों नहीं कर रहे, इस के मुख्य कारण कई बतलाये जाते हैं। कोई कहता है, विदेशी राज्य के कारण हमारी उन्नति रुकी हुई है। कोई कहता है सामाजिक कुप्रथाओं ने हमें जकड़ रखा है। कोई कहता है, हमारी आत्मा निर्बल है। मेरी सम्मति में ये सभी कारण ठीक हैं। हां,—एक मज़ेदार कारण है जिसकी तरफ लोग बातों में इशारे किया करते हैं लेकिन खुले तौर से मानने के लिये तैयार नहीं होते वह कारण है—'स्त्री-समाज'। हम उन्नति इसलिए नहीं कर रहे क्योंकि स्त्री समाज हमें उन्नति नहीं करने देता। जहाज़ इसलिए खड़ा है क्योंकि लंगर नहीं उठता, गाड़ी इस लिये रुकी हुई है क्योंकि ब्रेक पहिये को नहीं छोड़ता, राही इसलिए हैरान हैं क्योंकि उस की पीठ पर जो बोझ लदा है उसे उठा सकना उसकी सामर्थ्य से बाहर है।

इन बातों को सुन कर मेरी बहनें चौंक पड़ेंगी। वाह! पुरुषों ने अत्याचार कर के स्त्रियों को वर्तमान हीन अवस्था में पहुंचाया और अब डांट भी स्त्रियों के ही ऊपर! यह तो "उलटा चोर कुतवाल को डांटे" वाली बात हुई!

मैं कहता हूं 'बिलकुल ठीक!' मैं इस बात को स्वीकार करता हूं कि पुरुष जाति ने स्त्री जाति के अधिकारों को निर्लज्ज होकर छीना है। स्त्री-जाति की स्वाभाविक निर्बलता का, आध्यात्मिक के झूठे गीत गाने वाले हिंदुओं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ने, पेट भर कर दुरुपयोग किया है। स्त्री की शकल को ही मानव-जाति से मिलता जुलता रहने दिया है, अन्यथा उस में से मनुष्यता की एक २ बूंद को सोक कर बाहर फेंक दिया है। परन्तु क्या यह सब कुछ कहने से मेरा यह कहना कि 'स्त्रियों ने मनुष्य समाज को डुबोया है—झूठ हो जाता है? माना? कि पुरुषों ने स्त्रियों के अधिकारों की अवहेलना की परन्तु इसमें भी तनिक सन्देह नहीं कि आज स्त्रियां अपने पर किये गए अत्याचारों का बदला पुरुष-समाज पर निकाल रही हैं और जहां पर भी पुरुष आगे आगे कदम बढ़ाने में झिझकते पाए जाते हैं वहीं उनको पीठ पीछे किसी न किसी 'देवी' के हाथ में उनकी नकेल दिखाई देती है। आज हिंदुओं का पुरुष समाज आगे नहीं बढ़ता। इसका यह कारण नहीं कि उसमें हिम्मत नहीं। हिम्मत है परन्तु उसके एक कदम आगे बढ़ाते ही दूसरा कदम पीछे खींचने वाले भी तो मौजूद हैं। वर्तमान स्थिति को देखकर यह कहते हुए मुझे ज़रा भी घबराहट नहीं होती कि आज हमारा समाज आगे इसलिए नहीं बढ़ता क्योंकि स्त्रियों की तरफ से उसे आगे बढ़ने ही नहीं दिया जाता। इतना ही नहीं, इससे कुछ और भी अधिक किया जाता है। बढ़ने पर रुकावट डाली जाती है—विघ्न, बाधाओं के पहाड़ खड़े कर दिये जाते हैं।

सुधारक, यह पढ़ कर चिल्ला उठेगा—'विघ्न, बाधाओं को ठोकरी की तरह ठुकरा दो! मैंने कई लैक्चर सुने। जोश में भर कर व्याख्याता अपने श्रोताओं को उभारता हुआ कहता है। 'उठो! आगे पग बढ़ाओ! अपने वृद्ध भारत को दूसरी जातियों के शिखिर पर नहीं देख सकते तो कम से कम उनके कन्धे से कन्धा मिलाकर तो खड़ा कर दो।' परंतु इन सुधारकों तथा व्याख्याताओं की पीठ के पीछे जाकर मैंने देखा कि इनकी भी नकेलें किन्हीं दूसरों के हाथों में हैं। प्लेटफार्म पर बहुत कुछ कह जाते हैं पर घर में जाकर—वही पुरानी कहानी और वही पुराना रोना।

जिस दशा में हम समाज को बढ़ाना चाहते हैं वह स्वयं सरल तथा निष्कण्टक है जिन सुधारों को हम समाज में लाना चाहते हैं वे स्वयं आसान हैं परन्तु स्त्री-समाज के बल पूर्वक असहयोग होने के कारण आज निष्कण्टक मार्ग कण्टकाकीर्ण हो चुके हैं सरल मार्ग दुर्गम तथा बीहड़ बन चुके हैं इस बात को मैं फिर दोहरा देना चाहता हूँ कि 'स्त्री समाज, जो कुछ है वह 'पुरुष-समाज' का बनाया हुआ ही है परन्तु क्या इस से स्त्रियां सन्तोष करना चाहती हैं। दूसरों ने तुम्हारी यह हालत करदी हो, या तुमने स्वयं अपनी यह अवस्था बनाली हो—इसमें शक नहीं कि आज तुम्हारे ही द्वारा हिंदुओं की कौम संसार की सब कौमों से पीछे है! सुधार हो जाय तो हमारी कौम सुधर जाय परन्तु स्त्रियां सुधार होने नहीं देतीं और कौम सुधरने नहीं पाती।

क्या छोटी २ सी बातें हैं! विवाह में जात-पांत तोड़ने का मामूली सा प्रश्न है। क्या नौजवानों के लिये यह साधारण सी बात कर दिखाना भी कोई कठिन काम है? यदि सुधार इसी तरह की बात का नाम है-और इसमें शक नहीं कि असल में है इसी तरह की बातों का नाम सुधार—तो देश के नौजवान जाति के भवन को मलिन करने वाले इस गन्द को झाड़ू के झपटे में साफ़ कर सकते हैं। हाथ मार कर मकड़ी के जाले के समान थोथी कुरीतियों का नामो निशान मिटा सकते हैं, एक फूंक में इस धूल को उड़ा सकते हैं। जात-पांत तोड़ना भी भला कोई मुश्किल काम है।

नव्ययुवक का तो सीधा जवाब है-जात में विवाह न किया, जात अपने आप टूट गई ! परन्तु नहीं, यह प्रश्न जो मकड़ी के जाले को मिटा देने के समान तुच्छ है, आज जटिल बना हुआ है। कोई छिपी हुई शक्ति मकड़ी के जाले के एक २ तन्तु को फ़ौलादी तारों में बदलती जा रही है या नव-युवकों के आत्मिक बल का इतना शोषण कर रही है कि उनमें मकड़ी के जाले को भी छिन्न भिन्न कर देने की शक्ति नहीं रहती। इस शक्ति हीनता का क्या कारण है ?

केवल एक, और वह यह कि जात तोड़ने का नाम लेते ही घर में सियापा पड़ जाता है। होनहार नवयुवक की माता सभझती है कि बेटा कुल को कलङ्क लगाने लगा है। हाय ! वह बूढ़ी पड़ोसिनों में बैठ कर उन के वाक्-पहार रूपी तीरों को कैसे सहन करेगी ! 'लोग' क्या कहेंगे !-ये 'लोग' क्या चीज़ है ? 'लोग' का मतलब है मूर्खता की मूर्ती मती अड़ोसन-पड़ोसन वृद्धाएं ! चाहो तो, चार बरस के लड़के लड़की को ब्याह दो, बूढ़े के गले में नन्ही बालिका को लटका दो, यह सब धर्म के दायिरे में गिना जाता है, बस जात पात के घेरे के बाहर पांव न रखो। नवयुवक के हृदय में उबलते हुए उत्साह पर उसकी माता के आंसुओं का छोटा पड़कर उसे एक दम ठण्डा कर देता है। सुधार का जहाज़ हिलने लगता है परन्तु लङ्गर उसे फिर वहीं का वहीं खड़ा कर लेता है। गाड़ी के पहिये गति करने लगते हैं परन्तु अपनी जगह पर ही चक्कर मार २ कर रह जाते हैं।

कौन नहीं जानता कि ब्याह-शादियों पर आवश्यकता से अधिक व्यय नहीं करना चाहिये ! जो पसीना बहा कर रुपया कमाता है वह रुपये को पानी की तरह बहाने की बेवकूफ़ी नहीं कर सकता, उसे मालूम है कि फिर वैसी ही चक्की-पिसाई होना है। हां, स्त्रियों को इस बात का किञ्चितमात्र भी ज्ञान नहीं। उन्हें एक ही बात पता है। उनकी बही में लिख रखा है कि किसने अपनी लड़की की शादी पर कितना खर्च किया। बस, अब अपनी लड़की की शादी में किसी से कम नहीं रहना। यही एक मात्र जीवन का ध्येय है। लड़की की शादी के समय चार पांच हज़ार का खर्च करना जरूरी है, फिर उसे दो हज़ार रुपया खर्च करके कौन पढ़ाए ! या उसे पढ़ा ही लें या उसकी शादी ही करले दोनों बोझ कौन उठा सकता है बूढ़ियों की इसी फिलासफी का नतीजा है कि आज जो लड़कियां पढ़ लिख कर देश के बोझ को हलका करने में हाथ बंटा रही होतीं वे आज स्वयं भार बन कर मुल्क को डुबो रही हैं। बहुत लड़कियों के पिता ऋण के बोझ से कमर तोड़ लेते हैं क्या इस नरक यातना को उन्होंने खुद मोल लिया होता है, नहीं यह हो नहीं ले सकता। इसका कारण उनके पांव की बेड़ियां और हाथों की हथकड़ियां-उनके घर की स्त्रियां—हैं। उन्हें अपने पति की कमाई से कोई सरोकार नहीं। उन्हों ने तो अपनी पड़ोसिनों से कम्पीटीशन करना है। नाक बहुत बढ़ाली है उसी की हिफाजत की फ़िक्र करना है ! अफसोस स्त्रियां अपनी नाक रखने के लिये अपनी सन्तानों की नाक कटवाने में कोई हर्ज़ा नहीं देखतीं। कोई कुए में गिरने का डर दिखलाकर, कोई ज़हर खाकर प्राण छोड़ देने का डरावा देकर, कोई दिन रात आंसुओं की झड़ी लगाकर पुरुष जाति से ऐसे २ अनर्थ करवा रही हैं जिन से समाज-वृक्ष की जड़ों को घुन खाता चला जा रहा है। कम से कम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हिन्दू समाज तो इन्हीं कारणों से संसार की सभ्य जातियों के सन्मुख मुख दिखलाने के लायक भी नहीं रहा।

इसी प्रकार के और न जाने कितने सुधार हैं जो स्त्रीयों के पुरुष जाति का साथ न देनेके कारण रुके पड़े हैं। सब कुप्रथाओं का पिता 'बिरादरी' को कहा जा सकता है। इस में सन्देह नहीं कि किसी समय बिरादरियां ही हिन्दु समाज को उन्नति की तरफ़ ले जाने वाली संस्थाएं थीं परन्तु इस में भी सन्देह नहीं कि वर्तमान अवस्था में जब तक बिरादरियों के टुकड़े २ नहीं कर दिये जाते तब तक हमारा समाज उन्नति की तरफ़ एक क़दम भी आगे नहीं रख सकता! आज सुधार इसलिये नहीं चलते क्योंकि बिरादरियां उन्हें चलने ही नहीं देतीं। जिस की नसे फड़कती दिखाई देती हों उसे एक दम दूध में से मक्खी की तरह उठा कर अलग फेंक देती हैं। पहले जहां समाज को गन्दगी से अलग रखने का साधन बिरादरी बनी हुई थी वहां आज जब कि छिद्र पाकर एक बार गन्दगी अन्दर घुस गई है तो उसे अन्दर से बाहर न निकलने देने की ठेकेदार भी बिरदरी ही बनी हुई है।

परन्तु यह बिरादरियों का भूत हम पर सवार क्यों है? इस का हिन्दू-समाज में अव्याहत शासन चलता कैसे है? उत्तर है—स्त्रियों के कारण'! क्या आज बीसवीं सदी में भी कोई नवयुवक बिरादरी की परवाह करता है। बिरादरी वाले ज़्यादह से ज़्यादह क्या करेंगे? हुक्का ही तो नहीं पीने देंगे! खैर, हुक्का न सही—नहीं पीयेंगे! जो बिरादरी की तरफ़ पीठ फेरेंगे क्या वे हुक्के के बग़ैर न जी सकेंगे। परन्तु फिर भी बिरादरी के शासन के सन्मुख नव युवक की पीठ टूट जाती है, इस का यह कारण नहीं कि वह बिरादरी से डरता है परन्तु इसका कारण उसकी आंखों के सन्मुख रोती-कलपती उस की माता, उस की बहिन या उसकी स्त्री है स्त्रियों के दिमाग़ों में आज़ादी दिखाई नहीं देती, वे एक बार 'बिरादरी' को अपना सर्वस्व, आराध्य देव मान-चुकी हैं, अब बिरादरी के बग़ैर वे पानी के बिना मीनकी तरह व्याकुल होजाती हैं। अनुभव से कहा जा सकता है कि आज बिरादरी शासन को पुरुष समाज मानने के लिये तय्यार नहीं। जिस अंश तक वह बिरादरी के जोर को मानता है उसका कारण है 'स्त्री-समाज'। आज बिरादरियां पुरुषों के ऊपर, स्त्रियों के द्वारा शासन कर रही हैं। पुरुष बिरादरियों से नहीं डरते, स्त्रियों से डरते हैं और क्योंकि स्त्रियां बिरादरियों से डरती हैं इस लिये पुरुषों को भी बिरादरियों से डरना पड़ता है। इस लिये कहना पड़ता है कि स्त्रियों के कारण ही हमारे सब सुधार रुके पड़े हैं।

'कुरीतियों का जाल स्त्रियों के कारण बिछा हुआ है।' ओह! स्त्रियों पर कैसा भारी लांछन है। मैं इस लाँछन को लगाते हुए इस बात को भली प्रकार समझ रहा हूँ कि स्त्रियों की दुर्दशा का कारण पुरुष ही हैं। मैं तो इतना ही कहता हूं कि पुरुषों को अपने किए का बदला मिल रहा है। पुरुषों ने स्त्रियों की दुर्दशा की, अब वे पुरुषों की दुर्दशा करने पर उतारू हैं। स्त्रियां, पुरुषों से कौड़ी २ का हिसाब चुका कर छोड़ेंगीं। प्रकृति का अटल नियम काम कर रहा है। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि अब स्त्रियां पुरुषों को एक कदम भी आगे नहीं बढ़ने देंगीं। यदि पुरुष आगे बढ़ेंगे तो स्त्रियां कुए में कूद पड़ेंगी, ज़हर खा लेंगीं, जान पर खेल जायंगीं परन्तु जब तक दम में दम है, पुरुषों को अपनी दुर्दशा दिखलाती हुई उन्हें अकेले अपनी उन्नति नहीं करने देंगीं।

इस समय एक ही रास्ता खुला दिखाई देता है। नव-युवकों को ललकार कर कहा जाय कि माता, बहिन तथा धर्मपत्नी की पर वाह न करते हुए 'बिरादरी' पिशाचिनी को पीस डालो। देश का इसीमें भला है। माता कोने में बैठी आंसू बहाती है तो बहाने दो। बहिनें करुणा-क्रन्दन करती हुई तुम्हारी तरफ मुंह ऊंचा किये देख रही हैं तो देखने दो। धर्म-पत्नी तुम्हारे कन्धे पर सिर रखे अश्रु-वर्षा कर रही है तो करने दो। कानों में उंगली देकर, कमर कस के मैदान में कूद पड़ो, सब मामले स्वयं सुलझ जायंगे। ईसा मसीह के सन्मुख यही प्रश्न आया था। उन्हों ने आवाज़ उठाकर कहा कि मैं बिछुड़ों को मिलाने नहीं, मिले हुवों को बिछुड़ाने आया हूँ। मैं भाई को बहिन से; माता को पुत्र से, अलग कर दूँगा। सब सुधारकों ने इसी उपाय का अवलम्बन किया है। ठीक भी है यदि पुरुष कुरीतियों के फंदों को, बिरादरियों की जजीरों को तोड़ कर फेंक दें। तो स्त्रियां कब तक बिरादरियों की आराधन करेगीं। "स्त्रियों से लड़ाई" करने की ज़रूरत है— कुरीतियां और बिरादरियां एक दम छिन्न भिन्न हो जायंगीं।

'स्त्रियों से लड़ाई' वाह, खूब कहा! भला कोई आदमी होकर भी स्त्रियों से लड़ा है! परन्तु सुधारक कहता है कि हिन्दुओं में, बस, इतनी ही शक्ति रह गई है, इस शक्ति का भी वे प्रयोग न करेंगे तो रही सही भी जाती रहेगी। सुधारक एक कदम आगे बढ़ कर कहता है कि स्त्रियों से लड़ाई छेड़ने में ही आज हिन्दू कौम का भला है। जब तक हम स्त्रियों की बातें सुनते रहेंगे तब तक हमारी कौम का भला नहीं हो सकता।

परन्तु नहीं, ये सब बातें भड़काने वाली हैं, नौ जवानों के जीवनों को तबाह कर देने वाली हैं! माताओं से पुत्रों को बिछुड़ा कर ही यदि सुधार हो सकते हैं तो उनका न होना ही अच्छा है। जो लोग इस प्रकार नौ-जवानों को उकसाते हैं वे अपनी ज़िम्मेवारी के बोझ को नहीं समझते अन्धे जोश में आकर, जहां उन्हें अबलाओं की रक्षा करनी चाहिये थी वहां उन्हीं से छन्द युद्ध छेड़ने की भूमिका बांध देते हैं। 'पुरुष-जाति' के आगे न बढ़ सकने का कारण स्त्री जाति है परन्तु इसका प्रतिकार 'स्त्री-जाति' से द्वन्द युद्ध छेड़ देनेसे नहीं हो सकता। पुरुषों को अपनी माताओं, बहिनों तथा स्त्रियों की तनिक भी परवाह न कर स्वतन्त्रता पूर्वक काम करनेका परामर्श देने से आग ज्यादह सुलगेगी स्त्रियों का कट्टर-पन और अधिक बढ़ेगा, प्रश्न हल न होगा। सुधारों का युग लाने के लिये नौ-जवानों को भड़काने की ज़रूरत नहीं, 'स्त्रियों से लड़ाई' करने की जरूरत नहीं, 'स्त्रियों से सुलह' करने की ज़रूरत है। अब तक स्त्रियों को मनुष्य-समाज से काट कर अलग रखा गया अब उन्हें फिर से समाज शरीर के अवयव समझने की आवश्यकता है। जितनी हलचलें पुरुषों में की जाती हैं उन सबको स्त्री-समाज में किये जाने की ज़रूरत है। जितने समय, शक्ति तथा धन का व्यय पुरुषों में किया जाता है उसकी स्त्रियों में खर्च होने की आवश्यकता है। जिन प्रश्नों को पुरुषों ने अपना बनाया हुआ है उन प्रश्नों को यदि स्त्रियां अपनालें तो सुधार आधे समय में ही नहीं परन्तु एक क्षण में हो जांय, क्योंकि सुधारों के रुके होने का स्त्रियों की मूर्खता के अतिरिक्त, अन्य कोई कारण नहीं है। जिस समय माताएं अपने पुत्रों की पीठ पर थपकी देकर कहेंगी— 'बेटा! अपने पिता का नाम लेकर इन बन्धनों को छिन्न-भिन्न करदे' उस समय कुप्रथाओं के पहाड़ की भी ताकत नहीं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कि वह एक क्षण भर भी टिका रहे। उस समय कुप्रथाओं के बन्धन मकड़ी के जाल की तारों के समान सहज में टूट जांयगे, नव-युवकों की फूक से उड़ जांयेंगे। उस समय यह काम 'स्त्रियों से लड़ाई' करके नहीं होगा, 'स्त्रियों से सहयोग' करके होगा। माताएं पुत्रों के उत्साहों को देख कर कोने में बैठी २ आंसू नहीं बहाया करेंगी लेकिन ज्यों २ वे एक के पीछे दूसरी कुरीति को कुचलेंगे त्यों २ उनकी वही आंखें आनन्द के आंसुओं से डबडबा जांयेंगी।

इस समय लड़कों को भड़काया जाता है पुरुषों को उकसाया जाता है, स्त्रियों को उन्हीं बातों को समझाने के उपायों का अवलम्बन नहीं किया जाता। पुरुषों तथा स्त्रियों के विचारों में खाई पड़ती जाती है। लड़ाई न हो तो क्या हो? इस अवस्था को दूर करने की ज़रूरत है और उसे दूर तभी किया जा सकता है जब पुरुषों के सभी प्रश्नों को स्त्रियों का प्रश्न बना दिया जाय। जिन कुप्रथाओं को दूर करने के लिये पुरुषों में हलचल की जाती है उन्हीं के लिये स्त्रियों में उससे भी दुगनी हलचल की जाय। मैं तो यहां तक कहने को तैयार हूं कि पुरुषों में कोई हल चल की जाय या न की जाय, स्त्रियों में अवश्य की जाय।

भारत की अवनति में स्त्रियां जहाँ तक कारण बन रही हैं हम उसे भली भांति समझ नहीं रहे हैं। हमारे व्यवहार से ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हम समाज में स्त्रियों की सत्ता से भी अनभिज्ञ हैं। परन्तु अपने को धोखा देने से क्या फायदा? भारतवर्ष के प्रश्न अधिकतर स्त्रियों के कारण विकट रूप धारण किये हुए हैं और उन प्रश्नों को हल करने के लिये, शक्तिभर, स्त्रियों में एजिटेशन करना ज़रूरी है!

इस महान् कार्य्य को करने के लिये जीवन अर्पण कर देने वाली अपनी तपस्विनी पुत्रियों की प्रतीक्षा में भारत—माता अपने फटते दिल पर हाथ रख कर चारों तरफ देख रही है। माता के जर्जरित कलेवर की दशा पर जिन देवियों का हृदय सन्ताप से भर जाता है, वे जगदम्बा के चरणों का ध्यान कर यह प्रण करके उठखड़ी हों कि दरवाजे खटखटाते हुए अपनी बहिनों को जगाने में ही वे अपना सुहाग समझेंगी। परमात्मा करें कि ऐसी देवियों से भारत माता की कोख भर जाय। जिस दिन यह स्वप्न, स्वप्न नहीं रहेगा, क्रिया में परिणत होजायगा, उस दिन भारत माता का कल्याण होगा। भारत की देवियों के जागते ही मेरे देश के जहाज़ का लङ्गर उठेगा और यह विशाल पोत सदियों कत एक ही जगह खड़ा रहने के अनन्तर फिर से अपने लक्ष्य को याद कर उस की तरफ हिलने लगेगा।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मालती ।

लेखक—'मुकुन्द'

असावधान न मालति ! रहना ।

फूंक फूंक पद रखना पथ में नहीं कुमार्ग कभी भी गहना ॥
असावधान न मालति ! रहना ॥

चोर लुटेरे भरे हुए हैं । इनसे कण कण घिरे हुए हैं ॥
भेष भव्य ये धरे हुए हैं । खबर घात की करे हुए हैं ॥
नहीं भूलना बातों में पड़, न तो मानना इनका कहना !
असावधान न मालति ! रहना ॥ १ ॥

गौर-वर्ण यह छटा निराली । मृदुल-माधुरी रीति-उजाली ॥
करे सुगन्ध बुद्धि मतवाली । कहीं न लखे मलिन-मन माली ?
नहीं—तोड़ लेगा फिर तो वह, चाहे तू दे लाख उलहना ।
असावधान न मालति रहना ॥ २ ॥

छिपजा, छिपजा, अभी भला है । माली अब तक नहीं चला है ॥
ठीक-बुरी जग में कमला है । रूप, गन्ध भी बड़ी बला है ॥
माली क्या—यदि अलि ने देखा । होगा अधिक दुःख तब सहना ॥
असावधान न मालति ! रहना ॥३॥

लेगा चूस सुरस--वह--सारा । मतवाला बन होगा न्यारा ।
करे-श्याम ने सदा किनारा । चले-श्याम से कभी न चारा ॥
सर्प, करण, पिक की कृति देखो, कभी न इनके ढर्रे बहना ।
असावधान न मालति रहना ॥ ४ ॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हृदय के कुछ भाव

लेखक-श्रीयुत बुद्धिसागर वर्मा विशारद बी.ए.

जून का महीना था। गर्मी की छुट्टियों में लखनऊ से घर चला आया था। एक दिन दोपहर के समय कमरे में बैठा कुछ स्वाध्याय कर रहा था। पढते २ जी ऊब गया। किताबें अलग रखदीं और थोडी देर के लिये तकिये के सहारे लेट गया। कुछ नई और कुछ पुरानी बातें याद आईं। बस लेटे ही लेटे हृदय सरोवर में एक तूफान सा उठ खड़ा हुआ। विचारों की तरंगमालायें उठने लगीं। कुछ उठीं। कुछ विलीन हुईं। कुछ एक दूसरे से टकराकर चकनाचूर हुईं। अस्तु तूफान को रोकने का भरसक प्रयत्न भी किया किंतु सफलता न हुई। आंधी का प्रवाह वेग से चलने लगा था। अतः हृदयङ्गम विचारावलि का रोकना असम्भव प्रतीत होने लगा। उठ कर बैठगया। लेखनी उठाई। और इस प्रकार अपने मनोगत भावों को लेखबद्ध कर डाला उस दिन बक्स खोल कर काग़ज़ों की उलट पलट शुरू की तो इस लेखबद्ध विचार माला पर दृष्टि पड़ी। स्मरण आया कि सम्पादिका जी ने लेख मांगा है। अब की बार यहीं भेज दो। सम्भवतः पाठक और पाठिकायें इन्हें पसन्द करके इनके तत्व को समझने का प्रयत्न करेंगे।

(१)

सच मुच मनुष्य का मन बड़ा विलक्षण होता है। बार २ प्रयत्न किया जाता है कि मन विचलित न हो, किन्तु आधुनिक सांसारिक व्यवहार उसे किसी एक दशा में रहने नहीं देते। जब पुराने भारतीय मनुष्यों के सादे किन्तु निष्कपट और सच्चे जीवन की ओर दृष्टिपात होता है तो ज्ञान पड़ता है कि वास्तव में उन्हीं महापुरुषों का जीवन धन्य था। अबका जीवन तो सच मुच बरायनाम ज़िन्दगी के दिन भरना ही होरहा है। प्रत्येक व्यक्ति स्वार्थ सागर में गोते लगा रहा है। जिसे प्रेम या स्नेह कहा जाता है वह पालिसी का एक अंग समझा जाता है। यहां तक कि अपने कहलाने वाले मनुष्य जिनका सम्बोधन 'इष्ट मित्र बिरादर' तथा 'अज़ीज अक़ारिब' आदि शब्दों से किया जाता है अपने दूसरे भाई की उन्नति नहीं देख सकते, और सदा उसे उठाने की अपेक्षा गिरा देने को ही तैयार रहते हैं। फिर कैसे कहा जासकता है कि प्रत्येक मनुष्य को अपने समाज (बिरादरी) के अन्दर रह कर उसकी मर्यादा का उल्लंघन नहीं करना चाहिये। एक कवि कहता है:—

जेते सगे सुख संग पगे,
दुःख अंग लगे पै तिहाइन सोई।
चाकर चाकरी तो लौं करे,
जबलौं बित देन बिसात में होई।
मित्र मिलाप की रीति यहै,
'मुरलीधर' प्रीति सनेह समोई।
देखत के सब ही अपने अपनो,
भगवान्विना नहि कोई॥

(२)

बिरादरी के धूर्त छली पुरुषों के सामने सदा हाथ जोड़ते रहने से कोई अपनी बिरादरी में अच्छा भले ही बना रहे। किन्तु क्या वह नामधारी बिरादरी उसे कुछ भी पार्मार्थिक अथवा सांसारिक सुख प्राप्त करने में सहायता दे सकेगी? सच तो यों है कि इस

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

समय इस नकली बिरादरी से बढ़ कर हिन्दू समाज का कोई भी शत्रु नहीं है।

(३)

१९ वीं शताब्दी में इंग्लैण्ड में जान रस्किन (John Ruskin) नामक एक बड़ा प्रसिद्ध लेखक हो गया है। वह 'समुद्री जहाज' पर लेख लिखते हुये प्रस्तावना में पहले पूर्व कालिक सीधे सादे जीवन की प्रशंसा करता है फिर लिखता है कि पहले सांसारिक उन्नति के क्षेत्र में प्रत्येक मनुष्य अपनी पूरी शक्ति से दौड़ लगाने के लिये आज़ाद था और यदि किसी कारण वश वह अपनी दौड़ में गिर जाता था तो थोड़ी देर सांस लेकर दूसरे को दुःख दिये अथवा रोके बिना फिर से दौड़ सकता था। किन्तु आज कल दशा उल्टी है। आधुनिक सांसारिक जीवन की उन्नति एक चिकने स्तम्भ के समान है। जिस पर चढ़ना बहुत कठिन और दुखद है। क्योंकि इस चढ़ाई में प्रत्येक व्यक्ति का पैर उसके निकट वर्ती भाई के सिर पर रहता है। और यदि वह गिरता है तो साथ ही अपने भाई को भी कुछ न कुछ हानि अवश्य पहुंचाता है। वास्तव में वर्तमान संसार की प्रगति को देखते हुये मिस्टर रस्किन का उक्त कथन अक्षरशः सत्य प्रतीत होता है।

(४)

जिधर निगाह उठाइये, स्वार्थ ही स्वार्थ देख पड़ता है। यह कहना झूठ न होगा कि एक ओर 'ईशावास्यमिदं' 'मागृधः कस्य स्विद्धनम्' 'सहनाववतु सहनौ भुनक्तु' और 'परोपकाराय इदं शरीरम्' इत्यादि का मनन चिन्तन किया जारहा है और दूसरी ओर संसार स्वार्थ मय होरहा है। पढ़े लिखे विद्वज्जन जानते हुये भी धार्मिक नियमों का उल्लघन कर सांसारिक बहाव में बहे चले जारहे हैं। एक ओर 'सत्यं ब्रूयात्' आदि की शिक्षा दी जारही है और दूसरी ओर 'मनस्यन्तं वचस्यन्यं' का वचन चरितार्थ हो रहा है, धर्म की टट्टी की ओर शिकार खेला जा रहा है। यह विचित्र लीला देख कर चकित होना पड़ता है। यदि मन्द बुद्धि बालकों तथा अल्प श्रुत व्यक्तियों से ऐसी भूलें हों तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। किन्तु बहुश्रुत, विद्वान पंडितों में भी जब यह बातें देखी जाती हैं तो आश्चर्य की सीमा नहीं रहती।

(५)

पक्षपात का इतना बाज़ार गरम हो रहा है कि लोग प्रायः जब किसी पर क्रुद्ध या अप्रसन्न होते हैं।

तो बिना सोचे समझे उसपर व्यर्थ का दोषारोपण कर कराके अपना चित्त बिगाड़ लेते हैं। न्याय-पूर्वक सत्यासत्य धर्माधर्म को विचारने में पक्षपात बड़ी भारी रुकावट डाल देता है। और विद्वान से विद्वान मनुष्य की भी सदा सद्विवेकिनी बुद्धि को अन्धी बना देता है। उस समय मनुष्य दूसरे पर कटुवाक्य और दोषारोपण रूपी अस्त्र फेंकने में अत्यन्त कुशल हो जाता है। और साथ ही अपने दोषों की ओर निहारना सर्वथा भूल जाता है।

(६)

"सब मनुष्यों को सामाजिक सर्व हितकारी नियम पालने में परतन्त्र रहना चाहिए और प्रत्येक हितकारी नियम में सब स्वतंत्र हैं।" यह आर्यसमाज का दसवां नियम है। इसकी पुष्टि पाश्चात्य विद्वानों ने भी की है। इंगलैंड में जानस्टुआर्ट मिल (John stuwent mill) नाम का एक प्रसिद्ध तत्ववेत्ता हुआ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है। उसने सन् १८५७ ई० में अपनी स्त्री की सहायता से 'Liberty' नामक ग्रंथ की रचना की थी यह ग्रंथ रूखा होने पर भी बड़ा प्रभाव शाली है। स्वतन्त्रता और परतन्त्रता विषय पर इसमें अच्छी विवेचना की गई है। उक्त ग्रन्थ के पहिले दो अध्याय में मिल महोदय आर्यसमाज के दसवें नियम की पुष्टि करते हुए लिखते हैं कि सामाजिक कार्यों में मनुष्य स्वतन्त्र नहीं रह सकता क्योंकि यदि वह अपने ही विचार से काम करेगा तो सम्भव है कि समाज को हानि पहुंचे। (यहां सामाजिक कार्यों का अभिप्राय उन कार्यों से है जो समाज की भलाई के निमित्त किए जावें) किंतु अपने निजके कार्यों में जिनसे किसी को हानि पहुँचने की सम्भावना न हो, सभी स्वतन्त्र रह सकते हैं। और ऐसी स्वतन्त्रता अच्छी होती है .....इत्यादि अस्तु।

विवाहादि का समावेश अधिकांश में निजी कार्यों में है। अर्थात् इन का सम्बन्ध केवल उन्हीं व्यक्तियों से होना है जिन का विवाह किया जाता है। — मेरा मतलब पति और पत्नी से है—। प्राचीन प्रथा भी यही है। अतः विवाहादि कार्यों में प्रत्येक लड़के लड़की को स्वतन्त्र राय देने का अधिकार होना चाहिए।

(७)

इञ्जील में एक आयत है। उसमें ईसामसीह अपने शिष्यों को उपदेश देते हैं जिस का भाव यह है। जो अपने प्राप्त अधिकार को न्याय धर्मानुकुल प्रयुक्त करता है। उस के अधिकार की उत्तरोत्तर वृद्धि होती रहती है। किन्तु जो उस शक्ति का दुरुपयोग करता है। उस से यही सही वहशक्ति भी छीन ली जाती हैं। .....यह न समझना चाहिये कि बाइबिल की शिक्षा होने से इस का आदर न किया जाय। इसकी पुष्टि मन्वादि स्मृतियां स्पष्ट रूप से करती हैं।

(८)

यह जानना कि अमुक व्यक्ति मुझ से अधिक प्रेम करता है या न्यून, उस के प्रेम में वृद्धि हो रही है या न्यूनता, कोई कठिन काम नहीं है। व्यवहार साफ बतला देते हैं।

मुखं प्रसन्नं, विमला च दृष्टिः।
कथानुरागोम धुरा च वाणी॥
स्नेहोऽधिकः सम्भ्रमदर्शनं च।
सदानुरक्तस्य जनस्य लक्षणम्॥

इसके प्रतिकूलः—

अतुष्टि दानं, कृतपूर्वनाशनम।
माननं, दुश्चरितानु कीर्तनम्॥
कथा प्रसंगेन च नाम विस्मृतिः।
विरक्त भावस्य जनस्य लक्षणम्॥

यह बिल्कुल सत्य है।

(९)

अपने किसी मित्र अथवा भाई के विषय में कोई ऐसी वैसी बात सुनकर सहसा उस का मनमाना अर्थ न लगा लेना चाहिये। वरन् उसकी भले प्रकार जांच पड़ताल करके सत्यता का स्पष्टीकरण करना चाहिये। बहुधा लोग झूठी बातें उड़ा कर झूठे द्वेष भी लगा दिया करते हैं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

महिला सप्तक

लेखक-सीताराम रावत "कुशल"

(१)

आर्य गगन-ज्योत्स्ना, शुभ आशा बुद्धिमती हो।
आद्या-शक्ति-स्फूर्ति, मनस्विन वीरव्रती हो॥
प्रकृति-मनोहर-सुता, भवन- भारती सती हो।
मङ्गल महिमा-मूल, भगवती भाग्यवती हो॥
निखिल-श्रेय संचारिणी, आर्य शील सुषमा-मयी।
विभव चारिणी भय हरणि, हो गौरव गरिमामयी॥

(२)

शील सत्य की धाम, भक्ति आगार आप हो।
धैर्य स्नेह की रूप, धर्म आधार आप हो॥
क्षेममयी तू शक्ति मयी वात्सल्य मही हो।
शान्तिमयी तू नेममयी माधुर्यमयी हो॥
आर्य-हृदय संसार की, परम उपास्या देवि हो।
पिकबैनी मृगनयनि हो, विश्वविमोहनि सेवि हो॥

(३)

जननी हो नर रत्न, रत्नगर्भा विरला हो।
करती श्रीयुत सदन सदन लक्ष्मी सरला हो।
सिंह-प्रसवनी स्वयं, सिंहनी शक्तिमती हो॥
वशीभूत जगदीश, क्योंकि पतिव्रता सती हो।
शुचि लावण्य-स्वरूप पर, मोहित करती हो रती॥
मन मुग्धा हो पद्मिनी, साध्वीवर-लज्जावती॥

(४)

प्रेमबीज का वपन विश्व तू ही करती है।
निज-सन्तति में वीर-भाव तू ही भरती है॥
क्रोध कलह छल द्वेष दम्भ तू ही हरती है।
निर्मल शाँति सुचारु गेह तू ही करती है॥
देव सेव्य जग जनति तू, सुखद वरद जय करणी है।
प्रेम-सजीवन जड़ी तू विनय करिण जग भरणि है॥

(५)

जागृत जीवन-ज्योति सुधा तू ही सरसाती।
मोद-मेघ सब काल जगत तू ही बरसाती॥
तेरी कीर्ति अपार धरातल पर गुंजित है।
गुण गण गाथा अमर महा महिमा मंडित है॥
स्वर्गिकता संसार में, करती तू संचार है।
हे आर्ये! तू विश्व के हृत्तन्त्री की तार है॥

(६)

बड़े बड़े मर्मज्ञ, तत्वविद् जने तुम्हीं ने।
कवि कोविद सर्वज्ञ दार्शनिक जने तुम्ही ने॥
संसृत में विख्यात-विख्यात वीरवर जने तुम्हीं ने।
रामकृष्ण अवतार शिरोमणि जने तुम्हीं ने॥
तेरे तप से हे सती! इन्द्रासन भी डगमगे।
तेरी करुण पुकार को, सुनि प्रभु भी आ जग जगे॥

(७)

हे भद्रे! फिर उठो जागती ज्योति जगाओ।
करदो सार्थक नाम आर्यता स्रोत बहाओ॥
आर्य-कीर्ति की ध्वजा अखिल जग में फहराओ।
भव्य-भावना भरो प्रेम-मारुत लहराओ॥
सुकृतमयी निज कुक्षि से आर्यपुत्र फिर जननकर।
विश्व बना दे स्वर्ग सम दुःख दीनता हनन कर॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मुसलमानों के सिद्धान्तों पर विचार

लेखक—श्रीयुत कृष्णानन्द जी

आज मैं मुसलमान भाइयों के कई सिद्धान्तों पर विचार करना चाहता हुं जिस से पाठकों का मनोरंजन भी हो और सारासार का विचार भी कर सकें।

(१) मुसलमानों का सिद्धान्त है कि खुदा अज़ली (अनादि) और अबदी (अनन्त) है लेकिन रूह (जीव) और मादः (प्रकृति) अज़ली नहीं, सादि (आदि वाला) है, पर अनन्त कालतक रहेगा।

"ईश्वर अनादि और अनन्त है" मुसलमानों का यह सिद्धान्त तो बिलकुल ठीक है लेकिन जीव और प्रकृति का आदि है अन्त नहीं यह बात ठीक नहीं। तर्क और विज्ञान से सिद्ध है कि "जिस का आदि है उस का अन्त अवश्य है, जिस का आदि नहीं उसका अन्त भी नहीं"। अनन्त काल तक वही रह सकता है जो अनादि काल से चला आरहा हो और जिस वस्तु का आदि है वह अन्त वाला अवश्य होगा। परन्तु मुसलमान लोग तर्कशास्त्र और साइन्स के विरुद्ध अजीब सिद्धान्त मानते हैं। देखिए मुसलमानों की फिलासफी कैसी लचर है!

(२) संसार उत्पन्न होने के पहले सिर्फ खुदा ही था। खुदा के "कून्" कहने मात्र से दुनिया पैदा होगई।

विचारणीय बात यह है कि जब सिवाय खुदा के और कोई था ही नहीं तो खुदा ने किस से 'कुन्' कहा और कौन चीज़ दुनियां के रूप में[1] प्रकट हुई? इसका यथार्थ उत्तर मुसलमान नहीं देसकते। वे कहते हैं कि खुदा ने अपनी कुदरत से दुनिया बनाई। प्रश्न होता है कि यह "कुदरत" कौनसी वस्तु थी? खुदा से भिन्न थी या अभिन्न? यदि भिन्न थी तो साफ़ साबित है कि संसार उत्पन्न होने के पहले खुदा के साथ साथ "कुदरत" भी थी। और यदि कहा जाय कि वह अभिन्न थी तो सिद्ध है कि खुदाने किसी गैर से नहीं, अपने से ही "कुन्" कहा और खुदा खुद दुनिया की शक्ल में नमूदार (प्रकट) हुआ। परन्तु मुसलमान लोग-

कहते हैं कि खुदा दुनियां से जुदा है। कैसा भोंडा सिद्धान्त है कि एक तरफ तो कहते हैं कि सिवाय खुदा के और कोई था ही नहीं और दूसरी तरफ दुनिया को खुदा से जुदा मानते हैं। इनकी फ़िलासफी ही भद्दी है। तर्क और विज्ञान से गीता की बात सिद्ध है—"नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः" असत् का भाव नहीं और सत का अभाव नहीं (अदम का वजूद नहीं और हस्ती की नेस्ती नहीं) तत्वतः जो नहीं है वह हो ही नहीं सकता और जो है उसका अभाव नहीं होता।

(३) उनका सिद्धान्त है कि खुदाने हज़रत मुहम्मद के लिए ही दुनिया को पैदा किया। मुहम्मद साहब न होते तो दुनिया पैदा न होती।

संसार के सब मज़हब वाले तो यह मानते हैं कि दुनिया के (हित के) लिए

---

१ सब जीव और प्रकृति

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

देवता या महात्मा अवतार लेते हैं। † लेकिन सब मजहब वालों के विरुद्ध मुसलमान लोग यह मानते हैं कि "दुनिया के लिए मुहम्मद साहब नहीं पैदा हुए बल्कि मुहम्मद साहब के लिए ही दुनियां पैदा की गई, यदि मुहम्मद साहब न होते तो दुनिया भी न होती"। बड़ा आश्चर्य है कि मुहम्मद साहब ही के लिए दुनियां बनी और मुहम्मद साहब दुनियां भर में मौजूद नहीं। अगर मुहम्मद के लिए दुनिया पैदा की गई तो खुदाने मुहम्मद साहब को दुनियां से क्यों उठा लिया? उन्हें अब तक क्यों न रहने दिया? चूंकि खुदाने मुहम्मद साहब को दुनिया से उठा लिया इससे साफ ज़ाहिर है कि खुदाने उनके लिए दुनिया नहीं बनाई। क्योंकि खुदा ऐसा नामुन्सिफ नहीं है कि जिस मुहम्मद के लिए दुनियां बनावे उसी मुहम्मद को दुनियां से उठाले और अगर मुसलमानों का दावा सच माना जाय तो उनका खुदा ही नामुन्सिफ सिद्ध होजाता है। यह निश्चय है कि इन की फिलासफी ही भोंडी है।

"खुदाने हजरत मुहम्मद के लिए दुनियाँ को पैदा किया, हजरत मुहम्मद पैदा न होते तो दुनिया भी पैदा न होती" यह बात उसी तरह है जैसे कोई कहे कि "भारतीय मुसलमानों को खुदाने स्वामी श्रद्धानन्द के लिए ही पैदा किया है यदि स्वामी श्रद्धानन्द पैदा न होते तो भारत में मुसलमान भी पैदा न होते"। यदि मुसलमान लोग यह मानते कि "संसार के हित के लिए मुहम्मद साहब पैदा हुए" तो उनकी बात ठीक होती लेकिन वह तो उलटी बात मानते हैं।

(४) मुसलमान लोग कहते हैं कि "मज़हब में अक्ल को दखल नहीं।"

मज़हब कोई ऐसी चीज नही है, जो बुद्धि के लिए अगम्य हो। हर एक मज़हब पर बुद्धि पूर्वक विचार किया जा सकता है। बुद्धि का उलटा है अज्ञान और अन्धविश्वास। मानो उनका मज़हब अज्ञान, हठ और अन्ध विश्वास पर ही निर्भर हो तभी तो ऐसा करते हैं। यदि उनका मजहब तर्क पूर्ण और युक्ति युक्त होता तो वे मज़हब में अक़्ल को दख़ल देते, मज़हब की बातों का बुद्धि से विचार ते। लेकिन उन्हों ने तो कसम खाली है कि हम मज़हब में अक्ल से काम लेंगे ही नहीं। सचमुच मुसलमान लोग मज़हबी मामले में अक्ल से काम नहीं लेते। वे मजहब की ऐसी सैंकड़ों बातें मानते व करते हैं जो अज्ञान, अन्धविश्वास व दुराग्रह पर निर्भर होते हैं। आप उन्हें लोख समझाइए लेकिन वे अक़्ल से काम लेंगे ही नहीं। मिसाल के तौर पर देखिए यह बात आइने की तरह साफ़ है कि "कुरान में गाव कुशी" की न इजाज़त है न ममानियत और हिंदुस्तान ऐसा देश है कि यहां कृषि का कार्य गो वंश पर भी निर्भर है, इसके अलावे गाय के दूध, दही, घी गोबर आदि से भी हम भारतीयों को बहुत लाभ पहुंचता है लेकिन कुरान में गाय की कुर्बानी का विधान न होने पर भी मुसलमान लोग हठ व्रश गाय की कुर्बानी करते हैं। यदि वे गाव कुशी न करें तो उनके मज़हबी रस्म में लेश मात्र

† जैसे पौराणिक लोग मानते हैं कि संसार में धर्म के प्रचारार्थ भगवान अवतार लेते हैं। जैन लोग मानते हैं कि संसार के हितार्थ तीर्थंकर लोग जन्म लेते हैं, बौद्ध लोग मानते हैं कि सब को निर्वाण पद दिलाने के लिए बुद्धभगवान इस लोक में आते हैं, ईसाई लोग मानते हैं कि सब को मुक्ति दिलाने के लिए ईसा का जन्म हुआ, आर्य समाजी भी मानते हैं धर्म के प्रचारार्थ कभी कभी महात्माओंका जन्म होता है॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भी त्रुटि नहीं आ सकती। लेकिन इतनी स्पष्ट बात भी मुसलमानों के दिमाग़ में नहीं आती क्योंकि अक़्ल से काम लेते ही नहीं यह तो एक मिसाल है। सैकड़ों ऐसे कार्य हैं जिनमें मुसलमान लोग बुद्धि से ज़रा भी काम न लेकर अन्ध अनुकरण व दुराग्रह करते हैं।

(५) नमाज़ को खुदा की बड़ी भारी इबादत समझते हैं; शान्ति पूर्वक बैठ कर ईश्वर की स्तुति, प्रार्थना करने व ध्यान धरने का क़ायदा नहीं चलाते।

इनकी उपासना विधि बड़ी विचित्र है। नमाज़ क्या पढ़ते हैं मानो क़वायद करते हैं। कहां ईश्वर का ध्यान व भजन और कहां क़वायद! नमाज़ पढ़ते वक्त जो ईश्वर की स्तुति करते हैं वह तो बहुत उचित है लेकिन बार २ उठना, बैठना, झुकना यह वर्जिश नहीं तो क्या है? हजारों मुसलमान एक साथ बैठ कर खुदा की स्तुति-पाठ कर सकते हैं, इससे खुदा नाराज नहीं होगा वह तो प्रेम भाव का भूखा है, ड्रिल देखने का भूखा नहीं है। खुदा की इबादत (ईश्वर के भजन) में ड्रिल दिखलाने की कोई जरूरत नहीं। लेकिन मुसलमानों को इतनी समझ कहाँ। वे तो अक़्ल से काम लेंगे ही नहीं।

(६) मुसलमानों का विश्वास है कि शैतान ही लोगों को बहका कर पाप में प्रवृत्त करता है।

मुसलमान लोग यह भी मानते हैं कि खुदा क़ादिर मुतलक़ (सर्व शक्तिमान्) है। हर एक कार्य करने में समर्थ है। उस के लिए कोई भी कार्य असम्भव नहीं। विचारणीय बात यह है, कि खुदा इस बात को ज़ानता और देखता है कि शैतान हमारे बन्दों को गुमराह करता फिरता है, और खुद्दा "क़ादिर मुतलक़" है तो उसने शैतान को स्वच्छन्द घूमने के लिए क्यों छोड़ दिया? खुदा यदि चाहता है कि हमारे बन्दे नेकी व सवाब (धर्म कर्म) करें, पाप कर्म कभी न करें। तो शैतान को तुरन्त ही मार डालना चाहिए था जिससे वह किसी को न बहका सके। इस प्रकार सब लोग सहज में ही धर्मात्मा और स्वर्ग के अधिकारी बन जायेंगे लेकिन चूंकि क़ादिर मुतलक़ खुदा शैतान को न मारता है, न कैद करता है। इस से साबित है कि खुदा को यह मंजूर है कि लोगों को शैतान बहकाकर पाप में प्रवृत्त करता फिरे। जब उसे यह मंजूर है, तब पापाचार में मनुष्यों का कोई दोष नहीं। और जब मनुष्य निर्दोष हैं तब उन्हें नरक में भेजना अन्याय है। (यहां पर यह मानना ठीक न होगा कि खुदा में इतनी ताक़त नहीं कि वह शैतान को कैद कर सके या मार सके। क्योंकि "क़ादिर मुतलक़" है) इस प्रकार शैतान को मानकर मुसलमानों ने अपने खुदा को अन्यायी सिद्ध कर दिया।

(७) मुसलमानी मज़हब में बाजा बजाने व सुनने का निषेध है। बाजा कितनी अच्छी चीज है इससे सब लोगोंका मनोरञ्जन होता है संसारकी सब सभ्य और असभ्य जातियां बाजों को पसन्द करती हैं। बाजा ऐसी अच्छी चीज़ है कि शिक्षित अशिक्षित सभी को प्रिय है क्योंकि उससे आनन्द मिलता है परन्तु मुसलमान आचार्यों की बुद्धि तो देखिए कि आनन्द प्रद बाजा बजाने व सुनने तक का निषेध कर दिया। दुनियां में कोई ऐसा मनहूस मज़हब नहीं है जिसमें आनन्दोत्साह-वर्धक बाजा बजाने व सुनने का निषेध हो। दुनिया में इसलाम ही एक ऐसा मन-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इस मज़हब है जिसमें बाजा बजाने व सुनने की मुमानिअ़त है।

(६) मुसलमानों का सिद्धांत है कि जो लोग रसूल व कुरान पर ईमान न लावें वे क़ाफ़िर और बध के योग्य हैं।

प्रायः सभी सम्प्रदाय वाले अपने से भिन्न मतवादियों को अपने से हीन (अपने से कम धर्मात्मा) ठहराते हैं परन्तु ऐसा घृणित उपदेश किसी भी सम्प्रदाय में नहीं है कि ग़ैर मज़हब वालों को काफ़िर समझ कर मार डालो। वास्तव में इसी नीच आदेश से प्रेरित होकर मुसलमान लोग भिन्न मतवादियों को घृणा की दृष्टि से देखते और उन्हें अपने सम्प्रदाय में मिलाने के लिए ज़ोरज़ुल्म भी करते हैं। भिन्न मतवादियों को स्वमतावलम्बी बनाने में इन्होंने जो जो जुल्म किया है वह इतिहास से प्रमाणित है। प्राचीन ईरान के निवासी पारसी धर्म वालों ने जब देखा कि यहां इस्लाम मजहब को स्वीकार किये बिना हमें वे लोग जीवित न छोड़ेंगे तो अपना धर्म बचाने के लिए बचे-खुचे पारसी लोग भाग कर भारत की शरण में आये। यदि वे पारसी वहां से न भागते तो निश्चित था कि बध कर दिये जाते, वहां वे तभी जीवित रह सकते जब इस्लाम को स्वीकार कर लेते। गुरु गोविन्दसिंह के बच्चों को मुसलमानी मत स्वीकार न करने के कारण दीवार में चुनवाकर मार डाला। भिन्न तो भिन्न, अपने ही सूफी (अद्वैतवादी) महात्मा मंसूर को केवल इसी कारण सूली पर चढ़ा दिया कि वह अनलहक़ [अहब्रह्मास्मि] मानता था। यह लोग भिन्नमतवादियों को काफ़िर और बधके योग्य मानते हैं इसलिए यह लोग भिन्न मतवादियों पर दया नहीं दिखला सकते। दया तो दर किनार न्याय पूर्वक व्यवहार भी नहीं कर सकते। मेरा दावा है, मैं बलपूर्वक कहता हूँ कि जब तक मुसलमानों के हृदय से "अन्य मतवादी क फिर हैं" यह भाव दूर नहीं होगा तब तक मुसलमान लोग भिन्न मतवादियों से न न्याय पूर्वक व्यवहार कर सकते हैं न सच्ची मित्रता कर सकते हैं। और इनके दिमाग से यह भाव दूर होना तभी संभव है जब वे इस बात को हृदयंगम करलें कि "जैसे हमें स्वेच्छानुसार मज़हब मानने का हक़ है वैसे ही सब को हक़ है कि अपनी अपनी इच्छा के अनुसार मज़हब माने और जिस तरह हमें दूसरों को मज़हब खंडन करने का हक़ है उसी तरह दूसरों को भी हमारा मज़हब खंडन करने का हक़ है, जैसे हम इन्सान और खुदाके बन्दे हैं-वैसे ही गैरमज़हब वाले भी इन्सान और खुदा के बन्दे हैं।" यह न्याय युक्त विचार ही उनके भ्रम और दुराग्रह को दूर करने वाला है। परन्तु बहुत से शिक्षित मुसलमान इस न्याय को जानते हुए भी मज़हबी मामले में हठ और पक्षपात करते हैं, उनका क्या इलाज है? जब वे जान बूझ कर ऐसा करते हैं तो उनका सुधार तभी संभव है जब उन्हें मुस्तफ़ा कमाल पाशा के समान न्यायशील सुल्तान के आधीन रहना पड़े।

सब के मानने योग्य सिद्धाँत यही है कि धर्म कर्म करने के लिए सब कोई बाध्य हैं पर दूसरे की इच्छानुसार उपासना करने के लिए कोई बाध्य नहीं। सब कोई स्वेच्छानुसार देवता व देवदूत (पैगम्बर) व ईश्वर को मानने व पूजने में स्वतन्त्र हैं। किसी को यह हक़ नहीं है कि अपने से भिन्न देवता या पैगम्बर को मानने व पूजने के कारण किसी से द्वेष रक्खे। भिन्न देवोपासना

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मात्र के कारण किसी से चिढ़ना या बुरा मानना घोर अन्याय और मनुष्यता के विरुद्ध है। इस बात में हिन्दू धर्म से बढ़कर न्याय-शील और उदार दुनियां भर में कोई भी धर्म नहीं। हिन्दू धर्म की यह एक बड़ी विशेषता है कि 'उपासना विधि में सब को स्वतन्त्रता है कि अपने ही विश्वास के अनुसार ईश्वर व देवता को मानें या न मान पूजें या न पूजें परन्तु धर्म कर्म (सच बोलना, विद्या पढ़ना, शारीरिक बल बढ़ाना, खेलना और मनोरञ्जन करना, माता पिता की सेवा करना गुरु को प्रसन्न करना, हृष्ट पुष्ट सन्तान उत्पन्न करना, स्त्री की रक्षा करना, सन्तान पालन करना, पुत्र पुत्रियों को शिक्षित करना विद्याओं कलाओं का विस्तार करना, दीन दुखियों पर दया करना, देश हितैषी संस्थाओं को दान देना, अन्याय का विरोध करना, दुष्टों को दंड देना व दिलाना, परोपकार करना, अन्यों से न्याय पूर्वक व्यवहार करना आदि) करने के लिए सब कोई बाध्य हैं। यह ठीक है कि आज कल हिन्दू धर्म में बहुत सी कुरीतियाँ और बहुत तरह के अन्ध विश्वास फैले हुए हैं जिनका सुधार आवश्यक है। परन्तु हिन्दू धर्म यह कभी नहीं कहता कि भिन्न उपासना विधि के कारण किसी व्यक्ति से बुरा मानो। हिन्दू धर्म यह अवश्य कहता है कि चाहे कोई हमारे समान भजनोपासना करता हो या न करता हो यदि वह चोरी या बेईमानी करे, कृतघ्नता या दुष्टता करे, अन्याय या अत्याचार करे तो बेशक वह अधर्मी और दण्ड के योग्य है। मुसलमान लोग चूंकि विश्वास (कुरान व रसूल पर ईमान लाने) पर जोर देते हैं यही कारण है कि उनकी दृष्टि धर्म कर्म और ज्ञान पर नहीं जाती। उनका लक्ष्य तो यही रहता है कि अन्य लोग हमारी ही तरह कुरान व रसूल को मानें। इसी संकीर्ण विचार में फंसाने के लिए वे उत्सुक और प्रयत्न शील रहते हैं। यही कारण है जो वे दूसरों के ज्ञान व महान् कार्य पर दृष्टि नहीं करते और कहते हैं कि मज़हब में अक़्ल को दख़ल नहीं।

(६) मुसलमान लोगों में मुरतिद को संगसारी के द्वारा मार डालने का विधान है।

देखिए! मुसलमानों में इतना भी विचार स्वतन्त्र नहीं कि कोई व्यक्ति कुरान के किसी आयत पर शंका करे। यदि कोई भलामानुष नेक नियती से कुरान के किसी आयत पर शंका करे या किसी आयत का खंडन करे तो मुसलमान लोग उसे "मुरतिद" कहकर पत्थर बरसा बरसा कर उसे मार डालते हैं। अभी हाल ही में अफ़गानिस्तान में कई अहमदियों (जो कि अपने को इसलाम मज़हब वाला मानते हैं, कुरान को मानते हैं परन्तु उसके सब अंश से सहमत नहीं) को आधा धड़ ज़मीन में गाढ़ कर पत्थर बरसा बरसा कर मार डाला था। जिस पर महात्मा गांधी ने मुसलमानों को सुलह की राय दी थी। कि "प्यारे मुसलमानो! पिछले ज़माने में जो हुआ सो हुआ। अब आप लोग मुरतिदों को संगसारी करके मार डालने की प्रथा को सदा के लिए त्याग दीजिए क्योंकि यह कार्य न्याय और मनुष्यता के विरुद्ध है।" खेद है कि मुसलमानों को महात्मा जी का अमृत वचन विष तुल्य प्रतीत हुआ। दो चार मुसलमानों को छोड़ कर किसी भी मुसलमान ने उनके वचन पर ध्यान नहीं दिया। प्रश्न होगा कि यहां हिंदुस्तान में मुसलमान लोग काफिरों व मुरतिदों का वध क्यों नहीं करते? कारण यही है कि

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

यहां पर उनका वश नहीं चलता*। यदि इन का राज्य होता या वश चलता तो ये काफिरों और मुरतिदों का निश्चय ही बध कर डालते। जैसे कि गुरु गोविंद सिंह के लड़कों को और मंसूर को मार डाला था। अस्तु, इन में इतनी भी उदारता नहीं कि थोड़ा सा मतभेद रखने वाले कादियानी अहमदियों को भी क्षमा कर सकें। तब भला कैसे सम्भव है कि अधिक मत भेद रखने वालों को यह लोग क्षमा कर सकें। मेरी समझ से दुनिया भर में सब से अधिक अनुदार मज़हब इन्हीं का है।

(१०) मुसलमानों का विश्वास है कि खुदा पैगम्बरों को मोजज़ों से युक्त करके संसार में मज़हब इसलाम फैलाने के लिये भेजता है। लेकिन हजरत मुहम्मद आख़िरी रसूल हैं, अब कोई रसूल नाज़िल (अवतीर्ण) न होगा।

विचारने की बात है कि यदि खुदा मोजजों (अलौकिक शक्तियों) से युक्त पैगम्बरों को भेजता है तो अब क्यों नहीं भेजता? इसकी क्या वजह है जो पहले भेजता था और अब नहीं भेजता? क्या अब खुदा में भेजने की या मोजजा देने की ताकत नहीं रही? क्या सब के सब रसूल बागी होगये? या क्या खुदा अब इस्लाम मजहब को संसार में फैलाना नहीं चाहता? जब कि खुदा इस्लाम मजहब का इतना पक्षपाती है कि मोजज़ों से युक्त पैगम्बरों को प्रचारार्थ भेजता था तो उचित तो यही है कि इस समय भी लाखों पैगम्बरों में से दोचार पैगम्बर को ही मोजज़ों से युक्त करके ससार में भेजदे। वे पैगम्बर मोजज़ व करामात दिखला दिखला कर सारे संसार को एक महीने के भीतर ही मुसलमान बना डालेंगे। मजाल नहीं कि कोई व्यक्ति किसी पैगम्बर को हानि पहुँचा सके। क्योंकि मोजज़ (अदभुत सामर्थ्य) के द्वारा वे विरोधियों को फ़रऊन की तरह ग़ारत (नष्ट) कर देंगे। मोजजों (अलौकिक चमत्कारों) को देखते ही संसार के सब मनुष्य पैगम्बरों के श्रद्धालु और विश्वासी बनकर तत्क्षण इसलाम मजहब को स्वीकार कर लेंगे। परन्तु यदि कोई मनुष्य मोजजो को देखकर भी आंख मूंद लेगा—उनके मतको स्वीकार न करेगा तो पैगम्बर उसे मोजजाके द्वारा तुरन्त भस्म कर देंगे, इस में सन्देह ही नहीं। जब कि क़ादिर मुतलक खुदा मजहब इसलाम का अत्यन्त पक्षपाती है और सब रसूल उसके अधीन और आज्ञाकारी हैं तो समझ में नहीं आता कि खुदा और सब रसूल आसमान में चुप चाप क्यों बैठे हैं? वह रसूलों को इस्लाम के प्रचारार्थ संसार में क्यों नहीं भेजता? यहां पर चार ही बात होसकती हैं कि या तो खुदा में इतनी ताक़त नहीं रही कि वह पैगम्बरों को भेज सके या सबके सब रसूल बागी होगये, खुदाका कहना न मानते होंगे या खुदा ने पैगम्बरों से मोजजों को छीन लिया होगा। जिससे सब रसूल मनुष्योंसे डरकर संसार में आते न होंगे या खुदा इस्लाम मज़हब को संसार में फैलाना ही न चाहता होगा। इन चारों में से कोई न कोई कारण है ज़रूर तभी तो खुदाऔर सब रसूल भी शान्ति पूर्वक बैठे हैं, मजहब इस्लाम फैलाने के लिए ज़रा भी कोशिश नहीं करते। जिस मजहब को फैलाने के लिए मुसलमान लोग जी जान से कोशिश कर रहे हैं, चोटी एडी का पसीना एक कर रहे हैं, जान लेने व जान देने तकके

*जितना उनका वंश चलता है उतने से बाज़ नहीं आते। कहीं कहीं मौलवियों ने फतवा निकाल ही दिया है कि कांग्रेस में शरीक होने वालेयों वन्दे-मातरम् चिल्लाने वाले काफिर हैं इत्यादि।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिए तैयार हैं उसी मजहब इस्लाम को फैलाने में खुदा और लाखों पैगम्बरों से कुछ भी मदद नहीं मिल रही है! खुदा को मुसलमानों के जद्दोजहद (उद्योग व प्रयत्न) और जांनिसारी (आत्मत्याग) का कुछ भी ख़्याल नही ! अफ़सोस सद अफ़सोस ! यदि खुदा एक भी पैगम्बर संसार में भेज देता तो मुसलमानों को इतनी हैरानी व परेशानी न उठानी पड़ती और एक महीने के अन्दर ही समस्त संसार मज़हब इस्लाम का स्वीकार कर लेता । ताज्जुब है कि खुदा कादिर मुतलक होकर भी ऐसा क्यों नहीं करता ?

अब पैग़म्बर क्यों नहीं आते इसकी ठीक वजह मुसलमान विद्वान् नहीं बतला सकते आक्षेप से बचने के लिए उन्होंने इस सिद्धांत को गढ़ लिया कि "हजरत मुहम्मद आखिरी रसूल हैं अब कोई भी रसूल संसार में न आवेगा " क्यों भाई अब कोई रसूल क्यों न आवेगा ? मुसलमान विद्वानों ने सोच लिया था अब दूसरा जमाना आरहा है विद्या और ज्ञानका प्रचार अधिक होरहा है ' खुदा रसूल को भेजता है " इस सिद्धांत को अब लोग न मानेंगे और तरह तरह के प्रश्न व आक्षेप करेंगे । इसी लिए उन्होंने एक सिद्धान्त बना लिया कि बस अब कोई पैगम्बर संसार में न आवेगा । वास्तव में मुसलमान आचार्यों ने अपने असत्य सिद्धान्त को छिपाने के लिए बड़ी चतुराई से काम लिया है लेकिन सच सच ही है झूठ झूठ ही है । झूठी बात पर कितना ही परदा डालिए छिप नहीं सकती । सच्ची बात जाहिर होही गई । मुसलमान लोग इस बात को भले ही मानलें कि 'पुराने जमाने में रसूल आते रहे और अब कोई रसूल न आवेगा" लेकिन जिसे जराभी बुद्धि होगी वह इसका कारण जानना चाहेगा और तहकीकात करके इस सिद्धान्त पर अवश्य पहुंच जायगा कि " खुदा किसी मजहब का ऐसा पक्षपाती नहीं है कि मजहब फैलाने के लिए किसी रसूलको मोजजों से युक्त करके भेजे ।" मोजजों का सिद्धान्त तो बिलकुल कल्पित है । मोजजा कभी न हुआ न होगा यह तो मजहब वालों की कारस्तानी है जो अपने मजहब को श्रेष्ठ सिद्ध करने के लिए सभी मजहब वालों ने अपने अपने धर्म ग्रन्थों में मोजज़ों युक्त घटनाओं का उल्लेख कर दिया है । खुदाने कभी किसी को मोजज़ा न दिया न देगा । सबूत यही है कि यदि वह पुराने जमाने में लोगों को मोजज़ा देता होता तो अब भी लोगों को मोजज़ा अवश्य देता, उसे कोई रुकावट नहीं थी । खुदा किसी मज़हब का तरफदार या ठेकेदार नहीं । यह तो मुसलमानों व ईसाइयों का भ्रम है जो अपने अपने मज़हब को खुदाका मज़हब जानते व मानते हैं । मुसलमान लोग चूंकि अपने सिद्धान्तों को तर्ककी कसौटी पर नहीं जाँचते, मजहब में अकल से काम नहीं लेते इसीलिए रसूल व मोजजों पर अन्ध विश्वास रखते हुए भी मान लेते हैं कि बस अब कोई रसूल न आवेगा ।

खुदा का काम है सृष्टि को उत्पन्न करके स्थित रखना और प्रलय करना और सम्पूर्ण जीवों को कर्मों का फल देना । खुदा दुनियां के किसी मजहब का ठेकेदार नहीं है । यदि वह किसी एक भी मजहब का पक्षपाती होता तो शेष मजहब वालों को जिन्दा ही क्यों रखता ? अपनी इच्छा से मार डालता या किसी देवता या पैगम्बर को भेजकर सब मनुष्यों को उसी मजहब वाला बना डालता । परन्तु ईश्वर न्यायकारी है और किसी मजहब का पक्षपाती नहीं । मुसलमान लोग मजहब में अकल से काम नहीं लेते इसी लिए

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

उन्हें न्याययुक्त बात नहीं सूझती कि खुदाही काफिरों को पैदा करके जिन्दा रखता है तो हम उसे क्यों मार डालें ? यदि काफिरों को सुधारना अभीष्ट है तो उन्हें प्रेमसे, सभ्यता से, नम्रता से समझावें, लेकिन उनपर जोर या ज्यादती न करें । आदमी के पास बुद्धि ही एक ऐसी वस्तु है जिस के द्वारा सत्य असत्य का निर्णय और भले बुरे का ज्ञान हो सकता है उसी अक्ल को यह लोग ताक पर लपेट कर रख देना चाहते हैं और मज़हब में बुद्धि से काम न लेने के लिए मानो दफा १४४ का प्रयोग करते हैं ?

(११) मुसलमान लोग मुरदों को गाड़ना आवश्यक समझते हैं जलाने की प्रथा नहीं डालते ।

इस प्रथा के कारण बहुत सी जमीन जो कृषि के लिए या अन्य कार्य के लिए उपयोग होती, व्यर्थही रुकजाती है । कल्पना कीजिए कि एक शहर में दसलाख मुसलमान हों उस में हैजा या प्लेगसे एक साथ एक लाख आदमी मरजांय तो उन सब को गाड़ने के लिए कितनी जमीन लग जायगी ? कम से कम सैकड़ों बीघा जमीन चाहिए । अब दूसरी ओर विचार कीजिए यदि जलाने की प्रथा होती तो उन्हीं लाख आदमियों को जलाने के लिए अधिक से अधिक पांचबीघा जमीन काफ़ी है । यह तो एक मिसाल है । यदि मुसलमानों की इच्छानुसार समस्त संसार मुसलमान बन जाय तब तो प्रतिवर्ष दो करोड़ मुरदा गाड़ने के लिए लाखोंबीघा जमीन फसा देनी पड़ेगी । देखिए मुसलमान लोग भारत में ८०० वर्ष से रहते हैं लेकिन उन्हों ने भारत की एक अच्छी रीति को ग्रहण नहीं किया । इस विषय में अंग्रेज ही प्रशंसनीय हैं । अंग्रेज लोग सिर्फ २०० वर्ष से ही भारत में आते हैं । मैंने सुना है कि मुरदों को जलाने क लिए लन्दन में कई भट्टियां तैयार कराई गई हैं । अंग्रेजों का अपने रस्मपर इतना हठ नहीं जितना मुसलमानों का है । कारण यही है कि अंग्रेज लोग विद्या और साइन्स के प्रेमी हैं और मुसलमान तो स्पष्ट कहते हैं कि मज़हब को बुद्धि से मत जांचो, अर्थात मजहबी मामले में पक्षपात और दुराग्रह से कामलो । अस्तु मुरदों को दफनाने की अपेक्षा जलाना बहुत ही उत्तम है । देखें मुसलमान लोग कब इस सुरीति को ग्रहण करते हैं ।

(१२) मुसलमान लोग नमाज में और दूसरे मौकों पर "लाइलाः रलिल्लाः मुहम्मद रसूलिल्लाः मुहम्मदरसूलिल्लाः" यही मंत्र पढ़ते हैं । उनका यह प्रसिद्ध कलमा है ।

चूंकि मुहम्मद साहब भी नमाज पढ़ते थे इससे जाहिर है कि सब रसूल भी नमाज पढ़ते रहे होंगे । प्रश्न यह है कि क्या वे सब रसूल इसी कलमा को पढ़ते रहे होंगे ? मेरा विचार है कि दूसरों की कौन कहे खास मुहम्मद साहब भी इस कलमा को न पढ़ते रहे होंगे । मेरी समझ में यह आता है कि "लाइलाः रलिल्लाः" बस इतनाही मुहम्मद साहब का कलमा रहा होगा । क्योंकि अपने आप अपनी प्रशंसा करना बुद्धिमानों और विद्वानों का काम नहीं है । मैं मानता हूँ कि मुहम्मद साहब बुद्धिमान पुरुष थे । अपने ही मुखसे अपने को बार बार रसूलिल्लाः" कहना उन्हें हरगिज शोभा नहीं दे सकता ।

अब दूसरे पहलू पर विचार कीजिए । मुसलमानों का बड़ा दावा यह है कि हम लोग सिर्फ़ खुदा की परिस्तिश करते हैं और अन्य मज़हब वाले मुशरिक हैं यानी खुदा के साथ दूसरे को भी भजते या पूजते हैं । यदि मुसल-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मान लोग न्याय पूर्वक विचार करें तो खुद मुशरिक साबित हो जाते हैं। खुदा की इबादत में बार बार मुहम्मद साहब का नाम क्यों लेते हैं? यदि उन्हें इस बात का दावा है कि हम सिर्फ खुदा कीइबादत करते हैं तो उन्हें खुदा के साथ मुहम्मद साहब का नाम हरगिज़ न लेना चाहिए। लेकिन वे खुदा के नाम के साथ २ मुहम्मद साहब का भी नाम लेना बड़ा ज़रूरी समझते हैं इससे मुसलमान लोग स्वयं खुदा के साथ मुहम्मद साहब को शरीक करके मुशरिक बन जाते हैं। जब तक मुसलमान लोग खुदा की इबादत या परस्तिश करते वक्त मुहम्मद साहब को खुदा से जुदा नहीं करते तब तक वे अद्वैत ईश्वर के उपासक नहीं कहला सकते, उन्हें मुशरिक कहना उचित है। लेकिन मुसलमानों की हठ धर्मी तो देखिये कि अपने को मुशरिक न कह कर दूसरों को मुशरिक समझ कर उन से द्वेष करते हैं। यह वही बात है जैसे कोई खुद तो नित्य अफीम खाता हो लेकिन दूसरे किसी को अफीम खाता हुआ देख कर तुरन्त उस के पीछे पड़ जाय और उसे सज़ा देना व दिलवाना चाहे। यही दशा मुसलमानों की है कि खुद तो खुदा के साथ मुहम्मद साहब को भी भजना ज़रूरी समझते हैं, मुहम्मद साहब को खुदा से जुदा नहीं कर सकते, अपने इस अनुचित कर्म से जरा भी बुरा नहीं मानते और दूसरे मज़हब वाले जहां ईश्वर के साथ अन्य देवता को भजते या पूजते हैं तहां बस मुसलमान लोग उसे मुशरिक और काफिर (नास्तिक और पापी) कहने लग जाते हैं। यदि वे न्याय शील होते तो ग़ैर मज़हब वालों से हरगिज न चिढ़ते न द्वेष करते। हां वे उसी हालत में गैर मज़हब वालों को मुशरिक कह सकते थे जब वे "लाइलाः इल्लिलाः" सिर्फ इतना ही कलमा पढ़ते अर्थात् खुदा की इबादत व परस्तिश में खुदा के साथ किसी रसूल का नाम शरीक न करते। मैं तो मुसलमानों से यही निवेदन करूंगा कि वे नमाज़ आदि में वही कलमा पढ़ा करें जो ख़ास हज़रत का कलमा था।

(१३) भारत के मुसलमान हर साल मुहर्रम के अवसर पर मातम मनाते और ताज़िया दारी करते हैं।

विचारने की बात है कि एक तरफ़ तो मुसलमान भाई बुत्परस्ती की निन्दा करते हैं और दूसरी तरफ़ स्वयं ताजिया दारी करते हैं। यह ठीक है कि मूर्ति पूजकों की तरह वे उसे पूजते नहीं लेकिन ताजिया भी तो एक तरह का बुत ही है। यदि कोई हिन्दू ताजिये के सामने छाता लगावे या चारपाई या कुर्सी पर बैठा रहे तो ताजिया परस्त लोग ताजिया का अपमान समझ कर क्रुद्ध हो जांयगे, यह ताजिया रूपी बुत की बुत्परस्ती नहीं तो क्या है? इस में कोई सन्देह नहीं कि भारत के बहुत से मुसलमान भी एक तरह की बुत्परस्ती करते हैं, हाँ उनकी बुत्परस्ती का ढंग हिन्दुओं से जुदा है। मेरा इतना ही कहना है कि जब वे स्वयं एक भिन्न प्रकार की बुत्परस्ती (मूर्ति पूजा) करते हैं तो मूर्ति पूजक हिन्दुओं से क्यों चिढ़ते और उनके मन्दिर को क्यों ढहाते हैं? यदि कोई हिन्दू उनके ताजिया को नष्ट कर डाले तो क्या उन्हें बुरा मालूम न देगा? यही न्याय क्यों नहीं सोचते? मुसलमान लोग स्वयं तो कब्र परस्त हैं और द्वेष करते हैं बुत्परस्तों से। जैसे बुत्परस्ती वैसे ही कब्र परस्ती। कब्रों को पूजना मुर्दों को ही पूजना है। इसलिये अपनी कब्र परस्ती की निन्दा न करना और दूसरे की बुत परस्ती की निन्दा करना एक तरह का हठ, एक तरह का अन्याय है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बात यही है कि उन्होंने ठान ली है कि हम मजहब में बुद्धि से विचार करेंगे ही नहीं।

दूसरी बात यह है कि हसन हुसैन के चरित्र से मुसलमान लोग कुछ भी शिक्षा ग्रहण नहीं करते सिर्फ रस्म अदा करते हैं। हसन हुसैन सत्य वादी और न्याय शील थे, अन्याय के विरोध में उन्होंने जान तक दे दी परन्तु अन्याय के सामने उन्होंने सिर नहीं झुकाया। मुसलमान भाइयों को चाहिए कि उनके चरित्र से शिक्षा ग्रहण करें, न्याय पर चलें और अन्याय का विरोध करें किसी के साथ निर्दयता या अन्याय न करें। इन सब दैवी गुणों को धारण न करके सिर्फ रस्म अदा कर देना कोई बुद्धिमत्ता नहीं। बहुत से हिन्दू भी सिर्फ रस्म को पूरा करने में ही अपना कर्त्तव्य समझते हैं, उससे क्या लाभ है और क्या हानि इस पर ज़रा भी ध्यान नहीं देते।

(१४) मुसलमानों का खयाल है कि दुनियां में हमारा ही मज़हब मज़हब है और दूसरों का मज़हब मज़हब कहलाने के काबिल नहीं।

यह विचार बड़ा ही भ्रमात्मक और अन्याय मूलक है। उनका यह खयाल ऐसा ही है जैसे कोई अपनी चाँदी को तो चाँदी कहें और दूसरों की चाँदी को गिलट समझे अथवा जैसे कोई कहे कि हमारा सोना सोना है दूसरे का सोना सोना नहीं है। इसी तरह मुसलमानों का यह प्रलाप है कि बस हमारा ही मज़हब मज़हब है दूसरे का मज़हब मज़हब नहीं। ज़रा विचार कीजिए कि उनके मज़हब में कौनसी विशेषता है? यदि उनके मजहब में विशेषता है तो अन्य मज़हबों में भी तो विशेषताएं हैं। हर एक सम्प्रदाय में कोई न कोई विशेषता ज़रूर है इस हेतु अपने मजहब को मज़हब मानना और दूसरे के मज़हब को मज़हब न मानना मूर्खता या दुराग्रह, अन्याय या अन्धविश्वास है और कुछ नहीं।

चूंकि मुसलमान लोग अपने मज़हब को मज़हब मानते हैं इसलिए अपने मज़हब में अक्ल को दख़ल नहीं देते और चूंकि वे गैर मज़हब नहीं मानते इसी लिए गैर मजहब में दख़ल देते (हस्ताक्षेप करते) हैं। परन्तु कह चुका हूँ कि अन्य मजहब को मज़हब न मानना अन्याय या हठ पर निर्भर है।

अगर मुसलमान लोग यह मानते कि "ईश्वर अचिन्त्य और अगम्य है उस में बुद्धि का प्रवेश नहीं" तो यह वचन मानने योग्य होता और वेदों और उपनिषदों के अनुकूल और युक्ति युक्त होता। परन्तु वे ईश्वर के बदले मज़हब में बुद्धि का प्रवेश नहीं मानते।

इन के अलावे और भी कई विचित्र सिद्धांत मानते हैं। जैसे कि प्रत्येक मनुष्य के कन्धेपर दो देवदूत बैठे रहते हैं वे क्रमशः पाप पुण्य को लिखते जाते हैं। आसमान एक छत के तुल्य है जिस में ग्रह नक्षत्र जड़े हुए हैं। क़यामत के दिन तमाम मुरदे उठ बैठेंगे उनका अंग अंग अपने किये कर्मों को को बयान करेगा और खुद धर्मात्माओं को अनन्तकाल के लिए स्वर्ग में भेज देगा और पापियों को सदा के लिये नरक में भेज देगा। स्वर्ग में एक एक मनुष्य को अनेक हूरें मिलेंगी। इत्यादि।

भारत के मुसलमान कुछ अजीब दिमाग के हैं कि जहां ख़ास ख़िलाफ़त का मर्कज़ (केन्द्र) वहां वाले तो ख़लीफ़ा की ज़रूरत नहीं समझते, ख़लीफ़ा को पदच्युत करके

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

देश से निकाल बाहर कर दिया और भारत के मुसलमान हाय खलीफा हाय खिलाफत चिल्ला रहे हैं। यदि भारतीय मुसलमानों से बिना खलीफा के रहा नहीं जाता तो उन्हें उचित है कि पदच्युत खलीफा को बुलाकर हिंदुस्तान के सब मुसलमान मिलकर अपना खलीफा मानलें। इस प्रकार अपनी व्याकुलता को दूर करलें। दूसरी बात यह कि भारत के मुसलमान रहते तो हैं भारत में लेकिन गीत गाते हैं अरब, ईरान और अफ़गानिस्तान के अन्न जल खाते पीते हैं भारत का और दिल में प्रेम रखते हैं अरब ईरान और अफ़गानिस्तान से। मरने के बाद भी भारत भूमि में ही दफन होंगे लेकिन स्वप्न देखेंगे अरब और ईरान का। मेरी समझ से यह एक प्रकार की कृतघ्नता है क्योंकि अपनी मातृ भूमि भारत से प्रेम करने से उनके मज़हब में ज़रा भी ख़लल नहीं पड़ सकता। अरब, ईरान और अफ़गानिस्तान वालों से सिर्फ मज़हबी नाता है, सुख दुख में काम आने वाले तो भारत वासी ही हैं, अतएव अपने पड़ोसी और भाई के तुल्य हिंदुओ से विरोध करना उकनी संकीर्णता और अदूर-दर्शिता है। भारतीय मुसलमानों की शारीरिक सामाजिक और आर्थिक उन्नति भारत वासियों के ही द्वारा होगी इसलिये हमारे देश के मुसलमानों का कर्त्तव्य है कि मातृ भूमि भारत की सेवा और उन्नति करें। अरब, ईरान और अफ़गानिस्तान से जो मज़हब उन्हें लेना रहा वे लेचुके अब उन देशों से और अधिक कुछ नहीं पासकते। उनके मज़हब में हिंदुधर्म कुछ भी अनुचित हस्ताक्षेप नहीं करता। हां न्याय से प्रेम से अवश्य ही मज़हबी चर्चा होगी लेकिन सभ्यता का उल्लंघनकरने के लिए हिंदुधर्म कभी आज्ञा नहीं देता इस लिए मुसलमानी धर्म्म को हिन्दू धर्म्म से कुछ भी हानि नहीं पहुंच सकता अतएव भारतीय मुसलमानों को निर्भय होजाना चाहिए और हिन्दुओं से न्याय पूर्वक ही व्यवहार करना चाहिए। तबलीग का काम वे खुशी से और खूब करें लेकिन ज़बरदस्ती या धोखा न दें। जो हिन्दू खुशी से मुसलमान बने उन्हें वे अपने में मिला लें लेकिन जबरदस्ती करना या धोखा देना असभ्यता और नीचता है। न्याय पर चलना ही धर्म और सभ्यता है। न्याय का मार्ग ही स्वर्ग का मार्ग है और अन्याय पर चलना नरक का मार्ग है मुझे आशा है कि भारतीय मुसलमान न्याय पर चलना सीखेंगे इसी में उनका हित है।

नब्बो और राधा

लेखिका—श्रीमती लक्ष्मी देवी जोहरी

(गतांङ्क से आगे)

तृतीय परिच्छेद

नब्बो का घर तथा विवाह

नब्बो का घर भी राधा के घर से थोड़ी दूर पर है मकान बहुत सुन्दर नये ढंग का बंगला नुमा बना हुआ है किंतु शिक्षा के अभाव के कारण हर एक वस्तु जहां तहां पड़ी है कोनों २ में कूड़े का ढेर लग रहा है। मानो महीनों से घर में झाड़ू नहीं लगी,

मोरियों की दुर्गन्ध के कारण नाक फटी जाती है, एक ओर दिवारों पर पान की पीकें पड़ी हैं, तो दूसरी ओर मकड़ियों ने भी झाड़ फ़ानूश लगा रक्खे हैं। जिधर देखो मैले वस्त्रों का ढेर लगा है। और आगे चल कर देखिये कहीं पैर न फिसल जावे, स्थान २ पर ख़रबूजे के छिलके और बीजे बिखरे हुए उस घर की शोभा को बढ़ा रहे हैं। मक्खियों ने भी यह जान कर कि उन के लिये यथा स्थान मिलगया है राग अलापना आरम्भ कर दिया है। क्योंकि वे तो निर्भय हैं यहां कौन इतना कष्ट उठावेगा कि इन्हें उड़ावे वह देखो नब्बो दौड़ती हुई आई और धड़ाम से गिर पड़ी उसके रुधिर चल निकला।

इसी हवेली के एक कोने में हमारी पूर्व परिचिता स्त्रीशिक्षा से घृणा करने वाली या यों कहिये अपने पैर में आप कुल्हाड़ा मारने वाली नब्बो की मां पार्वती एक पलंगपर बैठी पान चाब २ कर पीकें थूकरहीं थीं कि बाहर से उनके पति हीरा लाल हाथ में एक पत्र लेकर आये और अपनी पत्नी से कहने लगे तो यह पत्र तो तनिक पढ़ो।

पा०—मैं क्या पढ़ूं क्या मैंने मेमों की भांति पढ़ना लिखना सीखा है।

ही० ला—तुम पढ़ लिख नहीं तो सुन तो सक्ती हो।

या—सुनने को मेरे कान थोड़े ही बहरे हैं तुम पढो तब न।

ही० ला—पास के पलंग पर बैठते हुये बोले—तुम्हें तो पान खाने और पीकें थूकने से अवकाश नहीं सुनाऊं तो किसे सुनाऊ।

पा०—वाह खूब तुम को तो मेरा खाना पीना पहरना अच्छा नहीं लगता न जाने किस सौंत से तुम्हारा मन उलझ रहा है।

ही० ला—तुम मेरी आदत को जानती हुई भी ऐसी बातें करती हो इस प्रकार कह लिफाफे से पत्र निकाल कर पढ़ना आरम्भ किया।

हीरा लाल जाति के ब्राम्हण हैं इन का रंग सांवला क़द लम्बा और दोहरा शरीर यह स्पष्ट बतला रहा है कि इनकी आयु लग भग ४० वर्ष के होगीं। आप कुछ अंग्रेजी पढ़े हुये हैं इसी कारण १००) मासिक की नौकरी पाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है इनके एक कन्या और एक पुत्र है, यह स्त्री शिक्षा के कट्टर विरोधी हैं नीचा मैला घेर दार कुर्ता इस बात की और भी साक्षी दे रहा है। इसी कारण इन्हों ने अपनी पुत्री नब्बो को अनपढ़ तथा बिलकुल अशिक्षित रक्खा है, और बाल्यावस्था ही में विवाह करना चाहते हैं। नब्बो इसी विषय में आज अपनी स्त्री से वार्तालाप करने आये हैं और यह पत्र जो उनके हाथ में है कन्या के विवाह से सम्बन्ध रखता है पत्र इस प्रकार पढ़ने लगे:—

श्रीमान् बाबू साहब जी.

पत्र आप का आया समाचार ज्ञात हुये, आपने जो प्रस्ताव अपनी कन्या के बारे में किया है हमें स्वीकार है। लड़के की मां कहती है कि तीन हज़ार से कम में विवाह नहीं हो सकता इस में किसी प्रकार की कमी नहीं की जा सकती। आदमी भी कम से कम सौ आवेंगे ही, आगे सब प्रबन्ध ही कर रक्खें विवाह अब की गर्मियों में होगा। जैसा कि आपने अपने पत्र में लिखा है। आगे जैसा कुछ विचार हो शीघ्र उत्तर दें।

इति-

आप का शुभचिन्तक,
भवानी लाल पांडे।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

न० मां०—चलो तीन हज़ार तो कम हुये कहो यह पत्र कौन लाया है ?

ही० ला०—वही नाई जो यहां से पत्र ले कर गया था।

पार्वती—तो लड़के की उम्र क्या बतलाता है ?

ही० ला०—लग भग १४ साल के बतलाता है।

पा०—और रंग रूप कैसा है ?

ही० ला०—अच्छा है और चौथी कक्षा में पढ़ता है।

पा०—उंह पढ़ने लिखने की कुछ भी नहीं, घर में बहु-तेरी ज़िमीदारी है कुछ कमी थोड़े ही है।

ही० ला०—किन्तु तौ भी लड़कों का पढ़ना ही अच्छा है न जाने कौन समय कैसा है।

पा०—तो इसमें भी तो कोइ हर्ज़ नहीं है पढ़ता रहेगा और व्याह भी हो जावेगा।

ही० ला०—यही तो मैं भी कहता हूँ, किन्तु नाई कहता था कि लड़के के पिता पढ़ना छुड़वाना चाहते हैं।

पा०—क्यों ?

ही० ला०—कहते हैं कि ज़िमीदारी का काम सिखावेंगे।

पा०—हां एक बात तो बतलाओ उस दिन मैं राधा की मां के घर गई थी वह अभी नब्बो के व्याह करने को सहमत नहीं, उनका कहना है कि पढ़ा लिखा कर जब कन्यायें बड़ी हो जावें तब उनका विवाह करो।

ही० ला०—चलो रहने दो अब क्या नब्बो कुछ कम स्यानी है। उन्होंने तो जबान लड़कियों को घर में रख छोड़ा है देखो कैसी बदनामी फैल रही है। कि प्रेम बाबू अपनी लड़कियों का व्याह ही नहीं करेंगे। नौकरी करा कर लड़कियों की कमाई खावेंगे। वही अपनी लड़कियों को पढ़ा कर मेम बनावें, मुझे यह बदनामी नहीं उठानी है।

पा०—तो क्या नब्बो का व्याह तुम अभी करोगे।

ही० ला०—निसन्देह यदि व्याह न करना होता तो मैं नाई को क्यों भेजता।

पा०—जब व्याह ही करना है तो लड़का तो यही बहुत अच्छा है और कुल भी उत्तम है। रही रु० की बात सो डेढ़ हज़ार तो तुम्हारे पास डाकख़ाने में जमा ही है और दो हज़ार तुम्हें कर्ज़ा लेना पड़ेगा।

ही० ला०—बात तो वास्तव में यह है कि मैं कर्ज़ा लेकर व्याह नहीं करना चाहता।

पा०—तो क्या लड़की को रु० के पीछे कुमारी रक्खोगे या ग़रीब और नीच घर व्याहोगे।

ही० ला०—मैं कब कहता हूँ कि कन्या को कुमारी रक्खो मैं यह सोचता हूं कि वह जो आगरे वाले लड़के के बारे मे मैंने तुम से कहा था। उसी से व्याह करो उसमें भेद केवल इतना ही है कि न तो जायदाद है और न लड़के के मां बाप। केवल लड़का ३०) का नौकर है करारदार कुछ भी न करेगें लड़के के चाचा चाची हैं ही।

पा०—चलो रहने दो ऐसी मेरी नब्बो घर से फालतू तथा मुझे भारी नहीं है कि ऐसी निर्धन के व्याहूँ जिसके बैठने को ठौर तक नहीं है।

ही० ला०—तो क्या करूं लड़की के लिये

कहां से रु० लाऊं। जितनी अपनी सामर्थ्य होगी उतना ही तो ख़र्च उठा सकूंगा।

पा०—कुछ नहीं तो मकान तो है, दो ढाई हज़ार में हवेली गिरवी रख कर लड़की का ब्याह करो।

ही० ला०—तो तुम्हारा यह विचार है कि, अपने बैठने का ठौर तक गिरवीं रखदें और फिर बैठने तक को जगह न रहे।

पा०—जब लड़की का ब्याह करोगे तो सब कुछ करना हीं पड़ेगा। यह भी तो नहीं होता कि रु० के पीछे लड़की की जिन्दगी बिगाड़ दूं। अपने आप चाहे जो कुछ कष्ट हो सब सहन कर लूंगी किंतु लड़की को अच्छे घर ही ब्याहूंगी। जिससे सदा सुखी रहे।

ही० ला०—और इस के बारे में फिर सोचूंगा अच्छा यह तो बतलाओ कि इस पत्र का उत्तर क्या दिया जावे।

पा०—यही लिखदो की विवाह स्वीकार है और लड़के का पढ़ना अभी न छुड़ाया जाय।

ही० ला०—अच्छी बात है लिख दूंगा।

पा०—लिख दूंगा नहीं आज ही पत्र लिखो और विवाह की तैय्यारियां करनी शुरू करो लड़की के ब्याह में हज़ारों झंझट होते हैं चार महीने पहिले से तो ब्याह की तैयारी करनी चाहिये। आज ही नहीं किंतु अभी मेरे सामने पत्र लिखो।

पाठक गण! पत्नी के प्रभाव भरे वचनों का प्रभाव हीरालाल पर भला क्यों न पड़ता तुरन्त ब्याह करने को सहमत हो गये नहीं २ आज हीरालाल अपने आप अपना सर्वनाश करने को तैयार हो गये। यह जानते हुए भी कि इतना धन व्यय करना उनकी शक्ति के बाहर है विवाह की तैयारियां करने लगे। और अपने समधी पं० भवानीलाल को पत्र का उत्तर भेज दिया।

पत्र तो लिखते में लिख दिया परन्तु उसी दिन से हमारे हीरालाल पर चिंता देवी ने अपना पूरा अधिकार जमा लिया हर समय उनको धनकी चिंता रहने लगी। इधर विवाह की तैयारियां होने लगीं उधर भी धूम धाम में कमी नहीं रही बात पर शुभसाइत पर विचार होने लगा यदि कोई ग्रह पंडित ने बुरा बताया तो उसमें भी उन्हें ४०) या पचास का लाभ हो ही गया। क्यों न होता अविद्यारूपी अन्धकारने तो हमारी पार्वती देवी के हृदय मन्दिर में पूर्णरूप से अधिकार जमा रक्खा था।

एक दिन नब्बो की माँ पार्वती घर के आंगन में बाल खोले बैठी हुई मानो किसी के आने की प्रतिक्षा कर रही थी।

कि इतने में दो स्त्रियां जिनका रूप रंग सादा रंग सांवला चंचल आंखों और मुख से यह प्रतीत होता था कि मानो यह कोई नीच जाति की है। किंतु अपनी समझ में रूप संभालने में उन्होंने किसी प्रकार की कमी नहीं की है। आते ही नब्बो की मां बोली-क्यों री रमुआ की बहू मैंने कल तुझ से कह दिया था कि सवेरे आजाना मुझे सिर दिखलाना है लेकिन तू आज भी देर कर के आई उनका दफ़्तर से आने का समय हो गया।

र० बहू०—क्या करूं अम्मा यह जो मेरे साथ आई है इन्हीं के कारण मुझे देर हो गई तुम्हीं बताओ जब कोई महमान आ जावे तो कैसे छोड़ कर चली आऊं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पं०—यह कौन है री।

र० ब०—यह हमारी जिठानी हैं आज सबेरे ही आई है आगरे से।

पा०-हैं—आगरे से क्यों आई है क्या कुछ काम है?

र० ब०—यह तो मैंने अभी नहीं पूछा कहती तो हूँ यह आईं और इन्हें खिला पिला कर यहीं ले आई हूँ।

पा०—क्यों बहू तुम्हें यहां क्या काम है?

दू० स्त्री०—काम क्या हमारे जिजमान के लड़के का ब्याह यहां एक बड़े भारी घराने में ठहरा है उसी लिये लड़की तथा घराने को देखने आई हूं। रमुआ की बहू से अरी ओ बहू जल्दी अपने काम से निबट और मुझे ले चल मुझे कल जरूर जाना है।

र० ब०—लाओ अम्मा जल्दी से तुम्हारा सिर देख दूं फिर इनको लेकर जाऊं।

पा०—अरी बैठ बात तो सुन उनका नाम क्या है और कौन बिरादरी हैं।

र० ब०—उनका नाम अरे दीदी अपने जिजमान का नाम तो बतलाओ।

दू० ना०—नाम तो भवानी लाल पांडे हैं, किंतु उन्होंने कह दिया है कि किसी को पता न चले इस प्रकार लड़की को देख कर आना सो मैं तुमको अधिक हाल न बतलाऊंगी।

हमारे पाठक गण आई हुई स्त्रियों के बारे में भली भांति जान गये होंगे कि, कौन हैं इन दोनों में से रमुआ की बहू तो हमारे चिर परिचित पं० हीरालाल की घर की नायन है, और दूसरी जो इसके साथ है भवानीलाल पांडे की नायन हैं जहां नब्बो का ब्याह ठहर रहा है। पुरानें नियमों के पालन करने में कहीं बाधा न पड़ जावे इस कारण भवानीलाल ने भी नायन को ही लड़की के देखने के लिये भेजा है। अभी इनकी बातें पूरी भी न होने पाई थीं कि नब्बो भी मैले कुचैले धूल में भरे कपड़े पहिने बाल बखेरे अपनी सहेलियों को गाली देती हुई आई, और मां से कहने लगी-कि चुड़ैल ने मेरे दांव पर बेईमानी की अबकी इन्हें खूब मारूंगी" रमुआ की बहू ने भी जो इसी ताक में थी नब्बो को मुंह बिगाड़ते हुये अपनी साथ वाली को दिखलाया। उसने भी मुंह बनाकर कुछ संकेत किया और ऊपरी भाव से बोली अरी जल्दी २ सिर देख आज का दिन तो तूने यहीं खराब करा दिया।

पार्वती जो इन दोनों की ओर बड़े ध्यान से देख रही थीं रमुआ की बहू का संकेत और नब्बो की ओर देखकर साथ वाली का मुंह बनाना देखकर ताड़गई कि हो न हो यह अवश्य लड़की को देखने आई हैं। और एक साथ घबरा कर सम्हल कर बैठ गईं और सिर खुजलाती हुई रमुआ की बहु की साथिन से बोलीं। क्यों री तो तेरी जिठानी यहां किस के घर लड़की देखने आई हैं और यह भी बता यहाँ किसका लड़का है ठीक २ बतला मुझ से कुछ छिपाना तुम्हें उचित नहीं।

दू० ना०—यहां पर कोई हीरालाल पंडित हैं उन्हीं की लड़की से इतना सुनते ही रमुआ की बहू चिल्ला उठी अरे इस नाम के तो यही पंडित इस महल्ले में हैं-

आ० हुई नायन-अरे यही उनकी तो बड़ी भारी बड़ाई सुनी है पार्वती का अब तो रहा सहा सन्देह भी जाता रहा और घबरा कर बोली और रमुआ की बहू तू बड़ी बुरी

है तब से तूने क्यों नहीं बतलाया।

र० ब०—ज़रा ऐंठ कर लो अम्बा की बातें तो सुनो भला मैं जानती तो क्यों न बतलाती, मुझे इन्हें इस तरह लाने में क्या नफा था।

पा०—आई हुई नायन से बड़ आदर से बोलीं आओ बहिन नायन ठकुराइन लो ज़रा तम्बाकू पान तो खा लो। मैं अभी शरबत लाती हूँ।

दू० ना०—ऊंह अम्मा इतनी तकलीफ़ क्यों करती हो अपना घर है पहिले यह तो बतलाओ कि बीबी जिनका व्याह होने वाला है कहां है? रमुआ की बहू मुंह बना कर और भौंहें सकोड़ कर क्यों दीदी क्या तुम्हें मेरा यक़ीन नहीं। हमारे जिजमान की लड़की में कुछ बुराई थोड़ी ही है जो छिपावें।

पा०—और क्या बहू है तो तुम्हारे ही घरकी चाहे अब देखो चाहे चार दिन पीछे देखना।

दू० ना०—क्यों अम्मा इनकी उम्र क्या होगी।

पा०—दस वर्ष की तो अभी है हां सच है और तुमजानो अकेली लड़की अपने बापकी बड़ी लड़ेती है अभी सुबह नहा कर कपड़े बदले थे अब धूल में खेल कर मैले कर डाले।

दू० ना०—ऊंह इसकी कुछ बात नहीं बालक ऐसे ही करते हैं उसमें सोच क्या बड़े होने पर सब सम्हल जावेगी। नब्बो का गेहुंआ रंग और तमीज देख कर चुप हो गई, और रमुआ की बहू की ओर देखने लगी। पार्वती कुछ लेने अन्दर चली गई दूसरी नायन बोली क्योंरी रमुआ की बहू न तो लड़की में ही कोई ढंग है और न घराना ही अच्छा है मुझे क्या लाभ है जो झूठी बड़ाई करूं। मैं तो कह दूंगी कि घराना तुम्हारे लायक नहीं है।

र० बहू—और तू तो पागल है दस बीस यहां से ले और दस पांच वहां से ले व्याह करा देना फ़िर तुम्हें क्या दोनों समधी समधी आपस में निबट लेगें काहे को अपने सिर पाप लें लेगी सगाई तोड़ कर।

दू० ना०—प्रसन्न होकर वाह! बहू कहा तो तूने खूब, हमे अपना भला देखना उचित है।

र० ब०—और लड़की भी वैसे तो बुरी नहीं है केवल धन की कमी है सो ठहरौता हो ही गया है। फिर हमारे सिर काहे की बुराई।

इतने में पार्वती एक रकेबी में जलपान के लिये कुछ मीठा ले आई और कहने लगी लो तनिकसा जलपान करलो तब तक खाना बनता है।

दू० ना०—अम्मा कुछ गैर का घर थोड़ा ही है, अभी खाना खाकर आई ही हूँ।

पा०—कब की आई हो तो ऐसा भी क्या बहुत सा है खाओन।

दू० ना०—अम्मा तुम तो मुझे शर्मिन्दा करती हो अच्छा तुम नहीं मानती हो तो एक पेड़ा लिये लेती हूं।

पा०—नहीं२ तब की आई हो क्या अभी भूख न लगी होगी हमारी आई हुई नायन इस सत्कार से अति ही प्रसन्न हुई और आगे को और भी पाने की आशा से मन ही मन प्रसन्न होती हुई बोली तो अब खाने की तकलीफ़ न करो मैं कुछ न खाऊंगी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पा०—क्यों खाओगी क्यों न अब तो तुम्हें मैं भी न जाने दूंगी। जब बाबू जी आ आजावे तो उन से बात चीत कर कल को चली जाना।

र० बहू—तो लो अम्मा मैं तो जाती हूँ तुम अपने महमान को रक्खो और बात चीत करो। चलो एक पन्थ दो काज हो गये आई तो थी मैं यहां अपना काम करने उसमें साथ ही साथ इनका भी काम बन गया।

पा०—अरी अभी कहां जावेगी अभी तो मुझे नब्बो का सिर गूंद दे देख तो उसकी लटें कैसी बिखर रहीं हैं।

दू० ना०-लाओ इनका सिर तो मैं ही कर दूंगी रमुआ की बहू की ओर संकेत करके अरी तुझे बहुत जल्दी है तो तू चली जा न।

पा०—नही तुम काहे को करोगी वही कर देगी ऐसी भी क्या जल्दी तुम आज की महमान हो कल अपने घर चली जावेगी।

न०—हैं मैं तो इससे सिर न करवाऊंगी रमुआ की बहू ले मेरा सिर कर दे।

र० ब०—लाओ बीबी जल्दी करो आज बातों में बड़ी देर हो गई। इतना कह जैसे ही बाल बाहने लगी नब्बो चिल्लाने लगी लग्गी और बोली चल हट चुड़ैल कहीं की मेरे सारे बाल खींच डाले मैं तुझ से नहीं करवाती।

र० ब०—देखो बीबी चुप चाप करवाले यह तुम्हारे सुसराल की नायन तुम्हें देखने को आई है। अगर रोवेगी तो तुम्हारी सास से जाकर कह देगी फिर वह अपने लड़के से तुम्हारा व्याह न करेंगी।

न०—झुंझलाकर अरी कहां की सास आंस तूने लगाई है। देख अम्मा मैं इसे मार दूंगी।

दू० ना०—ओहो यह तो तीखे मिजाज की जान पड़ती है सास तो बोलना भी नहीं जानती।

इतने ही में पार्वती आगई और नब्बो के दो तमाचे मार कर कहने लगी भूतनी बनी फिरती है खेल की दिवानी है जरा यह नहीं कि सम्हल कर बैठे हरदम खेल में चित, यदि अब से खेलने गइ तो मारूंगी।

दू० ना०—अम्मा तुम तो मारने लगी बच्चे ऐसे ही करते हैं।

नब्बो की मां तो इतना सुन खिज कर उठ कर अपने काम में लग गई और नब्बो भी घुड़की खा चुपचाप बैठकर सिर गुंधवाने लगी। फिर क्या था दोनों नायनें आपस में बातें करने लगीं रमुआ की बहू ने भी २०) का लालच तो उसे दिया और दस पाँच का अपना भी नफा सोच कर कहने लगी। तो जाकर इसी बैशाख सुदी द्वीज का व्याह अपने पंडित से छंटवाना तुम्हें जो मैंने कहा है अवश्य दिलवाऊंगी।

दू० ना०—अरी तू बातें तो बहुत बनाती है पहिले कुछ तो दिलवा जिस से आगे को आशा हो।

र० ब०—अच्छा कल ही लो आज तो मैं जाती हूं। मुझे और जिजमानी में भी तो जाना है। लो अम्मा मैं तो जाती हूं ऐसे कह रमुआ की बहू ने तो अपना रास्ता लिया। किन्तु भवानीलाल जी की नायन बहुत कहने सुनने पर रुक गई।

इतने में हीरालाल भी आगये और पार्वती से बोले-क्यों नब्बो की मां यह कौन स्त्री है और कहां से आई है? पार्वती ने संकेत द्वारा हीरालाल को कुछ पूछने को मने कर पास

आकर बोली समधिआइन की नायन नब्बो को देखने आई है।

हीरालाल चौक कर हैं, तो तुमने उसकी कुछ खातिर की या नहीं।

पा०—हां जलपान तो करा दिया है अब खाना बनाने को जाती हूँ।

हीरालाल—और नब्बो को तुमने इस गति से रख छोड़ा है वह जाकर क्या कहेगी।

पा०—क्या करूं अचानक आगई। किन्तु तुम्हीं बतलाओ क्या उपाय करूं अरी नब्बो इधर आ यों कह कर एक अच्छी साड़ी निकाल कर नब्बो को दी और कहने लगी ले अब तो कपड़े बदल डाल तुझे तो इतना भी नहीं कि अपने तन का कर ले हीरालाल से फिर बोली तो कुछ ऐसा उपाय करना चाहिये जिससे यह यहां की बुराई न करने पावे।

ही० ला०—खूब खातिर करो और बिदाई के समय भी कुछ दे देना।

पा०—हां १५) २०) रु० तो लगे हीं गे आई हुई नायन भी कुछ आवश्यक बातें कर के बोली अच्छा, अब तो मैं जाती हूं कल रमुआ की बहू के साथ फिर आऊंगी।

पा०—खाना खाकर जाना।

दू० ना०—मैं इस समय नहीं खाऊंगी। कल को खाऊंगी। इतना कह जाने के लिये तैयार होगई। पार्वती ने बहुतेरा कहा किन्तु उसने न माना और वह चली गई।

सायंकाल को भोजन इत्यादि से निबट कर पार्वती बैठी हुई कुछ बिचार कर ही रही थी कि वही रमुआ की बहू फिर आई आई और कहने लगी ओ अम्मा! मैं तुमसे एक बहुत ज़रूरी बात कहने आई हूं।

पा०—आश्चर्य में होकर कहो वह क्या है?

र० ब०—क्या कहूं यह तो तुम जानती ही हो कि यह नायन बहुत बड़े घराने से आई है।

पा०—तो क्या करूं?

र० ब०—वह तुम्हारा घर और बीबी को देखकर कुछ अनमनी सी हो रही है।

पा०—तो क्या वह यहां की बुराई करेगी।

र० ब०—हैं, अम्मा की बातें बुराई क्यों करेगी जब उसकी खूब खातिर होगी और दस बीस हाथ लगेंगे, तो हंस २ कर बड़ाई करेगी, और अगर मेरे दम में दम है तो ब्याह तो होगा ही। हां, बीस पच्चीस का खर्च है।

पा०—इसकी कोई बात नहीं जब लड़की का ब्याह ही करना है तो खर्च से क्या डरना।

र० ब०—मैंने तो अपने आप ही उसको २०) का लालच दे दिया है। राम जो कुछ करेंगे, भला ही करेंगे। और उसने इसीलिये तो खाया नहीं। कहती थीं कि जब मुझे लड़की ही अच्छी नहीं लगी तो ले दे कर क्या करूंगी, मेरी तो हमेशा की जिजमानी है।

पा०—तो क्या उन्होंने नाराज़गी के कारण खाना नहीं खाया?

र० ब०—और क्या अभी मैं बाज़ार का बहाना करके तुम से इतनी बातें कहने के लिये आई हूँ। अगर दस रु० तुम अभी मुझ को दे दो तो मैं उन्हें समझाऊं शायद लालच में आकर कुछ पिघल जावें।

पा०—अरी रमुआ की बहू मुझे तो तेरा ही आसरा है तेरी सास ने भी हमारे घर की जिजमानी की है और ब्याह इत्यादि उन्हीं के ऊपर होते चले आये हैं देखो धोखा न देना।

र० ब०—अम्मा कैसी बातें करती हो कन्या के ब्याह में राम २ भला कौन बुराई ले करके पाप का भागी बनेगा। और हम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तो सब तरह जिजमान की बड़ाई ही चाहते हैं हमारा तो यह काम ही है। तुम मुझे रुपये दो तो मैं उन्हें मनाकर लाऊं।

पा०—अपने पास से रु० निकालते हुए कहने लगी अरी बहू इतने में काम करा देना मैं यह नब्बो के लाला से छिपाकर तुम्हें देती हूँ। पांच रु० अभी ले जा और तू मेरी आदत को जानती ही है तुझे भी खुश कर दूँगी।

रमुआ की बहू अपने मतलब में फलीभूत होती हुई देखकर प्रसन्न हो रु० लेती हुई बोली अरे राम! अम्मा घबराती काहे को हो, हम भी तो यही चाहते हैं, कि खूब अच्छे घर ब्याह हो। जिसमें कुछ हमारा भी भला हो अच्छा तो मैं जाती हूं कल उनको लेकर फिर आऊंगी।

पा०—जो अभी ले आ कल तो वह जाने को कहतो है।

र० ब०—जावेगी कैसे? इस प्रकार जाना कोई हंसी खेल थोड़ो ही है। पाठकगण! आप ने देखा हमारी अबोध विद्याहीन देवियाँ को किस प्रकार यह ठगनी ठगा करती हैं, किन्तु फिर भी हम इन्हीं का विश्वास करतीं और आजन्म सम्बन्ध में अपने बालक बालिकाओं के इन्हीं को मध्यस्थ बना जीवन बिगाड़ती है। हा! किस दिन इस अविद्यारुपी अन्धकार का नाश होगा। आदर्श स्वयम्वर घर २ देखने में आवेगे। पाठको! आपने ऊपर देखा ही होगा कि हमारी पार्वती ने भी पुरानी रीति के अनुसार इन्हीं को ब्याह कराने वाली समझ खूब देकर बिदा किया।

रुपया और सत्कार को पाकर दूसरी नायन बहुत प्रसन्न होती हुई अपने जिजमान के घर गई। और पार्वती की वस्तुओं को दिखला कर प्रशंसा करने लगी। और हमारे भवानीलाल की गृह-पत्नी भी अपनी नायन का विश्वास करती हुई विवाह की तैयारियां बड़े उत्साह के साथ करने लगीं। फिर क्या था दोनों ओर से सामान जमा हुए और वैशाख सुदी द्वीज भी आ पहुंची। हीरालाल ने भी अपनी पत्नि के अनुरोध से हवेली गहने रख कर तीन हज़ार का प्रबन्ध कर ही लिया। और विवाह के लिए शुभ साइत में लग्न भेज कर विवाह के प्रबन्ध में लग गये। अड़ौसी पड़ौसी साथ के इष्ट मित्र सब ही ने हीरालाल को समझाया किन्तु पत्नी के अनुरोध के कारण एक न चली और शक्ति से बाहर व्यय करना आरम्भ कर दिया। विवाह से लेकर बढ़ार तक सब रुपया व्यय हो गया। अब तो हीरालाल को बड़ा क्रोध तथा सोच हुआ। सोचने लगे अब कहां से रुपया आवेगा।

पा०—अरे सोच काहे का है लो एक हजार में मेरे गहने गिरवी रख आओ।

ही० ला०—और फिर तुम क्या ब्याह में आदमियों के सामने नंगी फिरोगी। मुझ से यह न देखा जायगा।

पा०—इन बातों में क्या है इस समय तो लाज बच जावे।

ही० ला०—तुम ने तो कह दिया भला यह भी तो सोचो इतना कर्ज़ा लिये लेती हो कैसे निबटेगा सौ रु० की तो केवल मेरी आमदनी ही है यदि ५०) भी कर्जा मैं दूंगा तो भी कई साल लगेंगे।

पा०—इसके बारे में देखा जावेगा इस समय तो काम निकालो लाज का समय है अगर तुम नहीं मानते हो तो लो मैं एक

जोड़ी कड़ा और गुलूबन्द निकाले लेती हूं मेरे और दो चार लड़कियें थोड़ी ही हैं जो मुझे बार २ चिन्ता करनी पड़े। मैं तो इसी में सब कुछ खर्च करके अपने मनकी इच्छायें पूरी करूंगी। अब सोच न करो जल्द रु० लाओ विदाई का समय निकट आता जाता है। अब इसके सिवाय दूसरा उपाय न था हीरालाल ने इच्छा न रहने पर भी पार्वती के गहने गिरवीं रख कर १०००) लाये पांच सौ तो उसी समय उठ गये ५००) फिर लड़की को विदा करने के लिये रख छोड़े। क्यों—कि यह तो आशा थी ही नहीं कि बिना रु० दिये बिदा कर दें। और रीति के अनुसार बिदा न कराने में बड़ी बदनामी है दूसरे लड़की अकेली और मां की लड़ैती ठहरी। इधर तो बरात की बिदा की। उधर हीरा लाल चिन्ता के ग्रास बनने लगे और हरदम इसी बात की चिन्ता रहने लगी कि किस प्रकार हवेली और गइनें छूटें।

आधुनिक शिक्षित स्त्री जाति

लेखिका—कुमारी चन्द्रवती शुक्ल बिजनौर

प्राचीन काल की आदर्श स्त्री शिक्षा की ही महिमा गाते रहने का अब समय नहीं रहा किन्तु फिर भी इसके सुपरिणाम दृष्टि से ओझल नहीं किये जासक्ते — तब जो भाषा पुरुष सीखते थे वहीं स्त्रियां सीखती थी दोनों एक ही सभ्यता के प्रभाव में रह शिक्षा पाते थे— पुरुष विद्वान थे स्त्रियां विदुषी थीं — सभी विदुषी होने के कारण गृहस्थ को आदर्श बनाना ही सबका उद्देश्य था — जिनकी मानसिक प्रवृतिशिक्षा या कला की ही ओर झुकी वह उसमें ही विशेषता प्राप्त करने में लग गई— उदाहरणार्थ लीलावती का नाम गणित के इतिहास में अमर है ऐसी तो अनेकों थी जिन्हों ने युद्धादि कलाओं में विशेष कुशलता पाई हुई थी— किन्तु समय की गतिन्यारी है — एक समय आया कि स्त्रीजाति का चमचमाता भाग्य सितारा डूबता दिखाई देने लगा जिस की विद्वत्ता के सामने पण्डित शिर झुकाते थे जिस के बल तेज के सनमुख शत्रु की तलवार निस्तेज हो भूशायी होजाती थी आज उसको पढ़ने तक अधिकार न रहा।

यह विचित्र परिवर्तन पुरुषों की स्वार्थ-परता का परिणाम था वा स्त्रियों की निर्बलता का इसको हम यहां निश्चय न करेंगे इतना अवश्य कहेंगे कि स्त्रीशिक्षा पुरुषों की नज़रों में कांटे की तरह खटकने लगी—फल यह हुआ शिक्षा महारानी भी शीघ्र ही स्त्रियों के बीच से पल्ला झाड़ चलीं।

पर पुरुष भी निकले बड़े अक्ल मन्द बेचारे सुबह के रास्ता भूले शाम को ही घर आगये – वह जानते थे कि सड़ा हुआ फल पहिले पास रक्खे फलों को ही सड़ाता है एक जलता हुआ छप्पर समीप वाले छप्परों को ही पहिले जलाता है – इस अनुभव को

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यह यहां भी काम में लाये क्योंकि इनको पता था अविद्या की परिणाम भूत मूर्खता का साक्षात स्वरूप स्त्रियों से पाला पहिले इन्हीं का पड़ेगा। दूसरे छप्परों को आग से बचाने के लिये दो उपाय हैं - उन छप्परों को वहां से हटा दिया जाय या आग को ही बिल्कुल बुझा दिया जाय - यहाँ पहिला उपाय तो कुछ लागू न हुआ - आखिर लाचार हो यही बन पड़ा कि रोग की जड़ - अविद्या को ही काट दिया जाय मजबूरी एक और भी आ पड़ी — यदि स्त्री शिक्षा और पुरुष शिक्षा दोनों गति हीन हो जाती या बढ़ती तो एकही ओर बढ़ती तबतो सब मामला ठीक होजाता, पर यहां हुआ कुछ उल्टा ही रफ़्तार दोनों में रही पर भेद केवल इतना होगया कि जहां स्त्रीशिक्षा इस रफ्तार से घटी और घटते २ ज़ीरो डिगरी पर आगई वहां पुरुष शिक्षा उसी रफ़्तार से बढ़ी और यह बढ़ती हुई रफ़्तार इस को एक निराली ही दुनियां में लेआई। अब तो नई रोशनी से चकाचौन्धित हुई आँखों वाले नवयुवकों को पूरा भरोसा होगया कि उनकी इन अविद्या के अवतारों से हर्गिज़ पोट न पटेगी। फिर क्या था। बिना स्त्री शिक्षा के देश का कल्याण नहीं हो सकता ऐसी ही ऐसी आवाज़े चारों ओर से उठ नभ मण्डल को गुंजाने लगीं।

कुछ दूरदर्शी पुरखाओं ने इन्हें समझाया भी बहुतेरा और कहा कि स्त्रियों की शिक्षा के फन्दे बन्दे में न पड़ो पर यह अपने स्वार्थ के सामने किस की सुनते - नक्कार खाने में तूती का जो असर होता है वही इस दूर दर्शी समुदाय की आवज़ का हुआ - सो हमारी नवयुवक मण्डली ही की विजय हुई।

इधर माता पिता ने भी अपनी पुत्रियों के भविष्य कुछ उज्वल बनाने की इच्छासे उन्हें कुछ पढ़ा लिखा देने में ही भलाई समझी। पर इतनी नयी तुली शिक्षा पुरुषों को सन्तोष न देसकी - स्त्रियों की चाल ढाल, रहन सहन केली आदि सभी की बारी २ से नवयुवक समाज में मजाख बनाई जाती - स्त्रियों का साथ भी पुरुषों को बेढंगापन, उनका भोला पन इनको बेवकूफ़ी मालूम देती।

परन्तु यह दशा अधिक दिनों तक न रही स्त्रियां जैसे ही पुरुषों की इच्छाओं को समझी कि वे फौरन उनकी इच्छा पूर्ति करने तथा अपने को वैसा ही बनाने में तनमनसे जुट गई। ऐसा न करतीं तो करतीं ही क्या। इनका तो धर्म्म ग्रन्थों से नियुक्त किया सबसे बड़ा धर्म्म यही है कि किसी प्रकार पतिको प्रसन्न रक्खें।

इनके प्रयत्न असफ़ल नहीं रहे जो परिवर्त्तन यह अपने में पुरुषों की इच्छ नुसार लाना चाहतीं थी उनको लाने में बहुत अंशों में कृत कृत्य हुई। पर इस सब का परिणाम अपेक्षित से कुछ और ही निकला—उनके रहन सहनादि में यह परिवर्तन देख सब तरफ से आवाजें उठने लगीं लड़कियां पढ़ कर स्वतन्त्र हो जाती हैं फेशनेबिल हो जाती हैं'। दोष था किस का, मढ़ा गया किस पर जिस दोष के उत्तरदाता सर्व्वांगीणतया पुरुष थे वह छुप गया। बेचारी स्त्री शिक्षा के माथे-ठीक भी है जिसकी लाठी उसकी भैंस होती ही है।

खैर! जो कुछ भी हुआ सारांश यह कि बहुतेरे स्त्री-शिक्षा के दुहाई देने वाले भी इसको 'हाल्ट' का सीगनल देने लगे। दूर-

दर्शक समुदाय को भी अपने अनुभव की डींग मारने का अच्छा मौक़ा हाथ आया। पर नवयुवकों का हित सदा इनके मन में था। हार कर बेचारों ने फिर 'अलार्मबेल' बजा इन्हें चेतावनी दी। यदि उस समय नवयुवक समाज अपने पुरखाओं का कहा मान लेती तो आज उच्च स्त्री-शिक्षा के कुपरिणामों को स्वयं अपनी आंखों से देखने का दिन काहे को आता।

यद्यपि इस बार की चेतावनी का असर पहिले से कहीं अधिक हुआ। फिर भी स्त्री-शिक्षा के धारा प्रवाह को यह न रोक सकी परिणाम यह हुआ कि शिक्षा अपनी मन्द २ गति से बढ़ती ही गई। क्योंकि यदि न बढ़ती तो जो यह आज कहीं २ दो चार लड़कियां एफ० ए० बी० ए० करती दिखाई पड़ती है, यह कहां से आती। अब बड़ी २ जगहों में लड़कियों की अच्छी संख्या, जो उच्चांशक्षित कहीं जा सकती हैं दीख पड़ती हैं। इन्ट्रेन्स पास करना तो अब लड़कियों के लिए भी एक मामूली सी बात हुई जा रही है किन्तु, पुरुष इस स्थिति से भी कुछ सन्तुष्ट नहीं दीख पड़ते।

यद्यपि समय के प्रताप से शिक्षा का प्रभाव स्त्रियों पर अच्छा होता है उस विषय पर सब का अब एक मत है। किन्तु उच्च स्त्री-शिक्षा के विरोध में तो चहुं ओर आवाज़ उठ रही हैं नवयुवक समाज का तो यह गम्भीर विचार का विषय बनी हुई हैं। उच्च शिक्षित लडकियों पर जो आजकल आक्षेप लगाये जाते हैं उन पर ध्यान जाते ही 'स्त्री-शिक्षा' नाम का लेख जो 'ज्योति' के मई अङ्क में निकला है मुझे याद हो आता है लेख में सभी प्रचलित आक्षेप जो पढ़ी लिखी लड़कियों पर लगते हैं मौजूद हैं इसलिये यदि उन्हीं में से एक २ को लेकर सत्य निर्णय पर पहुंचने के लिए यहां विचार कर लिया जाय तो मेरी समझ में कुछ अनुचित न होगा:-

लेखक महोदय का पहिला एतराज है कि स्त्री शिक्षा की बढ़ती के साथ लडकियों में गृहस्थ के प्रति भय तथा भय से उत्पन्न हुई गृहस्थ जीवन के प्रति उपेक्षा बढ़ती जा रही है। आज पढ़ी लिखी लडकियां शादी करने से पहिले यही सोचती हैं, यदि हम शादी न करें तो..... यह प्रश्न सभी पढ़ी लिखी लडकियों के मन में उठता है। पहिले इसी में बहुत सन्देह है कि साठी ही लडकियां जो इंट्रेंस बी० ए० करती जाती हैं निस्सन्देह इस परिणाम पर नहीं आती जाती कि वे अविवाहिता रहेंगी। उच्च शिक्षित लडकियों की तादाद ध्यान में रखते हुये उन में से जिन्होंने शादी की हुई है उनकी संख्या भी सन्तोषजनक कही जा सकती है।

कुछ एक के मन में यह प्रश्न उठता भी है तो उसका प्रेरक हेतु गृहस्थ के प्रति भय व उपेक्षा कभी नहीं होते-जो भाव ऐसे प्रश्नों को उठाते हैं वह दूसरे होते हैं। यद्यपि स्त्री शिक्षा बढ़ती पर है पर तब भी १००० में १ स्त्री पढ़ी मुश्किल से है विद्या से शून्य होने के कारण जो शोचनीय दशा आज उन की है वह सामने है। इस पर कुछ कहने की आवश्यकता नहीं जाति की इतनी आत्माएं मनुष्य होते हुए भी पशु तुल्य जीवन कर रही है क्या? यह भी बात एक स्वजातीय के हृदय में तड़फ पैदा कर देने को काफी नहीं, फिर यदि एक बहिन जो सौभाग्य से अपने को इस योग्य पाती है कि वह अपनी अन्य अन्धकार-मय जीवन व्यतीत करती बहिनों का भाग्य उज्ज्वल बनाये, सोचने भी लगे

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'यदि वह शादी न करें तो आश्चर्य ही क्या है'!!

शादी न करने का भाव उसके मन में इसलिये आता है कि वह अच्छी तरह से जानती है एक गृहस्थको सुदृढ़ और सुचारी रूप से चलाने के लिये गृहिणी को अपनी सारी शक्तियां लगा देनी होती हैं। ऐसी दशा में यदि वह विवाह कर लेगी तो स्वभावतः वह उतनी शक्ति स्त्री सुधार की ओर नहीं लगा सकती।

जितनी की इस समय आवश्यकता है। इस सब बातों को दूसरे भाव से देख कर ही यह परिणाम निकाल लेना कि अनुरूप वर न मिलने के कारण उच्च शिक्षा प्राप्त लड़कियां को आजीवन ब्रह्मचारिणी रहने का संकल्प करना पड़ता है, कहां तक युक्ति युक्त है, समझ में नहीं आता है आगे चल कर लेखक महाशय कहते हैं कि पढ़ी लिखी लड़कियां गृहस्थों से कीचड़ समझ कर बचती हैं—क्या वास्तव में गृहस्थ उनको कीचड़ लगने लगते हैं? कविता सदा आनन्दमयी होती है, किंतु क्षुधा से पीड़ितजन उसके रस का पान नहीं कर सकता तो क्या इसके यह मतलब हैं कि कविता ही रसविहीन होगई? नहीं! कविता सदा रसीली होती है फिर यदि क्षुधा से सताया व्यक्ति उसका आनन्द भोग न कर सके तो इसमें उस मनुष्य का दोष नहीं; और न कविता ही दोषी ठहराई जा सकती है—यहां वास्तव में दोष है समय का, अवस्था का। मनुष्य भूखा है इसीलिये कविता उसको प्रसन्न नहीं कर सकती किंतु यदि उसी को वह पेट भरे पर सुने तो वही बड़ी प्रिय जान पड़ती है—इसी प्रकार यदि गृहस्थ शुष्क अरोचक लगने भी लगे हैं तो इसमें शिक्षित लड़कियों को दोष कदापि नहीं लगाया जा सकता न दर असल में आज समय ही ऐसा है कि स्वर्गीय आनन्द देने वाले गृहस्थ भी उनको रस से शून्य लगने लगे हैं।

प्राचीनकाल की शिक्षित लड़कियां गृहस्थ सुधार को ही अपना ध्येय बनाती थी पर आज कल की पढ़ी लिखी इसको उपेक्षा की दृष्टि से देखती हैं ऐसे ही भावों की मन में तुलना कर शायद लेखक महाशय गृहस्थ की ओर अरुचि कारण 'स्त्री शिक्षा' को बताने लगते हैं—आप समतोलन करते हुए 'समय की तुलना करना शायद भूल जाते हैं—तब समय क्या था और अब कैसा है? प्राचीन काल में स्त्रियों की ऐसी शोचनीय दशा न थी सभी शिक्षिता थीं इसलिये सभी का उद्देश्य गृहस्थ जीवन सम्पूर्णता के समीप ले जाना होता था—किंतु अब ज़माना कुछ और है। समय की मांग बदली है।

आप का यह विचार 'यह बोझा जैस पहिले था वैसे अब भी अशिक्षित लड़कियों के ही कंधों पर पड़ा रहेगा' बड़ा ही भ्रममूलक है पढ़ी लिखी लड़कियों के भरसक कार्य्य करते रहने पर भी अशिक्षित लड़कियों की संख्या उतनी की उतनी ही बनी रहेगी ऐसे विचार की तर्कना शक्ति पुष्टि नहीं करती—जितनी लड़कियां पढ़ती जायेंगी वे सभी गृहस्थ के प्रति उपेक्षा दिखाती जायेंगी ऐसी कल्पना भी निराधार है इतिहास इसका साक्षी नहीं।

प्रोफेसर महोदय का समस्त स्त्री जगत पर आक्षेप है कि जहां उसको अधिकाधिक शिक्षा प्राप्त कर गन्दे गृहस्थों को सुधारने

का प्रयत्न करना चाहिये था वहाँ उससे वह पीठ फेर कर खड़ी होने को है। यदि उसके अन्दर पक्षपात रहित दृष्टि से देखा जाय तो पता चलेगा कि यह स्त्री जाति का एक गुण है उसके आत्मोसर्ग का एक अनोखा उदाहरण है। एक पढ़ी लिखी लड़की साधारणतया अपने ही गृहस्थ को स्वर्ग बना सकती है किन्तु यदि वह पचास अन्धकारमय हृदयों में उजेला कर उन्हें अपनेसमान बनाये तो क्या वह एक ही समय में पचास गृहस्थों का जीवन सुखमय नहीं बना रही? इसी दृष्टि को रखते हुए भारत की हीनावस्था को निहार देश की पुत्रियां थोड़ी देर के लिए गृहस्थ के प्रति पीठ फेर खड़ी भी होजांय तो क्या उनका यह आचरण प्रशंसनीय नहीं कहा जाना चाहिए?

'शिक्षित लड़कियां अपनी क़िस्मत को अशिक्षित लड़कियों की अपेक्षा बहुत अच्छा देखना चाहती हैं.....उन्हें अपने में और अपनी बहिनों में बहुत फरक दिखाई देने लगता है' लेखक महोदय के इस कथन से हम बिलकुल सहमत हैं। सचमुच एक इन्ट्रेन्स पास लड़की अपने को पढ़ी लिखी समझने लगती है और अपने में और अपनी अशिक्षित बहिनों में बहुत फरक देखने लगती है किंतु मेरा खयाल है यह फरक लड़कियों को नहीं, पढ़े लिखे लड़कों को भी दिखाई देने लगता है—क्या बी. ए. व एम. ए. पास लड़के की यह हार्दिक इच्छा नहीं होती कि उसकी शादी उसी के समान पढ़ी लिखी योग्य लड़की से हो अब अगर कोई ऐसी लड़की न मिलने के कारण उसका विवाह एक अशिक्षित लड़की से ही हो जाय तो क्या वह इस श्रेय का अधिकारी है कि वह अपने में और अन्य अशिक्षित लड़की कोई भेद नहीं देखता ऐसी दशा में आपका ऊपर का आक्षेप केवल स्त्रियों पर ही नहीं समस्त शिक्षित जगत पर चला जाता है—

लड़कियों से यह अपेक्षा करना कि पढ़ लिख कर गन्दे गृहस्थों को सुधारना ही यह अपना ध्येय बनालें मेरी समझ में शिक्षित लड़कियों पर ज़्यादती है।

लेखक महाशय यह जानते हुये भी 'कि' बुद्धओं के साथ जुड़ जाने से भलेमानस पढ़े लिखों को भी काठ का उल्लू बनना पड़ता है ऐसी मन्शा रखते जान पड़ते हैं कि पढ़ी लिखी लड़कियां बुद्धओं के साथ शादी कर गन्दे गृहस्थों को सुधारने की गरज से कीचड़ में कूद पड़े। ऐसा सोचने में आप कहां तक न्याय की दृष्टि से काम लेते हैं अत्यन्त शंकास्पद है।

अन्त में आप इस निर्णय पर पहुंचते हैं कि उच्च स्त्री शिक्षा भारत भर में फैल जानी चाहिये आपका विष को विष ही से दूर करने का उपाय बड़ा ही उत्तम और सर्व ग्राह्य है—पर ऐसा मालूम देता है कि प्रोफ़ेसर महोदय इस परिणाम को स्वेच्छया नहीं निकाल रहे ऐसा फल निकालने को वे बाधित होते हैं इसलिये निकालते हैं—यह भावना आपके स्त्री शिक्षा तो अब रोके रुकेगी नहीं इन शब्दों के जहां तहां प्रयोग से और पुष्ट हो जाती है—इन शब्दों से साफ़ टपकता है कि आपकी इच्छा यही है कि स्त्री शिक्षा किसी तरह से रोकदी जाती तो अच्छा था पर शायद काल तथा अवस्था को विचार कर आप ऐसा करने में बुद्धिमत्ता नहीं समझते। मालूम देता है आप उन कुलिक्षणों से भली भांति परिचित

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चित है। जो चलती धारा प्रवाह को रोक देने के होते हैं। यदि एक बहते सरित के प्रवाह को रोका जाय तो वह आगे बढ़ने से रुक तो अवश्य जाता है पर रुका हुआ पानी किनारों पर से जिधर तिधर आकर कर पास वाले प्रदेश को बड़ा हानिकारक होता है इसी प्रकार आपका अनुमान है कि स्त्री शिक्षा को यदि रोकने का प्रयत्न किया जाय तो रुक अवश्य जायगी ऐसी दशा में यह निश्चय है स्त्रियों की ओर से घोर आन्दोलन होगा फिर भय यही है कि इन आन्दोलनों का परिणाम भी पुरुषों के लिये वैसा ही भयंकर न हो।

किंतु जो कुछ भी अब स्त्रियों के सामने समस्या बड़ी जटिल है। होना क्या चाहिये क्या वे अक्षिपों से घबरा कर अपनी रफ़्तार रोकदें या इनकी पर परवाह न करती हुई आगे बढ़ती चली जाय। पिछले इतिहास पर निगाह डालने से पता चलता है कि सारे आक्षेपों का मूल कारण स्वार्थ है जहा थोड़ी सी भी स्वार्थ में ठेस आकर लगी कि चारोंओर कोलाहल मच जाता है।

ऐसी दशा में यदि स्त्रियां पुरुषों के हाथ की कठ पुतली बन उनकी इच्छा के इशारे पर ही सदा चलती रहेगी तो उनकी उन्नति बड़ी सन्देहा स्पद है कोई भी जाति यदि संसार में रहना चाहती है तो दूसरों की बुद्धि के भरोसे रह अधिक दिनों तक जीने की आशा नहीं कर सकती—यदि स्त्री जाति को भी जगत में कुछ होकर रहना है तो पैरों पर खड़ होकर अपने बल से काम करना होगा सदा पुरुषों के हाथका खिलौना बने रहने से अब काम न चलेगा।

"सार नहीं"

[ले०—श्रीरत्नाम्बरदत्त चन्दोला "रत्न" मेरठ]

(समस्या—पूर्ति)

(१)

बिन सन्तति सम्पति-सौख्य नहीं,
बिन भामिनि के परिवार नहीं।
बिन बादल दामिनि—कान्ति नहीं,
बिन गायक रागिनि—सार नहीं॥

(२)

बिन लक्ष्य सधे शर—वार नहीं,
बिन शाण धरे असि—धार नहीं।

बिन राम भजे पद मोक्ष नहीं,
बिन संयम यौवन—सार नहीं ॥

(३)

बिन काम करे कुछ नाम नहीं,
बिन लोभ तजे उपकार नहीं ।
बिन दान धनाधिप—मान नहीं,
बिन सौरभ किंशुक—सार नहीं ॥

(४)

बिन 'फैशन' के जन सभ्य नहीं !
बिन पाप बढ़े, अवतार नहीं !
बिन प्राण तजे शुचि स्वर्ग नहीं,
बिन कष्ट सहे सुख—सार नहीं ॥

(५)

बिन मोहन गोकुल ग्राम नहीं,
बिन फूल गुंथे उर-हार नहीं ।
बिन स्नेह सुधारस-पान किए-
नर—जीवन में कुछ सार नहीं ॥

(६)

बिन धेनु—सुरक्षण के पड़ती
मुख में जब है पय-धार नहीं—
तब ही तन में, मन में, धन में,
कुछ सार नहीं, कुछ सार नहीं ॥*

*नोट उक्त कविता 'समस्या पूर्ति' के रूप में 'पन्चम गढ़वाल नवयुवक सम्मेलन' के 'कवि—सम्मेलन' में पढ़ी गई थी। सर्वोत्कृष्ट होने से सम्मेलन ने इसके लेखक को एक स्वर्णपदक प्रदान सम्मानित किया। —'सं० ज्योति']

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैज्ञानिक संसार

अल्प्स पर्वत के वीर कुत्ते।

लगभग एक हज़ार वर्ष तक "सदावर्त" की तरह चलने वाली सेंट बर्नर्ड धर्मशाला में जोकि आठ हजार फीट ऊंचे एल्प्स पर्वत पर है अब होटल के तरीके पर यात्रियों से टिकने के लिये किराया लिया जाया करेगा।

इस नौबत के पहुंचने का कारण यह है कि हाल के गत वर्षों में यात्रियों ने मठवासी साधुओं के आतिथ्य का अनुचित प्रयोग कर के अपने खाने पीने रहने सहने के व्यय को जब तक कि वे धर्मशाला में हों। किसी रूप में नहीं दिया।

यह सेंट बर्नर्ड की धर्मशाला प्रायः अपने ढंगकी संसार में अनोखी और प्राचीन संस्था है। इसे ९६२ ईसवी में बर्नर्ड डी० म्यन्थन नामक एक सरदार ने एल्प्स पहाड़ पार कर के रोम जाने वाले यात्रियों को आश्रय देने के लिये बनवाया था।

इस पर इसकी लम्बी जीवनी में कई बार डकैतों से आक्रमण किया गया है तथा एक बार अग्नि के प्रकांड से प्रायः सर्वांश ही भस्मी भूत हो गया था।

संवत् १८०० ईसवी में जब कि नैपोलियन अपनी सेना को इटली लिए जा रहा था कुछ समय के लिये यहां ठहरा था। जिस मेज कुर्सी को वह काम में लाया था वह अब भी दर्शकों को दिखाई जाती है।

बहुत से आदमियों के विचार में इस संस्था की आवश्यकता इसके वीर कुत्तों तथा उनके बिछुड़े हुए यात्रियों को ढूंढने और उनकी जान बचाने रूपी आश्चर्यजनक कार्यों के लिये थी। लगभग बीस सेन्ट बर्नर्ड कुत्ते धर्मशाला के गारों में पाले जाते हैं। और प्रत्येक को पहाड़ में खोये गये यात्री जनों को ढूंढने की शिक्षा दी जाती है।

जब कोई खोया हुआ जन मिलता है तब ये कुत्ते उसको सहायता के रूप में शराब का गिलास देते हैं फिर उन्हें या तो धर्मशाला का रास्ता दिखाकर ले जाते हैं या कोई सहायक ले आते हैं।

सारांश कि इन बुद्धिमान कुत्तों ने जिनका नसल पुराने मठाधीशों की ही पैदा की हुई है, सहस्रों जानें बचाने का उपकार किया है।

प्रायः एक सौ वर्ष व्यतीत हुए अकस्मात् अत्यन्त ठण्ड पड़ने से यह नसल लुप्त प्रायः होगई, जिसको कि फिर डेनिश और मैस्टिफ नसलों को मिलाकर पैदा किया गया। आज समस्त स्वीटज़रलैंड में सेन्ट बर्नर्ड जाति के कुत्ते पाये जाते हैं।

बैरी नाम का एक बहुत ही आश्चर्यजनक कुत्ता मनास्टरी के साथ सम्बन्ध रखता था इसकी स्मारक रूप एक मूर्ति भी धर्मशाला के आंगन में बनी हैं जिस पर लिखा है कि "४० जनों की जान बचाने के बाद ४१ वें मनुष्य से मारा गया"। इस वीर कुत्ते की मृत्यु का तरीक़ा अज्ञात है परन्तु अनुमान किया जाता है कि किसी ने धोखे से उसे मार डाला।

एक समय बैरी ने एक दस वर्ष के बालक को हिम पर लेटा हुआ पाया जब कि वह ठंड से परिभूत होने वाला था। विश्वासी

कुत्ते ने पहिले बच्चे के मुंह पर साँस ले ले कर उसे गरम किया, फिर उसे चाट २ कर जगाया। फिर बैरी ने उसके पास लेट कर बालक को अपनी पीठ पर बैठने के लिए संकेत से बताया, इस तरह लड़का धर्मशाला में लाया गया जहां वह बचा लिया गया।

एक और समय एक भिक्षु एक कुत्ते के साथ किन्हीं यात्रियों की जिनको खतरे की सूचना कुत्ते ने पहिले आकर दी थी, खोज में चला। स्थान पर पहुंच कर कुत्ते ने हिम पर जोर २ खुरच कर एक मनुष्य की देह दिखाई। उसको उचित आश्रय दिया गया, कुत्ता फिर उसके साथियों की खोज में चला कुछ दूर पर आवाज सुनकर भिक्षु उधर ढूंढने चला जबकि अचानक वह पीछे से पकड़ कर बर्फ पर खींच लाया गया। तब अपनी लैन्टर्न की रोशनी से देखकर भिक्षु को ज्ञात हुआ कि कुत्ते ने उसे पीछे खींचकर कगार से गिरने से बचा लिया।

सेन्टबर्टन में जितने भिक्षु हैं उतने ही कुत्ते और सहायक हैं।

धातु की मुद्रा सर्वोत्तम है।

अभी एक जर्मन जीवाणु-वैज्ञानिक ने एक बड़े महत्व की बात इस देश में सुवर्ण मुद्रा की पुनरावृति के विषय में अनुभव की है। उसने अपने अनुभवों के परिणाम स्वरूप यह घोषित किया है। धातु मुद्रा नोटों से अधिक स्वास्थ कारी है।

एक नोट में जो कि कुछ दिनों से इधर उधर घूमता था तथा बहुधा हाथों के साथ सम्पर्क रखता था—१४३,००० जीवाणु पाये गये।

धातु मुद्रा में इससे कहीं कम जीवाणु संख्या मिलती है। उनके चिकने तले इतने छोटे जीवाणुओं को इकट्ठा नहीं होने देते।

किन्तु मुद्रा से भी किसी प्रकार की शारीरिक हानि नहीं उठानी चाहिये। यद्यपि यह नोटों की अपेक्षा अधिकतर साफ़ हैं तथापि इनको अपने मुख में रखना बड़ी मूर्खता है - जैसा कि कतिपय जन इनकी यथार्थता की परीक्षा करने के लिये करते हैं।

जनपद जहां कोई मृत्यु न हो।

पीड मौन्ट का एक सैलेशियो नाम का पहाड़ी कसबा अचानक ही बड़ा विख्यात हो गया है और लोगों के झुंड के झुंड वहां इकट्ठा होरहे हैं। वह एक ऐसी जगह मशहूर की गई है जहां कोई मरता नहीं है। पिछले तीन वर्षों में वहां कोई मृत्यु नहीं हुई है।

सलेशियो का मेयर डाकिये का, और घंटा बजाने का काम स्वयं करता है। यह कहावत है कि वहां कोई शराब नहीं पीता, न कोई लड़ता है, और सेलेशियो में कोई चोरी नहीं करता है और निवासियों में पूर्ण शान्ति विराजती है।

शीशे की कृत्रिम आंखों वाले कुत्ते

आहत पशुओं पर किये गये आपरेशनों में डाक्टरी चातुर्य के कई नूतन उदाहरण सूक्ष्मता में मनुष्यों पर किये गये आपरेशनों से कहीं बढ़ चढ़ कर हैं।

कुत्तों के बनावटी दाँत लगाये गए हैं। जो कि हड्डियों इत्यादि कठोर से कठोर मांस भोजन करने पर भी अपने स्थान से नहीं हिलते। प्रायः भयानक घटनाओं के कारण जानवरों के अंगों को फिर से लगाना आज

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्यक हो जाता है, और बनावटी पैर चांदी व वलकैनाइट के बना कर चमड़े से मढ़कर उस स्थान पर लगाए जा सकते हैं।

प्रायः छोटे लूले जानवर अपने नए अंगों को काम में लाने के जल्दी आदी हो जाते हैं। किन्तु एक पिल्ला बडावेवकूफ़ निकला। जब किसी घटना द्वारा उसके सामने के दोनों पैर कट गए। नवीन बनावटी पैर बना कर लगा दिए गए परन्तु पशु ने उन को कार्य में लाने से इन्कार कर दिया, और एक छोटे कंगारू बच्चे की तरह कूदने लगा।

एक अबरडीन के शिकारी कुत्ते के शरीर को एक्स किरण से अनुभव किए जाने पर ज्ञात हुआ कि उसके पेट में ११४ नुकीले पत्थर और एक बहुमूल्य हीरे का कालर का बटन है, किन्तु यह बडी उत्तमता से आपरेशन द्वारा निकाल लिए गए।

पशुओं की चिकित्सा का एक अत्यधिक सूक्ष्म उदाहरण एक छोटा खिलौने जैसा जापानी कुत्ता है जोकि अब तक जीता है।

किसी दुर्भाग्य से उसकी एक आँख फुटगई थी। किन्तु इस सफ़ाई से नवीन कृत्रिम शीशे की आंख इस स्थान पर लगाई है कि जो सचमुच की आंख से किसी प्रकार पहिचानी नहीं जाती।

कुसुमोद्यान

१. महात्मा गांधी की सेना में नई भर्ती

महात्मा गांधी अपने पत्र ११ जून १९२५ के 'यंगइन्डियां' में लिखते हैं कि उन की प्रेमपात्र बालिकाओं की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ रही है। सब से बढ़ कर गुलनार थी। किन्तु उसके बाद और बहुत सी देवियां शामिल होचुकी हैं जिन की संख्या इतनी है कि प्रत्येक का नाम लेना मुशिकल है। परन्तु अभी हाल में ही धैर्द्धमान से रानी बाला नामक एक १० वर्ष की प्यारी कन्या भी सेना में भर्ती हुई है। इस के विषय में महात्मा जी इस प्रकार लिखते हैं:--

"मुझे उसकी आयु पूछने का साहस न हुआ। मैं साधारणतया उसके साथ लाड़ कर रहा था और उसकी सोने की छः चूड़ियों को बार २ देख रहा था। ज्यों ही मैंने उसे मधुर शब्दों में यह कहा कि तुम्हारी कोमल कलाइयों के लिये यह बड़ा भारी भार है उसी समय उस लड़की का हाथ चूड़ियों के उतारने में लग गया। उस के नाना श्याम बाबू जो 'सर्वेन्ट' अखबार के कारण सुविख्यात हैं—वह भी कहने लगे—"हां,हां, महात्मा जी को चूड़ियां दे दो"

मैंने सोचा था कि यह दान किसी और के सिर पर हो रहा है इस पर श्याम बाबू ने कहा—"ओह! आप मेरी लड़की और दामाद को जानते नहीं हैं। जब मेरी लड़की यह सुनेगी कि इस कन्या ने आप को

चूड़ियां दे दी हैं तो बड़ी प्रसन्न होगी और मेरा दामाद काफी अमीर हैं। उसका हृदय बड़ा उदार है, वह हमेशा गरीबों की मदद करता रहता है।"

यह बातें करते २ वह रानी बाला की चूड़ियां उतार रहा था और उसे उत्साह पूर्ण कर रहा था। मैं बड़ा असमंजस में पड़ गया मैं केवल हंसी कर रहा था जैसा कि मेरा स्वभाव है कि जब मैं छोटी लड़कियों को देखता हूं तो उन से हंसी कर के हंसी में उनके दिलों को बहुत गहने लादने के विरुद्ध रुचि पैदा कर देता हूं। और गरीबों के लिये उन्हें त्याग करदेने पर उत्साहित करता हूँ। मैंने चूड़ियां लौटाने की कोशिश की किन्तु श्याम बाबू ने बीच में ही रोक कर कहा कि चूड़ियां वापस लेना इसकी माता अपशकुन समझेगी। तब मैंने चूड़ियां स्वीकार करने की अपनी शर्त बताई कि कन्या इन चूड़ियों के बदले में फिर नई चूड़ियां न बनवा कर पहिने किन्तु अगर उस की इच्छा हो तो विमल शंख की चूड़ियां बेशक धारण करले। इस शर्त को कन्या तथा उस के नाना दोनों ने स्वीकार कर लियां। यह दान उस कुल के लिये शकुन था या नहीं यह तो मैं नहीं जानता किन्तु गरीबों के लिये और मेरे लिये यह शकुन ही निकला क्योंकि इस उदाहरण का अन्य देवियों ने अनुकरण किया। और स्त्रियों की सभा में जो मैंने बर्धमान में की उस में मुझे एक दर्जन चूड़ियां और कई जोड़े कान की रिंग के बगैर मांगे हुए मिले यह तो निश्चय ही जानो कि इन का धन बंगाल में खद्दर और चर्खा प्रचार में लगेगा। मैं सब बालिकाओं और उनके पिता तथा पितामहों को सूचना देता हूँ कि, रानीबाला की शर्त पर जितनी भी कन्यायें मेरे पास आवेंगी सभी को प्रेमपात्र बनाऊंगा। और वह अपने उच्च भावों के कारण—कि उन्हों ने अपने प्रिय जेवरों को गरीबों की सेवा में व्यय करने के लिये दे डाला है—मुझे बहुत ही सुन्दर मालूम होंगी।

भारत की छोटी २ बच्चियों को अपने दिलों में यह धारण करना चाहिये कि वही सुन्दर है जो सुन्दर काम करता है।

(यंगइन्डिया)

(२) तुर्की में विवाह पर मितव्ययता।

'स्त्री धर्म' मद्रास लिखता है कि तुर्की में विवाह सम्बन्ध में जो मितव्ययता के प्रस्ताव हो रहे वह यदि भारत वर्ष में अनुकरण किये जावें तो बड़ा लाभ हो। वह लिखता है कि ट्रावशो (विवाह के समय का वस्त्र) और विवाह की ज्याफत के बिना विवाह की शोभा क्या है? लेकिन तुर्की में यह दोनों विनष्ट होने वाली हैं तुर्की सर्कार ने कान्स्टैन्टी नोपल सिटी कौंसिल को यह आज्ञा दी है कि वह त्यौहारों के समय जो व्यय की अधिकता होती है उसे कम करने के नियमों को बनावे। किन्तु उस कौंसिल ने शादियों के खर्च से ही शुरू किया है। प्रस्ताव यह हो रहा है कि शादी के समय सवेरे की ज्याफत बिलकुल बन्द कर दी जावे, और अतिथियों को शर्बतऔर मिठाइयां ही खिलाई जावें। और यह भी इने गिने मित्रों को खिलावें क्योंकि बरात में ५ गाड़ियों या मोटरों से अधिक बराती न हों। वर बधू को केवल एक ही उपहार देवे, और वह अंगूठी के रूप में और बधू की ओर से एक ही कमरे की सजावट का सामान मिले तथा बधू को दाज में दो जोड़े ही वस्त्रों के दिये जावें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वनिता विनोद

स्त्री जगत्।

१-ग्रेट ब्रिटेनके सचिव महाशय बाल्डविन ने एक महिला को अपना प्रधान सचिव बनाया है। इस देवी का नाम मिस ईडिथ वैटसन है। ये बिटिश सरकार के कई उत्तरदायित्व पदों को सुशोभित कर चुकी हैं। कहते हैं कि जब सचिव से प्रश्न किया गया कि उन्होंने एक स्त्री को इस पद पर क्यों नियुक्त किया तो उत्तर दिया कि "वह गुप्त बातों को भली भांति छिपा सकती हैं।"

२-कैलिफोर्नियांकी खाड़ी में रिवर्न नामक एक द्वीप है जो कि स्त्रियों द्वारा ही शासन किया जाता है। इस द्वीप के निवासी अमेरिकन इन्डियन सेविस जाति के हैं जो कि, पहिले प्रायः पांच सहस्र के थो। परन्तु अब घटकर कुछ सैकड़ों में ही बच गई है यह प्रायः बिलकुल अलग रहते हैं। और स्थानीय आदिम निवासियों से विवाह करना नहीं चाहते स्त्री ही घर की मुखिया होती है और प्रमदाओं की एक सभा सारे सार्वजनिक कार्यों की देख रेख करती है।

३—मिश्रियों की महिलाओं के निरन्तर प्रयास से उन्हें स्वतन्त्रता प्राप्त करने में बडी सहायता प्राप्त हुई है १००० स्त्रियों की एक सभा ने देश की स्त्रियों की ओर से बोलने का बीड़ा लिया है। इन्होंने "ज़गलूरिस्टनेता तथा अन्य कैदियों को छुड़ाने में बड़ी सहायता दी है।"

४. एक स्त्री पुलिसमैन के रूप में अच्छा कार्य्य कर सकती है। अमेरिका के एक प्रान्त में मिस्ज़ वेडस-इन-दि-वाटर एक आदिम निवासी हबशी महिला ग्लेसियर, नैशनल पाक रिज़र्वेशन में पुलिस को कार्य करती हैं। यद्यपि यह सदा कार्य तत्पर रहीं तथापि अब तक कोई जन नहीं पकड़ी।

५-फ्राँसमें अब तक स्त्रियों को म्युनिसिपल कमेटियों में बोलने का अधिकार न था सुना है कि अब वह अधिकार शीघ्र ही मिलने वाला है। यद्यपि फ्रांस में स्त्रियों को अधिकार न था तिस पर भी श्रम विभाग के अधिष्ठाता मन्त्री के पद पर एक महिला श्रीमती मार्गराइट बोगुल नियत की गई हैं।

६—दहेज़ और जेवनार के बिना विवाह की प्रथा टर्की सरकार ने प्रायः दोनों ही लुप्तप्राय कर दी हैं।

टर्की सरकार ने सभा द्वारा, त्यौहारों, उत्सवों पर के फजूल खर्च को रोकने के लिए कानून बनाए। पहिले पहल सभा ने विवाह उत्सव से आरम्भ किया।

विवाह के समय की दावतें रोक दी गई, और कुछ थोड़ा जलपान इत्यादि उसके स्थान पर रख दिया गया बरात की जन संख्या न्यून कर दी बर की ओर से बधू के केवल एक उपहार अंगूठी ही यथेष्ठ समझा गया, दूसरी तरफ बधू केवल दो जोडी कपड़े तथा एक ही कमरे की सजावट का सामान लावे अधिक नहीं। क्या विवाह की दहेज़ की कुप्रथाओं से जटिल हुए भारतवासी भी इस ओर ध्यान देंगे।

७—पहली बार रूस में स्त्रियों को पूर्ण स्वाधीनता प्राप्त हुई है। अब वहां उन्हें पुरुषों के समान अधिकार है, यहां तक कि विवाह बन्धन में भी दोनों के लिए एक नियम हैं। इस का प्रतिफल स्वरूप वहां अब पहिले की अपेक्षा दुराचार कम है।

वेश्यावृत्ति कानून नाजायज़ समझी जाने लगी है इस कानून भंग का दण्ड पुरुषों को दिया जाता है, पहली सरकार दुराचार के गृहों पर टैक्स लगाती थी वह सब बन्द कर दिए गए हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

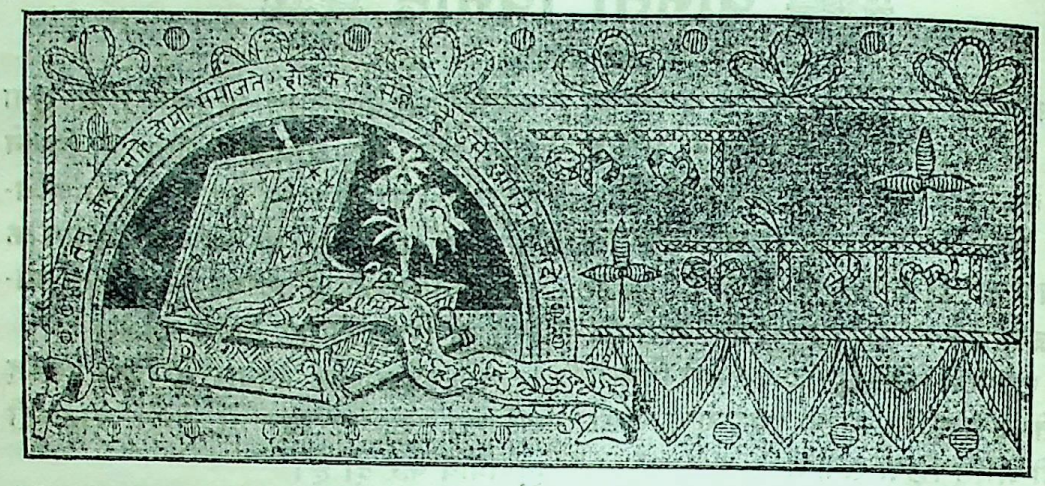

॥ कला कौशल ॥

लेखिका—श्रीमती ओ३म्वती जी

संकेतः—चेन के लिये "चे", तेहरे के लिये 'ते", दोहरे लिये "दोहरा

यह नई तरह का कार्य्य जाली की भरी हुई लेसों की तरह का है। कोई किसी तरह का सरल क्रोशिये का नमूना चुन लिया जाता है जो कि सूत से बीनते हैं फिर एक बिना नोक की सुई लेकर और रंग के और तरह के रेशम वा सूत से उसमें फूल पत्ती भरते हैं। और यह धुलने वाले कपड़ों इत्यादि में लगाने के लिये बड़ी सुन्दर होती है।

आवश्यक वस्तुएं:—३० नं० का महीन सूत लेस बीनने के लिए क्रोशिया ४½ नं० रंगीन रेशम व सूत और मोटी बिना नोक की एक सुई।

१ दुरंगा फीता

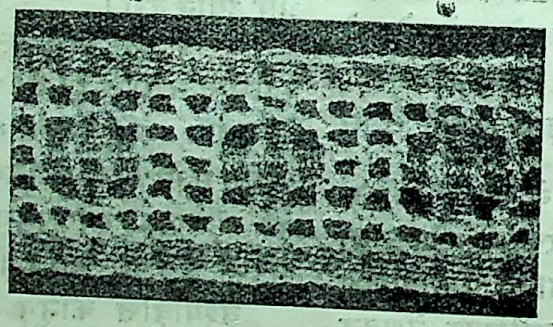

आरम्भ में २६ चेन करो

१ पंक्तिः—१ ते. ८ वीं चेन में,*२चे., २चे., छोड़ो १ ते. अगले फन्दे में इसी प्रकार दोहराओ* चिन्ह से सारे

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सात खाने बनें, ५ चेन लौटो।

२ पंक्तिः—पहिला तेहरा छोड़ो, * । १तेहरा अगले तेहरे पर, २ चेन, * इस चिन्ह से ५ दफ़ा १ तेहरा ५ लौटने वाली चेन के तीसरे में।

२ पंक्ति क दोहराओ जब तक काफ़ी फ़ीता न तैयार हो जाय।

दूसरे धागे या रेशम से चित्र में दिखाये हुवे की तरह फ़ीते के दोनों किनारे पर खाने में एक बार ऊपर को और एक दफा नीचे को इस प्रकार धागे भरो चार पंक्तियां भरो जिसमें जगह खाली न रहे, हर दूसरी अगली पंक्ति में जो नीचे था वह घर ऊपर लो और जो ऊपर था वह नीचे लो। बीच की खानेकी पंक्तियोंमें तीन बराबर के खानों में भरो, परन्तु अब किनारे की तरह लम्बे २ नहीं वरन् बड़े २ इस पार से उस पार खानों के दस फन्दों में पांच इस तरफ पांच उस तरफ डालो फिर बिचले चौखुन्टे के दोनों तरफ एक २ खाना भरो उसी तरफ लम्बे बल से जैसे किनारा भरा था यह फीता बन गया।

२ लेस

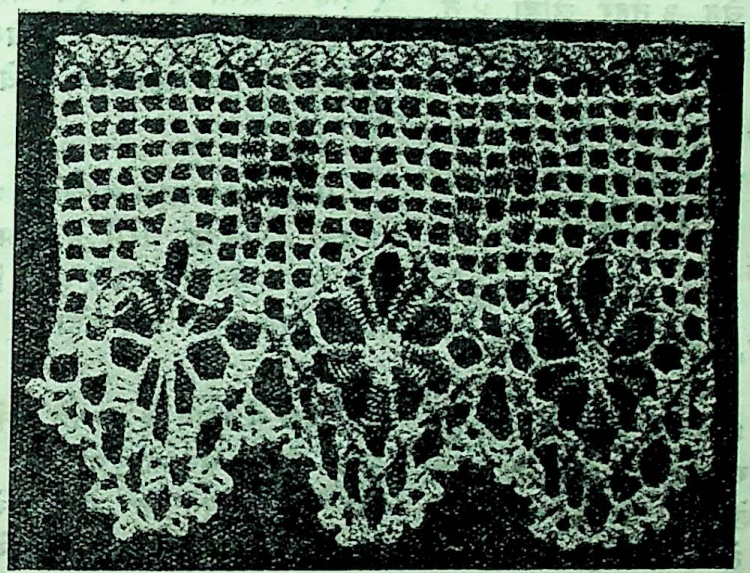

आरम्भ में ४० चेन करो।

१ पंक्तिः—१ तेहरा चौथी चेन में, १ तेहरा प्रत्येक अगली दो चेनों में * २ चेन, २चे छोड़ो, १ ते. अगली चेनमें, चिन्ह से ६ दफा और बनाओ सारे १० खाने बन जांय ३ तेहरे अगली ३ चेनों में, १२ चेन लौटो।

२ पंक्तिः—१ तेहरा १० वीं चेन में १ तेहरा अगली दोनों चेनों में १ तेहरा झुंड के पहिले तेहरे पर, ५ चेन दो छोड़ो १ तेहरा उसी झुंड के पिछले तेहरे पर, १ तेहरा अगले तीन घरों में, २ चेन, १ तेहरा ६ दफा, ३ तेहरे किनारे पर, ३ चेन किनारे पर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

चेन लौटो ।

३ पंक्ति—१ तेहरा छोड़ो ३ तेहरे ८ खाने, १ तेहरा हर अगली २ चेनों में । १ तेहरा अगले तेहरे, ५ पर चेन, १ लम्बा तेहरा (धागा बार २ चढ़ा कर) ५ चेन के छल्ले के बीच में २ चेन १ तेहरा अगले झुंड के पिछले तेहरे पर, १ तेहरा अगली ३ चेनों पर १२ चेन लौटो ।

४ पंक्तिः—१ तेहरा १०वीं चेन में १ तेहरा अगली तीन चेनों में, ७ चेन १ दोहरा लम्बे तेहरे के पहिले, १ दोहरा लम्बे तेहरे पर, १ दोहरा लम्बे तेहरे के बाद, ७ चेन ३ तेहरे छोड़ो, ४ ते, ७ ख़ा, ४ ते., किनारे पर, ३ चे लौटो ।

५ पंक्तिः—३ ते, ६ ख़ाना, ४ ते. ६ चे, ५ दोहरे ३ दोहरों पर ६ चे, ३ तेहरे छोड़ो, ४ ते, ६ चे. लौटो

६ पंक्तिः—३ ते. छोड़कर, १ ते फिरा ले ते. पर, ३ ते, चेनों पर (६ चेनों में की) ७ चेन, १ दोहरा छोड़दो, ३ दोहरे, ७ चेन, १ तेहरा ६ में की ७वीं चेन में १ तेहरा अगली ३ चेनों में, २ चे., २ तेहरे छोड़ो, १ ते. ते. पर ६ और ख़ाने, ४ ते. ३ चे लौटो ।

७ पंक्तिः—३ ते, ८ ख़ाना १ ते हर एक अगली ३ चेनों में, ४ चे., १ लम्बा तेहरा दोहरों के बीच में, ४ चे., ४ चे छोड़ो १ तेहरा हर अगली ३ चेनों में १ तेहरा झुंड के पहिले तेहरे पर, ६ चेन लौटो ।

८ पंक्तिः—३ तेहरे छोड़ो ४ तेहरे, २ चेन, ३ फन्दे छोड़ो ४ ते., ६ ख़ाने, ४ ते ३ चे., लौटो ।

९ पंक्तिः—३ ते., १० ख़ा, ३ तेहरे २ चेनों में १ ते पर, १२ चेन लौटो और आरम्भ की दूसरी पंक्ती से शिर बीनो ।

कींगरी के लिये नोंक की दाहिनी हाथ की तरफ के पहिले छेद में १ तेहरा बनाओ, ५ चेन १ दोहरा अभी बनाये हुये तेहरे के सिर पर १ चे, १ ते उसी छेद में ५ चेन १ दोहरा अभी बनाये हुवे तेहरे पर, १ चेन १ तेहरा फिर छेद में ।

४ तेहरे इन छल्लों से अलग २ हुवे बीनो अगली ८ चेन के घरमें, ४ ते अगले छेद में ३ ते अगले छेद में ३ ते., २ छल्ले पिछले घरमें ४ घर इसी प्रकार सब कहीं ।

बीच में रेशम से भर दो चेनों पर इकट्ठा धागा फेरो । चैन के ऊपर नीचे आठ बार सुई फेरो नमूने के ऊपर नीचे छोटे छेद में भरो किनारों पर और तेहरों के ऊपर— ५ दफ़ा सुई फेरो किनारों पर और तेहरों के झुंड पर क्रास का फूल सा बनाते जाओ चित्र की तरह ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कन्या--कल्याण

(ले० पं० जगन्नारायणदेव शर्मा कवि पुष्कर)

(१)

ब्रह्मचारिणीं देवियो ! तुम हो उज्ज्वल रत्न ।
जिससे जग में मान हो, करो वही शुभ यत्न ॥

(२)

तुम से है आशा बड़ी, तुम हो सब सुख मूल ।
तुम इस विश्वोद्यान में, हो सुरतरु के फूल ॥

(३)

शिक्षा से सम्पन्न हो, रखो जाति की लाज ।
अपने वैदिक धर्म-हित, सारो सुन्दर काज ॥

(४)

पाक गृहस्थी की कला, सीखो तुम भरपूर ।
काल-कुरीति-कुरोग को, करदो सारे दूर ॥

(५)

उभय कुलों में वास कर, पाओ तुम सन्मान ।
नीति- निपुण विद्यावती, हो सद् ज्ञान निधान ॥

(६)

सीता सावित्री सरिस, बनो सती आदर्श ।
तुम से वंश स्वदेश का, बढ़े ओज-उत्कर्ष ॥

(५)

कन्या-गुरुकुल में पढ़ो ! करो सवेग सुधार ।
तुम से हिंदु समाज का, हो अनन्य उपकार ॥

कवि कृत 'पद्य पयोधि' या 'चौदह रत्न' नामक हस्तलिखित ग्रन्थ से गृहीत ।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

शिशु पालन।

ले०—श्री निरञ्जननाथ जी

यों तो हर एक को स्वस्थ रहने के लिए साधारण नियमों का ज्ञान रखना अत्यावश्यक है। परन्तु माताओं के लिये यह परमावश्यक है कि बच्चों के स्वस्थ सम्बन्धी नियमों का भली प्रकार ज्ञान रखें। हमारा ख्याल है कि जिन परिवारों में वृद्धा स्त्रियां बिराजमान् हैं उन घरों की देख रेख अच्छी होती है। परन्तु खेद इस बात का है कि इन अनुभवी देवियों का कुछ तो अभाव हो रहा है। कुछ वृद्धा देवियां जीवन निर्वाह की बिकट समस्या के कारण अपनी सन्तान के पास रहने का अवसर प्राप्त नहीं कर सकतीं जिसका फल यह हो रहा है कि अनुभव हीन माताएं न तो बच्चों का यथोचित रीति से पालन ही कर सकती हैं न उनके रोगी होने पर रोग निवारण में पूर्णतया सफलता प्राप्त कर सकती हैं। बात बात पर डाक्टरों और वैद्यों का सहारा लेना पड़ता है और प्रायः जन्म से ही बच्चों के गले में औषधि ठोंसी जाती है। व्यय करते करते भी हैरान होना पड़ता है।

यह प्रसन्नता की बात है कि कुछ एक संस्थाएं देश में ऐसी स्थापित हो गई हैं जो विशेष व्याख्यानों और नाना प्रकार की चित्र-कलाओं द्वारा स्वास्थ्य सम्बन्धी नियमों का प्रचार करती हैं। इन से माताओं का ध्यान इन नियमों की ओर हो रहा है जिनसे वह अपने बच्चों को सुन्दर, सुडौल और स्वस्थ बनाये रक्खें। आज हम भी चाहते हैं कि इस वृहद् भण्डार में से कुछ दो चार मोटी बातें माताओं के सम्मुख रखें।

हम शरीर सम्बन्धी गूढ़ रहस्यों के वर्णन की योग्यता नहीं रखते न हमारे ख्याल में यह आवश्यक है कि इन छोटे २ लेखों में नस नाड़ी और हड्डी आदि की गणना की जावे। हमारा मतलब केवल यह है कि नित्य प्रति जो बातें व्यवहार रूप से घरों में देखी जाती हैं उनके गुणावगुण दिखाए जावें। और माताओं को साधारण बातों में सचेत किया जावे। क्योंकि साधारण भूल से ही प्रायः ऐसे बुरे परिणाम निकलते हैं जिनका संभालना कठिन हो जाता है।

जब माता बालक को जन्म देकर कुछ दिनों के पीछे स्वस्थ होती है और निर्बलता को त्याग शरीर को पुष्ट करती है तो उस का ध्यान स्वभावतः बालक की ओर दिनों दिन अधिक जाता है। वह हर प्रकार से उसकी उन्नति चाहती है। उस की चेष्टाओं से ऐसा प्रतीत होता है कि वह उसे आज ही सर्वगुण निधान बनाना चाहती है, वह अपने मन की पूर्ण कामनाओं के अनुसार उसका पालन करती है, उस की इच्छा यही होती है कि मैं इस बालक को देखते देखते सुन्दर और सुडौल बना दूं। इस को सर्वोत्कृष्ट वस्त्र पहनाऊं और यह आज ही चलने फिरने और बोलने लायक हो जाये। यह मंगल मूर्ति देवियाँ प्रायः इन कामनाओं में अधीर हो जाती हैं और यह विस्मरण कर जाती हैं कि हर एक बात अपने समय पर ही होती है। इसीलिये हम ने देखा कि प्रायः उतावली में बालकों को हानि पहुंच जाती है। माता को शोक होता है कि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मेरा बालक जल्दी २ बैठना सीखे वह गिरते पड़ते को बार २ बिठाती है, उस की रीढ़ की हड्डी झुक जाती है। समय से पूर्व खड़ा करती है, उसकी कोमल टांगें टेढ़ी हो जाती है। हाथों से पकड़ कर खड़ा करना मर्यादा से अधिक उछालना, उठाना, धकेलना नीचे ऊपर करना इत्यादि हानिकारक कर्म है।

शरीर में नेत्र एक उपयोगी इन्द्रिय है। अज्ञानता में इसी पर अधिक आघात होता है। परमात्मा के सृष्टि नियमों के अनुसार बच्चों के शरीर में विशेष सुरक्षण शक्ति होती है, नहीं तो माताओं की जरा सी अज्ञानता भी ऐसे कोमल अंगों को नष्ट करने के लिये पर्याप्त है। दो एक महीने के बालक के निर्मल नेत्रों में काजल और सुरमा की भरमार हो जाती है। यह अनावश्यक काजल और सुरमा भी दो दो पैसे का सौदा बेचने वाले से खरीद लिया जाता है। इस काजल सुरमा और सलाई को जहां चाहती हैं धूल मट्टी वाले आला आदि में रख देती हैं। और जब आवश्यकता हुई उठा कर जरा नाम मात्र के लिये अपने आंचल से पोंछ कर काम में ले आती हैं। उन का ख्याल है कि शुरू २ में इस प्रयोग से बच्चों की जन्म भर आंखें नहीं दुखती परन्तु देखने में इससे विपरीत आता है।

पर्वतों में रहने वाली माताएं जब घरसे बाहर काम काजको जाती हैं, तो बहती हुई नदी के पानी में से एक छोटी सी धारा पृथक कर अपने झोंपड़े में ले आती हैं, और अपने बच्चे को इस प्रकार सुलाती हैं कि वह जल धारा सोते हुए बालक के तालू से छू कर कर झोपड़े से बाहिर निकल जावे। बालक का शेष शरीर नहीं भीगता और वह घण्टों सोया रहता है। उन माताओं का ख्याल है कि जन्म भर इससे बालक की आंखे अच्छी रहती हैं। सम्भव है जन्म भर नहीं तो चिरकाल तक अच्छी रहती हैं। हां इतना तो प्रत्यक्ष है कि बालक सोया रहता है। माता काम करती रहती है। अफीम देकर सुलाने से तो अच्छा है।

माताएं बालक, को नहलाते समय साबुन का प्रयोग करतीं हैं। साबुन चाहे कैसा हो उनकी बला से। नहलाने के संकेत से बालक रोने लगता है क्योंकि वह जानता है कि उस के साथ खासी पहलवानी होनेवाली है। माताओं को इतना धैर्य्य कहां कि वह ऐसी बुद्धिमत्ता से काम लेवे कि बालक नहाते समय न केवल रोये ही नहीं बल्कि नहाना उसे प्रिय मालूम हो। पर ऐसी बुद्धमत्ता के लिये समय चाहिये। माता के पास समय कहां वह तो झटपट करना चाहती है। रोते हुए बालक के सिर पर साबुन लगाया जाता है। एक तो सिर का मैल दूसरे साबुन का पानी आंखों में पड़जाता है रोते २ लाल हुई आंखें और भी खराब होने लगती हैं। रोते हुए आंखें बन्द रहने से कुछ बचाव तो हो जाता है मगर, असावधानी के कारण इस बात से लाभ नहीं उठाया जाता। सिर धोने के पीछे आंखों की बारी आती है, तो हाथ की हथेली खूब जोर २ से आंखें मलती हैं। इससे आंखें और भी लाल हो जाती हैं।

कभी बालक की आंखों से जल बिन्दु निकले या गिर आये तो इन को कुछ चिन्ता नहीं होती। साधारण कपड़े या अपने ही हाथों से पोछ दिया। जब जरा आंख दुखने लगी तो इधर उधर के सुनार आदि के यहां से दवाई डलवा आये। अच्छी भली आंखों का नाश हो जाता है। सिर धोते समय इस बात का ख्याल रखना चाहिये कि सिर का

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पानी आंखों में प्रवेश न करे बच्चे को चित्त लिटा कर यह बात पूरी हो सकती है। बालक के कोमल नेत्रों को कभी जोर से नहीं मलना चाहिये। चित्त लिटा कर अच्छे स्वच्छ हाथों द्वारा स्वच्छ जल की बूंदें धीरे २ आंखों में डालनी चाहिये। यदि बालक के नेत्रों से जल या गन्द निकले तो तुरन्त डाक्टर को दिखाना चाहिये। डाक्टर को दिखाने में विलम्ब हो तो स्वच्छ गरम पानी में थोड़ा सा बोरिक ऐसिड मिला कर जब पानी गुन गुना हो जावे तो जैसा ऊपर लिखा है उसी प्रकार आंखों में डालना चाहिये। आंखों में कोई सख्त दवाई नहीं डालनी चाहिये। माताएं जब अपनी आंखों में कोई सलाई डालतीं हैं और वह नेत्रोंमें जलन कर पानी निकालतीं हैं तो बहुत अच्छा बताती हैं। उसी आधार पर बच्चों की आंखों का भी इलाज करती है। प्रायः घर के मर्दों की बात का इतना ध्यान नहीं करती जितना अड़ोस पड़ोस की अनजान गंवार स्त्री का। इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बालक कभी अपनी गन्दी मैली उंगली आंख पर न लगावे। आंख से जल निकलने गिद आने और बालक का बार २ आंख को हाथ लगाने से समझ लेना चाहिये कि कोई अस्वाभाविक बात है। उसी समय सावधान हो जाना चाहिये। बालक जब किसी अंग को बार २ छुएगा तो समझ लेना चाहिए कि कुछ दाल में काला है। आंखों को मलना, कानों में उंगली देना, नासिका के छिद्रों में उंगली फेरना आदि सब अस्वाभाविक कर्म हैं। इन को देख कर सचेत हो जाना चाहिये प्रायः जब किसी बालक को ऐसा करते देखा और उस की माता से कहा गया तो उस ने अपने भोलेपन से यही उत्तर दिया कि अजी इस को ऐसी ही टेव पड़ गई है। कुछ दिनों के पीछे इस टेव का बुरा परिणाम निकल आता है। प्रायः माताएं बालकों को रसोई घर में जब धुंआं होता है तो गोदी में ही रखती हैं। मां जब मकान को झाड़ने बुहारने लगती है तो भी छाती के साथ लगाये रखती हैं इस से उनकी आंखें दुखने लग जाती हैं। बच्चों के हाथ हर समय साफ सुथरे रखने चाहिए क्योंकि न जाने कब आंख बचा कर वह अपनी आंखों को हाथ लगा बैठें। अपने या पराये घर में किसी की आंख दुखती हो तो बच्चे को उस से दूर रखना चाहिये। जहां अपना वश चलता हो वहां आंख पोंछने वाले कपड़े को बाहिर फैंक देना चाहिए। या जला देना चाहिये या कारबालिक साबुन से धोना चाहिये।

बालकों को प्रायः जुकाम हो जाया करता है जिसकी चिन्ता माताओं को लेश मात्र भी नहीं होती। नाक को साफ न रखने के कारण बच्चे मुख से सांस लेने लगते हैं। ऐसे बच्चों के मुख सदा खुले रहते हैं। हम ने किसी माता को नहीं देखा, जो बच्चों के खुले हुए मुख को कोई आपत्तिजनक समझे पर यह ऐसा विकार हैं जिसकी ओर पूरा ध्यान देना चाहिये। बच्चे का मुख साधारण तया बन्द रहना चाहिये ताकि वह नासिका द्वारा सांस ले सके। नासिका द्वार सदा साफ रखना चाहिये। जिन बच्चों की नासिका का ध्यान नहीं रखा जाता वह बड़े होकर भी नाक के मल को बाहिर की बजाय ऊपर ऊपर चढ़ाते रहते हैं, क्यों कि बार बार नाक साफ करने में वह समय नहीं गवांना चाहते उनको तो खेल से प्यार होता है। मैंने जब एक संस्था में कुछ बड़ी उम्र के लड़कों को ऐसा करते देखा तो उनसे कहा कि क्या तुम्हारे नाक का मल दूध की मलाई है जो उसे सम्भाल २ कर ऊपर खेंचते रहते हो और बाहिर नहीं निकालते।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तब से उनको ऐसी चोट लगी कि वह आदत छोड़ दी। अगर छुटपन से ही बालक को साफ सुथरा रखा जावे तो बड़ा होने पर भी उसे वही बात भाती है। अच्छे घरानों में पले हुए बालक के किसी अंग या वस्त्र को जरा सा भी मैल लगजाय तो उस को साफ कराये बिना उसे चैन नहीं आता।

कानों में किसी प्रकार का तिनका या उंगली नहीं देनी चाहिये कानों में कभी पानी नहीं जाना चाहिये। कानों को साफ रखने के वास्ते उनमें एक आध बूंद तैल की डालते रहना चाहिये। कानों के अन्दर से मैल कुरेदने का कभी बल नहीं करना चाहिये। यह आदत भी बड़े होकर हानिकारक होती है। हम ने ऐसे भी आदमी देखे जो कान की मैल निकलवाते २ बहरे हो गये। एक डाक्टर का कहना है कि जिस तरह तबले के ऊपर काला मशाला और आग लगाने से उसमें से शब्द अच्छा निकलता है इसीप्रकार कान के परदों पर भी कुछ मैल अत्यावश्यक होती है। कभी २ कानों का विकार गले के दूषित होने पर भी अवलम्बित होता है। एक बालक कभी २ माता पिता की बात का उत्तर देर से दिया करता था, कभी वह नहीं भी बोलता था। वह लोग इस का कारण ढूंडने का कष्ट तो न उठाते परन्तु कल्लाया करते, जब मैंने उस बालक को देखा तो उन से कहा कि यह तो सुनता ही ऊंचा है। तब सचेत हुए। फिर भी उनको कुछ चिंता न हुई। यही कह कर रह गये अब तो यह ऊंचा सुनने लगा मैंने कहा इसका गला खराब होगा डाक्टर को अवश्य दिखाओ। उन्होंने कुछ ध्यान न दिया। मैंने कुछ काल के पीछे देखा बच्चे का रंग पीला पड़ने लगा तब मैंने फिर कहा बच्चे का गला खराब होगा इसी वास्ते पीला पड़ता है। इसी वास्ते इसके कान खराब हैं। इतने में गले के पास कुछ व्रन सा भी होने लगा, तब वह डाक्टर के पास गये गले के अन्दर चीरा दिया गया। कान भी साफ किया गया। बालक स्वस्थ होकर गुलाब के फूल की तरह खिलने लगा।

बहुत से बालक ऐसे होते हैं जिनका गला खराब होता है बच्चों का बड़ा ध्यान रखना चाहिये। एक गले की खराबी से कई रोग उत्पन्न हो जाते हैं। खांसी तो तत्काल हो जाती है। नेत्रों पर भी प्रभाव पड़ता है कोई २ देवी बड़ी क्रूरता से उंगली देकर ठीक करना चाहती हैं। और उंगली देतेसमय राख लगा लेती हैं। राख की अपवित्रता का का कुछ ख्याल नहीं किया जाता।

लेख लम्बा होने के भय से इस समय इतना ही लिखना ठीक है। अन्त में माताओं से इतना संकेत करना है कि बच्चे की चेष्टा में जब भी अस्वाभाविकता देखें तो टाल मटोल नहीं करना चाहिये, बल्के सचेत होना चाहिये। मर्यादा से उपरांत कोई भी चेष्टा अस्वाभाविक होती है।

हमारी मंजूषा

१. सूरदास की विनयपत्रिका--सम्पादक वियोगी हरि प्रकाशक हिन्दी साहित्य-सम्मेलन, प्रयाग। पृष्ठ संख्या ७२ मूल्य ≡)

यह छोटी सी पुस्तिका नामसे ही ज्ञात होती है भक्त इस प्रेमी सूरदास जी से कौन हिन्दू अनभिज्ञ होगा उनके विमल प्रेमी स्रोत के पद कौन गाकर विह्वल नहीं होता।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इन्हीं सौ अमृतमय पदों का संकलन इसमें किया है। थोड़ासा भक्त जी का परिचय दिया है और एक विशेषता है कि कठिन शब्दों की व्याख्या भी पीछे लिख दी है। ऊट पटांग गजलों के गाने वालों को इन भक्ति प्रेम रस पदों को मंगा कर गाना चाहिये जिसमें एक पंथ दो काज हों।

२. चित्रकूट-चित्रण रचयिता जी विद्याभूषण 'विभु' प्रकाशक कला कार्य्यालय प्रयाग। पृष्ट संख्या ४६ मूल्य ।≠)

यह पुस्तक खड़ी बोली की कविता में मनोहर पर्वत चित्रकूट की अद्भुत छटाओं का वर्णन है। मामूली पढ़े लिखे लोगों के लिये भाषा क्लिष्ट है। संस्कृत के ढंग की कविता जिनको पसन्द हो उनके मन भाने वाली है। इतना अच्छा है जो पीछे से कुछ शब्द कोष दे दिया है गाने में पद ललित हैं।

३. पुनर्जन्म--ले० पं० नन्दकिशोर विद्यालंकार प्रकाशक पंडित जी स्वयं C/० गोविला एन्ड कम्पनी, ८।२ हैस्टिंस स्ट्रीट, कलकत्ता मूल्य १।) पृष्ठ सख्या लगभग १७५ छपाई सफाई सुन्दर मोटी कपड़े की जिल्द। आरम्भ में एक मुन्शी अमरसिंह गुरुकुल कांगड़ी के भूमिदाता का हाफटोन चित्र है।

यह पुस्तक पंडित जी ने शताब्दी के उपलक्ष्य में अपने विद्यार्थी जीवनकी समाप्ति पर जो निबन्ध इत्यादि लिखा था उसीके अंगों को पूर्ण करके छपवाई है। प्रस्तुत पुस्तक दार्शनिक विषयों के गूढ़ तलोंसे भरी हुई है। इसमें पुनर्जन्म जैसे नैत्यिक विषय पर बड़ी बड़ी युक्ति युक्त प्रमाणों द्वारा मनुष्य सृष्टि के आदि स्रोत से आरम्भ करके प्रत्येक दृष्टि कोण से उसका वाद विवाद किया है। पाश्चात्य विद्वानोंके पुनर्जन्मसम्बन्धी विचारों को एकत्र कर सप्तम परिच्छेद में उनकी आलोचना की है। पुस्तक बड़े लाभ की है आजकल प्रायः मत मतान्तर वादी तथा अपने को अंग्रेजी सभ्यता रंजित कहने वाले लोग एक दम पुर्नजन्म को कोई पुरानी बला मानने लगे हैं। अधिकांश लोगोंका मत होता जाता है कि जो कुछ है इसी जीवन में है। उन्हें यदि इसको पढ़ने का सौभाग्य हो वा यदि विद्यार्थियों में इसका प्रचार हो तो अच्छा प्रभावपड़े। दाम कम करके इसका प्रचार करना चाहिये।

४. शिवबोध—ले० श्रीयुत हरिशरण श्रीवास्तव 'मराल' बी० ए० एल० एल० बी० वकील, मेरठ। प्रकाशक—विद्याप्रिंटिंग प्रेस शहर मेरठ। पृष्ठ संख्या ५७, मूल्य ≠)

आरम्भ में बा० घासीराम जी एम० ए० एल० एल० बी० वकील मेरठ ने भूमिका लिखी है। 'मराल' महोदय की कविता प्रायः भिन्न २ पत्रों में प्रकाशित होती रहती है वे बड़ी सरल और भावमयी होती हैं। इस पुस्तक में ऋषि दयानन्द की प्रसिद्धतम जीवन घटना अर्थात् शिवरात्रि के ज्ञानोन्मेष होने की कथा का पद्यात्मक वर्णन है। शताब्दी के उपलक्ष में यह पुष्प आप ने भेंट किया है। पद्य बड़े ही भावुक मर्मभेदी और हृदयग्राही हैं। प्रत्येक ऋषि प्रेमी को पढ़ना योग्य है।

५. ऋषि दयानन्द की जीवन कथा—बालकों के हितार्थ—ले० बाबू घासीराम एम० ए० एल० एल० बी० मेरठ। प्रकाशक बाबू शिवकृपाल विद्याप्रिंटिंग प्रेस मेरठ। मूल्य ≠)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस में जैसा नाम है तदनुसार ऋषि जीवन की घटनाओं की छोटी २ प्रचलित गाथाओं की १६ कहानियां बना कर बालकों के हितार्थ शताब्दी के उपलक्ष्य में प्रकाशित की है। बालक कहानी सुन कर प्रसन्न होते हैं, उन्हें यही कहानियाँ सोते समय सुनाना चाहिये तो दोनों लाभ होंगे।

६. अमर होने का उपाय—रचयिता पण्डित शिवशास्त्री ज्ञानशक्ति के सम्पादक, प्रकाशक श्रीमान् पण्डित रामनारायण जी त्रिपाठी राजगढ़, गोरखपुर। पृष्ठ संख्या १२३—मूल्य १)

इस पुस्तक में शास्त्री जी ने आत्मा परमात्मा को एक मान कर अद्वैतवाद का आश्रय लिया है। पण्डित जी ने वेदान्त को सिद्ध कर दिखाया है। वैज्ञानिक रीति द्वारा भी अपने आत्मा और शरीर की उन्नति कर सकते हैं इस पर बहुत बल दिया है। जिनको वेदान्त वा अद्वैतवाद से प्रेम हो इस पुस्तक में बहुत आनन्द आवेगा मूल्य बहुत है।

७. आत्मिक उन्नति—ले० पण्डित विश्वनाथ विद्यालङ्कार। प्रकाशक—चौ० श्री चन्द्र, मैनेजर महेश बुकडिपो घसीटी बाजार अजमेर। ७८ पृष्ठ की पुस्तक मूल्य केवल चार आने।

इस में भी शताब्दी के उपलक्ष्य में अथर्व वेद के मन्त्रों से कतिपय उपयोगी विषयों को लेकर वर्णन किया है। सत्य, सत्सङ्ग उत्तम संकल्प, माधुर्य्य आदि नित्य व्यवहारिक आत्मिक उन्नति प्रदर्शक विषयों के स्वाध्याय के लिये यह पुस्तक अच्छी है। सब मन्त्रों के अर्थों के नीचे भावार्थ दिये हैं।

कन्या गुरुकुल समाचार

ऋतु।

आजकल यहां पर ऋतु बड़ी सुहावनी है। प्रायः प्रतिदिन बादल घिर आते हैं और वर्षा हो जाती है। ऐसा मालूम होता है इस वर्ष वर्षा ऋतु जल्दी प्रारम्भ होगई है। बाग में खूब हरियावल है नये २ फूल भी खिल रहे हैं।

स्वास्थ्य।

ब्रह्मचारिणियों का स्वास्थ्य साधारणतया बहुत अच्छा है और बहुतों की मुखाकृति से स्वास्थ्य के चिन्ह दीख पड़ते हैं। यद्यपि गर्मी की तीव्रता रही परन्तु उस से विशेष कष्ट किसी को नहीं हुआ, किन्तु आचार्य्या कुमारी विद्यावती सेठ को लगभग तीन सप्ताह के तीव्र ज्वर चढ़ता रहा। परन्तु अब ईशकी कृपा से वह भी स्वास्थ्य लाभ कर रही हैं।

विद्यालय तथा आश्रम का कार्य्य।

आश्रम का कार्य बहुत अच्छी तरह चल रहा है। श्रीमती अधिष्ठात्री राधारानी देवी जी भी विसवां कन्या पाठशाला का प्रबन्ध ठीक करके वापिस आगई हैं। तथा आश्रम और भण्डार का कार्य्य संभालने के

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

लिये दो तीन अनुभवी, अधिक आयु की देवियां नियुक्त की गई हैं। विद्यालय में श्रीमती सरलादेवी जी संस्कृत अध्यापिका नियुक्त हुई हैं। आप संस्कृत और हिंदी में अच्छी योग्यता रखती हैं।

षाण्मासिक परीक्षायें।

ब्रह्मचारिणियों की छै मासिक परीक्षायें २२ जून १९२५ तदनुसार सोमवार को प्रारम्भ होगी अतः पढ़ाई का बड़ा ज़ोर है। कन्यायें बड़े परिश्रम से परीक्षा की तैय्यारी में लगी हुई हैं।

देशबन्धुदास की मृत्यु पर शोक।

१७ जून की संध्याको सम्वाद आया कि हमारे देशके माननीय नेता देशबन्धु दास जी परलोक सिधार गये। अतः १८ को विद्यालय में छुट्टी रही और सांयकाल को ब्रह्मचारिणियां तथा सब अध्यापिका वर्ग ने एकत्र होकर शोकसभा की और मृतक की आत्मा के लिये शान्ति, दुःखी कुटुम्बी जनों के साथ सहानुभूति प्रगटकी गई।

सत्रान्तावकाश।

ब्रह्मचारिणियों को छुट्टी में जलवायु परिवर्त्तनार्थ जाने के लिये स्थान इत्यादि का प्रबन्ध सोचा जा रहा है, तथा मार्ग व्यय के लिये प्रत्येक संरक्षक को पत्र भेजे गये हैं। चूंकि स्थान निश्चित नहीं है अतः मार्ग व्यय का पूरा अन्दाजा न होने से प्रत्येक से १०) रुपये भेजने की प्रार्थना की गई है। कम या अधिक व्यय का हिसाब यात्रा के बाद संरक्षकोंको भेज दिया जायगा। अतः संरक्षकों को चाहिये कि पत्र पातेही मार्ग व्यय भेजने का कष्ट उठावें। जिनका मार्ग व्यय नहीं आयेगा उन कन्याओं को यात्रा के लिये नहीं भेजा जा सकेगा क्योंकि गुरुकुल के पास इस कार्य के लिये बजट में कोई रक़म नहीं है। बहुतों के चले जाने से जो दस पांच कन्यायें रह जावेंगी वह उदास होंगी। अतः सब संरक्षकों को चाहिये कि इस बात का ध्यान रखते हुये मार्ग व्यय शीघ्र भेज कर कृतार्थ करें।

विचार प्रवाह

ज्योति के सम्पादकीय-विभाग में रोग

ज्योति के पाठकों को यह सुन कर खेद होगा कि दैव के कोप से कई मास से ज्योति के सम्पादन-विभाग के कार्य कर्त्ताओं को रोग ने आक्रमण किया हुआ है। गत तीन मास से सम्पादिका कुमारी विद्यावती सेठ अस्वस्थ रही हैं। पिछले दिनों तीन सप्ताह तक वह ज्वर पीड़ित रहीं तथा सहकारी सम्पादक लोग भी ज्वर पीड़ित रहे हैं, यद्यपि सम्पादिका जी स्वस्थ हो गई हैं तथापि सहकारी सम्पादक लोग अबभी बीमार हैं। इन्ही कारणों से ज्योति को हम समय पर प्रकाशित नहीं कर सके और सर्वांग पूर्ण भी नहीं कर सके। उन्नत करना तो दूर रहा। आशा है कि हमारे दयालु पाठक हमारे साथ सहानुभूति

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दिखलाते हुये, अनिवार्य बाधाओं से अपूर्ण रूप में भेट की हुई ज्योति को प्रेम पूर्वक स्वीकार करेंगे, और त्रुटियों को क्षमा करेंगे।

समालोचनार्थ पुस्तकें भेजने वाले सज्जनों से भी हमें क्षमा याचना करनी है। हमारे पास बहुत सी पुस्तकें तथा पत्र समालोचनार्थ आये हुए हैं जिन के भेजने वाले बिलंब के कारण अधीर हो रहे होंगे। किन्तु खेद है कि इन्हीं अनिवार्य अड़चनों के कारण हम समालोचना भी प्रकाशित न कर सके। इस मास की ज्योति में कुछ प्रयत्न किया गया है। आशा है कि परम पिता परमात्मा अपनी कृपा दृष्टि शीघ्र करेंगे और ज्योति के सम्पादक लोग शीघ्र ही स्वस्थ होकर इसे सर्वाङ्ग पूर्ण तथा उन्नत करने की ओर लग सकेंगे।

देशबन्धु दास का स्वर्गवास

पाठकों को दैनिक पत्रों के पाठ से यह तो पता लगही गया होगा कि हमारे देश के माननीय नेता, बंगाल के एक मात्र लीडर, और स्वराज्य पार्टी के प्राण स्वरूप देशबन्धु दासजी की १६ जून को अकस्मात मृत्यु होगई। आप बहुत दिनोंसे रोगी चले आरहे थे और आजकल दार्जिलिंग में वायु परिवर्तनार्थ थे। आप की आयु अभी केवल ५५ वर्ष की ही थी। आप बड़े अनुरागी देशभक्त, निस्वार्थी त्यागी और उदारचित थे। आप द्विविध शासन के कट्टर विरोधी थे और कौंसिलों में जाकर उनका विध्वंस करना आपका लक्ष्य था। आपकी मृत्यु के साथ ही बंगाल में शासन सुधार का भी अन्त होगया अतः आपका उद्देश्य पूरा होगया।

आपकी मृत्यु से न केवल आपके परिवार को ही क्षति हुई है वरन सारे देश को हानि पहुंची है। इस समय आप महात्मा गांधीको बड़े सहारा थे। जिस समय महात्मा जी ने यह खबर सुनी वह खुलनामें थे और वहांकी म्युनिसिपैलिटी इत्यादि कई संस्थाओं की ओर से उन्हें अभिनन्दन पत्र दिये जारहे थे और दो हजार की थैली भी दीगई। सब से पहिले आचार्य राय ने जनता को यह दारुण सम्वाद सुनाया। महात्माजी का हृदय इतना शोक पूर्ण था कि उस समय उनके मुख से शब्द नहीं निकल रहे थे। उन्हों ने कहा कि "देशबन्धु महान पुरुषों में से एक था। मैं इन्हें गत ६ वर्षों से जानता था और कुछ दिन हुये जब मैं उनसे दारजिलिंग में जुदा हुआ तो मैंने एक मित्र को कहा कि जितना ही अधिक मेरा परिचय इन से बढ़ता है उतना ही मेरा इनके लिये प्रेम भी बढ़ता है। थोड़े से समय में जो मैं उनके पास रहा मैंने देखा कि भारत की भलाई के अतिरिक्त और कोई विचार उनके दिमाग में आता ही न था। भारत की स्वाधीनता ही उनकी मांग थी, उसीके विचार उठते, उसी की बातें करते थे, और वह मुझे बार २ कहते थे कि बंगाल में देर तक ठहर कर सब पार्टियों का मेल करा कर सारी शक्तियां एक स्वराज्य प्राप्ति की ओर लगादो। बंगाल की मेरी यात्रा में जो भी उनके विरोधी थे, उनसे भिन्न विचार वाले थे सभी यह मानते थे कि उनका स्थान कोई नहीं लेसकता। वह निर्भय थे, वीर थे और बंगाल के नवयुवकों के लिये उन्हें अगाध प्रेम था। कोई नवयुवक बङ्गाली मुझेऐसा न मिला जिसने यह कहा हो कि देशबन्धु से उसने याचना की और वह व्यर्थ गई! उन्होंने लाखों कमाये और लाखों ही दान दे डाले। उनके त्याग की बराबरी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नहीं है। उनकी बुद्धिमत्ता नीति निपुणता क्या वर्णनकरूं। दारज़िलिंग में उन्होंने कई वार मुझ से कहा कि भारत की स्वाधीनता अहिंसा और सत्य पर निर्भर है। भारत के हिंदू और मुसल्मानों को यह याद रखना चाहिये कि मेरे दिल में उनके लिये भेदभाव नहीं है। भारत में रहने वाले अंग्रेजों को मैं कहना चाहता हूं कि मेरेदिल में उनके लिये घृणा नहीं है। "यदि मैं जीता हूं तो स्वराज्य के लिये और मरूंगा भी तो स्वराज्य के लिये मातृभूमि के प्रति उनकी यह प्रतिज्ञा थी।"

गुरुकुल कांगड़ी
से
"अलंकार"

नामक मासिक पत्र गुरुकुल के स्नातकों की तरफ से एक साल से प्रकाशिक हो रहा है। इस पत्र में उच्चकोटि के धार्मिक, राजनैतिकतथा सामाजिक लेखों के अतिरिक्त कविताएं और गल्पें भी रहती हैं। आर्य-सामाजिक जगत् के अतिरिक्त हिंदी साहित्य के क्षेत्र में भी इस पत्र का नाम बड़े गौरव से लिया जाता है। इस पत्र के मुख्य सम्पादक हैं प्रोफेसर सत्यव्रत जी सिद्धांतालंकार। वार्षिक मूल्य ३)। विदेश से ४)। नमूने की एक प्रति के दाम ।-)।

शताब्दी अंक

अलंकार का शताब्दी-अंक शताब्दी पर निकले सभी सहयोगियों के विशेषांकों में रिकार्ड ब्रीट कर गया है। अलंकार का यह अंक आर्यसमाज के साहित्य में सदा स्थिर रहेगा। याद रखिये, यह ज्यों २ पुराना होकर दुर्लभ होता जायगा त्यों २ आप इसकी ढूंढ में फिरेंगे और उस समय दुगुने दामों पर भी यह न मिल सकेगा। इस अंक में अग्निहोत्र पर वैज्ञानिक दृष्टि से एक ऐसा लेख प्रकाशित हुआ है जो बड़े २ विद्वानों को आश्चर्य में डाल रहा है। दूसरे लेख भी मार्के के हैं। मूल्य बारह आने है परन्तु घटा कर आठ आने कर दिया गया है। देर न कीजिये और आठ आने के टिकट भेज कर इस अंक को शीघ्र ही मंगा लीजिये। थोड़ी ही प्रतियां बाकी बची हैं।

प्रबन्धकर्त्ता, अलंकार

पो० गुरुकुल कांगड़ी
जिला बिजनौर यू० पी०

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES.

This is the very newest style wristlet watch These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for

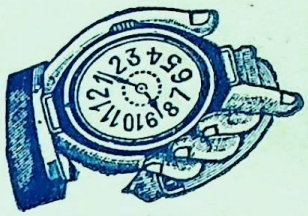

3 years. Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of muoh higsher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Brace. let for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra.

N.B—*Purchaser of 3 Watches at a time will get one German-made 4-in. dial alarm Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses the most fragrant smell of the different kinds of fine flowers. Notice minutely the delightful-rike freshlyplucked flowers-smell every now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed. ask for,

LILY OF THE VALLEY
1 oz. Bottle Re.1-8-0
1 Dram Bottle 0-12-0
Dram Bottle 0-8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0
„ „ Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,
P. B. 27, MADRAS

३५ साल का परिक्षित

भारत सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवाकी सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैजा, दमा शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्ल्यूएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है मूल्य ॥) डा० खर्च १ से २ तक ।=)

दद्दुगजकेसरी

(दाद की दवा)

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घंटे में आराम दिखाने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है, मू० फी शी० ।) आ. डा. खर्च १ से २ तक ।=) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये। बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शी० ।।।) डाक खर्च ॥)

पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

यह दवाइयाँ सब दवा बेचने वाले वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कम्पनी. मथुरा

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आवश्यकता

-कन्या गुरुकुल के लिये कुछ ऐसी अनुभवी आर्यमहिलाओं की आवश्यकता है, जो आश्रम में अधिष्ठात्री का कार्य कर सकें यदि पढ़ी लिखी न्यून हों किन्तु आश्रमकार्य तथा कन्याओं की सेवा शुश्रुषा करने में दक्ष हों। अतः जिन्हें इस धार्मिक संस्था के साथ प्रेम हो और श्रद्धा से कार्य करें ऐसी देवियां शीघ्र निम्न लिखित पते से प्रार्थना पत्रभेजदें।।

आचार्या,
कन्यागुरुकुल नं० ४ दरियागंज दिल्ली

मुफ़्त नमूना मंगाकर

मुख विलास पान खाने का मसालाः—
पान में खाके देखो दुनियाँ नई चीज़ है, इस की सिफत आज़मा कर देखो। कीमत बड़ी डिब्बी ३।।), छोटी डिब्बी १।।।=) फी दरजन।

पं० प्यारेलाल शुक्ल हूलागंज
कानपुर।

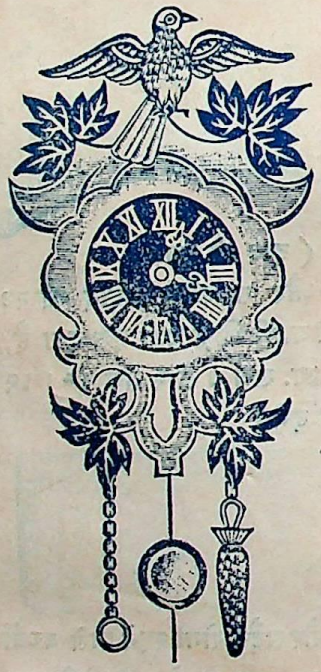

☞ BE REST ASSURED—
THAT OUR
WALL CLOCK
'TIC-TAK' (Regd.)
GIVE YOU PERFECT TIME.
OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.
PRICE Rs.
THREE only.
Order now if you have not already orderd.

Peter Watch Co.,
Post Box No. 27,
MADRAS.

अनन्तराम शर्मा के प्रबंध से प्रचारक प्रेस दर्यागंज देहली में छपा।
और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पब्लिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ६] आषाढ़ १९८१—जुलाई १९२५ [खण्ड ६, संख्या ३]

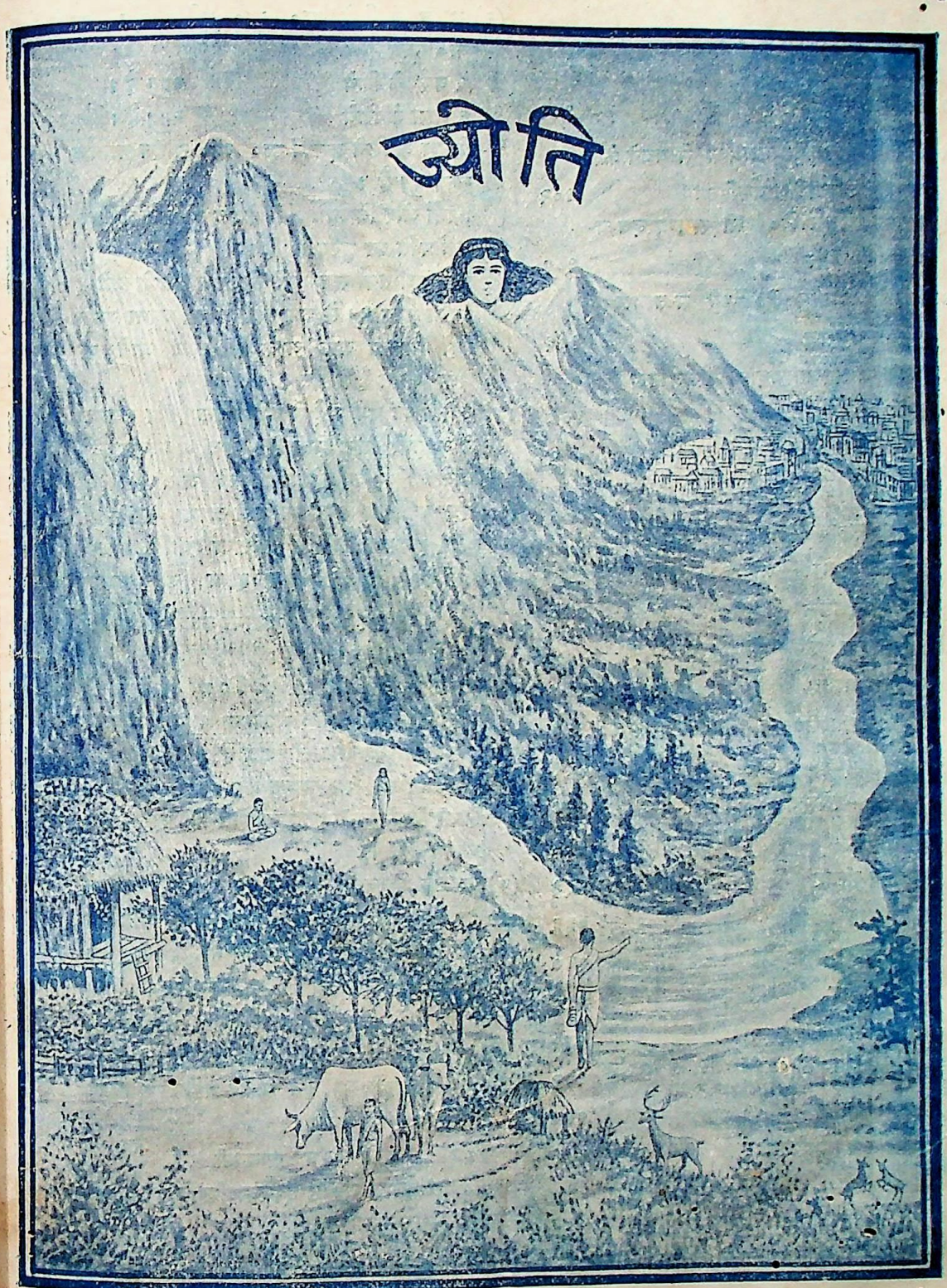

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए०

स्त्रियां और विद्यार्थियाँ से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

विषय-सूची।

विषय	पृष्ठ
१ प्रेमभिक्षा ले० - श्रीहरि	१०१
२ वर्त्तमान मृत्यु और अशान्ति से बचने के उपाय — लेखिका आर्यमहिला	१०२
३ राग और वैराग ले०—श्री रत्नाम्बरदत्त चन्द्रोला रत्न मेरठ	१०५
४ मोहिनी के आँसू ले०—श्री सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज	१०६
५ हिन्दी ले०—आयुर्वेदाचार्य सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज	१०८
६ विनय ले०—रसिक	१०९
७ आर्यसमाज का भावी-प्रोग्राम ले०—श्री० गुरुदत्त सिद्धाँतालङ्कार	११०
८ मासावतरण ले०—श्री पं० सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज	११७
९ विरह-वेदना ले०—श्री० राजनरायण चतुर्वेदी आजाद	११८
१० आप ही आप ले०—श्री नयनचन्द्र सन्त	१२१
११ निर्भीक कैदी ले०-गुलाब	१२२
१२ चर्खा ले०—रमेशचन्द बहुखण्डी चण्ड	१२८
१३ कुसुमोद्यान	१२९
१४ वैज्ञानिक संसार	१३३
१५ विचारप्रवाह	१३६
१६ कन्या गुरुकुल समाचार	१४७
१७ वनिता विनोद	१५०
१८ गृहप्रबन्ध	१५१
१९ स्त्रियों का सच्चा सौन्दर्य	१५२
२० विधवा-विनय	१५४
२१ स्त्री जाति की विशेषता	१५५

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर **ग्राहक नं०** न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, **'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहिये**

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्ष ६ | आषाढ़ १९८२—जुलाई १९२५ ई० | संख्या ३

प्रेमभिक्षा

लेखक—श्रीहरि

यह नीति है कि अनीति है, या प्रीति की नवरीति है।
निष्ठुर हृदय की गोति है, या लोक-लज्जा-भीति है॥
हे नाथ! आज अनाथ कर, क्यों साथ को छोड़ा कहो।
हा, क्या हुई है भूल जिससे, मुख कमल मोड़ा अहो॥१॥

* * * * * *

हे दुःखमोचन! लाल रोचन से विलोचन हो रहे।
अविराम अश्रुप्रवाह से, मानसभवन को धो रहे॥
आओ, हृदयआसन विराजो, यह कुशासन छोड़ दो।
करके कृपा की कोर, मेरी ओर, मुखड़ा मोड़ दो॥२॥

* * * * * *

दर दर भटकता थक गया, दुःखसिन्धु में अब डूबता।
यह प्रानपक्षी देहपिञ्जर में अधिक है ऊबता॥
निज पुण्य-प्रण-पतवार लेकर, पार अबतो कीजिये।
लेकर सुमन की भेंट स्वामिन! प्रेमभिक्षा दीजिये॥३॥

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्तमान मृत्यु और अशान्ति से बचने का उपाय।

लेखिका—आर्य्य महिला

आज कल हम प्रतिदिन सुनते रहते हैं कि अमुक शहर की आबोहवा (जलवायु) खराब है वहां प्लेग फैल रहा है अथवा हैज़े का बड़ा भारी ज़ोर है। अथवा अन्य संक्रामक रोग फैले हुए हैं। लोग ऐसे स्थानों को त्याग करके अन्य स्थलों पर भाग जाते हैं उन का यह ख्याल होता है कि अगर हम यहां से हट जावे तो रोगों से छुटकारा हो जायगा। परन्तु होता क्या है कि जब बहुत से लोग इस प्रकार स्थान परिवर्तन करने लगते हैं तो रोग भी साथ ही स्थान परिवर्तन कर लेते हैं। यही तो कारण है कि यह बीमारियां एक स्थान से दूसरे पर खूब फैल जाती हैं। और लाभ के स्थान में हानि होती है। उदाहरण लीजिए। भारतवर्ष में आज कल क्षयी रोग बहुत फैल रहा है और इस का एक मात्र इलाज पहाड़ों की खुली हवा बतलाई जाती है। अतः वहां पर सैनीटोरियम बनाये गये। किन्तु बीमार इतने पहुंचने लगे कि सैनीटोरियम लाभ पहुंचाने के बदले बीमारी के एक प्रकार से केन्द्र बनने लग पड़े हैं। धर्मपुर इत्यादि स्थानों पर अच्छे स्वास्थ्य वाले लोग सैर के लिये जाना नहीं चाहते। कारण कि वहां क्षयी रोग के बीमारों के बहुत जाने से जलवायु अशुद्ध हो जाते हैं, मकान कोई ऐसा न होगा, जिसमें ऐसे रोगियों के रहने से इस बीमारी के कीटाणु न हों। कहने का तात्पर्य यह है कि पांच भूत पृथ्वी, जल, वायु, तेज और आकाश इन में से तीन तत्व पृथ्वी, जल; वायु मनुष्य के अपने गन्द से गन्दे हो जाते हैं और वही फिर अशुद्धता की उत्तोत्तर वृद्धि होने से सब प्रकार के रोगों के कीटाणुओं से भरपूर हो कर मनुष्य की मृत्यु के कारण बनते हैं।

ऊपर के उदाहरणों से हमें बहुत अच्छी तरह पता लगता है कि परमात्मा की पवित्र सृष्टि में इन कीटाणुओं का सर्वथा अभाव है तभी तो मनुष्य एक स्थान गन्दा करके प्राकृतिक स्वच्छ स्थानों पर दौड़ता है। परन्तु ज्यों २ वहां उस का वास बढ़ता है त्यों २ वह स्वच्छता और शुद्धता दूर भागती जाती है। अतः प्रकृति से उठाये हुये लाभ का बदला देना मनुष्य के अपने कल्याण के लिये बड़ा जरूरी है!

परमपिता परमात्मा इस प्रकार के दोषों के दूर करने का उपदेश देते हुये अपनी वेद वाणी द्वारा यह स्पष्ट बतलाते हैं कि इस जलवायु की शुद्धि मनुष्य मात्र को अवश्य करनी चाहिये और वह अग्निहोत्र तथा यज्ञों और महायज्ञों द्वारा ही हो सकती है और होनी चाहिये।

देखो यजुर्वेद अध्याय २। मं० २२।

ओ३म् संवर्हिरक्ता ४ हविषा घृतेन समा दित्यैर्वसुभिः सम्मरुद्भिः। समिन्द्रो विश्वदेवे भिरंक्ताम् दिव्यं नभो गच्छतुयत्स्वाहा॥

हे मनुष्यों तुम (यत्) जब हवन करने योग्य द्रव्य को (हविषा) होम करने योग्य (घृतेन) घी आदि सुगन्धियुक्त पदार्थ से संयुक्त करके हवन करोगे तब वह (आदित्यैः) बारह महीनों (वसुभिः) अग्नि आदि आठों निवास के स्थान और (मरुद्भिः) पूजा-ज्ञानी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के साथ मिलकर सुख को (समंक्ताम्) अच्छी प्रकार प्रकाश करेगा।

(इन्द्रः) सूर्य्य लोक जो यज्ञ में छोड़ा हुआ (स्वाहा) उत्तम क्रिया से सुगन्ध्यादि पदार्थ युक्त हवि (संगच्छतु) पहुंचाता है उससे (सम्) अच्छी प्रकार मिश्रित हुये (विश्व-देवेभिः) अपनी किरणों से (दिव्यम्) जो उसकी किरणों में इकट्ठा होने वाला (नभः) जल है उसको (समंक्ताम्) अच्छी प्रकार प्रगट करता है।

भावार्थः—जो हवि अच्छी प्रकार शुद्ध कियाहुआ यज्ञके निमित्तअग्नि में डाला जाता है वह अंतरिक्ष में वायु, जल और सूर्य्य की किरणों के साथ मिल कर इधर उधर फैलकर आकाश में ठहरने वाले सब पदार्थों को दिव्य करके अच्छी प्रकार प्रजा को सुखी करता है। इससे सब मनुष्यों को उत्तम सामग्री और उत्तम २ साधनों से उक्त तीन प्रकार के यज्ञों का अनुष्ठान नित्य करना चाहिये।

और भी—

ओं कस्त्वा विमुञ्चति सत्वा विमुञ्चति कस्मै त्वा विमुंचति तस्मै त्वा विमुञ्चति पोषाय रक्षसां भागोसि॥

(अर्थ)—(कः) कौन सुख चाहने वाला यज्ञ का अनुष्ठाता पुरुष (त्वा) उस यज्ञको (विमुंचति) छोड़ता है, अर्थात् कोई नहीं। और जो कोई यज्ञको छोड़ता है त्वा उसको (सः) यज्ञका पालन करने वाला परमेश्वर भी (विमुंचति) छोड़ देता है। यज्ञ का करने वाला मनुष्य जिस पदार्थ समूह को यज्ञ में छोड़ता है (त्वा) उसको (कस्मै) किस प्रयोजन के लिये अग्नि के बीच में (विमुंचति) छोड़ देता है। (तस्मै) जिस में सब को सुख प्राप्त हो तथा (पोषाय) पुष्टि आदि गुण के लिये (त्वा) उस पदार्थ समूह का (विमुंचति) छोड़ता है। और जो पदार्थ सब के उपकार के लिये यज्ञ के बीच में नहीं युक्त किया जाता वह (रक्षसां) दुष्ट प्राणियों का (भागः) अंश (असि) होता है।

इस मंत्र में परमात्मा बहुत ही स्पष्ट रूप से मनुष्य जाति को उपदेश देरहे हैं कि जो वेद द्वारा कहे गये ईश्वर के बताये व्यवहार को छोड़ता है वह सब सुखों से हीन होकर और दुष्ट प्राणियों तथा दुष्ट व्याधियों से पीड़ित होता हुआ सब प्रकार दुखी रहता है। इस मंत्र में प्रश्नोत्तर की रीति से यह बताया गया है कि जो मनुष्य यज्ञ को छोड़ता है उसकी क्या गति बनती है? उत्तर मिलता है कि परमात्मा भी उससे विमुख हो जाता है और उसे दुःख भोगने के लिये छोड़ देता है। इस लिये आत्मकल्याण की चाहना वाले नर नारियों को परमात्मा की आज्ञा के विरुद्ध कभी आचरण नहीं करना चाहिये। यदि संसार के रोगोंसे मुक्त होनेकी प्रबल इच्छा है तो यज्ञों के प्रचार से जल वायु को शुद्ध करो तभी परमात्मा की कृपा दृष्टि मनुष्य समाज पर रह सकती है। क्योंकि ऋषि दयानन्द जी भी अपनी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका पृष्ठ २६६ में लिखते हैं कि—

"जो जो केशर कस्तूरी आदि संगधित, घृत दुग्ध आदि पुष्टि कारक, गुड़ शर्करा आदि मिष्ट बुद्धि बल तथा धैर्य वर्धक और रोग नाशक पदार्थ हैं उनका होम करने से पवन, वर्षा जल की शुद्धि से पृथिवी के सब पदार्थों की जो अत्यन्त उत्तमता होती है उसी से सब जीवों को परम सुख होता है इस कारण अग्निहोत्र करने वाले मनुष्यों को उस उपकार से अत्यन्त सुख होता है और ईश्वर उन पर अनुग्रह करता है।

और भी देखिये—

बौद्धायन प्र० २। अ० ३। क० ५। सूत्र १८ में लिखा है कि 'भोजन कहता है कि जो मुझे देवों पितरों, अपने सेवकों अतिथियों, मित्रों को बिना दिये हुए खाता है मैं उसका भक्षण कर जाता हूँ और उसके लिये मैं मृत्यु हूं। क्यों कि अपनी घोर मूर्खता के कारण वह विष खाता है ग्रास नहीं खाता। परन्तु जो अग्निहोत्र करके, बलिवैश्व देव कर के, अतिथियों का सत्कार करके अपने आश्रितों को भोजन कराके जो कुछ बचता है उसे सन्तोष पूर्वक, पवित्रता और श्रद्धा से खाता है उस पुरुष के लिये मैं अमृत हूँ और सचमुच वही मुझसे आनन्द भोगता है।"

हम प्रायः यह देखते हैं कि भारतवासियों को जब कभी उपरोक्त यज्ञ करने का आदेश दिया जाय तो झट कह देते हैं कि इस में ख़र्च होता है। हम परिवार वाले हैं। सभी काम करने होते हैं कहां से करें? परन्तु उनके मनमें यह कदापि नहीं आता कि अगर हम बीमार पड़ते हैं या कोई बच्चा बीमार पड़ता है, सख़्त बीमार पड़ता है फिर भी तो हमारे सैंकड़ों और हज़ारों रुपये दवा और डाक्टरों की फीसों में चले जाते हैं। और फिर भी हाथ कुछ नहीं आता। क्यों कि परमात्मा की अनुग्रह हो तो 'जाको राखे साइयां मार न सके कोय'। किसी कवि ने भी कहा है कि—"अरक्षितं तिष्ठति दैव रक्षितं, सुरक्षितं दैव हतं विनश्यति। जीव त्वनाथोऽपि वने विसर्जितः, कृत प्रयत्नोपि गृहे विनश्यति।" अर्थात् परं पिता परमात्मा जिसे रखना चाहे वह मनुष्य से छोड़ा हुआ भी जीवित रहता है, और परमात्मा की मर्जी न हो तो महलों के अन्दर खूब सुरक्षित भी नष्ट हो जाता है। "राम भये जेहि दाहिने सकल दाहिने ताहि"। अतः परमात्मा की कृपा दृष्टि चाहिये उसी से ही कल्याण का मार्ग आप से आप विदित हो जाता है। परन्तु यदि परमात्मा विमुख हो तो कहीं ठिकाना नहीं रहता। इसलिये कल्याणी वेद वाणी की आज्ञा का पालन करते हुए जल वायु की मनुष्यकृत दुर्गंध को हटाने के एक मात्र उपायों का शीघ्र अवलम्बन करके दीर्घ जीवन और पुष्ट शरीर और बलवान बनने का प्रयत्न प्रत्येक नरनारी को करना चाहिये। तभी मनुष्य जीवन की सफलता है। वरना हमारा जीवन बर्सातो कीड़ों की भांति जन्मने और मरने में ही समाप्त हो रहा है।

प्रति वर्ष लाखों और करोड़ों प्लेग हैज़ा, क्षयी आदि रोग, अतिवृष्टि अकाल, बाढ़ अग्नि दाह आदि विविध कष्टों और दुःखों से नष्ट होकर गार्हस्थ्य जीवन को दुःखमय बनाकर छोड़ जाते हैं। देश में अत्याचारियों की संख्या बढ़ रही है, अन्याय से दूसरों का हक छीनने वालों का राज्य हो रहा है, शासक शासितों का रक्त चूस रहे हैं, पूंजीपति श्रमियों को जीवन निर्वाह मात्र करना भी सहन नहीं कर रहे हैं। मनुष्य में स्वार्थ का इतना भाव गड़ गया है कि वह अपने से भिन्न व्यक्ति को जीवित रहने देना ही नहीं चाहता। राक्षसों का जीवन व्यतीत करते २ मन की प्रवृत्तियां भी राक्षसी बन चुकी हैं। इस दशा में सिवाय इन वेदोक्त आज्ञाओं के पालने के और कोई उद्धार का मार्ग नहीं है।

पूर्व देखो, पश्चिम देखो, दक्षिण देखो, उत्तर चारों ओर अशान्ति और दुःख क्लेश और रोग मुंह फैलाये हुये दौड़ रहे हैं फिर भी मनुष्य की आंखें नहीं खुलतीं! हे प्रभो! कृपादृष्टि करो। भारतीयों को कृपा का पात्र बनाओ। उन्हें सुबुद्धि दो कि वह यज्ञ हवन

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

द्वारा पुनः भारत की जल वायु की शुद्धि करके इस देश को मनुष्य के रहने का स्थान बनावें और सब के हकों की रक्षा करते हुए धन धान्य वैभव से सुसम्पन्न बन कर, आप की आज्ञा का पालन करते हुए, सौ वर्ष की आयु से युक्त होकर "क्रीड़न्तौ पुत्रैर्नप्तभिः मोद मानाः स्वेगृहेः" अपने जीवन को व्यतीत कर सकें।

राग और वैराग।

[लेखकः श्री रत्नाम्बरदत्त चँदोला रत्न "मेरठ]

(१)

धन--राशि विपुल, सुख--साज बहुल,
यश-मान अतुल, सब हो जग में,
पर, भक्ति न हो, अनुरक्ति न हो,
शुचि--शक्ति न हो यदि रग--रग में--
कुछ अर्थ नहीं, सब व्यर्थ हुआ!
ज्यो किंशुक--अङ्ग पराग नहीं!
पर—मान बिना निज मान कहाँ?
"बिन राग तजे वैराग नहीं" !!!

(२)

उपदेशक हो, उत्तेजक हो,
जन-सेवक हो, सुप्रतिष्ठित हो
पर, मूल्य नहीं उसका कुछ भी
यदि चित्त न प्रेम--प्रपूरित हो॥
कर धारण पंख मरालों के।
सम्मानित होता काग नहीं!
बिन लोभ तजे ज्यों दान नहीं,
"बिन राग तजे वैराग नहीं"

(३)

सत्सङ्ग बिना सुचरित्र नहीं।
सुचरित्र बिना सद्भक्ति नहीं!
सद्भक्ति बिना सद्ज्ञान नहीं,
सद्ज्ञान बिना वर--मुक्ति नहीं॥
बिन कर्म्म करें ज्यों धर्म्म नहीं,
बिन स्वार्थ तजे अनुराग नहीं।
बिन पाप तजे ज्यों पुण्य नहीं।
"बिन राग तजे वैराग नहीं"॥

नोटः--उक्त कविता "जैन भ्रातृ-मण्डल" मेरठ के कवि सम्मेलन में समस्या पूर्ति के रूप में पढ़ी गई थी सर्व श्रेष्ठ रचना होने से इस पर कवि को प्रथम--पुरस्कार--स्वरूप एक पदक प्रदान किया गया था।
सम्पादिका "ज्योति"

मोहिनी के आंसू

लेखक-श्री० सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज

†

सरदी के कारण चित्त नहीं चाहता कि शरीर के किसी देश को भी बाहर निकाले। परन्तु क्या करे--कार्य की चिन्ता ने एकाएक हृदय पर भार डाल दिया। अतएव निद्रा--देवी ने भी सहसा दूर प्रस्थान किया। अब पड़ा भी न रहा गया; साहस कर, अपनी फटी सी रजाई को लपेट, छप्पर के आगे पड़े हुए टाट के पड़दे को उठा, बाहर हो, शङ्कर देखता क्या है कि किञ्चिदाभासमयी शीतल चन्द्र--चन्द्रिका सर्वत्र छाई हुई है। आकाश की ओर देखा—कोई भी आकाश-कोण तारा-गण से रिक्त नहीं दिखाई देता। इधरचंद्रमा भी प्राकृत नियमों का पालन कर, देशान्तरों द्वीपान्तरों में घूमता शनैः शनैः विश्रान्त सा हुआ-प्रतीत होता है। सम्भव है, अपने को कृत-कृत्य समझने लगा हो? उधर "टन, टनन-टनन टन" बैलों के गले की टालियों का सुहावना शब्द कानों में पड़ने लगा, मानो कृषक-जनों के बैलों की गल-टाली उन के सहयोगियों को जागने, आलस त्यागने एवम् कर्तव्यपर होने की सूचना दे रही है। पास ही के मुर्गों ने भी "कुकड़ूकूं, कुकड़ूकूं" कर प्रभात वेला होने की चेतावनी दी है।

शङ्कर आंखें मल, मूत्रोत्सर्जन कर, चारपाई के पाए के पास धरे हुक्के को उठा छप्पर के कोने की अंगीठी के पास रख, बैठा। फूंक से राख उड़ा उड़ा, तिनकों से अग्नि-कण एकत्र कर, लगा कंडों के चूरे से सुलगाने। चिलम को मोटे तिनके के साथ साफ कर, तवा टटोल, उस में रख, बोला:—

"अरी, कुन्दन की मां!"

पति की पुकार सुन, सरला शीत के मारे गुदड़े में लिपटी हुई ही बोली:—

"क्यों--जी!"

शंकर--"अरी! तम्बाकू का डब्बा न जाने कहाँ धरा गया?"

सरला--"लम्डे ने अन्दर उठा धरा था; लो—मुझे भी पीसना है; उठती हूँ; लाती हूँ।" कह उठी, और डब्बा दे, आप

---

†

☞ सूचना आज कल हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में स्वार्थी-जनों-द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण-कूड़ा फेंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य-जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक "ज्योति" के शृङ्खलाबद्ध अङ्कों का अवलोकन करें। प्रत्यङ्क में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने-वाले के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास-मन्डी, लुधियाना' के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिये प्रका-शित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं यह निश्चय हो सके।

लेखक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पीसने बैठ गई। और चक्की के 'घूं घूं' शब्द के साथ कुछ आप भी लगी गुनगुनाने। इधर शंकर भी हुक्का भर प्रातः स्मरणीय ग्रामीण गायनों को लगा गानेः—

"ठुमक चलत नन्दलाल,
बाजत पैंजनियां।
ठुमक चलत.....,
..... ॥

और कभी कभी कण्ठ में फँसे बलगम को बड़ी ज़ोर के खखारे के साथ थूक कर—

"नाथ! कैसे गज को,
फंद छुड़ायो।
नाथ! कैसे.....,
..... ॥

× × ×

भिलनी के बेर, सुदामा के तण्डुल,
रुच रुच भोग लगायो।
दुर्योधन की मेवा त्यागी,
शाक विदुर घर खायो।
नाथ! कैसे.....
..... ।"

वैसे तो इस समय शंकर की आयु ५०, ६० वर्ष की है, किन्तु कोई कह नहीं सकता! कहे भी तो कोई कैसे?—

श्वेत-केशों का शुभागमन न मूछों में ही हुआ— न दाढ़ी में और न मस्तक पर ही!; फिर भला त्वक्-सङ्कोच तो कहां? सुन्दर विशाल देह! गंठे हुए अङ्ग प्रत्यङ्ग!! चमकती हुई दन्तपक्तियां! करारी आवाज़! असाधारण बल! श्रमोचित शरीर!!!

हुक्के की दो-चार ही घूटें पीचुका था कि पास की मनियारों की मश्जिद से अत्युच्च एवं गम्भीर स्वर से पुकारा हुआ सुनाई दियाः—

"अल्ला...हो ..... अक़बर अल्ला!
अल्ला ... ... हूँ, अक़बर!!"

अब तो पास-पड़ोस-के-बाड़े के-सारे मोची अपनी अपनी खट्वा से उठ, फटे-पुराने कपड़े ओढ़-ओढ़, एक एक दो-दो कर, आने और आवाज़ देने लगेः-

"शंकरा, आज तो दिन ही निकलने वाला है!"

शंकर—"मैं तो उठ चुका हूं, हुक्का भर चुका हूं, आओ! तुम भी घूंट लेलो! जो तब करना था सो अब करना है!"

किञ्चित् कालके अनन्तर उस मश्जिद के पार्श्व-देश में अद्भुत-लीला होने लगी। वाह, कैसा शिक्षा-प्रद दृश्य है? कैसी उत्साह-वृद्धि है? जैसा श्रम-जीवियों का सुन्दर मिलन-दृश्य था-इन का मिलित स्वन भी वैसा ही बनपड़ा!

"हर बोलोः! हर बोलोः!!
हूंः! हूंः! हूँः!!"

शब्द—संघट्ट के साथ साथ मोगरे की "धैंः—धैंः" ध्वनि अनुनाद करती ऐसी प्रतीत होने लगी, मानो उद्योग ने प्राक्कर्म-दल एवं कायरता पर चढ़ाई करने के लिए साथ में धैर्य्योत्साह- वर्द्धक— नक्कारे पर चोटें लगानीं भी आरम्भ की हों! सरदी उन से कोसों भागी हुई; सब फटे-पुराने कपड़े भी उतारे हुए, धोती का पेंच कसा हुआ; क्यों नहो? कर्तव्य-पथाश्रित मनुज को कहीं विघ्न-बाधाएं हटा सकती हैं—कदापि नहीं। कुछ हो, कठिन शीत को अपने उष्ण प्रस्वेद द्वारा स्नान करा, उत्तमोत्तम रांग (*) कूट, तैयार कर लेंगे!

रांग कूटते-कूटते सात बजने को हुए, एका एक शंकर को ध्यान आया। वह तत्काल

*कीकर के बक्कल को कहते हैं।

मोगरा पटक, वस्त्र ले, घर की ओर चला। और वहां कोठे में घुस, बोला।

"अरे कुन्दन-कुन्दन! उठेगा नहीं क्या?, माधो! उठ बैठो; ७ बज चुके; नहीं तो मास्टर की झिड़कियां वही तो आज भी पड़ेंगी—जो कल पड़ीं थी!"

सरला अब तक पीस चुकी थी, वह कसीदा निकलने बैठी ही थी कि तत्काल भोजन की त्वरा में पड़गई। उसके हृदय ने उसे आज्ञा दी कि "उठ, बच्चे स्कूल जाएंगे, जल्दी भोजन बना।", विचारी इस लिए ही चाहती थी कि इन (बालकों) के उठने से पूर्व ही भोजन तैयार होजाए। परन्तु इधर स्वामी ने आ, प्रबोधित करना आरम्भ किया किया, तिस पर सब कुछ छोड़, कोठे में जा बोली:—

"हैं—हैं ऐसे न करो! विचारे आधीरात पीछे तक पढ़ते रहे हैं, क्यों न थक गए होंगे? उमर ही क्या है? आज इन का इमतिहान है, इस वास्ते और भी अधिक जागे हैं। कुछ देर ठहरो, मैं उठा दूँगी"

—इस प्रकार पति-पत्नी-संवाद समाप्त होते ही होते, बच्चे अंगड़ाई तोड़ते, मुख फाड़ते आंखे मलते, उस टूटी-सी खटिया पर सेचट उठ बैठे जिस पर एक दूसरे पर हाथ और टांगें डाले मुड़े-तुड़े पड़े हुए थे। तदुपरान्त आवश्यक कर्मोंसे निवृत्त हो, कुछ खाना खा, स्कूल की ओर दौड़ लगाई।

(क्रमशः)

"हिन्दी"

ले०—आयुर्वेदाचार्य 'संतलालदधिमथ' वैद्यराज

बङ्ग, मदरास, महाराष्ट्र, मारवाड़ीवासी,
भाषा-भेद हेतुएक दूसरे से न्यारे हैं;
मिल भी गये तो कांख-कूंख, भाव व्यक्त करें,
हा! 'विदेश' देश ही को मानते विचारे हैं;
भाषा की विभिन्नता का इतना महान दुःख,
आज भद्र भारत के जान रहे सारे हैं;
'हिन्दी का प्रचार' होतो उक्त दुःख दूर होय,
इसी हेतु आज "जयचन्द्र जी" पधारे हैं;

* * *

आज राजपाट हीन हिदुओं को देख देख,
'आदि के असभ्य' सभ्य भारी बने जा रहे,
बालकों को बह 'महान शुद्ध-ज्ञान-भूर्णवेद।
'जङ्गली जनों का गान' कह कह बहका रहे।
भारत-सर्वस्व-धन सारा डकार, 'भेद---
'नीति' के भरोसे बुद्धि-वैभव दिखा रहे;
आज राज्य उनसे छुड़ाने को भारतीयो!
सुन लेना साधन भी 'हिन्दी' ही बता रहे॥

हिन्दी को हीन जान हिन्दू-जनों की अन्य--
भाषा अपनाने की थोड़ी सी न भूल है;
'उर्दू' वा 'आंग्ल' जो भी भाषा विलोकें हम,
धर्म की भी दृष्टि से न अपने अनुकूल है।
उनकी शब्द-राशि उन ही के साहित्य--
इतिहास-धर्म अँशों में व्यक्त रही भूल है,
हिन्दू-धर्म-शास्त्र गुच्छकों को खिलाने वाली,
साधन-लता की एक 'हिन्दी' ही मूल है॥

* * *

धर्म और विश्व के साहित्य के अनेक ग्रन्थ,
आज अनुवाद-रूप "हिन्दी" में आ लिए;
योग्य, साकार-योग्य विद्वज्जनों ने खूब,
संग्रह अनेक रत्न "हिन्दी"; में ही किये।
साधु-सन्यासियों ने, नेता-जनों ने आन,
अपने उपदेश श्रेष्ठ हिन्दी में भर दिये;
हिन्दुओं! बढ़ानी हिन्दू-धर्म के उद्धार हिंदू--
जाति के उद्धार हेतु "हिंदी" ही चाहिये॥

(१) गोधन-आदि † हिन्दी प्रचारार्थ आये हुए जयचन्द्र विद्यालङ्कार मन्त्री पं० आ० हिं० सा० स० लाहौर के भाषण के पूर्व एक सभा में लुधियाना में पठित-लेखक।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विनय

[लेखक—'रसिक']

(१)

यही दो वरदा मां वरदान ,जगै जगती में ज्योति महान ।
माँ ? मांगती हाथ फैला कर, वर भारत--सन्तान ॥
दम्भ, दुराशा दूर हटा कर ।
ममता माया मोह मिटा कर ॥
घोर घृणा की छटा घटा कर ।
करै शीघ्र उत्थान ॥
श्री शारदा, सरस्वति-- प्रेमी, गावें सब गुण--गान ।
जगै जगती में "ज्योति" महान ॥

(२)

दुखी दीन का दुःख दूर कर ।
चतुर चपल चिन्तना चूर कर ॥
प्रबल प्रेम से चित्त पूर कर ।
भर दे नूतन ज्ञान ॥
अपने अपने स्वत्वों पर सब, फिर होवें बलिदान ।
जगै जगती में "ज्योति" महान ॥

(३)

कला कुशलता की कृतियां कर ।
हिय की हीनावस्थाएं···हर ॥
भंव की भारी भीति भगा कर ।
पावै नित सम्मान ॥
"मर्यादा" "माधुरी" दिखा कर, डाले नूतन जान ।
जगै जगती में "ज्योति" महान ॥

(४)

भय भावना भूल भ्रम हारी।
लेख लिखें लेखक उपकारी॥
पढ़ें प्रेम से सब नर नारी।
हो कर मुदित महान॥
नित्य नवीन सुशिक्षा प्रतिभा, करे विश्व को दान।
जगै जगती में "ज्योति" महान॥

(५)

बिधवाओं की व्यथा बताकर।
निज नियमों की नीति निभा कर॥
गौरव गिरि का गर्व गिरा कर।
करे पूर्ण कल्यान॥
निज सौलहौं कला द्वारा, यह तानें प्रेम बितान।
जगै जगती में "ज्योति" महान॥

(६)

सुन्दर सरस सरल भाषा से।
मन की मोद-मयी आशा से॥
सात्विक सौम्य शांत श्वाशा से।
धारै मां तव ध्यान॥
'रसिक' सुगंधित करे सदा, यह मानव-हृदयोद्यान।
जगै जगती में "ज्योति" महान॥

"आर्य्य समाज का भावी प्रोग्राम"

(प्रस्तावना)

लेखक—श्री गुरुदत्त सिद्धान्ता लङ्कार

र्यसमाज को स्थापित हुए लगभग आधी शताब्दि व्यतीत होनेवाली है इतने अर्से के भीतर आर्यसमाज ने अपनी जिस अपरिमित धन तथा जनशक्ति का व्यय किया है, उसके अनुपात में आर्यसमाज को बहुत कम सफलता प्राप्त हुई है। आर्यसमाज के इस अनन्त शक्ति तथा धनव्यय को देखते हुए जब हम इसके परिणाम पर अपनी नज़र दौड़ाते हैं, तब हमें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

निराशा तो नहीं परन्तु असन्तोष अवश्य ही होता है। निस्संदेह आर्यसमाज का उद्देश्य और उसके सिद्धान्त बहुत ऊंचे हैं। कर्मण्यता, लगन, उत्साह, जीवनशक्ति, बुद्धि विद्या तथा कुर्बानी आदि सद्गुणों की भी आर्यसमाज में कमी नहीं है। इन सब ऊपर कहे गये गुणों के अतिरिक्त वर्तमान बाह्य परिस्थिति भी आर्यसमाज के अनुकूल है। सामान्यतः सारे देश ने और विशेषतः हिंदू जाति ने इस समय आर्यसमाज की उपयोगिता को स्वीकार करके इसके सिद्धान्तों के सामने अपना सिर झुका दिया है। इतने पर भी आर्यसमाज को सम्भावित सफलता क्यों नहीं प्राप्त हुई? यह प्रश्न निस्संदेह विचारणीय है। लेखक की नम्र सम्मति में आर्यसमाज में क्रियात्मिकता का अभाव सदाचार, धर्म और विद्या की अपेक्षा धन की ज़्यादा प्रतिष्ठा, वैदिक धर्मानुयायी होने का दावा भरने वालों में आवश्यक तथा उच्च सदाचार की अप्रतिष्ठा, कर्म रहित सूखी वाक्शूरता, तथा आर्यसमाज की नीति और उसके भावी प्रोग्राम की अनिश्चितता पांच कारण ही आर्यसमाज की आंशिक असफलता के मुख्य कारण हैं। हम इस लेख में पहिले चार कारणों पर विचार न करते हुए केवल पंचम कारण पर ही कुछ प्रकाश डालेंगे। भावी प्रोग्राम, तथा अनिश्चितता का रोग शुरू से ही आर्यसमाज को लगा हुआ है। सामूहिक तौर पर आर्यों ने तथा प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं ने इस बात पर कभी गंभीरता पूर्वक विचार ही नहीं किया।

आर्य समाज का प्रत्येककार्य अनिश्चित है। शिक्षा जिस पर कि आर्यसमाज की वेद-प्रचार से भी ज्यादा शक्ति और ज्यादा धन खर्च होता है, बिलकुल अव्यवस्थित और अनियमित है। कोई आर्यसमाज पुत्री पाठशाला खोलती है, कोई स्कूल, कोई संस्कृत की पाठशाला, कोई दस्तकारी के स्कूल और कोई छोटे २ गुरुकुल। इस तरह आर्यसमाज की शिक्षा का सारा क्रम ही सिर से पैर तक बिलकुल अनिश्चित है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब तथा अन्य प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं ने आज तक इस बात पर कभी भी विचार नहीं किया, कि सामान्यतः सम्पूर्ण आर्य समाज को और विशेषतः भिन्न २प्रतिनिधि सभाओं से संबद्ध आर्यसमाजों को किस प्रकार की शिक्षा-प्रणाली का प्रचार करना चाहिये, तथा उन्हें किस प्रकार की शिक्षा-संस्थायें स्थापित करनी चाहियें और उनमें किस प्रकार का पाठ्यक्रम रखा जाना चाहिये। आर्यसमाज की अन्य संस्थाओं का भी यही हाल है। वेद-प्रचार का भी यही हाल है, प्रचार का कोई प्रोग्राम और कोई नीति निश्चित नहीं है। "अपनी २ डफ़ली अपना २ राग" कहावत के अनुसार प्रत्येक प्रचारक पृथक् २ अपने राग अलापता है। इस पृथक् २ राग अलापने का परिणाम यह होता है, कि जनता पर किसी का भी प्रभाव नहीं पड़ता। प्रचार की अनिश्चित नीति आर्यसमाज के लिये अब तक बहुत ही हानिकारक सिद्ध हुई है। असहयोगान्दोलन के ज़माने में आर्यसमाज कांग्रेस की लहर में बह गया। आज हिंदू संगठन का दौरदौरा है, इसलिए आजकल आर्यसमाज के प्लेटफ़ार्म से हिंदू संगठन की पुकार सुनाई देती है। अभी मुश्किल से एक या दो साल का अर्सा गुजरा होगा—जब कि आर्य्यसमाज के बड़े २ प्लेटफार्मों से हिंदू मुस्लिम ऐक्य की वकालत की जाती थी और आज उन्हीं प्लेटफ़ार्मों से मुसलमानों पर गालियों की बौछार की जा रही है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कहीं २ पर महात्मा जी को भी जली कटी सुनाने में कुछ भी कसर नहीं की जाती। कई बार तो कुछ एक मन चले वक्ता काँग्रेस और स्वराज्य के विरुद्ध आवाज उठाने में कुछ भी शर्म अनुभव नहीं करते। क्या यह प्रचार है? अथवा मखौल है? कुछ समझ में नहीं आता। क्या आर्य्यसमाज की अपनी पृथक हस्ती तथा उसके उद्देश्य और असूल नष्ट होगये हैं? यदि नहीं, तो फिर आर्य्यसमाज के प्रचार का गिरगिट की तरह जल्दी २ रंग बदलने का क्या प्रयोजन है?

हम शताब्दि के उत्सव की ओर बड़ी आशा दृष्टि से निहार रहे थे, कि शायद इस पुण्य अवसर पर समस्त भारत के आर्य्यनेता ऋषि की पुण्य नगरी में वैदिक-धर्म के पवित्र झंडे के नीचे इकट्ठे होकर अपने प्रान्तीय तथा दलबन्दी के पक्षपात पूर्ण-भावों को दूर करके गंभीरता-पूर्वक आर्य-समाज के भविष्य पर विचार करेंगे। परन्तु शताब्दि उत्सव को देख कर हम तो अत्यन्त निराश हुए हैं इस उत्सव पर आर्यजनता की बेहिसाब शक्ति तथा उसके लाखों रुपये व्यर्थ ही बर्बाद हो गये, परन्तु शताब्दि आर्य-जनताके हृदयों पर अपना कौनसा स्थिर प्रभाव छोड़ गई, उत्तर नकार में है। हम तो यह समझते थे, कि शताब्दि के उत्सव पर साधारण आर्यजनता तो अपने आचार्य की शान्दार विजय के उपलक्ष में खुशियां मना-वेगी, परन्तु इसके साथ २ आर्यसमाज के नेता तथा ऊंचे दिमाग रखने वाले विद्वान् पुरुष इस समय अपना अमूल्य समय खुशि-यों और तमाशों में व्यर्थ व्यतीत न करते हुए गंभीरतापूर्वक आर्यसमाज के भविष्य पर विचार करके कुछ ठोस काम करेंगे। परन्तु शताब्दि उत्सव के व्यतीत कार्यक्रम को देख कर हमारी सारी आशायें एकदम काफूर हो गई हैं। शताब्दि का मेला एक भारी तूफान की तरह आया, और एक सप्ताह तक अस्थायी और कृत्रिम हलचल पैदा करके चला गया, आर्यसमाज पर इस का स्थायी प्रभाव कुछ भी नहीं पड़ा क्या शताब्दि उत्सव इस बात का सबूत नहीं है, कि अब तक आर्यसमाज के नेता भी नुमाइश पसन्दगी के तल (Level) से ऊंचे उठकर ठोस काम के महत्व को नहीं समझ सके। अन्यथा इसका क्या कारण, है कि शताब्दि जैसे शुभावसर पर जहां कि आर्यसमाज के सारे नेता तथा विद्वान् एक स्थान पर इकट्ठे होकर भी आर्यसमाज के भविष्य तथा उस की भावी नीति और प्रोग्राम पर गंभीरतापूर्वक कुछ भी विचार नहीं कर सके। अब इस प्रश्न पर विचार करने का समय हाथ से नहीं निकला। यदि सवेरे का भूला भटका शाम के समय घर पहुंच जाय, तो उसे कोई भी भूला भटका नहीं कहता। इस लिये हमने इस गंभीर विषय पर आर्यजनता के सन्मुख अपने विचार प्रगट करने का निश्चय किया है। आर्यसमाजके भावी प्रोग्राम पर अपने विचार प्रगट करने से पूर्व हम आर्यजनता का ध्यान उस आधार भूत की तरफ खींचना चाहते हैं, जिस पर कि सम्पूर्ण आर्यसमाज और वैदिकसभ्यता का प्रसार और उसकी सफलता निर्भर है। लेखक की नम्र सम्मति में वैदिकधर्म और वैदिक-सभ्यता तब तक कभी भी सार्वभौम नहीं हो सकती जब तक कि वह देश जिसमें कि उसकी पैदायश और उसका विकास हुआ है-स्वतंत्र होकर बलशाली न हो जाये। बौद्ध ईसायत; और इस्लाम का इतिहास इस सचाई की बड़े बल के साथ पुष्टि करता है,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कि शक्ति के हाथ में आने पर धर्मों और सभ्यताओं का प्रसार बड़ी शीघ्रता से होता है। क्या वर्तमान समय में पाश्चात्य सभ्यता के शीघ्र प्रसार का एक प्रधान कारण पाश्चात्य योरोपियन जातियों का बल शाली होना तथा उनका एशिया और अफ्रीका निवासी जातियों पर रोब दाब (Prestige) स्थापित करना नहीं है * जब तक भारत स्वतंत्र और बलशाली नहीं हो जाता, तब तक योरोप की साम्राज्याभिमानी जातियां गुलाम भारत की आध्यात्मिक सभ्यता का मान करने के लिये कभी भी तैय्यार न होंगी। जब तक भारतीय गुलाम हैं, क्या तब तक धन और साम्राज्य के मद में चूर हुई २ पाश्चात्य जातियां किसी भी गुलाम भारतीय प्रचारक को अपना गुरु मानने के लिए तैयार हो सकती है। क्या विदेश प्रचार की धुन में मस्त आर्यसमाजियों ने संसार के वर्तमान अद्वितीय महापुरुष म० गांधी के दक्षिण अफ्रीका के यूरोपियन क्रिश्चियन चर्च में हुए अपमान को भुला दिया है? लेखक के कानों में अब तक भी वे शब्द गूंज रहे हैं, जो कि भारत के विश्वविख्यात कवि डा० रवीन्द्रनाथ टागौर को एक छोटे से जापानी बच्चे ने व्यंग रूप में कहे थे। "क्या इसी आध्यात्मिक सभ्यता के कारण ही तुम्हारी जाति और तुम्हारा देश १५० वर्षों से गुलाम बना हुआ है? ऐसी मुर्दा सभ्यता की जापान को जरूरत नहीं है इसे दूर से ही नमस्कार है।" हमारे प्रतिपक्षी को उपर्युक्त युक्तियों को निरी भावप्रधान (Pure emotional and Sentimental) कह कर इनकी उपेक्षा करने का यत्न करेंगे परन्तु इस ऐतिहासिक सचाई की उपेक्षा करना सर्वथा असम्भव है, आंखें मींच कर सचाई की जानबूझ कर उपेक्षा करने से अब काम न चलेगा।

जब तक वेदों की आध्यात्मिक सभ्यता किसी देश में क्रियात्मक रूप धारण न करेगी, तथा अन्य देश इस सभ्यता के पूर्ण विकास को क्रियारूप में परिणत हुआ न देखेंगे, तब तक वे वैदिक सभ्यता को स्वीकार करने के लिए कभी तैयार न होंगे। आध्यात्मिक सभ्यता का पूर्ण विकास सब से पहिले भारत में ही हो सकता है। अन्य देशों में नहीं। संसार में वैदिक-सभ्यता का प्रसार तब तक नहीं हो सकता, जब तक कि भारत में इस सभ्यता के पैर दृढ़ता-पूर्वक नहीं जमते। स्वतन्त्रता को प्राप्त किये बिना भारत में वैदिक सभ्यता का प्रसार तथा उस का विकास दोनों ही असंभव हैं। स्वराज्य को प्राप्त किये बिना भारत में वैदिक धर्म और वैदिक सभ्यता का क्रियारूप में परिणत

* लेखक इस ऐतिहासिक सचाई को स्वीकार करता हैं। किसी भी विदेशी जाति पर अपनी हकूमत को स्थिर बनाये रखने का सब से उत्तम साधन यही है, कि शासक जाति शास्य जाति की सभ्यता का नाश करके उस पर अपनी सभ्यता की मुहर लगादे तथा उस [शास्य] जाति के नवयुवकों के दिमागों में अपनी सभ्यता को शिक्षा द्वारा प्रविष्ट Inject करदे। परन्तु किसी भी दूसरी जाति पर विदेशीय सभ्यता की ठाप वा मुहर लगाने के लिये प्रचारक जातिके हाथों में कमसे कम स्वराज्य शक्ति Self-governing power तथा रोब दाब-इन दो बातों गुणों का होना अत्यन्त आवश्यक हैं। गुलाम जाति उत्कृष्ट सभ्यता को रखती हुई भी कभी भी किसी स्वतन्त्र जाति पर अपनी सभ्यता की मुहर नहीं लगा सकती। क्योंकि स्वतन्त्र जातियाँ गुलामों को स्वभावतः ही नफरत की निगाह से देखते हैं, इस लिये गुलामों की सभ्यता चाहे कितनी ही उत्कृष्ट क्यों न हो उसे स्वीकार करने के लिये कभी भी तैय्यार न होंगी।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होना तथा इनका सार्वजनिक प्रसार असंभव है। उदाहरण के तौर पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का प्रसार, वर्णाश्रम व्यवस्था को क्रियारूप में परिणित करना स्त्री, शिक्षा का सार्वजनीन प्रसार, दलित जातियों का उद्धार तथा छूत छात को दूर करना, गोवध तथा मद्यपान को रोकना आदि सुधार उस समय बहुत ही शीघ्र क्रियारूप में परिणित किये जा सकते हैं, जब कि हमारे हाथों में जाति की शिक्षा, कानून बनाने का हक तथा आय व्यय (Finance) का हक आजाये तब हम अपने जातीय दोषों को शीघ्र ही दूर करते हुए अपनी जाति में सद्गुणों और सद्-व्यवस्था का प्रवेश कराने में समर्थ हो सकते हैं। उपर्युक्त साधनों के बिना किसी भी सुधार को अपनी जाति में सफलता पूर्वक क्रियारूप में परिणित करना हमारे लिये अत्यन्त असंभव है। इसके अतिरिक्त हमारी दरिद्रता भी हमारे जातीय पापों का बहुत हद्द तक प्रधान कारण है। जब तक ये दरिद्रता और बेकारी दूर नहीं होती, तब तक चाहे कितना ही धर्म प्रचार और कितना ही प्रयत्न क्यों न किया जाय, वह सारा का सारा ऊसर भूमि में बाये हुए बीज की तरह निष्फल है। भारत की दरिद्रता और बेकारी को दूर करने का एकमात्र साधन स्वराज्य और स्वतन्त्रता ही है। इस लिये वैदिक धर्म और भारत की आध्यात्मिक सभ्यता को सार्वभौम बनाने के लिये भी आर्यसमाज को स्वराज्य और स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये विशेष यत्न करना चाहिये। स्वतन्त्रता प्राप्त किये बिना वैदिक धर्म और अध्यात्मिक सभ्यता को सार्वभौम बनाना तो अलग रहा, परन्तु इन्हें समूचे भारत में ही क्रियात्मिक रूप में परिणत करने का विचार करना आकाशी महल बनाने के समान निरर्थक है। इस गुलामी की अवस्था में वैदिक धर्म तथा अध्यात्मिक सभ्यता का योरोप, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि प्रदेशों में प्रचार करने की धुन में मस्त भारतीय आर्यसमाजी प्रचारकों को यह बात अच्छी प्रकार से अपने ध्यान में रखनी चाहिये, कि मौजूदा जमाने में पाश्चात्य जगत में धन और न्याय की कोई इज्जत ही नहीं है, वहां तो " Might is right" शक्ति ही न्याय का धर्म है,, की पुकार है। इस अवस्था में कोई भी अभिमानी पाश्चात्य जाति गुलाम भारत की अध्यात्मिक सभ्यता का सन्मान करने के लिये तब तक तैय्यार न होगी, जब तक कि भारत स्वतन्त्र होकर उनके बराबर शक्ति शाली न बन जावेगा।

प्रस्तावित भावी प्रोग्राम की आधार भूत स्थापनाओं पर विचार करने के अनन्तर अब हम आर्यजनता के सामने आर्यसमाज के भावी प्रोग्राम के सम्बन्ध में कुछ अपने विचार प्रकट करेंगे। जहां हमने अपने प्रस्ताविक प्रोग्राम में आर्यसमाज के व्यापक उद्देश्य उसकी पृथक् सत्ता तथा उसके नियत कार्य-क्षेत्र तथा वैदिकधर्म के सिद्धान्तों की अनुकूलता का पूरा २ ध्यान रखा है, वहाँ इसके साथ २ प्रोग्राम की क्रियात्मिकता, समयानुकूलता और इसकी उपयोगिता को भी दृष्टि में रखा गया है। जैसे कि लेख की भूमिका में ही हम इस सिद्धांत को स्थापित कर चुके हैं कि वैदिकधर्म तथा वैदिक-सभ्यता को सार्वभौम बनाने के लिए इसके अनुयायियों के हाथ में राज्य-शक्ति का होना अत्यन्त आवश्यक है, इस कार्य की सिद्धि हमें स्वराज्य प्राप्ति द्वारा ही हो सकती है। हिन्दू मुसलमानों की स्थिर एकता के बिना स्वराज्य हासिल करना नामुमकिन है, यह बात निर्विवाद है। परन्तु

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमें समय का अनुभव यह बतलाता है, कि जब तक हिन्दू जाति संगठित होकर बलवान न बन जावेगी, तब तक भारत के मुसलमान हिन्दुस्तान को अपनाने तथा हिन्दुओं से मिलने के लिए कभी भी तैयार न होंगे। हिंदू मुसलमानों की स्थिर एकता के लिए यह आवश्यक है, कि सब से पहले भारत के मुसलमान अपने को भारतीय बनावें, तथा टर्की, मिश्र, अरब, अफगानिस्तान आदि मुस्लिम देशों से प्रेम करना छोड़कर वे अपनी मातृ भूमि भारत से सच्चा प्रेम करना सीखें, तथा भारत को ही अपनी मातृभूमि और पुण्यभूमि समझें। परन्तु हमें अनुभव यह बतलाता है, कि जब तक हिंदुओं का संगठन सुदृढ़ नहीं होता तथा जब तक हिंदू अपनी कायरता को दूर करके अपने को इस लायक नहीं बनाते, कि वे अपने रोबदाब तथा भौतिक-शक्ति के दबाव द्वारा भारत के मुसलमानों को सच्चा भारतीय बनने तथा भारत को ही अपनी मातृ-भूमि और पुण्य-भूमि समझते हुए यहां के अन्य धर्मानुयायियों से धार्मिक घृणा को दूर करने के लिए बाधित कर सकें, तब तक हिन्दू मुसलिम ऐक्य और स्वराज्य दोनों ही असम्भव हैं। अतः स्वराज्य प्राप्ति के लिए हिन्दू जाति का संगठित होना अत्यन्त आवश्यक है। इसलिए हम ने प्रस्तावित प्रोग्राम में सब से पहिले संगठन स्थान को दिया है? हिंदू शब्द के स्थान पर हम ने यहां जान बूझकर के आर्य शब्द का प्रयोग किया है। इस का कारण यह है, कि आर्य जाति में ऋषि द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म के अनुयायी (आर्य-समाजी) तथा सनातन-धर्मी पौराणिक हिन्दू दोनों का ही समावेश हो जाता है। इसके अतिरिक्त आर्यसमाज सामूहिक रूप से स्वराज्य के लिये कारण परम्परा रूप से (Indirectly) यत्न करता हुआ भी अपने मुख्य उद्देश्य वैदिकधर्म के प्रचार को अन्य कार्यों की सिद्धि के लिये न्यौछावर नहीं कर सकता। अतः संगठन पर्व के कार्य्यक्रम में हमने अनेक बातें ऐसी रखी हैं। जोकि सामान्य हिन्दू मात्र से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखती। वे बातें केवल मात्र आर्यसमाज की उन्नति से ही सम्बन्ध रखती हैं। अतः हमने प्रथम पर्व का नाम आर्य-संगठन पर्व रखा है। आर्य संगठन पर्व का उद्देश्य निम्न होगाः—

आर्य-संगठन पर्व।

आर्य-जाति के पूर्ण सङ्गठन के लिये कम से कम २५ सालों की ज़रूरत है। २५ सालों में यह कार्य बखूबी किया जा सकता है। ये २५ साल आर्यजाति को स्वराज्य के लिये तैयार करने में लगेंगे। स्वराज्य सङ्गम से पूर्व देश और जाति को सुसङ्गठित करके बलवान बनाना ज़रुरी है। अन्यथा हमारे देश और हमारी जाति को सङ्गठन और ऐक्य के अभाव के कारण स्वराज्य संग्राम में पहिले की तरह फिर नीचा देखना पड़ेगा तथा स्वराज्य की आशा को कई सालों तक पीछे ले जाना होगा। इसलिये अब हमें अपनी पिछली हार से शिक्षा लेकर स्वराज्य संग्राम में पड़ने से पूर्व अपनी जाति और देश को खूब अच्छी तरह से संगठित करके बलवान बना लेना चाहिये, ताकि हमें स्वराज्य संग्राम में पहिले की तरह निराश और पराजय का दुबारा मुंह न देखना पड़े। लेखक का यह पूर्ण विश्वास है, कि १२ करोड़ हिंदू जो कि देश की कुल जन संख्या का लग भग तीन चौथाई हिस्सा है-जिस समय सुसंगठित होकर एक दृढ़ शृंखला में बंध जावेंगे, उस दिन हिन्दू मुस्लिम ऐक्य के होने तथा स्वराज्य के

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मिलने में कुछ भी देरी न लगेगी अतः आर्य जाति (हिन्दू जाति) को सुसंगठित करने तथा भावी स्वराज्य के लिये तैय्यार करने में यदि २५ वर्ष का समय लग जाय, तो इस से हमें घबराकर अपना धैर्य न छोड़ना चाहिये, क्योंकि जातियों के उत्थान के इतिहास में २५वर्ष का समय असाधारण समय नहीं है। कई जातियों को स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये कई सदियों तक लगातार संघर्ष और लड़ाई करनी पड़ी है, जैसे कि, आयरलैंड कोस्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये कई सदियों तक लगातार इंग्लैंड से लड़ना पड़ा। जहां आर्यसमाज को इन २५ वर्षों में हिन्दुओं की कुरीतियों का नाश करके उनके बिखरे हुए अंगों को परस्पर जोड़ कर उनके धार्मिक और जातीय संगठन को सुदृढ़ करना है, वहां इसके साथ २ आर्यसमाज को अपना संगठन दृढ़ करते हुए इन २५ सालों में सारे भारत मेंअधिक व्यापक और स्थाई बनाना है। जिन जिन प्रान्तों में आर्य्यसमाज का प्रभाव पहिले से स्थापित है, उनमें उसने अपने प्रभाव को पहिले की अपेक्षा ज़्यादा स्थायी बनाना है, और भारत के जिन २ प्रांतों में अब तक आर्यसमाज का प्रसार नहीं हुआ — यथा बंगाल, आसाम, मद्रास, गुजरात आदि प्रांतों में जहां कि दिन प्रति दिन ईसाईयों और मुसलमानों की बढ़ती तथा हिंदुओं की घटती हो रही है—इस प्रकार के प्रदेशों में अपने पैर फैला कर उसे दिन प्रति दिन कटती हुई हिंदू जाति की रक्षा कर अपने प्रभाव को स्थापित करना चाहिये। तथा जिन २ प्रांतों में आर्य्यसमाज ने अपने पैर फैला लिये हैं वहाँ उसे अपने प्रभाव और अपनी जड़ों को और भी ज़्यादा मजबूत बनाना चाहिये, ताकि भावी में आर्यसमाज को किसी प्रकार के खतरे की सम्भावना ही न रहे। यदि स्वराज्य संग्राम छिड़ने से पूर्व आर्य समाज का पैर भारत के प्रत्येक प्रान्त में अच्छी तरह से जम जाय तथा इसका प्रभाव समस्त भारत पर भलीभांति स्थापित हो जाय, तो फिर स्वराज्य प्राप्त होजाने के बाद आर्यसमाज को भारत में फलने फूलने तथा भारत की भावी शासन व्यवस्था को वेदानुकूल बनाने में भारी कठिनाइयों का मुकाबिला न करना पड़ेगा। उपर्युक्त कार्य की सिद्धि के लिए आर्यसमाज को अपना भावी कार्यक्रम तथा अपनी भावी नीति किस प्रकार की रखनी चाहिये, इसके सम्बन्ध में हम अपनी सम्मति पाठकों के सन्मुख अगले लेख में प्रकाशित करेंगे। इस लेख में तो केवल भावी प्रोग्राम की पूर्वावना मात्र पर ही प्रकाश डाला जा सकता है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मासावतरण

आषाढ़

ले०—श्री पं० सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज

ग्रीष्म भी साम्राज्य कर पाता न क्यों ?
जब नियम निश्चल प्रकृति का है सदा—
"हों सबल—"उन्नत", करें चाहे इतर[1]—
प्राप्त शोभन—सम्पदा वा आपदा !

* * * *

हम इधर कहते रहे—"हा, मर गए !
रात की भी तप्त-वात अ-सौख्य-दा !!"
पर सरों के सूखने में सूख कर,
मीन-कुल का था तड़फ़ मरना बदा !

* * * *

धन्य वह ग्रामीण, कुटिया फूंस की—
जो बना, हिम—वात ले पुष्कल रहा !
हे हरे ! पर क्या करे वह नागरिक—
जो तिमंजले—वेश्म बीच उबल रहा !

* * * *

तू मुसल—धाराऽभिवर्षण कर शुचे[2] !
ताप सकता दूर कर, यह मान ली !
पर किसानों को कभी किस हेतु तू—
गर्जना गम्भीर कर, छलता, छली !

* * * *

१ इतर—दूसरे
२ शुचे—आषाढ़

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

विरह—वेदना

(श्मशान)

(लेखक—श्री० राजनारायण चतुर्वदी 'आज़ाद')

हुगली के समीपवर्त्ती पतित-पावनी भागीरथी गंगा के पवित्र तटवाला श्मशान आज भी याद है। मैंने भाव के वशीभूत हो कितनी सुनहली सन्ध्या, कितनी भयावनी रातें वहां व्यतीत की हैं। मनुष्य शवदाह देख कर सशंकित हो हट जाता है। किन्तु मैं ने आग्रहपूर्वक प्रज्वलित चितानल के समीप खड़े होकर शिक्षा प्राप्त की है। जो ज्ञान किसी ग्रन्थ में किसी पुस्तक के अध्ययन करने से नहीं मिल सकता वह ज्ञान मैंने वहां प्राप्त कर हृदय भंडार को पूरित किया है। इसी स्थान पर खड़े होकर धर्मराज युधिष्ठिर के कथनानुसारः—

अहन्न हनि भूतानि गच्छन्ति यम् मन्दिरम्।
शेषाः स्थिरत्वमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतःपरम्॥

आवृत्ति करते २ देखा कि अगणित जन श्रोत जलप्रवाह की नाईं उल्लासपूर्ण आश्वस्त हृदय से चले जाते हैं। किन्तु कोई स्तम्भित हृदय से उस चितानल की ओर दृष्टिपात भी नहीं करता। कितने तो शवदाह करने आकर क्रीड़ाकौतुक आमोद प्रमोद तथा अश्लील प्रेम के गाने गाकर शोक मनाने का भान कर के चले जाते हैं। यह सब देख कर यही कहना पड़ता है युधिष्ठिर के उपरोक्त कथन में महान सत्य छिपा हुआ है।

प्रति दिन इसी प्रकार जो शिक्षा मिली उस से समझा कि अब कदाचित हृदय को शांति मिलेगी। नश्वर जगत का शोक ताप मुझ को स्पर्श भी न कर सकेगा। मैं शांति पूर्वक निर्लिप्त भाव से संसार में कर्त्तव्य साधन कर सकूंगा। मैंने मोहभूमि को अतिक्रम करके उन्नतभूमि में अधिरोहण किया है। अब मुझ को किसका भय है?

आज मेरा वह ज्ञान कहां गया? इतने दिनों की शिक्षा आज क्षण भर में अन्तर्हित होगई। आज क्यों उस पवित्र शमशान की ओर ताकने का भी साहस नहीं होता? हृदय रूपी साम्राज्य में आज किसने अग्नि लगादी? आज किस ने अश्रुपूर्ण नेत्रों से जलती हुई चिता में सुला दिया? आज किस के मुख में अग्नि निक्षेप कर हाहाकार कर रो उठा? आज किस के शोक में पागल हो रहा हूं? हाय! आज इस हाहाकार की प्रचंड वेग से बहती हुई आंधी मुझे कहाँ उड़ाये लिये जाती है?

आज मेरा सर्वनाश होगया। आज संसार रूपी बन्धनों से मैं मुक्त हो गया। आज मेरी हृदयप्रतिमा मेरे हृदय साम्राज्य की अधीश्वरी धधकती हुई चिता में शांति के साथ जल कर मुझ से सदा के लिये विदा हो रही है। इतने दिन तक जिसे हृदय से लगा छाती ठंडी की थी। आज उसी को जलती चिता में रख कर हाहाकार कर रहा हूँ। सरलता, मधुरता जिस मुखमंडल पर विराजती थी। कोमलता रसिकता जिस युगल नयन पर नित्य उत्साहित होती। आनन्द रूपी आत्मा जहां चिरविश्रा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

जित रहती। आज उसी की आहुति दी है। जिस कुसुम के सौरभ से मैं सौरभान्वित था, जिस मधुर मुसकान को देख कर सारी यन्त्रणा ज्वाला शीतल हो जाती थी। आज उसी की आहुति दी है। आज मेरे हृदय की कोमल लतिका विछिन्न हो गई। मैं पत्र हीन सूखे हुए वृक्ष की नाईं गिर पड़ा।

वही तो—वही तो—चिता जल रही है जलने दो! मैं उस ओर देखूंगा भी नहीं—और देख कर ही क्या करूंगा? अब मेरा उस से क्या सम्बन्ध है? मैंने हृदपिंड को छिन्न कर उसकी आहुति दी है। जलने दो! परितृप्त हो कर जलने दो—बुझाने की आवश्यकता ही क्या है?

अग्नि मनोवांछित वस्तु पाकर कैसी आनन्द में मग्न हो नाच उठी है। मैं जितना ही हाहाकार करता हूं अग्नि उतने ही द्विगुण उत्साह से जलती है। इतने प्रचंड वेग से चिता को कभी जलते हुए नहीं देखा। यह क्या-यह क्या! चितानल निर्वाचित होकर तप्त कंचन की भांति अपूर्व शोभा से शोभित दिव्य पुष्पक विमान में आरोहण कर कौन सी वस्तु हंसते २ आकाश की ओर चली जा रही है। देखते २ नक्षत्र लोक में जा विलीन होगई।

ठहरो-हृदयेश्वरी ठहरो! एक बार भर नज़र तुम को देखलूं तुम्हारी जिस मोहनी मूर्ति पर मुग्ध था--उसकी अपेक्षा सहस्र गुणी उज्ज्वल मूर्ति तुमने कहां पाई! तुम में इतनी मधुरता थी यह आज तक मालूम भी न था। एक बार--एक बार! केवल एक बार! उतर आओ! तुम्हारी नवमूर्ति हृदय--मंदिर में प्रतिष्ठित कर पूजा करूं। संसार में जिसको आत्मीय स्वजन कहते हैं, जिसके विद्यमान रहने से स्त्रीजाति को सौभाग्यवती, पुण्यवती कहते हैं वह तुम्हारे लिये हाथ फैलाये खड़ा है। तुम्हारे चरणों में नेत्र रूपी कोष से अश्रु के अनुमोल मोतियाँ के ढेर लगा रहा है किन्तु हाय! तुम उसकी ओर आँख उठा कर भी नहीं देखतीं, तुम्हारे लापरवाही से वह मोतियें का ढेर मिट्टी में मिला जा रहा है। प्राणेश्वरी! देखो उसका अनादर न करो, वह मेरे समस्त जीवन का संचित धन है। हाय! तुम सब परित्याग कर चली जा रही हो तुम्हारे मुख पर कातरता का चिन्ह मात्र भी अंकुरित नहीं होता? क्यों! क्या तुम वही हो जो मुझे जरासा उदास मुख देखकर व्याकुल हो उठतीं थीं। असीम कष्ट स्वीकार करके मेरा दुख दूर करने की चेष्टा करती थीं। आज मेरे रोने चिल्लाने पर भी तुम्हें दया नहीं आती। क्यों?

समझ गया! इस जीवन अंतराल में चिरशान्ति निकेतन नामक जो दृश्य तुमने देख लिया है, उसी से आज तुमको इतना आनन्द है। उसी निकेतन के स्वामी तुम्हें बुला रहे हैं। फिर भला तुम मेरी तरफ़ क्यों देखने लगीं; तुम स्वप्न-मय जगत को ओर क्यों निहारोगी! तुम इस अन्धकार-मयजगत से बहुत दूर चली गई हो, यहां का आर्त्तनाद तुम्हारे कानों में क्यों प्रवेश करने लगा! आज तुम निश्चिन्तपुर की अधिवासिनी होकर परम शान्ति उपभोग कर रही हो। तुम्हारा मन वहां कौन विचलित करेगा। प्रेम मयी! आज तुम प्रेम राज्य में प्रवेश कर मुग्ध हो गई हो। इस तुच्छ हृदय का तुच्छ प्रेम तुम को क्यों कर वापिस बुला सकता है? क्या तुम अब न आओगी? हाय! मेरा क्या उपाय होगा?

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by...

जीवन में एक बार तुम्हारे साथ उल्लास पूर्ण हृदय से यात्रा की थी। कितने ही देश देशान्तरों में भ्रमण करता रहा। कितने बन उपवन में बिचरण कर आनन्द विहार में मग्न हुआ। प्रेम नदी में डूब कर जीवन सन्ताप भूल गया। धीरे २ वैतरणी नदी में आकर उपनीत हुआ किंतु हाय! कहां से एक तरंग ने आकर मुझे तुमसे अलग कर दिया। और मैं शून्य हृदय से यहां बैठकर आंसुओं से जलराशि की वृद्धि कर रहा हूँ। मेरे निश्वास रूपी हाय से प्रबल तरंग उठती है उसी तरंग में कभी नीचे नदी के वक्षः स्थल पर बैठ जाता हूँ। कभी ऊपर समतल पर आकर भासने लगता हूं।

और कितने दिन! कितने दिन इस नदी के तट पर बैठकर रुदन करूंगा? जिस तरंग ने तुम को मुझ से विलग कर दिया है क्या वह कभी मुझ से मिलायेगी? जिस पथ की पथिका तुम हुई हो क्या मैं उस पथ का गामी हो सकता हूं? अब नहीं सहा जाता! यही क्या प्रेम का परिणाम है?

परलोक के सुख शान्ति की एक मात्र अधिकारिणी होकर इस लोक के प्राण सखा को क्या भूल जाओगी? तुम्हारा यह अविचार अत्याचार मेरे हृदय को चूर्ण विचूर्ण कर रहा है, यदि कभी दर्शन हों तो एक बार जी भर कर रो लूंगा। नहीं तो यह क्षोभ दुःख कभी कम न होगा।

वह देखो—वह देखो! वह चितानल निर्वापित हो गई। सभी विषन्न मन हरिनाम करते करते वापिस आ रहे हैं। हाय! सब शेष हो गया। किस हृदय से पहिले के समान इस श्मशान क्षेत्र में विचरण करूंगा श्मशान इतना भयानक स्थान है यह पहिले नहीं जानता था। इसी लिये निर्बोध की नांई यहां भ्रमण करता रहा। आज स्मरण होने से हृदय कांप उठता है।

कदाचित यह चिरपरिचित स्थान इस जीवन में न भूल सकूंगा। कालान्तर में विधिवश यदि शोक का प्रवाह कभी कुछ कम हुआ तो अंधेरी रात्रि में खूब जी खोल कर रो लूंगा। एक दिन गंगा की पवित्र धारा जिस चितानल को निर्व्वापित न कर सकी उसी प्रचण्ड वेग से प्रज्वलित चिता को नयनाश्रु से विसर्जन करूंगा भगवान से यही प्रार्थना करूंगा कि हे प्रभो! अन्तिम समय इसी स्थान पर परम शान्ति के साथ शयन कर सकूं। पुण्यवती काशी की पवित्र भूमि एवं मणिकर्णिका घाट से यह स्थान मेरे लिये अधिक पूज्यनीय है। (आगे फिर)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आप ही आप

ले०—श्रीनयनचन्द्र सन्त

नहीं, वह नहीं विराना है
आप में आप समाना है।
उधर से, सकल निरख पावें इधर से, उसे न लख पावें।
उधर, सागर सम लहरावें इधर, बन सागर सम जावें॥
चक्र, क्रमशः सकुचाना है
आप में आप समाना है।
आप गुरु और आप चेला आप ही आप लगा मेला!
आप ही अग्नि आप पानी आप ही मूढ़ आप ज्ञानी॥
आप ही आप भुलाना है
आप में आप समाना है।
आप चीटी सा नश्वर है आप ही तो जगदीश्वर है!
नृपपति बन, चक्र घुमाता है कृसक बन शीस झुकाता है॥
आप ही ताना-बाना है
आप में आप समाना है।
बना उपदेशक क्या बकता न अपनी सुरति आप रखता!
अरे, लेखक तू क्या लिखता न अपना पता बता सकता॥
खूब भ्रम में भटकाना है
आप में आप समाना है।
नियम, हम स्वयम् बनाये हैं उन्हीं में खुद चकराये हैं।
द्वैत बन, डरते, छाया से रो रहे, अपनी माया से॥
चोर के सन्मुख थाना है
आप में आप समाना है।
मूढ़! तू किसे सताता है न उस में निज को पाता है?
गर्व तू किसे लखाता है अकड़ता खुद क्यों जाता है॥
खुदा खुद हुआ दिवाना है
आप में आप समाना है।
हमी, अपने विज्ञापक हैं हमीं जग के अध्यापक हैं।
काव्य, 'संकेत' शब्द जानो 'नयन' को 'नीरव' ही मानो॥
लक्ष का वही ठिकाना है
आप में आप समाना है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by ...

निर्भीक कैदी ।

[लेखक-'गुलाब']

कंचन पहाड़ की ऊंची चट्टान पर क्षत्रिय कुमार सुजानसिंह किसान बालिका के साथ बैठे हुए इधर उधर की बातें कर रहे थे। सामने एक छोटी सी पहाड़ी थी, जिसमें सुन्दर झरना झर रहा था। पहाड़ी के ठीक १६, १७ हाथ हटकर दक्षिण की ओर शेर की मांद थी, दोनों की आंखें उधर ही थीं। उनमें भय न था, एक स्वर्गीय मादकता से दोनों मस्त हो रहे थे। बालिका मुसलमान कन्या थी, दोनों में घनिष्ठ प्रेम था।

सुजानसिंह ध्यान से शेर के बाहर निकलने की प्रतीक्षा कर रहे थे। उनके बाएं हाथ में कमान थी, और दाहने हाथ में तीखे तीर थे। वे शिकार के ज़बरदस्त शौक़ीन थे। उन्हें विश्वास था, मैं एक ही तीर में शेर का काम तमाम कर दूंगा। घंटों बीत गए, शेर नहीं निकला, सुजानसिंह झुंझला उठे उनकी अभिलाषा पूर्ण न हो सकी।

सहसा पत्तियां खड़कीं, सुजानसिंह ने तीर खींचते हुए बालिका से कहा—'नूरिया! शेर आ रहा है। मौत की घंटी बज चुकी है। एक ही तीर में प्राण ले लूंगा।

नूरिया मुस्कराने लगी। वह अक्सर सुजानसिंह के साथ आखेट किया करती थी उसने कहा—"तब तो पत्थरों में फूल खिलेंगे मैं भी शिलाखंड लिए बैठी हूँ, आखेटमें तुम्हारी सहायता करूंगी। स्वीकार है न?"

सुजानसिंह ने कहा—'स्वीकार क्यों नहीं है? मैं जानता हूँ तुम भीषण लपटों वाली अग्नि हो मैं तुम्हारी सहायता से क्षण भर में ही दुनिया को जलाकर भस्म कर सकता हूं। जो काम मैं अकेले नहीं कर सकता उसे तुम कर सकती हो, यह मैं जानता हूँ।"

पुनः पत्तियां खड़कीं। इस बार उन्हें विश्वास होगया, शेर आ रहा है। दोनों ही शिकार के लिए प्रस्तुत हो गये।

फिर पत्तियां खड़कीं। दोनों की लालायित आंखों ने देखा—यह शेर नहीं है। एक खूबसूरत खरगोश चुहलबाज़ी में लीन है।

सुजानसिंह ने निराश भाव से कहा—"नूरिया! न मालूम आज सबेरे मैं किस का मुख देखकर उठा था। आज इच्छा पूर्ण न होगी, शेर मांद के बाहर न निकलेगा।

सहसा गूलर के वृक्ष से एक पका हुआ गूलर का फल नूरियाके आगे चू पड़ा। नूरिया ने उसे उठकर देखा—उसके भीतर अनेकों भुनगे भरे हुये हैं। शिकार की ओर से जी हटाकर नूरिया ने कहा—"सुजान! ये भुनगे भी बड़े विचित्र जीव हैं अंधेरे में पड़े रहते हैं इन्हें घूमने फिरने की इच्छा ही नहीं होती।

सुजानसिंह ने मुस्कराते हुए कहा—"पूरे घर घुस्सू हैं। इतनी ही छोटी सी जगह में इनका कारबार होता है। रसोई भी इसी में होती है, खाते पीते भी यहीं हैं। इसी में टांगें पसार कर सोते हैं युद्ध भी करते हैं।"

हँसकर नूरिया ने कहा—"बाजार-हाट भी यहीं करते होंगे?"

सुजानसिंह ने कहा—"इतनी ही बड़ी जगह में सब कुछ करते हैं। यहीं शमशान है, यहीं आरामगाह है, इनकी दुनिया मजेदार

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है, मेरी इच्छा है, दूसरे जन्म में मैं भी भुनगा ही बनूं।"

नूरिया खिलखिला कर हंस पड़ी सहसा किसी परिचित कण्ठ ने उसे चौंका दिया। उसने पहाड़ से नीचे की ओर झांककर देखा उसका पिता अब्दुल्लाह उसे घर पहुंचाने के लिये बुला रहा है।

उसने कहा—"सुजान, अब मकान जाती हूं। वालिद पुकार रहे हैं, अंधेरा हो गया है, आसमान में दो चार तारे भी झिलमिला रहे हैं। तुम भी घर जाओ, नहीं रास्ता भूल जाओगे।"

नूरिया चली गयी। सुजानसिंह ने पुनः शेर की मांद की ओर देखा, वह अब तक नहीं निकला। उन्होंने मन ही मन कहा—"शेर अब सो गया होगा। कल सवेरे देखा जायगा। नूरिया चली गई, मैं भी घर जाता हूं, बूढ़ी मां प्रतीक्षा कर रही होगी।,,

सुजानसिंह सावधानी से पहाड़ी ऊबड़ खाबड़ भूमि तै करते हुए खेत की पगडंडी पर आ पहुंचे। गेहूँ की हरी हरी बालियां हवा के मन्द झकोरों में हिल रही थीं।

सुजानसिंह गीत गाते हुए घर की ओर चल पड़े। बलिराम बाग में प्रवेश करते ही सहसा किसी ने मज़बूत हाथों से उन का गला धर दबाया। आश्चर्य से उन्होंने देखा, ८, १० बलिष्ठ काय मुसलमान सैनिक उन्हें घेरे खड़े हैं। सुजानसिंह ने कड़क कर कहा "तुम कौन हो? मुझे किस लिये तंग कर रहे हो?,,

एक ने कहा—"हम लोग शाही सैनिक हैं। बादशाह के हुक्म से तुम्हें गिरफ्तार करने आये हैं।,,

"किस अपराध में?,,

"तुम हिन्दू हो। नामर्द हिन्दू काफिर होते हैं, हम लोग उनके नेस्त नाबूद करने की चेष्टा कर रहे हैं।,,

सुजानसिंह की आंखों में हिंसक ज्वाला जल उठी। वे दांत पीसकर रह गये उन्होंने मन ही मन ईश्वर को सैकड़ों गालियां दीं। परमेश्वर ने उन्हें क्षत्रियकुमार बनाकर बड़ा ही अन्याय किया है। यदि वह आज क्षत्रिय कुमार न होकर क्षत्रिययुवक होते तो मुसलमानों को बड़ी बेरहमी से वध कर डालते।

कैदी कुमार बादशाह के सन्मुख खड़ा हो गया। वह इतना धृष्ट था कि उसने प्रणाम तक भी न किया।

बादशाह के हृदय में एक पैशाचिक संकल्प उठ रहा था। उसने कहा···"लड़के, तुम्हारा नाम क्या है?,,

कैदी ने निर्भीकता से कहा-"हिंदुकुल भूषण सुजानसिंह! तुम मुझे 'लड़के, कह कर न पुकारो। मैं लड़का नहीं हूँ, मेरी उम्र पन्द्रह साल की है। मैं क्षत्रिय हूँ, नित्य शेरों का शिकार करता हूं। देखते नहीं, मेरे हाथ में तीर कमान है। इच्छा करते ही बड़ी २ सेनाओं को कुत्तों की मौत मार सकता हूँ"

बादशाह के होठों पर हंसी आ गई। उस ने मन ही मन सुजानसिंह की बड़ी तारीफ़ की। कहा 'तुम बड़े ही निर्भीक हो। मैंने आज तक ऐसी निर्भीकता कहीं नहीं देखी। सभी हिन्दू तुम्हारी ही तरह निर्भीक नहीं होते।"

सुजानसिंह ने कहा--"आग के अंगारे हथेली पर रखते ही पहिचाने जा सकते हैं।

बादशाह ने कहा—"मैं हिन्दुओं की खाल खिंचवा लेता हूं। उन्हें जीते ही ईंटों में चुनवा देता हूं। अभी तुम नादान लड़के

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हो। मुझे तुम्हारे ऊपर तरस आता है। मैं तुम्हें जान से मारूंगा। बोलो, बेगम महल की गुलामी करोगे ?"

सुजानसिंह की आंखों में खून उतर आया। उन्होंने कहा—"बादशाह ! ज़बान संभाल कर बातें करो। मैं कैदी होकर भी लोहे की मज़बूत जंजीरों में नहीं जकड़ा हूँ। मेरे हाथों में तीर कमान है। इरादा करते ही बाण छोड़ दूँगा।

बादशाह को क्रोध नहीं आया। सुजानसिंह की निर्भीक मूर्ति उसके हृदय मंदिर में विराजमान थी। मुसलमान हो कर भी बादशाह सच्चे पुजारी की भांति उसकी पूजा कर रहा था उसने कहा:-

"इससे लाभ क्या होगा ?"

'हानि ही क्या होगी ? दुनिया से एक नामर्द बादशाह उठ जायगा।"

"गुलामी बुरी चीज़ नहीं, बड़े २ क्षत्रियों ने मुसलमान बादशाहों की गुलामी की है।"

"वे कायर थे, क्षत्रिय-कुल-कलंकी थे।"

"तुम कौन हो ?"

"विद्रोही"

भौंहें टेढ़ी कर बादशाह ने कहा-"विद्रोही अदंड फाँसी है।" सुजानसिंह के अधर फुट फड़क उठे। बोले-"जो वीर है वीरता का उपासक है, जिसे केवल ईश्वर ही पर विश्वास है। जो धर्मसीमा उलङ्घन करने में असमर्थ है। सरल और शुद्ध हृदय में ही जिसे अल्लाहताला के दर्शन होते हैं, वह मौत को कभी घृणा की दृष्टि से नहीं देख सकता।

बादशाह चुप हो गये, कैदी कुमार के तीखे युक्ति अस्त्रों द्वारा उनके तर्कोदाम अस्त्र टूट गए। यदि आज यहां क्षत्रियकुमार के स्थान पर कोई दूसरा होता, तो उसका निस्तार कठिन था। तर्क युक्ति से हटाकर बादशाह की तीखी तलवार से प्राण बचाने की ताकत किसी में न थी। किन्तु बादशाह ने शक्ति-शाली हो कर भी आज अपने को निरुपाय समझा। वह मन ही मन में कहने लगा "मैं इसी यौवन में सहस्रों हिन्दुओं को चुटकी बजाकर अपने बस में कर चुका हूँ। आज दिन भी कितने ही क्षत्रिय मेरी गुलामी बजा रहे हैं, किन्तु आज जैसी अघटित घटना कभी नहीं घटी। ख़ैर, कोई चिंता नहीं। मैं जिसकी खोज में परेशान था आज उसे पागया हूं।" बादशाह ने मुस्तफा से कहा—"इसे गुलशन बाग़ की कोठी में कैद करो। यह कैदी बालक है, इसे किसी बात की तकलीफ़ न होने पावे। आदर के साथ रखना"

(३)

सुजानसिंह मुस्तफ़ा द्वारा जिस कमरे में लाए गए उसे देखते ही वे आश्चर्य में डूब गए। उन्हों ने देखा, उनकी जेल मामूली जेल नहीं है। संगमर्मर की चिकनी फर्श है दीवालों में चतुर चित्रकारों के सुन्दर चित्र टंगे हुए हैं। इनकी सुगंध तबीयत को मस्त बना रही है। सोने के पलंग पर बहुमूल्य गलीचा बिछा है। ताजे फूलों के गुच्छे फूलदान में सजे रक्खे हैं। झाड़ फानूसें लगी हैं, सिर्फ फर्क इतना ही है कि कमरे की खिड़की में, सदर दरवाजे में, लोहे के मज़बूत सीखचे लगे हुए हैं। यही एक जेल की निशानी थी।

मुस्तफा ने नम्रता से कहा—"हुजूर की आज्ञानुसार आपको यहां ले आया हूं। जिन-जिन चीज़ों की ज़रूरत हो, निःसंकोच कहिये, ले आऊं।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'सुजानसिंह ने मन ही मन हंसकर कहा-'कैदी का स्वर्ण-पिञ्जर बुरा नहीं है।" मुस्तफा से बोले—"मुझे किसी चीज़ की आवश्यकता नहीं है सिर्फ कुछ लिखने की सामग्री चाहिए।"

'लाता हूँ। कह कर मुस्तफा चला गया।

कुछ ही देर बाद मुस्तफा लौट आया। उसके साथ २।३ मुसलमान खोजे थे। एक के हाथ में हाथी दांत की कलम, सुवर्ण पात्र में रोशनाई तथा कुछ बढ़िया चिकने कागज़ थे दूसरे के हाथ में शरबत और फल थे। तीसरा सोने की शानदार तस्तरी में गुलाब जलसे तर किसमिशें लिए हुए था।

सुजानसिंह ने आश्चर्य से सब चीजों की ओर देख कर कहा-जरूरत से ज़ियादा कोई चीज़ न लूंगा।

खोजे चले गए। मुस्तफा भी चला गया। कमरे के द्वार में मजबूत लोहे का ताला बन्द कर दिया गया।

सुजानसिंह खिड़की से प्रकृति दृश्य देख रहे थे। जहां तक दृष्टि जाती थी, बादशाह की ही राजधानी नज़र आती थी। उसी का आलोक था। प्रकृति देवी को नमस्कार कर 'गुलशन बाग, उसी के अधिकार की घोषणा कर रहा था। सुजानसिंह की दृष्टि आकाश की ओर जा पड़ी। वर्षा से धुली हुई स्वच्छ चांदनी प्रेमिक के नीरव प्रेम की तरह शान्त थी।

सुजानसिंह कवि न थे, किन्तु यह दृश्य देखते ही वे अपनी दिली दशा भूल गए। वे चित्रकार थे। लेखनी लेकर चित्र खींचने में तल्लीन होगए।

प्रातःकाल स्वयं बादशाह सुजानसिंह से मुलाकात करने आए। कुशल प्रश्न करते ही सुजानसिंह ने कहा-"कैदी की कुशल पूंछना एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात है। क्या आप सभी अभागे कैदियों से मेरी ही तरह कुशल पूंछते हैं?"

बादशाह ने कहा—"यह मेरी इच्छा पर निर्भर है।

"इस से तुम्हें क्या काम है?॥

"लाभ यही है कि इस प्रश्न के उत्तर पर मेरा भविष्य निर्भर है।

सुजानसिंह! अब मैं अंतिम बार तुमसे पूंछने आया हूँ।

"बेगम महल के गुलाम बनोगे?

सुजानसिंह क्रोध से कांपने लगे। बोले-"क्या हमारा अधःपतन देख कर तुम ऐसे बेतुके प्रश्न कर रहे हो? बादशाह हम क्षत्रिय जाति के हैं। युद्ध में शत्रुओं की छाती में छुरी घुसेड़ते हैं। हिंसक व्याघ्र की भांति शत्रुओं को खा जाते हैं।

बाद०-'इतना गर्व!

सुजान० " हां, इतना गर्व! मैं जातीय गर्व के नशे में चूर हूँ। मुझे इस स्थान पर लाकर तुम्हारा प्रयत्न वैसा ही है जैसा कि एक बौने का धधकते हुए सूर्य के गोले को छूने का प्रयत्न! बादशाह! याद रक्खो, इस क्षत्रिय-मार्तण्ड को छूकर तुम खाक हो जाओगे। तुम जयी हो, एक राज्य के अधिपति हो, यहां तुम्हारी जो इच्छा हो कर सकते हो; किन्तु मेरा भी एक राज्य है। वह राज्य ऐसा वैसा नहीं, हृदय राज्य है। मैं उस राज्य का अधीश्वर हूँ। उसे मिट्टी में मिलाने की कोशिश न करना, नहीं तुम्हारे हक में बड़ी खराबी होगी।'

सहसा सुजानसिंह के हाथ से एक चित्र छूट कर ज़मीन में गिर पड़ा। बादशाह ने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस चित्र को हाथों में लेकर देखा बड़ा ही सुंदर चित्र है संध्या का समय है, एक मुसलमान बालिका के साथ सुजानसिंह काञ्चन पहाड़ पर बैठे हैं। नीचे चित्र परिचय में लिखा है 'स्वार्गीय प्रेम"।

बादशाह क्षण भरके लिए मौन होगए। तत्पश्चात एक दीर्घ निश्वास फेंक कर कहा—सुजानसिंह यह मुसलमान बालिका तुम्हारी कौन है ?

सुजानसिंह ने उन्मत्त भाव से कहा—"यह मेरी हृदयमणि है। यह मुसलमान बालिका कैसी अपूर्व सुन्दरी है ! रक्तवर्ण जवाकुसमों के बीच खिली हुई सुकुमार जुहीकी भांति ! महा समुद्र की नील राशिके ऊपर अवतीर्ण हुई उषा की भांति ! जानेदो आज मैं अपनी बीती बातों को एक मधुर स्वप्न मात्र समझ कर सन्तोष करता हूँ। यह प्रेम का समय नहीं, युद्ध का समय है।

बादशाह ने कहा-"अभागे कैदी !! मैं तुम्हारे वीरत्व की तारीफ़ करता हूं। इस बलिका के साथ तुम्हारा कैसा सम्बन्ध है ? क्या यह सम्बन्ध बड़ा घनिष्ट है ?

बादशाह की ओर क्रोध भरी दृष्टि से निहारते हुए सुजानसिंह ने कहा--"मूर्ख ! तुम घनिष्ट सम्बन्ध किसे कहते हो ?"

बादशाह ने गंभीर स्वर में कहा-"मुसलमान बालिका कभी भी काफिर की प्रणयाकाङ्क्षिनी नहीं हो सक्ती।"

सुजानसिंह कड़ककर बोले-क्या काफिर मनुष्य नहीं होते ? महत्व में वीरत्व में, प्रेम में, क्या स्त्री जाति को अपनी ओर नहीं खींच ले सकते।"

बादशाह—किन्तु—"

बात काट कर सुजानने कहा-"हम लोग बालकपन से ही शिकार खेलना सीखते हैं। युद्ध करना सीखते हैं। पर धोखा देना नहीं सीखते हम जो कहते हैं, उनमें एक ही अर्थ होता है--किन्तु की आवश्यकता नहीं पड़ती।"

बादशाह ने कहा-'तुम एक पहेली हो।

सुजानसिंह ने कहा—'तुमने अपना छोटा सा दिल लाखों दूरों में बांट रक्खा है। वह अपूर्ण है। अपनी प्रेमिका का मैं ही एक मात्र पात्र हूं प्रतिज्ञा कर चुका हूँ-स्वप्न में भी दूसरी स्त्री का मुख न देखूंगा -यदि भूल से देख भी लूंगा - तो उसे अपना विशाल दिल न समर्पण न करूंगा"

सुजानसिंह की बातें बादशाह के दिल में तीर की तरह लगीं उसने दीन भाव से कहा--'सुजानसिंह ! मैं क्षत्रियों की प्रतिज्ञाऐं जानता हूँ। क्षत्रिय जाति वीरशिरोमणि है। किन्तु जानते हो ?"

सु०-"क्या ?"

बादशाह०--"यही कि मैं बादशाह हूँ। मेरे उद्दण्ड प्रताप के सन्मुख शत्रु मित्र सभी के मस्तक झुके हैं। यह सच है, कि मैंने अपना छोटा सा दिल लाखों घरों में बांट रक्खा है बादशाह होकर भी मैं प्रकृतिपक्ष में बहुत ही दुखी हूं ?"

सुजान०--'साथ ही मूर्ख भी हो। यदि तुम आज सिंहासन से उतर जाओ तो कल ठीक इसी भांति लोग दूसरे की स्तुति करने लगेंगे तुम्हें कोई भी न पूछेगा। तुम सहस्रों स्त्रियों के स्वामी हो, किंतु कोई भी तुम्हें मुक्त हृदय से नहीं चाहती।

उनका अनुराग सच्चा अनुराग नहीं है बनावटी है।"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बादशाह ने मस्तक झुकाकर कहा--"तुम मुझे क्या आदेश देते हो"

नम्रता से सुजानसिंह ने कहा—व्यभिचार से दूर रहो। विजातियों के प्रति ईर्षा द्वेष न रक्खो छल कपट को हृदय से निकाल दो। हिंन्दुओं जैसा कोमल दिल रक्खो। सच्चा शासन करो। बादशाह! इसी में तुम्हारी विजय है?"

लाखों मनुष्यों के शासक बादशाह अपराधी की भांति घुटने टेक कर सुजानसिंह के सन्मुख बैठ गया। आंसू बहाते हुए बोले "क्षत्रियकुमार! तुम धन्य हो। मैंने तुम्हें बन्दी बनाकर घोर अपराध किया है। मुझे क्षमा करो।"

"क्या करूं?"

"हां क्षमा करो! यदि क्षमा करने की क्षमता न हो मुझे प्राणदण्ड दो। मैं सहर्ष स्वीकार करूंगा।"

सुजानसिंह के रोम २ में प्रेम समा रहा था—मधुर स्वर में बोले "सम्राट! तुमने कोई भी अपराध नहीं किया है। तुम मुझ से घृणा करते थे - उसके कह देने में क्या दोष?"

बादशाह ने कहा--"वत्स! यह घृणा" प्रेमरूप में परिणित होगई है। जब तक रहूँगा--तुम्हें न भूल सकूंगा।"

बादशाह की आंखों में पुनः आंसू भर आए। सुजानसिंह दौड़कर गले से लिपट गया। मानों खारी समुद्र और स्वच्छ आकाश एक दूसरे में लीन थे।

बादशाह ने एक बहुमूल्य सुन्दर अंगूठी देते हुएकहा—"वत्स! यह लो मेरी नामङ्कित अंगूठी! यह मेरा स्मृति चिन्ह है। इसे अपने पास रखना। अन्य भाव से नहीं, बन्धुभाव से ही इस दीन बादशाह को कभी २ स्मरण करते रहना यदि किसी दिन तुम्हें किसी बात की किंचित भी आवश्यकता हो, मेरे पास आना। मैं तुम्हारी समस्त इच्छाएं पूर्ण करूंगा। बन्धु! यही मेरा एकान्त अनुरोध है।"

सुजानसिंह ने आदर के साथ प्रेम-दान ले लिया। बादशाह चले गए।

संध्या समय नमाज़ की पवित्र ध्वनि सर्वत्र गूंज गयी। बादशाह जेल की कोठरी में आए---देखा—कैदी वहां नहीं है। दीपकों की जगमगाती हुई ज्योति, दावानल समान बादशाह का हृदय दग्ध करने लगी। दीवारों में टंगे हुए रंग बिरंगे चित्र मानो बिच्छुओं का सा रूप धारण कर उनके अंग प्रत्यङ्ग में डंक मारने लगे जो कमनीय कुसुम रात दिन बादशाह की तबियत को मस्त बनाते रहते थे—वह फूल आज मानो पैने कांटे बन कर उन्हें नोच रहे हैं। कैसी विचित्र गति है कितना परिवर्तन है! सम्राट पागल सरीखे शय्या पर 'हाय' कर गिर पड़े। वे जीवन में आज तक कभी रोए न थे, किंतु आज उनका सम्पूर्ण गौरव नष्ट हो गया है। आंसुओं के छोटे २ बूंद आंखों से निकल कर उनके कपोलों पर ढुलक रहे हैं। बादशाह की यह दशा देख प्रकृति ने आंखें मूंदलीं। अंधकार छा गया। काली घटाएं फिर आईं।

बादशाह कई बार 'वत्स सुजान' कहकर चिल्लाए किंतु वहां था ही कौन? काञ्चन पहाड़ के छोटे से झरने के किनारे सुजानसिंह नूरिया के गले में हाथ डाले मुस्काते हुए देख रहे थे, झरने का उज्वल शीतल नीर बीच में ही चट्टान से टकरा कर मोतियों सा इधर उधर बिखर रहा है। पास ही कदंब वृक्ष पर चिड़ियां चह-चहा रही हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

'चर्खा'

ले०--रमेशचन्द्र बहुखण्डी 'चन्द्र'

[१]

चरखा भारत का प्राणाधार,
चरखा विना नहीं निस्तार ।
यही भारत का जीवन—सार,
चरखा कातो घर घर द्वार ॥

[२]

चरखा लड़े स्वराज्य की वार,
दूर करेगा सब दुख भार ।
भिड़ेगा शत्रू से हर वार
चरखा कातो घर घर द्वार ॥

[३]

भारत नाव पड़ी मँझधार,
चरखा है उस की पतवार ।
उस बिन लगे न बेड़ा पार,
चरखा कातो घर घर द्वार ॥

[४]

उधर हुई तोप तलवार,
इधर चरखे की तीखी धार,
डरें शत्रु भी देख कराल,
चरखा कातो घर घर द्वार ॥

[५]

तितर तितर हैं मृदुल सु-तान,
स्वतन्त्रता का होता आह्वान ।
सुख मिलता है स्वर्ग समान,
चरखा कातो बनो महान ॥

[६]

लड़ो धर्म पर, सहो न ह्रास,
अत्याचार का करो विनाश ।
उठो! सम्भलो सहो न अपमान,
कातो चरखा करो पुनरुत्थान ॥

[७]

कहते नेतागण हरवार,
हिन्दू मुसलिम मिल करो विचार ।
करो संगठन यहि जीवन-सार,
कातो चरखा घर घर द्वार ॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुसुमोद्यान

१ भारत सचिव की घोषणा

७ जुलाई को भारतसचिव लार्ड बर्किन-हेड ने लार्ड सभा में भारत के सम्बन्ध में घोषणा करते हुए कहा कि भारतीय विधान के बारे में भारत सरकार और बड़ी व्यवस्थापिका सभा से परामर्श किये बिना कोई निश्चय न किया जायगा। द्विहस्ता शासन के गुण दोष उसके फलाफल देखकर ही निश्चय किये जासकते हैं। बलप्रयोग और असन्तोष फैलाने की चालों से हम इस शासन विधान के अनुसार प्राप्त उत्तरदायित्व को कदापि न छोड़ेंगे। परन्तु भारतीय नेताओं के वर्तमान शासन विधान का यथासम्भव अधिक से अधिक उपयोग करने में सहयोग की सच्ची" अभिलाषा का परिचय देने से शासन विधान पर पुनर्विचार करने के लिए शाही कमीशन की नियुक्ति में शीघ्रता होना सम्भव है। मुडीमैन कमेटी की रिपोर्ट के सम्बन्ध में आपने फरमाया कि सरकार अल्पमत की रिपोर्ट को इस समय स्वीकार नहीं कर सकती। व्यवस्थापिका सभा में विचार हो चुकने के पश्चात् भारत सरकार के मतानुसार मुडीमैन कमेटी की बहुमत की रिपोर्ट पर तुरन्त कार्यवाही की जायगी। बंगाल के दमनकारी कानून के सम्बन्ध में आपने कहा कि ज्यों ही उचित मालूम पड़ेगा बङ्गाल के साधारण कानून ढीले कर दिये जायंगे परन्तु उसके लिए अभी समय नहीं आया है।

२ कांच के घर

अमेरिका के कांच के कारीगर अपारदर्शी कांचके घर बनानेका विचार कर रहे हैं। अपारदर्शी शीशे सस्तेदामों में बहुतायत से बनाये जासकते हैं यह उनका दावा है।

एक व्यापारिक पत्र में एक लेखक लिखता है "कांच के घरों का यद्यपि ईंटों से तो निशाना नहीं बताया गया परन्तु बहुत से लोगों के उपहास का लक्ष्य यह अवश्य रहे हैं। इसके साथ यह विचार अवश्य रहा है कि इसके भीतर की प्रत्येक वस्तु आने जाने वालों को दिवारों से ही दिखाई देती रहेंगी और इसमें रहने वाले कभी भी अपने कपड़े न उतार सकेंगे। इन गृहों के लिये कांच की ईंटे एक इन्च का आठवां हिस्सा मोटी ३० इञ्च चौड़ी और ९ फुटलम्बी बनायी जासकी है। अपारदर्शी शीशे की यह ईंटें भिन्न २ रंगों की बनाई जा सकेंगी।

लेखक का कथन है कि इन कांच के घरों की नींव सीमन्ट की होगी और ऊपर का ढांचा लकड़ी का होगा गरमी और सर्दी से बचाने के लिये इन घरों की दीवारें दुहरी होंगी जिन के बीच में हवा घूमती रहेगी यह भी कहा जाता है कि इस पर आरम्भ में जो ख़र्च आवेगा वही इसका सारा व्यय होगा क्योंकि मरम्मत की आवश्यक्ता बहुत कम होगी।

पुराने रोम निवासी तथा युनानियों का धन वैभव।

सिरासस के पास २५,५००,००० करोड़ रुपये की स्थायी सम्पत्ति तथा इसी के बराबर की सम्पत्ति नक़द रुपये दास दासियें तथा घर के सामान के रूप में थी। दार्शनिक सैनिकों की सम्पत्ति ५,२५००,००० करोड़ रुपये थी। इतने धन का स्वामी भी दार्शनिक हो सकता है। यह आश्चर्य्य है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

टाइबीरियस मृत्यु के पश्चात ३५,४३७,५०० करोड़ रुपये छोड़ गया था जोकि कैलिग्युला ने १२ महीने के अन्दर ही अन्दर ख़र्च डाले।

वस्पैसिअन जब राज का उत्तराधिकारी बना तब उसने राजव्यय का ५२,५००,००० करोड़े रुपये का अन्दाज़ा लगाया। मिलों का ऋण ६०००,००० लाख रुपये तक पहुंचा था। सीजर किसी उच्च पदाधिकारी होने के पूर्व ही ४,४६२,५००० करोड़ रुपये का मालिक था। उस ने क्वोरिओ की मित्रता ७५००००० लाख रुपये और लूसिअस पालस की ४५००००० लाख रुपये में मोल ली थी। उसने सार्वजनिक कोष में से २२०,५०००,००० करोड़ रुपये लुटा दिये।

वेपियस ने ७५००००० लाख रुपये फ़जूल व्यय किये फिर अपने हिसाब किताब की जांच से उसे पता लगा कि अब उस के पास केवल १२००००० लाख शेष हैं। तब वह अपने गुज़ारे के लिये इतने धन से असन्तुष्ट होकर विष खाकर मर गया।

जूलियस सीजर ने ब्रूटस की माता सर्विल को एक मोती ६००००० लाख रुपये का उपहार में दिया। क्लिओपैटरा ने ऐन्टनी को एक दावत में ६००००० लाख का एक मोती सिरके में घोल कर दिया, जोकि उसने पी लिया। क्लाडियस जोकि टइसापस ऐकृर का लड़का था एक मोती १२०००० लाख का निगल गया।

इसापस के एक विशेष भोजन की एक रकाबी का मूल्य १२०,०,००० लाख रुपये था। कैलिग्युला एक वक्त के भोजन के लिये १२००,००० लाख और हैलिओगेबलस ३००,००० लाख व्यय करता था। ल्यूकूलस एक प्रहर का भोजन ३०००,०० लाख में होता था, और उस के ताल की मछली की कीमत ५२५,००० लाख रुपये होती थी।

४. गत महायुद्ध की सफलता।

न्यूयार्क के पादरी एडटन ओलढम ने लण्डन के प्रसिद्ध गिरजा वेस्ट मिनिस्टर ए बी में उपदेश देते हुए कहा:—

इंग्लैण्ड अपनी आर्थिक गड़बड़ अपने लाखों बिना काम पर लगे हुए मनुष्यों, अपने असह्य टैक्सों, दुखदायी मृत्यु संख्या, करोड़ों घरों कि जिन में रोना मचा हुआ हो, और अपने अनिश्चित भविष्य के साथ संसार में एक विजेता राष्ट्र का बड़ा आश्चर्यजनक उदाहरण दिखलाता है। एक बड़ा सरल तत्व है जिस को हम प्रायः भूल जाते हैं। वह यह है कि आज कल के संसार में जिसमें कि संसार की भिन्न २ जातियां सहस्रों बन्धनों से एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं विश्वव्यापी युद्ध से संसार इस की सुव्यस्थित आयोजना का उथल पुथल होजाना अवश्यम्भावी है। इसी लिये कोई भी जाति अपने को विजेता नहीं कह सकती। विजेता और विजित शारीरिक दुःखों और मानसिक तथा आत्मिक कष्टों की इतनी गहरी खाई में गिर पड़ते हैं कि मनुष्य जीवन के वास्तविक तत्वों को ध्यान में रखते हुए यह कहना अति कठिन हो जाता है कि कौन विजयी है और कौन पराजित। आधुनिक युद्ध में कोई विजेता नहीं होसकता। उस उच्च आदर्श को ध्यान में लाने पर जिस के निमित्त यह सैनिक युद्ध में सम्मिलित हुए थे इन की असफलता और भी तीव्र हो जाती है। इन में से कुछ तो केवल देशभक्ति के भाव से प्रेरित होकर युद्ध में गये थे कुछ अपने घरों तथा अपनी बहू बेटियों की मानरक्षा के

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

निमित्त, परन्तु अधिकांश इस से भी उच्चतम भाव से प्रेरित होकर युद्ध में सम्मिलित हुए थे। उन का उद्देश्य संसार को आने वाली सन्तानों के लिये अधिक पवित्र और अधिक रहने योग्य बनाया था। इंग्लैण्ड ने एक ऐसा देश बनना था जोकि वीरों के रहने योग्य हो।" अमरीका इस लिये युद्ध में सम्मिलित हुआ था कि वह "युद्ध की विजय का अन्त कर देगा"। आज इनकी विजय कहां है"

इस उपदेश पर टिप्पणी करता हुआ लीडर लिखता है:—इस प्रकार की एक या दो और विजय मित्र-राष्ट्रों का—जिन्होंने कि गत युद्ध में जय प्राप्त की थी—अन्त और योरोपीय सभ्यता का नाश कर देंगे और इस के अतिरिक्त संसार में प्रलय ला-देंगे। शक्ति की उपासना ने प्रत्येक स्थान पर मानव यातना को अधिक विषय तथा जीवन के साधनों को बहुत कण्टकमय बना दिया है। इस ने वैमनस्य और कलह का बीज बोया है और बो रहा है। परन्तु इतना होने पर योरोपियन जातियां शक्ति पर ही सब से अधिक विश्वास रखती हैं; आज कल गत युद्ध के पहिले की अपेक्षा कहीं अधिक सैनिकगण विद्यमान हैं और यह जब कि जर्मनी की सैनिक शक्ति का सर्वथा नाश होचुका है। वे शान्ति की बातें करती हैं और युद्ध की तैयारी। कितनी ही जातियों को केवल आर्थिक निर्बलता ही इस ओर पग बढ़ाने से रोक रही है, परन्तु युद्ध की लालसा पहिले की अपेक्षा कहीं प्रबल है। जब तक इसको उच्चतम भावों से दबाया नहीं जाता भिन्न २ राष्ट्रों का पुनः प्राप्त उत्साह और उद्योग संहारक शक्ति प्राप्ति के मद में बह कर फिर भी नाश करने को उतारू हो जायगा। शक्ति संहार करता महेश की सहचरी है।

५. प्राचीन भारत और भवन निर्माण

अब तक हमें इस बात का आश्चर्य होता है कि मिश्र, भारत और अन्य देशों में बड़े २ मन्दिरों तथा अन्य अट्टालिकाओं की चोटी पर किस प्रकार कारीगर लोग बड़े २ पत्थरों को चढ़ाकर ले गये। पुरातन विज्ञान वेत्ताओं को अब इस विषय का कुछ २ ज्ञान होने लगा है। मदरास प्रांत के तंजौर नगरमें एक बहुत ही सुन्दर मन्दिर है जो कि २१६ फीट ऊंचा है, इसकी १४ मंजिल हैं। यह एक बहुत ही प्रभावशाली देवालय है और दक्षिण भारत में सब से बड़ा गोपुरम है। परन्तु इस गोपुरम का सबसे आश्चर्यजनक भाग एक बहुत बड़ा पत्थर का गोला है जो कि इसकी चोटी पर स्थित है और जिसका कि बोझ २२४० मन के लगभग है। यह एक पत्थर का बना हुआ है। एक प्रश्न है जो इसके सम्बन्ध में कई बार किया जाता है यह है कि किस प्रकार इतना बड़ा पत्थर इतनी ऊंचाई पर ले जाया गया। कितने ही भारी पत्थरों के विषय में अनुमान किया जाता है कि जितने २ मन्दिर अथवा भवन तैयार होते गये उतना २ ऊंचा उनको भी साथ २ लेते गये। यह सम्भव है लेकिन तंजौरवाले भारी गोले के विषय में एक और विधि का अनुमान किया जाता है। यह कहा जाता है कि यह पत्थर सरापलम ग्राम से जो कि ४मील की दूरी पर है लाया गया था वहां से यह एक तिर्य्यक धरातल(Inclinedplain) (शनैः शनैः ऊपर उठने वाला लकड़ी अथवा लोहे का पथ) द्वारा चोटी तक पहुंचाया गया था। और इस कार्य को करने के लिये बारह वर्ष का निरन्तर परिश्रम व्यय हुआ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

था। इस धरातल को इतना लम्बा करने की आजकल कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती परन्तु जब हम बड़े भारी बोझ तथा उस समय के परिचित साधनों को विचारते हैं तो यह तो यह समझ में आ सकता है कि यह धरातल बहुत ही थोड़ा २ ऊपर को उठा होगा। शोक कि किसी भी प्राचीन चित्रकार का सहस्रों का इस कठिन कार्य्य में लगे हुए निरन्तर परिश्रम करने के समय का चित्र आजकल उपलब्ध नहीं है।

६. जर्मनी में हिन्दी।

देवनागरी—अक्षर आर्य्यावर्त में सब से प्रसिद्ध अक्षर हैं, परन्तु प्रजा इनकी महत्ता को नहीं समझ कर उनके प्रचार में सुस्ती करती है। हमको झूठा अभिमान तो किसी बात का नहीं होना चाहिये परन्तु सत्यता पर श्रद्धा करना आवश्यक है। जरा ध्यान तो दो कि इङ्गलैंड के एक महाविद्वान क्या लिखते हैं:-देवनागरी सर्वोत्तम लिपि है।

मि० आईजड टेलर, एम. ए. लिट डी० प्रौन एल. एल. डी. कैनन (पादरी) यौर्क अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "दीहिस्टरी आफ दी ऐलफेबेट" (अक्षर इतिहास) में लिखते हैं देखो एडीशन २, १८९९ वौल्युम २ पृष्ठ २०२

"यह गम्भीर और सुन्दर अक्षर जोकि लेखों (रिकौर्डेज) में बरते गये हैं (इन लेखों का जब प्राचीन स्तूपों पर हस्तलिखित महान् सिलसिला है) संसार के अक्षरों में अपनी वैज्ञानिक महत्ता के कारण को मुकाबिला नहीं रखते, बड़े सादे, उच्च सम्पूर्ण, यह अक्षर स्मरण करने में आसान हैं तुरन्त पढ़े जा सकते हैं और इनको एक के भ्रम में दूसरा समझना कठिन है यह आवाज की श्रेणी के अनुसार बार कियों को बिलकुल ठीक ढङ्ग से प्रकट करते हैं। इन बारीकियों को संस्कृत व्याकरणकारों ने उस समय की महंती भाषा में, ध्वनि विज्ञान से मालूम किया था उन सब बनावटी अक्षरों में से बढ़कर कोई नहीं।"

आर्य्यावर्त और संसार में देवनागरी अक्षरों की सत्यता और महत्ता को प्रकट करो। इसका असली प्रचार करो। इस बात का आन्दोलन करो आर्य्यावर्त की सब भाषायें देव नागरी अक्षरों में लिखी जाय मराठी तो आज कल भी देवनागरी अक्षर में लिखी जाती है गुजराती और देवनागरी में बहुत थोड़ा भेद है। गुरुमुखी और बंगला इससे बहुत मिलती जुलती है तामिल और तेलगू से इससे काफी मेल रखती है अब केवल उर्दू जोड़ने चाहिये। केवल पंजाब और युक्तप्रान्त के मुसलमान और हैदराबाद दक्षिण के निज़ाम इसको कायम रखना चाहेंगे। परन्तु ३१ करोड़ भारतवासियों में से तीन चौथाई से अधिक लोगों को इन की वैज्ञानिकता बतला कर इनको जातीय अक्षर मानने के लिये तैयार किया जा सकता है। हर हिन्दू को यथाशक्ति प्रचार करना धर्म है इस बात का भी आँदोलन करो निम्न भाषाओं में देवनागरी अक्षर ग्रहण किये जांय चीनी, जापानी, रूसी, फारसी और अरबी इन भाषाओं को बोलने वाली प्रजाओं की क्या आज क्या कल अपने अक्षर छोड़ के कोई और परदेशी अक्षर ग्रहण करने पड़ेंगे। लैटिन अर्थात् रोम अक्षर ग्रहण करवाने का बहुत प्रचार हो रहा है क्या देवनागरी अक्षर की सत्यता प्रकट न की जायगी! यथाशक्ति देवनागरी का प्रचार डोए श्वलांड (जर्मनी) में किया और इंगलैंड में करता हूँ लगभग १०० पुरुषों को वह अक्षर सिखाये। भाषा सिखाने के लिये ठीक पुस्तकें नहीं हैं। जो सज्जन देवनागरी अक्षर और भाषा के विदेशों में प्रचार करने में दिल चस्पी ले व्यवहार करे। सब देवनागरी के प्रेमियों को को चाहिये कि हिंदी के पुराने पत्र और पुस्तकें मुफ्त बांटने के लिये निम्न लिखित पते पर भेजें। प्रोफेसर अहलुवालिया गोपालजी-वर्तमान (आर्य्य जगत)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैज्ञानिक संसार

१. जलने पर शरीर में छाले क्यों पड़ जाते हैं।

शरीर के जिस भाग को साधारणतया त्वचा के नाम से पुकारते हैं वह केवल चर्म की एक पतली सी झिल्ली मात्र होती है। वास्तविक त्वचा इसके नीचे रहती है। इन दोनों के बीच एक तरल पदार्थ रहता है जिसका एक काम शरीर के अंगों को चिकनाहट पहुंचाना है। जिस प्रकार किसी मशीन के पुर्जों को ठीक २ चलता रखने के लिये तेल देने की आवश्यक्ता रहती है इसी प्रकार शरीर के अंगों का हिलना जुलना और उनकी गति को ठीक रखने के लिये यह स्निग्ध पदार्थ तेल का काम देता है।

जब बाहर की झिल्ली में जलने, चोट लगने अथवा अन्य किसी कारण से तीव्र दाह पैदा होता है तत्काल नसों द्वारा सहायता की याचना रूप संदेश भेजा जाता है। जिसका फल यह होता है कि यह तरल द्रव्य तुरन्त पीड़त स्थान पर पहुंच उसे चारों ओर से घेर लेता है तथा शरीर के अन्य भाग से अलग कर देता है। इस तरल द्रव्य के स्थान पर अधिक मात्रा में एकत्र होने से बाहर की झिल्ली फूल जाती है और छाला पड़ जाता है। इसका प्रमाण यही है कि यदि छाले में सूई से छेद किया जाय तो यह तरल पदार्थ बाहर निकल आता है।

२. पक्कानों की छतों पर लोहे की सपाट चादरें क्यों काम में नहीं लाई जातीं।

कई स्थानों में और विशेष कर पहाड़ों पर मकानों की छतों पर लोहे की चादरें डालने का रिवाज है। यह सीधी सपाट लोहे की चादरें नहीं होतीं वरन इनमें दोनों ओर कोई दो तीन इन्च चौड़ी नालियां सी बनी रहती हैं। सपाट चादरों की अपेक्षा मकानों की छतों के लिये इन तीन नालीदार चादरों का ही क्यों अधिक प्रयोग किया जाता है। इसके कारण हैं:—

(१) लोहे की चादर—नालिकामय बनाने के लिये दबाये जाने से अधिक कड़ी और मज़बूत हो जाती है। इस कारण इसके नीचे सहारा देने के लिये थोड़ी कड़ियों की आवश्यक्ता होती है। यदि सपाट चादर को इतनी थोड़ी कड़ियों पर ठहराया जाय तो वह बीच में से झुक जाती है।

(२) ज्येष्ठ आषाढ में सूर्य की कड़ी धूप के ताप से--चाहे कितनी भी थोड़ी मात्रा में हो-धातु के बने पदार्थ फैलते हैं और यह लोहेकी चादरें पतली होने के कारण अधिक फैलती हैं। इस फैलने से नालिकामय चादरों की नालियां ही अधिक गहरी अथवा ऊंची हो जाती हैं और इसका प्रभाव नीचे कड़ियों पर कुछ नहीं पड़ता। यदि चादर सपाट हो तो फैलने में कड़ियों पर अवश्य ज़ोर पड़ेगा और वह हिल जायेंगी अथवा कीलों के स्थान से फट जायेंगी।

३ वर्षा का जल इन नालियों द्वारा बड़ी सुगमता से बह जाता है इस लिये पहाड़ों पर जहां प्रतिदिन वर्षा होती रहती है यह नालिकामय चादर ही काम आती हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

३. प्राकृत वायु-भार-मापक यन्त्र

हम चारों ओर से वायु से घिरे हुए हैं। यद्यपि हम इसे देख नहीं सकते तो भी यह स्थूल पदार्थ है। स्पर्श द्वारा हम इस का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इस में भार भी है अतः हम इसे तोल भी सकते हैं। ज्यों २ हम आकाश में ऊपर चढ़ते जायं वायु का भार कम होता जाता है। वायुमण्डल कितने ही मील की ऊंचाई तक आकाश में फैला हुआ है। वायुमण्डल में वायु के परमाणु एक दूसरे से मिले हुए हैं अतः ऊपर के परमाणुओं के भार से नीचे के परमाणु दबे रहते हैं। यह परमाणु यद्यपि एक दूसरे से मिले रहते हैं परन्तु इस प्रकार नहीं कि इन में कोई अन्तर न हो और यह एक दूसरे से सटे हों। इन में अन्तर होता है जो कि आकाश Ether से भरा रहता है। यदि किसी वर्तन में वायु हो और उस पर क्रमशः बढ़ता हुआ भार डाला जाय तो वह दबता जायगा, उस के परमाणु अधिक निकट होते जायंगे और उन में लिपटे हुए आकाश की मात्रा कम पड़ती जायगी तथा उस वायु का घनफल भी कम होता जायगा। जो वायु पहिले एक सेर भर के वर्तन में समाता था अब वह आध सेर अथवा इस से भी कम के वर्तन में आ सकेगा। हम ऊपर बतला चुके हैं कि ऊपर के वायु के परमाणु नीचे के परमाणुओं को अपने भार से दबाते हैं अतः नीचे की वायु भारी और ऊपर की पतली होती है। यदि हम एक ९००० फुट ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जायें तो नीचे की समतल भूमि की अपेक्षा वहां पर एक गिलास वायु का भार कम होगा। वायु के इस भार में आंधी आने से पहिले तथा पीछे भी अन्तर पड़ जाता है, यदि वर्षा आनी हो तो भी यह भार कम हो जाता है। इस वायु के भार को सदा तोल कर जांचना कठिन काम है। अतः इस को मापने के लिये एक यन्त्र विशेष बना हुआ है जिसको कि वायु-भार-मापक यन्त्र के नाम से पुकारते हैं। इस के द्वारा एक मिनट में पता लग जाता है कि किसी स्थान विशेष में तथा विशेष समय में वायु का कितना भार है।

यह तो मनुष्य की कृति हुई। प्रकृति में कितने ही ऐसे पदार्थ हैं जोकि वायु भार मापक यन्त्र का काम देते हैं। वह आनेवाली आंधी तथा वर्षा की सूचना देदेते हैं। समुद्र में एक प्रकार की वनस्पति होती है जिसे 'समुद्र की काई' कहते हैं। यह वर्षा के आने से पहिले कुछ गीली तथा चिपचिपी सी हो जाती है। इसी प्रकार कितने ही पुष्प भी वायुमण्डल की अवस्था से प्रभावित होते रहते हैं। स्काटलैण्ड पिम्परनल नाम का एक फूल तो इतना प्रभावित होता है कि इसे निर्धन का वायु भार मापक कहा जाता है। कुछ अंग्रेज़ी फूल—जैसा कि क्रोकसिज़, डैन्डीलियन्ज़, अनीमोन्ज़ और बुडसारल—ऐसे हैं जो कि वर्षा के आने से पहिले बन्द हो जाते हैं। फस्काने एक और फूल है जो कि खुला मौसम होने पर स्वयं भी खुला रहता है और वर्षा, आंधी इत्यादि के कारण 'गन्दा' मौसम होने पर बन्द हो जाता है।

जर्मनी और स्विटजरलैण्ड में एक विचित्र प्रकार का वायुभारमापक यन्त्र बनाया जाता है जिस का कि सम्बन्ध मेन्ढक के स्वभाव से है। एक बोतल को आधा पानी से भर देते हैं। बोतल की गर्दन से पानी को छूता २ एक जीना बना देते हैं जिस में कितनी ही सीढ़ियां होती हैं। अब इस बोतल में एक हरा मेन्ढक डाल देते हैं। यदि यह मेन्ढक बोतल के पेंदे पर अथवा उस के निकट रहे

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तो मौसम बड़ा खुला रहेगा, परन्तु जब यह पानी से बाहर सीढ़ियों पर आकर बैठ जाये तो समझना चाहिये कि धुन्ध, सरदी, वर्षा इत्यादि आने वाले हैं।

४ स्ट्राबैरी में स्वास्थ्य

एक डाक्टर का कहना है कि स्ट्राबैरी साल के बारहों मास मिलती रहे और आलू की भांति खाने की साधारण वस्तु बनजाये तो उस के कार्य्य का सत्यानाश हो जायगा।

स्ट्राबैरी केवल एक रसीला और स्वादिष्ट फल ही नहीं है, यह एक बड़ी लाभदायक औषधि भी है। स्ट्राबैरी में लाईम (चूना), फास्फेट, क्षारीयऔर खनिजलवण, लोह, मैग्नीशियम तथा एक विशेष प्रकारकी चीनी रहती है और यह सब पदार्थ ऐसे उचित अनुपात में विद्यमान हैं कि पूरा २ लाभ करते हैं।

स्ट्राबैरी वाय के दर्द तथा गठिया और जोड़ों के दर्द के लिये औषधिरूप है। इसका कारण यह है कि इस में एक विशेष प्रकार के लवण (Salycilic salts) रहते हैं जो कि वात रोग में बड़े लाभकारी हैं। इसी कारण से योरुप में वात रोग की चिकित्सा के लिये ऐसे चिकित्सालय खोले गये हैं जिन के पास मीलों लम्बे चौड़े स्ट्राबैरी के उद्यान हैं। स्ट्राबैरी रक्त की कमी के लिये भी रामबान है।

स्ट्राबैरी में जो चीनी रहती है वह इतनी बलवर्धक है कि यदि इस में इस चीनी के अतिरिक्त और कुछ भी न हो तो भी इस फल की गणना एक बड़े उपयोगी औषधीय फलों में की जायगी। कुछ व्यक्तियों को इस फल के सेवन से खुजली होजाती है, इसका कारण उपरोक्त लवण विशेष है। ऐसी अवस्था में इस फल का न सेवन करना ही अच्छा है। स्ट्राबैरी के पौदे आलू की भांति पंक्तियों में लगाये जाते हैं और तीसरे अथवा चौथे वर्ष नये पौदे लगाने पड़ते हैं। फल के रूप में बेचने के लिये यह डंडी समेत तोड़ी जाती है। इस का मुरब्बा भी डाला जाता है जो यद्यपि इतना गुणकारी नहीं होता जितना कि ताजा फल परन्तु बड़ा स्वादिष्ट होता है।

५ कष्टप्रद धुन्ध

हमारे पाठकों ने धुन्ध अथवा धूमिका का अनुभव अवश्य किया होगा। वैसे तो यह सभी स्थानों पर कष्टप्रद होती हैं परन्तु बड़े २ नगरों की धुन्ध विशेष रूप से कष्टप्रद होती है। कई वार यह इतनी गहरी होती है कि आमने सामने से आते हुए आदमी एक दूसरे को देख नहीं सकते और आपस में भिड़ जाते हैं। नगरों की धुन्ध एक और प्रकार से भी कष्ट देती हैं। इस में चलने फिरने से आंखों मे से पानी निकलने लगता है और उन में बड़ी पीड़ा होने लगती है।

नगर तथा बाहर जंगल अथवा ग्राम की धुन्ध में यह भेद क्यों? इस का कारण यह है कि नगरों में धुन्ध जल के कणों तथा कोयले और मट्टी के बारीक २ टुकड़ों और अन्य समल पदार्थों के मेल से बनी होती है। हमारे वायुमण्डल में भिन्न २ स्थानों पर ताप की भिन्नता के कारण धुन्ध उत्पन्न होती है। इस जलकणों के ऊपर और त्वचा की भांति कोयले तथा मट्टी के नन्हे २ कण लिपट जाते हैं! लण्डन और माञ्चैस्टर की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

धुन्ध की तीव्रता का यही कारण है। अन्दाजा लगाया गया है कि इन नगरों की धुन्ध में फई मन यह नन्हे २ कोयले और मट्टी के टुकड़ेरहते हैं।

इन मलों पर जल की क्रिया होने से एक प्रकार का रसायनिक द्रव्य पैदा होता है जिस के हमारी आंखों में लगने से वह वेदना होती है जिससे नगर निवासी भली प्रकार परिचित हैं। साथ ही हमारे गले और नाक पर भी इस का बुरा प्रभाव पड़ता है। गला पड़ जाना और नाक से पानी बहना इसी का फल है।

विचार प्रवाह

सिक्खों की सफलता।

गत तीन चार वर्ष से पंजाब में सरकार और सिक्खों में गुरद्वारों के सम्बन्ध में जो घोर युद्ध छिड़ा हुआ था उसका अन्त हो गया। पंजाब व्यवस्थापक सभा में अकालियों के प्रतिनिधि द्वारा पेश किया गया गुरद्वारा बिल पास होगया। हिन्दू मुसलमान, सिक्ख, और सरकारी सदस्य सभी ने इसके पक्ष में सम्मति दी। इसके अनुसार सिक्खों को अपने गुरद्वारों का जाति की इच्छा के अनुसार प्रबन्ध करने का अधिकार मिल गया। पंजाब में जितने गुरद्वारे हैं उनको दो भागों में बांटा गया है। पहिले में वह गुरद्वारे हैं जिनको आरम्भ से ही सिक्ख-गुरद्वारा मान लिया गया है और दूसरे में वह जिन पर उदासी, निर्मल तथा सहजधारी सिक्खों का अधिकार स्वीकार किया गया है। यदि इन दोनों फिरकों में से किसी को किसी गुरद्वारे विशेष के एक अथवा दूसरे विभाग में रखे जाने में आपत्ति हो तो वह कचहरी में जाकर फैसला करवा सकते हैं। सिक्ख गुरद्वारों के प्रबन्ध के लिये सिक्ख एक समिति बनायेंगे जिन में से चुनाव द्वारा एक कार्य कर्त्तृ सभा बनाई जायगी। यदि किसी को इन गुरद्वारों की सम्पत्ति सम्बन्धी प्रबन्ध के विषय में कोई विरोध अथवा आक्षेप हो तो हाई कोर्ट उसका फैसला देगी। सिक्ख इस बिल से सन्तुष्ट हैं, यद्यपि निर्मले, उदासी और सहजधारी सिक्ख असंतोष प्रगट कर रहे हैं। परन्तु सिक्खों की इन दोनों उपश्रेणियों का यह घर का मामला है। आशा है समय पाकर स्वयं ही इस का संतोष जनक फैसला हो जायगा। हम अपने सिक्ख भाइयों को इस सफलता के लिये हार्दिक बधाई देते हैं! उन्हों ने अपने धार्मिक स्थानों की रक्षा के निमित्त जो कष्ट तथा वेदनायें सही हैं और फिर भी अपने आन्दोलन को शान्तमय पथ से विचिलित नहीं होने दिया यह उनके तथा भारत के इतिहास का एक जाज्वलन्त पन्ना रहेगा। सरकार का इतना कड़ा विरोध होने पर भी इतना सयंम, इतनी धीरता, और इतनी वीरता का परिचय देना सत्याग्रह के व्यवहारिक तथा सफल होनेका पर्याप्त प्रमाण है। और सत्याग्रह संग्राम की कृतकार्यता का ऐसा उत्तम उदाहरण पेश करने के लिये हमारे अकाली भाई हमारे धन्यवाद के पात्र हैं। उन्हों ने सिद्ध कर दिया है कि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

महात्मा गांधी ने जिस सत्याग्रह रूपी युद्ध पद्धति का आदेश किया है वह केवल काल्पनिक ही नहीं वरन् सर्वथा व्यवहार योग्य है। अस्तु। हम कौन्सल के मुसलमान सदस्यों को भी बधाई देते हैं कि इस समय उन्होंने गुरुद्वारा बिल को जिसका कि उनपर अथवा उनकी जाति पर किंचित भी प्रभाव नहीं पड़ता सिक्खों की इच्छा के अनुकूल पास होने में सहायता दी, चाहे उन्होंने अब भी, पूर्ववत सरकार और मियाँ फज़ल-हुसैन के इशारे से ही ऐसा किया हो। सरमैल्कम हेली की सरकार भी बधाई की पात्र है क्योंकि प्रातःकाल का भूला यदि सायं काल को घर लौट आये तो उसे भूला नहीं कहते की युक्ति पर कार्य करते हुये उसने दमन नीति को त्याग अपनी भूल को कार्यरूप से स्वीकार कर सिक्खों को उनके अधिकार देने का साहस किया है। आशा है कि झूटे राज अभिमान से मुक्त हो सिक्ख कैदियों के छोड़ने में भी वह साहस और नीति से ही काम लेगी।

अपने सिक्ख भाइयों से इस सफलता के समय में हम एक प्रार्थना करना चाहते हैं। उनको अपना ध्येय प्राप्त हो गया है। समूहरूप से वह आज अधिक शक्तिशाली है। हम चाहते हैं कि इस शक्ति के उपयोग में वह न्याय परता को हाथ से न जाने देंगे। जो अधिकार आज इन्हें मिले हैं वह पहिले दूसरों के हाथ में थे। हम केवल यही चाहते हैं कि वह इन अधिकार-च्युत अपने भाइयों से उदारता से पेश आवेंगे, और अधिकार छिन जाने पर इन्हें जो दुःख हुआ है उसकी तीव्रता को कम करने का यत्न करेंगे। यह सफलता इन्हें नम्रता की ओर ले जाय अहंकार की ओर इनी यही हमारी हार्दिक अभिलाषा है।

भारत सचिव से भारत की आशायें

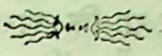

भारत के नये सचिव लार्ड बर्कनहैड से हमने जो आशायें लगा रखी थीं वह पूर्ण हो गईं। उन्होंने बतला दिया कि वह भारत के लिये क्या करना चाहते हैं। हमारी मानसिक दासता की भी कोई सीमा नहीं। अनेक वार परीक्षण करने पर भी हम यही समझ लेते हैं कि बिना योग्यता प्राप्त किये ही हमें अधिकार प्राप्त हो सकते हैं। लार्ड रैडिंग अवकाश ले इंग्लैण्ड गये और हमारे समाचारपत्रों को एक विषय मिल गया। रायटर की कृपा से नित नये समाचार प्राप्त होने लगे। यदि एक दिन लार्ड बर्कनहैड से लार्ड रैडिंग की भेंट सम्बन्धी तार आता है तो दूसरे दिन यह कि जिन विषयों पर वार्तालाप हुआ उनका ढांचा तैयार हो गया। सारे देश की दृष्टि लण्डन की ओर लग गई। एक समय आया कि एक गोरे पत्र के अंग्रेज़ी सम्वाददाता ने किसी प्रकार लार्ड द्वय के हृदय में प्रवेश कर यह जान लिया कि वह किस निश्चय पर पहुंचे हैं। इसके प्रकाशित होने पर भारत को पता लग गया कि हमारे बड़े लार्ड भारत को कोई अधिकार दिलाने नहीं गये वरन् जो कुछ मिस्टर मान्टेगू की असावधानी से मिल चुका है उसे भी वापिस लेने की सम्मति देने। इस सम्वाद दाता के बिना तार की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तार के अनुसार १९२९ तक स्वराज्य की ओर पग उठाया न जायगा और कि अंग्रेज़ी सरकार अपने पूरे बल से क्रांतिकारी आंदोलन को कुचल देगी। इन दोनों से बढ़कर यह समाचार था कि सरकार ने उपकार के भाव से भारत में शांति स्थापन का जो उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले रखा है उसे वह किसी भी अवस्था में त्याग न करेगी।

जब समस्त संसार में यह आघोषित हो चुका है कि भारत के भाग्य विधाता क्या करना चाहते हैं तो अंग्रेज़ी सरकार की ओर से यह प्रकाशित किया गया कि लार्ड बर्कनहैड लार्डसभा में अपना वक्तव्य कह सुनायेंगे। बस फिर क्या था, समस्त भारत सब काम काज छोड़ कर चातक की न्याईं इस कथन की ओर ध्यान लगा बैठा। जिस दिन भारत सचिव ने अपना भाषण देना था; इतनी उत्कण्ठा थी, कि सारा भारत समाचारपत्रों को उठा २ पढ़ने लगा मानो उसे स्वराज्य मिलने वाला है। साधारण पुरुषों का तो कहना ही क्या है देश के बड़े २ नेता भी भ्रम में आगये। महात्मा गांधी को दारजिलिङ्ग में श्रीयुत देशबन्धु दास के विचारों को भली भांति जानने का अवसर मिला जिनको कि वह अब अपने देशवासियों तक पहुंचा रहे हैं। महात्मा जी एक लेख में लिखते हैं कि देशबन्धु को यह आशा थी कि लार्ड बर्कनहैड अवश्य भारत के लिये कुछ करेंगे। महात्मा जी इस से सहमत न थे। उन्होंने कहा कि इतिहास बतलाता है कि इंग्लैंड ने अब तक बिना बाधित हुये किसी को कुछ नहीं दिया, इस समय भारत बहुत शिथिल होरहा है; एक ओर हिंदू और मुसलिम विवाद है तो दूसरी ओर ब्राह्मण अब्राह्मण का झगड़ा, राजनैतिक आन्दोलन शिथिल हो चुका है, ऐसी अवस्था में इंगलैंड से क्या आशा हो सकती है ? इस पर देशबन्धु बोले "महात्मा जी आप युक्ति की बात कहते हैं, मैं आप को अपने दिल की बात कहता हूँ, मेरा हृदय कहता है कि लार्ड बर्कनहैड अवश्य भारत के लिये कुछ करने वाले हैं।" महात्मा जी ने पूंछा कि क्या भारत के समस्त दलों का एक सम्मेलन बुलाया जाय इस पर देशबन्धु ने कहा "अभी नहीं लार्ड बर्कन ह्यड को अपना कथन कर लेने दो ऐसा न हो कि हम वह मांग बैठे जो लार्ड महोदय न दे सकते हों अतः जो वह देना चाहते हैं वह भी न देसकें" महात्मा जी ने अपने लेख को समाप्त करते हुए यह लिखा है कि यदि इस समय देशबन्धु जीवित होते तो इस समय उन्हें भारत सचिव की इस वक्तृता से अत्यन्त दुःख होता। जब देशबन्धु जैसे प्रसिद्ध नेता जो कि राजनीति जैसे गुह्य रहस्यों से भली भांति परिचित थे; भ्रम में आगये तो साधारण पुरुषों का तो कहना ही क्या ?

लार्ड बर्कन ह्यड जैसे निपुण समझे जाते हैं उनकी वक्तृता भी वैसी ही निपुणता पूर्ण थी इस प्रकार की कि भारत को इसमें एक भी आशा की रेखा दीख नहीं पड़ती और यह हो भी कैसे सकता है जब कि इसमें आशा की कोई झलक थी ही नहीं। ऐसा प्रतीत होता है कि भारत सचिव ने यह वक्तृता भारतवासियों को बहुत देर तक चुप रखने के लिये की है इसका यदि कुछ उद्देश्य हो सकता है तो यह कि भारत को किसी प्रकार की भी आशायें न बांधनी चाहियें। लार्ड बर्कन ह्यड किंचित उन पुरुषों में से हैं जिनका विचार यह है कि भारत

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वासियों को उच्च आशाएं बनाने में भारत-वासियों की हानि है। अतः उन्होंने एक ही बार कह दिया कि जब तक इंग्लैंड में अनुदार दल का शासन है और वह स्वयं भारतमंत्री है भारतीयों को किसी प्रकार की आशा न बनानी चाहिए। लार्ड महोदय ने भारत पर यह बड़ा भारी उपकार किया है। भारतीयों ने अपना आचरण ही बनालिया था कि प्रत्येक अंगरेज अधिकारी के वाक्यों से अपना भविष्य बनाया करते थे अब वह चार वर्ष तो शान्त रहेंगे। परन्तु लार्ड वर्कन ह्याड ने कहा क्या? सबसे बड़ी बात तो उन्होंने यह कही कि वह और लार्ड रैडिंग अभी किसी निश्चय पर पहुंचे ही नहीं अर्थात् इस समय तक समाचार पत्रों में जो कुछ प्रकाशित हुआ है वह सब असत्य है, दूसरी बात उन्होंने यह कही:—

कि अभी परीक्षा नहीं हुई इसलिये यह कहना कठिन है कि दूसरा पग उठाना चाहिए या नहीं। तीसरी बात जो बड़े महत्व की है उन्होंने यह कही कि जब तक स्वराज्य पार्टी के नेता यह स्वीकार करें न कि हम ने बड़ी भारी भूल की है और इस समय तक जिस नीति का हम अवलम्बन करते रहे हैं उसका त्याग करके हम सरकार से सहयोग और सुधारों को कृतकार्य्य बनाने का यत्न करते हैं तब तक इंग्लैंड इस विषय पर विचार करने को उद्यत ही नहीं हो सकता कि स्वराज्य की ओर कोई और पांव फैलाया जाय।

लार्ड वर्कन ह्याड की इस वक्तृता पर किसी ने कहा कि 'खोदा पहाड़ और निकला चूहा', इस पर पंडित मोतीलाल नेहरू ने इस प्रकार संशोधन किया कि 'खोदे दो पहाड़ निकला एक चूहा, इस वक्तृता से समस्त भारत निराश हो गया है। और उसको फिर से यह निश्चय होगया है कि इंगलैंड उस समय तक कुछ न देगा कि जबतक वह बलपूर्वक बाधित न किया जाय। भारत इसका क्या उत्तर देसकता है? महात्मा गांधी ने इस सम्बन्ध में बहुतठीक लिखा है। वह कहते हैं मैं इस समय दुर्बल हूं इसलिये लार्ड वर्कन ह्याडकी वक्तृता का कोई उत्तर नहीं दे सकता परन्तु इस निर्बलता की अवस्था में भी यह जानता हूं कि मेरे देश के लिये विष क्या है और अमृत क्या है? विष को त्यागने और अमृत को ग्रहण करने की शक्ति रखता हूं। महात्माजी ने जो कुछ अपने सम्बन्ध में कहा है वस्तुतः वह समस्त भारत के सम्बन्ध में है। भारत इस समय दीन हीन और निर्बल अवस्था में है, इंगलैंड जो चाहे करे, भारत कोई उत्तर नहीं दे सकता, परन्तु इस अवस्था में भी वह जानता है कि उसके विष क्या है और अमृत क्या है? भारत के इस निश्चय में कि इंगलैंड की दृष्टि में सहयोग का कोई मूल्य नहीं यदि कोई कमी थी तो उस लार्ड वर्कन ह्याड की वक्तृता ने पूरा कर दिया, अन्यथा लार्ड महोदय को इस प्रकार हमारे माडरेट भाइयों को—जिन्हों ने कि सरकार के साथ पूरा सहयोग किया था—इस प्रकार ठुकराना शोभा देता है? अब भारत को निश्चय होगया है कि यदि उसे कुछ प्राप्त होगा तो असहयोग से।

इसका एक प्रमाण और है लार्ड वर्कन ह्याड की वक्तृताओं में एक वाक्य ऐसा था जिस में उन भारतीयों को जो इंगलैंड से कभी भी निराश न होने पर तुले हुए हैं आशा की रेखा दीख पड़ी। लार्ड महोदय ने कहा कि यदि भारत कोई ऐसी राजपद्धति तैय्यार करे जिसे उसका बहु पक्ष स्वीकार करता हो तो इंग्लैंड उस पर विचार करेगा। इस पर इन

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भद्रपुरुषों ने कहना आरम्भ कर दिया कि लार्डवर्कन ह्याड ने स्वराज्य का मार्ग दिखला दिया है। परन्तु इस वक्तृता के एक दो दिन पश्चात् यह प्रश्न कौमन्स सभा में उठा तो भारत सचिव के सहायक लार्ड विन्टरटन ने कहा—कई स्थानों में भारत सचिव के इस वाक्य को ठीक नहीं समझा जारहा है, उन्हों ने यह कोई आशा नहीं बंधाई कि यदि आज ही भारत के लिये कोई राज पद्धति बना कर पेश की जाय तो इंगलैंड उस पर तुरंत विचार करने को तैयार है। उनका आशय तो केवल इतना ही था कि जिस समय भारत की राजपद्धति पर विचार होगा उस समय उसके सामने जितनी भी प्रकार की व्यवस्था आयेंगी उन सब पर वह विचार करने को उद्यत होगा। सर सुरेन्द्र नाथ सरीखे भारतीयों के लिये तो लार्ड विन्टरटन की यह वक्तृता बहुत दुःख दायक होगी परन्तु हमारी सम्मति में सारे भारत को इनका कृतज्ञ होना चाहिये कि इन्होंने किसी प्रकार का भ्रम नहीं रहने दिया। उन्हों ने कह दिया है कि भारत को इंगलैंड से कोई आशा न रखनी चाहिये। हां यदि भारतीय प्रजा इंगलैंड की आज्ञा में रहे और उस पर इस तरह चले जिस तरह इसकी इच्छा है और यदि कमीशन इस परिणाम पर पहुँचे कि भारत को जो अधिकार दियेगये थे उसमें अपने तईं उनके योग्य सिद्ध नहीं किया तो कोई आश्चर्य न होगा, अभी थोड़े दिन हुए पंजाब के भूत पूर्व लाट सर-माइकेल ओडायर ने लंडन के समाचार पत्र टाइम्स में एक लेख लिखा था जिस में उन्होंने स्पष्ट कह दिया था कि भारत में द्विचक्र शासन न होगा, इसकी पद्धति नई बनाई जावेगी। सन्देह होता है कि जिस प्रकार सर माइकेल ने पंजाब में ग्रामीण और नागरिक का भेदभाव उत्पन्न करके इस प्रांत के निवासियों मे एक कभी समाप्त न होने वाले युद्धकी नीव डाली है इसी प्रकार लार्डवर्कन ह्याड सारे भारत मे ग्रामीण लोगों को नगर वासियों से अलग करने का प्रबन्ध करें और ग्रामीण लोगोंके हितका ढोंग रच कर उनको नगर निवासियों से सदा के लिये प्रथक करने कायल कियाजावे। लार्डवर्कन ह्याड का सारा व्यवहार भारत के लिये अतीव शिक्षा प्रद है। शिक्षा यह है कि बल अपने भीतर से मिलता है बाहर से नहीं। भारत ने अर्द्ध शताब्दी तक इंगलैंड पर दृष्टि लगाये रक्खी परन्तु कुछ न बना। १९२०में उसे पहिलीवार यह सूझा कि किसी विदेशी शासन से कुछ मिल नहीं सकता जब तक उसे लेने की शक्ति न हो। यह भाव १९०७ मे भी जब कि बंग विच्छेद का आन्दोलन तीव्रवेग से चल रहा था पैदा हुआ था परन्तु जो नियम इसके तह मे काम करता था स्पष्ट न था। बंगाल ने अंगरेजी सरकार का जितना भी बायकाट किया उसका आधार कोई नियम ही न था अपने असन्तोष प्रकाशित करने के लिये बंगाल एक के पश्चात दूसरा साधन प्रयोग में लाता गया। महात्मा गान्धी को यह श्रेय प्राप्त है कि उन्हों ने असहयोग को एक पूर्ण फिलासफी के रूप मे भारतीयों के सामने रक्खा। महात्मा के असहयोग को आशातीत सफलता प्राप्त हुई और इसका परिणाम यह हुआ कि भारत सरकार को भी १९२१ के अन्तिम मास में महात्मा गान्धी की शर्तें स्थिर करने पर बाधित होना पड़ा। यह सत्य है कि असहयोग चिरकाल तक स्थिर न रहा, इसका कारण यह है कि भारतीयों के चरित्र मे अभी तक वह स्थिरता नहीं आई जो असहयोग सफल बनाने के लिये आवश्यक है। परन्तु इस से यह अवश्य सिद्ध होगया है कि यदि कोई विधि भारत को स्वराज्य दिला सक्ती है तो वह महात्मा गांधी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

का असहयोग है, वह असहयोग जिसका अन्त सविनय नियम भंग है। हम मानते हैं कि इस समय देशकी यह अवस्था नहींकि असहयोग की इस विधिपर आचरण करते हुए सरकार शीश नवासके परन्तु यदि कोई आन्दोलन ऐसा है जो सरकार को भारतीयों के शब्दों पर ध्यान देने पर बाधित करने लगा है तो वह यही है देश बन्धुदास ने सत्य कहा था कि स्वराज्य उस समय मिलेगा जब भारत में यह शक्ति होगी कि वह इंगलैंड को सविनय नियम भग करके दिखला सके।

स्वराज्य पार्टी का उत्तर

१६ जूलाई को कलकत्ते मे अखिल भारत वर्षीय स्वराज्यपार्टी की एक बैठक हुई जिस में यह प्रस्ताव स्वीकार किया गया कि क्यों कि लार्ड बर्कन ह्यड के वक्तव्य से तो कोई समय आसका है जब उसको नये अधिकार देने पर लार्ड बर्कन ह्यड ने भी अपनी पहली वक्तृता को अधिक स्पष्ट करनेकी आवश्यकता अनुभव की है कि एक क्लब मे वक्तृता देते हुए उन्हों ने कहा कि मैंने लार्ड सभा में जो कुछ कहा था वह केवल अनुदार दल काही मत नहीं है वरन् हिन्दुस्तान के सब नैतिक दलों का अनुदार उदार तथा मज़दूर सब ही दल इस बात पर सहमत हैं कि जब तक भारत वर्तमान राजपद्धति क पूर्ण सहयोग द्वारा सफल नहीं बनाता तब तक इंगलैंड इस बात पर विचार करने को तैयार नहींकि भारत को स्वराज्य का दूसरा भाग दिया जाये या नहीं। लार्ड बर्कन ह्यड के विचारों पर "न नौमन तेल होगा न राधा नाचेगी" की कहावत चरितार्थ होती है भारत के लिये अब इंगलैंड की आज्ञा को शिरोधार्य मानकर विना कुछ कहे सुने उस पर आचरण करना कठिन ही नहीं असम्भव है न भारत यह माने कि उसने भारत सरकार के साथ असहयोग करने में मूर्खता का है और न इंगलैंड उसे कुछ दे यदि भारत अपनी भूल स्वीकार करले तो इंगलैंड को यह कहने का अवसर मिल जायगा कि मूर्खों को अधिकार देने से लाभ ही क्या है, वर्तमान राजनीति तो यही शिक्षा देती है कि यदि तुम से कोई भूल होजाय तो उसे स्वीकार नहीं करना चाहिये पाप भूल कर करना नहीं प्रत्युत उसे स्वीकार करना है हमारे शासकों का यही प्रबन्ध रहा है यदि आज स्वराज्य पार्टी के नेता और महात्मागांधी यह स्वीकार करलें कि उन्होंने भारत सरकार के साथ असहयोग करने में भूलकी तो क्या होगा चार वर्ष के पश्चात् इंग्लैंड द्वारा एक रायलकमीशन नियुक्त किया जावेगा जो भारत में भ्रमण करके सम्मति स्थिर करेगा कि स्वराज्य की ओर दूसरा पगउठाने का अब समय आया है या नहीं।

अवस्थाओं में कोई भेद न हुआ इस लिये इसे अपनी कार्य्य प्रणाली में किसी प्रकार का परिवर्त्तन करने की आवश्यक्ता नहीं परन्तु यदि भारत सरकार अपनी नीति में कोई भेद करने को उद्यत हो तो स्वराज्य पार्टी भारत के लिये उचित शासन पद्धति के बनाने में सहायता दे सकती है लार्ड बर्कन ह्यड को यही उत्तर मिलना उचित था कि स्वराज्य पार्टी को अपनी नीति पर स्थिर रहना चाहिये उसे शासकों की बातों में न आना चाहिये इंग्लैंड तभी मानेगा जब कि उसे यह बिश्वास हो जायेगा कि भारत असहयोग के शस्त्र का तब तक त्याग न करेगा जब तक कि उसे स्वराज्य न मिल जाय भारतीयों के चरित्र ये यदि कोई न्यूनता है तो यह कि वह अपने पक्ष पर बहुत देर तक स्थिर नहीं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रहते पहिली ही पराजय में जो वस्तुतः विजय की पहिली ही सीढ़ी होती है वह दिल छोड़ बैठते हैं। हमें यह चाहिये कि प्रत्येक पराजय को वह विजय की भूमिका समझते हुए अपनी इच्छा प्राप्ति के लिये पहिले से अधिक उत्साह का परिचय दें अंग्रेजों के चरित्र में यह गुण विशेष रीति से पाया जाता है जिसका कि गत युद्ध जर्मन में उन्हीं ने परिचय दिया। यदि भारतवासी इङ्गलैंड से स्वराज्य लेना चाहते हैं तो उन्हें गुण ग्राही बन अंग्रेजों के इस गुण को अवश्य धारणकरना चाहिये। पराजय पर पराजय क्यों न हो उन्हें अपने पथ से विचलित न होना चाहिये, लार्ड बर्कन हाड ने भारतीयों को अङ्गरेज शासकों के चरित्र की स्थिरता का परिचय देते हुए यह कहा है कि जब तक वह यह स्वीकार न करेंगे इंगलैंड ने जो अधिकार इसे दिये हैं वह वास्तविक हैं और वह उनसे काम लेने को उद्यत हैं ही कांग्रेसका मैम्बर बनने के लिये एक नया आधार बनाना चाहते हैं। निश्चय यह हुआ कि अक्टूबर के आरम्भ में अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी की एक बैठक की जाय और उसके सामने यह विषय प्रस्तुत किया जाय यदि कांग्रेस कमेटी बहुपक्ष से यह निश्चय करदे कि सूत द्वारा मताधिकार न होना चाहिये तो महात्मा गान्धी कांग्रेस के प्रधान पद से हटजांय। एक समाचार यह भी आया है कि महात्मा गांधी का स्वराज्यपार्टी के नेताओं में से यह समझौता होगया है कि कांग्रेस का मैम्बर बनने की शर्त केवल सूत ही न रहे परन्तु नगद चन्दा देने वाला भी सभासद बन सकता है इस समझौते के अनुसार प्रस्ताव बनाने के लिये महात्मागाँधी पंडित मोतीलाल नेहरू और मिस्टर केलकर की एक उपसभा बनादी गई है हम समझते हैं इस समय इस समस्या को समझाने का केवल यहीएक मात्र उपाय है जो लोग महात्मागांधी से सहमत हैं उन्हें चर्खा चलाने और सूत रूपी चन्दा देकर कांग्रेस में सम्मिलित होने का अधिकार मिल जायेगा और जो उनसे मत भेद रखते हैं उन्हें धनरूप चन्दा देकर। हमें इस धृष्टता के लिये क्षमा किया जाय यदि हम यह कहें कि स्वराज्य पार्टी ने महात्मा गान्धी के साथ किये गये समझौते पर न्याय पूर्वक चलने का यत्न नहीं किया उस समय उन्हें उसे सूत द्वारा मताधिकार पर विश्वास न था वह जानती थी कि यह अवश्य असफल रहेगा और त्याग दिया जायेगा तब तक इंगलैंड भारतीय स्वराज्य की ओर दूसरा पग न उठायेगा भारतीयों को चाहिये कि लार्ड महोदय से उत्तर में कहें कि जब तक इंगलैंड भारत का अपने ऊपर शासन करने का अधिकार स्वीकार नहीं करता और शासन करने नहीं देता तब तक असहयोग युद्ध ठना रहेगा इस शांतिमय युद्ध में विजयी वही होगा जिस में अधिक दृढता और स्थिरता होगी।

महात्मागांधी और स्वराज्यपार्टी

अभी तक महात्मा गांधी और स्वराज्यपार्टी का दृष्टि कोन एक नहीं हुआ अभी तक महात्मा जी इस बात को स्वीकार नहीं करते कि कौंसिलों में जाने से स्वराज्यप्राप्ति में भारत को कोई सहायता मिल सकी है दूसरी ओर स्वराजीनेता यह स्वीकार करने को तैय्यार नहीं कि केवल चर्खा चलाने से भारत का उद्धार होसका है महात्मा गान्धी यह अनुभव करते हैं कि देश उनके साथ नहीं वरन् स्वराज्य पार्टी के साथ है अतः उन्हों ने कलकत्ते में पंडित मोती लाल नेहरू प्रधान अखिल भारतवर्षीय स्वराज्यपार्टी के नेता प

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

लिखा कि क्यूंकि यह स्पष्ट है कि देश इस समय मेरे साथ नहीं वरन् आपके साथ है।

अतः मैं कांग्रैस के प्रधान पद से मुक्त होना चाहता हूं आपको चाहिये कि इस उत्तर दातृत्व को संभालें अधिक भेद का कारण निज हाथ से कते हुए सूत रुपी चंदे द्वारा मताधिकार का प्रश्न है कांग्रेस का मेम्बर बनने के लिये कुछ आने या कुछ रुपया चन्दा देना आवश्यक है अथवा अपने हाथ से काते हुए कुछ गज सूत का देना महात्मागान्धी सूत को इस समझौते के अनुसार महात्मागांधी को इस मताधिकार पर एक वर्ष तक परीक्षण करने का अधिकार था और स्वराज्यपार्टी में इस परीक्षण में पूर्ण सहयोग का वचन दिया था यह समझौता स्वराज्यपार्टी में समूह रुपेण किया था अतः किसी स्वराजी नेता को उचित न था कि वर्ष की समाप्ती से पूर्व इस प्रश्न को पुनः उठाता परन्तु शोक वह अपने वचन पर दृढ़ न रहे अब भी यदि स्वराज्यपार्टी इस नवीन समझौते पर स्थिर रहे तो महात्मा गांधी कांग्रेस में रह सकते हैं निस्सन्देह देश इस समय महात्मा गांधी की नीति को नहीं मानता महात्मा गांधी का काम इससे प्रथक होजाना भी उसे निर्जीव बना देना होगा।

अमृतसर में मुसलिम कान्फ्रेंस

मुसलमान भी भारतीय स्वराज्य के लिये एक समस्या बन रहे हैं। साधारणतया समझा यह कहा जाता है कि जब तक मुसलमान साथ न होंगे स्वराज्य न मिलेगा परन्तु लक्षण ऐसे दिखलाई देते हैं कि यदि स्वराज्य मिला तो मुसलमानों के विना ही मिलेगा। निःसन्देह मुसलमान इस समय स्वार्थान्ध हो रहे हैं उन्हें सिवाय अपने स्वार्थ के कुछ नहीं सूझता कि भारत में मुसलिम राज्य स्थापित हो जाय इसमें हिंदुओं को क्या लाभ यदि उनके भाग में दास रहना ही लिखा है तो क्या अंगरेज शासक बुरे हैं मुसलमानों को भारत से कोई प्रेम नहीं। मिर्ज़ा गुलाम अहमद कादियानी के अनुयायियों को जोकि मुसलमान नहीं हैं सम्मिलित होने की क्यों आज्ञा दी गई। डाक्टर किचलू स्वागत समिति के सभापति थे और नवाब मोहम्मद इस्माईल मेम्बर लेजिस्लेटिव एसेम्बली कान्फ्रैन्स के प्रधान दोनों के भाषणों में एक ही राग अलापा गया था—वह यह कि शुद्धि और संगठन को बन्द कर देना चाहिये और एक नवीन समझौते द्वारा मुसलमानों के अधिकार निश्चित कर देने चाहियें नवाब साहब ने कहा कि लखनऊ का हिन्दू मुसलिम समझौता रद्दी हो चुका है इस लिये अब नया समझौता तैयार होना चाहिये इस में मुसलमानों के अधिकारों की विवेचना स्पष्ट रूप से कर देनी चाहिये एक ओर कौंसिलों में पहिले से अधिक अधिकार मिलने चाहिये और दूसरी ओर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड तथा म्युनिसिपल कमेटियों में भी अपने सहधर्मियों द्वारा चुने जाने का अधिकार स्वीकार किया जाना चाहिये। केवल इतना ही नहीं जहां मुसलमान बहुपक्ष में हैं वहां तो उन्हें उनकी संख्याके अनुसार सर्कारी पद मिलने चाहिये और जहां उनकी संख्या कम हैं वहां उनके अधिकारों की रक्षा के निमित्त उन्हें विशेष रियायत मिलनी चाहिये। इस मांगमें सब मुसल्मान शामिलथे इस समय तक यह सूचना नहीं आई कि किसी भी मुसलमान ने इस स्वार्थ पक्षपणता का विरोध किया और मुसलमानों से कहा कि जो बर्ताव तुम चाहते हो कि तुम से किया जावे वही दूसरों से क्यों न किया जाय जिन प्रान्तों में मुसलमान बहुपक्ष

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

में है यदि उन प्रान्तों में इन्हें इन की संख्या के आधार पर सर्कारी नौकरियां दी जांय तो उन प्रान्तों में भी क्यों न ऐसा ही किया जाय जहां इनकी संख्या कम है मुसलमानों की ढिठाई देखिये कि पंजाब में ५४ प्रतिशतक मुसलमान यह चाहते हैं कि ४६ प्रतिशतक हिन्दुओं और सिक्खों के अधिकारों को भूल कर उनका एक वज़ीर और एक एग्जेक्टिव कौंसिल के चार सदस्यों में से दो मुसलमान हों एक अंग्रेज और एक हिन्दू। दूसरी ओर मदरासके छः प्रतिशतक मुसलमान यह कहते हैं कि ऐक्जैक्टिव कौंसिल में यदि एक हिन्दू मेम्बर हो तो दूसरा मुसलमान अवश्य रहे इस नीतिको स्थिर बनाने और मुसलमानों को सब कुछ दिलाने के लिये एक पञ्जाब प्रान्तीय समिति बनाई गई है जिस के महा मन्त्री डाक्टर किचलू बनाये गये हैं इन के लिये न तो खिलाफत कमेटी किसी काम की है न मुसलिम लीग क्योंकि यह दोनों संस्थायें हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का कार्य्य अपने हाथ में लेने को तय्यार नहीं। इस समिति से व्यवस्था लेकर डाक्टर साहब शुद्धि और संगठन को कुचल पंजाब के तमाम हिन्दुओं को मुसलमान वह इसे स्वराज्य दिलाने के लिये कोई लाभ त्याग करना नहीं चाहते वह प्रत्येक नैतिक समस्या को इस्लाम की दृष्टि कोन से ही देखते हैं वह भारत को स्वराज्य दिलाना चाहते हैं परन्तु इस लिये कि वह इस पर स्वयं शासन कर सके यदि यह संभव न हो तो उन की बला से भारत पराधीन रहे यही कारण है कि वह कभी कांग्रेस के साथ मिल जाते हैं, कभी सर्कार के। वह दोनों से सौदा करते रहते हैं जिस से अधिक लाभ हो उसी के साथ हो जाते हैं। मुसलमानों की ओर से इस बन्दर बांट पर बलपूर्वक कार्य्य हो रहा है। आश्चर्य्य की बात यह है कि इस में सब विचारों और नीतियों के सब मुसलमान सम्मिलित हैं सहयोगी और असहयोगी देशभक्त और सर्कारभक्त का कोई भेद नहीं। डाक्टर किचलू जो किसी समय असहयोग आन्दोलन के बड़े नेता रह चुके हैं इस समय हिंदुओं को नीचा दिखाने के लिये सहयोगियों और जी हुजूरियों के साथ मिल रहे हैं वह समझते हैं कि स्वराज्य का प्रश्न स्थगित किया जा सकता है परन्तु इस्लाम को शुद्धि संगठन से बचाने की आवश्यकता है इस के लिये उन्होंने जुलाई मास के मध्य में अमृतसर में एक मुसलिम सम्मेलन किया। इसमें सम्मिलित होने के लिये सब प्रकार के विचारों के मुसलमानों को निमन्त्रित कियागया था सिवाय देव बंदियोंके सब प्रकारके मुसलमान सम्मिलित भी हुए उनका आक्षेप यह था कि बनाकर छोड़ेंगे। इस सम्बन्ध में यह वर्णन करना अनुचित न होगा कि डाक्टर किचलू ने अपने भाषण में आर्य्य समाज को दिल भर कर कोसा है उनकी दृष्टि में शुद्धि और संगठन के आनदोलन को उठाने का आर्य समाज अपराधी है अतः इसको अवश्य दण्ड मिलना चाहिये आशा है कि डाक्टर साहब के इस घोर आक्रमण पर भी आर्य समाज जीवित रहेगा उनका विरोध आर्य समाज को न शिथिल कर सकेगा प्रत्युत इससे आर्य्य समाज की शक्ति बढ़ेगी। दो वर्ष पूर्व डाक्टर किचलू क्या थे और अब क्या हैं उनका यह अन्स दूसरों के लिये शिक्षा प्रद है।

चीन की अशान्ति।

सहिष्णुता की भी सीमा होती है। भला भोला भाला चीन और कब तक अन्य राष्ट्रों का दुर्व्यवहार सहता? बेचारे का का अपने निज़ी बन्दरगाहों पर भी अपना

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रभुत्व नहीं। प्रायः सब के सब बन्दरगाह पर राष्ट्रों के हाथ में हैं। इस कारण इसके व्यापार को एक भीषण आघात का पहुंचना अनिवार्य्य ही था। विदेशियों के अत्याचार से पीड़ित चीन आज संसार की विवेक-शील जातियों के समक्ष अपना दुखड़ा रो रहा है, और अपनी सहायता के लिए त्राहि २ कर रहा है।

अदूरदर्शिता का उदाहरण

खिदिरपुर के हिंदू-मुस्लिम झगड़े में हिंदुओं के दोष-दर्शन के कारण महात्मा गांधी को बहुत से हलके चित्त वाले हिंदुओं ने बुरा भला कहा है। ऐसे लोगों की दृष्टि शायद तब ही होती जब कि महात्मा जी सत्य को छिपाते। सच है विवेक के दर्पण विना अपना असली रूप कैसे दीख सकता है? यदि हिंदू जाति औरों के दोष निकाल कर पहिले अपने ही दोष निकाल बाहर करती तो आप इस अधोगति को प्राप्त न होती।

देशबन्धुदास का वियोग

देशबन्धु की अकाल मृत्यु से देशको एक बड़ी भारी ऊसाध्य क्षति पहुंची है। सारी राजनैतिक स्थिति डांवाडोल हो गई है। अब से ५ वर्ष के भीतर जब लोकमान्य तिलक का स्वर्गवास हुआ था, उस समय भी आज की भांति भारत स्वराज्य की डग-मगाती नौका महात्मा गांधी जी ने संभाली थी। परन्तु नूतनस्फूर्ति और उत्साह उस उस समय आशाजनक भविष्य का दर्शन करा रहे थे। और आज? आज की दशा उतनी भयंकर न होते हुए भी बड़ी नाजुक है। अब स्वराज्य—पार्टी से महात्मा ने पूर्ण सहयोग कर लिया है, और वह पं० मोती-लाल जी के साथ कांग्रेस में नवीन जीवन सञ्चार करने की व्यवस्था कर रहे हैं।

देशबन्धु स्मारक

केवल बङ्गाल की ओर से देशबन्धु के स्मारक के लिए महात्मा जी ने बहुत कुछ धन कर लिया है। अब समस्त भारत की ओर से भी उनका एक स्मारक स्थापित करने के अभिप्राय से कलकत्ते से हाल ही में १८ बड़े २ नेताओं ने एक अपील प्रकाशित की है देशबन्धु की स्वदेश-सेवा विद्वत्ता, और राजनीति निपुणता आज संसार के कोने २ में प्रसिद्ध है आपने भारत को स्वतन्त्र करने के लिये जितना आत्म त्याग किया उतना कोई विरला ही महापुरुष कर सकता है अतएव उनके विमल यश को चिर-स्थिर करने के लिये भारतवासियों को दास स्मारक फन्ड में यथाशक्य साहाय्य देना चाहिये।

नैपाल राज्य

अठारहवीं शताब्दी के मध्य-काल तक नैपाल कितने ही छोटे २ मेवाड़ राज्यों में विभक्त था। तत्पश्चात् श्रीपृथ्वी नारायण शाह के सेनापतित्व में गोर्खों ने उसपर आ-क्रमण किया और उसकी रियासतों में से पतन, काठमांडू, भटगांव प्रभृति को जीत लिया। एवम् इस प्रकार समग्र नैपाल धीरे धीरे गोर्खों ने अपने हाथ में कर लिया। १८४६ में राणा वन्श के अधिपति को नैपाल सरकार की ओर से प्रधान सचिव का पद मिला और तब से उसीके वशज इसी पद पर प्रतिष्ठित हैं। सम्प्रति नैपाल दरबार प्रधान सचिव की मुट्ठी में है। महाराणा जंग बहादुर के समय से वहां की शासन पद्धति का स्पष्ट रुप से व्याख्यान और निरुपण

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हुआ है। वहां के महाराजाधिराज वस्तुतः उस स्वतन्त्र राज्य को शोभान्वित करने के लिये ही होते हैं।

वहां के शासन की बागडोर पूर्णतः प्रधान सचिव के हाथ में रहती है, जो कि शासनाधिकार के साथ महाराजा को साम्राज्य पदवी से विभूषित भी रहता है। इसके बाद प्रधान सेनापति होता है, जो कि साधारणतः मन्त्री का कार्य सम्पादन करता है

वर्तमान नैपालनरेश श्री १०८ महाराजाधिराज त्रिभुवन वीर विक्रम जंग बहादुर शमशेर जंग, अपने पिता जी की मृत्यु के अंतर सन् १९२१ में सिंहासनरूढ हुए थे। प्रधान सचिव महाराजा चक्र शमशेर जंग बहादुर राणा सन् १९०१ से शासन कर रहे हैं। आपकी साठवीं सालगिरह इस भारत के अनेक नगरों में जुलाई मास बड़े समारोह के साथ मनाई गई। यह हिंदुओं का गौरव है कि उन्हें इस पतितावस्था में भी नैपाल जैसा स्वतंत्र राज्य अपना कहने को तो संसार में हैं।

नैपाल का राजवंश सच्चा हिंदू-धर्म का अनुयायी है। गौ और ब्राह्मण की रक्षा के लिए जान देदेना उसके लिए गौरव की बात है। बौद्ध-धर्म का भी वहां अब तक अस्तित्व है, किंतु शनैः २ हिंदू-धर्म का आधिपत्य होता जा रहा है। वहां के बौद्ध अब नाम मात्र को बौद्ध हैं, उनकी सामाजिक प्रथाएं और धार्मिक विश्वास बहुत कुछ हिंदुओं जैसे हैं। गुर्खा राज्य में बौद्ध धर्मावलम्बियों से तथा ऐसे मुसलमानों यात्रियों से जो कि एक प्रकार से वहीं बस गए हैं, अच्छा बर्ताव किया जाता है, किंतु ईसाईयों के मिशन की स्थापना का कट्टर विरोध किया जाता है।

भारत में आजीविका का प्रश्न

आजकल जिधर देखो जीवन-निर्वाह की जटिल-समस्या मुंह बाये खड़ी है। मध्यम श्रेणी के भारतीय सचमुच आज त्रिशङ्कु की भाँति आकाश और पाताल के बीच टंगे हुए हैं। उन्हें "किंकर्त्तव्य विमूढ़ता" ने घेर रखा है। इसका प्रधान कारण, "बम्बई विद्यार्थी भ्रातृ-मण्डल" में व्याख्यान देते हुए मि० मनु सूबेदार ने भारत की अर्वाचीन शिक्षा-प्रणाली ही को बतलाया। इसके और भी कारण हैं, पर वे तब तक मिट नहीं सकते जब तक भारत स्वतन्त्र नहीं होता। फ़िलहाल यदि शिक्षा सुधार ही हो जाता तो बहुत कुछ सहारा मिलता।

बालक की चित्त-प्रवृत्ति की ओर आज कल कौन ध्यान देता है? इसी कारण अनिच्छा-पूर्वक पढ़ाई करने से विद्यार्थियों का आधा जीवन तो व्यर्थ ही नष्ट हो जाता है, और रहा-सहा भी जीवन-निर्वाह की चिंता में डूब जाता है। स्कूल की पढ़ाई समाप्त करके या तो २०) २५) की नौकरी पर उन्हें उलझ जाना पड़ता है या काफ़ी खर्चा होने पर कौलिज की पढ़ाई के लिए मगज़-पच्चीसी करनी पड़ती है। किन्तु परिणाम स्वरूप दोनों प्रकार से जीवन भार ही हो जाता है। शिल्प-कला इत्यादि उपयोगी।

विषयों" की ओर क़दम बढ़ाना वे बेइज़्ज़ति समझते हैं, अतः ऐसी दुर्दशा न हो तो क्या हो?

कुमायूँ की नायक जाति

एक मछली सारे तालाब को गंदा कर देती है। नायक जाति के कारण आज सारा कुमाऊं-प्रान्त बदनाम है। नायक-जाति के लोगों ने

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अल्मोड़ा, नैनीताल और गढ़वाल में कुछ विशेष गांव हैं। इनमें लड़कियाँ की शादी नहीं की जाती, बल्कि उन्हें वेश्यावृत्ति करने के लिए विवश किया जाता है। इस कुत्सित प्रथा को हटाने के लिए वैसे तो १८५७ ई० सिलसिला छिड़ चुका था, किन्तु कई विघ्न बाधाओंके कारण कोई रचनात्मक-कार्य्य न हो पाया। हां अब इस प्रांतीय सरकार का ध्यान इस प्रांत के गण्य-मान्य नेताओंने आकर्षित किया है। हार्दोई के राय ठाकुर मशालसिंह बहादुर एम० एल० सी० प्रस्ताव तथा मि० मुकुन्दीलाल बारिष्टर एम. एल. सी और पं० हरगोविन्द जी पन्त एम एल. सी के ज़ोर लगाने पर प्रांतीय लेजिस-लेटिव कौंसिल ने एक 'नायक-सुधार-सभा' को इस नायक जाति के सुधार की स्कीम तय्यार करने के लिए नियुक्त किया। विगत मास में जांच करके उक्त सभा इस विषय पर कुछ उपादेय नियम निर्धारित कर कौंसिल की आगामी मीटिंग में पेश करने वाली है। आशा है इससे इस जाति का ही नहीं बल्कि सारे कुमाऊं का बड़ा उपकार होगा।

इस ओर सर्वेन्ट्स औफ़ इण्डिया सुसाइटी के प्राण पं० हृदय नाथ कुंजरू जी भी बहुत प्रयत्नशील हैं। सौभाग्य की बात है स्वयं नायकों में भी अब जागृति होने लगी है। उन लोगों को भी अब अपनी घृणित दशा और नीच पैशे का ध्यान हो आया है। उन लोगों के बहुत से गांव तो अब राजपूतों से से विवाह-सम्बन्ध करने लग गए हैं। विद्या की ओर उनका चित्त चला गया है, धर्म्म की ओर रुचि होगई है और स्त्रियों के प्रति उनकी पवित्र भावना होगई है।

आज कल सहयोगी समाचार पत्रों में इस विषय पर खूब चर्चा छिड़ी है। आर्य्य समाज की ओर से भी नायक-सुधार-हित विशेषतः डा० श्याम स्वरूप जी बस्ती वाले बहुत समय से सन्तोष-जनक रचनात्मक कार्य कर रहे हैं। ईश्वर करे हमारे देश की समस्त वेश्याओं के सुधार का समय शीघ्र आवे।

कन्या गुरुकुल समाचार

ऋतु

ऋतु बहुत सुहावनी है। कई दिन तक लगातार वर्षा की झड़ी ही लगी रही है सूर्य्य भगवान के एक दो दिन दर्शन भी नहीं हुये। बाग खूब फूल पत्तियों से हरा भरा होरहा है। एक तरफ घास काट कर सुखा करके हटते हैं दूसरी तरफ फिर मखमली गलीचा फैल जाता है। प्रकृति देवी अपना सर्वोत्तम सौन्दर्य दिखा रही है। तथापि मच्छड़ों की पीड़ा और मलेरिया का भय रूप राक्षस इस सुन्दर दृष्य का लाभ छुट्टियों में उठाने से कुछ बासियों को वांचित कर रहे हैं।

स्वास्थ्य

मलेरिया ज्वर कई ब्रह्मचारिणयों को दो २ चार २ दिन चढ़ कर उतर जाता है, बर्सात के कारण कइयों को फोड़े फुन्सियां भी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भी निकलपड़ी हैं परन्तु इलाज करने से ठ क भी होरही हैं। साधारणतया कन्यायें अस्वस्थ नहीं हैं और सप्ताह में कुनैन दो वेर लेती हैं ताकि मलेरिया से सताई न जावें।

परीक्षा फल

षणमासिक परीक्षा फल निकल चुका है। एक दो कन्याओं को छोड़ प्रायः सभी सफल हुई हैं और अच्छी उन्नति को सूचित करती हैं। इनका परिणाम इनके संरक्षकों को भेजा जा रहा है।

सूतकी परीक्षा

छठी श्रेणी की कन्याओंने सूत कातनेकी परीक्षा भी दीथी जो सूत इन्होंने काता था वह काँग्रेस कमेटी दिल्ली द्वारा जांच कराया गया है कन्याओं मेंसे घार का सूत प्रथम कोटिका निकला है और सबसे प्रथम होनेवाली कन्या को पारितोषिक दिया जावेगा।

यात्राकी तैयारी

गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी कन्यायें देहरादून ही जा रही हैं कोठरी का प्रबन्ध हो गया है। ३१ जुलाई को सम्भवतः वह वहां से प्रस्थान करेंगी। बहुत से संरक्षकों ने तो मार्ग व्यय भेज दिया है परन्तु कुछ थोड़े से ऐसे भी हैं जिन्होंने अब तककोई उत्तर नहीं दिया अतः उनको चाहिये कि शीघ्र व्यय भेज देंय। बहुतों के चले जाने पर, दस, बीस कन्यायेां का यहां रह जाना प्रबन्ध की दृष्टि से तथा कन्याओं की मानसिक अवस्था के लिये भी ठीक न होगा अतः ऐसे संरक्षक जिन्हों ने यात्र में जाने का व्यय नहीं भेजा है शीघ्रता करें।

यात्राकी तैय्यारी बड़े जोर शोरसे होरही और कन्यायें जाने का दिन गिन रही हैं।

कन्या गुरुकुल की मुख पत्रिका।

सब सज्जनों और देवियों को विदित हो चुका है कि कन्या गुरुकुल के प्रारम्भ से 'ज्योति' कन्यागुरुकुल की मुख पत्रिका बन गई है परन्तु यहां पर आने से इस की दशा उन्नत होने की बजाय गिरने की ओर है। कारण यह कि कार्य्य भार से सम्पादान कार्य्य में विशेष ध्यान न दिया जा सका तथा बीमारी आदि कई अनिवार्य्य बाधायें कार्य्य कर्तृयों की सेवा से इसे वंचित रखती रही हैं। परन्तु इसको आर्थिक कष्ट भी कम नहीं है। अतः संरक्षकों की गुरुकुल की ओर से अपील की गई है कि वह इसे स्त्री शिक्षा का एक अंग समझते हुवे जहां तक भी इसकी सहायता कर सकते हो करें। जो महाशय या देवियाँ इसकी ग्राहक नहीं हैं वह इसे अपनाने के हेतु ही अवश्य मंगवावें। इसको जीवित रखना इसलिये आवश्यक है कि इसके द्वारा कन्यायें प्रूफ-रीडिंग लेखन कला, सम्पादन कला, साहित्य ज्ञान और कविता ज्ञान से अभिज्ञ होती हैं। कन्याओं की शिक्षा को सर्वांग पूर्ण करने के लिये यह एक आवश्यक अंग दूसरे संरक्षकों को तथा अन्य लोगों को इस के द्वारा प्रतिमास कन्या गुरुकुल समाचार भी मिलते रहे हैं। स्त्रियों को कई प्रकार की बातों का ज्ञान मिलता है जो अन्य प्रकार से नहीं हो सक्ता।

अतः स्त्री शिक्षा प्रेमी और गुरुकुल के हितैषी संरक्षक लोग यदि अपनी कन्याओं का लाभ चाहते हैं तो जहाँ वह अन्य सैकड़ों प्रकार से समाज की सेवा, देश जाति के हित में मदद देते हैं वहां कन्यागुरुकुल में आर्ष भाषा-साहित्य की वृद्धि हेतु एक फंड बना कर अपनी २ शक्ति के अनुकूल ज्योति की अपील को पूर्ण करने का भरसक प्रयत्न करें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

आर्य्यों ने कन्या गुरुकुल के लिये क्या किया ?

कई लोग कन्या गुरुकुल की प्रशंसा करते हुये भी भोले पन से उसकी त्रुटियों का बड़ा भयंकर चित्र खींच लेते हैं परन्तु वह नहीं सोचते कि कन्या गुरुकुल को खुले हुये अभी दो वर्ष भी पूरे नहीं हुये। दीवाली पर होंगे। इतने कम समय में इतना अच्छा प्रबन्ध अन्य कहीं प्रारम्भिक दिनों शायद ही कहीं मिलेगा। प्रायः कार्य्य छोटी सी झोंपड़ी से प्रारम्भ होकर वर्षों में फैलता है परन्तु कन्या गुरुकुल का प्रारम्भ कोठीसे हुआ है अतः लोग उसकी प्रारम्भिक अवस्था को भूल जाते हैं।

क्योंकि प्रायः देखने में आता है कि जो बच्चा खूब हृष्ट पुष्ट हो तो वह छै मास का भी लोगों की दृष्टि में दो वर्ष का मालूम होने लगता है परन्तु जब दोनों को बैठाल कर देखा जाय तब परीक्षक को अवश्य पता लग जाता है कि यह भ्रम है क्योंकि दोनों के विकास में भेद होता है। यही दशा संस्थाओं की भी है।

संरक्षक लोग कन्या गुरुकुल का मुकाबला गुरुकुल काँगड़ी तथा कन्या महाविद्यालय जालन्धर से करते रहते हैं। भला पौने दो वर्ष की बालिका का मुकाबिल युवा पुरुष और प्रौढ़ास्त्री से कभी हो सका है ? फिर यदि बालिका बालिका ही दीखे तो दोष बालिका का है या देखने वालों का ?

कन्या गुरुकुल को सिवाय सेठ रघूमल जी के दान की मदद के और कोई सहारा तो है ही नहीं जनता तथा संरक्षकों ने जहां औरों के लिये लाखों दिये हैं वहां कन्या बिचारियों के लिये उनके पास मानों टका ही नहीं है। न उन्होंने कोई फंड अब तक ऐसा बनाया है कि जिससे कोई कन्या आधी फ़ीस पर ली जा सके या बिलकुल फ़ीस माफ़ की जा सके, और न कोई छात्र वृत्तियां ही दी जा सकती हैं

कन्या गुरुकल का मासिक व्यय भी पूरा नहीं हो रहा है जितना व्यय है लगभग उसकी आधी आय है अर्थात यह गुरुकुल अपने आधे पेट के लिये ऋणी होरहा है।

क्या आर्य्य सज्जनों का कर्तव्य नहीं है कि इस संस्था की ओर भी दृष्टिपात करें। और अपने हजारों और लाखों के दान खाते में से कुछ सैकड़े इधर भेजें ताकि कन्यायें भी उन्हें आशीश दें। और देश का कल्याण भी हो। क्योंकि यही कन्यायें घर जाकर कई गृहस्थों की देवियां बन कर जाति को उत्तम सन्तान से विभूषित करने वाली बनेंगी यही जाति की लालों की बनाने वाली हैं अतः इनकी शिक्षा में जितना भी व्यय किया जाय थोड़ा है। आर्य्य समाज के अधिकारियों को तथा आर्य्य जनता को जहां कन्या गुरुकुल की त्रुटियों की चिन्ता होती हैं वहां उनको इसके प्रति अपने कर्त्तव्य की ओर भी ध्यान होना चाहिये। अब तक आर्यसमाजों ने सामूहिक रूप से इसके लिये कुछ भी नहीं किया है। गत वर्ष आर्य्य समाजों से अपील की गई थी। परन्तु उनके कानों में कन्याओं की अपील पड़ी ही नहीं। अब फिर समय आ रहा है छुट्टियों के दो मास बीते और वार्षिक उत्सव तथा नयी ब्रह्मचारिणियों के प्रवेश का समय सिर पर आया। इस दशा में सब कन्या गुरुकुल के प्रेमियों को अभी से प्रयत्न करना चाहिये पुरुषार्थ निधि (दान वसूल करने की रसीद बुकें) की पुस्तक तैय्यार हैं। जिन लोगों को दान इकट्ठा कर देने का पुण्य लेना हो वह कार्यालय से यह रसीद बुकें मंगा कर चन्दा इकट्ठा करना शुरू करदें अधिक आर्य्य समाजें अपनी अपसे कुछ अंश इस संस्था के लिये निकाल कर दिवाली पर जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में अवश्य भेजें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वनिता विनोद

स्त्री – जगत्

शान्ति निकेतन में कन्याओं की शिक्षा।

शान्ति निकेतन में लड़कियों के लिये अन्य स्कूलों और कालिजों में रक्खे हुये पाठ्य विषयों के प्रबन्ध के अतिरिक्त ऐसी व्यवस्था की गई है कि छात्रायें बिना किसी सर्कारी स्कूल या कालिज में दाखिल हुये ही कल कत्ता विश्वविद्यालय की परीक्षायें दे सकती हैं। तथा विश्व भारती में गान विद्या और बाजा सिखाने का बहुत उत्तम प्रबन्ध है। आलेख्य, तथा और भी कई प्रकार के धंधे पाक विद्या और गृह-विज्ञान इत्यादि का भी प्रबन्ध है।

वहां पर रमणीक स्थान है स्वच्छ और स्वास्थ्य प्रद जलवायु है। वहां एक कन्या एम० ए० परीक्षा की तैयारी भी करती है। संचालकों ने पांच छात्र वृत्तियां भी योग्य कन्याओं के लिये की हैं।

महारानी सेटू लक्ष्मी बाई

श्रीमती महारानी सेटू लक्ष्मी बाई अभी हाल में ही अपनी भांजे के नाबालिक होने के कारण ट्रावनकोर राज्य की बली बनाई गई हैं। ट्रावनकोर राज्य की प्राचीन प्रणाली के अनुसार वहां राजे का पुत्र राजा नहीं होता वरन् उसकी बहिन का पुत्र राज्य करता है और कोई भी स्त्री जो उसको निकट सम्बन्धनी हो वह उस कुटुम्ब की मुखिया रहती है। ट्रावनकोर में स्त्री शिक्षा का बड़ा प्रचार था वह पर्दे में नहीं रहती · वरन उन्हें स्वाधीनता है और पुरुषों के तुल्य अधिकार हैं। अतः महारानी जी भी बड़ी सुरक्षिता और प्रशक्ति शालिनी हैं, इन का विषय ज्ञान है और वह आंगल भाषा खूब बोलती और लिखती हैं। यह अपने राजसी गुणों और सीधी मनोहर आकर्षक प्रीति के कारण प्रजा की प्रिय बन रही हैं।

विज्ञान और स्त्रियां

डाक्टर फ्लोरेन्स रीना सेविन बारह प्रसिद्ध अमरीकन देवियों में से एक विशेष प्रसिद्ध देवी हैं। यह विज्ञान शास्त्र में बहुत प्रवीण हैं। और वहीं की जातीय विज्ञान विश्व विद्यालय की अजीवन सदस्या बनाई गई हैं। यह पहिली महिला है जिन्हें इस उपाधि से विभूषित किया गया है। डाक्टर सेविन ने नवीन गवेषणायें बहुत की हैं खास कर खून और संचारक नस नाड़ियों के सम्बन्ध में बड़ी प्रसिद्ध है। वह अमरीका की अनाटमी (शरीर-रचना विज्ञान) की बड़ी भारी सभा की प्रधाना भी बन चुकी है इस पद पर भी यह पहिली ही महिला हैं।

"कमाऊं प्रदेश में स्त्रियों का अधःपात"

कमाऊं प्रदेश में नायक जाति सब से गिरी हुई है। इस जाति में मां के बाद लड़की-लड़की के बाद उसकी आगामी सन्तान वेश्या धारण कर लेती हैं वैसे उनमें ऐसी स्त्रियों की कमी नहीं जो अपने कुकर्म पर घोर पश्चाताप करती है। और शिक्षित समाज का एक अङ्ग बनाने को तैय्यार है परन्तु समाज उन्हें अपनाती नहीं।

———

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

श्री सरोजिनी नायडू का मत है कि स्त्रियों को म्युनिसिपैलिटियों और व्यवस्थापिका सभाओं में चुने जाने के लिये उद्योग करना चाहिये।

"सारनाथ के श्रावण के मेले में स्त्रियों की दुर्दशा"

श्रावण को प्रति सोमवार सारनाथ में मेला लगता है। वहां पर धर्म के नाम पर बहुत ही अनर्थ होता है। प्रायः सभी तीर्थों का यही हाल है। नाम तो सारनाथ महादेव के दर्शन का होता है पर काम किया जाता है गुंडों का। हिन्दू लोग तीर्थ में गई हुई अपनी जाति की बहू बेटियों को अच्छी निगह से नहीं देखते तब अगर उन्हीं की देखा देखी मुसलमान गुंडे भी शरारत करें तो क्या आश्चर्य है। हिन्दू स्त्रियों को ऐसे मेले ठेले में नहीं जाना चाहिये और आत्म संरक्षण करना चाहिये।

गृह प्रबन्ध

१. जस्त की बाल्टियों तथा अन्य बर्तनों को साफ करने के लिये मिट्टी का तेल मिले साबुन के पानी से ख़ूब मल कर धोना चाहिये।

२. कई बार रोग़न करने के ब्रुश में रोग़न लगा रहने के कारण सूख कर बड़े कड़े हो जाते हैं। इस रोग़न को उतारने की सब से उत्तम विधि यह है कि ब्रुश को एक रात सोड़े के पानी में भिगो कर रख देना चाहिये और अगले दिन खूब खुले साबुन के पानी से धो डालना चाहिये। यदि इस विधि से रोगन दूर न हो तो सूखे ब्रुश को बराबर २ अलसी के तेल में और तारपीन में भिगोना चाहिये।

३. यदि पकाते समय किसी ऐसी वस्तु में जिसमें पीछे से मीठा डालना हो एक चुटकी नमक छोड़ दिया जाय तो मीठा कम लगता है।

४. रेशमी मोजों को एक बार पहन कर अवश्य धो डालना चाहिये इस से वह अधिक चलते हैं।

५. कई बार चूल्हे पर अधिक चढ़ने के कारण पतीली इत्यादि के पैन्दे में मैल जमा कर लोहा वृत कर देती है। यदि इसमें थोड़ा सा सिरका डाल कर उबाला जाय तो वह सर्वथा साफ हो जाती है।

६. गले पड़ जाने में एक भाग सुहागा दो भाग शहद में मिलाकर लगाने से बड़ लाभ होता है।

७ लोटे को पालिश करने के लिये तारपीन में बारीक पिसा ईंट का चूरा मिलाकर रगड़ना चाहिये और फिर एक कपड़े पर मिट्टी का तेल डाल कर मलना चाहिये। इस विधि से वस्तु जंग लगने से बची रहती है और बहुत देर तक चमकती रहती है।

८. चक्कू को कभी गरम तेल अथवा घी में न डालना चाहिये, इस से उनकी तेज़ी कम हो जाती है।

९. पिसे नमक के बर्तन में यदि थोड़े से चावल रख दिये जायें तो नमक के ढेले नहीं बनते।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

१०. रोटी के बर्तन पर यदि एक भिगो कर निचोड़ा हुआ कपड़ा लटका दिया जाय तो वह खराब नहीं होती।

११ गोन्द, लेई इत्यादि की बोतलों के काकों में कुछ चिकनाहट अवश्य मलनी चाहिये इस से वह बोतल के मुंह से नहीं चिमटते,

---

स्त्रियों का सच्चा सौन्दर्य

ले०—सुशीलादेवी गुप्ता 'मेरठ'

आजकल प्रायः देखा जाता है कि स्त्रियों ने गहने कपडे को ही अपना सच्चा सौंदर्य्य मान लिया है। गहने कपड़े के चाव ने उनको अन्धा बना दिया है अच्छे२ गहने और अच्छे कपडे पहिनने वाली स्त्री को ही श्रेष्ठ समझने लगे हैं। यदि कपड़ा पहिनने से ही स्त्रियों का सौंदर्य है तो अत्यन्त कुरूप स्त्री भी गहना कपड़ा पहिनकर स्वरूपवती बन सकती है। और अत्यन्त स्वरुपवती स्त्री भी बिना गहने कपड़े के कुरुपा हो सकती है। परन्तु यह समझना अज्ञानता है। गहना कपड़ा तो एक तरफ रहा स्त्री का सौंदर्य रूप से भी नहीं है स्त्री चाहे कैसे सुन्दर २ गहने कपड़ क्यों न पहिनले परन्तु बिना विद्या के गुण से शोभित नहीं होती। परन्तु मैं जहां चार स्त्रियों को देखती हूं उनमें गहने कपड़े ही की बातें होती हुई सुनती हूं और गहने से इतना अधिक प्रेम देखती हूँ कि चाहे गहने से शरीर के ऊपर कितना ही मैल जम जावे पर स्त्रियां गहना उतारेंगी नहीं, पहिने ही रहेंगी वरन और दो चार मिल जाएंगे तो उन्हें भी लाद लेंगीं। एक गहने के ऊपर चाहे दोहरे तिहरे और लाद दो न हीं कभी नहीं करेंगीं यहां तक यदि सोने चांदी की बेड़ियां भी लाद दो तब भी सुख मानेंगीं दुःख नहीं समझेंगीं यहां तक कि बूढ़ी स्त्रियां तक गहने पहिरने के लिये हंसती हैं। जिनके मुख में दांत नहीं केशों में श्यामता नहीं, मुख पर कांति, देह में रुधिर मांस नहीं। परन्तु गहने कपड़े का चाव वैसा ही बना हुआ है। क्योंकि इन्हें पहरने को तो वह युवा से भी अधिक हैं।

एक स्त्री का वृत्तान्त है जिसको पढ़कर हंसी आवेगी।

एक स्त्री को भारी गहनों का बड़ा प्रेम था एक दिन उस स्त्री के पति ने स्त्री से एक पंसेरी उठा लाने को कहा स्त्री ने उत्तर दिया कि इतनी भारी चीज़ तो उठाई नहीं जाती लाऊं क्योंकर? इस बात को सुनकर उसके पति ने अपने मन ही में रख लिया। उस समय स्त्री से कुछ नहीं कहा परन्तु कुछ दिनों पश्चात् स्त्री को भुलावा देकर एक दिन पांच सेर लोहे के बहुत से टुकडे करवा कर सोने में मढ़वाकर और सब का एक हार बनवाकर स्त्री को दिया कि अब इससे अधिक भारी गहना तो न मांगोगी। इससे भारी गहना तो किसी के पास न निकलेगा अब तो तुम्हीं सब में भारी गहनेवाली मालूम दोगी। स्त्री ऐसे भारी हार को देखकर फूली नहीं समाई और हर्ष हीं हर्ष में उसे कई दिन तक गले में पहिने रही उतार कर नहीं रक्खा जब कई दिन व्यतीत हो गये तो उसके पति ने कहा कि हार को तुमने तोलकर भी देखा कि कितना भारी है यदि नहीं तोला तो अब तोल लो।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्री ने तोला तो वह छः सेर का हुआ। तब तो उसके पति ने कहा कि तुम से तो पंसेरी भी नहीं उठती यह तो पंसेरी से भी भारी है यह कैसे उठाकर गले में पहन लिया और कई दिन से पहने फिरती हो, यह सुनकर स्त्री लज्जा के मारे गड़ गई और कुछ न बोली मन ही मन कहने लगी कि हाय! इस गहने के चाव ने ही मुझे इतना लज्जाया नहीं तो काहे को लज्जाना पड़ता।

इसी प्रकार स्त्रियें गहना पहिरना तो बहुत चाहती हैं परन्तु गुण नहीं सीखतीं। गुणवती स्त्री को तो न गहने की आवश्यक्ता है और न शृंगार की अपने पति को मोहने के लिये तो उसके गुण ही उसके गहने और शृंगार हैं स्त्री का सौंदर्य तो पति भक्ति नम्रता लज्जा सहनशीलता स्वच्छता विद्या से ही होता है। स्त्री चाहे कैसे सुन्दर गहने, कपड़ों से लदी हुई हो परन्तु विना विद्या के गुणों से शोभित नहीं होतीं और न यह समझ सकतीं कि हमारा कर्तव्य क्या है किसी ने कहा है—

विद्या साधिता नारी भूषयामलंकृतायदा।
तदा विभूषितां भव्ये तनुहेमे न भूषिताम्॥

जब स्त्री विद्या के भूषण से सजी होती है तभी और गहने भी शोभा पाते हैं विना इस भूषण के चाहे कितने ही सोने के आभूषणों से लदी हो, शोभा नहीं पाती। नीति में भी लिखा है:—

रुप यौवनां सम्पन्ना विशाल कुल सम्भवाः।
विद्याहीनं न शोभन्ते निर्गन्धा इव किंशुकाः॥

अर्थात् रुप यौवन सम्पन्न कुल सब कुछ अच्छा हो तो भी एक विद्या न होने से मनुष्य ऐसा है जैसे विना गन्ध के पलाश का फूल जिस तरह टेसु का फल बिना गन्ध के बिल्कुल निकम्मा समझा जाता है। और चमेली का फूल सादा होने पर भी लोग उसको अधिक पसन्द करते हैं इसका कारण यह है कि चमेली में सुगन्ध रूपी गुण है, और टेसु में यह सुगन्ध रूपी नहीं केवल रूप ही रूप है।

वैसे ही यदि स्त्री स्वरूपवती होने पर उसमें सुगन्ध रूपी गुण नहीं हो तो उसका कोई आदर नहीं करता गहने कपड़े तुच्छ चीज़ को अगर बहिनें अपना सौन्दर्य समझती रहेंगी तो उनकी दशा पैर की जूती के समान ही रहेगी। अच्छे २ गहने कपड़े पहिन कर वह स्वयं अपने आपको स्वरूपवती समझने लगे परन्तु दूसरों की दृष्टि में कदापि शोभित नहीं होतीं।

झूटे सौन्दर्य में मन फंसाने से क्या लाभ है इसलिये मेरी बहिनों अपने मन में सच्चा सौन्दर्य धारण करो। शोक! जिस देश में सीता-सावित्री जैसी पतिव्रता स्त्रियें थीं। वहां पति भक्ति का एक दम लोप हो गया पति प्रेम एक दम उठ गया।

पति की गरीब अवस्था में भी उसे गहने कपड़ों के लिये तंग किया जाता है अगर वह इतनी चीज़ नहीं लासका जितनी स्त्री चाहती है तो घर में महाभारत मच जाता है फिर तो पति को जिस तरह हो उसकी इच्छा पूरी करनी पड़ती है इससे उनकी गृहस्थी शीघ्र ही नष्ट हो जाती है और फिर उनको अपने जीवन में अनेक कष्टों का सामना करना पड़ता है।

और दूसरे हमारी बहुत सी बहिनों ने घूंघट को ही अपनी लज्जा समझ रक्खा है जिसके ही कारण आज हमारी यह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दशा है जो सच्ची पति प्रता धार्मिक है। वह कभी घूंघट को लाज नहीं समझेगी जैसे कि गोपा का वृतान्त जो गौतम बुद्ध की स्त्री थी और जो अपना मुंह घूंघट से कभी न ढकती थी जो आज स्त्रीयें उसको निर्लज्ज बनाती थीं उनसे कहती थी कि हे भारतियो तुम जो घूंघट को ही लाज मान रही हो सो तुम निपट भूल हुई हो क्या घूंघट से स्त्री की लज्जा होती है? नहीं धार्मिक स्त्री जिस अवस्था में रहे उसीमें सुशोभित हैं।

प्यारी पाठिकाओं। यदि आप अपने को यथार्थ सौन्दर्य प्राप्त करना और वास्तविक शृङ्गार रचवाना चाहती हो अपने सच्चे गहने गुण सीखो।

विधवा-विनय *।

(ले० पं०जगन्नारायण देव शर्म्मा कविपुष्कर)

हम भाग्य विहीना भारत की विधवायें !
है शरण कहां ! तज चरण जहां हम जायें ॥
जीवन धन का सुख साधन खोय चुकी हैं।
दोनों कुल का प्रिय गौरव धोय चुकी हैं ॥
अब कोई आदर मान नहीं देता है।
कोई भी भूले नाम नहीं लेता है ॥
हम दुःखमयी होकर अतिशय बिल्लायें।
है.....॥
हम हैं अधीरता की सरिता में डूबी।
जग में जीने से सब प्रकार हैं ऊबी ॥
क्षण भर भी मन को शान्ति नहीं होती है।
कमत्यों ही कुछ भी भ्रान्ति नहीं होती है ॥
हम हृदय खोल कर किस प्रकार दिखलायें।
हैं.....॥

कोई हम पर है दया न रञ्च दिखाता।
कुलटा-कुलक्षिणी कुल-कलंक बतलाता ॥
सह कर भारी अपमान प्राण रह जाते।
हैं असह वेदना सहते और सहाते ॥
लज्जा को अपनी कब तक नाथ ! बचायें !
है.....॥
हम पर कुदृष्टियां फेर रहे अन्यायी।
इस से बढ़ अन्य न बात हमें दुख दायी ॥
अब कृपा कीजिये दीन-बन्धु असुरारी।
द्रोपदी-सहायक ! सुनिये ! विनय हमारी ॥
हम हाथ जोड़ कर अपनी व्यथा सुनायें।
है दास कहा ! तज शरण जहां हम जायें ॥

---

*कविकृत पद्यपयोधि 'चौदह रत्न' नामक हस्तलिखित वृहत् संग्रह से उद्धृत।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्री जाति की विशेषता

भारत वर्ष में जब से स्त्री जाति अपने गौरव को स्वयं ही भूल गई है तबसे इस देश का सर्व गौरव नष्ट होगया है जो जाति सर्वरत्नों की खान होने से अपने देश धर्म तथा जातिके गौरवकी पात्र थी, वह आज निरादर की पात्र बन रही है। इसका कारण केवल मात्र यह है कि स्त्रीजाति आज भारतवर्ष में अविद्या की निद्रा में सोई हुई है।

इस समय भी संसार भर के उन्नत देशों की उन्नति के कारण को देखा जाय तो यह पता चलता है कि वहां की उन्नति का विशेष कारण स्त्रीजातिकी योग्यता है। जैसी जिस देश की माताएं होती हैं वैसी ही उनकी संतति होती है। विदुषी तथा सर्व गुणों से सम्पन्न माताओं की सन्तान कभी मूर्ख नहीं होती है। विदुषी माता की सन्तान विद्वान् अवश्य ही होती है। जिन माताओं की सन्तान विद्वान् होती है वे माताएं ही संसार में मान का पात्र होती हैं जो सन्तान विद्यादि उत्तम गुणों से विभूषित होती है उनका देश जाति अवश्य ही उन्नत होते हैं।

हमें अत्यन्त शोक उस समय होता है जब हम देखते हैं हमारा देश बाह्यरूप में तो कुछ उन्नत दिखाई देता है किन्तु वास्तव में रसातल को जा रहा है। क्योंकि आजकल की विदेशी सभ्यता हमारी कुछ २ पढ़ी लिखी बहिनों में विषैले सांप की प्रकार घुस रही है। सर्व साधारण तो वर्तमान काल की देवियों को देख कर कई अवसरों पर हर्ष प्रकट करते हैं। किन्तु यह उनकी अज्ञानता है वास्तव में यह विषैला सांप है जो हमारी जाति में अपने विष का सञ्चार करके उन को ऐसे २ अवगुणों से दूषित कर रहा है जो लज्जाजनक हैं।

दूसरी ओर जब मूर्खा तथा अनपढ़ स्त्रियों की विद्यारहित व हित की ओर दृष्टि डालते हैं तो और ही विचित्र अवस्था दिखाई देती है। मूर्खा स्त्रियां सब से प्रथम तो अपनी स्थिति को ही तुच्छ मानती हैं। उन को स्वार्थी लोगों ने यह निश्चय करा दिया है कि स्त्री जाति कभी शुद्ध पवित्र नहीं होती, स्त्री का विद्या पढ़ना महापाप है, स्त्रियों को सदैव पुरुष की दासी समझना चाहिये। ब्राह्मणों का दान देना, व्रतादि का रखना, मन्दिरों में दर्शन कर आना तथा भागवतादि की कथा का सुनना इत्यादि कर्मों का करना ही मुख्य धर्म है। इस प्रकार के उपदेश के कारण स्त्रियां निज गौरव को न जानती हुई अधोगति को प्राप्त होती चली जा रही हैं। और ऐसे २ मूर्खतायुक्त काम करती हैं जिनको देख व सुनकर लज्जा उत्पन्न होती है। धार्मिक लोग तथा धर्म्म का प्रचार करने वाली अनेक सभा प्रतिदिन यत्न करती हैं किन्तु स्त्री जाति में टस से मस नहीं होती।

देवियो! वास्तव में उन्नति मनुष्य उस समय करता है जब वह अपने गौरव को अनुभव करता हुआ अपनी न्यूनता की ओर दृष्टि डालता है। जब तक निज कमियों का ज्ञान न हो तब तक लज्जा प्रतीत नहीं होती जिन कामों से लज्जा उत्पन्न होती है मनुष्य स्वयं उनके त्याग का यत्न करता है। किन्तु यह काम विद्या का है, विद्या ही

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

प्रकाश है जो अपने प्रज्वलित मुख के प्रभाव से अज्ञान अन्धकार का नाश करके सन्मार्ग दिखाती है। जिस उत्तम मार्ग को विदुषी स्त्री देखती है उसको अवलम्भन करके जहां खुद आनन्द भोगती है। वहां अपनी देश बहिनों का भी कल्याण करने के लिये यत्न करती हुई अपने जन्म को सफल करती है। सफलता के मुख्य साधन विद्या का उपार्जन करना ही हितकर है?

स्त्री जाति का सर्व गुणों से संपन्न व सर्व त्रुटियों से रहित होना ही व उनकी श्रेष्ठता पवित्रता व शारीरिक तथा मानसिक निर्बलता से रहित होना ही आगामी संतति का सर्व गुणों से संयुक्त होना निश्चय करता है सर्व गुणों से विभूषित होने के लिये स्त्रियों को जहां धर्मशास्त्र अनेक प्रकार से उपदेश करता है वहां पर आयुर्वेद शास्त्र भी स्त्री जाति के उत्तम गुणों की प्रशंसा करता है।

(चरक में लिखा है)

इष्टाह्यैकेकशोऽप्यर्थाः परं प्रीतिकराः स्मृताः
किं पुनः स्त्री शरीरे ये संघातेन व्यवस्थिताः॥

रूप-रस-गन्ध-शब्द-स्पर्श ये पांच आंख जिह्वा नासिका—कान व त्वचा के विषय हैं ये एक २ बहुत ही आनन्द देने वाले हैं-रूप के प्रेमी रूप को देखकर गद २ प्रसन्न हो जाते हैं उनके सन्मुख सुन्दर स्त्री या पुरुष आ जावे अथवा सुन्दर पुत्र वा पुत्री आ जावे तो उस समय ऐसे आनन्द को अनुभव करते हैं। जो अत्यन्त ही प्रीति का देने वाला होता है। ऐसे ही रस-गधादि हैं किंतु जब ये पांचों ही स्त्री शरीर में विशेषता से उपस्थित हों तो स्त्री का शरीर बहुत प्रीति का उत्पादिक होता है।

संघातो हीन्द्रियानां स्त्रिषुनान्यत्रविद्यतेस्त्र्य।
श्रयोहीन्द्रियार्थोयः सप्रीति जननोऽधिकः॥

सब इन्द्रियों का समूह स्त्रियों में देखा जाता है औरों में नहीं और इन इन्द्रियों के सम्पूर्ण विषय स्त्रियों के आश्रय ही हैं यह ही कारण है कि स्त्री जाति के साथ बहुत प्रीति की जाती है।

परमात्माजी की स्त्री जाति पर विशेष कृपा है जो इसको सर्व गुणों से सम्पन्न रत्न उत्पन्न किया है। मनुष्य जाति को छोड़ पशु पक्षी आदि योनियों में भी स्त्री जाति प्रेम का पात्र समझी जाती है। स्त्रीको रूप-रस-गंध स्पर्श व शब्द आदि की विशेषता के कारण पुरुष जाति मोहित होकर इसके पीछे भागती है। विषय कामना को छोड़कर ईश्वर की महिमा का दर्शन ही इनकी रचना से दिखाई देता है। यह जाति सांसारिक संपूर्ण सौन्दर्य्य से युक्त होने के कारण अपनी संतान को जैसे चाहे बना सकती है। किंतु शोक का विषय है कि आज इस रूप-रस आदि विषयों के अन्यथा भोग से जहाँ अनेक प्रकार के पाप कर्म हो रहे हैं वहां भारत की संतान भी अनेक रोगों की खान बन रहे है इसमें से श्रेष्ठता के गुण लुप्त प्रायः होरहे हैं।

स्त्रीषु प्रीति विशेषेण स्त्रीष्वपत्यंप्रतिष्ठितम्।
धर्मार्थौ स्त्रीषु लक्ष्मीश्चस्त्रीषु लोकाः प्रतिष्ठिताः॥

स्त्रियों में प्रीति विशेषता से होती है क्योंकि स्त्रियों में सन्तान स्थापित की जाती है स्त्रियों में ही धर्म-अर्थ और लक्ष्मी तथा ससार की सब सामग्री बनी रहती है; स्त्री जाति के होने से तथा इसके सम्बन्ध जोड़ने से ही धर्म को प्राप्ति होती है धर्म के कर्मों का जो फल है वह भी इसके साथ होने से ही प्राप्त होता है पुरुष धनवान स्त्रियों की अनुग्रह से ही होता है क्योंकि ये लक्ष्मी हैं, इनमें सन्तान स्थापित की जाती है, श्रेष्ठ

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

संतान के होने से सब लोक में मान होता है इसलिये सर्व गुणों की खान इस स्त्री जाति की रक्षा करना पुरुष का परम धर्म है तथा स्त्री जाति को अपने गुणों का ज्ञान उपलब्ध करके स्वयम् ऐसे ही शास्त्र की आज्ञा के अनुसार बनाना चाहिये।

सुरूपा यौवनस्थाया लक्षणैः यो विभूषिता
या वश्या शिक्षितायाच स्त्री वृष्य तमामता॥

जो स्त्री रूप सम्पन्न और युवा अवस्था से शोभायमान है जो अपने पति, श्वशुर आदि के वश में है और विदुषी है वह ही हर प्रकार के गुणों से युक्त है। अर्थात् इस प्रकार की स्त्री ही उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के योग्य है, उत्तम सन्तान उत्पन्न करने के लिये उपरोक्त गुणों का स्त्री में होना अत्यावश्यक है इन गुणों से ही संतान में ये गुण हो सकते हैं इसलिये प्रत्येक स्त्री का कर्तव्य है कि इन गुणों को अपने में उत्पन्न करके अपने आपको श्रेष्ठतम स्त्री बनावे।

प्यारी पाठिकाओं! आपको इन आयुर्वेद के श्लोकों द्वारा स्त्रीजाति की उत्तमता बताने का प्रयोजन केवल मात्र यह है कि आयुर्वेद आपको बताता है कि आप सन्तान को संसार में स्थापन करने वाली हैं क्योंकि संसार में उत्तम सन्तान के उत्पन्न करने का विशेषतर भार माता पिता पर है।

☞ BE REST ASSURED—
THAT OUR
WALL CLOCK
'TIC-TAK' (Regd.)
GIVE YOU PERFECT TIME.
OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.
PRICE Rs.
THREE only.
Order now if you have not already orderd.
Peter Wathc Co.,
Post Box No. 27,
MADRAS.

अनन्तराम शर्मा के प्रबंध से प्रचारक प्रेस दर्यागंज देहली में छपा।
और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES.

This is the very newest style wristlet watch These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for

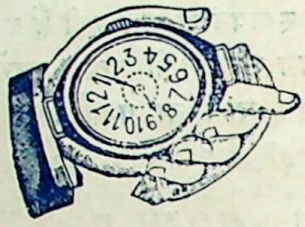

3 years. Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of much higsher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Brace.

1 et for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra

N.B—*Purchaser of 3 Watches at a time will get one German-made 4-in. dial alarm Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses the most fragrant smell of the different kinds of fine flowers. Notice minutely the delightful-rike freshlyplucked flowers-smell every now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed. ask for,

LILY OF THE VALLEY

1 oz. Bottle Re.1-8-0

1 Dram Bottle 0-12-0

Dram Bottle 0-8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0

„ „ Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,

P.B. 27, MADRAS

३५ साल का परिक्षित

भारत सरकार तथा जर्मन गवर्नमेंट से रजिस्टर्ड

८०००० एजेंटों द्वारा बिकना दवाकी सफलता का सब से बड़ा प्रमाण है।

सुधासिन्धु

(बिना अनुपान की दवा)

यह एक स्वादिष्ट और सुगन्धित दवा है, जिसके सेवन करने से कफ़, खांसी, हैजा, दमा शूल, संग्रहणी, अतिसार, पेट का दर्द, बालकों के हरे पीले दस्त, इन्फ्लूएंजा इत्यादि रोगों को शर्तिया फायदा होता है मूल्य ॥) डा० खर्च १ से २ तक ।=)

दद्रुगजकेसरी

(दाद की दवा)

बिना जलन और तकलीफ के दाद को २४ घंटे आराम दिखाने वाली सिर्फ़ यही एक दवा है, मू० फी शी० ।) आ. डा. खर्च १ से २ तक ।=) १२ लेने से २।) में घर बैठे देंगे।

बालसुधा

दुबले पतले और सदैव रोगी रहने वाले बच्चों को मोटा और तन्दुरुस्त बनाना हो तो इस मीठी दवा को मंगाकर पिलाइये। बच्चे इसे खुशी से पीते हैं। दाम फी शी० ॥) डाक खर्च ॥)

पूरा हाल जानने के लिये सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा ।

यह दवाइयाँ सब दवा बेचने वाले वालों के पास भी मिलती हैं।

सुख संचारक कम्पनी. मथुरा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ६] श्रावण १९८२—अगस्त १९२५ [खण्ड ६, संख्या ४

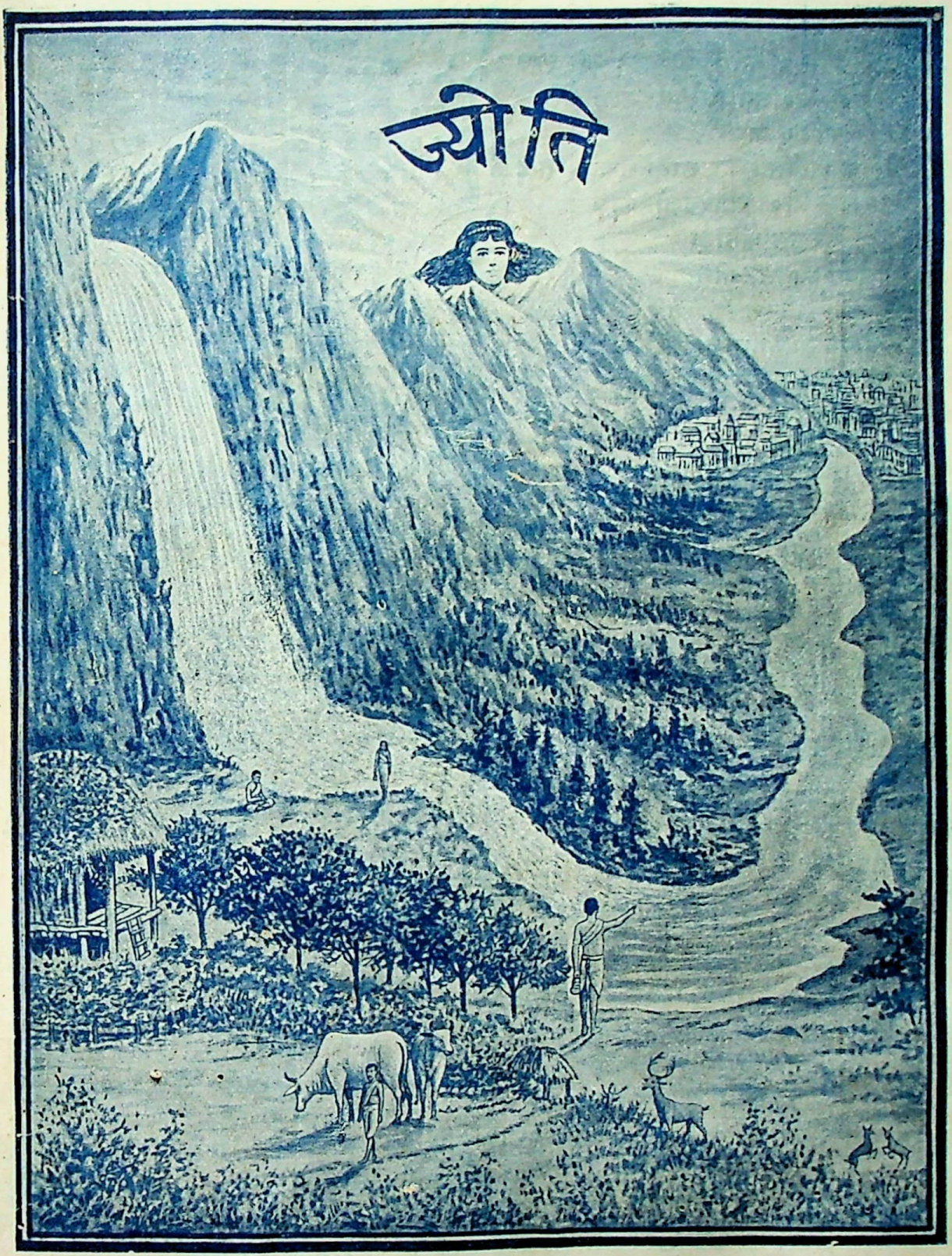

वार्षिक मूल्य ४॥) स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए० विदेश का मूल्य ६)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विषय सूची.

विषय		पृष्ठ
१ आराधना (कविता)	:	१५७
ले०—पं० जगन्नारायणदेव शर्मा कवि पुष्कर		
२ वैदिक प्रार्थनायें और सामाजिकधर्म		१५८
ले०—श्री० रामदेवजी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी		
३ अखण्ड ज्योति (गीत)	:	१६२
ले०—श्रीयुत राजाराम शुक्ल		
४ स्त्रियों के मताधिकार	:	१६३
ले०—प्रकाश		
५ मासावतरण (कविता)	:	१७०
ले०—श्री० आयुर्वेदाचा पं० सन्तलाल वैद्य		
६ हर्ष-विषाद	: :	१७१
ले०—आज़ाद		
७ विपद् के प्रति (कवित)	:	१७४
ले०—मुकुन्द		
८ मोहिनी के आंसू	:	१७५
ले०—श्री० सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज		
९ कुसुमोद्यान	: :	१८२
१० हमारी मञ्जूषा	: :	१८६
११ विचार प्रचार	: :	१८८
१२ वनिता विनोद	:	१९४–१९५
स्त्रीजगत्	: :	१९४
१३ महिला समाज की वर्तमान दशा		१९६
ले०—कुमारी शकुन्तला देवी 'हिन्दी प्रभाकर'		
गृह-प्रबन्ध	: :	१९८
१४ तो क्या यह सब स्वप्न ही था		१९९
ले०—सत्यवती मलिक श्रीनगर		
१५ मेरी बहिन	: :	२०३
ले०—श्रीचन्द		
१६ माताओ और बहिनो. संगठन करो		२०८
अनुवादक—श्री० रघुनाथ प्रसाद पाठक		
१७ कन्या गुरुकुल समाचार	:	२११

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं. जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनिआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहिये

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

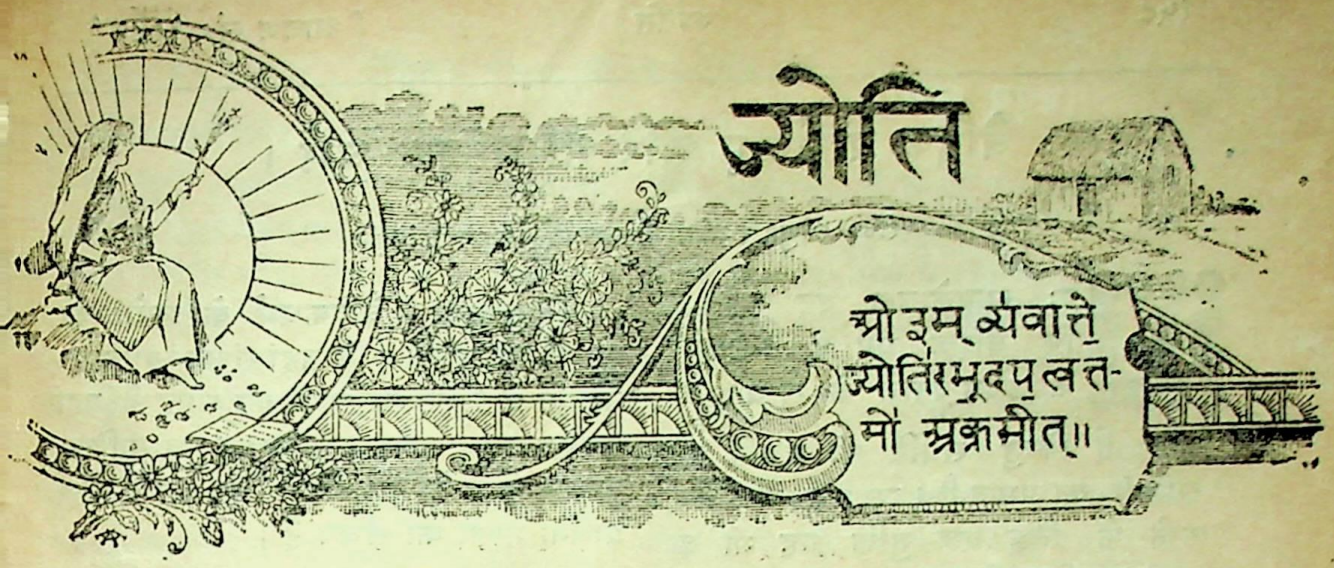

वर्ष ६ | श्रावण १९८२—अगस्त १९२५ ई० | संख्या ४

आराधना ।

[ले०—पं० जगन्नारायणदेव शर्म्मा, कविपुष्कर]

परम पिता तू जग का स्वामी ।
अलख अगोचर अन्तर्यामी ॥
तेरी सत्ता सत्य स्वतंत्र ।
हे साधन अद्वैत सुमंत्र ॥
हम सब प्राणी अनुचर तेरे ।
सर्व कार्य हों तेरे प्रेरे ॥
निर्भय जीवन करें विकास ।
करे हृदय में ज्ञान निवास ॥
उच्च ध्येय से शीघ्र मिलादे ।
सदुपदेश का अमृत पिलादे ॥
असद् वस्तु को जायं भूल ।
तुझे प्राप्त हों मंगल-मूल ॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वैदिक प्रार्थनाएं और सामाजिक धर्म ।

ले०—श्रीयुत रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी

प्रायः समालोचक यह कहते हैं कि वैदिक धर्म में व्यक्तियों को उच्च बनाने के साधन तो बहुत हैं किन्तु समष्टि की उन्नति की सामग्री का अभाव है। इस पक्ष को सिद्ध करने के लिये एक युक्ति यह भी दी जाती है कि जिस प्रकार मुसलमान और ईसाई मसजिदों और गिर्जों में एकत्रित होकर सम्मिलित प्रार्थनायें करते हैं; इस प्रकार की सम्मिलित उपासना की रीति आर्य लोगों में कभी नहीं रही और न ही आर्य्य धर्म समष्टि की उन्नति की ओर ध्यान देता है; योरूप में सामाजिक धर्म उन्नति पर है। वहां लोग अपने आपको समाज का एक आवश्यक अंग समझते हैं और समष्टि को व्यक्ति का एक विस्तृत रूप ही ख्याल करते हैं। इसके विरुद्ध हिन्दु लोगों में जहां कोई २ पुरुष सर्वोत्कृष्ट चरित्र को संघटित करके महात्मापन की पदवी प्राप्त कर लेता है वहां समाज अधोगति को प्राप्त हो रही है और कोई अपना कर्तव्य नहीं समझता कि उसको उठाये। समाज की उन्नति में अपनी उन्नति समझने वाला कोई विरला ही भद्र पुरुष होगा भारत और पश्चिम में इस भेद को भी आर्य्य धर्म के ही गले मढ़ा जाता है। कई २ आर्य्यनेता भी कभी २ कहते सुनाई देते हैं कि आर्य्य-धर्म में संशोधन होना चाहिये और उसमें सामाजिक धर्मका समा—वेश करना चाहिये। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन महानुभावों के यह विचार हैं उन्होंने कभी वेदों और आर्यग्रन्थों के पृष्ठों को पलट कर भी नहीं देखा।

जिन लोगों ने वैदिकधर्म के ग्रन्थों को पढ़ा है वह जानते हैं कि जहां संध्या व्यक्तिगत उन्नति के लिये प्रार्थनाओं का संग्रह है वहां स्वस्तिवाचन और शान्तिपाठ सामाजिक उन्नति के भावों को प्रतिबोधित करने वाले प्रार्थना मन्त्रों का संचय हैं।

स्वस्तिवाचन और शान्तिपाठ में और उनसे पूर्व जो आठ प्रार्थना के मन्त्र आते हैं उस में भी एक वचन कहीं नहीं आता पहिले मन्त्र में यह शब्द आते हैं कि "यद्भद्रं तन्न आसुव" इसके स्थान में "यद्भद्रं तन्मम आसुव" नहीं आता; इस लेखमाला में हम शान्ति पाठ के मन्त्रों की व्याख्या करेंगे ताकि हमारे पाठकों को पता लगे कि यह मन्त्र किस प्रकार देशभक्ति और समाजसेवा के भावों को प्रतिबोधित करने वाले हैं और सामाजिक शान्ति के सर्वोत्तम उपायों को बतलाने वाले हैं।

पहिला यह है:—

१ शन्न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न इन्द्रावरुणा रातहव्या। शमिन्द्रासोमा सुविताय शंयोः शन्न इन्द्रा पूषणावाजसातौ॥

इस मन्त्र में यह प्रार्थना की गई है कि इन्द्र और अग्नि हमारेलिये शम हों, इन्द्र और वरुण हमारे लिए शांतिदायक हों, इन्द्र और पूषणा हमको शान्त करें।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इन्द्राग्नि

अग्निदेवता सदा ही सभ्यता केसाथ जुड़ा रहा है जो लोग नितान्त असभ्य और जंगली हैं वे आग जलाना भी नहीं जानते और नाहीं खाना पकाना जानते हैं। सभ्यता की वृद्धि के साथ अग्नि का प्रयोग बहुत बढ़ता जाता है यहां तक कि बिजली के रूप में अग्नि के द्वारा खाना भी पकता है पंखा भी होता है और कारखाने भी चलते हैं।"

वेदमन्त्र में यह बतलाया है कि अग्नि, इन्द्र अर्थात् परमात्मा के साथ संयुक्त होनी चाहिये। प्राचीन काल में जबकि सभ्य लोगों की अग्नि, इन्द्र होती थी तो उसके द्वारा बड़े २ यज्ञ रचे जाते थे अग्निहोत्र वायु को शुद्ध करता था और ऋतु अनुकूल वर्षा लाकर अन्न की उत्पत्ति का कारण बनता था। अग्निहोत्र करने से (Forma Aldehyde) इत्यादि गैसें उत्पन्न होती हैं जो रोगजनक कृमियों का नाश करती हैं, आजकल की सभ्यता भी अग्नि का प्रयोग करती है। परन्तु यह अग्नि इन्द्राग्नि नहीं, प्रत्युत असुराग्नि है आजकल अग्नि के द्वारा लोगों की जानें ली जाती हैं नगर के नगर जलाये जाते हैं। पिछले विश्वव्यापी युद्ध में ६५ विषैली गैसों का प्रयोग किया गया था अब अमरीका में आठ और गैसें निकली हैं जो उन से भी अधिक विषैली हैं। अमेरिका के प्रोफेसर Lewuis ने एक विषैला धूमर निकाला है जिस को Lewisite कहते हैं यह धूमर जिसके अन्दर जायेगा उसको इतनी दारुण पीड़ा होगी; कि कई लोग पागल हो जायंगे और आत्महत्या कर लेंगे। एक और गैस निकली है जोकि भूमि को ७ साल तक ऊसर बनो देती है और उसके थोड़े से कतरे एक घंटे में वृक्ष को सुखा देते हैं इस प्रकार की गैसें अमरीका के रसक्रिया-भवन में एक सप्ताह में ८१० टन बन सकती हैं और इङ्गलैंडके रसक्रिया-भवन में ४१० टन. इस प्रकार की गैसों के नये २ आविष्कार करने के लिये अमेरिका की सरकार ने ३० करोड़ रुपये व्यय करने स्वीकार किये हैं और ४८ हजार मनुष्य इस काम में लगे हुये हैं, यह फल है अग्नि को असुराग्नि बनाने का। संसार में अशान्ति फैलती है राष्ट्रों में विद्वेष बढ़ता है और विद्वानों की बुद्धि आसुरी और राक्षसी बनती है यदि वेद के इस मन्त्र का प्रतिदिन पाठ किया जाय और अग्नि को इन्द्राग्नि बना कर शांति का साधक बनाया जाय तो सभ्य संसार की अवस्था नर्कीय न रहे किन्तु स्वर्गीय बन जाये।

इन्द्र वरुण

वरुण देवताको भी सभ्य मनुष्य ने पूर्णरूप में वशीभूत किया हुआ है, समुद्र के पेट को चीरकर धूमर नौकाएं चलती हैं, नलकों के द्वारा पानी को ऊपर चढ़ाया जाता है नदियों में से नहरें निकाली जाती हैं। जहां २ नदियों में बड़े २ झरने हैं, वहां बिजली उत्पन्न की जाती है जल चिकित्सा का भी प्रचार हो रहा है, किन्तु वरुण देवता को भी इन्द्र के साथ नहीं जोड़ा गया असुर के साथ ही उसको सम्बन्धित किया गया है अपने स्वार्थ के लिये और अपने गृहों से दुर्गन्ध को दूर करने के लिये धनिक मनुष्य (Flush) की रीति का प्रयोग करते हैं उनके घर का विष्ठा जल के द्वारा नदियों में चला जाता है करोड़ों निर्धन मनुष्य नदी का जल पीकर ही अपना निर्वाह करते हैं जो जल धनिक लोगों द्वारा गन्दा और दुर्गन्धित बनाया जाता है उसको निर्धन लोग पीतेहैं-प्रजा के अन्दर असंख्य रोग फैलते हैं; लाखों युवति-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यां विधवा होती हैं। और सहस्रों बालक अनाथ हो जाते हैं; प्राचीनकाल में जब वरुण का सम्बन्ध इन्द्र से या मनुमहाराज ने राज नियम बनाया था कि बहते हुये जल को दुर्गन्धित करना एक दण्डनीय दोष है आर्य लोगों के समग्र तीर्थ जल के समीप हैं। जल को शुद्ध रखने का विशेष प्रयत्न राजा और प्रजा की ओर से होता था न फिल्टरों की आवश्यकता होती थी, और नाहीं जून के महीने में पानी को उबालकर पीनेका आदेश वैद्य लोगों की ओर से होता था, साधारण जल ही इतना पवित्र और पाचक होता था कि लेमनेड सोडा और जींजिरेट के द्वारा उदरको भाड़े का टट्टू बनाने की आवश्यकता न पड़ती थी, नदी के पवित्र प्रवाह में स्नान ही आरोग्यता प्रदान करने वाला होता था नदियों में नहाने का महात्म इसीलिए बहुत था आजकल गंगा शरीर पावनी नहीं रही क्योंकि हजारों मन विष्ठा बनारस, कलकत्ता प्रयाग और हरिद्वार में उस में डाला जाता है हमारे सनातनी भाइयों को यह चिन्ता तो रहती हैं कि हर की पौड़ी के निकट जो जल आवे वह निर्बाध्य ही अर्थात् पुल के तख्ते उतरे रहे। किन्तु हर की पौड़ी के निकट ही जो विष्ठा उसमे डाला जाता है उस के विरुद्ध प्रतिवादके प्रस्ताव सनातन धर्ममंडल ने कभी स्वीकार नहीं किये, वरुण की पूजा संसार से उठ गई है अविश्वासी संसार को उसका फल यह मिला है कि वरुण देवता रुष्ट हो गये हैं असुर के साथ उन्होंने नाता जोड़ लिया है और सभ्य संसार के नाश करने पर कटिबद्ध होगये हैं; वरुण देवता की आराधना करनी चाहिये। और उनसे याचना करनी चाहिये कि वह एकबार पुनः इन्द्र परमात्मा के चरणों में गिरें ताकि जल संसार के लिये शम हो सके।

इन्द्र सोम सोम वनस्पतियों का राजा है सोम की प्रजा ही प्राकृतिक सौन्दर्य्य को उत्पन्न करनेहारी है। यदि वनस्पतियां न हों तो जगन्माता लक्ष्मी का शृङ्गार आधा भी न रहे, वास्तव में वनस्पतियां ही लक्ष्मी देवी को सुसज्जित करती हैं और उसकी रूप राशि को बढ़ाती हैं वह ही उस के अमिट और अनश्वर यौवन और लावण्य का कारण हैं वनस्पतियों द्वारा ही ओक्सीज़न उत्पन्न होती है और प्राणीमात्र का जीवन स्थिर रहता है। सोम ने आजकल असुर की ही शरण ली है जो फल रुधिर को बढ़ाने वाले और शरीर में शक्ति का सञ्चार करने वाले हैं वह ही असुर के शासन में आकर बुद्धिनाशक और पिशाची शक्तियों के सम्बर्धक बन रहे हैं प्राचीन काल में लोग अंगूर और सेब खाते थे; उनकी बुद्धियां सात्विक बनती थीं। विचार के ईंधन से मन की अग्नि प्रज्वलित रहती थी आज वही अंगूर हैं और वही सेब हैं उन को सड़ाया और गलाया जाता है और उनसे मद्य बनाई जाती हैं उस मद्य को पिया जाता है उससे मनुष्य उन्मत्त होजाता है बुद्धि को हाथ से खो बैठता है और राक्षसी कर्म करने लगता है। वही फल इन्द्र के साथ संयुक्त होकर एक प्रभाव उत्पन्न करते हैं और असुर के साथ होकर दूसरा, जब इन्द्र सोम का राज्य था तो लोग ताजी वनस्पतियां खाते थे और उन से शारीरिक, मानसिक, और आत्मिक बल प्राप्त करते थे आज कल के सभ्य लोग वनस्पति खाने वाले पशु और पक्षियों की हिंसा कर के उनका माँस खाते हैं और उन पशुओं के मृत शरीर के अन्दर जो रोग होते हैं उनको अपने अन्दर धारण करते हैं ताजी वनस्पतियें (Vitamins) या भोजनतत्व बहुत होते हैं आज कल के लोग मसाले डाल कर उन वन-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्तियों को इतना भूनते हैं कि भोजनतत्व जल जाते हैं। प्राचीन लोग गोधूम को भून कर खाते थे या मोटा चक्की का आटा खाते थे क्योंकि वह जानते थे भोजन तत्व अधिकतया छिलके में ही हैं। आज कल के लोग गोधूम को मशीन में पीसते हैं और उसका फोक खाते हैं उस फोक के खाने से शक्ति क्षीण होती है पाचनशक्ति का नाश होता है पाचनशक्ति का नाश होने से स्वभाव में चिड़चिड़ापन आता है और समाज में अशान्ति फैलती है। यदि असुर सोम के स्थान में इन्द्र-सोम का फिर राज्य हो जावे तो लोग बड़े२ नगरों को छोड़ कर प्राकृत सौन्दर्य्य के केन्द्रों में अपना निवास स्थान करें मांसभक्षी और मद्यपी संसार में कोई न रहे और प्रजा के शरीर पुष्टि हों मन बलिष्ठ हों और आत्मायें उत्कृष्ट हों।

इन्द्रपूषणा वायु ही जीवन का आधार है जब वायु का सम्बन्ध इन्द्र के साथ था तो बड़े २ यज्ञ होते थे शुद्ध और सुगन्धित वायु से फेफड़े भरे जाते थे। आज कल पूषणा का सम्बन्ध भी असुर के साथ होगया है इसलिये लोग बड़े २ नगरों और तंग मकानों में रहते हैं जहां शुद्ध वायु का प्रवेश हो कठिन है बड़े २ पुतलीघर हैं जिनका धूमर वायु को विषैली बनाता रहता है इस का परिणाम यह हुआ है कि क्षयादि रोगों की दिन प्रतिदिन वृद्धि होरही है, और जीवित लोग भी मृतों के समान हैं। अब यन्त्रों द्वारा लोगों के फेफड़ों में औक्सीजन पहुंचाई जाती है यदि यही अवस्था रही तो कोई समय आयेगा जब शुद्ध वायु बोतलों में भर २ विकेगी और निर्धन लोगों के भाग्य में उस का उपयोग होगा ही नहीं; क्या यह अभीष्ट नहीं है कि पूषण इन्द्र की शरण। ले; पुतली घरों का नाश हो और सब प्राणी शुद्ध पवित्र वायु का आनन्द ले सकें।

इस वेद मन्त्र में भगवान से प्रार्थना की गई है कि प्रार्थी ऐसी समाज का सभ्य-हो जिस में अग्नि के प्रयोग का दुरुपयोग न किया जाय और उस को संसार में अशान्ति फैलाने का साधन न बनाया जाय, अपितु उस के द्वारा वायु को शुद्ध किया जाय, शरीर में शक्ति का सञ्चार किया जाय, रोगजनक जन्तुओं का नाश कियाजाय, और भूमि को उत्पादक बनाया जाय, वरुण देवता का अपमान न किया जाय, अपितु उस के आरोग्यजनक गुणों से पूरा उपयोग लिया जाय, अन्न और वनस्पतिको ताज़ा ही खाया जावे, और उन में जो भोजनतत्व हैं उन को सड़ाया और गलाया न जावे जिस से हमारा भोजन सात्विक बना रहे; वायु देवता की पवित्रता पर विशेष बल दिया जाये, और कोई ऐसी कृतियां न की जावें जो उन की शुद्धता में बाधक हों।

क्या कोई नकार कर सकता है कि यदि किसी समाज में अग्नि वरुण सोम और पूषणा की पूजा होती हो और इन देवों के आगे शीश नवाये जावें तो वहां शान्ति का निष्कण्टक राज्य होगा। पारस्परिक कलह के संस्कार भी न रहेंगे और प्रजा का शारीरिक मानसिक और आत्मिक स्वास्थ्य सुरक्षित रहेगा।

शान्ति पाठ के पहिले मन्त्र में तो आदर्श समाज की बाह्य अवस्थाओं को उत्तम बनाने की विधि बताई है दूसरे मन्त्र में उसकी आन्तरिक अवस्था को शान्त बनाने के साधनों का निर्देश होगा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अखण्ड-ज्योति ।

[गीत]

लेखक—श्रीयुत राजाराम शुक्ल

मैं किस ज्योति-मध्य मिल जाऊं ।
जिस से कभी न पृथक् हो सकूं बन तद्रूप परम सुख पाऊं ॥

(१)

क्या ये क्षणिक प्रदीप्त-दीप-दल देख देख इन पर ललचाऊं ।
बन कर शलभ-समान मान तज, लख लख में लौ पर लौ लाऊं ॥
मैं किस ज्योति-मध्य मिल जाऊं ।

(२)

अथवा मोह-निशा में भ्रम-वश, भान भूल टकटकी लगाऊं ।
चारु-चन्द्र-मुख-हित चकोर बन, चुन चुन चिनगारियां पचाऊं ॥
मैं किस ज्योति मध्य मिल जाऊं ।

(३)

मर कर याकि मेघ-माला पर, निशि दिन नाच नाच कर गाऊं ।
देख दिव्य दामिनी-कामिनी, निज स्वामिनी मान अपनाऊं ॥
मैं किस ज्योति-मध्य मिल जाऊं ।

(४)

या उस प्रखर प्रभाकर में ही, उल्का पिण्ड समान समाऊं ।
और रहूं प्रज्वलित प्रलय तक, यों अपना अस्तित्व गवाँऊं ॥
मैं किस ज्योति मध्य मिल जाऊं ।

(५)

इन सब में परितोष कहां वह, चाहे मन सदोष समझाऊं ।
मिलूं खोज कर ज्योति एक रस, स्वयं अखण्ड-ज्योति कहलाऊं ॥
मैं किस ज्योति मध्य-मिल जाऊं ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्रियों के मताधिकार।

लेखक—'प्रकाश'

सार की सभ्य जातियां उन्नति के मार्ग में बड़ी शीघ्रता से कदम बढ़ाये चली जारही हैं। ४० वर्ष पूर्व हमारा देश जिस स्थिति में था उस से बहुत आगे बढ़ चुका है। ४० वर्ष पूर्व की कई बातें, रीति रिवाज इस समय हमें हास्य पूर्ण प्रतीत होते हैं। 'स्त्री शूद्रौना धीयताम्, तथा बाल विवाह आदि अनेक गर्हित प्रथाओं पर समाज का दृढ़ विश्वास था। स्त्रिय मनुष्यों की सम्पत्ति Property समझी जाती थी। प्राचीन आर्य सभ्यता में जो स्त्रियों की उच्च स्थिति थी उसे सारा समाज भूल चुका था। स्त्री जाति को पढ़ने का ठीक ज्ञान Idea तक भी न रहा था। इस लिये एक बार पढ़ती हुई कन्याओं ने कहा था We did not know how pleasant it was to learn" किन्तु जमाने ने उन्नति की: और बहुतसी स्त्रियों ने इस बात को अनुभव किया कि पढ़ने में वास्तव में कितना सुख होता है। शिक्षित होने पर स्त्रियों ने अपनी स्थिति को जाना, अपने अधिकारों को पहिचाना और परिणाम यह हुआ कि जिस प्रकार पुरुषों को राजनैतिक अधिकार प्राप्त हैं। उसी प्रकार राजनैतिक तथा सामाजिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिये स्त्री जाति ने भी बुलन्द आवाज में अपने राजनैतिक अधिकारों की मांग उपस्थित की।

हमारे देश में जहां आधी संख्या पुरुषों की है वहां आधी संख्या स्त्रियों की भी है। राष्ट्र के शासन का यही उद्देश्य होना चाहिये कि उसके सम्पूर्ण निवासियों को अधिक से अधिक उन्नति करने का अवसर प्राप्त हो, तथा सब निवासियों के साथ न्याय हो। यदि किसी राष्ट्र के शासन में ऐसा नहीं होता और एक जन समाज दुसरों के अधिकारों को कुचल देता है अथवा उन्नति में बाधक होता है तो वह शासन किसी प्रकार उचित तथा अपने उद्देश्य को पूरा करने वाला नहीं हो सकता। सब के साथ ठीक न्याय हो इसके लिये यह आवश्यक है राजनैतिक अधिकार पुरुष स्त्री सब को प्राप्त हों। अन्यथा जिस समाज के हिस्से को राजनैतिक अधिकार प्राप्त न होंगे उन्हें वे व्यक्ति कुचल डालेंगे जिन्हें राजनैतिक अधिकार प्राप्त हों। अनेक सभ्य समाजों में भी इन सब बातों की ओर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता और प्रत्येक देश निवासी को मताधिकार नहीं प्राप्त होता। जैसा कि हम देखते हैं कि कई सभ्य देशों में अब भी महिला जाति को पुरुषों की भोग्य सामग्री समझा जाता है। समझा जाता है कि स्त्रियों का अपना कोई उद्देश्य नहीं होता। वास्तविक उद्देश्य सिर्फ मनुष्यों का ही होता है। उद्देश्य प्राप्ति में मनुष्यों की सहायता करना यही स्त्रियों का कर्तव्य है। जब मनुष्य काम से अपने घर में थक कर आवे तो उसको आराम देना यहां स्त्रियों का काम है। स्त्री जाति का कैसा तुच्छ उद्देश्य समझा जाता है। और समझा जाता है कि स्त्रियों को शिक्षा भी प्रारम्भिक ही देनी चाहिये ताकि वे अपने अधिकारों को भली प्रकार न समझ सकें। जो थोड़ी बहुत प्रारम्भिक शिक्षा उन्हें दी जाय वह भी इस प्रकार की [गाना, बजाना, पकाना आदि] देनी चाहिये जिस से कि घर में बैठने की ही प्रवृत्ति

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्री समाज में बढ़े और घर से बाहर निकल कर वे समाज में प्रकट न हो सकें। कई लोगों का कथन है कि हमने Division of labour के सिद्धांत के अनुसार सम्पूर्ण श्रम के दो विभाग कर लिये हैं उन में से एक, घर के अन्दर का काम स्त्रियों के आधीन कर दिया है और दूसरा घर से बाहर का कार्य मनुष्यों ने स्वयं अपने ऊपर लेलिया है। दोनों अपने २ क्षेत्र में स्वतंत्र हैं। यह विचार ऊपर २ से तो कुछ अच्छा अवश्य प्रतीत होता हैं किन्तु सार इस में भी कुछ नहीं। division of l bour श्रमविभाग का विचार तो ठीक है किन्तु यह किसी प्रकार भी उचित नहीं प्रतीत होता कि किसी को बाधित किया जाय कि तुम्हें यही काम करना पड़ेगा। श्रम विभाग में प्रत्येक व्यक्ति अपने कार्य को करने या छोड़ने में पूर्ण स्वतंत्र होता है यदि उसे बाधित किया जाय तो वह श्रमविभाग नरह कर (दासता) slavery का विभाग (division of slavery) होजायगा, अतः स्त्रियों को इस बात के लिये बाधित करना कि वे घर का ही काम करें और बाहर समाज में न आसकें श्रमविभाग नहीं है। इस को वास्तविक अर्थ में श्रम विभाग बनाने केलिये उन्हें उच्च शिक्षा प्राप्त करने का, समाज में प्रकट होने का और राजनैतिक कार्यों में हिस्सा लेने का अधिकार देना आवश्यक है। जब तक किसी को शासन कार्य में हिस्सा लेने का अधिकार नहीं होता तब तक वह स्वतंत्र नहीं रह सकता। उसे अन्य शासन कर्त्ताओं के नीचे दबे रहना पड़ता है। इस लिये मताधिकार उन सब देश वासियों को होना चाहिये जिन्होंने कि राष्ट्र के शासन से शासित होना हो, और जो राष्ट्र की और अपनी भलाई को भली प्रकार विचार सकते हों।

मताधिकार के लिये भिन्न २ देशों में भिन्न २ शर्त्तें होती हैं। कई देशों में मताधिकार उन व्यक्तियों को प्राप्त होता है जो tax आदि के रूप में कुछ धनकी मात्रा देते हैं। किन्तु यह सिस्टम अनेक दोष पूर्ण है। ऐसा करने से शासन डोर अमीरों (Aristocarats) के हाथ में आजाती है और वे लोग अपने स्वार्थों के लिये अन्य परिश्रमी जनों के स्वार्थों को कुचल डालते हैं। परिश्रमी लोग जो कि वास्तव में देश की स्थिति के कारण और आधार होते हैं, कुचले जाते हैं, और आराम पसन्द तथा श्रमियों की कमाई से अनुचित लाभ उठाने वाले (parasites) समृद्ध होते जाते हैं। इस प्रकार देश की जड़ खोखली होनी शुरू होजाती है। अतः Tax के द्वारा मताधिकार सर्वोत्कृष्ट नहीं है।

कई देशों में मताधिकार उन व्यक्तियों को प्राप्त होता है जो राष्ट्र के लिये कुछ चीज़ उत्पन्न करते हैं। अर्थात् परिश्रमी लोगों को मताधिकार प्राप्त होता है जो लोग वास्तव में मेहनत करके राष्ट्र के लिये कुछ उत्पन्न नहीं करते उन्हें मताधिकार प्राप्त नहीं होता। इस प्रकार अमीर लोग (Aristocrats) और पुरोहितादि मताधिकार से वंचित रक्खे जाते हैं। इस प्रकार की शासन प्रणाली रूस में प्रचलित हैं। यह सिस्टम प्रथम की अपेक्षा तो कुछ अच्छा है क्योंकि इसमें देश के सारभूत परिश्रमी लोगों के स्वार्थों का अधिक ध्यान रक्खा जाता है किन्तु हमारे लिये यह सिस्टम भी अनुकरणीय नहीं; क्योंकि हमारे यहां केवल Socialists (साम्य वादी लोग ही नहीं रहते। हमारे समाज में (साम्यवादी तथा पूंजीपति) आदि सब प्रकार के जन रहते हैं। अतः हमें सबके स्वार्थों का ध्यान रखना चाहिये। समाज के किसी भी

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

अङ्ग को कुचल डालना उचित नहीं है। इस लिये Vote देने का अधिकार न केवल अमीरों को और परिश्रमी लोगों को ही, किन्तु सब को ही प्राप्त होना चाहिये। जो कोई भी व्यक्ति देश में रहता हो, जिस किसी ने भी देश के बने हुए नियमों से शासित होना हो, उस प्रत्येक व्यक्ति को शासन सम्बन्धी अधिकार प्राप्त होने चाहियें। इसी लिए रूस ने लिखा है :—

"There is but one law which by its nature requires unanimous consent, that is the social compact; for civil association is the most voluntary act in the world; every man being born free and Master for himself; No one can, under any pretext whatever, enslave him without his assent. To decide that the son of a slave is born a slave, is to decide that he is not born a man.

अर्थात् यदि कोई ऐसे नियमों से शासित होता हो जिन नियमों में उसकी स्वीकृति न हो तो वह स्वतन्त्र नहीं रहता। उसका जन्म सिद्ध अधिकार (स्वतन्त्रता) छिन जाता है इस लिये आवश्यक है कि राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को स्वतन्त्र रखने के लिये जो नियम उसके लिये बनाये जायं उनमें उसकी सम्मति अवश्य लेली जाय। इस प्रकार क्या अमीर क्या ग़रीब, क्या पुरुष क्या स्त्री सभी को समान रूप से मताधिकार प्राप्त होना चाहिये।

यदि राष्ट्र के कुछ व्यक्ति-समुदाय को राजनैतिक अधिकारों से वंचित रक्खा जाता है तो उस समूह पर अत्याचार होना बिल्कुल स्वाभाविक है इन राजनैतिक अधिकारों से वंचित रहने के कारण जो जो अत्याचार स्त्री जाति पर हुये हैं उनका हृदयद्रावक चित्र खींचने के लिये यहां अवसर नहीं है। इन अत्याचारों से बचने के लिये ही स्त्री जाति ने अपने अधिकारों को पहचानने की कोशिश की और अब उनको भली प्रकार समझ कर मताधिकार के लिये बुलन्द आवाज़ में अपनी मांग उपस्थित की। किन्तु कितने शोक की बात है कि अब भी अनेक सज्जन उनकी युक्ति युक्त और आवश्यक मांग को यह कह कर ठुकरा देते हैं कि स्त्रियें अभी योग्य नहीं हुई हैं उनकी दिमाग़ी योग्यता (intellectual capacity) इतनी नहीं हुई है कि वे राष्ट्र के शासन कार्य में हाथ बटा सकें। उनका यह कहना अनुचित तथा अन्याय पूर्ण है। क्योंकि स्त्रियों में शिक्षा का प्रचार बहुत तेजी से बढ़ रहा है। उन्होंने अपने अधिकारों को भली प्रकार समझना शुरू कर दिया है अब उनको दुधमुहें बच्चों की तरह समझना बड़ी भारी भूल है। कई मनुष्यों के भी दिमाग़ बेतरह dull होते हैं वे किसी भी बात को नहीं सोच समझ सकते। उनको तो मत देने का अधिकार प्राप्त होता है, और कहा जाता है कि वे अपने राजनैतिक अधिकारों को समझ लेते हैं और स्त्रियें जो पढ़ी लिखी और विदुषी हैं उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं प्राप्त होता और कहा जाता है कि वे राजनैतिक अधिकारों को नहीं समझ सकतीं। कैसा स्पष्ट अन्याय है? जिस प्रकार सारे पुरुष विद्वान् हों या न हों, अपने राजनैतिक अधिकारों को समझते हैं इसी प्रकार सम्पूर्ण स्त्रियें भी विदुषी हों या न हों सब अपने राजनैतिक अधिकारों को समझती हैं और उनकी आवश्यकता को अनुभव करती हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस में सन्देह नहीं कि हमारे देश की समाज में स्त्रियें बहुत अधिक मात्रा में शिक्षित नहीं हैं किन्तु उनमें शिक्षा का प्रचार इतनी तेज़ी से बढ़ रहा है कि देख कर दंग रह जाना पड़ता है। स्त्री समाज में जो शिक्षा के प्रति कुछ घृणा और उदासीनता सी थी वह बिल्कुल हट चुकी है और शीघ्र से शीघ्र अपने राजनैतिक अधिकारों को प्राप्त करने के लिये वे शिक्षा को अपना रही हैं। (स्त्री शिक्षा) की वृद्धि की गति को दिखाने के लिये पिछली आधी शताब्दी का कच्चा चिट्ठा पाठकों के सामने उपस्थित करते हैं --

बम्बई प्रान्त में १८५४ में ६० कन्या पाठशालायें थीं जिन में ३५०० कन्यायें पढ़ती थीं। १८६६ में (१५ वर्ष में) स्कूलों की संख्या २०६ होगई और उनमें पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या ६००० होगई। अर्थात् १५ वर्ष में स्कूलों की संख्या और उसमें पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या दोनों तिगुना होगई हैं। १८८१ में स्कूलों की संख्या ३४३ होगई और उसमें पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या २६००० होगई। अर्थात् ११ वर्ष में १४३ स्कूल बढ़ गये और कन्याओं की संख्या फिर लगभग तीनगुनी होगई। अर्थात् १३वें वर्ष पठित कन्याओं की संख्या पहले की अपेक्षा ३ गुनी हो जाती है। अर्थात् ३, ६, २७ इस प्रकार के Geometrical progress से पठित कन्याओं की वृद्धि हो रही है।

मद्रास प्रान्त में १८४१ में स्त्रियों की शिक्षा की ओर प्रयत्न शुरू हुवा १८४५ में वहां पहला कन्याओं का स्कूल खुला। १८५४ में २५६ कन्याओं के स्कूल खुल गये और ८००० कन्यायें उनमें शिक्षा प्राप्त करने लगीं। इस प्रकार सिर्फ ६ वर्षों में २५६ स्कूलों का खुल जाना क्या इस बात का प्रमाण नहीं है कि स्त्रियों में बहुत अधिक पढ़ने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। १८८१ में स्कूल ५५७ होगये और उनमें पढ़ने वाली कन्याओं की संख्या ३५ हजार होगई। इसी प्रकार अन्य सब प्रान्तों में भी स्त्री शिक्षा का प्रचार बहुत तेज़ी से बढ़ रहा है और कोई आश्चर्य नहीं यदि वे चन्द सालों में ही पुरुषों के बराबर शिक्षिता होजायं। मताधिकार देने से उनमें शिक्षा के लिये और भी अधिक उत्साह होगा।

इस प्रकार हमने देखा कि कन्यायें बड़ी शीघ्रता से (शिक्षा) की ओर पग बढ़ा रही हैं। इस लिये उनको समुचित रूप से अपने अधिकारों को समझ लेने पर भी उन्हें अधिकारों से वंचित रखना (मनुष्यत्व) के ख़िलाफ है। मिस्टर फैरोज़ थौमस ने भारतीय महिलाओं की उन्नति को देख कर लिखा है: --

"The last two decades have witnessed a great advance in the social life also of Indian ladies, and people who knew India thirty or forty years ago, are surprised to hear of woman's literary clubs where papers are read on topics of the day and lectures given, not only in vernacular but in English."

कहने का अभिप्राय यह है कि स्त्रियां पर्याप्त शिक्षिता हो चुकी हैं और आजकल की स्थिति को भी भली भांति जान गई हैं। इसलिये उन्हें अधिकार देना सर्वथा उचित और युक्ति युक्त है।

स्त्रियां केवल प्रारम्भिक शिक्षा पाकर ही सन्तुष्ट नहीं हो जातीं किन्तु मनुष्यों की तरह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उच्च विभाग (B A M. A.) तक शिक्षा प्राप्त करती हैं। उन में से अनेक तो कालेज विभाग में शिक्षण का कार्य भी करती हैं। फिर भी क्या वे इतनी भोली और मूर्ख बनी रह जाती हैं कि उनको अधिकार देना बच्चे के हाथ में तलवार देने के समान समझा जाता है। जो B. A. और M. A. की शिक्षा मनुष्यों को मत देने योग्य बनाती है और जो परिस्थितियें मनुष्यों को शासन करना सिखलाती हैं क्या वही शिक्षा और वेही परिस्थितियें स्त्रियों को इस योग्य बना देतीं कि वे भी मत दे सकें और शासन विभाग में हिस्सा बटा सकें। उनको मताधिकार न देना उन पर स्पष्ट रूप से अत्याचार करना है।

देश में आधी संख्या स्त्रियों की भी है। इस आधी संख्या का प्रभाव शेष आधे मनुष्यसमाज पर पड़ना बहुत स्वाभाविक है स्त्रियों का प्रभाव मनुष्यों की सामाजिक तथा राजनैतिक दोनों अवस्थाओं पर पड़ता है। कई पुरुष समझते हैं कि क्यों कि भारतवर्ष में स्त्रियां सर्वथा घरों तक ही परिमित रहती हैं अतः उनका समाज तथा राजनीति पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, किन्तु यह उनकी बड़ी भारी भूल है स्त्रियों का अप्रत्यक्ष तौर पर समाज और राजनीति दोनों पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। देशबन्धु दास का कथन है:—

"Women exercise a very powerfull influence over society, not less so in India then elsewhere. It is a mistake to suppose that the women in India do not command respect, or do not exercise that influence which women exercise in most civilised countries. अशिक्षितावस्था से भी स्त्रियों का अप्रत्यक्ष प्रभाव समाज पर पड़ता है। जब वे शिक्षिता हो जायेंगीं और समाज में पढ़ाना लिखाना और भाषण देना आदि सामाजिक कार्य भी शुरू कर देंगी। (जैसा कि अब हो ही गया है) तो समाज पर उनका सीधा प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ेगा। तो जब समाज पर स्त्रीजाति का सीधा असर पड़ता है और वे समाज का एक हिस्सा ही बन जाती हैं तो समाज को नियमित करने का अधिकार अर्थात् मताधिकार उनको क्यों न प्राप्त हो? यदि शासन का अधिकार महिलाओं को प्राप्त हो जाय तो उनका प्रभाव राजनीति पर भी ठीक और उत्तरदायित्व पूर्ण रूप में पड़ेगा। अब पड़ने वाले प्रभाव के लिये स्त्रियें उत्तरदात्री नहीं हैं क्योंकि उन्हें समाज में अधिकार ही नहीं प्राप्त। स्त्रियों को जब राजनीति में भाग लेने का अधिकार प्राप्त हो जायगा तो राष्ट्र के प्रत्येक नियम आदि के लिये वे अपने को उत्तरदात्री अनुभव करेंगीं। सब प्रकार के सामाजिक आदि अधिकारों का आधारभूत राजनैतिक अधिकार ही होते हैं। जब उनका समान रूप से प्रतिनिधित्व शुरू हो जायगा तो वे अपने उचित और योग्य अधिकारों को राष्ट्र प्रतिनिधि सभा में स्वीकार करवा सकती हैं। इसलिये मताधिकार एक ऐसी कुञ्जी है जिससे कि सर्व प्रकार की दिक्कतें हल हो सकती हैं। अतः स्त्रियों को मताधिकार दे देना मानों उन की हर प्रकार की शिकायतें दूर कर देना है। इसलिये स्त्रियों की विकट और पेचीदा समस्याओं को हल करने का एक मात्र साधन मताधिकार है।

कई लोगों का विश्वास है कि यदि स्त्रियें सामाजिक क्षेत्र में घर से बाहर आ जाएंगीं और राजनीति में हिस्सा लेने लगेंगी तो गार्हस्थ्य सुख बिल्कुल नष्ट हो जायेगा। स्त्रियों का घर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

के अन्दरही अन्दर परिमित रहना यही गार्हस्थ सुख का एक मात्र कारण है इसलिये उन्हें बाहर नहीं आने देना चाहिये। किन्तु यह उन लोगों की आशंका व्यर्थ की ही है। क्यों कि गार्हस्थ सुख तब कम हो सकता है यदि उनसे कठोर काम करवाया जाय या उनके अन्दर जो स्वाभाविक कोमलता आदि गुण हैं उन्हें नष्ट करने का उपाय रचा जाय किंतु अपने अधिकारों को समझते हुये वोट देने से उनमें किसी प्रकार की कठोरता आने का भय नहीं है। इसी प्रकार कोई Intellectual profession करने से भी गार्हस्थसुख कम नहीं हो सकता। जिन २ देशों में महिलाओं को मताधिकार प्राप्त है वहां उनका गार्हस्थ जीवन कोई कठोरता पूर्ण नहीं हो गया है। इङ्गलैंड में स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त है। Canada में स्त्रियों को मताधिकार प्राप्त है वहां के निवासियों के जीवन कठोरता पूर्ण नहीं हो गये हैं।

अनेकों का पहिले विश्वास था कि पढ़ाने लिखाने से भी स्त्रियों में कठोरता आजाती है और स्त्रीधर्म का अभाव उनमें हो जाता है किन्तु अब शनैः २ यह भ्रम दूर होता जाता है और लोगों को विश्वास होता जाता है कि उच्च शिक्षा प्राप्त स्त्रियों के घर में आने से गार्हस्थ सुख घटता नहीं किन्तु बढ़ जाता है। जहां २ पढ़ी लिखी स्त्रियों के कारण गार्हस्थ सुख कम हुआ है वहां २ उनका पढ़ा लिखा होना कारण नहीं है किन्तु उसका कारण पति की अयोग्यता होना है। पति और पत्नी दोनों को समान रूप से योग्य होना चाहिये अन्यथा जो अयोग्य होगा वही दबेगा और अपने जीवन के सुख को नष्ट कर देगा इसी प्रकार स्त्रियों को राजनीति में हिस्सा लेने देने से गार्हस्थसुख कम नहीं होगा। स्त्रियें पार्लियामेन्ट की मैम्बर रहते हुए भी गृहकार्य्य कर सकती हैं। मत देने में और घर के काम में कोई ऐसा विरोध नहीं है कि कोई व्यक्ति एक को करता हुआ दूसरे को न कर सके। हमें स्त्रियों की परिस्थिति को और अधिकारों को समझना चाहिये। और उनको उन उचित अधिकारों के देने में ज़रा भी आना कानी नहीं करनी चाहिये।

प्राचीनकाल में जो भारतीय महिलाओं का आदर्श होता था इसे R. C. Dutt ने अपनी "The civilisation in ancient India" नामक ग्रन्थ में इस प्रकार वर्णन किया है "And they even had their legitimate influence on politics and administration" अर्थात् स्त्रियों का पौलिटिक्स और शासन पर पूरा प्रभाव रहता था यह समझना बड़ी भारी भूल होगी कि प्राचीनकाल में स्त्रियों को घरों तक ही परिमित रक्खा जाता था। और उन्हें पूर्णतया पति के आधीन होकर ही रहना होता था उनका पारस्परिक सम्बन्ध किस प्रकार का होता था उसे Mr. R C. Dutt ने बहुत ही अच्छे शब्दों में वर्णन किया है। वे लिखते हैं:—

"Concidered as the intellectual companion of their husbands; as their friends; and loving helpers in the Journey of life, as the partners of their religious duties and the centre of their domestic bliss."

अर्थात् पति पत्नी का सम्बन्ध, साथी और प्रियमित्र का होता था और संसारयात्रा में पारस्परिक सहायता करना ही उन दोनों का काम होता था।

हमें फिर से उसी प्रकार के समय को लाने का निश्चय अपने मन में कर लेना चाहिये। यही हम लोगों का आदर्श होना चाहिये। स्त्रियों को जब सर्व प्रकार के राज

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नैतिक तथा सामाजिक अधिकार प्राप्त हो जायेंगे तभी यह स्थिति सम्भव है देश के प्रत्येक व्यक्ति को राजनैतिक अधिकार प्राप्त होने चाहियें। एक विशेष प्रकार के व्यक्ति समूह के हाथ में शासन डोर आ जाने से दूसरे अधिकार से वञ्चित व्यक्ति समूह पर अत्याचार होना स्वाभाविक है। अतः क्या अमीर क्या ग़रीब क्या स्त्री क्या पुरुष सबको राजनैतिक अधिकार समान रूप से ही प्राप्त होने चाहिये। कोई व्यक्ति राष्ट्र का अंग है बस इतनी ही कसौटी मताधिकार के लिये पर्याप्त होनी चाहिये। हां, जो राष्ट्र के अंग अपरिपक्व हैं या किसी कारण से विकृत हो गए हों उन्हें अधिकार से अवश्य वञ्चित रखना चाहिये। स्त्रियें न तो अपरिपक्व होती हैं और न ही विकृत होगई होती हैं। इसके बच्चों को चाहे वह स्त्री हों या पुरुष अधिकार देना उचित नहीं। क्योंकि वे अपने अधिकार को समझ ही नहीं सकते। और नाहीं उसका भली भांति उपयोग उठा सकते इस लिये महिलाओं को २४, और पुरुषों को २५ वर्ष की उम्रतक राजनैतिक अधिकार नहीं देने चाहिये।

जो मनुष्य पागलहों उन्हें भी सब प्रकार के अधिकारों से वंचित रखना चाहिये क्योंकि वे अपना ही शासन नहीं कर सकते तो राष्ट्रके शासन में भाग कैसे ले सकतेहैं।

कैदी को भी मताधिकार से वंचित रखना चाहिये क्योंकि उसका कैद में जाना ही इसबात का प्रमाण है कि वह देशके नियमों द्वारा प्राप्त अधिकारों का सदुपयोग नहीं कर सकता अतः उसे अधिकार देना व्यर्थ है।

विदेशी (अनागरिक) ने क्योंकि उन नियमों द्वारा शासित ही नहीं होना अतःउस का कोई राष्ट्र के नियमों से सम्बन्ध ही नहीं अतः उन्हें भी मताधिकार नहीं देना चाहिये।

इसी प्रकार भिखारियों को भी मताधिकार नहीं देना चाहिये जैसा कि हमने पहिले ही वर्णन किया है कि राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को मत देने का अधिकार होना चाहिये। धन या (श्रम) इत्यादि द्वारा मत का अधिकार कुछ मनुष्यों तक ही परिमित नहीं होना चाहिये। मताधिकार की यदि कोई test रक्खी जासकती है तो वह (दिमाग़ी) योग्यता है। एक मत का अधिकार तो सब को (अपवादवालों को छोड़कर) होना चाहिये किन्तु (अधिक सम्मति) का अधिकार विशेष रुप से शिक्षितों को ही कुछ अंश में दिया जासकता है क्योंकि विशेष विद्वानों के प्रतिनिधित्व से राष्ट्र की शासन डोर अच्छे से अच्छे दिमागों के हाथ में आजायगी न कि धनियों के या (श्रमियों) के।

इस प्रकार हमने देखा कि स्त्री पुरुषों को समान रुप से ही सब अधिकार प्राप्त होने चाहिये। किसी पदके लिये योग्यता की परख (दिमागी) योग्यता ही होनी चाहिये उसमें धनी या गरीब, स्त्री या पुरुष इत्यादि २ इस प्रकार के भेद भाव से काम न लिया जाना चाहिये। एवं स्त्रियें भी ऊंचे से ऊंचे राजनैतिक पदों को अपने को योग्य प्रमाणित कर स्वीकार कर सकेंगी। मनुष्यों को उदारता से काम लेना चाहिये। स्त्रीजाति को जिसको कि धर्म शास्त्रों में उत्कृष्ट और पूज्य कहा है हमें अवश्य समानाधिकार देदेने चाहिये। संस्कृत में महिला को अर्द्धांगिनी और अंग्रेज़ी में स्त्री को better half कहा जाता है तो हमें उन्हें अच्छा २ कहते ही नहीं रहना चाहिये। केवल कथन मात्र से ही उनकी पूजा नहीं करनी चाहिये। किन्तु समान रूप से उन्हें राजनैतिक तथा सामाजिक अधिकार देकर कर्म से भी उनकी पूजा करनी चाहिये यही वैदिक आदर्श है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मासावतरण

श्रावण

लेखक – श्री आयुर्वेदाचार्य पं० सन्तलाल वैद्य

सघन—घनों ने अब नादित की दशों दिशाएँ;
अब निज पति[1] लिपटा घन[2]—पट में रहीं निशाएं;
अब वियोगिनी शोक—सरित् के बीच बही है;
हा ! उस पर अब धैर्य्य छुड़ा चञ्चला[3] रही है;
वे उदार बन घन मूसल-धार धरा पर छोड़ कर,
किए मुदित थल स-जल कर, जल-थल-बिल-चर, गगनचर;

* * *

अब दिन-भर, दिन-कर-बिन, दिन दुर्-दिन रहता है;
अब घर-दल रवि राहु सदृश रह रह गहता है;
लखो न—बिल कलुषित—नालों से शुचि—सरित एँ-
कलुषित हुई, कु-संग पड़ी हों ज्यों वनिताएं !
उमले सूखे—सर, बढ़ी दर्दुर[4]-ध्वनि चहुं ओर अति;
केकी[5]—गण ने दिन छिपे केका[6] की कासार[7]—प्रति !

* * *

विविध-वर्णमय सुर—धनु की वह दिव्य —छटएं;
स-जल, विजल, सित, अ-सित, विविध-विध रम्य घटाएं;
हरित मनोहर शष्प शाटिका कर अवगुण्ठन-
अहो ! अवनि[8] अब मञ्जुलता से मोह रही मन !
वन—उपवन के तुप-विटप, वेल-वनस्पति-गण सभी-
क्या तुप बिन, सौंदर्य यह पा सकते श्रावण ! कभी ?

---

१ निज-पति – निशा-पति – चन्द्र;
२ घन – अभ्र = बादल;
३ चञ्चला बिजुली;
४ दर्दुर मैंडक
५ केकी – मयूर;
६ केका मयूर-वाणी;
७ कासार – तालाब;
८ अवनि – भूमि;

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हर्ष-विषाद ।

(ले०—आज़ाद)

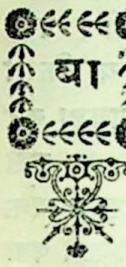

बाल्यावस्था में अधिक हंसने से माता पिता मना करके कहते थे कि अधिक हंसने से अन्त को रोना पड़ता है किन्तु कौन सुनता था उनकी बातको हंस कर उड़ा देता था। कौन जानता था कि उन के कथन में इतना बड़ा महान सत्य छिपा हुआ है।

अवस्था के साथ ही साथ समय का भी परिवर्तन हुआ। एक ओर घनान्धकार दूसरी ओर प्रकाश। एक ओर प्रचण्ड धूप दूसरी ओर सुशीतल छाया, एक ओर पूर्ण-मासी का चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कला से विराजित, दूसरी ओर कराल राहु निगलजाने के लिये प्रस्तुत, उद्यान में विचरण करते २ देखा। कहीं तो नाना प्रकार के रंग बिरंगे फूल खिला कर वायु मण्डल को सुगन्धित बना रहे हैं—दूसरी ओर सुकोमल पुष्प पृथ्वी पर पड़े २ मुरझा रहे हैं। उस का मर्म अब तक नहीं समझा था किन्तु आज पूरी तरह समझ में आगया।

समझा था-संसार में हंसनेके लिये आया हूँ। जीवन हंसते २ व्यतीत कर दूँगा किन्तु हाय! कौन जानता था कि इसी जीवन में एक दिन रोना भी पड़ेगा। हर्ष और विषाद, हंसना और रोना इस जगत का नियम है। प्रेमप्रतिमा को विसर्जन कर आज ज्ञान के कपाट खुल गये और समझा कि रोना ही संसार का सार है।

विवाह के पूर्व हृदय में एक तरङ्ग उठी उसी की लहर में दिवारात्रि भासने लगा। उस समय मन में यही विचार किया कि विवाह करूंगा ही नहीं। निश्चिन्त मन से विद्याध्ययन करके स्वदेशकी उन्नति में जीवन व्यतीत कर दूँगा।

किन्तु समाज को उल्लङ्घन करने की शक्ति मुझ में न थी नित्य प्रति ईश्वर से प्रार्थना किया करता था कि हे भगवन! विवाह के पश्चात रोना न पड़े। ईश्वरने वह प्रार्थना सुनी और मुझ को अतुल सुख के अनुभव करने का समय दिया। मनुष्य कायमन से जिस वस्तु की आकांक्षा करता है वह वस्तु उसे अवश्य प्राप्त होती है। किन्तु अतुल रूप राशि लेकर मेरे घर को सदुज्ज्वल करेगी यह कल्पना कभी ध्यान में न आई थी दरिद्रकी कुटीर में भला ऐसी शोभा कहां! स्वच्छ सरोवर में जो कमल उत्पन्न होता है वह क्षुद्र जलाशय में क्यों भासमान होने लगा मैंने स्वप्नमेभी ख्याल नहीं किया था कि किसी गृहस्थ की कन्या आकर गृहकार्य्य सुसम्पन्न करेगी। प्राणपण से मेरे माता पिता की सेवा कर अपने भाग्य को सराहेगी। अमूल्य निधि पाकर आत्महारी हो जायगी। मेरे बन्धु बान्धवों को प्रेम की दृष्टि से देखेगी और उन की स्नेहपात्री होकर अपने अमृत मय शब्दों से संसार को स्वर्ग बना देगी।

उद्यान में कितने ही सुन्दर २ पुष्प नित्य प्रति खिलते हैं किन्तु मैंने उनकी ओर न जाकर जङ्गल से मनोनीत वनफूल उठा लाकर उसी को कण्ठहार बनाया। किन्तु विधाता की कृपा से वही वनफूल इतनी शोभा, इतना सौरभ विस्तार करेगा। यह स्वप्न में भी नहीं सोचा था। मैंने अपने आप

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

को परम सौभाग्यशाली मान कर संसार को सुख सागर बोध किया।

क्रमशः सोलह वर्ष इसी सुख स्वप्न में व्यतीत होगये-रोग, ताप, यन्त्रणा, ज्वाला कोई इस दग्ध हृदय को कातर न कर सका विपत्ति आने पर एक बार उस मुख की ओर देख कर भूल जाता था। स्नेह आदर पाकर मुग्ध हो जाता था कि इतनी शीघ्र मुझको दुःख के अथाह सागर में डूब जाना पड़ेगा।

एक दिन सन्ध्या होने के किंचित पूर्व देखा कि एक क्षुद्र जलाशय में एक कमल खिला है प्रमत्त मधुकर प्रेम में मग्न होकर मधुपान कर रहा है। हठात् मेघ हो आया। आंधी चलने लगी, लहरें उठीं, वह कमल पूर्ण-रूप से खिलने के पहिले ही छिन्न विछिन्न होकर तालाब के गर्भ में डूब गया। मधुकर मृतप्राय होकर जल की सतह पर गिर पड़ा। वह दृश्य देख कर हृदय व्यथित हो उठा। हाय! कौन जानता था मेरी भी यही दशा होगी।

मेरे घर के पास एक छोटा सा बन था एक गम्भीर रात्रि के समय एक पक्षी व्याकुल होकर रो रहा था। मन में हुआ कि निश्चय ही कोई चक्रवाक अपनी प्रियतमा चकई के विरह में रो रहा है किन्तु उस ने कहा "नहीं! क्या कभी चक्रवाक को इतना दुःख हो सकता है-चकई रो रही है।" इस उत्तर पर मैं निरुत्तर होगया। हाय! आज उसका उत्तर दे सकता था। किन्तु किस को? सुनने वाला ही न रहा।

वही याद आज हृदय को दग्ध कर रही है। एक एक कर के सभी घटनायें नेत्रों के सन्मुख नाच उठती हैं। ग्रीष्म ऋतु की चांदनी रात्रि में प्रियतमा के संग छत पर सो रहा था। अचानक आकाश रूपी प्रांगण में नक्षत्र एक ओर को जाने लगा। देख कर वह बोली—"मैं भी किसी दिन उस नक्षत्रकी भांति किसी ओर चल दूंगी। क्या तुम मुझे रोक सकोगे?" मेरा हृदय किसी भावी आशङ्का से कांप उठा। मैंने घबड़ा कर कहा "सकूंगा"। प्रेम के आवेश में उसे गले से लगा लिया हाय! मैंने दृढ़तापूर्वक उसे हृदय में क्यों न धारण कर लिया। क्या मुझमें इतनी शक्ति न थी? यदि न थी मरना तो जानता था—क्यों न मर गया? आओ! प्रियतमे आओ! फिर वही प्रश्न! केवल एक बार फिर वही प्रश्न।

प्राणेश्वरी! तुम्हारे साथ एक दिन स्वार्थपरता के सम्बन्ध में चर्चा उठी थी-मैंने दृढ़तापूर्वक कहा था कि वह गुरुतर पाप है। तुमने प्रेम के आवेग में भक्तिभाव से मेरी चरण धूलि मस्तक से लगा ली। मैं ने आशीर्वाद दिया 'सौभाग्यवती होओ तुम को वैधव्य यन्त्रणा न भोगनी पड़े। तुम ने हंस कर उत्तर दिया—"इस से तुम स्वार्थपर हो। किन्तु मैंने आग्रह पूर्वक कहा "नहीं! यद्यपि मुझे तुम्हारे वियोग में कितना ही दुख क्यों न हो! मैं तुम्हें वैधव्य यन्त्रणा से व्याकुल हो रोते हुए न देख सकूंगा। तुमने प्रफुल्लित चित्त होकर कहा तुम्हारे मुख में फूल चन्दन हो। हाय! मेरा आशीर्वाद इतना शीघ्र फलित होगा मुझे स्वप्न में भी आशा न थी। यदि होती तो कदाचित ऐसा आशीर्वाद न देता।

आंखों से आंसुओं की नदियाँ बहा रहा हूं। क्या कभी इसके द्वारा अतीत स्मृति रूपी अग्नि निर्वापित न होगी? यह रावणी चितानल क्या सदा जलती ही रहेगी? इतनी वृष्टि होती है वायु चलती है तथापि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मेघ क्यों नहीं अपसारित होता ? हंसने के दिन क्या अब न आयेंगे ? यह विषाद की घड़ी कभी अवसान न होगी ? क्या इसी महाप्रलय में मुझे चिरदिन निमग्न रहना पड़ेगा ? इस निराश जगत् में आज कोई उत्तर नहीं पाता।

कौन जानता था कि उस शांतिसागर में अशांति का तूफ़ान उठेगा। जीवनरूपी नौका कालरूपी आंधी के थपेड़ों से उलट पुलट हो जायगी। लंगर टूट जायेगा। जीर्ण-शीर्ण नाव अशांतिसागर में बहते २ काल-चक्र के फेर में आकर अतल तल में निमग्न हो जायगी। आज वह भाव कहाँ गया ? आज अकस्मात् हृदय में अग्नि क्यों प्रज्वलित हो उठी ? शान्तकुण्ड अग्निकुण्ड में परिणत हो गया। जिस ओर दृष्टि जाती है अग्नि की लाल लपटें लगी हुई दिखलाई देती हैं। नद, नदी, पृथ्वी, आकाश, गिरि, गुहा, सर्वत्र अग्नि ही अग्नि। अफ़ ! वह देखो ! सूर्य्य का प्रचण्ड ताप मध्यम हो गया। उस के हृदय में भी अग्नि जल रही है, तप्त कांचन की भांति लाल हो उठा है। आकाश की लालिमा मानो उसी अग्नि की साक्षी है। चन्द्रमा के सुधा-भांडार में भी अग्नि प्रज्वलित हो उठी। हे महाकालाग्नि होता ! एक बार निवृत्त होओ यह सर्व-संहारिणी मूर्ति परित्याग कर साक्षात् श्री सच्चिदानन्द, आनन्दकन्द के स्वरूप में प्रकाशित होओ। मैं उसी दिव्य-मूर्ति के भक्तिभाव में लवलीन हो सारी यन्त्रणा ज्वाला भूल जाऊं।

एक दिन सागर में अपूर्व तरङ्ग विस्तार बड़ी शोभा थी। कितने ही जलचर जीव जन्तु आनन्द से नाच रहे थे। अनन्तसागर के अनन्त प्रवाह में अपूर्व शोभा विकासमान थी। आनन्द वाष्प उद्गत होकर करुणारूपी धारा से भूमि-मण्डल को अभिसिञ्चित कर रहा था। सागर के वक्षःस्थल पर बालारुण निपतित होकर कांचनमय हो उठा था। चन्द्रमा की रश्मि-सम्पात ने उस पर से अमृत का श्रोत बहा दिया। विभ्रांति चकोर उभय दृश्य देखकर मुग्ध हो आनन्द से नाच उठा। सागर वक्ष पर अपने मुखराशि पर अतुल शोभा देखने के लिये तारादल एकत्रित होते एवम् निशानाथ के उदय होते ही घेर कर आनन्द में मग्न हो जाते थे। एक दिन सागर के उल्लास विलास भंगिमा की सीमा परिसीमा नहीं थी। अनन्त सलिल राशि हृदय में धारण कर सौभाग्य से गर्वान्वित हो उसका हृदयपति नियत स्फूर्ति हो उठता था, कौन जानता था कि जलस्रोत उसको विनाशपथ की ओर ले जायेगा। देखते २ असम्भव सम्भव हो गया। काल के संकेत से सागर कहां का कहां चला गया।

अगाध वारिधितल प्रखर सूर्यताप से उत्तप्त हो गया। अनन्त सलिलराशि के परिवर्तन में अनन्त बालुका कण वायु द्वारा विताड़ित होकर आकाश-मंडल में समाच्छन्न हो गये। अतीतसागर आज महामरु में परिणत हो गया। देखो ! सहारा की मरु-भूमि ने कैसी भीषण आकृति धारण की है। आज उसीके अन्तराल में मोहरूपी मरीचिका कैसी अबाध क्रीड़ा कर रही है। हाय कौन जानता था मेरी भी ठीक यही दशा होगी।

एक दिन हर्ष से उन्मत्त होकर मैं ने जगत् को अमृतकुण्ड बोध किया था, आज विषादसागर में डूब कर संसार विष के समान दिखलाई देता है। जीवन के अवशिष्ट कालोपरांत रोना पड़ेगा। विधाता के नियम को कौन व्यतिक्रम कर सकता है ? करदो— अपने नियम के निष्पेषण में निष्पेषित करदो

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मैं कुछ भी न कहूँगा। अवनत मस्तक होकर सब सहन करूंगा। वह देखो! पश्चिम दिशा में सूर्य्य की किरणें कैसी खिल उठी हैं। पूर्व में वृष्टि हो रही है, उधर अनन्त आकाश में कैसा इन्द्र धनुष का समावेश हुआ है। इसी हर्ष विषाद के भीतर मेरे हृदय में तत्व-ज्ञान का इन्द्र धनुष विरचित करदो। मैं उसी की शोभा में समाकृष्ट होकर सकल शोक ताप भूल जाऊं।

(क्रमशः)

विपद् के प्रति

लेखक—'मुकुन्द'

—:o:—

विपदे! मेरा हृदय हिलाया।
आनन्दित, पुलकित तन दुख से, दबकर सहसाही मुरझाया॥
विपदे! मेरा हृदय हिलाया॥

सुख के झूले झूल रहा था, सब कष्टों को भूल रहा था।
प्रेम-शूल हृद् हूल रहा था, पर फिर भी अति फूल रहा था॥
मोद-सिन्धु को शक्ति-तरी से, करने चला पार—घबड़ाया।
विपदे! मेरा हृदय हिलाया॥१॥

तुझे देखते-मान-झुक गया, हृत्तन्त्री का गान रुक गया।
सारा मम-अभिमान चुक गया, रूप-माधुरी-पान मुक गया॥
पृथ्वी खिसक गई पदतल से, आगे अंधकार सा छाया।
विपदे! मेरा हृदय हिलाया॥२॥

लोग पूछते-"क्या है भाई?", बोला नहीं न बात बताई।
केवल आती रही रुलाई, किसी प्रकार सान्त्वना पाई॥
फिर भी रहा सिसकता शिशुसा, शोक-समुद्र उमड़ता आया।
विपदे! मेरा हृदय हिलाया॥३॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बोलू कभी पुनः चुप होता, उष्ण श्वांस चलती दुख होता ।
उठता कभी, बैठता–रोता, भूख–पिपासा लगती–सोता ॥
देखा वहां स्वप्न में भी तू खड़ी, जागकर दुख लौटाया ॥
विपदे ! मेरा हृदय हिलाया ॥४॥

मोहिनी के आंसू

†

लेखक-श्री० सन्तलाल द्विजमथ वैद्यराज

[गतांक से आगे]

२

शङ्कर—"बच्चे दोनों ही होनहार, हैं री—कुन्दन की मां ! इनके एक उस्ताद को जूती जोड़ा पहनाया था वह कहताथा कि—"शङ्कर, तेरे भाग खुलने वाले हैं जिस बात को एक बार तेरे लड़के देख सुनलेते हैं, कभी नहीं भूलते । जमायत में ऐसा एक भी तेज़ ज़हन बालक नहीं । अवश्य पास हो जायेंगे, बस, निश्चय रख । नवीं में हुए ही समझ !" सो एक क्या, सभी मास्टर तारीफ करते हैं ।"

सरला—"हां जी, जरूर करते होंगे, तिस पर छोटा तो मेरा कहना कभी भी नहीं टालता, न दोनों कभी किसी से लड़ कर ही आते हैं । प्रेम दोनों में इतना है कि एक टुकड़ा भी कभी कहीं से आता है तो बांटकर खाते हैं । और उसमें मेरा भाग अवश्य रखते हैं और कहने लगते हैं—"मां, दादा का भी रख दें क्या?" जो बहुत ही रोकूं तो रहते हैं, नहीं तो ज़रा से में ज़रा सा तुम्हारा भी रखने को तैय्यार रहते हैं!

†

☞ सूचना आज कल हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में स्वार्थी-जनों-द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण-कूड़ा फेंका जा रहा है । यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य-जगत् की भेंट कर रहे हैं । पाठक "ज्योति" के शृङ्खलाबद्ध अङ्कों का अवलोकन करें । प्रत्यङ्क में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा । सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने-न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास-मन्डो, लुधियाना' के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें । हम इसे 'ज्योति' में इस लिये प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं यह निश्चय हो सके ।

लेखक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

——इस प्रकार दम्पति बातें कर ही रहे थे कि सहसा शङ्कर बाहर की ओर देख कण्टकित हो, बोला—"ओः ! छायां तो बड़ी दूर गई री—कुन्द की मां ! आए अब तक नहीं; इतनी देर रुकने का क्या काम ? आज तो पर्चा लिख कभी के निबट चुके होंगे—री ! क्या बात .....

बात समाप्त भी न हो पाई कि सरला अबला एड़ी से चोटी तक कांप उठी, और लगी आल जंजाल सोचने। इसके उपरांत शङ्कर उठ, बाहर को चला गया। कुछ देर ही होने पाई कि सरला ने छप्पर के पिछाड़ी से पैरों की आहट सुनी, एक मिनट भी न हुआ कि सामने से बाल-मराल युगल को पैरों में झुक कर, चरण छूते देखा। तब तो गद्गद-कण्ठ से बोली—"हैं, माधो !' फिर दूसरे की ओर देख, उसे बग़ल में लेती हुई और माधव को छाती से लगा, बोली—"बड़ी देर लगाई रे !; क्या खेल में लग गए थे ?" तब माधव और कुन्दन उसके उत्तर में एक साथ ही बोल पड़े—"अरी मां !.....

सरला—"दोनों एक ही साथ न बोलो, रे ! एक एक सुनाओ !"

यह सुन कर माधव मौन हुआ, और कुन्दन कहने लगाः—

"अरी मां ! पहले तो इम्तहान हुआ और फिर हमें पण्डित जी चावड़ी बाज़ार में ले गए; वहां आर्य-समाज का जलसा था। हम दोनों ने वहां सुन्दर २ पद्य गाये। सब लोग खुश हुये, बहुत ही खुश हुए।

सरला—"काहे का जलसा था, भय्ये ! और भला तुमने कैसे, क्या गाया ?

कुन्दन—"आज स्वामी दयानन्दजी को प्रबोध हुआ था। मां ! आज शिव-रात्री है—न, इसलिये उत्सव मनाया गया था।"

सरला—"अच्छा, फिर तुमने गाया क्या ?"

कुन्दन—"अच्छा, पहले मुझ से सुनोगी, या माधो से ?"

सरला—(प्रेम-मुग्ध हुई, माधव की ओर देख ग्रीवा के पीछे की ओर से हाथ डाल उसकी ठोढ़ी को गालों तक छोटी उंगलियों से पकड़ती हुई) "तूने क्या गाया—रे तुतलिये !"

माधव—(माता की छाती में मुख रगड़ता हुआ) "एक कविता !"

सरला—"तेरी तोतली-बोली सब समझ गए तब माधव ने इसका उत्तर कुछ न दे, माता की छाती में और भी मुख छुपा लिया। तब सरला ने कहा—"अच्छा सुना तो—गाया क्या ?" अब माधव लज्जा से किंचिद्वाङ्मुख हो, प्राकृत मधुर स्वर से गाने लगाः—

"वही है, भारत-भू, भुवनेश !

भारत-भू, भुवनेश ! वही है—भारत-भू, भुवनेश ! जिसने कौशल-विद्या बल से शिक्षित किये विदेश, योगोत्पादित हैं—जिसके कौशल-विज्ञान-विशेष !

"वही है, भारत-भू, भुवनेश !

अद्भुत-विद्यामय, योगेश्वर करती थी अनिमेष—पुत्र-रत्न उत्पन्न, क्या न यह भू ?; सर्वज्ञ ! परेश !!

वही है—भारत-भू, भुवनेश !

घुरियों में थे, अशन-ज्ञान का भी न जिन्हें था लेश—विज्ञ बना उनको, हा ! भारत स्वयम् बना दुरवेष !

वही है—भारत-भू, भुवनेश !

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

काल-ग्रस्त—भारत फिर भी पाता न दुर्दशा-क्लेश,
छूताछूत-विवादरूप जो हो न महाविद्वेष !!
वही है—भारत-भू, भुवनेश !

[कह चुप हुआ]

सरला—(कुन्दन की ओर देख) "अच्छा, तुम भी सुनाओ !"

कुन्दन—"जो मैं कहूँगा उसका नाम "समाज संस्थापना" है, कह, सुनाना आरम्भ किया:—

१

जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं,
और सत्य-शास्त्र जिन २ को बतलाते हैं।
उन सब का आदि-मूल परमेश्वर ही है,
कैसी स्वामी ने सच्ची बात कही है ॥

२

थी फिरती सब दुनियां भ्रम-पूर्ण भटकती,
ईश्वर के लक्षण थी कुछ के कुछ बकती।
वे सारे वेदोद्धृत कर, बड़े सरल कर,
स्वामी ने ठूंस भरा गागर में सागर ॥

३

"वह शुद्ध, बुद्ध, सच्चिदानन्द अक्षर है,
सर्वान्तर्यामी, अनुपम, सर्वेश्वर है।
वह जन्म-विकार रहित, सर्व व्यापक है,
वह निराकार, विश्वेश, विश्व-स्थापक है ॥

४

"है सर्वशक्तिमय, दया-न्याय करता है,
शरणागत-वत्सल, अभय, विश्व हरता है।
ब्रह्माण्ड-प्रकाशक है, सर्वज्ञ, परमेश्वर"
बतलाया—उसकी ही उपासना कर, नर !

५

है वेद सभी सद्-विद्याओं का पुस्तक,
इसलिए आर्य ! स्वाध्याय-श्रवण से मत थक !!
स्वाध्याय आर्य लोगों का धर्म परम है,
कैसा तृतीय यह नियम अहा ! उत्तम है ॥

६

बस, "झूठ छोड़ने—सत्य मानने ही में—
उद्यत रहना चाहिए सर्वदा जी में,"
"धर्मानुसार सब कार्यारम्भ उचित है,
पर सत्याऽसत्य-विचार पूर्व समुचित है !"

७

"विश्वोपकार" ही मुख्योद्देश बताया,
कैसा समाज का सुन्दर नियम बनाया।
"धर्मानुसार सब से प्रीति से रहना"—
स्वामी का यह पहले ही से है कहना।!!

८

समुचित सब को विद्या-प्रचार है करना,
समझाया अज्ञानान्धकार है हरना।
सन्तुष्ट न अपनी उन्नति हो जाना,
सब की उन्नतिमें है-"उन्नति का पाना !"

९

हितकारी नियमों में स्वतन्त्र हो जाना,
है अत्युपयोगी नियम दशम समझाना।
सामाजिक नियमों के पालन में सबही—
परतन्त्र रहें मानव, सुसभ्य हैं तबही !"

१०

इस समय मुक्त वह समाज-संस्थापक है—
जिसका निर्मित यह रम्य-नियम गुच्छक है,
वेदोद्धारक वह संसारोद्धारक था,
सद्धर्म-प्रचारक था, सुख-संचारक था !

(कह चुप हुआ)

सरला "भग्गे ! तुम सासतरी पढ़ने लगे हो, तुम ही कुछ समझो—न समझो ! मेरी समझ में तो एक भी अक्खर आया नहीं। इतनी देर हुई—ख़ाक-धूल पल्ले पड़ी नहीं ! ख़ैर ! चलो, खाने को तो खाओ सुबह से भूंख की सुध—न प्यास

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

की!"—कह, दोनों को रोटी दे, आप कसीदा ले बैठी। और निकालती-निकालती सहसा माधव की ओर देख, बोली—"क्यों रे माधो! इमतिहान की तो कुछ बात ही नहीं सुनाई!"

माधव—आज जैसे ही सब पेपर रहे तो पास ही हुआ समझना!"

सरला—"और कुन्दन?—"
माधव—"भय्ये भी"

यह सुन, कुछ देर चुप रही। तदुपरान्त फिर कुन्दन से बोली:—

"अच्छा, तुम्हें यह सासतरी* के मीठे २ गीत सिखाए किसने--रे?"

कुन्दन—"जो पण्डित जी हमें घर पर पढ़ाते हैं, उन्होंने"

सरला—"अच्छा, यह बताओ—जहां गाया वहां कुछ पाया भी? आज तो व्रत है, फलाहार सबको थोड़ा थोड़ा दिया ही गया होगा?"

कुन्दन-(खिलखिला कर, हंसा, और बोला-) "अच्छी समझी री मां! अच्छी समझी!! कैसा वहां लेना-कैसा देना?"

माधव—"अच्छा, मां! आज दादा क्या लाए? उन्होंने भी तो व्रत किया है-न"

सरला—"अमरूद, बेर और सिंघाड़े का आटा भुनवा, उसमें गुड़ मिलवाया है, पर खाया अभी कुछ नहीं, तुम्हारी बाट देखते—देखते अभी बाहर गए हैं।"

× × ×

*इस प्रान्त के देहातों में "संस्कृत" को 'शास्त्री (सासतरी)" कहते हैं। -लेखक।

आज कुन्दन और माधवका अन्तिमपरीक्षा-दिन है, इस लिए दोनों बड़े प्रभात ही चल पड़े प्रफुल्लित मन! हाथमें अपना कलमदान! उनमें बनी-सवारी कलमें, उत्कट उत्साह! बस-क्या था? दौड़ते-कूदते स्कूल के निकट आ ही गए। यहां एक अमरूद के नीचे बैठे पुस्तकों के पांच—पांच दश—दश पृष्ठ इधर उधर करने लगे।

यह दोनों भय्ये चौदह तथा सोलह वर्ष की आयु वाले हैं, मालूम होता है इनका निवास—स्थान (गांव) इस स्कूल के ३-३॥ मील की दूरी पर ही है, इसीलिए यह दौड़ते-कूदते ऐसी सुबह ही आ जाते हैं कि शहर का कोई भी बालक तक नहीं आने पाता।

\+ + + +

परीक्षा समाप्त हुई, ऐसी सब अध्यापकों को आशा है कि यह दोनों ही उत्तम कक्षा (First Division) में उत्तीर्ण हों! यह दो मास पूर्व प्रवेशिका-परीक्षा (Test Examination) हो चुकी, अब मई मास में पुनः वार्षिक-परीक्षा होगी।

\+ + + +

इधर कार्य्यवश शहर में आया था, किन्तु उसे स्मरण हुआ कि कल के लिए न कलाबत्तू है—न मख़मल। नरी भी आख़िर कल न ली परसों लेनी पड़ेगी। यह सोच-समझ कर चांदनीचौक में सौदा लेने आरहा था, इधर घण्टाघर के पास पण्डित जी से (जो कुन्दन और माधव को पढ़ाया करते हैं) मुठभेड़ होगई। इन्हें देख शङ्कर बड़ी नम्रता से बोला—"चरण छूता हूँ—पण्डित जी!

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पं० जी—(उत्तर में) "नमस्ते" (कह, बोले)
"शङ्कर, आनन्द में तो है ?

शंकर—(हाथ जोड़े, नम्रता से) 'चरणों की दया है—पांडत जी ! आप के पैरों की छाया में जितनी गुजर जाए वही अच्छी है। गुलाम को कौन दुःख ?—आप जब दयादृष्टि रखते हैं ! कह, चुप हुआ।

पं० जी—अच्छा; शंकर ! कुछ सौदा लेना है क्या ?"

शंकर—'जी हाँ ! एक धोती-जोड़ा, कुछ कलावत्तू, मख़मल वग़ैरह फुटकड़ सामान।

पं० जी—"क्या कुछ वक्त देगा—शंकर ! कुछ कहना सुनना है थोड़ा, मकान पर आना।"

शङ्कर—'अभी साथ ही चलता हूं, हजूर !" कह कर पीछे २ होलिया।

शङ्कर कुछ मालदारों में तो था नहीं, किन्तु अन्य मोचियों की भांति अधिक दारिद्र्य-ग्रस्त भी न था ! वैसे रोटी—कपड़े से खुश था। विशेषता थी तो केवल इतनी कि मास्टरों को एक—दो जोड़ा जूता पहना कर तंग न होजाया करता था। रोजगार अच्छा चला हुआ था, इस का कारण था उस का सुशील, सत्यवाद, दुर्व्यसन-हीनता एवं सन्तोष। कभी इस वृद्ध ने निन्द्यमद्य को प्रत्यक्ष तक न किया, जिस से अलक्ष्मी की प्राप्ति होती। पशुओं की भांति कभी भी किसी जीव की मृत्यु का कारण यह न हुआ। क्रूर कुक्कुरों की तरह हड्डियां चूसने वाले मनुष्यों को यह स्वप्न में भी "मनुष्य" नहीं समझता था। मांसाशी को 'पिशाच' कहने में कभी भी नहीं हिचकता ! आत्मवत् सर्व भूतों की रक्षा करना जिनानुयायियों से कहीं अधिक श्रेयस्कर धर्मानुकूल एतदर्थ ही परमावश्यक मानता था। प्रायः सभी ग्राम के अधिकतर शहर के भी सेठ साहूकार आदि इसी के काम से खुश रहते थे। अतएव आय कष्ट भी इसे न था।

मालीवाड़े में पण्डित जी का मकान था अपने मकान पर पहुंच पण्डित जी ने कुण्डा खुड़खुड़ाया और जोर से कहा—"श्यामा" ! तब साथ ही अन्दर से उत्तर मिला—"हां जी ! आया, खोलता हूं, पण्डित जी !" देखते ही देखते बैठक का द्वार खुला; पण्डित जी अन्दर घुसे। खूंटी पर कोट टाँग, कुण्डा खोलने वाले बालक से बोले—"अरे श्यामा, टट्टी जाना है गिलास में पानी डाल छोड़ना!" और स्वयम् कुरसी पर बैठ, पजामा उतारते हुए; शङ्कर से इस तरह बातें करने लगे:—

"शङ्कर, तुझे इस वास्ते पहले भी एक बार बुलाया था और अब भी रोक लाया हूँ मेरा विचार यह है कि लड़कों को "डी० ए० वी० कालिज, लाहौर" भेजदें। आर्यधर्म की वहाँ सब बातें सिखलाई जाएगी। लड़के पक्के हिन्दू रहेंगे। खर्च वर्च की चिन्ता न कर। मेरे एक मित्र हैं—पोस्ट मास्टर। वे निस्सन्तान हैं इन की सहायता करेंगे। मुफ़्त में तेरे बालक पढ़ जाएगे !"

शंकर—(भ्रमपूर्ण उद्विग्न सा हो) वहां मुसलमान या आर्य तो नहीं बनाते ?"

पं०—(झुंझला कर) "क्या पागलपन कभी कभी तेरे ऊपर छाजाता है-रे !, कहीं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हमें मुसलमान बनाना है ? (ज़ोर से हँस कर) ख़ैर ! यह तो फिर भी कुछ हुई ! एक बात तो तूने ऐसी कही–(ज़रा शिर घुमा कर) बिलकुल बे-समझों जैसी ! , भला—आर्य बुरे हैं–रे !! , (तर्जनी की तर्जना से) अरे, रत्न बनेंगे पगले ! ; अच्छा तुमही बताओ–शंकर ! जब बच्चों को तुम उर्दू पढ़वाने को तैयार हुए थे तब हमने तुम्हें रोका या नहीं ?

शंकर–(शिर के लटके से) "जी–हां !"

पं०—" ……फिर तुम ने अच्छा, मान भी लिया इन्हें संस्कृत ही लेने को तैयार भी किए किन्तु जब विशेष समय पर कोई पंडित पढ़ाने को देखा तो एक ने भी "हां" न की । और हमें जब पता लगा कि शंकर के बच्चों को पढ़ाने के लिए विशेष समय के वास्ते (स्कूल के अतिरिक्त) कोई पंडित स्वीकार ही नहीं करता तो उसी दिन हमने तुझे घर से बुला कर कहा या नहीं कि 'चिन्ता न कर, हम पढ़ाएंगे !' फिर भला आर्य बुरे किस तरह !— यह नहीं समझ में आता, शंकर ! ; अच्छा, अब भी जा, किसी ब्राह्मण से पूछले—पढ़ाने से इनकार ही करेगा । हम आर्य थे—इन्हें पढ़ाया, सन्ध्या-हवनादि का उपदेश किया तो तेरी समझ में हम से बुरा कोई न हुआ ! तेरे मुख से तो ऐसा सिद्ध होता है कि–' लड़कों के लिए आर्य बनना भी पाप है !"; और अच्छा, इन्हें जो उर्दू-फ़ारसी पढ़वाता तो प्रायः ये मुसलमानों को हुक्के भर भर देते या नहीं ! वे गोबध करते और ये उनके स्वयंसेवक तथा सहायक होते, और जीता तो बेटों के संग तू भी बनता !! वाह-रे, वाह ! तूने तो आर्यों को अपने जातीय-जनों से भी निकृष्ट जाना !!"

पंडित जी चुप हुए । पर शंकर की दृष्टि जमीन की ओर लगगई । वह न "हां" करे न "हूँ" ! पत्थर की भांति होगया ! शंकर भयानक-जाल में अपना पैर फंसा समझने लगा। उसका हृदय थरथराने लगा । शंकर पक्का शैव था । शिवभक्ति तो वह अपने में होश सम्हालने के पश्चात् उत्तरोत्तर-वृद्ध ही देखता आया । आज वह कैसे सहसा अपने बालकों को ऐसी जगह भेजदे, जहां से लौटते ही लगें वे शिव-मूर्ति को पधरा देने। ओह ! कहां तो वह पवित्र सद्योद्धृत-जल से प्रतिदिन स्नान कराने के निमित्त अपने छप्पर के सामने–बाईं ओर को–बनाए हुए छोटे से पक्के चबूतरे पर–स्वतन्त्र विराजे शिव की तिपाई पर घड़ा भर धरे; और उस की अविरत-धारा से अभिषेक होता देख, हर्ष-पर हो, फूला न समाए! फिर कहां वह अपने ही प्रिय-पुत्रों को ऐसों से–ऐसी जगह शिक्षा प्राप्त करने भेजे कि जिससे वे स्वयं ही उस चबूतरे को तोड़ने वाले, घड़े को फोड़ने वाले, इन सब को मिथ्या-पाखण्ड बताने वाले बने !

मन ही मन शंकर निश्चय करने लगा–"ऐसा कभी नहीं होसकेगा, चाहे बिना पढ़े रह जाएँ । क्या पाप करने वाले मेरे ही पुत्र बनें ? विधर्मी में अपने हाथों से ही कैसे बनने दूँ ? न सही—न पढ़े, हमारा तो हमारे घरका ही काम है, मेहनत मज़दूरी कर पेट भरेंगे ।

शंकर इस प्रकार मन ही मन निश्चय कर ही रहा था कि पंडित जी खिन्न-गिरा से बोल पड़े–"अरे कुछ समझ में आई है तो

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बोल पड़े, भय्या ! जबरदस्ती तो कुछ है ही नहीं। सौ बार तेरी खुशी का सौदा है !" तब शंकर दबा हुआ सा, धीमे स्वर से शिर नीचे पृथिवी की ओर ही किए बोला-"मैं अपनी घरवाली से पूछ कर कुछ कह सकता हूं,हुजूर ! क्या जाने वह बाहर भेजने के लिए राज़ी न हो ?"

पंडित जी उस का आन्तरिक-भाव समझ गए। क्रोध-शोक के कारण उनमें विह्वलता आने लगी। नेत्रों में उनके लाली छागई। वे उसकी गहरी मूर्खता की प्रत्यक्ष प्रतिमा सामने नाचती देख, कुछ सम्भल, बोले—"अच्छा, ठीक भी है-भया ! जब तेरे घर के चूहे तक राज़ी हों—तब" और शान्त हो, अपने आपको समझाने लगे। इधर शंकर "पालागन" कर, वहां से चलने को उद्यत हुआ। शंकर कुछ ही क़दम चलने पाया था कि पंडित जी सावधान हो, होनहार बच्चों की ओर ध्यान कर, दयार्द्र हो बोल पड़े:—

"अरे शंकर, कहीं चमरुआ-बुद्धि ही मत दिखा डालना ? सोच-समझ कर, भेजने को राज़ी ही हो जाना। देख, तेरे भाग्य ही मैं बलवान समझूंगा-यदि लड़के चले गये तो, ऐसे मुफ़्त में किसी का काम नहीं बना करता है। आत्मानुकूल मैं कहने को तैयार हूँ, शङ्कर! लड़के तेरे सम्भव है 'देश-रत्न' बनें। चमकने और देश को चमकाने वाले इन चन्द्र-सूर्यों को कहीं तू ढांपने के लिये बादल न बन जाना ? मेरा वश नहीं, नहीं तो अब तक कभी के बच्चे लाहौर पहुंचे होते—शंकर; खैर ! ईश्वराधीन ही अब इनकी उन्नति है; मुझे तू इनकी जड़ें काटने को कुठार बन जाने वाला दिखाई दे रहा है शंकर !" कह चुप हुए।

शंकर ने सब कुछ सुना, किन्तु उत्तर में पहले शब्दों के अतिरिक्त कुछ न कहा। अन्त में फिर "पालागन" कर, चल पड़ा। मार्ग में (बाज़ार से) एक दो सौदे जो ले सका, लिये और फिर घर की ओर प्रस्थान किया।

सन्ध्या वहां ही हो चुकी थी, निबड़ान्धकार ने मार्ग में ही प्राक्कालीन रावण-राज्य की भांति अपना निश्चल सा राज्य जमा लिया था। शङ्कर को चलते चलते कुछ ही मार्ग कटा था कि पीछे से किञ्चित प्रकाश सा फैलता हुआ प्रतीत हुआ। पीछे को पीठ फेर कर देखा तो "ओह, चन्द्र है ! निकल आया !!" कह, शंकर अप्रसन्न सा हुआ। कारण यह कि आज का चन्द्र निरीक्षणीय नहीं। आज चतुर्थी है। जो हो, चाहे कोई देखना चाहे वा न चाहे, आज तो प्रायः यह दीख ही जाता है। सो ही शंकर को भी दीख पड़ा। एतदर्थ वह तुरन्त खिन्न हुआ।

विचित्र ही ईश्वर की लीला है। यह वही चन्द्र है, आज से दो दिन पूर्व जिसके दर्शनार्थ स्थान २ पर सैकड़ों नर नारियों की नयनसुमन-मालाएं टकटकी लगा रही थीं ! जिस के माहात्म्य से मूढ़-मन मानव-गण अपने अनेक विध शब्दों से इस भांति कोलाहल कर रहे थे :—

प्रथम व्यक्ति—"कहां है ?"
द्वितीय ,, —"वह देखो !"
प्रथम ,, —"नहीं दिखाई देता।"
द्वितीय ,, -(उंगली से दिखाता हुआ) "वह मेरी उंगली के ऊपर--"
प्रथम ,, --"हां, पीपल की बाईं ओर की चोटी पर। ओ ! सुसूक्ष्मकाय है !!"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उत्सुकता, चपलता आदि मिश्रित शब्द-गुञ्जार था। मानों कारागारमुक्त देश-भक्त के अवलोकनार्थ उत्सुक जनता खड़ी हो! किन्तु आज यह क्या? ओह! इतनी घृणा!! उसी के दर्शन में, एक ही दिन के अन्तर में इतना पाप! यह तो उससे भी बुरी दशा इस चारु चन्द्र की हुई जैसी उसी देशभक्त की स्वार्थपरता देख, होती है।

आज शङ्कर का चित्त स्थिर नहीं है. बड़ी भारी उधेड़ बुन लगी हुई है। घर पहुंचा और भोजन कर, चारपाई पर पड़ गया। गृहिणी से भी विशेष बातें न कर सका। हुक्के की नली को पकड़, पास ला, गुड़-गुड़ाने लगा। विलक्षण विलक्षण विचार तरंगें कभी उसे भंवर में डालती थीं कभी किनारे पर ला पटकती थीं। परन्तु किसी से कुछ भी न बोल, आज शंकर चुपचाप पड़, सो रहा।

(क्रमशः)

कुसुमोद्यान

चीन में जलयांवाला बाग

मिस्टर बर्टरैण्ड रसल ने विलायत के समाचारपत्र 'न्यू लीडर' में लिखा है जिस में वह बतलाते हैं कि चीनमें जो अत्याचार होरहे हैंवह बहुत भयानक हैं, ब्रिटिश जनता से सत्य को छिपाया जारहा है, अमरीका में सत्य का प्रकाश किया जारहा है इस लिये वहां की प्रजा इङ्गलैंड से विमन होरही है।

झगड़े का आरम्भ

शंघाई के एक जापानी पुतलीघर में मजदूरों ने हड़ताल करदी, एक जापानी ने एक चीनी मजदूर को गोली से मार डाला, प्रतिवाद के रूप में कुछ चीनी विद्यार्थी एक जुलूस बनाकर बाज़ारों में घूमें; पीकिंग की नैशनल युनिवर्सिटी के प्रोफेसरों ने जो बयान निकाला है उसके अनुसार विद्यार्थियों के पास लघुपुस्तकों और विज्ञापनों के अतिरिक्त और कुछ न था, कई विद्यार्थियों को ब्रिटिश पुलिस ने पकड़ लिया जिस पर शेष विद्यार्थी अपने साथियों को छुड़ाने के लिये थाने की ओर चल पड़े; ब्रिटिश अधिकारी बालक और बालिकाएं इस निःशस्त्र सेना से भयभीत होगये और पुलिस को गोली चलाने का हुक्म देदिया गया। परिणाम यह हुआ कि ६ विद्यार्थी तो यमलोक को पधारे और ४० से ऊपर बुरी तरह से घायल होगये। विद्यार्थी ६ दिन तक सत्याग्रह करते रहे और पुलिस गोली चलाती रही। इस प्रकार ७० विद्यर्थी मर गये और ३०० घायल होगये। अपनी कृति को उचित सिद्ध करने के लिये ब्रिटिश अधिकारियों ने यह बयान किया कि विद्यार्थी लोग यह शब्द बोल रहे थे—"विदेशियों को मार डालो"। प्रतीत होता है कि यदि यह शब्द बोले गये तो बोलने वाले गुप्तचर थे!

चीनी विद्यार्थियों का चरित्र

महाशय बर्टरैण्ड रसल की सम्मति है कि चीनी विद्यार्थी प्रायः ऐसे ही अच्छे होते

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

हैं जैसे उच्च घराने के ब्रिटिश विद्यार्थी, किंतु वह सीधे अधिक होते हैं। उनके आचार्य कन्फ्यूशस ने यह शिक्षा दी है कि स्वाभाविकतया पुरुषप्रकृति भद्र होती है। बड़ा यत्न करने पर भी ईसाई पादरी चीनियों की खोपरी में यह सिद्धान्त नहीं ठूंस सकें कि सब मनुष्य पापी उत्पन्न होते हैं, किन्तु यह घटना सम्भवतया उनको इस सिद्धांत को मनवा देगी।

फिर झगड़े ने क्या रूप पकड़ा।

चीनी प्रजा इस घटना को देखकर व्याकुल होगई और उन्होंने एक बहिष्कार की नींव डाली जो क्रमशः बढ़ रही है। चीन भर में ब्रिटिश और जापानी वस्तुओं का बहिष्कार आरम्भ होगया है, चीन के कई नगरों में एक साथ ही फिसाद होगये; सभ्यसंसार की सामुद्रिक सेनायें शङ्घाई बन्दरगाह में इस उद्देश्य से सुसज्जित उपस्थित हैं कि इन लड़कों और लड़कियों पर गोली चलाएं।

शंघाई का शासन प्रकार

इस दुरावस्था को समझने के लिये यह आवश्यक है कि पाठकों को यह बतलाया जाय कि शङ्घाई में किस प्रकार का राज्य है। शङ्घाई लंडन के आकार का शहर है, यह नगर तीन भागों में विभक्त है। चीनी विभाग, फ्रांसीसी विभाग, और अन्तर्जातीय विभाग। यह झगड़ा अन्तिम विभाग में हुआ है जिस पर धनपतियों का निष्कण्टक राज्य है, उस राज्यप्रणाली में प्रजा के प्रतिनिधियों के लिये कोई स्थान नहीं है, धनपति अधिकतया अंग्रेज तथा जापानी हैं, थोड़े से अमेरिकन भी हैं, ब्रिटिश पुलिस अफसरों को छोड़ कर शेष सब सिक्ख हैं। जब कभी धनपतियों का शङ्घाई सङ्कट में पड़ा है सभ्यसंसार के जंगी बेड़े सहायता के लिये आते रहे हैं। शङ्घाई में विदेशियों के अधिकार का आधार विजय है, उनका वहां उसी प्रकार का अधिकार है जिस प्रकार का कि जर्मनी का १९१४ से लेकर १९१८ तक बैलिजयम पर था। १८४२ में चीनियों को अफीम खरीदने पर बाधित करने के लिये जो कुछ हुआ; विदेशियों का आगमन उसका परिणाम स्वरूप था; वास्तव मे उस नगर पर उनका कोई अधिकार नहीं है। वह वहाँ केवल इसलिये विराजमान हैं कि चीनीलोग उनके साथ लड़ने की शक्ति नहीं रखते। शङ्घाई व्यापार और शिल्प का केन्द्र है, और मजदूरों की अवस्था वहां ऐसी शोचनीय है जैसी १०० वर्ष पूर्व इङ्गलैण्डकी थी। छोटे बच्चे सप्ताह मे सात दिन १२ घण्टे रोज काम करते हैं, कई बार थक कर काम करते २ सो जाते हैं और ऊंघते २ कलायन्त्रों मे जा पड़ते हैं और मर जाते हैं। कलायन्त्रों के इर्द गिर्द कोई बाड़ नहीं है। कुछ बच्चे दियासलाई बनानेका काम करते हैं उन में से बहुत छोटी उमर में ही फौस्फ़ैस के विष से मर जाते हैं। नागरिक सभा के सन्मुख यह प्रस्ताव था कि बच्चों के काम को कुछ नियमित किया जाय। परन्तु कोरम न होसकने के कारण इस पर विचार न हो सका। बड़ी आयु के श्रमियों की अवस्था भी कोई बहुत अच्छी नहीं है। वह दिन में १२ से १३॥ घण्टे तक काम करते हैं और उन का वेतन महीने में १५ शिलिंग से ३० शिलिंग तक है।

न्याय

कहा जाता है. कि चीन में जो कुछ किया जा रहा है योरपियनों की जानें बचाने के लिये किया जा रहा है। यह भय निरा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

धार है। केवल एक योरपियन अब तक मारा गया है। न्यायविभाग में सब योरपियन लोग हैं इस लिये चीनियों की मृत्यु के लिये किसी योरपियन को उत्तरदाता ठहराना कठिन है

हम नहीं कह सकते कि महाशय रसल के कथन में कितनी सत्यता है किन्तु इतना हम अवश्य कहेंगे कि लिखनेवाला एकप्रसिद्ध विचारक है जिस के कथन का सभ्यसंसार पर बड़ा गहरा प्रभाव पड़ेगा यदि बृटिश सरकार की ओर से यथोचित और सन्तोषजनक उत्तर शीघ्र न दिया गया।

सत्यार्थप्रकाश

वर्त्तमान काल की कोई आर्य्यभाषा-पुस्तक इतनी नहीं फैली जितनी कि सत्यार्थ-प्रकाश। आर्य्यभाषा में इसकी ८५ हज़ार प्रतियां छप चुकी हैं। इस पुस्तक का अनुवाद बङ्गाली, गुजराती, मरहठी, गुरुमुखी, टैलगू उर्दू, इङ्गलिश में तो आगे ही छप चुका था; तामिल का अनुवाद अब छपा है और जर्मन में अनुवाद हो रहा है। तामिल का अनुवाद करने वाले महाशय एम० आर जम्बूनाथ एय्यर हैं और प्रकाशक महाशय मटेसन हैं; अभी पूर्वार्द्ध का ही अनुवाद छपा है। मू० २) रु०दो आने है, इस अनुवादकी समालोचना करते हुए महाशय के० नतरंजन अपने पत्र इण्डियन सोशल रिफार्मर में ऋषि दयानन्द की पवित्र स्मृति पर कुछ श्रद्धा के फूल चढ़ाते हैं; वह लिखते हैं:—

"इसमें कोई सन्देह नहीं कि ऋषि दयानन्द भारतवर्ष के सब से बड़े सामाजिक और धार्मिक संशोधकों में से एक हैं। एक शोधक के निर्भ्रान्त और अचूक बोध से उन्होंने जान लिया कि हिन्दूसमाज किन रोगों से पीड़ित है और प्राचीन शास्त्रों के के आधार को न छोड़ कर उनके ऐसे तर्क-सम्पन्न अर्थ किये कि इस युग की आवश्यकता पूरी होगई; आर्य्यसमाज जिसमें हमारे देश के कुछ सब से बड़े महापुरुष सम्मिलित होगये हैं ऋषि के महान् और आकर्षिक व्यक्तित्व का परिणाम है, उन तमाम लोगों के लिये जो कि धर्म कर्म को छोड़कर पश्चिम के प्रकृतिवाद में डूबे हुए हैं, आर्य्यसमाज की बाइबिल सत्यार्थप्रकाश उत्थान का साधन है। विशेषतया यह उन लोगों की आंखें खोलती है जो कि कर्मकाण्ड के बाह्य रूप पर उसका वास्तविक रूप समझे बिना मर मिटने को उद्यत हैं। मिस्टर जम्बूनाथ एय्यर जो कि आर्य्यसमाज के उत्साही कार्यकर्त्ता हैं धन्यवाद के पात्र हैं कि उन्होंने इस वर्ष सत्यार्थप्रकाश के अवलोकन में लगाकर सत्यार्थप्रकाश का तामिल अनुवाद करदिया है। वेद की सतर्क व्याख्या की जितनी आवश्यकता दक्षिण को है उतनी शायद भारत के किसी अन्य भाग को न हो इस लिये इस अनुवाद से एक बड़ी भारी और विर-अनुभावित कमी पूरी हुई है ....

.....

ऋषि दयानन्द के सिद्धान्तों का मुख्य अंग यह है कि चारों संहितायें निर्भ्रान्त ईश्वरीय ज्ञान हैं। सत्यार्थप्रकाश के अर्थ हैं सत्य, अर्थ प्रकाश। ऋषि दयानन्द ने अपने पास से कोई नई बात नहीं बतलाई उन्होंने प्राचीन धर्मग्रन्थों को ही अपने सामने रखकर वर्त्तमान काल की परिवर्त्तित अवस्थाओं के अनुसार धर्म की व्याख्या की है। भूमिका लेखक मिस्टर रङ्ग स्वामी अय्यर लिखते हैं कि ऋषि दयानन्द की वेदव्याख्या युक्तियुक्त है और भ्रममूलक रसम रिवाज

मुक्त है अतएव इस समय के दक्षिण में जो मतमतान्तर हिंदुओं में चले हुए हैं उन सब को हटा कर एक मत बनाने में सहायक हो सकती है। सत्यार्थप्रकाश के द्वारा भारत की अन्य भी कई सामाजिक समस्यायें हल होसकती हैं। दृष्टान्त के रूप में स्त्रीशिक्षा के प्रश्न को ले लो। माता ही घर की निर्माता है और जैसी शिक्षा वह बालक को छोटी आयु में देगी वैसा ही वह बालक आगे जाकर बनेगा। इसी कारण ऋषि दयानन्द अनुरोधपूर्वक स्त्रियों और पुरुषों की शिक्षा पर बल देते हैं, उनका यह भी मत है कि आठ वर्ष की आयु के पीछे सब बालकों और बालिकाओं को बाधित शिक्षा देनी चाहिये और जो संरक्षक अपने बालक और बालिका को पाठशाला में न भेजे उसको दंड मिलना चाहिए। ऋषि का यह भी सिद्धान्त है कि सब जातियों और सब मतों के स्त्री पुरुषों को वेदाध्ययन का अधिकार है। स्वामी दयानन्द ने देश को अधोगति को प्राप्त कराने वाले कई भ्रममूलक विश्वासों का खण्डन किया है और नाम-धारी जादू टोना करने वाले और ज्योतिषियों की पोल खोली है। इन लोगों का उद्देश्य केवल मूर्ख और श्रद्धालु लोगों से रुपया बटोरना है। स्वामी जी महाराज बालविवाह की कुप्रथा का जिसके कारण १५ वर्षकी आयु से पहिले ही एक बालिका की शक्ति का ह्रास होजाता है और जिसका सामाजिक संशोधकों के महत्तापूर्ण यत्नों के होते हुए भी हिन्दू समाज पर बड़ा आधिपत्य है स्पष्ट शब्दों में विरोध किया है। विवाह के लिए सर्वोपरि उचित आयु ब्रह्मचारिणी के लिए २४ वर्ष है और ब्रह्मचारी के लिए ४८ वर्ष, ऐसे विवाह से ही दोनों को पूर्ण सुख की प्राप्ति हो सकती है।

ऋषि दयानन्द की शिक्षा का वह अंग जिसके परिणाम सब से अधिक क्रांतियुक्त हैं उनका वर्ण-व्यवस्था विषयक मत है। ऋषि की सम्मति में वर्णों की व्यवस्था गुण कर्म स्वभाव से होती है न कि जन्म से। एक शूद्र भी जो कि वर्णाश्रम प्रणाली में सब से नीचा है वह ब्राह्मण बनकर सब से ऊंचा होसक्ता है और एक ब्राह्मण यदि गिर जावे तो शूद्रत्व को प्राप्त हो सक्ता है। वर्ण व्यवस्था की इस उदार व्याख्या के कारण ही आर्यसमाज ने समग्र भारतवर्ष के अछूतों को उस गिरी हुई दुर्वस्था से ऊपर उठाने के प्रशंसायुक्त प्रयत्न किये हैं जिस तक युगों के अत्याचार से वह पहुँच चुके हैं। स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन काल का मूलमन्त्र बतला दिया जब कि उन्होंने लिखा-"मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है, वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जावे"

....

आर्यसमाज के नियमों की प्रामाणिक व्याख्या करने वाली किसी पुस्तक के तामिल में न होने से आर्यसमाज दक्षिण में जड़ नहीं पकड़ सका। हमें विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश के इस अनुवाद का फल यह होगा कि तामिल नैडू देश में आर्यसमाज के मत की वृद्धि होगी"।

बौद्धकाल में शिल्प

कलकत्ता के The Indian Historical quarterly के जून अंक में महाशय पी० के० आचार्य एक सार गर्भित लेख लिखते हैं,

CCO. Gurukul Kangri Collection, Ha...

जिसमें वह बौद्धों की धर्म्मपुस्तकों में से उद्धरण देकर यह बतलाते हैं कि उस काल में शिल्प की उन्नति कितनी थी ।

पांच प्रकार के घर और उन की रचना

घर पांच प्रकार के हुआ करते थे, विहार अर्धयोग, प्रासाद, हर्म्य और गुहय । आंगन के चारों ओर प्राकार होते थे जो ईन्टों के पत्थर के अथवा लकड़ी के बनते थे। इन प्राकारों से परे बाँस या कांटों की बाड़ होती थी अथवा खाइयें होती थीं, प्रत्येक घर में रहने के कमरे, सोने के कमरे, सामान रखने के कमरे, व्यायामशाला, छते हुए कुएं, स्नानागार और तालाब होते थे। इनके अतिरिक्त रसोईघर, शौचालय, भ्रमणालय और यन्त्रगृह भी होते थे, यन्त्रगृहके ठीक अर्थ मालूम नहीं हैं। होसकता है कि इन मे पानी के नलकों का एंजिन हो अथवा बिजली का एंजिन हो। कई मकान सात मञ्जिलों के होते थे। घरों के बाहर बड़ी२ ड्योढ़ियां होती थीं, गर्म वायु में स्नान करने के लिये एक विशेष प्रकार के बने हुए स्नानागार होते थे जिनमे अंगीठी जलती रहती थी और गर्म पानी के द्वारा पसीना लाया जाता था ।

हमारी मंजूषा

१. क्रूरवेणा—लेखक हरद्वारप्रसाद जालान (आरा निवासी) मूल्य ॥)

यह एक पौराणिक रूपक है इस में अत्याचारी राजाओं के समय में समाज की जो दुरावस्था होजाया करती है उसका पूरा २ चित्र खींचा है और यह दिखलाया है कि खुशामदी मन्त्री भी किस प्रकार राजा और प्रजा के हित का नाश करने वाले होते हैं। नाटक का अभिनय भी हो चुका है। रूपक बड़ा ही मनोरंजक है । भाषा बड़ी सुन्दर है, और पात्र पात्रायें कोई अप्राकृतिक कार्य्य नहीं करते । हम आशा करते हैं कि लेखक महोदय इस प्रकार की और पुस्तकें भी लिखेंगे और मातृभाषा की सेवा करते रहेंगे ।

२. उर्वशी—लेखक कविराज जयगोपाल, प्रकाशक चुन्नीलाल खन्ना । अध्यक्ष शिरोमणि पुस्तकालय मोहनलाल रोड लाहौर । मूल्य १) ।

कौन संस्कृतज्ञ रसिक है जिस ने कवि शिरोमणि कालिदास का विक्रमोर्वशीय नाटक बार बार नहीं पढ़ा ? इस नाटक का अनुवाद इंग्लिश इत्यादि कतिपय विदेशीय भाषाओं में भी होचुका है और पश्चिमीय विद्वानों ने भी इसकी प्रशंसा मुक्तकण्ठ से की है। इस नाटक में स्वर्गीय प्रेम के लौकिक और अलौकिक कई दृश्य दिखलाये हैं। कविराज जयगोपाल ने इस नाटक को उपन्यास के रूप में लिखा है। इस कार्य में उनको बड़ी सफलता प्राप्त हुई है। नाटक की रोचकता में भेद नहीं आया और उपन्यास ऐसे ढंग से लिखा गया है कि पढ़ने वाले का दिल समाप्त किये बिना छोड़ने को नहीं करता। भाषा ओजस्विनी है। छपाई इत्यादि अति उत्तम हैं।

३. कर्मवीर नाटक—रचयिता पंडित देवकीनन्दन भूषण। प्रकाशक श्री व्यास साहित्य मन्दिर ३९ माटलेन कलकत्ता, मूल्य सादी जिल्द १॥) रेशमी २)। यह भी एक नाटक है जिस में इतिहास और पौराणिक गाथा दोनों के अंश हैं। इस में पाप के दुष्परिणामों और गिरावट के समय देशसेवकों पर जो अत्याचार किये जाते हैं उनका चित्र बहुत अच्छा खींचा है। साथही अन्तमें धर्मकी ही जय होती है यही दिखलाया है। महात्मा कर्म्मवीर और हरावती के चरित्र संगठित करने में लेखक ने बड़ी योग्यता से काम लिया है। यह नाटक पं० देवकीनन्दन भूषण की "नवीना लेखनी का प्रथम प्रयास" है। हम इस नवीन साहित्य-सेवीका हृदय से स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि जो लेखनी नवीना होती हुई ऐसा सुन्दर साहित्यरत्न उत्पन्न कर सकती है वह अभ्यस्त होकर साहित्य की सेवा ऐसी रीति से करेगी कि पं० जी का नाम सुप्रसिद्ध कवियों और सिद्धहस्त लेखकों में हो जावेगा।

४. क्रान्तकुमारी राजकुमार अर्थात् प्रिन्स क्रापटकिन की आत्मकहानी—अनुवादक श्री प्यारेमोहन चतुर्वेदी। मुद्रक तथा प्रकाशक प्रताप कार्य्यालय कानपुर। मूल्य १) रुपया।

वर्तमान युग में जो दार्शनिक क्रान्तिकार हुए हैं उन में रूस के प्रिन्स क्रापटकिन का स्थान बड़ा ऊंचा है। आप राजवंश में उत्पन्न हुए, ऐश्वर्य में उत्पन्न हुए और पले, किन्तु सत्ता वादियों के दुर्ग को खोखला करने और सम्पत्ति के मद से उन्मत्त हो कर योरोप में जो अत्याचार किये जाते हैं उनका प्रतिरोध करने में राजकुमार ने जो प्रयत्न किये हैं वह स्वतन्त्रता के इतिहास में स्वर्णीय अक्षरों में सदा अंकित रहेंगे।

राजकुमार की गणना यूरोप के वैज्ञानिकों में भी है। और उस क्षेत्र में भी आप का कार्य्य उच्चकोटि का है। आप एक बहुश्रुत विद्वान् थे। ऐसे महापुरुष की आत्म कहानी का शिक्षाप्रद होना एक स्वाभाविक बात है। भारत के नवयुवकों को इस पुस्तक का स्वाध्याय नियमपूर्वक करना चाहिये ताकि वह सीख सकें, कि जो मनुष्य आत्म-त्याग नहीं कर सकता, साहसी और नम्र नहीं और आपत्तियों में धीर और वीर नहीं रह सकता वह यदि देशसेवा के रङ्गमच पर आवेगा तो दर्शकों को विदूषक के रूप में ही दीखेगा। किसी के लिये उपहास की सामग्री उपस्थित करेगा और कोई उसको करुणा का पात्र समझेगा।

५. तेजी-मंडी का दैनिक, भविष्य फलादेश रचियता काशी निवासी कर्मकाण्ड भूषण पं० जयराम शर्मा ज्योतिषी। वार्षिक मूल्य ५) रुपया।

हम ज्योतिषीजी के इस प्रयास पर बधाई नहीं दे सकते। हमारा देश भ्रममूलक मिथ्या विश्वासों से आगे ही पीड़ित है। फलित ज्योतिष भी भारत के व्यापार का गला घोंटने वाला है। एक नमूना ले लीजिये। ज्योतिषी जी लिखते हैं कि:—

"सूर्योदय के समय से प्रतिदिन पहिले जिस मनुष्य का सूर्यस्तर बाद में चन्द्रस्तर का चलना प्रारम्भ हो तो उसे दिन भर या पन्द्रह रोज तक बराबर भाग्य की वृद्धि, व्यापार में लाभ, और हर एक कार्य की

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized

सिद्धि शीघ्र ही होगी।" इस उद्धरण से पाठकों को ज्योतिषी जी की भाषा की योग्यता का भी ज्ञान हो जावेगा। जिस देश में वाणिज्य व्यापार की आधारशिला में ऐसी कपोल कल्पनाएं हों, वह यदि अधोगति को प्राप्त न हो, तो विधाता की व्यवस्था ही उलट जावे। आशा है कि ज्योतिषी जी हम से अप्रसन्न होकर हमारे विरुद्ध किसी प्रयोगसिद्धि का व्यर्थ प्रयास न करेंगे। क्यों कि प्रयोगों का प्रभाव केवल भक्तों और विश्वासियों पर ही होता है।

६. चनाचबैना—रचियता-पं० ईश्वरीप्रशाद शर्मा। भूतपूर्व मनोरञ्जन सम्पादक, प्रकाशक—शिवपूजन सहाय व्यवस्थापक सरस साहित्य माला आरा (बिहार)। मू० १)।

यह पुस्तक वास्तव मे हास्यरसपूर्ण सरस पद्य माला है। पं० जी हास्य-रस-पूर्ण कवितायें लिखने में सिद्धिहस्त हैं। इस पुस्तक में केवल मनोरञ्जक ही नहीं है किन्तु हमारी जाति की सामाजिक और राजनैतिक कमजोरियों का ऐसा उत्तम कच्चा चिट्ठा अभी तक हमने कहीं और नहीं देखा।

सभी कविताएं शिक्षाप्रद हैं। व्यंगके बाण तो छोड़े गये हैं किन्तु उन बाणों में से एक भी विषैला नहीं। जिस के बाण लगते हैं उसके पेट में भी गुदगुदी उत्पन्न कर देते हैं। वैसे तो सभी कविताएं पाठ्य हैं किन्तु लीलावतार और जोरू-गुण-गायन में तो लेखक महोदय ने कमाल कर दिया है। पौराणिक शैली के श्लोक बनाये हैं और भाषा में उनका अनुवाद दे दिया है।

यह पुस्तक अपने प्रकार की निराली है और प्रत्येक साहित्यप्रेमी और रसिक हाथ में होनी चाहिये।

विचार प्रवाह

वाइसराय का भाषण।

कई नरम दल के नेताओं के नेत्र वाइसराय महोदय की वक्तृता की ओर लगे हुये थे। वक्तृता हो चुकी किंतु किसी नवीन लोक का निर्माण नहीं हुआ। देश की राजनैतिक अवस्था में कोई क्रांति नहीं हुई। अब वही महाशय बड़ी निराशता का प्रकाश कर रहे हैं। निराशा के लिये स्थान तभी हो सकता है यदि पहले आशा के लिये स्थान हो। लार्ड रेडिंग जब से भारत में पधारे इन्होंने कोई भाषण नहीं दिया जिसका विश्लेषण करने के उपरांत किसी बुद्धिमान श्रोता और पाठक को अपनी आशाओं के लिये कोई आधार मिला हो। शब्दयोजना और वाक्यरचना में श्रीमान् सिद्ध हस्त हैं। किन्तु इन की योग्यता उस प्रकार की है कि शब्द और वाक्य दोनों भड़कीले होते हुये भी निस्सार होते हैं। इसी वक्तृता को ले लीजिये। आप ने कहा कि गवर्नमेन्ट आफ़ इन्डिया ऐक्ट का संशोधन १९२० से पूर्व भी हो सकता है। किंतु साथ ही यह भी कहा कि ऐसा होना भारत के हित के लिये नहीं क्यों कि इस समय यदि कोई राजकीय कमीशन बैठेगी, तो वह यही निर्णय करेगी कि भारतीयों के स्वराज्य के क्षेत्र में कोई वृद्धि

न होनी चाहिये। क्योंकि पिछले सुधारों को उन्होंने सफल बनाकर नहीं बतलाया। क्या सुन्दर युक्ति है? यह तो वही बात हुई जैसा कि एक लड़के को एक घोड़ा दिया जावे और कहा जावे कि यदि तुम इस को ५० मील बिना किसी दुर्घटना के दौड़ा लोगे तो तुमको मोटर मिलेगी किंतु साथ में सड़क ऐसी बतला दी जावे कि जिस में अनगिनत गढ़े हों जिन पर सुन्दर किन्तु गली सड़ी लकड़ी के पटड़े हों। और यदि वह लड़का यह कहे कि या तो मुझे दूसरी सड़क दी जावे और या पटड़े हटा लिये जावें ताकि मैं घोड़ा दौड़ा सकूं तो उसको यह उत्तर दिया जावे कि इसके अर्थ यह समझे जावगे कि वह घोड़ा दौड़ाने की योग्यता ही नहीं रखता, इस लिये मोटर देने पर विचार करना उसके लिये हितकर न होगा।

भारतीयों ने जिस समय सुधारयोजना हुई स्पष्ट कह दिया कि इसके अनुसार भारतीय मन्त्रियों के कर्त्तव्य तो बहुत हैं किन्तु अधिकार कोई नहीं। उनका कर्त्तव्य है कि शिक्षा और स्वास्थ्यरक्षा के विभागों में उन्नति करके दिखलावें, किन्तु आय का जो भाग उनको दिया गया वह वर्तमान अवस्था को स्थिर रखने के लिये भी पर्याप्त नहीं। इस लिये यदि उन्नति न हो तो उनके मुख पर कालिमा, यदि कर लगावें तो उनके मुख पर कालिमा, और यदि गवर्नर से धन मांगे तो इनकार, यदि गवर्न्मैन्ट कूटनिति का वर्ताव करे तो उत्तरदायित्व में मन्त्री भी सम्मलित, किन्तु उसके रोकने का अधिकार उनको सर्वथा नहीं। यदि वह प्रजा के सन्मुख अपने दुःख रोवें तो कहा जावे कि इनके पास रहस्य सुरक्षित नहीं रह सकते इस लिये स्वराज्य के योग्य नहीं। यदि चुप रहें तो कह जावे कि प्रजा को साथ रखने की योग्यता ही इनमें नहीं इसलिये स्वराज्य और पर राज्य में काई भेद नहीं, इस के अतिरिक्त कि पर-राज्य में क्षमता अधिक होती है। मन्त्रियों के ऊपर में गोरे अफ़सर और नीचे भी गोरे अफ़सर और उन गोरे अफसरों के नियत करने में उनको नहीं पूछा गया। और उन को पदच्युत करने का इनको अधिकार नहीं। यदि कोई गोरे अफसर उन के आधीन न रहना चाहें तो उनको समय से पहले ही अनुपात से पैन्शन भी मिल सकती है। ऐसे मातहतों से काम ब्रह्मा भी कठिनाई से ले सकते हैं। साधारण मर्त्यों का तो कहना ही क्या है? यदि इन मातहतों की बात न मानी जावे तो वह सीधे गवर्नर तक पहुँचे और अपनी बात मनवा लें। यदि न डाटा जावे तो सारे उत्पातों का उत्तरदायित्व बेचारे मन्त्री पर? बहुत से भारतवासियों ने पहले ही कह दिया था कि सुधार निराशा-युक्त हैं। जिन अवस्थाओं में भारतीयों की परीक्षा ली जा रही है, उन अवस्थाओं में उत्तीर्ण हो सकना सर्वथा असम्भव है इस लिये ऐसी परीक्षा में सम्मिलित ही न होना अच्छा है। कांग्रेस ने परीक्षकों पर अविश्वास की घोषणा कर के सुधारों का वहिष्कार कर दिया। किन्तु नर्मदल के नेताओं ने लोक मत का तिरस्कार करके भी सहयोग किया। और ऐसा सहयोग किया जिसका दृष्टान्त आत्माभिमानी किसी राष्ट्र के इतिहास में न मिलेगा। सहस्रों देश भक्त बन्दी-गृह में ठूंसे गये। न्यायालय नाटक घर बने किन्तु हमारे मन्त्रियों ने प्रतिवाद में त्यागपत्र न दिये। यह सब कुछ करते हुये भी उन की वास्तविक शासकों के साथ न पटी। अन्त में सुधारों के वास्तविक कार्य क्रम की पड़ताल के लिये एक कमेटी बिठलाई गई। उस कमेटी के सन्मुख भूत और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

वर्तमान सहयोग करने वाले मन्त्री आये। सब ने सर्व सम्मति से यही रोना रोया कि द्वैध-शासन के होते हुये स्वराज्य में न तो शिक्षण प्राप्त हो सकता है और न ही उस के क्षेत्र को विस्तृत किया जा सकता है। संयुक्त प्रान्त के चिन्तामणि और जगत नारायण ने यही कहा; पञ्जाब के हरकिशनलाल भी यही बोले, मध्यप्रान्त के केलकर और चित्तनिवास ने भी यही रोना रोया। बिहार के माधोदास ने भी यह दुःख की कहानी सुनाई। कमेटी के उन सदस्यों ने, जो सरकार के नौकर न थे और जिनके मुखिया सर तेज बहादुर सप्रू थे, जो असहयोग के दिनों में वाइसराय की शासक समिति के सदस्य थे यही रिपोर्ट की कि जब तक द्वैध शासन की समाप्ति नहीं होती, कोई मन्त्री कुछ भी कार्य नहीं कर सकता। अधिकार का जुआ जब सर मुहम्मद शफ़ीके गले से उतरा तो उन्हों ने भी इसी पक्ष का समर्थन किया। किन्तु वाइसराय महोदय कहते हैं कि इस रिपोर्ट को स्वीकार नहीं किया जा सकता क्योंकि इसकी स्वीकारी बिना पारलियामेंट के ऐक्ट के संशोधन के नहीं होसकती। किन्तु यदि सुधारों की गाड़ी द्विचक्र शासन के हटाये बिना चल ही नहीं सकती तो क्यों नहीं ऐक्ट को बदल डालते जब कि स्वयम ही कहते हो कि १६२६ से पूर्व उसका बदलना सम्भव है? वाइसराय महोदय ने कहा कि जिन लोगों ने असहयोग किया वह सहयोग करके दिखलाव तब सुधारों पर पुनर्विचार होसकता है। आगे जिन्हों ने लोकमत की उपेक्षा करके सहयोग किया उनके परामर्श की जो दुर्गति हुई है उस को देख कर अब असहयोगियों से सहयोग की आशा किस मुंह से कर सकते हो? जो काम चिन्तामणि और चित्तनवीस से सफलता पूर्वक न हुआ उसकी आशा मोतीलाल और केलकर से कैसे कर सकते हो? बात तो साफ़ है। भारत का कल्याण न रैडिंग द्वारा होगा, न वर्कनहेड द्वारा। भारत अपने आप ही अपने सौभाग्य और दुर्भाग्य का निर्माता है। आजकल कांग्रेस का कार्य शिथिल है, हिन्दू मुसलमान एक दूसरे का शिर फोड़ रहे हैं, विदेशी माल धड़ा धड़ देश में आरहा है, ऐसी अवस्था में स्वराज्य की पुकार को कौन सुनेगा? यदि भाई भाई एक हो जावें, विदेशी वस्तुओं का वहिष्कार होजावे और लोकमत के अन्दर यह शक्ति हो कि अपने तिरस्कार का बदला चुका सके तो आज ही वाइसराय महोदय और भारतीय सचिव के भाषणों की टोन बदल जावे। किसी ने सच कहा है:—

"इस घरको आग लगी घरके चिराग़ से"

पानीपत की दुर्घटना

पानीपत में मुहर्रम के अवसर पर जो कुछ हुआ उसका वृतान्त हमारे पाठक समाचार पत्रों में पढ़ ही चुके होंगे। हिंदुओं के प्रतिष्ठित स्थानीय और प्रान्तीय नेता बड़े बलके साथ कहते हैं कि मुसलमान तहसीलदार ने निरपराधी जाटों के लिये पहिले से जाल बिछाया था और जब वह इस जाल में फंस गये तो उनको मारा और पीटा। यह दोष बड़ा घोर है और स्पष्ट और नियत शब्दों में लगाया गया है। साथ ही यह भी कहा गया है कि तहसीलदार को मालूम था कि गंगा स्नान के लिये सहस्रों जाट मुहर्रम के दिन पानीपत में से गुजरेंगे किन्तु न ही उनका पानीपत में आना रोका गया और न ही उन

के लिये किसी दूसरे रास्ते की घोषणा की गई। यह भी कहा जाता है कि हाकिम ज़िला ने जनसमूह को बिना सावधान किये ही उन पर डण्डा बरसाने की आज्ञा देदी। यह भी कहा जाता है कि मुसलमान भी पुलिस के साथ मिल गये, और उन्होंने भी जाटों को मारा। इसके विरुद्ध सरकारी कथन यह है कि जाट फ़िसाद और दंगे के उद्देश्य से इकट्ठे हुये और पुलीस अधिकारियों के कहने पर भी डटे रहे। पुलीस ने बड़े धैर्य्य से कार्य लिया और बिना गोली चलाये काम निकाल लिया। ऐसी अवस्था में उचित तो यह था कि एक निष्पक्ष कमीशन नियत कर दी जाती जो कि अनुसन्धान के पश्चात् निर्णय करती कि तहसीलदार कहां तक दोषी है। दोष सिद्ध हो जाने की अवस्था में उस को दण्ड दिया जाता, अन्यथा उस की निर्दोषता की घोषणा करके उस के पद को बढ़ा दिया जाता। यदि तहसीलदार निर्दोष है तो ऐसा करने से जहाँ हिंदू प्रजा का असन्तोष दूर हो जाता वहां उस की भी सुर्खरूई हो जाती, किन्तु शोक है, कि सरकार ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया है। हिन्दुओं के अन्दर असन्तोष बढ़ रहा है। वह समझते हैं और स्पष्ट कहते हैं कि पञ्जाब में मुसलिम राज्य है हिन्दुओं के साथ यहां न्याय नहीं हो सकता। शासक दल को ऐसे घोर असन्तोष को प्रजा के हृदयों में स्थित नहीं होने देना चाहिये। क्योंकि ऐसा होना न प्रजा के लिये हितकर है और न शासकमण्डल के लिये। असन्तोष की मात्रा का अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि कौंसिल के वह जाट मैम्बर भी जो सदा सरकार के साथ रहे और मियां फ़ज़ल हुस्सैन के साथ वोट करते रहे, इस समय बिगड़े बैठे हैं। यदि सरकार को अपने इस अशुद्ध निर्णय को लौटाने में लज्जा आती है, तो हम उस की कठिनाई के हल का एक और सहज उपाय बतलाये देते हैं और वह यह कि तहसीलदार हिंदू नेताओं पर मान हानि का अभियोग चला दे तो आप ही दूध का दूध और पानी का पानी हो जावेगा। दोषी जो कोई भी होगा अपनी करनी का फल भोगेगा, सरकार से किसी की शिकायत न रहेगी। और प्रजा का असन्तोष दूर होकर प्रभु मण्डल में उन का विश्वास पुनः स्थापित हो जावेगा।

मियां फ़ज़लहुस्सैन

मियां फ़ज़ल हुस्सैन का व्यक्तित्व भी बड़ा महान है। उनकी योग्यता निर्विवाद है और उसका बड़ा प्रमाण यह है कि पंजाब गवर्न्मैंट अब तक उनके हाथों की कठपुतली रही। पंजाब में हिन्दू मुसलमानों के सम्बन्ध की जो दुरावस्था है उसके लिये बहुत कुछ वही उत्तरदाता हैं। अब एक विचित्र घटना हुई है। सर हबीबउल्लाह जो भारतीय सरकार के शिक्षासदस्य हैं अवकाश पर गये हैं, उनके स्थान पर मियां जी नियत किये गये ह। मियां साहिब ने पञ्जाब के शिक्षा-मन्त्री के पद से त्यागपत्र देदिया है और वह स्वीकार भी होगया है, उनके स्थान में शेख़ अबदुल क़ादर नियत होगये हैं। प्रश्न यह है कि मियां साहब पंजाब से क्यों गये जब कि सारे कला यन्त्र को चलाने वाले वह थे ? भारतीय सरकार के शिक्षा-सचिव होते हुये वह अपने मुसलमान भाइयों को उतनी नौकरियां नहीं दिला सकते जितनी कि पंजाब में दिला सकते हैं। फिर उन्हों ने पंजाब को छोड़ना स्वीकार क्यों किया ? इस सम्बन्ध में कई स्थापनायें हैं, कोई कहता है कि इसका कारण यह है कि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पंजाब में नये गर्वनर सर मेलकम हेली अपने आप धड़ल्ले के आदमी हैं और शासन की बागडोर मियांसाहब के हाथ में नहीं देसकते एक मियान में दो तलवारें नहीं समा सकतीं इस लिये गर्वनर महाशय ने मियां साहब को नमस्ते कही है। दूसरे लोगों का यह विचार है कि शिक्षाविभाग में तो मियां साहब ने अपना कार्य समाप्त करलिया अब वह पंजाब की भी शासक सभा के सदस्य होकर अपनी जाति की सेवा करेंगे। जब सर हबीबउल्लाह का अवकाश समाप्त होगा, उसी समय पंजाब सरकार के भूमिकार सचिव सरदार सुन्दरसिंह मंजीठिया रिटायर होंगे और मियां साहब उनके स्थान में नियुक्त होंगे। तीन मास के पीछे इन स्थापनाओं की सत्यता का निर्णय हो जावेगा।

महाशय पटेल

स्वराजपार्टी के लोग कौंसिलें में उनको मलियामेट करने के लिये गये थे। बतलाया गया था कि यह कान्सिल फ़रेब की टट्टियां हैं जिन्होंने संसार को धोखे में रखा हुआ है कि भारतीय प्रजा स्वराज्य की ओर क़दम उठा रही है। इन कौंन्सिलें को तोड़ दिया जावे तो भारतीय सरकार का एकसत्ताराज्य अपने वास्तविक रूप में प्रगट हो जावेगा। और फिर लोग सविनय- अवज्ञा भंगके लिये तय्यार हो सकेंगे। किन्तु गये थे स्वराजी कौंसिलें को तोड़ने और तोड़दिया कौंसिलें ने स्वराज्य यन्त्र को। वही रीछ और कंवल की कहानी। जो मिस्टर पटेल मुम्बई कारपोरेशन की प्रधानी छोड़ने को उद्यत थे किन्तु वाइसराय का स्वागत करने का नाम न लेते थे आज वाइसराय के प्रासाद में पार्टियों में सम्मिलित होते हैं और दिन में दश वार वाइसराय के पास जाने के लिये अपने आप को तैयार बतलाते हैं। समय की गति भी निराली है। हमको समझ में नहीं आताकि आजकल स्वराज्यदल और नरम दल में नीतिभेद क्या है? यह तो माना जा सकता है कि स्वराज्य दल नाकरशाही का नरम दल की अपेक्षा अधिक कट्टर विरोधी है किन्तु, भेद मात्रा का है प्रकार नहीं।

काल विकराल के जबड़ों में

सर सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और सर रामकृष्ण भण्डारकर दोनों महोदय पिछले मास में इस असार संसार से चल बसे। अपने २ क्षेत्रों में दोनों ने भारत की अमूल्य सेवाएं की थीं। सर सुरेन्द्रनाथ वर्तमान राजनैतिक आन्दोलन की नींव रखने वालों में से एक थे। कांग्रेस के संस्थापकों में भी उनके नाम का महत्व बहुत है। किसी समय उन को बङ्गाल का बिना मुकट का राजा कहा जाता था। बङ्ग विच्छेद के समय उन्होंने नौकरशाही के साथ वह अहिंसात्मक युद्ध किया जो देश के समकालीन इतिहास में स्वर्णीय अक्षरों से लिखने योग्य है।

इस में सदेह नहीं कि महात्मा गांधी ने कांग्रेस को जब नया रूप दिया और राजनैतिक अस्त्रों में जब एक अस्त्र की वृद्धि की तो सुरेन्द्रनाथ कांग्रेस से पृथक हो गये। उस समय से उन की लोकप्रियता घटने लगी। नौकरशाही ने अवसर से लाभ उठा कर उनको अपनाना आरम्भ किया। किन्तु जो कुछ भी हो, आयु के पिछले भाग के उनके मतभेद शेष भाग की बहुमूल्य सेवाओं को दृष्टि से ओझल नहीं कर सकते।

डाक्टर भण्डारकर संस्कृत के सुप्रसिद्ध विद्वान और प्राचीन भारतीय इतिहास के उच्च कोटि के अन्वैषिक थे। आपने इङ्गलिश जानने वाले विद्यार्थियों में संस्कृत का प्रचार करने के लिये संस्कृत की अति उप-

योगी पाठावलियां भी लिखी थीं, एक ऐसे अपूर्व विद्वान की मृत्यु भी सुरेन्द्रनाथ की मृत्यु की नाईं एक राष्ट्रीय आपत्ति हो है।

मंसूरी आर्यसमाजका नगरकीर्तन

२९ अगस्त से १ सितम्बर तक मसूरी आर्य्यसमाज का वार्षिक महोत्सव होना था। नगरकीर्तन के लिये २९ अगस्त नियत था। विज्ञापन कई दिन पहिले ही लगा दिये गये थे। जब उत्सव बहुत निकट रह गया तो कतिपय मुसलमान महोदय कलेक्टर के पास पधारे ओर उनको कहा कि आर्य्यसमाज का उत्सव यदि रोका न गया तो हमको बड़ा दुःख होगा। और आर्यसमाज का जलूस यदि निकल आया तो फिसाद हो जावेगा। बस फिर क्या था ? कलेक्टर महोदय व्याकुल होगये और तुरन्त आज्ञा दे दी कि आर्यसमाज का नगरकीर्तन बन्द। आप के पास दो डेपुटेशन पहुंचे, एक आर्य-समाजियों का और एक हिंदू सिख और जैनियों का। डेपुटेशनों में कहा कि "महाराज नगरकीर्तन महोत्सव का एक आवश्यक अग है। यह आशा करनी कि आर्य बिना नगरकीर्तन के उत्सव कर लें ऐसा है जैसे कि किसी हिंदू को यह कह देना है कि पुत्री का विवाह कर सकते हो किंतु मधुपर्क विधि को तोड़ देना। आर्यसमाजी शान्ति-प्रिय हैं किसी के साथ लड़ते नहीं। वह भी तो महाराज जार्ज की प्रजा हैं। क्या उनके धार्मिक अधिकारों की रक्षा करना सरकार का कर्त्तव्य नहीं, यदि सरकार गुण्डों से भले आदमियों की रक्षा नहीं कर सकती तो उस का होना न होना एक जैसा है।" कलेक्टर महाशय ने स्वीकार किया कि यह सब कुछ ठीक है किंतु जब मुसलमान नहीं मानते तो वह असमर्थ हैं। कोई विदेशी पास खड़ा होता तोयही समझता कि मंसूरी में मुग़लराज्य पुनः स्थापित होगया है। कलेक्टर महाशय न मालूम क्या समझे बैठे हैं। आर्यसमाज मसूरी ने प्रतिरोध के रूप उत्सव तो बन्द कर ही दिया है। कमिश्नर और गवर्नर को तारें भी दी हैं। कौंसिल में भी यह प्रश्न उठाया जावेगा। यदि इन उपायों से कुछ न बना तो अपने अधिकारों की रक्षा में आर्यसामा-जिक अपना सब कुछ न्योछावर करने को उद्यत हो जावेंगे। क्या कलेक्टर महा-शय हिमालय के शिखर पर विश्राम करते हुए गुरू के बाग का दृश्य देखना चाहते हैं ? यदि ऐसा ही है तो आश्चर्य नहीं कि भग-वान उनकी सुन ले।

क्षमा-प्रार्थना।

कई अनिवार्य्य कारणों से गत कई मासों से ज्योति अपने पूर्ण स्वरूप और समय पर पाठकों की सेवा में उपस्थित नहीं हो सकी है। 'सबै दिन जात न एक समान'। पर-मात्मा के अटल नियमों के अतिरिक्त मनुष्य कृत जितने भी कार्य हैं उन में परिवर्तन सम्भव है ही परन्तु फिर भी धीर मनुष्य वीरता के साथ विपत्ति का सामना करते हुए अस्खलित पद से अपने निर्दिष्ट पथ पर चलने का यत्न करते रहते हैं। ज्योति की भी यही दशा है। कार्यकर्त्ताओं के निरन्तर रुग्ण होने पर भी यह यथा तथा निकाली गई, किन्तु गत डेढ़ मास से कन्या गुरुकुल यात्रार्थ दिल्ली से बाहर है, ज्योति के प्रबन्ध के लिये एक सम्पूर्ण मनुष्य कोई उपलब्ध नहीं हुआ, अतः प्रेस वालों ने भी शिथिलता की जिसका परिणाम यह हुआ है कि ज्योति अभी तक पाठकोंकी भेंट न हो सकी। आशा है कि इन उपरोक्त कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए हमारे दयार्द्र हृदय पाठक इस अंक और सम्भवतः अगले अंक को देर से प्राप्त होने पर क्षमा करेंगे।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वनिता विनाद

स्त्री जगत्

स्वर्गीय मि० जे० एन० टाटा की भगिनी श्रीमती रत्नबाई इदलजी टाटा ने अपनी पुत्री कुमारी हेमाबाई की यादगार में नवसारी में एक महिला संस्था खोलने के लिये २५०००) दान दिया है।

——

श्रीमती सरलादेवी चौधरानी की सब से बड़ी बहिन श्रीमती हिरण्यमयी देवी का गतमास देहान्त होगया। आपने समाज सुधार में बड़ा कार्य किया था। प्रसिद्ध महिला शिल्पाश्रम-जहां पर विधवायें निवास करती थीं और जिसने कि सैंकडों विधवाओं को निज निर्वाह करने योग्य बनाया-की स्थापना का श्रेय आप को ही था। आप प्रसिद्ध बंगाली लेखिका थीं और कितने ही वर्ष तक "भारती" का सम्पादन करती रही हैं।

——

इस वर्ष इंग्लैण्ड की सिविल सरविस परीक्षा में कितनी ही स्त्रियां पास हुई हैं। अब वह वाणिज्य, नौसैना तथा राजनैतिक विभागों में उन उच्चपदों पर नियुक्त हो सकेंगी जिन का कि वेतन ४५०००) रुपया वार्षिक है।

——

इलाहाबाद विश्वविद्यालय की कार्यकर्तृ सभा ने यह निश्चय किया है कि अब से कोई कन्या कालिज में लड़कों के साथ एक श्रेणी में बैठ कर बी० ए० की पढाई न कर सकेगी वरन इस के लिये उसे लड़कियों के ही कालिज में भरती होना पड़ेगा। इस निश्चय से कई सज्जनों में बड़ा असंतोष फैला हुआ.

कलकत्ता यूनिवर्सिटी की बी० ए० की परीक्षा में इस वर्ष ५८ प्रति शतक विद्यार्थी पास हुये हैं, परन्तु कन्याओं की पास संख्या ७४ प्रति शतक हैं। सब ४२ कन्यायें पास हुई हैं।

——

पैन्सलबैनिया की एक कचहरी ने तीन स्त्रियों को किसी अपराध में जेल जाने का दण्ड दिया परन्तु उनके पतियों ने जाकर जज से कहा कि उनके स्थान पर उन्हें दण्ड दिया जाय क्योंकि यदि स्त्रियों को दण्ड दिया गया तो घर में बाल बच्चों की देख देख करने वाला कोई न रहेगा। न्यायाधीश ने उनकी यह प्रार्थना स्वीकार करली और स्त्रियों को छोड दिया।

——

श्रीमती देवकी अम्मा ने जो कि मद्रास की एक अछूत जाति-थीयो- से सम्बन्ध रखती हैं एम० ए० और ऐल० टी० की परीक्षा पासकी है। गत मास एक सार्वजनिक सभा में उन्हें स्वर्ण पदक दिया गया।

——

इङ्गलैण्ड राजसभा में श्रमियों की पार्टी में श्रीमती बारबरा बूटन एक प्रसिद्ध सदस्या हैं। आपको यह जानने का आरम्भ से ही बड़ा शौक था कि भिन्न २ श्रेणियों के लोगों में धन का किस राशि में बटवारा हुआ है और वह किसप्रकार अपना निर्वाह करते हैं। इस ओर जांच करने में ख्याति प्राप्त करने के कारण आप का लेबरपार्टी में प्रवेश हुआ। 'राष्ट्रीय सम्पत्ति' आपका विशेष प्रिय विषय है। राज-

सभा में लेबरपार्टी की ओर से जो वक्तृत यें होती हैं और उनमें भिन्न २ विषयों सम्बन्धी जो अंक पेश किये जाते हैं वह सब, इन्हीं के द्वारा एकत्र किये जाते हैं। आप की योग्यता का सब से बडा प्रमाण यह है कि गत वर्ष राष्ट्रीय कर्ज़े की जांच के लिये जो १४ सदस्यों की कमेटी बैठी थी उस में आप भी एक थीं। अभी आप की आयु केवल २५ वर्ष के लग भग है।

——

श्रीमती वोर्टन अमरीका में शिल्प की प्रसिद्ध अध्यापिका हैं पोर्टलैण्ड आर्टस्कूल में आप गत ३०वर्ष से शिक्षिका का कार्य कर रही हैं। आप को २४ अप्रैल १९२५ को अमरीका की एक प्रसिद्ध शिल्पसम्बन्धी संस्था ने अपना सदस्य चुना। शिल्प में निपुणता के लिये यह सब से बड़ा मान है जो किसी को मिल सकता है।

——

नैशनल एकेडमी आफ़ साईन्स अमरीका की एक प्रसिद्ध वैज्ञानिक सभा है। उसको स्थापित हुये ६२ वर्ष हो गये हैं। श्रीमती डाक्टर फ्लोरैन्स रेना सेबिन पहली स्त्री हैं जिन्हें इसका अभी २ सदस्य चुना गया है। आपने वैज्ञानिक क्षेत्र में बड़े २ काम किये हैं। आपकी योग्यता को ध्यान में रखते हुये उपरोक्त संस्था ने आप को जीवन काल के लिये सदस्य चुना है। यह दोहरा आदर किसी २ को ही प्राप्त होता है।

——

कहा जाता है कि कालीकट तालुके की एक उच्च कुल की हिन्दू स्त्री ने अपने पति के आर्य समाजी बनने तथा अछूत जातियों के साथ कार्य्य करने के कारण आत्महत्या कर ली है।

——

कोलम्बो के पास एक नदी में दो देवियां स्नान करने गई थीं। छोटी बहिन को मगर मच्छ ने पकड़ लिया। परन्तु ज्योंहीं दूसरी ने यह देखा वह बड़ी वीरता से तैर गई और मगरमच्छ के सिर पर घूंसे मार २ कर बहिन को छुड़ा लाई।

——

मुस्तफ़ा कमाल पाशा ने अपनी पढ़ी लिखी और राज्य कार्य में दक्ष धर्मपत्नी को इस लिये परित्याग कर दिया कि वह उस की स्वच्छन्दता को सहन न कर सके। यह देवी इग्लैन्ड और फ्रांस में शिक्षित होने के कारण बडी खुली स्वभाव की हैं और विवाह से पूर्व तुर्की स्त्रियों की स्वाधीनता के आन्दोलन की नेत्री रह चुकी थीं।

कुमारी जमिला सिराजुद्दीन एम० ए० पजाब विश्व विद्यालय से स्टेट क्षात्र वृत्ति लेकर लन्डन विश्वविद्यालय की टीचर्स ट्रेनिंग की सख्त परीक्षा मे केवल तीन टर्म्स (बारियें) के कार्य्य के बाद ही उत्तीर्ण होगई हैं। अब वह पेरिस मे फ्रांसीसी भाषा गरमियों की छुट्टियों मे सीख कर फिरलंडन मे बी०यस० सी०परीक्षा की तैय्यारी करेंगी।

——

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized

महिला समाज की वर्तमान दशा

ले०—कुमारी शकुन्तला देवी 'हिंदी प्रभाकर'

उस सर्व नियन्ता परमेश्वर का कोटिशः धन्यवाद है जिसकी कृपा कटाक्ष से वर्तमान स्त्री समाज अपनी पूर्व विस्तृत स्वतन्त्रता को पाने का प्रयत्न कर रहा है। परन्तु अभी भी उनके भाग्य चन्द्रोदय के होने में कुछ कलायें बाक़ी हैं। उनके दिव्य हार की मुकुलित कलियां अभी तक पूरी नहीं होने पाई हैं। क्योंकि ईश्वर की कृति नियमानुसार है, अनियमानुसार चलने से मनुष्य अपने लक्ष्य पर न पहुंच कर बीच में ही ठुकराता फिरता है। यही नियम स्त्रीसमाज का भी है। वर्तमान समय में जो स्त्री-समाज की दुर्दशा और सुदशा हो रही है उससे कौन सहृदय अपरिचित होगा? वर्तमान समय में यद्यपि लोगों का चित्त शिक्षा की ओर तो झुकने लगा है परन्तु आधुनिक काल में होने वाली अधूरी शिक्षा से जो जो हानियां हो रही हैं वे फिर पुरुषों के प्रफुल्लित हृदयों को मुर्झा देने वाली हैं। इनमें न तो लड़कियों का ही दोष है। और न पाठशालाओं का ही। दोष केवल माता पिता का है कि वे अब तक शिक्षा के गुप्त रहस्य को ठीक नहीं समझ सके हैं। वे नहीं जानते, कि शिक्षा किस चिड़िया का नाम है? फिर वे अपनी सन्तान को किस प्रकार उचित शिक्षा देकर सुमार्ग पर लाकर उनके भविष्य को सुयोग्य बना कर अपनी प्यारी पवित्र भारत भूमि को फिरसे स्वतन्त्रता की प्यारी गोद में क्रीड़ा करवा सकते हैं। परन्तु हन्त! मेरी इस तुच्छ लेखनी में वह शक्ति कहां जो महा कठोर स्त्रियों के हृदय मंदिर का टूटे फूटे घर को फिर से नन्दन कानन के समान आनन्दमय बना सकूं तथा कहां तक लिखते लिखते सामयिक मासिक पत्रों के पन्ने काले करती जाऊं और कब तक मैं आशा कर सकती हूँ कि इस निर्मल जलवाहिनी गंगा यमुना आदि नदियों से पुण्यशाली आर्यवर्त को कलङ्कित तथा अपमानित करने वाली कुलांगनाओं के हृदय वज्र में मैं छेद कर अपने लक्ष्य तक पहुंच अपने जीवन को सफल कर सकूंगी।

हे भारत की दिव्य ललनाओ! क्या तुम नहीं देख सकती हो कि वर्तमान समय में तुमको घोर निद्रा से जाग्रित करने के लिये एक नहीं, दो नहीं किंतु हज़ारों दैनिक साप्ताहिक मासिक पत्र कैसी मधुर और मनोहर लोरियां गा गाकर तुम को निद्रा से मुक्त करके होश में ला रहे हैं। परन्तु क्या उन का एक अक्षर भी तुम्हारे कर्ण कुहर में प्रवेश नहीं कर रहा है? यदि कर भी रहा है तो क्या है? प्रत्येक व्यक्ति का यही नियम देखा जाता है कि सोते हुए मनुष्य को तो जगा सकते हैं और अशिक्षित को भी शिक्षा दे सकते हैं। परन्तु जैसे जागते हुए भी सोने वालोंको कोई नहीं जगा सकता उसी प्रकार थोड़ी शिक्षा वाले को और अधिक उपदेश नहीं दे सकता।

इस बात का उदाहरण ढूंढ़ने के लिये तुमको दूर न जाना पड़ेगा और ना हीं अधिक ढूंढ़ भाल की ही आवश्यकता है। केवल एक बार आंख उठाकर गौर से देखना होगा कि तुम्हारे चारों ओर क्या हो रहा है?

भारत के चारों ओर क्यों हाहाकार का कोलाहल मच रहा है ? और देशों की समता से रहा देश क्यों आंख छिपा कर दास बन रहा है ? तुम्हारी संतान आज्ञा-कारिणी क्यों नहीं है ? तथा इससे अधिक और क्या शोक का विषय होगा कि तुम्हारी आंखों के आगे होने वाले अत्याचारों को भी तुम नहीं देख रहीं। यदि देखती भी हो तो उसके लिये तुम कुछ भी नहीं कर सकतीं क्योंकि जब तुमने अपने आप अपना नाम 'अबला' रखवा लिया तो प्राचीन रमणियों को भी कलङ्क लगा दिया। अपने पूर्व उच्च गौरव को मलियामेट ही कर लिया। अपनी मूर्खता के कारण अपने महत्त्व का सर्वनाश करके पुरुषों के चरणों की दासी बन कर भोग विलास की सामग्री बन कर सन्तान उत्पन्न करने की मशीन कहलाने लगीं। पुरुष स्त्रियों के जीते जी दो, दो तीन-तीन विवाह करवा सकते हैं परन्तु स्त्रियें विधवा और असहाय होने पर भी विवाह करवाने की अधिकारिणी नहीं तथा पाप है। चाहे एक रोटी के टुकड़े के लिये घर २ मांगती फिरें, परन्तु व्याह करने से दूर के संबन्धियों की भी नाक नीची होने का डर है, कहां तक गणना की जा सकती है। एक या दो हों तो गणना में आ भी सकते हैं परन्तु प्रति दिन के होने वाले भयङ्कर से भी भयङ्कर अत्याचारों को कोई कहां तक गिन सकता है ? मनुष्य की बुद्धि से भी परे है। क्योंकि प्रकृति की रचना ही ऐसी विचित्र है कि स्त्री-जाति भारत के लिए एक ऐसी है जो जन्मते ही माता पिता के लिए पत्थर के समान भारी है, ज्यों ज्यों बालिका की अवस्था उन्नति करती है त्यों त्यों माता पिता के ऊपर असहनीय बोझ होता जाता है। जब विवाहने के योग्य हो जाती है, तब तो जो भार आकर पड़ता है वह तो अकथनीय है। बहुत से माता पिता तो धनके लालचसे बूढ़ों से धन लेकर व्याह देते हैं। फिर उस के लिए भविष्य की पूर्वापर का तनिक भी विचार नहीं रहता। और बङ्गालादि प्रांतों में तो लड़की का पैदा हो जाना माता पिता का सर्वनाश ही हो जाना है, क्योंकि वहां दहेज की जो कुप्रथा है उससे कौन अपरि-चित है परन्तु ईश्वर भी न्यायकारी है वे लोग लड़कियों से डरते हैं और बङ्गाल में ही अधिक लड़कियें देखी जाती हैं। यह भी विचित्र ही बात है। तथा अब तनिक राज-पूताने की ओर भी दृष्टि डालिये। जिस समय राजपूताने में मुसलमानों का अधिक ज़ोर था। वे राजपूतों की कन्याओं को उठा कर ले जाया करते थे उस समय राजपूतों ने क्या भयंकर स्वरूप धारण किया था। सुनते हैं कि "जब किसी के घर में कोई कन्या उत्पन्न होती थी तो उसे और एक हाथ में तलवार लेकर बाज़ार में चले जाते थे और वहां जाकर कहते थे, कि किसी ने लड़की लेनी हो तो ले लो। यदि कोई स्वी-कार कर लेता था तो उसे दे देते थे। नहीं तो काट कर दो टुकड़े करके फें देते थे। कोई विरले ही किसी के घर में कोई कन्या बचती होगी। अस्तु !

तो क्या ऐसी ऐसी भयङ्कर रोमांचकारी घटनायें स्त्री-समाज के लिये क्या कुछ कम अपमानित हैं ? हा स्त्री-समाज ! तूने क्या पूर्व जन्म में पाप किये थे जिसके बदले तुझे स्त्रीत्व प्राप्त हुआ। तेरे से बढ़कर तो आज कल गाय भैंसों को आदर हैं। वे जिसको दी जाती हैं उसके लिये भविष्य का कुछ तो पूर्वापर सोच लिया जाता है परन्तु तेरे लिए इतना भी नहीं ? क्योंकि तुम निर्बल हो,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized

'अबोल हो तुममें न तो आध्यात्मिक शक्ति ही है और न शारीरिक ही जिस से तुम स्पष्ट कहने का साहस कर सको कि इस कुमार्ग पर चलने से मेरे दिव्य जीवन का भविष्य कैसा होगा? हा स्त्रीजाति! अपने प्यासे जीवन को आँसुओं के जल से ही तृप्त कर तेरा और कोई भी सहायक न होगा। क्यों कि प्रतिदिन के प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में स्त्रियों की दुर्दशा पढ़ पढ़ कर तथा प्रत्यक्ष देखकर कठोर हृदय भी मोम की भांति पिघल जाते हैं परन्तु समझ में नहीं आता कि जिन घरों की लड़कियों और स्त्रियों पर ये अत्याचार हो रहे हैं उनकी क्या दशा होती होगी? जो माता पिता अपनी फूल सी लाड़ली लड़की को क़बर में पैर लटकाने वाले महावृद्ध पुरुष के हाथ सौंप कर अपने जीवन को कृतार्थ समझते हैं क्या उन से बढ़कर कोई चांडाल हो सकता है?

मुझे इस बात की आवश्यकता नहीं कि मैं बारम्बार पूर्व नारियों के जीवनचरित्रों को तुम्हें स्मरण करवाती रहूँ। उदाहरण समझाने के लिये एक दो बार ही कह देना अल हुआ करता है।

'किं बहुना' अर्थात् बहुत कहने से क्या है जब तुम स्वयम् अपनी ओर देखकर सुधार करने का प्रयत्न करोगी तो तुम्हें पुरुष बाधा नहीं डालेंगे, बल्कि सहायता देंगे। क्योंकि जब तुम उनको दिखा दोगी कि घर ही स्वर्ग है अन्यथा स्वर्ग मिथ्या है तो वे तुम पर अत्यन्त प्रसन्न होंगे और तुम्हारे कार्यों में सहायता देंगे। तुम्हें प्यारी स्वतन्त्रता देवी के प्रत्यक्ष दर्शन हो जाएँगे। वह अपनी मधुर वीणा से तुम्हारे कर्ण कुहरों में मनमोहक गान आलाप देगी। भारत ललनाएं देवियां बनकर पूजनीय बन जायँगी।

गृह-प्रबन्ध।

बोलते समय कई व्यक्तियों की जुबान लड़खड़ा जाती है और वह अटक अटक कर बोलते हैं इसी को अंग्रेजी में Stammering कहते हैं। एक अंग्रेज़ी महाशय का तजरुबा है कि इसका एक बड़ा सरल इलाज है परन्तु उसे लगातार जारी रखना पड़ता है उनका कथन है कि वह बहुत बुरी तरह से लड़खड़ा कर बोलते थे परन्तु इस उपाय से अब उन्हें बिलकुल आराम है। उपाय यह है:—"मैं प्रतिदिन बोल २ कर ज़ोर से पढ़ता था, कभी २ मैं अकेला होता था परन्तु बहुधा दूसरों को सुना कर पढ़ा करता था मैं शनैः २ और साफ़ २ पढ़ता था। एक मास में मुझे बड़ा लाभ हुआ और अब तीन मास पीछे मेरा यह रोग सर्वथा जाता रहा है।

—*—

ज्यों २ मनुष्य की आयु बढ़ती जाती है उसकी काम करनेकी शक्ति कम होतीजाती है परन्तु बहुत कम व्यक्ति इस बातको ध्यानमें रखते हैं और वह ५० वर्ष की आयु में भी उतना ही काम करना चाहते हैं जितना कि वह २० वर्ष की अवस्था में करते थे। यह उनकी भूल है। आयु के साथ २ हमारा शरीर अधिक आराम चाहता है। अतः आवश्यक कार्य को छोड़ कर जिसकी एक

निश्चित माता करने के लिये हम बाधित हैं। हमें अन्य कार्यों में कुछ कमी अवश्य करनी चाहिये अन्यथा वृद्धावस्था हमारे लिए नरककुण्ड बन जायगी।

—#—

आजकल बड़े २ नगरों में पीने के लिए जो नलों का पानी मिलता है, कूप के जल से इसे अधिक पवित्र बतलाया जाता है परन्तु यह बात सर्वथा ठीक नहीं। कभी २ नल का पानी कुए के जल जैसा ही, वरन उससे बढ़कर अशुद्ध और अपवित्र हो सक्ता है। इस अपवित्रता का कारण रोगोत्पादक छोटे २ कीटाणुओं का होना है। यह जांचने का कि कोई जल विशेष शुद्ध है अथवा नहीं एक बड़ा सरल उपाय है। बहुत साफ़ खांड अथवा बूरेकी दो-तीन चुटकी कांचके गिलास में पानी भर कर घोल दो और उसे ढांप कर गरम कमरे में रात भर पड़ा रहने दो। यदि प्रातः देखने पर जल साफ़ का साफ़ बना रहे तो यह पीने योग्य है परन्तु यदि यह धुंधला हो जाय तो अपवित्र है

—#—

बिच्छू का इलाज

जामुन का सिरका क़रीब ४ साल का पुराना हो, जिस जगह बिच्छू ने काटा हो, ठीक उसी जगह, रुई या कपड़े का फाया जामुन के सिरके में गीला कर रख दिया जाय। क़रीब दो-दो मिनट में उस पर थोड़ा थोड़ा सिरका डाला जाय। १५ मिनट में बिच्छू का विष उतर जायगा। डङ्क मारने की जगह पर कुछ दर्द रहेगा। फिर नमक डालकर गरम पानी करे, और जहां तक बिच्छू चढ़ गया हो, वहां तक गरम पानी से सहते २ दो बार धो डाले। बाद में डङ्क मारे की जगह पर गुलाब के इत्र का फाया रखदे। ईश्वर की कृपा से शीघ्र आराम होगा।

"तो क्या यह सब स्वप्न ही था?"

ले०-सत्यवती मल्लिक श्रीनगर

मैं सेकेंड हाई स्कूल लाहौर में पढ़ा करती थी, अपनी सहपाठियों से किसी प्रकार से भी कम नहीं थी, विशेषतया फैशन में तो सदा अग्रसर ही रहा करती थी।

मेरे पिता जी की आर्थिक अवस्था बहुत अच्छी थी, तिसपर मैं उनकी एकलौती पुत्री थी! अतः वह सर्वथा चाहते थे कि मैं सदा प्रसन्न रहूं।

वह दिल्ली में बैरिस्टर हैं दूसरे तीसरे महीने मुझे मिलने आया करते, और अवश्य ही रेशमी बढ़िया विलायती करेब की साड़ियां तथा जालीदार ब्लाऊज़ नये ढंग के जाबिरा विलायती बूट आदि वस्तुएं साथ लाया करते। किंतु मैं देखते ही कहने लग पड़ती, पिता जी यह कैसी भद्दी सी साड़ी है, अमुक ब्लाऊज़ कैसे मोटे कपड़े का है भला मैं इनका बोझ कैसे सहार सकती हूं। अमुक बूटकी तो एड़ी ऊंची नहीं! मेरा ज़रा भी गम्भीर होते देख पिता जी हंसकर कहते

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

बेटी ! मैं तो तुम्हें प्रसन्न ही देखना चाहता हूं अपने मन पसन्द की वस्तुएं ही ले लिया करो। अस्तु।

"मैं अब के गर्मी की छुट्टियों में घर आऊं पिता जी ने यह पत्र लिखा था, मैं भी जब से होश सम्हाली घर पर नहीं गई थी, गर्मी के दीर्घावकाश में भी अपनी सिस्टर्स के साथ किसी पहाड़ पर चली जाया करती थी अब के मुझे भी घर जाने का शौक आगया तो मैं पिता जी के कथनानुसार यथासमय घर पहुंच गई।

घर में मेरी एक बूढ़ी दादी के अतिरिक्त और कोई न था। क्योंकि मेरी माता मुझे तीन वर्ष की छोड़ परलोक सिधार गई थीं। मेरी दादी मुझे बहुत प्यार करती थी, लेकिन उसे मेरा वेशभूषा अखरता था, वह स्वयं ही मोटे और भद्दे वस्त्र पहनती और मुझे कहती- "बेटी ! इतने बारीक वस्त्र धारण करनेसे क्या लाभ कि जिनसे सारा बदन दीखे और कुमारी कन्याओं को इतना केशविन्यास भी नहीं करना चाहिये। रह २ सुइयां लगाकर यह बाल क्यों खराब करती हो ? सादा जीवन होना चाहिये।" मैं उसकी ऐसी निकम्मी बातें सुनकर झुंझला उठती और कहती कि—"मैं ऐसा गंवारपना नहीं पसन्द करती !"

एक बार का ज़िकर है कि मैं दोपहर के समय गाढ़ी नींद में सो रही थी कि मुझे किसी आवाज ने कानों में पड़कर जगादिया। ऐसा मालूम पड़ा जैसे कोई वीणा बजा रहा हो। मैंने चारों ओर उठकर देखा तो गाने बजाने का कोई सामान न था। किंतु मेरी दादी मां एक मशीन सी सामने रख कर चलाती थी और उसके चक्र फिरने से जो घींघीं सा स्वर निकलता था उसी ने मुझे चौंका दिया था। मैंने आश्चर्य हो पूंछा-"मां! यह कौन सी मशीन है ? मैंने तो आगे कभी नहीं देखी ?" उसने उत्तर दिया—"बेटी ! मैं तो मशीन वशीन जानती नहीं यह तो मेरा प्यारा सदा हमारे दुःख में भी सहायता देने वाला चर्ख़ा है। रुई लेकर इस पर कातती हूं और इससे जो सूत तैयार होता है उसके स्वदेशी वस्त्र मैं धारण करती हूं तेरे पिता को भी बचपन में यही पहराती थी, विलायत से आने के बाद ही वह विदेशी अपवित्र वस्त्र पहिनने लग पड़े हैं। क्यों पुत्री तुम भी सीखोगी ?" जाने दो मां मेरे से ऐसे भारी व भद्दे काम नहीं हो सकते।" ऐसा कहते हुये मैं जल्दी से पिता जी के कमरे में गई और कहा कि—"चलो आज बड़ा अच्छा दिन है रोशनआरा बाग में चलें।" पिताजी ने ड्राईवर को आज्ञा दी कि मोटर तैयार करे बस देर क्या थी, मैं भी अपनी फाइना क़रेब की बारीक साड़ी तथा फैन्सी जाकट इत्यादि पहिन कर चली आई।

हम रोशनारा पहुंचे वहां तो कुछ ठण्डी हवा चल रही थी हरी घास देख कर मैं ज़रा उस पर बैठी नौकर ने रेशमी तकिया लाकर देदिया तो मैं उसके सहारे ज़रा लेट गई हवा के धीमे २ झोकों ने मेरी आखों को शीतलता पहुंचा कर बन्द कर दिया।

इतने में मुझे ऐसा मालूम हुआ कि बहुत से हिन्दू, मुसलमान, सिख, सब आदमी एक स्थान पर बैठे हैं उनके मुख बहुत ही उत्साहित तथा प्रसन्न दिखाई पड़ते थे उनके हृदय में किसी नवीन आशा का संचार हुआ प्रतीत होता था। ऐसा प्रगट होता था मानों आज वह एक हृदय होकर, अपने कष्टनिवारण के लिये, अपनी दासतां (परतंत्रता) की ज़ंजीरों को तोड़ने के लिये, ईश्वर से प्रार्थना कर रहे

हो। इतने में एक १२ वर्ष की आयु का बड़ा खूबसूरत शकल का लड़का, जिस के होनहार चेहरे से एक विचित्र प्रकार की आभा झलक रही थी उठा! और स्टेज पर कुर्सी के ऊपर जाकर बैठा। सब मनुष्यों की मौन निद्रा को भंग करने के लिये वह कुछ कहने को ही था, कि ठां! की आवाज़ के साथ ही गोली उसके मस्तिष्क को पार कर गई। वह अधखिला फूल वहीं धड़ाम से गिर पड़ा। लोग दौड़ कर उठे कि देखें किस निर्दयी ने प्यारे मदनमोहन के साथ यह भयानक तथा पाशविक अत्याचार किया है।

परन्तु गोलियों की बौछार ने उन्हें एक कदम आगे न बढ़ने दिया, देखते २ क्षण भर में ऐसा भीषण हत्याकांड हो उठा कि खून नदियां बह उठीं, कई उन में नवविवाहित थे, कई माता पिता के एकमात्र आशा दीपक थे, कई सुकुमारी बहनों के एक मात्रभाई थे! किन्तु उस अत्याचारी अंग्रेज़ को ज़रा भी दया न आई वह तो हंस २ कर गोलियां चला रहा था।

दृश्य पलटा तो देखा कि मार्शल ला जारी होगया है, हज़ारों बहू बेटियों की भले घरों की स्त्रियों की इज्जत ख़ाक में मिलाई जारही है। उनके मुंह पर गोरों को थूकते देखा! बड़े २ धनाढ्यों को पेट के बल रेंगते देखा! मशीनगनें जगह २ चलीं, कालिज के विद्यार्थियों पर तो सरकार की विशेष कृपादृष्टि थी। दो बार दिन में उन्हें कड़ी धूप में खड़ा किया जाता और बेतें लगाये जाते! कइयों को सनस्ट्रोक होगया लेकिन कौन सुनता था। शाम को आठ बजे के बाद गोली चलती थी, दो पुरुष एक साथ चलें तो गोली! माता से पुत्र को, बहिन से भाई को, स्त्री को पति से दूर होते देखा. देश में हाहाकार मच गया।

मार खाई, तो होश आई। क्या किया जाय? इन कठोर शासनकर्त्ताओं से बचने का या बदला लेने का, अपने स्वत्वों को पहिचान कर लेने का क्या उपाय हो सकता है? यही जटिल प्रश्न था जो कि नेताओं को उकसाता था।

ज़खमी पंजाब की अवस्था को देख कर पूज्य गांधी जी ने मरहम याद दिलवाई। असहयोग की मरहम ने अच्छा प्रभाव डाला। कौलिज के विद्यार्थियों ने कौलिज छोड़े और स्वयंसेवक बन देशसेवा का व्रत लिया, वकीलों ने लाखों हज़ारों, की आय पर लात मार कर देशसेवा में काम लिया।

स्थान २ पर व्याख्यान सुनाई देने लग पड़ेः–कि विदेशी वस्त्रोंको त्यागो इन्होंने हमें रसातल पहुंचा दिया है, विदेशी वस्तुओंने ही हमें दास बना रखा है, अब तक अरबों करोड़ों रुपये विदेश जाचुके हैं। अब संभलो और मातृभूमि के चरणों में शीश झुकाकर शुद्ध हाथ से बने वस्त्र पहनो। चर्खे को अपनाओ यही भारत की लाज बचायेगा।

स्वदेशी का इतना प्रचार हुआ कि उन बहुमूल्य बारीक रेशमी तथा सूती जालीदार वस्त्रों के बदले प्रत्येक आर्य्यरमणी, तथा पुरुष, पवित्र खादी के वेश में प्राचीन देवी देवताओं की भांति प्रतीत होने लगे, प्रत्येक युवक व वृद्ध स्वयंसेवक बने।

स्त्रियों तथा कन्याओं में भी उत्साह आया वह भी गले में झोलियां डाल कर कांग्रेस के लिये धन एकत्रित करतीं, विदेशी का प्रतिकार करतीं हुई जुलूस निकालतीं, लोग फूल वरसाते। ऐसा प्रतीत होता, मानों आकाश से देवियां भारत की लाज रखने उतरी हैं।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

मेरी बूढ़ी दादियां जो मशीन से काता करती थीं, और कहती थीं कि यह दुःख में सहायता करने वाला चर्खा है सचमुच वही दुःखी भारतियों का उद्धार करने वाला बन गया। घर २ में से 'सुर्दशन चक्र' की आवाज़ गूंज उठी, जो कि मान्चेस्टर और लंकाशायर तक भी पहुँची। और वहां भी हलचल मची।

इधर भी विदेशी का बायकाट ज़ोर शोर से हो रहा था, स्वयंसेवक लोग विदेशी की दुकानों पर डटगये। "नहीं बेचने देंगे" यही सुनने में आता था। (मानचेस्टर को काफ़ी धक्का पहुंचा जिस से देश में फिर पकड़ा पकड़ी शुरू हुई) बेचारों को मार भी पड़ती लेकिन न हटते। बड़ी प्रसन्नता से (जेल) स्वराज्य मन्दिर में जाते।

बहनें भ्राताओं को, स्त्रियें पतियों को, मातायें पुत्रोंको वीरवेश तथा तिलक इत्यादि से सुसज्जित करके भेजतीं।

आर्य्यवीर भी हँसते हुये कहते:—
" तलाख़ फ़जूल है कांटों के फूल के बदले।
न लें बहिश्त भी होमरूल के बदले "॥

जेल भर गए। वीरों से सरकार को भी कुछ थरथराहट हुई बड़े २ नेता भी 'स्वराज्य मन्दिर' में पहुंच गये।

ओ हो! मैं यह कहना तो भूल ही गई कि जलियान वाला दृश्य देखते ही मेरे हृदय पर भी आघात पहुंचा। मेरी भी काया पलटी! मैंने लात मारी अपनी विदेशी साड़ियों को तथा बूटों पर।

मैंने बहुमूल्य विदेशी वस्त्रों से जो बक्स भरे थे क्षण भर में उन पर तेल डालकर उन की होली जलाई। और निश्चित हुई!

मुझे अब सख़्त गर्मी के दिनों में मोटी खद्दर की धोती तथा पैरों में सीधी देशी जूती पहरे हुये, प्रोशैसन में यह गीत गाते जाना कि:—

"मुण्डे साडे बम दे गोले,
झोली पावां तां दिल दया डोले।
हुण लैणा स्वराज्य चर्ख़ा गांधी दा॥१॥

बहुत हलकी प्रतीत होती थी। मैंने ठान लिया कि मेरा सारा जीवन ही अब देश के अर्पण होगा।

स्वयम्सेविका बनी घर २ में से कांग्रेस के लिये, तिलक-स्वराज्य-फ़ण्ड के लिये, धन एकत्रित करती। लोगों को स्वदेशी के लिये बाधित करती। शाम सवेरे मां से चर्खा कातना सीखती।

अहा! अब उसका स्वर कैसा मधुर प्रतीत होता था।

पिता जी को भी बैरिस्टरी छोड़ने पर बाधित किया, उन्होंने भी देश सेवा का व्रत लिया। मुझे अब घर ही स्वर्गधाम प्रतीत होने लगा। देश के लिये प्राण न्यौछावर करने के दिन की मैं प्रतीक्षा करती कि कब सौभाग्य प्राप्त हो और मैं प्यारी मातृभूमि पर बलिदान हो जाऊं।

एक बार पिता जी समाचारपत्र पढ़ रहे थे कि सहसा उनके मुंह से एक आह निकली मैंने उत्सुकता से पूछा क्या हुआ है? शीघ्र कहिये?

उन्होंने गम्भीर भाव से कहा कि गांधी जी भी जेल चले गए। मैं चौंक उठी! बदन थर्रा उठा।

देखा तो मैं रोशनआरा में तकिये के सहारे लेटी हुई हूँ पिता जी ने हंसकर कहा तुम तो खूब सोई हो मैंने उनकी बात

की उत्तर न देकर अपनी विलायती साड़ी देखी तो चीख कर कहा—'सो क्या यह सब स्वप्न ही था।"

पिता जी ने अचम्भित होकर पूछा तो मैंने सब कह सुनाया। वह कहने लगे तुमने स्वप्न ही देखा है। मैं भी बैरिस्टरी करता हूँ। कालिज के विद्यार्थी कालिज में हैं। किसी को स्वदेशी से प्रेम नहीं है।

यद्यपि अब भी मैं विलायती वेश में नहीं हूँ सब कुछ वही है किन्तु जब कभी भी उस दिन की याद पड़ती है तो स्वप्न का सारा दृश्य आंखों के सम्मुख हो जाता है और दिल पर एक चोट सी लगती है तथा एक सर्द आह मेरे हृदय का कपा जाती है परन्तु न जाने क्योंकर मैं चाहती हुई भी विदेशी वस्तुओं का परित्याग नहीं कर सकती।

मेरी बहिन।

(ले०— 'श्री चन्द')

मुझे उससे घृणा तो थी ही नहीं पर प्रेम भी न था। मुझे क्या पता था कि पतितजीवन दूसरों की सहानुभूति को भी गँवा देता है और दूसरों के प्रेम से भी वञ्चित रहता है पर आज मुझे स्वयम् अनुभव होगया। जब मैं स्कूल जाता था तब बलात् मेरी आंखें उस कोठे पर पड़ती थी और सहसा आवेश आता था पर यह आवेश क्षणिक था क्योंकि मैं सोचता था मैं आवेश किस पर दिखाता हूं, दैव पर, समाज पर, या मानवताहीन उस माता पिता पर जिन के कारण एक व्यक्ति का नहीं अनेक अबलाओं का पतन आंखों दिखाई पड़ता है। यह किस का दोष है? का प्रश्न चित्त को बेचैन किये देता था। मुझे कर्तव्य सूझ न पड़ता था क्योंकि अब सारा आवेश अपने ऊपर ही था। मेरे मुख से शब्द न निकलता था पर हृदय में तो हरदम गूंजता ही रहता था। व्यक्तियों से कुटुम्ब तथा कुटुम्ब से समाज बनता है। फिर क्या मैं समाज में नहीं हूँ? मैं इतना बड़ा होगया पर किस के लिये क्या किया? सचमुच समाज के लिये मेरे जैसे लड़के भारवत हैं। फिर मैं क्योंकर बचा रह सकता हूँ" इत्यादि शनैः शनैः आवेश कर्तव्य के रूप में परिणत होता जाता था। मैं किसी व्यक्ति से सहानुभूति नहीं रखना चाहता था और समस्त पतितसमाज की समस्या सुलझाना चाहता था तब भी एक आन्तरिक प्रेरणा होती थी जिसके कारण मुझे सब से पहिले उसी देवी की याद आ जाती थी। मैं सोचता था कि कभी ऊपर जाऊँ और उसकी राम कहानी सुनूं फिर आगे देखा जावेगा। पर यह काम इतना सरल नहीं था जितना मैंने सोचा था। कई बार सोचा कि आज उसके पास अवश्य पहुंचूंगा पर दस क़दम पीछे से ही पैर बंध से जाते थे। सारे हौसले टूट जाते थे। दशा विचित्र थी। सलाह लूं तो किस से लूं यह एक विकट प्रश्न था। ढाढ़स न बन्धता था कि माता पिता से इस विषय में पूछ ताछ करूं या भाई बन्धुओं से सहानुभूति की आशा रक्खूं। माता पिता से निराश-हृदय अभिन्न-हृदय की खोज में रहता है। जिसके

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

सहारे मनुष्य पतित से पतित तथा महान् से महान् हो जाता है। उस समय मेरी आंसुओं का पोंछने वाला "किरण" याद आया बस, आशा थी तो उसी की। उसी पर कर्तव्य की इतिश्री छोड़ चल दिया और किरण के घर पहुंच गया। जो बातें किसी से नहीं कह सकते उसको सुनने के लिये मित्र ही होते हैं। हृदय को खोल सारी बात बताने पर ही मित्रों को शान्ति होती है। उत्सुक हृदय की चाह तभी पूरी होती है। अतएव मैंने भी सारी बात किरण को सुनाई पहले तो किरण ने समझा कि मखौल है और बोल उठा 'क्या किसी मनचले का साथ मिलगया है ? मैंने उसकी बातको गम्भीरता से काटते हुये कहा "यार ! मख़ौल का भी तो कोई समय होता है" मेरे कथन में रोष था अतएव किरण ने सहसा मेरी बात को मान लिया। और निश्चय कया कि कल शाम के १२ बजे दोनों इकट्ठे चलकर उसकी रामकहानी सुनेंगे। और यथाशक्ति उसको अवश्य बचाने की चेष्टा करेंगे। इसके बाद कितनी देर हम दोनों उसी विषय की बात चीत करते रहे फिर मैं लौट गया।

(२)

गर्मी के दिन थे। भगवान भास्कर अपने प्रखर किरणों से धरणी तपा रहे थे। मानो उन्होंने भी मृत्यलोक के निर्दयी जनसमाज अबलाओं पर अत्याचार करना सीख लिया था। गर्मी के मध्यान्हकाल की भयंकरता प्रसिद्ध है, पर बड़े नगरों में तो तागों और बग्गियों की खड़खड़ाहट, ट्रामवे की घंटियों और मोटरों की आवाजों से नीरवता तथा भयंकरता कहां ? वहां तो संसार का भीषण संग्राम सर्वदा दिखाई पड़ता है। इसी उड़ते धूलों के बीच में हम दोनों व्यक्ति पैदल ही जल्दी २ जा रहे थे। आज हम एक दूसरे के सहारे चलते जाते थे। क्रमशः वह स्थान भी आ गया जिसे देखने को मैं सर्वदा सतृष्ण रहता था। कोठे के नीचे दो मिनट ठहर मैं आगे बढ़ा। मेरा किरण भीमेरे ही साथ था जैसे २ आगे बढ़ते जाते थे गति में शिथिलता आती जाती थी। तथापि किसी तरह कमरे से प्रवेश किया हमारे पैरों की आहट सुनते ही कमरे में रहने वाले सावधान हो गये थे। हम दोनों जाकर खड़े हो एक दूसरे की तरफ देखते थे जो बातें सोची थीं क्रमशः भूली चली जाती थीं उन्हें याद ही कर रहा था कि एक आवाज़ कानों में पड़ी "आइये बैठिये"। मेरा सिर लज्जा से झुक गया। किरण ने भी आंखें नीची कर अपनी आत्म-ग्लानिका परिचय दिया पर मैंने ढाढस रखा और उस देवी के बताये आसन पर आ विराजा। हमारे इन भावों को देख वह देवी भी संभल गई और हम एकटक एक दूसरे को देखने लगे। जो आत्मा कितने ही आये गये लोगों की परवा नहीं करती उसकी आंखों से सहसा अश्रुस्रोत का बहना मुझे आश्चर्य प्रतीत हुआ। इस का क्या कारण था कि वह मुझे देखकर रोने लगी यह बताना कठिन है। मेरा ढाढस का बांध टूटा जान मेरा किरण धीरतापूर्वक कहने लगा। बहन ! हमारे आने से यद्यपि आपको कष्ट हुआ है यह मुझे पता लग गया और आप शायद हमारे आने का अभिप्राय समझ गई होंगी। मैं नहीं समझ सका यह अश्रुस्रोत का प्रवाह क्यों उदित हुआ।

"यह मैं नहीं बता सकती पर इस का कारण आप ही लोग हैं।"

"हां, सम्भव है ऐसा ही हो। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मन अज्ञातावस्था में भी अपना काम कर ही देता है। अच्छा, मैं

आपको अपने आने का कारण बताना चाहता हूँ"।

"कृपया शीघ्र बतलाइये, मैं अत्यन्त उत्सुक हूँ।

"सुनिये, हम केवल आपकी रामकहानी सुनना चाहते हैं। कब से आपने यहां रहना प्रारम्भ किया और क्यों? यदि कोई कष्ट न हो तो यह रामकहानी सुनाने की कृपा करोगी?

यह सुनते ही आंसुओं की धारा बड़े वेग से बहने लगी और उस देवी का मुख गीला होगया। वह कई बार कुछ कहना चाहती थी पर बलात् उसका गला रुन्ध जाता था। मैं भी इस सारे अभिनय को टकटकी लगाकर देख रहा था। मन में सोचता था कि कहां तो कहानी सुनने आये थे यहाँ तो कोई और ही मामला है। फिर मैंने उस देवी से कहा "बहन! चुप रहो रोने धोने से क्या लाभ।" मैं समझता हूं कि हमारे आने से आप को बड़ा कष्ट हुआ। मेरी बात को उस देवी ने काटते हुए कहा "नहीं, नहीं, आपके आने से प्रसन्नता है कष्ट नहीं। मेरे पास प्रतिदिन कितने ही आदमी आते हैं पर आज तक आप लोगों जैसा कोई न मिला जो मुझ जैसी पतित स्त्री को भी बहन समझे इतना कहते २ वह फिर रोने लगी। समस्या बड़ी बिकट थी मुझे क्या पता था कि मानव-चरित्र कितना ही पतित हो जावे पर उसकी मनुष्यता में अन्तर नहीं आता। दृष्टान्त से कठिन से कठिन प्रश्नों का भी समाधान सरलतापूर्वक हो जाता है अतएव मुझे उक्त संकल्प पर विश्वास करना ही पड़ा। मैं इस प्रकार के विचारतरङ्गों में गोता लगा रहा था इतने में किरण उस देवी को शान्त कर रहा था। अब उसने अपनी जीवनचर्चा आरम्भ करने से पहले यह कहा—"पतित जीवन की कथा सुनने से क्या लाभ है। मेरा जीवन अनेक प्रकार के पापों से पूर्ण है। पर क्या करूं पेट सब कुछ कराता है। बताओ मैं क्या सुनाऊँ मैंने कुलीनता छोड़ी, अपना तथा कितनों का पतन किया उन्हें इन्द्रियों का गुलाम कर दिया? आशय यह है कि अपना पराया सब कुछ खोया। बोली क्या अब भी मेरे जीवन के विषय में पूछना चाहते हो"?। यह कह कर चुप होगई। मैंने धीरतापूर्वक कहा "बहन अब दुःख से काम न चलेगा। हम तो आपकी जीवनघटना सुनने आये हैं। हमारे लिये आप की यही कृपा पर्याप्त है।" यह सुनते ही उसने एक लम्बी सांस ली और अपनी रामकहानी इस प्रकार कहने लगी।

(३)

मेरा जन्म अग्रवाल वैश्यकुल में हुआ था मैं बहुत छोटी थी मुझे बचपन का हाल पता नहीं। पर समझदार होकर मैंने जो कुछ बातें सुनीं वे इस प्रकार हैं। मेरे पिता बड़े भारी सेठ थे। मेरे जन्म हुए ५ ही वर्ष हुए थे कि मेरे विवाह की बातचीत होने लगी हमारे देश में छोटी से छोटी अवस्था में व्याह अच्छा माना जाता है। उसी प्रथा के अनुसार मेरा विवाह उसी वर्ष आषाढ़ में होगया। मुझ से जो २ विधियें करवाई गईं वे हाथ पकड़ कर। मुझे आज भी पता नहीं कि विवाह में कौन २ सी विधियें होती हैं। हां, मुझे इतना याद तो अवश्य है जब मैं अकेली केवल एक वृद्धा के साथ पालकी में चढ़ाई गई थी और मां का वियोग असह्य जान मैं चिल्ला कर बड़ी दूरतक रोती चली गयी थी। मुझे पता नहीं था कि मां मुझे कहाँ भेज रही है। जब मेरे मांग में सिन्दूर डाल और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बढ़िया साड़ी तथा चूड़ियें पहनाई गई थीं तब तो मुझे खुशी थी पर जब मुझे निकाल दिया गया तब मुझे दुःख बड़ा हुआ। पर मुझे यही पता था कि कुछ दिन के लिये मां ने कहीं भेजा है। मैं एक दुबले पतले ८ साल के लड़के के साथ ब्याही गई थी। घर का धनी जान मेरे माता पिता ने भी सन्तोष कर लिया था। पर हाय! साल भर भी न बीता था कि मेरा जीवनसंगी चल बसा। फिर जीवनसंगिनी का जीवन कैसा? उसी दिन मेरे हाथों की चूड़ी फोड़ी गई थीं। पर मैं सच कहती हूँ कि मुझे पता भी नहीं था यह क्यों इतना आडम्बर रचा गया मुझे क्या पता था कि मेरे सौभाग्य की चूड़ियें भी फूट गई हैं। अस्तु। मैं ७ ही वर्ष की थी पर मुझे हर जगह दुरदुराया जाता था।

प्रसन्नता और दुरदुराने को तो पशु भी समझ लेता है और चेष्टाओं से वेदना प्रकट कर देता है पर मुझे तो बोलना आता था और रोना भी। पर बोलती तो क्या बोलती रोने लगती थी। पर मेरे रोने की परवा किस को थी। धीरे २ उसी घर में ६ साल बीत गये और उसी प्रकार रो धो कर दिन काटने लगी। अब मुझे पता लगा कि मेरा जीवन तो जीवनसङ्गी उस पतले दुबले लड़के के साथ ही समाप्त हो गया अतएव मैं दुरदुराई जाती हूँ। न तो मेरे कोप की किसी को परवा नाही मेरे खाने की। यह बातें जब कोई दूसरी लड़की सुनाती तो मेरा हृदय कांप उठता था और यौवनावस्था की सब उमंगें पानी के झाग की तरह उद्रव स्थान में ही लीन हो जाती थीं। अस्तु। मैंने कई दिनों तक कुछ न खाया बस एक कोने में पड़े २ आंसुओं से आंचल भिगोया करती थी। सहसा मेरे बुड्ढे ससुर ने मेरी ओर देखकर गिड़गिड़ाते हुए कहा "बाप तो बड़ा सेठ है वहां क्यों नहीं चली जाती! क्यों यहां धरना दिये पड़ी है?" इस शब्द ने विष से भी अधिक मुझपर असर किया। विष खाकर मर जाना सरल है पर प्रतिदिन की मर्मभेदिनी भर्त्सना भली नहीं। यह हृदय में छेद कर देती है जिसका भरना कभी सम्भव नहीं। मैंने भी कह दिया भेज क्यों नहीं देते? काहे को यहां रख छोड़ा है?" यह सुनते ही बुड्ढे ने कई कठोर शब्द कहते हुए अपने मुनीम की ओर देखकर कहा "मुनीम जी! आज इस छोकड़ी को इस के घर छोड़ आना। बड़े सेठ की लड़की ठहरी, हम तो बुड्ढे हैं हमारे घर में इस को कैसा अच्छा लगे। जब तक छोटी थी पाला पोसा बड़ा किया। अब तो यह औरत हो गई है। इस को हमारी परवा ही क्या है"। मुनीम ने भी हां में हां मिला इस प्रस्ताव को सहर्ष स्वीकार किया और दूसरे दिन जाने की तैयारी हो गई। साधारण थोड़े से कपड़े मुझे दे दिये गये और बैहल मंगवाई गई और उसमें हम दोनों बैठकर घर को चल दिये। मैं बताना नहीं चाहती कि उसने मेरे साथ किस बुरी तरह का व्यवहार किया और बैहल के भीतर मेरे सतीत्व को नष्ट करने के लिये क्या २ यत्न किये। खैर, जो कुछ भी किया पर उसका फल नहीं निकला उसका परिणाम यह हुआ कि वह मुझे स्टेशन पर ही छोड़ इधर उधर चला गया मैं स्टेशन पर खड़ी इधर उधर उस नर पिशाच को ढूंढ़ती रही, पर उस का कोई फल नहीं निकला। मुझे एक मुसलमान टिकटकलेक्टर ने देखा और कहा कि "आओ तुमको घर पहुंचवा दूँगा" मैं सरलभाव से उसके पीछे होली। पर मुझे क्या पता था कि रक्षक भी भक्षक बन सकते हैं। मेरे सतीत्व का वहीं नाश हुआ। मेरा जीवन मुझे ही निस्सार

मालूम होने लगा। अतएव मैंने अपने को देवी के चरणों में छोड़ चुपचाप बैठी रही। उस दुष्ट राक्षस ने मुझे एक मुल्ला के सुपुर्द किया और उसने मुझे मुसलमान बना लिया। बस लम्बी बात कहने से क्या तभी से मेरा जीवन इस रूप में बदल गया जो आप लोगों के सन्मुख है। ईश्वर करे तो निस्तार संभव है" यह कह कर रोने लगी।

यह कहानी समाप्त भी न होने पाई थी कि मेरे मन में तरह २ के भाव उत्पन्न हो रहे थे। मुझे अपनी बहिन की याद थी उस का विवाह भी छोटी उम्र में कर दिया गया था। मुझे अब उसके पिता का नाम भी पूछने में लज्जा आ रही है। सुधारक लज्जा से नत गया यही आश्चर्य्य है। तथापि धीरतापूर्वक मैंने उस देवी को चुप करते हुये उसके पिता का नाम पूछा उसने सिसकते स्वर में कहा "धन्नूमल"।

मैं चौंक उठा और मेरा देह रोमांचित हो उठा। मैंने और कुछ पूछना चाहा पर वह नहीं बतला सकी। फिर मैंने उस देवी को आश्वासन देते हुये कहा "बहिन! तू तो मुझे सगी बहन मालूम होती है। चाहे जो कुछ भी हो, हम तेरे उद्धार का उपाय सोचेंगे। कल आऊंगा, ईश्वर भला ही करेंगे।" यह कह मैं और किरण चल दिये। और घर जाकर अपनी बहिन के ससुर का नाम पूछ लिया और सोचा कि पूछूंगा यह तो उसे क्यों न याद होगा?

अगले दिन मैं और किरण फिर वहीं पहुँचे जाते ही मैंने उससे उसके ससुर का नाम पूछा उसने दबी आवाज़ से कहा—"श्याम दास".....मैं फूट २ कर रोने लगा। यह दृश्य देख वह चकित रह गई। मैं बेहोश हो गया था। इतने में किरण ने उसको सारी बातें बताईं। उसे भी भाई का मिलन सुन असीम आनन्द हुआ। दोनों भाई बहिनों ने एक दूसरे को पकड़ कर रोया। आज मेरी बहन मेरे घर में है और उसका जीवन पवित्र होता जाता है। इस बात के लिये मुझ से सब रुष्ट हैं। पर मैं कर्तव्य के आगे सिर झुकाना कर्तव्य समझता हूँ और लोकोपवाद की भी परवा नहीं करता। इसके लिये मुझे घर से क्यों न जाना पड़े। आज मैं बिरादरी से पृथक् हूँ मां बाप ने मुझे अलग कमरा दिया है। उसी में मैं रहता हूं और बहन का बनाया भोजन खाता हूँ। वह बचे समय में उसी काम को करती है जिसे मैं करना चाहता था। मैं पढ़ता हूँ मेरे हृदय का बोझ हलका हो गया है। समाज चाहे उनको पतित समझे पर वह भी मनुष्य हैं मानवता से युक्त हैं। अस्तु, तो मेरा यह सिद्धान्त है कि मनुष्य कितना भी पतित हो, उठ सकता है। वह मनुष्यता के नाते से हमारा भाई है चाहे वह किसी भी वर्ण का हो। मेरा वही हृदय किरण भी आता जाता है और मेरे विचारों का साथी है। हम एक विचार के तीन ही प्राणी हैं तथापि हम अपने को बलवान समझते हैं और अपने को कर्तव्य पथ का पथिक समझते हैं। सचाई के कारण डरते नहीं यही हमारी प्रसन्नता का कारण है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

माताओ और बहिनो ! संगठन करो

भारतवर्ष में धक्का पहुंचानेवाली बाल-मृत्यु।

(अनुवादक—श्री रघुनाथ प्रसाद पाठक)

संसार की समस्त वेदनाओं में से सबसे अधिक दुःख पहुंचाने वाली वा भयंकर वेदना उस माता की होती है जिसे सन्तान का वियोग होता है भले ही वह सन्तान अल्प वयस्क वा अधिक अवस्था वाली हो संसार के किसी अन्यदेश में हम ऐसे क्रन्दन न सुनेंगे जैसे भारतवर्ष में सुनते हैं। बाल-मृत्यु का एक ही उदाहरण ले लीजिये। भारतवर्ष में प्रत्येक वर्ष में २० लाख बच्चे दिन का प्रकाश देखते ही मृत्यु देवी की गोद में जा बैठते हैं। भारतीय गवर्नमेन्ट की अर्द्ध-Official रिपोर्ट इस विषय पर प्रकाश डालती हुई १९२२, २३ में भारत नामक शीर्षक वाले लेख में स्पष्टरूपेण कहती है—

"हिसाब लगाने पर ज्ञात हुआ है कि प्रत्येक वर्ष २० लाख से कम भारतीय बच्चे नहीं मरते। उन में जो मृत्यु के मुख में जाने से बच जाते हैं बहुत से अपने बाल काल में स्वास्थ्य विनाशक वातावरण के कारण दुर्बल और कमजोर रहते हैं। प्रस्तुतः यद्यपि अभी तक ठीक संख्या को प्रगट करने के लिये जन्म Registration बहुत ही अशुद्ध है, विश्वासपूर्वक यह कहा जा सकता है कि भारत में नवजात बालकों में से ५ में एक वा शायद ४ में १ पहिले वर्ष में ही मर जाता है। घनी आबादी वाले नगरों में, विशेष कर व्यापारिक नगरों में तो इस मृत्यु संख्या का रेट और भी बढ़ा हुआ है। यह धक्का पहुँचाने वाली है। यदि हम अपने कुछ बड़े शहरों और विशेष कर व्यापारिक नगरों की बाल-मृत्यु को रेट पर विचार करें और उसकी अमेरिका आदि महा द्वीपों के बड़े २ व्यापारिक नगरों की मृत्यु संख्या से मिलान करें तो हमें पता लगेगा कि १९२१ में हमारी बाल-मृत्यु का रेट हृदय-विदारक था। संसार के ८ बड़े शहरों की तुलनात्मक दृष्टि से निम्नलिखित संख्याएं थीं—

१. क्रिस्चियानिया	(१) ५४	प्रति सहस्र
२. न्यूयार्क	(२) ७१	,, ,,
३. लंडन	(३) ८०	,, ,,
४. हेमवर्ग	(४) ९५	,, ,,
५. बर्लिन	(५) १३५	,, ,,
६. कोलोगने	(६) १४०	,, ,,
७ बीना	(७) १४६	,, ,,
८. मुम्बई	(८) ६६६	,, ,,

१९२२ और १९२३ में मुम्बई की बाल मृत्यु का रेट कुछ घटकर ४०० प्रति सहस्र होगया है। परन्तु अन्य नगरों की संख्या से मिलान करने पर यह कमी नहीं के बराबर है।

भारतवर्ष में इस अधिक मृत्यु संख्या के क्या कारण हैं? और हम एक राष्ट्र की हैसियत से इसको दूर करने के लिये क्या कर सकते हैं?

हमारे मतानुसार वे कारण कतिपय अभावतें।

१. हमारे देश की स्त्रियों में धायपन तथा नर्सिङ्ग के ज्ञान का अभाव।

२. माताओं तथा नव-जात बालकों के उचित भोजन का अभाव।

३. माताओं द्वारा बालकों की ठीक २ देख भाल रखने का अभाव।

४. बच्चों के प्रति पिताओं तथा अन्य सम्बन्धियों का हद से ज्यादा प्रेम प्रदर्शन।

और इन कारणों की जड़ मे निम्नलिखित कारण भी विद्यमान हैं—

१. बाल-विवाह।

२. स्त्री-शिक्षा का अभाव।

३. देशवासियों की दरिद्र अवस्था।

यदि हम अपनी कृपालु सरकार की इस विषय में उचित कार्य्यवाहियों के लिये प्रतीक्षा करें तो उपर्युक्त कारणों से हम छुटकारा न पासकेंगे। इस में सन्देह नहीं कि कौन्सिलों और असेम्बलो में भारतीय सभासद जैसा कि स्वराज्यवादियों को विश्वास हुआ है इस विषय में कुछ कर सकते हैं, परन्तु यदि जनता स्वयं उन लोगों को सहाय्य प्रदान न करे और उनके साथ सहयोग न करे, वे लोग भी कृतकार्य्य नहीं होंगे। जनता को चाहिये कि वह इस मृत्यु संख्या को जो हमारे राष्ट्रीय पौरुष का पतन कराती है, रोकनेके लिये संकल्प करे। जनता को उचित है कि वह इस प्रश्न को अपने हाथ में लेवे और Legislation के सहयोग से बालमृत्युरूप राक्षस को कोड़े मार कर बाहर निकाल दे जब तक वह हमारे देश से बहुत दूर न निकल जाय तब तक कोड़े लगाते ही रहे।

स्त्रियां पुरुषों की अपेक्षा इस मृत्यु को शीघ्र कम कर सकती हैं इस विषय मे आवश्यकरूपेण, उन में कर्त्तव्य पालन का भाव उत्पन्न होना चाहिये। हमारा विश्वास है कि यदि वे (स्त्रियां) एक वार भी दृढ़ संकल्प करलें तो वे परिस्थिति को सुधार सकती हैं। शिक्षित ललनाओं को बाहर मैदान में आकर देश और मनुष्य जाति के हितार्थ अपनी बहिनों का संगठन करना चाहिये। यदि वे ऐसा करें तो वे न केवल मृत्यु-संख्या ही को दूर करेंगी अपितु अपनी वर्तमान दशाओं को सुधार कर, संसार की दृष्टि में अपनी अवस्थाओं तथा अधिकारों को उन्नत बनाने में सफलीभूत होंगी। अपना संगठन स्वयं करने से भारतीय महिलाएं बहुत से कर्य्य कर सकती हैं।

१. कुटुम्बों की बागडोर उनके हाथ में होती है। वे अपने बालकों को जिन पर भारत का भविष्य निर्भर है शिक्षित कर सकती हैं और जिस प्रकार जीजाबाई ने अपने बालक शिवा जी के भावों को जातीय सेवा के सुन्दर विचारों से रङ्ग दिया था उसी प्रकार वे भी अपनी सन्तानों को राष्ट्रीय सेवा-भाव के उन्नत विचार द्वारा प्रोत्साहित कर सकती हैं।

वे अपने कुटम्ब वालों को शिक्षित बना तथा अपना संगठन कर अपने तथा परिवारके पुरुषों के भाग्य को सुधार सकती हैं। ऐसा करने से वे समय तथा उत्साह की रक्षा कर सकती हैं और राष्ट्र के कामों में उनका सदुपयोग कर सकती हैं। हमारी बहनें और माताएं राष्ट्र पर विचार करें। परन्तु शोक! उन्हें तो अपनी स्त्री जाति के दुखों का भी पता नहीं। समस्त भारतवर्ष के दुःख पीड़ित जनता के कष्टों का पता होना तो दूर। अमेरिका, अथवा यूरोप में जब देश की मानरक्षा का प्रश्न उठता है तब स्त्रियां शान्त नहीं बैठतीं, न केवल वे युद्ध में जाकर जूझती हैं, वरन अपनी सन्तानों तथा अन्य कुटुम्बीजनों को देश की मान-मर्य्यादा की रक्षार्थ उस में सजीव भाग लेने के लिये विवश करती हैं?

CC0, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, D...

भारतीय ललनाएं क्या करती हैं? उन का गाढ्य एवं कूप मण्डूक वृत्ति देश के लिये कोई भी कार्य्य नहीं करने देती है। अतः स्त्रियों को अवश्य शिक्षा देना चाहिये तथा उन्हें संगठित करना चाहिये।

वे एक अच्छी जाति के उत्पन्न करने में शक्य होगा। वह जाति मानसिक एवं शारीरिक दृष्टि से मजबूत होगी। वे बड़ी सुगमता से इस बात को देख सकती हैं उनके छोटे बालक घर पर ही शिक्षित किये जाते हैं। गृहशिक्षा जो प्रत्येक मानव जीव के चरित्रगठन के लिये परमावश्यक है, उन्हीं के हाथों में होती है।

आज इसका अभाव है। भारतीय सन्मार्ग का परित्याग कर कुमार्ग की ओर ले जाये जा रहे हैं। शारीरिक, मानसिक और सदाचार की दृष्टि से वे दुर्बल हैं तथा उत्साह का तो उनमें लेशमात्र भी अंश नहीं है, यह उनकी भूल नहीं है। यह भूल उन माता और पिताओं की है जो उनके जन्म काल मे एवं बालकपन में उनकी ओर विशेष ध्यान नहीं देते हैं। यदि हमारी बहनें और माताएं अपने आप को शिक्षित और संगठित करें तो वे बड़ी सुगमता से इस दशा को सुधार सकती हैं एवम् बलिष्ठ पराक्रमी और सदाचार जाति उत्पन्न करने मे शक्य हो सकती हैं इसी जाति की हमारी राष्ट्र की उन्नति के लिये विशेष आवश्यकता है।

बिना किसी विलम्ब और कष्ट के वे अपनी पुत्रियों की विवाह की अवस्था बढ़ायेंगी। उस बच्चे की शारीरिक मानसिक दशा कैसी होगी जिसकी माता केवल १२ वा १३ वर्ष की लड़की हो और जो माता के उत्तरदायित्वों के विषय में कुछ न जानती हो। प्रसव-पीड़ा का सहना और उस अवस्था में बच्चा जनना जिस समय शारीरिक विकास भी पूर्ण न हो माता तथा बच्चे दोनों का अन्त होना है। छोटी माता स्वयं कष्ट सहन करती है और अयोग्य सन्तान को पैदा करती है। इसके साथ ही साथ अशिक्षित और मूर्खा होने के कारण, उसे शिशुपालन के नियमों से जानकारी नहीं होती है अतः बच्चोंको भी बड़ा कष्ट होता है। और सम्भवतः दोनों की अकाल मृत्यु हो जाती है। ये सब बातें दूर होनी चाहियें। इनको दूर करने की यही रीति है कि हिन्दू लड़कियों की विवाह योग्य अवस्थाओं को बढ़ाया जाय। हिन्दू स्त्रियों को चाहिये कि वे १६ वर्ष पहिले अपनी लड़कियों की शादियां करने के विषय में विचार करने की परम्परागत आदत को छोड़दें और उन लड़कियों को शिक्षा प्राप्ति के लिये कन्या गुरुकुलों में भेजदें। यदि वे और कोई काम नहीं कर सकती हैं तो वे कम से कम उन्हें कन्या गुरुकुलों जैसे उत्तम शिक्षणालयों में तो भेज सकती हैं। उस दशा में ही वे देश को इस भयानक भय से बचा सकती हैं।

बाल मृत्यु की संख्या का निर्णय करने में आर्थिक प्रश्न महत्व का प्रश्न है। जब माता पिताओं को पैसा पैदा करने की शक्ति कम है तबही बच्चों की मृत्यु संख्या अधिक होती है। अमेरिका के संयुक्त राज्यों में यह देखा गया है कि निर्धनता के कारण, कुटुम्ब के एक आदमीके स्थान में बहुतों को एक ही कमरे में रहना भीड़ को जन्म देना है तथा यह भीड़ उस कुटुम्ब की जिसके प्रत्येक व्यक्ति के लिये १ से अधिक कमरे हैं बाल मृत्यु संख्या से २॥ गुना मृत्यु संख्या का रेट बढ़ा देती है। गर्भावस्था में माता के घर पर काम करने से मृत्यु संख्या का रेट प्रति हज़ार में बच्चों के पीछे १६ के हिसाब सेबढ़ जाता है।

यदि वे बाहर मिलों में कारखानों आदि में कार्य्य करें तो यह रेट हज़ार पीछे ७८ के हिसाब से बढ़ जाता है।

यह भी देखा गया है कि जब पिता की आय १२५० डालर व इससे अधिक के स्थान केवल ४५० डालर रह जाती है तो यह रेट तिगुना बढ़ जाता है।

जब हम इस बात पर विचार करने लग जाते हैं कि भारतवर्ष में बहुत से पिताओं की औसत से केवल ३६ रु० मासिक आय है, तब हम न केवल बच्चों की ही वा न अपने देश के नवयुवकों की मृत्यु संख्या के रेट का खासा अन्दाज़ लगा सकते हैं।

निर्धनता का प्रश्न आसानी से नहीं हल हो सकता है। देश के नेता इस पर ध्यान दे सकते हैं। यदि देश की विदुषी और संगठित देवियां नेताओं को सहायता और सहयोग दें तो बड़ी जल्दी ही यह समस्या हल हो जायगी।

वे उनके राजनैतिक कार्य्यों में भाग लेती हुई उन नेताओं के स्वराज्य के राजनैतिक कार्यों में सहायता प्रदान करने के योग्य होंगी। यह ध्यान रहे कि भारत की आधे से ज्यादा जनसंख्या स्त्रियों की है और भारत में शिक्षा के तथा वास्तविक परिस्थिति के ज्ञानाभाव से वे क्रियात्मकदृष्टि से देश के लिये स्वाधीनता के संग्राम में यह जन संख्या सहायता दे व्यर्थ है। यदि वे अपने आपको शिक्षित तथा सङ्गठित करें और भारत की आज़ादी के लिये अपना कर्त्तव्य पालन करें तो स्वराज्य प्राप्ति शीघ्र ही हो।

इन्हीं कारणों से हम कर्नाटक के भगिनी मण्डल सङ्गठन का, मुम्बई की महिला समाज, अडयार की स्त्री सभा तथा इस प्रकार की अन्य सभाओं का स्वागत करते हैं। हमारी इच्छा है और प्रार्थना है कि काफ़ी संख्या में स्त्रियां उनके कामों में हाथ बटाती हुई तन मन से स्त्री जगत् एवम् भारत की उन्नति के लिये काम करें।

कन्या गुरुकुल समाचार।

देहरादून में:—

गत २ अगस्त को कन्याएं देहरादून सकुशल पहुंची थीं। चूंकि इन की गाड़ियां रिजर्वड थीं अतः इन्हें जगह २ बदलने का कष्ट न उठाना पड़ा। यहां पर यह लोग राजपुर रोड पर एक उत्तम कोठी में निवास कर रही हैं। कोठी में पीछे नहर भी है अतः जल की अधिकता से नहाने धोने का भी बड़ा आराम रहा है। कन्याएं प्रतिदिन भ्रमणार्थ जाया करती हैं और कई मीलों का चक्कर लगाती हैं अतः उन का साधारण स्वास्थ्य बहुत उन्नत प्रतीत होता है।

यद्यपि यात्रा में पाठन का क्रमबद्ध प्रबन्ध नहीं था तथापि प्रति दिवस ४, ५ घंटे नियमबद्ध पठन कराया जाता है ताकि खाली समय में कन्याएं कुचेष्टा न कर सकें और पाठ भी उपस्थित रहे। ताकि परीक्षा के पूर्व फिर से तैयारी कराने में समय नष्ट न हो।

स्वास्थ्य।

यहां पर यद्यपि साधारण स्वास्थ्य अच्छा रहा है किन्तु वर्षा में कई बार भीग जाने से मलेरिया ज्वर से कई कन्याएं दो चार दिन के लिये चारपाई सेवन कर लेती रही हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Di...

परन्तु एक गुजराती कन्या अधिक रुग्ण हो गई और उसे मेजर जे० यल सेन० एक्सरेज़ संस्था में कार्य्य करने वाले डाक्टर को दिखलाया। उन्होंने ब्रांको निमोनिया बतलाया। तत्क्षण उसके पिता माता को सूचना दे दी गई। परन्तु परम पिता परमात्मा का बड़ा धन्यवाद है कि २१ दिन के बाद इन्हीं डाक्टर जी के इलाज से वह निरोग हो गई है और वायु परिवर्तन तथा आराम के लिये उसे पिता माता घर ले गए हैं।

धन्यवाद के पात्र

हमारे देहरादून आने पर हमारे सामने डाक्टर का प्रश्न उपस्थित हुआ। पूछने पर यहां कोई आर्य्यसमाजी डाक्टर हमें न मिला दूसरे इतनी दूर शहर से आने पर कोई राज़ी भी न था। दो चार दिन व्यवसायी डाक्टर को बुलाया। फीस भी बहुत और झञ्झट भी था, उसने सौ रुपये हमारे यहां रोज आने का प्रस्ताव किया। हम लोग अभी विचार ही रहे थे कि संध्या समय एक दिन दो तीन देवियां बच्चों समेत हमारी कोठी पर आईं और पूछने लगीं यह कन्याएं कहां की हैं? हमने भी उनसे पूछा तो पता लगा कि उनके पति वाइसराय की वांडी गार्ड के डाक्टर हैं और उनके साथ हैं। फिर क्या था 'अन्धे को दो आंखें' आचार्या जी ने उन से नम्रता से प्रार्थना की कि वह अपना कुछ समय कन्या गुरुकुल को भी दें। उन्होंने उसे सहर्ष स्वीकार किया। यह डाक्टर मोहनलाल जी छै महीने दिल्ली और छै महीने देहरादून रहते हैं। यह बड़े प्रेम से कन्याओं का इलाज करते हैं, दवा का भी प्रबन्ध करते हैं दिन में जब आवश्यकता हो, सूचना देने पर आ जाते हैं। यह गुरुकुल के बड़े प्रेमी हैं इन्हीं की सम्मति से हमें मेजर जे० यल सेन. का परिचय पाने का सौभाग्य हुआ। यह महाशय भी बड़े उदारचित्त और दयालु हैं। आर्यसमाज से कुछ भी सम्बन्ध न रहते हुये क्योंकि हमें पता लगा है कि यह ब्रह्मसमाजी हैं—भी इनका प्रेम कन्या गुरुकुल से कुछ कम नहीं। इन्होंने न केवल फीस ही नहीं ली—इनकी एक विज़िट १६) की है बल्कि स्वयम् भी बिना बुलाये अपने मरीज़ को देखने अक्सर आते रहे हैं और बड़े ध्यान से चिकित्सा करते रहे हैं। हम इन दोनों महानुभाव डाक्टरों का बड़ा हार्दिक धन्यवाद करते हैं।

फिर वापिस दिल्ली को।

कन्याएं ३० सितम्बर को यहां से प्रस्थान करेंगीं और १ अक्टूबर को दिल्ली जा पहुँचेंगीं।

वार्षिक उत्सव तथा नया चुनाव।

कन्या गुरुकुल के वार्षिक उत्सव की तिथियां इस वार १४, १५, १६ नवम्बर १९२५ नियत हुई हैं। क्योंकि आगे पीछे कोई भी तारीखें ऐसी नहीं मिलतीं जिनमें कोई छुट्टी हो और कहीं उत्सव न हो। इसी समय नई कन्याओं का प्रवेश भी किया जायगा। जिन महाशयों को कन्याएं प्रविष्ट करानी हों वह कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ कोठी नं० ४ दरियागंज दिल्ली से छपे हुए प्रवेशपत्र मंगा कर शीघ्र ही भर कर १५ अक्टूबर तक अवश्य भेजें वरना स्थानाभाव से उन की प्रार्थना पर विचार करना कठिन होगा। कन्याओं की आयु ६ से ऊपर और ९ से न्यून होनी चाहिये। इससे भिन्न को प्रविष्ट नहीं किया जायगा अतः प्रयास करना व्यर्थ होगा।

वार्षिक परीक्षाएं

चूंकि उत्सव के पूर्व परीक्षा लेना आवश्यक है क्योंकि उसी समय श्रेणी विभाग करना होता है तथा संरक्षक भी फल जानने को उत्सुक रहते हैं। अतः वार्षिक परीक्षाएं नवम्बर के प्रथम सप्ताह में होंगी।

—:०:—

मुफ़्त नमूना मंगा कर देखो

मुख विलास पान में खाने का मसाला:—
पान में खाके देखो दुनियाँ में नई चीज़ है, इस की सिफ़त को आज़मा कर देखो। क़ीमत बड़ी डिब्बी ३।), छोटी डिब्बी १।।/) फ़ी दरजन।

पं० प्यारेलाल शुक्ल हूलागंज,
कानपुर।

☞ BE REST ASSURED—
THAT OUR
WALL CLOCK
'TIC-TAK' (Regd.)
GIVE YOU PERFECT TIME.
OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.
PRICE Rs.
THREE only.
Order now if you have not already orderd.

Peter Wathc Co.,
Post Box No. 27,
MADRAS.

पं० अनन्तराम शर्मा के प्रबंध से सद्धर्म्म प्रचारक प्रेस दर्यागंज देहली में छपा

और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Di...

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES.

This is the very newest style wristlet watch These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for

3 years. Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of much higher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Bracelet for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra

N.B—*Purchaser of 3 Watches at a time will get one German-made 4-in. dial alarm Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses the most fragrant smell of the different kinds of fine flowers. Notice minutely the delightful-rike freshlyplucked flowers-smell every now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed. s for,

LILY OF THE VALLEY

1 oz. Bottle Re.1-8-0
1 Dram Bottle 0-12-0
Dram Bottle 0-8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0
" „ Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,
P. B. 27, MADRAS

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियां, जाकटें और कुर्ते बहुत ही खूबसूरत फैंसी बनावट के मिलते हैं एकवार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महगे जचें तो फ़ौरन वापिस भेजकर क़ीमत वापिस मंगा लीजिये क़ीमत साड़ी बेल रेशम की किनारीदार ७) ८) ६) १०) १२) जरी किनारी १५)

बोडी या जाकेट—जनानी चाहे जिस नापको की० ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

बालकों के फैंसी कुरते—इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती हैं हर एक रङ्ग के क़ीमत ४) ५) ६) ७) ६) १०) यही जरी के १५) २०) २५)

महा सुगंधित तैल—माथे को सुगंधिक और ठंडा करने वाला तैल कीमत १)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं; और बालों का उखड़२ कर गिरना बन्द होता है की० ॥)

बच्चों के गले के लाकिट—ये लाकिट दांत सुगमता से निकलने के लिये प्रसिद्ध हैं की० ॥)

बिजली का फीता—यह बिजली का फीता बच्चों के दांत निकलने के काम आता है की० ॥)

बालसुधा—गोद के बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शीशी ॥)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मुफ्त।

पता—सुख संचारक कम्पनी. मथुरा

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ६] भाद्रपद और आश्विन १९८२—सितम्बर और अक्टूबर १९२५ [खण्ड ६, संख्या ५, ६

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)
सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए०
स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Di...

विषय सूची।

विषय		पृष्ठ
१—पथिक ले० श्री हरि	: :	२१३
२—सभ्य संसार की वर्त्तमान भयानक स्थिति ले० श्रीयुत रामदेवजी आचार्य्य गुरुकुल काङ्गड़ी।	:	२१४
३—आर्य्यसमाज का भावी प्रोग्राम ले० श्रीयुत गुरुदत्त जी सिद्धान्तालङ्कार।		२२०
४—प्रियतम दर्शन—ले० हरिहर दत्त मिश्र मित्रप्रमोद कुर्मीर मैदा कानपुर।	:	२३१
५—मोहिनी के आँसू— ले० श्री सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज।	: :	२३६
६—स्वागत—ले० जगदीश चन्द्र शास्त्री चन्द्र० डी० ऐन० हाई स्कूल देहली।	:	२४१
७—बिरादरी—ले० श्रीयुत सत्याचरणजी।		२४२
८—ऋषिजीवन कथा और वर्त्तमान आर्य्य समाज—लेखिका—कुमारी विद्यावती सेठ B.A. आचार्या कन्या गुरुकुल देहली।		२४६
९—सुख स्वप्न—ले० आज़ाद	:	२५१
१०—दयानन्द स्तवन—ले० रसिक	:	२५६
११—हमारी मंजूषा	: :	२६१
१२—कुसुमोद्यान	: :	२६३
१३—बनिता विनोद	: :	२६६
१४—विचार प्रवाह	: :	२८२

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य
१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।
पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं. जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें

वर्ष ६ | भाद्र-आश्विन १९८२—सितम्बर-अक्तूबर १९२५ ई० | संख्या ५-६

पथिक

(श्रीहरि)

पथिक ! तनिक तो सोच अगम यह भव सागर है।
पाप-ताप-उपताप आदि जलचर-आगर है॥
काम, क्रोध, मद, लोभ, लहरिका लहरातीं हैं।
पल पल में सुख-दुःख चट्टानें टकरातीं हैं॥
है जीर्ण-शीर्ण जीवनतरणि, क्यों पावेगे धाम को।
"श्रीहरि" प्रियनाविक के बिना, उस अनन्त विश्राम को॥१॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized

सभ्य संसार की वर्त्तमान भयानक स्थिति

लेखक – श्रीयुत रामदेव जी आचार्य्य गुरुकुल काङ्गड़ी ।

(१)

आज से १० वर्ष पूर्व कहा जासक्ता था कि रङ्गका प्रश्न बड़ा प्रबल है और गोरे लोग काले लोगों को मनुष्यत्व से गिरा हुआ समझते हैं और मनुष्यों की बिरादरी में केवल वर्णहीन लोगों को ही स्वीकार करते हैं। क्योंकि गोरों के साथ व्यवहार के लिये सदाचार शास्त्र एक है और रङ्गदार लोगों के साथ व्यवहार के लिये एक दूसरी ही अनोखी स्मृति रची गई है। किन्तु आज नकशा बदला हुआ है। फ्रांस का जो दुर्व्यवहार आज जर्मनी के साथ होरहा है उससे अधिक अत्याचार किञ्चित ही स्पेन वालोंने मैक्सिको और पीरु निवासियों के सङ्ग किया होगा। जरमनी के जिस विभाग पर फ्रांस का आधिपत्य है वहां की नागरी सभाओं को बाधित किया गया है कि फ्रांस की गोरी और काली सेनाओं के लिये ललनाओं का प्रबन्ध करें। कई नागरी सभायें लाखों मार्क वार्षिक इस कार्य पर व्यय करती हैं। एक फ्रांस के करनेल और कप्तान के बंगले की सजावट पर सहस्रों मार्क व्यय हुये हैं। यदि एक गलीचा पसन्द नहीं आया तो उसी समय डण्डे के के जोर से दूसरा मंगवाया गया है। इस प्रकार के जो अत्याचार जरमनी में हुये हैं अथवा होरहे हैं उन का ब्यौरा किसी ने देखना होतो इटली के भूतपूर्व प्रधान-मन्त्री महाशय निट्टी की पुस्तक Decadence Europe पढ़लें अब संसार में प्रश्न रङ्गका भी केवल इतना है कि बेरङ्ग लोग रंगदार लोगों के विरुद्ध संगठित होजाते हैं। जब तक कि प्रत्येक भागीदार की स्वार्थसिद्धि ऐसे सङ्गठन में हो किन्तु जिस समय स्वार्थ की टक्कर होती है और भागीदार एक दूसरे के रुधिर के प्यासे हो जाते हैं तो फिर विजेता विजित के रङ्ग को अवहेलना की दृष्टि से देखता हुआ प्रतिहिंसा के आसुरीय भावों से प्रेरित होकर परास्त शत्रु को कुचलने के लिये पूरे बल से तय्यार होजाता है। पुराण में एक गाथा आती है कि विष्णु भगवान ने एक असुर पाल रखा था उस को उन्होंने यह वरदान दिया था कि जिस किसी को वह स्पर्श करेगा वह भस्म हो जावेगा। इसी कारण उसका नाम भस्मासुर पढ़ गया था। विष्णु भगवान ने अपने सब शत्रुओं को उस असुर द्वारा भस्मीभूत करवा दिया। जब भस्म करने को कोई शत्रु न रहा तो भस्मासुर महोदय विष्णु भगवान की ओर लपके विष्णु ने पूछा "अरे धूर्त ! यह क्या कर रहा है" असुर ने उत्तर दिया 'भगवान् ! लोगों को भस्मीभूत करने की प्रवृत्ति आपने ही मेरे अन्दर दृढ़ की है। अब मैं अपनी प्रवृत्ति से बाधित हूं। क्षमा कीजिये। यदि आप के सब शत्रु समाप्त होचुके हैं तो इस में मेरा क्या दोष है। यदि कोई और न मिलेगा तो मैं आप को ही स्पर्श करूंगा" यदि अवस्था पश्चिमीय सभ्यता की ही रही है। पश्चिमीय सभ्यता ने एक नवीन मत्स्यन्याय का आविष्कार किया है। उस न्याय के तीन मूल सूत्र हैं:—

(१) Let the weaker go to the wall अर्थात निर्बल भाड़ में पड़े।

(२) Survivial of the fittest अर्थात जिस की लाठी उसकी भस।

(३) Process of Natural Selection अर्थात प्रकृति के पाटों में जो कुचला जाने से बच जावे वही भगवान का लाडला है और वही पूजा के योग्य है।

यह मत्स्य न्याय ही इस सभ्यता रूपी विष्णु का पाला हुआ असुर है यह असुर पहिले एशिया और अफ्रीका की जातियों पर छोड़ागया, अब योरोप की निर्बल जातियों की बारी आई है। अर्थात अब विष्णु के अङ्गों और प्रत्यङ्गों के भस्म होने का समय आरहा है। जब तक ब्रह्मा विष्णु की सहायता को नहीं आता और इस असुर का नाश नहीं करता तब तक विष्णु की खैर नहीं। वह ब्रह्मा प्राचीन आर्य्यसभ्यता है जो सभ्यता परार्थ की सभ्यता है स्वार्थ की नहीं जो निष्काम भाव सिखलाती सकामता को आदर्श नहीं बनाती, तो निर्बलों और पद-दलितों की सबल आत्माभिमानी बनाने में मानवीय प्रकृति का गौरव समझती है। उनको सिसकता हुआ और मरता हुआ देखने में नहीं।

(२)

योरोप के नाटकगृह में एक नया परदा गिरने वाला है। योरोप के भीषण युद्ध में इङ्गलैण्ड फ्रांस का साथ देता रहा। न केवल साथ ही देता रहा किन्तु एक ऐसा समय भी आया जब कि फ्रांस ढीला पड़ गया। और इङ्गलैण्ड ने उसकी पीठ ठोकी जबकि फ्रांस के पास धन न रहा और इङ्गलैण्ड ने लाखों पौण्ड का कर्जा उसको दिया। उस समय यदि इंगलैण्ड को कोई चिन्ता थी तो यह कि उस का व्यापार उपनिवेश सम्बन्धी और साम्राज्य वृद्धि में जो बड़ा प्रतिद्वन्दी जरमनी था वह निर्बल हो जावे और योरोप इंगलैण्ड के प्राधान्य में कोई भेद न आवे। किन्तु अब नकशा बदल गया है। फ्रांस जर्मनीकी सीमा को आक्रमण करके कुचलना चाहता है। इंगलैण्ड का तो स्वार्थ है कि उसका प्राधान्य रहे और अन्य योरोप के देश सब एक जैसे रहें न कोई बहुत निर्बल हो और न बहुत सबल क्योंकि यदि एक बहुत निर्बल हो जायगा तो दूसरे का बल इतना बढ़ जावेगा कि वह इंगलैण्ड का प्रतिद्वन्दी हो जावेगा। इसी कारण इंगलैण्ड की सहानुभूति आजकल जर्मनी के साथ है। क्योंकि यदि जरमनी बिलकुल कुचला गया और फ्रांस उसकी ओर से सर्वथा निर्भीक हो गया तो फिर फ्रांस की शक्ति इतनी बढ़ सकती है कि इंगलैण्ड के अपने स्वार्थ संकट में पड़ जावें। यही कारण है कि यदि योरोप में फिर युद्ध हुआ तो यह कहना कठिन है कि इंगलैंड और फ्रांस का बल एक ही होगा।

(३)

यह तो हुई योरोप की अवस्था अब एशिया को लीजिये। एशिया में सब से बड़ा देश चीन है। चीन में भी एक शंघाई नगर है जहां पर चीनियों को स्वराज्य नहीं है। उस अभागे स्थान पर अन्तर्राष्ट्रीय राज्य है। उस नगर का प्रबन्ध एक म्युनिसिपल कौन्सिल के आधीन है जिसका चुनाव विदेशियों की ओर से होता है। नाम को तो वह कौन्सिल अन्तर्राष्ट्रीय है किन्तु वास्तव में वहां ब्रिटिश प्राधान्य है। कौन्सिल में दो अमरीकन हैं जिन में से एक सभापति है। एक जापानी है और छै अंगरेज हैं। फ्रांस को भी कुछ विशेष अधिकार प्राप्त है। किन्तु विचित्र बात यह है कि यद्यपि शङ्घाई में चीनियों की संख्या सब से अधिक है और कर का सब से अधिक भाग भी वही देते हैं सम्पत्ति भी सब से अधिक उनके ही पास है, तथापि उनका एक भी प्रतिनिधि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

उस कौंसिल में नहीं है। शंघाई के एक जापानी पुतली घर में हड़ताल हो गई। हड़तालियों का एक जलूस अन्तर्राष्ट्रीय भाग में निकला। म्युनिसिपल कौंसिल भी पुलीस और जलूस में कुछ अन बन होगई। पुलीस जिसमें ब्रिटिश तत्त्व का प्राधान्य था गोली चला दी कई युवक मर गये और कई घायल होगये। तत्काल पुलीस को कारवाई के विषय में कोई अन्वेषण न हो सका। चीनी लोग भड़क उठे। देश भर में क्रोधाग्नि प्रज्वलित होगई। ब्रिटिश का बहिष्कार किया गया, हड़ताल और जलूसों का युग आगया कई स्थानों पर गोली चल गई। चीनी और ब्रिटिश समाचारपत्रों में भी युद्ध छिड़ गया। तीन मास से सारे के सारे ब्रिटिश कारखाने बन्द हैं। मजदूर काम छोड़कर भाग गये हैं। ब्रिटिश जहाज़ खड़े हैं वह बन्दरगाहों से हिल नहीं सकते क्योंकि काम करने को कोई कुली नहीं मिलता। चीनी लोग न अंगरेजों के पास कुछ बेचते हैं और न उन से कुछ ख़रीदते हैं। करोड़ों रुपये की आर्थिक हानि अंगरेजों की हो चुकी है।

(४)

दाह्य सामग्री आगे ही उपस्थित थी। शंघाई की दुर्घटना ने एक दियासलाई लगा दी अब चीन में एक ऐसी आग लगी है जो कि तब तक शान्त न होगी जब तक कि चीनियों को विदेशियों से जितनी शिकायतें वह सब दूर न हो लेंगी। वह शिकायतें संक्षेप से निम्न प्रकार हैं :—

(१) चीनियों को विश्वास है कि शंघाई में पुलीस ने उनके स्वदेशी भाइयों पर अत्याचार कियाहै और अत्याचार करनेवालों को बाईकाट नहीं किया गया।

(२) शंघाई में कर प्रायः चीनी देते हैं और शासन के कार्य्य में उनका कोई दखल नहीं है।

(३) म्युनिसिपल कौंसिल अपने कार्य्य के क्षेत्र को बढ़ाती जाती है। जहां उसका कोई अधिकार नहीं वहाँ भी शासन करने लगी है। चीनी प्रजा के अभियोगों के निर्णय के लिये जो न्यायालय हैं उनपर भी बलात्कार प्रभुत्व जमा रही है।

(४) सब विदेशियों ने जब चीन निर्बल था उस से यह लिखा लिया था कि चीन में जो विदेशी लोग रहते हैं उन पर चीन के राज नियम न चलेंगे और नहीं चीनी न्यायालय में उन पर अभियोग चलाया जासकेगा। विदेशियों के अपने २ पृथक् न्यायालय हैं। इसके अर्थ यह हुये कि चीनियों का राज्य उठ चुका है। चीनी प्रजा पर चीन भी यदि कोई विदेशी अत्याचार करे या देश के नियमों का तिरस्कार करे तो चीन की सरकार अपनी प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ है और अपने तिरस्कृत राज नियमों के निर्वाह करने में विवश है। इस प्रणाली को Ex-territoriality कहते हैं। देशी विदेशियों में कई धूर्त भी हैं जो नियम विरुद्ध शस्त्र चीन में ले आते हैं अफीम इत्यादि भी इसी प्रकार ठोसी जाती है। और भी कई कार्रवाहियां होती रहती हैं जो कि चीन के नव जागृत अभिमान को ठेस लगाती हैं। युद्ध के पीछे जर्मनी और आस्ट्रियाके चीन में जो अधिकार थे उनको छीन लियागया। रूसकी सोवियट (Soviet) सरकार ने यह अधिकार अपने आप त्याग दिये हैं। इन कारणों से जिन देशों ने इस अधिकार का रूप धारण की हुई अनधिकार चेष्टा को अभी तक नहीं छोड़ा है उनके विरुद्ध क्रोध और भी भड़क उठा है।

चीन में जो माल आता है और वहां से जो माल जाता है उसपर विदेशी लोग प्रायः प्रति शतक से अधिक चुङ्गी नहीं देते। इससे चीन की स्वाधीनता और स्वतन्त्रता के भाव को चोट लगती है और उस को आर्थिक हानि होती है। १८५८ में यह शर्त चीन से लिखवा ली गई थी। १८५८ के चीन और और आज के चीन में बड़ा भेद है। जो बात १८५८ में भय से या लल्लोपत्तो से मनवा ली गई थी उसका आज कायम रहना असम्भव है।

(६) १९२२ में वाशिंगटन अमरीका में एक कान्फ्रैंस हुई थी जिस में यह निर्णय किया गया था कि एक कमीशन बैठनी चाहिये जो चुङ्गी के कर पर पुनर्विचार करे। और एक अन्तराष्ट्रीय कमीशन संगठित की जावे जो कि चीन में से विदेशी न्यायालयों को हटाने के प्रश्न पर विचार करे। इंगलैण्ड ने तो वाशिंगटन के निर्णयों का समर्थन कर दिया किन्तु फ्रांस ने तीन वर्ष तक उन को प्रमाणित किया और बहाना यह बताया कि जब तक चीन कुछ और प्रतिज्ञायें पालन नहीं करता और वह प्रतिज्ञायें इस विषय से सर्वथा असम्बद्ध हैं तब तक उक्त निर्णय प्रमाणित नहीं हो सकते। चीनी प्रजा का विश्वास है कि योरोप के मुख्य २ देशों ने हमारे साथ विश्वासघात किया है इस कारण चीन भर में घोर असन्तोष है जिसका बाह्य-रूप यह हड़ताल है।

(५)

वृटिश सरकार भली प्रकार समझती है कि यदि चीन को हाथ में न लिया गया तो वृटिश व्यापार का सर्वथा नाश हो जावेगा। अब आशा पड़ती है कि चुङ्गी के प्रबन्ध का सन्तोष जनक निर्णय हो जावेगा। विदेशी न्यायालयों का कलङ्क चीन के उज्वल मुखड़े से धुल जावेगा और शंघाई में जिन अधिकारियों ने क्रूरता दिखलाई है उन को अपने किये का फल थोड़ा बहुत ही मिल जावेगा। संसार शक्ति का पुजारी है, जिस राष्ट्र में संगठन शक्ति है उसके अधिकारों को पद-दलित करते रहना असम्भव है। वर्तमान संसार में सत्य और न्याय को कोई नहीं पूछता। हां यह अवश्य है कि संगठित अन्याय और अत्याचार का विरोध यदि न्याय और सत्य के पक्षपाती करें तो मनु भगवान की स्वर्णीय उक्ति अवश्यमेव चरितार्थ होगी।

"सत्यमेव जयते नानृतम्"

हमारे पाठकों ने योरोप और एशिया की राम कहानी सुन ली अब हम उनको अफ्रीका की व्यथायुक्त कथा सुनाते हैं। अफ्रीका में मोरोको एक देश है। उस देशको अलमग़रिब अल अरबस अर्थात् मुसलमान जगत का अत्यन्त पश्चिमीय भाग कहते हैं। इस देश पर सदा आक्रमण होते रहे हैं। पहिले फुनीश्यन लोगों ने आक्रमण किया, फिर यूनानी लोगों ने फिर रोमन लोगों ने, फिर वण्डाल जाति, फिर अरबियों, फिर सदेन निवासियों फिर पुर्तगाल निवासियों ने और फिर फ्रांसीसियों ने। यहां के आदि निवासी बारबर लोग हैं। इस समय में भी आधो से अधिक जन संख्या उनकी है। यह लोग गोरे रङ्ग के हैं, सुन्दर आकार के हैं, स्पष्ट वक्ता और सीधे साधे हैं खेती का काम करते हैं, रिफ में काने खे दते हैं और लड़ने को हर समय तैय्यार रहते हैं। इनकी भाषा को बरबर कहते हैं। यह लोग कभी भी किसी अन्य जाति के आधीन नहीं हुये। इन के अतिरिक्त मोराको में अरबी, यहूदी और योरोपियन लोग निवास करते हैं। बरबर या रिफ लोग ऐसे वैसे मुसलमान हैं। मोराको की राजधानी रबत है और वहां के दो बड़े नगर फैज और मरकेल हैं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized

(७)

योरोपीय जातियों की रीति है कि दूसरे देशों को आपस में मिल कर बांट लेते हैं। "एक जाति कह देती है, कि अमुक देश का अमुक विभाग मेरा क्षेत्र है, दूसरी इस को स्वीकार कर लेती है किन्तु इस शर्त के साथ कि शेष भाग उसका क्षेत्र समझा जावे। जिस जाति का जो भाग "क्षेत्र" हो वहां के निवासियों को दासता की बड़ी जंजीर में बांधने का, उनके व्यापार को अपने हाथ में लेने और येन केन प्रकारेण उनको "सभ्य" बनाने का पूर्ण अधिकार उस जाति को हो जाता है। और यदि इस कार्य्य में "क्षेत्र" के लोग कोई आपत्ति उठाएं और यह कहने का उत्साहकरें कि "भाई तुम्हारा क्या अधिकार कि हमारे देशमें लूट आरम्भ करो" यों दोनों भागीदार जातियां मिल जाती हैं और तलवार के बल से उन अभागे लोगों को "सभ्यता" के आनन्द लूटने के लिये बाधित करते हैं। यही हाल मोराको में होरहा है। १९०५ में फ्रांस और स्पेन ने एक प्रतिज्ञापत्र पर हस्ताक्षर किये जिस के अनुसार टनज़ीर को छोड़ कर शेष मोराको को फ्रांसीसी और स्पैनिश "क्षेत्रों" में विभक्त किया गया। १९१२ में मोराको के सुलतान को यह मनवाया गया कि उसका देश फ्रांस की "संरक्षता" में है। १९१४ में इस प्रबन्ध को इंग्लेन्ड ने भी स्वीकार कर लिया १९२३ में टनज़ीर अन्तर्राष्ट्रीय शासन में आगया या दूसरे शब्दों में इंग्लैन्ड के आधीन होगया।

(८)

फ्रांस ने वरधा नदी के उत्तर की ओर जो भूमि है उस पर प्रभुत्व जमा लिया। रिफ़ के बाबर लोगों की रोजी का साधन वही भूमि है। उनका सरदार अबदुलकरीम एक वीर जाति का बुद्धिमान नेता है उसको यह स्वीकार न था कि अपनी जाति को "सभ्यता" की देवी पर बलि चढ़ाये। उसने रिफ़ की सब उपजातियों को संगठित किया जबला के लोगों को भी अपने साथ मिला लिया। अपने देश और जाति की स्वाधीनता के लिये लड़ने मरने के लिये वह तैयार होगया। उस की सेना लड़ना जानती है। तीन वर्षों से वह स्पेन के दांत खट्टे कर रहा है स्पेन के लोगों से उसने बहुतसी बन्दूकें, कुछ तोपें और दो तीन विमान छीन लिये हैं। कुछ जर्मन अफ़सर उसने नौकर रखलिये हैं जिन्होंने उसकी सेना को व्यूह रचना सिखला दी है। उसका देश पहाड़ी है। उस विकट देश में गुफ़ायें हैं कि जिन में छिपी हुई सेना पर न तोपोंकी वार होसकती है और नाहीं विमानों में से फेंके हुये तोपके गोले कोई हानि सैनिकों को पहुंचा सकते हैं। फ्रांस के पास ७०,००० सेना है, भारी तोपे हैं, विमान हैं किन्तु अबदुल करीम के पास २५,००० से अधिक सेना नहीं है किन्तु रिफ़ लोग फिर भी ऐसे धृष्ट हैं कि थोड़ी सेना होते हुये भी "सभ्यता" के आक्रमण से दबते नहीं। फ्रांस को पीछे ही पीछे हटना पड़ता है। अब फ्रांस और स्पेन मिल गये हैं फिर भी अबदुल करीम हटने का नाम नहीं लेता। एक और बात बड़े मजे की है। जाड़ा निकट आरहा है। फ्रांस के सैनिकों को केक, बिस्कुट, शराब और गोश्त, के मिलने में दिन प्रतिदिन कठिनता होती जावेगी। अबदुल करीम की सेना "असभ्य" है, उसको न शराब की लटक है, और न केक की "पटक" है इसलिये उसकी आवश्यकतायें बहुत थोड़ी हैं। दूसरी बात यह कि देश उनका है उनको मालूम है कि खाने की वस्तु कहां से मिलती है फ्रांस तंग आगया है और अबदुलकरीम के देशकी स्वाधीनता को स्वीकार करने को तैयार है यदि वह मोराको सुलतान

की—जो कि फ्रांस का उपकरण है—नाम-मात्र आधीनता स्वीकार करले। स्पेन वाले चाहते हैं कि वह 'खलीफा' की जो उनका उपकरण है—नाममात्र आधीनता स्वीकार करले अबदुल करीम समझता है कि "नाममात्र" "सुलतान" और "खलीफा" के अर्थ क्या हैं और फ्रांस और स्पेन पर कितना विश्वास किया जासकता है सारा योरोप व्याकुल होरहा है क्योंकि यदि अबदुल करीम का साहस बढ़ गया तो फ्रांस का ट्यूनिस और अलजीरिया में रहना कठिन हो जावेगा। योरोपियन से इतर जातियों को ख्याल हो जावेगा कि योरोपियन जातियां अजित नहीं हैं जहां २ योरोपियन लोगों का एशियावालों और अफ्रीकावालों पर प्रभुत्व है वह सब झञ्झटमें पड़ जावेगा। यह तो है प्रश्न का एक रुप। दूसरा रूप यह है कि यदि फ्रांस हार जावे तो इंग्लैन्ड को प्रसन्नता भी है क्योंकि यदि मोराको का बड़ा भाग और अलजीरिया और ट्यूनिस फ्रांस के हाथ में रहें और फ्रांस और इंग्लैन्ड का युद्ध हो जावे, तो जिबराल्टर की खाड़ी खतरे में पड़ जावेगी और भारत इंग्लैन्ड का रास्ता बन्द हो सकता है। इंग्लैन्ड बड़ी उलझन में है फ्रांस की हार में योरोप का गौरव घटता है और मायावी इन्द्रजाल टूटता है जिस का प्रभाव बृटिश साम्राज्य पर भी पड़ेगा। यदि फ्रांस जीत जावे, तो इंग्लैंड के एक भावी शत्रु की शक्ति बढ़ती है।

प्रार्थना।

(१)

क्यों हमारी खबर तुम लेते नहीं, छोड़ तुमको हम कहां जायें अहो!
सह रहे हैं नित नई विपदा विभो! जान कर अनजान बनते क्यों कहो?

(२)

है सहारा आप का सारा हमें, है हमारा और क्या कोई कहीं?
जब किनारा आप ही करने लगे दुःख टारा तब तो टरने का नहीं॥

(३)

अधिक तुमको क्या कहें दुःखकी कथा, नहिं कहें तो और हम किससे कहें?
हो हमारे एक तुम ही नाथ! हो, तुम कहो तो दुःख ही सहते रहे,

(४)

दीन की इस दुर्दशा को देख लें, देखलें बिगड़ी दशा यह दुर्व्यथा॥
और अपनी ओर भी अब देखलें, चाहिये करनी दया अब सर्वथा॥

—धर्मचन्द्र खेमका "चन्द्र"

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

आर्य समाज का भावी प्रोग्राम

ले०—श्रीयुत गुरुदत्त जी सिद्धान्तालंकार

(गताङ्क से आगे)

हमने पिछले लेख में " वैदिकधर्म और वैदिकसभ्यता " को सार्वभौम बनाने के लिये स्वराज्य प्राप्ति की आवश्यकता पर बल दिया था। इससे अनेक पाठकों के मनों में यह सन्देह पैदा होगया होगा, कि हम स्वराज्य प्राप्ति के समय तक आर्यसमाज के वर्त्तमान सदाचार और समाजसुधार के कार्य को व्यर्थ समझते हैं तथा तब तक के लिये हम आर्य समाज को कांग्रेस का चोला पहिराकर इसे शुद्ध राजनैतिक संस्था बनाना चाहते हैं। इस लिये हम इस विषय में अपनी स्थिति को पाठकों के सन्मुख स्पष्ट करना आवश्यक समझते हैं। लेखक राजनीति को भी वैदिक धर्म का एक मुख्य अङ्ग समझता है। लेखक की सम्मति मे आर्य समाज का काम वेद द्वारा प्रतिपादित राजनैतिक सिद्धान्तों का सारे संसार मे प्रचार करना तथा उनके प्रकाश मे सारे संसार की राजनीति को ठीक रास्ते पर लेजाना मात्र ही है। वैदिक धर्म सार्व भौम है, अतः आर्य समाज को किसी देश, जाति अथवा दलविशेष की राजनीति मे सामूहिक रूप से प्रत्यक्ष हिस्सा नहीं ले सकता परन्तु आर्य समाज के सभासद वैभक्तिक रूप से किसी देश, जाति वा दल विशेष की राजनीति सामूहिक रुप से प्रत्यक्ष हिस्सा नहीं ले परन्तु आर्य समाज के सभासद वैयक्तिक रुपसे किसी देश देश जाति व दल विशेष की राजनीति मे प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्षरुप से (Directly or indirectly) स्वतंत्रता पूर्वक खुला हिस्सा लेसकते हैं। इस विषय पर अबतक काफी वादविवाद होचुका है, तथा इस पर काफी लेख लिखे जाचुके हैं, अतः इस पर फिर नये सिरे से युक्तियां देना तथा वादविवाद छेड़ना व्यर्थ है। यहाँ प्रसङ्ग से एक और बातका भी निर्देश करना उचित है। कांग्रेस के कुछ एक कट्टर अनुयायी वर्तमान समय में राजनैतिक आन्दोलन के सिवाय अन्य सब आन्दोलनों को व्यर्थ समझते हैं। इसी प्रकार कुछ एक कट्टर आर्य समाजी सामाजिक तथा धार्मिक सुधारों के पूर्ण हुए बिना स्वराज्यान्दोलन को व्यर्थ समझते हैं। लेखक की सम्मति में दोनों ही ग़लती पर हैं। अब तक का अनुभव हमें यह बताता है, कि स्वराज्यप्राप्ति के बिना भारत में धार्मिक और सामाजिक सुधारों का सफल होना असंभव है। इसी प्रकार धार्मिक और सामाजिक सुधारों के अभाव में स्वराज्यान्दोलन का सफल होना भी असम्भव है। इस लिये भारत को इस समय दोनों प्रकार के आन्दोलनों तथा दोनों प्रकार की संस्थाओं की ज़रूरत है। जिस प्रकार कि प्रकृति में प्रतिक्षण विविध प्रकार की अनेकों लहरें चल रही हैं, परन्तु वे एक दूसरे की विरोधिनी न होकर एक दूसरे की पूरक (Complementary) हैं। इसी प्रकार कांग्रेस तथा धार्मिक और सामाजिक सुधार करने वाली आर्य समाज आदि संस्थायें भी एक दूसरे की विरोधिनी नहीं है, अपितु एक दूसरे की पूरक हैं। दोनों का एक दूसरे का विरोध न करके पृथक २ क्षेत्रों में तथा पृथक २ Lines पर अपना २ काम करना चाहिये। आर्य समाज तथा हिन्दू सभा आदि संस्थायें धार्मिक और सामाजिक सुधार करके भारत माता की सेवा करें। तथा कांग्रेस स्वराज्यान्दोलन करके भारतमाता की परतन्त्रता की

बेड़ियां को काटे। इस प्रकार दोनों संस्थायें अपना अलग २ कार्य करती हुई एक दूसरे की सहायता करें तथा अपने देश और अपनी जाति को उन्नति और पूर्णता के शिखर पर पहुंचाने का यत्न करें। आशा है, कि पाठकगण अब हमारी स्थिति को अच्छी तरह से समझ गये होंगे। अतः हम इस प्रकरणागत प्रसङ्ग को यहीं छोड़ कर अब पूर्व प्रकृत विषय पर अपने विचार पाठकों की भेंट करना चाहते हैं।

१-आर्यसंगठनपर्व-सार्वदेशिक संगठन।

जब तक आर्यसमाज का अखिल भारतीय सार्वदेशिक संगठन सुदृढ नहीं होता तब तक आर्य समाज प्रान्तीयता की संकुचित सीमा को छोड़ कर कभी भी सार्वदेशिक रूप धारण नहीं कर सकता। आर्य समाज को समूचे भारत में व्यापक बनाने के लिये सब से पहिले इसके सार्वदेशिक संगठन को दृढ़ करना आवश्यक है। हमें बड़े शोक के साथ इन पंक्तियों को लिखना पड़ता है कि सङ्गठन का उपदेश देने वाले आर्य समाज के नेता भी दयानन्द शताब्दी जैसे पुण्यावसर पर भी अपने तुच्छ प्रान्तीय भावों, छोटी मोटी दलबन्दियों तथा अपनी मैं २ तू तू के छोड़ करके अपने महत्वपूर्ण सार्वदेशिक सङ्गठन को सुदृढ़ न कर सके। वैदिक धर्म तथा आर्य समाज को समस्त भारत में फैलाना अखिल भारतीय सार्वदेशिक सङ्गठन (सभा) का कार्य होगा। भारत के जिन २ प्रान्तों में अभी तक आर्य समाज का प्रसार नहीं हुआ उन २ प्रांतों में वैदिकधर्म का प्रचार करके प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाओं की स्थापना करना सार्वदेशिक सभा का कर्तव्य होगा।

(ख) प्रांतीय संगठनों की दृढ़ता—इस की उपयोगिता के विषय में अधिक लिखना व्यर्थ है। हमारे प्रांतीय संगठनों में जो कमजोरियां अब तक मौजूद हैं वे हम से छिपी नहीं हैं। हमारे प्रान्तीय संगठन तभी सुदृढ़ हो सकते हैं, जब कि प्रतिनिधि सभायें केवल मात्र सालाना बजट पास करना मात्र ही अपना कर्तव्य न समझें। अपितु समूचे प्रांतों से सम्बन्ध रखने वाले आर्यसामाजिक कर्तव्य की नीति को निर्धारित करना वे अपना कर्तव्य समझें। क्योंकि लेखक की सम्मति में प्रांत से सम्बन्ध रखने वाली हर एक आर्यसामाजिक क्रियाशीलता (Activity) का अन्तिम उत्तरदायित्व प्रांत-प्रतिनिधि सभाओं के ऊपर ही है।

भारत के जिन २ प्रांतों में आर्यप्रतिनिधि सभाओं का कार्यभार तथा उत्तरदायित्व दिन प्रतिदिन अधिकाधिक बढ़ता जाता है, उन २ प्रांतों में प्रचार के कार्य्य को ज़्यादा व्यापक बनाने तथा निरीक्षण और नियन्त्रण को ज़्यादा मज़बूत और प्रभावशाली बनाने के लिये स्थानीय संगठनों तथा ज़िला संगठनों को सुदृढ़ करना अत्यन्त आवश्यक है। इस कार्य्य की सफलता के लिये प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं की आधीनता में प्रांत भर में भिन्न २ प्रांतीय उपसभाओं की स्थापना होनी चाहिये। यह बात निर्विवाद है कि कोई भी प्रांतीय आर्य्य प्रतिनिधिसभा केवल एक दफ्तर द्वारा न तो प्रांत के छोटे २ गांवों में प्रचार का प्रबन्ध ही कर सकती है, और न वह अकेली प्रान्तीय आर्यसमाजों का भलीभांति निरीक्षण और शासन ही कर सकती है अतः प्रांतीय आर्य उपप्रतिनिधि सभाओं का स्थापित किया जाना अत्यन्त आवश्यक है। लेखक की सम्मति में प्रांतीय प्रतिनिधि सभाओं तथा उपप्रतिनिधि सभाओं का पृथक् २ कार्यविभाग तथा अधिकार विभाग का किया जाना शासन तथा प्रचार की सुगमता और सफलता की दृष्टि से अत्यन्त आवश्यक है। उपप्रतिनिधि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by...

सभाओं के स्थापित होने से प्रचार प्रणाली की समस्या भी किसी प्रकार की कठिनाई के बिना स्वयमेव ही हल हो जायेगी। हमें यह लिखते हुए बहुत हर्ष होता है। कि आर्य प्रतिनिधि सभा पञ्जाब ने अपनी आधीनता में लायलपुर उपप्रतिनिधि सभा को स्थापित करते हुए इस तरफ़ एक कदम बढ़ाकर के बहुत प्रशंसनीय कार्य किया है। प्रतिनिधि सभाओं तथा उपप्रतिनिधि सभाओं की रचना (Constitution) किस प्रकार की हो, यह विषय अत्यन्त लम्बा तथा वर्तमान लेख से असम्बन्ध है। अतः इस लेखमाला में इस विषय पर अपने विचार न प्रकट करते हुए शीघ्र ही हम एक पृथक लेखमाला में इस पर अपने विचार आयजनता के सम्मुख रखेंगे।

(ग) आर्यसेवा सङ्घों (सेवा समितियों) की स्थापना—इनकी उपयोगिता अपने नाम से ही स्पष्ट है। इनमें सदाचारी हिन्दू नवयुवक भी शामिल किये जा सकते हैं। सेवा सङ्घों के प्रधान कर्तव्य निम्न होंगे:--

१. प्रत्येक धर्म के अनाथ बच्चों, गरीबों, दीन दुःखियों और विदेशी यात्रियों की यथा शक्ति सेवा और सहायता करते हुए उन्हें प्रेम से अपने धर्म का सन्देश सुनाया तथा अपने धर्म की विशेषतायें बतलानी सेवा का कार्य करते हुए इस बात का ध्यान अवश्य रखना चाहिये। कि कहीं दूसरों को खुश करने के लिये अपने धर्म के सिद्धान्तों का उल्लङ्घन न हो जाय। सूअर का मांस खिला कर मुसलमानों की शुद्धि करना तथा कण्ठी माला धारण करके, तिलक छापे लगाकर मल्कानों के साथ हुक्का पीकर उनकी शुद्धि करना आदि साधन बतना सर्वथा वैदिकधर्म के विपरीत हैं।

२. मुसलमानों और ईसाइयों के हथकंडों से हिन्दू अनाथ बच्चों, देवियों और विधवाओं की रक्षा करना तथा उन्हें इनके पञ्जे से मुक्त करवाना।

३. नगर की आन्तरिक रक्षा तथा शांति रक्षा का कार्य अपने हाथों में लेकर भारत की गरीब प्रजा पर जुल्म करने वाली नौकरशाही पुलिस से भारतीय नागरिकों की रक्षा करनी।

४. जातीय त्यौहारों तथा मेलों में जनता की सेवा करना तथा इनके स्थानीय प्रबन्ध को अपने हाथ में लेकर इन्हें राष्ट्रीय बनाना। मेलों में होने वाली जातीय, सामाजिक तथा सदाचार सम्बन्धी घृणित बुराइयों को रोकना।

स्वराज्य संग्राम के विकट समय में राष्ट्रीय आन्तरिक सेना (राष्ट्रीय पुलिस) का काम करते हुए राष्ट्र की सेवा करनी।

(ङ) स्थान २ पर धर्मार्थ औषधालयोंकी स्थापना करनी—इस प्रकार के औषधालयों की उपयोगिता और आवश्यकता स्वयम् ही स्पष्ट है अतः इस विषय पर ज्यादा प्रकाश डालने की जरूरत नहीं है।

(२) प्रचार प्रणाली—इन २५ वर्षों में आर्य्य समाज की प्रचार प्रणाली में निम्न सुधारों के किये जाने की अत्यन्त आवश्यकता है—

(क) पुरोहित पद्धति की स्थापना—आर्य समाज के स्थानीय प्रचार तथा प्रभाव को स्थाई तथा अधिकाधिक प्रभाव शाली बनाने के लिये स्थानीय आर्य पुरुषों के सदाचार को उन्नत करने के लिये आर्य घरानों तथा आर्य देवियों को आर्य संस्कृत के रङ्ग में रंगने के लिये तथा उपर्युक्त सब कारणों से बढ़कर आर्य समाज तथा वैदिक धर्म की

सामान्य जनता का स्थाई अंग बनाते हुए उसे सर्व प्रिय बनाने के लिये पुरोहित पद्धति को प्रचलित करना कितना आवश्यक है, इसको प्रत्येक आर्य अनुभव कर रहा है। लेखक का तो यह पूर्ण विश्वास है, कि जब तक देश भर में सदाचारी और विद्वान् पुरोहितों का जाल न बिछ जावेगा, तब तक वैदिक धर्म भी सर्व प्रिय कभी न बन सकेगा अतः आर्य समाज को अपना स्थायी प्रभाव कायम करने तथा सर्व प्रिय बनने के लिये बिना किसी प्रकार का विलम्ब किये शीघ्र से शीघ्र पुरोहित पद्धति को व्यापी और सार्वजनिक बनाना चाहिये।

(ख) अब आर्य्य समाज की पुरानी अन्धेरी प्रचार प्रणाली में परिवर्तन करने का उपयुक्त समय आगया है। इस प्रकार की प्रचार प्रणाली मौजूदा समय में आर्य समाज के लिये हानिकारक सिद्ध हो रही है। इस विषय पर अब तक काफी लेख लिखे जा चुके हैं। इस विषय में जो अधिक जानना चाहते हैं वे आर्य पत्रिका में प्रकाशित श्री प० बुद्ध देव जी के लेख को एक बार अवश्य पढ़ें। अन्धेरी प्रचार तथा केवल निरन्तर जलसों द्वारा प्रचार करने की प्रणाली द्वारा आर्य समाज को जो २ हानियाँ हो रही हैं, उन में से एक हानि की तरफ पाठकों का ध्यान खींचना हम आवश्यक समझते हैं, क्योंकि उस पर अभी तक बहुत कम विचारकों ने ध्यान दिया है। वर्त्तमान अन्धेरी प्रचार तथा जलसा प्रणाली के कारण साधारण आर्य्य जनता तथा उस के नेताओं में तमाइश पसन्दगी तथा तमाशागीरी की प्रवृत्ति दिनों दिन बढ़ती जा रही है। प्रतिवर्ष जलसों तथा तमाशों की वृद्धि के साथ २ ठोस तथा गम्भीर कार्य का महत्त्व आर्य समाज में घटता जा रहा है। लेखक की सम्मति में आर्य्य जनता तथा नेताओं की वर्त्तमान प्रवृत्ति भविष्य में आर्य समाज के लिये बहुत घातक सिद्ध होगी, यदि इसकी वृद्धि को उचित सीमा तक जल्दी न रोका गया। उपर्युक्त प्रवृत्ति का सब से अधिक ज्वलन्त तथा परिवर्धित नमूना गुज़िश्ता शताब्दी ही है। लेखक की दृष्टि में भूतपूर्व शताब्दी का एक अपूर्व तथा शानदार मेले से एक कौड़ीभर भी ज्यादा मूल्यनहीं है। इस बढ़ती हुई घातक प्रवृत्ति को रोकने के लिये वर्तमान प्रचार प्रणाली में उचित परिवर्तन करना अत्यन्त आवश्यक है, अन्यथा इस से आर्य समाजको भविष्यमें भारी घाटा उठाना पड़ेगा।

(ग) प्रचार में एक और सामयिक परिवर्तन करनेकी भारी जरूरत है। इस समय खण्डनात्मक प्रचार की अपेक्षा मण्डनात्मक प्रचार की ज़्यादा जरूरत है। अब तक खंडन काफ़ी से ज्यादा किया जा चुका है। इस समय जनता को अपने धर्म की विशेषतायें बताने की ज्यादा ज़रूरत है। खंडन केवल उस स्थान पर किया जाय, जहाँ कि खंडन करना अत्यन्त आवश्यक हो, अथवा प्रतिपक्षियों का उत्तर देना पड़े, अथवा शास्त्रार्थ करना पड़े। इस प्रकार के अवसरों पर खंडन करते हुए शिष्टता और मर्यादा का उल्लङ्घन कभी भी न करना चाहिये। प्रचार में उचित धार्मिक सहिष्णुता का भी अवश्य ध्यान रखना चाहिये। गालियों की व्यर्थ बौछार करके दिलों को दुःखाने से फ़ायदा कुछ नहीं, इस में केवल नुकसान ही नुकसान है। हृदयों का आकर्षण केवल प्रेम द्वारा ही हो सकता है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

आर्यसमाज को दूसरों पर हमला करने में कभी भी पहल न करनी चाहिये, पर दूसरों के हमलों का जवाब खूब डटकर देना चाहिये। आर्यसमाज को शास्त्रार्थ वा प्रचार में शिष्टता तथा मर्यादा का उल्लङ्घन तब तक न करना चाहिये। जब तक की प्रतिपक्षी लोग अपने अत्यन्त बाधापूर्ण और उच्छृंखल व्यवहार से उसे "जैसे को तैसे" की नीति को अख्तियार करने के लिये बाधित न कर दें, जब तक कि ऐसा विकट समय न आ जाय, जिस समय की थप्पड़ का उत्तर थप्पड़ द्वारा देने के अतिरिक्त और कोई भी उपाय काम में न लाया जा सके। ऐसे समय दुष्ट का दमन करने के लिये उचित हद तक शिष्टता तथा मर्यादा को ढीला करने में कुछ भी बुराई नहीं है।

मौजूदा ज़माने में प्रचार करते समय एक और बात का भी ध्यान अवश्य रखना चाहिये, कि भारत के वर्तमान क्रांतिमय समय में सुधारकों तथा प्रचारकों को उन सुधारों की तरफ़ ज्यादा ध्यान देना चाहिये, जोकि हमारी जाति और देश के जीवन मरण के प्रश्न के साथ गहरा सम्बन्ध रखते हों। जिन सुधारों तथा जिन आवश्यक बातों के बिना हमारी जाति के जीवन को खतरे में पड़ने की अथवा उसके समूल नाश होने की संभावना हो। केवल मात्र शुष्क दार्शनिक सिद्धान्तों पर माथापच्ची करने की अपेक्षा इस समय क्रियात्मक जातीय सदाचार तथा जातीय सुधार पर ध्यान देने की ज्यादा जरूरत है। मैं इस असूल को स्वीकार करता हूं, कि दार्शनिक सिद्धान्तों का किसी भी जाति तथा व्यक्ति के जीवन और सदाचार पर बड़ा गहरा और स्थायी असर पड़ता है इस मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक सचाई को स्वीकार करता हुआ भी कि बहुत कुछ

---

*वर्तमान प्रचार प्रणाली में परिवर्तन तो अवश्य ही करना चाहिये, परन्तु जब तक स्थिर प्रचार पद्धति बड़े परिमाण में सफलता पूर्वक काम में नहीं लाई जा सकती तब तक वर्तमान पद्धति को ही संशोधित रूप में जारी रखना उचित है। स्थिर प्रचार पद्धति को स्थापित किये बिना वर्तमान पद्धति को बिल्कुल उड़ा देना मूर्खता का कार्य होगा। हमें वर्तमान अन्धेरी प्रचार प्रणाली में धीरे २ उचित परिवर्तन करते हुए इस को स्थिर प्रचार प्रणाली के रूप में परिवर्तित कर देना चाहिये। हमारी सम्मति में वर्तमान प्रचार प्रणाली में एका एक परिवर्तन न करके इसमें धीरे २ परिवर्तन करना चाहिये। अन्धेरी प्रचारप्रणाली से उत्कृष्ट प्रणाली को बड़े परिमाण में स्थापित किये बिना वर्तमान पद्धति को एका एक उड़ा देने से आर्य्य समाज तथा वेद प्रचार का सारा कार्य एक दम रुक जावेगा। लेखक की सम्मति में वर्तमान अन्धेरी प्रचार को एक दम आमूल चूल परिवर्तित करना अक्रियात्मक, असम्भव तथा आर्य समाज के लिये हानि कारक है। परन्तु इसका यह अभिप्राय नहीं है, कि लेखक वर्तमान पद्धति की उपयोगिता में विश्वास रखता है। लेखक को प्रचार की वर्तमान प्रणाली की उपयोगिता में आज तक कभी भी विश्वास नहीं हुआ, वह इसे भविष्य में आर्य समाज के लिये घातक तथा हानि कारक समझता है। इतना होते हुए भी लेखक एक दम अन्धआदर्शवादी नहीं है। वह विचारों में उदार (Liberal) तथा Rationalist होता हुआ भी कार्य के क्षेत्र में सदा ही उपयोगिता तथा क्रियात्मिकता का पक्षपाती रहा है।

हद तक जाति और व्यक्तियों के जीवन और सदाचार आधार का उनके दार्शनिक वा दिमागी विश्वास ही हुआ करते हैं इस वर्तमान क्रान्ति के क्रियात्मक सुधारों की अपेक्षा निरे शुष्क Mataphysical (पारलौकिक) सिद्धान्तों को ज्यादा महत्व देने के पक्ष में नहीं हूं वर्तमान समय में जब कि हमारी जाति के सामने जीवन और मरण की विकट समस्या उपस्थित है इन पारलौकिक सिद्धांतों पर वादविवाद कर के फूट असन्तोषकी अग्नि को व्यर्थ ही प्रज्वलित करना बुद्धिमत्ता का काम नहीं है यदि हमारी जाति दुनियां में जिन्दा रहेगी, तब तो भावी में भी इन गहन समस्याओं को हल किया जा सकेगा, यदि हमारी जाति वर्तमान संघर्ष में चकनाचूर होकर असमर्थ और निर्बल हो जावेगी, तथा भावी में भी सदियों तक इसी तरह गुलामी की कड़ी जंजीरों में जकड़ी रही, तब इन समस्याओं का हल करना हमारी जातिके लिये असम्भव हो जावेगा। अतः इस विकट क्रान्ति युग में हमें पारलौकिक तथा निरशुष्क दार्शनिक सिद्धान्तों की अपेक्षा वैयक्तिक और जातीय सदाचार के उत्थान तथा अन्य क्रियात्मक सुधारों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिये। इसका यह अभिप्राय नहीं, कि लेखक का पारलौकिक सचाई पर विश्वास नहीं है। बल्कि लेखक पारलौकिक metaphysical सच्चाईयों पर अटूट विश्वास रखता है।

२—आर्यकुमारों का संगठन—इसकी उपयोगिता पर ज्यादा लिखने की जरूरत नहीं है। आर्यकुमारों तथा आर्ययुवकों का वर्तमान संगठन कितना कमजोर है यह हम से छिपा हुआ नहीं है। आर्यकुमारों वा आर्ययुवकों के संगठन का उद्देश्य कुमारों और नवयुवकों को केवलमात्र शुष्क धर्मशिक्षा देना ही न होना चाहिये। अपितु उनकी शारीरिक, मानसिक तथा सदाचार सम्बन्धी सब प्रकार की उन्नति करना इस संगठन का उद्देश्य होना चाहिये। ताकि भावी में होने वाले स्वराज्य संग्राम के समय तथा उसके पीछे हमारी जाति, देश और धर्म की सेवा के लिये आर्य कुमारों तथा आर्ययुवकों में से उत्तमोत्तम धर्म प्रचारक, कुशल राजनीतिज्ञ, जाति के विश्वासपात्र तथा जाति, देश और धर्मपर हँसतेर न्योछावर होनेवाले, वीरयोद्धा पैदा हो सकें। आर्यकुमारों तथा आर्यनवयुवकोंको उन्नति करते हुए उन्हें जाति देश और धर्म की सेवा के लिये तैय्यार करना ही इस संगठन का एक मात्र उद्देश्य होना चाहिये। यदि स्वराज्य संग्राम के समय आर्यनवयुवकों ने जाति देश धर्म की सेवा में तथा उस के बाद स्वतन्त्रता के समय में अग्रणी हिस्सा लिया, तो निसंन्देह भारतीय जनता के हृदयों पर आर्यसमाज के प्रभुत्व होने में देरी न लगेगी।

३—शिक्षा प्रणाली—वर्तमान समय में आर्यसमाज की सारी शिक्षा तथा इसका क्रम बिलकुल ही असंगठित तथा आर्यसमाज के लिये लाभदायक बनाने के लिये इस क्षेत्र में निम्न सुधार करना परमावश्यक हैं।

(क)—आर्यविद्या सभाओं का संगठन—इस समय पञ्जाब में आर्यसमाज की शिक्षा संस्थायें इतनी ज़्यादा फैल चुकी हैं, कि इनके सङ्गठन तथा नियन्त्रण के लिये एक पृथक आर्य विद्यासभा के संगठन की जरूरत है। आर्य विद्यासभा के पृथक संगठन के पक्ष में निम्न युक्तियां दी जा सकती हैं:—

१—वेदप्रचार दलितोद्धार तथा शिक्षाके कार्यक्षेत्र इतने ज़्यादा विस्तृत हो चुके हैं

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

कि एक ही सभा इतने कामों का प्रबन्ध नियन्त्रण भली भांति नहीं कर सकती। वेदप्रचार तथा शिक्षा कार्य को सुव्यवस्थित करने के लिये सदा इनका अधिकाधिक संस्कार करने के लिये दोनों कार्यों को पृथक्२ सभाओं के आधीन सौंपना चाहिये। अन्यथा इन में से कोई भी कार्य सफलता पूर्वक नहीं चलेगा।

२—आर्य प्रतिनिधि सभा जैसी वृहद् सभा-जिस में कि शिक्षा विशारदों का प्रायः सर्वथा अभाव सा है, शिक्षा के गहन विषयों पर विचार करने में सर्वथा असमर्थ है। शिक्षा का प्रबन्ध करने वाली संस्था बहुत बड़ी न होकर के छोटी तथा शिक्षाविज्ञ विद्वानों से मिलकर बनी होनी चाहिये।

३—अब तक का अनुभव भी यही बतलाता है कि आर्य प्रतिनिधि सभा को वेद प्रचार के काम से ही इतनी कम फुरसत होती है, कि उसमें गुरुकुल के बजट पर भी पूरी बहस नहीं होने पाती। आज तक प्रतिनिधि सभा को बजटों के सिवाय शिक्षा सम्बन्धी अन्य बातों पर न तो विचार करने का मौका ही मिलता है और न वह इस लायक ही है, कि वह शिक्षा जैसे गहन विषयों पर बहस कर सके। इसका परिणाम यह है, कि शिक्षा-जिस पर कि आर्य समाज की वेद प्रचार की अपेक्षा कई गुणा ज्यादा धन और शक्ति व्यय होती है, असङ्गठित और अनिश्चित होने के कारण लाभदायक होने के स्थान पर वेद प्रचार के मार्ग में बाधक तथा आर्य्य समाज के लिये हानिकारक और भार रूप सिद्ध हो रही है। इस लिये उपर्युक्त हानियों को दूर करने के लिये आर्य विद्या सभा का पृथक् स्थापना करनी अत्यन्त आवश्यक है।

४—आर्य प्रतिनिधिसभा में विद्यमान् दलों की शक्ति तथा इसके अधिकारी वर्ग के परिवर्तन के साथ२ प्रतिनिधिसभा की शासन नीतिका परिवर्तित होना भी स्वाभाविक है। प्रतिनिधि सभा तथा इस के अधिकारी वर्ग के शीघ्र परिवर्तन का इसकी शिक्षासंस्थाओं तथा इनकी शिक्षासम्बन्धी नीति पर बुरा प्रभाव पड़ता है। शिक्षा तथा शिक्षा संस्थायें स्थिर वस्तु हैं, इन में शीघ्र २ परिवर्तनों का होना अत्यन्त हानिकारक है। किसी भी शिक्षा संस्था तथा उसकी नीति में शीघ्र २ परिवर्तन होना उसके स्थिर विकास में अत्यन्त बाधक है। एक पौधा जिसे कि जल्दी २ एक स्थान से उखाड़कर नित नये २ स्थानों पर लगाया जाय, उस पौधे की आयु थोड़े ही दिनों के बाद समाप्त हो जावेगी। इस प्रकार वह संस्था जिसकी नीति में जल्दी २ परिवर्तन होते रहते हैं, शीघ्र परिवर्तनशील पौधे की तरह अपनी युवावस्था आने से पूर्व ही कुम्हलाकर (ह्रासावस्था को प्राप्त होकर) जल्दी ही नष्ट हो जावेगी। गुरुकुल कांगड़ी की अस्थिरता तथा इसका निराशारूपी काले बादलों में हमेशा छिपा रहने वाला भविष्य भी हमें इसी परिणाम पर ही पहुंचाता है, कि शिक्षासंस्थाओं की नीति तथा उसके प्रबन्ध और नियमों में शीघ्र २ परिवर्तनों का होना उनकी उन्नति, वृद्धि, स्थिरता तथा उनके फलने फूलने में अत्यन्त बाधक है।

५—शासनकारिणी तथा नियामक संस्थाओं में व्यक्तियों तथा वैयक्तिक दलोंका उत्कर्ष और पतन प्रायः होता रहता है। उक्त संस्थाओं में ऐसा होना स्वभाविक है। इस प्रकार के परिवर्तनों से शासन तथा नियम निर्माण के कार्यों में बाधा नहीं पड़ती। परन्तु शिक्षा संस्थायें उन व्यक्तियों या उन

समितियों के हाथों में होनी चाहियें, जिन का कि उन शिक्षासंस्थाओं तथा उन की शिक्षाप्रणाली पर पूर्ण विश्वास हो। लेखक की सम्मति में प्रतिनिधि सभा या उसकी अन्तरंग सभा में शक्तिसंपन्न व्यक्तियों या वैयक्तिक दलों के हाथों में गुरुकुल तथा अन्य आर्यशिक्षा संस्थाओं का शीघ्र २ हस्तान्तरित होते रहना बहुत ज्यादा हानिकारक है। इस प्रकार की प्रणाली में अस्थिरता का होना पहिला महादोष है। दूसरा दोष इस से भी ज्यादा भयानक है। इस प्रकार की प्रणाली में इस खतरे की बहुत ज्यादा सम्भावना है, कि जब कभी २ गुरुकुल आदि आर्य शिक्षा संस्थायें अधिकार संपन्न व्यक्तियों के हाथों में चली जाती हैं, जिनका कि गुरुकुल शिक्षाप्रणाली पर विश्वास नहीं होता, उस समय गुरुकुल की हालत उस सेना जैसी हो जाती है, जिस के सेनापति का अपनी सेना की योग्यता पर तथा अपनी विजय पर विश्वास नहीं होता। उस समय केवल अपनी शान और नकली (Prestige) की रक्षा के लिये गुरुकुल की गाड़ी को जबर्दस्ती छकड़े की चाल से चलाया जाता है। इस प्रकार की स्थिति आर्यशिक्षा संस्थाओं के लिये बहुत भयानक है। अतः आर्य समाज की शिक्षासंस्थाओं की स्थिरता और उन्नति के लिये आर्य प्रतिनिधिसभा की (Conditional) अध्यक्षता में विद्यार्यसभा को शीघ्रही स्थापित करना चाहिये।

आर्यविद्या सभा के निम्न मुख्य कार्य होंगेः—

१. यह निश्चय करना कि भावी में आर्य समाज को किस प्रकार की शिक्षाप्रणाली तथा किस प्रकार के शिक्षणालयों का प्रसार करना चाहिये।

२. आर्यसमाज के वर्तमान शिक्षणालयों को संगठित करके उनका सुप्रबन्ध और नियन्त्रण करना।

३. वर्तमान शिक्षा का संगठन तथा भावी में शिक्षा के प्रसार के उपाय सोचना। तथा उन्हें क्रियारूप में परिणत करना।

४. आर्यसमाज के शिक्षणालयों के पाठ्यक्रम को सुव्यवस्थित तथा निश्चित करना।

५. आर्यसमाज के वर्तमान शिक्षणालयों को आर्यसमाज के लिये अधिकाधिक उपयोगी बनाने के तरीकों पर विचार करना तथा उन्हें क्रियारूप में परिणत करना।

भावी में आर्यसमाज को किस प्रकार के शिक्षणालयों का विस्तार करना चाहिये तथा उसकी शिक्षासम्बन्धी भावी नीति क्याहोनी चाहिये इस पर हम संक्षेप से अपनी सम्मति आर्य्यजनता के सामने रखते हैं:—

लेखक की सम्मति में सामान्य शिक्षा फैलाना आर्यसमाज का काम नहीं है। यह कार्य राष्ट्र state का है। आर्यसमाज को तो केवल उसी शिक्षा का ही प्रचार करना चाहिये जो कि आर्यसमाज के मुख्य उद्देश्य वेद प्रचार में सहायक हो। इसी आधारभूत सिद्धान्त को ध्यान में रखकर आर्यसमाज की भावी शिक्षानीति पर विचार करना चाहिये।

(ख) गुरुकुल शिक्षा प्रणाली—गुरुकुल शिक्षाप्रणाली की सर्वोत्कृष्टता तथा इसके वेदानुकूल होने में किसी को ज़रा भी सन्देह नहीं है। परन्तु राष्ट्र की वर्तमान पराधीनता की अवस्था में गुरुकुल शिक्षाप्रणाली का फलना फूलना कठिन ही नहीं, अपितु असम्भव है। अतः गुलामी की वर्तमान दशामें

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

आर्यसमाज को और नये २ गुरुकुल न खोल कर पुरानी गुरुकुल संस्थाओं को self-supporting बनाने में ही अपनी सारी शक्ति लगा देनी चाहिये। पुरानी गुरुकुल संस्थाओं (Self-supporting) तथा स्थिर बनाये बिना वर्तमान दशा में हर वर्ष नये २ गुरुकुल खोलते जाना आर्यजनता के लिये बहुतही अदूरदर्शिता का कार्य होगा वर्तमान गुरुकुल संस्थाओं को स्थिर तथा अपने पैरों पर आप खड़ा होने के लायक बनाने के बाद आर्यजनता को अपनी सारी शक्ति, अपनी प्रियतम संस्था गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी को हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड यूनीवर्सिटीज़ की तरह विस्तृत, सर्वोपयोगी तथा विश्वविख्यात बनाने में लगा देनी चाहिये।

(ग) विद्यार्थियों के सदाचार तथा उन की अन्य शक्तियों को नाश करने वाली और राष्ट्र को गुलामी की कड़ी ज़ञ्जीरों में जकड़ने वाली नौकरशाही तालीम की प्रसारक शिक्षा संस्थाओं को लेखक आर्यसमाज तथा देश दोनों के लिये अत्यन्त घातक समझता है। इस प्रकार की शिक्षा संस्थायें, सदाचार, भारतीय आध्यात्मिक सभ्यता तथा स्वातंत्र्य और देशप्रेम के भावों की विघातक हैं। नौकरशाही तथा विदेशीय पाश्चात्य सभ्यता की जड़ों को पुष्ट करने वाली शिक्षासंस्थाओं को आर्यसमाज, वैदिक मिशन, तथा ऋषि दयानन्द के नाम पर खोलना आर्यों के लिये बड़ी शर्म की बात है। लेखक की नम्र सम्मति में इनमें से कोई भी गुलामी, देशविद्रोह तथा पाश्चात्य जड़प्रधान सभ्यता की शिक्षा नहीं देता। यदि शिक्षा की दृष्टि को थोड़ी देर के लिये अपनी आँखों से परे रख दिया जाय, तब भी इस प्रकार के स्कूल अत्यन्त अधिक खर्चीले होने के कारण वेदप्रचार तथा आर्य्यसमाज के स्थानीय कार्यों में अत्यन्त अधिक बाधाएं डालते हैं। इसलिए इस प्रकार की नौकरशाही की शिक्षा संस्थाओं को वेद तथा आर्यसमाज की (Spirit) के विरुद्ध होने के कारण तथा वेदप्रचार और आर्यसमाज के लिये निरर्थक होने के कारण भावी में आर्यसमाज के नाम पर कभी भी खोलना न चाहिये।

(घ) पुत्री पाठशालाएं—इस समय भारत केवल १ प्रतिशतक स्त्रियां शिक्षित हैं। शेष ९ प्रति शतक स्त्रियां अशिक्षित हैं। स्त्रीशिक्षा की भारी आवश्यकता के अतिरिक्त स्त्रियों में आर्यसमाज तथा वैदिकधर्म के प्रचार की कितनी ज़्यादा ज़रूरत है, इस को प्रत्येक आर्य्य अनुभव करता है। देवियों में आर्यसमाज की शिक्षा और प्रचार का अभाव ही इसकी असफलता का एक मुख्य कारण है। अतः देवियों को आर्यसंस्कृति से सुसंस्कृत करने के लिये आर्य्यसमाज को इन्हें अपनी वैदिकशिक्षा देने की कितनी भारी ज़रूरत है, इसपर ज्यादा लिखना अनावश्यक है। पुत्री पाठशालाओं को चलाने के लिये अंग्रेज़ी स्कूलों की तरह बहुत भारी खर्चा की ज़रूरत नहीं है। परन्तु देवियों के सुसंस्कृत और सुशिक्षित होने से आर्य्यसमाज और हमारे देश दोनों को बहुत ज्यादा लाभ होगा। अतः भावी में आर्य्यसमाज को स्त्रीशिक्षा के लिये पहिले से भी ज्यादा ज़ोर शोर से काम करना चाहिये।

(ङ) संस्कृत पाठशालायें तथा उपदेशक विद्यालय—आर्य्य संस्कृत पाठशालायें तथा उपदेशक विद्यालय आर्य्यसमाज के लिये अत्यन्त उपयोगी और लाभदायक हैं। इस प्रकार की संस्थाओं की शिक्षा से जहां

वैदिक संस्कृत तथा संस्कृत साहित्य का प्रसार होता है, वहां इस के साथ २ इस प्रकार की संस्थाओं से स्थानीय पुरोहित पैदा किये जा सकते हैं। आर्य्यसंस्कृत पाठशालायें आर्य्यसमाज के लिये तभी ज्यादा उपयोगी हो सकती हैं, जब कि उनमें प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री आदि सरकारी परीक्षाओं के कोर्सों के साथ २ उच्च धर्मशिक्षा का समावेश किया जाय। और धर्मशिक्षा को उनमें आवश्यक विषय (Compulsary subject) रखा जाय*।

(५) उच्च वैदिकसाहित्य का प्रकाशन—इस विज्ञान और तर्क के युग में उच्च वैदिक साहित्य की कितनी भारी ज़रूरत है, इसे बताने की ज्यादा ज़रूरत नहीं, आर्य्यसमाज में इस समय तक उच्च साहित्य की कितनी ज्यादा कमी है, यह बात आर्य्यजनता से छिपी हुई नहीं है। दिन रात वेदों के निरर्थक गीत गाने मात्र से ही वैदिकधर्म कभी भी सार्वभौम नहीं बन सकता। वर्तमान युग में आवश्यकता इसबात की है, कि हम सभ्य तथा वैज्ञानिक जगत के सामने वेदों की अत्युच्च शिक्षाओं तथा उसकी वैज्ञानिक और दार्शनिक सचाईयों को रक्खें। ताकि हम दुनिया के उच्च कोटि के विद्वानों और दार्शनिकों को वैदिक धर्म की पूर्णता पर विश्वास करा सकें। लेखक का यह पूर्ण विश्वास है, कि जिस दिन दुनिया के उच्चकोटि के विद्वान् पुरुष वेदों के सामने अपना सिर झुका देंगे, उस दिन आर्य्यसमाज और वैदिकधर्म के सार्वभौम और दिग्विजयी होने में कुछ भी सन्देह न रहेगा। परन्तु यह कार्य्य उच्च वैदिक साहित्य को सम्पादित किये बिना नहीं हो सकता। आर्य्यसमाज का दावा तो बहुत ऊंचा है, कि वेद सब सत्य विद्याओं तथा विज्ञानों के मूल हैं, परन्तु आज तक वेदों में से बहुत ही थोड़ी वैज्ञानिक सचाइयों को निकाला गया है। जब हम इस बात पर विचार करते हैं; कि अब तक वेदों में से कितने विज्ञानों के आधारभूत मूलकसिद्धांतों का पता लगाया गया है। तब हमें अत्यन्त निराश होना पड़ता है। यह सन्तोष का विषय है, कि कुछ थोड़े से सालों से कुछ एक आर्य्य विद्वानों का ध्यान वेदों की खोज करने की ओर खिंचा है, उन्होंने इस क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य्य भी किया है। श्री पं० सातवलेकरजी, स्वर्गीय श्री प० शिवशङ्करजी काव्यतीर्थ, श्री प० विश्वनाथ जी, श्री प० चन्द्रमणि जी तथा श्री प० देवशर्म्मा जी विद्यालङ्कार के नाम इन विद्वानों में से विशेष उल्लेखनीय हैं। परन्तु शोक है, कि अब तक आर्य्यजनता का ख्याल इस ओर बहुत ही

*उपदेशक विद्यालय के अधिकारियों की सेवा में हमारा यह नम्र निवेदन है, कि उन्हें उपदेशक विद्यालय की शिक्षा को यथ शक्ति उद र (Liberal) तथा विस्तृत (Comprehensive) बनाना चाहिये। सामान्यतः स रे संसार को तथा विशेषतः भारत को इस समय कट्टर, असहिष्णु तथा पौराणिक पण्डों और मुल्ले मौलवियों की तरह तर्क (Logic) दर्शन (Philosophy), विज्ञान (Science), तथा सामान्य बुद्धि शून्य निरे प्रमाण वाक्य तथा बुद्धि पर ताला लगा कर दिन रात शब्दों तथा पंक्तियों पर व्यर्थ माथापच्ची करने वाले अन्धविश्वासी प्रचारकों और पुरोहितों की बिल्कुल जरूरत नहीं है। इस प्रकार के बुद्धि तथा ज्ञान के घोर शत्रु स्वार्थी पांडे अब तक संसार में काफी गुल खिला चुके हैं। इस विज्ञान के युग में अब इनकी दाल गलनी अत्यन्त असम्भव है। ऐसे अन्धविश्वासी, कट्टर, बगुलाभक्त पाँधों और पुरोहितों को हमारा दूर से ही नमस्कार है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

कम गया है, आर्य्यजनता ने टिकटों तथा खेल तमाशों में शताब्दि के अवसर पर ७५ लाख रुपयों से कम धनन फूका होगा। परन्तु शताब्दि के शुभावसर पर सार्वदेशिक सभा की बृहत् प्रकाशन गृह विषयक अपील की जो दुर्दशा हुई है वह किसी भी आर्य से छिपी हुई नहीं हैं। इस पर ज्यादा लेखनी चलाना व्यर्थ है। यह आर्य्यसमाज के लिये बड़ी शर्म की बात है। अभी तक वैदिक धर्म के सिद्धान्तों पर वैज्ञानिक और दार्शनिक दृष्टि से उत्तम कोटि के गंभीर ग्रन्थ तो नाम मात्र ही लिखे गये हैं। प्राचीन षट्दर्शनों की बुद्धि युक्त वैज्ञानिक और दार्शनिक व्याख्या पर तो अब तक किसी आर्य विद्वान् का ध्यान ही नहीं गया। षट्दर्शनों पर मध्य कालीन पंडितों द्वारा की गई शब्दाडम्बरपूर्ण निरर्थक टीका-टिप्पणियों से कोई भी विज्ञान प्रिय विद्यार्थी कभी भी सन्तुष्ट नहीं हो सकता * यदि आर्य समाज अपने धर्म को सार्व भौम बनाना चाहते हैं, तो उसे योरोप के (Matterialist) तथा अज्ञेयवादी वैज्ञानिकों और दार्शनिकों से कड़ा मुकाबिला करना पड़ेगा, इन से लोहा लिये बिना आर्य समाज कभी भी सार्वभौम नहीं बन सकता। अतः इस महत्व पूर्ण कार्य को पूरा करने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक हैं, कि आर्यसार्वदेशिक सभा तथा अन्य प्रान्तीय प्रतिनिधि सभायें अपनी अध्यक्षता में शीघ्र ही अनुसन्धान गृहस्थापित करें, जिन का कार्य्य वेदों की खोज के अतिरिक्त वेदों तथा भारतीय दर्शनों के संबंध में अत्यन्त उच्च कोटि के वैज्ञानिक तथा दार्शनिक साहित्य को सम्पादित करना हो ताकि आर्य समाज की साहित्य विषयक त्रुटि शीघ्र ही दूर होजावे।

आर्य संगठन पर्व में निर्दिष्ट (प्रस्तावित) उपर्युक्त चार कार्यों में से पहिले तीन (Steps) तो केवल मात्र आर्यसामाजिक पुरुषों से ही संबंध रखते हैं, परन्तु चौथा वैदिक साहित्य को प्रकाशित करने का कार्य आर्यों तथा हिन्दुओं दोनो का सांझा है। संगठन पर्व का अगला प्रोग्राम जोकि संगठन पर्व के उपर्युक्त सब कार्यों से मुख्य है-भारत को अपनी मातृ भूमि और पुण्य भूमि (Secred or holyland) समझाने वाली सारी आर्य जाति के लिये सामान्य है। इस को पूर्ण करने के लिये आर्य समाजियाँ तथा पौराणिक हिन्दू भाईयों-दोनो को एक दूसरे से कन्धा मिला कर खूब जोर शोर से काम करना चाहिये।

---

* नोट—इस उपर्युक्त प्रतिज्ञा (Statement) की सिद्धि के लिये हम पाठकों के सामने दर्शन का स्थूल नमूने के तौर पर पेश करते हैं।

नोट—(कोष्ठान्तर्गत शब्द हमारे अपने हैं-सूत्रकार के नहीं)।

रह—सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था प्रकृतिः (एषां विषमावस्थानञ्च कार्य जगत्, विकृतिर्वा) सांख्य सूत्र के इस अंश की व्याख्या मध्यकालीन टीका टिप्पणियों के पढ़ने से बिलकुल स्पष्ट नहीं होती। परन्तु मि० हर्बर्ट स्पेंसर द्वारा रचित "फर्स्ट प्रिन्सिपल" नामक ग्रन्थ के द्वितीय खंड में वर्णित विकासवाद सम्बन्धी अध्यायों को पढ़ने से उपर्युक्त सूत्रांश की व्याख्या भली भान्ति समझ में आजाती है यहां साम्यावस्था से (Homogenious State) तथा विषमावस्था से (Heterogenious State) का अभिप्राय गृहीत होता है। निम्न विकास सम्बन्धी व्याख्या से उपर्युक्त सूत्रांश की सत्यता में कुछ भी संदेह नहीं रहता-मध्य कालीन पंडितों की व्याख्या से दर्शनों के बहुत सारे स्थल कल्पित और Mysterious

प्रतीत होते हैं पाठकों के ज्ञानार्थ हम एक और उदाहरण यहां पेश करते हैं।

"पृथिव्यपतेजवायवाकाश दिक्कालमनसात्मानो नवद्रव्याः" इन नौ द्रव्यों की व्याख्या कारिकावलीकार पं० विश्वनाथ पञ्चानन भट्टाचार्य ने बहुत ही Mysterious तथा विज्ञान विरुद्ध की है। कारिकावली के पढ़ने से यह प्रतीत होता है, कि पृथिवी, अप (पानी वा रस), तेज, वायु, आकाश ये पांच मूल तत्व हैं। ये व्याख्या बिल्कुल Absurd और विज्ञान विरुद्ध है। पृथिवी आदि उपर्युक्त ५ द्रव्य ५ पृथक् २ मूलतत्व नहीं है, परन्तु प्रकृति वा द्रव्य (Matter) की पांच भिन्न २ अवस्थाय Stages हैं, जिन में कि द्रव्य (Matter) का विकास होता है, अथवा द्रव्य विकसित होता हुआ जिन जिन अवस्थाओं में परिणत होता है। आकाश से (Ether वा Ethereal stage), वायु से (Gases तथा Gaseous stage), तेजसे (Heat प्रधान पदार्थ-सूर्यरश्मि आदि) अपसे (द्रव तथा द्रवावस्था), पृथिवी से (Solid) का ग्रहण अभीष्ट है। दिक् और काल शब्दों से स्थान और समय (Space और time) का ग्रहण अभीष्ट है, कान्ट के अनुसार स्थान और समय का ज्ञान स्वाभाविक (Aproiri or intuitional) है स्थान और समय का ज्ञान ही हमारे सारे ज्ञान का आधार है। इन के विना हम कोई भी ज्ञान नहीं कर सकते) यदि नौ द्रव्यों की इस प्रकार से व्याख्या कीजाय, तभी वह विज्ञान और दर्शन के अनुकूल बुद्धियुक्त (Rational) हो सकती है। लेखक का यह पूर्ण विश्वास है, कि हमारे षट् दर्शन विज्ञान और तर्क के अनुकूल हैं, परन्तु मध्यकालीन व्याख्याकारों ने विज्ञान से अनभिज्ञ होने के कारण शब्दाडम्बर पर ज्यादा जोर देकर हमारे दर्शनों को बिल्कुल बिगाड़ दिया है। अतः हम आज विद्वानों का ध्यान इस तरफ खींचना चाहते हैं कि वे षट् दर्शनों की बुद्धियुक्त व्याख्या करके प्राचीन ऋषियों द्वारा प्रकाशित सच्चाईयों को शीघ्र ही संसार के सामने रखने का यत्न करें।

५—आर्य सङ्गठन पर्व का सब से मुख्य कार्यक्रम—

हिन्दूसङ्गठन—इसकी अवश्यकता स्वयं ही स्पष्ट है। हिन्दू संगठन को सुदृढ़ बनाने के लिये जिन कुरीतियों को दूर करने का तथा जिन २ उपायों को ग्रहण करने का हम ने इस लेख में प्रस्ताव किया है, कि वे उपाय इतने स्पष्ट और निर्विवाद हैं, कि उनकी विना किसी प्रकार की व्याख्या किये हुए, उनका गिनाना मात्र ही उपयुक्त होगा-

हिन्दू संगठन को सुदृढ़ करने के लिये लेखक की सम्मति में निम्न कार्यक्रम को क्रिया रूप में परिणित करने की ज़रूरत है—

(क) दलितोद्धार तथा दलित जातियों का संगठन-दलित जातियों को संगठित करने के लिये उनकी सामाजिक और आर्थिक दशा को उन्नति करना अत्यन्त आवश्यक है। दलित जातियों को आर्थिक दशा को उन्नत करने का सब से उत्तम और एक मात्र क्रियात्मक उपाय छोटे २ दस्तकारी स्कूल खोल कर दलित जाति के कुमारों तथा नवयुवकों को दस्तकारी सिखाना ही है।

(ख) विधवा विवाह का प्रचार तथा स्थान २ पर अनाथालय तथा विधवाश्रम स्थापित करके हिन्दू अनाथों तथा विधवाओं को ख्वाजा हसन निज़ामी तथा ईसाइयों और मुक्ति फ़ौज के प्रचारकों के घृणित और गुप्त हथकन्डों से बचाना -

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

(ग) हिन्दू सेवा सङ्घों तथा हिन्दू रक्षक दलों की स्थापना तथा इनका सङ्गठन—इन की ज़रूरत और इनका उद्देश्य तथा कार्यक्रम इतना अधिक स्पष्ट है, कि इसकी व्याख्या करना निरर्थक है। इनमें आर्यसमाजी भी शामिल हो सकते हैं। यदि आर्यों और हिन्दुओं के सेवासङ्घ और रक्षकदल पृथक २ भी संगठित हों, तो इस अवस्था में दोनों को एक दूसरे की सहायता ही करनी चाहिये, द्वेष नहीं।

(घ) बाल विवाह को जल्दी से जल्दी बन्द करना।

(ङ) वर्तमान कृत्रिम जन्ममूलक जात पात के बन्धनों को समूल नष्ट करना—इस विषय पर जितना लिखा जाय, उतना ही थोड़ा है। लेखक की सम्मति में हिन्दू जाति की सर्व सामाजिक बुराइयों का एक मात्र मूल कारण तथा हिन्दुओं की फूट, हिन्दुओं के ह्रास, तथा शुद्धि, दलितोद्धार और हिन्दु सभ्यता के प्रसार न होने का एक मात्र कारण हिन्दू जाति की वर्तमान कृत्रिम-जन्ममूलक जातपात व्यवस्था ही है। यदि आर्यवा हिन्दू जाति संसार में अपनी भी सत्ता को स्थिर रखना चाहती है, तो उसे ३५०० से ऊपर विद्यमान जातियों और उपजातियों (Casts और Subcasts) को तोड़ना पड़ेगा। इन को समूल नष्ट किये बिना हिन्दू जाति के निस्तारे का और कोई उपाय नहीं।

(च) कन्या विक्रय तथा अत्यन्त अधिक दहेज देने की प्रथा को यथा शीघ्र रोकना। इनके अतिरिक्त हिन्दुओं की विवाह पद्धति को कम खर्चीली बनाना।

(छ) शारीरिक बल और वीरता को प्रोत्साहित करना—आत्मसम्मान हीन, कायर और निर्बल जातियां संसार के लिये भार तथा शापरूप हैं। यदि हिन्दू जाति संसार में जीवित रहना चाहती है तथा अपने को जातियों की वर्तमान दौड़ में संसार की अग्रणी जातियों के साथ रखना चाहती है, तो उसे अपने को वीर और बलवान बनाना चाहिये। हिन्दू जाति के लिये जीवित रहने का एकमात्र यही मार्ग है। यदि वह इस मार्ग का अनुसरण नहीं कर सकती तो उसे जल्दी ही अपनी मृत्युशय्या और अन्त्येष्ट संस्कार की प्रतीक्षा करनी चाहिये। मृत्युदेवता भी संसार की इस सब से अधिक बूढ़ी और मुर्दा जाति की बलि के आस्वादन के लिये लालायित और अधीर हो रहा है। इस लिये हिन्दू जाति को मौत के विकराल पंजे से छुड़ाने के लिये हमें शीघ्र ही निम्न उपायों को क्रियात्मक रूप में परिणत करना चाहिये।

१—सुधारकों प्रचारकों और लेखकों को अपने व्याख्यानों और लेखों द्वारा हिंदुजाति में क्षात्र धर्म की रूह (Spirit) फूंकनी चाहिये।

कवियों तथा गायकों को अपनी कविताओं तथा संगीतों द्वारा इन्हीं भावों का प्रचार करना चाहिये। नाटकों में भी वीर रस प्रधान दृश्यों का अभिनय होना चाहिये।

२ शारीरिक बल तथा वीरता को बढ़ाने वाली खेलों को आर्यजाति के जलसों का प्रधान और आवश्यक अङ्ग बनाया जाय।

३—स्थान २ पर अखाड़े स्थापित किये जांय तथा पुरस्कार और शिक्षा आदि साधनों द्वारा आर्यजाति के नवयुवकों को अपना शारीरिक बल और वीरता बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित किया जाय।

५—शारीरिक बल, उत्साह, साहस और वीरता पैदा करने वाली खेलों के स्थान

नीय, प्रान्तीय, और सार्वदेशिक वृहत-सान्मुख्य (टूर्नामेन्ट) स्थापित किये जांय।

६—इस प्रकार के खेलों को आर्यों तथा हिन्दुओं के प्रत्येक जातीय और स्थानीय व्यवहार का आवश्यक और प्रधान अङ्ग बनाया जाय। हमारी सम्मति में विजय दशमी (दिसहरा) दिवाली और कृष्णजन्माष्टमी के त्योहारों पर नवयुवकों के सदाचार ब्रह्म और ब्रह्मचर्य को नष्ट करने वाले तथा उनमें नपुंसकपने के भावों को पैदा करने वाले रासलीला तथा रामलीला आदि बेहूदे और बहशियाने नाच गान के तमाशों को बन्द करके इनके स्थान पर पुरुषत्व, संघर्ष और वीरता के भावों को उत्तेजित करने वाले नकली युद्धों को प्रचलित किया जाना चाहिये।

७—छोटी किस्म की तलवार वा अथवा और किसी अस्त्र को हिन्दू जाति का सामयिक धर्मचिन्ह नियत किया जाय। सरकार को इस बात के लिये बाधित किया जाय कि वह हमारे उस धार्मिकचिन्ह रखने के मार्ग पर कानूनी प्रतिबन्ध न खड़ा करे।

८—हिन्दूजाति में निष्ठुरता तथा कायरता के पाप को पैदा करने वाली वर्तमान उचित हद्द से बढ़ी हुई सूदखोर की निन्दा करके हिन्दुजाति नवयुवकों में दस्तकारी तथा हुनर जैसे स्वतन्त्र तथा परिश्रम प्रधान पेशों के लिये प्रेम पैदा किया जाय। इससे दो लाभ होंगे, एक तो परिश्रम करने से हिंदू नवयुवकों का शारीरिक बल, उत्साह और साहस बढ़ेगा। दूसरा लाभ इससे यह होगा, कि पंजाब में हिन्दू नवयुवकों के लिये बढ़ती हुई बेकरारी का प्रश्न इसके कारण सरलतापूर्वक हल हो जावेगा लेखक सूद लेने को पाप नहीं समझता। परन्तु सीमा से ज़्यादा सूद लेकर ग़रीबों का खून चूसना निस्संदेह महापाप है। यह महापाप हिन्दू जाति इस समय कर रही है, इसके कहने में हमें ज़रा भी संकोच नहीं है। हमारे उपर्युक्त कथन में असत्य का किञ्चिन्मात्र भी लेश नहीं है। एक संपूर्ण जाति का केवल सूदखोरी आराम पसन्द, निष्ठुर और निठल्ली वृत्ति पर आश्रित होने का क्या भयङ्कर परिणाम होता है। यहूदी जाति के सर्वनाश तथा हिन्दूजाति की वर्तमान अधोगति का सादृश्य करने से पाठकों को यह बात अच्छी तरह से समझ में आजावेगी। धन से अनुचित मोह तथा उचित सीमा से बढ़ी हुई केवल मात्र सूदखोरी की वृत्ति ही दोनों जातियों की निष्ठुरता, आराम पसन्दगी तथा कायरता की एक मात्र कारण हैं।

लेखक की नम्र सम्मति में झूठी अहिंसा तथा जगत को मिथ्या कहने वाले वेदान्त के तिकम्मे गीतों ने हिन्दू जाति को कायर, नपुंसक, मक्कार और मुर्दा बना दिया है। इस संघर्ष ज़माने में झूठी अहिंसा तथा नकली वेदान्त के झूठे और तिकम्मे गीतों को ताक पर रख के प्रत्येक हिन्दू को प्रातः काल गीता के निम्न श्लोकों का पाठ अवश्य करना चाहिये—

१—नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो, न शोषयति मारुतः॥

२—अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एवच।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः॥

३—स्वधर्ममपिचावेक्ष्य न विकंपितुमर्हसि।
धर्म्याद्धियुद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्यन विद्यते॥

४—यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमनावृतम्।
सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम्॥

५—अथचेत्त्वमिमं धर्म्यं सङ्ग्रामं न करिष्यसि।
ततःस्वधर्मं कीर्तिञ्च हित्वा पापमवाप्स्यसि॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

६-अकीर्तिञ्चापिभूतानिकथयिष्यन्तितेऽव्ययाम्।
संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥

७-हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं,
जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।
तस्मादुत्तिष्ठ कौंतेय,
युद्धाय कृत निश्चयः ॥

हिन्दुओं के सारे सामाजिक और जातीय गीत भी इसी रंग में रँगे होने चाहियें।

७ स्वराज्योपयोगी कार्य—इस संगठन पर्व में हिन्दू तथा आर्यसमाज के संगठनों को सुदृढ़ बनाते हुए अपनी सफलता के एक मात्र आधार स्वराज्य के आन्दोलन को कामयाब और स्थिर बनाने के लिये आर्य समाज को निम्न कार्यक्रम पर अपना पूरा बल लगाना चाहिये।

(क) राष्ट्रभाषा हिन्दी को २५ वर्ष के भीतर २ समस्त भारत में फैला देना।

(ख) खद्दर का प्रचार तथा विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार—इस विषय पर ज्यादा लिखना सूर्य्य को दीपक दिखाने के समान है। खद्दर को देशप्रेम, मितव्यता, धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक तथा राजनैतिक किसी भी दृष्टि कोण से देखा जावे, सभी दृष्टियों से यह अत्यन्त उपयोगी है। खद्दर प्रचार आर्यों के वैयक्तिक और सामूहिक दोनों दृष्टियों से परमधर्म है। लेखक की यह दिली कामना है, कि आर्यसमाज में खद्दर का इतना अधिक प्रचार हो कि खद्दर ही आर्य्य समाजियों का बाह्य चिन्ह और फैशन हो जाय। तथा खद्दर ही आर्यों की वेशभूषा और अलङ्कार बन जाय।

(ग) पाश्चात्य सभ्यता से घृणा फैलानी—जातीयता (Nationality) की वृद्धि के लिये स्वदेशी सभ्यता का होना कितना जरूरी है, तथा विदेशी सभ्यता किसी भी देश और जाति की जातीयता के लिये अत्यन्त घातक है, यह बात बिलकुल निर्विवाद और सर्वसम्मत है। दुनियां का सारा इतिहास इस सचाई की निरपवाद पुष्टि करता है। इस के अतिरिक्त पश्चिम की जड़वाद मूलक सभ्यता तथा पूर्व की आध्यात्मिक सभ्यता—दोनों एक दूसरे की आग और पानी की तरह परस्पर विरोधिनी हैं। दोनों का एक स्थान पर मिलकर रहना अत्यन्त असम्भव है। आर्य जाति का अपनी आध्यात्मिक प्रधान सभ्यता की श्रेष्ठता पर अविश्वास है।

अन्त में हमारी आर्य्य तथा सनातन धर्म दोनों धर्मों के प्रचारकों और सुधारकों की सेवा में निवेदन है कि वे इस जातिसङ्कट तथा क्रांति के समय में परमात्मा साकार है वा निराकार। जीव और ब्रह्म एक हैं अथवा भिन्न २। इत्यादि पारलौकिक प्रश्नों पर वाद विवाद करके आर्य्य जाति के अन्दर व्यर्थ की फूट और वैमनस्य का बीज न बोवें। वर्तमान समय में प्रचारकों को इन गहन तथा सामान्य जनता की बुद्धियों के लिये अज्ञेय प्रश्नों को महत्व न देकर उन सुधारों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए, जो कि हमारी जाति की उन्नति और वृद्धि के लिये अत्यन्त आवश्यक हैं।

❀ प्रियतम-दर्शन ❀

ले० -हरिहरदत्त मिश्र 'मिल' प्रमोद कुटीर' मैदा कानपुर

(१)

तिमिरमयी भयप्रद थी रजनी, नभ छाये थे घनघन-घोर,
चमक रही थी चंचल-चपला दादुर-दल करते थे शोर।
जल-प्रपात आरम्भ हुआ था, भूपर था कर्दम विस्तार,
झंझावात विकट था वहता, यह सब सहकर कष्ट अपार॥

(२)

पथिक हृदय में 'प्रियतम-दर्शन', करने की थी उत्कट चाह,
बिकट-विघ्न जो थे समक्ष में, थी न उसे उनकी परवाह।
विश्व-विपिन को विविध भांति से, ढूंढा उस ने सर्व प्रकार,
किन्तु न दर्शन पाया उसने, तब तो मन में किया विचार॥

(३)

शीघ्र समझ में आया उस की, शुद्ध प्रेम का उपजा ज्ञान,
स्वाभिमान से बिलग हुआ मैं, इस से करते वे अभिमान।
आते ही यह ज्ञान, प्रेम का, प्रकट हो गया शीघ्र प्रपात,
नष्ट हो गया उसी समय से सब विघ्नों का वज्र-प्रपात॥

× × × × ×

उदयाचल के उच्च शिखिर पर मन्द मन्द मोहन मुसक्यान,
'प्रियतम' भानु-किरण के द्वारा करने लगे स्वज्योति प्रदान।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

मोहिनी के आंसू

†

लेखक श्री० सन्तलाल दधिमथ वैद्यराज

थ रथराता, दांत भींचे—"हुः हुः हुः, शिव हर—शिव शंकर!" कहता हुआ, शंकर बरामडे में जा, बोला—'कोई लोटा भी है—न, कुन्दन की मां! अर्घ देने को"

सरला—(एक हाथ में आटे की लोई लिए दूसरे हाथ से चूल्हे में लकड़ी ढकेल बोली) 'अभी सूर्य को अर्घदान नहीं किया क्या? वह चक्की पर लोटा धरा है, ले लो! मैंने तो थाली परस, रख छोड़ी है। जल्दी आजाओ!" —शंकर वैसे ही कांपता हुआ, लोटा ले, सद्योद्धत-तोप से शिवाभिषेक कर, अर्घ दे, आर्द्र-केश ही आधी धोती ओढ़े, सुकड़ता हुआ, आ भोजन करने बैठा। कुछ काल के पश्चात् सरला ने कहा:—क्यों—जी, इससे तो अच्छा परमेश्वर बुढ़ापा न दे तो अच्छा है!"

शंकर—"क्यों?"

सरला—"और क्या? तारुण्य-रत्न जिधर गया, उधर पुरुष स्त्रियाँ से प्रेम, मधुर भाषण, पालन पोषण का ध्यान आदि सब कुछ छोड़ देते हैं। पहले वाली वह आंखें हीं नहीं रहतीं। क्या जीवन रह जाता है?"

—शंकर का चित्त अन्यत्र फँसा हुआ था, अतः वह कुछ सुनी अनसुनी कर, बोला—"नहीं तो।"

सरला—"वाह,'नहीं तो' कैसे? जरा अपने आप को ही देखो—न,"

—शंकर यह सुन, सचेत हुआ। मस्तक चढ़ा वह जोर से हंस कर, कहने लगा—"अच्छा··· तुमने यह क्या कहा? बताओ—कौनसी तुम्हारी बात टाली है? पहले और अब में क्या व्यवहार—परिवर्तन किया? कौनसा विकार हुआ?"

सरला—(धीरे से) विकार तो तुम्हारी ओर का भी स्वप्न में भी नहीं होता! वैसे बदली हुई बातें देखती हूँ!"

शँकर-(मन्द-हास्य से) क्या बदली?"

सरला—(इस बार कुछ उत्तेजित हो)····· सब बदलीं; पहले जिधर धोतियां या

☞ सूचना आज कल हिन्दी-साहित्य क्षेत्र में स्वार्थी-जनों द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण-कूड़ा फैंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य-जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक "ज्योति" के शृङ्खलाबद्ध अङ्कों का अवलोकन करें। प्रत्यङ्क में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने-न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास-मन्डी, लुधियाना' के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिये प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं यह निश्चय हो सके।

लेखक.

कोई कपड़ा फटा, बस कहने की देरी थी कि दूसरा आया ही मिला। परन्तु अब वह बात नहीं है; सो मुझ में भी वह बात नहीं है, कुछ विशेष शक्ति उत्पन्न हो गई है; वह यह कि यह धोती रांड ही आप ही फट फट कर हार गई किंतु मैं सीती हुई नहीं हारी! यह तो हुई साधारण बात, और विशेष बताऊँ तो बहुत करोगे—खिलखिला कर हँस दोगे!"

शंकर—"नहीं, कुन्दन की मां! मेरा चित्त कल से डामाडोल सा है, सो भी बताऊंगा। धोती के लिए कल ही तूने कहा था सो कल सेही झँझट में पड़ गया; (ग्रास मुख में दे, सूखती हुई अपनी धोती की ओर उङ्गली कर) यह धोती सूख रही है, लेले। कल-बल जब लाऊंगा, तब पूरा जोड़ा लेलेना। भला तुम से अच्छा और क्या है?" कह, भोजन करना स्थगित कर, अपना हाथ जरा आगे को बढ़ा, उस का हाथ पकड़, बोला—"अच्छा, अब और बताओ—"

सरला—(गम्भीर हो) बताऊं? देखो-यह बक हो गया; रात से अब तक तुम मुँह से न बोले हो, कुछ दिनों में न देखोगे तब भी मर जाएगा। यह सब इसलिए कि चाहे कभी मर जाऊं, दिक़त न मालूम दे!"

—इस बीच शंकर भोजन करना भूल गया वह प्रेम पुलकित-गात्र हो, हाथ बढ़ा कर, उसे, अपने पास खेंच, उसका शिर अपने घुटने पर रख, दूसरे हाथ से उसके अरुण-अधर को हिलाता हुआ, बोला—"क्या री यह सच्ची तेरे दिल की बात है?—नहीं, कभी नहीं होगी। कुछ और ही बात है!!"

यह सुन, गृहिणी के हृदय पर एक और भाव उत्पन्न हुआ; जिस से उस की आंखें मिचने लगीं, कण्ठ रुक गया, और होंठों पर मन्द हँसी छागई। यह देख शंकर विस्मित हुआ; कुछ कहना ही चाहता था कि चट सरला बोल पड़ी—"अच्छा, एक बात पूछती हूं, उत्तर दोगे?"

शंकर और भी विस्मित हो, बोला—"हां!"

सरला लज्जा के मारे नेत्र निमीलित कर, अतिमृदुल एवं मन्द स्वर से सस्मित कहने लगी—"अच्छा, तुम ही बताओ-पहले तुम मुझे रात दिन अपनी छाती से लगाए रखते थे। एक घड़ी भर के अलग होने पर विकल हो उठते थे। सच कहना—अब भी मुझ से क्या उतना प्यार करते हो—जितना आज से १५ वर्ष पहले करते थे?; सच, यह बुढ़ापे ने ही मेरी दुर्दशा की है या नहीं" ..... इतना कहने पाई ही थी कि उसका मुख-सरोज खिल उठा, वह प्रसन्न-हास करने लगी!

शंकर इस समय विस्मय, मुक्त हुआ-सही, परन्तु साथ ही तुरन्त प्रेमविकल भी होगया वह पत्नी का मुख-कंज दोनों हाथों से पकड़, जोर से अपने मुँह के पास खेंच—ला, बोला—"ऐसी क्यों हुई जाती हो? अब भी तुम्हें देख-देख घड़ियां मेरा खून बढ़ता रहता है! अपने आप बुढिया क्यों बन रही हो?"—तब सरला बलसे मुँह छुड़ा, बोली-"अच्छा, खाना तो खाओगे—नहीं?"

शंकर फिर थाली को अपनी ओर खिसका, भोजन करने लगा। कुछ देर के उपरान्त सरला ने कहा:—

"क्यों—जी! एक बात मान जाओ तो कहूं"

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

सरला—का मुख-मण्डल गम्भीर देख, पुनः चिन्तित सा हो शंकर बोला—

"क्या?—"

सरला—"मानो तो कहूं ?"

शंकर—"अच्छी बात ! जो कहोगी वही होगा, सुनाओ !"

सरला—"मेरे कुन्दन और माधव का विवाह तब करना, जब कम से कम बीस-बाईस वर्ष के होजाएं। नहीं तो पच्चीसवें वर्ष में !"

शंकर—(सम्भ्रान्त साहो) "यह क्या सोचा-री ! अभी शहर से ही क्या जाने सगाई आजाए ? वहां कुछ कल उड़ता-सा जिकरा सुना था दूसरे मेरी ओर भी तो देखो, उमर मेरी यह है ! क्या जाने-कल क्या हो ?"

सरला—"जो आज है, वही कल होगा। सदा सब प्रकार परमेश्वर मालिक हैं। किन्तु ऐसा न करो-तभी उत्तम हो !!"

शंकर—"सो क्यों ?"

सरला—"हँस न दो, तो कहूं।"

शंकर—"नहीं तो !"

सरला—(आंचल सम्हाल,) "मैं तो बे अकल हूं, ही। क्योंकि मुझे बातें नहीं करनी आतीं। परञ्च यह होगी बिल-कुल सच !—जो मनुष्य जवान (बड़ी, आयु का) हो तो जितना उसे, और जिस लड़की को युवा-पति मिले-उसे, जैसा सुख-आराम मिलता है, वैसा बालक-बालिकाओं को कहां मिलता है ? वह कीड़े-मकोड़ों की तरह जीवन बर-बाद करते हैं अच्छा, अब मैं मर्म की बात कहती हूँ—'जितना सुख मैंने तुम्हें (बड़ी उमर वालों को) पाकर, हर समय पाया, उतना मेरी एक भी सहेली ने नहीं पाया। आख़िर हमारी आपस में बातें-चीतें होती ही हैं, वे खुल कर कह देती हैं कि "बहना, तुम ही स्वर्ग भोगती हो ! तुम्हारे पति सब प्रकार की सामर्थ्य रखते हैं, इस से अधिक दुनियां में कुछ सुख नहीं !! हमारा जीवन तो सच-मुच कीड़े-मकोड़ों की भांति है !"—सो अच्छा है, इनकी भी, बड़े होने पर शादी करोगे यह भी खूब सुख भोगेंगे।"

—बात समाप्त होने पर, पहले शंकर हंसा और फिर सरला। थोड़ी देर हँसती-हंसती सरला फिर बोली:—

"हां, सच ! जब मेरा विवाह हुआ था, तब सब के सब कहते थे कि वर बड़ा बहुत है—बड़ा बहुत है ! बात अनोखी बनी !! सब ही घृणा करते थे; और जिन मेरी सहेलियों को बालक सा बन्ना मिला, वे खुश थीं; अपने को तकदीर वाली मानती थीं। परञ्च यथार्थ में वे सब दुखी रहीं ! कोई विधवा है, कोई विधवा ही के समान है !! सचमुच अपना जीवन भ्रष्ट समझती हैं ! सो ही जितना सुख पिछले इन पन्द्रह वर्षों में हमने पाया वे एक जन्म में तो नहीं, जन्मान्तर में चाहे पाएँ !"

—बात समाप्त होते, ही होते, सरला का मुखाम्भोज मन्दहास्य से खिल उठा। वैसे तो सरला का सर्वाङ्ग ही सौन्दर्य्य की खान था, परञ्च तिस पर भी सर्वोत्तम सौन्दर्य्य उसके विशाल-नयनों की परम शोभा एवं मुखारविन्द की मन्द हँसी थी ! उसके प्रसन्न-हास के समय अन्याऽन्य नर-नारियों को नयन निमीलन करना ही पड़ता था ! वह परम दृश्य मानस-हँस को बुरी तरह आकर्षित करता !! सोही सरला के प्रसन्न-हास पर शंकर के भी नयन-युगल निमीलित

से होगए। विवश-शंकर ने उस समय उसके कर-युगल झपट कर ग्रहण किए! और अपने निकट के बल से आकर्षित कर, स्वकीय वाम हस्त को, उसकी ग्रीवा के पीछे की ओर से डाल, गाढ़-समाश्लेषण कर, कहा—"क्या जाने तुम क्या क्या सोचा करती हो?"

शँकर का यह द्वितीय-विवाह लगभग पैंतीस वर्ष की आयु में हुआ था, तब सरला की आयु बेाडष वर्ष की थी। यह दोनों सन्तान सरला से ही हैं। गांव भर के लेाग इसे लक्ष्मी समझते हैं।

सरला यथार्थ में "सरल" ही थी। लाखों स्त्रियों के एकत्र करने पर भी ऐसी सु-शील न मिले! इसके अतिरिक्त वह असाधारण सुन्दरी थी; मानों विधाता ने विश्व की सुन्दरता का अधिकांश प्रसन्न हेा, सरला को ही प्रदान किया हो! सारे ग्राम में यह चर्चा थी कि—'जेा रूप राशि विश्व में ढूँढी न मिले, वही शंकर मोची के घरमें आ घुसी है!' "शंकर बड़ा ही भाग्य-शाली और पुण्य पुञ्ज है!" परन्तु कुछ हेा, जैसी भुवनेश्वर ने उसे मनेाहर सुन्दरता दी, साथ में ही उसके मानस-भवन-जीवन-भवनों में एक देा रत्न और भी जड़ दिए, जिन से उसके हृदय और जीवन के प्रकाश ने लेागों पर अननुमेय प्रकाश डाला! जिनसे उसकी कीर्त्ति कौमुदी अधिकाधिक समुज्ज्वल रहती थी!! उन देा रत्नों में से एक था—सत्य पतिव्रत, और दूसरा वही—"शान्त सुशीला।

—न कभी आजतक पड़ेासियों से लड़ी है न अद्यावधि शंकर केाही कभी दुर्वचन कहे हैं। श्रद्धा से जितनी सेवा शंकर की वह करती थी—क्या कोई अन्य पत्नी पति की करेगी? गांव भर में ऐसी पत्नी खेाजी न मिले! महा-कुलों में भी इस समय देखने में आता है कि निज-पतियों को दुर्वचन—कलह-क्लेशादिकों से गृह पत्नियां यह अनुभव करा देती हैं कि—जेल के कर्मचारी गण कैदियों को कहाँ इतना कष्ट देसकते हैं, जितना हम गृहस्थों को देसकती हैं!" "क्यों धेाखे से 'नर्क' किसी अन्य स्थान को समझे बैठे हेा, आंखें खेालो! हम दिखा तेा रही हैं—यही महा-रौरव है, देख लेा!!" किंतु वह दुर्वात सरला के पास से भी नहीं हेा चली है!; असीम-श्रद्धा थी; पति-सेवा की साक्षात् पुण्य-प्रतिमा थी! मूर्त्तिमान आदर्श प्रेम था! इधर शंकर भी आचार-व्यवहारों द्वारा यह प्रसिद्ध कर चुकाथा कि—'सदाचारिणी स्त्री यथार्थ में अर्धाङ्गिनी होती है, महापुरुषों ने कहीं भी अबलाओं को सम्मान-वञ्चित नहीं रक्खा, एतदर्थ यह अपमानित न होनी चाहिऐ! अर्द्धाङ्गि को कष्ट पहुंचा कर, कौन मानव सन्तुष्ट—सुखी हेा सकता है?" आधुनिक बड़े बड़े महाकुलीन मानव गृह-कलह के समय अपना रूप परिवर्तित कर, बता देते हैं कि—बड़े बड़े राक्षस भी इस प्रकार अबला नारियों पर अत्याचार करने में अशक्त होते हैं!!" किंतु वह दुर्गन्ध शङ्कर के समीप न आसकी!।

कुछ समय के पश्चात्, शंकर, गुड़गुड़ी की नली को मुंह से लगा, पात्र शुद्ध करती हुई सरला से कहने लगा—

'क्या बताऊं कुछ अक़्ल काम नहीं करती, री कुन्दन की मां!"

सरला—"क्यों क्या हुआ?"

शंकर—कल संझा की बात है कलावत्तू-नरी आदि और तुम्हारे लिये धेाती-जेाड़ा भी लेना था, मैं घण्टाघर के पास जा रहा था, वह पण्डित-जिस के पास लम्डे पढ़ते हैं-मिल गया, और मुझे वह अपने घर लेगया, उसने कहा—"खर्च की तू परवा न कर, शंकर! मैं

एक .....नजाने कौनसा मास्टर बत गया, उस का नाम ध्यान से उतर गया, उस से दिला दूंगा, तू दोनों लड़कों को लाहौर कालेज में भेजदे वहां पढ़ जाएंगे!" सो री, वह आर्यों का कालिज है, क्या जाने-लोभ दे वे आर्य बनालें या मुसलमान? क्या ख़बर है? पर हां धर्म बिगाड़ कर अपने धर्ममें ज़रूर कर लेते हैं! अब क्या करूं? उस ने बेटों की तरह से, प्यार से मदद से पढ़ाया है; चाहे इनकी भलाई में ही हो; पर जी ऐसा करने को मानता नहीं!"

सरला—"एजी चुप्पी लग जो! बुढ़ापा इन दोनों के सहारे ही काटना है!! जो मुसलमान बने, तब तो हाथ से खो ही गए! और जो 'आर्य' बने, तब भी इन्हीं का ही धर्म नहीं बिगड़ेगा, यह फिर और दसों का धर्म बिगाड़ेंगे!! अपना जैसा बहुतों को करेंगे! गले में जनेऊ डाल, ब्राह्मन बन बैठेंगे! माला, हुरसा, चन्दन सब तोड़ फोड़ देंगे! नेम (नियम) व्रत सब छोड़ छाड़ देंगे! और हम मर गए, तब न हमारी क्रिया करेंगे! न हमें पानी देंगे! न श्राद्ध निकालेंगे!!! खैर, यह सब तो आंखें मिचने पर जो कुछ होगा हो रहे, परन्तु एक बात से जी विशेष जलेगा, वह यह कि श्राद्धों के दिनों घर २ विशेष-भोजन बनता ही है, यथाबल सब कुछ न कुछ करते हैं, देखलो मांगने तुम किसी के घर भेजते ही नहीं हो, तो फिर इन बेचारों के पेट कुछ भी न पड़ सकेगा! फिर कुछ बहाना ही न रहेगा—जिस में कुछ बना कर खा सकें!! सुनो एक बात कहूँ—'हमारे गांवमें इनारी ही बिरादरी का एक आर्य बन गया था, बस! वह घूमने लगा—गले २ जनेऊ पहने, लोगों से शिर फोड़ता। मां-बाप मरे तो न उन की क्रिया की, न उन्हें पानी दिया! श्राद्धों के दिनों सब ही यथाबल विशेष भोजन बनाते-खाते, वह इधर रोटी-टुकड़ों से पेट भरता! देवता-ब्राह्मणों को गालियां देने की तो उसे सिड़ होगई थी!!" सो जो आर्य बन गये तो यह भी वैसे ही हो जाएंगे!!"

शंकर—चुपचाप यह सब सुनता रहा, कुछ काल के उपरान्त जल्दी २ हुक्के की दो-तीन घूँट ले, धूआं के गुब्बारे मुख, नाक द्वारा निकालता हुआ, बोला:—

"एक जी में यह भी आती है, री कुन्दन की मां! कि डर भय के मारे लड़कों पर चन्दगी ही नहीं आती, वैसे के वैसे तिनके जैसे हो रहे हैं, वैसे इन की उमर पन्द्रह सोलह वर्ष से अधिक हुई, पर उभरते ही नहीं! कौन कहे कि इन की इतनी उमर हे गी? इन का स्कूल ही छुड़ेवादूं। क्या करेंगे अधिक पढ़ कर, अपने काम के लायक चिट्ठी पत्री हिसाब किताब बखूबी करलेते हैं बहुत है सो ज्यादा पढ़ा कर नौकरी तो करवानी ही नहीं, भतेरे (बहुतेरे) पच्चीस तीस की बाबूगिरी के लिये देश-विदेश मारे मारे फिरते हैं! क्यों क्या समझी हो?

सरला—"मैं तो तुम से एक वर्ष से कह रही हूँ! "बन्द कर दो, पढ़ने से बन्द कर दो!" पर तुम ही न जाने कहां की डिपटीगिरी पढ़ा रहे हो? सुबह खाना खाने नहीं पाते, न्हाने धोने नहीं पाते, अढ़ाई तीन सेर का बस्ता शिर पर लाद कर जो दौड़ते हैं स्कूल में ही ठहरते होंगे! बिचारे ग़रीब दौड़ें भी कैसे नहीं? खालें, पीते, सोते डर घुसा

रहता है मास्टरों का, उनकी बेतों का, उनके जुरमाने का ! न बदन में जान है, न हड्डियों पर मांस है ! न खाया अंग लगता है, न रात में पढ़ाई के मारे चैन की नींद सोते हैं ! चाहे देखलो—पढ़ाई के मारे छोरे की तो आंखें दुखतीं तथा बिगड़ी—सूखे रहती हैं ! फिर भी मारे भय के पढ़ने से नहीं हटता !!"

शंकर एकाग्र हो ध्यान से सब कुछ सुनता रहा। हाथ से गुड़गुड़ा की नली को परे को फेर, अंगड़ाई तोड़ता खड़ा हो बोला "अच्छा, दसवीं पास करलें, फिर उठालेंगे। और भेजना भाजना कहीं है ही नहीं, क्यों ? तुम्हारी भी यही राय है न ?"

सरला—'हां, कहीं नहीं भेजना !'

(अपूर्ण)

स्वागत

लेखक—जगदीशचन्द्र शास्त्री 'चन्द्र' डी० एन० हाई स्कूल देहली

आओ ! आओ ! हे ऋषिराज !
स्वागत करें साज सब साज ॥ टेक ॥

(१)

रिपुगण से पूरित नभमण्डल ॥
थे उद्योतहीन आखण्डल * ॥
हुए उदित बन दीप्त प्रभाकर ॥
कैरवव्यथित मुदित कमलाकर ॥

(२)

शीतल समीर का था झकोर ।
झूठे बुझे जिमि दीपक कोर ॥
सत्याग्नि धरती गई लपटें ।
पर भीम—रूप लखता झपट ॥

(३)

नीरवनिशीथ का मध्य काल ॥
कलरव विहीन थे सर्व ताल ॥
खगवृन्द हीन कोकिलनिनाद ।
केवल पपीहे का मधुर तान ॥

(४)

थी स्वाति बूंद की चाह चाह ।
'पी, पी' पुकार भर रहा आह ॥
तब थे अकेल अब सङ्ग साथ ।
स्वागत करें हम खड़े पाथ ॥

* आखण्डल का अर्थ राजा और पर का अर्थ शत्रु है।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

बिरादरी

ले०– श्रीयुत् सत्याचरण जी

१

पुण्यसलिला गंगा अनादिकाल से भारत वसुन्धरा की महिमा बढ़ाती हुई प्रवाहित हो रही हैं। भारत की जर्जर दशा देख कर उन के हृदय में शूल उत्पन्न होता है तथा असह्य वेदना अश्रु के रूप में द्रवित हो रही है। मन्द २ गति से परास्त हुए सैनिक की भांति चली जा रही हैं। जिस के तीर पर प्राचीन भारतीय सभ्यता रूप यौवनसम्पन्ना बालिका की भांति लालित पालित हुई थी, जहाँ भग्न कुटीर में प्राचीन आदर्श के ऋषियों ने वेदों की महिमा गाई थी वहां पर अब काल की विचित्र गतिसे महान अट्टालिकाओं तथा यूरुपीय सभ्यता ने स्थान लिया है।

इसी सुरसरिके तटपर विक्रमपुर ग्राम बसा हुआ था। बड़े २ नगरोंकी भांति इस ग्राममें पश्चात्य सभ्यता ने पदार्पण नहीं किया था, इसी कारण यहां के लोग दृढ़ धर्मानुयायी तथा सरल स्वभावके थे। नागरिक चपलता, युक्तियों की कुशलता तथा कोमलता इन में न थी। दिन भर जब लहू और पसीना एक करते थे तब कहीं भर पेट अन्न मयस्सर होता था।

लगभग ५० वर्ष हुए पं० जयदेव मिश्र यहाँ के बड़े प्रसिद्ध तथा प्रतिष्ठित व्यक्तियों में से थे। इनके दादा काशीनरेश की सभा में अग्रगण्य कवियों में से थे। छोटे बड़े सभी उनका आदर सम्मान करते थे, स्वयं काशी नरेशने राजकवि के जागीर देकर अपूर्व सम्मान प्रदर्शित किया था। पं० जयदेवजीने अपनी प्रबन्धशैली तथा दूरदर्शिता से लगभग ४८ हज़ार वार्षिक आय की वृद्धि की थी। मण्डल में पण्डित जी की तूती बोल रही थी। उनके विरुद्ध कोई चूं भी नहीं कर सकता था। आस पासके सब लोग अपने २ मुक़द्दमे फैसला कराने के लिये आते। जो कुछ पंडितजी कह देतेथे वह सर्वमान्य था।

पंडित जी के मुख को देखने से सहज ही कोई अनुमान कर सकता था कि चिन्ता की रेखायें मस्तिष्क पर उद्भासित हो रहीं हैं। कोई आन्तरिक व्यथा पंडित जी को पीड़ित कर रही है। यह था पुत्रशोक! जो रह २ कर उनको व्याकुल कर देता था। उनको सारी सम्पत्ति मिट्टी के तुल्य दिखाई देरही थी। रात २ भर जाग कर जिस श्री-वृद्धि के लिये उन्होंने हिसाब किताब किया था उसी का हाय सर्वनाश! हो जायगा। मेरे पीछे इस का उत्तराधिकारी कोई अन्य पुरुष होगा। इसी उधेड़बुन में विचारे सदा पड़े रहते थे।

धीरे २, ४२ वर्ष की अवस्था होगई। जिसे अब तक संतान रत्न नहीं प्राप्त हुआ वह भला भविष्य में कैसे प्राप्ति की आशा रख सकता था दूसरे बालकों को देख कर प्रेम का स्रोत प्रवाहित हो उठता था। गोद में लेकर उसे थपकियाँ दे २ कर खिलाते तथा उष्ण निश्वास भर कर कहते कि कविवर कालिदास ने सत्य कहा है कि वे पुरुष धन्य हैं जिन के वस्त्र शिशुओं के रज से मलीन होते हैं।

इधर पंडिताइन की भी बड़ी बुरी दशा थी। दिन रात देवी देवताओंकी पूजा श्रद्धा-पूर्वक करतीं। साधुसन्तों का खूब जमाव रहता। जो जिस की इच्छा होती खूब उड़ाता। देवीअर्चन के लिये नित्य नये २ साज साजे जाते। साधु लोग सन्तानकी बड़ी आशा दिलाते थे। पंडिताइन के हृदय में आशा की तंत्री मृदुल तथा अस्फुट शब्द कर रहीथी। ध्रुवपद और मल्हार के धीमे २ स्वर उनके कर्ण को अत्यन्त सुखद जान पड़ते थे। उत्सुकता तथा हास्य की एक मधुर रेखा अधर पर प्रभावित होती पुनःविलीन होजाती।

आज कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि है। प्रगाढ़ अन्धकार छाया हुआ है। सन २ वायु चल रहा है। पत्तोंकी हरहराहट सुनाई दे रही है नभमण्डल में सौदामिनी तलवार की भांति चपलता से मेघमाला को चीर कर अन्तर्हित हो जाती है। एक कमरे में सुन्दर सेज बिछा हुआ है। एक किनारे टिमटिमाता हुआ दीपक जल रहा है। सेज के पास दो चार पुस्तकें भी पड़ी हुई हैं। सेज पर एक दीर्घ-काय तथा प्रशस्त भाल वाला कोई मनुष्य चिंता का अथाह सागर में डुबकियाँ लगा रहा है। कभी २ तो ठंडी सांस भरता हुआ जान पड़ता है। एका एक धम २ शब्द करती हुई कोई स्त्री फाटक खोल कर पंडित जी के सामने खड़ी होगई।

पं० जी०—सुखिया, तू यहां कैसे आई?

सु०—बाबू जी मैं एक शुभ समाचार लाई हूं।

पं० जी—क्या है?

सु०—बाबू जी! समाचार ऐसा वैसा नहीं है झटपट कह कर सूखी ही अलग हो जाऊं। भाग्य में सदा सुअवसर थोड़ेही आता है भगवान आपका भला करें।

यह सुन कर पंडित जी के पेट में चूहे कूदने लगे। सोचते थे कि कौन ऐसी घटना घटित हुई है जिस से कि यह इतनी प्रसन्न है। हृदय में क्षण भर के लिये आशा की तरंगें लहरें मारने लगतीं। पुनः अनिश्चि-तता पर ध्यान देकर शान्त होजाते। अन्त में वह अधिक धैर्य न धरसके उत्सुकता इसी का नाम है। बोले—सुखिया तू साफ़ साफ़ क्यों नहीं कहती? क्या नहीं कहेगी।

सु०—बाबू जी मैंने कब कहा कि मैं नहीं कहूँगी। मैं तो आप ले गेां की रोटी से पली हुई हूँ। मैं भला कब सरकार से ऐसी धृष्टता कर सकती हूं। लेकिन सूखे ही थोड़े कोई काम करता है?

पं० जी—अच्छा क्या चाहती है?

सु०—चाहती क्या हूं; कोई हाथी घोड़ा तो हमें चाहिये नहीं। पहनने खाने के सिवा और बातों से हमें क्या प्रयोजन!

पंडित जी उसके मनका भाव जान कर बोले, अच्छा तुझे सब कपड़ा मिलेगा। धानी रङ्ग की साड़ी, तञ्जेब की कुर्ती, छींट की चादर। बस कि और कुछ चाहिये।

सु०—नहीं सरकार मुझे कुछ नहीं चाहिये।

पं० जी—क्या कह रही थी? कहती क्यों नहीं?

सुखिया प्रफुल्लता से पुलकित वदन हो रही थी। अपनी प्रसन्नता को दबाती हुई बोली:—सरकार बहूजी के लड़का हुआ है।

पंडितजी की प्रसन्नता की सीमा न रही। प्रकृति के गंभीर अवश्य थे किन्तु सारी गंभीरता जाती रही। झट खाट से उठ कर धोती सम्हालते हुए बाहर निकले। रात्रि विकरालरूप धारण कियेहुए खड़ी थी। ऐसी

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

रात्रि में किस के घर सूचना देने जावें। न जाने कितनी रात्रि शेष है। वह समय ऐसा नहीं था जब कि आज कल की भाँति सब के घरों में घड़ियां थीं। मजबूर होकर कमरे में खाट पर लेट गये। जैसे तैसे करके रात्रि कटी। प्रातः काल होते ही आकाश शहनाई की तुमुलध्वनि से गूंज उठा। नौकर चाकर इधर उधर काम करने में व्यस्त थे। पंडित जी की तो बात ही क्या अपनी मित्र मंडली में खूब लंबी चौड़ी हांक रहे थे। भाटों का तो मानो भाग्य ही खुल गया। पंडित जी ने किसी को भी अप्रसन्न नहीं किया, जो कुछ जो मांगता तत्काल उसे वह वस्तु दीजाती।

नवजात शिशु के मुख को देख कर पण्डितजी की पूर्व यन्त्रणायें विलुप्त हो गईं। पण्डिताइन जी में अब स्वाभाविक गर्व का आभास दृष्टिगोचर होता था। आज उनकी गोद शिशुरत्न से अलंकृत है। पुत्रवती होने का सौभाग्य इतने दिनों के पश्चात् प्राप्त हुआ।

शनैः २ बालक हिलने डोलने लगा। मुख से विशुद्ध भोलापन टपक रहा था। माता पिता उत्साह से पालन पोषण करने लगे।

२

नलिनीकुमार की अवस्था अब १७ वर्ष की है। वह भोलापन तथा बालक्रीड़ा गम्भीरता के रूप में परिवर्तित हो गई। यौवन की अनूठी छवि शरीर को भूषित कर रही है। सुशीलता तथा वाणी माधुर्य्य सब के मन को हर लेता है। पं० जयदेवजी पुत्र की उत्तरोत्तर वृद्धि देख कर अति प्रसन्न होते हैं, नलिनीकुमार भी मेट्रिक पास कर हिन्दू-कालेज बनारस में भर्ती हो गये। मेट्रिक में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण होने के कारण उन्हें सरकारी क्षात्रवृति भी मिलती रही। नलिनी उसे प्रायः साहित्यिक पुस्तकों के ख़रीदने मे ही व्यय कर देते थे।

नलिनीकुमार ने प्रथम श्रेणी में एफ० ए० भी पास किया। पं० जयदेव मिश्र की इच्छा थी कि लड़के का विवाह शीघ्र ही हो जाना चाहिये किन्तु नलिनी की ही दृढ धारणा के कारण इनका सब प्रयत्न विफल हो जाता था। जब नलिनी थर्डइयर में आये तो माता तथा पिता के आग्रह को किसी रूप में भी न रोक सके। फिर क्या था धर्मपुर के शुक्ल जी की लड़की से विवाह की बात चीत तय हो गई। लड़की साक्षात लक्ष्मी थी। कन्यापाठ-शाला में उसने भी भाषा में पर्याप्त योग्यता प्राप्त कर ली थी। जिस तरह नलिनीकुमार में देशभक्ति तथा धर्मानुराग था उसी प्रकार कन्या में भी गुण वर्तमान थे। विवाह बड़े धूमधाम से हो गया। रुपये पैसे खूब लुटाये गये। पंडित जी वधूरत्न पाकर अति प्रसन्न हुए।

३

श्रावण मास है खेतों में हरा फ़र्श बिछा हुआ है। कोयलों की 'कूँहूं' २ मनोहर शब्द सुनाई पड़ रहे हैं। गङ्गा उत्तङ्ग तरंगों से प्रवाहित हो रही है। आस पास के खेत जल मग्न हो चुके हैं। सब को यही भय है कि पानी कहीं अधिक न बढ़ जावे।

नलिनीकुमार गर्मियों की छुट्टियों में घर आये हुए थे। नित्य नूतन आनन्द को लूट रहे थे। शैलबाला भी ऐसे पति को पाकर भूरि २ अपने भाग्य को सराहती थी दाम्पत्य प्रेम का वास्तविक अनुभव करने वाले बिरले ही पुरुष तथा स्त्रियाँ होती हैं। शुद्ध प्रेम, गगनचुम्बी अट्टालिकाओं तथा निस्सीम वैभव पर निर्भर नहीं हैं। प्रेमके पुजारी जर्जर पर्ण-

शाला में भी बैठकर स्वर्गीय सङ्गीत सुधा का आस्वादन करते हैं। ठीक ही कहा है प्रेम का पन्थ निराला है। गृहके ऊपरी भाग में दो कमरे थे। एक में नलिनी स्वाध्याय किया करते थे। तथा दूसरा उसके पास वाला कमरा उन का शयनगृह था। रात्री के लगभग ११ बज गये होंगे। आकाश में सुधांशु खिलखिला रहा था। शुभ्रज्योत्स्ना यामिनी को पुलकित कर रही थी। पत्तों के ऊपर शीतल रश्मियां क्रीड़ा कर रहीं थीं। चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी। केवल सांय २ के शब्द सुनाई पड़ते थे। नलिनी अपने श्वेतवर्ण शय्या पर लेटे हुए मन ही मन कुछ सोच रहे थे, कि एकाएक दरवाज़ा खुला तथा शैलबाला मुस्कराती हुई शय्या के समीप खड़ी होगई। नलिनी ने भी बांह पकड़ कर उसे बैठा लिया। कर स्पर्शमात्र से शैल-बाला के शरीर में बिजली सी दौड़ गई। वह लज्जा से नीचे आँखें किये बैठ गई। नलिनी ने उसके पीठ पर हाथ रखते हुए कहा:-

प्रिये तुम अच्छी तरह से तो हो।

शैलबाला ने धीमे स्वर में कहा-जी हां।

नलिनीकुमार मुस्कराते हुए बोले:— कालिज से आने के पश्चात् मेज़ पर तुम्हारा लिफ़ाफ़ा पड़ा पाया। पत्र देखने से स्पष्ट ज्ञात होता था कि तुम अधिक व्याकुल थीं। क्या इसका कोई आन्तरिक रहस्य भी है?

शैल० पतिदेव! आप स्वयं ही बड़े विद्वान् हैं। रहस्य क्या? पति ही स्त्री के सर्वस्व हैं। पति के बिना स्त्री कभी सुखी नहीं रह सकती पतिवियोग में स्त्री का शरीर शुष्क वृक्ष की भांति सूख जाता है। वियोगरूपी ज्वालायें उसे जलाती हैं। प्राणनाथ क्या शब्दोंमें उसका चित्रण किया जा सकता है?

नलिनी०—हृदयेश्वरी! तुम्हारा कहना सर्वथा यथार्थ है, किन्तु मनुष्य के अपने ध्येय की पूर्ति में बड़ी से बड़ी वस्तुओं का भी बलिदान करना पड़ता है।

शैलबाला इसको सुन कर चुप हो बैठी रही।

नलिनी पुनः बोले। तुम क्या सोच रही हो?

शैल० कुछ नहीं।

नलिनी० कुछ तो!

शैल० मैं यह सोच रही थी यदि आप इस दासी को भी अपने साथ ले चलते तो बहुत अच्छा होता मैं आपके ऊपर कदापि भार न बनूंगी।

नलिनी०—भला कहीं बड़े घर की बेटियाँ बाहर जाती हैं। विक्रमपुर के मिश्र इसे कभी नहीं सहन कर सकते। शैल की आँखें सजल हो गईं।

नलिनी ने धीरे से उसके अधर से अपना अधर मिला दिया। शैलका शरीर कण्टकित होगया उस के कपोल पर गुलाबी छा गई, नलिनी की आँखें मद से आरक्त होगईं। दोनों अपने को भूल गये।

४

रात्रि बड़ी विकट थी। काले २ बादलों से आकाश पूर्ण था। रह रह कर बिजली की कड़क हृदय को दहला देती थी। गङ्गा का तोड़ प्रबल वेग से बह रहा था करारों के टूटने का शब्द बड़ा भयानक था। मेघों की गड़गड़ाहट तथा वायु की सनसनाहट ने मिल कर घोर प्रलय मचा दिया था। वृक्ष टूट २ कर जल में मग्न हो रहे थे। सारे गांव में

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, D...

हाकार मचगया। पानी १ फ़ीट, २ फ़ीट, धीरे २ छः फीट बढ़कर घरोंकी आधी दीवार तक आगया। झोंपड़ियां बह रही थीं। स्त्री बच्चे निस्सहाय फूट २ कर रोरहे थे उनके आर्तनाद को सुन कर हृदय विदीर्ण हो जाता था। विचारी गाय भैंसों का तो पूछना ही क्या? बांय २ करती हुई सदा के लिये संसार से विदाई ले रहीं थीं।

पं० जयदेव मिश्र बरामदे में सोये हुए थे। नलिनी भी कोलाहल को सुन कर ऊपर से उतर आये। आंगन में पानी लगा हुआ था। धीरे २ पार कर द्वार पर पहुँचे तो १ फ़ीट पानी बरामदे पर चढ़ा हुआ पाया। पंडित जी तो पागल से हो रहे थे। किस तरह जान बचायी जाय। आंगन में पानी बढ़ता गया यहां तक कि पूरा पोरसा भर पानी चढ़ आया। खभों के सहारे पिता पुत्र लटके हुए थे किन्तु अब उससे भी हाथ धोना पड़ा। कोई चारा न देख कर दोनों पानी में कूद पड़े। रात्रि में यह पता नहीं चला कि कौन किधर बहता हुआ जारहा है। कुछ देर तक तो पिता का शब्द भी सुनाई पड़ता था किन्तु उस हाहाकार में वह भी लुप्त होगया।

शैलवाला यह दशा देखकर चीख मारकर रोरही थी। पंडितानी जी आंगन में लगभग डूबने वाली थीं। किसी तरह जोर लगा कर ज़ीने की ओर पहुंची किन्तु दुर्भाग्य से यह भी पानी में डूबा हुआ था। विचारी धीरे २ दीवार के सहारे ऊपरी ज़ीने पर होती हुई कमरे में पहुंची जहां शैलवाला अविरल अश्रुधारा बहाती हुई तड़प रही थी। जैसे बेज़बान जानवर अन्यान्य यन्त्रणाओं को विना कुछ कहे सह लेते हैं उसी प्रकार ये विचारी बैठी हुई भाग्य को कोस रहीं थीं।

प्रभात होने वाला है। निस्सहाय अबलायें ऊपर बैठी हुई हैं। नींव में पानी लगते २ दीवारें कमज़ोर होगई हैं। किनारे की दीवार फट गई। छतका एक भाग धड़ाम से भीषण शब्द करता हुआ गिर पड़ा।

पंडिताइन ने सोचा यहां तो वैसे ही दीवार के नीचे दब कर मरना है। इस से अच्छा तो यही है कि जल में प्राण को लेकर कूद पड़ें। कदाचित् दैवयोग से बच जाऊं।

काष्ठ का एक बल्ला कमरे में पड़ा था। शैलबाला तथा पंडिताइन उसके सहारे होकर धीरे २ पानी में तैरने लगीं। जब मनुष्य किसी विपत्ति में पड़ता है तो उसकी छिपी हुई शक्तियां आश्चर्यजनक कार्य करने लगती हैं। जो शैलबाला कमरे में बैठी हुई पान चबाया करती थी, जो प्रथमावतीर्ण मदनविकारा की भांति प्रेमोल्लास की सरिता में डुबकियां लगाती थी, वही आज दैव दुर्विपात से वीर रमणी के रूप में उद्भट साहस का परिचय देरही थी स्वाभाविक कोमलता तो अवश्य थी किन्तु साहस के आवेश में धीरता पूर्वक तैर रही थी। ठीक है—मरता क्या न करता?

(५)

जयदेव मिश्र तो सौभाग्य से रामनगर के किनारे लग गये दशा शोचनीय होगई थी। अकस्मात् कुछ मछुए उसी ओर से गुज़रे। उन्होंने पंडितजी को घर लाकर अच्छी तरह सेवा सुश्रूषा की। चेत होने के पश्चात पंडितजी को अपनी अवस्था का ध्यान आया। स्त्री बच्चों की दशा सोच २ कर अत्यन्त दुःखी होरहे थे। उन्हें यह निश्चय था कि स्त्री बच्चों का देहान्त होगया होगा। इसी तरह रामनगर में रहते रहते १० दिन के लगभग व्यतीत होगये किन्तु फिर भी नलिनी तथा शैलबाला

आदि का पता नहीं ज्ञात हुआ। शोकानल हृदय को जलारहा था। शरीर सूख कर कांटा होगया था।

एक दिन यह पता लगा कि दो स्त्रियां रामनगर के समीप सूर्यपुरा में बाढ़ से बह कर आई हैं। पंडित जी को उनके विषय में जानने की उत्सुकता हुई अतः एक मछुए को उक्त ग्राम में जाने के लिये कहा। मछुआ पंडित जी की आज्ञा मान कर सूर्यपुरा गया। पता लगने पर मालूम हुआ कि वे पंडित जी की स्त्री तथा वधू थीं।

पंडित जी समाचार पाकर प्रसन्न तो हुए किन्तु पुत्र की चिंता उन्हें असह्य वेदना पहुंचा रही थी। पंडित जी ने उक्त ग्राम में जाकर पत्नी तथा पुत्र वधू को सकुशल पाकर ईश्वर को धन्यवाद दिया। कुछ दिन बाद पानी हट जाने पर सब को लिए हुए विक्रमपुर पहुँचे।

वहां की दशा अवर्णनीय थी। मकान टूटा पड़ा था। दीवारें धस गई थीं। जगह २ गाय भैंसों की लाशें पड़ी हुई थीं। गृद्धों का तो राज्य होगया था। बदबू के मारे नाक सड़ी जाती थी। इस वीभत्सकांड को देख कर पंडित जी काँप उठे। किसी तरह घर की एक कोठरी में जो कुछ कम टूटी हुई थी, विश्राम किया। कुछ दिनों बाद गांव की दशा बदल गई। पानी हट गया। बचे खुचे आदमी गांव में फिर रहने लगे। पंडित जी ने इधर उधर पुत्र की खोज में आदमी भिजवाये किन्तु कुछ भी पता नहीं लगा। जिस तरह गजराज कीचड़ में फंस कर विह्वल हो प्राण से निराश हो जाता है उसी प्रकार पंडित जी की ओर चल पड़े।

(६)

नलिनी कुमार बहते २ वृजमनगंज जालगे। यह ग्राम एक यूरुपियन महाशय का था। श्वेतांग महाशय की छत्रछाया में भला यह कब मुमकिन था कि प्रभु यीशु के कुछ भक्त न हों। अतः यहां पर क्रिश्चियन मतावलंबियों का एक मिशन था। उसके अध्यक्ष थे मि० जेम्स। मि० जेम्स अपने धर्म-पुत्रों तथा पुत्रियों को लेकर बाढ़ में बड़ा काम करते थे। जहाँ कहीं बाढ़ पीड़ित मनुष्य को पाते थे वहां से उसे उठवा कर मिशन चिकित्सालय में लाते थे। अधिकांश लोग इसी दुर्दशा के शिकार हो ईसाई भी होजाते थे।

सायंकाल की बेला थी। मि० जेम्स धर्म पुत्रों तथा पुत्रियों के साथ चले जारहे थे। एकाएक एक भव्य मूर्ति को पत्थर के खंड के पास पड़ा हुआ देख कर, उधर आये। यह हमारे चरित्रनायक नलिनी कुमार ही थे। नलिनी ने कुछ घूंट पानी तो अवश्य पीलिया था किन्तु डूबने से किसी तरह बच गये थे। पेट फूल आया था। हाथ पैर पीले पड़गये थे मि० जेम्सने उन्हें लाकर नश्तर देने के बजाय एक ऐसी औषधि दी जिससे पानी निकल गया। निरंतर औषधियों के सेवनसे ७ दिन पश्चात् नलिनी कुमार उठने बैठने लगे। इस में सन्देह नहीं कि ऐसी अवस्था में पड़ने के कारण ईसाइयों की रोटियों का भी आस्वादन करना पड़ा। ठीक पंद्रह दिन होगये नलिनी कुमार अब इतने स्वस्थ अवश्य होगये थे कि वह घर पर किसी तरह जा सकते थे। अतः उनकी अधिक प्रार्थना करने पर मि० जेम्स ने उन्हें जाने की आज्ञा प्रदान करदी। गांव वालों से पूछने पर पता चला कि विक्रमपुर वहां से ३४ मील की दूरी पर है। नलिनी कुमार किसी प्रकार पूछते २ गांव भी छोटा हृदय करके बैठ गये।

CCO. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digi...

(७)

दोपहर का समय था। भगवान् अंशुमाली अपनी प्रखर किरणों से पथिकों को आहत कर रहे थे। गायें वृक्षों की छाया में बैठी हुई पगुरी कर रहा थीं। किसान हल चलाना छोड़ कर घर जारहे थे। ठीक इसी समय एक आतपक्लान्त पथिक पसीने से लथपथ हुआ विक्रमपुर के जयदेव मिश्र के घर पर पहुंचा। दालान में पंडित जी चारपाई पर लेटे २ पंखा डुला रहे थे नलिनी कुमार ने बड़े वेग से पिता के चरणों पर शिर रख दिया। पिता के हर्ष की सीमा न रही। पंडिताइनजी तथा शैलबाला, नलिनीकुमार को पाकर गद्गद हो उठीं। किन्तु हाय कौन जानता था कि अभी कुछ ही देर में जयदेव मिश्र का सत्यानाश होने वाला है।

गांव में यह ख़बर तीर की तरह फैल गई कि नलिनी कुमार बच गये तथा आये हुए हैं। सब लोग जयदेव मिश्र के गृह पर जुटने लगे। देखते देखते ३०-४० आदमी की भीड़ लगगई। नलिनी के निकर तथा गैलिस के वेष को देख कर सब अचम्भित रह गये। जब सब को यह पता लगा कि नलिनी ने ईसाई की रोटी खाई है तो सभी काना फूसी करने लगे। कितने तो ऐसे धर्मान्ध पुजारी थे जिन्होंने इस मिलन के सुसमय ही में उठ कर नलिनी के जाति बहिष्कृत करने की व्यवस्था देदी।

जयदेव मिश्र ने लाख प्रयत्न किया कि किसी भांति मामला दबा रहे किन्तु पुजारी लोग भला कैसे धर्म का खून कर सकते थे। ग्राम के पंडितों में भी दो सम्मतियां होगई अतः एक सभा इसके निर्णयार्थ की गई।

४ घण्टे के शास्त्रार्थ के पश्चात् यह निर्णय होगया कि नलिनी पुनः हिन्दू धर्म में नहीं रह सकते।

पंडितजी के ऊपर महान् वज्रपात हुआ। वह भी बिरादरी के जाल में पड़े हुए तड़फड़ा रहे थे। पंडितों की इस संकीर्णता को देख कर नलिनी के हृदय पर बड़ा आघात हुआ। उसने आजन्म घर न आने की प्रतिज्ञा की।

माता पिता से अंतिम विदाई लेने के लिये कमरे में गये। माता पिता इस प्रस्ताव को सुन कर कांप उठे। माता की आंखों से अश्रु की धारा बह रही थी। माता का हृदय शिरीष पुष्प से भी अधिक कोमल होता है। भला पुत्र वियोगरूपी उल्कापात को यह किस कलेजे से सहन कर सकती थी। पिता के बार २ रोकने पर भी नलिनी ने यह उचित न समझा कि वह पिता को जाति बहिष्कृत देख सके। उसने उसी समय पिता तथा माता की वन्दना की तथा स्त्री के ऊपर एक दृष्टि डाल कर द्रुत वेग से सदा के लिये विक्रमपुर से चल दिया।

शैलबाला अब अपने को न रोक सकी। लज्जा की जो एक डोरी उसे बांधे थी वह भी टूट गई। वह नलिनी के पीछे दौड़ी किन्तु दो पद पर ही मूर्छित होकर धराशायी होगई। थोड़ी देरके बाद देखा गया तो उस के प्राण पखेरू उड़ गये थे।

ऋषि जीवन कथा और वर्त्तमान आर्यसमाज

लेखिका—कुमारी विद्यावती सेठ B. A. आचार्या कन्यागुरुकुल देहली

आर्यसमाजके सन्मुख बहुतसी समस्यायें हैं। कई समस्यायें तो सिद्धान्त सम्बन्धी हैं किन्तु बहुतसी ऐसी भी हैं जिन का सम्बन्ध कार्यक्रम और सामाजिक तथा राष्ट्रीय जीवन के विस्तार के साथ है। सिद्धान्त सम्बन्धी समस्यायों का हल ऋषि-कृत ग्रन्थों के पाठसे होसकता है किन्तु बहुत थोड़े आर्य पुरुष हैं जो ऋषिकृत ग्रन्थों का पाठ करते हैं यही तो कारण है कि चालीस वर्षों में सत्यार्थ प्रकाश की एक लाख प्रतियां भी नहीं बिकीं; ऋषि जीवन कथा भी आर्य लोग पढ़ते मालूम नहीं होते साधारण लोगों का तो कहना ही क्या है; ऐसा प्रतीत होता है कि जो नेता और कार्यकर्त्ता हैं वह भी ऋषि के जीवन चरित्र का गम्भीरता से अवलोकन नहीं करते। हमारी सम्मति में इस समय कोई भी ऐसा विवादास्पद विषय नहीं हैं जिस के सम्बन्ध में ऋषिका जीवन चरित्र पर्याप्त प्रकाश न डालता हो हम आर्यसमाज के कार्यक्रम और प्रबन्ध सम्बन्धी कुछ बातों को लेंगे और बतलावेंगे कि किस प्रकार ऋषि का जीवन चरित्र सब कठिनाइयों को दूर करने और ऋषि के अनुयाइयों को सीधा रास्ता दर्शाने में सहायक होता है।

शास्त्रार्थ

कई वर्षों से आर्यसमाज के माननीय और पूजनीय नेता इस सिद्धान्त का प्रचार करते हैं कि शास्त्रार्थ बन्द होजाने चाहिये क्योंकि उनसे सत्याऽसत्य का निर्णय नहीं होता और दंगा फिसाद का भय रहता है; शास्त्रार्थ की प्रथा तो अति प्राचीन है, उपनिषद् काल और दर्शनकाल में भी शास्त्रार्थ होते थे; शंका समाधान और पूर्वपक्ष के निराकरण और प्रत्याख्यान की चर्चा न केवल दर्शनों में ही मिलती है किन्तु व्याकरण शास्त्र में भी। गार्गी जैसी विदुषी देवियां भरीसभा में याज्ञवल्क्य जैसे ऋषियों और तत्त्ववेत्ताओं से शास्त्रार्थ करने का साहस कर सकतीं थीं; बाल ब्रह्मचारिणी सुलभा को यह अभिमान था कि वह इसी कारण आजन्म ब्रह्मचारिणी रही थी कि कोई भी विद्वान् पुरुष शास्त्रार्थ में उसको परास्त करने में समर्थ न था। बुद्ध भगवान् ने शास्त्रार्थ किये, शङ्कराचार्य ने शास्त्रार्थ किये गुरु नानकदेव ने शास्त्रार्थ किये, कबीर ने शास्त्रार्थ किये, चैतन्य ने शास्त्रार्थ किये, ऋषि दयानन्द ने शास्त्रार्थ किये और इन शास्त्रार्थों द्वारा बहुत कुछ उन्होंने सत्य का प्रचार और असत्य का विनाश किया, इस प्रथाको तो कोई भी बुद्धिमान पुरुष बुरा नहीं कह सक्ता। योरुप में भी विद्वान् लोग सदा शास्त्रार्थ करते रहे Wrangler शब्द के धात्वर्थ भी इसी आशा के सूचक और बोधक हैं। मध्य काल में जर्मनी की कई युनिवर्सिटियों में डाक्टर की डिगरी मिलती ही उसको थी जो शास्त्रार्थ में सब को परास्त करले। उन्नीसवीं शताब्दी में भी हक्सले, टिण्डल, मिल, सर विलियम हेमिलटन सरीखे विद्वानों ने शास्त्रार्थ किये मिस्टर ग्लेडस्टन और हकसलेके शास्त्रार्थ और मिल और विलियम हामिलटन के शास्त्रार्थ तो बड़े धड़ल्ले के थे और ऐतिहासिक समझे जाते हैं आजकल भी विज्ञान और दर्शनक्षेत्र में शास्त्रार्थ होरहे हैं Einston की Theory

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Di...

of relativity पर तो योरुप में नित प्रतिदिन शास्त्रार्थ होते रहते हैं। विज्ञान अथवा दर्शन शास्त्र की कोई साधारण पाठ्य पुस्तक उठालो तुम उसको शास्त्रार्थों के सार से भरा हुआ पाओगे। विचार परिवर्त्तन और पक्षी प्रतिपक्षी के पारस्परिक युक्तियों के विनमय के अतिरिक्त सभ्य संसार को सत्यासत्य निर्णय करने का कोई प्रशस्त साधन ज्ञात नहीं। यदि आज कल के शास्त्रार्थों में सत्यासत्य का निर्णय नहीं होता और शान्ति का भङ्ग होता है तो उसका कारण शास्त्रार्थों की प्रणाली में कोई दोष होना चाहिये। जब हम ऋषि जीवन कथा का अवलोकन करते हैं तो हमको शास्त्रार्थ की प्रशस्त रीति का परिज्ञान होता है, यदि हम भी उसी रीति का अवलम्बन करें तो शास्त्रार्थ हमारे लिये भी हितकर हो सकते हैं।

रुड़की में और मेरठ में मौलवी महम्मद कासिम ने ऋषि से शास्त्रार्थ करना चाहा ऋषि ने चैलेञ्ज को मंजूर कर लिया किन्तु जो शर्तें पेश की उन में निम्नलिखित शर्तें भी थीं।

(१) चार सौ से अधिक मनुष्य शास्त्रार्थ में सम्मिलित न होंगे। और वह बुद्धिमान और विद्वान् पुरुष होने चाहिये।

(२) विचारालय में प्रवेशटिकटों द्वारा होगा, शास्त्रार्थलिखित होगा। पक्षी, प्रतिपक्षी जो बोलेगें वह लिखा जायगा। और दोनों के हस्ताक्षर उस पर होंगे ताकि पीछे से वह मुद्रित होसके और साधारण जनता भी उस से लाभ उठा सके।

(३) पक्षी और प्रतिपक्षी शिष्टता से भाषण करें और किसी पक्ष के किसी पुरुष अथवा पैगम्बर इत्यादि के विषय में कोई अपमानजनक शब्द न बोले जायें।

इन शर्तों के विषय में स्वामी जी ने जो युक्तियां दीं उसका सार निम्न प्रकार है:—

"शास्त्रार्थ का लिखा जाना इस लिये आवश्यक है कि लिखी हुई बात से नकार कठिन है यदि वादी प्रतिवादी पहिले कुछ बात कहें तो १०-१५ मिनिट के बाद उससे उलटी बात भी कह सकते हैं। किन्तु लिखा जाने पर ऐसा नहीं होसकता। दूसरी बात यह है कि दोनों को पता होता है कि केवल श्रोतागण ही सम्मति बनाने वाले नहीं हैं विचार छप जावेंगे और साधारण जनता तक पहुँच जावेंगे। इस कारण दोनों सोच समझ कर बात कहते हैं और प्रजा के लिये भी परिणाम निकालना सुगम होजाता है। यदि केवल लिखित अर्थात् समाचार पत्रों और पुस्तकों द्वारा ही शास्त्रार्थ हो तो उसमें यह दोष आता है कि प्रतिपक्षी यदि चाहे तो जो पक्षी की सबल युक्ति हैं उसको छेड़े ही न किन्तु दूबदू होने में ऐसा कर सकना कठिन है कुछ न कुछ उत्तर देना ही पड़ता है इस लिये सुनने वाले और पढ़ने वाले सत्यासत्य का निर्णय करही सकते हैं। यदि यह कहा जाय कि खण्डन के लेक्चर के समय जब सारी जनता आती है तो शान्ति भंगका भय क्यों नहीं? तो उसका उत्तर यह है कि लैक्चर देने के समय तो वक्ता अपनी ही सम्मतियां विचार और युक्तियां देता है। दूसरे किसी को हस्ताक्षेप करने का अधिकार नहीं होता जिसको भला प्रतीत हो सुने जिस को बुरा प्रतीत हो न सुने आपस में प्रश्नोत्तर नहीं होते और पक्षी, प्रतिपक्षी में से किसी एकको यह अवसर नहीं होता कि परास्त होने और लज्जित होने के कारण अपने पक्षवालों

को भड़का कर फसाद करवादे। केवल एक पक्ष दूसरे पक्षका खंडन करता है, दूसरे पक्षको उत्तर का अवसर नहीं है। यदि बुरा लगे तो इतना ही होता है कि उठ कर चला जाय वहां न बैठे और न सुने किन्तु जब एक पक्ष दूसरे पक्षके धार्मिक विचारों का खंडन करता है, दूसरा पक्ष उत्तर देता है और फिर पहिला पक्ष प्रत्युत्तर देता है और इस प्रकार खण्डन मण्डन का सिलसिला चलता है तो जिस पक्ष से युक्तियुक्त उत्तर न बन आवे अथवा अपने मत का खण्डन सहन न होसके तो उसकी ओर से भड़क कर फिसाद का हो जाना स्वाभाविकही है, यदि श्रोतागण चुने हुए विद्वान हों तो वह सँयम से काम लेते हैं और फसाद नहीं होता? और यदि कुंजड़े कसाई, तेली, तम्बोली, धोबी, जुलाहे, वंचक बदमाश ही प्रायः हों और बुद्धिमान् लोग थोड़े हों जैसा कि भीड़ में हुआ हो करता है, तो तत्काल ईंटें बरसने लगती हैं और दंगा फिसाद में कुछ देर नहीं लगती। शास्त्रार्थ तो विद्वानों की सभा में ही होना चाहिये जो आनन्द भी लें और यह सम्मति भी बना सके कि सत्य का पक्ष कौनसा है। शास्त्रार्थ मूर्खों की भीड़ में नहीं होना चाहिये क्योंकि मूर्खता के कारण न वह समझ सकते हैं। और न वह निर्णय कर सकते हैं। इसलिये शास्त्रार्थ विद्वानों के सन्मुख ही होने चाहियें यदि यह पूछा जाय कि चांदापुर के मेले में खुला शास्त्रार्थ क्यों हुआ था तो उसका उत्तर यह है कि इसी कारण वहां भी पूरा निर्णय नहीं हो सका था मेला के वास्ते सात दिन नियत किये गये थे पर पूरे दो दिन भी मेला न रहने पाया और दूसरे दिन लोगों ने इतना गुलगपाड़ा मचाया कि मेला समाप्त हो गया। यदि वहीं पूरा निर्णय हो जाता तो इस शास्त्रार्थ की आवश्यकता न पड़ती। यदि यह कहो कि नियमित शास्त्रार्थ से सब लोग लाभ नहीं उठा सकते तो 'सब लोग' के अर्थ स्पष्ट करने चाहिये। क्या! सब लोग से मतलब सारे संसार के लोगों से। है अथवा सारे मेरठ के लोगों से। सारी दुनियां के लोग तो एक मकान में इकट्ठे हो ही नहीं सकते और न मेरठ के सारे लोग। यदि मेरठ के सब लोग एक मकान में इकट्ठे हो भी जावें तो भी सब के लिये सुनना असम्भव है। यदि शास्त्रार्थ विद्वानों की सभा में हो और साथ २ लिखा भी जावे तो विद्वान् सुनने का आनन्द ले लेंगे और साधारण जनता में से जिस किसी का जी चाहे वह पढ़ कर लाभ उठा सकता है।"

मौलवी साहब ने बहुतेरा सिर पीटा किन्तु स्वामी जी ने भी इन शर्त्तों को नहीं छोड़ा इस लिये यह शास्त्रार्थ हुआ ही नहीं। मेरठ में सनातनी पंडितों के सामने भी यही शर्त्तें पेश कीं और पण्डितोंने भी शास्त्रार्थ नहीं किया क्योंकि वह जानते थे कि विद्वानों के सामने लिखित शास्त्रार्थ में गपशप और गालीगलौच से काम न चलेगा और युक्ति और प्रमाण उनके पास थे ही नहीं। यदि आजकल भी ऋषि दयानन्द के आदेशानुसार ही शास्त्रार्थ हों तो दङ्गा फसाद बटेर बाजी और शान्तिभंग का कोई भय न रहे विद्वान् लोग आर्यसमाज की ओर खिंचें, और सत्य की जय और असत्य का क्षय हो।

शास्त्रार्थ कभी बन्द नहीं हो सकते जब तक कि संसार में किसी मत का एक भी विद्वान् सत्य, सनातन, अनादि ईश्वरीय वैदिक धर्म से विद्रोह करने वाला उपस्थित हो।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

मांस भक्षण

मांस भक्षण के विषय में भी आजकल कुछ न कुछ चर्चा होती ही रहती है। किन्तु सर्वथा दूर हो जावे यदि ऋषि के जीवन चरित्र का ऋषि के पब्लिक जीवन में कोई भी ऐसा समय न था जब कि वह मांसभक्षण का बलपूर्वक खण्डन न करते थे।

सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संस्करण तो १८८२ में छपने के लिये दिया गया किन्तु ७ अक्तूबर सन् १८७९ के दिन फरुखाबाद के हाई स्कूल के सेकेंड मास्टर ने मांस के विषय में प्रश्न किया, स्वामी जी ने कहा कि तुम हिंसा मानते हो या नहीं उसने कहा हां 'स्वामी जी' इस हिंसा से लाभ क्या है? (माँस भक्षी) बल और स्वाद (स्वा०) बल का हाल तो मैंने जंगलमें देखा है अरणा भैसा, घास खाने वाला और सिंह मांसाहारी होता है किन्तु यदि अरणे भैंसे पानी पीते हों तो सिंह नदी से दूर ही खड़ा रहता है और वह निडर होकर बेखटके पानी पीते रहते हैं रहा स्वाद, सो छःरस हैं माँस में कोई रस आप बतला सकते हो? (मा०) नहीं (स्वा०) फिर तुम्हारी युक्तियां अकार्थ हैं। अब हिंसा के अतिरिक्त और हानि सुनो। मुम्बई में दश विद्यार्थी मांसहारी और दश निरामिषहारी, समान आयु और और सामान बुद्धि के थे, एक गुरु से पढ़ने पर भी मांसाहारी आठ और फलाहारी दो फेल होते रहे। तीन बार यह परीक्षा होचुकी है। ऋषि और पश्चिमके फिलासफर सब मांसाहार के विरुद्ध हैं इस से बढ़कर और क्या चाहते हो।

और सुनिये सन १८८० के जून मास में कैम्प फतहगढ़ में जब भगवान् का व्याख्यान होचुका तो डैन्स्टन साहब जौयन्ट मजिस्ट्रेट ने योगकी बाबत पूछा स्वामी जी ने योग की व्याख्या की और कहा कि यदि आप लोग योग करना चाहें तो नहीं, कर सकते क्योंकि मांस मद्य के सेवन करने वाले हो यदि योग करना चाहते हो तो रोटी और मूंग की दाल खानी चाहिये तब कर सक्ते हो अन्यथा नहीं।

आर्य्य समाज और शिक्षाप्रणाली

आर्य्यसमाज के अन्दर ऐसे भद्र पुरुष भी हैं जो सरकारी ढंग के स्कूल खोलना भी आर्य्यसमाज का कर्त्तव्य समझते हैं किन्तु ऋषि ने अपने जीवन काल में ही इस प्रश्न का स्पष्ट उत्तर देदिया था, आर्य्यसमाज मुम्बई के जो नियम बनाये गये उनमें आर्य्यसमाज की शिक्षा सम्बन्धी नीतिका स्पष्ट विवरण है। दो नियम निम्न प्रकार हैं—

(१६) आर्य्यविद्यालय में वेदादि सनातन आर्ष ग्रन्थों का पठनपाठन हुआ करेगा। और सब स्त्री पुरुषों को वेदोक्त रीति ही से शिक्षा दी जायगी।

(२०) स्त्री और पुरुष इन दोनों के विद्याभ्यास के लिये यथा सम्भव प्रत्येक स्थान में आर्य्य विद्यालय पृथक् पृथक् बनाये जायेंगे। स्त्रियों की पाठशाला में अध्यापिका आदि का सब प्रबन्ध स्त्रियों द्वारा ही किया जायगा, और पुरुषों की पाठशाला में पुरुषों द्वारा, इससे विरुद्ध नहीं।

इससे निर्विवाद रूप से सिद्ध है कि आर्य्यसमाज का उद्देश्य केवल ऐसे विद्यालय खोलना है जिन में आर्षग्रन्थों की पढ़ाई का प्राधान्य हो और आर्ष संस्कृत पढ़ाई जावे। केवल वर्त्तमान संस्कृत की वृद्धि में

भी ऋषि संसार का हित न समझते थे। १८७३ के मार्च मास में ऋषि ने कलकत्ता में एक व्याख्यान दिया जिस में बतलाया कि वेद आलोचना के विना संस्कृत की शिक्षा से कुछ लाभ नहीं है। इससे लोग पुराणों के कुकर्म उपदेश से व्यभिचारी हो जाते हैं या जो विचारशील हैं वह धर्म से पतित होकर हानिकारक होजाते हैं। बङ्गाल के लैफ्टिनैण्ट गवर्नर के इस प्रस्ताव के विषय में "कि संस्कृत कालिज बन्द कर दिया जावे" ऋषि ने कहा सँस्कृत कौलिज में वेद न पढ़ाये जावें तो उस से कोई लाभ नहीं। मौलाजोड़ में प्रसन्नकुमार ठाकुर ने जो संस्कृत कालिज स्थापन किया था वहां जाकर स्वामीजी ने प्रस्ताव किया कि इस में वैदिक संस्कृत की शिक्षा हो।

अपने जीवनकाल में ऋषि ने जितने भी पाठशाला स्थापित किये वह सब वेद वेदांगों की शिक्षा के लिये ही थे। लाहौर में भी आर्य्यसमाज के स्थापित होने पर एक वेद विद्यालय खोला गया जिसमें लगभग १०० विद्यार्थी प्रविष्ट होगये।

वर्तमान स्कूलों की शिक्षा के ऋषि इतने कट्टर विरोधी थे कि उन्होंने मुरादाबाद के साहू श्यामसुन्दर जी को पत्र लिखा कि बालक का यज्ञोपवीत कराके बालक को घर में पढ़ाना क्योंकि गुरुकुल का प्रबन्ध नहीं है।

गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों और ब्रह्मचारिणियों के सँरक्षक दण्ड व्यवस्था के विषय में विचित्र विचार रखते हैं और चाहते हैं कि गुरुकुलों में कृत्रिम समानता का राज्य हो। इस सम्बन्ध में दो घटनाओं का उल्लेख करना पर्याप्त होगा।

मिर्जापुर की पाठशाला के विषय में ऋषि ने यह नियम बनाया कि जो विद्यार्थी सन्ध्या न करे और सूर्योदय से पहिले न उठे वह उस दिन भोजन से वञ्चित किया जावे और दिन भर गायत्री का जाप करता रहे। कासगञ्ज की शाला के विषय में यह नियम बनाया कि यदि कोई विद्यार्थी सूर्योदय से पहिले उठ कर सन्ध्या न करले तो उस दिन उस को भोजन की आज्ञा नहीं है। उसे सायं की सन्ध्या करके भोजन मिले और निरीक्षक लोग देखें कि वह बस्ती में जाकर खाना न खाले। कासगञ्ज पाठशाला का पंचम विद्यार्थी कृष्णबल्लभ बिना आज्ञा के अपने कुटुम्ब के साथ कहीं चलागया इस पर स्वामीजीने उसपर २५)रु०जुर्माना किये, १०) तो माफ कर दिये और शेष १५) रु० पाठशाला की निधि में दाखिल हुए। पूर्णमासी के दिन विद्यार्थियों की परीक्षा होती थी जिसके अङ्क ज़्यादा आते थे उसको घी अधिक दिया जाता था और जो अनुत्तीर्ण होजाता था उससे दूसरे विद्यार्थियों के जूते उठवाये जाते थे।

शुद्धि

आर्यसमाज के नियमों; उपनियमों में आर्यसमाज में प्रवेश की विधि हिन्दुओं, मुसलमानों, ईसाइयों इत्यादि सबके लिये एकसी लिखी है। दयानन्द जगत्गुरु थे और मनुष्यमात्र नहीं प्राणीमात्र से उनका सम व्यवहार था। शुद्धि संस्कार ऋषि की मृत्यु के बाद ही गढ़ा गया है सन्१८७८ में पादरी खड्गसिंह ऋषि के साथ शास्त्रार्थ करने के लिये अमृतसर आये। शास्त्रार्थ का परिणाम यह हुआ कि वह ऋषि के अनुयायी और आर्यसमाज के उपदेशक बन गये। उनकी दोनों पुत्रियों का विवाह भी आर्यों में ही हुआ। जीवन—चरित्रों में नहीं लिखा कि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Di...

उनका सिर मुडवाया गया था कोई शुद्धि संस्कार किया गया, हां यह अवश्य लिखा है कि उसी समय कई ईसाई आर्य्यसमाज के सभासद बन गये।

जातिबन्धन

कई भद्रपुरुष आर्य-समाज में ऐसे भी हैं जिनका कि यह मत है कि गुण, कर्म, स्वभाव से वर्णव्यवस्था का ऋषि ने केवल सिद्धान्त रूप में उपदेश किया है और ऋषि यह समझते थे कि जाति बंधन शनैः २ टूटेगा। पहिले खत्रियों और ब्राह्मणों की उपजातियां टूटेगीं फिर जातिबंधन तोड़ने का समय आयेगा, उनका यह विचार भी सर्वथा निर्मूल है।

सहारनपुर के मुन्शी चण्डीप्रसाद ने सन् १८७७ में ऋषि से कुछ लिखित प्रश्न किये जो उत्तर सहित धर्म सम्वाद पत्रिका स्यालकोट में, उस समय छप गये। उन में दो प्रश्न उत्तर सहित हम यहां देते हैं।

(प्रश्न) अक्सर हिन्दू लोग मिसल कायस्थ और क्षत्रिय वगैरह शराब और शिकार खाते पीते हैं सो यह काम भी करने दुरुस्त हैं या नहीं?

(उत्तर) शराब और शिकार का खाना पीना बुद्धि के लिए हानिकारक है और अकलन भी जानदार का खाना जुल्ममें दाखिल हैं और अजरुए वेदशास्त्र मना है।

(प्रश्न) आपकी तकरीर से मालूम हुआ कि ब्रह्मा के चार मुख नहीं थे और न किसी की कोई जाति थी मगर बइतबार पेशा यानीजो वेदशास्त्र पढ़कर बमूजिब उसके उपदेश करता था वह तो ब्राह्मण और जो कुव्वते बाजू में दिलावर और रियाया की परवरिश करता था वह क्षत्री और जो तिजारत और जरायत करता था वह वैश्य और जो मजदूरी व हजामी वगैरह करता था वह शूद्र इस मज़मूनसे यह बात लाज़िम आती हैकि अगर किसी चमार या भंगी या कसाई ने विद्या हासिल करली हो तो वह भी मिसल पंडित के है बस वह चमार या भंगी या कसाई जिसने विद्या हासिल की है अगर वह चाहे कि मैं किसी ब्राह्मण के घर में अपनी शादी करूं तो यह अपढ़ ब्राह्मणों को भी लाजिम है या नहीं कि अपनी लड़की उसे विवाह दे।

(उत्तर) वास्तव में अगर इन छोटे पेशे वालों में से किसी ने विद्या हासिल की हो तो मिसल पंडित के है लेकिन इस कारण कि उसने इस अर्से तक रज़ीली (नीची) पेशा के आदमियों में परवरिश पाई जरूर है कि बुए रज़ालत (दुर्गन्ध) उसके दिमाग से न जाये तो ब्राह्मण की लड़की से उसका विवाह उचित नहीं।

इस उत्तर से स्पष्ट है कि ब्राह्मणों, क्षत्रियों वैश्यों और साफ सुथरे शूद्रोंके विवाह आपस में जातिबन्धन का ख्याल छोड़कर गुण कर्म स्वभावानुसार हो जाने चाहिये। जन्म से जाति का ख्याल नहीं रखना चाहिये किन्तु कुल और पैतृक व्यवसाय का ख्याल जरूर कर लेना चाहिये।

परदे की कुरीति

परदेकी कुरीतिको भी ऋषि एकदम उड़ादेना चाहते थे उन्हीं महाशय के एक प्रश्न के उत्तर में ऋषि ने कहा आर्यों में परदे कीरीति पुरातन नहीं है। यह मुसलमानों के राज्यमें प्रचलित हुई है स्त्रियों को परदे में रखना उन को बन्दीगृह में डाल देना है परदे में रहने से सतीत्व की रक्षा नहीं होती।

आर्य्यसमाज और हिन्दू त्यौहार।

आर्य्यसमाज में ऐसे भद्रपुरुष भी हैं जो यह समझते हैं कि संघटन के युग में आर्य्यसमाजियों को प्रत्यक हिन्दू त्यौहार में सम्मिलित होना चाहिये। कई आर्य्यसमाजी रामलीला-कमेटी के मुख्य प्रबन्धक होने में अपना गौरव समझते हैं किन्तु महर्षि रामलीला के कट्टर विरोधी थे। अनूपशहर में स्वामी जी १५ भादों सम्वत् १९२४ में पहुंचे वहाँ उन्होंने रामलीला का खण्डन किया और कहा कि तुम रामलीला करते हो यह बात अच्छी नहीं, जानकी जी की तस्वीर बनाना कूचा बकूचा दिखाना, स्वांगों को नचाना बुरा है। कहते हैं कि देखो यह कैसा सुन्दर लड़का है, यह बातें बहुत बुरी हैं।

ऋषि के उपदेश का यह फल हुआ कि कई सालों तक अनूपशहर में रामलीला हुई ही नहीं।

प० चण्डीप्रसाद के एक प्रश्न के उत्तर में ऋषि ने कहा कि हिन्दू त्यौहारों में से होली और दिवाली ही उचित रूप से मनानी चाहिये। मेरठ की धर्मसभा के प्रश्नों के उत्तर में ऋषि ने लिखा "अब देखिये रामलीला को बनवाकर किस तरह आप लोग अपने उत्तम पुरुषों की नकल बनवाते और कितना उनका अपमान करवाते और अन्य धर्मवालों को उन पर हंसवाते हो और उन की दुर्गति करवाते हो" आजकल के आर्य्यसमाजियों ने रक्षाबन्धन के विचित्र अर्थ गढ़ लिये हैं और इसका सम्बन्ध भाई बहिन से जोड़ लिया है वह इस बात को भूल जाते हैं कि केवल पञ्जाब में ही रक्षाबन्धन के दिन बहिनें भाई को रखड़ी बांधती हैं। भारत के अन्य प्रांतों में ब्राह्मण लोग रखड़ी देते हैं और भाईदूज पृथक मनाई जाती है। सन् १८७९ में एक प्रश्न के उत्तर में ऋषि ने कहा "आप लोग अपनी देशरीति तक भूल गये हैं पूर्व काल में बूढ़े रक्षा बांधे नहीं फिरते थे उस समय इस पर्व के दिन सब विद्यार्थियों के हाथ में राजा की ओर से रखड़ी बांधी जाती थी उससे यह सूचित किया जाता था कि इनकी रक्षा करना राजा प्रजा दोनों का कर्त्तव्य है"।

कैसा सुन्दर और युक्तियुक्त स्पष्टीकरण है कुमारों और कुमारियों की रक्षा का भार विशेषरूपसे राष्ट्रके ऊपर है और राष्ट्रपति को अपने कर्त्तव्य का स्मरण कराने के लिये यह पर्व रचा गया था।

आर्य्यसमाज में अवैतनिक कार्य्यकर्त्ता।

यदि किसी के पास अपने घर में खाने पीनेको हो और वह धर्म की सेवा बिना वेतन के करे तो उसका काय प्रशंसनीय है किन्तु इस का यह अर्थ नहीं कि धर्म का काय चाहे क्षमता से न हो चाहे उस को कितना ही बिगाड़ा जाय किन्तु होना वह अवैतनिक ही चाहिये, ऋषि इस मर्म को समझते थे। बाबू विशेश्वर सिंह को एक पत्र में महर्षि ने लिखा "ऐसा विचार मत रक्खो कि इस प्रेस से मैं कुछ न लूंगा क्या? घर के माल में से घर के आदमी यथोचित नहीं लेते? जो काम धार्मिक उत्तम मनुष्य से बनता है वह धन से कभी नहीं होता, जो तुम से यन्त्रालय की उन्नति होगी निश्चय है कि लाखों रु० खर्च करने से भी न होगी क्योंकि सब पदार्थ संसार में हो रहे हैं परन्तु शुद्ध मनुष्य का मिलना दुर्लभ है। क्या तुम इस द्रव्य को

CC0. Gurukul Kangri Collection, Hardwar

बुरा और अधर्म का समझते हो ? जो नहीं तो यह सब उत्तर लिखो ? बड़ों २ और छोटों २ का कुछ नियम नहीं ; यह तो अपनी आत्मा के साथ है।..... यदि सब प्रबन्ध हो जाय तो पैन्शन लेकर यहीं तुम रहना और जो मासिक पाते हो वही यहां मिले"।

अवैतनिक कार्य तो अच्छा है किन्तु उस का ख़ब्त बुरा है इस ख़ब्त ने आर्य्यसमाज का बहुत सत्यानाश किया।

इस प्रश्न का एक और रूप भी है। आर्य्यसमाज की कई संस्थाओं का प्रबन्ध केवल अमीरों के हाथ में है कारण यह कि निर्धन ब्राह्मण मार्गव्यय का भार उठा नहीं सकते और संस्था से मार्ग व्यय लेना हलका काम समझा जाता है इस से वह संस्थाएं अमीरों की सम्पति बन रहती हैं और निर्पेक्ष विद्वानों के परामर्श से उनको लाभ पहुंचना था वह नहीं पहुँचता। इस रहस्य को भी ऋषिवर भली प्रकार जाने हुए थे। बाबू विशेश्वरसिंह जी को एक और पत्र में वह लिखते हैं कि मेरठ फरुखाबाद, दानापुर और लखनऊ की आर्य्यसमाजों की अन्तरङ्ग सभायें वैदिक-यन्त्रालय का हिसाब देखने के लिए किसी योग्य पुरुष को बारी २ से भेजा करें। इस सम्बन्ध में ऋषि के निम्न लिखित वाक्य विचारणीय हैं "वह अन्तरङ्ग सभा की सम्मति से आवें और वे हिसाब भी अच्छी तरह से समझते हों तथापि धार्मिक और देशउन्नति में प्रीति रखने वाले हों। चाहे समाज धर्मार्थ वैदिक यन्त्रालय की कितनी ही सहायता करे और वास्तव में समाजों ही के प्रताप से वैदिक यन्त्रालय बना है। तथापि समाजसे जो कोई पुरुष आवे उसके आने जाने और जब तक वहां रहे उसके खाने पीने का खर्च भी वैदिक यन्त्रालय से दिया जावे।

सार्वजनिक धन की रक्षा।

वर्त्तमान काल के आर्य्यसमाजी पब्लिक धन की रक्षार्थ न्यायालयों में जाना बुरा समझते हैं किन्तु उनके निज के धन के दो पैसे भी कोई मार ले तो न्यायालय का दरवाजा खटखटाने में उनको लज्जा नहीं आती। ऋषि का व्यवहार इस से ठीक उलटा था वह जहां एक ओर अपने आप को विष खिलाने वाले को क्षमा कर सकते थे, वहां दूसरी ओर पब्लिक रु० को हज़म करने वालों को बन्दीगृह भिजवाने के लिए तैय्यार थे। बाबू विशेश्वरसिंह को एक पत्र में वह लिखते हैं "वहां किसी वकील से पूछ निश्चय कर लिखना कि मुन्शी बख्तावरसिंह पर नालिश की जावे, प्रयाग में हो सकती है या नहीं ? क्योंकि दो ही ठिकाने हो सकते हैं एक जहां बात हुई है वहां दूसरा जहां मुद्दई हो वहाँ। जब वह बात हुई थी तब यन्त्रालय काशी में था अब प्रयाग में है सो किसी अच्छे वकील से पूछकर लिखो और यह भी पूछकर लिखो कि नालिश फौजदारी में करना चाहिए या दिवानी में। मेरी समझ में और अन्य वकीलों की भी सम्मति है कि दीवानी करनी अच्छी है।

सुख-स्वप्न ।

—:o:—

एक दिन सन्ध्या समय अकेले वायु सेवन करने घर से बाहर निकला। कोई उद्देश्य नहीं—कोई गन्तव्य स्थान नहीं। अथच चला। चलने ही में आनन्द बोध किया। बुद्धि के अगम्य प्रदेश में, चिन्ता के अभावनीय राज्य में, चला। जिस प्रकार अन्तरात्मा किसी अनिश्चित वस्तु को प्राप्त करने के लिये व्याकुल हो उठती है। मन उन्मत्त की भांति दौड़ता है प्राप्त होगी अथवा नहीं—न जानते हुए भी दौड़ता है। कहां जाता है कोई निश्चय नहीं। उसी भांति मैं भी चला उस पथ पर कभी आया नहीं किंतु आज यह पथ इतना परिचित इतना तृप्तिकर क्यों बोध होता है। बुद्धि को परास्त कर कल्पना इतने द्रुत वेग से कहाँ लिये जाती है। जाओ मन! अपने जीवन सगिनी को देख आओ। देखो! बहु मयूराक्षी नदी कैसी आनन्द रूपी प्रवाह से प्रवाहित हो रही है। उसीके तटपर सँध्या के समागम में तुम्हारी प्राण प्रतिमा का दर्शन होगा अथवा वह जो स्वच्छ सरोवर के मध्य में रक्तरञ्जित कमल विकसित हो रहा है। उसी के समीप तुम्हारा प्रेम पद्म विराजित है। जाओ! विलम्ब न करो। वह देखो! अंधकार धीरे २ बढ़ रहा है। संध्या की काली छाया पड़ रही है। अचिरात विश्व चराचर को ग्रास करेगा, तुम्हारा मनोरथ सफल हो जायगा।

यौवन के प्रारम्भ में नाना प्रकार की कल्पना आकर मन को उद्भासित करदेती है—मैं क्या उसी कल्पना रूपी तरङ्ग में गोते लगा रहा हूं। स्वास्थ्य के अपूर्व उल्लास से चित्त उल्लासित होता है, मैं क्या उसी स्वर्गीयकुसुम की प्राप्ति के लिये उन्मत्त की नांई भ्रमण कर रहा हूँ। मधुर मिलन की आशा में मन प्रतिक्षण अनिश्चित दिशा की ओर खिच रहा है—मैं क्या उसी की प्रत्याशा में प्रेम तरङ्ग में भासित हो रहा हूँ। नहीं जानता आज क्यों आज जीवन नवीन उत्साह से परिपूर्ण हो रहा है।

सन्मुख स्वच्छ सरोवर है—उसी के किनारे आ बैठा—नाना प्रकार की भावना हृदय में उठीं—चिन्ता रूपी आंधी मन को उड़ाये लिये जाती थी, हृदय में आशा निराशा का घोर संग्राम चल रहा था, किन्तु यह क्या? यह बालिका कौन? ऐसा सुन्दर रूप तो कभी नहीं देखा! श्याम वर्ण में इतनी शोभा कहां से आई! स्वास्थ्य का माहात्म्य दिखाने आई हो? गौरवर्ण-चम्पक विनिन्दित वर्ण होने से भी मन हरण किया जा सकता है—यही दिखाने आई हो? नहीं! इस मुख से स्वर्ग का आभा दर्शाने आई हो! सरलता, कोमलता की खानि दिखाकर प्रेम का राज्य स्थापित करने आई हो! ठहरो! मैं तुम्हारे सौंदर्य्य से नयन तृप्त करलूँ। नेत्र सुफल कर लूं। जाओ! तुम ठहर क्यों गई! मैंने तुम्हारा चित्र हृदय पट पर अङ्कित कर लिया जाओ!

आज भी वही मुख नेत्रों के सम्मुख नाच रहा है। कौन जानता था कि उसी रूप की याद में तारे गिन २ कर रात्रि व्यतीत करनी पड़ेगी। किसे मालूम था कि इतनी आशा से परिपूर्ण हृदय पल भर में चूर्ण विचूर्ण कर दिया जायगा।

सहसा शरीर रोमांचित हो आया। आनन्द रूपी तरङ्ग ने मन को प्रफुल्लित करदिया जो मूर्ति नेत्रों को तृप्ति प्रदान कर रही थी उसी से मेरा विवाह सम्बन्ध स्थिर किया जा रहा है। उल्लासपूर्ण हृदय से घर दौड़ आया

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, D...

किन्तु हृदय पर उसी का चित्र पट अङ्कित हो रहाथा। नेत्रों को बन्द करने से वही मूर्ति अज्ञात भाव से नयन पथ की राह हृदय में आ विराजती थी। प्रेम राज्य में मैंने प्रेम योगी होकर पदार्पण किया था। पृथम सीढ़ी पर पैर रखते ही बड़ी तृप्ति और आनन्द बोध किया। आशा ने पूत्याशा ने कहा कि जाओ! तुम्हारी मनोकामना सिद्ध होगी।

रात्रि को स्वप्न हुआ कि मयूराक्षी नदी के तटपर बैठा हुआ हूँ। सहसा भीषण शब्द करती हुई प्रबल तरङ्ग आकर अनन्त बालुका राशि बहा ले गई। प्रवाह के वेग में नदी कूल प्लावित हो गया कितने ही बृहत वृक्ष जल श्रोत में भासने लगे और देखा कि उसी प्रबल तरङ्ग में एक सुकोमल बालिका बह रही है। अभिमात्र व्यस्त हो इस जीवन की आशा त्याग उसी प्रवाह में कूद पड़ा। अनेक कष्ट उठाकर बालिका को तट पर ले आया एवंम् यत्नपूर्वक उसे चैतन्य विधान किया। जिस समय बालिका ने संज्ञा लाभ की—देखा! यह तो वही मनोहारिणी पूर्वपरिचिता बालिका है। प्रेम के आवेश में हृदय से लगा लिया किन्तु वह—लज्जा वश सङ्कुचित हो पुष्पकली की भांति सिमट गई। मोह स्वप्न टूट गया—निद्रा भङ्ग हो गई। कौन जानता था इतनी शीघ्र सुख स्वप्न टूट जायगा। यदि जानता तो उसी प्रवाह के अतल तल में समा जाता। यदि उस स्वप्न का अर्थ उस समय समझता तो आज उस पथ का पथिक हो दर दर की ख़ाक न छानता।

संध्या अति क्रांति हो चुकी थी, मनोहर पुर के काली मन्दिर में आरती हो रही थी। कितने ही नर नारि भक्तिपूर्वक मां मां का शब्द उच्चारण कर रहे हैं। वर प्रदायिनी, महा शक्तिशालिनी जननी की ओर सब की आंख लग रही हैं। यह देखो मान्दर के पूर्व की ओर कोने में कौन हाथ जोड़ एकाग्र मन से देवी की प्रार्थना कर रहा है। बालिका! क्या तुम्हारी भी कोई प्रार्थना है? तुम्हारा पांडुवर्ण और विषाद से भरा हुआ मुख क्यों है। तुम्हारे युगल नयन अश्रुपूर्ण क्यों हैं? तुम्हारी झुकी हुई उदास आँखें किस की चिन्ता में रत हो रही हैं? क्या तुमको भी कोई दुख है? वह देखो! देवी तुम्हारी आराधना से प्रसन्न हो करुणापूर्ण दृष्टि से ताक रहीं हैं। मांगो—क्या मांगती हो। तुम्हारी अभिलाषा पूर्ण होगी। हाय! आज वह दृश्य याद करके हृदय विदीर्ण हो जाता है। तुमने कितनी बार गर्व से कहा—मैंने मां काली की आराधना करके तुम को पाया है। जिस दिन मैं ने तुम्हें देखा था उसी दिन मां काली के चरणों में प्रणाम कर प्रार्थना की थी मां! यही वर दो कि इनकी ही सेवा करके जीवन सार्थक करूं" देवी कराल वदना! तुम ने प्रसन्न होकर बालिका की अभिलाषा पूर्ण की थी तुम्हारे ही प्रसाद से हमारा मिलन हुआ और आज तुम्हारी ही कृपा से हमारा बिछोह हुआ, और कितने दिन बिरहाग्नि में जलना होगा? यह प्रार्थना निष्फल जायगी? प्रेममयी-प्राणेश्वरी! इस अपदार्थ जीव को प्राप्त करने के लिये तुमने क्या २ न किया था। आज उसी को त्याग करते समय क्या तनिक भी दया न आई? यदि त्याग ही करना था तो उसके लिये इतनी चेष्टा क्यों की? यदि मुझ को असार जीव जानती तो कभी इतनी विकल होती-इतने दिन बाद अपदार्थ समझका त्यागदिया छोड़ कर चली गई। हाय! यदि तुम में ज़रा भी ममता होती तुम्हारे हृदय में यदि तनिक भी प्रेम होता तो बिदा होते समय तुम्हारी आंखों से एक बूंद आंसू अवश्य टपक पड़ता।

"आज़ाद"

दयानन्द-स्तव

ले०-रसिक

(१)

दिव्य दया की मूर्ति कहें या प्रभुता पन का प्रान इन्हें।
सुकृतियों की कला कहें या पूर्व-पुण्य-उपमान इन्हें॥
जग की जीवन-ज्योति कहें या बल शाली हनुमान इन्हें।
पुष्पों का मकरन्द कहें या माता का अभिमान इन्हें॥

(२)

मंजुलता की मौज कहें या कोमलता की खान इन्हें।
रम्य रीति का रूप कहें या ध्येय धैर्य का ध्यान इन्हें॥
पशुवन का केशरी कहें या गौरव का गुरु ज्ञान इन्हें।
सत्पथ का प्रिय पथिक कहें या विधि का विषम विधान इन्हें॥

(३)

आनन्दों का ओज कहें या अलि-वृन्दों की तान इन्हें।
धनियों का सर्वस्व कहें या दीनों का अरमान इन्हें॥
कवियों का शिरमौर कहें या उन्नति-केन्द्रोत्थान इन्हें।
कान्ति-कुंज-कौमुदी कहें या देश-भक्ति की आन इन्हें॥

(४)

अभिलाषा की इष्टि कहें या मर्यादा का मान इन्हें।
धवल धर्म की ध्वजा कहें या भूरि भाव का मान इन्हें॥
नक्षत्रों का चन्द कहें या गुण गरिमा का गान इन्हें।
वसुधातल की सुधा कहें या भारत का भगवान इन्हें॥

(५)

सत्य-व्रत का व्रती कहें या "रसिक" शान्ति की शान इन्हें।
महिमा का मार्तण्ड कहें या लोक लाज की त्रान इन्हें॥
पूबल-प्रेम का पुंज कहें या सुख नन्दन-उद्यानइन्हें।
जी में आता है कहदें मां का सच्चा सन्तान इन्हें॥

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

घनाक्षरी।

(१)

घोर अन्धकार मयी कालिमा मिटा के जिमि;
ज्योत्स्ना जगाया नभ-मंडल में चन्द ने।

मानी मतवाले गरबीले औ अड़ीले अलि-
वृन्दों को लुभाया जिमि मंजु मकरन्द ने॥

"रसिक" रमेश-भक्ति-भावना भरा है जिमि;
चित्त में चितेरा बनि दीह दुःख दन्द ने॥

मरे हुवे हिन्दुओं में जीवनी सी डाली तिमि;
भारत के भाग्य रूप देव-दयानन्द ने॥

पी के मद-मस्त जब "रसिक" थे लोग सब
सिक्का था जमाया जगती में छल छन्द ने॥

धर्म कर्म से थे हुवे पूरे अनजान जब,
डंका था बजाया भली भांति फरफन्द ने॥

ज्ञान-सविता को ढकने के लिए पूर्णता से;
जाल था बिछाया तम-तोम मतिमन्द ने।

दिव्य-सुधाधार वसुधा पै बरसा के तब;
जीवन दिया था हमें देव-दयानन्द ने॥

हमारी मंजूषा

अकबरी दरबार पहला भाग—अनुवादक रामचन्द्र वर्मा, प्रकाशक काशी नागरी प्रचारिणी सभा मूल्य २॥) सूर्यकुमारी पुस्तकमाला ८)

मौलाना मुहम्मद हुसेन साहब 'आज़ाद' उर्दू फ़ारसी के विख्यात लेखक और पंडित हो गुज़रे हैं।

उनकी पुस्तक दर्बारे अकबरी अत्यन्त प्रसिद्ध है। मौलाना आज़ाद की पुस्तकों को पढ़ने वालों में से कौन ऐसा होगा जिसने उस पुस्तक को न्यून से न्यून एक बार न पढ़ा हो। पुस्तक बहुत बड़ी है वहभी अत्यन्त मनोरञ्जक है और उसके साहित्य रत्न होनेमें तो कोई संदेह है ही नहीं। शब्द योजना वाक्य रचना उसकी अत्यन्त आनन्ददायक हैं। मौलाना साहब के कई विचार बहुत विचित्र हैं और ऐतिहासिक घटनाओं को वर्णन करने में इन्होंने उस निरंकुशता से कार्य्य लिया है जो रसिकों को क्षन्तव्य है। किन्तु पुस्तक का साहित्यिक मूल्य बहुत है। महाशय रामचन्द्र वर्मा ने ऐसी सुन्दर पुस्तक का अनुवाद कर के हिन्दी साहित्य की बहुत सेवा की है। पहिला भाग ही अभी मुद्रित किया है। भाषा सहल है, और अनुवाद को पढ़ते हुए असल का आनन्द साथ ही आता जाता है। यही गुण अनुवाद का सबसे बड़ा समझा जाता है।

हम आशा करते हैं कि इस पुस्तक की एक प्रति पत्येक साहित्य प्रेमी के पुस्तक संग्रह को सुशोभित करेगी।

जायसी ग्रन्थावली अर्थात् पदमावत और अखरावट—सम्पादक रामचन्द्र शुक्ल प्रकाशक काशी नागरीप्रचारिणी सभा मू ३) जायसी ठेठ अवधी भाषा का एक उच्च कोटि का कवि है। "पदमावत" हिन्दी के सर्वोत्कृष्ट काव्यों में से एक समझा जाता है। किन्तु इस की भाषा अपने ढङ्ग की है, और भाव भी गूढ़ है। इस लिये इस को साधारण लोग पढ़ भी नहीं सक्ते।

जो संस्करण उपस्थित थे वह शुद्ध भी न छपे थे। पं० रामचन्द्र शुक्ल ने यह संस्करण निकालकर हिन्दीसाहित्यकी अमूल्य सेवा की है क्योंकि जिस भाषा और जिस ढांचेमें हिन्दी के मुसलमान विद्वान मलिक मुहम्मद जयसी ने इस ग्रन्थको रचा है उसी ढङ्गपर इनसे ३४ वर्ष पीछे गोस्वामी तुलसीदास ने अपनेजगत विख्यात ग्रन्थ रामचरित मानसकी रचना की इस लिये भी जयसी की कविता का हिन्दी साहित्यमें गूढ़ प्रवेशके लिये बहुत महत्व और गौरव है। सम्पादक महाशय ने प्रत्येक पृष्ठ के नीचे कठिन शब्दों और रचनाओं का अर्थ भी दे दिया है। भूमिका बड़े धड़ल्ले की है उस में उन्होंने अपनी समालोचक बुद्धि के चमत्कार दिखलाये हैं। यह भूमिका अपने आप हिन्दी के समालोचनात्मिक साहित्य के गौरवको बढ़ाने वाली है। हमारी प्रबल इच्छा है कि इस पुस्तक की एक प्रति प्रत्येक हिंदी भाषा के प्रेमी के हाथ में हो ताकि सम्पादक और प्रकाशक को प्रोत्साहना हो और इस प्रकार के अन्य ग्रन्थ भी प्रकाशित हों।

३. बांकेदास ग्रन्थावली—(पहिला भाग) सम्पादक जोधपुर निवासी पं० रामकर्ण। प्रकाशक काशी नागरीप्रचारिणी सभा मू०॥) जैसे Bums इत्यादि की कविताओं को, जो नहीं समझता, वह इङ्गलिश भाषाका पंडित नहीं कहला सकता। इसी प्रकार जो मनुष्य अवधी, पूर्वी, और डिंगल भाषाओं को नहीं जानता वह कभी हिन्दी साहित्य का पूरा २ आनन्द नहीं पाता। कविराज बांकेदास जी डिंगल भाषा के महा कविथे। उनके ग्रन्थ आजकल दुष्प्राप्य हैं, उनकी कविता अत्यन्त

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

ओजस्विनी और वीररस से भरी है। पं० रामकर्ण जी ने इनके ग्रन्थों को छपवाना प्रारम्भ किया है। ग्रंथावली का पहिला भाग ही अभी छपा है। इस में कविवर के २४ ग्रन्थों में से ७ हैं। मरू भाषा के शब्दों के अर्थ टिप्पणियों में खोल कर रख दिये हैं। भूमिका बड़े मारके की है। उसके लिखने में संपादक महाशय ने ऐतिहासिक अन्वेषण और विवेचना की सर्वोत्तम स्पिरिट दर्शाई है पुस्तक बड़े काम की है।

४ भारतीय राष्ट्र निर्माण मूल्य ॥।≠)

५ भारतीय राजस्व मूल्य ॥।≠)

६ भारतीय चिन्तन मूल्य ॥।≠)

लेखक और प्रकाशक भगवानदास केला, प्रेम महाविद्यालय वृन्दावन। महाशय भगवानदास जी ने वर्त्तमान राजनीति को सुलझाने वाले और नवीन युग की समस्याओं पर प्रकाश डालने वाले अनेक उपयोगी ग्रन्थ हिन्दी में लिखे हैं। भारतीय राष्ट्र निर्माण उन बहुमूल्य ग्रन्थों में से एक हैं। हमारे पास इस के तीसरे संस्करण की एक प्रति समालोचनार्थ आई है। इस ग्रन्थ में राष्ट्र निर्माण के भिन्न २ तत्वों को क्रमशः लिया है और उन पर स्वतन्त्रता से लेखक महाशय ने अपने विचार प्रगट किये हैं। महाशय भगवानदासने सभी प्रश्नों पर गम्भीरता से विचार किया है अर उनकी सम्मतियां मान्य और चिन्त्य हैं। कोई भी मनुष्य राजनैतिक समस्याओं और उलझनों को समझ नहीं सका और ना हीं लेजिस्लेटिव ऐसैम्बली और प्रान्तीय सभाओं में बजट और सरकार के आय व्यय सम्बन्ध में जो वाद विवाद होते हैं उन का स्वाद लेसकता है। जब तक कि उसको भारतीय राजस्व का प्रारम्भिक ज्ञान न हो। हिन्दी भाषा में ऐसा प्रारम्भिक ज्ञान देने वाली पुस्तक की बड़ी आवश्यकता है। महाशय भगवानदास की पुस्तक इस कमी कोभी बड़ी उत्तमतासे पूरा करती है। सर्व साधारण के लिये अत्यन्त लाभकारी है। प्रत्येक देशहितैषी को इसे पढ़ना चाहिये।

महाशय भगवानदासने 'प्रेम' में धार्मिक आर्थिक सामाजिक, राजनैतिक और अन्तर्राष्ट्रीय आदि विषयों पर जो गम्भीर विचार पूर्ण और स्थायीमहत्त्व के लेख लिखे थे। उनका संग्रह करके पुस्तक के रूप में छपवा दिया है। उस पुस्तक का नाम भारतीय चिंतन रखा है। पुस्तक उत्तम है, विचार मस्तिष्क की गति देने वाले और हृदय को चोट लगाने वाले हैं। पुस्तक इस योग्य है कि इसका विस्तृत प्रचार हो।

७ पञ्च महायज्ञ पीयूष (अर्थात् पंच महायज्ञविधि का अनुवाद) सम्पादक बटटू लाल (बेटु) प्रकाशक मथुरा प्रसाद खरे वादा। मूल्य ।≠)

इस लघु पुस्तक में महर्षि दयानन्द की पञ्चमहायज्ञ विधि में जो वेद मन्त्र हैं उनका हिन्दी पद में अनुवाद मिला है। यदि आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में सन्ध्या हवन के पीछे यह पद्य गाये जावें तो वेद मन्त्रों के भावों का भली भांति प्रचार हो। पद्य रचना अच्छी है किन्तु भावार्थ की अपेक्षा अक्षरार्थ पर अधिकबल दियागया है।

प्रभात का स्वास्थ्य सम्बन्धी विशेष शरीरांक—सम्पादक प्रोफेसर धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम० ए० एम० ओ० एल० एम० आर० एस० सहायक सम्पादक श्री रत्नाम्बरदत्त चन्दोलारत्न यह विशेष शरीरांक बड़ी योग्यता से सम्पादित किया गया है। श्रीयुत कैप्टेनजी कुमार दृष्टिपथका "दृष्टि-यूनता" पर लेख बहुत उपयोगी है। श्री नारायण स्वामीने प्राणायाम पर जो लेख लिखा है वह सर्व साधारणके लिये बहुत हितकर है। पं०घासीराम का लेख उपहासजनक और खाने को हज़म करने में सहायक है। अंक बड़ा सुन्दर है और सभी लेख पढ़ने योग्य हैं।

कुसुमोद्यान

निरर्थक और भद्दे आभूषण।

महात्मा गांधी गिरिडीह होते हुये खरक देहस्थान पर पहुंचे जहां स्त्रियों की एक सभा होनी थी वहां पर उन स्त्रियों को भद्दे और निरर्थक जेवर पहिने देखकर उनके मन में जो भाव हुये वह उन्होंने १५ अक्टूबर के 'यङ्ग इण्डिया' में इस प्रकार प्रकाशित किये हैं :—

"अब तक मैं देवियों के भारी और भद्दे आभूषणों पर आक्षेप करने से रुका रहा चाहे वह मुझे कितने ही दुखदाई मालूम पड़ते रहे लेकिन कलाई से लेकर टेहुनी तक चूड़ियां कड़े, मोटी २ और बड़े घेरे वाली नत्थ जिन का घेरा ३ इञ्च होगा दोनों छेदों से लटकती देखना बर्दाश्त न होता था अतः मैंने सरसता से कहा कि इन भद्दे जेवरों से खूबसूरती तो बढ़ती नहीं उल्टे बहुत ही तकलीफ होती है और रोग बढते हैं क्योंकि उनमें मैल भर जाया करती है। मैंने इतनी सजावट और कहीं देखी न थी। मैंने काठियावाड़ की देवियों को इस से भारी जेवर पहिने देखा है जैसे कि पैरों के कड़े परन्तु सारी देह अटी हुई नहीं देखी थी। मुझे बतलाया गया कि इन भारी नत्थों से प्रायः नाक की नसें भी फट जाया करती हैं। मुझे यह बातें करते कुछ सङ्कोच भी था कि कहीं रुष्ट न हो जावें परन्तु जब अन्त में मैंने देशबन्धु स्मृति निधि के लिये अपील की तो वह मेरे चारों ओर आकर बहुतसा दान दे गई जिससे मुझे शान्ति हुई कि उन्होंने बुरा नहीं मनाया। मैंने प्रत्येक दानी को समझाया कि वह व्यर्थ के आभूषणों को छोड़ दें। वह हंस पड़ीं और कइयों ने आभूषणों में से कुछ दान भी दे डाले। मुझे यह निश्चय नहीं कि आभूषण का अच्छा बुरा होना अथवा भारी हल्का होना आचार के उन्नत होने से सम्बन्ध रखता है लेकिन इस का सम्बन्ध बुद्धि से जरूर है यह असंख्यात उदाहरणों से सिद्ध किया जा सकता है। उसका कलचर साधारण ज्ञान से सम्बन्ध है यह तो स्पष्ट है। परन्तु चूंकि मैं आचार को कलचर से ऊंचा मानता हूँ मुझे आश्चर्य है कि क्या यह हमेशः ठीक होगा कि इन आभूषणों के सुधार के भाव को सारे भारत की नारीमण्डल के सन्मुख जब २ मुझे आने का अवसर प्राप्त हो—रखकर प्रचार करूं। चाहे जो कुछ हो मैं इन भोली भाली देवियों के माता पिता तथा पतियों से प्रार्थना करूंगा कि मितव्ययता की दृष्टि से तथा स्वास्थ्यरक्षा की दृष्टि से भी इन्हें इस बात पर प्रोत्साहित करें कि वह अपने देह की शोभा के इन पदार्थों में बहुतसा काट छांट करें"।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Di...

दयानन्द-निर्वाण

(ले० वैदिकधर्म विशारद, काव्य-मनीषी, श्री पं० सूर्यदेव शर्मा साहित्यालङ्कार बी०ए०)

शार्दूलविक्रीडित वृत्त

(१)

होती वृद्धि अधर्म की जब कभी, अन्याय आधार में।
धर्माधार धुरीण धैर्य वहता, धर्मध्वजी-धार में॥
मुक्तात्मा तब जन्म ले उतरते, सम्पूज्य संसार में।
दे "आनन्द दया" न रूप बनके, जाते निराकार में॥

(२)

छोड़ा था घर बार धान्य धरणी, माता पिता जान के।
विद्या हेतु बिताय बालपन को, जिज्ञासु हो ज्ञान के॥
योगी योग-निधान खोज करके, धीधारणा ध्यान के।
सम्प्रज्ञात समाधि सिद्ध बन के, थे योग्य निर्वाण के॥

(३)

घूमे कानन कुञ्ज में कुधर में, गिरि में, गली ग्राम में।
मारा मान महान दिग्गजन का, शास्त्रार्थ-संग्राम में॥
कीने वेद विशुद्ध-बोधवित जो, प्राणी धरा धाम में।
पाया अंतिम काल प्रेम प्रभु का, निर्वाण निष्काम में॥

(४)

राजा रङ्क सिखाय एक प्रभु को, आराधना साधना।
फैलाई श्रुति सिद्ध सत्य सुख की, सम्भावना भावना॥
"होवे वेद-प्रचार चारु जग में," ये ही रही कामना।
पा निर्वाण गये तथापि मन में, ये थी बसी वासना॥

(५)

भाती है खल को न भूति यश वा, जो गौरवागार है।
जाने है कब मूढ़ मुक्ति मग क्या? सत्यार्थ क्या सार है॥
पापी ने धन लोभ से विष दिया, हा दुष्ट! भूभार है।
कीना घातक मुक्त किंतु ऋषि ने, ऐसा महोदार है॥

(६)

शैय्यासीन हुये ऋषीश फिर भी, धैर्यस्थ चेते रहे।
आर्यों को अनुकूल कर्मकृति का, आदेश देते रहे॥
प्रेमी भक्त महान् ज्ञान गुरु का, सामोद लेते रहे।
सेवा में सविशेष यत्न करते, थे शिष्य केते रहे॥

(७)

पाया था गुरुदत्त ज्ञान प्रभु का जीता जगज्जाल था।
था अत्यद्भुत दृश्य, कारुणिक था, मृत्युन्मुखी काल था॥
पीछे भक्त सभी खड़े कर लिये, तेजस्वि श्रीभाल था।
"हारे दो सब खेल" वेद पथ के, गूंजा यही ताल था॥

(८)

गायत्री जप मंत्र गान करके, संलग्न हो ज्ञान में।
प्राणायाम अपूर्ण श्वास भरके, दी धारणा ध्यान में॥
"इच्छा है जगदीश आज यह तो, हो पूर्ण" अवसान में।
"लीला ईश! अपार की" कह हुये, तल्लीन निर्वाण में॥

(९)

हा स्वामिन्! सब दिव्य दीप अवली, से शोभते ओक थे।
था अस्तङ्गत "सूर्य" किन्तु श्रुति का, फीके पड़े लोक थे॥
छोड़ा जीवन मध्य आर्यजन को, हा शोक वे रोक थे।
हो आदर्श अनूप आप अब भी, जैसे श्रुता लोक थे॥

(आर्य्य मित्र)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digi

वनिता विनोद

स्त्री जगत्

देवी बासन्ती इंग्लैंड में

श्रीमती एनी बिसेन्ट आजकल विलायत में संसार की वर्त्तमान अनेक समस्याओं पर अपने विचार प्रगट कर रही हैं। अभी हाल ही में क्वीन्स हाल में उन्होंने अंग्रेज़ी जनता के समक्ष "संसार के मालिक कौन हैं" इसपर भाषण कहते हुए कहा कि-'आप लोगों को अत्यन्त स्वार्थी नहीं बनना चाहिए और पूर्व की काली और पीली जातियों का ठेका छोड़ देना चाहिये। अन्यथा गोरों को बड़ी आपत्ति का सामना करना पड़ेगा जिसका फल यह होगा कि सम्पूर्ण साम्राज्य उनके हाथ से निकल जायगा"।

श्रीमती एनीबिसैन्ट ने मदरास का गोखले हाल जनता को अर्पण कर दिया है। कहा है कि उसपर आपने ३ लाख रुपये खर्च किये थे।

देवी सरोजनी के खद्दर पर विचार

'बाम्बे क्रानिकल' के सम्वाद दाता के प्रश्न करने पर सरोजनी देवी नायडू ने कहा कि:-खादी पहिरने का अनिवार्य्य नियम-ऐसा नियम है जो लाभदायक और ऐतिहासिक भी है। उन लोगों को जो पाश्चात्य ढंग के वस्त्र पहिरने पर फ़ख करते हैं जोकि अनुपयुक्त और मूर्खता पूर्ण हैं तथा भारत की जल वायु के प्रतिकूल बैठते हैं उन्हें तो इस का बिलकुल विरोध नहीं करना चाहिये। अब तो हाथ के कते और बुने महीन ऊनी, सूती, रेशमी सभी प्रकार के वस्त्र मिलते हैं इस लिये खादी के वस्त्र पहिरने के नियम के सम्बन्ध में आपत्ति करना मूर्खता पूर्ण है।

अंग्रेज़ देवियों की व्यायाम प्रियता

भारत से भिन्न देशों में स्त्रियों के लिये व्यायाम की जितनी आवश्यकता समझी जाती है उसका अनुभव करना पर्दे में रहने वाली भारतीय नारियों के लिये ही क्या पुरुषों के लिये भी असम्भव है। लंडन में अंग्रेज़ देवियों की एक विशाल व्यायाम मण्डली बनी हुई है जो कि घूम २ कर स्त्रियों में शारीरिक व्यायाम की अत्यन्त आवश्यकता का प्रचार करती हैं। आजकल स्वीडन में इनका दौरा है और वहां नारी-व्यायाम शालाओं की स्थापना कर रही हैं।

महिला पुस्तकालय

बम्बई म्यूनिसिपैलिटी ने एक महिला पुस्तकालय खोल दिया है जिस में २५०००) रुपये की पुस्तकें रखने की मंजूरी होगई है। नवसारी में भी एक पुस्तकालय तथा उद्योगालय खोलने के लिये श्रीमती रतन बाई वाम जी (जमशेद टाटा की बहिन) ने २५०००) रु० दान देने का वायदा किया है।

लेडी रेडिंग का दान

लेडीरेडिंग ने दस हजार रुपया शिमला म्युनिसिपेलिटी को दान दिया है कि वह सिसिल होटल के समीप रिक्षावालों के लिये दो झोपड़े बनवादें ताकि वह वर्षा और धूप से बच सकें।

कन्यायें खेवट हैं

अमरीका में एक खेवट की दो कन्यायें हैं जो कि जहाज के यात्रियों की सेवा करतीं हैं। उनमें बड़ी बहिनको जहाज पर काम करते दस वर्ष बीत गये हैं। नीले कपड़े पहिने हुये वह जहाज के यात्रियों के साथ हर एक काम में भागलेती हैं और जहाज चलाने के कार्य्य में भी सबक सीख चुकी हैं। जब कभी मौसिम अच्छी होती है तो वह जहाज चलाती हैं।

संस्कृत साहित्य के लिये छात्रवृत्ति

एक एक्जैकिटव इञ्जिनीयर ज्योति प्रसाद जी की धर्म पत्नी ने दिल्ली की संस्कृत साहित्यसभा को दो वर्षके लिये १०) मासिक भोलानाथ छात्र वृत्ति के नाम से देना स्वीकार किया है कि उसकी सहायता से किसी योग्य विद्यार्थी को संस्कृत में स्नातकोत्तर परीक्षा के लिये तैयार किया जाय।

आर्य नारी सम्मेलन

आगामी १४ नवम्बर १९२५ को कोठी नं० ४ दरियागंज दिल्ली स्थान कन्या गुरुकुलमें मध्यान्होत्तर एक आर्य्यनारी सम्मेलन होगा जिस में पंडिता विदुषी देवियां स्त्री सम्बन्धी विविध प्रश्नोंपर अपने विचार प्रगट करेंगी। राजिको गुरुकुल की कन्यायें कुछ मनोरञ्जक खेलें और भाषण करेंगी। ज्योतिकी सब पाठिकाओं को चाहिये कि उस अवसर पर अवश्य पधार कर उत्सव की शोभा को बढ़ावें और आनन्द लें।

महिला-चेतावनी

ले०—'विमल'

सुनि लो बहिनो माताओ। कुछ करके कृति दिखलाओ॥
साहस प्रपूर्ण हो जाओ। यह हिन्दू जाति बचाओ॥

* * *

क्यों रात दिवस हम रोवें। निज रक्त बहा मुख धोवें॥
क्यों बैठ विपत पिरोवें। दुख-सिन्धु मीन क्यों होवें॥
क्यों समय व्यथ नित खोवें। निज पथ में कंटक बोवें॥
क्यों दुःख-बोझ हम ढोवें। अपयश सह कर भी सोवें॥
क्या कारण अब समझाओ। निर्भीक पुत्र उपजाओ॥
साहस-प्रपूर्ण हो जाओ। यह हिन्दू जाति बचाओ॥

* * * * *

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

हो तुम सतवन्ती नारी। है सृष्टि तुम्हीं पै सारी॥
पति, सुत स्वदेश की प्यारी। सब क्लेश मिटावन हारी॥
सब लखते वाट तुम्हारी। तुम हो सब सुख दातारी॥
हैं शत्रु आक्रमण भारी। बस करो शीघ्र तैयारी॥
यवनों का मान मिटावो। शुद्धि का शंख बजावो॥
साहस-प्रपूर्ण हो जाओ। यह हिन्दू जाति बचाओ॥

* * २ * *

हों हिन्दू यवन इसाई। लख कर स्वजाति कुटिलाई॥
भाई तजते निज भाई। पति त्याग रहे स्वलुगाई॥
वालायें वन व्यवसाई। करती हैं पाप कमाई॥
यह कठिन समस्या आई। है सब के हित दुःख दाई॥
फिर इन्हें दौड़ अपनाओ। मत लेश माल भय खाओ।
साहस – प्रपूर्ण हो जाओ। यह हिन्दू जाति बचाओ॥

* * ३ * *

हा ख्वाजा हसन निज़ामी। बन कर सच्चा इसलामी॥
करता कितनी नादानी। है गवां रहा निज पानी॥
स्कीम पास कर नामी। भर लिया हृदय से हामी॥
"हो आर्य, म्लेक्ष, खल, कामी। वन अवनीत-पथ-अनुगामी"
माताओ! कदम बढ़ाओ। गुण-ज्ञानमयी बन जाओ॥
साहस प्रपूर्ण हो जाओ। यह हिन्दू-जाति बचाओ॥

* * ४ * *

शुभ ब्याह सदा रचवाओ। अरु बाल विवाह भगाओ॥
मत वृद्ध-विवाह कराओ। मत पुत्रिन को कल्पाओ॥
नित विद्या पढ़ो पढ़ाओ। अर्जुन सम सुत उपजाओ॥
आर्यत्व भाव दर्शाओ। पुनि पहिली ज्योति जगाओ॥
प्रिय 'विमल' प्रतिष्ठा पाओ। श्रुति शास्त्र-समुद्र नहाओ॥
जग ज्योति यहीं चमकाओ। यह हिन्दू-जाति बचाओ॥

शिशु-पालन।

लेखक श्रीयुत निरञ्जननाथ जी

पिछले लेख में लिखा गया था कि मर्यादा से उपरान्त कोई भी चेष्टा अस्वाभाविक होती है इस की व्याख्या यथा स्थान करेंगे।

सब नर नारी जानते हैं कि बच्चे हर एक वस्तु को मुख में डालते हैं परन्तु फिर भी इस बात की निरपेक्षा की जाती है। बच्चा पत्थर के टुकड़े और फूल की कली में कोई भेद नहीं समझता। यहां तक कि उस को जड़ चेतन में भी कोई अन्तर नहीं दीखता। कहते हैं बच्चे के हाथ में सांप आ जावे तो उस को भी मुख ग्रास बना लेता है। बिल्ली की पूंछ तो हमारे सामने भी एक बालक ने अपने मुख में डाल ली। चलते हुये कीड़ों को भी उठाकर मुख में डालते देखा। इसी अवस्था में बच्चे मिट्टी खाने वाले बन जाते हैं। ऐसे बच्चों के पेट बढ़ जाते हैं। रङ्ग पीला पड़ जाता है। यह आदत चिरस्थाई हो जाती है। इस से पिण्ड छुड़ाना कठिन हो जाता है। हमने एक विद्वान् प्रज्ञा चक्षु साधु को ब्रह्म मुहूर्त में उठ छुपकर मिट्टी खाते देखा। मिट्टी भी पकी हुई चूने के रूप में। वह यात्रा में सदा इस प्रिय वस्तु को छाती के साथ लगाये रखते थे। आदत बुरी बला है। इस कारण माताओं को चाहिये कि बच्चों को मिट्टी खाने से बचावें। जब उनको एक बार स्वाद पड़ जावेगा तो फिर वह अवश्य खावेंगे। बच्चे को बार २ हटाने और मना करने में तङ्ग नहीं आना चाहिये। यत्नपूर्वक इस कुचेष्टा से बचाना चाहिये।

बच्चों के हाथ सदा साफ रहने चाहियें उनके बिछौने दिन में कई बार धोया करें। टीन के विलायती खिलौने प्रायः मुख को चीर देते हैं। कच्चे रंगों और गन्दे रोगन वाले खिलौने हानिकारक होते हैं। रबड़ के खिलौने भी पानी से साफ करने चाहिये। रात को सोने से पूर्व बच्चों के सब खिलौने समेट कर धोने के पीछे पिटारी में रखने चाहिये। कोई खिलौना इतना छोटा न हो न उसका कोई छोटा भाग इतना कोमल हो कि टूट कर मुख के अन्दर चला जावे। छपा हुआ कागज का टुकड़ा बच्चे के हाथ में न देवें। इसकी कच्ची स्याही मुख में चली जाती है। समझदार और बच्चों के वास्ते कष्ट उठाने वाली देवियां अपने प्यारे जिगर के टुकड़ों के लिये नित्य नये खिलौने तैयार करती रहती हैं। शुद्ध रुई की सुन्दर चिड़ियां, हाथी, घोड़ा आदि बना लिया उनके ऊपर घर में बड़े काट छांट से बचे हुए रंग बिरंग के शुद्ध वस्त्रों के टुकड़े सी दिये यह खिलौने नरम भी होते हैं जरा खराब हुआ फैंक दिया। रुई निकाल ली। व्यय भी कम हुआ। मगर इतना कष्ट उठाना सहज काम नहीं। कुछ २ माताएं बच्चों के लिये इतनी सरदर्दी करते खिज जाती हैं उनके कथनानुसार उनको अपना काम ही नहीं छोड़ता। पहले तो उनको रसोई से ही अवकाश नहीं मिलता। यद्यपि ऐसी सावधान देवियां देखी गई हैं जो रसोई का क्या घर का सब काम काज करती हैं परन्तु उनका बालक गुलाब के फूल की तरह खिला रहता है। जो घर में किसी न किसी बात पर खिजी रहेगी वह काम काज में क्या चित्त लगावेगी। स्वभाव में धैर्य और चित्त में चातुर्य होना चाहिये। अस्तु किसी ने रसे ई

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

में अन्य अथवा किसी ननद आदि से सहायता प्राप्त करली तो उसको अपने तनके व्यसनों में समय लगाना चाहिये। इससे समय मिला तो सखी सहेली के चाव भाव और बात चीत में जुटगई। इससे पृथक हुई तो पुस्तक समाचार पत्र और पत्र व्यवहार के लिये पर्याप्त समय चाहिये। कहने का तात्पर्य यह है कि इन सब बातों से समय मिले तो बच्चों का ध्यान रखा जावे। मातायें भी क्या करें। आगन्तुका कह देती हैं तेरा बच्चा कैसा है बात भी नहीं करने देता। बस फिर बच्चे के कमल मुख पर थप्पड़ लगाया और धकेल दिया। सभा समाज में न जा सकें तो वहाँ तानों की भरमार पड़ती है कि तेरा जन्म तो इन गन्दगी के कीड़ों के लिये ही रह गया, धर्म का समाज का परोपकार का काम अब तुम से क्या हो सकेगा। हाय! हमारी सब आशायें तुम ने धूल में मिलादीं। वह बिचारी भी इस वाक् जाल में फस जाती हैं। कोई इनसे पूछे कि क्योंजी इस गन्दगी के कीड़ों में ही तो हम तुम सब थे। इनमें ही बड़े २ महात्मा संन्यासी तपस्वी और प्रातः स्मरणीय पूज्या देवियां हो चुकी हैं। सीधी भोली देवी, मन्दमति होकर सन्तान से घृणा करने लगजाती हैं। कुछ नई वैज्ञानिक चालों का सहारा लेने लगीं कुछ एक ने सन्तान को इधर उधर फेंकना चाहा। शक्तिशाली हुईं तो भृत्यों को रख लिया।

नौकर चाकर का सहारा बुरा नहीं जिनको शक्ति हैं वह इससे बहुत लाभ उठाती हैं। इन लोगों पर कड़ी दृष्टि अवश्य रखनी चाहिये छोटे अन्जान नौकर बच्चों को अच्छी तरह नहीं रख सकते। उनको अपना खेल तमाशा तंग करता है। बड़े हों तो मालकिन की तरह उसके भी मेली जोली होते हैं इस लिये नौकर का भरोसा कभी न रखे। उसकी चेष्टाओं का पूरा ध्यान रखे। अंग्रेजों के वहरों और धायों पर लट्टू न हो जावो। इनकी और देशी लोगों की नौकरी में कितना अन्तर है इसका पता अनुभव से हो सकता है।

अस्तु जो भी नौकर हो, उसका स्वभाव परख लो उसके कपड़े साफ रहें उसको हर समय अपने नाक कान आदि में उँगली डालने की आदत न हो। वह अपने आंचल से बालक का मुख कभी न पोंछे वह कभी बालक के मुख को न चूमें। बालक को कभी किसी भयानक दृश्य या नाम से न डरावे। विना आज्ञा बालक को कुछ न खिलावे। बालक के मुखको मक्खियों से बचावे। अपने चार इष्ट मित्रों से बात चीत करने में बालक की प्रसन्नता और उसकी ज्ञानवृद्धि में बाधा न डाले जब तक बालक गाड़ी से उतरे तुरन्त इस की गाड़ी गद्दी आदि वस्त्र साफ कर कर देवे खिलौने को भी सुथरा रखे। और किसी निन्दित वस्तु को मुख में न डालने देवे। अन्जान नौकरों के हाथोंमें बच्चों का जो अनिष्ट होता है इसको अनुभवी सज्जन जानते ही हैं।

ईश्वर की महिमा अपरम्पार है हम लोग ही आंखें मूंद कर चल रहे हैं देखो पक्षीगण सन्तानोत्पत्ति से पूर्व एक एक तिनका एकत्रित कर सुन्दर घर बनाते हैं इसको सुरक्षित कर वहां अण्डा रखते हैं और नर मादा दोनों उसकी रक्षा वार २ करते हैं। जब तक वह स्वयम् उड़नेके योग्य न बन जावे उसका साथ नहीं छोड़ते पर मनुष्यों को देखो। अगर देवी को बच्चे की चिन्ता है तो देव महाराज घर में आये और मूंछों पर ताओ देकर चले गये। मानो उनको सन्तान के प्रति कुछ कर्त्तव्य ही नहीं। जो देव जी सन्तान

को तरसाने वाले हुए तो हमने अपनी आंखों देखा कि क्रोधमूर्ति देवी छातीसे बच्चे को भूमि पर पटक देती है और 'सी' नहीं करती। क्यों! कि वह तो पति से खिज रही है और बच्चा बीच२ में दुग्ध मांगता है अथवा अपनी किसी चेष्टा से माता का ध्यान अपनी ओर खेंचता है माता को खिजने से फुरसत नहीं। कहीं वह पति के साथ वाद विवाद में हार न जावे। यह समय उसको कहाँ मिलेगा। सो सारा क्रोध उस कोमल नन्हीं कली पर आ गिरता है।

बच्चों के खान पान का ध्यान रखना आत्यावश्यक है। रोते हुए बच्चे के मुख में स्तन देकर चुप कराने का लालच अच्छा नहीं। चूल्हे के पास बैठकर कभी दूध नहीं पिलाना चाहिये। क्रोधाग्नि से संतप्त माता का दुग्ध भी विष बन जाता है। लेटकर दुग्ध पिलाना भी अच्छा नहीं परिश्रम से थकित होकर दुग्ध पिलाना भी अभीष्ट नहीं होता, अत्यन्त सावधान होकर प्रसन्न चित्त से बालक को प्यार करते तथा उसकी शुभ कामना वाली नियत समय पर ही दुग्धपिला वे, स्वर्गवासी डा० विरजीव सुनाया करते थे कि विलायत में मृत बच्चों की संख्या अधिक होने पर जब अन्वेषणा हुई तो पता चला कि इस का मूल कारण दुग्ध की विषमता है। वहां स्वच्छ गोशाला बनाई गईं स्वस्थ गायें रखी गईं। सुथरे भृत्य नियत होगये और साफ शीशियों में मशीन द्वारा बाहरी वायु से वञ्चित दुग्ध भरा गया और हरेक अयु के बालक के लिये-पृथक २ शीशियां बन ई गई। प्रत्त दिन के लिय एक २ पैकट बनाया गया यहां तक कि प्रति खुराक की एक हीं शीशी तैय्यार होगई। नियम नुसार शुद्ध दुग्ध पिलाने से मृत्युसंख्या घट गई। कहने का तात्पर्य्य यह कि छातीसे दुग्ध पिलाने का भी समय होना चाहिये। छाती में दुग्ध होने का यह प्रयोजन नहीं कि जब चाहा पिला दिया। अधिक दुग्ध पिलाने से अजीर्ण हो जाता है। बाजार का दुग्ध पिलाने में बड़ी आपत्ती पड़ती है। घर में गाय होने पर भी बड़ी सावधानी की आवश्यकता होती है प्रायः दुग्ध दोहने वाले गन्दे होते हैं अपने हाथ से दुग्ध निकालने वाली माताओं को भी शुद्धता का विचार रखना चाहिये। दुग्ध ऐसा पदार्थ है कि शीघ्रता से रोग के कीटाणु ग्रहण कर लेता है। बोतल से दुग्ध पिलाने से बचना चाहिये। बलात दुग्ध पिलाना भी हानिकर होता है बच्चे के हाथ पांव पकड़ गोड़ों में उसका सिर जकड़ कर दुग्ध पिलाना निन्दनीय है। दुग्ध पिलाने से पूर्व और पश्चात् स्तन को साफकर लेना चाहिये दुग्ध पिलाने के पीछे बच्चे को हाथ पांव हिलाने का अवसर दो उस समय उसको उछालना छाती दबाना उलटा औंधा करना अच्छा नहीं होता जहाँ तक होसके कुड़ते और दुपट्टे के अन्दर मुख छुपा कर भी दुग्ध न पिलाया जावे। आवश्यकता पड़ने पर इधर उधर मुख मोड़ कर खुली वायु में ही दुग्ध पिलाया जावे दूध पिलाने वाली माताओं को स्वल्प दुग्धादि पदार्थों का सेवन करना चाहिये।

स्तन द्वारा दुग्ध छुड़ाने के पीछे अन्नादि के साथ २ भी गाय का दुग्ध देना चाहिये नहीं तो बच्चा एक दम दुग्ध से भ गता है फिर उसको दुग्ध भाता ही नहीं। वास्तव में दुग्ध भावे भी क्या। हरेक के घर में गाय कहां और गाय के बिना दुग्ध क्या? कहां वह समय देवकीनन्दन माखन चोर। अपने घर में भी दुग्ध और माखन चुरावें और दूसरों के घर जाकर भी माखन खावें और

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

दुग्ध की मटकी फोड़ें। घर घर में दुग्ध और माखन की क्या कमी थी। आज बच्चे दुग्ध ही नहीं पीते। पीवें क्या ? दुग्ध है कहां। आज दुग्ध और माखन के मटके नहीं आज भारत के बच्चों के सामने टीन के डिब्बे अचार, चटनी, जाम, चाय, काफी, बिस्कुट, केक, बूट पालिश पौडर, तेल, साबुन, कंघा, लिवाँडर आदि की कमी नहीं कोई घर इन से खाली रह कर सभ्य नहीं कहला सकता। घोड़ी, गधी, मोटर, साईकल बाजे, तबले, ग्रामोफोन और उनके रिकार्ड आदि में अनेक खर्च होते हैं परन्तु वही शक्तिशाली गाय रखते हुवे ज़रा खर्च करने बैठ जाते हैं किसी ने खूब कहा था कि खड़े २ एक २ रुपया की कुलफी खाजाने वाले गाय को ॥।) रोज खिलाना दुर्व्यय समझते हैं। ओह ! हम भी किस चक्कर में पड़ गये। विषयान्तर होने लगे।

कुछ हो हो जैसेतैसे बच्चों को दुग्ध पीने की आदत भूलनी नहीं चाहिये। हम ने देखा आश्रमों में भी बच्चे दुग्ध से परे भागते हैं। दुग्ध की अपेक्षा चने आदि पसन्द करते हैं। याद रखो दुग्ध के प्रेमी सात्विक स्वभाव के हुवा करते हैं।

बच्चों के मलमूत्र का ख्याल रखना भी अत्यावश्यक है। सचेत और सुघढ़ देवियां आश्रम से ही बच्चों को ऐसा बनाती है कि वह चारपाई बिस्तर आदि पर मल मूत्र त्याग न करे। जो नियम से दुग्ध पिलायेगी उनके बच्चे मल मूत्र भी नियम से करेंगे अन्यथा उधर बच्चे ने दुग्ध पिया झट मल त्यागा, उनके कपड़े सदा गन्दे रहते हैं। ऐसी मातायें छोटे २ वस्त्र बनाती थक जाती हैं। उनका स्थान भी भ्रष्ट रहता है। घर भर में मखियां भिनभिनाती रहती हैं। प्रायः आलस्य वश जहां बैठी होती हैं वहां ही बच्चे से मल करा देती हैं। इनके बच्चों में कोई अच्छी आदत नहीं पड़ती। चिर काल तक न मल को उठाया जाता है न उस पर मिट्टी डाली जाती हैं। बुद्धिमती देवी पहले ही समय को देख कर उचित स्थान पर मल मूत्र करा देती हैं फिर बच्चे को वैसी आदत पड़ जाती है मल मूत्र करना हो तो वह बे चैन सा होजाता है तुरन्तु माता समझ कर उसकी आवश्यकता पूर्ण करके स्वयम् भी सुखी रहती है। हरेक बात के आरम्भ में नियमानुसार चलने का थोड़ा सा परिश्रम करना पड़ता है। सब काम सुगमता से होजाते हैं।

हमारी एक बहिन ने अपने बालक को इसी प्रकार रखा वह कहा करती है मैं जानती ही नहीं "पोतड़ा" क्या होता है उसके चिरंजीव ने कभी चारपाई पर मलमूत्र नहीं किया। न उसने कभी एकाध बार से अधिक (रोग की अवस्था में) खाट पर मलमूत्र किया।

सन्तान को बनाने के वास्ते बहुत कुछ करना पड़ता है। अपने आराम, अपने समय आदि की आहुति देनी पड़ती है। सच पूछो तो जो देवी जितनी आहुति देती है उतना ही वह सुखी रहती है वह संसार के सब कामों का निर्वाह प्रसन्नता से कर सकती है और वह वास्तव में पूज्या देवी होती है। ऐसी देवियों के दर्शन कर के हृदय में बड़ी श्रद्धा उत्पन्न होती है अगले लेख में धाइयों के सम्बन्ध में लिखा जावेगा कि वह कैसी २ कहां से मिलती हैं।

धर्मपर विश्वास

लेखिका-श्रीमती पुष्पावती जी बदायूं

धर्म एव हतो हन्ति: धर्मो रक्षित रक्षितः
तस्माद् धर्मो हन्तव्यो मानोधर्मो हतोवधीत ॥

मान्य पूज्य माताओं तथा प्यारी बहिनो ! मैं आज आपकी सेवा में "धर्म पर विश्वास" के विषय में कुछ विचार "ज्योति" द्वारा अर्पण करना चाहती हूँ। आशा है कि आप ध्यानपूर्वक पढ़ेंगी और कुछ लाभ उठा मुझे कृतकार्य करेंगी।

प्यारी बहिनों ! यदि आप अपने जीवन को सफल बनाना चाहती हैं तो आप को चाहिये कि धर्म पर पूर्ण विश्वास रक्खो। ईश्वर का न्याय अटल है इस असार संसार में सत्य, सरलता, निष्कपटता आदि धर्म विषयक बातों की सर्वदा जय होती है और इन के विपरीत असत्य, कुटिलता, कपट, मिथ्या व्यवहार आदि अधर्मयुक्त बातों की सदैव क्षति होती है। प्राचीन युग को देखिये जिस में कैसे २ राजर्षि महर्षि हो चुके हैं जिन्हों ने केवल एक धर्म के कारण अपनी जान तक देदी परन्तु अपनी प्रतिज्ञा से विचलित नहीं हुए।

महाराजा हरिश्चन्द्र की प्रतिज्ञा भंग करने के अनेक प्रयत्न किये गये परन्तु उन्होंने अनेकों संकट सह कर प्रतिज्ञा का पालन किया और कहा कि—

चन्द्र टरै सूरज टरै, टरै जगत व्यवहार।
पै दृढ़ श्रीहरिश्चन्द्र नृप टरै, न सत्य विचार॥

'सूर्य चन्द्रमा अपने गुणों को त्याग दें संसार का व्यवहार चाहे उलटा होजाय परन्तु मैं सत्य को नहीं त्याग सकता। यह किस लिये ? केवल इसी लिये कि उन्हें सत्य धर्म पर विश्वास था। और अन्त में सत्य की विजय हुई। यह पढ़ कर आप कहेंगी कि युगों गुज़र गये अब ऐसा सत्यवादी कौन है। वह उदाहरण भी मौजूद है वर्त्तमान समय में भी ऐसे महर्षि होचुके हैं। वह हैं आर्य कुल दिवाकर महर्षि स्वामी दयानन्द जी ! जिन्हों ने माता पिता को छोड़ घर बार धनधाम पर ठोकरें मार सत्य धर्म पर अपना जीवन अर्पण कर दिया क्या महर्षि दयानन्द जी का उपकार कोई भूल सकता है जिन्हों ने मुर्दा जाति में जीवन डाल दिया। इसी तरह और भी कई एक आदर्श अब भी मौजूद हैं।

प्यारी बहिनों ! पुरुष ही नहीं वरंच हमारे भारतवर्ष में ऐसी देवियां भी होगई हैं, जिन्हों ने कठिन से कठिन विपत्तियों पर भी अपना धर्म नहीं छोड़ा यह वही सीता दमयन्ती, शकुन्तला, मन्दालसा व शैव्या आदि महारानियां हैं जिन से आप अच्छी तरह परिचित हैं जरा इन की जीवनी पर दृष्टि डालिये और देखिये कि महा भयंकर विपत्तियों का इन देवियों ने सामना किया है परन्तु धर्म से मुख नहीं मोड़ा। अन्त में विजयी होकर अपने अभीष्ट मनोरथों की सिद्धियों की प्राप्ति की हा ! कैसे शोक का विषय है कि उन्हीं की सन्तान हम जैसी हुई जो धर्म का नाम तक नहीं जानतीं।

बहिनों ! अब भी संभल जाओ जो देवियें इस संसार में धर्मपूर्वक जीवन व्यतीत

CC0. Gurukul Kangri Collection, Ha

करती हैं और जिन को इस बात का दृढ विश्वास होता है कि धर्म और सत्य की सदा जय होती है वही इस संसार रूपी महा सा .र से पार होती हैं, वही पतित बहिनों का सहारा हैं और उनको धर्ममार्ग पर चलाने वाली हैं। यही बहिने हैं जो विपत्ति काल में धैर्य व साहस को नहीं त्यागतीं और सदा अपने धर्म पर अचल रहती हैं। धर्ममार्ग बड़ा कठिन है इस में बहुत से अनसमझ स्त्री पुरुष बड़ी बाधाये डालते हैं। परन्तु धर्मात्मा धीर व सज्जन पुरुष और देवियां कभी ऐसी बाधाओं को ध्यान में नहीं लाती और अपने मार्ग पर अटल रहती हैं। हमारी बहुतसी बहिनों का यह भी विचार है कि जो व्यक्ति झूठ बोलते हैं धोखा देते हैं पापाचरण करते हैं वह इस संसार मे सुखी रहते हैं आनन्द से जीवन व्यतीत करते हैं परन्तु यह उनकी परम भूल है केवल भ्रम है उन्हें सदैव यह बात याद रखनी चाहिये कि सत्य की जय होती है, झूठ की नहीं। यद्यपि अधर्म थोडे काल के लिये सफल होता हुआ दिखलाई पड़ता है तथापि अन्त में निश्चय करके वह नष्ट होजाता है। और धर्म सदैव एकसा रहता है। आप जरा अधर्म से सांसारिक भोग करने वाले व्यक्ति की आत्मा से पूछिये कि उसके हृदय को कितनी शान्ति है। उत्तर मिलेगा कि शान्ति कहां चिन्ता ही पीछा नहीं छोड़ती। स्मरण रहे कि चिन्ता और उपाय में बहुत अन्तर है चिन्ता चिंता से अधिक नाश कारिणी है और उपाय कल्याणकारी है। अतः बुद्धिमती देवियां धर्म मार्ग को छोड़ना कदापि पसन्द नहीं करेंगी। आप कहेंगी कि वह सुखदाई धर्म कौनसा है क्या हम विधर्मिणी होगई हैं दूसरे धर्मों की स्त्रियों की एक बात भी हमने नहीं सीखी हां! रोना तो इसी का है कि आप धर्म के माने कुछ और ही समझ बैठी हैं।

आइये आज मैं आपको अपनी बुद्धि अनुसार धर्म की संक्षिप्त व्याख्या सुनाऊँ जिस से दूसरों का व अपना कल्याण हो। वह धर्म सत्य विद्या बुद्धिविद्या ब्रह्मचर्य व परोपकार व समयानुकूल जातिनियमों का पालन करने और बदलते रहने से प्राप्त होता है।

जो व्यक्ति उपरोक्त गुणों से विभूषित है वह अवश्य धर्मात्मा है उससे शिक्षा ग्रहण करनी चाहिये। आज कल जो नियम सर्वथा हानिकारक हैं उन्हें बदल देना चाहिये। यदि कोई बात समझ में न आवे तो उसे विद्वानों से पूंछना चाहिये। और शुद्ध आचरणों होइए फिर कुछ दिवस में आप देखेंगी कि आप में एक दैवीशक्ति आगई है जिन क्लेशों में पहिले आपका जीवन दुःखपूर्वक व्यतीत होता था अब उनसे शान्त होकर चित्त धर्म से लग जाने के कारण सुखपूर्वक व्यतीत होता है। अन्त में आप मोक्ष प्राप्त कर लेंगी फिर यदि घर क्या सारा संसार भी आपको स्वार्थवश हानि पहुंचाये तो भी आपका कल्याण होगा।

अन्त में मेरी आग्रह पूर्वकनिवेदन है कि धर्मात्मा के बनाये गुणों को अपनी आजकल की विद्या शून्य स्त्री जाति में वितीर्ण करना। ईश्वर जाति को पूर्वजों की भांति धर्मशील बनाये। इति

समाज में स्त्री जाति का स्थान

ले०—श्रीमती जनक कुमारी जोशी

इस समय जबकि ज़माने की चाल बदलती रहती है और मनुष्य सांसारिक समस्याओं में व्यस्त हैं, यह स्वभाविक बात है कि स्त्रियां को विवाद में अपने भाग के के लिये आवाज़ उठानी चाहिये।

"समाज में स्त्रियों का स्थान" नाम का प्रश्न एक ऐसा सवाल है जिसने बहुतसे बुद्धिमान व्यक्तियों को परेशान कर दिया है। ऐसे पुराने ढर्रे के आदमी मौजूद हैं जो स्त्रियों को रोटी पानी सुई आदि और झाड़ने बुहारने के कामों में ही लगना चाहते हैं और ऐसे क्रान्तिकारी उत्साही पुरुष भी विद्यमान हैं जिनका कथन है कि स्त्रियों को घर में रुपये पैसे की पूरी स्वतन्त्रता प्राप्त करनी चाहिये। यदि पहिली बात स्त्रियों के हक़ में अच्छी नहीं है तो दूसरी भी वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए सम्भव नहीं है। यदि पुरुष और स्त्रियां दोनों ही साथ २ काम करने के लिये संसार में प्रवेश करें, तो गार्हस्थ जीवन को धक्का पहुंचेगा और बच्चों की चौकसी नहीं हो सकेगी। भले ही पाठशालाओं और नर्सरी की उत्तम प्रणाली के ज़रिये से उनकी चौकसी हो जाय परन्तु माता के सावधानतापूर्वक शिक्षण के बिना सर्वोत्तम फल नहीं प्राप्त हो सकते हैं।

स्त्रियों के जीवन मनोद्वेग सम्बन्धी आधारों पर अवलम्बित हैं। स्वभाव से ही वे गार्हस्थ जीवन की चाहा करती हैं। यह गार्हस्थ जीवन मनुष्यों के लिये गौण होता है। डबल्यू एल० ज्यौर्ज (W. L. George) जीवन की सुन्दर घटनाओं के सम्बन्ध में बात चीत करते हुए मालूम करते हैं कि मनुष्यों को तो बड़े अवसर उस घटना से प्राप्त होते हैं जो उन के नैतिक जीवन देशानुराग अथवा धर्म से सम्बन्धित होती हैं, परन्तु स्त्रियों को ऐसे अवसर "प्रेम" के अन्तर्गत प्राप्त हुआ करते हैं। मनुष्य चुम्बन करते हैं। आलिङ्गन करते हैं और स्त्रियां एक मीनार से उनकी चौकसी करती हैं। चौकसी करने का क्षेत्र उनका है। वे व्यावहारिक कार्य्य पुरुषों पर छोड़ती हैं। उनका कार्य्य तो यह है कि वे चौकसी करें प्रार्थना करें और चुपके चालाकी के साथ मनुष्यों के जीवनों और विचारों को सांचे में ढालें। रस्किन (Ruskin) जो घर में स्त्रियों के दैविक प्राणी का पद प्रदान करते हैं का कथन है कि वास्तविक महान स्त्री का पता कभी नहीं चला। उसकी महत्ता उस शान्त प्रभाव में विद्यमान हैं जो घर में उसके द्वारा उत्पन्न होता है और जिसने मनुष्यों को यशस्वी बना दिया है।

इस विचारका खंडन करने वाली दूसरी धारणाशील की है जो मनुष्यों को स्त्रियों से सावधान होने की चितावनी देती है। उस के मतानुसार स्त्रियां पहिले पहिल माताएँ होती हैं और माता की प्रवृत्तियों को पूरा

लेखिका को इस लेख के लिखने के उपलक्ष में Sunday times नामक समाचार पत्र के जुलाई अगस्त के कम्पोज़िशन निबन्ध में दूसरा पारितोषिक प्रदान किया गया है। पहिले पारितोषिक प्राप्तकर्त्ता के लेख का अनुवाद ज्योति के आगामी मास के अंक में यथा सम्भव प्रकाशित होगा।

अनुवादकः—

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

करने के भाव के अतिरिक्त और किसी भाव को लेकर वे पतियों की इच्छा नहीं करतीं। चाहे कुछ भी विचार हों, हम तो इस परिणाम पर पहुंचते हैं कि घर में स्त्री पुरुष पर निर्भर होती है और उसमें पतिको स्वेच्छानुसार किसी सांचेमें ढालनेकी क्षमता होती है।

यद्यपि गृहस्थ उनके बहुत से उत्साहों को जड़ कर लेता है परन्तु ज्यों २ सभ्यता का विकास होता है और फुर्ती की कम जरूरत पड़ती है त्यों २ स्त्रियां अपने चारों ओर के संसार के कामों में सजीव भाग लेने के लिये बाहर निकलती हैं। कुछ आधुनिक तत्ववेत्ताओं का मत है कि वह काम जिसको हम स्वभावतः मनुष्य से सम्बन्धित होने के रूप में अलहदा रखते हैं, वस्तुतः उसकी आदिम आखेटवृत्ति का फैलाव होता है।

इसी प्रकार स्त्रियां भी कर्म के अधिक विस्तृत क्षेत्र में प्रवेश कर रही हैं। शिक्षा और विज्ञान की वर्तमान प्रणालियां उन्हें अपनी स्फूर्तियों का मुरब्बा डालने का अवसर प्रदान कर रही हैं। ये स्फूर्तियां स्वाभाविक रूप से उन धन्धों के प्रति प्रेरित की जायगी जो घरके बाहर उनके मनोरञ्जन को आकर्षित कर रही हैं।

स्त्रियों का सम्मान पुरुषों की ओर ठीक उसी प्रकार होता है जिस प्रकार पुरुषों का वस्तुओं की ओर। हम बहुत ही कम ऐसी स्त्रियाँ देखते हैं जिनका सम्मान विज्ञान वा कलाकौशल की ओर हो। और इधर तो यह उदासीनता और उधर मानवी उत्कण्ठाओं का कोष रूप साहित्य अपने प्रेमियों और उपासकों की एक अच्छी संख्या के लिये आवाज़ उठा चुका है। राजनीति जो बहुतों को सूखा विषय जान पड़ता है प्राचीन काल से स्त्री जाति के भागों में से अपना भाग मांग चुका है।

सब से प्रत्यक्ष उदाहरण मिश्र देश का है जिसमें राज्य का भार पुत्री को सौंपा गया और भाई बुतसा खड़ा रहा।

शायद स्त्रियां का मुख्य कार्य्यक्षेत्र मलमैनसाहत के कामों में विद्यमान है। मनुष्यों में अभी तक आखेटवृत्ति प्रबल है और स्त्रियां को कार्य्य की ओर ले जाने वाली प्रवृत्ति निर्बलों और निःसहायों के प्रति प्रेम और दयाकी होती है। इस प्रकार जब मनुष्य मार देते हैं वा नाश कर देते हैं उस समय स्त्रियां ही रोगियों की दुर्बलों और वृद्धोंकी सेवा शुश्रुषा करने के लिये बाहर आती हैं। आगे ही मनुष्य अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिये चिल्लाएँ, वे लोग तब तक लड़ते ही रहेंगे जब तक स्त्रियां इस प्रश्न में दिलचस्पी लेंगीं। तब क्या अन्त में हम स्थायी शान्ति की आशा कर सकते हैं।

आज कल हम स्त्रियों की मुक्ति विषयक आन्दोलनों के विषय में अधिक सुनते हैं। परन्तु यह तो केवल जमाने का प्रारम्भ ही है, अतः संसार में स्त्रियों की जो दशा होगी उसका अनुभव इस समय नहीं होसकता है अबतो यह प्रवृत्ति प्रचलित है कि स्त्रियों की अवस्था को मज़बूत किया जाय और बहुत से क्रांतिकारी प्रस्ताव किये गये हैं जो शायद जो जीवन के ढङ्गको पूर्णतया बदलदें। फ्रांस परिवारों के Matriarchal प्रणाली का प्रस्ताव करता है जिस मे तमाम घर उस माता के चारों ओर चक्कर लगाता है जिसका पालन पोषण राज्य की ओर से होता है अमेरिका मे कुछ लोग विवाहों के दो प्रकारों का प्रस्ताव करते हैं जिन में से एक बच्चा जनने की शर्त के बिना एक ठेका हो सकता है, ये सब बातें स्त्रियों को एक अधिक स्वतंत्र स्थान पर बिठा लायेंगी और उन्हें मनुष्यों के साथ संसार समान स्थान ग्रहण करने के योग्य बनायेंगीं।

"निशीथ-माया"

(लेखिका:-श्रीमती धर्म्मपत्नी पं० सुमेरीलाल बी० ए० अमरावती बरार)

"डाक्टर साहब ! डाक्टर साहब !"

अर्द्धरात्रि के समय मेरी आंख खुली, तो देखा सामने सत्येन्द्र बाबू खड़े पुकार रहे थे मैंने तनिक विस्मय के साथ पूछा, "क्यों बाबू क्या आज फिर दौरा उठ गया है ?" वह उपेक्षा पूर्वक बोले कि दौरा तो नहीं उठा किन्तु मैं आज आप को अपनी वही राम कहानी सुनाने आया हूँ जिसने मुझे चिर-रोगी बना रखा है। कृपया थोड़ा शीतल जल पिला दीजिये, जिस से हृदय की ज्वाला को शान्ति प्राप्त हो। मैंने एक गिलास पानी का उनके सामने रख दिया वह पानी पीकर अपने पके हुए बालों को खुजलाते हुये बोले कि सुनियेः—

"मैं एक समय बहुत बीमार हुआ अच्छा होने की कोई आशा नहीं थी। मेरी प्रियतमा ने मेरी बहुत सेवा की और मुझे मृत्यु के विकट पञ्जों से छुड़ा लिया। यम हताश होकर जाना ही चाहता था कि उसे अकस्मात् मेरी प्रिया की याद आगई। और जाते जाते एक वज्र सदृश्य तीर उस कोमलाङ्गी को मार गया। उस समय मेरी चिरसङ्गिनी-मृणालिनी गर्भवती थी फिर क्या था, अब मेरी दोहरी सेवा करने की आई। कुछ समय पश्चात् वह बहुत निर्बल होगई, मैं मन, वचन कर्म से उसकी सेवा करने लगा। जब कभी मैं उसके पास बहुत समय तक बैठ जाता था, तो वह रुष्ट होकर मुझसे कहती थी कि आप मेरे लिये इतनी रात्रि तक क्यों जाग रहे हैं। मैं तो अच्छी हो ही जाऊंगी, तब अच्छा होगा जब आप फिर बीमार होजायेंगे? मेरे लिये इतना दुःखी होने की कोई आवश्यकता नहीं, मैं यह सुन कर तुरन्त सोने चला जाता था और हृदय में मृणालिनी के गुणों की प्रशंसा करते करते निद्रा देवी की आराधना में तल्लीन होजाता था।

क्रमशः सेवा करते करते मेरा चित्त उचटने लगा। मैं सोचता था कि क्या कभी मेरी सेवा का फल मुझे प्राप्त भी होगा या नहीं ? यदि नहीं तो विभो ! मेरे से इतनी अधिक सेवा क्यों करा रहे हो ? कृपया मुझे क्षमा करो। यह विचारते ही मेरे हृदय पर एक भीषण धक्का लगता था, क्योंकि मुझे शीघ्र ही यह ध्यान आजाता था कि रे सत्येन्द्र तू कितना स्वार्थी और क्रूर है, क्या तू वह समय भूल गया जब यम तेरे सामने हाथ पसारे खड़ा था, और मृणालिनी उससे तुझे न लेजाने की प्रार्थना कर रही थी। अपने खाने, पीने, तथा शयन को तिलाञ्जली देकर वह तेरे दुःख निवारण हेतु ईश्वर से अनुनय विनय किया करती थी तुझे धिक्कार शत २ वार धिक्कार यही विचार करते हुये मैं पुनः अपना हृदय कड़ा करके अपने कार्य्य में उपस्थित होजाता था।

जिस प्रकार प्रातःकाल होने पर लैम्प का प्रकाश क्षीण हो जाता है उसी प्रकार मृणालिनी का शरीर भी क्षीण होने लगा और पवन के एक झोंके की राह देख रहा था। जब कभी उसको अधिक दुःख होता था तब मैं कि कर्त्तव्य-विमूढ़ की नाईं दुःखाहत बैठकर आंसू बहाया करता था जिससे कि उसको और भी अधिक दुःख होता था

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

और वह मुझे अश्रुपूर्ण दृगों से देखते हुये धीरे धीरे सान्त्वना एवं शिक्षा दिया करती थी।

एक समय मैंने अपनी प्रिया का हाथ पकड़ कर कहा "चाहे तुम विश्वास न करो किन्तु मैं तुम्हें इस जीवन में तो क्या कदाचित् मरने ...." यह सुनना था कि मृणालिनी बहुत वेग में हंसी। और मेरा मुंह बन्द करके कहने लगी—जाने दीजिये यह ढकोसले केवल मेरे जीवित रहने तक हैं फिर यह बात स्वप्नवत् प्रतीत हो जायंगी मैं यह सुनते ही अश्रु पोंछते २ बाहर चला गया। क्रमशः कुछ दिवस बीत चले एक समय उसने मुझ से अनुरोध किया कि प्रियतम कृपया मुझे आज हमारी पुरानी बाटिका में लेजाकर उस प्रेममयी शिला पर लिटा दो जिस पर कि कभी मैं और आप घूमते घूमते थक कर विश्राम करने के लिये कुछ देर बैठकर पीयूष सिंचित वार्तालाप से थकावट मिटाया करते थे। मैं उस के कथनानुसार दूसरे दिन प्रातःकाल उसे उस बाटिका में ले गया जिस के लिये वह इतनी लालायित हो रही थी। हम एक रात्रि वहीं पर रहे। अर्द्धरात्रि थी रजनी नाथ अपनी पूर्णकला से संसार को आलोकित कर रहे थे। मैं और मेरी प्रिया उसी पूर्व परिचित शिला पर हाथों का सिरहाना लिए लेटे हुये थे। चन्द्रमा की किरणों से उसका पीतवर्ण मुख बहुत सुन्दर लगता था, यद्यपि कपोलों पर परम सौन्दर्य्य बढ़ाने वाला गुलाबी रंग न था तिसपर भी सुन्दरता में न्यूनता न थी। मैंने प्रेमोन्मत्त होकर उसका अधर पान कर लिया, और कहा प्यारी इस जीवन में मैं किसी अन्य के अधर पान नहीं कर सकता। वह यह सुनकर तनिक मुस्कराई उस मुसकराहट में धोखा एवं छल था। मैंने कहा प्रिये हंसो तुम्हारे हंसने की बारी आई है।

जो डाक्टर मेरी स्त्री की चिकित्सा किया करते थे उन की एक षोडश वर्षीया कन्या सरिता नामकी परम सुन्दरी थी उसके अन्दर सांसारिक प्रत्येक गुण विद्यमान थे। कभी २ मैं स्वयम् ही डाक्टर को बुलाने जाया करता था, तो उसे देखकर मेरा चित्त कुछ कुछ विचलित सा होजाया करता था। प्रथम एक दो बार तो उसने मुझ से परदा किया, किन्तु फिर डाक्टर के ना करने पर वह मुझ से बात चीत करने लग गई। फिर क्या था मुझे तो दोनों नेत्र मिल गये, मन इच्छित फल प्राप्त हो गया अब मेरा दुष्ट चित्त मृणालिनी के पास एक क्षण भी नहीं लगता था मृणालिनी बड़ी बुद्धिमती थी, वह मेरी इस उपेक्षा को ताड़ गई। जब कभी मैं उसके पास कुछ देर के लिये बैठता तो वह मुझे प्रेमपूर्वक कहती कि आप यहां बैठे वृथा क्या कर रहे हैं जाइये बाहर की पवित्र वायु का सेवन कीजिये जिससे हृदय को कुछ शांति हो। मेरे हृदय में यह बात भले प्रकार बैठ जाती थी किन्तु उसका मन रखने के लिये मैं कह देता था कि तुमको औषधि इत्यादि कौन देगा? वह कहती थी कि मैं दासी को समझा दूंगी वह ही औषधि देदेगी। यह सुनकर मैं डाक्टर के मकान की ओर घूमने चला जाता था।

एक समय डाक्टर उसे देखकर बोले "सत्येन्द्र बाबू अब इनका रोग असाध्य हो चला है किन्तु मैं फिर भी अच्छी औषधि देता हूँ, भगवान् रक्षक है"। यह कह कर उन्होंने दो बोतलों में औषधि दी, एक बदन पर मलने की थी, और दूसरी खाने की थी।

जाते समय वह कह गये कि औषधि तनिक सावधानी से देना। इस हरी बोतल में खाने की है, और नीली बोतल में मालिश है। मालिश जो है वह एक प्रकार का विष है, यदि आप भूल से एक खुराक भी उन्हें दे देंगे तो अच्छा होना कठिन नहीं वरन् असम्भव हो जायगा। मेरी स्त्री ने मुझसे कहा आप भी घूमने के लिये जाइये। डाक्टर साहब! आप इनको भी लेते जाइये। डाक्टर यह सुनते ही मुझे अपने साथ खींच ले गये। अपने घर पर कुछ देर ठहरने के बाद डाक्टर एक रोगी को देखने के लिये कहीं बाहर चले गये। मेरे और सरिता के अतिरिक्त वहां पर कोई न था। यह मैं भले प्रकार जानता था कि सरिता मुझे अपने हृदय-मन्दिर में देवस्थान पर स्थापित कर चुकी है, इसी लिये मैं उस से एकान्त में मिलने के लिये व्यग्र रहता था। सो आज वही सु-अवसर हाथ आ गया। सरिता मेरे साथ कुछ इधर उधर की बातें करने के पश्चात् बोली कि एक दिन तो मैं भी आपकी स्त्री को देखने जाऊंगी। यह सुनना था कि मेरे प्राण उड़ गये। मैंने बाहरी मन से कहा, "अवश्य आइये"। और वहां से चलता बना।

शेष पुनः

बालकों के फसी कुरते—इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है हर एक रङ्ग के क़ीमत ४) ५) ६) ७) ९) १०) यही जरी के १५) २०) २५)

बोडी या जाकेट—जनानी चाहे जिस नापकी की० ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

कन्या गुरुकुल समाचार।

दिल्ली में वापिस।

हमने गतांक में सूचना दी थी कि गुरुकुल १ली अक्तूबर को दिल्ली पहुंचेगा किन्तु पीछे पता लगा कि वहां प्लेरिया का प्रकोप है अतः हम लोग एक सप्ताह बाद पहुंचे। दिवाली पास थी हम लोग जन्मोत्सव मनाने की तैयारियां करने लगे।

जन्मोत्सव।

गुरुकुल-जन्मोत्सव बड़े समारोह से कन्याओं ने मनाया। यज्ञमण्डप खूब सजाया गया, कन्याओं ने अपने २ कमरों में खिलौने कागज़ के बेल बूटे लगाये, दीपावली के दीप जलाने की सामग्री तैयार की। किन्तु वृहद् यज्ञ के समाप्त होते होते वरुण देवता अप्रसन्न हो गये और हवा, आंधी, वर्षा द्वारा हमारा सारा खेल खराब करदिया, दर्शिकायें घर भागीं, दीप बुझने लगे। अस्तु कमरे के अन्दर खेलें इत्यादि अच्छी होती रहीं और उत्सव बड़े हर्ष से मनाया गया।

वार्षिक परीक्षायें।

२ नवम्बर से प्रारम्भ हो जांयगी, कन्यायें अध्ययन में तत्पर हैं।

उत्सव की तैयारी।

गुरुकुल का द्वितीय उत्सव बड़े समारोह से मनाने की तैयारियां हो रही हैं। निमन्त्रण पत्र भेजे जा रहे हैं। सूचनायें और विज्ञापन बाहर भेजे जा रहे हैं।

धन एकत्र करने के लिये संरक्षकों, समाज़ों तथा आर्य्यजनता से भी अपील की गई है। गुरुकुल की देवियां तथा श्री प्रो० रामदेव जी और श्री लाला नरायन दत्त जी सहायक मुख्याधिष्ठाता भी प्रयत्न कर रहे हैं। आशा है कि इस सम्मिलित प्रयत्न का फल सफलता ही होगी ज्योति के पाठक पाठिकाओं को भी अपनी शक्ति के अनुसार दान अवश्य भेजना चाहिये तथा उत्सव में सम्मिलित होने का प्रयत्न करना चाहिये।

यात्रियों के ठहरने तथा खाने पीने का प्रबन्ध गुरुकुल की ओर से होगा वालण्टियर लोग स्टेशन तथा कोठी पर रहेंगे वह यात्रियों को उनके ठहरने के स्थान पर ले जांयेंगे देवियों के लिये भी अच्छा प्रबन्ध है।

आर्य्य-नारी-सम्मेलन।

प्रथम दिवस अर्थात् १४ नवम्बर को १२ बजे से ५ बजे तक आर्य्य-नारी-सम्मेलन होगा जिस में केवल देवियाँ तथा ब्रह्मचारिणियाँ ही भाग लेंगी। रात्रि को ब्रह्मचारिणियों के खेल होंगे। सब विदुषी देवियों से प्रार्थना है कि इस में अवश्य सम्मिलित हों और व्याख्यान भजनों से स्त्रियों को आल्हादित करें।

ज्योति की सहायता की अपील।

लगभग ३ या ४ मास हुए होंगे कन्या गुरुकुल के संरक्षकों से अपील की गई थी कि वह कन्या गुरुकुल की मुख पत्रिका ज्योति की आर्थिक दशा को सुधारने में हाथ बटावें और ग्राहक संख्या भी बढ़ावें। उसके उत्तर में निम्न महाशयों ने इस प्रकार सहायता दी है :—

१-बाबू रामचन्द्रजी जैजैवन्ती	५०)
,, महावीरसिंह उतरौला	१५)
,, हाकिम रायजी लुधियाना	१०)
,, रामप्रसादजी राजा का— सहसपुर	५)
,, रामलाल गुप्ता फैजाबाद	५)
,, दिवानसिंहजी हापुड़	५)
,, न्यामतसिंहजी सहारनपुर	५)
,, जगदम्बाप्रसादजी	५)
,, कृष्णसहायजी कैम्पल	५)
,, प्रभुदयाल जी जौनपुर	५)
,, बाबूरामजी धर्मपुरा	५)
,, रघुपति शर्मा दिल्ली	५)
,, आत्मारामजी पटियाला	५)
,, राधाकृष्ण वर्मा	५)
,, देशराज तरहन	५)
,, रामचन्द्र थाराबाड़ी	२)
,, खानसिंहजी	२)
सर्दार मिलखासिंहजी	५)
बाबू गिरधारीलालजी	५)
योग	१४४) कुल

इसके अतिरिक्त कई संरक्षकों ने एक दो ग्राहक भी बना दिये हैं परन्तु क्या ओस चाटने से प्यास बुझती है? हमें शोक से कहना पड़ता है कि अपील में स्पष्ट बतलाया गया था कि दो वर्ष के घाटे के १६००) रु० उधार हो चुके हैं, वह चुकाने हैं। उसी की पूर्ति के अनुसार दान देना चाहिये। परन्तु किसी ने इस अपील पर विशेष ध्यान नहीं दिया। फिर दूसरी अपील यह थी कि यदि जो अधिक न दे सकें वह ५) रु० ही भेजदेवें तो १०० संरक्षकों से ५००) तथा अधिक देने वालों को मिलाकर शायद एक वर्ष का घाटा निकल जाता। परन्तु कतिपय उपरोक्त सज्जनों के अतिरिक्त अन्य संरक्षकों ने इस पर ध्यान नहीं दिया। यदि संरक्षक लोग कन्या गुरुकुल की मुख्य पत्रिका के लिये उस प्रथम वार की अपील पर इतना कम ध्यान देते हैं तो हम उन से आगे के लिये क्या आशा करें? हमने सोचा था कि बून्द २ कर के तालाब भी भर जाता है फिर थोड़ा सा घाटा इतने कमाऊ संरक्षक क्या पूर्ण न करेंगे। हमें उस समय यह स्वप्न में भी ख्याल न था कि हमारे देश वासियों में आत्मत्याग का भाव नहीं है वह तो दूसरों से ही त्याग की आशा करते हैं। नहीं तो कौन पुरुष ऐसा होगा जो अपने वार्षिक कपड़े आदि के निजी कार्य्य में कुछ न कुछ व्यय न करता हो! यदि वह एक वर्ष उसमें ही कमी कर के हमारी अपील पर ५) ही भेज देते तो क्या उनको विशेष हानि हो जाती थी? हमें भी उन की सहानुभूति प्राप्त कर सन्तोष होता कि संरक्षक लोग हमारे साथ हैं। परन्तु जब हम देखते हैं कि संरक्षक लोग कन्या गुरुकुल से उत्तमोत्तम शिक्षा और प्रबन्ध की निरन्तर आशा करते रहते हैं और आधी फ़ीस पर और मुफ़्त में कन्या ले लेने की प्रार्थनायें भी करते हैं किन्तु जब उन से अपील की जाती है तो उन से ज़रा भी त्याग नहीं किया जाता तो हमें इस स्वार्थ परता पर बड़ा दुःख होता है। संरक्षकों को सोचना चाहिये कि गुरुकुल उनकी कन्याओं को लाभ पहुंचा रहा है, शिक्षाव्यय तथा प्रबन्धव्यय उन पर नहीं पड़ता है वह दानियों के आधार पर है उन्हें केवल अपनी कन्याओं को खाने पहिरने आदि का व्यय देना होता हैं उसे भी वह चाहते हैं कि कहीं से किसी प्रकार हो जाय। यह कहां का न्याय है अतः हम संरक्षों से पुनरपि प्रार्थना करते हैं कि वह कन्या गुरुकुल के प्रत्येक कार्य

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

को अपना ही कार्य समझें और उनमें सहायता देना अपना कर्त्तव्य समझ कर जब कभी भी अवसर आवे और जिस प्रकार की भी सहायता की याचना हो तो उसमें अपनीशक्ति के अनुसार आगे आवें। तभी उनकी कन्यायें लाभ उठा सकेंगी और उनका उत्तर दायित्व पूरा होगा।

अतः जिन २ संरक्षकों ने ज्योति की सहायतार्थ अभी तक धन नहीं भेजा है वह कन्या गुरुकुल के उत्सव से पूर्व २ भेज कर हमें अनुगृहीत करें ताकि उत्सव के समय हम बतला सकें कि हमें सहायता मिली है।

१६००) रु० की अपील पर लगभग १५०) रुपये आना क्या लज्जा की बात नहीं? आशा है कि संरक्षक महाशय शीघ्र इधर ध्यान देंगे। तथा जो संरक्षक ज्योति नहीं मंगा रहे हैं वह न केवल स्वयं ग्राहक बनेंगे वरन एक दो मित्रों को भी ग्राहक बनाकर हमारी पर्याप्त सहायता करेंगे।

विचार प्रवाह

भारत की राष्ट्रपत्नी।

श्रीमती सरोजनी नायडू को स्थानिक काग्रेंस कमेटियों ने बहुपक्ष से आगामी कानपुर काग्रेंस की प्रधान चुना है। स्वागत कारिणी सभा ने इस चुनाव को स्वीकार भी कर लिया है। भारतीय सभ्यता में स्त्री जाति का बड़ा मान है। देवी पूजा हमारी पुरातन सभ्यता का एक आवश्यक अंग है। इस दृष्टि से हम श्रीमती सरोजनी नायडू को बधाई देते हैं कि मातृशक्ति की प्रतिनिधि स्वरूप होते हुए उन्होंने यह प्रतिष्ठा प्राप्त की है। हम भारत की प्रजा को भी बधाई देतेहैं कि एक देवी को मान देकर उन्होंने देश के गौरव को बढ़ाया है।

किन्तु एक और दृष्टि भी है जिससे इस प्रश्न पर विचार किया जा सकता है। और वह यह है कि भारतवर्ष इस समय दासता की जंजीर में जकड़ा हुआ है। भारतीय नेताओं के कर्त्तव्य हैं अधिकार कोई नहीं हैं काग्रेंस का प्रधान पद प्रतिष्ठामात्र के लिये नहीं प्रदान करना चाहिये क्योंकि प्रधान महाशय का कर्त्तव्य है कि साल भर देश के पारस्परिक कलह को दूर करे, नीति निपुण, ब्रिटिश के नीतिकुशल प्रतिनिधिओं की शतरञ्ज की चालों का निरीक्षण करे, और उनका उत्तर सोच सके। ब्रिटिश साम्राज्य में भारत प्रवासियों पर नित्य नये अत्याचार होते हैं उनका प्रतिकार सोचने में मातृभूमि का नेतृत्व करे। क्या श्रीमती नायडू में यह योग्यता है? कि इन कठिन समस्याओं पर मगज पच्ची कर सकें। देवी की कल्पना शक्ति जग प्रसिद्ध है। उनके लेख और उन की बाणी में कविता का रस है। इङ्गलिश भाषा पर उनका प्रभुत्व आश्चर्य जनक है। उनका हृदय देशभक्ति से पूर्ण और उत्साह से भरा हुआ है उनके नेत्र देशके दुखान्त नाटक को देखकर अश्रू पूर्ण रहते हैं। उनके दिल में एक ही तड़प है। उनके मन में एक ही लगन है, उनके मस्तिष्क में एक ही विचार है। उनके जीवन का एक ही

उद्देश्य है और वह यह कि अनाथ भारत को सनाथ बनाया जाय उसकी हीन दशा को हटाया जाय, उसके रोग की चिकित्सा ढूंडी जावे और उसके दारुण दुःख को दूर किया जावे। यह सब कुछ स्वीकार करते हुए भी हम यह लिखने के लिए बाधित हैं कि श्रीमती नायडू अपनी नीतिमत्ता के लिये और नीति शास्त्र में प्रगल्भता के लिये सुप्रसिद्ध नहीं हैं। न उनको नीतिशास्त्र का गूढ़ ज्ञान है और न नीतिकला का। मिसिज़ बीसेन्ट Common wealth of India Bill के नाम से ब्रिटिश पार्लिमेन्ट में प्रस्तुत करने के लिये एक राजनियम का मसौदा तैयार किया था। जिसका उद्देश्य स्वराज्य सीमा को विस्तृत करना था। भारत के जगत्प्रसिद्ध नेताओं तथा महात्मागांधी, स्वर्गवासी चित्तरञ्जनदास और पंडित मोतीलाल नहेरू ने उस मसौदे को समयोचित्त और त्रुटि रहित न समझा। और इसलिये उस पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। किन्तु मिसेज़ नायडू ने हस्ताक्षर कर दिये। जब वह मसौदा अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सन्मुख उपस्थित हुआ तो एक भी समर्थक उसको न मिला। क्या? विचित्र बात है। जिस मसौदे के पक्ष में एक भी कांग्रेस का कार्यकर्त्ता नहीं है। उस मसौदे को अपनाने वाली देवी पर देश भक्ति के भाव से प्रभावित होकर अपने नियन्त्रण का भार सौंपने वाला है। कहा जा सकता है कि कदाचित श्रीमति नायडू के विचार ठीक हों, उनकी युक्तियां अकाट्य हों। उनके हेतु मनग्राह्य हों और उन्होंने यह निश्चय करलिया हो कि वह कानपुर कांग्रेस को अपने पक्ष में कर लेंगी और देशको इस मसौदे की गूंज से हिला देंगी। किन्तु शोक से कहना पड़ता हैं कि वास्तव में यह बात इस प्रकार नहीं है। अभी एक वक्तृता में उन्होंने कहा है कि वह इस मसौदे के विरुद्ध थीं और उन्होंने इस पर हस्ताक्षर केवल डाक्टर बिसेन्ट को रिझाने के लिये कर दिये हमारे एक प्रतिष्ठित सहयोगी ने बहुत ठीक लिखा है कि अब भी श्रीमती जी का विरोध के कारण ज्ञात नहीं हैं। उन्होंने डा०. बिसेन्ट को रिझाने के लिये हस्ताक्षर कर दिये। और अपने इष्टदेव 'महात्मागांधी को प्रसन्न करने के लिये उसके विरुद्ध एक भाषण जड़ दिया।

सभी लोग जानते हैं कि दक्षिण अफ्रीका के जनरल स्मट्स ऊपर से मीठे स्वभाव के शिष्ट, अन्तःकरण के कुटिल हैं। डाक्टर तेजबहादुर सप्रू पर उनका वशीकरण नहीं चला किन्तु अलवर के महाराज को उन्होंने वशीभूत कर लिया था। देवी सरोजिनी भारत कांग्रेस की ओर से प्रतिनिधि बनकर दक्षिण अफ्रीका में गई। वहां जनरल स्मट्स से वह मिलीं। भारत की भोली भाली, सीधी साधी, राजनीति के रहस्यों और राजनीतज्ञों के फन्दों से अनभिज्ञ देवी को वृद्ध, अनुभवी कनकाचार्य्य और कौटल्य के अवतार ने ठग लिया। देवी प्रसन्न होगईं किस्मत के कड़छे चल गये और जनरल महाशय की ललित और कविता रस पूर्ण भाषणों में वह प्रशंसा की गई कि प्रयाग का नरम दल का मुख्य पत्र "लीडर" भी झुंझला उठा और अविचार से इस प्रकार सार्टीफिकेट बिखेरने की नीति के विरुद्ध उसने बलपूर्वक प्रतिरोध का शब्द उठाया।

पूर्वीय अफ्रीका में भी आप गईं थीं। इनके जाने से पूर्व लोग खद्दर पहिनते थे और देखने में भारतीय मालूम होते थे इनके उपदेश का यह प्रभाव हुआ कि खद्दर

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

का स्थान विदेशी, कोमल बहस्त्रों ने ले लिया और अफ्रीका भर में भारतीय ढंग से रहने वाला भारतीय ढूढने पर भी कठिनता से मिलता है। जिसको देखो उसी को पतलून, कोट, हैट, कौलर और नेकटाई डाटी हुई है और चाल ढाल भी विलायती है। हां एक कसर अवश्य है; रंग लाख यत्न करने पर भी विलायती नहीं होता ऐसे लोगों के विषय में कवि ने कहा है:—

बदन देख झख मारती रोशनाई।
मगर साहबी ठाठ की धुन समाई॥
कलूटी शकल पर मनों "सोप" मलते।
चढ़ा 'बूट डौसन" मटक चाल चलते॥
लगा 'सोप पियर्स" हैं देह धोते।
नहीं खाक़ कौए कभी हंस होते॥
लुटी देश की श्री, विलायत गई है।
नहीं आपकी नींद गायब हुई है॥
.....
.....
.....
.....

गटक बोतल तारता पीढ़ियों को।
खतम कर रहा सभ्यता सीढ़ियों को॥

देवी जी के पूर्वीय अफ्रीका में जाने से भी वहां शराब का राज्य था। उनके जाने से वह राज्य कम नहीं हुआ। जब देवी जी ने भारत में प्रस्थान किया था उससे कुछ पूर्व भारत के नेता शराब की दुकानों पर पिकेटिंग करते थे। और भारत हितैषिणी सरकार इस घोर दोष के बदले उनको बन्दी-गृह में डाल देती थी। मद्यपान का जितना प्रचार भारतवासियों में है, उससे सहस्त्र गुणा पूर्वासियों में है। भारतीय काग्रेंस ने इस दुर्व्यसन को जड़ से उखाड़ने का व्रत लिया हुआ है, इससे यह आशा करना ठीक ही था कि भारतीय काँग्रेस की नेत्री अफ्रीका में जाकर इस दुर्व्यसन के विरुद्ध धर्मयुद्ध करेगी। किन्तु यह आशा दुराशा ही सिद्ध हुई। देवी के भारत लौटने के पीछे जो लोग पूर्वीय अफ्रीका में गये वह यह देखकर लौटे हैं कि वहां की कांग्रेस का प्रधान इतना मद्यप है कि पब्लिक रुपये से खरीदी हुई कई बोतलें प्रतिदिन गट्ट कर जाता है। पश्चिमी सभ्यता का अनन्य भक्त है और भूल कर भी भारतीय कपड़े का अपने शरीर के साथ स्पर्श नहीं होने देता।

जिस समय देवी जी मुम्बासा पहुंची वहां पूर्वीय अफ्रीका के भारतीयों की कांग्रेस होने वाली थी। बड़े समारोह से आपका स्वागत हुआ। और करतल ध्वनि में आपने सभापतित्व के आसन को ग्रहण किया। आवेश का समुद्र ठाटें मार रहा था। देवी जी ने न आव देखा न ताव, कवि तो थीं ही कविताका वास्तविकता से संसर्ग नाममात्र ही होता है, दृष्टि उनकी गगनकी ओर होती है और पग उनके धरती से उठे होते हैं। आवेश के समुद्र में स्नान किया; कल्पना के हवाई घोड़े को चाबुक लगाई, अन्दर के कपाट खुल गए। और अलङ्कारों और गाथाओं की झड़ी लग गई। देवीजी ने न कुछ सोचा न विचारा। और अपने प्रवासी भाइयों को यह मन्त्रणा दी कि विनीत आज्ञाभङ्ग का समय आगया है पौलटक्स का देना बन्द कर दो जब तक कि तुम्हारे दुखड़े दूर न हों। देवी का जादू चल ही गया था। करतलध्वनि से पण्डाल गूंज उठा, साधुवाद के शब्द चारों ओर सुनाई देने लगे और प्रस्ताव हर्षनाद से स्वीकार किया गया। किन्तु जब लोग पण्डाल से बाहर निकले और उन्होंने अपनी स्थिति पर विचार किया तो उनको पता लगा कि जो

प्रस्ताव वह स्वीकार कर आये हैं उस पर आचरण एक दम असम्भव है। केनियाके बहुत से प्रवासी, भारतवासी सरकारी नौकर हैं कुछ एक योरपियन दूकानों में लेखक हैं। और शेष दूकानदार हैं जिनकी रोज़ी योरपियन लोगों के सिर पर चलती हैं विनीत आज्ञाभङ्ग ऐसे लोगों से कब हो सकता था? देवी ने भी जब दौरा लगाया तो उन की आंखें खुलीं; कविता लोक से वह निकलीं और इस स्थूल संसार में उन्होंने पदार्पण किया। तब यह सलाह दी कि प्रस्ताव की लाज तो रखनी ही चाहिये। इसलिए बन्दी-गृह के दरवाजे पर पहुंच कर पौलटक्स दे दिया करो। यह तो साधारण लोगों की अवस्था रही। लीडरों ने एक और ही चाल चली। अपने मित्रों से समझौता कर लिया मित्रों ने इनके स्थान में पौलटक्स दे दिया और सरकार ने यह कृपा की; कि उनको पकड़ा नहीं।

यह फल हुए हैं देवी जी के राजनीति में हस्ताक्षेप करने के। अब यह बनी हैं भारत की राष्ट्रपत्नी देखें यहां क्या गुल खिलते हैं? किन्तु आशा यही रखनी चाहिये कि यहां उनकी प्रधानता से कोई लाभ न होगा तो कोई हानि भी न होगी। क्योंकि प्रजा के हृदय की महारानी यद्यपि सरोजिनी हैं तथापि उनके मस्तिष्क पर गांधी और नेहरू का राज्य है। इतनी तो आशा रखनी ही चाहिये कि उनका का भाषण बड़ा सुन्दर होगा। कवियों की निरङ्कुशता तो प्रसिद्ध ही है। फिर क्यों न देवी जी पूर्व दृष्टान्तों का अतिक्रमण करके अपना भाषण ही कविता में दें। ऐसी अवस्था में इस भाषण की चर्चा बहुत होगी।

पकड़ धकड़।

संयुक्तप्रान्त में संप्रति पुलिस वालों को अवकाश नहीं है। ककोड़ी में जो रेलगाड़ी पर डाका पड़ा था उसके सम्बन्ध में पकड़ धकड़ जारी है। कहा जाता है कि उस डाके का उद्देश्य राजनैतिक था और डाकू क्रांतिकारी थे। कदाचित ऐसा ही हो। संसार में कई बार सत्य घटनाएं ऐसी २ हो जाती हैं जो उपन्यासों में लिखित, काल्पनिक घटनाओं के भी कान कतरती हैं। जो लोग पकड़े गए हैं उन में से कई कांग्रेस के मुख्य कार्य्यकर्त्ता हैं। दो लाला लाजपतराय के तिलक स्कूल पौलिटिक्स के सदस्य हैं एक काशी की राष्ट्रीय विद्यापीठ के उपाध्याय हैं लोग कहते हैं कि यदि डाकू और क्रांतिकारी ऐसे ही होते हैं तो कह नहीं सकते कि किस का भाई, किस का पुत्र, किस का पिता और किस का भतीजा कल को डाकू निकल आवे, दूसरे लोग यह कहते हैं कि भई; पुलिस जब पकड़ने लगती है तो सदा विचार से काम नहीं लेती। कई निर्दोष भी तो पकड़े ही जाते हैं? न्यायालय में अभियोग का परिणाम देख कर ही हम अपनी सम्मति बनायेंगे। जिस घर में देखो यही चर्चा है। कानपुर में कांग्रेस के कर्मचारी अपने आपको सुरक्षित नहीं समझते। कइयों ने अपने उत्तराधिकारी अभी से चुन रक्खे हैं। और वारन्ट की प्रतीक्षा में दिन को डोलते हैं और रात को सोते हैं, देखें ऊंट किस करवट बैठता है?

स्वराज्य पार्टी और खद्दर।

पटना में यह निर्णय हो गया कि जो सूत न दे सके वा न देना चाहे वह चार आने देकर ही कांग्रेस का सदस्य बन सकता है और सर्व अधिकार प्राप्त कर सकता है - किन्तु यह भी निर्णय हुआ है कि कांग्रेस के काम के समय और कांग्रेस के अधिवेशनों में सम्मिलित होते समय सब को खद्दर ही

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पहिनना चाहिये। स्वराज्य पार्टी के कई दिल-चले अब भी प्रसन्न नहीं हुए। वह चाहते हैं कि खद्दर की पूर्ति सर्वथा ही उड़ जावे।

हमारी समझ में तो स्वराज्य और खद्दर का अटूट सम्बन्ध है। जब तक विलायती कपड़े की खपत भारत में होगी तब तक विदेशी व्यापार की रक्षा के लिये शासन में विदेशी तत्व का प्रभुत्व परमावश्यक है। जब विलायती कपड़े की मांग ही न रहेगी तो फिर भारतीयों को स्वराज्य मिलना सुगम हो जायेगा। न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी कहा जाता है कि क्यों न हम बड़े २ कारखानों द्वारा कपड़ा प्राप्त करें, बीसवीं शताब्दी में चर्खा चलाना ऐसा ही है जैसा इस बिजली के युग में मिट्टी का दीपक जलाकर शेक्सपियर का नाटक पढ़ना। इस युक्तिको देने वाले यह नहीं समझते कि मिलें स्थापित करने के लिये जितना मूलधन चाहिये उतना मूलधन भारत में नहीं है। दूसरी बात यह है कि मशीनरी विदेश से आती है क्या यह असम्भव है कि विदेशी अपनी रोज़ी जाती देखकर भारतियों के पास कलायन्त्र बेचना ही बन्द कर दें, अथवा उसको इतना महगा कर दें कि भारतीय उसका क्रय कर ही न सकें, यदि यह सब कुछ न भी हो तो भी यह तो सम्भव है कि विदेशी लोग भारत में आकर ही अपने कारखाने खोल दें और स्वदेशी कपड़े के व्यापार के संरक्षण के लिये लेजिस्लेटिव ऐसेम्बली जो भी राजनियम स्वीकार करे उनसे पूरा २ लाभ उठावें। यह समझना भूल है कि हमारी मिलेंभारत में स्थापित विलायती मिलों का मुकाबिला कर सकेंगी, अथवा सरकार उनकी स्थापना को रोक देगी अभी एक सरकारी कमीशन की रिपोर्ट से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि सरकार विदेशी मूलधन की भारत में खपत को देश के लिए हितकर समझती है। ऐसी अवस्था में यह असम्भव है कि स्वराज्य के अभाव में मिलों द्वारा भारत पर जो आर्थिक परराज्य है, उसको दूर किया जा सके, और इस परराज्य के दूर हुए बिना स्वराज्य का आरम्भ भी नहीं हो सकता।

तो फिर क्या किया जावे? हमारा उत्तर है चलाओ चर्खा और खड्डी। इङ्गलैंड का कोई पागल ही सम्पत्ति स्वामी होगा जो भारत में चर्खे और खड्डी चलाने में अपना रुपया लगाये। उस मूलधन का ब्याज भी उसको प्राप्त न होगा। भारतवासियों के लिये अपनी कपड़े सम्बन्धी सारी आवश्कताओं को चर्खे और खड्डी द्वारा पूरा कर लेना ही बहुत सहज है। भारतीय प्रजा का ७३ प्रति शतक भाग कृषकों का है। भारत की प्राकृतिक अवस्थाएं ऐसी हैं कि वर्ष का कुछ भाग कृषकों को खाली बैठे रहना पड़ता है यदि वर्ष उनकी स्त्रियां अपने ही खेतों की रुई द्वारा चर्खा चलावें और कृषक लोग अपने खाली समय में कपड़ा बुनें तो इतना कपड़ा उत्पन्न हो सकता है जिससे सारी साधारण प्रजा का काम निकल सके। शेष रहे कोमलांगी विलासप्रिय, अमीर, धनी लोग और राजे, महाराजे और सेठ जिनको खद्दर चुभता है। हमारी सम्मति में तो ऐसे लोगों की ओर ध्यान ही नहीं देना चाहिये जिनको विदेशी राज्य से तो कोई तंगी अनुभव नहीं होती किन्तु मोटा कपड़ा तंग करता है यदि इन लोगों को प्रसन्न करना ही राष्ट्र को स्वीकृत हो तो दो तीन लाख बुद्धिमान लोग तन्तुवाय के व्यवसाय को ग्रहण कर सकते हैं। यदि चर्खे के सूत से बुनी हुई दस गज की पगड़ी पहिले कभी एक डिबिया में आ सकती थी और उसी सूत से औरङ्गजेब की लड़की के लिये ऐसी साड़ी बुनी जा सकती थी। जिस

को कई तहें देकर भी युवती स्त्रियों के पहिरने योग्य नहीं बनाया जा सकता था तो यह सब कुछ अब भी हो सकता है। मिलों की शैली में कई दोष भी हैं जिनसे योरुप दुःख उठा रहा है। हो सकता है कि २०-२५ वर्ष के समय में योरुप के लोग उन दोषों का प्रतिकार ढूंढ लें। चर्खे और खद्दी द्वारा स्वराज्य प्राप्त कर लो। स्वराज्य प्राप्त होने पर यदि तुमने देखा कि मिलों की शैली त्रुटि-रहित हो गई है तो उसको ग्रहण कर लेना और यदि उस समय तक योरुप में बेकारों ने क्रान्तियुक्त साधनों से मिलों का खातमा ही कर दिया और चर्खे और खद्दी का युग वहां भी ला दिया तो फिर तुम परमात्मा का धन्यवाद करना और गांधी के नाम को आशीष देना।

मिस्टर तांबे और स्वराज्य पार्टी

मिस्टर तांबे मध्य प्रदेश में स्वराज्यपार्टी के एक स्तम्भ थे। स्वराजियों की सहायता से ही वह कौंसिल के अध्यक्ष चुने गये थे। एक दिन पत्रों में यह छपा कि तांबे महाशय को मध्य प्रदेश के गवर्नर ने निमन्त्रित किया है और वह उनसे मिले भी। दूसरे दिन यह समाचार भी आगया कि महाराज जार्ज ने उनको मध्य प्रदेश की एकजेकिटव कौंसिल का सदस्य बना लिया है। इस समाचार से स्वराजी लोगों में बड़ी हल चल मचगई है। क्योंकि स्वराज्य दल का यह नियम है कि कोई स्वराज्यवादी सरकार का दिया हुआ कोई वैतनिक पद स्वीकार नहीं कर सकता। महाशय तांबे ने अपनी पार्टीके किसी सदस्य से परामर्श किये बिना ही यह पद स्वीकार किया है। इस लिये सभी लोग आश्चर्य्य में डूबे हुए हैं। उनका यह कहना है कि जिस समय वह अध्यक्ष चुने गये थे उसी समय से उनका किसी दल विशेष से सम्बन्ध नहीं रहा। और यह पद उन्होंने अपनी व्यक्तिगत स्थिति में स्वीकार किया है। स्वराज्यदल की ओर से नहीं। यह तर्कना बहुत ही विचित्र है और दर्शाती हैं कि तांबे महाशय को धर्म अधर्म का कितना विचार है। स्वराजी पक्षमें होने के कारण भी उनको कौंसिल का मैम्बर चुना गया था उसी कारण वह अध्यक्ष बने। यदि आत्मा का शब्द उनके लिये कोई भी मूल्य रखता था तो उनका कर्त्तव्य था कि सरकारी नौकरी करने से पूर्व स्वराज्यदल और कौंसिल की मैम्बरी से त्यागपत्र देदेते और यह घोषणा कर देते कि उनके विचार बदल गये हैं। यह तो रही उनकी बात। इस घटना से स्वराज्य दल को भी शिक्षा प्राप्त करनी चाहिये। साधारण लोगों को वह सिर पर उठा लेते हैं और उनको गवर्नरों से मुलाकात करने का अवसर देते हैं। जब वह प्रलोभनों में फंस जाते हैं फिर हाहाकार मचाते हैं। वह यह नहीं समझते कि ब्रिटिश सरकार के कर्मचारी इतने चालाक हैं। हमारे साधारण कार्य्यकर्त्ताओं का चरित्र इतना संगठित नहीं कहा जासकता कि वह फंस न जावें, सरकार को तो हम क्या कहें; उसको महाशय तांबे से अधिक योग्य पुरुष इस नौकरी के लिये मिल सकते थे। किन्तु उसका उद्देश्य तो स्वराज्यदल को चोट लगाना था और उसमें वह सफल भी होगई। इङ्गलैंड में जो महाशय पार्लिमेन्ट के एक बार अध्यक्ष होजायें उनको फिर कभी सरकारी नौकरी नहीं मिलती, क्योंकि यह समझा जाता है कि यदि नौकरी की आस रहे तो बिना जाने निर्पक्षता में भेद आही जाता है। भारतवर्ष में सर एलग्जैण्डर मंडीमैन, सर फ्रेडरिक हाइट, और मियां अब्दुलकादर को, जो तीनों

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

नियम व्यवस्थापिका सभाओं के अध्यक्ष थे, सरकारी नौकरियां मिलीं और अब ताँबे महाशय को भी यही सौभाग्य प्राप्त हुआ है। दो अङ्गरेज महाशयों के विषय में तो कदाचित यह कहा भी जासके कि वह क्योंकि सिविल सरविस में थे इस लिये उनकी तरक्की रोकी न जासक्ती थी। और आगे को सिविलसर्विस के सदस्यों को कौंसिलों का अध्यक्ष बनना ही नहीं; किन्तु मियां अब्दुल कादर और विशेषकर महाशय तांबे के विषय में सरकार का वक्तव्य क्या हो सकता है। बात तो स्पष्ट है। नौकरशाही और स्वराज्य दल का मुकाबला है, नौकरशाही के पास प्रलोभन बहुत हैं। स्वराज्यदल के लोग यदि अपने अन्दर केवल तपस्वियों और त्यागियों को लेने का नियम न करेंगे और अपनी शर्तें कड़ी न कर देंगे तो उनकी जीत अत्यन्त कठिन है। कौंसिलों के अध्यक्ष बनने की रीति भी उनको छोड़नी चाहिये। क्योंकि अध्यक्ष का वेतन इतना है कि उसके बनने के लिये ही लोग विशेष प्रयत्न करते हैं। बङ्गाल में उनका एक मुख्य नेता तो बङ्गाल के गवर्नर केपास सरकारी बोटें प्राप्त करने गया हीथा ऐसी घटनायें और स्थानों में भी होंगी। यह हमारा विषय विचारणीय है और हम को पूर्ण विश्वास है कि इस दुर्घटना से स्वराज्यदल पूरा २ लाभ उठायेगा और ऐसी रीतियां सोचेगा जिन से ऐसी घटनाओं का होसकना ही असम्भव होजाये।

स्याम के महाराज का उपदेश

लण्डन में व्याख्यान देते हुए स्याम देशके महाराजा ने स्यामी विद्यार्थियों को यह उपदेश दिया कि उनको किसी अवस्थामें भी विदेशी रमणियोंसे विवाह न करना चाहिये। क्योंकि एशिया और योरुप के रीति रिवाज रहन सहन के ढंगों और शेष छोटी २ और बड़ी २ बातों में इतना भेद है कि ऐसे विवाह सुख के कारण कदापि नहीं होसक्ते। उन्हों ने यह भी कहा कि स्याम देश में उत्तम से उत्तम ललनायें मिल सकती है। जो कुछ उन्होंने स्याम के विषय में कहा वह भारतवर्ष पर भी लगता है। भारत के कई बैरिष्टर इत्यादि अपने साथ विलायतसे स्त्रियां लेआते हैं। उन मेमों को अपने पतियों की बिरादरी से जब वास्ता पड़ता है वह बिचारी बड़ी दुःखित और लज्जित होती हैं। पग २ पर उनको पता लगता है कि उन्हों ने किसी न किसी बात पर ठोकर खाई है। भारत की देवियां न तो विदेशी आदर्शों को समझती हैं और नहीं उन आदर्शों पर अवलम्बित रीति रिवाज इनकी समझ में आते हैं। यदि दूध खुले बर्तन में पड़ा होगा तो विदेशी ललना उसको पियेगी नहीं और कहेगी कि भारत में स्वच्छता पर ध्यान नहीं दिया जाता; किंतु जहां भोजन पकता है उस रसोई में जूता लेजाने में उसको कोई संकोच न होगा और नहीं खाने की टोकरी में जूता डालते समय उसके मन में ऐसे विचार आयेंगे। इसी प्रकार यदि कोई पुरुष गर्मी की ऋतु मे केवल धोती पहिन कर देवियों के सन्मुख नंगे पाँव और शरीर के नग्न होते हुए बैठेगा तो विलायती ललनाओं को वह पुरुष असभ्य प्रतीत होगा। किंतु उनको यह बुरा न लगेगा कि उनका ब्लाउज गर्दन से बहुत नीचा है, ऐसी ही कई और बातें भी हैं। यदि कोई भारतीय देवी नहाये धोये बिना कुछ मुंह में डाललें तो अन्य देवियां उस को घृणा की दृष्टि से देखने लगती हैं। किंतु एक इङ्गलिश रमणी प्रातः काल उठते ही एक चाय का प्याला अवश्य पीयेगी, और कदाचित एक आधा बिस्कुट अथवा टोस्ट भी साथ खा लेंगी।

भारतीय हिंदुओं के जिन परिवारों में माँस पकता भी है वहां भी देवियां माँस को छूती नहीं। किंतु विलायती मेंम को अण्डों और मांसका प्रयोग एक साधारण बात मालूम होती है यह सच है कि भारत में कुछ काली मेंमें भी है जो इन गोरी मेंमों का पूरा २ अनुकरण करती हैं। किंतु गोरी मेंमों और काली मेंमों की आपस में बनती नहीं क्योंकि काली मेंमें यह समझती है कि गोरी मेंमों को अपनी रूप राशिका अभिमान है और गोरी मेंमों का यह कहना है कि काली मेंमों में न भारतीय ललनाओं के गुण हैं न विदेशी ललनाओं के। और दोष दोनों की बढ़ी हुई मात्रा में उन में उपस्थित हैं।

"कौआ गया था हंसकी चाल सीखने, अपनी चाल भी भूल गया।"

एक और बात भी विचारणीय है विदेशी भाषा चाहे कोई कितना ही पढ़ले, उसके मनके आंतरिक भावों और विचारों, उसके स्वप्नों और उसकी लालसाओं का प्रकाश भली प्रकार उसी भाषा में होसकता है जो उसकी माता ने उस को लोरियों के साथ सिखलाई। जब तक मनुष्य विदेशी भाषा बोलता रहता है वह यही अनुभव करता रहता है कि वह एक कृत्रिम वायुमण्डल में घूमता है। स्वाभाविकता का जीवन में पुनः प्रवेश अपनी भाषा के प्रयोग के साथ ही आता है। यही कारण है कि विलायत में हिंदुस्तानी विद्यार्थी जब आपस मे मिलते हैं तो मातृभाषा का ही प्रयोग करते हैं; क्योंकि अंग्रेजों के साथ अँग्रेजी बोलते २ वह इतने तंग आजाते हैं कि आपस में उसकी कसर निकालते हैं। जिन के घर में मेमें हैं उन को घरमें भी हर समय अंग्रेजी ही बोलनी पड़ती है। साधारण बैरिष्टरों की अंग्रेजी की योग्यता भी साधारण ही होती है। इङ्गलिश भाषा के परिमित ज्ञान के कारण उनकी लालसायें, और भावनायें, उनके सङ्कल्प और विकल्प उनके मन में ही रहते हैं और उनका कोई भाग उनकी अर्धाङ्गिनियों को प्राप्त नहीं होता। ऐसा ही संकोच पत्नियों को भी होता है इससे दाम्पत्य प्रेम और स्नेह में फ़र्क आजाता है; यह घटना हुआ स्नेह कुछ काल के पश्चात् उपेक्षा का रूप धारण कर लेता है और सभी लोग जानते हैं कि उदासीनता प्रेम की घातक हैं। जब तक संसार में एक धर्म, एक आचारपद्धति और एक शिक्षा का स्रोत नहीं होता तब तक योरुप, अमेरिका, एशिया और अफरीकाके अंतरजातीय विवाह हानि कारक ही होंगे लाभदायक नहीं।

काश्मीर के महाराज का स्वर्गवास।

काश्मीर के महाराज सर प्रतापसिंह की मृत्यु के समाचार ने पञ्जाब के हिन्दुओं में एक प्रकारका त्रास फैला दियाहै। स्वर्गवासी महाराज पञ्जाबके हिन्दुओं के पथप्रदर्शकथे। वह सदाचारी उदार और निराभिश हारी थे। हर प्रकारसे प्राचीन धर्म की रक्षा करना वह अपना कर्त्तव्य समझते थे और धार्मिक असहिष्णुता तो उनके नज़दीक न फटती थी। सम्प्रदाओं के विद्वानों और धर्म प्रचारकों का वह बड़ा आदर करते थे। उन के स्वभाव में सरलता कूट २ कर भरी हुई थी। जिस किसी से पांच मिनिट के लिये भी मिलते थे; अपनी शिष्टता का प्रभाव उस के हृदय पर सदा के लिये छोड़ जाते थे। अपने कट्टर से कट्टर शत्रुओं को क्षमा कर दिया करते थे। उनकी मृत्यु से उनकी प्रजा को तो दुःख हुआही है किन्तु पञ्जाब के हिन्दुओं को उनसे कम क्लेश नहीं हुआ। अब काश्मीर की बागडोर महाराज हरिसिंह के हाथ आयेगी। महाराज हरिसिंह के ढङ्ग अधिक-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

तर विलायती हैं। मिस्टर सम्बन्धी घटना की चर्चा अभी सभ्य संसार में शांत नहीं हुई। क्या ? काश्मीर की प्रजा यह आशा करे? कि नवीन महाराजा साहब अपने उत्तर दायित्व को पूरी तरह समझेंगे और काश्मीर राज्य की रीति-नीति में कोई भेद न आने देंगे महाराजा साहब को यह भी सोचना चाहिये कि भारतीय मस्तिष्क का मूल्य यदि देशी रियासतों में भी न देख पड़ेगा तो फिर उस की गति क्या होगी। उनको बड़े २ पदों पर अंग्रेज़ों को नियुक्त करने की प्रवृत्ति छोड़नी चाहिये, आप को प्रत्येक बात में स्वर्गवासी महाराज के चरण चिन्हों पर चलने का प्रयत्न करना चाहिये। हमारी यही हार्दिक प्रार्थना है कि भगवान् महाराज हरिसिंह को सुमति दें और पञ्जाब की सब से बड़ी हिन्दू रियासत की सर्व प्रकार से रक्षा करें। यही प्रार्थना आर्य्य जाति के प्रत्येक हितैषी और हितैषिणी की अन्तरात्मा से आज निकल रही है।

गुरुद्वारा प्रबन्धक-कमेटी।

गवर्मेन्टके साथ अहिंसात्मक युद्धमें सिक्ख वीरों की विजय हो चुकी। अब उन को शान्ति से उसके मीठे फलों का आनन्द लेना चाहिये। यह तो सिक्खों ने सिद्ध कर दिया कि वह वीर योद्धा हैं अब यह सिद्ध करने का समय आया है कि वह नीतिज्ञ भी हैं। गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी का पिछला अधिवेशन जो अमृतसर में हुआ उस में दो दल हो गये। एक दल यह चाहता था कि गुरुद्वारा कानून को स्वीकार किया जावे। दूसरे का मत यह था कि सरकार के साथ सन्धि करने का समय अभी तक नहीं आया। यह देखना चाहिये कि सरकार नियम उपनियम किस प्रकार के बनाती है। एक मास तक प्रतीक्षा करके गुरुद्वारा एक्ट पर विचार करने का संशोधन स्वीकार हो गया। इस पर प्रबन्धकर्तृ सभा के सब सदस्यों और सब अधिकारियों ने त्यागपत्र दे दिये। नया चुनाव हुआ, इस में वही सदस्य फिर चुने गये। अब पता यह लगा है कि एक मास के पीछे जो दूसरा अधिवेशन होगा उस में कानून को स्वीकार करने का प्रस्ताव अवश्यमेव पास हो जावेगा। यह जानकर हम को प्रसन्नता हुई है कि फूट न पड़ेगी और आपस में समझौता हो जावेगा। युक्तदल ने बड़ी बुद्धिमत्ता और दूरदर्शिता से काम लिया है। गुरुद्वारा ऐक्ट सिक्खों के अपूर्व बलिदान का फल है। अब जबकि वह प्राप्त हो गया है उस को कीचड़ में फैंक देना उचित न होगा। क्या हुआ यदि उस वृक्ष पर जिस पर यह फल लगा है कुछ कण्टक भी हैं। वीर खालसा को चाहिये कि कण्टकों को दूर करके फल को काम में लावे। सरकार को वीर कैदियों को मुक्त करना ही पड़ेगा। भाई फेरू का मोरचा छोड़ने में भी गुरद्वारा कमेटी ने बहुत गम्भीरता से काम लिया है। जिस वायु मण्डल में पाप के जन्तु घूमने लग पड़े उस में सत्याग्रह नहीं हो सकता। सत्याग्रह के लिये पवित्रता; संयम और आत्म-दमन की अवस्थायें चाहिये। जहां यह अवस्थाये नहीं वहां सत्याग्रह करना ऐसा ही है जैसा एक अत्यन्त गन्दे स्थान में यज्ञ करना।

दयानन्द जयन्ती।

दीपावली के दिन जगत्गुरु महर्षी दयानन्द अपने जीवन के उद्देश्य में पूरी २ सफलता प्राप्त करके कवि के शब्दों में डंका बजाते हुए परलोक सिधारे थे। महर्षि इस युग के कर्ता थे। भारतवर्ष में जो भी जागृति दृष्टिगोचर होती है वह सब भगवान

दयानन्द के प्रयत्नों का परिणाम है। यदि आज सनातनधर्म आर्य्यधर्म बन रहा है। यदि इसलाम का रूप परिवर्तित हो रहा है, यदि ईसाई मत की काया पलट रही है। यदि ब्रह्मसमाजी फिर वेद की कीर्ति गाने लगे हैं, यदि कांग्रेस ने स्वदेशी व्यवसाय और मातृभाषा की सुध लेनी आरम्भ की है, यदि लोग यह समझने लगे हैं कि राष्ट्रीय उन्नति का मूल मन्त्र जातीय शिक्षा है, यदि स्वराज्य और देशीय सभ्यता में जो अटूट सम्बन्ध है उस की ओर लोगों का ध्यान उठने लगा है, तो यह सब कुछ प्रातःस्मरणीय दयानन्द के अपूर्व साहस और अवर्णनीय योग बल का चमत्कार है ॥ दयानन्दजयन्ती अब केवल आर्य्य समाजी ही नहीं मनाते 'दयानन्द आज सम्पूर्ण आर्य्यजाति के हृदय का सम्राट और समय आने वाला है जब कि सारा सभ्य संसार उस को जगतगुरु स्वीकार करेगा। यह सब कुछ तो होगा किन्तु महर्षि के अनुयाइयों का विशेष कर्त्तव्य है कि आलस्य और प्रमाद को त्यागें और अपने महान कर्त्तव्य की ओर ध्यान दें।

कन्या गुरुकुल।

कन्या गुरुकुल अपने ढङ्ग की भारत वर्ष में केवल एक ही संस्था है। कन्या गुरुकुल की स्थापना के पूर्व आर्य्य कन्यायें या तो यूनीवर्सिटी की परीक्षायें देकर अपने स्वास्थ्य का नाश करती थीं और अपने मस्तिष्क और हृदय को विदेशी बना कर भारतीय सभ्यता की उत्तरोत्तर क्षीणता में सहायक होती थीं और या संस्कृत कवियों के अश्लील ग्रन्थों के पढ़ने में ही अपना कल्याण मानती थीं। एक ऐसे शिक्षणालय की आवश्यकता थी जो भारत की कन्याओं को देवियां बनावे, ब्रह्मचर्य्य की प्रथा को पुनरुज्जीवित करे, भावी माताओं के दिमाग को ज्ञान की ज्योति से उद्दीप्त करे और उनके दिल को देश भक्ति के भावों से उत्तेजित करे, जो उनको धर्म्मवती, विद्यावती, ज्ञानवती और शीलवती पण्डितायें बनावे और गृहकार्य्य में निपुणता, शिशुपालन में कुशलता और कलाओं में दक्षता उनको सिखलावे। कन्या गुरुकुल ने इस कमी को पूरा कर दिया है। इस गुरुकुल में शिक्षा का माध्यम आर्य्य भाषा है इसलिये कन्यायें थोड़े समय में विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर लेती हैं। विद्यालय विभाग की पढ़ाई आठ वर्ष में समाप्त होती हैं। जो कन्यायें इस पढ़ाई को समाप्त कर लेगी उन को संस्कृत उतनी आ जावेगी कि उपनिषद् रामायण, महाभारत और गीता को समझ सकें, वैदिकसाहित्य में उनका प्रवेश हो चुका होगा, मैट्रिक तक की गणित और भूगोल वह जानती होंगी, भारतवर्ष का विस्तृत इतिहास, अर्थ शास्त्र, प्रवेशिका भारतीय शासन पद्धति और देश दर्शन वह पढ़ चुकी होंगी। इस के अतिरिक्त गाना, बजाना, सीना पिरोना, चर्खा कातना, खाना पकाना, बाग बगीचा लगाना भी विद्यालय विभाग में आवश्यक विषय हैं। गुरुकुल में इस समय १०० कन्यायें शिक्षा पाती हैं। अध्यापिका सब योग्य हैं और प्रायः त्याग भाव से काम करती हैं कन्या गुरुकुल का वार्षिक उत्सव १४, १५, १६ नवम्बर को होगा। आर्य्यजनता का कर्त्तव्य है कि उत्सव की शोभा बढ़ावें और दिल खोलकर गुरुकुल को दान दें ताकि यह संस्था फूले फले और भारत के भविष्य को बनाने में सहायक हो। उस समय नवीना ब्रह्मचारिणियों का प्रवेश भी होगा जो महाशय अपनी पुत्रियों को इस विद्यालय में प्रविष्ट कराना चाहते हैं। वह बहुत शीघ्र प्रार्थना पत्र के

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

फारम आचार्या से मंगवा लें और भर कर भेज दें। प्रार्थना पत्र बहुत आ रहे हैं और संस्था परिमित है, इस लिये संरक्षकों को अधिक विलम्ब न करना चाहिये।

भूपाल की बेगम साहिबा।

संसार की समस्त रियासतों में भूपाल (मध्य प्रदेश) ही एक ऐसा राज्य है जिस का शासन स्त्री द्वारा होता है। वहां की बेगमों के पतियों का कुछ महत्व नहीं। वर्तमान बेगम साहिबा की माता भी बेगम थीं और दादी भी बेगम। बेगम साहिबा की आयु इस समय ६७ वर्ष की है। उनका विवाह १६ वर्ष की अवस्था में हुआ था। और उन्होंने राज्य भार संभाला था। भूपाल की शासन-प्रणाली को बहुत अच्छा बताया जाता है। क्योंकि वहाँ की शासिका राजनीति निपुणा और राजकाज में प्रवीणा हैं। इन को १९ तोपों की सलामी दी जाती है। बेगम साहिबा उदारता और दानशीलता के लिए जगत् विख्यात हैं। अब से १४ वर्ष पूर्व जब आप विलायत भ्रमणार्थ गई थीं तो वहां के लोगों की समय-शीलता देख कर आप दंग रह गयीं! वहां से वापिस अपने राज्य में आते ही उन्होंने सोने और चांदी की हज़ारों घड़ियां खरीद कर अपने समस्त राजकर्मचारियों और प्रमुख कार्य्यकर्त्ताओं में वितरण कर दी। ताकि वे समय-शीलता का पूर्ण रूप से ध्यान रक्खें।

बेगम साहिबा किसी राजकीय कार्य्य के सम्बन्ध में लन्ड़न के भारतीय दफ्तर से परामर्श लेने गयीं हैं। अपने साथ वह अपने एक मात्र पुत्र नवाबज़ादा मुहम्मद हामिदुल्लाखां और दो पौत्रों को भी ले गई हैं। वर्तमान परिस्थितियों के अनुकूल उन की रियासत का उत्तराधिकारी उन का बड़ा पोता है किन्तु बेगम साहिबा की अभिलाषा है कि यह पद उनके पुत्र को ही प्राप्त हो।

विधवा-विवाह।

विधवा विवाह, सहायक सभा लाहौर ने सितम्बर १९२५ में भारत के भिन्न २ प्रांतों में २८१ विधवाओं के विवाह कराये। पहली जनवरी से सितम्बर के अन्त तक इस वर्ष में कुल १८७० ऐसे विवाह हुए हैं। जिनमें ब्राह्मण विधवाएं ३३३, खत्री ४३२, अरोड़ा ३६१, अग्रवाल १३६, कायस्थ ५३, राजपूत १३२, सिक्ख १३४ और फुटकर २८६ हैं।

उक्त संख्या में से १४३६ तो अकेले पञ्जाब और उत्तर पश्चिमीय सीमान्त देश की हैं; ३५ देहली, ३६ सिन्ध, २४८ संयुक्त प्रान्त, ३६ बंगाल, १९ मदरास, ८ बम्बई, ५ मध्य-प्रदेश, ९ राजपूताना, ५ हैदराबाद, (दक्षिण) और ३० आसाम की हैं।

मिश्रित विवाह का दुष्परिणाम

शाम के राजा ने अपनी रियासत के उन विद्यार्थियों को जो, कि सम्प्रति इङ्गलैण्ड में शिक्षा पारहे हैं, यह चेतावनी लिखकर भेजी है कि "भूल कर भी किसी युरोपियन कन्या से विवाह न करो! ऐसे विवाहों के अगणित उदाहरण हमारे सामने मौजूद हैं, किन्तु हमने किसी को भी चिर समय तक सुख सम्पन्न नहीं पाया। परिणाम-स्वरूप ऐसे दम्पत्ति के प्रेमश्रृंखला हमने बहुत कच्ची पाई है। हमारे देश और युरोप के देशों में, बहुत अन्तर है, अतः एक यूरोपियन लड़की जो कि विवाहोपरान्त यहां लाई जाती है, स्वभावतः अपनी जन्म-भूमि के पुनः दर्शन के

लियें प्रायः लालायित रहती है। स्वदेशी महिलाओं को कभी अवहेलना की दृष्टि से न देखो, और याद रखो कि उस व्यक्ति को कोई भी, चाहे वह युरोप का हो या शाम का, आदर की दृष्टि से नहीं देखता जो विभिन्न जाति से वैवाहिक नाता जोड़ता है। प्रत्येक जाति में अच्छे और बुरे प्रकार के लोग पाये जाते हैं और शामियों में भी वही गुण विद्यमान है जो कि किसी उच्च से उच्च जाती में हो!" —

उक्त बात भारत पर भी अक्षरशः चरितार्थ होती है। कितने ऐसे परिवार हैं जो कि इस प्रकार के विवाह से सन्तुष्ट हों। यौवन के मद में चूर होकर भारतीय युवक विलायत से शुक्ल-वर्णा देवियां तो ले आते हैं, किन्तु घर आते ही सारी आकांक्षाओं पर पानी फिर जाता है। समाज में उनकी दाल तो जैसे तैसे गल भी जाती हो, पर उनकी सन्तान की प्रायः वही दुर्दशा होती है जो कि वर्णशंकरों की। यह बात कड़वी भले ही हो पर है सच्ची। इसका दोष हम समाज के मत्थे मढ़ने को तय्यार नहीं क्योंकि पश्चिम और पूर्व में इस प्रकार की एकता का युग कभी आवेगा भी या नहीं यह ईश्वर के अतिरिक्त कोई नहीं बता सकता!

☞ BE REST ASSURED—
THAT OUR
WALL CLOCK
'TIC-TAK' (Regd.)
GIVE YOU PERFECT TIME.
OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.
PRICE Rs.
THREE only.
Order now if you have not already orderd.

Peter Wathc Co.,
Post Box No. 27,
MADRAS.

पं० अनन्तराम शर्मा के प्रबंध से सद्धर्म्म प्रचारक प्रेस दर्यागंज देहली में छपाया।

और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES.

This is the very newest style wristlet watch These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for

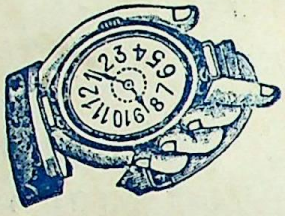

3 years. Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of much higher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Bracelet for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra

N.B—*Purchaser of 3 Watches at a time will get one German-made 4-in. dial alarm Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses themost fragrant smell of the different kinds of fine flowers. No it ce-minutely the delightful ke freshlyplucked flowr ers-smell every now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed. ask for,

LILY OF THE VALLEY

1 oz. Bottle Re.1-8-0
1 Dram Bottle 0-12-0
Dram Bottle 0-8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0
„ „ Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,
P. B. 27 MADRAS

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियां, जाकटें और कुर्ते बहुत ही खूबसूरत फैंसी बनावट के मिलते हैं एकबार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महंगे जचें तो फ़ौरन वापिस भेजकर क़ीमत वापिस मंगा लीजिये क़ीमत साड़ी बेल रेशम की किनारी दार ७) ८) ९) १०) १२) जरी किनारी १५)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं; और बालों का उखड़ २ कर गिरना बन्द होता है की० ॥)

बच्चों के गले के ताबिज—ये ताबिज दांत सुगमता से निकलने के लिये प्रसिद्ध हैं की० ॥

बालसुधा—गोद के बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शीशी ॥।)

महा सुगंधित तैल—माथे को सुगंधित और ठंडा करने वाला तैल कीमत १)

ब्रासलेट वाच।

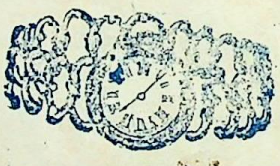

न० ३२ यह बिलकुल ही नई फैशन का चीज है इसके बीच में एक छोटी सी जेबी घड़ी है और इधर उधर चूड़ियां ऐसी तर्ज़ से बनाई गई हैं कि चाहे जैसे बड़े हाथ में पहिना लीजिये ठीक नाप की हो जावेगी हिन्दुस्तानी बड़े घरों की स्त्रियां भी इसे बहुत पसन्द करती हैं क्योंकि घड़ी को घड़ी और गहने का गहना है, पातल पर सोने की गिल्ट वालों का दाम ८) रु० जिसके चारों तरफ नग जड़े हैं दाम १०) रु० ॥

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मुफ्त।

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा

वर्ष ६] कार्तिक १९८२— नवम्बर १९२५ Regd. No. L. 1240. [खण्ड ६, संख्या ७

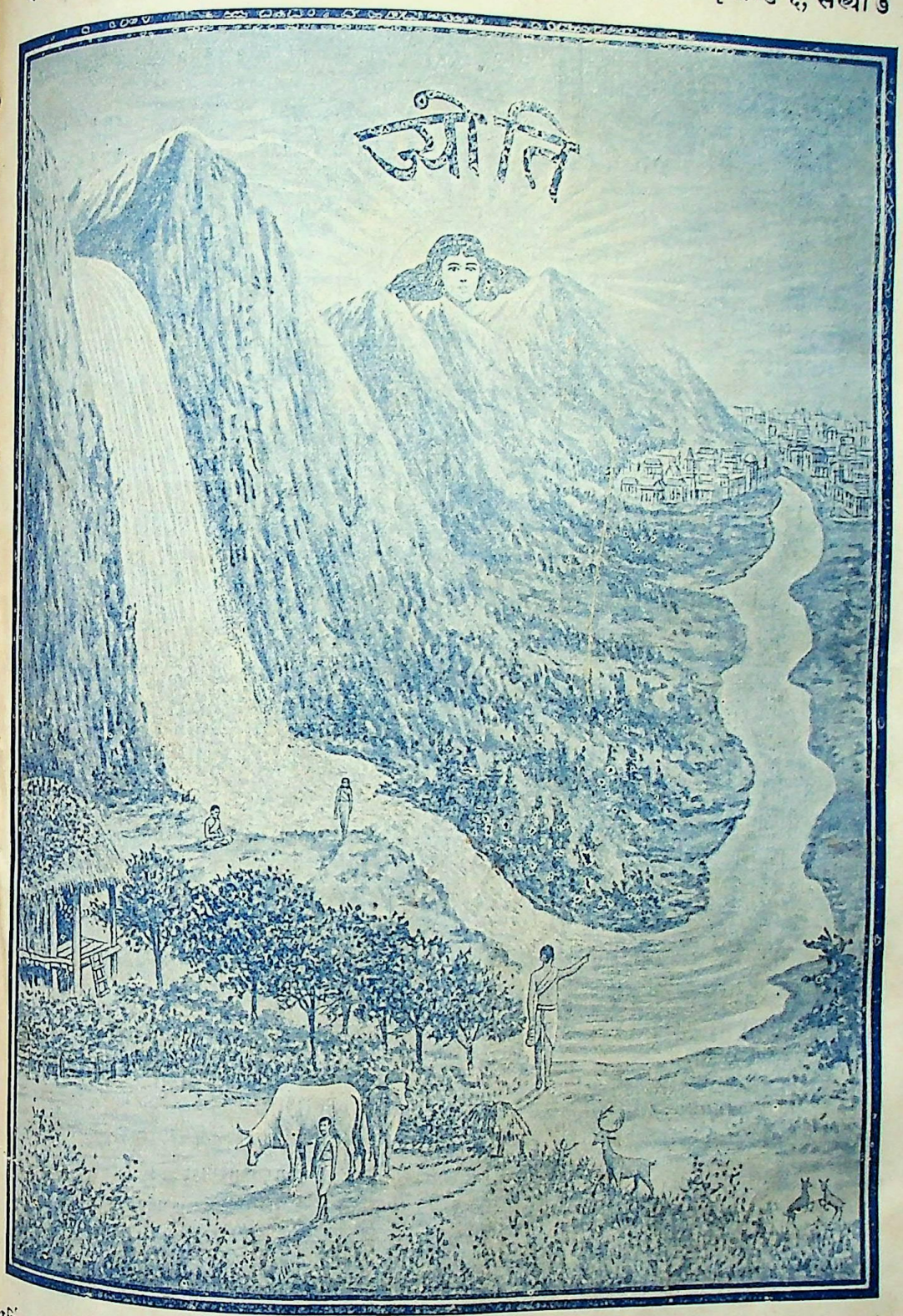

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)

सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए०

स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

विषय सूची।

	विषय	पृष्ठ
१	मृगतृष्णिका,—ले० हरिहर ओझा	२६३
२	स्वामी दयानन्द और शिक्षा में शरीरिक दण्ड का स्थान, ले० श्री युत हरिशरण विद्यालङ्कार	२६४
३	गंवार—ले० रत्नाम्बर दत्त चन्दोला रत्न मेरठ	३०१
४	सुखद मिलन–ले० श्रीयुत शंखाधार	३०४
५	वहदिन [गद्य काव्य] ले० श्रीयुत जगदीशचन्द्र शास्त्री	३०६
६	प्रेम—ले० श्रीयुत भगवानदास गुप्त बरहन	३०६
७	मोहनी के आंसू,—ले० श्रीयुत सन्तलाल दधिमथ वैद्यरत्न	३११
८	निशीथ माया–ले० श्रीमती धर्मपत्नी प० सुमेरीलाल बी० ए० अमरावती (बरार)	३१४
९	विरह वेदना,—ले० श्रीयुत पं० राज-नारायण चतुर्वेदी आज़ाद	३१७
१०	कुसुमोद्यान	३२०
११	वनिताविनोद	३२०
	सूचीकार यन्त्र—ले० निरञ्जननाथ	३२७
	स्त्रियों का मुख्य धर्म ले० हेमराज वैद्य एम० ए० एम० लाहोर	३२८
	सतीत्व,–ले० श्रीयुत रामचन्द्रसिंह	३३२
१२	महर्षि दयानन्द जन्म भूमि शताब्दी	३३३
१३	विषाद प्रवाह	३३७
१४	कन्या गुरुकुल समाचार	३४५

ग्राहकों के लिये:--

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—

१ वर्ष के लिये ४॥) है।

६ मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर **ग्राहक नं०** न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, **'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली** के पते पर आने चाहिये

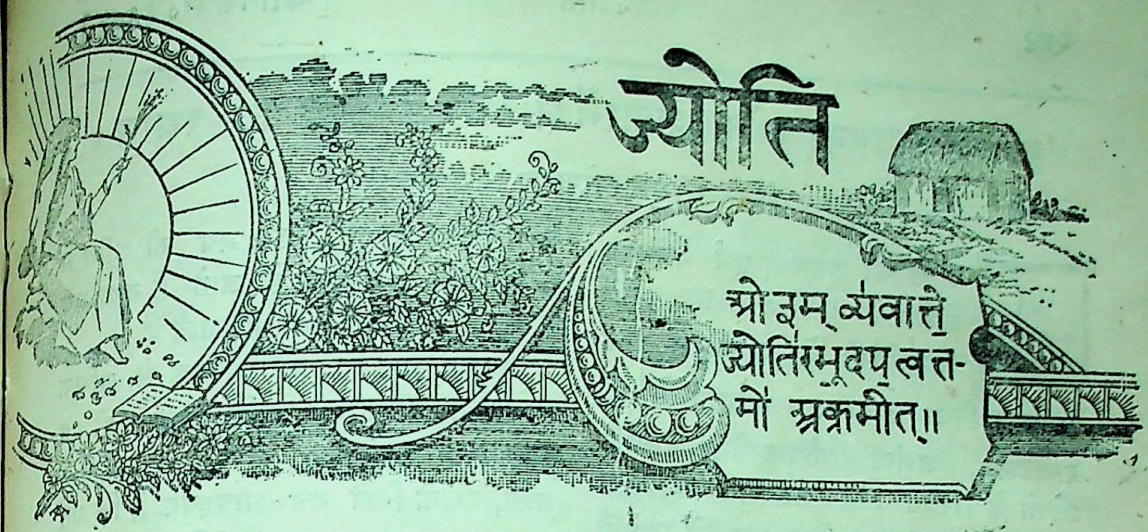

वर्ष ६ | कार्तिक १९८२—नवम्बर १९२५ ई० | संख्या ७

मृग तृष्णिका

(ल—हरिहर ओझा)

कवन यत्न करूं किस रूप से,
कवन योग करूं किस भूप से ।
कवन देव प्रसन्न करूं हरे,
कवन भूसुर आद्रितऽपूप से ॥
दिवस रात्रि विलोकत ही गयो,
चपल चिन्तन चूर हृदय कियो ।
यतन साधन आगम आदि जो,
विपुल रूप सुसाधन को कियो ॥
गति भयानक नर्तक की हुई,
सतत नूतन रूप लखा किये ।
पर सदा वह अन्तिम दृश्य था,
कुशलता परिपक्व कदा किये ॥
भवन भूपर था जब से किया,
ग्रहण चेतन शक्ति हुई जभी ।
अहह हा, तब से मृगतृष्णिका,
चपल चूर्णित हा न हुई कभी ॥

१ पूआ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

स्वामी दयानन्द और शिक्षामें शारीरिक दण्ड का स्थान।

ले०--श्रीयुत हरिशरण विद्यालंकार

आज से कई शताब्दि पूर्व पाश्चात्य संसार में Jesuit schools में विद्यार्थियों को शारीरिक दन्ड सर्वथा न दिया जाता था। वर्तमान में भी स्कौटलैंड, जर्मनी, औक्सफोर्ड इत्यादि प्रदेशों के Head Masters तथा Principals निरन्तर इस बात पर बल देते रहते हैं कि ये दण्ड सीमित कर दिये जायं। नार्वे इत्यादि प्रदेशों में भी अब इस दण्ड को दूर करने का प्रयत्न किया जा रहा है Wales में कई Schools ऐसे हैं जिनमें यह दण्ड वर्तमान में भी सर्वथा नहीं दिया जाता। वस्तुतः यह दण्ड दिया भी न जाना चाहिये इसका परिणाम यह होता है कि बजाय इसके कि विद्यार्थियों की शक्तियां विकसित हों उनके दिमाग भय के कारण अधिक सङ्कुचित हो जाते हैं। शिक्षा का उद्देश्य E-out, duco, to lead, to lead out the hidden powers. अर्थात् बालकों की अन्तर्गत शक्तियों का विकास करना है। इसके लिये आवश्यक है कि विद्यार्थियों को स्वतन्त्रता दी जाय, उनमें भय का अंश बिल्कुल न हो; उनके लिये उनके गुरू सूपायन हों, सुदूरापनयन नहीं, ये न हो कि जिस प्रकार श्येन से पक्षी तथा वृकसे अजा तथा अवि भागती हैं उसी प्रकार गुरू से शिष्य भागें। विपरीतावस्था में शक्तियां का विकास तो दूर रहा; भय की अग्नि में शक्तियों के बीज दग्ध हो जाते हैं तथा भय के कारण दिमाग Dull हो जाते हैं।

एवम् बालकों को अधिक से अधिक स्वतन्त्रता दी जाना चाहिये। हां, कहीं यह स्वतन्त्रता अपने साथ दुष्परिणाम भी न ले आये, इसके लिये यह आवश्यक है कि यह स्वतन्त्रता सम्यक्तया निरीक्षित हो; अधिष्ठाता लोग प्रतिक्षण उनके बीच में रहें; उन की चेष्टाओं का निरीक्षण करते रहें। ऐसी स्थिति में प्रथम तो किसी प्रकार की कुचेष्टा का सम्भव ही न होगा तथा यदि किन्हीं संस्कारों के कारण किसी बालक में कुचेष्टा की प्रवृत्ति को अधिष्ठाता देखें तो तत्काल दन्ड[2] देने की बजाय प्रेम से उन्हें समझा दें श्रीस्वामी दयानन्दजी ने तृतीय समुल्लास में जो यह शब्द लिखे हैं कि "जब विद्यार्थी भ्रमण करने को जावें, तब उनके साथ अध्यापक रहें" इसका भी यही अभिप्राय है की अधिष्ठाता लोग विद्यार्थियों को ऐसा अवसर ही न दें जिसमें कि वे किसी प्रकार की कुचेष्टा कर सकें। पाश्चात्य विद्वानों[3] का भी यही सिद्धान्त है कि "Well supervised freedom is what children want. It is only in freedom that we see what they are, and it is only in

१. We have no Cosporal punishment in this school. It is not necessary and other methods are for better. Moral Instruction and Training in School. (by M. E. Sadler P.4–22.)

२, एक शिक्षक इस विषय में अपनी निम्न सम्मति प्रकट करते हैं:-I have no Corporal punishment. I find moral suasion gives better results. (Moral Instruction in Schools. P. 4 22)

३. Moral Instruction in Schools p. 419

freedom that they can become strong"

स्वतन्त्रता से ही शिक्षा का जो वास्तविक उद्देश्य है वह प्राप्त किया जा सकता है, अन्यथा नहीं। सुनिरीक्षित स्वतन्त्रता की सत्ता में असद्गुणों का शिष्य में सम्भव ही नहीं।

२. हमारे प्राचीन शास्त्रों में शिक्षक को शिष्य का पिता कहा गया है। शिक्षक के अन्दर यदि वस्तुतः ही पितृतुल्य प्रेम हो तो यह सम्भव ही नहीं कि वह शारीरिक दण्ड के पक्ष में हो। वस्तुतः "जो शिक्षक सज़ा देता है उसे शिक्षक नहीं कह सकते वह तो कैदियों का दारोगा है।" [हि० न० १७ अगस्त १९२४]। कहने का अभिप्राय यह नहीं कि पिता पुत्र को कभी शारीरिक दण्ड देते ही नहीं। देते हैं; परन्तु तभी जब उनके अन्दर क्रोध आ जाता है, जब कि क्रोध के कारण वे अपने आप पर प्रबल नहीं होते। अस्वास्थ्य में वे लड़के को मार बैठते हैं; पीछे से उसके लिये उन्हें दुःख होता है। अर्थात् वस्तुतः पिता पुत्र को शारीरिक दण्ड नहीं देसकता उसी प्रकार शिक्षक को भी चाहिये कि शारीरिक दण्ड बिल्कुल न दे।

शिक्षक आत्मज्ञानी होने चाहिएं जिन्हें कि क्रोध आये ही नहीं। श्रीस्वामी दयानन्द जी ने 'आत्मज्ञानं' यह शिक्षक का प्रथम लक्षण दिया है, जब क्रोध न हो तब शारीरिक दण्ड भी नहीं हो सकता। चूंकि क्रोध के आवेग में ही उसका बाह्यरूप हाथ आदि द्वारा चपेट आदि के रूप में प्रगट होता है। क्रुद्ध गुरू मुख से गाली दे बैठता है, और आंखों से दीन शिष्य पर चिनगारियों की वर्षा करता है प्राचीन शास्त्रकारों ने ऐसेगुरू को दण्डनीय बतलाया है,

"अन्येन घ्नन् राज्ञा शास्यः"

(गौतम धर्मसूत्र २-५०)

"हस्तादिना क्रोधवशेन ताडयन् राज्ञा शास्य आचार्यः" (सूत्र भाष्य)

अर्थात् गौतम धर्म सूत्रकार लिखते हैं कि यदि क्रोधवश अध्यापक विद्यार्थी को हाथ आदि से मारे तो राजा को चाहिये कि ऐसे गुरु का शासन करे। श्री स्वामी दयानन्द जी महाराज ने भी एकादश समुल्लास में निम्न शब्दों में इसी भाव को प्रकट किया है:—"परन्तु जो गुरू ·· क्रोधी ····· हो तो उसको सर्वथा छोड़ देना, शिक्षा करनी, सहज शिक्षा न माने तो ·· ·· प्राण हरण तक भी करने में कुछ दोष नहीं" (पृ० ३४६)। शिष्य यदि गुरू में क्रोध को देखेगा तो वह गुरू से 'क्रोध नहीं करना चाहिये' इस शिक्षा का ग्रहण कैसे कर सकता है। गुरु सौम्यता की मूर्ति होना चाहिये, उसको देख कर ही शिष्य के अन्दर शान्ति का भाव प्रवृद्ध होसके। क्रोध से मूढता आजाती है ऐसी अवस्था में व्यक्ति कर्तव्याकर्तव्य को नहीं विचार सकता तथा एतद्दशापन्न गुरू शिष्य को अनुचित दण्ड दे बैठता है।

३ प्राचीन धर्मशास्त्रों का सिद्धान्त यह है कि शिष्यों का शासन शारीरिक दण्ड से सर्वथा शून्य होना चाहिये। यथा सम्भव दण्ड न देना चाहिये। गौतम धर्म सूत्र में द्वतीय अध्याय का ४८ सूत्र निम्नप्रकार से है।

'शिष्यशिष्टिरवधेन' २-४८

"अताड्यता गुरुणा भर्त्सनादिभिः शिष्यः शास्यः"

(सूत्र भाष्य)

अर्थात्—गुरू को चाहिये कि बिना किसी प्रकार के ताड़न के भर्त्सनादि से

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

ही शिष्य का नियन्त्रण करे। वस्तुतः यदि उन्हें विद्यार्थियों को नियन्त्रण में रखने का ढंग आता हो तो उन्हें शारीरिक दंड देना ही नहीं पडता। wales के अध्यापक इसी भाव के द्योतक शब्दों द्वारा अपनी सम्मति निम्न प्रकार से देते हैं:—"It is quite unnecessary to have corporal punishment for welsh children, if you know how to given them" शारीरिक दंड की आवश्यकता उन्हीं अध्यापकों को अनुभव होती है जो कि सुयोग्य नहीं होते तथा जो शासन के ढंग से अनभिज्ञ होते हैं। ऐसे अध्यापकों की सम्मतियां प्रायः इस प्रकार की होती हैं कि बिना cane के काम नहीं चल सकता। परन्तु वर्तमान समय में शिक्षा-विज्ञ इस सिद्धान्त का परित्याग कर चुके हैं। झुकाव इसी ओर है कि यह दंड सर्वथा हटादिया जाय। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये भिन्न २ विद्यालयों में भिन्न २ नियम बनाये गये हैं। कहीं इस प्रकार के दंड का अधिकार सर्वथा मुख्याध्यापक को सौंपा गया है, अन्य अध्यापक इस दंड को नहीं देसकते। अन्यत्रइस दंण का record में रखा जाने का नियम बनाया गया है। कई स्थानों में प्राथमिक विभाग के शिक्षणालयों में इस को बन्द कर दिया गया है। कन्यापाठशालाओं में तो यह लगभग उड़ ही चुका है। कई अध्यापक कभी मजबूरन ये दन्ड देभी बैठते हैं, तो वह इस बात को मुक्तकंठ से स्वीकार करते हैं कि यह दंड उन्हें घृणास्पद तथा निन्दनीय मालूम होता है। कहने का सारांश यह कि वर्तमान में भी आदर्श वही है जिसका कि महर्षि गौतम ने अपने धर्मसूत्र में "शिष्यांशिष्टिरवधेन" इन शब्दों द्वारा कई शताब्दि पूर्व प्रतिपादन किया है।

एवं हम इसी परिणाम पर पहुंचते हैं कि विद्यार्थियों को शारीरिक दंड न देना चाहिये।

अब, इस विषय पर कुछ अधिक विचार करने के लिये हम साधारणतया शिक्षा के समय को ३ भागों में बांट लेते हैं:—

१. प्राथमिक विभाग
२. मध्यम विभाग
३. उच्च विभाग

१. प्राथमिक विभाग

वर्तमान में प्राथमिक विभाग के विद्यार्थियों की अवस्था अधिक से अधिक शोचनीय है। उनमें शिक्षकवर्ग प्रायःथोड़ी शिक्षा पाये हुए लोग होते हैं, जो कि कई अवसरों पर क्रोध के आवेश में आजाते हैं तथा उस समय विद्यार्थियों को पशुओं की तरह ठोक पीट देते हैं। विचारे दीन बालक चुपचाप सहलेते हैं। परन्तु, इसी समय से उनके अन्दर वह बीज बोया जाता है जो कि आगे जाकर 'अध्यापकों के निरादर कर देने' के स्वभाव के रूप में परिणत हो उठता है। यह थोड़े पढ़े हुए शिक्षक दंड की मात्रा का भी निर्धारण नहीं कर सकते। कई वार तो उनके दिल कई लड़कों के विरुद्ध Biased (पक्षपात युक्त) हो जाते हैं। ऐसी अवस्था में तो उन दीन विद्यार्थियों के दुर्भाग्य की पराकाष्ठा ही होजाती है; उनकी शामत आ जाती है, तथा क्रूर शिक्षक पीट २ कर उनका कचूमर निकाल देता है।

यदि इस विभाग में अच्छे शिक्षित लोग रखे जांय तो अत्युत्तम है। कम शिक्षित लोग विद्यार्थियों को अच्छी प्रकार समझा

4. Moral Instruction in schools P. 422.

नहीं सकते। और जब विद्यार्थी न समझने के कारण पाठ स्मरण नहीं कर सकते; तथा पूछे जाने पर दीवारों तथा छत की ओर देखते हैं; तब शिक्षक की क्रोधाग्नि भड़क उठती है तथा उस सुसमिद्ध अग्नि में विद्यार्थी को सन्तप्त होना पड़ता है। वस्तुतः महात्मागान्धी जी के निम्न शब्द अक्षरशः सत्य हैं:—

'शिक्षक का तो धर्म है कि हंसा खिलाकर प्रेम से बालकों को आगे बढ़ाना। यह वहम है कि सज़ा के डर से बालक पढ़ते हैं यह तो प्रायः अब दूर ही हो गया है। दुनियां के हज़ारों शिक्षकों का यह अनुभव है कि धीरज से बालकों को अधिक शिक्षा दी जा सकती है। दंड शिक्षक के अज्ञान का सूचक है।" शिक्षक का काम है कि प्रत्येक विषय को दिलचस्प बना देना।' (नवजीवन १७ अगस्त १९२४)।

अब पाश्चात्य विद्वान् इस सिद्धांत को पूर्णतया अङ्गीकार कर चुके हैं कि प्राथमिक विभाग में उच्चशिक्षा-सम्पन्न शिक्षक ही नियत किये जाँय।

साथ ही ये शिक्षक उच्च विचारों से युक्त होने चाहियें। चूंकि ये छोटे २ बालक गीली मट्टी के ढेले के समान होते हैं; गुरु चाहें जैसी उसकी शकल बना डालें। चाहे उसमें उच्च से उच्च भावों का सञ्चार करके उसे अत्यन्त सुन्दर तथा मनोहर रूप देदें और चाहे बुरी २ आदतों को पैदा कर के उन्हें शरीरबद्ध कुरूपता का रूप देदें। भावी में जो आदात पैदा करनी अभीष्ट हैं, उनका बीज इसी अवस्था में बोया जाना होता है। क्या कहीं बीज निकम्मा माली भी अच्छी प्रकार बो सकता है? पौदा अच्छा प्रवृद्ध हो जाने पर तो यथा कथञ्चित् साधारण माली द्वारा भी रक्षा किया जा सकता है; परन्तु बीज सिवाय निपुण माली के अच्छे प्रकार नहीं बोया जा सकता है। इस लिये अत्यन्त आवश्यक है कि इस विभाग में आत्मज्ञानी, शान्त प्रकृति के गुरु कार्य्यकर्त्ता हों। न्यून से न्यून, उच्च-शिक्षा-सम्पन्न तथा अक्रोधी गुरु का होना अत्यन्त आवश्यक है। यह बालकपन की अवस्था अत्यन्त चञ्चलता की होती है। इसमें बालक छोटी २ ऐसी बातें करते हैं जो न पुण्य होती हैं न पाप; परन्तु क्रोधी स्वभाव वाला अल्प शिक्षित गुरु उनकी चंचलता को अपने प्रेम-युक्त उपदेश से अच्छी दिशा की ओर न झुका सकने के कारण उनपर प्रतिक्षण क्रुद्ध होता रहता है। वह विचारे अपने किसी अपराध को न समझने के कारण हक्के बक्के हुए २ चारों ओर तथा ऊपर नीचे देखते हैं। यह बात गुरु की क्रोधाग्नि को और भी भड़का देती है और शीघ्र ही वह आग, "लात, घूंसा, मुक्का तथा चपेटों के शोले उगलने लगती है। इस मार से बचने के लिये बच्चों में भय तथा झूठ बोलना इत्यादि बुरी २ आदतें जड़ पकड़ने लगती हैं; तथा समयान्तर में परिपक्व हो उठती हैं।

एवं, प्राथमिक विभाग में ऐसे गुरु होने चाहियें [क] जो बच्चों को पाठ अच्छी प्रकार समझा सकें, वे शिक्षा करने के ढङ्ग [Method of Teaching] से भली प्रकार परिचित हों [ख] वे क्रोधी न हों, सौम्य हों। उनको देखकर छोटे २ बच्चों के दिलों में भय की विद्युत का सञ्चार न हो जाय। वे अपने प्रेममय उपदेश तथा सहायता से विद्यार्थियों की चञ्चलता को अच्छी Direction दे सकें। उनमें निर्भयता का बीज बोयें, उन्हें दबायें नहीं, चूंकि इसी की पूर्तिक्रिया रूप दुराग्रह तथा अविनय का

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

स्वभाव, समयान्तर में, शिष्य में उत्पन्न हो जाता है।

२ मध्यम विभाग।

इसके आगे हम शिक्षा की अवस्था के द्वितीय भाग पर पहुंचते हैं। इस समय विद्यार्थी कुछ बड़ा हो जाता है, वह बातों को कुछ २ समझने लगता है। इस समय वह उस छोटे बच्चे के समान नहीं रहता, जिसे कि गुरु चाहें दण्डे के ज़ोर से जिधर मोड़दे, छोटा बच्चा बिचारा मार को चुप चाप सह लेता है। परन्तु यह अवस्था कुछ और ही होती है। यदि विद्यार्थी को अधिक दण्ड दिया जाय, तो उसमें भी गुरु से बदला लेने का भाव उत्पन्न होता है। वह जिस किसी प्रकार भरसक कोशिश करता है कि मैं इस 'दुष्ट अध्यापक' को तङ्ग कर दूँ। तथा वह विविध उपायों का अवलम्बन अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिये करता है। इस लिये चाहिये यह कि गुरु उसमें छोटी अवस्था से ही विनय की आदत डाले। तथा इस समय विद्यार्थी यदि कभी कोई अपराध करे भी तो उसे प्रेम से समझादे कि 'इसमें उस की अपनी हानि हैं,' उससे कभी २ थोड़ा बहुत नाराज़ हो जाय; उसे प्रायश्चित लेने के लिये कहे। शारीरिक दण्ड सर्वथा हेय है।

इस समय विद्यार्थियों के निरीक्षण की पूर्व से भी अधिक आवश्यकता है। इससमय की विचित्र अवस्था को समझने के लिये और भी अधिक प्रयत्न करना होता है ‡उनमें हठात् किसी आज्ञा का पालन करवाना भी कभी २ हानिकारक परिणामों को पैदा कर देता है। चाहिये यह कि विद्यार्थियों में ही किसी प्रकार कर्तव्या कर्तव्य का विचार दृढ़ मूल होजाय। उनकी ही पञ्चायत विद्यार्थियों को दण्डदें। सब विद्यार्थी समझें कि अमुक विद्यार्थी ने यह बात अनुचित की है, उसे यह न करनी चाहिये थी, इसके लिये उसे समुचित प्रायश्चित को अङ्गीकार करना चाहिये। विद्यार्थियों की पञ्चायत ही उसे Exclusion, remaining in solitude का कभी २ दण्ड दें। इस दण्ड का परिणाम इस विभाग के विद्यार्थियों पर बड़ा शुभ होता है। विद्यार्थी के हृदय पर यह प्रभावशाली होता है; वह इसे भूलता नहीं। इसके विपरीत शारीरिक दंड को तत्काल अथवा घंटे दो घंटे बाद विद्यार्थी भूल जाता है। एक अध्यापक लिखते हैं कि "[3] The pupils on the contrary, often seem to prefer corporal punishment as a ready and quick way of expiating an offence." अर्थात् विद्यार्थी तो प्रायः शारीरिक दंड को अन्य दंडों से अधिक पसन्द करता है चूंकि इससे झगड़ा जल्दी निपट जाता है। वस्तुतः, शारीरिक दंड को कठिन दंड नहीं कहा जा सकता; अपितु इसे Brutal (पाशविक) नाम दिया जाना

‡इस भाव को M. E. Sadler अपनी पुस्तक Moral Instruction in schools के पृष्ठ ४ पर निम्न शब्दों में देते हैं:—"If such instruction wears the mien of coercive authourity it may easily do more harm than good.

२ इस भाव को "Moral Instruction in Schools" नामक पुस्तक की भूमिका में निम्न शब्दों में दर्शाया गया है, "Moral training is secured by the responsibilities of self-government."(xl)

3. Moral Instruction 2 d V.P. 94.

चाहिये। प्रायश्चित इत्यादि को कठिनतापूर्ण producing a lasting healthy effect कह सकते हैं। श्री स्वामी दयानन्द जी भी इसी दंड के पक्ष में हैं, शारीरिक दंड के पक्ष में नहीं। उन्हों ने यत्र तत्र यही लिखा है कि "यथा पराध कठिन दण्ड दियाजाय" दण्ड ऐसा न हो जिसे विद्यार्थी शीघ्र ही भुल जाय,—जिस का कि उस पर शुभ परिणाम न हो। श्री महात्मा गांधी जी भी इसी बिचार को ८ अक्टूबर २१ के नवजीवन में इन शब्दों में लिखते हैं:—"पर सामान्य नियम तो यह है कि शिक्षक कभी भी विद्यार्थी को शारीरिक दंड न दे। न्याय युक्त दण्ड वही कहा जासकता है जिसे विद्यार्थी स्वयं स्वीकार करले···क्रोध में तो कभी दंड न देना चाहिये। ··· मारने का भाव दिखाना हर प्रकार से दूषित है।" कहने का अभिप्राय यह कि प्रायश्चित्त ही न्याययुक्त दंड है, शारीरिक दंड नहीं।

३ उच्च विभाग

इसके बाद शिक्षा के समय का उच्च विभाग है। इस समय तो विद्यार्थियों में इतनी योग्यता हो जाती है कि वे पूर्णतया अपना प्रबन्ध कर सकें। उन में अपने उत्तरदायित्व को समझना जितना अधिक होगा उतना ही परिणाम अच्छा होगा। 'उत्तरदायित्व उनपर हो' इसका यह अभिप्राय नहीं कि उनको गुरुओं का प्रेममय आश्रय ही नहो गुरु उन से उदासीन तथा तटस्थ रहें। बरन इसके बिपरीत गुरु उन्हें स्वप्रबन्ध का शिक्षण करें तथा निरीक्षणादि द्वारा सहायक हों। प्रतिक्षण अपना उच्चआदर्श उनके सामने रख। गुरुओं के जीवन तपस्वी हों जिस से विद्यार्थी भी तपस्वी जीवन व्यतीत करें।

यह अवस्था तर्क-प्रधान होजाती है! इस अवस्था में श्रद्धा की कमी होती है। इस दृष्टि से यह अवस्था अत्यन्त नाजुक है। इस समय गुरुओं का प्रेममय आदर्श जीवन ही उस श्रद्धा की कमी को दूर कर सकता है। यदि यह है, तो विद्यार्थियों में उत्साह तथा उद्यता का प्रादुर्भाव होता है। विपरीतावस्था में तर्क कुल्हाड़े का काम करता हुवा धीमे २ सत्स्वभावों के पौदों का समूलोन्मूलन करने में कसर उठा नहीं रखता। इस समय गुरु को अपने क्रियात्मक उपदेश तथा आदर्श से नितान्त प्रयत्न करना चाहिये कि विद्यार्थियों के हृदयों में कुतर्क रुपी राक्षस का राज्य न होजाय, अपितु श्रद्धा का ही प्रेममय शासन प्रबल हो। गुरुस्वयं प्रातः उठेंगे तो शिष्य में भी ब्राह्ममुहूर्त के जागरण के गुणों में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा वह प्रातः जागरण अपना कर्तव्य समझेगा। परन्तु इसके विपरीत यदि गुरु का जीवन उच्च आदर्श विद्यार्थी के सामने न रखता हो और गुरु किसी प्रकार के भय से विद्यार्थियों को प्रातः जगाने के लिए बाधित करे तो विद्यार्थी में प्रातःजागरण का स्वभाव कभी उत्पन्न नहीं हो सकता। मौका लगते ही विद्यार्थी ८ बजे उठेगा तथा पिछले दिनों की कमी कसर निकालने की कोशिश करेगा। यह अभीष्ट है यदि नहीं तो भय और दबाव से नियमों का पालन न करवा कर यह आवश्यक है कि गुरु अपने प्रेममय आदर्श जीवन को विद्यार्थियों के सामने रखते हुवे उन्हें प्रातः जागरण के लिये प्रेरणा करें। इसका परिणाम बड़ा शुभ होगा; चिरस्थायी होगा; भावी जीवन में भी विद्यार्थी प्रातः जागरण के गुणों को समझते हुवे प्रातः उठा करेंगे। आदर्श जीवन सामने न होतो वेद का उपदेश "उद्यन्सूर्य ईवां सुप्तानां द्विषतां वर्च आददे" कोई शुभ परिणाम पैदा नहीं कर सकता। परन्तु तर्क

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

रूपी राक्षस के राज्य में वेद विचारा ही हास्यास्पद होजाता है। एक अध्यापक लिखते हैं कि "Education founded upon words alone is apt to generate euphuism and other forms of intellectual snobbery." आदर्श गुरु के आदर्श जीवन की अत्यंत आवश्यकता है। इस समय शारीरिक दण्ड तो किसी प्रकार के शुभ परिणाम को पैदा ही नहीं कर सकता और नहीं कोई इसके पक्ष में होगा।

इस समय विद्यार्थी, अध्यक्ष के निरीक्षण में अपना प्रबन्ध स्वयं करें। इस से विद्यार्थियों के जीवन उच्च तथा भावी संग्राम मय जीवन के लिए सन्नद्ध हो सकेंगे। एवं शारीरिक दण्ड सर्वथा हेय है इस का शुभ परिणाम असम्भव है। प्रयत्न करके सब जातीय विद्यालयों से इसका बहिष्कार करना चाहिए

अन्त में दो बातें लिखकर हम अपने विषय को समाप्त करते हैं। प्रथम बात यह कि:—

प्रथम बात।

आदर्श आदर्श ही होता है, उस तक पहुंचना कठिन हो जाता है। यद्यपि आदर्श यही है कि शारीरिक दण्ड सर्वथा न दिया जाये; तथापि कार्य्य में इसे पूर्ण रूप से लाना कठिन हो जाता है। अवसर आते हैं जबकि यह असम्भव प्रतीत होता है कि बिना दण्ड के कार्य्य हो सके। M. E. Sadler लिखते हैं कि "The question is plainly one of choice among unpleasent medicines. The hope to control and educate a large number of boys from childhood to youth without any form of punishment is obviously futile. There are bound to be faults of varying degrees of gravity. These must be corrected by the aid of penalties of some kind." अर्थात् कई समयों पर दण्ड अनिवार्य है धर्म सूत्रकार भी ऐसे समयों के लिए कुछ दण्ड की स्वीकृत दे देते हैं। महर्षि गौतम लिखते हैं कि "अशक्तौ रज्जुवेणु, विदलाभ्यां तनुभ्याम्" २।४६।

'यदि भर्त्सनादिभिः शासितु मशक्य स्ततो रज्ज्वा तन्वा, तनुनावेणु विदलेनवेति। ताभ्यां दुर्बलाभ्यां ताडयित्वापि शासनीयः।"

(सूत्रभाष्य)

अर्थात् यदि कभी भर्त्सनादि से कार्य न चले तो कमज़ोर सी छड़ी वा रस्सी से भी ताड़न करके शिक्षण करे।

महात्मा गांधी जी भी आदर्श के प्रतिपादन के साथ २ इन शब्दों से कि मैं ऐसे प्रसङ्ग की कल्पना कर सकता हूँ कि कोमल बालक जब कोई दोष करे, और उस दोषकी ख़बर उसे हो तो उसे दण्ड देने का धर्म प्राप्त होता हो" दण्ड की कुछ २ स्वीकृति देते प्रतीत होते हैं।

एक अन्य अध्यापक लिखते हैं कि— "All agree that at times corporal punishment is a regretable necessity." अर्थात् न चाहते हुए भी कई वार दंड देना पड़ ही जाता है।

इस प्रकार यदि अध्यापक कभी दंड दें भी तो न्यून से न्यून निम्न बातों का अवश्य ध्यान रक्खें:-

(क) दंड के समय विद्यार्थी को अपराध का ज्ञान हो जिस से कि भावी में विद्यार्थी उस अपराध को न करे।

1. Moral Instruction P. 143,

2. Moral Instruction p. 167.

३. हिन्दी नवजीवन ८ अक्तूबर २५।

4. Moral Instruction p. 332.

(ख) मर्म स्थलों पर दण्ड न दिया जाय। दण्ड के लिये पीठ तथा हथेली ही उपयुक्त स्थान हो सकते हैं।

(ग) क्रोध से दण्ड न दिया जाय विद्यार्थी के सुधारसे प्रेरित होकर ही दण्ड हो॥

द्वितीय बात।

दूसरी बात यह है कि वर्तमान समय में आदर्श गुरु का मिलना सुगम नहीं। आचार्य दयानन्द गुरू की खोज में थक गये थे जब कहीं गुरु विरजानन्द उन्हें मिले थे। परन्तु स्वामी विरजानन्द जी ने भी क्रुद्ध होकर दयानन्द जी को दण्ड दे ही दिया था उस समय जो उच्चता तथा महानता श्री दयानन्द जी ने दिखलाई वह अनुकरणीय है। उन्होंने कहा "कि जैसे कुम्हार मिट्टी को पीट पीटकर उसका एक सुडौल घड़ा बनाता है, ठीक उसी प्रकार श्री गुरुदेव हमारी कल्याण कामना के वशीभूत होकर ही हमें ताड़ना करते हैं"[1]। यदि कभी गुरु दण्ड दे भी बैठे तो भी विद्यार्थी को विनय का ही अङ्गीकार करना चाहिये तथा सदा यही मन में भावना रखनी चाहिये कि:—

'सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्तिगुरवो न विषोक्षितैः' [मनुस्मृति] दण्ड को सह लेना चाहिये। वस्तुतः तपस्वी जीवन होने पर स्वतः ही बहुत कुछ शिकायतें दूर हो जाती हैं।

गंवार

ले० श्रीरत्नाम्बरदत्त चन्दोला रत्न मेरठ

(१)

गँवार हूँ! गाँव का रहने वाला मैं हूँ। हल चलाना मेरा काम है। मुझे नवीनसभ्यता का क्या ज्ञान? नगरों के सुशिक्षित समुदाय-समुचित शिष्टाचार का मुझे क्या अनुभव? मोटर फिटनों की सवारी मुझे कहां नसीब? उड़ालो, मुझे अनड्वान, अन्नमभट्ट या निरक्षर भट्टाचार्य्य कह कर मेरी खूब हंसी उड़ालो! मुझे गँवार —ना समझ गंवार—उजड्ड गँवार भले ही कहलो मुझे सब शिरोधार्य्य है। खेद! खेद का तो मेरे मन में लवलेश भी न होगा। क्योंकि 'गंवार' तो मेरा "प्यार का नाम" है!!

(२)

हां भाई! माना कि तुम अपने नागरिक जीवन को ही सर्वोत्कृष्ट समझते हो। नगर की तुलना इन्द्र के अखाड़े से करते हो। अपने नागरिक-संसार को स्वर्ग से भी श्रेष्ठतम-स्वर्ग समझते हो। पर मुझे, मुझे इससे क्या मैं तो एक भोला भाला, पशु और निरा मूर्ख हूँ। असभ्य, झोंपड़ी में रहने वाला और अपनी टूटी फूटी खटिया पर लेटे हुवे महलों का स्वप्न देखने वाला निर्बुद्धि ग्रामीण हूं। न मुझे पद पाने की चाह, और न नाम कामने की कामना। मैं न कौंसिल की मेम्बरी का उम्मेदवार और न कांग्रेस का लकचरार! मुझे अपने दैनिक कारोबार से इतना अवकाश ही कहां? न मुझे हारमोनियम बजाने का शौक और न ग्रामोफोन सुनने की इच्छा!

सच तो यह है कि मुझे अपनी डफली पर ही अपना राग भला लगता है!!

१. श्रीमद्दयानन्द प्रकाश पृष्ठ ५८।

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

(३)

मेरी एक गँवारिन मुझ जैसी बे-पढ़ी-लिखी और मूर्खा स्त्री है। एक पन्द्रह वर्षीय गंवार लड़का और पांच वर्ष की एक गंवारिन ही लड़की है। अर्थात् मैं गंवार मेरा परिवार गंवार और मेरा सारा गाँव ही गँवारों का गांव है!

(४)

मेरी सहधर्मिणी नगर की कोमलाङ्गी रमणियों की भांति मुझे अपना हावभाव नहीं दिखाती। मुझे रिझाने के निमित्त नयन-बाणों की सहायता नहीं लेती। चटकीली भड़कीली एवम् बहुरंगी-साड़ी धारण कर, मुझे अपने कपड़ों ही में उलझा कर धसीटने के अभिप्राय से, सौम्यता-विशिष्ट-शिष्ट मधुर हास्य करती हुई मटक मटक कर झिझकती मसकती पग नहीं धरती! किन्तु इतने पर भी यह सब कुछ न जानते हुये भी (आश्चर्य का विषय है!) मैं उससे न जाने क्यों बड़ा प्रसन्न रहता हूं? मैं उसके निर्गुण-गुणों पर उसके भोले भाले प्रेम पर, उसके सुनिर्मल-आदर-पीयूष-मिश्रित-ग्रामीण-भाषा भाषित-सुमधुर वचनों पर ही लट्ट रहता हूँ!

(५)

कहते हैं स्त्रीजाति में हठ की मात्रा बहुत अधिक पाई जाती है। वे अपने मनोरथ को येनकेन प्रकारेण सिद्ध करना ही चाहती हैं। आज साड़ी ला दो, कल गुलाबी दुपट्टा मंगादो और परसों बहुमूल्य आभूषणों से शरीर लदा दो। बस यही रट लगाये रहती हैं!

पर, मैं तो कहूँगा यह सब झूठ है, निर्मूल है, स्त्रीजाति पर व्यर्थ का दोषारोपण करना—धब्बा लगाना है। कारण, मेरी गृह-लक्ष्मी, मेरी असभ्या गँवारिन तो जानती भी नहीं कि संसार में हठ भी कोई वस्तु, शौक भी कोई चीज, और फैशन भी कोई चिड़िया है? वह अपने गाढ़े-खद्दर के सादे फटे पुराने कपड़ों ही में संतुष्ट है। बस उस का सुख वास्तविक-सुख, परम सुख तो इसी में है कि मेरी सेवा करने में उसकी ओर से प्राण रहते कोई त्रुटि न होने पावे। उसके पावन प्रेम में और उसके समुज्वल स्नेह सौहार्द्र में सुई की नोक बराबर भी अन्तर न आने पावे!

(६)

मेरा बच्चा, गँवार ही का बच्चा जो ठहरा! जैसे माता-पिता वैसी ही सन्तान। इसमें ही क्या सन्देह?

मेरा लड़का आज पन्द्रह वर्ष की आयु का है। पर, आज दिन तक उसने शहर के बालकों की भांति, कभी भी मुझ से घड़ी, छड़ी, सूट, बूट, टाई, कौलर या पैरगाड़ी मंगाने की जिद्द नहीं की। मेरा माथा नहीं खाया मेरी दाढ़ी के बाल नहीं नोचे। हाट में चाट बाट में आजतक उसने कोई खोटी पाई तक भी न खोई होगी। यह सब क्यों? इसीलिये न कि वह गंवार बालक है? हां अवश्य, क्योंकि वह प्रकृति देवी के अङ्क में ही जन्म लेकर घुटनों चलकर, अपने पैरों के बल खड़ा हुआ है। स्वावलम्बन का पाठ तो उसने मां का दूध पीते ही समय पढ़ लिया था क्योंकि उसे ज्ञात रहा करता था कि भूख लगने पर भी मां बिना रोये उसे दूध नहीं पिलाती थी।

वह किसान का बेटा है वह अपने ही को सब कुछ समझता है। वह बड़ा निर्भीक है, उसे किसी का क्या डर? उसे बाह्याडम्बर से क्या प्रयोजन! उसे धन दौलत की क्या

चिन्ता ? उसे अच्छे खान पान की क्या परवाह ।

वह है गो-पाल ! राधिकावर-व्रज-विहारी नन्द-नन्दन-गोपसखा-कृष्ण महाराज का अनन्य भक्त ! और साधारणता का प्रतिबिम्ब ! उसे तो है एक लंगोट, एक अंगोछा और एक 'कन्हैय्यावारी कारी कमरिया' धारण करने से प्रयोजन ! निराले और नीरव वन में पाषाण की सुरम्य शिलाओं पर बैठकर, कल-कलनि-नादिनी-ग्राम्य-सरिताके तटपर भ्रमण करते हुये, या हरितवर्ण-कोमल नवपल्लवित घास के ऊपर लेटे हुये, तन्मय होकर बांसुरी की अर्थ रहित, स-सार, सुरीली तान से पार्श्व-वर्तीय-पर्वत, कन्दरा, और घाटियों को गुञ्जायमान करते हुए अपने आप अपने भाव को आलाप कर, उस की प्रतिध्वनि श्रवण कर, तथा अपने स्वाभाविक, उत्कृष्ट और प्रेम-परिपूरित-अनूठे-काव्य का स्वयमेव रसास्वादन करते हुये, अपनी भेड़-बकरियों ढोर डंगरों और नन्हे नन्हे बछड़ों को दिन भरचराकर गोधूली के समय घर आकर सेर भर दूध एक सांस में पीने की चिन्ता ।

और अपने खेतों की गुड़ाई, निलाई सिचाई में आवश्यकता पड़ने पर, मुझे साहाय्य देकर, परिश्रमपूर्वक अपने लिये नमक रोटी व तुम्हारे, नागरिक जीवन व्यतीत करने वाले, उच्च भवनों में रहने वाले, किन्तु अकर्मण्य निरुद्यमी और परावलम्बी लोगों के लिये भी नाना प्रकार के अच्छे अच्छे खाद्य-पेय-पदार्थ उपार्जन करने की परवाह !

(७)

और मेरी लड़की ? वह तो अत्यन्त अल्पवयस्का ठहरी । पर क्या आप समझते हैं नगर में लाड़-प्यार से पली हुई, मुंह चढ़ी बालिकाओं के समान यह नन्हीं बच्ची भी केवल रो रो कर ही अपनी मां का खून सुखाया करती होगी नहीं जरा नहीं, कदापि नहीं छः वर्षा होने पर भी उन बालिकाओं से मेरी बच्ची का स्वभाव विपर्यय है । वह अपनी मां का हाथ बहुत से छोटे मोटे कामों में बिठाया करती है इसके ऊपर इतना भार ही क्या कम है कि बारह बजे की कड़ी धूप में शिरपर रूखी सूखी रोटियां और हाथ में दूध से भरा एक लोटा लिये हुये नित्य प्रति डले ढेले और कण्टकों से ढके हुये मार्ग को पार कर मेरे पास खेतों में आया करती है क्यों ठीक है न ?

(८)

क्या कहूँ ? कितना कहूँ ? कैसे अपने गंवारी विचारों को आप के सामने प्रकाशित करूं ? पर विद्वान् हो या मूर्ख, राजा हो या भिक्षुक, शहरी हो या गंवार, हृदय सबके पास होता है । अतएव जो कुछ भी मैं कह चुका हूं, उसको केवल पागल का प्रलाप मूर्ख की गप्प गीत या कोरे गंवार की उलटी सीधी बातें ही न समझ बैठना ! प्रत्युत एक सच्चे गंवार के हृदयोद्गार और मनोगत भावों का विशुद्ध प्रेमानुरञ्जित तथा कृत्रिमता-विहीन-चारु-चित्र समझना । इस प्रकार आपको ज्ञात हो जायगा कि गंवार और शहरी, असभ्य और सभ्य तथा ग्राम्य जीवन और नागरिक जीवन में क्या अन्तर है कौन उच्च कोटि और कौन निम्न कोटि का है' इस से अधिक एक "गंवार" कह ही क्या सकता ?

———

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

सुखद मिलन

ले०—श्रीयुत जगत्नारायण शंखाधार

(१)

आह! वह कैसी भयानक घड़ी थी? उस दिन श्याम की सारी आशाएं पहिले एक पूर्णचन्द्र के समान उदित होकर फिर एक क्षुद्र तारा की तरह टूट कर नाश हो गईं। जिस सौंदर्य्य की उपासना के लिये उस ने एकान्त में कितनी भावनायें एकत्रित की थीं। उनका कैसा दुखद परिणाम हुआ। यवनिका सुन्दर थी परन्तु दृश्य ओट में थे, कौन जाने वे सुन्दर थे या नहीं? किंतु श्याम का निश्चय तो यही था कि वे सचमुच सुन्दर थे।

विवाह की यवनिका उठी, एक कुरूपा ने श्याम के चरणों में अपना जीवन अर्पण करके कहा-"मेरे प्राणनाथ! मेरे प्रियतम!! मेरे देवता!!!"

× × ×

रूप के साथ विवाह करके शोभा को अपनी चिरसंगिनी बनाकर श्याम ने अपनी जीवनयात्रा को सुखद बनाना चाहा था। किन्तु ऐसा न हो सका। उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। न जाने किस निष्ठुर ने एक कुरूपा का अंचल उसके हाथ बांध दिया। उसका नाम यमुना था। यमुना का रङ्ग काला था, आकृति भी सांचे में ढली न थी, तब उसे सुन्दरी कहने का अधिकार किसे हाता? पर क्या सौंदर्य्य रङ्ग आकृति में ही परिमित है? कह नहीं सकते। संसार यमुना से काली कुरूपा कहता है। कहे; पर उसमें राजेश्वरी के मुकुट में स्थान पाने योग्य एक हीरक था। उस काले कुरूप के अन्दर एक विकास था।

यमुना के कुरूप की कालिमा ने उसके स्वर्गीय गुणों पर अन्धकार छोड़ रक्खा था मानों रत्नों पर स्याही पोत दी थी। पतिगृह में वह एक दासी की भांति थी। दिन भर काम करने पर भी पुरस्कार में तिरस्कार ही मिलता था। रात्रि को उसका रुदन आंसुओं से उसका ताप मिटाकर शांति देता था उसके बाह्य कुरूप ने उसका अन्तः सौंदर्य दबा दिया था। उसके गुण संसार में न आने पाये थे। उसे सुन्दरी किसी ने न कहा वह कांटों के बीच दबी हुई कली थी, खिल न सकी।

(२)

एक दिन श्याम अपने कक्ष में बैठे धीमे स्वर से कह रहे थे, "सौंदर्य्य से मनुष्य के हृदय में प्रेम का अङ्कुर उत्पन्न होता है। प्रेम ही मनुष्य का जीवन है। हा! मुझे सौंदर्य्य न मिला! मेरा पथ इस यमुना ने कंटकमय बना दिया। क्या इसका कुछ उपाय नहीं है?"

श्याम के स्वर अधरों पर शेष हुए। कक्ष में थोड़ी देर के लिये निस्तब्धता सी छा गई परन्तु शीघ्र ही किसी विचार ने श्याम का मुख आभापूर्ण कर दिया। अपने प्रश्न का स्वयम् उत्तर देते हुए श्याम ने कहा-"हां, है! अवश्य है! रात्रि का परित्याग करके ऊषा को सहचारी बनाना होगा। इस कुरूपा को छोड़कर किसी शोभा को अपने हृदय की देवी बनाना होगा..... ....."

"नहीं, नहीं, प्राणनाथ!" कहती हुई यमुना ने कक्ष में प्रवेश किया।

"श्याम ने घृणा और क्रोध के साथ कहा "मेरे इस शुभ अनुष्ठान में तू बाधा पहुंचाने क्यों आई ?"

"नहीं प्रियतम, मैं बाधा नहीं पहुंचाऊंगी आप दूसरा विवाह करें। अपने हृदयाकाश में सौंदर्य सूर्य का उदय करें। मैं रात्रि हूं, विवश होकर आपके हृदय से चली जाऊंगी पर छाया बन कर आपके चरणों के नीचे दबी रहूंगी।" करुण स्वर से यमुना ने उत्तर दिया।

श्याम ने झिड़क कर कहा-"बस चुप रह, तेरा ध्यान ही मेरे हृदयसंसार में रात्रि लाता है जिससे आकाश में कभी सूर्य का उदय हो ही नहीं सकता। अतः मैं तुझे शीघ्र ही त्याग दूँगा।"

यमुना ने कुछ विचलित होकर कहा-"क्या इन चरणों में मेरे लिये जगह नहीं है ?"

श्याम ने घुड़क कर कहा "नहीं।"

"क्या आपको एक दासी की भी आवश्यकता नहीं है ?"

"नहीं, बस अधिक बोलने की ज़रूरत नहीं। मैं तुझे अपने घर में नहीं रख सकता तुझे चला जाना होगा।"

"मैं जाऊंगी, पर जाने के पहिले आपके घर को एक बार फूलों से सजाकर आपकी नववधू का स्वागत करूंगी। अपने प्राणों के मूल्य से इस भवन में दीपक जलाऊंगी और आपकी युगल मूर्ति का पथ आलोकित करूंगी।" रोती हुई यमुना ने श्याम के पैर पकड़ लिये।

श्याम ने कुछ उत्तर नहीं दिया। यमुना को घृणा से ठुकरा कर चल दिये अभागिनी यमुना को माता के अतिरिक्त और कौन अपनाता ? वह मातृगृह में ही अपने दुःख के दिन काटने लगी।

(३)

समाचार पत्रों में श्याम के विवाह का विज्ञापन प्रकाशित हुआ! उसके उत्तर में जो पत्र आये थे उनमें से श्याम ने पहला पत्र खोल कर देखा, लिखा था:—

प्राणनाथ!

मुझे अधिकार नहीं है कि मैं आपको कुछ लिखूं। पर एक अपरिचित की भांति संसार के एक अंधियारे कोने से कुछ लिखती हूँ। आशा है कि आप केवल एक बार पत्र पढ़कर मुझे ऋणी करेंगे। समाचारपत्र में आपके दूसरे विवाह का विज्ञापन पढ़ा परमात्मा आपको सुन्दर नववधू देकर आपका जीवन सुखपूर्ण करे। इस सुखद अवसर पर एक पथ की भिखारिन की भांति मेरी भी याचना है। वह यह कि जब आप विवाह करके आवें तो सिर्फ एक दिन के लिये मुझे भी बुलालें। युगलमूर्ति का दर्शन करूंगी। देवता की भांति दम्पति की पूजा करूंगी, यही मेरी आंतरिक इच्छा है।

अभागिनी:—

यमुना।

श्याम ने पत्र पढ़ना समाप्त किया उस के एक दीर्घ निःश्वास से मालूम हुआ कि उसे दुःख हुआ। फिर प्रफुल्ल हृदय से पत्र का उत्तर लिख कर उसी समय भिजवा दिया।

संध्या को मित्रमंडली ने श्याम से पूछा "कहिये विवाह ठीक हो गया ?"

मुसकरा कर श्याम ने कहा-"ठीक हो गया। पत्नी मेरी रुचि के अनुकूल मिली है अब मेरा जीवन जो इतने दिनों से दुःखपूर्ण हो रहा था, सुखमय हो जायगा।"

\+ \+ \+

CC0. Gurukul Kangri Collection, Ha

आज तीसरे ही दिन यमुना को उसके पत्र का उत्तर मिल गया। बड़ी उत्सुकता के साथ खोला। पत्र इस प्रकार था:—

यमुना!

तुम्हारा पत्र मिला। मेरा विवाह पूर्णिमा को है! मुझे तुम्हारी पार्थना स्वीकार है तुम एक दिन के लिये यहाँ आ सकती हो।

श्याम।

पत्र पढ़ कर यमुना बहुत प्रसन्न हुई, अभागिनी को यही क्या कम था।

(४)

पूर्णमा को यमुना अपने पतिगृह पहुंची श्याम ने मुसकराते हुए कहा-"प्रिये! मेरा स्वागत करो। मैं दूसरा विवाह करके आ गया।"

यमुना-आपकी नवबधू कहां है?"

श्याम-"मेरी नवबधू मेरे सामने है। इस कुरूप के भीतर ही सौंदर्य छिपा हुआ है। इस काले मेघ के अन्दर ही मेरा चन्द्रमा है! यमुना!"

यह कह कर श्याम ने यमुना को गले लगा लिया। यमुना का हृदय कांप उठा उसने कहा, "यह कैसा छल प्रियतम! मैं तो वही कुरूपा और श्रीविहीना यमुना हूँ"

श्याम ने लज्जित होकर कहा "यह वही छल है जिसने मुझे आज तक छला। हो; तुम्हारा रूप काला और शोभाहीन हो। पर वह भी मेरे लिये नयनाभिराम होगा। जिस का ऐसा सदय हृदय है, और ऐसा विनय नम्र मधुरकण्ठ है उसके सान्दर्य की सीमा नहीं है। उसकी तुलना सारे जगत् में नहीं हो सकती। एक वार मैंने इस बाह्य सौंदर्य के प्रपञ्च में पड़ कर तुम्हारा बड़ा अपराध किया है। अब तुम्हारा अन्तरङ्ग सौन्दर्य ही मेरे लिये यथेष्ट है।"

यमुना ने श्याम के चरणों में सिर रख कर कहा—"मेरे प्रियतम! मेरे देवता!!"

श्याम ने कहा—"मेरी सुन्दरता! मेरी देवी!!"

ठीक उसी समय चन्द्रदेव हंसे और प्रतिबिम्ब बन कर दीना कुमुदिनी से जा मिले। कुमुदिनी खिल उठी।

कैसा सुखद मिलन था?

---

* वह दिन *

गद्य काव्य

ले०—श्रीयुत जगदीशचन्द्र शास्त्री

तू सदा से अजर है, अमर है। जब मैं नन्हा था, गोदका लाड़ला था, घुटनों के बल चलता था तब तू ने मुझे देखा था। पल, पल और घड़ी, घड़ी के मेरे पाप, पुण्यों का तू साक्षी है। तूने वह दिन भी देखे हैं जब समस्त जन, पशु, पक्षी और चेतन तथा अचेतन सभी मोहनिद्रा में विलीन थे। जगत् प्रलयरूप में अवस्थित था, जिस दिन अथाह जलमय जगत्, जीव, ब्रह्म और प्रकृति का रङ्गस्थली बना हुआ था। वह दिन तेरे लिये कैसा भव्य था, जिस दिन परमाणु रूप में पृथ्वी और आकाश सभी विद्यमान थे। इस संसार की सृष्टि जिस दिन तेरी गोद में हुई, तब भी तेरा वही नाम था, तू उतना ही बड़ा था। तू ने हमारे पुरखों को देखा है,

उनकी वीरता और कायरता को देखा है, उनकी प्रबन्धशक्ति को देखा है, स्वतन्त्र भारत की नभमण्डल के प्रबलसमीर में आन्दोलित विजय पताका को देखा है, सस्यश्यामला भूमि को देखा है, संसार में सब से धन, धान्य, विद्या के गौरव से उन्मत्त भारत के सुपूतों को देखा है, फिर हम तो तेरे लिये वही गोद के खिलौने हैं, वही तोतली और मीठी आवाज में इच्छित वस्तु को मांगने वाले, अकारण हँसकर तुझे खुश करने वाले बालक हैं। अहा। तू ही तो इतिहास है, चाहे हमारा इतिहास तेरे सामने ही उन विजयोन्मत्त पापियों के हाथ से जलाया गया था, पर तूतो जैसे का तैसा है, तुझे कौन जला सकता है, किस की भुजाओं में बल है कि तुझे जलाये, हां पुस्तकों के पृष्ठों पर लिखित तेरेनाम को अवश्य जलाया था, पर तू मूर्तिमान् है, जीती जागती शक्ति का पति है, तुझे शक्ति से सदा प्यार रहा है, तूने उसी से लाड़ किया, उसी के गोद में खेलते २ प्राणों की परवा न करने वाले बच्चों को सुपूत कहा, उन्हीं के गौरव को सदा जीभ पर रक्खा, जो कि लड़ाई के नाम पर अपनी मां की गोद छोड़ कर भाग गये, कायरता के पीछे भागे उन्हें तू ने फिर कर भी नहीं देखा एक वारभी नहीं बुलाया। इस लिये आ! आ!! वह दिन आ! तुझ से उस विजयी राम का सन्देश सुनूं, राम रावण युद्ध की सुखद तथा गौरव सम्पन्न कीर्ति के गीत गाऊं, महाभारत में भीष्म की वीरता, द्रोण की शक्तिशालिता, कण की दानशीलता, भीमकी भयङ्करता, औरअर्जुन के युद्ध कौशल की कथा सुनूं, विचारे बच्चेअभिमन्युकी राम कहानी और निरस्त्र बालक पर जान बूझ कर प्रहार करने वालों की अविवेकशीलता का रोना रोऊं। तू ही बता? क्या बात थी उस दिन बच्चेमें क्षत्रियत्वका था, तेजपुंज तूतो हमारा सदा से पिता है, फिर क्यों नहीं बताता कि तैने क्या लीला रची हुई है। तू ने ही तो इसी भूमि पर बड़े २ वीरों को पैदा किया पर आज हीजड़े और नामर्दों को क्यों जन्म दिया? जिन्हें न तो आत्मगौरव का ज्ञान, ना ही अपने नाश का, क्या तू वही है? तू तो शक्ति का सदा से पति रहा है, तू तो उसे सब से अधिक प्यार करता था, फिर आज क्या होगया। हा! तू ने तो वह दृश्य देखे हैं, जब परतन्त्रता के नाम पर तेरे लाखों पुत्र अपना बलिदान करने पर तैयार रहते थे। तू ने महाराणा प्रताप को जन्म दिया है, जिस का जीवन परतन्त्रता के नाश के लिये हुआ था, जिस के देह में हरदम खून उबलता रहता था। खाने पीने, सोने, रोने सर्वत्र स्वतन्त्रता के स्वप्न दिखाई देते थे, यही नहीं, पर मरते दम भी जिसके जीभ पर 'स्वतन्त्रता की रक्षा' का ध्यान था, जिस का अन्तिम निश्वास वीरों से स्वतन्त्रता की रक्षा की प्रतिज्ञा लेकर निकला। आज क्या बात है? गुलामी सैकड़ों वर्षों से हमें रूंध रही है, पैरों तले कुचल रही है, मनमाने अत्याचार कर रही है, पर हम मजे से सुख की नींद सोते हैं, मधुर भोजन खाते हैं, ठंडा पानी पीते हैं, पेट की धुन में लगे हैं, हमें उन तेरी छाती पर दिन दहाड़े रुदन के गरम आंसू टपकाने वाले अनाथों की क्या परवा? आये दिन खून का घूंट पीकर मन मसोस कर विधर्मियों की शरण लेने वालो विधवाओं की क्या चिन्ता? आमरणान्त हमारे गन्दे मलमूत्रों को ढोढो कर हमारे अत्याचारों को सहने वाले भंगियों की और सेवाव्रत के ठेकेदार पराये अछूतों से क्या? अपने सतीत्व को ताक पर रख अपनी इज्जत को खुले बाजार में बेचने वाली वेश्याओं से क्या? उन भूखों

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

और अधपेटों के चीत्कारों से क्या प्रयोजन है ? हम तो गुलामी में सुखी हैं, अत्याचारों से खुश होते हैं, विजातियों के नादिरशाही हुक्मों के आगे सिर झुकाते हैं, हम तो 'वह दिन' जानते हैं, प्राचीन गौरव परफूले नहीं समाते, बाप बड़े थे यही हमारे बुजुर्गों की शिक्षा है, हम तो 'वह दिन' 'वह दिन' सदा जपते हैं।

पर हे वह दिन ! हम तुझ से पूछते हैं ? क्या तेरे बुलाने का भी कोई उपाय है ? हो तो बतादे ? देख तो सही ? कुछ कृतघ्नों को छोड़ तेईस करोड़ कंठों से कितनी करुण आवाज़ आरही है, कितनी मर्मभेदी पुकार है। जरा सुन तो ले, देख हमारे गले बैठगये पर तू ने मुंह भी न खोला। हां, अब जान गये, तेरा हृदय बड़ा कठोर है, तूने बड़े २ विलाप सुने हैं, भयंकर युद्धों में टकराते हथियारों के गगन भेदी शब्दों को सुना है, तू ने स्वतन्त्रता के लिये मरते हुए अपने और तथा स्वनामधन्य पुत्रों को देखा है और तूने लुटते हुए भारत का करुण नाटक भी देखा है, पर तू सदा से अपरिवर्तनशील है, हँसमुख है, प्रसन्नवदन है फिर तो यही कहेंगे तू अचेतन है, तू दैव है, देखता सबकुछ है, पर बोलता कुछ नहीं, यों कहना चाहिये कि तुझे बोलना ही नहीं आता तू सप्ताह में एक बार सालभर का दृश्य दिखा कर भाग जाता है, हम तुझे निर्दयी निठुर कहते हैं तो कहें पर मालूम होगया अब तू हमें छोड़ गया, अब नहीं आवेगा।

खैर तू आता नहीं तो बता तो सही क्या कोई पिता अपने पुत्रों के साथ इतनी बेदर्दी का सलूक करता है ? क्या कोई माता अपने बच्चों की इतनी बेपरवाई करती है ?

आ ! आ ! ऐ शक्ति की रहस्यमयी देवि। तू ही आजा। तू ही वह दिन बुलाला, वह तुझसे ही सर्वदा अधिक प्यार किया था, तू गोदी में आने से पहले ही भारतीय बच्चों में स्वतन्त्रता का मन्त्र फूंक दे, पेट में ही बड़ी २ विद्यायें सिखादे। 'वह दिन' कहा करता था कि तू ने अर्जुन के पुत्र अभिमन्यु को पेट में ही चक्र व्यूह तोड़ना सिखा दिया था। यदि यह ठीक है, तो आज तुझे क्या होगया है, आ। और नपुंसकों की नस, नस में बिजली की शक्ति दौड़ादे, कायरों को वीरता का सन्देश सुनादे। श्मशान में भस्मीभूत अस्थियों में मंत्र फूंक उन्हें शिवाजी और प्रताप बनादे, उन्हें वही स्वतन्त्रता का पुजारी बनादे, वही आत्माभिमान के गीत गानेदे। बहुत दिन होगये, कायरताने हमारी माता बनके क्या २ अत्याचार किया। आ! सुनले, उस दुष्टा की कारिस्तानी। उस पापिनी ने सब से प्रथम तेरा आसन छीना, 'वह दिन' को व्यभिचारी बनाया, अपने पुत्रों के जन्म से ही कायरता का मंत्र दिया, पराधीनता की शिक्षादी, धर्म से कइयों को पतित किया। आ! अब तो आ! अब हम कमर कस कर तैयार हैं, तुझे बारम्बार बुला रहे हैं, अब हम रणक्षेत्र से कभी जी नहीं चुरायेंगे, तलवारों से खेलना सीखेंगे, तोप और बन्दूक तथा मशीनगनों के बनाने की विद्या पढ़ेंगे, विज्ञान को बुलायेंगे, सच कहते हैं, तुझे कभी नहीं भुलायेंगे। माता एक कसूर तो राजा भी क्षमा कर देता है, पर तू तो रानी है, सुना है कि स्त्रियां बड़ी सदय होती हैं पर आज परीक्षा होगी। आ! माता! हम तेरे आगे प्रतिज्ञा करते हैं हम प्रति दिन तेरी उपासना करेंगे, शुद्ध स्वदेशी वस्त्र का उपयोग करेंगे सादा खाना खायेंगे, आराम से दूर भागेंगे, पापियों को दण्ड देंगे दुष्टों के दमन की दीक्षा लेंगे, किसी के आगे सिर नहीं झुकायेंगे, चाहे कोई राजा हो या प्रजा।

पापी तेरी दृष्टि में एक सज्ञान हैं, तू उद्धत प्रकृति की नहीं परन्तु विवेक शीला है। जो तुझे विवेकशीला का द्वितीय रूप नहीं समझते, वे बड़े ग़लती पर हैं, धोखा खायेंगे, उन्हें विजयश्री के भोगने का सौभाग्य नहीं मिल सकता। बस आ! यही तुझसे अन्तिम प्रार्थना है, यही भिखारी की विनय है। यही तेरे बन्दे बालक की चाह है। आ! बस, एक बार आजा। तू आ! देख हमारा हृदय तेरे लिये खुला पड़ा है। उस में लाल लाल मखमली मसनद लगी हुई है। आ! कम से कम एक बार तो देख जा।

प्रेम

ले०—श्रीयुत भगवानदास गुप्त बरहज।

सुन्दर असंख्य तारे जो नीलोज्ज्वल आकाश मार्ग में भ्रमण करते हैं, चन्द्र एवम् सूर्य जो अपनी जीवनप्रद किरणों को पृथिवी के अनन्त विभव पर डालते हैं और जिनकी ज्योत्स्ना देख प्रकृति खिलखिला उठती है—फलप्रद पृथ्वी जो ऋतुओं की आज्ञा सादर पालन करती है, और नाना प्रकार का दल फल फूल रूपी वस्त्राभूषणों को परिधान कर एवम् भांति भांति का रूप धारण कर प्रकृति का सौन्दर्य्य बढ़ाती है—

स्वर्गीय ओसकण जो कृषिक्षेत्रों की उपजशक्ति बढ़ाते हैं पुष्पों को विकसित कर उनका मुंह धो उन्हें मञ्जुल तथा मनोहर बनाते हैं, अनन्त कमलदल जो तड़ागों में खिलते हैं—और जिन पर मदमत्त मलिन्ददल अपने जीवन को न्यौछावर करते हैं—इन सबों की शोभा असीम है सही, किन्तु मनुष्यों की विमल तथा उज्ज्वल कांति से क्या इनकी तुलना हो सकती हैं? प्रकृति का मधुर लावण्यमय सौन्दर्य्य कैसा ही हृदयहीरा क्यों न हो। गगनोच्च गिरि शिखर गंभीर नदी तथा अतल सागर कैसा ही गौरवपूर्ण सुन्दरता एवम् अलौकिक कारीगरी का उज्वल नमूना क्यों न हो, किन्तु क्या ये अपने कर्त्ता की पुकार का प्रत्युत्तर दे सकते हैं? कदापि नहीं। जड़ पदार्थ अपने कर्त्ता के प्रेम में विह्वल हो नेत्रों से अश्रुवारि नहीं बहाते। पशु पक्षी भी अपने प्रेमाधार जन्मदाता के विरह में व्याकुल हो फूट२कर नहीं रोते जिसके चलाये असंख्य तारागण गगन प्रदेश के शून्य मार्ग में परिभ्रमण तथा नृत्य करते हैं एवम् निरवलम्ब टंगे रहते हैं, मनुष्य को छोड़ कर उस अपरिमित बुद्धि को जानने का तथा अपनाने की कब किसने चेष्टा की। मानव आत्मा उस अनंन्त आत्मा का अंश है, इसी से मनुष्य उसे जान सकता है-पहिचान सकता है और जान लेने पर पहिचान लेने पर वह उस के संग संयोग करने के लिए व्यग्र होता है। सांसारिक व्यसनों में लिपट कर जब तक मनुष्य अपने को कलुषित नहीं करता और आत्मा का गला नहीं घोंटता, ईश्वरीय ज्योति उसको प्रकाशमान रखती है। जब पाप में फंस कर मनुष्य अपने को भूल जाता है, उसकी आत्मा की शक्ति क्षीण हो जाती है और उस

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

में अप्रेम-निष्ठुरता एवम् कृतघ्नता राज्य करने लगती है। आत्मा एक उज्वल रत्न है परन्तु पापरूपी कींच में पड़ जाने के कारण उसका असाधारण तेज तथा प्रकाश नष्ट हो जाता है। निःसन्देह मानव हृदय की सृष्टि प्रेम ही के लिए हुई-प्रेम ही मानव जीवन का उद्देश्य एवम् कर्तव्य है-प्रेम ही के उद्रेक से इसकी रचना आरम्भ हुई। अतएव अपने हृदयसरोवर में प्रेम पारिजात का ही बीजारोपण करना चाहिए। प्रेम की शिक्षा के लिए ही जीव इस संसार में भेजा गया है। यदि यहां आकर प्रेम का विकास इसके हृदय में नहीं हुआ यदि प्रेमप्रौढ़ता को नहीं पहुँचा यदि मनुष्य जन्म धारण कर केभी प्रेम का समागम नहीं हुआ तो कहना ही पड़ेगा कि मानवजीवन का उद्देश्य किंचित् मात्र भी पूरा नहीं हुआ जब कि जड़ पदार्थ भी इसकी महिमा समझते हैं और इसकी पवित्र आज्ञाओं का निर्विघ्न रूप से पालन करते हैं, प्रेम की शिक्षा माता पिता की गोद से आरम्भ होती है, रमणी को पा कर यह स्नेह परस्पर होकर दाम्पत्य प्रणय के रूप में परिवर्तित होता है और जब मनुष्य शिशु स्नेह से घिर जाता है तो उस के हृदय में निःस्वार्थ प्रेम का विकास होता है यदि कहीं कोई सच्चा मित्र मिल गया तो हृदयवाटिका में अनुपम लतिका कुसुमित होकर इसे सौरभमय बना देती है। संसार के इन्ही संबन्धों से जो पुनीत शिक्षा हमें मिलती है इसी के द्वारा हम लोगों के हृदय में ईश्वर सम्बन्धी विविध शुचि भावों की उत्पत्ति होती है एवम ईश्वर से सम्बन्ध जोड़ कर हम उस जगदाधार परमेश्वर की प्रेमोपासनामें लीन होते हैं। समाज तथा परिवार का विविध बंधन हमको इसी लिये दिया गया है कि मनुष्य उनसे स्नेह की शिक्षा पाकर उस अनादि कर्ता को हृदयमंदिर में मूर्ति मान कर पूजा करे। यदि पारिवारिक स्नेह से आत्मप्रियता लुप्त नहीं हुई—यदि पत्नीप्रणय से चित्त मार्जित नहीं हुआ बन्धु बान्धव, सुहृदय मित्र, तथा परिवार को प्यार करते करते मानव जाति को प्यार करना नहीं आया यदि इस शिक्षालय में परहित साधन की शिक्षा नहीं मिली—यदि संबन्धियों ने 'भगवान् के संग नाता जोड़ने में कोई सहायता न दी तो संसार में आना निष्प्रयोजन ही हुआ तथा गार्हस्थ धर्म और परिवार का अवलम्बन व्यर्थ हुआ—यदि विवाह बन्धन से मनुष्यचरित्र का उत्कर्ष साधन नहीं हुआ तो विवाह करने का प्रयोजन ही क्या है? तो जानलो कि स्त्री पुत्र आदि केवल प्रेम के शिक्षक हैं। पुनीति प्रेम की शिक्षा ग्रहण कर मानवी आशा और दुःख के विषय बोझ को प्रतिक्षण समय की तरल तरंगों में छोड़ कर अपनी जीवन नौका को निर्दिष्ट मार्ग पर उस अनन्त की ओर अग्रसर करते जाओ-अन्तरात्मा का भाव यही है प्रगाढ़ प्रेम की वाणी यही है।

मोहिनी के आँसू

ले०—श्रीयुत सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज

[गतांक से आगे]

‡

मध्यान्होत्तर समय है, साढ़े चार बजने को हुए, चण्ड मार्तण्ड उसी प्रकार अग्नि बरसा रहा है; उष्णतर वायु के थपेड़े घर से बाहर निकलने वाले लोगों के गालों पर निरन्तर बुरी तरह पड़ते हैं। परञ्च निर्लज्जों की भांति कभी मुख इधर और कभी उधर कर स्वार्थ सिद्धि के लिये लोग कटिबद्ध हो रहे हैं!. आकाश और धरातल दोनों इस भाँति भभक रहे हैं, जैसे देश के अत्याचार, दुराचार की अतिमात्रा से सुधारक का हृद्देश!, जिस भाँति असहिष्णुओं, असन्तुष्टों का मनोमन्दिर दूर्षा के अतिरिक्त अन्यान्य सुन्दर-सुन्दर तृण-विशेष दग्ध-प्रायः हो लिये, जैसे सदाचारिणी अबलाओं के वैधव्य-दुःख से उनके मनोवन !!, इधर भिश्ती लोगों के छिड़काव से वसुन्धरा ने तप्ततर आन्तरिक ऊष्मा निकालनी आरम्भ की। क्योंकि—उसकी प्यारी (स्थावर जङ्गम) प्रजा का मोद-प्रमोद-प्रद प्रिय बसन्त, उससे वियुक्त हुआ है। जैसे प्रवासित भर्तृका पूजावती अबला के असह्य वियोग दुःख में समवेदना प्रकटनरूप सांत्वना-वर्षण से अधिकाधिक हार्दिक-वाष्प त्रिमोचन करती है !!!, जिस प्रकार आधुनिक नर पिशाच प्रायः परिवार की अनाथा विधवा स्त्री को तीव्रतर-ताप पहुंचाते, दया को पास नहीं फटकने देते, उसी भांति दुष्ट भीष्म-ग्रीष्म ने वसुन्धरा को निर्दयता के साथ जलाना आरम्भ किया है !!

—आज मई मास की इक्कीसवीं तारीख़ है, आज तक वे युवक जो परीक्षा दे चुके हैं—न शान्त-चित्त हो सोते थे, न स्वस्थ हो भोजन करते थे; स्वप्न भी उन्हें आता था तो परीक्षा परिणाम (Result) के साथ और दे जाता था—व्यग्रता, बेचैनी! दिखा जाता था कभी शुभाशा और कभी दुराशा! आज उस अशान्ति का परदा मिडिल क्लास (Middle class) वालों के लिये तो हट गया!

× ×

‡

☞ सूचना आज कल हिन्दीसाहित्य-क्षेत्र में स्वार्थी जनों द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण-कूड़ा फेंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य-जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक "ज्योति" के शृंखलाबद्ध अंकों का अवलोकन करें। प्रत्येक में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास मण्डी, लुधियाना' के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिए प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं, यह निश्चय हो सके।

लेखक।

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

—अंगोछे के दोनों कोण दांतों तले दबाए, छाया वाली पटड़ी पर, घण्टाघर से कुछ आगे शीघ्रता से शङ्कर चला जा रहा था। अचानक पीछे की ओर से ट्रेन के घड़घड़ाहट के साथ ....मधुर एवम् सुतीक्ष्ण कण्ठ की पुकार कानों में पड़ी—

"दा .... दा.....जी ! अजी दा .... दा .....जी !!"

—शङ्कर ध्यानपूर्वक सुन, सोचने लगा—"वैसे तो आज लड़के प्रातःकाल से घर से निकले हुये हैं। घर से भी कहती थी—"स्कूल गये"। पर यहां उनका क्या काम ? अब तो वे कभी के..... .....

—मन ही मन विचार समाप्त न कर पाया कि पुनः उसी भाँति "अजी दा...दा .... जी !" की पुकार नितान्त निकट ही दड़बड़ाहट के साथ आ पहुंची। पीठ पीछे को देखा—अत्यन्त निकट ही आकर—"दोनों पास.....हो गये। भय्या फ़स्ट आया .... है !" कहा, माधव दाएं हाथ के कोनी के ऊपर से पकड, दोनों पैर अधर कर, चट लटक गया। इधर कुन्दन भी हांफता हुआ आ, झट ही शङ्कर के पेट तथा कमर में अपने दोनों हाथ डाल, अधर हो लटक गया।

—शङ्कर खुशी के मारे फूला न समाया। वह बोला—"सांस फूल गया ! कहां से भागे हुए आए हो, रे !!"

माधव - "बड़ी दूर से पुकारने लगे हैं, तुमने सुना ही नहीं !"

शङ्कर—"अच्छा !"

कुन्दन—[हांफता हुआ] हम ...पहले स्कूल से...घर गए; वहाँ अम्माँ ने पूछने पर कहा—"शहर गए हैं ! "; हम फिर दौड़े। तुम्हें ... कुंए के पास से इधर मुड़ते देखा था। पुकारा, बहुत पुकारा, ... तुमने सुना ही नहीं !"

—वैसे कुन्दन दो वर्ष बड़ा था, परञ्च सौन्दर्य्य, स्वास्थ्य, स्मृति, मेधा में माधव बढ़ा हुआ था। वह चाहे हँस कर बातें करे वा रोकर, चाहे क्रोध में भरा हो यद्वा उसका शान्त-प्रकृतिस्थ-मुख-मण्डल हो, माता-पिता, अध्यापकगण, अन्यान्य दर्शक जन, प्रायः सभी उसकी बातें सुनने के लिए निश्चल, निर्वाक्, चित्र लिखित से खड़े रह जाते थे। "इस की मेधा-स्मृति की तुलना किस से करें ?"—यों सोचने लग जाते थे। चाहे बड़ा होगया था किन्तु कुछ तुतलाहट शेष थी। अभी 'रकार' को अव्यक्त ही उच्चारण करता था। जिस से गम्भीर मुख-मण्डल द्विगुण सुशोभित हो उठता था ! जैसी विशाल आँखे थीं, वैसे ही उस से कहीं अधिक गाम्भीर्य्य लिए हुए थीं !! शंकर के नयनों के आगे, माधव का मुख, सरला का प्रतिबिम्ब बन जाता था ! या शब्दान्तर से यों कहिए कि वह सरला का चलता फिरता [चेतनायुक्त] चित्र [फ़ोटो] था !!

—पालन-पोषण में तो शङ्कर के हृदय में स्वप्न में भी भेद न हुआ। वे दोनों ही नेत्र-तारकों के तुल्य प्रिय थे; बहिः प्राण के सदृश हृत्प्रहादक थे; हृदयाधार भूत थे; धर्म तथा यश के समान उनके सुरक्षण में वह दत्तचित्त रहता था। परन्तु उपर्युक्त-गुणों से माधव में एक आकर्षण-शक्ति विशेष ही प्रतीत होती थी, जो तत्काल शङ्कर के इन्द्रियेश (मन) को अपनी ओर बलात् आकर्षित कर लेती थी ! एतदर्थ विवशता हृदय-हीन से शंकर को

से स्वतन्त्र-प्रेम (प्यार) करना पड़ जाता था! इसी हेतु माधव को अङ्क में उठाना ही चाहता था कि सहसा एक बात याद आजाने के कारण उसे अलग हटा, बोला—

"अरे! छोड़ो तो—बाज़ार है!"

—यह सुन दोनों पृथक् २ बराबर खड़े होगए। तब कुन्दन तो आस-पास की दुकानों के बोर्ड बांचने लगा। और शंकर माधव को अपने निकट कर, समझाने लगा—"देखो, बाज़ार में, अधिक न आना चाहिए। गाड़ी हैं, मोटर हैं। कई बार तुम्हें समझाया, फिर तुम नहीं मानते! क्यों नहीं घरही रहे-भय्ये!"

माधव—(मुंह फुला, गुनगुना कर) "मास्टर जी को हम बन्दगी करने जाएँगे। नया कोट, नया पाजामा, सब नये ही कपड़े पहनेंगे!!"

शंकर—"तो क्या मेरे पास यहाँ कपड़े हैं? अपनी अम्मां से कह कर, क्यों नहीं निकलवा लिए?"

माधव—(उसी प्रकार गुन गुना हो) "ताली देदो!"

शङ्कर—"अरे! मेरे पास ताली कहां?"

माधव—(ऊपर की जेब को लफ कर हाथ लगा) "इस में बताई है, अम्मां ने।

शङ्कर—"हाँ!" कह, ताली दे, बोला "सीधे ही घर को जाना" और नई सड़क के नुक्कड़ तक कर, आप फिर अपने कामके लिए लौटने लगा। दश कदम ही चला था कि फिर माधव जोर से चिल्ला पड़ा—"दादा जी! हर प्रसाद फेल होगया!"

—शङ्कर यह सुन फिर लौटा। पास ही से आ, बोला।

"अरे! सच ही क्या?"

माधव—"सच ही सच, दादा जी! हम उसे रोता छोड़, आए थे!"

—शङ्कर ने चकित, और आश्चर्य-मग्न हो० "अच्छा"? कहा, और क्षणोपरान्त तर्जनी उंगल का तर्जना से पुनः कहा—"खैर, तुम आज उसके पास न जाना। उसका चचा बद-मिज़ाज है!"—तब तो दोनों ने एक स्वर से कहा—"अच्छा!" और घर की ओर लौट पड़े। परन्तु फिर चलते चलते माधव को एक बात याद आई। उसने उलटा दौड़ कर, शंकर का कर, चट पीछे से जा पकड़ा, और कहा—"हम लखनऊ वाली टोपी भी पहनेंगे!"

शङ्कर—(सस्मित) "अच्छा-अच्छा! जाओ तो सही—अब की वार दोनों "अच्छा" कह घर कीओर दौड़ पड़े। इधर शंकर अपने कामको फिर लौटा। कुछ दूर चला था कि आगे वही पंडित जी मिल गये, जो दोनों बच्चों को संस्कृताध्यापन करते थे। शङ्कर हाथ जोड़ नम्रतापूर्वक बोला—"चरण छूता हूं, पंडित जी!" पण्डित जी उत्तर में "नमस्ते" कह, बोले—"शङ्कर! इस से पूर्व जो जनवरी के आखीर में [Test Examination] हुई थी उसमें तो मालूम ही होगा—न, माधव [First] आया था। कुन्दन भी अच्छा रहा था। लो दोनों इस सालाना में भी पास हुए हैं। हमारे स्कूल भर में कुन्दन फर्स्ट रहा मालूम होगा—न?—शङ्कर के होंठों पर मन्द-हंसी छागई। पुण्य प्रभात में अरुण अंशुमाली के स्वर्ण-कर स्पृष्ट कुञ्चित-कमल के मञ्जुल मन्द-विकास के सदृश उसके अधरोत्तर ओष्ठ सहसा शनैःशनैः विकसित होने लगे वयोवृद्ध शङ्कर कृतज्ञता प्रकट करता, नम्र हो, विनीत वचनों में बोला—"महाराज

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

आपके चरणों में पड़े रहे तो आदमी बन ही जाएंगे। हुजूर! हम ग़रीब लोग तो सदा आपके पैरों तले ही पलते हैं। यह आपके ही पौदे लगाए हुए हरे भरे हुए हैं! आपको क्या कम खुशी हुई होगी, हुजूर!, महाराज इनकी सन्तान भी आपकी गुलाम रहेगी!!

—यद्यपि पण्डित जी का पुत्र श्रीश्यामा चरण इसवर्ष फेल होगया था, जो इन शिशुओं के संग ही परीक्षा में सम्मिलित हुआ था सहपाठी था। अतः उन्हें उसके प्रति अति-खेद हुआ। परन्तु इस समय उसके उस अनुत्तीर्णता जन्य दुःख को भूलकर प्रेममुग्ध हो कहने लगे—शङ्कर! आशा तो माधव की थी कि फर्स्ट रहेगा!' पर क्या करें? उन दिनों विचारे के नेत्रों ने बहुत व्यथित किया!

शङ्कर-महाराज! ऐसी आखें दुःखती थीं, जैसे खून चू रहा हो! देख-देख हमें भी रुलाई आती थी पर फिर भी लड़का मस्तनाथ की तरह जुटा रहा!!" कहते २ शंकर के वात्सल्य-स्रावी वृद्ध नयन सरोज सहसा सजल हो गए!

पण्डितजी—अच्छा हुआ, शंकर! बहुत अच्छा हुआ!!, कष्ट तो सहा, परन्तु पास हो गए!' यह सुधास्रावी शब्द आज सुने सुनाए गए! सारा श्रम सफल हो गया! और पास भी बड़े अच्छे नम्बरों में हुआ है!!"

—शंकर अपने को भाग्यशाली समझने लगा। वह अपने पुरुषाओं के नाम पर "धन्य-धन्य" कहने लगा। हर्ष के कारण भंग की सी प्रसन्नता की तरंगे हृदय से उठ ऊपर को आती थीं। और शङ्कर अपनी सारी शक्तियों का प्रयोग कर, उन्हें रोकता था। किन्तु तब भी उसके मुखमण्डल से हर्ष का भाव टपकता हुआ प्रतीत होता था। इस मध्य में कुछ देर दोनों मौन रहे। अनन्तर पण्डितजी बोले—"अच्छा, शंकर! अब तो हमें भी एक जरूरी कामसे जाना है। फिर मिलेंगे तो इनके बारे में आगे के वास्ते बात चीत करेंगे" और घर की ओर चल दिये। इधर शंकर की विनीतता से हाथ जोड़ आगे बढ़ा।

निशीथ माया

लेखिका:- श्रीमती धर्मपत्नी पं० सुनेती लाल बी० ए० अमरावती (बरार)

(गतांक से आगे)

सारे दिन के थके मान्दे भुवन भास्कर अपनी प्रिया प्राचीन दिशा से मिलने के लिए प्रस्थान कर चुके थे और भगवान् चन्द्रदेव अपने अनेक शिष्य तारागणों सहित सिंहासन पर सुशोभित दिखाई देते थे। घर पर आकर देखा मृणालिनी अचेत अवस्था में पड़ी हुई थी। मैं उसके सिरहाने बैठकर उसे पङ्खा करने लगा, कुछ समय पश्चात् उसने नेत्र खोले और मुझको अपनी ओर खींचकर मेरी जंघा पर सिर रख कर सोगई। दीपक की धीमी रोशनी में मैं उसके मुख की ओर देखने लगा। कुछ समय पश्चात् मृणालिनी ने अपनी पतली तथा लम्बी उंगलीसे सङ्केत करके कहा "वह कौन! वह कौन! वह कौन!" मैं ने द्वार की ओर देखा तो सामने डाकृर की लड़की सरिता को खड़ी पाया।

मैंने मृणालिनी के भय से उसे घर में आने के लिये भी नहीं कहा, वह चली गई। जब मृणालिनी को पुनः मूर्छा आगई तब मैंने एक नौकर को शीघ्रता से डाक्टर को बुलाने के लिये भेजा। डाक्टर आये और उसको देखकर बोले—"मुझे ऐसा भास होता है कि शायद इसने मालिश का तेल पीलिया है"। यह कह कर उन्होंने अपनी पाकेटसे एक यन्त्र निकाल कर देखा तो मालूम हुआ कि विष पान किया था। फिर बोतलों की ओर दृष्टि की तो देखा मालिशवाली बोतल खाली थी। तत् पश्चात् मृणालिनी को पूछा कि तुम ने यह मालिश का तेल क्यों पिया? वह बोली कि मुझे अपने जीवन से अश्रद्धा हो गई थी इस लिये मैंने इसको पिया! यह कहते कहते उसके नेत्रों की पुतली चढ़ने लगी। एक हाय! के शब्द के साथ साथ यह चिर कैदी पक्षी पिंजरे का द्वार खुला पाकर आकाश मार्ग से बातें करने लगा, मैं चित्र-लिखित की नाई खड़ा का खड़ा रह गया।

मुझे और सरिता को रहते रहते तीन वर्ष होगये किन्तु उसके मनका भाव मेरी समझ में नहीं आता था। वह कुछ चिन्तित सी रहती थी, जब कभी मैं उससे दुःखी रहने का कारण पूछता था, तो वह चुप हो जाती थी। एक समय मैं और सरिता सो रहे थे, एक भयानक स्वप्न के देखने से मेरी आंख खुल गई, तो मुझे यह मालूम हुआ मानो मृणालिनी अपनी पतली उंगली से सरिता की ओर सङ्केत करके पूछ रही है, "वह कौन! वह कौन! वह कौन!" मैं एक दम चिल्ला उठा और सरितासे कहा प्रिये मुझे बचाओ बहुत भय होरहा है। वह एक दम उठी और लैम्प जलाकर मकान में चारों ओर देखने लगी किन्तु कुछ भी दिखाई नहीं दिया, तब वह कहने लगी कि धन्यवाद! पुरुषों को इतना ही साहसी होना चाहिये जो अकारण ही डर बैठें। मैं लज्जित सा होगया।

यह कहते कहते सत्येन्द्र बाबू कुछ समय के लिये चुप हो गये। तत्पश्चात् बोले, जब मेरा चित्त घर पर नहीं लगा तब हम दोनों कुछ दिनों के लिये पूरब चले गये। एक दिन हम घूमते घूमते बहुत दूर निकल गये, जब हम बहुत थक गये तो एक सरोवर के निकट बैठ कर वार्तालाप करने लगे। मैं सरिता के मुख की ओर देख रहा था किन्तु अहा! चन्द्रमा के प्रकाश में सरिता कितनी सुन्दर मालूम होती थी, मानो सौन्दर्य्य का जन्म स्थान यही है। मैं उसकी सुन्दरता पर दीवाना होकर उसका मुख चुम्बन कर बैठा। उसी समय एक बहुत ही भयानक ध्वनि किसी के रोने की आई। मैं घबरा गया और विस्मय से इधर उधर देखने लगा तो क्या देखता हूँ कि यह ध्वनि एक जंगली कीड़े की थी जो कि हमारे पत्थर पर बैठ जाने के कारण दब कर चिल्ला रहा था।

दो माह तक हम वहीं रहे, तत्पश्चात् घर आ गये। यह कहते कहते फिर सत्येन्द्र बाबू कुछ क्षण के लिये चुप हो गये और उठ कर बाहर घूमने लग गये। एक घण्टे बाद फिर घर में आकर कहने लगे कि एक समय मैं और सरिता उसी पुरानी वाटिका में घूम रहे थे, कि अनायास ही प्रिय सरिता के पैर में एक दुष्ट कांटा लग गया और वह व्याकुल होकर उसी शिला पर लेट गई जिस पर कि कभी मेरी पतिव्रता सतीसाध्वी मृणालिनी मेरे साथ बात करने को तथा थकावट उतारने को बैठा करती थी। मैं उसके पास बैठ गया। मेरे हृदय में एक प्रकार की द्वपाग्नि जल

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

रही थी। कारण यह शिला उस देवी के लिये रखवाई गई थी, जो मुझे प्रत्येक समय प्रसन्न रक्खा करती थी। मैं सोचने लगा कि वही वृद्धारात्रि है, वही पुराने साक्षी तारागण हैं और चन्द्रदेव तो केवल अपना प्रकाश मेरे ऊपर इसी लिये डाल रहे हैं कि इस दुष्ट को इसकी दुष्टताई का का स्मरण तो करादूँ किन्तु हा! इस शिला पर शयन करने वाली देवी कोई और ही है। यह विचार आते ही हृदय पिघल गया किंतु दिल मसोस कर रह गया। करता भी क्या, इसे छोड़ कर कोई अन्य उपाय था ही नहीं।

लगभग एक घण्टे पश्चात् मेरा चित्त कुछ शान्त हुआ और मैं अपना मन उस देवी की ओर लगाने लगा जिसके ऊपर वर्त्तमान समय में मेरा जीवन अवलम्बित था—क्रमशः मैं उसकी सुन्दरता निरीक्षण करने में इतना रत हो गया कि तन बदन तक की सुध न रही। उसी समय पूर्व दिशा से एक बहुत भयानक हास्यध्वनि आकर पुनः आकाशमार्ग को चली गई। मैं हाय करके अचेत होगया। जब मैं चैतन्य हुआ तो अपने को मकान में चारपाई पर सरिता के निकट लेटा पाया। सरिता मुझसे पूछने लगी कि आपको क्या हो गया था? भय किस किस बात का? वह तो एक पक्षियों का झुण्ड था जो पूर्व दिशा से पश्चिम दिशा को जा रहा था। किन्तु हा! मुझे विश्वास होता कैसे? मैं तो ईश्वर तथा मृणालिनी के सामने दोषी था। मैं रो रो सरिता को अपनी दुःखमयी कहानी सुनाने लगा और कहने लगा कि हाय! वे पक्षी नहीं थे वह तो चन्द्रदेव तथा तारागणों का मेरी असत्य बातों पर उपहास था या शायद आकाश मेरी नीचता को देखकर रो रहा था हाय! अब मैं अपना शेष जीवन कैसे बिताऊं? मेरी मतवाली बातों को सुनकर वह भी रोने लगी किन्तु मैं उसे धैर्य्य देने में अपने को असमर्थ पाता था। दूसरे दिन मैंने सरिता को एक कमरे में मरा हुआ पाया। कारण मेरी क्षुद्र बुद्धि समझ न सकी। परन्तु हां, एक कागज के टुकड़े पर इतना लिखा हुआ अवश्य देखा कि नाथ! क्षमा कीजिये जिस प्रकार आपने उस प्रेममयी मूर्त्ति को इतने अल्प समय में भूलकर दूसरी लड़की को लाकर दुःख दिया उसी प्रकार आप मुझे भी अल्प समय में भूल जाएंगे। मुझे पुरुषों पर लेशमात्र भी विश्वास नहीं।" सो डाक्टर साहब! मुझे बीमारी इत्यादि कुछ नहीं केवल इन्हीं लोगों के स्मरण ने मेरी यह विचित्र दशा बना दी है।

कहानी समाप्त होते २ प्रातःकाल के सब लक्षण दिखाई देने लगे। सत्येन्द्र बाबू उठकर अपने घर चले गये और मैं भी लैम्प बन्द करके अपने नित्य कार्य में लग गया।

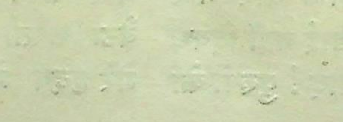

विरह-वेदना

(प्रेमांकुर)

(लेखक—श्रीयुत पं० राजनारायण चतुर्वेदी 'आज़ाद')

काल श्रोत में कितने तृण भासमान होगये। कौन जानता था कि उन के समवाय में कोमल मृत्तिकास्तर सलिल राशि भेद कर उठेगी। वही नवनीत तुल्य स्तरोपरि वायुविक्षिप्त बीज निपतित होकर किसी समय में वृक्षाकार में परिणत हो जायेंगे। एक दिन वही स्थान अपूर्व शोभा से शोभायमान हो उठेगा। परिवर्त्तन श्रोत में प्रकृति नित्यप्रति उल्लासित होती है—यही सब सोचते २ हृदयमुग्ध हो जाता था।

आकाश में कितने मेघ आये एक गया तो उस के स्थान पर दूसरे ने अधिकार जमा लिया। सहसा उनका सम्मिलन होगया। क्रमशः उसी सम्मिलन द्वारा स्निग्ध वारिधारा ने भूमण्डल पर निपतित होकर उत्तप्त भूमि को शीतल कर दिया। अहा! यह परिवर्त्तन कितना मनोहर है।

भीषण मरुभूमि पर नेत्रों को तृप्त करने का कोई साधन न था। अनन्त बालुकाराशि के सिवाय और कुछ दृष्टिगोचर न होता था। सहसा उसी के निकट श्यामल दूर्वादल अङ्कुरित हुआ। तरुलता व फलफूल से सुसज्जित हो वही मरुभूमि नेत्रों को अपार तृप्ति प्रदान करने लगी। इसी प्रकार परिवर्त्तन वैचित्र न होने से प्रकृति में इतनी शोभा माधुरी कहां से आती?

मैं ने बाल्यकाल में कितने ही खेल खेले हैं। बालू की भीति उठा गढ़ प्रस्तुत किया—किन्तु कहां? कोई भी तो स्थायी न रहा। काल ने किसी का चिन्ह मात्र भी विद्यमान रहने न दिया। हृदय में कितने भाव जलबिन्दु की नांई उठ कर विलीन हो गये। भाव का समावेश कभी भी हृदयकन्दरा से अमृतरूपी वारिधारा प्रवाहित न कर सका। भावहीन हृदय में केवल सरलता रूपी समीर बही किन्तु कल्पना वैचित्र कभी शोभायमान न हुआ। चञ्चलता की आंधी ने गम्भीरता के बीज को अङ्कुरित तथा कवित्वकुसुम को विकसित न होने दिया। शून्य हृदय से तृण के समान कालश्रोत में भासमान होने लगा

मैं निश्चिन्त मन से स्वार्थपूर्ण कुटीर में निद्रित था। जागृत होकर देखा, किसी ने मुझे राजराजेश्वर के वेश में सजा कर अपने हृदयमन्दिर में स्थापित कर लिया। कृतांजलि हो प्रेमानन्द में आराध्य देव की आराधना कर रहा हूं। चारों ओर शङ्खध्वनि हो रही है। सम्मुख सभी सज्जनों के मुख पर प्रीतिधारा बह रही है उसी आनन्दोच्छ्वास में निमग्न होकर अमृत का आस्वादन किया सम्पूर्ण रूप से नवजीवन को प्राप्त हुआ। सोहागरात की शुभरात्रि को मेरे जीवन नाटक का मङ्गलाचरण हुआ।

दूसरे दिन शुद्ध जल से स्नान कर पवित्र होमाग्नि के सन्मुख खड़े होकर दाम्पत्य सम्बन्ध का माहात्म्य श्रवणकर प्रतिज्ञापूर्वक वह प्रेम छवि हृदय में धारण की। हृदय मंदिर में उस मूर्त्ति को स्थापित कर शेषाग्नि में बाल्यकाल की समस्त क्रीड़ाओं की

आहुति दे प्रेम के विचित्र आगार में प्रवेश किया।

उसी दिन से कल्पनारूपी भाव राज्य में पुलकित हृदय से पदार्पण किया, उसी दिन से चराचर विश्व-व्यापक चित्तोन्मादक मधुर संगीत सुनने लगा। उसी दिन से प्रकृतिदेवी की अपूर्व शोभा पर मुग्ध हो सौंदर्य्य सागरमें निमग्न होगया, प्रतिक्षण प्रतीत होताथा मानों यमुना के प्रेम पुलिन में शयन कर रहा हूं। और उसी सुनील सुललित तरंग के मध्य से उठ कर प्रेममय श्रीहरि आनन्दकन्द वही मनोमुग्ध कारिणी मधुरमुरली बजा कर हृदय सागर में अमृतधारा प्रवाहित कर रहे हैं।

सरलतारूपी शोभा, विश्वासपूर्ण माधुर्य्य, प्रेम-मय आवेग, पवित्रतारूपी सौरभ ने कितनी बार मन को मुग्ध कर लिया। यमुना के निकुंज वन में, प्रेम सरोवर में, व्रजांगना के हृदयरूपी कोकनद में खड़े होकर मुरली मोहन, मुरली की धुन सुना प्राणोन्मत्त कर यवनिका के अन्तराल में विलीन हो जाते। उस सयम आनन्द के अथाह सागर में मग्न हो जाता, उस तृप्त धाम से निवृत होने की इच्छा न होती। कभी मन में आता कि हम दोनों कैलाश पुरी में प्रवेश कर योगधाम में योगेश्वर के पार्श्व में योगमाया का दर्शनकर विमुग्ध हो रहे हैं।

गांभीर्य्य मय ओंकार की गगन भेदी निनाद से आत्महरण होगये हैं। हर गौरी की अपूर्व मूर्ति के सन्मुख अवलुण्ठित होकर शान्तिरूपी, प्रेम पुलिन में निमग्न हो जाने की कितनी प्रार्थना करता रहा हूँ। कितनी बार प्रेम माहात्म्य का अनुसन्धान करते २ हम दोनों दंडकारण्य में उपनीत होकर अयोध्या के शाल्मलितरु के पार्श्व में मिथिलाके कोमल लतिका के अनुपम शोभा व मिलन देख कर विमुग्ध होजाते थे। अत में यह सब देखकर हमने यही निश्चय किया कि प्रेमराज्य में विषाद नहीं, सवनाश उपस्थित होने पर भी क्षोभ, दुःख एव व्याकुलता की उत्पत्ति नहीं है। इसके बाद ? इसके बाद प्रकृत प्रेम में अमृत की उत्पत्ति हुई है। उस अमृत को सुख दुख से क्या प्रयोजन ! वहां विरह, विच्छेद नहीं—प्रेम साधन में जो स्वयं सच्चिदानन्द है उसे विपर्य्य की आशङ्का क्यों ? उन्होंने ध्रुवलोक के सर्वोपरि भाग मे स्वंय राज्य स्थापन किया है। पतनकी सम्भावना नहीं है।

क्रमशः मैं यह महान् सत्य परिग्रह करता रहा। उसका आभास पाता रहा—साहित्य रूपी सागर में भावों की तरंग उठती रहीं उसी तरङ्ग मे मैं अब तक गोते लगाता रहा। कल्पना के बाद अनुमान, विश्वास, उसके बाद ज्ञान एवम् अनुभूति तत्पश्चात् आस्वादन शेष में महावेश—प्रेम का यह पारम्परिक सम्बन्ध विन्यास देख उसी पथ का पथिक होना निश्चय किया, उस समय जो हर्षोल्लास हृदय मे उत्पन्न हुआ था वह लेखनी द्वारा प्रकाश नहीं किया जा सकता।

पहले जिस दृश्य को देख कर मनमुग्ध हुआ था वह उसका मुखथा। पाठकगण ! यह कवि की कल्पना नहीं है—यह अतिशयोक्ति नहीं है। इस जीवन में फिर ऐसा दृश्य नहीं देखा, शरदऋतु के चन्द्रमा तथा बसन्त ऋतु की शोभा देख कर आप मुग्ध हो जाते हैं। मैं भी होता हूँ किन्तु वह तो इतना मनोहारी प्रतीत नहीं होता, दृष्टि इतनी स्थिरता से किसी ओर ताक सकती है।

यह पहले नहीं जानता था, वह बालिका थी। अर्द्ध विकसित कली थी, किन्तु उसकी

अपूर्व शोभा निहार कर आनन्द से नाच उठता था। मैं उसका स्वामी हूँ, उसका हर्त्ता कर्त्ता विधाता हूं, यह भूल जाता था। कोई भेद न रहता था और न समझ ही सकता था। ससार में एक से एक सुन्दर हैं किन्तु वह मधुरता, सरलता कदाचित् किसी म नहीं।

मधुर, सरल कंठवाली पिकबयनी, संगीत को परास्त कर सकती है, कौन जानता था प्रेमपूर्ण सुमिष्ट मुख से निकले हुये दो शब्द मानों कानों में सुधावर्षण करते थे। केवल संगीत ही नहीं वरन् शत् शत् काव्य को भी परास्त कर सकते हैं, यह उस समय ही समझा। एक दिन रात्रि के समय शकुन्तला का काव्य पढ़ रहा था, भाषा व भाव के मनोहारित्व में डूब रहा था, ऐसे ही समय तुमने पार्श्व में बैठ कर सुमधुर कण्ठ से दो शब्द सुना दिये थे। वह दो शब्द सुन कर मन इतना आकृष्ट हुआ कि और अधिक शकुन्तला का पाठ न कर सका–एक ही रात्रि क्यों! कितने ही वर्ष आये और चले गये किन्तु तुम्हारे दो शब्द शेष न हुये। मेरी भी सुनने की इच्छा कम न हुई! काव्यमयी! तुम्हारा हृदय मानों अनन्त काव्य का आगार था। उसी के द्वारा कितनी ही बार हृदय में भावना की लहर उठ कर मुग्ध कर दिया करती थी। तुम्हारे साथ प्रेमालाप करके जो आनन्द प्राप्त होता था इसका कारणमात्र भी इस जीवन में नहीं मिल सकता।

स्वर्ग की पवित्र सुललित मन्दाकिनी को बहते हुये किसी ने नहीं देखा। अमृत-धारा कभी प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर नहीं हुई, नन्दन कानन के पारिजात नामक पुष्प को खिलते हुये किसी ने नहीं देखा, किन्तु जिस समय से प्रेममयी को हृदय में धारण किया उसी क्षण सब कुछ एक २ कर दृष्टि के सन्मुख आ उपस्थित हुये। इतना ही नहीं बल्कि उसी पुष्प की माला कंठ में धारण कर प्रेम नदी में अवगाहन करके अमृत की बूंद का आस्वादन किया। हृदयेश्वरी तुम्हारे संसर्ग से मैंने क्षुद्रातिक्षुद्र होकर भी स्वर्गीय सुख का उपयोग किया। तुमने मुझे अमरत्व को पहुंचा दिया।

प्रेममयी! जिस समय मैं रोग शय्या पर पड़े २ रोग की यंत्रणा से छटपटा रहा था, उस समय तुम्हारी अतीत सेवा और असीम यत्न पाकर समस्त दुःख क्लेश भूल गया। पीड़ा प्रबल होने पर जिस समय तुम व्याकुल होकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से शय्या के पास बैठकर भगवान् से मेरे लिये मंगल कामना करतीं थीं एवं भूमिष्ठ हो भगवान् को कातर वाणी से पुकारती थीं उस समय निर्बल हृदय में कितना बल और साहस हो आता था, उसका अन्दाज़ा क्षुद्र लेखनी द्वारा नहीं लगाया जा सकता।

समाज में कितना ही मान सम्मान क्यों न हो–पत्नी की सहायता बिना संसार संचालन का और कोई सुगम उपाय नहीं है कितनी ही आशा व उत्साह से हृदय परिपूर्ण क्यों न हो किन्तु समय २ पर निराशा का भाव आकर हृदय को व्यथित कर देता है। जीवन भार स्वरूप जान पड़ता है, ऐसे ही समय स्त्री की सच्ची सहानुभूति, सांत्वना एवं उपदेश की आवश्यकता होती है।

संसार रूपी कर्मक्षेत्र में कठोर साधना के निमित्त स्त्री रूपी प्रकृति को उत्तराधिकारी के रूप में पाया था, इसी से समस्त विघ्न बाधाओं को अतिक्रम करके उन्नति के पथ

CC0. Gurukul Kangri Collection

पर क्रमशः आगे बढ़ रहा था, मेरे अहोभाग्य थे कि ऐसी सर्व गुण सम्पन्ना पत्नी का पाणि-ग्रहण करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था

आज प्रेम राज्य में चिंतानल प्रज्वलित कर उसी के समीप बैठा हुआ हूं आज मुझ सा अभाग्य कौन है? बीज अङ्कुरित होने के पूर्व ही नष्ट हो गया—कुसुम विकसित होने के पूर्व ही मुरझा कर गिर गया। आज उसी अमङ्गलकारी राज्य में बैठा हुआ रुदन कर रहा हूँ, साधना असम्पूर्ण होकर ही रह गई, वासना अतृप्त होकर ही रह गई—सुख का स्वप्न टूट गया। क्षोभ दुःख एवं अनुताप की अग्नि में दग्ध हो रहा हूँ।

सुख स्वप्न देखने के बदले यदि मरु भूमि में तड़फ २ कर मर जाता तो आज इन आंखों से यह मरीचिका तो न देख पड़ती प्रेमिक होने से यदि अप्रेमिक होकर रहता तो कदाचित् आज शान्तिपूर्वक जीवन निर्वाह कर सकता। उस प्रेम सुधा को पीकर द्विगुण पिपासा से मन छटपटा रहा है। साधना के पथ पर जाकर लाभ क्या हुआ? विघ्न, क्षोभ-एवं दुःख! मेरे पक्ष में वह सुमधुर संगीत ध्वनि न सुनना ही श्रेयस्कर था। यदि जन्म से ही नेत्रहीन होता तो आज उस मुख के लिये इतना व्याकुल न होना होता।

अभाव बोध की अपेक्षा प्रत्याशी न होना सहस्र गुण अच्छा है। आज उसी अभाव के कारण मेरी यह दुर्दशा है।

(शेर फिर)

\+ \+ \+

कुसुमोद्यान

इङ्गलैंड में भिक्षावृत्ति।

इटली के बाजारों में भिखारियों को खुल्लमखुल्ला भीख मांगते देखा तो सोचा कि योरोप में भी क्या भिक्षावृत्ति प्रचलित है? सम्भवतः इङ्गलैंड को छोड़ कर और कहीं इसका निषेध नहीं। इङ्गलैंड पहुंच कर मालूम हुआ कि वस्तुतः यहां भीख मांगने का प्रचार नहीं, किंतु धीरे २ लन्दन से परिचित होने लगा तो यहां के भीख मांगने के विचित्र ढंग विदित हुये, सड़क के किनारे जो पैदल चलने वालों के लिये पेवमेंट फर्शदार सड़क है, उस पर एक आदमी रंग बिरंगे चौक के आदमियों व औरतों की, महाराजाओं की, प्राकृतिक दृश्यों की तस्वीरें बनाये बैठा है और कहता है कि स्टूडियों में ही नहीं वरन चाहे जहां चाहूँ मिनटों में तस्वीरें बना सकता हूँ। किंतु यह चित्रकलानिदर्शन नहीं है, यह भिक्षा का अद्भुत ढंग है। इन धुरन्धर चित्रकार महाशय के पास एक 'मैला टोप' भी उलटा हुआ रखा रहता है जिससे कभी २ आते जाते स्त्री पुरुष पेनी फेंक देते हैं।

इसी भांति कहीं कहीं पेवमैन्ट पर गायनाचार्य बैठे रहते हैं और अपने 'बेला' इत्यादि बाजों से जनता को कर्णामृत दान करते रहते हैं, पर वही 'एक मैला टोप' इन के पास भी पड़ा रहता है।

एक और ढंग यह है कि कुछ स्त्री पुरुष छोटी २ वस्तुयें प्रायः दियासलाई के बक्स बेचने को सड़क में खड़े रहते हैं आते जाते जानकार आदमी उन्हें एक दो पैनी देते हैं। वे बदले में दियासलाई का बक्स या और कोई छोटी-चीज़ बढ़ाते हैं, उस समय यहां के नियमानुकूल हमारा धर्म है कि उस वस्तु को धन्यवादपूर्वक लौटा दें। 'No Thanks,' बेचारा कोई नया अनजान आदमी साधारण सी बात समझ कर बक्स को ले जेब में डालता है, और उस सभ्य भिखारी की घृणा तथा आस पास के चलते फिरते आदमियों के ठट्ठे का पात्र होता है।

(प्रभात)

इन्दौर के दिगम्बर जैनी

इन्दौर के दिगम्बर जैन खण्डेलवाल स्वयंसेवक मंडल ने इन्दौर के जैनियों की गणना करके नीचे लिखा ब्यौरा प्रकाशित किया है:—

	विवाहित	अविवाहित	विधवा व विधुर	योग
पुरुष	५८७	६४७	१३२	१३६६
स्त्री	५४६	२७६	३३२	११६०
योग	११३६	६२६	४६४	२५२६

इन ब्यौरों के सम्बन्ध में अजमेर का सहयोगी जैन जगत्' लिखताहै कि "इन अङ्कों से ज्ञात होता है कि २५२६ स्त्री पुरुषों में से कुल ११३६ विवाहितहैं। अविवाहितों में ६४८ पुरुष और २७६ स्त्रियां हैं। विधुर पुरुषों की संख्या १३२ है। इस प्रकार विवाह के लिये उमीदवार पुरुषों की संख्या ७७६ है। विवाह योग्य (अविवाहिता) कन्यायें कुल २७६ हैं, यानी ५०० पुरुषों के लिये विवाह का कोई साधन नहीं है।" विवाह योग्य स्त्रियों की कमी का कारण सहयोगी ने बालविवाह, वृद्धविवाह व कन्याविक्रय आदि बताया है और इस अवस्था में कन्याविक्रय क्योंकर होता है इस सम्बन्ध में सहयोगी लिखता है कि "जब समाज में लड़कियों की इतनी कम संख्या है और विवाह के इच्छुक पुरुष उनसे प्रायः तिगुने हैं तो यह स्वाभाविक है कि हम में प्रतिस्पर्धा हो और वृद्ध धनवान लोग लड़कियों के दाम देकर लोभी और नीच प्रकृति वाले माँ बापों को अपने फंदों में फंसा लें और सामान्य स्थिति के युवकों को यों ही अविवाहित रहने के लिये बाध्य करें। इस प्रवृत्ति को रोकने के लिये सहयोगी उन साधनों को काम में लाने के लिये ज़ोर देता है जिससे वृद्धों की छोटी २ बालिकाओं को क्रीतदासी बनाने का साहस हो न हो सके और इस सम्बन्ध में किसी भी छोटे अथवा बड़े का लिहाज न किया जाय। इसी प्रकार वह विधवाओं के सम्बन्ध में लिखता है कि "विधवाओं की संख्या कुल स्त्रियों की संख्या से २९ प्रति शत है। इन के लिये न तो एकान्त में धर्म, ध्यान व आत्मकल्याण करने का कोई साधन है और न हमारे गृहस्थाश्रम में रहन सहन, भोजन वस्त्र आदि की ऐसी कोई व्यवस्था है जिससे इस कलिकाल में सुगमतापूर्वक अपने चरित्र को विशुद्ध रखसकें। उसके विपरीत हम लोग बराबर उन के लिये ऐसे २ साधन खड़े कर रहे हैं जिससे उनके पतन में सहूलियत हो, और उस पर भी यह आशा रखते हैं कि वे आदर्श वैधव्य धर्म और पातिव्रत का पालन करती रहें। इधर तो उनके रहन सहन आदि की यह बिगड़ी हुई व्यवस्था है और उधर अत्याधिक संख्या में कुंवारे और रंडुवे पुरुषों का होना फलतः यह एक दूसरे को व्यभिचार प्रवृत्ति में मदद देते हैं और समाज का भयानक नैतिक पतन होता है।

यह अवस्था अकेले इन्दौर के जैनियों

CC0. Gurukul Kangri Collection

की ही नहीं है किन्तु थोड़ा कम अधिक करके सारे ही मारवाड़ी समाज की यही हालत है बाल, वृद्ध बेजोड़ एवं (एक पत्नी के मरने पर दूसरा, तीसरा इत्यादि) बहु विवाह इसी अवस्था को पैदा करने वाले हैं। विधवाओं और कुवारों की संख्या इसी प्रकार दिन पर दिन बढ़ रही है। रुई के ढेर को आग के पास रख कर समाज उसे भस्म होने से बचाना चाहता है। यह कैसे हो सकता है? समाज के लिए यह समस्या जीवन मृत्यु का प्रश्न है। फिर भी आश्चर्य है कि कि समाज इस ओर से बहुतही अधिक उदासीन है। यही उदासीनता समाज को नैतिक पतन के गहरे गढ़े में गिराकर मृत्यु की ओर लेजा रही है। क्या अब भी समाज सावधान न होगा।

मल विसर्जन

'मल विसर्जन' के केवल सुनने से ही बहुतों को घृणा पैदा होगी और बहुत से यह कहने लगेंगे कि इस विषय को इस पत्र में स्थान न मिलना चाहिये था। किन्तु मेरी समझ में ऐसा विचार करना भारी भूल है। इस विषय की ओर ध्यान न देने के कारण ही तीन चौथाई मनुष्य नाना प्रकार की शारीरिक और मानसिक व्यथाओं से पीड़ित हो रहे हैं।

मुंह से लेकर पाखाने के रास्ते तक एक बड़ी नली चली गई है, उसी के द्वारा हम भोजन ग्रहण और विसर्जन करते हैं। मुंह में डाला हुआ भोजन पहिले मेदे में गिरता है। वहां से वह फिर छोटी अन्तड़ियों में जाता है। छोटी अंतड़ियों में पाचनक्रिया पूर्णरूप से हो जाती है और यहीं पर भोजन पेषकद्रव्य बनकर खून में मिल जाता है। शेष बचा हुआ मल एक कूटद्वार से (trap-door) बड़ी अंतड़ियों में धीरे धीरे जाती है और वहां से गुदा के रास्ते वह फिर बाहर निकल जाता है।

प्रत्येक मनुष्य को दिन में दो बार शौच अवश्य जाना चाहिये। एक तो प्रातः और दूसरे सायङ्काल। प्रातःकाल चारपाई से उठते ही और सायङ्काल क़रीब ४ या ५ बजे। शहरों में लोग बने हुए पाखानें में शौच जाते हैं और देहातों में हवादार खुले मैदानों में। खुले मैदान में शौच जाना अत्यन्त लाभदायक है॥

शहरों के घरों में प्रायः एक पाखाना होता है। उसी में घर भर के प्राणी पाखाना फिरते हैं। इसलिये पाखाने का स्थान बड़ा गन्दा हो जाता है। कई व्यक्तियों के पेशाब और पाखाने से उनमें से निरन्तर दुर्गन्ध निकला करती है। यदि भङ्गी ने कहीं साफ़ न किया तो यह दुर्गन्ध और भी अधिक बढ़ जाती है। उससे केवल पाखाने जाने वाले ही को कष्ट नहीं होता, किन्तु कभी २ घर भर के सब प्राणियों को तकलीफ़ होती है।

पाखाने से हवा के साथ कीटाणु उड़ते रहते हैं! ये कीटाणु श्वास के द्वारा शरीर के भीतर जाकर हानि पहुँचाते हैं। एक ही पाखाने में जाने वाले मनुष्यों की प्रकृति प्रायः भिन्न होती हैं। उनमें से बहुत से रोगी

हो सकते हैं। अतएव उनके मल के कीटाणु उनको तो हानि पहुंचाते ही हैं किन्तु दूसरे तन्दुरुस्त प्राणियों को भी रोगी बना सकते हैं।

ग्रामीण लोग बाहर खुले मैदान में पाखाना जाते हैं। उन को किसी प्रकार की दुर्गन्ध का कष्ट उठाना नहीं पड़ता। एक व्यक्ति के दूषित कीटाणु भी दूसरे को हानि नहीं पहुंचा सकते। पाखाना साफ़ होता है, निरन्तर उन्हें प्रकृति प्राणप्रद वायु (oxygen) मिलता रहता है। परिणाम यह होता है कि खुला पाखाना होने से उनका स्वास्थ्य साधारणतया अच्छा रहता है।

शहर के रहने वालों को अपने पाखानों की व्यवस्था बदलनी चाहिये जो लोग शहर के बाहर पाखाने जा सकते हैं। उन्हें तो पाखाने बाहर ही जाना चाहिये जो नहीं जा सकते उन्हें अपने घर में ही कम से कम दो पाखानों का प्रबन्ध करना चाहिये। एक औरतों के लिये और दूसरा पुरुषों और बच्चों के लिये। यदि घर में स्त्री और पुरुषों की संख्या अधिक है। तो दो से भी अधिक पाखानों की व्यवस्था करनी चाहिये। पाखाने खूब साफ़ हों, उनको रोज़ धुलाया जाय, और फ़िनाइल छिड़का जाय। भङ्गी को ताकीद कर दी जाय कि दो तीन बार पाखाने को साफ़ कर जाया करे।

देहात के लोग बाहर पाखाने जाते तो हैं किन्तु प्रायः वे किसी तालाब के किनारे जाते हैं और उसी तालाब में आबदस्त लेते हैं। परिणाम यह होता है कि वहां दुर्गन्ध फैलने लगती है, और तालाब का पानी दूषित हो जाता है। उसी दूषित पानी को ग्राम के पशु पीते हैं, और उसी में ग्राम के बहुत से स्त्री पुरुष स्नान करते हैं इससे पशुओं और ग्रामवासियों के स्वास्थ्य को हानि पहुंचता है। अतएव देहात से थोड़ी दूर खेतों में ग्रामीण भाइयों को शौच जाना चाहिये।

महात्मा गांधी ने अपनी पुस्तक 'आरोग्य दिग्दर्शन' में बाहर पाखाना जाने वालों से अनुरोध किया है कि वे एक गड्ढा खोद कर खेत में पाखाना जायँ और शौच होने के अनन्तर उसे मिट्टी से पूर दिया करें। यह सिद्धांत वास्तव में बड़ा महत्वपूर्ण है, जो लोग इसका पालन कर सकते हैं वे अवश्य करें। ऐसा करने से पाखाने की दुर्गन्ध फैलकर इर्द गिर्द के वायु को दूषित न करेगी और वह गड़ा हुआ पाखाना खाद का काम करके खेतकी पैदावार में भी अधिक सहायता देगा!

सब काम छोड़कर पाखाना नियत समय पर जाना चाहिये। उसे कदापि रोकना नहीं चाहिये। किंतु प्रायः देखा जाता है कि काम अधिक होने के कारण अथवा यों ही मित्रों के साथ विनोदपूर्ण बातचीत करने के कारण पाखाने जाने में देरी हो जाती है। देरी होने से पाखाने की इच्छा बन्द हो जाती है और पाखाना बड़ी अन्तड़ी के बाजुओं में कड़ा होकर चिपट जाता है। यदि यही क्रम जारी रहा तो निरन्तर मल चिपटता रहता है और पाखाने का स्वाभाविक रास्ता छोटा पड़ जाता है और उसमें से जितना नया मल निकलना चाहिये नहीं निकलता; वह बाजुओं में लगता जाता है। अन्त में मनुष्य को कब्ज़ (बद्ध कोष्ठ) हो जाता है ठीक समय पर पाखाने न जाने से बद्धकोष्ठ तो होता ही है, किन्तु इसके अतिरिक्त और भी दूसरे कारण हैं। जो आलस्यवश केवल एक बार पाखाना जाते हैं, वे प्रायः कब्ज़ के शिकार

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

होते हैं। काफ़ी पानी न पीने और मसालेदार भोजन से भी कब्ज़ होता है। वीर्य्य का अधिक नाश करने से भी पाचनक्रिया खराब होकर कब्ज़ियत पैदा कर देता है। व्यायाम के अभाव से भी कब्ज़ की सम्भावना हो सकती है। कहने का तात्पर्य यह है कि जिन साधनों से अनपच होता है वे सब कब्ज़ के उत्पन्न करने वाले कारण कहे जा सकते हैं।

अमेरिका के प्रसिद्ध डाक्टर टर्नर ने २८४ मनुष्यों की मृत्यु का कारण बतलाते हुये कहा है कि उनमें से २८ मनुष्यों को छोड़कर बाकी सब कब्ज़ की बीमारी से मरे उनकी बड़ी अंतड़ियां फाड़ कर देखी गईं तो मालूम हुआ कि वे पत्थर की तरह कठिन हो गई हैं और उनमें सूखा काला मल भरा हुआ है, अतएव यदि हम बद्धकोष्ठ को सब बीमारियों का कारण कहें तो इसमें कुछ अनुचित नहीं है।

बड़ी अंतड़ियों में संचित मल विषमय होने के कारण शरीर भर को अहितकर होता है; रोगोत्पादक कीड़े उसमें पड़ने लगते हैं और उनकी संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती जाती है। कीड़े फैल कर शरीर भर में दौड़ने लगते हैं और फिर मलेरिया, मन्दाग्नि, पित्त प्रकोप और नाना प्रकार के स्पर्श जन्य और मूत्र सम्बन्धी रोग उत्पन्न होने लगते हैं अतएव प्रत्येक मनुष्य को कब्ज़ से बचना चाहिये।

वनिता विनोद

स्त्री जगत्

१८ नवम्बर को बम्बई में कई एक स्त्री सभाओं की ओर से एक सार्वजनिक सभा हुई जिस में श्रीमती सरोजिनी नायडू को अभिनन्दन पत्र दिया गया। उसके उत्तर में देवी सरोजिनी ने कहा कि स्त्रियों को भारत की भिन्न २ जातियों में शान्ति स्थापन करने के कार्य में सहयोग देना चाहिये।

——

सारे पंजाब में जहां साक्षर पुरुषों की संख्या ८ लाख ८२ हज़ार लगाई जाती है वहां साक्षर स्त्रियों की संख्या केवल ८५ हज़ार है। स्त्री शिक्षा में पंजाब अभी बहुत पीछे है अतः पंजाबी देवियों को इधर अधिक ध्यान देना चाहिये।

——

कन्यागुरुकुल का उत्सव

कन्या गुरुकुल का उत्सव इस वर्ष बड़ी धूम धाम से हुआ। यद्यपि बहुत पहिले से इस के लिये आन्दोलन नहीं किया जासका था तथापि स्त्रियों की उपस्थिति अत्यधिक थी। रात्रि को भी स्त्रियां सम्मिलित होती रहीं लगभग १६, १७ हज़ार के दान एकत्र हुआ। श्रीमती सरला देवी जी का संस्कृत भाषण बड़ा प्रभाव शाली था।

आर्य नारी सम्मेलन

इस वर्ष आर्य नारी सम्मेलन को जो सफलता हुई वह अदृष्ट पूर्व थी। स्त्रियों के झुण्ड के झुण्ड आते थे और वह बड़े ध्यान से व्याख्यान, भजन सुनती रहीं। ब्रह्मचारिणियों ने संस्कृत में गान किया, खेलें दिख-

लाई। चर्खादंगल भी हुआ। चर्खे में सब से प्रथम कन्याको एक सुमनोहर चर्खा पुरस्कार दिया गया, द्वितीय को पुस्तकें। राजपूत इतिहास में सब से प्रथम उत्तीर्ण को रा० लक्ष्मण स्वरूप जी की माता की ओर से पुरस्कार प्रदान किया गया।

कई देवियों ने घर२ घूम २ कर दान एकत्र करने में बड़ी सहायता दी तथा स्वयं भी अच्छा दान दिया। स्त्रियों के इस उत्साह प्रदर्शन के लिये हम बड़े कृतज्ञ हैं। इस से यह पता लगता है कि स्त्री जाति में भी जागृति आगई है।

कन्या गुरुकुल म ट्रेनिंग क्लास

इस वर्ष कन्या गुरुकुल को कई छात्र वृत्तियां मिली हैं जिन की सहायता से वह योग्य अध्यापिकायें तैय्यार कर सके। अतः इस वर्ष कन्यागुरुकुल में एक ट्रेनिंगक्लास खोला गया है जिस में आर्य्य भाषा तथा संस्कृत की कुछ योग्यता रखने वाली देविया को और ऊंची शिक्षा देकर तथा शिक्षण-कार्य्य की शिक्षा देकर अधिक उपयोगी बनाया जायगा। प्राज्ञ, विशारद, मध्यमा आदि उत्तीर्ण या उतनी ही योग्यता वाली देवियों को २०) मासिक तथा हिन्दी प्रभाकर विदुषी, विनोदिनी आदि परीक्षा की योग्यता वाली देवियों को १०) मासिक छात्र वृत्ति दीजायगी।

अधिकारिणी देवियें को शीघ्र प्रार्थना पत्र भेजने चाहिये।

सिंध में एक पत्नी व्रत

सिंध के एक सज्जन ने एक पत्नीव्रत को कानून बनाने का बिल पेश किया है। स्त्री जाति को इन महानुभाव का बड़ा कृतज्ञ होना चाहिये कि इन्होंने स्त्रियों के ऊपर सब से बड़ा अत्याचार हटाया और पुरुषों के चरित्र का सब से बड़ा कलंक धोया है।

परदे से मृत्यु

कलकत्ते के हेल्थ आफिसर डा० क्रेक ने अपनी १९२३ की वार्षिक रिपोर्ट में यह बताया है कि १५ से २० वर्ष तक की आयु वाली कन्यायें क्षयी रोग से लड़कों की अपेक्षा अधिक मरती हैं क्योंकि परदे की कैद में स्वच्छ वायु नहीं मिलती घने बसे हुये शहरों की गलियों में नालियों की गन्द स्वास्थ्य घातक होती है फिर बन्द जनाने कमरे जहां खिड़की भी नहीं होती शुद्धवायु के प्रवेश को रोकते हैं। देवियों को इस से शिक्षा लेनी चाहिये।

——

इंगलैंण्ड में विधवाओं की सहायता

विलायती सरकार ने विलायत से यह कानून पास कर दिया हैं कि जिन विधवाओं के १४ वर्ष से कम आयु वाले लड़के हों उन्हें प्रति सप्ताह १० शिलिंग (लग भग ६ रु० ८ आ०) तथा जो अनाथा हों उन्हें ७ शिलिंग ६ पेन्स दिया जावे।

———

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

(रचयिता श्री पं० बलवन्त मिश्र "हिन्दी आनर्स" मॉडरन स्कूल, दिल्ली ।

तब जग का होगा उद्धार *

नारी रत्न बनेंगी गुण से पूरित परम उदार ।
चरित्रवती पति प्रेम परायण सहृदय सभी प्रकार ।
पर दुख निज दुःख सम नित जानें सब जग निज परिवार ॥
अनुसूया, सीता सावित्रिहिं क्या था हृदय हज़ार ।
नहिं नहिं उनके एक हृदय थे उज्वल चरित अपार ॥
"कन्या गुरुकुल" कुल ऋषि का है जानो यह निर्धार ।
होहु सहायक दयानन्द ! "बलवन्त" बने संसार ॥

सूचिकार यन्त्र।

ले०—श्रीयुत् निरंजननाथजी

गृह कार्यों में सूचि अर्थात् सुई सब व्योवहारिक पदार्थों में लघुतम परन्तु परमोपयोगी वस्तु है। पाठकगण! इस नन्हीसी कला से नित्य लाभ उठाते हैं। आज इस की उत्पत्ति का ज्ञान प्राप्त कर कृतकृत्य होना चाहिये।

वर्त्तमानकालिक सूचि की पूर्व कालीन बहिनें अवश्य ही भद्दी और कुरूपा होती होंगी क्योंकि उस समय रंग रूप के इतने साधन कहां थे? उस विकततनु सूचि का भी उन दिनों बड़ा मान होगा, नगरों में भी लोग ऐसे ही संभाल २ रखते होंगे जैसे आज कल भी दुर्गम स्थानों के लोग इस अप्राप्य और परमावश्यक पदार्थ को सुरक्षित रखते हैं?

चिरकाल तक सूचि का हाथों से ही निर्माण होता रहा। फौलाद के तारों को दो सुइयों के बराबर काट दोनों सिरों से घिस कर नोकदार बनाया जाता था। मध्य भाग को चपटा कर पास २ दो छेद किये जाते थे और बीच में काट कर दो सुइयां बनाई जाती थीं। फिर अग्र भाग को और छिद्र को रेती से तीक्ष्ण और गोल करके परिष्कृत और संस्कृत किया जाता था। इस प्रकार सूचिकारों को एक २ सूचि पर बड़ा परिश्रम करना पड़ता था। व्यय को न्यून करने के हेतु छोटे २ बच्चों से छिद्र करने आदि का काम लिया जाता था।

यह समझना भूल है कि सूचि ढाल कर बनाई जाती है। बड़े २ चक्रों के ऊपर तार लिपटी रहती है यह तार एक यंत्र में प्रविष्ट होकर सीधी हो जाती है उसी में वह एक २ इंच के टुकड़ों में विभक्त हो जाती है। उसके साथ ही साथ दो उंगली वाले हाथ के द्वारा बेलन चक्की में पहुँच जाती है यह बेलन इन टुकड़ों को ज्योड़ा कर देता है। यह टुकड़ा इस प्रकार पतला हो जाता है परन्तु एक सिरे पर छोटासा भाग असली मोटाई में रखा जाता है फिर छोटी २ उंगलियां इन नन्हीं सी जानों को इस यन्त्र से निकाल एक बक्स में इकट्ठा कर देती हैं।

चलायमान कला इन छोटे टुकड़ों को इस बक्स में विश्राम नहीं करने देती इस में से रेखा करनी यंत्र में भेजती है। व्यवस्थित योद्धाओं की तरह एक एक २ टुकड़ा आगे बढ़ता है और छोटे छोटे हाथों में इनका स्वागत होता है। दो छोटी उंगलियां टुकड़ों के मोटे भाग को पकड़ कर छेदक (यंत्र) के जोड़े की ओर उठा देती हैं इधर छेदक रेखा करते हैं उधर वह छोटा हाथ दूसरे टुकड़े के उठाने के लिये पीछे हट जाता है इसके साथ ही साथ एक जोड़ा उंगलियों का पहले टुकड़े को पकड़ छेदक से निकाल उसे एक ढालू पात्र में रख कर अलग होजाता है यहां से लुढ़क कर यह एक बक्स में जमा होते जाते हैं। यह सारा कृत्य देख कर बड़ा आश्चर्य होता है मालूम होता है मानो यह छोटे २ हाथ अपने कर्त्तव्य को खूब समझते हैं।

फिर यह अंशतः निर्मित सुइयां शिला यंत्र में पहुंचती हैं जहां आठ पेषण यंत्र होते हैं, सूईका वह किञ्चित् मोटा भाग बारी बारी से हरेक पेषण यंत्र से दबता जाता है अन्त को वह भाग चपटासा होजाता है और यह सुइयां एक दूसरे यन्त्र में पहुँच जाती हैं जहां

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

उनके ऊपर चिन्ह पड़ जाते हैं इस सारे सिलसिले में यह घूमती रहता हैं।

अब इन में छिद्र होना रह जाता है और यही मशीन की अद्वितीय क्रिया है। इस बारीक छिद्र का यथास्थान ठीक प्रमाण में पड़ना कैसा कठिन प्रतीत होता है फिर बिना हाथों की सहायता और दृष्टिपात के यह कार्य मशीन से होजाता है। पहले एक घूनने वाले पेच द्वारा एक २ सुई एक दूसरे के पास जरा हट कर लेटती जाती है। फिर दो उंगलियें इस को छिद्रक के पास लेजाती हैं जहां दूसरी दो उंगलियां जकड़ रखती हैं ताकि अप्रेशन के समय यह नन्हीसी जान कम्पायमान न हो तब सुगमता के साथ आर पार छिद्र होजाता है।

इस के पीछे न केवल परिमार्जन ही रहता है बल्कि छिद्र को साफ भी करता रहता है क्योंकि मशीन द्वारा छिद्र खुरदरा रह जाता है और धागे को काटता है इस के लिये छोटी २ लड़कियां रखी जाती हैं। यह बालिकायें ऐसी दक्ष होती हैं कि प्रायः एक दर्जन सूईयों में एक साथ धागा पिरो लेती हैं। धागा के ऊपर एक प्रकार का चूर्ण चढाया जाता है और मशीन द्वारा यह धागा छिद्र में फिर जाता हैं जिस से छिद्र की गोलाई में अन्तर नहीं होता परन्तु उसके किनारे मुलायम होजाते हैं।

सूई तय्यार तो होगई मगर लगभग दोसौ आदमी साल भर यह देखने को लगे रहते हैं कि कोई सूई कारखाने में से टेढ़ी मेढ़ी न निकले। टेढ़ी वस्तु का कौड़ी दाम नहीं होता। कहते हैं एक बहुत लम्बी मगर सीधी लकड़ी बाजार में पड़ी थी आते जाते लोग बैठ बैठ कर उसको देखते जाते थे एक भले मानस ने उस लकड़ी से पूछा कि तेरे कान में लोग क्या कह जाते हैं और तेरी क्यों प्रशंसा करते हैं वह बोली कुछ नहीं केवल सीधी हूं। सो इन दो सौ आदमियें के आगे एक छोटीसी निहाई और हाथ में हथौड़ी होती है। हरेक सूई को इस पर घुमाते हुए हथोड़ा ठोक कर सीधी करते जाते हैं। यह सीधी होकर बाहर जाती है और सब को सुख देती है।

एक मशीन कागज़ में सुइयां डाल कर पैकट तय्यार करती जाती है। पैकट खोल कर देखो सीधी सुइयां कैसे मिल जुल कर पड़ी हैं। उन में वायु का भी प्रवेश नहीं हो सकता सीधेपन की बलिहारी।

स्त्रियों का मुख्य धर्म।

(लेखक श्री० हेमराज वैद्य, एम०ए०एम०लाहौर।)

संसार में हर एक मनुष्य समूह का भिन्न २ कर्तव्य होता है किन्तु सम्पूर्ण मनुष्य समूह दो विभागों में बंटा हुआ है एक भाग पुरुष और दूसरा भाग स्त्री है स्त्री इन दोनों प्रकार के विभागों के मिलने से मनुष्य जाति बनती है इस जाति का प्रधान अङ्ग स्त्री है इसमें सन्देह नहीं कि पुरुष विभाग के बिना स्त्री विभाग वैसे ही निरर्थिक है जैसे स्त्री विभाग के बिना पुरुष विभाग अर्थात् इन दोनों विभागों का परस्पर इतना गाढ़ सम्बन्ध है कि ये दोनों परस्पर एक दूसरे का आधार हैं, एक भाग दूसरे भाग के बिना संसार में कोई पूर्ण कार्य

नहीं कर सकता है जहां कहीं। एक भाग चाहे वह पुरुष हो या स्त्री वह जो भी कार्य्य करेगा वह अधूरा होगा, उस कार्य्य में ही त्रुटी दिखाई देगी। इस लिये जहां स्त्री पुरुष मिल कर कार्य्य करेंगे वह कार्य्य स्वयं ही बतावेगा कि मैं पूर्णतायुक्त हूँ जैसे हम लोग गृहस्थ आश्रम में देखते हैं जिस गृहस्थ में दोनों रत्न मौजूद हैं वहां के आनन्द का क्या कहना है। घर व बाहिर सब कार्य्य नियमपूर्वक होते रहते हैं, संतान का पालन पोषण नियमपूर्वक होता रहता है। अपने सम्बन्धियों, सहवासियों व नगर तथा देश वासियों के साथ जो कर्तव्य होता है उसका ठीक समय पर पालन किया जाता है। पुरुष घर के बाहिर के कामों का करना अपना मुख्य कर्तव्य जान कर करता है वैसे ही स्त्री भी जहां घर के कामों को करती है तथा परस्पर एक दूसरे के कर्तव्यों को मान की दृष्टि से देखते हैं और आदर करते हैं वहां पर यह स्पष्ट दिखाई देता है गृहस्थ के दोनों अंग ही मिल कर अपनी प्रधानता को प्रगट करते हैं। ऊपर हमने बताया है, मनुष्य जाति का प्रधान अङ्ग स्त्री है और नीचे आकर दोनों को एक समान सिद्ध कर रहे हैं आपको इस से सन्देह हो सकता है परन्तु हम बताते हैं वास्तव में गृहस्थ के इन दोनों अङ्गों में से प्रधान अङ्ग स्त्री है। संसार भर के विद्वान इस बात पर सहमत हैं कि प्रत्येक जाति की सभ्यता का मूल कारण उसकी स्त्री जाति है "यथा माता तथा पुत्रः" जैसी माता होगी वैसा ही उसका पुत्र होगा पुत्रों की योग्यता तथा अयोग्यता, वीरता व कायरता, ज्ञान तथा अज्ञान, धनाढ्यानता निर्धनता आदि सब कुछ माता पर निर्भर है जाति का हर एक गुण व दोषसब का कारण केवलमात्र माता है। मातृशक्ति ही एक विचित्र शक्ति है जो निज संतान को हर प्रकार से सौन्दर्य्य युक्त बनाती है। हमारे प्राचीन शास्त्रों में माता के गुणों का वर्णन बहुत भली प्रकार से किया है। बताया है गर्भाधान से लेकर युवावस्था तक संतान को प्रत्येक अंग को सुन्दर बनाने वाली अथवा कुरूप बनाने वाली माता ही है। हम लोग प्रत्यक्ष में भी यह ही देख रहे हैं, जिन देशों की माताएं सुयोग्या हैं उनकी संतान सर्व उत्तम गुणों से सुशोभित होती हुई राज्य लक्ष्मी का आनन्द भोग कर रही है। ऐसे देशों की स्त्री जाति अपनी योग्यता से ही बता रही हैं। कि हमारी संतान विदेशी लोगों के पादाक्रांत नहीं होगी। जिन देशों की संतान परदेशी लोगों का भोग भाग बन रही है उनकी माताएं केवल प्रसव पीड़ा उठाने के कष्ट की भागिनी हैं। न वे स्वं कुछ जानती हैं और न ही निज संतान को कुछ बना सकती हैं। आज मन्दभाग्य भारत-वासियों की यह ही दशा है। इसका प्रधान कारण यह ही है कि इस देश की मनुष्य जाति का प्रधान अङ्ग स्त्री जाति उन गुणों से वर्जित है जो गुण इस जाति के प्रधानता की पदवी देते हैं; ऐसी अवस्था में प्रश्न उत्पन्न होता है, उन प्रधानता उत्पादक गुणों का अभाव हमारी स्त्री जाति में क्यों है? इस का उत्तर यह ही है कि जब से अविद्या डाकिनी ने भारत की स्त्रीजाति में से विद्या आदि सद्गुणों को भक्षण कर लिया तब से अविद्या अन्धकार ने इन को ही अपना निवास स्थान बना लिया जिसके प्रभाव से आज यह ही प्रधान अङ्ग स्त्रीजाति प्रधानता को खोकर यहां तक अधो गति को प्राप्त हो गई है कि इसके पुत्र ही इसको अपना अङ्ग स्वीकार करने के स्थान में पशु-ओं से भी गिरा हुआ मानते हैं और इनके

विषय में कोई सत्कार भाव न रखते हुए पांव की जूती के तुल्य समझते है, पांव की जुती के समान स्त्री जाति को केवल कथन मात्र से ही नहीं प्रत्युत कर्तव्य में भी ऐसा ही समझते हैं। पंजाब देश में यह रवाज है जब कभी स्त्री की मौत होजाय उसके ग्यारवें या तेरवें दिन पांव में नई जूति डाल लेते हैं जिस से प्रगट करते हैं पुरानी जूती के समान स्त्री चली गई। अब हम नई जूती पहनते हैं। हा !!! शोक आज इस जगत्जननी शक्तिशालिनी मातृशक्ति का यह अपमान हो रहा है। जिस देश की यह अवस्था है क्या उसके नाश होने में कोई सन्देह रह जाता है? कभी नहीं, यह तो बहुत छोटी सी बात है। जो पुरुषों की ओर से प्रत्यक्ष रूप में स्त्री जाति के अपमानार्थ की जाती है इसके अतिरिक्त सैकड़ों प्रकार के ऐसे २ भयानक अत्याचार पुरुषों की ओर से स्त्रियों पर किये जाते हैं जिनको सुनकर हृदय कम्पायमान हो जाता है ऐसी दशा में क्या भारतवासी लोग सुख के भागी बन सकते हैं?

प्यारी बहनों हमने जो कुछ आप को बताया है आप इन बातों को हमसे अधिक जानती हैं क्योंकि आप में से कई हैं जो ऐसे दुःखों को भोग रही हैं तथापि हमारी सम्मति है पुरुष चाहे कुछ भी पाप करें उस पर किंचित्मात्र भी ध्यान न देते हुए इस समय स्त्री जाति का मुख्य कर्तव्य है कि अपने आप को भारतवर्ष की मनुष्य जाति का प्रधान अङ्ग सिद्ध करने के लिये अपने मुख्य कर्तव्य का पालन करें यही इनका धर्म है। भारतवर्ष की स्त्री जाति महान् से महान् कष्ट के समय भी अपने धर्म का पालन करती रही हैं। शिर तक कटा दिये किन्तु धर्म से मुख नहीं फेरा इस लिये हम नीचे कुछ स्त्रियों का मुख्य धर्म बताते हैं जिस का पालन करना ही इन के सुख का हेतु हो सकता है। जब स्त्री जाति अपना धर्म पालन करेगी तो पुरुषों को स्वयं लज्जा आवेगी जिस से वे अपनी न्यूनताओं को देखते हुए उन को दूर करने का यत्न करेंगे और उन अत्याचारों से मुख मोड़लेंगे। जिन के कारण आज भारत की स्त्री जाति दबी हुई है, यह एक स्वाभाविक नियम है कि जब एक अङ्ग अपने धर्म का पालन करे तो दूसरा भी स्वयं करने लगे इसलिये आप अग्रगामिनी बनें।

भर्ता देवो गुरुर्भर्ता धर्म तीर्थ व्रतानि च।
तस्मात् सर्व परित्यज्य पतिमेकं भजेत्सती

सती साध्वी स्त्री का पति ही देवता और गुरु है और पति ही उस का धर्म, तीर्थ और अनेक प्रकार का व्रत है इस लिये इन सब का त्याग करके एक मात्र पतिदेव की ही सेवा करे। अर्थात आज अविद्या के कारण हमारी बहिनें निज पति देव से मुख फेर कर अनेक प्रकार के पत्थर, पीतल व लोह, चांदी और स्वर्ण की बनी हुई मूर्तियों को देवता जानकर पूजती हैं, और पतिदेव को छोड़कर कई पाखण्डी, धोखेबाज़, जुआरी, चोरजार, चरसी, भङ्गड़ी, भगवे वस्त्रधारी लोगों को अपना गुरू मान रही हैं ये लोग इन भोली भाली स्त्रियों का जहां धन हरण करते हैं वहाँ इन का सतीत्व धर्म भी अपहरण कर रहे हैं। ऐसे ही वैदिकधर्म के विपरीत अनेक पाखण्ड रूपी धर्म बाचाल लोगों ने स्त्री जाति को लूटने के लिये चलाये हैं जिनको स्वीकार करके स्त्री जाति आज अपने जीवन को नाश कर रही हैं इस के अतिरिक्त बहुत स्त्रियें हरिद्वार, काशी, बद्रीनाथ, केदारनाथ आदि अनेक नाम मात्र के तीर्थों पर भटकती रहती हैं जहां पर इन

का धन व धर्म लूट लिये जाते हैं और कई प्रकार के उपवास करके स्त्रियें अपने शरीर को नाश कर रही हैं इस लिये इन सब प्रकार के पाखण्डों को छोड़ कर जब केवल पतिदेव की सेवा में ही इन सब को मानेंगी अर्थात् पति की सेवा ही उन सब प्रकार के फलों को प्राप्त करावेगी जो यत्नपूर्वक पाखण्ड जालों के सेवन करने से माने जाते हैं।

शुश्रूषां परिचर्य्यां च करोत्यविमना सदा।
सु प्रीता विनीता च सा नारीधर्मगामिनी॥

धर्म के अनुसार निज जीवन को व्यतीत करने वाली वह ही नारी सदा अपने हर प्रकार के अभिमान को छोड़ कर अपने पति की सेवा टहल करती हैं अपनी दिल की बरती हुई इन से कहती हैं और उन बरती दिल से सुनती हैं तथा यथोचित समय पर उनका हर एक काम करती हैं और उन से प्रेम रखती हुई बहुत नम्र भाव से रहती हैं अर्थात् निज पति के साथ प्रत्येक व्यवहार ऐसे उत्तम प्रकार से करती हैं जैसे धर्म शास्त्र में आज्ञा तो वही स्त्री धर्म्म के अनुसार अपना जीवन व्यतीत कर रही है जो स्त्री अपने यौवन, सुन्दरता, विद्या या मूर्खता से अभिमान में डूबी हुई पति की सेवा छोड़ कभी दिल की बरती न उनसे कहती हैं तथा न ही उनकी दुःख सुख की बातें ध्यान देकर सुनती हैं सदा उन से सेवा करवाती हैं कोई विशेष प्रेम पति से नहीं करतीं नम्रता व प्रेम को प्रकाशित करने के स्थान में सदा अभिमान से और कई प्रकार के नखरों को करती रहती हैं वह स्त्री धर्म के न जानने वाली होती हैं मूर्खा होती हैं ऐसी बातें अच्छी धर्मशील स्त्रियें नहीं करती हैं।

नेक्षेत्पतिं क्रूरदृष्ट्या श्रावयेन्नैव दुर्वचः।
नाप्रियं मनसा वापि चरेत्पत्युः पतिव्रता॥

पतिव्रता स्त्री निज पति को क्रूर दृष्टि से कभी न देखे और न ही कभी दुर्वचन उन को सुनावे कभी अपने मनमें भी उन के लिये अप्रिय चिन्तन न करे। अर्थात् धर्मगामिनी स्त्री निज पति को प्रेम भरे नेत्रों से देखे पति ऐसी पत्नी के नेत्रों को देख कर ही उस के प्रेम को अनुभव करके प्रसन्न हो जावे उस की प्रेम भरी मधुर वाणी को श्रवण करे तो उस का हृदय गद्गद प्रसन्न हो जावे जो स्त्री कुटिलता से नेत्रों तथा वचनों द्वारा तो प्रेम सूचित करती है किंतु चित्त में सच्चा प्रेम नहीं रखती उस की यह बनावट कभी न कभी खुल ही जाती है इस लिये चित्त से निज पति से प्रेम करने वाली नारी ही पतिव्रता होती है।

सु स्वभावा सुवचना सुव्रता सुखदर्शना।
अनन्य चित्ता सुमुखी भर्तुः साधर्म्मचारिणी॥

निज पति के साथ मिल कर गृहस्थ के सम्पूर्ण कर्तव्य कर्मों को करने वाली स्त्री वह ही होती है जो श्रेष्ठ स्वभाव की मीठा सत्य बोलने वाली और जो करने का दृढ संकल्प करे उसका पालन करने वाली तथा सुन्दर मुख वाली पति के चित्त से जिसका चित्त मिला हुआ है जिस का दर्शन करने से चित्त प्रसन्न होता है अर्थात् ऐसे २ गुणों से सम्पन्न स्त्री ही गृहस्थ को स्वर्ग बनाती है अन्यथा गृहस्थ में सुख नाममात्र नहीं होता।

प्यारी बहिनों तथापुत्रियो! हमने ये दो चार शास्त्र के वचन आप को सुनाये हैं इन के अनुकूल चलने वाली स्त्री ही

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

गृहस्थ का प्रधान अङ्ग है सी स्त्रियों को ही हमने प्रधानतादी है जो ऐसी हैं उनका ही सतीत्व सर्व प्रकार से रक्षा करता है उनका ही तेज गौरव और उच्च भाव जाति को उठा कर उन्नति के शिखरपर लेजाता है जिनघरों, मुहल्लों, नगरों व देशों में ऐसी स्त्रियां होती हैंवेही सम्पूर्ण सुखों का भोगभोगते हैं जहां पर ऐसे २ उत्तम गुणों से रहित स्त्रियें होती हैं दुःख ही दुःख दिखाई देता है इस लिये हम चाहते हैं आप लोग ऐसे २ गुणों से युक्त होकर गृहस्थ का प्रधान तथा उत्तम अङ्ग बन कर अपनी आर्य्य जाति का तथ अपने देश आर्य्यावर्त का गौरव बढ़ा कर सूर्य की नाई अपने उज्ज्वल गुणों से प्रका- होती हुई धर्म्म-अर्थ-काम व मोक्ष को प्राप्त करके संसार को सुख का सागर बनावे।

सतीत्व

[ले० - श्रीयुत रामचन्द्रसिंह]

पपुर का स्टेशन पतझड़ के पीपलवृक्ष सा सुनसान पड़ा था। यत्र तत्र मांसभक्षी गृद्ध सदृश्य एकाध रेलवे कर्मचारी दृष्टिगोचर होते थे पर गाड़ी के आते ही बसन्त के नव-पल्लवाभूषित वृक्ष सा लहलहा उठा। यात्रियों से ठसाठस भर गया बीड़ी, पान, सुपारी, ठण्डा जल, गर्मागर्म पुड़ी की ध्वनि से कान फटने लगा। चढ़ाव उतराव, आन जान. मिलन जुलन का अभिनय होने लगा। इस अभिनय के एक अभिनेता ने हंतोत्साह स्वर में कहा—"प्रिये! कुली नहीं मिलता है।" स्त्री ने घबरा कर पूछा—'फ़िर क्या किया जाय?" "पुरुष— तुम बच्चा को लेकर नीचे उतर जाओ। मैं ऊपर से सामान पकड़ाता जाता हूँ। तुम पकड़ती जाओ।" स्त्री नीचे उतर गई, पुरुष एक २ कर सामान पकड़ाने लगा। पर अभी आधा सामान भी न उतरा था, कि गार्ड ने सीटी दी और गाड़ी भक्‌भक् करती चल दी दोनों के हृदयसागर में वियोग का तूफान उठ लगा। पुरुष ने गाड़ी से मुंह निकाल कर कहा—"प्रिये! घबराना नहीं। सुबह तक दूसरी गाड़ी से वापिस आजाऊँगा।" गाड़ी का छूटना क्या था स्त्री के बक्षस्थल पर बज्र का गिरना था। वह काष्ट की मारी सी एक दृष्टि से गाड़ी की ओर देख रही थी और गाड़ी उसके प्राणवल्लभ को लिये जारही थी

(२)

"अरी, तू कहां जायगी?"

"धर्मपुर।"

"फिर जाती क्योँ नहीं?"

"एक तो मेरा सामान उठाने वाला कोई नहीं है, और दूसरे मेरे पास टिकट नहीं है।"

तो तू बिना टिकेट ही के आई है क्या?"

"नहीं।"

"तो तेरा टिकट कहाँ है?"

"इस बच्चे।के बाप के पास जो कल सुबह तक वापिस आ जाएंगे। सामान न उतरने के कारण न उतर सके।" आदमी

चला गया और थोड़ी देर के बाद दो आदमियों के साथ आया जिस में एक स्टेशन मास्टर और दूसरा तारबाबू था। स्टेशन मास्टर ने कहा—"तू यहां कब तक पड़ी रहेगी। मेरे क्वार्टर में चली जा। यह आदमी तेरा सामान पहुंचा देता है।" स्त्री—"आप की बड़ी कृपा है। मेरा सामान मुसाफ़िरखाने में पहुंचवा दीजिए, मैं वहीं रात काट लूंगी।"

स्टेशनमास्टर-"एक तो मुसाफिरखाने में कोई आदमी नहीं है। दूसरे रात का समय है, तीसरे तेरे पास टिकेट नहा है। फिर मैं कैसे तुम्हें बाहर छोड़ सकता हूं? स्त्री को न जाने क्यों क्वार्टर में जाना भादों की गर्जती हुई नदी में कूदना सा मालूम होता था-पर क्या करती? विवश थी। विवशता, तू संसार में जो करावे सो थोड़ा है।

(३)

स्टेशन गांव से दो मील के फासिले पर था। बीच में एक बड़ा मैदान था। जिसमें रात को तीन मनुष्यों के सिवाय कोई नहीं रहता था। तीनों के आगे नाथ न पीछे पगहा था। दीन दुनिया की कुछ फिक्र न थी, कमाना, खाना और मौज करना बस यही इनका काम था। रात होते ही सुरादेवी का आह्वान होता था, प्याले पर प्याले उड़ते जाते थे और साथ ही साथ समालोचना और गाना होता था, विषय होता था, आई हुई स्त्रियों के रूपयौवन का वर्णन, नौबत यहाँ तक आ पड़ती थी कि आपस में कभी कभी घूसमघूसा भी हो जाता था जो हिंदू संसार के समालोचकों और अभिनेताओं का द्योतक था।

दश बज चुका था। पूर्व की गाड़ी चली गई थी सुबह तक कोई खटका नहीं था। त्रिदेव अपनी पूजा में मस्त हो गये स्टेशन मास्टर ने मुंह में प्याला डालते हुये कहा—"क्या ही अपूर्व सुन्दरी है, स्वर्ग की परी है? इच्छा तो होती है कि अभी ही उसे ..... ।"

बीच में ही तारबाबू बोल उठा—'अल्लाह ने यह नूर हमारे ही लिये भेजा है। कैसा गुलाब सा ओठ है, कैसी मतवाली चाल है, ऐसी हूर तो बिहिश्त में भी नहीं है लाओ उसे अभी .... ।"

बात काटकर पैटमैन ने कहा-"हजारों रुपयों का तो गहना है, साड़ी ऐसी सुन्दर बेशकीमती है कि रानियों को भी मुयस्सर नहीं होती है।

दोनों ठट्ठा कर हँस पड़े, स्टेशनमास्टर के बोलने के पहिले ही तारबाबू बोल उठा-'दालभात में मूसलचन्द, गोदड़ जूठन ही पर झपटते हैं। लुत्फ लेना हिन्दू कौम क्या जाने? दिनरात दौलत के लिये हाय हाय पड़ी रहती है।"

स्टेशनमास्टर ने झल्लाकर कहाः-"जनाब मुंह सम्भाल कर बोलिये एक आदमी के कारण सारी कौम की बदनामी नहीं की जा सकती। क्या काबुल में गदहे नहीं होते हैं?"

पैटमैन तनकर बोला—"मियां जी, आप की कौम का क्या कहना है? बौरची फिस्टी का काम तो हिन्दू ही करते हैं! मोची का तो काम नहीं छोड़ते, बनते लाट साहिब के बच्चे।"

तारबाबू क्रोध से अङ्गारा हो गया प्याला को फेंकते हुए पैटमैन की ओर लपका बीच ही में स्टेशनमास्टर ने पकड़ कर कहा-"तारबाबू, आप किसके मुंह लगे हुये हैं। शान्ति कीजिये।"

CC0. Gurukul Kangri Collection, H

फिर मजलिस लग गई। प्याले पर प्याले उड़ने लगे।

स्टेशनमास्टर ने कहा—"अजी, पैटमैन, एक गाना तो सुनाओ। पैटमैन ने आलापना प्रारम्भ किया—"छबीली, तेरी अखियां कटारी सी मारे"।

स्टेशनमास्टर-"वाह वाह क्या कहना है।

तार बाबू—"मार लिया, जान तेरे पर कुर्बान है"।

[४]

इधर रास रङ्ग होरहा था उधर अबला के हृदय पर काला नाग रेंग रहा था। वह वाणविद्ध कपोतिका सी इधर उधर झटपटा रही थी। कहां जायं? क्या करें? इसी धुन बुन में लगी थी कि किवाड़ खुला और त्रिमूर्ति कराल काल सी आती हुई दिखाई दी। वह कांप उठी। पृथ्वी पैर से खिसकने लगी।

पैटमैन ने बढ़कर कहा-"खैरियत चाहती हो तो अपना सारा गहना मेरे हवाले करदो।"

स्त्री ने बिना रोकटोक वैसा ही किया।

पैटमैन का हौसिला बढ़ गया। उसने जोर देकर कहा—'साड़ी भी उतार दो।" स्त्री कुछ भी नहीं बोली।

पैटमैन—(कर्कस स्वर से)—"नहीं उतारती है"?

स्त्री—"भगवान् के लिए मुझ पर दया करो तुम्हारे भी मां बहन है।" पैटमैन लोभी था पर बिल्कुल नरपिशाच नहीं था। स्त्री की करुणा भरी बातों से सहम गया। यह तारबाबू से देखा नहीं गया और कड़क कर बोला—"साड़ी को कौन कहे तुम्हें नङ्गी होकर नाचना पड़ेगा"

स्त्री को ऐसा मालूम हुआ मानो हजार विच्छुवों ने एक ही साथ डंक मारे हों। क्रोध से मुँह तमतमा आया। इच्छा हुई कि मुँह से जबान खींचलू। पर खून की घूंट पीगई और बोली-"मियांजी, मुंह सम्भाल कर बोलिए। एक ही लाठी से सब को हांकने के प्रयत्न को छोड़िए। यहां बन्दर घुड़कियों से काम नहीं चलेगा।"

तार बाबू—"अरी—अजान औरत, त्रिया चरित्र रहने दे, नहीं मानती है तो देख।

यह कहते हुए दुशासन सा आगे बढ़ा। स्त्री ने कोई अवलम्ब न देख कर द्रौपदी चीररक्षक कृष्णबिहारी को याद किया उसे एक युक्ति सूझ पड़ी। उसने मुस्करा कर कहा—"यदि आप लोगों की यही इच्छा है तो यही सही। पर हमें ज़रा बाहर से लौट आने दीजिए।"

दर्शक के भांति स्टेशनमास्टर सारा दृश्य देख रहा था, बोला "बाहर तुम्हें क्या जरूरत है"।

स्त्री—क्या आप लोगों के राज्य में दैनिक कर्म भी माना है।

तारबाबू—"महाशय, इतना अवसन्न न न हूजिए यह तो हम लोगों की रीति थी।'

स्त्री बाहरी किवाड़ बन्द करने लगी। पैटमैन ने झपट कर कहा-"अरी तू यह क्या कर रही है?'

स्त्री ने शेरनी की तरह गर्जती हुई बोली—"लम्पटो, अधमो अपने कर्मों का फल भोगो"।

तार बाबू—"ऐ बेवफ़ा औरत। तू ने अभी हमें नहीं पहचाना। तेरा बच्चा हम लोगों के हाथ में है। मुर्गी की तरह हलाल कर देंगे।

स्त्री—नरपिशाचो! तुम लोग जो करो सो थोड़ा है। पर हम लोगों के लिए धर्म

से बढ़ कर और कोई चीज नहीं है। आर्य नारियां अपने धर्म के लिए हंसते हसते अपने पति पुत्र सब को निछावर कर देती हैं। ऐ चाण्डाल। यदि हम लोग अपने धर्मको छोड़ दें तो आर्यजाति का नामो निशान संसार से मिट जाय।"

इसी समय पार्श्व में धड़ाम की ध्वनि हुई। स्त्री ने देखा-आंख के तारे प्राण पियारे पुत्र का कोमल हाथ चरणों में पड़ा हुआ है। "राक्षसों, इतनी निष्ठुरता। हा, प्राणप्यारा" कह पछाड़ मार जमीन पर गिर पड़ी। अपने राज्य में इस प्रकार के विभत्सएवम् निर्दय कार्य के होते देखलज्जा से रजनीनाथ अस्ताचल के अंक में अपना मुँह छिपाने लगे। प्रबल प्रचण्ड मार्तण्ड पाप के भंडा फोड़ने के लिये उदयाचल में दर्शन दिये।

(५)

सीटी पर सीटी बजती थी पर सिगनल डाउन न होता था। लाचार हो गार्ड गाड़ी से उतरा और स्टेशन की ओर चला। कुछ कौतुहल प्रिय यात्री भी पीछे२होलिए पर उसने स्टेशन के पास पहुंचने के पहिले ही सब को रुकवा दिया और स्वयं भीतर जाकर यत्रतत्र पड़े हुए प्यालों को देखा। वह ताड़ गया कि दाल में कुछ काला है। क्वार्टर की ओर बढ़ा विभत्स दृश्य को देखते ही उसके होश उड़ गये और उलटे पाँव पीछे लौटा और कुछ रेलवे कर्मचारियों के साथ घटनास्थल पर पहुंचा।

एक आदमी स्त्री को चेत में लाने का प्रयत्न करने लगा और बाकी दरवाजे खोलने लगे फाटक खुलते ही पैटमैन हिरण सदृश चौकड़ी मारते निकल भागा। तार बाबू ने भी उसीका अनुकरण किया, लेकिन अभी चार कदम भी नहीं गया कि एक आदमी ने ऐसा लट्ठ जमाया कि उसका भेजा निकल पड़ा। स्टेशनमास्टर पकड़ा गया और साथ ही में पाये गये कटे हुए अबोध बालक के अंग प्रत्यंग।

यात्री घटना जानने के लिए उत्सुक थे। एक २ पल एक २ युग के समान मालूम पड़ते थे। एक आदमी का भागना और दूसरे को लट्ठ खा गिरना इस घटना ने उनके हृदय में तूफ़ान मचा दिया। सब का बांध टूट गया वे आगे बढ़ चले।

स्त्री ने होश में आते हुए कहा-निष्ठुर-पुरुष,

अबोध बालक पर भी दया नहीं आई'।

इसी समय एक आदमी भीड़ को चीरते हुए निकला और बोला—"प्रिये?"

स्त्री—"प्राणवल्लभ"।

पुरुष—"मेरा प्राण प्यारा"।

स्त्री—"स्वर्ग में।

"हा प्रिये" इतना कहते २ पुरुष बेहोश हो गया। और धड़ाम से कटे वृक्ष की तरह जमीन पर गिर पड़ा।

स्त्री—(सम्भलती हुई) भगवान्, बलिदान देकर सतीत्व की रक्षा की है जो आर्य नारियों का उत्कृष्ट धर्म है"। उसी समय आकाश वाणी हुई—"भारत ललनाएं, तुम धन्य हो। तुम्हीं से भारत माता का मस्तक आज तक ऊंचा है"।

(शेष आगे)

CC0. Gurukul Kangri Collection, H...

महर्षि दयानन्दजन्मभूमि शताब्दी ।

टंकारा (काठियावाड़)

पत्रिका नं० ११ ।

प्रिय आर्य बन्धुओ ! यह तो आप को समाचार पत्रों द्वारा विदित ही हो गया होगा कि महर्षि जन्मशताब्दी महर्षि की जन्मभूमि टंकारा में आगामी शिवरात्रि पर अर्थात् ता० ७-८-९-१०-११ फर्वरी सन् १९२६ को बड़े समारोह और धूम धाम के साथ मनाई जायगी जिसमें बड़े २ महात्मा सन्यासियों विद्वान् पण्डितों, राजा महाराजाओं, ताल्लुकेदारों, सेठ साहूकारों के पधारने की सूचनाएं आ रही हैं। प्रायः आर्यसमाज के सभी गण्य मान्य नेताओं के पधारने की पूर्ण आशा है श्री पूज्यवर नारायण स्वामीजी श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्दजी सर्वमान्य श्री स्वामी सर्वदानन्दजी सत्यसर्वस्व स्वामी सत्यानन्दजी श्रीयुत पं० बालकृष्णजी शास्त्री श्री डाक्टर बालकृष्णजी M. A. P. H. D. श्री प्रो० रामदेवजी आदि अनेक चुनीदा २ विद्वान् पधारेंगे।

जिन के उत्तमोत्तम उपदेश सुनने के अतिरिक्त अनेक सम्मेलन तथा परिषदें भी होंगी जिनका विशेष वर्णन आगामी पत्रिकाओं में निकलेगा। यहां के स्थानिक प्रबन्ध के लिये यहां के आर्य बन्धु बड़े उत्साह से कार्य कर रहे हैं. और टङ्कारा के निवासी स्वयम् आर्य्य बन्धुओं के स्वागत के लिये प्रसन्नता पूर्वक तैयार हैं। श्री स्वामी जी के रिश्तेदारों में से कई अभी तक मौजूद हैं विश्वस्त सूत्र से पता चला है कि स्वामी जी की जन्मभूमि टङ्कारा ही है; इस बात के बहुत से प्रमाण मौजूद हैं।

जिन किन्हीं महाशयों को इस पवित्र कार्य्य में आर्थिक सहायता देनी हो वे शताब्दी कार्यालय में भेज सकते हैं धन्यवाद पूर्वक स्वीकार की जायगी।

जन्मशताब्दी सभा का ध्येय यह है कि एक बार महर्षि की जन्मभूमि में वैदिक धर्म की धाक बैठा दें यह तभी हो सकता है जबकि प्रत्येक प्रान्त से अधिक से अधिक संख्या में आर्य्य सज्जन पधारें और यहां के निवासियों को बतादें कि आर्य समाज भी एक शक्तिशाली संस्था है।

इस पवित्र तीर्थ के यात्रियों के लिये सब प्रकार की स्थानादि का अच्छे से अच्छा प्रबन्ध किया जा रहा है ताकि किसी भी आर्य बन्धु को किसी प्रकार की तकलीफ न होने पावे। केवल प्रार्थना इतनी है कि जिन भाइयों का इस महायज्ञ में सम्मिलित होने का पूर्ण विचार हो वे अवश्य ही अभी से हमारे पास सूचना दे देवें कि अमुक संख्या में अमुक जगह से इतने स्त्री पुरुष बालक आने वाले हैं, ताकि हमें प्रबन्ध करना आसान हो। और इस काम को यदि प्रत्येक समाज के मन्त्री महोदय अपने सिर पर लेवें तो बड़ी आसानी से काम हो सकता है यात्रियों को अपने नाम स्थानिक मन्त्री आर्यसमाज देने चाहिये ताकि

वे शतब्दी कार्यालय में सब की लिस्ट को भेज सकें।

आवश्यक सूचना।

दिल्ली से बी. बी. सी. आई. छोटी लाइन से 'मैसाणा' जंकशन पर बदल कर काठियावाड़ जाने वाली गाड़ी में थ्रू डब्बों में जाना चाहिये जो कि सीधे मौरवी जाते हैं, यहीं से टंकारा जाना होगा वहाँ स्वयम् सेवक हाज़िर रहेंगे। दिल्ली से मौरवी का किराया लगभग १४) रु० हैं पुस्तकादि की दुकान लगाने वालों को अभी से निम्न पते पर पत्र व्यवहार कर निश्चय कर लेना चाहिये।

निवेदक—

मंत्री विजयशंकर मूलशंकर शर्म्मा,

पण्डित द्विजेन्द्रनाथ वैद्यशास्त्री स. मंत्री

प्रकाशन विभाग।

स. मंत्री अर्थविभाग म. हरगोविंद काचवाले;

पता—महर्षि दयानन्दजन्मभूमि शतब्दी कार्यालय

३१० कालवा देवी रोड बम्बई नं० २

आर्यजगत् में मशहूर

राज्यरत्न आत्माराम जी कृत

संस्कारचन्द्रिका

का

पांचवां सुलभ संस्करण बड़ी सजधज के साथ छपकर तय्यार है। ८५० पृष्ठ वज़न १ सेर पक्का बढ़िया कागज मू० केवल २।) डाक व्यय ॥≋) पेशगी आने पर वी० पी० या २॥≋) आने पर पुस्तक भेजी जायगी।

जयदेव ब्रादर्स बड़ौदा ॥

विचार प्रवाह

राजमाता ऐलेक्जेन्ड्रा का स्वर्गवास।

शोक है कि २० नवम्बर १९२५ को महाराज जार्ज पञ्चम की माता का ८१ वर्ष की अवस्था में अचानक हृदय-रोग से शरीरान्त होगया! स्वर्गीया महारानी का जन्म पहली दिसम्बर १८४४ ई० को डेनमार्क राज्य में हुआ था। डेनमार्क के महाराजा क्रिश्चियन नवम की ये सब से ज्येष्ठा पुत्री थीं। इनका विवाह १८ वर्ष की अवस्था में स्वर्गीय महाराज एडवर्ड सप्तम के साथ १८६३ ई० में हुआ था। जब आपने विवाहोपरान्त इंगलैण्ड में सर्वप्रथम पदार्पण किया था तो आपको वहां के लोग सर्वथा अपरिचित प्रतीत हुए। किन्तु अपने सरल व्यवहार, शिष्ट-स्वभाव तथा दिव्य-गुणों से शीघ्र ही इन्होंने उन लोगों के मन को जीत लिया और साथ ही समग्र साम्राज्य में प्रसिद्धि प्राप्त करली। सन १९०२ में महाराज एड-

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

वर्ड के साथ ही इन्होंने बृटिस सम्राज्ञी का मुकुट धारण किया था। परन्तु ८ वर्ष भी न होने पाये थे कि दैवात इनके पतिदेव परलोकवासी हो गये। सैंतालिस वर्ष वैवाहिक जीवनोपरान्त इन्हें वैधव्य दुःख उठाना पड़ा विधवा होने के दो वर्ष बाद तक इन्होंने अपने स्वर्गीय पति के वियोग में घोर तपस्या की। तदनन्तर १९१२ ई० से पुनः जनता को दर्शन देना आरम्भ कर दिया। महासमर के समय इन्होंने निज प्रभावशाली व्यक्तित्व से मनुष्यसमाज की यन्त्रणाओं को दूर करने के लिये प्रशंनीय प्रयास किया था। इन में एक आदर्श महिला, पती, माता विधवा और महारानी के समस्त सद्गुण विद्यमान थे। महारानी की मृत्यु से सारा बृटिस साम्राज्य ही नहीं प्रत्युत अन्यान्य देश भी बड़े दुःखी हुए हैं। ईश्वर स्वर्गीय आत्मा को शान्ति प्रदान करें !!

एक अंग्रेजी पत्र का कुरुचि-पूर्ण-कृत्य

बम्बई के "टाइम्स आफ इण्डिया" के साप्तहिक संस्करण में प्रकाशित होने वाले चित्र प्रायः भारतवासियों के लिए अपमानकारक होते हैं। उदाहरणार्थ २२ नवम्बर १९२५ का अङ्क उठाकर देखिए। नवें पृष्ठ पर एक गोरखा युवक एक फूलदार तश्तरी हाथ में लिये बेच रहा है। चित्र के नीचे लिखा है:—

"How much If you are in experienced in the wiles of the East it may be over a hundred rupees, but if you offer him five you may get it for ten" जिसका तात्पर्य यह है कि यदि किसी को यहाँ के छल कपट का अनुभव न हो तो उसे एक मामूली-सी थाली का मूल्य सौ रुपए से भी अधिक बताया जायगा किन्तु यदि पांच रुपये लगाये जांय तो शायद सौदा दस ही में पट जाय इस चित्र के द्वारा जहां पूर्वीय ठग-विद्या का एक नमूना पेश किया गया है वहां पश्चिमीय 'भोलेपन' का भी दिग्दर्शन कराया गया है बेचारे सीधे साधे अंग्रेजों को भारत के व्यापारी कैसा लूटते हैं—यह तो उक्त चित्र प्रमाणित कर ही चुका है, किन्तु अंग्रेज व्यापारी भारत के ग्राहकों को कितना सस्ता कितना खरा और कितना मनोहर माल प्रदान करते हैं यह साबित करना अभी बाक़ी है !! कहां तो भारत का व्यापारी मामूली-सी चांदी की सिर्फ एक रकाबी का सौ रुपया मांगते हैं और कहां इङ्गलैण्ड के निष्कपट व्यापारी चाय के एक पूरे सेट-दर्जनों मिट्टीके बर्तनों को पांच दस रुपये में ही लुटा देते हैं !!!

इतनाही नहीं, "टाइम्स आफ इण्डिया भारतीय—नहीं नहीं—पूर्वीय सभ्यता के इतने प्रेमी हैं कि यदि कोई टोकरी बुनने वालियों का या किसी कुरूप, दरिद्र या ऐसे ही किसी अन्य व्यक्ति का चित्र उन्हें भेजदे तो वे उन्हें 'स्पेशल प्राइज' प्रदान करते हैं भद्दे से भद्दे चित्रों के नीचे 'Indian Beauty' भारतीय सौंदर्य्य लिखते हुए वे नहीं सकुचायेंगे। तभी तो लोग कहा करते हैं एक अंग्रेज लोग "गुण ग्राही" और अंग्रेजी पत्रों के सम्पादक विशेषतः "सुरुचि-सम्पन्न होते हैं !!

भारत के नये वाइसराय।

ब्रिटिस गवर्नमेंट ने अपनी न्यायप्रियता का एक ज्वलन्त प्रमाण दिया है। भारतीय शासन के तराजू के दोनों पलड़े बराबर करने

के लिये उन्होंने यदि एक ओर श्रीयुत बर्ड उड को बहैसियत जंगी लाट के बिठाया है दूसरी ओर श्रीयुत एडवर्ड उड को बहैसियत मुल्कीलाट के प्रतिष्ठित किया है। दोनों लाट साहब नाम-राशि हैं। दोनों वीर सैनिक हैं। पहले महाशय का समग्रजीवन फौजमें बीता है तो दूसरे महाशय 'यार्कशायर ड्रेगोनस्' में मेजर पद प्राप्त कर चुके हैं। यहां तक तो दोनों में समानता है किन्तु आगे अन्तर इतना है कि पहले महाशय के दोनों हाथ दुरुस्त हैं और दूसरे का एक हाथ युवस्था में ही खोया जाचुका है। पर इसका अन्तर नगण्य है, क्योंकि राइट आनरेबिल मि० उड का दाहिना हाथ ईश्वर की कृपा से सही सलामत है। देखिये ! भारत के दोनों भाग्य-बिधाता क्या २ कौतुक दिखलाते हैं? लक्षण तो ये शुभ हैं। क्योंकि भारतीयों को यदि स्वराज्य कभी प्राप्त होगा तो ऐसे ही युगल की महती कृपा से।

श्रेद्धेय लालाजी की अपील।

उड़ीसा के अकाल पीड़ितों के लिये लाला लाजपतरायजी ने हिन्दुओं से अत्यन्त मर्म-भेदी शब्दों में धन के लिये अपील की है। आप का कथन है कि भयानक बाढ़ और उसके बाद खुश्कसाली के कारण वहां के लोगों की दशा अत्यन्त शोचनीय हो गई है। वे यहां तक कहते हैं कि सारे संसार में किसी स्थान के लोगों को उन्होंने उड़ीसा निवासियों की भांति दीन और दरिद्र नहीं पाया। वहां की जन-संख्या का अधिकांश ऐसा है जिसे पेट भर खाने को नहीं मिलता।

अभी थोड़े ही दिन हुए श्रीयुत एन्ड्रूज़ ने भी उड़ीसा की वर्तमान दुर्दशा का हृदय विदारक चित्र समाचार पत्रों में खींचा था वे इस ओर कार्य्य कर ही रहे थे, कि उन्हें दक्षिण अफ्रीका के लिये अनिवार्य्य रूप से प्रस्थान करना पड़ा। उनके स्थान की पूर्ति सम्प्रति लाला जी ने की है।

दीनों की सहायता करने से बढ़ कर कोई पुण्य नहीं। ऐसी अवस्था में प्रत्येक भारतवासी का कर्तव्य है कि वे अपने दुर्दैव पीड़ित भाइयों की रक्षा करें।

भारत-भक्त मि. ऐण्ड्रूज और प्रवासी भारतवासी।

मि० ऐण्ड्रूज़ ने ११ नवम्बर १९२५ को दक्षिण अफ्रीका के लिये प्रस्थान कर दिया है। जाने के कुछ ही दिन पूर्व श्रीयुत पं० बनारसीदास जी चतुर्वेदी ने उनसे उनकी यात्रा और कार्य्यक्रम के विषय में कुछ आवश्यक प्रश्न किये थे। एक प्रश्न का उत्तर देते हुए मि० ऐण्ड्रूज़ ने कहा:—"कि दक्षिण अफ्रीका प्रवासी भारतीयों के प्रश्नों के विषय में यह आशा करना कि वे आज ही ठीक तरह से हल हो सकेंगे, असम्भव है। कम से कम इतना तो हो सकेगा कि ऐण्टी-ऐशियाटिक बिल का घोर विरोध नैतिक आधार पर किया जावे। दक्षिण अफ्रीका प्रवासी भारतियों के मसले को सुलझाने का अन्तिम और अव्यर्थ उपाय यही है कि हम भारत में अपने अधिकार प्राप्त कर लें। किन्तु फिर भी हम इस मसले को उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देख सकते। इस समय यह अत्यन्त आवश्यक है कि भिन्न २ दलों के नेता मिल कर इस बात पर विचार करें कि वर्तमान स्थिति में दक्षिण अफ्रीका के इस अत्याचार का प्रतिवाद किन २ उपायों से किया जा सकता है।" मि० ऐण्ड्रूज़ ने वही बात कही

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

है, जो कि एक भारत के सच्चे हितैषी के हृदय से निकल सकती है। दक्षिण अफ्रीका के प्रवासी भारतवासियों के मसले को हल करने के लिए भारतीय नेता-मण्डल का सङ्गठित रूप से विचार करना नितान्त अनिवार्य्य है। इस मसले की ओट में जिन के नेत्रों में ज्योति है, उन्हें—भारत के स्वराज्य की झलक साफ दिखाई दे रही है। थोड़े से प्रवासी भाइयों की मुक्ति पर ही हमारे बहुत से देशवासी भाइयों की मुक्ति अवलम्बित है।

आर्य-समाज-प्रचार।

कानपुर कांग्रेस के अवसर पर संयुक्त प्रांतीय आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्यसमाज के सिद्धांतों का प्रचार करना निश्चित किया है। कांग्रेस पण्डाल के सामने प्रचारमण्डप की व्यवस्था की जायगी। और २५ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर १९२५ तक निरन्तर प्रचार कार्य हुआ करेगा। इस शुभ कार्य्य में योग देने के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी, महात्मा हंसराज जी, श्री नारायण स्वामी जी प्रभृति महामना वहां पधारेंगे। यही नहीं कहा जा सकता कि राजनैतिक वातावरण में आर्य्य सामाजिक कार्य्य को सफलता होगी या नहीं, किन्तु तौ भी वह एक ऐसा अवसर होगा जब भारत के सभी प्रान्तों, सभी धर्मों और मतों के लोगों के कानों में वेद मन्त्रों की पवित्र ध्वनि गूञ्ज उठेगी। आशा है पंजाब प्रतिनिधि सभा तथा अन्यान्य छोटी बड़ी समस्त आर्य्य-सामाजिक संस्थाएं इस वैदिक-कार्य्य में संयुक्त प्रान्तीय प्रतिनिधि सभा का हाथ बँटायेंगी।

हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन वृन्दावन!

अखिल भारतवर्षीय हिंदी-साहित्य-सम्मेलन का सोलहवां वार्षिक अधिवेशन नवम्बर मास के दूसरे सप्ताह में वृन्दावन में निर्विघ्न समाप्त हो गया। साहित्य-सम्मेलन की बैठकों के साथ ही साथ सम्पादक सम्मेलन, अध्यापक सम्मेलन, कवि सम्मेलन, लेखक सम्मेलन, नाटक, रासलीला, भागवत की कथा, धनुविद्या, लोहे की ज़ञ्जीर तोड़ने का कौतुक इत्यादि कितनी ही बातें और भी हुईं। सम्मेलन का आलोचनात्मक विस्तृत वृत्तान्त 'ज्योति' के पाठकों की सेवा में अगले अङ्क में उपस्थित किया जायगा। अगले साल सम्मेलन भरतपुर रियासत में होना निश्चित हुआ है।

आर्य्यभाषा प्रचार का उद्योग

नागरीप्रचारणी सभा काशी ने मेरे पास हिन्दी सिखाने के लिए प्रतिज्ञापत्र, नामक विज्ञापन भेजा है। और साथ ही यह भी अनुरोध किया है कि ज्योति के इसी अंक में इसे ज्यों का त्यों प्रकाशित कर दिया जाय, अतः मैं उसे नीचे प्रकाशित करती हूं आशा है कि पाठक महोदय जनता में इस के प्रचार के लिए यत्न करेंगे, क्योंकि हिन्दी के प्रचार बिना नहा हिन्दु संगठन में सफलता हो सकती है और न हिन्दू जाति का उत्थान हो हो सकता है।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

महाशय,

आप को अच्छी तरह विदित है कि इस देश में कितनी निरक्षरता (अविद्या) है। इसका सब से बड़ा प्रमाण सन् १९२१ की मनुष्यगणना की रिपोर्ट है जिस में हिन्दी पढ़े लिखों की गिनती बहुत कम है और उन में वे भी सम्मिलित हैं जो केवल अपना नाम लिखना जानने से ही पढ़े लिखों में सम्मिलित किये गये हैं। यह हमारे लिये लज्जा की बात है।

अब सन् १९३१ में फिर मनुष्यगणना होने वाली है। यदि हम लोग उस समय तक अधिक निरक्षरता दूर कर सकें तो देश का सौभाग्य होगा तथा हमारा कर्तव्य पूरा होगा। इसके लिये सब से सुगम और बिना खर्च का उपाय नीचे लिखे प्रतिज्ञा-पत्र का पालन करना ही है। यह प्रतिज्ञा-पत्र हिन्दी में शिक्षा देने के लिये है। इसका सब से बड़ा कारण यह है कि देवाक्षर बहुत सुगम और हिन्दी भाषा बहुत सरल है जिस से निरक्षरता जल्द दूर हो सकती है, तथा मातृ-भाषा का प्रेम और प्रचार भी अधिक बढ़ सकता है। इस लिये आप से निवेदन है कि आप इस प्रतिज्ञा में दृढ़ होकर उसे पूरा करें और आप अपनी प्रतिज्ञा के परिणाम को सन् १९३१ की जिले की मनुष्यगणना की रिपोर्ट में देख कर आनन्दित हों। ईश्वर आपको प्रतिज्ञापूरी करने का बल दे।

भवदीय

माधो प्रसाद खन्ना, प्रचार मंत्री

याददाश्त—प्रति वर्ष सन् १९३१ तक के लिये मैंने.....मनुष्यों की निरक्षता दूर करने प्रतिज्ञा की है जिस को पूरा करने के लिये ईश्वर से बल की प्रार्थना करता हूँ।

दस्तखत के बाद इस प्रतिज्ञा-पत्र को देने वाली संस्था या मनुष्य को लौटा दें।

मैं.....

पता.....

प्रतिज्ञा करता हूँ कि कम से कम..... मनुष्यों (स्त्री, बालक तथा पुरुष) को प्रति वर्ष सन् १९३१ की मनुष्यगणना के पूर्व १०० तक गिनती तथा हिन्दी लिखना पढ़ना स्वयम् बिना कुछ लिये अवश्य सिखा दूंगा और सन् १९३१ के बाद भी दूसरे १० वर्ष की मनुष्यगणना तक .....मनुष्यों को सिखाने का पूरा उद्योग करूंगा। ६

कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली

का

द्वितीय वार्षिकोत्सव

कन्या गुरुकुल इन्द्र प्रस्थ दिल्ली का दूसरा वार्षिकउत्सव १४-१५-१६ नवम्बर को बड़ी शान के साथ मनाया गया। जिन लोगों को उसे देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उन्होंने अवश्यमेव उसकी सफलता पर प्रसन्नता प्रगट की होगी। इस वर्ष इस उत्सव को सफल बनाने का उत्कट प्रयत्न किया गया था और न केवल समाचार पत्रों और नोटिसों द्वारा आन्दोलन किया गया वरन् खास दिल्ली में तो इसका प्रचार देवियों में भी किया गया और डेपूटेशन भी घूमा।

१४ नवम्बर के प्रातः काल नई प्रविष्ट होने वाली ब्रह्मचारिणियों का चुनाव था और मध्याह्न में आर्य्य नारी सम्मेलन की बैठक थी। साधारणतया यह अनुमान था कि यह देवियों का जल्सा सफल तो होगा ही

नोटः—इस प्रतिज्ञापत्र की कम से कम २५ प्रतियां मंगाने पर काशी नागरी प्रचारिणी सभा से भेजी जा सकती हैं।

हस्ताक्षर कराने के उपरान्त इसे सभाको लौटाना होगा।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Ha

नहीं परन्तु प्रयत्न करना चाहिये । लेकिन कन्यागुरुकुल की इस दिन की कार्य्य विधिने न केवल इस भूम को ही निर्मूल सिद्ध किया वरन् उस स्वर्ण काल की आशा दिखाई है कि जब कन्या गुरुकुल का उत्सव सर्वाङ्ग में नारी मण्डल से सुशोभित और संगठित हुआ करेगा गुरुकुल शासक मंडल के अतिरिक्त पुरुष साधारण का उस में प्रवेश न होगा । सैकड़ों देवियां इस उत्सव में सम्मिलित हुई और बहुतों की शिकायत रहा कि उन्हें पताही न लगा जलसा कब होगया । जो पेंडाल उनके लिये बनाया गयाथा वह पर्याप्त न था इस दिन कई विदुषी देवियों के व्याख्यान हुये । कन्याओं के खेल हुये चर्खादंगल हुआ चर्खे कातने में प्रथम को एक बड़ा उत्तम चर्खा पारितोषिक दिया गया, द्वितीय को कुछ पुस्तकें, और राजपूत इतिहास में प्रथम को ५) रु० की पुस्तकें दीगई ।

रात को श्रीस्वामी मुनीश्वरानन्द जी का मनोहर व्याख्यान हुआ रात्रि को भी स्त्री पुरुषों की संख्या काफी थी ।

द्वितीय दिवस

दूसरे दिन प्रातः काल की कार्य्य विधि श्रीमान् पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रा नन्दजी महाराज के गुरु शिष्य कर्तव्य बोध रूप उपदेश से प्रारम्भ हुई । उपदेश के बाद नवीन प्रविष्ट ब्रह्मचारिणियों का यज्ञोपवीत संस्कार तथा वेदारम्भ हुआ। यह संस्कार केवल देवियों ने हीं कराया और आचार्या कन्या गुरुकुल कुमारी विद्यावती सेठ बी० ए० ने पांच दस मिनट ब्रह्मचारिणियों को उपदेश दिया जिस में जहां उन्होंने बड़ी ब्रह्मचारिणियों को कहा कि वह नवीन प्रविष्ट ब्रह्मचारिणियों को अपनी छोटी बहिने समझ कर उनके साथ अच्छे प्रेम का वर्ताव करें वहां संरक्षकों से भी प्रार्थना की कि वह गुरुकुल के लिये अपने को उत्तरदाता समझें और हर समय छिद्रान्वेषण न करते रहने का प्रयत्न करें वरन् चूंकि इस संस्था से उन्हीं की सन्तान को लाभ होरहा है अतः अधिकारियों की सहायता करके संस्था को पुष्ट होने में सहायक होवें ।

इस समय २५ कन्याओं का वेदारम्भ संस्कार हुआ । मध्यान्ह समय पंडित इन्द्र जी विद्यावाचस्पति सम्पादक अर्जुन, स्वामी स्वतन्त्रानन्द महाराज, कुमारी चन्द्रवती जी अध्यापिका कन्या गुरुकुल तथा प्रोफेसर रामदेवजी के व्याख्यान हुये । अपने व्याख्यान की समाप्ति पर श्री प्रोफैसर जी ने धन की अपील की जिस पर १५ हज़ार से ऊपर धन एकत्र हुआ । इस में से ६ हजार तो श्री सेठ रघूमलजी का है । गुरुकुलके प्रारम्भ से इन्हो ने प्रतिमास ५००) रुपया दिया है । पहिले केवल एक वर्षके लिये ही यह सहायता थी किन्तु वह इस वर्ष भी पूर्ववत् जारी रहेगी शायद भविष्य में भी रहे । एक हजार रुपया श्री सेठ घनश्यामदास बिडला ने दिया है । एक हजार रुपया लाला दीवान चन्द ठेकेदार दिल्ली ने दिया है । श्री रायसाहब केदारनाथ रईस गुजरात (पंजाब) और श्रीमती धर्म पत्नी लाला ईश्वर दास कपूर रईस पिण्ड दादन खां ने पांच २ सौ रुपया दान दिया है । श्री पंडित ठाकुरदत्त जी शर्मा अमृतधारा भवन लाहौर ने कन्या गुरुकुल के पुस्तकालय में वैदिक ग्रन्थों के मंगाने के हेतु ५००) रुपये देने का वचन दिया है। कन्या गुरुकुल की स्थिर सेवा के लिये विधवाओं को शिक्षा देनेकी एक स्कीम बनाई गई है इसके लिये कतिपय सज्जनों से

क्षात्र वृतियां प्राप्त की गई हैं दिल्ली के सेठ बनारसीदास जी ने ५ क्षात्र वृतियों का १००) मासिक देना स्वीकार किया है। और यदि उन्होंने देखा कि यह स्कीम सफल हो रही है तो वह इस सहायता को स्थायी रूप से देंगे। लाहौर से पंडित हीरानन्द जी मैनेजर अमृतधारा तथा म० रोशन लाल जी स्पोर्टसमैन जी ने एक २ क्षात्रवृति देना स्वीकार किया है। कई संरक्षकों ने भी १००) तथा २५०) की रकमें भेजी हैं दिल्ली की स्त्री समाज और जामपुर समाज ने ५०) रु० भेजे हैं बाकी समाजें ने इधर विशेष ध्यान नहीं दिया है। यह पहिला ही अवसर है जब कि कन्या गुरुकुल के लिये इतना परिश्रम करके धन एकत्र किया गया है। देहली के आर्यपुरुष तथा देवियां गुरुकुल के अधिकारी और विशेष रूप से श्री प्रो० रामदेव जी तथा संरक्षक लोग इस सफलता के लिये धन्यवाद के पात्र हैं परन्तु आर्य समाजों और आर्य जनता के सम्बन्ध में यह कहना कठिन है क्योंकि यदि वह इस पवित्र कार्य में हाथ बटाते तो सफलता कहीं अधिक होती। अस्तु 'बीती ताहि विसार दे आगे कोसुधिले'। इस दिन भी देवियों की संख्या बहुत थी। रात्रि को श्री पंडित राम चन्द्र जी देहलवी निवासी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

तृतीय दिवस

यद्यपि इस दिन कोई विशेष रूप से दफ्तरों में छुट्टी न थी तथापि उपस्थिति अच्छी थी। प्रातः काल श्री प्रो० गोपाल जी बी० ए० सहायक मुख्याधिष्ठाता इन्द्रप्रस्थ गुरुकुल का उपदेश हुआ। मध्यान्ह में श्रीमती सरला देवी जी संस्कृत अध्यापिका कन्या गुरुकुल का संस्कृत में भाषण हुआ जिसमें उन्होंने कन्या गुरुकुल की आवश्यकता पर बल दिया। इस के बाद आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाबकी उपदेशिका श्रीमती द्रौपदी जी का व्याख्यान हुआ। उन्होंने भी कन्याओं की शिक्षा इसी प्रणाली पर हो इस पर बल दिया। फिर पंडित धर्मभिक्षु जी तथा श्रीस्वामी मुनीश्वरानन्दजी के व्याख्यान हुये। चूंकि समय हो चुका था अतः प्रो० रामदेव जी के अन्तिम धन्यवाद के पश्चात् शांति पाठ हुआ और सभा विसर्जित हुई।

इस वर्ष खान पान तथा ठहरने का प्रबन्ध सब गुरुकुल की ओर से था और बहुत अच्छा था। दर्शक दर्शिकायें बड़े प्रसन्न हो कर घर पधारे हैं।

नवीन वाइसराय से आशा मत करो।

ज्योति के पाठकों को यह तो पता हो गया ही है कि लार्ड रीडिंग अब भारत वर्ष के वाइसराय के पद से अगल होकर स्वदेश को जारहे हैं और उनके स्थान पर आनरेबिल मिस्टर उड-नामक के व्यक्ति वाइसराय नियत होचुके हैं। इन नये वाइसराय के गुणगान तो बहुत होरहे हैं। कई लोग कहते हैं कि उनका व्यक्तित्व कुछ नहीं है, कोई उन्हें जानता भी नहीं है और वह किसी कार्य में अग्रसर भी न होंगे वरन लार्ड वर्किन हेड के हाथ में खिलौना बन कर रहेंगे। दूसरी ओर कुछ लोग ऐसे भी हैं जिनका विश्वास है कि यह वाइसराय महोदय वर्त्तमान अंग्रेज नीतिज्ञों में से प्रथम श्रेणी के हैं। अबोध और अपढ मनुष्य समाज के लिये इनका हृदय बहुत उदार और अगाध प्रेमसे भरा हुआ है। यह भी सुनाई पड़ता है कि यह शरीर की बनावट में छै फीट ३ इन्च लम्बे हैं, आकृति धर्मोपदेशकों कीसी है मुख मण्डल पर बाल

CC0. Gurukul Kangri Collection, Ha...

सुलभ सरलता टपकती है, विशाल मस्तक और गडी हुई बड़ी २ आंखें इस बात को सूचित करती हैं कि वह जीवन के प्रश्नो पर बड़ी शान्ति और गम्भीरता से सोच सकते हैं और उनके व्यवहार में हंसी और मिठास, उत्साह और सहनशीलता, दयालुता और गम्भीरता पाई जायगी। यह चित्र तो इस बात की सूचना देता है कि नये वाइसराय महोदय दार्शनिक विचार वाले हैं परन्तु वह अपने विचारों को कार्य में परिणत करने की शक्ति से हीन हैं। उन्हों-ने पूर्वीय अफ्रीका में रंग के प्रश्न को हल करने की बड़ी अच्छी विधि बताई परन्तु जब उसे काम में न लाया गया तो चुप्पी साध बैठे। ऐसे व्यक्ति भारत में स्व-राज्य के आंदोलन को आगे बढ़ा नहीं सकते। अपने को पण्डित मानने वाले और अस्ख-लित समझने वाले भारत सचिव के रहते हुये और वर्तमान स्वार्थपर शासन की उप-स्थिति में मृदुभाषी आत्माभिमान रहित दार्शनिक विचारवाला वाइसराय अधिक से अधिक इतना ही उपयोगी बन सकता है कि वह शासन के नैत्तिक कार्य्य को यथा शक्ति निभा ले जावे। वह किसी सुधार को उत्तेजना नहीं दे सका, किसी काम में बाधा नहीं डाल सकता। यह भी कहा जा रहा है कि नवीन वाइसराय महोदय कृषि-विद्या के पण्डित हैं। इसमें सन्देह नहीं कि भारतवर्ष को ऐसी योग्यता वाले वाइसराय की परम आवश्यकता है जो इधर भी उन्नति कर सके। परन्तु यह बड़ा भारी भ्रम है कि वर्तमान शासन को जिसने स्वर्गीय ग्रामीण जीवन को विनष्ट करके रोगोत्पादक शहरी जीवन को उत्तेजना दी है—इस कृषि की उन्नति की ज़रा भी फ़िक्र है, आप कृषि की उन्नति के हेतु भारत में नहीं भेजे जा रहे हैं किन्तु एक मात्र उद्देश्य यह है कि इस समय जो झगड़े झंझट हो रहे हैं उन्हें सहनशीलता द्वारा रोक सकें!

———

डाक्टर तेज बहादूर सप्रू और गुरुकुल शिक्षा प्रणाली।

अभी प्रयाग विश्व विद्यालय के दीक्षान्त संस्कार में जो डाक्टर तेजबहादुर सप्रू ने वक्तृता दी है उस में यद्यपि स्पष्ट रूप से उन्हो ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का समर्थन नहीं किया क्योंकि पाश्चात्य रीति नीति से सुसज्जित विद्यापीठ में जांगली शिक्षा प्रणाली का वर्णन लाना कदाचित उसकी शान के अनुकूल न समझा गया हो। किन्तु लक्ष्य उनका उसी प्रकार की शिक्षा की ओर था। यहां पर हम कुछ उद्धरण देकर यह दिखलायेंगे कि सुयोग्य न्यायाधीश यह मान चुके हैं कि वर्तमान शासकों द्वारा प्रचारित शिक्षा प्रणाली केवल ज्ञान के लिये विद्या-भ्यास करने के भाव को नहीं लासकी। वह कहते हैं कि:—

"चाहे युनीवर्सिटियों के नीव डालने वालों की यह इच्छा रही हो या न रही हो परन्तु यह सत्य है कि गत ४०, ४५ वर्ष में इन विद्यापीठों ने केवल ऐसे सरकारी सेवकों को ढालने की फैक्टरी का काम किया है जो कि अपने मालिकों की आज्ञा पालन करते रहें परन्तु उनकी तरह शासन न करसकें; चतुर न्यायकर्त्ता हों लेकिन कुछ हद तक ही बढ़ें और स्कूल मास्टर और प्रोफेसर तो

बनना स्वीकार करलें परन्तु रोज ही आसरा लगाये रहें कि कहीं और से बुलावा आजावे। कोई सरकार भी विश्व विद्यालयों से निकले सैकड़ों और हजारों विद्यार्थियों को नौकरी नहीं देसकती। और जगह के लिये स्पर्धा हमारे नवयुवकों और सरकार के लिये भी गिरावट काही साधन है। पठित नवयुवकों के लिये कोई काम निकालना आज कलके प्रश्नों में एक बड़ाभारी प्रश्न है"।

आगे चल कर वह कहते हैं कि "हमारी सामाजिक अवस्था द्वाराही हमारे नवयुवकों पर बड़ा बोझ पड़ जाता है कि गृहस्थ की जिम्मेवारियों से उस प्रारम्भिक दशा मे ही जकड़े जाते हैं जब कि उन्हें अपनी मानसिक और आत्मिक शक्तियों को विकसित करने के लिये स्वतन्त्र होना चाहिये था"

फिर वह कहते हैं कि—"लेकिन सब से आवश्यक हानि हमारी वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली में जो है और जो मित्र और शत्रु सभी को खटकती है वह यह है कि हमारी शिक्षा का माध्यम स्कूलों और कालिजों में जो है वह अंग्रेजी है। इसका परिणाम शोक जनक है।

बनारस और अलीगढ़ के विश्वविद्यालय भी अवस्था से बाधित होकर इन्हीं की नकल करने पर विवश हुये हैं। इत्यादि २।

यह शोक की बात है कि डा० तेज बहादुर सप्रू को यह पता नहीं कि उसमानियां विश्वविद्यालय में तो उन विद्यार्थियों को जिन की मातृभाषा तेलगू है उर्दू में शिक्षा दीजाती है—वह उसी सफलता पर मस्त हैं परन्तु गुरुकुलविश्वविद्यालय हरिद्वार में तो गत १५ वर्षों से प्रायः सभी विषयों-अर्थशास्त्र, युरोपियन इतिहास, रसायन, राजनीति आदिकी शिक्षा आर्यभाषा माध्यम से दीजा रही है जिस की तारीफ सर माइकेल सैडलर तथा आशुतोष मुकरजी ने भी की है॥

कन्या गुरुकुल समाचार।

स्वास्थ्य।

ब्रह्मचारणियों का स्वास्थ्य अति उत्तम है देहरादून से वापिस आकर प्रायः सभी की तौल बढ़ी है कोई २ तो ३, ४ सेर बढ़ी है। किन्तु दुर्भाग्य वश तीन केस टाइफाइड ज्वर के भी और हुए उन तीनों ने डेढ़ मास के बाद स्वास्थ्य लाभ कर लिया है यह बड़ी प्रसन्नता की बात है। इस समय आश्रम की सभी निवासिनियां स्वस्थ हैं।

उत्सव के पश्चात्।

इस वर्ष उत्सव बड़ी सफलता से हुआ जिसका वृतान्त अन्यत्र प्रकाशित है। उत्सव के पश्चात पठनपाठन का क्रम नियम बद्ध हो रहा है एक श्रेणी इस वर्ष और बढ़ गई है। अतः (अ) और (ब) को मिलाकर यहां पर ८ श्रेणियां हो गई हैं। संस्कृत की पढ़ाई भी कई श्रेणियों में हो गई है।

परीक्षा परिणाम।

इस वर्ष बाहर के परीक्षक परीक्षा लेने आये थे उनकी जो रिपोर्ट है वह बहुत उत्साह देने वाली है। दो चार बहुत ही कम जोर लड़कियों को छोड़ कर प्रायः सभी ने बड़ी उत्तमता दर्शाई है और सभी सफल हुई हैं।

अध्यापिकाओं की न्यूनता।

यद्यपि सभी आर्य्य भाषा उर्दू के समाचार पत्रों में कन्या गुरुकुल के लिये अध्यापिकाओं की आवश्यकता निकाली गई है। किन्तु बहुत उत्तम कार्य्य करने वाली विदुषी देवियों के प्रार्थना पत्र नहीं आ रहे हैं पता नहीं इस का कारण देश की देवियों की विद्या हीनता है या कि उन की देश सेवा से विमुखता है। कन्यागुरुकुल में आर्य्य भाषा और संस्कृत की प्रधानता है अतः मामूली शिक्षा प्राप्त देवियां तो उसी श्रेणी से ऊपर सफलता पूर्वक शिक्षा नहीं दे सकती हैं और उच्च शिक्षा प्राप्त देवियां प्रायः अंग्रेज़ी माध्यम से पढ़ी हुई होने के कारण सम्भवतः इस भय से आगे नहीं आ रही हैं कि शायद वह यहां शिक्षा न दे सकें। परन्तु कोई भी कारण क्यों न हो यह बड़ी शोचनीय अवस्था कि देवियां की एक मात्र धार्मिक उच्च कोटि की संस्था हो और वहां पर भी देवियों को कार्य करने के लिये उत्साह न हो। आशा है कि हमारी शिक्षिता बहिनें इस धर्म के कार्य्य में आगे बढ़ने का यत्न करेंगी और जहां कहीं वह होंगी वह इस कुल की रक्षा करके इसे सफल बनावेंगी यदि उन्हें वेतन लेकर सेवा करने की आवश्यकता न भी हो तो कम से कम धर्म भाव से प्रेरित होकर ही वह सहायता दें।

कन्या गुरुकुल की मुख पत्रिका ज्योति की दशा दिन पर दिन शोचनीय हो रही है क्योंकि आर्य्य जनता उसे अपना नहीं रही है हमने संरक्षकों से अपील की थी कि प्रति संरक्षक कम से कम ५)ही घाटे की पूर्त्ति के निमित्त दे डाले और एक २ दो २ ग्राहक बनादें परन्तु दो चार सज्जनों को छोड़ कर किसी ने ध्यान ही नहीं दिया।

ज्योति का इस वर्ष का यह आठवां महीना है। ४ मास और रहते हैं यदि इस समय में आर्य्य जनता और संरक्षकों ने ध्यान न दिया तो ४ मास बाद उसे बन्द करना ही पड़ेगा। क्योंकि जो कार्य्य लाभदायक और उपयोगी न हो उसे घसीटते जाना बुद्धिमत्ता नहीं है।

हमने उसकी रक्षा के लिये उत्कट प्रयत्न किया परन्तु जब हमारी सहायता ही संरक्षक लोग तथा आर्य्यभाषाप्रेमी न करेंगे तो अकेले एक जन क्या कर सकता है ज्योति तो बन्द हो जायगी परन्तु आगे को कन्या गुरुकुल से कोई पत्रिका निकल भी न सकेगी। क्योंकि जब इतने वर्षों के परिश्रम से बचाई हुई पत्रिका की रक्षा न हो सकी तो और के लिये क्या आशा हो सकती है। अतः देवियों और भाइयों अभी भी समय है अब भी पुरुषार्थ करके ग्राहक संख्या बढ़ाकर इस पत्रिका को बचा लो वरना 'का वर्षा जब कृषि सुखाने। समय चूंकि पुनि का पछताने क्या हम आशा करें कि हमारे ज्योति के वर्त्तमान पाठक और पाठिका इसे पढ़ते ही अपने २ शहर से कम से कम एक २ ग्राहक अवश्य बनाकर भेजने की सहायता करेंगे और ज्योति को बन्द न होने देंगे।

हमारी मंजूषा

यज्ञ पात्र वाक्स—आर्य्य संसार को अग्नि होत्र करने का लाभ बतलाने की आवश्यकता नहीं है सभी जानते हैं और इसे धर्म का अङ्ग मानते हैं परन्तु सिद्धान्त रूप से मानते हुये भी बहुतसे बहिन भाई नित्य अग्निहोत्र करने का अभ्यास नहीं रखते और बहुतेरे नियमपूर्वक करनेवाले सज्जनभी जब बाहर सफर परजाते हैं तो अग्निहोत्र के साधन साथ न होने के कारण अग्निहोत्र करने से वंचित रह जाते हैं ऐसे श्रद्धा ओं की सुगमता के लिए आर्य साहित्य मण्डल अजमेर ने ऐसायज्ञ वाक्स तैयार कराया है जिसमें हवन कुण्ड, घी सामग्री रखने के वर्तन चमचा गिलासी छोटी चिमची तिपाई तथा डब्बी सामग्री की और एक कुप्पी घो के लिये भी है। मूल्य केवल ४) रुपये हैं वक्स देखने में बड़ा सुन्दर है और हलका भी है। बिल्कुल हैण्डबैग ही लगता है एक बात उसमें सुधारने की यह है कि यज्ञ के वर्तन एक ही ढङ्ग के और अपने प्रकार के होने चाहिये।

राजस्थान—सम्पादक श्रीयुत सत्यदेव जी विद्यालंकार। वार्षिक मूल्य ४) आकार प्राकार में ज्योति की भांति की यह भी मासिक पत्रिका ४२ पृष्ठ की अजमेर से निकलने लगी है।

इस पत्र का ध्येय राजस्थान निवासियों तथा मारवाड़ी समाज की सेवा करनी है मारवाड़ी समाज में जिन २ कुरीतियों वृद्ध विवाह बाल विवाह जुआ खेलना विलासिता और चरित्र हीनता आदि का अत्याधिक प्रचार है उन पर इसपत्रने प्रकाश डाला है और वैदिक आदर्श भी सामने रक्खा है। आशा है योग्य सम्पादक सत्यदेवजी के हाथ में रहकर यह पत्रिका अपना लक्ष्य अवश्य पूरा करेगी सब आर्य भाषा प्रेमियों को विशेष कर मारवाड़ियों को इसे अवश्य पढना चाहिये।

मारवाड़ी मित्र—सम्पादक प० उदय चन्द्र वैद्य [हिन्दी चित्र मय जगत सम्पादक पूना तथा बाबू जगदीश सिंह गहलोत एम आर. ए. एस. जोधपुर मूल्य ३) वार्षिक। आकार प्राकार ज्योति जैसा है। इस पृष्ठ संख्या ४० है, इसका आठवां अङ्क हमारे सामने है। इस में कई शिक्षाप्रद चित्र भी हैं।

यह मारवाड़ी भाषा में है। अतः जो सज्जन केवल मारवाड़ी पढ़ना जानते हों उन्हें भी वर्तमान विचार प्रकृति का ज्ञान प्राप्त हो सके। अतः इसका अविर्भाव हुआ है।

श्रीमद्भगवद्गीता सरल भाषा टीका सहित टीकाकार पंडित ईश्वरी प्रशाद शर्मा प्रकाशक आर एल वर्मन कम्पनी६७अ३ पर चीतपुर रोड कलकत्ता। २०x३० साइज १६ पेजी पृष्ठि संख्या १२३ है। छपाई तथा कागज के विचार से पुस्तक निर्दोष है सब से बड़ी विशेषता यह है कि इतनी बड़ी पुस्तक होने पर भी मूल्य वे वल मात्र ≠) है यों तो गीता संसार प्रसिद्ध है उसमें भी आर्य्यजाति के आवाल वृद्ध सभी उस से परिचित हैं गीता का स्वाध्याय आर्यजाति के लिये कितना हितकर है इस विषय में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है गत हिन्दू महासभा के कलकत्ता वाले अधिवेशन में प्रत्येक हिन्दू सन्तान को भगवद्गीता पढ़ने पढ़ाने जोर दिया गया था, परन्तु गीता पर ऐसा

कोई सरल तथा सुलभ टीका नहीं छपी थी जिससे साधारण जनता लाभ उठा सके इसी अभाव के पूर्त्यर्थ वर्मन कम्पनी ने उक्त गीता का सुलभ सस्करण निकाला है। टाईटिल पेज पर भगवान कृष्ण तथा अर्जुन का युद्ध भूमि का चित्र भी दिया है। जिस से पुस्तक उपयोगी होने के अतिरिक्त चित्ता कर्षक भी हो गई है। हम हिन्दू मात्र से अनुरोध करते हैं कि वे उसे अवश्य मंगावें और लाभ उठावें। साथ ही यह भी ध्यान रहे कि उक्त कम्पनी ५ पुस्तकों से कम की वी० पी० नहीं भेजती। यदि कोई सज्जन एक ही पुस्तक मंगाना चाहें तो वे ≠) पुस्तक का मूल्य तथा ⁄) डाक खर्च कुल ≠) का टिकट भेजकर मंगा सकते हैं।

हिमगिर सन्देश—मूल लेखक श्रीयुत पाल रिचार्ड के (टु इण्डिया, दी मैसेज औफ़ दी हिमालियाज़ का पद्यात्मक छायानुवाद है) अनुवादक श्री हरिशरण श्री वास्तव्य मराल बी० ए० एल० एल० बी० वकील मेरठ है। पुस्तक २०+३० साइज़ १६ पेज के लगभग ४८ पृष्ठों में समाप्त हुई है। सरस्वती प्रेस मेरठ से मिल सकती है मू० ।≠) है।

मूल पुस्तक के लेखक फ्रांस देशनिवासी मोसिओ पाल रिचार्ड महोदय भारतवर्ष के अन्यन्य भक्त तथा योगिराज महात्मा अरविंद घोष के सुहृद तथा समान विचार रखने वाले हैं। इस के अतिरिक्त स्वदेश में भी उनकी विद्वत्ता तथा दार्शनिकता की धाक जमी हुई है। ऐसे व्यक्ति द्वारा जो पुस्तक लिखी जाय उसकी उपयोगिता कहां तक होगी। इसे पाठक स्वयम् विचार सकते हैं यद्यपि पुस्तक का अनुवाद अंग्रेज़ी भाषा में भी हो चुका है। तथापि वह हिन्दीभाषा भाषियों के लिए कोई लाभ नहीं पहुंचा सकता। इस अभाव को मराल महोदय ने पूरा किया है मराल महोदय के रचनाओं से हिन्दी भाषा, भाषी भली प्रकार परिचित हैं। आप हिन्दी के उत्थान के लिए सदैव सयत्न रहते हैं। प्रथम किसी ग्रन्थ का अनुवाद करना ही कठिन है उस में भी पद्यात्मक अनुवाद तो और भी कठिन है किन्तु, लेखकने अपने कार्य्य में कितनी सफलता प्राप्त की है। पुस्तक अवलोकन पाठक स्वयं जान सकेंगे।

सेवा—सेवासमिति बालचर मण्डल इलाहाबाद से पं० काशीनाथ मालवी के सम्पादकत्व में मासिक पत्र निकलता है। सरस्वती साइज़ के ३२ पृष्ठ तथा वार्षिक मूल्य २॥) है।

कला-कौमुदी—जब से ज्योति में इस का विज्ञापन निकला है तब से हमारे पास बहुत से पत्र इसकी मांग के लिये आ रहे थे परन्तु पुस्तक अभी तय्यार न थी। अब वह शीघ्र ही छपकर तैयार होने वाली है। अतः जो लोग अभी से १॥) भेजकर अपना नाम रजिस्टर करा देंगे, उन्हें छपते ही पुस्तक रजिस्टरी द्वारा भेज दी जावेगी १० पुस्तक तथा इससे अधिक खरीदने वाले को पौनी कीमत पर मिल सकेगी। रुपया पेशगी भेजकर नाम रजिस्टर कराने वालों से डाक महसूल भी नहीं लिया जायगा। मंगाने वालों को चाहिये कि शीघ्रता करें। यह रियाअत दिसम्बर १९२५ के अन्त तक ही है हैं!

जल्दी कीजिये! जल्दी कीजिये!!

मिलने का पता:—

कन्यागुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

कोठी नं० ४

दरियागञ्ज दिल्ली

बालकों के फैंसी कुरते – इनकी सुन्दरता देखने ही सम्बन्ध से रखती है, हर एक रङ्ग के क़ीमत ४) ५) ६) ७) ६) १०) यही जरी के १५) २०) २५)

बोडी या जाकेट—जनानी चाहे जिस नापकी की० ४) ५) ६) यही जिस सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

पता—सुख संचारक कम्पनी, मथुरा ।

☞ BE REST ASSURED—
THAT OUR
WALL CLOCK
'TIC-TAK' (Regd.)
GIVE YOU PERFECT TIME.
OUR WALL CLOCK "TIC-TAK"
HAS EARNED A NAME THAT
CANNOT BE BEATEN.
PRICE Rs.
THREE only.
Order now if you have not already

Peter Watch Co.,
Post Box No. 27,
MADRAS.

पं० अनन्तराम शर्मा के प्रबंध से सद्धर्म प्रचारक प्रेस दरियागंज देहली में छपा।

और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

The World's Record Timekeeper

To the intending purchasers of a sound, strong and elegant timekeeper, we would strongly recommend our well known

No. 1001.

ELECTRO GOLD PLATE WRISTLET WATCHES

This is the very newest style wristlet watch These watches are artistically finished of the best workmanship, and are guaranteed for 3 years.

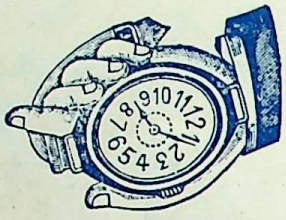

Their average daily variation, when used with proper care, is 1 to 2 second, a result which has never been surpassed by watches of much higher prices.

Price, Rs. 7-8-0, with Strap or Bracelet for Radium Dial, Re. 1-8-0 Extra.

N B.—*Purchaser of 3 Watches at a time will get one German-made 4-in dial alram Timepiece free.*

The Most Fascinating Perfume

LILY OF THE VALLEY

Free from Alcohol or Spirits, and hence can be used by all without any restriction. It possesses the most fragrant smell of the different kinds of fine flowers. Noitce minutely the delightfulrike freshlyeplucked flow ers-smell very now and then. In lasting qualities, it is unsurpassed. askfor,

LILY OF THE VALLEY

1 oz. Bottle Re. 1—8-0

1 Dram Bottle 0-12-0

Dram Bottle 0—8-0

Sample Bottles, Doz. Re. 1-4-0

" " Each 0-2-0

Hurry up to

PETER WATCH CO.,

P.B. 27, MADRAS

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियां, जाकटें और कुर्ते बहुत ही खूबसूरत फैंसी बनावट के मिलते हैं एकबार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महगे जचें तो फ़ौरन वापिस भेजकर क़ीमत वापिस मंगा लीजिये क़ी० साड़ी वेल रेशम की किनारीदार ७) ८) ९) १०) १२) जरी किनारी १५)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं; और बालों का उखड़२ कर गिरना बन्द होता है क़ी० ॥)

बच्चों के गल के लाकिट—ये लाकिट दांत सुगमतासे निकलने के लिये प्रसिद्ध हैं क़ी० ॥।)

बालसुधा—गोद के बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शीशी ॥।)

महा सुगंधित तैल—माथे को सुगंधित और ठंडा करने वाला तैल कीमत १)

ब्रासलेट वाच।

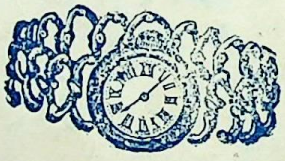

न० ३२ यह बिलकुल ही नई फैशन की चीज है इसके बीच में एक छोटी सी जेबी घड़ी है और इधर उधर चूड़ियां ऐसी तर्ज़ से बनाई गई हैं कि चाहे जैसे बड़े हाथ में पहिना लीजिये ठीक नाप की हो जावेगी हिन्दुस्तानी बड़े घरों की स्त्रियां भी इसे बहुत पसन्द करती हैं क्योंकि घड़ी की घड़ी और गहने का गहना है, पातल पर सोने की गिल्ट वालीं का दाम ८) रु० जिसके चारों तरफ नग जड़े हैं दाम १०) रु० ॥

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूची-पत्र मगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता—सुख सञ्चारक कम्पनी मथुरा।

वर्ष ६] मार्ग शीर्ष १९८२— दिसम्बर १९२५ Regd. No. L. 1240. [खण्ड ६, संख्या ८

वार्षिक मूल्य ४॥)
प्रति संख्या ॥)
सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए०
स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
विदेश का मूल्य ६)

विषय सूची।

विषय		पृष्ठ
१	"लाज बिगारत लाज रखैया।" ले०--श्रीहरि	३४६
२	जीव-विद्या तथा वैदिक-संस्कार ले०-श्री प्रो० रामदेव जी आचार्य्य गुरुकुल कांगड़ी ...	३५०
३	संकेत [कविता] ले०—नयन	३५२
४	पर्दा ले; प्रो. सत्यव्रत सिद्धांतालङ्कार	३५३
५	दुःखोद्गार ले०—श्री हरिहर ओझा ...	३६१
६	दिव्य मातृ-शक्ति ले० श्री शिवदयाल मेरठ ...	३६२
७	संसार की बहुमूल्य वस्तु ले०—श्री चतुरसेन शास्त्री ...	३६४
८	मोहनी के आंसू श्रीयुत संतलाल दधिमथ वैद्यराज	३७०
६	कुसुमोद्यान	३७६
१०	वनिताविनोद	३८४
११	वर्तमान शिक्षा पर एक दृष्टि ले० बलवन्त मिश्र हिंदी आनर्स	३८६
१२	नारी चरित्र पर पुरुषों का प्रभाव ले० श्री कृष्णकुमार मिश्र ...	३८८
१३	मूर्खता ले० श्री रामचन्द्रसिंह हेडमास्टर	३६०
१४	पुत्री शिक्षा माताओं के कर्तव्य ले० श्री पुष्पावती देवी ...	३६४

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—
१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।
पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें।

वर्ष ६ | मार्गशीर्ष १९८२—दिसम्बर १९२५ई० | संख्या ८

✣ लाज बिगारत लाज रखैया ✣

(लेखक—"श्रीहरि")

पावस में जल ही जल है, कलपे तलपे पर प्यासा पपैया।
पार अपार समुद्र हुई, पर घाट में आकर डूबती नैया॥
रंक बने मग डोलत हैं, नृप वे जिन की जग लेत बलैया।
"श्रीहरि" बाम भये विधि के अहो लाज बिगारत लाज रखैया॥१॥

जीव विद्या तथा वैदिक संस्कार ।

[लेखक—श्री प्रोफेसर रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी]

सर्वथा यह देखने में आता है कि जीवन को उच्च करने के लिये जो बातें बहुत सहायक तथा आवश्यक हैं उन्हें भी लोग नहीं करते । सब जानते हैं कि स्वास्थ्य के लिये स्वस्थवृत्त के नियमों का पालन आवश्यक है परन्तु फिर भी स्वास्थ्य की इच्छा रखते हुए भी इन नियमों का पालन नहीं होता। इसका कारण यह है कि मनुष्य के अन्दर स्वाभाविक रुचि सुगम तथा रोचक बातों की ओर है और यह आवश्यक नहीं कि यह बातें लाभदायक भी हों। हैव लौक एलिस (Havelock Ellis) ने भी इस कठिनता को अनुभव करते हुए यह परिणाम निकाला कि जबतक कोई सिद्धांत धर्म का अङ्ग नहीं बना दिया जाता तबतक उसका पालन सम्भव नहीं उदाहरणतया प्रायः बहुत लोग मांसाहार को बुरा तथा हानिकारक समझते हैं परन्तु फिर भी मांस का भक्षण कर ही लेते हैं। जैनियों ने इसे धर्म की दृष्टि से पाप बना दिया और यही कारण है कि कोई भी जैनी मांस नहीं खा सकता, मुसलमान यद्यपि अत्यन्त मांसाहारी हैं परन्तु शूकर को क्योंकि उन्होंने धर्म की दृष्टि से पाप मान लिया इसलिये कोई मुसलमान शूकर का मांस नहीं खा सकता।

पाश्चात्य देशों में जीवन विद्या (Eugenics) के लिये कितना शोर मच रहा है परन्तु इसके पालन करने वाले विरले ही हैं। हमारे ऋषियों ने इस विज्ञान का महत्व समझते हुए इसे कार्यरूप में परिणत करने के लिये यही उचित समझा कि इसे धर्म का अङ्ग बना दिया जावे यही कारण है कि जहां आज भारतवर्ष का एक २ बच्चा भी ब्रह्मचर्य्य के अर्थों को समझता है वहां पश्चिमी देशों में अभी यही निश्चय हो रहा है कि यह अवस्था क्या कल्पनात्मक तो नहीं है।

यह दिखाने के लिये कि हमारे ऋषियों ने कैसी सुन्दरता से जीवन विद्या के नियमों को जीवन में घटाकर जीवन का अंग बना दिया, कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

१—यह अनुभव करते हुए कि माता, पिता की मानसिक तथा शारीरिक अवस्थाका प्रभाव सन्तान पर केवल सन्तान के उत्पन्न हो चुकने पर ही नहीं पड़ता प्रत्युत उत्पत्ति से पहिले २ की अवस्थाओं का भी प्रभाव पड़ता है। इसे Eugenics के वर्तमान विद्वानों ने Ante-Natal influences का नाम दिया है। गर्भावस्था में तो जननी का प्रभाव पर्याप्त होता है इसीलिये ऋषियों ने पुन्सवन संस्कार को भी पर्याप्त महत्व दिया है। वर्तमान काल में पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस प्रभाव को आवश्यक समझा है (Parturient influences).

पुंसवन संस्कार में—

(क) जननी के स्वस्थ होने का विशेष ध्यान रखा जाता है क्योंकि जननीके मस्तिष्क में यह बात बैठा दी जाती है कि यह स्वास्थ्य उसे अपने वास्ते नहीं प्रत्युत उस

शिशु के लिये जिस ने उत्पन्न होकर अपने राष्ट्र के लिये आप प्रजा बनना है, जननी स्वार्थ भाव से अपने लिये तो स्वस्थ रहने की चेष्टा न करे परन्तु यह कब हो सकता है कि जब उसे यह दर्शा दिया जावे कि वह एक भावी जाति रत्न की माता बनेगी तो वह अपने उत्तम स्वास्थ्य ग्रहण में कोई त्रुटि या भूल कर जाये। वह इस आशा में इतनी निमग्न हो जाती है कि जब उसे घी में अपना चेहरा देखने को कहा जाता है और उस से पूछते हैं कि 'देवी तू घी में क्या देखती है, तो वह यही उत्तर देती है कि 'मैं इस में प्रजा देखती हूँ, इस संस्कार के करने से जननी को यह बताना है कि अब से वह अपने लिये नहीं जी रही है। किन्तु उस का जीवन उसके संतान के लिये है कैसा शुभ संकल्प है यदि सब माताएं अपने बच्चों के इस उद्देश्य से जियें कि उनकी सन्तानों को राष्ट्र बनाना है तो क्या परिणाम हो सकता है यह समझना कठिन नहीं है।

(ख) इस संस्कार से एक और भी बड़ा लाभ यह है कि पिता को समाज के सन्मुख स्वीकार करना पड़ता है—चूंकि वह भ्रूण का जन्म दाता है। इस लिये उसकी यह हार्दिक अभिलाषा भी है कि यह सन्तान चिरायु हो जिस से उसे सन्तान सम्बन्धी कोई दुःख न प्राप्त हो और वह यहभी प्रतिज्ञा करता है कि सन्तान के सुख तथा आयुवृद्धि के लिये उसकी रक्षा में तत्पर रहेगा।

इस घोषणा का यह परिणाम होता है कि पाश्चात्य देशों की नाईं जननी को यह भय नहीं रहता कि उसका पति और उसके बच्चे का पिता उसे इस गर्भावस्था में कहीं अरक्षित ही छोड़ जावेगा और यह भी अवस्था कभी आनेकी सम्भावना नहीं रहती कि बच्चा संसार के काम करता२ वृद्ध भी होजावे परन्तु उसेयह पता न हो या किसीको यह बताने का साहस न हो कि उस का पिता कान था।

(ग) इस संस्कार से गर्भावस्था की समाज में घोषणा हो जाती है जिससे जननी को यह साहस नहीं पड़ सकता कि कभी गर्भपात का भी विचार कर सके।

२—सीमन्तोन्नयन संस्कार

यह संस्कार छठे या आठवें मास में करते हैं जब कि भ्रूण की बुद्धि का जो एक प्रकार की मानसिक शक्ति ही है प्रादुर्भाव होने लगता है या ओज (physical basis of life) दृढ़ होने लगता है। अर्थात् जब कि भ्रूण का मस्तिष्क उन्नत हो रहा होता है उस समय जननी को भी विशेष तौर पर अपने शिर की सफाई का आदेश किया जाता है। माता को यह भी शिक्षा दी जाती है कि उसे उत्तम २ बातें, स्थानें, चित्रें और महान व्यक्तियों का ध्यान करना चाहिये जिस से बालक की बुद्धि भी वैसी ही उत्तम और स्वच्छ हो जावे।

३-यही नहीं कि गर्भ के पूर्व और गर्भावस्था में ही संस्कारों का प्रभाव हो प्रत्युत ऋषियोंने गर्भान्तर अवस्था (Post natal) पर भी पर्याप्त बल दिया है जैसे माता को आदेश है कि नवजात को स्वच्छ जल भी चुसावे क्योंकि यह अमृत है वास्तव में कभी २ भूल कर दी जाती है कि शिशु को दूध ही दूध दिया जाता है परन्तु शिशु को जल की भी पर्याप्त आवश्यकता होती है।

इसके अतिरिक्त शिशु के वस्त्र, भोजन, और अन्य बातों की भी शिक्षा दी है।

४-सब से बढ़कर जीवन विद्याके नियमों को गर्भाधान संस्कार में घटाया है। गर्भा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by

धानके महत्व को समझते हुए इसे कोई कलङ्कित कार्य नहीं बताया प्रत्युत इसकी पवित्रता और इसका उच्च आदर्श सन्मुख रखा है। इस संस्कार को छिपाने का यत्न नहीं किया प्रत्युत समाजको बताया है कि दम्पति अब इतने कलवान और सदाचारी हैं कि वे समाज को एक उत्तम प्रजा भेट करने के योग्य है और वे इस समाज के सेवा के भाव से प्रेरित होकर बड़े प्रफुल्ल चित्त हैं। उनकी इस प्रसन्नता में समाज के प्रति श्रद्धा, भक्ति और आत्मत्याग है और विषयवासना का ज़राभी अंश नहीं।

इस प्रकार ऋषियों ने जीवन विद्या को उपयोगी बनाया था यह उसके कुछ ही उदाहरण हैं पाश्चात्य देशों में भी इन नियमों का महत्व तभी पहिचाना जावेगा जबकि वहां भी इसे धर्म का अङ्ग बना दिया जावेगा। परन्तु इसके बिना सर्व साधारण जनता से इनके पालन करने की आशा रखना भूल है।

संकेत

(लेखक—नयन।)

लिखें-अब कौन अनोखा लेख !
निष्पापी तन नहीं किसी का,
मान हीन मन नहीं किसी का,
अचल गड़ गयी बुद्धि गगन में, महा भूल की मेख !
लिखें-अब कौन, अनोखा लेख !

२

काशी में शिव-धाम नहीं है,
अवध नगर में राम नहीं है,
चित के चित्रकूट के भीतर, चित्रगुप्त को देख !
लिखें-अब कौन अनोखा लेख !

३

विश्व स्वरूप दिव्य पनघट में,
देखो-नीर भरे घट २ में,
नित नीरव श्रीनयनचन्द्र की, अलख अलख की रेख ?
लिखें-अब कौन अनोखा लेख !

पर्दा।

(ले०—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, "अलङ्कार" गुरुकुल कांगड़ी)

यह कहना गलत है कि हिंदू-लोग शुद्धि नहीं किया करते थे, या मुसलमानों को मौका पड़ने पर हिंदू नहीं बना लिया करते थे कौन नहीं जानता कि 'पर्दा' पहले मुसलमान था पर हिन्दुओं ने इसकी शुद्धि कर इसे हिन्दू बना लिया। 'पर्दा' जो पहले कट्टर मुसलमान था, हज़रत मुहम्मद का जैनब से पैदा हुआ इकलौता बेटा था, उस का हिंदुओं ने ऐसा शुद्धि-संस्कार किया कि अब वह कट्टर हिन्दू है, बीसियों घंटे उनके चूल्हे में मज़े से डटा रहता है।

कइयों का कहना है कि जब कभी, जो कोई चाहे, इन हिंदुओं को पकड़ कर मुसलमान बना सकता है। परन्तु नहीं, यह भी हिन्दुओं पर अन्याय-पूर्ण आक्षेप है। देखो, जब से पर्दे को शुद्ध किया है, क्या किसी की मजाल है कि इसे खींचकर उन में से निकाल सके? अब चाहे ईसाई, मुसलमान और कोई तीसरे भी कितना ही सिर क्यों न पटकें, पर्दे को हिन्दुओं ने शुद्ध करके अपनी बिरादरी में शामिल कर लिया है। अब इसे कोई दूसरे धर्म में जाने के लिये नहीं बहका सकता; यदि कोई कोशिश करेगा तो वह धर्म-युद्ध छिड़ेगा, जिस में पहले हिंदू-पुरुष बलि पर चढ़ेंगे और फिर हिंदू-स्त्रिएं अपनी आहुति देकर 'पर्दे' की रक्षा करेंगीं।

परन्तु क्या मालूम जिन्होंने 'मियां-पर्दे' की शुद्धि की हो वे उस समय के हिंदू-नाम धारी आर्य्यसमाजी ही हों। शुद्धिका शास्त्रों में कहां ज़िक्र है; कहीं भी नहीं! फिर पर्दे मियां को किसने शुद्ध किया? हिंदुओं को चाहिए कि इसे अर्ध-चन्द्र देकर अपनी बिरादरी से बाहर ढकेल दें। और या उसे शुद्धि करने वाले आर्य्य-समाजियों के हवाले करें, उन्होंने इसका जो कुछ बनाना होगा, बना लेंगे। यदि हमारे शिवजी पर भूल से भी किसी यवन की छाया पड़ जाय, तो उन्हें भी स्नानादि प्रायश्चित करना पड़ता है, फिर इस मियां की क्या मजाल कि सदियों से चौके चूल्हे तक में डटा रहे, और किसी जनेऊ तथा चोटीधारी के कान पर जूं तक न रेंगे। सनातन हिंदू धर्म की रक्षा अभीष्ट हो तो इसका एक क्षण भी बिना चूके एक दम बहिष्कार कर देना चाहिये।

पर्दे को हमारी समाज में दाखिल हुए सदियां बीत चुकी हैं। इस अरसे में इसकी संतति भी सीमा का उल्लङ्घन करके बढ़ी है जहां तहां इसकी औलाद बहुतायत में पाई जाती है। इस यवन का ध्वन्स करने के लिये हमें बड़ी होशियारी से काम करना होगा। इसकी संतति को चुन २ कर अपने समाज के क्षेत्र से बाहर ढकेलना होगा। तब जाकर कहीं धर्म की रक्षा होगी, नहीं तो धर्म-सङ्कट उपस्थित हो जायगा।

* * * *

पर्दे की संतति का अत्यन्ताभाव करने के उद्देश्य से मैं उनकी ढूंढ में चला। पहले तो यह खुद सैकड़ों संतानों को पैदा करने वाला, फिर इस की एक २ संतान आगे भी वही सिलसिला जारी करने वाली

जूं की लीकों को ढूंढ २ कर मारने की दुस्तरता के समान इसका भी ढूंढ २ कर मारना दुस्तर पाया। इसे परमात्मा की तरह सर्व-व्यापक और परमाणु की तरह संकुचित छुई-मुई की तरह लज्जाशील तथा बन्दर की तरह निर्लज्ज पाया। इसकी माया अद्भुत देखी। जहां यह मूर्त्तिमान् दिखाई देता था वहां समीप जाकर समझ पड़ने लगा कि यह सिर्फ मरु-मरीचिका की तरह आँखों का धोखा था, जहाँ इसकी मनहूस शक्ल दिखने की कोई उम्मीद न थी वहां इसे ढिठाई को चैलेञ्ज देते हुए देखा।

* * *

मैं बम्बई से दिल्ली को आ रहा था। हुशंगाबाद के स्टेशन पर एक मारवाड़ी युवक अपनी नव-विवाहिता वधू के साथ मेरे ही डब्बे में आ चढ़े। युवती के मुख पर पर्दा लटक रहा था परन्तु उसका पेट वायु स्नान कर रहा था। अंग्रेज-स्त्रियों को छाती खोले बाज़ार में फिरते कई बार देखा था। परन्तु यहां एक नयी समाज, मुंह लपेटे पेटखोले दिखाई दी। पति-पत्नी आमने-सामने बैठ गये, लेकिन मियां जी उन दोनों के बीच में खड़े हुए दिखाई दिये। पति-पत्नी के बीच में भी पर्दा! मारवाड़ी महोदय को उनके साथ के एक दोस्त ने कहा व्याह कर बीवी लाये हो, या कपड़ा ढक कर मिठाई लाये हो। मारवाड़ी भाई ठट्ठा मार कर हंस पड़े। अगले स्टेशन पर गाड़ी खड़ी हुई। भाई साहब धोती सम्हालते हुए चाय लेने को भागे तो उनकी बीवी मुंह नङ्गा करके बैठ गई। बेचारी का दम घुटा जाता था—खुली सांस लेने लगी—पति महाशय वापिस आये तो पर्दा-साहेब भी उनके साथ ही चले आये, मानो वह उन्हीं के साथ छाया की तरह भागते फिरते थे। मैंने यह दृश्य देखकर, अपनी पाकेट-बुक में नोट कर लिया कि पति-पत्नी के बीच में जो खां साहेब हर समय कमर ताने खड़े रहते हैं इन्हें यहां से दफ़ा किये दूर वगैर काम न चलेगा। इन्हें इतनी तो शर्म होनी ही चाहिये।

* * *

उस दिन मैं हरद्वार में हर की पैड़ी पर घूम रहा था। कई पर्दा-नशीन बहनें स्नान की तैयारी कर रहीं थीं। पास ही उनके रिश्तेदार खड़े हुए थे इसलिये सब पापों को मिटा देने वाले इस ती-र-थ पर आकर भी पर्दा किया हुआ था। कुछ देर बाद वे बहनें उठीं और अपने रिश्तेदारों की तरफ पीठ करके गङ्गा में डुबकियां लगाने लगीं। ज्यों२ वे गोता लगाती जाती थीं त्यों २ उनके पाप गङ्गाजी के सिद्ध-जल से धुलते जाते थे और उनके शरीर पर पड़ा। 'पर्दे' का पाप भी उतरता जाता था। थोड़ी ही देर में यह पाप सर्वथा धुल गया और वे पर्दा हीन, शुद्ध, नग्नरूप में दिखाई देने लगीं। इस अवस्था में जब वे जल से निकलीं तब भी अपने रिश्तेदारों के समीप पहुंचकर उन्होंने मुंह पर पर्दा खींच ही लिया। पर्दे की इस शर्म के पीछे छिपी बेशर्मी को देख कर मैंने धीरे से अपनी नोटबुक जेब में से निकाली और उस में यह दर्ज कर लिया कि इस सत्यानासी पर्दे ने ही भारत की कुलाङ्गनाओं को निर्लज्ज बना दिया हैयदि यह कलङ्कीन होता तो हमारी देवियें अपनी आँखे मूंद कर दुनियां भरको अन्धा न समझने लगतीं पर्दे की इस 'होने' और 'न होने'—दोनों प्रकार की माया

देखकर कुछ देर स्तम्भित सा खड़ा रहा। विचार धारा टूटने पर मैं इसकी करामातें देखने के लिये आगे चल दिया।

* * * *

मुंशी रामप्रसाद की लड़की की शादी थी। मुन्शी जी मेरे बड़े दोस्त थे। मैं उनके घर के सभी व्यक्तियों को खूब अच्छी तरह से जानता था। बस, मुझे तार दे मारा—'फौरन से पेशतर चले आओ'। मैं भी जा धमका। बारात आई, खूब आव-भगत की गई। मुन्शी जी की स्त्री ने लड़के को मिलने के लिये अलग बुलाया। मैं उस समय उन के पास ही बैठा हुआ था। लड़का, लड़के की सास और मैं-बस, हम तीन हीथे लड़के के आते ही उस की सास ने बिजली की तेज़ी से घूंघट खींच लिया और लगी अंदर अन्दर से बातें करने। उसका बोल ज़रा मोटा था, वह पर्दे को भी फाड़ २ कर निकलता था, परन्तु लड़के की सास अब तक अपने को पर्दे में ही छुपा हुआ समझ रही थी। लड़का ज़रा मज़ाकिया मिज़ाज का था बोला—"माता जी! पर्दे की दो तहें कर लीजिये। मुझे आपकी आवाज बहुत जोर से सुनाई दे रही है।" यह तमाशा देख मेरे तो हंसते २ पेट में बल्लिएं पड़ गईं। मैंने उसी वक्त अपनी डायरी निकाल कर मुन्शी जी की स्त्री का नाम, या कहिये ऐसी सासों का नाम, अपनी फेहरिस्त पर चढ़ा लिया।

* * * *

परसों मैं एक काम से अपने गांव गया हमारे घर के सामने रत्तो नाम की एक बूढ़ी जट्टी का घर है। जब कभी मैं वहां जाता हूँ रत्तो मुझे परौंठे बनाकर खिलाया करती है। घर पहुंच कर मैंने सामने देखा कि रत्तो तम्बू सी बनी चारों तरफ़ से कपड़े से लिपटी बैठी है और उसके सामने वैसी ही गठड़ी सी बनी एक और बुढ़िया है। दोनों बैठी जोर २ से दुनियां भर की गप्पें हाँक रहीं थीं। मैंने रत्तो से पूछा—"रत्तो! यह क्या तमाशा कर रही है?" रत्तो ने मेरे भोलेपन पर हंसकर कहा—"बेटा! मेरी लड़की की इस बुढ़िया के लड़के के साथ शादी हुई है। दोनों समधिनें हैं इसलिए एक दूसरे से शर्म होना जरूरी है न!" मैंने कहा-'हां, ज़रूरी क्यों, बहुत ज़रूरी है। शर्म से डूब मरना जरूरी है। इतना बड़ा पाप कि तुम दोनों के लड़के-लड़की की शादी हो गई!" दोनों बुढ़िया पर्दे के तम्बू में छिपी २ इस बात पर अट्टहास करने लगीं कि मैं इतना पढ़ लिखकर भी इस छोटी सी बात को नहीं समझता था। मैंने उन दोनों बुढ़ियों को हंसते २ कहा-'देखो, मैंने तुम्हारा नाम भी नोट कर लिया है।"

* * * *

वे पढ़ी लिखीं पर्दे का शिकार हैं ही परन्तु अभी पिछले दिनों यह सुनाई दिया कि इलाहाबाद यूनीवर्सिटी में जमाने की तरक्की को देखकर देश की उन्नति के लिये एक नया सुधार पेश किया गया है। यह सुधार था बी० ए० में पढ़ने वाली लड़कियों को पर्दानशीन बनाने का। लड़के लड़कियों के इस प्रकार खुल्लमखुल्ला मिलने से मशीन का पुर्जा कहींसे ढीला हो जाता शायद इसी ख़याल को लेकर यह 'रि-फ़ौ-र्म' किया गया था। परन्तु क्या दोनों को अलग २ रुई में लपेट रखने से उनपर कोई दाग़ नहीं लग सकेगा। क्या ज़िन्दगी भर दुनियां को गन्दा कह २ कर उससे भागते रहने से मनुष्य की हालत पहले से सुधर जायगी! बस, लेख पर लेख निकलने लगे, सभा पर सभा होने लगी। इलाहाबाद में तो स्त्रियों ने तूफान मचा दिया।

उच्चशिक्षा ग्रहण करने वाली लड़कियें को-लड़कों के साथ शिक्षा-ग्रहण करने की आज्ञा दिलाकर ही पिण्ड छोड़ा। मेरी नोट बुक में इन सभी का नाम दर्ज है।

पिछले दिनों शिमले में पढ़ी-लिखी स्त्रियोंने भी एक और करतूत कर मारी। पं० मोतीलाल नेहरू की मूंछों की मृत्यु हो गई थी। हिन्दुस्तानी रस्म-रिवाजके अनुसार मोतीलाल जी को बैठा कर स्यापा करना जरूरी था परन्तु बीसवीं सदी की इन पढ़ी-लिखियों ने बाकायदा टेबल-कुर्सी लगाकर आज कल के कायदे के मुआफिक अफसोस का एक रेज्यूलेशन पास कर दिया। यह बेपर्दगी देख कर लाहौर के मियां 'औटलुक' साहेब जल भुन गये, उनकी बिरादरी वाले का जो बहिष्कार कर दिया गया! स्त्रियों की समाज में एक पुरुष को निमन्त्रित करना, सब स्त्रियों का उसके सामने, भाग खड़े होने की जगह बैठे रहना और उसपर भी पर्दा न कर के उसकी तरफ देखते रहना—ये तीनों, 'मुस्लिम-औटलुक'की दृष्टिमें एकसे एकबढ़कर अपराध थे परन्त इन सब को करते हुए भी पढ़ी-लिखी स्त्रियों ने डकार तक न लिया उलटा बेचारे गुम-राहोंको ठीक रास्ता दिखलाने वाले पीर पर ही झपट पड़ीं और उस की नाकें दम करके छोड़ा! यह घटना भी ज्यों को त्यों डायरी डायरी में दर्ज है।

* * *

ज़माना बहुत आगे बढ़ चुका है। पर्दा तो हटेगा और हट कर ही रहेगा परन्तु पिछली दो घटनाएं हमारे सम्मुख एक और विकट समस्या उपस्थित कर रही हैं। पर्दे को हटाकर स्त्री-पुरुष का समाज में क्या स्थान समझा जायगा? क्या पर्दा मुख पर न डालने मात्र से पर्दे का प्रश्न हल हो जायगा या हमें कुछ और आगे कदम रखना होगा? सामाजिक-जीवन में समाज के अंग स्त्री-पुरुषों का एक दूसरे के प्रति क्या संबन्ध होगा?

इस समय हमारे समाज की यह अवस्था है कि अपनी धर्मपत्नी, बहिन, माता आदि के अतिरिक्त यदि अन्य किसी स्त्री के साथ कोई पुरुष बात चीत करे, अथवा कोई स्त्री अपने पति भाई पिता आदि के अतिरिक्त अन्य किसी पुरुष के प्रति उन स्वाभाविक सामाजिक-प्रेम के उत्कृष्ट तथा पवित्रतम भावों का परिचय दे जिन्हें प्रत्येक पुरुष तथा स्त्रीके हृदय में स्वयं भगवान् ने अपने हाथों से रखा है तो उन पर 'बदमाश' होनेका सन्देह किया जाता है। हम इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकते कि पुरुष तथा स्त्री, समाज के क्षेत्र में, ऐसे ही स्वतन्त्र मिल सकें जैसे पुरुष—पुरुषों के साथ तथा स्त्रियें—स्त्रियों के साथ मिलती हैं। अभी तक पुरुषों का समाज सर्वथा अलग है स्त्रियों का सर्वथा अलग है—दोनों का एक दूसरे से कोई सम्बन्ध नहीं है। यदि हो सकता है तो केवल पति-पत्नी का, एक ही माता-पिता से उत्पन्न भाई-बहिन का माता-पुत्र और पिता-पुत्री का। इसप्रकार को छोड़ कर किसी दूसरे प्रकार का सम्बन्ध अनुचित होगा, नाजायज होगा बदमाशी का होगा। हमारे यह समझ में ही नहीं आसकता कि यदि किसी पुरुष स्त्री का परस्पर पति-पत्नी का सम्बन्ध नहीं है, एक ही रुधिर का भी सम्बन्ध नहीं है, फिर वह बदमाशी के अतिरिक्त तीसरा सम्बन्ध हो ही कौनसा सकता है। हमारे समाज में यह विचार घर कर गये हैं। प्रत्येक व्यक्ति इन्हें वेदवाक्यवत् सत्य मानता है और इसीलिये जहां स्त्री पुरुषों में खुले दिखाई देती है, उसके विरुद्ध हृदय में क्रान्ति सी उत्पन्न होती है। फरक

इतना ही है कि कई ईमानदारी से अपने भावों को कह डालते हैं, और कई दबाये रखते हैं युवक दल, तो नई रोशनी से प्रभावित होकर पुरानेबन्धनों को तोड़-फोड़ डालना चाहता हैं परन्तु बुड्ढे खुर्राट जिन के हाथ में समाज की बागडोर है, नौ-जवानों का कुछ चलने नहीं देते। वे विवाहित स्त्री पुरुष के प्रातः काल इकट्ठे सैर करने जाने को निर्लज्जता तथा उद्दण्डता की पराकाष्ठा समझते हैं, फिर वे गैर स्त्री-पुरुष के किसी प्रकार भी परस्पर सम्पर्क में आने को क्यों कर सहने लगे! उनकी सम्मति में इस प्रकार का सम्बन्ध बदमाशी तथा व्यभिचार की चरम सीमा होगी।

इस में सन्देह नहीं कि हमारे समाज की वर्तमान अवस्था उपर्युक्त विचारों की ही पुष्टि करती है। यदि किसी युवक की सामयिक सहायता पाने के कारण कोई युवती उस के प्रति कोमल शब्दों में कृतज्ञता के भाव प्रकट करती है तो वह मूर्ख उस युवती को अपने ऊपर लट्टू हुआ समझने लगता है। उसके हृदय में इस से उच्च किन्हीं मानवीय विचारोंके लिये स्थान ही नहीं दिखाई देता। स्त्रियों को हमारे समाज में पुरुषों से इतनी दूर रखा जाता है कि वे साधारणतम मानवीयभावों को भी प्रकाशित नहीं कर सकतीं। किसी भारी मेले में रास्ता भटक-गई बुढिया को ठीक स्थान पर पहुँचा देने से वह तो जरूरत से ज्यादह धन्यवाद की झड़ी लगा देती है परन्तु एक युवती उसी प्रकार की अवस्था में वैसीही सहायता पाकर कृतज्ञता में जबान तक नहीं हिला सकती। यह नहीं कि उसके हृदय में वे साधारण से कृतज्ञता के भाव उदित ही नहीं होते जो पशुओं तक में पाये जाते हैं; नहीं इस लिये कि कहीं उसके शब्दों का अनर्थ न कर दिया जाय! पुरुषों से स्त्रियों को बहुत दूर रखा जाता है, इस लिये उनका स्त्रियों की ज़रासी भी नज़दीकी का उल्टा अर्थ कर लेना स्वाभाविक है और इसी लिये वृद्धों का स्त्री-पुरुषों को सामाजिक जीवन में अलग २ रखने का उद्योग भी कुछ अंश तक उपर्युक्त ही है। दैनिक-पत्रों में रोज़ घटनाएं छपती हैं। किसी लड़की ने किधर देखा। पूर्व-पश्चिम-उत्तर-दक्षिण, जिस तरफ़ भी नज़र उठी, चली गई। अचानक समीप से जाते हुए युवक पर नज़र पड़ गई। उसने समझा कि उसी पर यह ख़ास कृपा की गई है। ज्यों किस्सा छिड़ा कि उस का अन्त अदालत में हुआ! ऐसी अवस्थाओं के होते हुए क्यों कर वृद्ध-लोग स्त्री-पुरुषों को सामाजिक-जीवन में स्वतन्त्रता देने के पक्ष में हो सकते हैं! मुंह पर पड़ा पर्दा उठ जाय तो उठ जाय, वे इस नई-बेपर्दगी के हक़ में नहीं हो सकते।

तो फिर क्या होगा? क्या पर्दे को दूर करने का अभिप्राय मुख पर से बुर्का उतार देना मात्र होगा, अथवा इस का अभिप्राय कुछ और गहरा होगा? क्या स्त्रियें पर्दा हटा कर सामाजिक-जीवन में पुरुषों से उतनी ही दूर खड़ी रहेंगी जितनी दूर वे अब तक थीं अथवा उन्हें भी समाज का उसी प्रकार अङ्ग समझा जायगा जिस प्रकार पुरुषों को समझा जाता है इस का उत्तर पाने के लिये इतिहास के कुछ पन्ने उलटने आवश्यक हैं।

मुसल्मानों ने स्त्रियों को सामाजिक जीवनमें कोई स्थान नहीं दिया। उनका समाज पुरुषों का समाज है। पुरुष ही उनके समाज रूपी मस्जिद की आधार शिला, पुरुष ही उसकी ईंट, पुरुष ही उसकी दीवार और पुरुष ही उसके गुम्बज हैं। ऐसी रचना बना कर मुसल्मानों ने समाज का जो स्वरुप बना लिया है वह किसी प्रकार स्पृहणीय नहीं है।

एक मुसलमान-भाई से बात करते हुए मैं यही चर्चा कर रहा था कि बोले—'भाई साहेब ! आप कुछ भी कहें, हम मुहज्ज़ब आदमी के लिये अपनी बीबी को खुले बाजार ले जाना गवारा नहीं कर सकते'। मुसलमान लोग स्त्रियों को ऐसी चीज़ समझते हैं जैसे मर्तबान में पड़ा मुरब्बा। उन के यहां स्त्रियें मर्दों की तरह आज़ाद नहीं हैं और इसी लिये उन के समाज की रचना में स्त्रियों का हाथ नहीं है, जो कुछ है वह नाम-मात्र का है। मुसलमानों के समाज का विकास हुआ परन्तु वह विकास शरीर के फूलने की तरह काथा, बढ़ने की तरह का नहीं। मुसलमानों के विकास को मानव-जाति के शरीर में उत्पन्न हुए एक रोग से उपमा दी जा सकती है। आग और तलवार से उतर कर वे बात ही नहीं करते थे। वे कठोरता, क्रूरता और निर्दयता के अवतार दिखाई देते हैं। कोमलता, सहृदयता प्रेम आदि जिन गुणों से मनुष्य की वज्र-प्रकृति में मृदुता तथा दैवत्व का सञ्चार होता है, उन से मुस्लिम-समाज सर्वथा वञ्चित रहा है। यदि कहीं मुसलमानी संसार में स्त्रियें हवा लेने को भी निकली हैं तब भी लिपटी हुई, ढकी हुई, चारों तरफ की दुनियां से बिलकुल अलग, इस दुनियाँ में रहती हुई भी किसी दूसरी दुनियाँ में ! जहां समाज के एक अङ्ग को इस प्रकार काट कर अलग फेंक दिया जाय वहां पहले तो किसी प्रकार की उन्नति होगी ही नहीं और जो होगी भी, वह अधूरी—बिलकुल आधी। सैमेटिक जातियों का सन्देस गगन-व्यापी अग्नि-ज्वालाओं का संदेस है, तलवारों की खटखटाहट का सन्देस है, गर्म खून की उबलती हुई नदियों का सन्देस है क्योंकि उनके सामाजिक-जीवन में स्त्री का स्त्री-रूप से कोई स्थान नहीं है। उनकी समाज को बनाने वाला पुरुष है और उसने सब जगह अपनी कठोर प्रकृति का परिचय दिया है। सैमेटिक जातियों ने समाज के जिस भवन का निर्माण किया है उसके नीचे 'आग-खून-तलवार' इन के अतिरिक्त अन्य कुछ नहीं दिखाई देता। इस में सन्देह नहीं कि मुसलमानों ने विज्ञान तथा दर्शन में किसी समय पर्याप्त उन्नति की थी परन्तु उस उन्नति के स्थिर न रह सकने का मुख्य कारण यही है कि उन्होंने स्त्रियों को ईश्वर-प्रदत्त स्थान से निर्वासित करने का अनुचित उद्योग किया। जब तक स्त्रियों को सामाजिक क्षेत्र में अपना उचित स्थान न मिलेगा, जब तक उन्हें पुरुषों की तरह समाज का जीता-जागता अङ्ग न समझा जायगा, जब तक उन्हें किसी प्रकार के भी पर्दे के पीछे रखा जायगा तब तक समाज, सैमेटिक जातियों के समाज की तरह, अर्धाङ्ग रोग से पीड़ित रहेगा, उन्नति शील नहीं हो सकेगा, मानव-जाति के दैवीय गुणों से शून्य रहेगा।

सैमेटिक जातियों के बिपरीत, आर्य जातियों ने, स्त्री को स्त्री-रूप से, पुरुष की तरह, समाज का अङ्ग मानने का प्रयत्न किया और इसी लिये उन में सर्व-नाश-करी कठोरता तथा नीरसता नहीं पायी जाती। इस समय हमलोग अनेक सैमेटिक संस्कारों के कारण प्राचीन वैदिक विचारों से विमुख होचुके हैं परन्तु किसी समय इसी भारत में गार्गी सी विदुषी देवियें सभाओं में अपनी विद्वत्ता का सिक्का जमाया करती थीं। स्वयंवरों की प्रथा इसी पर्देपर लड़ू हुए देश में प्रचलित थी। उस समय के भारत का सन्देस शान्ति का, आशा का, उत्साह का सन्देस है। उस उपदेश को सदियों बाद आज भी सुनकर हृदय से

'धन्य'—'धन्य' निकलने लगता है। भारत के प्राचीन समाज की रचना में स्त्रियों का उतना ही हिस्सा था जितना पुरुषों का। बुद्धभगवान् के समय तक स्त्रियों को समाज का अङ्ग माना जाता रहा है भिक्षुओं के साथ भिक्षुनियें भी हुआ करती थीं। परन्तु बौद्ध-काल भारत की गिरावट का समय था बुद्ध ने स्त्रियों को समाज में समान-स्थिति देने का प्रयत्न किया परन्तु शायद गिरावट की शक्तियें तेज़ी पर थीं इसलिये उसका पुरुष तथा स्त्रियों को समान-स्थिति देखने का स्वप्न क्रिया में न घटाया जा सका।

युरुप की आर्य-जातियों में भी स्त्री को पुरुषों के साथ एक ही स्थिति पर लाने का प्रयत्न किया गया। लूथर ने, पर्दे के पीछे ढकी स्त्री-जाति को आगे घसीट कर पुरुषों के साथ एकही मञ्च पर ला खड़ा किया। इसमें सन्देह नहीं कि आगे चलकर, स्त्री पुरुषों के इस मेल से अनर्थ पैदा होने लगे परन्तु इस का कारण यहीं है कि वे लोग उस मानवीय उच्चता को अनुभव ही न कर सके जहां तक लूथर उन्हें पहुंचाना चाहता था। वर्तमान युरुप में स्त्रियें समाज का अङ्ग समझी जाती हैं और सभ्यता को बढ़ाने में वे भी अपना हिस्सा दे रही हैं परन्तु अभी वहां पर भी वे पूरा हिस्सा नहीं ले रही यदि पुरुषकी सभ्यता को विकसित करने में स्त्रियों का पूरा हिस्सा होता तो गोरी जातियों का निर्बल-जातियों को क्रूरता-पूर्ण-व्यवहारों से सभ्य बनाने का बोझ कभीका हल्का होचुका होता। फिर भी युरुप जो कुछ विश्वास कर रहा है उसका उत्ते-जन स्त्रियों द्वारा ही मिल रहा है। शक्ति के मद में अन्धा हुआ वह बहुत कुछ नीचता के कार्य भी कर जाता है परन्तु ऐसे काम इसी लिये हो जाते हैं क्योंकि स्त्रियों की रूप में वह स्थिति नहीं है, जो होनी चाहिये। हां, इसके साथ२ हमें यह भी मानना पड़ता है कि युरुप में स्त्री पुरुषों की इस खुलसे इस प्रकार के अनेक अनर्थ हो जाते हैं जिन्हें बुद्ध तथा लूथर भी नहीं रोक सके। मनुष्य की इसी गिरावट को देख कर सैमैटिक-जाति के लोग समझने लगते हैं कि समाज में से स्त्री को सर्वथा निर्वासित कर देने का उनका विचार बिल-कुल ठीक है।

ऐतिहासिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से इस प्रश्न पर विचार करते हुए हम दो परस्पर विरुद्ध विचारों पर पहुंचते हैं। हम यह भी समझते हैं कि स्त्रियों के बिना समाज अधूरा रह जाता है, उसकी उन्नति एक तरफा रहती है उसका विकास एक तरफा रहता है; इसके साथ २ यह भी देखते कि स्त्रियों को समाज का अङ्ग बना देने से समाज की दोनों मशीनों का पुर्ज़ा कहीं से ढीला हो जाता है। इस द्विविधा में क्या किया जाय ?

स्त्री-पुरुषों के खुला मिलने से कहीं २ खराबी पैदा हो जाती है, इतना कह देने मात्र से कुछ नहीं सिद्ध होता। खराबी तो वहां भी पैदा होती है जहां दोनों को रुई में लपेट कर अलग रखा जाता है। प्रश्न यह है कि इन दोनों अवस्थाओं में से अधिक हानि कर अवस्था कौनसी है। मेरा अनुभव मुझे बत-लाता है कि जहां स्त्रियें पुरुषों को अजीब चीज़ नहीं समझती। और ना ही पुरुष स्त्रियों को आसमान में उड़ने वाली बुलबुल समझते हैं। वहाँ का आचार दूसरे लोगों से कहीं बढ़कर होता है। मद्रास तथा महाराष्ट्र में मुझे कई साल रहने का मौका मिला है। वहां स्त्रियें पर्दा नहीं करतीं। सिर तक नङ्गा रखती हैं। लड़कों के साथ स्कूल कालिज में पढ़ती हैं। उनमें कोई खराबी नहीं दिखाई देती। वे समाज में उसी प्रकार हिस्सा लेती हैं जैसे पुरुष। वहां की स्त्रियों में आत्मबल है। वे बाज़ार

में से निकलती हुई दुनियां भर से बचती २ नहीं निकलतीं। दूसरी गली के घर में जाते समय उनकी हिफाज़त के लिए दो सिपाही तैनात नहीं करने पड़ते। वे ऐसी निर्भय होकर घूमती फिरती हैं सांस लेती हैं, जैसे पुरुष। आफ्रीका में हबशियों को मैंने देखा है। वे नंगे फिरते हैं—बिलकुल नंगे लंगोटी तक नहीं! इसी अवस्था में स्त्री पुरुष अपने दैनिक कार्य करते हैं। मुझे उन लोगों को देखकर कई बार सन्देह उत्पन्न हुआ कि क्या नंगेपन तथा दुराचार का कोई सम्बन्ध है! यदि होता तो क्या अफ्रीका के नंगधड़ंग हबशी कोट पतलून पहनने वालों के साथ सदाचार की तुलना में रखे जा सकते थे? परन्तु फिर भी सभ्यता की डींग हांकने वालों को अफ्रीका के जंगली लोगों की बातें सुनकर लज्जा से सिर नीचा कर लेना पड़ता है! हबशी लोग नंगे रहते हुए भी पचीस व ष तक ब्रह्मचारी रहते हैं, विवाह होजाने पर ऋतु गामी रहते हैं!! यदि स्त्री पुरुषों के परस्पर खुला मिलने का परिणाम बदमाशी ही हो तो सब से बड़े बदमाश यह लोग होने चाहियें परन्तु है ठीक इसके उल्टा! युरुप के लोगों में आचार के नियम ज़रा शिथिल प्रतीत होते हैं इसका कारण स्त्री-पुरुषों का स्वतन्त्र रूप से मिलना नहीं परन्तु वहाँ का प्रकृतिवाद है। जीवन के विषय में उनकी दृष्टि ही ऐसे ढीले असूलों से बनी है कि वे आचार सम्बन्धी बातों को वह महत्व नहीं देते जो हम देते हैं। यह दृष्टिकोण बदल जाय तो स्त्री पुरुषों के खुले हुए भी हमें उनके आचार में कोई गिरावट न दिखाई दे।

इस समय समाज में एक नवीन भाव के जागृत करने की आवश्यकता है। स्त्रियों को हम जिस प्रकार समाज से निर्वासित किये हुए हैं, पर्दे के पीछे ढके हुए हैं, उससे हमारा समाज पुरुषों का ही समाज कहला सकता है, अधूरा ही रह सकता है, उसमें पूर्णता नहीं आ सकती। इस अवस्था को दूर किया जाना जरूरी है। कपड़े का पर्दा हटा देने मात्र से पर्दानहीं हटेगा, पर्दे को हटाने के लिये स्त्रियों की समाज में स्थिति को ही मूल से बदलना होगा। हमें नवयुवकों तथा नवयुवतियों के स्त्री-पुरुष सम्बन्धी विचारों को सर्वथा परिवर्तित कर कर देना होगा। दोनों अपने को गौरव के साथ समाज का समान रूप से अंग समझने लगे और परस्पर इस प्रकार व्यवहार करने लगे जिस प्रकार पुरुष-पुरुषों के साथ और स्त्रियें-स्त्रियों के साथ करती हैं, तब जाकर समाज का सम-विकास होना प्रारम्भ होगा। इसमें सन्देह नहीं कि हमारा समाज इतना गिरा हुआ है कि ऐसे विचारों को गन्दे नाम देकर उस पर गालियों की बौछार करना प्रारम्भ कर देगा परन्तु इसमें भी सन्देह नहीं कि मानव प्रकृति के इस उच्च शिखर पर पहुंच कर ही मनुष्य समाज का कुछ भला हो सकेगा। यह बात पत्थर की लकीर की तरह अमिट समझनी चाहिये कि जब तक समाज में से स्त्रियों को निर्वासित किया जायगा, जब तक पुरुषों की तरह उनके व्यक्तित्व को भी पूर्ण रूप से स्वीकार नहीं किया जायगा, तब तक हमारा समाज अधूरा ही नहीं प्रत्युत आचार भ्रष्टता की दलदल में धंसा रहेगा और उस में से निकलने का प्रत्येक झटका उसे दो अंगुल और भीतर ढकेल देगा। मैं तो उत्सुकता पूर्ण नेत्रों से अपने समाज के उन दिनों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ जब इस समाज की देवियें पुरुषों के साथ समानता की वेदी पर आकर मिलेंगी और उनके परस्पर सम्बन्ध कुवासनाओं के दुर्गन्ध से अम्लान होते हुए एक दूसरे की उन्नति में सहायक सिद्ध होने लगेंगे। जिस

दिन यह दृश्य दिखाई देगा उसदिन किसी स्त्री को पर्दे से मुख ढांपने की ज़रूरत न रहेगी क्योंकि तब संसार भरकी अपने से बड़ी आयु की स्त्रिया को हम अपनी माता की दृष्टि से देखेंगे और अपने बराबर की स्त्रियों को बहिन की दृष्टि से। ऐसी अवस्था में लड़के लड़कियों के इकठे पढ़ने पर और स्त्रियों के पर्दा हटा कर किसी पुरुष के लेक्चर सुनने पर हमें कुढ़ने की जरूरत न रहेगी क्योंकि तब जिस से डर कर हम पुरुषों तथा स्त्रियों को अलग २ रखना चाहते हैं वह बात ही न रहेगी पुरुष तथा स्त्रियें खुले तौर से समाज में हिस्सा लेंगे परस्पर मिलेंगे परन्तु ऐसे ही जैसे पुरुष-पुरुषों से मिलते हैं और स्त्रियें स्त्रियों से।

"दुःखोद्गार"

(ले०—हरिहर ओझा "हरि")

निगाह डाला चहुं ओर पाया।
दुःखी जनों को कर मींजते हा।
प्रभू तिहारी महिमा न थोरी।
सदा विहारी गरिमा तिहारी॥
नचा रहा है सब जीव को तू।
फंसा रहा है जग शृङ्खला में॥
नहीं बचे वो भ्रममोह से हैं।
अतः सदा दूर बने रहे हैं॥
विचित्रता देख पड़ी खरारी।
दुखी जनों के दुखियापने में॥
सदा सवेरे तुमको हि टेरें।
अजस्र बोले अति दीन होंके॥
परन्तु हा नाथ सदा वही वो।
सदा दुखी दीन बने रहे वो॥
परन्तु देखा विपरीत होंके।
उत्तुंग प्रासाद विभूतियों को॥
सहर्ष माया अभिभूत थे वो।
कदापि तेरी चरचा नहीं थी॥

सुचैन बंसी सुख की बजी थी।
मनोरमा देह धरी खडी थी ॥
कहो कदा नाथ कदा ढरोगे
दुखी जनों की विपदा हरोगे ॥

दिव्य-मातृशक्ति

[लेखकः श्रीयुत शिवदयालु, मेरठ]

१ आर्य पूज्य-मातृशक्त ! महान् आत्माओं की प्रसविनि देवि ! अद्वितीयसौजन्य तथा सौन्दर्य्य की प्रतिमे ! तेरी पूजा*- तेरा सत्कार ही संसार-नाट्य-मञ्च पर महात्माओं का अवतरण है। यह विश्वविमोहक संसार सम्यक् सार युक्त है—स्वर्ग है तो तेरे कारण। मातेश्वरि ! तेरा तिरस्कार- मूर्ख अभिमानियें की आत्म-विडम्बना ही संसार को असार बनाती। स्वर्गधाम को नरक रूप में परिवर्तित करती है।

२ वन्दनीये देवि! तेरी चेतावनी जातियें की जागृति का कारण है। जिस जाति की पुत्रियां जागरण-घण्टिका को बजाती हैं वह ही जाति जागृति नौका पर आरूढ़ हो परतंत्रता रूपी सागर को पार करती हैं। किसी जाति की रमणियें का शंखनाद उस जाति के मृतक-शरीरें में नव-जीवन का संचार करता है। युद्ध-क्षेत्र के बीच जयमाल के प्रदान कराने वाली मातृ-शक्ति ही है। शत्रु-साम्मुख्य करते २ त्रस्त तथा पलायित योद्धाओं को युद्ध-दान के निमित्त पुनः प्रोत्साहित करने वाली वीरांगनाएँ ही हैं। निष्कर्ष मातृशक्ति के विना न मनुष्यों का जन्म है और न जातियें का पुनर्जन्म।

३ पूज्ये भविष्य की मातर ! संसार के भीरू भोले प्राणियें ने तुझको पर्दे में बन्दी किया। तुझको बन्दी नहीं अपितु निज भविष्य तथा स्वाधीनता को बन्दी किया है। आन्तरिक-सुन्दरता का सौजन्य पर्दे के बाहर चमकता है तथा वह वास्तविक प्रेम का सौजन्य—ईश्वर के समान अदृश्य तदपि सर्वत्र विद्यमान है।

४ मातेश्वरि ! तेरा सहयोग सर्वयज्ञों की सफलता है। कौनसा वह धर्म्म-प्रचार उतवा राष्ट्रोन्नति आदि का यज्ञ है तेरे बिना जिसकी सफलता का साक्षी संसार का इतिहास हो ? सर्व यज्ञ निष्फल है-धर्म्म प्रचार तथा राष्ट्रोद्धार के महान् कार्य्य तेरी सहायता विना कदाचिदपि सम्पादित नहीं हो सकते।

५ देवि ! तू अर्धाङ्गिनी है। संसार शकट का वामचक्र है तेरे विना संसार-यात्रा—जीवन-यात्रा किस प्रकार सिद्ध हो सकती है। जो जाति अथवा जो देश तेरा तिरस्कार करता है अर्धाङ्ग-रोग से ग्रसित हो मौत के दिन पूरे करता है।

६ श्रद्धेय-शक्ते ! तेरा ही स्वरूप-सरस्वती, लोपामुद्रा, सूर्यराशीकदूः, भुवनपुत्री विश्वकर्त्री, आदि देवियाँ वेदमन्त्रों की

* यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः मनु०

ऋषिकायें[1] हुई हैं। विश्वकी इन महती विदूषी देवियों ने ध्यान-योग में अवस्थित हो ईश्वरीय ज्ञान वेद भगवान् के पवित्र मन्त्रों के गूढ़ अर्थों का व्याख्यान किया। दिव्य शक्ते! तू धन्य है!! तूने शूद्र[2] ही उत्पन्न नहीं किये अर्थात् केवल मनुष्यों को जन्म ही नहीं दिया अपितु उन शूद्रों को पुनर्जन्म[3] के निमित्त-द्विजत्व के निमित्त तीन रात्रि पर्य्यन्त स्वकीय विद्या-गर्भ में धारण किया।

७ यज्ञ-ज्वाले! विश्व-तपस्विनी-समाज!! मातृशक्ते!!! तेरे तप और त्याग की पुरुषों के तप त्याग से तुलना करना विडम्बना मात्र है। प्रातः स्मरणीयः सीता सावित्री तारा दमयन्ती पद्मनी जोहन ...मातृ-मण्डल। तेरा बलिदान संसार में आदर्श बलिदान है।

८ मातेश्वरि! उपास्यदेव विश्वनाथ तेरी बार बार परीक्षाः घोर, घोरतर, घोरतम परीक्षा क्यों करते हैं? यदि वास्तव में यह परीक्षा ही है तो देवी इस रहस्य को पुकार कर। पुरुष की अर्धाङ्गिनी देवि! कहीं अभिमानी दुष्ट कृतघ्नी पुरुषों के भीषण पापों के फलों कोतो तू नहीं भोग रही है? मातेश्वरि! तेरे जीवन का प्रत्येक क्षण तप से परिपूर्ण है। कष्टों का भोग तेरे लिये सुख का साज है। कहीं दयालु पिता ने कृपाविष्ट हो पुरुषों को दण्डन दे तेरे ऊपर ही यह कृपा की है? नहीं: सर्वथा नहीं: दयालु पिता पूर्ण न्यायकारी हैं। स्वप्न में भी अन्यथा विचार करना हमारे लिए पाप है। अतः यह एक विचित्र रहस्य है जिसे हमारी बुद्धि समझ नहीं सकती।

९ आश्चर्य्य! कवि-शिरोमणी तुलसीदास[1] तेरी गणना ढोल, गवार आदि के साथ करें और निर्दयी पुरुषों को अधिकार दें कि वह तुझ को मारें; हा निरपराधिनी तुझ को ढ़ोल की नांई पीटें?

१० महदाश्चर्य्य!! वेदमंत्रों की ऋषिकाओं को संसार के प्रत्येक बालक को जन्मते ही शिक्षा देने वाली विद्याधरियों को पण्डित् मन्यमानी शठलोक पठनाधिकार से वञ्चित करने की दुन्दुभि बजावें। शठता की सीमा नहीं रहती जब यह शठराट पवित्र वेद भगवान के नाम पर उस दुन्दुभि को बजाते हैं। 'स्त्रीशूद्रो नाधीयातामिति श्रुते। कौन है वह प्राणी जो मनुष्य होने का अभिमान रखता हो और उसके हृदय में यह शब्द तीरवत न चुभते हों?

११ महत्तमाश्चर्य्य!!! पूर्ण-विद्वान् आजन्म ब्रह्मचारी सुविख्यात आचार्य्य शङ्कर महान् आत्माओं की जन्मदातृ को नरक का द्वार कहै। आचार्य्य शङ्कर। तेरे यशचन्द्र को कलङ्कित करने वाली विपुल कालिमा है। यदि आचार्य्य शंकर की जननी नरक का द्वार है तो शंकर नरक का क्या कहावेगा?

१२ दिव्येश्वरि। तेरा अपमान, तेरा तिरस्कार संसार में कौन कर सकता हैं? जिन्होंने तेरा अपमान किया संसार के इतिहास में वह अपमान के पात्र हुए। तेरे तिरस्कारकर्त्ता भारतीय आज भीतर बाहर सर्वत्र तिरस्कृत हैं। पराधीन तू नहीं हुई

---

७ १ मन्त्रद्रष्टारो ऋषयो बभूवुः। 'साक्षात्कृतधर्म्माण ऋषयो बभूवुः'। यस्यवाक्यं स ऋषिः। अर्थात् जिन पूर्ण वेदज्ञ विद्वानों तथा विदुषियों ने ध्यानयोगस्थ हो मन्त्रों के गूढ़ अर्थों को समझ कर व्याख्यान किया वह ऋषि कहलाते हैं।

२ जन्मना जायते शूद्रः कर्मभिर्द्विजोच्यते। मनु०

३ आचार्य्य उपनयमानो ब्रह्मचारिणं कृणुते गर्भमन्तः तं रात्रीस्तिस्र उदरे बिभर्ति तं जातं द्रष्टुमभि संयन्ति देवाः।

९—ढ़ोल गंवार शूद्र पशु नारी। ये सब ताड़न के अधिकारी॥

अपितु जिन्होंने तुझको पराधीन किया आज वह ही संसार में पराधीन हैं।

१३ मातेश्वरि! तेरे पुजारी ने—संसार के महान् ऋषिदयानन्द ने ईश्वर के आदेशानुकूल तेरे अधिकारों की पुनः प्रतिष्ठा के निमित्त मरण पर्यन्त प्रयत्न किया। तेरे उचित गौरव को; तेरे सम्मान और समानाधिकार को पुनः पूर्ण प्रतिष्ठित किया।

भवानि! कोपं जहि! प्रसीद!! अनुकम्पय संसार की भावी दिव्यात्माओं का सृजन कर दिव्य-मातृशक्ते!

आर्य्य-जाति को नव-जीवन प्रदान कर
भारत-वर्ष को नव-जन्म; तथा—
संसार का पुनर्जन्म कर।

दिव्यदेवि! नमस्ते!

"शिव"

संसार की बहुमूल्य वस्तु।

[ले० श्रीचतुरसेन शास्त्री आयुर्वेदाचार्य]

(१)

भारत से बहुत दूर पश्चिम में एक रानी राज्य करती थी। उस के रूप की सारे देश भर में चर्चा थी। थी भी वह क्वाँरी! जो उसे एक बार देख पाता, जो जान से मुग्ध हो जाता था। उसके लावण्य-लोल-सुडौल मुख-मण्डल से आनन्द फूट २ कर झड़ा पड़ता था। जिस ओर उस की आंखें उठ जातीं थीं, उस ओर रस बरस जाता था। उसकी वाणी, वीणा की झङ्कार की तरह हृदयको लहरा देती थी। एक बार उस सुन्दरी को देख कर, फिर किसी को देखने की इच्छा नहीं होती थी। संसार में ऐसा कोई भी पुष्प नहीं था, जिस में, उस के उज्वल मुख के समान गन्ध-सौन्दर्य और कोमलता हो और न कोई ऐसा फल ही था, जो उस मूर्त्ति की मधुराई की बराबरी कर सकता, मानो, सिरजनहार ने संसार-भर के पुष्प फल आदि सुन्दर सरस कोमल वस्तु बना कर, सु-अभ्यस्त होकर, तब उस अलभ्य रत्न को सिरजा था।

उस स्वर्ग दुर्लभ पुष्प को, अपने २ हृदय पर सुशोभित करने के लिए, देश भर के युवक समूह लालायित हो उठे, पर उसे पाना सहज बात न थी वह रानी जैसी स्वरूपवती थी, वैसी ही बुद्धिमती भी थी। उसने संसार भर में से, अपने योग्य वर ढूंढ़ निकालने की बड़ी विलक्षण रीति निकाली थी उसकी प्रतिज्ञा थी, कि जो पुरुष "संसार की सब से बहु-मूल्य वस्तु" लादेगा, वही उसका पति हो सकेगा, अन्यथा उसे प्राणदण्ड होगा।

इस प्रतिज्ञा को सुन कर, सैकड़ों कामुक तो चुपचाप कान दबा कर, मन मार कर बैठ रहे और कई एक साहसी जो उसे हृदय से चाहते थे, उसके प्रण-पालन के लिए कमर कस कर तैयार होगये। इस धुन में, कईयों को धन-वैभव सुख सम्पति सब त्यागना पड़ा। कईयों को पर्वत की भयानक गुहाओं में सिंह और चीतों का शिकार बनना पड़ा। कई समुद्र के गर्भ में अलभ्य

श्वास ले रहा था। वह रोम २ में दुख का विष उपजाने वाली कराहने की ध्वनि, उसी मनुष्य की थी। युवा ने झपट कर अपने आँचलसे उसके मुख पर छाया की। और प्रबोध देने की चेष्टा करने लगा। धीरे २ उसे चेत हो आया चेत होते ही एक अपरिचित व्यक्ति को सन्मुख देखकर उसके मुर्दा शरीर में विद्युत् का वेग छागया और पास पड़ा तलवार उठाला; और "अधर्मी! पामर-यवन!! ठहर!" कह कर, उसने वार कर ही तो डाला! पर, युवक उछल कर बच ही तो गया और कहा "बहादुर! मैं तेरा शत्रु नहीं हूँ एक मुसाफिर हूं।" तब उसने नजर उठा कर, स्थिर दृष्टि से आगन्तुक की ओर देखा और कहा, "अतिथि! तुम अतिथि हो? इस अवस्था में तुम्हारी क्या सेवा करूं! देखते ही हो मैं मरणोन्मुख हो रहा हूं। बोलो, तुम्हारी कुछ सेवा करसकता हूं" युवा उसकी उदारता और उच्चाशय पर अचम्भित हो गया। फिर पूंछने पर पता लगा, कि यह "राजपूताना है और यह पुरुषसिंह 'राजपूत' है। राजपूतों के आत्मत्याग और देश प्रेम की, युवक ने बहुत सी कहानियाँ सुन रक्खीं थीं आज यह सब देख भी लिया। एक बड़े, विकट युद्ध में, जो तातार देश की प्रबल सेना से हुआ है, यह उसी में घायल हुआ है। वह किसी का नौकर सिपाही नहीं था वरन् एक ग्रामीण किसान था। देश पर शत्रु चढ़ आये हैं, यह सुनकर, अपने देश पर आत्म-बलिदान करने को, वह युद्धक्षेत्र में आया था। राजपूतजाति की विजय हुई, सही! किन्तु वह वीर वीरगति को प्राप्त हुआ। उसकी देशभक्ति और आत्मगौरव को देख कर और उसकी जात्या भिमान की बात सुन कर, युवक दंग रह गया। वह उस पर—उसके हृदय के सौन्दर्य पर मोहित हो गया उसकी इच्छा थी, कि कुछ बातें करें; पर, अब समय नहीं था। उत्तेजना के मारे, उस के घावों से रक्त बहने लगा। धीरे २ वह हत प्रभ होता गया। उसने अनुनय की दृष्टि से युवक की ओर देखा। इसका अभिप्राय यह था, कि अतिथि के प्रति जो भूल सेउद्दण्ड बर्ताव हुआ है उसके लिए वह अनुताप कर रहा है। युवा के नेत्रों में आँसू भर आये अन्त में उसके हृदय के घाव से एक रक्त की बूंद निकली। और यही उसके जीवन की अन्तिम बूंद थी। इस बूंद के साथ ही, उसके प्राण-पखेरू उड़ चले। युवक ने बड़े आदर-पूर्वक, उस बूंद को अपने हाथों पर ले लिया और उस रानी के पास ले चला जब वह वापिस रानी के पास पहुंचा, तब उसकी बुरी दशा थी; कपड़े फटकर चिथड़े हो गये थे डाढ़ी के बाल बढ़कर आपस में उलझ गये थे, और सूरत भूत सी हो गई थी। रानी ने प्रेमपूर्वक, दर्बार करके उस का स्वागत किया। धीरे २ उसने सारी कहानी कह सुनाई। चारों ओर धन्य २ की पुकार मच गई। रानी ने उसे क्षौर कराकर, सुन्दर राजसी ठाठसे, राज सिंहासन पर जा बैठाया और उसके चरण धोकर जल मस्तक पर छिड़का। एक स्फटिक का बहुमूल्य पत्थर लाकर स्वर्ण से लिख दिया, कि—

'वह रक्त की अंतिम बिंदु (बुंद) जो देश की रक्षा के लिए निकले, संसार की सब से अमूल्य वस्तु है।"

——

मोहिनी के आँसू

ले०—श्रीयुत सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज

[गतांक से आगे]

‡

ठीक दो मास के पश्चात्, आज कुन्दन को ज्वर ने छोड़ा है। इस बीच जैसे-जैसे कष्ट इन दम्पतियों ने सहे हैं, उन का उल्लेख कौन करे? कोई देव-देवता न छोड़ा होगा जिसकी पूजा मनता यथाबल न मानी हो! रात का जागरण, दिन भर का अनशन, चौसठ घड़ी की चिन्ता ने जायापतियों के वर्ण बिगाड़ दिए! शरीरों को निबल कर दिया। खर्च से हाथ तंग हो गया! यह सब कुछ होने पर भी--सरला और शङ्कर—प्रसन्न-चित्त हुए देव-देवताओं का गुण-गान करने लगे।

शंकर--(गुड़गुड़ीकी नली को मुंह से निकाल) "कुन्दन की मां! भोले-भण्डारी बड़े ही दयालु हैं। देखो, सब कुछ हुआ बड़े २ दुःख सहे; परन्तु जैसी दया अन्त में दिखाई—उसे देख क्या हम इन सब को दुःख गिनें?"

सरला—[कुन्दन के तैल-मर्द्दन करती हुई, बीच में तर्जनी अङ्गुष्ठ से आंचल को माथे की ओर थोड़ा खींच] "इस जन्म में जो धर्म न होसका है, तो पाप भी नहीं किया है। न किसी की चोरी ही की है। न चाहते हैं कि किसी के दिल को ही दुःख पहुंचे! इस लिए यही समझ में आता है कि पिछले जन्म के कर्म का ही फल है! कुछ शेष भोग भोगे हैं!! कुछ हो, महादेव स्वामी ने पूरी रक्षा की है! देव-देवताओं ने मुहं उजला कर दिया! इसी सोमवार से मैं तो शिवजी महाराज का व्रत आरम्भ कर दूँगी।"

शंकर—(चिलम लौटाकर, तवा निकाल, फिर से तम्बाकू और तवा रख, घुटने के सहारे से 'महादेव-देवन के देव!' कह, उठा और बोला) "आग है-न?"

सरला—(उंगली से अंगीठी को बता) "उस में होगी"।

शङ्कर उसमें से अग्नि निकाल, चिलम भर फिर वहीं बैठा। और कुन्दन की

‡

☞ सूचना आज कल हिन्दीसाहित्य-क्षेत्र में स्वार्थी जनों द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण-कूड़ा फेंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य-जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक "ज्योति" के शृंखलाबद्ध अंकों का अवलोकन करें। प्रत्येक में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास मण्डी लुधियाना' के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिए प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं, यह निश्चय हो सके।

लेखक।

ओर देख, बोला-"इसका तो नया ही जन्म हुआ है !"

सरला—(कुन्दन की दुर्बल देह पर एक विशेष दृष्टि डाल कुछ देर में बोली) "देखो-न, माथे की हड्डी बाहर को, खोपड़ी की पीछे को, गाल अन्दर को, और बांस (पृष्ठ वंश की हड्डी) कितनी ऊपर को निकली है। पसलियों ने बाहर हो कर, कैसी ....

कुन्दन बीच में ही बात काट कर बोला अरी मां! जैसे हम हाज़िरी देन को या बेत खानेको लाइन लगाते हैं वैसे इन (पसलियों) की लाइन लगा है!"

सरला—(स्वामी की ओर देख, बोली) 'सुना?'

शंकर—(दो--तीन बार शिर हिला "हाँ, मस्तनाथ हैं लम्डे को कुछ ग़म-फ़िक्र थोड़े हा हैं!"

कुन्दन फिर बोला—"अम्मां-री! देख, पेट भी इन में कहीं चला गया! छुपसा गया! जैसे मास्टरजी को देख, जिसके याद नहीं, बहलड़का जमायत में छुपता है!!"

शङ्कर इस बार हंस पड़ा। परन्तु सरला कुछ कृत्रिम-कोप कर बोली "बस-रे बस बड़े! चुप भी हो; इस में भी स्कूल ही आ-बड़ा!!"

कुछ काल के अनन्तर शङ्कर गुड़गुड़ी की धूआं नाक--मुहँ से छोड़ता, बोला—"क्या बताऊं-री कुन्दन की माँ!"

सरला--(सहसा उद्विग्न हो, क्षुब्धस्वर में) "क्यों--जी? क्या बात?"

शङ्कर[कुछ देर मौन रह] "अरी, पास पैसा नहीं, हाथ तंग हो रहा है।"

सरला—"न हो, घबराने का क्या काम है? अब हमें करना भी क्या है?"

शङ्कर—[स्थिर-दृष्टि से सरला की ओर देख] "अभी भूल गई—री?"

सरला--[सम्भ्रान्त-सी हो] "क्या...?" कहा परन्तु कुछ ही क्षण होने पाया कि सहसा कुछ स्मरण हो आया, जिससे उसका समस्त-गात्र कण्टकित हो उठा और संक्षुब्ध-स्वर में बोली--]"ओह! भूलेंगे कैसे? जन्म भर भी नहीं भूलते!"

शंकर—[सावधान हो] "हां! देखो तो-जिस समय महाराज की मानता कुबूल की कि उबर जैसे था ही नहीं! फिर दिन दूना-रात चौगुना सुख ही सुख होता आया! वे तो अनन्त बल के स्वामी हैं, कुछ डरना भी चाहिए!"

इस समय सरला का हृदय सहसा भार से दब-सा गया। वह शीघ्र ही उत्तर में बोली:--

"नहीं-नहीं, ढील का काम नहीं; फिर सब कुछ उनकी ही दया-मया से होजा-एगा।" और भुजा से बाजू और गले से हंसली उतार, देती हुई बोली-"लो सब कुछ पीछे और यह पहले।"

शंकर—[गम्भीर-स्वर से] "हैं?" कह, कुछ देर निश्चल-निर्वाक् रह बोला" तो क्या .. ..?

परञ्च सरला ने बात समाप्त न होने दी, पहले ही कहा।

"क्या....कुछ नहा, चौथे दिन सोमवार है, आजही कहीं इन्हें धर, रुपये लाओ। और सोम से पूर्व ही तयार करादो, बस! यही उत्तम है!"

शंकर--[मन्द-स्वर में] "अच्छा !" कह, गृहणी के मृदुल-मञ्जुल-पाणि-पल्लवों से ग्रहण कर उत्साहित हो, बोला-' नन्हे कुम्हार का लम्डा और नन्हा दोनों दो-दिन में तयार कर देंगे। ईंटें, मिट्टी और चूना इनके रुपये लाकर आज ही डलवालूं।"

सरला--[स्वामी की ओर देख] "हाँ-जी ! शिवजी महाराज दया करेंगे तो यह सब फिर दो-ही महीने में अपने हो सकेंगे। काम बराबर चल पड़े, फिर क्या है कुछ सोच नहीं ! जाओ !" कह, फिर बोली "अच्छा गोल छतरी, गुमटी वाली बनवाना, सुन्दर लगेगी। तीनों तरफ किवाड़ों की जोड़ियाँ हों, जिससे कुत्ते-बिल्ल आदि न घुस पाएं। छोटी-छोटी पौड़ियाँ हों, बाल-बच्चे जिससे सुख से चढ़ सकें हमारे आस-पास कोई शिवालय भी न था भोले-बाबा कैसे घट में आ विराजे?"

शंकर--[गम्भीर हो, वहाँ से उठ, बोला--] "देखिए, जो हो सकेगा ! जैसी महाराज की इच्छा होगी !"

दिन भर में अनेक बार अनेक चित्रविचित्र मेघ-दलों का इधर-उधर जाना निष्फल रहा, जिस प्रकार निर्धनों के विचार दल ! जलभरी घटाओं को देख, ग्रामीणजन टकटकी लगा, मनोभाव प्रकट किए कि--"अब वारे-न्यारे हुए" परञ्च सब व्यर्थ हुए। कहां प्रचण्डतर--प्राग्वायु के आगे विचारी निराधार घटाएं ठहर सकें? आशा दुराशा--मात्र ही रही। 'भाद्र मास में पहाड़ (उत्तर) की वायु चले तो सौ कोसों से वर्षा खेंच, ला-सके !' यह श्रुति-परम्परा अतथ्य कैसे हो ? फिर घटाओं का क्या दोष ? परन्तु फिर भी देश दशा देख कर विवशता में भी कुछ बूंदे डाल ही जाती हैं। जैसे सार्वजनिक सभा में कर्म-वीर देश-भक्त की वक्तृता द्वारा कर्मवीर देश भक्तों का भयावह लोम हर्षण अत्याचार-सहन सुन, उपस्थित धनी मानी एवं, अकर्मण्य भी आस पास के बैठने वालों के समक्ष दो अश्रु-बिन्दु टपका हार्दिक सहानुभूति प्रकट करते हैं—'बस, इतना ही वश है, यही हो सकता है !'

—इस दिन शंकर ने अनेक बार चाहा कि—'शहर चलूं, सौदा लाऊं !' किन्तु बादलों की ओर देख, विचार स्थगित कर देता था। छत्री घर में एक ही थी, वही लड़के स्कूल ले गए। खैर ! छप्पर के नीचे (घर में) बैठा कालक्षेप करता रहा।

* * * *

लाला रामप्रसाद जी ने चौबारे की खिड़की में से, आंगन की ओर मुंह निकाल खांस कर, "अरे, मिन्टू ! मिन्टू रे !" पुकारा पुकार सुन, बैठक की दरीची खोल, लाला शिव प्रशाद जी, बाहर निकल; द्वार शिला (देहली) पर खड़े हो बोले—"क्यों भय्ये रामप्रकाश ! कुछ काम है-क्या ? मिन्टू तम्बाकू कूट रहा है। सीरे में हाथ हैं।"

रामप्रसाद—"नहीं-जी ! काम तो ऐसा कुछ नहीं। बड़ी मां जी कह रही हैं—लम्डा अभी तक नहीं आया !'

शिव०—"तो क्या देखने को इसे भेजना है?"

राम०—"हां, कह रहीं हैं-जरा पीर के पीपल तक हो आए। गांव में आकर, कहीं लग गया हो खेल में ?"

—शिव प्रसाद जी उत्तर में 'अच्छी बात' कह, उलटे बैठक में आ, भृत्य से बोले-"जा

पदार्थ खोजने जाकर डूब मरे कईयों ने बड़े२ रत्न, मोती, जवाहरात ला २ कर रानी को भेट किये। पर, मनोयोग्य न होने से उन्हें फांसी पर लटकना पड़ा। कोई विफल मनोरथ होकर, बन में मतवाले होकर घूमने लगे। कइयों ने अन्नजल त्याग कर प्राण देदिया। और कई हठी-दुराग्रही उसके द्वार पर सिर पटक २ कर मर गये।

यह सब तो हुआ! पर, रानी किसी को मिलती! ऐसा एक भी व्यक्ति न मिला। केवल, अपने कारण ऐसा अनर्थ होता देख कर, रानी बड़ी क्षुभित हुई, पर, प्रतिज्ञा को कैसे टाल सकती! वह बारम्बार अपनी प्रतिज्ञा को धिक्कार देने लगी धीरे२ यहप्रवाह बन्द सा होचला, और लोग, रानी को पाना दुराशा मात्र समझ कर, मन मार बैठ रहे। और रानी भी अविचल-भाव से राज काज देखने लगी। पर वह, भीतर ही भीतर बड़ी उद्विग्न रहती। इसी प्रकार कई वर्ष बीतगये।

२

कुछ काल बाद एक विदेशी युवा यात्री आया और उसने रानी की प्रशंसा तथा प्रतिज्ञा सुनी। उसके मन में, उस उच्चाशया रानी को प्राप्त करने की बड़ी उत्कण्ठा लगी। लोगों ने बहुत समझाया, कि क्यों अपनी जान खोने चला है! पर, उस ने एक न मानी। वह रानी के अभिवाञ्छित पदार्थ की खोज में चल निकला। बड़े २ देश विदेश की यात्रा की। नाना प्रकार की बहु-मूल्य वस्तुएं देखीं। पर, उसके मन को एक भी न रुचीं।

एक दिन घूमते फिरते वह ऐसे स्थान पर जा पहुंचा, जहां एक अपराधी को फांसी लग रही थी। उसने देखा, बड़ी भीड़ खड़ी है और अपराधी आंखों से पट्टी बाँध कर लाया जा रहा है। वह महा उद्दण्ड डाकू था; उसके कठोर कर्मों की, उपस्थित मंडली में बड़ी २ आलोचनाएं हो रही थीं। कोई तो, इस बात की आलोचना कर रहा था, कि उसने कितने मकान, शहर आग लगा कर भस्म कर दिये! कोई उसकी हत्या की गणना कर रहा था। कोई इस बात की विवेचना कर रहा था, कि उसने कितने अमीरों को लूट कर बर्बाद कर दिया! और कोई दयार्द्र "हाय! बेचारे का जीवन क्षण मात्र है!" इसी की करुणापूर्ण आलोचना कर रहा था।

जब उसकी पट्टी खोली गई, तो उसने देखा, अपार भीड़ में ज़ञ्जीरों से विवश वह खड़ा है। एक बार' उसने संसार को त्रासित करने वाली भयङ्कर अपनी बाहुओं की ओर देखा; जो इस समय तलवार से सुशोभित होने की जगह, दुःखदायी ज़ञ्जीरों से कस रही थीं। जिन पैरों के धमाके से राजा और अमीरों के कलेजे दहल जाते थे, वे पैर। उस समय भारी बेड़ियों के विवश हो रहे थे, जिस हुंकार को सुनकर स्त्रियों के गर्भ गिर जाया करते थे। आज उस हुंकार के स्थान में उस के मुख से, एक हलकी सी आह निकली। उसने शून्य दृष्टि से अन्तिम बार संसार के सारे विभव को देखा। जिस दृष्टि में संसार को त्रासित करने की सामर्थ थी, वही दृष्टि अत्यन्त त्रासित होकर संसार को देख रही थी। अचानक, वह किसी वस्तु को देखकर चिल्ला उठा। वह वस्तु एक पांच वर्ष का बच्चा था। जो वहीं उसके मृत्यु क्षेत्र के पास आनन्द से गेंद खेल रहा था। उसे देखते ही अधीर होकर, वह अधिकारी से गिड़-गिड़ा कर विनय करने लगा, कि ईश्वर के लिए उसे एक मिनट के लिये टिकटी से उतार कर, बन्धन मुक्त कर दें। उसने जिस

ढंङ्ग से यह तुच्छ प्रार्थना की, उसे देखकर सब को दया आई। अध्यक्ष ने उसे मुक्त कर दिया; केवल भाग जाने के डर से बेड़ी न खोलीं। वह दौड़ कर तुरन्त उस बच्चे के पास गया और उसे गोद में उठा कर छाती से लगा लिया। उसके मुख से यह शब्द निकले, प्यारे बच्चे! तुझे मेरा यह महा भयङ्कर मृत्यु-क्षेत्र आनन्दमय क्रीडा-स्थल हो रहा है। जब मैं तेरी बराबर था तब मैं भी ऐसी ही गेंद से, इसी प्रकार किलोलें किया करता था। और मेरी मां मुझे कुछ खिलाने को पकड़ने चलतीं, तो दौड कर, छिप कर उसे अत्यन्त सुखी करता था। मेरे नटखटपने से वह बहुत ही दुःखी होती। पर, जब कभी मैं बीमार पड़ जाता और चुपचाप पडा रहता, तब वह प्यासी की तरह, फिर मुझे ऊधम मचाते देखने के लिए अधीर हो जाती थी। और जब मैं चारपाई से उठ कर कूदने दौड़ने लगता, तो उसके सुख की सीमा न रहती, इस प्रकार, मेरे बचपन की स्वच्छन्द लहरों में ब्रह्मज्ञानी की तरह, उसे दुःख सुख एक ही पदार्थ बोध होता था। आज, तू धन्य है! तेरी पवित्र आत्मा को संसार के ताप से कुछ भी सम्पर्क नहीं है। यह कहते २, उसकी आँखों में, झर २ दो मोती से आंसू भर आए हमारा नव-युवक यह सब व्यापार देख रहा था। उसने आनन्द से गद्गद् हो कर कहा—"अहा! इन आंसुओं से बढ़ कर बहुमूल्य पदार्थ और क्या होगा? जो एक महापापी के नेत्रों से अपने जीवन के अन्तिम लहमों में, पश्चात्ताप से, पवित्र बचपन की याद में बहें।" यह कह कर उस ने वे दोनों आंसू भक्ति-पूर्वक अपने हाथों पर ले लिये और उन्हें रानी के पास ले चला।

३

रानी ने समाचार सुनकर उसे अपने सामने बुलाया और आप पर्दे में उस के उपहार को देखने की लालसा से आ बैठी। युवक ने अत्यन्त करुणोत्पादक स्वर से, यह कटु कथा सुनाई, कि सुननेवालों के हृदय पिघल उठे। रानी ने मनोयोग पूर्वक सब कथा सुनी। और सहानुभूति सूचक स्वर में कहा—"निस्सन्देह, तुम ऊच्चाशय और परिश्रमी मालूम होते हो। पर तुम जो पदार्थ लाये हो, वह वास्तव में सब से अच्छा नहीं कहा जा सकता। यद्यपि उस का उत्तमता में कोई सन्देह नहीं। इसीलिए तुम्हें प्राण दान दिया जाता है, कि तुम एक बार फिर अपने भाग्य को आजमाओ!"

हृदय को अत्यन्त दृढ़ करके, फिर वह अभीष्ट सिद्धि को चल खड़ा हुआ। जिस समय की यह बात है उन दिनों रेल की सवारी न थी; न चौड़ी २ सड़कें थीं। किसी ने कह दिया था, कि दूर देश भारत में, ऐसा अमूल्य पदार्थ मिलेगा। भारत की ही सुध उसने बाँधली। बड़ी २ खाड़ी, झंखाड़, जङ्गल, वन, नदी, नालों को पार कर, सिंह और चीतों से अपने को बचाता हुआ, भूख-प्यास को सहन कर, भारत में पहुंचा। भारत में पैर रखते ही, उसने एक अद्भुत चमत्कार देखा। उसने देखा एक चिता धक् २ जल रही है। चारों-ओर, सैकड़ों नर-नारी चुपचाप नीरव भाव से खड़े हुए, मनुष्य की क्षणभङ्गुरता पर सोच रहे हैं। उन सब के आगे आज ही की अनाथिनी हुई, पाले से मारी हुई कुमुदनी की तरह, एक देवी-रूप युवती एकाग्र-मन से, चिता की ओर हाथ जोड़े स्थिर-भाव से खड़ी है। उस के बाल बिखर रहे हैं; वस्त्रों की उसे सुध नहीं है। उस के नेत्रों में आशा सुख और प्रणय की कभी मधुर मिश्री घुलती

रही होगी। पर, इस समय हाय! वह बड़ी ही भयङ्कर हो रही है। उसके कोमल कपोलों पर, प्रभात की ऊषा-काल की सी पिलाई छा रही है। उस की दशा वर्णनातीत है। मानों विधाता के निर्दयी हाथों ने उस अर्द्ध-विकसित पुष्प को, बड़ी ही निर्दयता से कुचल फेंका हो। तथापि, एक अनुपम-श्री, उस अशोभा में शोभा की झलक दिखा रही है। उस मूर्त्ति में चपलता नहीं है सुघड़ता नहीं हैं मधुरता नहीं है; सरसता नहीं है; पर, फिर भी उस देखते रहने को जी होता है। इस का कारण यही है, इन सब के स्थान पर, उस मूर्त्ति में पवित्रता की उज्ज्वल-ज्योति प्रतिष्ठित है। हो न हो, इसी कारण, उसदेवी को माता कहने को जी चाहता है। उपस्थित मण्डली में युवा-वृद्ध-बाल-नर-नारी, सभी एक-दम चिल्ला उठे,-"सती माता की जय" अग्नि की ज्वाला पूर्ण वेग से धधक उठी; फिर, ध्वनि उठी —"सती माता की जय" अग्नि की ज्वाला देखते २ आकाश को छूने लगी। एक गम्भीर-गर्जन के साथ, फिर "सती माता की जय" ध्वनि हुई अब समय आगया था, कि संसार आत्म-त्याग का सर्वोत्कृष्ट-दृश्य देखे। सती ने धीर-भाव से चिता की ओर पद बढ़ाया; साथ ही, शंख, भेरी, दुन्दुभी और घड़ियाल की ध्वनि आकाश तक गूंज उठी। सती ने एक बार उस चिता की प्रदक्षिणा की और धम से उस में कूद पड़ी। और अपने पति के अधजले चरणों से लिपट गई। उस समय वायु का वेग बढ़ चला; आकाश मैला हो गया; सूर्य का प्रकाश धीमा पड़ गया। मानों, उस क्षण में विश्व का तेज, सती के पवित्र शरीर में आ विराजा था। चारों तरफ से अग्नि की लपटोंने, दौड़कर उसका स्वागत किया। और उसने प्रेम-पूर्वक उस विश्व-ध्वंसिनी-ज्वाला का आलिङ्गन किया। सती की जय-घोष से, दशों दिशा व्याप्त होगई। पल-भर में वह स्वर्ण की तेजोमयी-मूर्त्ति, उस स्वर्ण के तेजोमय-सिंहासन पर बैठ कर आँखों से ओझल होगई। प्रेम का, भक्ति का, आत्म-त्याग का, गौरव का, यह अविचल, अटूट, अनुपम दृश्य देख कर, हमारे युवक के नेत्रों में आँसू भर आये। ऐसा कठिन व्रत, उस ने काहे को देखा था! उस ने कहा, संसार में इस से अधिक मूल्यवान् पदार्थ क्या होगा! यह कह कर, एक मुट्ठी भस्म उठा कर, युवक वहीं फिर दूर देश रानी की सेवा में लौट चला।

मार्ग की बड़ी २ कठिनाइयों को सहकर, वह अन्त में वहाँ पहुंचा। रानी ने बड़ी प्रसन्नता से उसे महल में लिया। युवक ने पहुंच कर, ऐसे शब्दों में उस दृश्य का वर्णन किया, कि सुनने वालों के कलेजे उमड़ आये। सारे श्रोताओं ने पत्थर की मूर्त्ति की भांति, अविचल-भाव से सती की पवित्र कथा सुनी। तदनन्तर, युवक ने वह मुट्ठी भरी धूलि उठाकर, रानी के सन्मुख रखदी। रानी की आँखों में आंसू छलछला आये थे। उस समय उसकी मुख श्री, ओसभरे गुलाब के समान शोभायमान होरही थी। उसने बड़ी भक्ति औरश्रद्धापूर्वक वह भस्म माथे पर चढ़ाई। और स्नेह तथा कृतज्ञता के स्वर में उसने कहा,—परम अनुग्रही युवक! तुम्हारे उद्योग से मैं सन्तुष्ट हूँ। तुम उच्चाशय हो! उच्च-हृदय के अधिष्ठाता हो! और सच्चे खोजी हो! पर, तुम अभी तक अभीष्ट पदार्थ नहीं लासके हो। पर, निश्चय जानो, कि तुम शीघ्र ही अपने अभीष्ट को प्राप्त कर सकोगे। लाओ! अपना हाथ मुझे दो, जिस से मेरे वचन पर तुम प्रतीति कर सको। यह कह कर अपने कोमल कर-कमलों में

रानी ने, युवक का हाथ लेकर आदर पूर्वक तनिक दबा दिया।

(४)

युवक का हृदय मानों बोझ से दब गया सम्हल कर वह उठा। एक लम्बी साँस उसने ली और चुपचाप उठकर चला आया। जब तक वह आँखों से ओझल न हो गया, रानी एक टक उसे देखती रही। तब भी उस की आँखों में, आँसुओं के दो बड़े २ मोती सुशोभित थे। युवक सीधा भारत वर्ष की सुध बांध कर चला। मार्ग के क्लेशों का कुछ ठिकाना नहीं था; पर, उस का हृदय अटल-अचल था। इस बार वह घूमता फिरता, एक समर-क्षेत्र में आ पहुँचा। उस समय ज्येष्ठ मास की दुपहरी झलझला रही थी— चारों तरफ आग बरस रही थी, पेड़ का दूर २ तक चिह्न भी नहीं था। मीलों बालू को छोड़ कर कुछ नज़र नहीं आता था। गर्म हवा के झोंके, तन को-मन को झुलसाये डालते थे। किसी जीवित जीव का वहां नाम भी नहीं था। संसार की सर्वोत्तम जाति मनुष्य की, वहां बड़ी भयङ्कर दशा थी। प्रायः सभी निर्जीव थे। किन्हीं की अँतड़ियों को गीदड़ खींच २ कर खारहे थे; किन्हीं की पगड़ी को आंत समझ कर, चील आकाश को ले उड़ी थी। दूसरी, झपट्टा मार कर उस से छीनना चाहती थी। कहीं किसी शव पर कौवा बैठा २, उसकी आँखे निकालने को चोंच चला रहा था। किसी का सिर उसके धड़ से दूर पड़ा, धूल में लोट रहा था। किसी नर-केसरी के हाथ में, तलवार दबी की दबी रह गई थी। और उसकी बत्तीसी के बीच में, होंठ ऐसा गुँथ गया था, कि छुड़ाना कठिन था। सर्वत्र, निस्तब्धता का राज्य था। जब ये जीवित रहे होंगे, तब कैसी विभीषिका रही होगी! परस्पर की हिंसा की ज्वाला का प्रवाह कैसा भयावह रहा होगा उनकी लाशें सूर्य की किरणों में सड़ कर बड़ी दुर्गन्ध फैला रही थीं। हमारा युवक यह दृश्य देख कर भौंचक-सा रह गया। यह हिंसा-द्वेष का परिणाम! यह लोभ-ईर्षा का कटुफल! यह उस देवाधि देव की अनुपम कारीगरी का, ओछे मनुष्यों द्वारा इस प्रकार निठुराई से कुचले जाना, आज से प्रथम युवकने नहीं देखा था। शान्ति! शान्ति को लोग कितना चाहते हैं, पर, इस नीरव शान्ति से, हमारे युवक का मस्तिष्क भिन्ना उठा। यह क्यों? कदाचित् इसलिए, कि उस शान्ति के साथ, स्वार्थ, ईर्ष्या और विद्वेष की गन्ध आती थी। उस शान्ति से, युवक का छोटासा दयामय हृदय, महा-अशान्त हो उठा। अत्यन्त कातर होकर, युवक पैर बढ़ा २ कर आगे जाने लगा। उसे बड़ी इच्छा थी, कि वह जाने कि यह कौन स्थान है। पर, किस से पूंछे! निर्दयी, अधर्मी मानव-जाति की कठोरता ने, परम-पिता की लहलहाती बाग़ बहारी को, ऐसे अमानुषी भाव से कुचला था, कि एक भी फूल समूचा न बचा था। मन ही मन दुखी हो, युवा वहां से खिसक ने ही को था, कि एक धीमी कराहने की आवाज, उसके कान में पड़ी। उस कराहने में बड़ी वेदना भरी थी। उस ध्वनि से स्पष्ट ज्ञात होता था, कोई प्राणी अभी २ मृत्यु से भेंट कर रहा है।

शब्द को लक्ष्य करके, युवा वहां पहुंचा, तो क्या देखता है, कि एक युवा सिपाही उल्टा मुंह किये, धरती में लोट रहा है। सूर्य की तेज किरणें उसे झुलसा रही हैं। उस क मुख पर, मृत्यु के चिन्ह प्रकट हो रहे थे उसके शरीर पर असङ्ख्य घाव थे शरीर उसका छलनी हुआ पड़ा था, बड़े कष्ट से वह

रे मिन्टू! जरा पोर के पीपल तक तो हो आ। कहीं खेल देख गांव में ठहर गया हो?"

मिन्टू—"कौन भय्ये, हरप्रसाद?"

शिव—"हाँ! जा—ऐसे ही चला जा। क्या हाथ धोएगा"

—मिन्टू 'अच्छा जी' कह, मूसली का सिरा ऊंखली पर टेक, कोनी ऊपर उठाये चल पड़ा। चौपाल से थोड़ा ही आगे निकला कि बस्ता सिर पर धरे, दबात हाथ में लिए हरप्रसाद को आते देखा और बोला—"भय्ये आज देर क्यों?" दबे पांव ही पीछे हट, हरप्रसाद—ज़रा दूर से बातें कर, मुझ से न लगना"

मिन्टू—"क्यों?"

हर०—"शङ्कर मोची के लम्डे ने मेरा बस्ता छू लिया, और मैंने पता न होने से, उसे उठा लिया। लाला जी घर तो नहीं हैं, हुए तो ज़रूर मारेंगे!" "ऊं ऊं" कर डब डबाई हुई आंखों ने गोल-गालों पर दो बूंद भी तो डाल दीं!

मिन्टू—तो सही पर मारेंगे काहे को? जान कर ऐसा थोड़ा ही हुआ है? रोओ—नां, सीधे घर चले चलो"

—हर प्रशाद उसी मरी सी चाल से चलता हुआ, एक-एक नयन से ३-३ अश्रु-बिन्दु डालता हुआ, घर पहुंचा। ज्यों घर में प्रविष्ट होने लगा—त्यों ही बैठक में से लाला शिवप्रसाद जी देख बोल पड़े:-

"आगए भय्ये!"

—हरप्रसाद "हां" न करने पाया कि फिर लाला शिवप्रशाद जी ने प्रश्न किया—"रोते क्यों हो?"

—हर प्रशाद ने धीरे से कहा "नहीं" कह, शीघ्रतया अन्दर घुस गया। आंगन में पहुंचे किताबें एक ओर धर, नहाने वाली शिला पर बस्ता पटक, आप जीने में ५-६ सीढ़ियां चढ़ पुकारने लगा—"अरी मां"

—बड़ी मां खिड़की में से आंगन की ओर झुकीं। नाड़ टेढ़ी कर जीने की ओर देख बोलीं—"क्यों रे वहां क्यों?"

हर०—"[दबे स्वर से] 'यहां आओ, बड़ी मां!"

बड़ी मां 'टट्टी के हाथ' समझ लोटा पानी का ले, आईं और पास जा बोलीं—"क्यों—क्या हाथ धोने हैं?"

हर०—(एक सीढ़ी और भी नीचे उतर, मुंह, फुला कर, गुनगुने स्वर से) "नहीं तो. हाथ नहीं धोने"

बड़ी मां—"तो—?"

हर०—"न्हिला दो"

बड़ी माँ—"क्यों?"

हर०—"छूआ गया"

—बड़ी मां क्रोध से लाल हो चिल्ला उठी —"किस से?....यही करके आता है!"

हर०—"ऊं-ऊं" कर, कुछ आंसू चुआ बोला —"शङ्कर मोची के लम्डे ने बस्ता छू लिया और बे खबरी से मैंने उसे उठा लिया!"

वृद्धा विष्णु की उपासना करने वाली, धो धो कर लकड़ियां जलाने वाली थी। सुनते ही क्रोधानल से और अधिक लाल हो उठी। उसका हृदय क्रोध के मारे धंधकने लगा। नेत्र रक्त हो गए। चिल्ला कर सब को सुनाती हुई बोली—"शंकर के लम्डे आसमान पर चढ़ेंगे! डिपटी बनेंगे! कुछ कहना ही नहीं—नबाबी छा रही है!!"

वृद्धा की क्रोध-भरी घर्षणा सुन, उधर से शिवप्रसाद देहली (द्वार-शिला) पर,

'इधर रामप्रसाद ऊपर खिड़की की राह से झुक, बोले—"क्यों-क्यों" क्या बात है ?"

वृधा और भी क्रोध से चिल्ला कर, शंकर का घर हाथ से बताती हुई बोली—"छू लिया शङ्कर के लम्डेां ने"

रामप्रसाद हर प्रसाद की ओर रक्त नेत्र कर, उसे झिड़क कर बोले-"तेरा उन से काम क्या ? वे तो तेरी जमायत में भी नहीं हैं"।

रोनी-शकल बना, हरप्रसाद ने कहा—उनके पैर से बस्ता छूया गया !"

रामप्रसाद उठे। वेग से जूता पहन जीने में आ बोले—"अलग हो, नीचे उतरने पर, स्वयं आंगन में आ, अपने बड़े भय्ये से कहने लगे—"शंकर वालों ने छू लिया। आगे भी एक दो बार ऐसा कर चुके हैं।"

शिव. अच्छा, जाओ। आज अच्छी तरह धमका दो।

रामप्रसाद सुन, अपनी बेंत ले, चलने को उद्यत हुए। और पास खड़े हरप्रसाद से 'कहां हैं रे, वे' कहां। हरप्रसाद ने 'रास्ते में आ रहे हैं' उत्तर दिया। बस, रामप्रसाद सुन, सर्पट चले।

[लाला रामप्रसाद के तो कोई सन्तान हुई ही नहा। ला० शिवप्रसाद ज़ी की नौ सन्तानों में से यह एक जीवित है। अतः सब ही घरके इसे बड़ा प्यार करते थे। घर में भी मालदार हैं। गांव में कोई भी ज़रा लड़के को कुछ कहदे तो सब घर के जन मरने-मारने को तयार हो जाते हैं। ख़ास कर लाला रामप्रसाद, इस लिए कि स्वभाव बड़ा तेज़ है। एक साथ ही बिगड़ उठते हैं। क्रोध एक बार इन्हें आजाए, फिर जाना ही नहीं चाहता ! तिस समय ज्ञान चक्षु सर्वथा बन्द हो जाते हैं ! वैसे तो कोप का यह स्वभाव भी है परन्तु रामप्रसाद की प्रकृति इसी प्रकार की है कि 'बलवान के समक्ष चूं न करना, और निर्बल को खाने के लिए तयार हो जाना ! ठीक आधुनिक वैश्यों के स्वभाव से स्वभाव समता रखने वाला रहा !!!

शङ्कर गुड़गुड़ी की नली को परे को फेर अंगड़ाई तोड़ता हुआ उठा। सोचने लगा—"अब तो बाज़ार का क्या वक्त रहा है ? जो जाऊं भी तो कैसे ? लम्डे छत्री लेगए, अभी तक लौटे नहीं। न जाने क्या बात है—कहां खेलते रहे ? खैर अब तो कल ही सही।"

कुछ क्षण उपरान्त वहां से हुक्का उठा, गुड़गड़ाता हुआ, अभी-अब बनवाए अपने वरगद वृक्ष के पास के शिवालय तक पहुंचा वहां खड़े कुछ भी मिनट न होने पाई कि थोड़ी दूर पर नर नारियों का हो-हल्ला सुनाई दिया। उसके निमित्त शंकर के हृदय में उत्कण्ठासी हुई। वह एक हाथ से गुड़गुड़ी का मध्य-देश पकड़े, दूसरे से उसकी नलिका (नै) को मुंह में लगाए, गुड़गुड़ाता हुआ आगे बढ़ा। बेड़े से बाहर ही निकला कि सहसा उसका काय कण्टकित हो उठा ! हृदय बड़े जोर से हिलने लगा। कण्ठ घुटने लगा। भयानक ! आपत्ति की अशङ्का उसके हृदयरूढ़ हुई। सोचा-"कहीं लड़के ही न रोते हों"

वह कुछ ही दूर त्रस्तपाद चला था। मनुष्य समुदाय के निकट पहुंचने से पूर्व ही वहां के लोग शङ्कर को देख बोल पड़े:—

अब, आए कर, सर्वनाश कर दिया लड़कों का 'मार' मार कर ! चमड़ी उधड़ गई !! "

—शंकर एक के पश्चात् एक शब्द सुन, मूर्च्छित सा होने लगा! हुक्का हाथ से छूट पड़ा! मूंह से कुछ शब्द न निकले! क्या करे-जितना पाप हृदय ने सोचा था, उस से कई अंशों में अधिक हो, सामने आया! टाङ्गें उसकी कांपने लगीं! वह मनुष्यों के बीच में घुस गया। मछली की भांति तड़फते हुए बच्चों को उठा लिया। छोटे को गोदी ले, बड़े को छाती से चिपटा, क्रोध-शोक से विह्वल हुआ, उन्हें पुचकारता हुआ बोला-'चुप हो जाओ न बच्चे! बताओ तो-क्या बात? किन्तु उन बच्चों की देह शिथिल होचुकी थी। सुबकियों ने उनका कण्ठ घोट लिया था। हृदय उनके दब घुट से रहे थे। अतएव ज़बान भी बन्द होगई थी। वे दोनों, दोनो हाथों से ज़ोर से शंकर के चिपट गए। एक ने छाती में, और दूसरे ने पेट में मुंह छुपा लिया और सुबकियों से रुद्ध-वाक् हुए अश्रु-धारा के विपुल प्रवाह से शंकर का कुरता तर कर दिया! कम्पायमान करों से शंकर गात्र से वे अधिक चिपटने की चेष्टा करने लगे। जैसे राष्ट्र विप्लव के समय, धर्म और न्याय के विदा होने पर, प्राण-संशय देख, असहाय-प्राणी प्राण परित्राणार्थ रक्षा-स्थान-पा, छुपता है! जैसे आसुरी राज्य में धर्म और न्याय धर्मात्मा की शरण कामना करते हों!!

—चाहे वे बाल मराल-युगल बोलने में अशक्त हुए थे, परन्तु बात क्या छुपने वाली थी? उसी भीड़ में से गूंज उठी-"बस्ता छूने के अपराध में, लाल के छोटे भय्ये ने, मारा! बेदर्द होकर, अगणित बेतों की 'मार' मार कर, ततय्ये की तरह नचा दिया! बेहोश तड़फते हुए, अबोध बालकों की चमड़ी उधेड़ली! हाय, दया नहीं आई! ईश्वर ने उन्हें ज़ोर वाले बनाया है तभी वे निरपराध, निर्बलों, की जान भी निकाल सकते हैं!!!"

—सारे मोचीवाड़े में दुहाई पड़ गई। शंकर को ही सब बुरा बताने, धमकाने लगे-"क्या जाने, क्या पढा पढा कर 'डिपटी' बनाएगा? ले, ज़रासी बात पर बच्चों को पिटते, पिटते बेहोश, अधमुए हुए अब देखले!!"

—बच्चों के जरा से दुःख की सम्भावनायें जायापती दोनों अपने प्राणों तक को आड़ की जगह लगाने को तयार, परन्तु इस समय यह सब घृत-घूंट की तरह पीलिया। इन्होंने यही उत्तम समझा कि इस समय चुप ही होना चाहिए!

—दिन कर का अस्त होना भी निश्चित था और रात का आगमन भी। जैसे-जैसे १० बजने से अधिकरात जाने लगी-अड़ोसी पड़ोसी भी इधर उधर से-अपना, अपना काम बन्द कर-खबर लेने के लिए आनेलगे तिस समय देखते थे-सपत्नीक शंकर को चारपाई पर पड़े तीव्र ज्वर के कारण उछलते, प्रलाप करते!

कुसुमोद्यान

व्रत का माहात्म्य

ज्योति के पाठकों ने समाचार पत्रों में महात्मा गांधी के हाल में ही सात दिन का व्रत रखने का सम्बाद पढ़ा होगा। अब पता लगा है कि अपने साबरमती आश्रम में रहने वाले विद्यार्थियों के प्रमाद पर उन्होंने यह व्रत लिया था। इस सम्बन्ध में १० दिसम्बर के 'यंग इन्डिया' में महादेव देसाई जी इस प्रकार लिखते हैं:—

"गत सप्ताह अपने नवीन व्रत के सम्बन्ध में महात्मा गांधी जी ने इस व्रत का कारण बतलाया था। यह व्रत उन लड़कों के लिए जिन के कारण किया गया जितना लाभदायक है उतना ही विद्यार्थी मात्र के लिये तथा उनके लिये है जो कि लड़के लड़कियाँ का संरक्षण करते हैं। मैं इस व्रत के महत्व को गान्धी जी के शब्दों में ही संक्षेप से प्रगट करता हूँ।

दिसम्बर की पहली तारीख की प्रातः काल व्रत समाप्त करने से पूर्व उन्होंने लड़कों को अपनी चारपाई के पास बुलाया और निम्न लिखित उपदेश धीरे २ हृदय द्रावक स्वर में कहा:—

'गत मंगलवार को याद करो जिस दिन मैंने व्रत लिया था। मैंने यह काम क्यों किया मेरे लिये तीन मार्ग खुले हुए थे:—

(१) दण्ड विधान—मैं शारीरिक दण्ड का विधान करके सरल मार्ग को ग्रहण कर सकता था प्रायः करके अध्यापक लोग जब अपने शिष्यों के दोषों को पकड़ते हैं तो उन्हें शारीरिक दण्ड देकर यह समझते हैं कि उन्होंने बड़ा उत्तम काम किया है। मैं भी कभी अध्यापक रह चुका हूँ परन्तु अब मुझे इतने काम हैं कि मैं तुम्हें आज कल पढ़ा नहीं सकता तौर अध्यापक के मुझे और कोई चारा न था सिवा इसके कि मैं इस स्वीकृत प्रणाली का परित्याग करूं क्योंकि मुझे अनुभव से यह ज्ञात है कि यह तरीका गलत और हानिकारक है।

(२) उदासीनता—मैं तुम्हें तुम्हारे भाग्य के भरोसे पर छोड़ सकता था। अध्यापक लोग प्रायः ऐसा ही करते हैं उनका यह कथन था लड़के अपना पाठ अच्छा याद करके लावें और जो कुछ बताया जाय उसे बना सकें यही पर्याप्त है। उनके निजी आचार के सम्बन्ध में मुझे क्या करना है? यदि मेरा सम्बन्ध भी हो तो मैं उन पर दृष्टि कैसे रख सक्ता हूं। यह उदासीनता मुझे भाती नहीं।

(३) प्रेम का व्यवहार—तुम्हरा आचरण ही मुझे रक्षणीयनिधि है। इस लिये मुझे चाहिये कि मैं तुम्हारे जीवन में प्रविष्ट होकर, तुम्हारे भावों की तह में घुस कर, तुम्हारी इच्छाओं और मनोद्वेगों को पहिचान कर तुम्हारी गलतियों को तुम्हें सुझाने में और दुराचरण के हटाने में तुम्हारा सहायक बनूं। क्योंकि आन्तरिक शुद्धि ही शिक्षा की सीढ़ी है जिस पर चढ़ना आवश्वक है उसके बाद और बातें स्वयं सीखी जा सक्ती हैं मैंने तुम्हारे मध्य में प्रमाद देखा तो मैं क्या करता

तुम्हें दण्ड देना अयुक्त था किन्तु अध्यापकों में मुख्य होने के कारण मैंने यह व्रत लेकर अपने ऊपर ही दण्ड लेना स्वीकार किया है।

इन शान्त विचार शील दिनों में मैंने बहुत कुछ सीखा है परन्तु तुमने क्या सीखा है? क्या तुम मुझे यह विश्वास दिला सकते होकि तुम अपनी इस ग़लती को फिर नहीं दुहराओगे? तुम फिर ग़लती तो कर सक्ते हो लेकिन याद रखना कि अगर तुमने प्रमाद न छोड़ा तो इस व्रत का असर तुम्हारे ऊपर कुछ न होगा। सचाई ही सब से बढ़ कर उपाय है। किसी भी दशा में झूंठ न बोलो। कुछ भी छिपाओ मत। अपने अध्यापकों और बड़ों को अपना विश्वासपात्र समझो और उन से दिल खोल कर हरऐक बात कहा करो। किसी के प्रति बुरा भाव न रखो। किसी की पीठ पीछे बुराई कभी न करो और सब से बढ़ कर यह बात है कि "अपनी अन्तरात्मा के प्रति सत्यवादी बनो" ताकि तुम किसी के प्रति झूंठे न बनसको। जीवन की छोटी २ सी भी घटनाओं में सत्य का व्यवहार करने में ही पवित्र जीवन का रहस्य है।

तुम ने देखा होगा कि ऐसे समयों में मुझे इस भजन "वैष्णव जन तो उसे कहिये" से आत्मिकबल मिलता है। यह भजन ही मुझे उन्नति करने के लिये काफी है चाहे मैं भगवद्गीता क्यों न भूल जाऊं। परन्तु सच तो यह है कि केवल एक ही वस्तु है जोकि बहुत सहज है परन्तु शायद तुम उसे न समझ सको लेकिन मेरा तो वह पथदर्शक रहा है। वह है यह भाव कि सब परमात्मा है और झूंठ बोलना नास्तिक पन है।"

आशाहै कि सब शिक्षकवर्ग तथा विद्यार्थी इस अमूल्य उपदेश को मनन करके महात्मा जी की शिक्षा से लाभ उठायेंगे और अपने २ शिक्षणालयों में शारीरिक दण्ड के स्थान पर आत्मा पर प्रभाव डाल कर सुधार के सिद्धान्त को वर्तने का यत्न करेंगे।

(२) महात्मा गांधी का उपवास नियम

महात्मा गांधी उपवास का शरीर पर असर विषयके सम्बन्ध में लिखते हुये उपवासके कुछ नियम बतलाते हैं जिन्हें ज्योति के पाठकों के लाभार्थ यहां वर्णन करना उचित है। वह कहते हैं:—एक साधारण मनुष्य की दृष्टि से और शारीरिक बल की रक्षा की दृष्टि से मैं उन लोगों के लिये जो किसी भी कारण से व्रत रखना चाहते हों यह नियम बतलाना चाहता हूं:--

१. व्रत वाले दिन के प्रारम्भ से ही शारीरिक बल और मानसिक शक्तियों की रक्षा करो।

२. उपवास के समय तक खाने का ध्यान भी न करो।

३. जितना पी सको ठंडा पानी पियो चाहे सोडा या निमक डाल कर या वैसे ही लेकिन थोड़ा २ शुरू में पानी को उबाल कर छान कर ठंडा रखना चाहिये निमक और सोडे से घबराओ मत क्योंकि बहुत से पानी में यह चीजें प्रायः घुली हुई रहती हैं

४. प्रतिदिन गर्म पानी से नहाओ।

५. उपवास के दिनों में प्रतिदिन एनीमा करते रहो तो जो गन्द प्रतिदिन मिलेगी उस पर तुम्हें आश्चर्य्य होगा।

६. जहां तक सम्भव हो खुली हवा में सोया करो।

७. निकलते हुये सूर्य्य की धूप में सेंको। धूप और हवा भी पानी की भांति बहुत ही शुद्धि करने वाली हैं।

८. उपवास का ध्यान छोड़कर दूसरी ओर ध्यान लगाओ।

९. चाहे किसी सम्बन्ध में तुमने व्रत रक्खा हो इस अमूल्य समय में सृष्टिकर्ता का ध्यान करो उसका तुम्हारा क्या सम्बन्ध है, उसकी अन्य सृष्टि को देखो तो तुम्हें वह बातें मालूम होंगी जिनका तुम्हें स्वप्न में भी ध्यान न था।

डाक्टर लोगों से क्षमा मांगते हुये अपने अनुभव तथा इसी प्रकार के मित्रों के अनुभव से मैं निः संकोच होकर कहता हूँ कि इन दशाओं में व्रत करोः—

(१) अगर तुम्हें कब्ज हो तो।
(२) अगर तुम में खून की कमी हो तो।
(३) यदि ज्वर हो तो।
(४) यदि अजीर्ण हो तो।
(५) यदि सिरदर्द हो तो।
(६) यदि बाई का दर्द हो तो।
(७) यदि जोड़ों में दर्द हो तो।
(८) यदि तुम्हें क्रोध आया हो या मानसिक व्यथा हो तो।
(९) यदि मन उदास हो तो।
(१०) यदि मन में अत्यन्त आल्हाद हो तो।

ऐसा करने से तुम्हें दवाइयां नहीं खानी पड़ेंगी। केवल तभी खाओ जब तुम्हें भूख लगे जब तुमने भोजन उपार्जन कर लिया हो।

एक प्राचीन पुस्तकालय का आविष्कार

कविराज भूपदेव मुकर्जी कलकत्ता विश्वविद्यालय के लेकचरार हैं वह कलकत्ते के फार्वर्ड नामक पत्र में लिखते हैं कि:—

मैं अपने देशभक्त और शिक्षित भाइयों के सन्मुख एक प्राचीन पुस्तकालय का संक्षिप्त परन्तु रोचक वर्णन रखता हूँ। इस पुस्तकालय में असंख्यात बहु मूल्य और मुश्किल से मिलने वाले ग्रन्थ और हस्तलिपियां हैं। जो भोजपत्र पर लिखे हुये हैं। यह धर्मशास्त्र, दर्शन, आलेख्य विज्ञान, इतिहास, चिकित्सा, नक्षत्रविद्या रेखाओं की परख तथा अन्य कई विषयों पर हैं। यह पुस्तकें भारत की प्राय, सभी भाषाओं में हैं। कुछ ऐसे तो वैदिक काल की मालूम पड़ती हैं। यह विश्वास है कि भारत वर्ष के अन्य किसी पुस्तकालय में ऐसी उपयोगी और अलभ्य पुस्तकें नहीं हैं।

इस पुस्तकालय के मालिक एक डाक्टर सैयद मुहम्मद क़ासिम जागीरदार निजाम हैदराबाद के कुत्ता हस्पताल के अध्यक्ष पत्थर घाटी हैदराबाद निवासी हैं। यह पुस्तकालय बड़ा प्राचीन है और विजयपुर राज्य स्थापित होने के बहुत पूर्व बनाया गया था।

वर्तमान मालिक के पुरखा विजयपुर राज्य के पुरोहित थे और राज्य के मुख्य आमात्य भी रहा करते थे अतः इस पुस्तकालय के रक्षक थे। इन पुस्तकों में से कइयों के विषय बड़े अद्भुत हैं। इन में से कुछ विषय यह हैं:—

(१) मुर्दे को औषधियों में रखने की विधि-इसका वर्णन इतना उत्तम है और इस प्रकार का स्वदेशी है कि यह विश्वास हो जाता है कि मिश्र वासियों ने यह विद्या यहां से सीखी थी।
(२) बेतार बर्की के तार--यह कहा जाता है कि हजारों मील की दूरी पर एक स्थान से दूसरे स्थान पर बातचीत एक ख़ास तरह की बनाई हुई पत्थर की की रकाबियों द्वारा की जाती थी।

(३) रुई उत्पन्न करने की विधि = ऐसे तरीके बताए गए हैं जिन से जिस रंग की रुई चाहो, पैदा करलो।

(४) भू-गर्भ विद्या + ऐसी क्रियाओं का वर्णन है जिनके द्वारा पृथ्वी के तह के भीतर छिपी हुई वस्तुओं का ज्ञान होना सम्भव है ताकि कीमती पत्थरों, धातुओं, छिपे हुए खजाने, धसे हुए शहरों इत्यादि की ठीक जगह का पता लगाना बड़ा सुगम हो।

(५) एक विचित्र शीशा—ऐसी विधियां दी हुई हैं जिन से एक शीशा तैयार करके समुद्र की तह के ऊपर रख कर देखो तो उसके अन्दर की सभी वस्तुएं साफ़ साफ़ दीख पड़ेंगी।

(६) पाले का गिरना—ऐसे तरीके बतलाये गए हैं जिनके द्वारा गर्म देशों में पाला गिराया जा सकता है और सर्द मुल्कों में उसे गिरने से रोका जा सकता है।

(७) बड़े २ पहाड़ों का ढा देना।

(८) पानी की धार को नीचे से ऊंचे पर ले जाना।

(९) आग बिना धातुओं को द्रवीभूत करना

(१०) हजारों वर्षों तक पानी को गर्म रखना इसमें शक नहीं कि इसी प्रकार का कोई तरीका प्राचीन भारतीय इञ्जनीयर लोग बर्तते थे। जब कि दिल्ली और आगरे के मशहूर गर्म पानी के झरने बनाए गए थे। इन्हें आधुनिक बेपरवाह इन्जनीयरों ने जब से नष्ट कर दिया तो उन्हें फिर बना ही न सके।

(११) नीच धातु को सोना और चांदी में परिवर्तित करना यह हमारे लिये नई बात नहीं रही। प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों के लिए यह साधारण सी बात थी! हमारे देश भाइयों को इसके कई तरीके अब भी मालूम हैं। हां, यह अभ्यास में नहीं लाई जाती यह दूसरी बात है।

(१२) कीमती पत्थरों और मोतियों को द्रवीभूत करके उन्हें इच्छानुसार शकल, आकार और रङ्ग में ढालना।

कहा जाता है कि यह पुस्तकालय इतना बड़ा है कि इसकी पुस्तकें सुधार कर रखने और झाड़ने में यदि छै मनुष्य लगें तो महीनों तक का काम है। इसके वर्तमान मालिक के लिए इसकी सूची तैयार कराना भी असम्भव कहा जाता है। यह आश्चर्य की बात है कि इतने बहुमूल्य पुस्तकों का संग्रह इतने दिनों तक एक व्यक्ति का निजी सम्पत्ति बनकर पड़ा रहा।

अन्त में लेखक ने जनता से अपील की है कि भारतीय जनता या भारतीय राज्य कोई इसे खरीद लें वरना विदेशी उठा ले जावेंगे जैसे कि आगे हो चुका है।

संसार के माता पिताओं पर मुकद्दमा।

ले०—प्रो० सांझी राम जी M, Sc,A. [अमरीका]

बच्चों की सारी जिम्मेवारी माता-पिता के ऊपर है। जो बच्चे माता पिता की असावधानी के कारण जीवन-पथ में भटक जाते हैं उनके सर्व-नाश के पाप का बोझ माता-पिता के ऊपर ही है। हमारे देश में इस जिम्मेवारी को नहीं समझा जाता। अमरीका में माता-पिता को बच्चों के जीवन बनाने की जिम्मेवारी समझानेकेअनेक उपाय किये जाते हैं। कुछ साल हुए वहां एक

नाटक खेला गया था जो इस दृष्टि से बड़ा भावपूर्ण था। नाटक के सभी पात्र बच्चे थे। अदालत का खेल रचा गया था। जज, नाजिर, मुन्शी, वकील- मुकदमा करने वाले सभी बच्चे थे। अपराधी माता-पिता थे यह मुकदमा इस प्रकार चलाया गया था।

* * *

* ना ट क *

इस नाटक में सब बच्चे ही सम्मिलित होते हैं। उनमें से एक न्यायाधीश, एक नाजिर; एक मुन्शी; कुछ मुद्दई; कुछ मुद्दाला. कुछ दोनों ओर के गवाह और एक आदर्श म ता का काम करते हैं इस नाटक में पड़ोस के माता पिता को निमन्त्रित किया जाता है। न्यायाधीश न्याय-भवन में एक मञ्च पर कुर्सी लगाकर बैठता है उस के सामने एक कुर्सी लगी होती है जिस पर कुछ कागज और बायबल रक्खी होती है। न्यायाधीश के बांई तरफ; मञ्च के नीचे. नाजिर तथा मुन्शी मेज कुर्सी लगा कर बैठते हैं। दांई तरफ सरकारी वकील बैठता है—उस के सामने उसकी क नूनी पुस्तकों का ढेर लगा होता है। इस वकील के समीप मुद्दाला बैठ जाते हैं मुन्शी साहिब के नजदीक मुद्दालों के सामने मुद्दई लोग पंक्ति लगा कतार बांधकर बैठ जाते हैं।

सब लोग नियत समय पर अपनी २ जगह आकर बैठ जाते हैं। न्यायाधीश सब से कुछ मिनट पीछे आते हैं। उनके आने की सूचना पाकर न्याय-भवन में "न्यायाधीश आ रहे हैं" की घोषणा की जाती है। जब वे भवन में प्रविष्ट होते हैं। तब सब लोग सम्मान पूर्वक शान्ति से खड़े हो जाते हैं और जब तक वे बैठ नहीं जाते तब तक सभी खड़े रहते हैं। अदालत की कार्यवाही निम्न प्रकार से शुरु होती है

* का र्य वा ही *

नाजिर—(मेज़ पर थपथपा कर) सुनो! सुनो !! सुनो !!! अदालत का इन्साफ शुरू होता है।

मुन्शी—सारी दुनिया के बच्चों का मुकद्दमा उनके माता पिता तथा अध्यापकों के विरुद्ध इस अदालत में पेश हुआ है।

जज—क्या मुद्दइयों का वकील इस मुकदमे को पेश करने के लिए तैयार है?

मुद्दइयों का वकील—गरीब परवर! मैं तमाम दुनियां के बच्चों की खातिर इस अदालत में इन्साफ़ के लिये दावा दायर करता हूँ।

जज—आप मुकद्दमा समझाओ और बयान दो।

वकील—मैं दुनियां भर की माताओं, पिताओं और उस्तादों को अपने बच्चों के प्रति असावधानता, ध्यानशून्यता तथा अपने पैतृक-कर्तव्य के निबाहने में असफलता के अपराध का दोषी ठहराता हूँ। हमारे गवाह शहादत में यही कहेंगे।

जज—गवाहों को सामने पेश करो।

(नाज़िर गवाहों को क्रमशः बुलाता है)

पहला गवाह—(लड़का) (जज की तरफ) दीनदयाल! मैं एक अय्याश माता का पुत्र हूँ। मुझे रहने को एक आलीशान मकान, पहनने को उत्तमोत्तम वस्त्र तथा दिल बहलाने को कई प्रकार के शुग़ल मिलते हैं। शरीर का भोजन मेरे सन्मुख हर समय तैयार रहता है परन्तु मेरी आत्मा उचित भोजन न मिलने से भूखी मर रही है। परमात्मा तो केवल नाम ही को हमारे घर में सुना जाता है और बायबल के कभी दर्शन भी नहीं हुए। मैं अपने दुःख अपनी

माता को सुनाने के लिये उसके सन्मुख कभी नहीं जाता क्योंकि जब कभी मैंने उसे अपनी दुःखभरी कहानी सुनाई है, वह उस पर हंस पड़ी है और मखौल करके मुझे शर्मिन्दा करती रही है। मेरा जीवन मुझे शून्य तथा निस्सार मालूम पड़ता है। घर में गोलियें तथा दवाइयें बदबू मार रही हैं क्योंकि मेरी मां अय्याश है।

दूसरा गवाह—जनाबे-आली ! मैं एक धैर्य-हीन माता की सन्तान हूँ। वह हमेशा या तो गुस्से के शिखर पर चढ़ी रहती है या चिन्ता के गढ़े में गिरी रहती है। मुझे मालूम ही नहीं होता कि इन दोनों अवस्थाओं में से बदतर अवस्था कौन सी है? मैं अपने मित्रों को घर भी नहीं ला सकता क्योंकि उनका शोर मेरी माँ को घबराहट पैदा करता है। इसी लिये मुझे घर में कोई आनन्द नहीं मिलता और बाहर आवारागर्दी किया करता हूँ। मैंने सुना है कि धर्म से संसार में शान्ति का सञ्चार होता है। मैं चाहता हूँ कि मेरी माता को भी धर्म नसीब हो क्योंकि वह बेचारी बड़ी अधीर है।

तीसरा गवाह—हजूर ! मेरी माँ उपदेशिका है। वह कमरे में बैठी हमेशा कुछ लिखती रहती है और किसी को नज़दीक नहीं फटकने देती क्योंकि इस से उसके लिखने में बाधा पड़ती है। वह आप तो सभाओं में आने-जाने में मस्त रहती है और मुझे हमेशा नौकरों के सुपुर्द कर जाती है। इस से मुझे अनेक दुष्कर्मों तथा दुर्विचारों का शिकार बनना पड़ता है। उसे ख़बर तक नहीं कि मैं कैसे जीवन बिता रहा हूँ। मेरी मां बहुत पढ़ी हुई है और मालूम होता है कि वह दिमाग़ ही दिमाग़ है, उस में दिल है ही नहीं। तात्पर्य यह है कि मैं बदनसीब हूं क्योंकि मेरी मां उपदेशिका है।

चौथा गवाह—(लड़की) भगवन्! मेरी मां सौदागर है। वह अपने व्यापार में बहुत कामयाब है, इसका मुझे अभिमान है परन्तु मेरे विचार में उसे अपनी लड़कियों से उतनी वाकफ़ीयत नहीं जितनी अपने हिसाब-किताब से है। हमारा तमाम घर एक टाइम-टेबल पर चल रहा है। मुझे कई बार यह अनुभव हुआ है कि मैं भी घर में एक 'टाइम-पीस' ही हूं जिसे एक बार चाबी लगादी तो चौबीस घण्टे बस काम ठीक समय पर होते रहे। अम्मा हर वक्त लेने देने के ख्याल में डूबी रहती हैं और मैं मारे डरके उनके नज़दीक तक नहीं फटक सकती। यदि मैं पास पहुंच जाऊं तो फ़ौरन धमका कर पीछे धकेल देती हैं और कहती हैं—"याद रखो ! मेरे एक मिनट की कीमत एक रुपया है!" मुझे समझ नहीं पड़ता कि धन बच्चों की ख़ातिर है या बच्चे धन की ख़ातिर ! मैं कभी २ उदास तथा निराश हो जाती हूं क्योंकि मेरी माँ एक सौदागर है।

पांचवां गवाह—मेरे माई-बाप ! मैं मातृ-हीन बालिका हूँ। मेरा पिता है, चाची और दादी है। सभी अच्छे स्वभाव के हैं, मेरी माता का रिक्तस्थान पूरा करना चाहते हैं, परन्तु माता का स्थान कौन ले सकता है? घर में द्वैध-शासन बना रहता है। बाप कहता है कि बेशक दुकान जाकर मिठाई खा आओ परन्तु दादी कहती है ख़बरदार ! फिर जाओगी !!! मुझे उन लड़कियों के साथ स्पर्धा होती है जिनकी

माताएं ज़िन्दा हैं। मेरी एक अध्यापिका है जिसके सामने मैं अपने दिल का रोना-रोया चाहती थी परन्तु जब मैंने उस से बात-चीत छेड़ी तो उसने कुछ ख्याल ही नहीं किया। हौसला हार कर मैंने फिर कोशिश ही नहीं की। मैंने यह भी चाहा कि मैं फिर गिर्जे में दाख़िल हो जाऊं। अध्यापिका-साहिबा ने पीछा छुड़ाने के लिये कहा कि तुम अभी बहुत नादान हो [शायद मैं चढ़ावा चढ़ाने को असमर्थ थी]। आज मैं बड़ी हो गई हूँ वह मुझे चाहती है, परन्तु मुझे वहां जाने से स्वाभाविक घृणा उत्पन्न हो गई है क्योंकि अपनी अध्यापिका से मुझे असन्तोष पैदा हो चुका है और वह मेरी माता की रिक्त जगह को पूरा नहीं कर सकती।

छटा गवाह—प्रभो! मैं एक आदर्श माता की पुत्री हूँ। मेरी माँ गिर्जे जाती है, क्लबों में शामिल होती है और हरएक समाज में यथा-शक्ति हिस्सा लेती हुई बड़ी व्यग्र रहती है परन्तु जब कभी मैं उस से मिलना चाहती हूं वह फौरन आ उपस्थित होती है। मैं उस से अपना कोई भेद छुपा कर नहीं रखती क्योंकि मेरी मां मेरी सहेली का काम भी करती है। मुझे अपने दिल का भेद उसे बताने में हमेशा आनन्द मालूम होता है। वह हर समय धर्म का डङ्का तो नहीं बजाती रहती परन्तु फिर भी वह परमात्मा की जोत घर में इस प्रकार जगाये रखती है कि हमें भगवान् की सर्व व्यापकता का सदा ज्ञान रहता है। वह मेरी सहेलियों को कई बार सप्रेम घर में बुलाती है और उन से ऐसे ढंग से बात करती है कि माता के बिना हमें आनन्द ही नहीं आता। हम सब को वह बजाय माता के एक सहेली सी प्रतीत होती हैं। इस में शक नहीं कि वह कभी २ मुझे किसी २ बात में रोक भी देती है परन्तु किसी भले काम में हरगिज़ रुकावट नहीं डालती। बस, आप देख लीजिये कि अगर कल मैं वैसी युवती न बन कर दिखा सकूं जैसी वह मुझे बनाना चाहती है तो उस में उस का कोई दोष न होगा। लेकिन मेरा दृढ़ संकल्प है कि मेरी माँ मुझे जो कुछ बनाना चाहती है, मैं ज़रूर वह बन कर रहूँगी क्योंकि मैं एक आदर्श माता की पुत्री हूँ।

[बयान समाप्त हो चुकने पर]

जज्ज—[मुद्दाअलेहों के वकीलों की तरफ़ देख कर]—तुम ने गवाहों के बयान सुन लिये हैं। क्या तुम्हें अपने अपने पक्ष की सफ़ाई में कुछ कहना है?

मुद्दाअलेहों का वकील—[खड़ा हो कर] पूजनीय देव! इस मुकद्दमे में सब मुद्दाअलेहों के वकील इन अपराधों को स्वीकार करते हैं और आदालत से रहम की अपील करते हैं।

जज्ज—[मुद्दाअलेहों की तरफ़ देखकर] अदालत ने इन इल्ज़ामों को सुना है। तुम ने अपने बच्चों के प्रति असावधानता, ध्यान-शून्यता तथा अपने कर्तव्य के निबाहने में असफलता दिखलायी है इस लिये तुम्हें इन अपराधों का दोषी ठहराया जाता है। सृष्टि कर्ता भगवान् ने तुम्हें इन धर्मों के पालन करने की ज़िम्मेवारी सौंपी है। क्या तुम कोई उपयुक्त कारण दे सकते हो जिस से तुम्हें कानून की पूरी २ सज़ा न दी जाय?

आदर्श माता—प्रतिष्ठित जज्ज साहेब! (आँखों में आँसू भर कर) मैं इन बहिनों के हक में, जो इतनी देर अन्धों की तरह रही हैं और अब जिन की अदालत की कार्यवाही से आँखें खुल गई हैं, अर्ज़ करती हूँ कि

माताओं, पिताओं तथा अध्यापकों को अपने बच्चों के मुख से अपनी अयोग्यता तथा असफलता की कथा सुनने से बढ़ कर और कोई सज़ा नहीं दी जा सकती। इस कारण मैं फिर दरख़ास्त करती हूं कि बच्चों के मुख से जो योग्यता पूर्ण बातें निकली हैं उन की ख़ातिर इन माताओं पर रहम किया जाय।

जज्ज—यह सच है कि बच्चों की महज़ शहादत ही माता-पिताओं के लिये गौरव या शर्म का कारण हो सकती है। गौरव उस अवस्था में यदि वे आगे के लिये समझ जाँय वरना 'लानत' तो कहीं गई ही नहीं। इस लिये हरेक मुल्क के माता, पिता तथा अध्यापक को आज से विदित हो कि बच्चों का पैदाइशी अधिकार, भलीभांति जीवन व्यतीत करने में, मुहब्बत के घूंट पीने में और आनन्द के अवसर उपलब्ध करने में अटूट है।

(बाइबल को खोल कर)

Math. 18: 6 में से पढ़ता हूँ। सुनो, सुप्रीम-कोर्ट का इस पर क्या फ़ैसला है:—

"Whose shall cause one of these little ones that believes on me to stumble, it is profitable for him that a great millstone should be hanged about his neck and that he should be sunk in the depth of the sea."

लेकिन...(एक क्षण चुप रह कर) ..... [सब खड़े हो गये].....यही फ़ैसला यहां देने की ज़रूरत नहीं रही क्योंकि पछतावे तथा क्षमा-याचना की गहराई समुद्र के पानियों की गहरायी से गहरी है लेकिन मैं यह फ़ैसला दिये बग़ैर नहीं रह सकता कि तुम दुनियां के माता-पिता तथा अध्यापकों को इस सच्चाई पर विचार करना चाहिये कि दुनियाँ में सब से बड़ा वस्तु बच्चे की मुहब्बत वा भरोसा है।

[जज्ज बैठ जाता है]

नाज़िर—अदालत बरख़ास्त होती है!

* * *

इस नाटक को पढ़ कर यह स्पष्टतया विदित होता है कि माता-पिता तथा अध्यापक लोग अपनी पदवी से कहीं गिरे हुए हैं। भगवान् ने इन तीनों को अपना काम सुपुर्द किया था परन्तु वे अपनी ज़िम्मेवारी को भूल कर झूठे, पोले ढोल की आवाज़ की तरफ़ खिंचे जा रहे हैं। यह तो नाटक था, परन्तु यदि बालकों में सच मुच समझने वा समझाने की शक्ति होती तो माता-पिता तथा अध्यापक अपनी ऐसी शोचनीय हालत का क्या उत्तर देते? *

अलंकार

* नोट—प्रो० साँझीरामजी बीसवीं सदी का जीवन शास्त्र नामक अप्रकाशित पुस्तक से।

वनिता विनोद

स्त्रीजगत्

गोंडाल में स्त्री शिक्षा

काठिया बाड़ में गोंडाल रियासत ही ने स्त्री शिक्षा में सब से पहिले कदम बढ़ाया है। यहां पर स्त्री शिक्षा का प्रचार करने के लिये अङ्गरेज़ी तीसरी श्रेणी से ऊपर अध्ययन करने वाली प्रत्येक लड़की को राज्य की ओर से क्षात्रवृत्ति मिलती है और जो लड़की मेंट्रीक्यूलेशन पास करे उसे ५००) रुपये इनाम मिलता है।

१९१७ में गांवों में कन्याओं की शिक्षा अनिवार्य्य करदी गई। पाश्चात्य देशों में अनिवार्य्य शिक्षा प्रणाली हैऔर भारत के कई देशी राज्यों में भी है परन्तु यह सौभाग्य केवल गोंडाल राज्य को ही प्राप्त है कि उसने केवल कन्याओं की शिक्षा को अनिवार्य्य बनाया है उनका यह भाव है कि मातायें ही जाति के बच्चे बनाती है अतः उनका उन्नत होना अति आवश्यक है।

भारत वर्ष में स्त्रियों की संख्या

भारतवर्ष में पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों की संख्या कम है किन्तु इस के विपरीत युरोप के देशों में इसका बिल्कुल उलट है। प्रति एक हज़ार पुरुष हो तो स्त्रियों की संख्या भारत में ९४५ ही है जब कि इङ्गलैन्ड और वेल्ज में १०६८ है, और फ्रांस, इटली, और आस्ट्रिया में १०३६ है। शोक जनक बात तो यह है कि यह संख्या दिन पर दिन घट रही है। ईसका कारण यह नहीं है कि यहां लड़कियां कम संख्या में पैदा होती हैं बल्कि यहां युरोप के देशो की अपेक्षा अधिक लड़कियां पैदा होती हैं। केवल एक मात्र कारण यह है कि यहां की लड़कियां १०-२० की और ३०-५० की अवस्था में अधिक मृत्युका ग्रास बनती हैं। भारत की स्त्रियों को इधर ध्यान देना चाहिये।

स्त्रियों के लिये मुफ्त पुस्तकालय

भारतवर्ष में केवल बम्बई में ही म्युनिसिपैल्टी की ओर से स्त्रियों के लिये मुफ्त वाचनालय और पुस्तकालय खोला गया है। यह विचार सब से प्रथम एक देवी के ही मस्तिष्क में आया था वहीं से उन्नत हुआ था। यह देवी मिसेज कृष्णा बाई गुर्जर है जिन्होंने दोवर्ष पूर्व बम्बई की म्युनिसिपल कमेटी के सामने यह प्रस्ताव रक्खा था।

व्यवसाय में भारतीय स्त्रियां।

श्रम जीवी स्त्रियों को गर्भावस्था में प्रसूत होने से कुछ समय पूर्व और कुछ समय पीछे तक मेहनत से बचना चाहिये और इन्हे उन दिनों का वेतन भी मिलना चाहिये यह नियम बनने वाला था किन्तु मिलों के मालिक तथा सर्कार भी इसे पास होने नहीं देरही हैं। चाय बागो में काम करने वाली स्त्रियों को यह अलाउन्स मिलने लगा है। किन्तु मालिक लोग विरोधी हैं। भारत में

बच्चों को अफीम खिलाने की प्रथा है ताकि बच्चा चुपचाप पडा रहे अतः एक वर्ष तक के बच्चों की मृत्यु संख्या भी भयानक है। अर्थात् प्रति सहस्र में ४०० या ६००।

इसके अतिरिक्त उन में शिक्षा छोड़ कर अक्षर ज्ञान भी नहीं है वैसे तो सारे भारत में ही पांच फीसदी भी स्त्रियां पढ़ी नहीं हैं किन्तु श्रम जीवियों में तो सौ में एक भी ऐसी नहीं उन में संगठन भी नहीं है और निरक्षर होने के कारण उनकी अवस्था के उन्नत होने की भी निकट भविष्य में कोई सम्भावना नहीं है।

मुसलमान स्त्रियों में जागृति

मुसलमान स्त्रियों को स्वतन्त्र करने का उपाय चारों ओर होरहा है। ट्यूनिस में एक सभा है जो स्त्रियों को उत्तम शिक्षा देती है उस में एक स्त्री ने बिना बुर्के के प्लेट फार्म पर खड़े होकर स्त्रियों की दुर्दशा का वर्णन किया। तुर्किस्तान और फारस में भी स्त्रियां अपना अधिकार जमा रही हैं। अफगानिस्तान का अमीर भी इस उन्नति में शरीक होना चाहता है और १९१८ में मुसलिम स्त्रियों का सम्मेलन हुआ था जिस में ४०० देवियां फरीदकोट, लाहौर, इलाहाबाद लखनऊ, भूपालादि देशों से एकत्र हुई थीं और स्त्रियों के लिये विश्वविद्यालय की याचना की थी। जनवरी १९२२ में मिश्र देश की राजकुमारी ने वहां की देवियों के सम्बन्ध में एक पुस्तक लिखी थी। उत्तरीय अफ्रीका में भी सर्वत्र ही मुसलमान देवियाँ जागृत होरही हैं।

पूना का सेवा सदन

पूना के सेवा सदन की रिपोर्ट है कि एक हजार से ऊपर लड़कियां और स्त्रियां वहां किसी न किसी प्रकार की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं जिन विषयों की शिक्षा वहां दी जाती हैं उन में से मुख्य २ ये हैं मराठी तथा अङ्गरेजी मराठी, नार्मल ट्रेनिंग, व्यवसाय, फर्स्ट एड, तथा नर्सिंग, दायी गीरी और डाक्टरी इत्यादि आधी के लगभग देवियां विधवा हैं। २५ प्रति शतक विवाहिता देवियां हैं। इस से पता लगता है कि सेवा सदन स्त्री जाति की आवश्यक्ता को कैसे पूर्ण कर रहा है क्योंकि इस प्रकार की संस्था अन्यत्र दूसरी नहीं है।

स्मृति।

माता के आंचल में छिप कर मन्द मन्द मुसकाता था।
पीन पयोधर चूस चूस हिय को हरदम हुलसाता था॥
उसी स्मृति में पड़ कर अब भी स्तन युग शव के चाट रहा।
वीर विश्वविजयी लोगों के गीत गान कर भाट कहा॥

जगदीशचन्द्र शास्त्री 'चन्द्र'

वर्तमान शिक्षा पर एक दृष्टि।

ले०—श्री बलवन्त मिश्र हिन्दी आनर्स।

स समय प्रचलित पाठ्य प्रणाली दो प्रकार की देखी जाती है। एक ऐसी संस्था जहां लड़के या लड़कियां रात दिन पाठशाला ही में अपना समय व्यतीत करते हैं। दूसरे ऐसे स्कूल और कालेज जहाँ लड़के और लड़कियां केवल दिन में निश्चित समय के लिए अध्ययनार्थ जाते हैं माता-पिता अपने बालकों और बालिकाओं को पाठशाला में इसी विचार से भेजते हैं जिस से वे विद्या पढ़ कर अपना और अपने सम्बन्धियों का तथा अन्य लोगों का उपकार कर सकें। अधिकाँश ध्येय यही पाठशाला में भेजने का है। पर इस समय बालक और बालिकाओं को भेज कर और उनकी पढ़ाई समाप्त होने के पश्चात् उनके माता-पिता अपने हृदय में संतोष नहीं पाते बल्कि कुछ घबराहट की बातें उनके हृदय में आ जाती हैं। इसका कारण क्या है? इस विषय पर विचार करने की इच्छा बार बार होती है कि क्या त्रुटि है और किस में त्रुटि है। बालकों में अथवा माता-पिता में। या अध्यापकों में। यह विषय बड़े ही अनुभव और विद्वत्ता पूर्वक प्रतिपादन किया जा सकता है इसके लिए तो कोई विद्वान अध्यापक हो जो पृथिवी की सारी शिक्षा-संस्थाओं में घूम २ कर अनुभव प्राप्त करें तब अपना विचार प्रकट करें तो पढ़ने वालों का कल्याण हो। मेरा अनुभव बहुत ही थोड़ा है विद्वत्ता भी इतनी अधिक नहीं पर थोड़ा सा अनुभव पाठकों के सामने रखता हूँ शायद पसन्द आवे। यहां तीन विषयों पर कुछ लिखना है (१) दण्ड विधान (२) व्यवहार और (३) शिक्षा-पाठ्य प्रणाली।

१-दण्ड विधान पाठशाला में भिन्न भिन्न प्रकृति के विद्यार्थी और कन्यायें आती हैं किसी का संस्कार अच्छा है किसी का बुरा बुरा संस्कार कैसे सुधरेगा इस में तो बड़ी ही कठिनाई है पर आज कल तो अच्छे संस्कार भी पाठशाला में बुरे हो जाते हैं अन्य कारणों के अतिरिक्त अध्यापक और अध्यापिकाओं का बिना विचार और क्रोध में आकर दण्ड देना है। अक्सर पाठ याद करने पर क्रोध में आकर दण्ड देने का समय आता है मेरे अनुभव में क्रोध के समय कभी न दण्ड देना चाहिए इसका असर उलटा पड़ता है न तो अच्छी तरह पाठ ही याद होता है न कुछ! बल्कि विद्यार्थियों का दिल अध्यापक की तरफ़ से ख़राब हो जाता है कोई भी विषय पढ़ाना हो उसमें प्रेम की आवश्यक्ता अधिक है पहले तो वह विषय स्वयं तैयार होने चाहिए जिस पाठ को पढ़ाना हो उस पर खूब विचार करना चाहिए। बच्चों को प्रेम पूर्वक शान्ति के साथ समझाना चाहिए। थोड़ा काम हो थोड़ा पाठ क्यों न पढ़ाया जाय पर वह बिल्कुल पक्का पढ़ाया जाय जल्दी बाजी से नतीजा खराब होगा। मैं तो देखता हूं जितनी सख्ती से बच्चों से पेश आवे उतना ही वह और उछलते कूदते और शोर मचाते हैं। अपना अधिकार दिखाना और लड़ाई करना बकवाद करना अध्यापक

का काम नहीं वह तो प्रेम से लड़कों और लड़कियों को अपने बन्धन में बांधले तब तो बात नहीं सब व्यर्थ! यहाँ पर उन शिष्यों से जिन का संस्कार खराब हो गया है कुछ सख्ती से पेश आना चाहिए जहां तक हो सके थप्पड़बेंत का प्रयोग कम करना चाहिए उनके लिए बात की मार मारनी चाहिए ऐसा करने से उनका सुधार होगा मार खाने से तो बड़े ही धृष्ट हो जाते हैं। और उनका जन्म भर सुधार नहीं होता-

(२) व्यवहार-इसकी चर्चा दण्ड विधान में ही थोड़ी होचुकी पर थोड़ा अनुभव सिद्ध विचार और सामने रखता हूँ। क्लास में बच्चों के साथ प्रेम का व्यवहार मुख्य विषय रखना चाहिए पर शासन और प्रभाव कभी न छोड़ना चाहिए। क्रोध कम करना चाहिए। प्रसन्न मन से क्लास में जाने से समय प्रसन्नता से व्यतीत होगा। पाठशाला से बाहर के लिए हमेशा मित्रता का सम्बन्ध रखना चाहिए हाँ अगर कोई बुरी प्रवृत्ति दिखाई दे तो उस पर शासन-प्रेम-तथा अन्य अन्य उपायों द्वारा उचित राय देनी चाहिए। जिन शिष्यों का घर समीप हो और जिन से सुविधो से मिलसकें उनके माता पिता से मिल कर बच्चे के गुण से उन्हें परिचित कराना उन से सदव्यवहार करना और प्रेम पूर्वक निस्वार्थ भाव से मिलना यह भी एक बड़ा ही अच्छा विषय हो सकता है जहां तक हो सके निष्कपट और निस्वार्थ भाव का व्यवहार ही सफल होगा अब अन्त में पाठ्य प्रणाल पर भी कुछ लिखता हूँ आज कल का कोस देख कर बालकों और अधापकों का मन धैर्य को छोड़े देता है पर धीरज रख कर काम करने से सदा आनन्द होगा। कोई भी विषय हो जैसे हिन्दी ही को लीजिए। हिन्दी पढाने का यही मतलब है कि बच्चों को ज्ञान हर एक प्रकार से हो जाय पत्र लिखना, डिक्टेशन लिखना पद्य कंठस्थ होना, सुन्दर और स्वच्छ लिखना पढ़ना इत्यादि। इन विषयों पर अधिक ध्यान देना चाहिए और पुस्तक की योग्यता छुड़ाकर बालकों में ऐसी शक्ति डालनी चाहिए जो ज़बानी सब बातें प्रकट करसकें। कोई भी विषय हो उसमें पूरी योग्यता रहने से कामयाबी अधिक होगी पर क़ायदा से हमेशा फ़ायदा होगा।

यह तो उन अध्यापकों और विद्यार्थियों के विषय की बात अब थोड़ा सा माता पिता के विषय मे कुछ विचार करना चाहिए जो लड़का समझदार है और होशयार है उसके सामने आपस का व्यवहार बड़े ही अच्छे ढंग से रखना चाहिए। अन्त में मेरी अध्यापकों तथा अध्यापिकाओं से विनीत प्रार्थना है कि शिष्य और शिष्यायों के साथ सदा प्रेम के साथ वर्ताव करें मारपीट और सख्ती का जमाना गया सदा प्रेम से काम लेने में बड़ी हो अच्छी बात है अन्यथा सिवाय कष्ट और दुख के कुछ हाथ नहीं आयेगा यह विषय बडा कठिन है। प्राचीन सभ्यता का संस्मरण करते ही सब बातें सामने दिखाइ देने लगती हैं। इसके लिए सच्चे शिष्य एकलव्य और गुरु द्रोणाचार्य ऐसे शिक्षकों का काम है पर कुछ तो होना चाहिए। भगवान से प्रार्थना है कि अध्यापकों, अध्यापिकाओं का जीवन पवित्र करें और साथ हो शिष्यों की श्रद्धा-शक्ति बढ़ावें। और क्या कभी फिर आज कल के अधिकांश माता पिता अपने बच्चे को एक झंझट समझ कर स्कूल में भेजते हैं जिससे शोर गुल से जी छुटे और घर पर आते ही घबड़ाने लगते हैं। दिनरात पैसे के चक्कर में पड़े रहते हैं यह

बात उन माता पिता के लिए है जिन्हे रुपये पैसे और सामान की कमी नहीं योग्यता भी जिनकी अधिक है पर उन्हें अपने चक्कर से इतनी भी फुरसत नहीं मिलती कि बच्चे से कुछ बात चीत भी कर सकें। मेरी तुच्छ सम्मति में उन्हें कम से कम ऐसा समय निकालना चाहिए जिस में वह अपने बच्चों और लड़कियों का निरीक्षण कर सकें इस से विशेष लाभ की संभावना है। बच्चों को पाठशाला मे भेज देते हैं वे न मालूम क्या करते हैं इसका कुछ भी ध्यान नहीं रखते हाँ परीक्षा मे पास हुआ या फेल इसके लिए अधिक ध्यान रहता है। कुछ लड़के तो अक्सर ऐसे होते हैं जो घर से चलकर पाठशाला के नाम और और विषयों में मन देते हैं जिस से बड़ी ख़राबी होती है। उनके खाने पीने और खेलकूद, मनोरञ्जन सभी बातें में स्वतन्त्रता देनी चाहिए घर का समय विभागा अलग बनाना चाहिए

नारी चरित्र पर पुरुषों का प्रभाव।

ले०—श्रीयुत कृष्णकुमार मिश्र

जिस दिन से भारत ने अपनी आर्थिक और राजनैतिक स्वतन्त्रता खोकर गुलामी मोल ली उसी दिन से उस का सारा आदर्श मानो लुप्त प्रायः हो गया। भारत के सामाजिक नियमों में शिथिलता आ गई। नैतिक पतन होगया इसी तरह धार्मिक रीति रिवाज के रूप में भी ऐसा परिवर्तन हुआ कि वर्तमान धर्म उसी प्राचीन धर्म का रूपान्तर है यह मानने को भी जी नहीं चाहता। हम आज समाज के उन महानुभावों का ध्यान आकर्षित कराना चाहते हैं, जो लोग समाज के हित के लिए ही जी रहे हैं और जिन्हें समाज की दुर्दशा कांटे के समान चुभा करती है।

आइये मित्रों! मिलजुल कर इस बात पर विचार करें कि हमारी समाज जो आज विधवाविवाह रोकने के लिए चिन्तित हो रही है वह क्या उसको रोकने के वास्तविक उपायों की तरफ अग्रसर हो रही है या यों ही भटकाती फिरती है। हम पाठकों को यह बतला देना चाहते हैं कि हम विधवा विवाह के कट्टर विरोधी है और हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि यदि समाज की पवित्रता की रक्षा हो सकती है तो केवल इस को दूर रखने ही से हो सकती है। आज पर्यन्त यह भारतवर्ष उन सती माताओं के ही कारण अपना मस्तक उन्नत रख सका है जिन्होंने सतीत्व के बदले प्राणों की आहुति तक दे दी है। आज भी इस की इस पतित अवस्था में भी यदि इसके पास कोई गौरव की सामिग्री है तो वही एक मात्र भारत जननियों का सतीत्व! परन्तु हम इसी के साथ यह भी मानते हैं कि केवल विधवा विवाह का विरोध अर्थात् सतीत्व की दुहाई ही इस विकराल प्रथा को रोकने के लिये यथेष्ट नहीं। यह सिद्धान्त की बात है कि, यदि समाज वा धर्म में से किसी प्रथा को दूर करना अथवा उसके प्रवेश को रोकना

होंगी। तथा कोई नवीन प्रथा समाज में प्रवेश करानी होगी। तो उस समाज को जनता को बड़े २ स्वार्थ त्याग करने होंगे। तब कहीं सफलता प्राप्त हो सकेगी अन्यथा नहीं। भारत के इतिहास में इसके अगणित प्रमाण आज पर्यन्त अङ्कित हैं। जब बढ़ती हुई हिंसा के विरुद्ध भगवान महावीर तथा बुद्ध देव ने धार्मिक संसार में आवाज़ उठाई तो उन्हें सारे ऐहिक सुखों को तिलांजलि देकर; भिक्षुक वृत्ति धारण करके जीवन व्यतीत करना पड़ा। इसी तरह इसलाम के धार्मिक नेता मुहम्मद साहब ने जब भारत वर्ष में इसलाम धर्म का प्रचार करना चाहा तब उन्हें बड़े २ विरोधी दलों और कटकों का सामना करना पड़ा। बगैर स्वार्थत्याग के संसार में किसी महान कार्य की सिद्धि असम्भव है। हम पूछना चाहते हैं कि क्या हिंदूसमाज की पुरुष जनता जो अपनी माताओं और बहिनों के उस आदर्श चरित्र को निष्कलंक और अक्षय रखने के लिये व्यग्र है, कुछ भी स्वार्थत्याग करने को तैयार है? यदि उनमें थोड़ासा भी स्वार्थ त्याग का भाव नहीं है तो भारत की हिंदू नारियों से उन्हें किसी प्रकार के स्वार्थत्याग की कामना करने का कोई अधिकार नहीं है परन्तु यदि पुरुष समाज अपना थोड़ा सा भी स्वार्थत्याग करने के लिये प्रस्तुत हो जाय तो हमारी माताओं और बहिनों को किसी प्रकार के स्वार्थत्याग का पाठ पढ़ाने की आवश्यकता न होगी। हिन्दूनारी जाति के रक्त में स्वार्थ त्याग का बीज बोया हुआ है, उसे केवल सींचने की आवश्यकता है। तपस्या और स्वार्थत्याग की इच्छा आज भी बड़े २ ऋषि मुनियों और यशस्वी राजाओं की गृहदेवियों के पवित्र चरित्र से मिल सकती है।

हाय! आज भी अनेक हिंदू रमणियां घर में पाव भर अन्न के होते हुए भी उसकी रोटियां बनाकर पति को खिला देती हैं और पति के यह पूछने पर कि तुम ने खा लिया? मुस्कराते हुए मुख से उत्तर देती हैं कि मैं बहुत पहिले ही खा चुकी।' मुख कुम्हलाया हुआ मालूम न हो, कहीं स्वामी सच्ची बात जान लेंगे तो उन्हें कष्ट होगा। इसी लिए सारी बातें छिपाई जाती हैं, किसी दूसरे कारण से नहीं। क्या अभी कोई इस संसार की पुरुष-जाति स्वार्थत्याग में हिंदू नारि जाति के सामने सिर ऊंचा कर सकती है? परन्तु मित्रो! हिंदू-रमणियों के मनः समय की महिमा का अन्त यहीं नहीं होता बल्कि उनके अगाध हृदय की पवित्र भाव-तरंगों को गिनने के लिए हमें और एक सीढ़ी ऊंचा चढ़ना होगा।

आओ पाठको! हम एक बार ब्रह्मचारिणी बालविधवाओं के परमपवित्र, आदर्श एवं निर्मल चरित्र पर भी दृष्टि डालें। किन्तु सावधान! तुम्हारी मलिन दृष्टि कहीं उनके उज्ज्वल सतीत्व-तेज को देखने में असमर्थ न हो। इस लिये साथ ही साथ पुरुष जाति के कुत्सित चरित्रों पर भी दृष्टि डालते जावो। हाय! आज भी ४०-४०, ५०-५० और ६०-६० वर्ष के बूढ़े अपनी विषय वासनाओं की क्रूरता-वेदी पर देश की १२-१२, १४-१४ वर्ष की सुकुमार बालिकाओं का (अपनी राक्षसी लालसा को चरितार्थ करने के लिए) बलिदान कर देते हैं। वे बेचारी अबोध कन्यायें, सब कुछ जानते और समझते हुये भी, चूं तक नहीं करतीं और अपने सारे सुखों की आहुति उस बूढ़े की (जिस की लकड़ियां श्मशान में पहुंच चुकी हैं) कुवासना ज्वाला में देदेती हैं।

और वे ही बूढ़े उन बालिकाओं को अपने मरण के बाद ब्रह्मचारिणी रहने का उपदेश देकर सुख स्वप्न देखते हैं। बलिहारी ऐसे उपदेशकों की आप तो मृत्यु के मुख में प्रवेश करते २ भी अपनी राक्षसी मनोवृत्तियों का दमन नहीं कर सकते परन्तु एक नव-योवना अथवा अल्पवयस्का बालिका से जिस की काम वासना की तृप्ति आज पर्यन्त नहीं हुई हैं, पातिव्रत धर्म रक्षा की प्रत्याशा करते हैं। बलिहारी आप की बुद्धि को पवित्र नारि जाति के सन्मुख कैसा घृणित आदर्श है। पन्द्रह वर्ष की विधवा पुत्र बधू तो बाहर सोती और रात भर चिन्ता तथा दुःख से उद्विग्न रहती हैं और साठवर्ष के ससुर जी १२ और १४ वर्ष की नवविवाहिता बधू के साथ रङ्ग महल में सुहाग की रात मनाते रहते हैं। हायरे! स्वार्थी पुरुष जाति! यदि तेरा अधःपतन न होगा तो किस का होगा? जिस दिन स्त्री के पतिने स्वर्ग यात्रा की, उसी दिन से हिन्दू नारियों की कठिन तपस्या का आरम्भ हुआ। बेचारी बलिका ने उसी दिन से सारे ऐहिक सुखों को तिलांजलि देदी। सारे शृङ्गारों को मृतक की खाल की भांति उतार कर फेंक दिया। सारे स्वादिष्ट भोजनों का उपभोग उसी समय से छूट गया! केवल स्वादिष्ट भोजन ही क्यों, ईश्वर दत्त पांचों इन्द्रियों के सारे भोग विलासों की भेंट चढ़ा दी गई। एक मामूली सी फटी साड़ी में ही जीवन व्यतीत करने का सङ्कल्प कर लिया गया। हायरी क्रूर वृत्ति पुरुष जाति! कैसा भीषण तेरा व्यापार है। बंगला के प्रसिद्ध नाटक रचियता श्री द्विजेन्द्र लाल राय ने सत्य लिखा है कि यदि शास्त्रों की रचना का भार स्त्रियों पर होता तो आज धार्मिक संसार में एक विचित्र ही परिवर्तन दिखाई पड़ता। इस में तो सन्देह नहीं कि कहीं कहीं हिन्दू शास्त्रों में पुरुषों को बहु विवाह की आज्ञा दी गई हुई पाई जाती है। शायद इस समय इस विषय पर टीका टिप्पणी करना धर्म विरुद्ध समझा जाय। इस लिये हम यहां केवल यही कहेंगे कि जो पुरुष जाति १२ और १४ वर्ष की अक्षत योनि विधवा बालिकाओं को आजन्म ब्रह्मचारिणी रहने का उपदेश दे सकते हैं वह स्वयं ब्रह्मचर्य व्रत क्यों नहीं ग्रहण कर सकते? प्रकृति इस बात को बतलाती है कि मनुष्य के सामने जैसा आदर्श रखा जायगा उसके हृदय में वैसा ही भाव पैदा होगा। जब पुरुष जाति नारी जाति के सामने ब्रह्मचर्य्य का उच्च आदर्श उपस्थित नहीं कर सकता तब स्त्रियों से कठिन ब्रह्मचर्य्य पालन की आशा करने का उसे अधिकार ही क्या है?

मूर्खता।

ले०-श्रीयुत रामचन्द्रसिंह हेडमास्टर स्टेट स्कूल नोहर।

शाम का समय था। उधर भगवान भास्कर दिन भर के कठिन परिश्रम के पश्चात् पच्छिम दिशा में विश्राम की तैय्यारी कर रहे थे, इधर वैद्य जी पसीने से लथपथ औषधालय को वापिस आरहे थे, आधा मार्ग भी नहीं तय किये थे कि एक युवक ने लपक कर कहा-"जेयराम जी की वैद्य जी किधर से आगमन हो रहा है? वैद्य जी (घनारसी

रेशमी चादर को सम्भालते हुए) "क्या कहें भाई सांस लेने को भी फुर्सत नहीं है। आजकल बीमारियों के मारे नाक में दम है।

आठों पहर झमेला लगा रहता है।

युवक ने मुसकराते हुएकहा--"तब तो खूब पौबारह होती होगी?" वैद्य जी ने झेपते हुए कहा—"ना, भाई मैं तो यह काम पुण्यार्थ करता हूं। मुझे भला रूपयों पैसों से क्या काम, पर हाँ, यदि चाहूं तो इन्हें राह के कंकड़ों सा इकट्ठा कर सकता हूँ।

इसके पश्चात् वैद्यजी और भी कितने राग आलाप गये जिसका अनुभव प्रत्येक पाठक पाठिकाओं को होगा जिन्हें ऐसे वैद्य-भूषणोंसे वार्तालाप करने का संयोग हुआ होगा पर युवक भी एक काइयां था, और साथ ही साथ वैद्य जी के लड़कपन का सहपाठी। ताना मारते हुए बोला—"भाई, मैं तो काशी में रह भाड़ ही झोंकता रहा यह तो तुम्हें मालूम ही है कि एड़ी का पसीना सिर कर हिन्दी मिडिल पास किया था इसके बाद दश साल तक हजारों रुपये और सब से बढ़ कर तन्दुरस्ती जो हजार नियामत है-का स्वाहा कर बी० ए० किया। पर आज कौडी २ के लाले पड़े हुए हैं। तुम जो मिडिल में लगातार तीन साल तक फेल हुए। सिर रगड़ते २ मर जाते थे पर रेखा गणित की एक शकल भी याद न होती थी। आज अमन चैन की बंशी बजाते हो, रुपया पैसा कंकड़ों सा इकट्ठा कर सकते हो। इसे मैं समयकी बलिहारी न कहूँतो क्या कहूं।

वैद्य जी पानी २ हो गये क्योंकि इस समय कुछ ग्रामीण इकट्ठा हो गये थे "मिडल में तीन साल तक लगातार फेल हुए। सिर रगड़ते २ मर जाते थे पर एक शक्ल भी याद न होती थी। ये वाक्य बार २ इनके स्मृत सागर मे प्रति बिम्बित हो जाते थे और हजार बिच्छूओं के डङ्क से भी अधिक पीड़ा पहुंचाते थे वैद्य जी ग्रामीण बक वादी पण्डितों सा झेपने वाले जीव न थे। कड़क कर बोले-"जनाब, कोरे बी०ए०,एम० ए० करने से क्या होता है। कुछ आत्मिक ज्ञान और सांसारिक अनुभव भी होना चाहिये आप इतने दिन तकमग़जपच्ची करते रहे तो क्या मैं हाथ पर हाथ धरे चुपचाप बैठा रहा? संसार के कोने २ छान डाले। हिमालय की तराई में जाकर बड़े २ साधु महात्माओं का दर्शन किया। उनसे जड़ी बूंटी ली। स्वयं योगसाधन का अभ्यास किया।

इसके सिवाय वैद्यक की पुस्तकों का अध्ययन कर वैद्यभूषण वैद्यशास्त्री की उपाधि तथा और भी कितने से होमियो पैथिक के सार्टीफिकेट प्राप्त किये। तब कहीं इस योग्य हुआ हूँ कि अब कुछ समाज की सेवा कर सकता हूँ।" युवक ने मुस्कराते हुए कहा-"क्या कहना है, वैद्यभूषण जी। आप के योग्य और वैद्यक का अनुपम संमिश्रण तो सोना में सुगन्धि वाली उक्ति चरितार्थ करता है। इच्छा होती हैं, कि इस पन्चमेल मिठाई का मैं भी रसास्वादन करूं।

आम सड़क पर इस प्रकार की छेड़ छाड़ से वैद्य जी के हृदय में गहरी चोट लगी। प्रतिरोधकी ज्वाला हृदयमें भभकउठी मन ही मन यह कहते हुए औषधालय का रास्ता लिया-"बच्चू, हाथ लगे तो भूंज डालूंगा कच्चे ही खा डालूंगा। बी० ए० करलेने से जमीन पर पैर नहीं पड़ता है।"

(२)

भगवान् भास्कर का पदार्पण हो गया है। उनकी किरणें पेड़ पहाड़ खंदक खाई नदी नाले सब जगह पहुंच गई हैं नहीं पहुंची हैं तो केवल एक मकान के अन्दर जिसकी चार दिवारियां हिमाचल की श्रेणियां सी इन्हें रोके हुई हैं और जिसमें एक युवती अपने नव जात शिशु को गोद में लिये मन ही मन देवी-दुर्गा को इस प्रकार मना रही है-"भगवान्, यदि इस बार हमारा लाल निरोग हो जायगा तो मैं सत्यनारायण की कथा सुनूंगी। काली को खसी चढ़ाऊंगी ब्राह्मणों को खिलाऊंगी। हरि हर क्षेत्र और भृगुक्षेत्र पैदल जा कर जल चढ़ाऊंगी

इसी समय सास ने आकर कहा-"बहू, देखती नहीं, नव युवक बाबू डाक्टर बाबू के साथ खड़े हुए हैं। और तुमने अब तक केवाड़ भी नहीं खोला हैं।

बहू ने झटपट किवाड़ खोली और गठरी सी बन एक कोने में दबक गई। डाक्टर साहब ने आकर देखा कि चारपाई पड़ी है। जिसके एक पार्श्व में जूठे बर्तन पड़े हैं जिनसे चावल के दाने गणेश वाहनों की कृपा से इधर उधर बिखरे पड़े हैं और दूसरे पार्श्व में दही की हंडियां पड़ी हुई हैं जिनमें मक्खियां भिनभिना रही हैं। किवाड़ के पल्ले तले सात दिन का बहारा हुआ कूड़ाकर्कट पड़ा हुआ है और नवजात शिशु एक मैले कुचैले वस्त्र पर पड़ा हुआ जीवन की शेष घड़ियां गिन रहा है। उसकी आंखे कह रहीं हैं—"महिला समाज, जिस निर्दयता जेहालत से तुम लोग हमें मार रही हो उसका प्रायश्चित शास्त्र में कहीं नहीं है। यदि तुमने पालन पोषण की बुद्धि और शक्ति नहीं है तो हमें व्यर्थ क्यों उत्पन्न करती हो।"

नवयुवक बाबूने बालक को गोदमें उठाया। डाक्टर साहेब ने देख भालकर कहा—"लड़के का दस्त कितने दिन से बन्द है?"

सास ने घूंघट की ओट से कहा—"बालक तो दिन भर हगा ही करता था। परसों वैद्य जी को बुलवाया था उन्होंने एक ऐसी दवाई दी है कि कल से इसका हगना बिलकुल बन्द है बच्चा खूब भलाचंगा है, दिन भर चुपचाप सोया रहता है। हां बीच में कभी२ चिहुक पड़ता है तो आंखे तन जाती हैं यही एक डर की बात है।"

डाक्टर साहब ने नव युवक बाबू की ओर देख कर कहा-"लड़के कुछ गटरपटर के साथ अफीम दे दी गई है। दशा शोचनीय है। अब केवल एक ही उपाय है कि यन्त्र के द्वारा इसका पैखाना निकाला जाय नवयुवक ने कहा-"हम भला क्या कह सकते हैं? आप जैसा उचित समझे करें।"

डाक्टर साहेब ज्योंही अपना यन्त्र तन्त्र ठीक कर काम करने को उतारू हुए त्यों ही सास ने नाक भौं चढ़ाकर कहा-"आज तक तो ऐसा कभी नहीं हुआ है। मेरे ही घर नया काम क्यों शुरू होगा। सारा गांव तो पड़ा ही है।"

अड़ोस पड़ोस की स्त्रियों ने भी सास की हां में हां मिलाई उधर गठरी ने भी पांव फैलाये और नवयुवक बाबू की गोद से बालक को छीन कोने में जा फिर दबक लगाई डाक्टर और नवयुवक बाबू ने लाख समझाया पर किसी के हृदय में एक न

समाया सब ओर से आवाज़ आई "ऐसा नहीं हो सकता।"

हियाहठ प्रसिद्ध है। भला इनके सामने किस की चल सकती है। युवक बाबू की एक न चली। उनकी आशा लता पर तुषार पड़ गया। एक बार तो मन में आया कि बलात्कार से सारा काम कर दिया जाय, पर फिर मन में यह शङ्का हुई-"यदि तीन तेरह हुआ तो फिर कौन जिम्मेवार होगा तू तो मित्र के नाते सारा काम कर रहा है तेरा अपना घर भी तो नहीं है। लाचार हो कर कहा-"डाक्टर साहेब, और कोई उपाय कीजिये।"

डाक्टर साहेब एक अनुभवी आदमी थे। यह काम करते २ केश पक गये थे। दवाई देते हुए बोले-"वक्त पर दी जायगी तो यह भी रंगत लायगी। आगे हरि-इच्छा।"

डाक्टर साहेब को गये अभी दश मिनट भी नहीं हुए थे कि वैद्यराज जी अंग्रेजी फैशन के कोट पहने और, हाथ में सिर्जापुरी बांस की छड़ी लिये आँगन में आधमके देखते ही स्त्रियों ने मधुमक्खियों की तरह चारो ओर से घेर लिया। सास ने अपनी राम कहानी आद्योपान्त व्यंग और ओजस्वी भाषा मेंपरतंत्र देश के व्याख्यान दाता सदृश्य सुना डाली। वैद्यजी ने शिकार फंसा हुआ जान कर बड़े हाव भाव से कहना प्रारम्भ किया "मैंने तो अभी मोहनिया की मां से सुना। दौड़ा हुआ आया कि चल कर बच्चू को आड़े हाथ लूं। पर भाग्य अच्छे थे कि बच गये भला इनके पास सिवाय कुनैन टिंचरायडिंग और कुछ चमक दमक औज़ार के और रक्खा ही क्या है। कोई बिमार पड़ता है कुनैन की गोली देदेते हैं। किसी को चोट लगती है टिंचरायडिंग लेप देते हैं। किसी को फोड़ा फूंसी निकलती है चीड़ फाड़ कर देते हैं। यह भी सब अपनी करनी नहीं हैं। दूसरों के हाथ शिकार होवे तो दुनियाँ ही करले"।

एक स्त्री जो वैद्य जी की प्रचारिका थी, बोली-"और तो और नवयुवक बाबू के सिर पर न जाने कौनसा भूत सवार हुआ है कि दूसरे के घर में दखल देते फिरते हैं"।

वैद्य-"तुम लोगों को मालूम नहीं है। नवयुवक बाबू हम से द्वेष करते हैं। जहां पर काम शुरू करते हैं वहीं वे अड़ंगा लगाते हैं। यश के लिये देशोपकार का डींग हांकते हैं। बिना गुण किसी को पूछ तांछ होने लगे तो "गुण न हेरायो, गुणग्राही हेरायो है" वाली उक्ति चरितार्थ होजाय। देखो तो भला, लड़का कैसे टुकर २ ताकता है। इस पर तुर्रा, यह कि यंत्र तंत्र द्वारा दस्त निकाला जाय। राम, राम, ये कलयुगी पाखंडी तो धर्म कर्म सब डुबोना चाहते हैं वैद्य जी। इस प्रकार के बात जाल में फांस कर रफूचक्कर हुए।

अबोध बालक ने एक आह भरी, जो घट घट वासी परमात्मा के सिवाय किसी के समझ में न आई।

(४)

आधीरात का समय है। झिम २ बून्दे पड़ रही हैं। प्रकृति प्रसुप्ता है संसार के प्राणीमात्र निद्रादेवी की विश्राममयी अंकस्थली में विश्राम कर रहे हैं पर एक महिला जिस की अवस्था ढल चली है पांव बढ़ाती हुई चली जारही है। चलते २ एक हवेली के द्वार पर ठहर जाती है और पुकारने लगती

है-"ओ वैद्य जी-ओ वैद्य जी, अन्दर से एक नौकर ने आवाज़ दी-कौन है री कौन"?

महिला—"मैं हूँ।

नौकर—"कौन? रमो की महतारी"।

महिला—"हां"।

नौकर—"अरी, एसो अन्धेरी रात में और इस समय कैसे आई है?

महिला—"अरे हमारे लाल का बुरा हाल है। वैद्यजी को जरा जगादे"।

वैद्यजी ने धीरे से कहा—"ओ, रघुवा२, कहदे कि वैद्य जी कल शाम से कहीं रोगी को देखने गये हैं। कल सुबह तक आ जायेंगे"।

महिला सुनते ही सन्न होगई। उसके छाती पर सांप रेंगने लगा। आशा रूपी घड़ा निराशा रूपी सागर में डूबने उतराने लगा। कहीं आस अवलम्बन न देखकर गिरते पड़ते नवयुवक बाबू के घर आई और आंसू बहाते हुए बच्चे की दीन दशा कहने लगी। युवक की आंखों में आंसू छल छला आये और चुप चाप बुढ़िया के पीछे २ होलिये। अभी घर के दरवाजे पर भी नहीं पहुंचे थे कि अन्दर से एक साथ ही रोने की आवाज आई जो बच्चे के प्राणान्त होने की सूचना थी।

महिला मूर्छित हो जमीन पर गिरपड़ी। युवक पक्षा घात के मारे सा जहां का तहां ही खड़ा रह गया।

इस प्रकार मां का कलेजा पति पत्नी के मधुर मिलन का फल, राष्ट्र का भावी सुपुत्र मूर्खता की वेदी पर बलिदान होगया। पर यह मूर्खता किस की थी। इसका निर्णय विज्ञ पाठक पाठिकायें स्वयं कर।

पुत्री शिक्षा तथा माताओं के कर्तव्य।

ले०—श्रीयुत पुष्पावती देवी।

श्लोक—

माता शत्रु पिता बैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्ये बको यथा॥

बहनों पाठिकाओं मैंने पिछले अंक में 'धर्म पर विश्वास' विषय पर कुछ विचार प्रकट किये थे आशा है आपने उस से कुछ लाभ उठाया होगा। अब मैं आपका ध्यान पुत्री शिक्षा तथा माताओं के कर्तव्य की ओर दिलाना चाहती हूँ। आशा है इस से कुछ शिक्षा प्राप्त कर मेरे परिश्रम को सफल करेगी। आजकल भारतवर्ष में चारों ओर देशोन्नति के लिये हलचल मची हुई है अनेक सभा सोसायटियें हो रही हैं देश हित चिन्तक बड़े २ व्याख्यान दाताओं के देश सुधार के लिये बड़े जोर व शोर से व्याख्यान होते हैं। यद्यपि अपनी बुद्धि अनुसार सब ही इस भारत की अशान्ति

को शान्त करना चाहते हैं। कोई स्वदेशी के प्रचार में लीन है कोई एकता की डोरी से जकड़ने में और कोई चरखा कातने में भारतोन्नति समझते हैं यह सब विषय अवश्य ही अत्यन्त लाभप्रद तथा उन्नति के अंग प्रत्यंग हैं तथापि इन सब विचारों का मूल इन से भी बढ़ कर उन्नति का मार्ग पुत्री शिक्षा है जिस के बिना पूर्ण उन्नति होना कठिन ही नहीं वरन् एक प्रकार से असंभव सा है। क्योंकि देश की सभ्यता का पता स्त्रियों की योग्यता से लग जाताहै इस लिये पहिले कन्याओं को अखंड ब्रह्मचर्य्य विद्या धर्म साहस धैर्य्य शीलता व गम्भीरता का केन्द्र बनाओ पुत्री शिक्षा की जड़ स्त्री शिक्षा है क्योंकि होनहार व योग्य सन्तान का बनाना शिक्षावती माता के ही हाथ में है भारतवर्ष में ऐसी सन्तान की आवश्यक्ता है जो धर्म प्रचार में निर्भय तथा साहसी होकर आगे कदम बढ़ाती चली जाय और यह सब आप ही पर निर्भर है। आदि काल से यही नियम चला आ रहा है कि जिस देश की स्त्रियें उपरोक्त गुणों से विभूषित हैं उन की सन्तान अपनी मातृभूमि तथा धर्म पर सर्वस्व अर्पण कर देती है।

पहिले इस भारत भूमि पर भी ऐसी ही देवियां शोभित थीं जो अपने प्रिय धर्म व देश पर अपनी आत्मा के टूकड़ों को न्योछावर कर देती थीं। उनकी सन्तान भी धर्म व मातृ भूमि पर तन, मन धन अर्पण करना अपना कर्तव्य समझती थी शोक है कि आज उन्हीं की सन्तति के उपरोक्त गुण शून्य होने से भारत रसातल को चला गया है। वह भारत माता की सशिक्षता देवियां अब कहां लोप हो गई जिनके पुत्रों का मान देश देशान्तरों में होता था जिनका नाम लेने से अब भी हृदय गदगद हो जाता है। अब गृह लक्ष्मियों के हृदय में अविद्या-अंधकार ने डेरा डाला है। जब तक यह अविद्या रूपी निद्रा को न त्यागेंगी तब तक भारत का उन्नति शिखर पर पहुंचना असम्भव ही है।

उस दयालु जगदीश्वर ने हम स्त्री जाति पर फिर भी हमारी दुर्दशा देख दया की कि ऋषी दयानन्द जैसे परम योगी राज को हमारे सुधार के लिये भेजा जिस महर्षि की कृपा से आज हमको स्थान २ पर कन्या पाठशाला व कन्या गुरुकुल दृष्टिगोचर होते हैं जिन में पुत्री शिक्षा का व धार्मिकता का अति उत्तमता से प्रचार हो रहा है। मगर मातायें! आह! उसी घोर निद्रा में सो रही हैं उन की तनिक भी निद्रा भंग न हुई हमारी बहुतसी परोपकारिणी बहिनें तथा कतिपय भद्रपुरुष अपना तन मन धन विद्यामें अर्पण कर रहे हैं पाठशालायें खुलवाते हैं अध्यापिकायें रक्खी जाती हैं। परन्तु आप उसमें बाधा डालती हैं पूरी शिक्षा प्राप्त नहीं होने पाती कि उनका पढ़ाना बन्द कर देती हैं।

आपका कर्तव्य तो यह है कि आप भी अवकाशानुसार उसे में कुछ भाग लो व पुत्रियों का उत्साह बढ़ावो। न कि उसका जड़ काटने पर उतारू हो होओ जो स्त्रियें अपने धर्म की देश की बच्चों की रक्षा नहीं कर सक्ती उनसे उन्नति की क्या आशा की जाय वह तो अपना घर तक नष्ट करने पर कदम रखे हुए हैं फिर कोई गुरू या आचार्य आपके घरों को कदापि नहीं बना सक्ते हैं।

आप कहेंगी कि यह क्या कह रही है हम अपना घर क्यों नष्ट करने लगे। परन्तु आप ध्यान से देखिये मैं सच कह रही हूं

कि आप घर व देश दोनों को सन्तान के साथ २ नष्ट कर रही हैं। वह किस तरह नष्ट होते हैं सुनिये—

आप अपनी कन्याओं को जब वह ६ या ७ वर्ष की हुई तब पाठशाला भेजकर ही अपने कर्तव्य को इतिश्री समझ लेती हो फिर आपको उनका जीवन धार्मिक या विदुषी बनाने की कोई चिंता नहीं होती। यह चिंता किसे होती है उन्हें जो बहिनें धर्मात्मा व परोपकारिणी होती हैं और इन्हीं की शिक्षा में अपना जीवन अर्पण कर देना मुख्य ध्येय समझती हैं। अब भी यह पवित्र भूमि ऐसी गुणानुरक्त बहिनों से खाली नहीं है। परन्तु प्रतिशत चार बहिनें ही ऐसी होती हैं जो अपना तन मन धन धर्म और परोपकार एवं विद्या में लगादें यदि आप इसका आदर्श देखना चाहें तो आदर्श रूप बदायूं की आर्य्य कन्या संस्कृत पाठशाला पर दृष्टि डालिये और देखिये कि इसके साथ स्वर्ग वासी मुं० शकटसिंह जी ने क्या २ कष्ट सहन नहीं किये। इसी की सेवा में तन मन धन सब कुछ अर्पण कर गये। स्वयं तो स्वर्गवासी हुए परन्तु सदैव के लिये आर्य्य कन्याओं को अति सुशिक्षित बनाने का पूर्ण प्रबन्ध कर गये जिसका प्रबन्ध उनकी परम प्रिय धर्म पत्नी धर्म रूपा श्री मती पार्वती देवी जी अति उत्तमता से चला रही हैं इस पाठशाला में इस समय १०४ कन्याऐं शिक्षा प्राप्त कर रहीं हैं। यहां पर धार्मिक शिक्षा की ओर अधिक ध्यान दिया जाता है और बड़ी २ आवश्यक परिक्षायें विद्या विनोदनी, विदुषी आदि पास कराई जाती हैं जिन से कि गृहस्थिके कार्यों में भी पूर्ण योग्यता हो जाती है।

आप अपनी दशा को देखिये कि यदि आपके प्रति वर्ष १ बच्चा उत्पन्न होता है तो ५ वर्ष में ५ बच्चे होजाते हैं अब आप को उनके पालन पोषण से तनिक भी अवकाश नहीं मिलता और आप यथोचित पालन न कर घबरा उठती हैं। यह दृश्य मैंने अपनी आंखों से देखा है कि एक स्त्री के प्रतिवर्ष बच्चा होने के कारण ७ वर्ष में ७ बच्चे थे और सबही अनसमझ छोटे २ जब कभी मैं उस के गृह जाती थी तो देखती थी कि कोई खाना मांगता है कोई पानी चाहता है कोई दूध के के लिये रोरहा है तो कोई गोदी के लिये ही बिलख रहा है। कोई पाखाने जाने को खींच रहा है कि इधर दो। बच्चे आपस में किसी वस्तु पर लड़ते झगड़ते हैं यहां तक कि बेचारी माता को इन के कारण भोजन करने तक का भी होश नहीं मिलता। तब घबरा कर कहती थी कि हे ईश्वर! तू इन में से किसी को उठाले तू मुझे ही क्यों दिये चला जाता है जिसे चाहिये उसे दे मैं ऐसी सन्तान से बड़ी दुखी हूं।

आप समझ गई होंगी कि भारत वर्ष में बहुत सी माताओं की क्या दशा है जो अपने बच्चों से दुखी हो कहती है कि अरे कम्बख्तों जरा बाहर ही निकल जाओ किसी तरह मेरा पीछा तो छोड़ो। अब इस का निर्णय मैं आप ही पर छोड़ती हूं कि इस में दोष किस का है क्यों कि मुझे कुछ और भी कहना है। अस्तु,

जब आप ४-६ बच्चों से ही घबरा जाती हैं तो जिस माता की गोद में १०४ कन्यायें खेलती हैं उन को क्या दशा होगी। उन्हें तो एक सेकेन्ड भी सुख न मिलता होगा, परन्तु नहीं आप देखिये कि वह किस उत्तमता से उसका पालन व

शिक्षा कर रही हैं । यद्यपि बहुत कन्यायें ४-५ वर्ष तक की हैं परन्तु कभी कोई कन्या न लड़ती है न झगड़ती है वरन् एक दूसरे की संगिनी व परस्पर प्रेम सहित रहती हैं फिर भी बहुत सी बातें ऐसी हैं कि जो उपरोक्त श्रीमती जी की वृद्धावस्था में कष्ट दायक हैं परन्तु वह धैर्य्य के साथ धर्मोन्नति के लिये सब कष्ट सहन कर उनकी रक्षा व शिक्षा में तन, मन धन से तत्पर हैं यह निस्वार्थ भाव से कन्याओं पर निरन्तर प्रेम करती हैं जिसके परिणाम में कन्यायें भी इन्हें माता से अधिक पूज्य मानती व प्रेम करती हैं ।

अब मैं आपका ध्यान दूसरी ओर लगाना चाहती हूं आप पाठशाला से साधारण सी परीक्षा पास करने पर ही पुत्री को उठा लेती हैं उनकी पूरी शिक्षा नहीं होने पाती कि उनके विवाह की चिन्ता आ घेरती है यह क्यों ? इस लिये कि आप अपने फ़र्ज़ से अदा होना चाहती हैं । परन्तु क्या यह उचित है कि जो रसोई २ घंटे में होती है उसे अत्यन्त आवश्यकीय कार्य के कारण १ घंटे में ही कच्ची बना कर रखदें क्या कभी आपने ऐसा किया है ? यदि नहीं, तो जब आप इस छोटे से कार्य में असावधानी नहीं करतीं तो कन्या जो कि आप की आत्मा है उसके सर्व नाश पर क्यों उद्यत हो । बहुत सी बहिनें कहती हैं कि हम घर पर ही शिक्षा दिला लेंगे परन्तु ऐसी कोई बहिन ही देखने में आई होगी । हां, इतना अवश्य देखा है कि जो ब्रह्मचर्य व विद्या का समय है उसमें विवाह आदि कर दिये जाते हैं और उनका चित्त विद्या आदि से हट कर गहने कपड़े तथा फैशन की ओर झुक जाते हैं ।

विवाह भी किस उत्तमता से होते हैं, कि गुण कर्म आदि का तो लेश मात्र भी ध्यान नहीं वरन ऐसा ढूंढ़ा जाता है कि लड़का खूबसूरत धनवान हो और बहुत हुई तो यह कि एम० ए० बी० ए० पास है रोटी कमा खायगा । लेकिन क्या कभी आपने यह भी देखा कि वर की धार्मिक श्रद्धा कितनी है धर्म से कितनी रुचि है वह अपना जीवन कैसे व्यतीत करना चाहता है और आपकी कन्या का और उस का मेल मिलता है या नहीं । भला यह कैसे जाना जासकता है क्योंकि कच्ची अवस्था में तो विवाह स्थिर होजाते हैं ।

क्या यही अपूर्ण कन्यायें भारत वर्ष की और कुल की त्रुटि को पूर्ण कर सकती हैं, जिन की बुद्धि परिपक्व होने से प्रथम ही उनके कोमल कन्धों पर गृहस्थ रूप महान बोझलाद दिया गया है । भला सिवाय इसके कि जैसा आप को या सास आदि को करते देखती हैं वैसा ही करने लगें बुद्धि से वह कुछ उन्नति के कार्य नहीं कर सक्ती हैं कारण कि वह विद्या बुद्धि में अपूर्ण हैं । पूर्ण 'विदुषी' होने दीजिये तब देखिये कि आज भी द्रौपदी, सीता व मन्दालसा आदि बन सकती हैं या नहीं । वह विवाह शब्द सुनने की अधिकारिणी भी नहीं होती कि ९-१० वर्ष की दुधमुहीं बच्ची का विवाह कर माता बनाने की तय्यारी में लग जाती हो । अतः जैसा कर्तव्य आप पूर्ण करती हैं वैसा ही वह भी करेंगी । और यह सिलसिला बिना तोड़े ऐसा ही रहेगा । आप यह कहेंगी कि हम भी तो छोटी अवस्था में विवाही गई थी, किन्तु आपकी कन्याओं जैसी बल्कि अधिक अवस्था वाली मुसलमान कन्यायें भी विवाही जाती हैं । लेकिन उन में धार्मिक शिक्षा के न होने से वह कैसी अधोगति को प्राप्त होती हैं इस लिये शिक्षा की कितनी आवश्यकता है ।

प्यारी माताओं व बहिनों ! तुम्हें सुनते २ बहुत दिवस होगये अब तो कुछ कर दिखलाने का समय है, इस डूबती हुई हिन्दू जाति के बचाने का समय है। ब्रह्मचारिणी तेज धारिणी दुर्गा देवी की गर्जना सुनाने की आवश्यकता है न कि जच्चा बनने की जच्चाओं की कृपा से ही तो हम जैसी देवियां पैदा हुई जिन्हें देश और जाति के नाम पर आश्चर्य होता है। कहती है 'बहिनो हम तो आज कल की बातों को न जाने न करें। जैसा बड़ी बूढियों से देखती आई हैं वैसा ही करती हैं'। आहा! कैसा दृढ़ निश्चय है पशु भी तो ठीक आप ही की तरह दृढ़ निश्चयी होते हैं वह तो विवेक शून्य हैं परंतु आप! आपने तो विवेक विद्या पर जंग लगादी है जिस से वह उपयोग में ही नहीं आती। मेरी प्रार्थना है कि कृपा कर इस मोर्चे को छुड़ा विद्या व धर्म विचार में कुछ समय लगाइये तब देखिये कि आप को कैसा आनन्द आता है।

देखिये जनक जी ने सीता जी को कैसी धार्मिक शिक्षा दी थी जिसके बल पर सीता को योग्य वर न मिलने पर आजन्म कारी रखने का प्रण किया था। सीता के स्वयम्वर समय जबकि योग्य वर मिलने कठिन न थे। देवता राक्षस क्षत्री, ब्राह्मण आदि सब बुलाये थे तब इस समय जब कि अपनी बिरादरी में योग्य वर नहीं मिलते इस जाति बन्धन को क्यों नहीं त्याग देती। आप की कन्यायें गुण कर्म स्वभाव न मिलने के कारण बड़े कष्टों से जीवन व्यतीत कर रही हैं, उनके कष्टों को दूर करना ही आपका मुख्य कर्त्तव्य है।

कन्या गुरुकुल समाचार।

स्वास्थ्य।

ब्रह्मचारिणियों का साधारण स्वास्थ्य बहुत उत्तम है किंतु दुर्भाग्य वश उत्सव के एक सप्ताह बाद ही एक दो ब्रह्मचारिणियों को चेचक निकलनी आरम्भ हुई उन्हें प्रथक रखा गया और इस छूत की बीमारी को बढ़ने से रोकने के लिये जिन २ कन्याओं को टीके का निशान न था उनहें टीका करा दिया गया। किंतु ऐसा प्रतीत होता है कि जनता के लगातार कई दिवस तक गुरुकुल को खुले तौर से घूम घाम कर देखने की खुली छुट्टी होने के कारण इस रोग के कीटाणु यहां प्रविष्ट होचुके थे अतः रोगियों की संख्या बढ़ने लगी। १० कन्याओं को यह रोग हुआ तब तो हेल्थ आफिसर को रिपोर्ट हुई समग्र अध्यापिकाओं, कर्मचारियों तथा कन्याओं को टीके कराये गये, सारी कोठी फिनायल से धुलाई गई और कन्याओं को रोगियों से बिल्कुल अलग रखा गया है यहां तक कि वहां के बर्तन आदि भी अलग हैं। कुल रोगी कन्यायें १५ हैं।

रोगी कन्याओं में से तीन को बहुत तेज़ माता निकली थीं बाकी को बहुत ही हल्की अब प्रायः सभी स्वस्थ हैं और हंसती खेलती हैं किन्तु डाक्टर की आज्ञानुसार उन्हें छै हफ्ते प्रथक रहना पड़ा है जिस से उनकी पढ़ाई में कुछ कमी हो जायगी परन्तु उसे

पूरी करने का पूर्ण प्रयत्न किया जायगा। उत्सव का लाभ कन्याओं को और कुछ हुआ या नहीं यह भगवान जाने परन्तु यह हानि अवश्य हुई है।

पाठ क्रम।

यद्यपि यहां पर अब भी सुयोग्य अध्यापिकाओं की आवश्यकता बनी हुई है तथापि ब्रह्मचारिणियों का पठन पाठन सुचारू रूप से चल रहा है। और यह अनुभव किया जा रहा है कि पाठ विधि के अनुकूल ही समग्र श्रेणियों की पढ़ाई वर्ष के अन्त तक पूर्ण हो जाय। इसके लिये वर्तमान अध्यापिकायें अपने समय से बाहर भी अपने आराम के घंटों को भी कन्याओं के अर्पण कर रही हैं। अतः पढ़ाई बहुत उत्तम हो रही है।

आश्रम।

यद्यपि अध्यापिकाओं की कमी है तथापि हर्ष का विषय है कि इस समय आश्रम में सहायता देने वाली देवियां और नौकरानियां पर्य्याप्त संख्या में मिल गई हैं अतः छोटी और अबोध बालिकाओं के लिये बहुत उत्तम प्रबन्ध है। उन के वस्त्र स्वच्छ रखने, सिर साफ रखने तथा गुन्थ करने बिस्तरे ठीक रखने का बड़ा भारी ध्यान रक्खा जा रहा है।

गुरुकुल की दिनचर्य्या ब्रह्मचारिणियों तथा सभी कर्मचारीगण ४ बजे प्रातः की घंटी पर उठते हैं। चूंकि नल का पानी बहुत ठंडा हो गया है अतः छोटी २ बालिकायें, कमज़ोर व्यक्तियां तो गर्म जल से स्नान करती हैं बाकी स्वेच्छानुसार ठंडे या गर्म ताजे पानी से स्नान करती हैं। स्नान के बाद जो कन्यायें पहिले तैय्यार हो जाती हैं वह स्वस्तिवाचन शान्ति पाठ करके भजन गाती हैं और हवन की घंटी के बजने तक गाती हुई यज्ञशाला में प्रवेश करती हैं।

७ बजने से पूर्व ही हवन संध्या समाप्त कर सूर्य्य के दर्शन होते हैं उसी समय पाठ याद करने बैठती हैं और ९ बजने पर भोजन करने जाती हैं। १० बजे तक तैयार होकर प्रार्थना का भजन गाने बाद विद्यालय प्रारंभ होता है जोकि ४ बजे तक रहता है बीच में ३० मिनट के लिये दूध पीने का समय मिलता है। पिछले घंटों में सिलाई आदि होती है।

व्यायाम और खेल।

हर्ष का विषय है कि इस उत्सव पर ५००) रु० कन्याओं के लिये व्यायाम की सामग्री मंगाने के हेतु प्राप्त हुए थे अतः क्रीड़ाक्षेत्र में इतने धन से सामान लगाया जा रहा है। एक झूला तैय्यार हो गया है जो लोहे के मजबूत खम्भों को लगाकर कुएडों में रस्सी डालकर बना है। इस में छै कन्यायें प्रथक २ झूल सकती हैं। इसी प्रकार का एक और भी बन रहा है। एक सीढ़ियोंदार झूला भी तैयार हो रहा है और कूदने के लिये भी लोहे के स्तम्भ में रस्सियां डालने वाला भी व्यायाम स्तम्भ आ गया है। अब कन्याओं के लिये खेल और व्यायाम की कमी न रहेगी।

पुस्तकालय।

कन्या गुरुकुल के पुस्तकालय में अभी तक अत्यन्त आवश्यक पुस्तकें भी उपस्थित न थीं किन्तु इस कमी की पूर्ति शीघ्र हो जायगी क्योंकि लाहौर के श्री पण्डित ठाकुर दत्त शर्मा जी के दान से सम्पूर्ण आर्ष ग्रन्थ मंगाने का आर्डर जा चुका है और हमारे

पास ५००) रुपया और भी एक महाशय का है जिस धन से आर्ष ग्रन्थों से भिन्न अन्य उपयोगी आर्य्यभाषा तथा संस्कृत की पुस्तकें मंगाने का प्रयत्न हो रहा है इन पुस्तकों के आजाने पर गुरुकुल का पुस्तकालय भी उत्तम हो जायेगा।

ज्योति के परिवर्तन में प्रायः सभी पत्र पत्रिकायें आजाती हैं अतः यहां का वाचनालय प्रारम्भ से ही बहुत उत्तम है।

ट्रेनिंग क्लास।

ट्रेनिंग क्लास खुल गया कई देवियां आने के सम्बन्ध में पत्र व्यवहार कर रही हैं दो एक आभी गई हैं। आर्य्य भाषा का कुछ ज्ञान रखने वाली देवियों के लिये दो वर्ष का कोर्स रख कर उन्हें 'प्रयाग विद्या पीठ' की या योग्यतानुसार हिन्दी साहित्य-सम्मेलन की परिक्षायें दिलाकर और साथ में ही शिक्षण की रीति सिखलाकर छोटी श्रेणियों के लिये उत्तम अध्यापिकायें तैय्यार करने का विचार हो रहा है। किन्तु गुरुकुल की शिक्षा प्रणाली बहुत कठिन है और ४थ श्रेणी से ही संस्कृत, और इतिहास बढ़ाया जाता है। अतः उसकी पढ़ाने वाली मिलने में कठिनता हो रही है जो मैट्रिक या एफ० ए० पास संस्कृत और हिन्दी का ज्ञान रखने वाली देवियां यहां पर रहते हुये किसी संस्कृत की उच्च परीक्षा का विचार रखती हों तो यदि यहाँ पर कुछ काम भी करें पढ़ें तो उनके लिये भी प्रबन्ध किया जायगा उन्हें क्षात्रवृत्ति भी दी जावेगी जो देवियां अपनी उन्नति इस प्रकार करना चाहें तो पत्र व्यवहार शीघ्र करें।

कन्या गुरुकुल की मुख्य पत्रिका ज्योति के लिये हम कई मास से संरक्षकों से अपील करते आ रहे हैं। हमें यह सूचना देते हुये बड़ी प्रसन्नता है कि हमारे कई संरक्षकों की प्रबल इच्छा है कि इसे बन्द नहीं करना चाहिये। अतः वह इसकी सहायता में स्वयं दान भेज रहे हैं। ग्राहक भी बनाने का प्रयत्न कर रहे हैं। कई एक जो स्वयं आर्य्य भाषा नहीं पढ़ सकते उन्हों ने अपने मित्रों के नाम इसे मंगवा दिया है। अतः उन सब संरक्षकों को जिन्हों ने अभी तक इधर ध्यान नहीं दिया है आगे बढ़ना चाहिये और शीघ्र ही इस यज्ञ में आहुती डाल कर पुण्य लेना चाहिये। इस मास ज्योति के ग्राहकों की संख्या खूब बढ़ी है प्रत्येक पाठक पाठिकाओं को एक २ दो २ चार २ ग्राहक अवश्य बना देने चाहियें ताकि वैशाख से पूर्व ही ग्राहक पर्य्याप्त हो जावें अगले अंक में दान की सूची तथा ग्राहक वृद्धि बतलावेंगे। आशा है तब तक हमारे पाठक पाठिकायें यथा शक्ति इस सूची की वृद्धि करके हमें उत्साहित करेंगे

चिकित्सा का प्रबन्ध

गुरुकुल के लिये चिकित्सक को स्थायी रूप से रखने का प्रबन्ध हो गया था किन्तु रोगी होजाने के कारण डाक्टर महाशय अभी तक अपने स्थान पर नहीं आ सके हैं तब तक रिक्त स्थान में ५०) मासिक अलाउन्स देकर डाक्टर का प्रबन्ध कर लिया गया है जो प्रति दिन गुरुकुल में आते हैं और सभीके साधारण स्वास्थ्य का निरीक्षण तथा सफाई आदि की देख रेख भी करते हैं भोजन तथा जल की शुद्धि आदि भी देखते हैं रोगियों की चिकित्सा तो करते ही हैं। रोगियों के नर्स करने का भी बड़ा उत्तम प्रबन्ध हो गया है। अतः संरक्षकों को स्वास्थ्य सम्बन्धी चिन्तायें न होनी चाहिये।

विचार प्रवाह

भारत में ब्रिटिश शासन

आज कल ग्रेटब्रिटेन में जिस दल का शासन हो रहा है, उसके एक सदस्य का नाम है—सर जोयसन हिक्स। आप कान्जर्वेटिव दल के प्रधान नेताओं में से एक हैं और वर्तमान मन्त्रिमण्डल में गृह-सचिव के महत्त्वपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हैं। लङ्काशायर में भाषण करते हुए, आपने यह शब्द कहे थे।

"हमने भारत की विजय भारतीयों की भलाई के लिये नहीं की थी। मैं जानता हूं कि मिशनरियों की सभाओं में यह कहा जाता है कि हमने भारत की विजय भारतीयों को उच्च बनाने के लिये की थी। परन्तु यह झूट है। हमने भारत की विजय ग्रेटब्रिटेन के माल को खपाने के लिये की थी। हमने तलवार के जोर से भारत को जीता था और तलवारके जोरसे ही उसको अपने आधीन रखेंगे। (शर्म की आवाज) यदि इसपर शर्म कहते हो तो कहो। पर मैं सच्ची बात कहरहा हूँ। भारतमें मिशिनरी काम को पसन्द करता हूँ। और मैंने एक किस्म का काम किया भी है। पर मैं इतना झूटा नहीं हूँ कि यह कहूँ कि हम भारत पर भारतीयों के भले के लिये काम कर रहे हैं। हम भारत पर इस लिये राज्य कर रहे। कि ग्रेटब्रिटेन के और विशेषतः लङ्काशायर के कपड़े के माल के लिये बाजार मिल सके।"

सर हिक्स के इन शब्दों पर प्रत्येक भारतीय को गम्भीरता से विचार करना चाहिये। जो लोग अब तक यह समझते हैं कि भारत पर अंग्रेजों का शासन ईश्वर की तरफ से भारतीयों की भलाई के लिये स्थापित हुआ है, उन्हें इससे सचेत हो जाना चाहिये। सर हिक्स जैसे जिम्मेवार आदमी ने जो बातें कहीं उन्हें उपेक्षा की दृष्टि से नहीं देखा जा सकता। केवल उन्हीं की नहीं सभी ब्रिटिस शासकों के भारतीय शासन के सम्बन्ध में यही विचार हैं। इतना ही भेद है कि सर हिक्स जैसे हिम्मती लोग बहुत हैं, जो कि सचाई को असली रूप में प्रगट कर सकें। और लोग सचाई को शब्दों के ढकने से ढक देने का प्रयत्न करते हैं। हमें सर हिक्स का कृतज्ञ होना चाहिये कि उन्होंने अपनी शासन नीति को स्पष्ट रूप से हमारे सामने पेश कर दिया है।

सर हिक्स के इन वाक्यों को पढ़ कर यह भी आसानी से समझ में आ जाता है कि महात्मा गांधी के चरखा आन्दोलन का कितना महत्त्व है। महात्मा खद्दर के प्रचार और विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार द्वारा ब्रिटिश के मूल पर कुठाराघात करना चाहते हैं। पर हम स्वराज्य के लिये इतना भी त्याग करने को तैयार नहीं। क्या सर हिक्स के के यह शब्द भारतियों की आंखे खोलने में समर्थ होंगे?

दक्षिण अफ्रीका में भारतीय

कलकत्ता के पादरी फ्रेड्रिक फिशर साहब हाल ही में दक्षिण अफ्रीका से लौट कर आये हैं। एक पत्र प्रतिनिधि से बातचीत करते हुवे आपने निम्नलिखित बात कही हैं. "दक्षिण अफ्रीका में अवस्था बहुत ही

खराब हो गई है। जितना जातीय विद्वेष मैंने दक्षिण अफ्रीका में पाया है, उतना अन्य किसी देश में नहीं पाया। उदाहरण के तौर पर ट्रांसवाल को लीजिये। वहां पर बिना खास लाइसैंस लिये कोई भारतीय ट्रेन पर नहीं चढ़ सकता। लाइसैंस का देना न देना गोरे आदमी के हाथ में होता है।

भारतीय दुकानदार को हुक्म दिया जा सकता है कि वह अपनी दुकान एक स्थान से उठाकर और स्थान पर ले जावें। भारतीयों को सम्पत्ति पर स्थिर अधिकार नहीं प्राप्त हो सकता। इसके कारण उन्हें बहुत हानि उठानी पड़ती है। वे स्थिर तौर पर कहीं रुपया नहीं लगा सकते। क्योंकि किसी भी क्षण उन्हें उस स्थान को छोड़ने के लिये बाधित किया जा सकता है। विशेषतः ट्रांसवाल में भारतीय लोग सम्पत्ति पर अधिकार नहीं रख सकते यहाँ तक कि बेटे पर भी उनका अपना हक नहीं होता। शहर के किसी रद्दी हिस्से में उनके रहने के लिये अलग स्थान निश्चित कर दिया जाता है, और सभी को वहीं पर रहना पड़ता है। परन्तु उस हिस्से पर भी उनका स्थिर अधिकार नहीं होता। ट्रांसवाल में भारतीयों की वही हालत है जो कि पुराने रूस में यहूदियों की थी।

ट्राम गाड़ी में भी भारतियों को अनेक बाधाओं का सामान करना पड़ता है। दूसरी मञ्जिलपर पर केवल पिछले तीन स्थान भारतीयों के लिये अलग किये हुवे होते हैं। यदि कोई भारतीय स्त्री बच्चों को गोद में लिये हुवे ट्राम की दूसरी मञ्जिल पर चढ़ जाये और भारतीयों के लिये निश्चित स्थान पहले से भरे हुवे हों। वो उसे नीचे उतरना पड़ता है अन्य स्थान खाली होने पर भी उसे बैठने नहीं दिया जाता है। सब भारतीयों को कुली कहा जाता है। पाठ्य पुस्तकों के अन्दर भी भारतीयों को कुली लिखा गया है। भारतीयों को नाटक देखने की इजाजत नहीं है। वे किसी सार्वजनिक पुस्तकालय में पुस्तक या समाचार पत्र तक नहीं पढ़ सकते। भारतीयों को होटलों में भी जाने की इजाजत नहीं है।" एण्टि एशियाटिक बिल के सम्बन्ध में फिशर साहब ने कहा कि यह बिल वस्तुतः असह्य है। इसका उद्देश्य केवल यह है कि सम्पूर्ण दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों का रहना इस प्रकार असम्भव बना दिया जाय, कि वे स्वयं अफ्रीका छोड़ कर भारत को वापिस लौट जांय।

ब्रिटिश साम्राज्य के एक उपनिवेश में भारतीयों के साथ यह सम्मान का व्यवहार होता है! उपर्युक्त बयान किसी भारतीय का नहीं है, अपितु एक अंग्रेज का है। इन बातों के होते हुवे भी भारतीयों को यह उपदेश किया जाता है कि ब्रिटिश साम्राज्य का उद्देश्य संसार में स्वाधीनता, समानता और लोकसत्ता को स्थापित करना है। अनेक भारतीय भी इस भूल में पड़ गये हैं कि भारत के लिये ब्रिटिश साम्राज्य के अन्दर स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकना सम्भव है। इन बातों से ऐसे लोगों की शिक्षा लेना चाहिये। ब्रिटेन के गोरे निवासियों और काले भारतीयों के हितों में इतना भेद है कि उनका साथ रह सकना सर्वथा असम्भव है। ब्रिटेन का हित इस में ही है कि कमजोर भारत को सभ्य तरीकों से लूट कर शक्ति हीन कर दिया जाय। इस अवस्था में यदि दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों से ऐसा व्यवहार हो, तो आश्चर्य ही क्या है?

स्वराज्यदल की स्थिति।

इसमें कोईसंदेह नहीं कि बड़ी व्यवस्थापिका सभा (कौंसिल आफ स्टेट) के नवीन निर्वाचन में स्वराज्यदल के सदस्यों की संख्या बढ़ गई है। पुरानी कौंसिल में राष्ट्रहित के विरोधी सदस्यों की संख्या बहुत अधिक थी, उनके स्थान पर नवीन निर्वाचन में कुछ देशभक्त स्वराज्यवादी सदस्य निर्वाचित हो सके हैं। यह होते हुए भी यह मानना पड़ेगा कि बड़ी व्यवस्थापिका सभा के निर्वाचन में स्वराज्यदल को आशातीत सफलता नहीं हुई। स्वराज्यदल की ओर से बहुत कम उम्मेदवार खड़े किये गए और जो किये गए उन में से भी बहुतों को सफलता नहीं हो सकी। यही नहीं, म्यूनिसिपल और जिला बोर्डों के निर्वाचन में भी स्वराज्यदल को बुरी तरह पराजय हो रही है। संयुक्तप्रान्त के निर्वाचन इस बात को स्पष्टरूप से सिद्ध करते हैं। इलाहाबाद और लखनऊ जैसे राष्ट्रवादी नगरों में स्वराज्यदल का मुंह की खानी पड़ी है। कौंसिल आफ स्टेट के विषय में तो यह कहा जा सकता था कि उसके निर्वाचक प्रायः धनी और पूंजीपति लोग हैं, वे स्वराज्यदल को पसन्द नहीं करते। परन्तु जिला और म्युनिसिपल बोर्डों के सम्बन्ध में नहीं हैं, उनके निर्वाचकों में साधारण जनता की संख्या पर्याप्त है। इन बोर्डों में स्वराज्यदल का असफल होना स्पष्टतया प्रदर्शित करता है कि अब स्वराज्यदल की लोकप्रियता बहुत कुछ नष्ट हो गई है। इस परिवर्तन के दो बड़े कारण हैं। प्रथम यह कि जातिगत और साम्प्रदायिक झगड़े बहुत बढ़ गए हैं। जनता राष्ट्रीयता के भावों से इतनी प्रेरित नहीं होती जितनी कि जातिगत भावों से। यही एक कारण है कि म्यूनिसिपल बोर्डों में हिन्दू महासभा के उम्मेदवारों ने स्वराज्यदल के उम्मेदवारों को पराजित कर दिया है। परन्तु इससे भी बढ़कर महत्वपूर्ण कारण एक और है स्वराज्य दल की लोकप्रियता और शक्ति इस बात पर आश्रित थी कि उसने कौंसिलों द्वारा शीघ्र स्वराज्य प्राप्त कराने की आशा जनता को दिलाई थी। उसने कौंसिलों में यह कहकर प्रवेश किया था कि नवीन कौंसिलों द्वारा ब्रिटिश शासन को असम्भव कर दिया जाय गा। सुधार वापिस हो जाएंगे और नौकरशाहीका नंगा स्वरूप देखकर जनता सविनय आशाभंग और कर न देने के लिए तैयार हो जायगी। इन्हीं ऊंची आशाओं से पिछले निर्वाचन में स्वराज्यदल को इतनी लोकप्रियता प्राप्त हुई थी। परन्तु कौंसिलों में जाकर स्वराज्यदल अपनी प्रतिज्ञा पर कायम न रह सका। उसने न केवल बाधानीति को ही मुल्तवी कर दिया, किन्तु स्पष्टतः सरकार से सहयोग करना प्रारम्भ कर दिया प्रस्ताव उपस्थित करने से शुरू कर सरकारी पद ग्रहण करना भी स्वराज्यदल के कार्य्यक्रम में सम्मिलित हो गया। जिन प्रान्तों में स्वराज्यदल ने अपने कार्य्यक्रम का पूर्णरूप से अनुसरण भी किया और उसे सुधार कर रद्द कराने में सफलता भी हुई, वहां की सविनय कानून भङ्ग आदि शुरू न हो सके। धीरे २ जनता का स्वराज्यदल के कार्यक्रम पर विश्वास हटने लगा और यही कारण है कि आज स्थानीय बोर्डों तक में स्वारज्यदल को पराजित होना पड़ रहा है।

प्रतियोगी सहयोग ।

देश की वर्तमान अवस्थाओं में सविनय कानून का भङ्ग या सत्याग्रह का प्रचलित करना असम्भव देखकर और यह समझ कर कि केवल बाधानीति से देश को कुछ लाभ नहीं हो सकता। श्रीयुत केलकर और जय कर ने मुनियोगी सहयोग का आन्दोलन प्रारम्भ किया है मुनियोगी सहयोग का अर्थ है जहां पर सम्भव हो सरकार के साथ सहयोग किया जाय और जहां पर आवश्यक हो, सरकार का विरोध किया जाय। इस मत के अनुसरण करने वालों का कहना है कि पिछले दो सालों में स्वराज्य दल निरन्तर प्रतियोगी सहयोग की तरफ बढ़ता रहा है। यद्यपि वह निरन्तर बाधानीति को सम्मुख रख कर कौंसिलों में आया था, तथापि अब वह बाधा निति को सर्वथा छोड़ चुका है। सरकारी प्रस्ताओं में संशोधन करना। उनका समर्थन करना, स्वयं प्रस्ताव पेश करना, सरकारी सम्मितियों का सदस्य होना, सरकारी पदों का ग्रहण करना आदि-सब कुछ अब स्वराज्य दल की नीति के अन्तर्गत है। यह उचित भी है, क्योंकि निरन्तर बाधानीति की उपयोगिता उसी अवस्था में थी, जबकि देश सत्याग्रह के लिये तैय्यार होता। परन्तु महात्मा गांधी तक वर्तमान समय में सत्याग्रह को अक्रियात्मक समझते हैं और यहां तक कहते हैं कि निकट-भविष्य में या इतने समय तक जिसका कि अभी से अन्दाजा लगाया जा सके, देश सत्याग्रह के लिये तैय्यार नहीं हो सकता। इस अवस्था में कौंसिलों के अन्दर बाधानीति का अनुसरण करना सर्वथा व्यर्थ है। अतः यही उचित है कि जिस नीति की ओर स्वराज्यदल पिछले दो वर्षों में धीरे धीरे कदम उठाता रहा है, अब उसको पूर्ण रूप से स्वीकृत करले। श्रीयुत केलकर और जयकर के इन विचारों से स्वराज्यदल के प्रधान नेता पं० मोतीलालनेहरू सहमत नहीं हैं। वे प्रतियोगी सहयोग के सर्वथा विरुद्ध हैं। और सत्याग्रह। सविनय कानून भंग आदि के नाम पर जनता से अपील कर इस नवीन आन्दोलन को पीस देना चाहते हैं दोनों तरफ से जोरशोर के साथ गृहकलह अभी प्रारम्भ ही हुआ था कि बम्बई में मन्त्रणा करके स्वराज्यदल ने अपने आन्तरिक युद्ध को कानपुर कांग्रेस तक के लिये स्थगित कर दिया। परन्तु शीघ्र ही इस कलह का फिर से प्रारम्भ होगा। हम समझते हैं कि कौंसिलों के अन्दर प्रतियोगी सहयोग की नीति का अवलम्बन करने के सिवा स्वराज्यदल को कोई चारा नहीं है। यह ठीक है कि कौंसिलों से भारत की कोई भलाई नहीं हो सकती परन्तु कौंसिलों में निरन्तर बाधानीति के अनुसरण से भी कोई लाभ नहीं है या तो कौंसिलों का बहिष्कार कर सर्वसाधारण जनता में रचनात्मक कार्य को प्रारम्भ किया जाय, यदि कौंसिलों में जाना ही है, तो वहां व्यर्थ की बाधानीति को छोड़ कर उनका उपयोग करना अधिक अच्छा है।

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियां, जाकटें और कुरते बहुत ही खूबसूरत फैंसी बनावट के मिलते हैं एकबार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महंगे जचें तो फ़ौरन वापिस भेजकर क़ीमत वापिस मंगा लीजिये क़ी० साड़ी बेलरेशम की किनारी दार ७) ८) ९) १०) १२) जरी किनारी १५)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं; और बालों का उखड़२ कर गिरना बन्द होता है की० ॥)

बच्चों के गले के लाकिट—ये लाकिट दांत सुगमतासे निकलने के लिये प्रसिद्ध हैं की० ॥।)

बालसुधा—गोद के बच्चों को मोटा ताजा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शीशी ॥।)

महा सुगंधित तैल—माथे को सुगंधित और ठंडा करने वाला तैल कीमत १)

ब्रासलेट वाच।

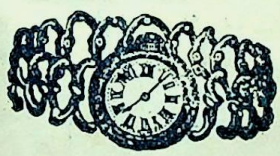

न० ३२ यह बिल्कुल ही नई फैशन की चीज है इसके बीचो मैं एक छोटी सी जेबी घड़ी है और इधर उधर चूड़ियां ऐसी तर्ज़ से बनाई गई हैं कि चाहे जैसे बड़े हाथ मैं पहिना लीजिये ठीक नाप की हो जावेगी हिन्दुस्तानी बड़े घरों की स्त्रियां भी इसे बहुत पसन्द करती हैं क्योंकि घड़ी को घड़ी और गहने का गहना है, पातल पर सोने की गिल्ट वालीं का दाम ८) रु० जिसके चारों तरफ नग जड़े हैं दाम १) रु० ॥

बालकों के फैंसी कुरते—इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है हर एक रङ्ग के क़ीमत ४) ५) ६) ७) ९) १०) यही ज़री के १५) २०) २५)

बोडी या जाकेट—ज़नानी चाहे जिस नाप की क़ीमत ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता:—

सुख संचारक कम्पनी,

मथुरा.

पं० नअन्तराम शर्मा के प्रबंध से सद्धर्म्म प्रचारक प्रेस दरियागंज देहली में छपा।

और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

A SELECTION IN OUR OFFICE CLOCKS

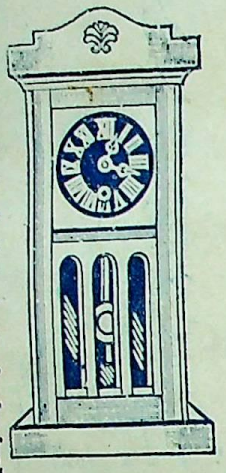

THE MODERN REGULATOR

One of our best Office clocks recently Imported.

The only Office Clocks, which is unequalled in the clock world. Made in wall nut superior case and with perfect mechanism. Give you correct time and guaranteed for five years.

WRITE NOW.

Price Rs. 5 Only

CAPTAIN WATCH Co., P. B. 165, MADRAS.

OUR STOCK TAKING SALE ! LOSE NOT THIS CHANCE !

To purchasers of the patent German Alarm Time-piece we are giving away one of our 18 carat Rolled Gold wrist watch with full leather as illustrated. Both these are guaranteed for five years Keeps correct time & handy. Both should be purchased at a time.

Rs. 10

Rs. 10

IF PURCHASED SEPARATELY { The German Alarm Time piece Rs. 5. 18 carat Rolled Gold wrist watch Rs. 7.

TRT ONCE

ONLY A FEW MORE.

CAN BE HELD FROM

THE ENGLISH EMPORIUM,

P. B. 105. MADRAS.

वर्ष ६] पौष-माघ १९८२—जनवरी फरवरी १९२६ Regd. No. L. 1240. [खण्ड ६, संख्या ९,१०

वार्षिकमूल्य ४॥) सम्पादिका— विद्यावती सेठ बी०ए० स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) विदेश का मूल्य ६)

विषय सूची।

विषय		पृष्ठ
१	स्मृति ले०—श्रीहरि	...४०५
२	दयानन्द दिग्विजय ले०— गुरुकुल कां...	
३	पुण्य पथ ले०—सत्याचरण सत्य	...०.-
४	यज्ञ में हिंसा ले०—श्री. स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी आचार्य्य उपदेशक म. वि. लाहोर	...४११
५	समझ की खूबी ले० जीवन	...४१३
६	संतोष ...	...४१४
	ले०—श्रीराजनारायणजी चतुर्वेदी आज़ाद	
७	मोहनो के आंसू ले०—श्रीयुत दधिमथ वैद्यराज	...४१८
८	हिंदूपति के समर्थन में ले०—श्री० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री एम.ए. सम्पादक प्रभात	...४२०
९	निद्रा ले०—श्री०श्री०प्रो० सांझीराम जी एम० एस० सी०	...४२२ ...४२२
१०	वसन्त वर्णन ले० श्रीमती सरलादेवी विदुषी विशारदा	...४२६
११	स्त्रियों का साम्राज ले —श्रीमती विद्यावती सेठ आचार्या कन्या गुरुकुल	...४४५
१२	वैज्ञानिक संसार	...४४८
१३	कुसुमोद्यान ...	....४५३
१४	विचार प्रवाह ...	...४५९
१५	प्रश्नोत्तर ले०-श्री बुद्धिसागर वर्मा B.A, विशारद	...४७३
१६	ओसबिन्दु ले०—श्री रामनारायण मोहले बी. ए.	...४७४
१७	हमारी मंजूसा ...	...४७५
१८	अभ्यर्थना (कविता) ले० "मुकन्द"	...४७८
१९	बनिताविनोद ...	....४८३
२०	कन्या गुरुकुल समाचार	...४८३

MODE
REGU

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहक करेगी

लिये डा० व्य० सहित इस को मूल्य—

के लिये ४॥) है।

मास के लिये २॥) है।

विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।

स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है

(२) एक प्रति का मूल्य ॥) है।

पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली. के पते पर आने चाहियें।

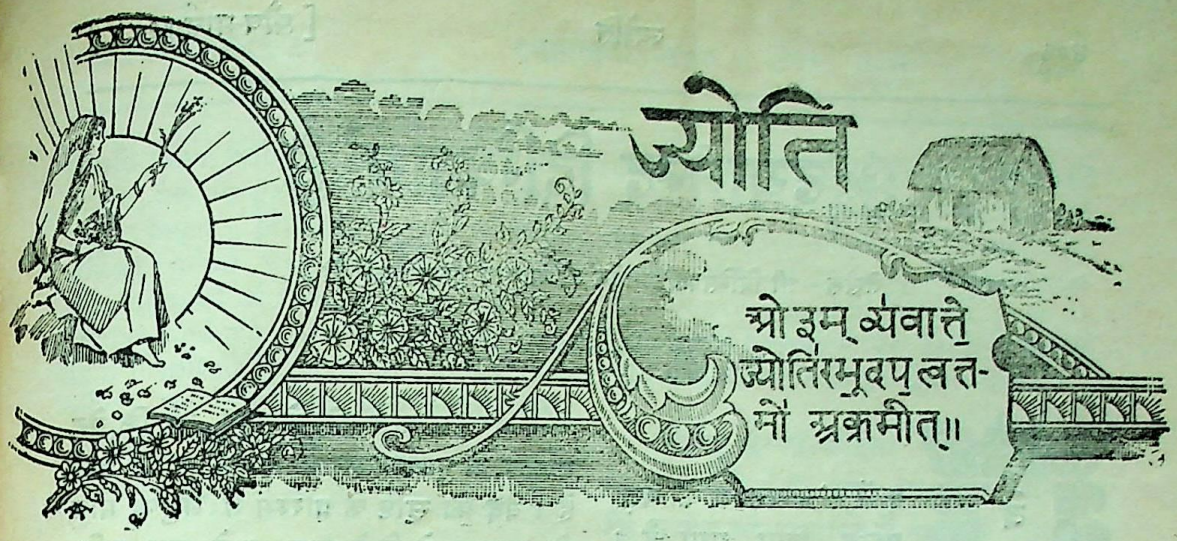

वर्ष ६ | पौष-माघ १९८२—जनवरी-फर्वरी १९२६ ई० | संख्या ९-१०

स्मृति

हे अतीत की प्रणयिनि ! तेरा, आवाहन जब करता हूं।
नेत्र मूंदकर परम प्रेम से, सुखद ध्यान जब धरता हूं॥
वायुवेग से आकर तब तू, मुझे साथ ले जाती है।
उस अतीत के अंतस्तल में, मेरा मन विलमाती है॥

* * * *

चिरसंगिनी बनी तू सम्पति, खोई हुई दिखाती है।
जीवन की सारी घटनायें, एक एक कर लाती है॥
कभी नयनघन से पावस बन, अश्रु प्रवाह बहाती है।
फिर बसंत लक्ष्मी सी आकर, मेरा सुमन खिलाती है॥

* * * *

श्रीहरि।

दयानन्द दिग्विजय

लेखक—श्री प्रिन्सिपल रामदेव जी आचार्य गुरुकुल कांगड़ी

वेद में संकल्पशक्ति को बड़ा महत्व दिया गया है। स्थान २ पर इसकी प्राप्ति के लिये प्रार्थना की गई है। जिस मनुष्य की संकल्पशक्ति दृढ़ हो वह संसार में अपने उद्देश्य की पूर्त्ति करने में सदा सफल होता है। साधारण व्यक्ति और महापुरुषों में बड़ा अन्तर यही है कि साधारण व्यक्ति अपने जीवन को सङ्कल्पमय नहीं बनाते। उनके जीवन का कोई निश्चित सङ्कल्प नहीं होता, परन्तु महापुरुष अपने जीवन का संकल्प निश्चित कर लेते हैं और उसी सङ्कल्प को पूरा करने में अपने जीवन की सारी क्रियाओं को केन्द्रित कर देते हैं। इसी लिये संसार में वे आक्रान्तियां पैदा करते हैं और उनकी सर्वत्र प्रतिष्ठा होती है। महा पुरुषों के जीवन इसी बात को दर्शाते हैं। जिस समय स्वामी दयानन्द संसार में अवतीर्ण हुये उस समय वेदों का गौरव सर्वथा लुप्त हो चुका था। पाश्चात्य विद्वानों तथा उनके पद-चिन्हों पर चलने वाले भारतीय विद्वानों का यह विचार था कि उपनिषदों और गीता में अध्यात्म-विद्या सम्बन्धी ऊंचे दर्जे का ज्ञान उपलब्ध हो सकता है परन्तु वेद गड़रियों के गीत हैं। जंगली लोगों के जांगलिक भावों के प्रतिबिम्ब हैं। इनमें किसी भी प्रकार का ऊंचे दर्जे का ज्ञान नहीं है। स्वामी दयानन्द ने डंके की चोट पर इस बात की घोषणा की कि वेद संसार के पुस्तकालय में सबसे उत्तम ज्ञान है। वेद को सृष्टि के प्रारम्भ में मनुष्य मात्र के कल्याण के लिये परमात्मा ने चार ऋषियों के हृदयों में प्रकाशित किया। सब विद्याओं के मूल मन्त्र इस में मिलते हैं। विज्ञान तथा तत्व ज्ञान का स्रोत भी वेद ही हैं। प्राकृतिक तथा अध्यात्मविद्याओं का भण्डार भी वेद ही हैं। उस समय के विचारकों तथा विद्वानों ने स्वामी दयानन्द के इन विचारों की अवहेलना की और इन की मखौल उड़ाई। परन्तु हम देखते हैं कि उन्हीं विद्वानों की पुस्तकों में स्थान २ पर स्वामी दयानन्द के विचारों की पुष्टि पाई जाती है। मैक्समूलर पाश्चात्य विद्वानों का शिरोमणि समझा जाता है और इन्होंने वेद के विषय में पर्याप्त अध्ययन किया है। जहां कई स्थानों पर इन्होंने वेद को जंगली लोगों का ज्ञान बताया है वहाँ कई अन्य स्थलों पर उनको बाधित होकर वेदों में वह ज्ञान मानना पड़ा है जिसकी घोषणा कि स्वामी दयानन्द ने की थी। जादू तो वह जो शिर पर चढ़के बोले। मोक्षमूलर लिखता है कि—

These startling out-bursts of Philosophic thought seem indeed to require the admission of a long continued effort of meditation and speculation before so complete a rupture with the old conception of physical gods

could have become possible... nor must we forget that there always have been privileged individuals whose mind was untrammelled by the thought of the great mass of the people and *who saw and proclaimed* as if inspired by a power not themselves, truth far beyoned the reach of their fellow-men.

Six systems of Philosophy.

अर्थात् वेद 'नासदीय सूक्त' पर लिखते हुये मोक्षमूलर साहब लिखते हैं कि इस सूक्त के विचार इतने उच्च हैं कि जिन व्यक्तियों ने इनका निर्माण किया था उन्होंने बड़े गहरे ध्यान के अनन्तर इनको लिखा होगा ..... हमें इस बात को भी नहीं भूलना चाहिये कि कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं जो कि भविष्य की बात को भी देखते हैं और जिनके विचार मानवीय बुद्धि से प्रेरित नहीं होते। इस उद्धरण से यह स्पष्ट हो जाता है कि मोक्षमूलर की सम्मति में वेद का यह सूक्त मानवीय बुद्धि की कृति नहीं है परन्तु दैवी प्रेरणा है।

उपरोक्त प्रोफेसर आगे चलकर उसी पुस्तक में लिखते हैं :—

Still it was achieved and what-ever is the age when the collection of our Rigveda Sanhita was finished, it was before that age that the conception had been formed that there is but one, one being neither male nor female. A being raised high above all the conditions and limitations of personality and of human nature and nevertheless the being that was really meant by all such names as Indra, Agni, matariswan many even by the name Parjapati, Lord of creatures. In fact Vedic Poets had arrived at a conception of god hood which was reached once more by some of the Christian Philosophers of Alexandria, but which even at present is beyoned the reach of many who call them-selves Christians.

अर्थात् ऋग्वेद संहिता के निर्माण का काल चाहे कोई हो परन्तु इतना निश्चित है कि ऋग्वेद की समाप्ति से पूर्व एक परमात्म पूजा का सिद्धांत प्राचीन ऋषियों को ज्ञात हो चुका था वे। एक ऐसी वस्तु की सत्ताको अङ्गीकार करने लग गये थे जो कि मानवीय कमजोरियों से ऊपर, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् है। जिस को कि वे इन्द्र, अग्नि मातरिश्वा, प्रजापति इत्यादि भिन्न २ नाम से पुकारते थे। वस्तुतः वैदिक ऋषि परमात्मा के स्वरूप के विषय में उस उच्चता तक पहुंच चुके थे जितनी उच्चता तक कि सिकन्दरया के कई ईसाई तत्ववेत्ता अपने समय में पहुंचे थे। उपरोक्त दोनों उद्धरण स्पष्टतया इस बात को प्रमाणित करते हैं कि स्वामी दयानन्द के वेद विषयक विचारों का प्रभाव योरोप के विद्वानों के विचारों तथा लेखों पर पड़ चुका है। इसलिये स्थान २ पर वे कुछ अव्यक्त शब्दों में वेदों के कई हिस्सों को परमात्मा का ज्ञान मानते और वेद में तौहीद के सिद्धाँत की विद्यमानता को स्वीकार करने के लिये बाधित हुए हैं।

स्वामी दयानन्द के विचारों ने यहीं तक क्रांति नहीं की किन्तु हम देखते हैं कि उनकी तीव्र समालोचना ने अन्य मतों की धर्म पुस्तकों की व्याख्याओं को ही बदल दिया है। मुसलमानों ने अपनी धर्म पुस्तक की व्याख्या स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों के प्रकाश में की। इसी प्रकार सनातन धर्मियों के नेताओं

ने भी स्वामी दयानन्द के विचारों के प्रकाश में अपने विचारों और सिद्धाँतों में परिवर्तन किये। १९२४ ई० के सितम्बर मास में लंडन के इम्पीरियल इन्स्टीट्यूट में सब धर्मों की एक कानफ्रेंस हुई। जिस में भिन्न २ धर्म के नेताओं ने योरुप के विद्वानों के सामने अपने सिद्धांतों को रक्खा।

इस कान्फ्रेन्स की रिपोर्ट Religions of the Empire, नामक पुस्तक में प्रकाशित हुई है। जिस में से कुछ उद्धरण हम नीचे देते हैं।

हिन्दू धर्म के प्रतिनिधि बनकर सनातन धर्म पालिनी सभा के भूतपूर्व मन्त्री सैन्ट्रल हिन्दू कालिज के प्रोफेसर १८९८, भारत धर्म महामण्डल के मन्त्री १९०३-४, तथा अलवर रियासत के विदेशी मन्त्री पण्डित श्यामशङ्कर एम, ए गये थे।

Nowhere in Sanskîrt or Prakîrt Litrature do we come accross the term Hindu. The Persians called the people living in India (beyoned the river Sindhu, Indus) 'Hindus' as vaguely as the sanskîrt writers called the people living North-West of India "Yavanas" अर्थात् सारे संस्कृत साहित्य में हमें हिन्दू शब्द उपलब्ध नहीं होता। परशियन लोगों ने सिन्धु नदी के पार रहने वाले लोगों का नाम हिन्दु रक्ख दिया था जिस प्रकार कि संस्कृत लेखकों ने भारत के उत्तर पश्चिम में रहने वालों का नाम यवन रख लिया था।

"Sanatana Dharm" or "Saswat Dharms" (Ancient or Paternal religion) or Arya Dharm (Religion of the Aryas) do not literally signify what the words are now conventionally taken to indicate, *i. e.* Orthodox Hinduism

अर्थात् सनातन धर्म, शाश्वत् धर्म, आर्य धर्म का वह तात्पर्य नहीं है जो कि वर्तमान में हिन्दू धर्म का है।

हिन्दू धर्म की व्याख्या करते हुये वे लिखते हैं कि;

The four original castes (Viz Brahaman, Khastriya, Vaishya and Sudra) were first instituted according to the Division of Guna and Karm, as it is said in the Gita.

अर्थात् वर्णव्यवस्था गुण और कर्म के आधार पर है। यहां पाठक स्पष्ट तौर से देख सकते हैं कि जन्म का निर्देश भी नहीं किया गया। क्या यह भगवान् दयानन्द के विचारों की विजय नहीं है।

अस्पृश्यता हुए (Untouchability) के विषय में लिखते हैं। पं० श्यामशङ्कर लिखते हैं कि Untouchability was carried to ex-streme limits, much beyoned the rules of the earliar religious books. But in the West it is not generally kown that *untouchability did not strictly apply to the lower castes as such, but to uncleanliness of any person of high or low castes.* अर्थात् वर्तमान समय में अस्पृश्यता बहुत बढ़ा दी गई है पश्चिम के लोगों को साधारण तौर से यह मालूम नहीं कि अछूतपने का सम्बन्ध छोटी जातियों से ही नहीं है परन्तु जो भी

मैला रहे वह अछूत है चाहे वह किसी भी वर्ण का है।

स्वामी दयानन्द की स्पिरिट इन पंक्तियों में कितना स्पष्ट बोल रही है। इस प्रकार हम देखते हैं कि किस प्रकार से हिन्दुओं के विचारों में परिवर्तन पैदा होरहा है। इस परिवर्तन का श्रेय स्वामी दयानन्द और आर्य समाज को ही है। अब हम देखेंगे कि स्वामी के विचारों ने मुसलमान दुनियां में कितनी हलचल पैदा की है।

मुसलमानों के प्रतिनिधि विख्यात मुसलमान नेता तथा मुस्लिम मिशनरी ख्वाजा कमालउद्दीन साहब थे। इनके निबन्ध के कुछ उद्धरण हम नीचे देते हैं।

कुरान के स्वर्ग, नरक तथा हूरो-गिलमा के सिद्धान्त पर प्रतिपक्षी ने प्रायः आक्षेप किया है। उस आक्षेप को दूर करने के लिये ख्वाजा साहिब जो उत्तर देते हैं वह सुनने योग्य है। वह कहते हैं :—

Freedom from grief, fear, toil and anxiety is the chief characteristic of the Quranic paradise a truth repeated again and again in the Quoran. Undoubtedly the Quoran speaks of gardens trees, milk, honey, fruits and numerous others things, but these are not of this life; they are metaphorical expressions. अर्थात् दुःख डर तथा चिन्ता से मुक्ति का नाम ही स्वर्ग है। यह ठीक है कि कुरान में लिखा है कि स्वर्ग, में बाग वृक्ष, दूध, शहद, फल तथा अन्य बहुतसी वस्तुयें मिलती हैं। परन्तु यह सब अलङ्कार है। नकि वास्तविक हैं।

स्वामी दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' में स्वर्ग की व्याख्या करते हुये लिखा है सुख विशेष भोग और उसकी सामग्री की प्राप्ति का नाम है'। क्या स्वर्ग के उपरोक्त लक्षण में स्वामी दयानन्द के विचारों की छाया नहीं है?

हूरों के विषय में लिखते हुये ख्वाजा साहब लिखते हैं:—The Hories, upon which so much stress is laid by our adverse critics, are no other than our own female folks, with hearts pure and eyes restrained from evil. अर्थात हमारे प्रतिपक्षी हूरों के विषय में बहुत आक्षेप करते हैं। ये हूरें हमारे ही घर की बहू बेटियां हैं जिन के हृदयपवित्र हैं और आंखें लज्जा शील हैं।

इस में भी मनु के इस श्लोक के भाव की छाया है 'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः। यत्रैतास्तुन पूज्यन्ते सर्वातत्राऽ फलाः क्रियाः।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्वामी दयानन्द के विचारों ने संसार में एक विप्लव पैदा कर दिया है और उनके विचारों के प्रकाश में अन्य मतावलम्बी अपने ग्रन्थों की व्याख्या को बदल रहे हैं। स्वामी दयानन्द के विचारों का ठप्पा केवल समकालीन विचारों पर ही नहीं पड़ा किंतु भविष्य में भी स्वामी दयानन्द के विचार संसार में एक बड़ी आक्रान्ति पैदा करेंगे और स्वामी के विचारों के साथ २ वेद की सचाईयां संसार के कोने २ में फैल जायेंगी। क्योंकि वर्तमान सदी वेद का सब से बड़ा भाष्यकार भगवान् दयानन्द ही हैं।

———

प्रणय पथ

ले०-सत्याचरण 'सत्य'

[१]

विश्वप्रपञ्च पर प्रेम पुजारी,
हृदय खोल कर आते हैं।
मृग तृष्णा की प्रेम जलधि में,
गोता गहन लगाते हैं॥

[२]

आशा की मृदु सूक्ष्म रज्जु पर,
तृषित दृष्टि अवलम्बित हो।
सुख वैभव के भव्य स्वप्न में,
मुसकाते हैं पुलकित हो॥

(३)

कभी सु-आशा कभी निराशा,
सित प्रकाश के मण्डल में।
तमोराशि से पूर्ण प्रखञ्जित,
निबिड़ निशा के अञ्चल में॥

(४)

जीवन की प्रगाढ़ निद्रा में,
अतुल ज्योति सम दर्शन पर।
प्रणय सूत्र रत सरस हृदय को,
न्यौछावर करते उन पर॥

(५)

निशित कण्टकाकीर्ण मार्ग है,
दिव्य वह्नि की ज्वाला है।
कठिन क्लेश दारुण से पूरित,
'प्रणय पन्थ' सुनिराला है॥

यज्ञ में हिंसा

ले०—श्रीस्वामी स्वतन्त्रानन्द जी आचार्य उपदेशक महाविद्यालय लाहौर

अश्वालभं गवालभं संन्यासं पल पैतृकम्।
देवराच्च सुतोत्पत्तिं कलौ पंच विवर्जयेत्॥
[पाराशर स्मृति]

इस श्लोक को-जिसमें अश्व तथा गौ के कलियुग में मारने का निषेध किया है लिख कर ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में जो उत्तर लिखा है वह इस प्रकार है:--

"जब अश्वालंभ अर्थात् घोड़े को मार के अथवा गवालंभ गाय को मार के होम करना ही वेद विहित नहीं है, तो उसका कलियुग में निषेध करना वेद विरुद्ध क्यों नहीं?" ऋषि जी वेद के आधार पर अश्व और गौ मारने का सर्वदा ही निषेध करते हैं।

यदि नो गां हंसि यद्यश्वं यदि पुरुषम्।
तं त्वा सीसेन विध्यामो यथा नोऽसो अवीरहा

भावार्थ, जो गौः, अश्वः, पुरुष अथवा अवीर (दुःख न देने वाले) को मारे उसे सीसे की गोली से विध करो।

याज्ञकों ने भी जहां पशु मारने की क्रिया लिखी है वहां जिस प्रतीक का विनियोग किया है वह भी मारने का निषेध करती है। उनकी प्रतीक है "स्वधिते मैनं हिंसी" तो भी याज्ञक इस मन्त्र को पढ़कर इससे सर्वथा प्रतिकूल आचार करते हैं।

वेद को छोड़कर आज मैं शतपथ ब्राह्मण का एक पाठ पाठकों की भेट करता हूँ जिससे पाठकों को विश्वास हो जायगा कि शतपथ भी आचार्य्य दयानन्द का ही पक्ष पोषक है।

भृगुर्हवैवारुणिः। वरुणं पितरं विद्यापाणिमेने तद्ध वरुणो विदां चकारिति वैमा विद्यया मन्यत इति॥१॥

स होवाच। प्राङ् पुत्रक व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्ब्रूहि दक्षिण व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्ब्रूहि प्रत्यग्व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्ब्रूहोदग्व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तद्ब्रूहि तयोः पूर्वयोरुत्तर मन्ववांतर देशं व्रजतात्तत्र यत्पश्येस्तन्मा आचक्षीथा इति॥२॥

सह ततएव प्राङ् प्रव्रव्राज। एतं पुरुषैः पुरुषान्पर्वाषासा पर्वशः संभ्रश्चं पर्वशो विभजमानानिदं तवेदं ममेति स होवाच भीष्मवत भोः पुरुषान्वा एतत् पुरुषाः पर्वण्येषां पर्वशः संभ्रश्चं पर्वशो व्यभक्षतेति ते होचुरित्थं वाऽइमेऽस्मान मुष्मिंल्लोकेऽसचन्त तान्वयमिदमिह प्रति सचामहाऽइति स होवाचास्तोह प्रायश्चित्ती३ रित्यस्तीति का-ति पिता ते वेदेति॥३॥

सह ततएव दक्षिण प्रव्रव्राज। एतं पुरुषैः पुरुषान्पर्वाण्येषां पर्वशः संकर्तं पर्वशो विभजमानानिदं तवेदं ममेति स होवाच भीष्मंवत भोः पुरुषान्वा एतत्पुरुषाः पर्वाण्येषां पर्वशः संकर्तं पर्वशो व्यभक्षतेति

ते होचुरित्थं वाइमोस्मान मुष्मिंल्लोकेऽ सचन्त तान्वय मिदमिह प्रति सचामहा ऽइति स होवाचास्तीह प्रायश्चित्ती३ रित्य स्तीति का-ति पितैव ते वेदेति ॥४॥

सह तत्एव प्रत्यङ् प्रवव्राज । एदु पुरुषैः पुरुषांस्तूष्णीमासीनास्तूष्णी मासीना अदन्तीति ते होचुरित्थं वाऽइमेऽस्मानमु-ष्मिँल्लोके ऽसचन्त तान्वयमिदमिह प्रति सचामहाऽइति स होवाचास्ती ३ प्रायश्चित्ती ३ रित्यस्तीति का-ति पितैव ते वेदेति ॥५॥

सह ततएवोदङ् प्रवव्राज । एदु पुरुषैः पुरुषानाक्रन्दयत आक्रन्दयद्भिरद्यमानानस होवाच भीष्मं बत भोः पुरुषान्वाऽएतत्पुरु षा आक्रन्दयत आक्रन्दयन्तो ऽदन्तीति ते होचुरित्थं वाऽइमेऽस्मानमु० ॥६॥

सहतत् एवैतयोः पूर्वयोः । उत्तरमन्व-वान्तर देशं प्रवव्राजेदु स्त्रियो कल्याणीचाति कल्याणीचतेऽअन्तरेण पुरुषः कृष्णः पिंगाक्षो दण्डपाणिस्तेस्थौत ँ हेनं दृष्ट्वाभीर्विवेद सहेत्य संविवेशत ँ ह पितो वाचाधीष्व स्वाध्यायं कस्मान्नुस्वाध्यायँ नाधीशऽइति स होवाच किमध्येष्ये न किंचनास्तीति तद्वरुणो विदांचकारा द्राग्वाऽऽति ॥७॥

स होवाच । यान्वैतप्राच्यां दिश्यद्राक्षीः पुरुषैः पुरुषान्पर्वाण्येषां पर्वशः संव्रश्च पर्वशो विभजमानानिदं तवेदं ममेमि वनस्प-तयो वैतेऽअभूवन्त्स यद्वनस्पतीनां ँ स-मिधमादधाति तेनवनस्पतिन वरुद्धे तेनवन-स्पतीनां लोकं जयति ॥८॥

अथयानेतद्दक्षिणायां दिश्यद्राक्षीः । पुरुषैः पुरुषान्पर्वाण्येषां पर्वशः संकर्त पर्वाशो विभजमानानिदं तवेदं ममेति पशवोवै ते ऽअभूवन्त्सयत्पयसाजुहोति तेन पशूनवरुन्द्धे तेन पशूनां लोकं जयति ॥९॥

अथ यान्येतत्प्रतीच्यां दिश्यद्राक्षीः । पुरुषैः पुरुषांस्तूष्णीमासीनां स्तूष्णीमासी नैरद्यमानानोषधयो वैता अभूवन्त्स यतृणे ना-वज्यो तयति तेनौषधीरवरुन्द्धे तेनौषधीनां लोकं जयति ॥१०॥

अथ यानेतदुदीच्यां दिश्यद्राक्षीः । पुरुषैः पुरुषानाक्रन्दयत आक्रन्दयद्भिरद्य मानानापो वैता अभूवन्त्स यदपः प्रत्यानपति तेनापोऽव-रुन्द्धे तेनापोलोकं जयति ॥ ११ ॥

अथ यऽएते । स्त्रियावद्राक्षीः कल्याणीं चातिकल्याणीं च सयाकल्याणी सा श्रद्धा स यत्पूर्वामाहुतिं जुहोति तेन श्रद्धामवरुन्द्धे तेन श्रद्धा जयत्यथ यातीं कल्याणी सा श्रद्धा यदुत्तरामाहुतिं जुहोति तेना श्रद्धामवरुन्द्धे तेनाश्रद्धाँ जयति ॥१२॥

अथ य एने सोऽन्तरेण पुरुषः । कृष्णः पिंगाक्षो दण्डपाणिरस्थात्क्रोधो वैसोऽभूत्स यत्स्रुच्यप आनीय निनयति तेन क्रोधमव-रुन्द्धे तेन क्रोधं जयति सयएवं विद्वानग्नि होत्रं जुहोति तेन सर्गं जयति सर्वमवरुन्द्ध ॥१३॥ ब्राह्मणम् ॥४॥ [६ १]

भावार्थ-॥ भृगु अपने पिता वरुण के पास शिक्षार्थ गया वरुण ने कहा प्रथम पूर्वादि दिशाओं में जाओ और जो कुछ वहां देखो आकर बताओ। उसने ऐसा ही किया। वह पूर्व में गया तो देखा एक पुरुष पुरुष के अंगों को विभक्त करता है, दक्षिण में एक पुरुष पुरुष के अंगों के टुकड़े कर रहा है, पश्चिम में चुप चाप पुरुष को खारहा है, उत्तर में क्रन्दन करते हुए को खाता है। अवांतर दिशामें स्वरूपा स्त्री और कृष्णवर्ण पिंगज्ञ दण्डधर पुरुष को देखा जब पिता के पास आया तो वरुण ने पूछा क्या कुछ देखा? उसने क्रमशः वर्णन करके दुःख

प्रगट किया पिता ने कहा—सब कुछ ठीक है। उसने पिता से कहा आप समझाएं क्या तत्व है? वरुण ने कहा जो पुरुष के अंगों को विभक्त करना था वह वृक्ष की समिधाएं हैं, जो काट-कर बनाई जाती हैं। जो अंगों के टुकड़े करना था वह दुग्ध है। जो पशु के स्तनों से निकाला जाता है। तीसरे सूक्ष्म औषधियाँ चतुर्थ जल है स्त्री और पुरुष श्रद्धा और क्रोध हैं। यह समाधान सुनकर भृगु बड़ा प्रसन्न हुआ। ब्राह्मण अन्तमें कि—फल का वर्णन करता है।

"स य एवं विद्वान अग्निहोत्रं जुहोति तेन सर्व जयति सर्वं मवरुंधे'

जो इस प्रकार जानकर अग्निहोत्र करता है वह सर्वत्र विजयी होता है और सब को अवरोध करता है।

इस ब्राह्मण में साफ २ वर्णन है कि किसी अवस्था में यज्ञ के लिए पशुवध नहीं है। प्रथम ऐसे शब्दों का प्रयोग था जिनसे मांस व पशु मारने का विचार उत्पन्न हो सकता था परन्तु पश्चात् स्वयम् ही सूत्रकार ने उन शब्दों को साफ कर दिया है। वह काटना वृक्षों का और पशुओं का पय ही व्यवहार में लाने का विधान करता है, पशु मांस वा रुधिर का सर्वथा निषेध करता है और फल में बल से लिखता है जो कि कोई इस प्रकार जानकर यज्ञ करे वही विजयी होता है। इस लिए हम बलपूर्वक कहते हैं कि यज्ञ में पशु हिंसा नहीं है।

समझ की खूबी

[१]

चुने २ लच्छेदार शब्दों की सहायता से, चाहते विपक्षी को रुलाना है रुआब से।
'जीवन' परंतु जहां खोज होती त्याग की है, वहाँ नहीं होता काम केवल किताबसे।
आवश्यकता है जहां आज 'चंद' 'भूषण' की, लाज जाति-देश की न बचेगी जनाब से।
चढ़े हुए चोखे चौपदे पै बात झाड़ रहे, पैर किंतु नीचे नहीं डालेंगे रिकाब से।

[२]

देते हैं निदेश गहो आयुध न देर करो, आप दीखते हैं परेशान चक्षु चोट से।
चाहते हैं बहे रक्तधारा रणक्षेत्र बीच, किंतु आप बाहर नहीं होते हैं कोट से।
'जीवन' इन ढोंगियों से हमें बचावें ईश, जो हैं कटि कसे हुए लालच लंगोट से।
मारेंगे मरेंगे नहीं आकर मैदान मध्य, खेलेंगे शिकार सदा टट्टी हो की ओट से।

[३]

आप खुद खोजने का कष्ट भी करेंगे नहीं, अन्य का बताया हुआ मार्ग नापसन्द है।
भाई को लगाते गले होता है उदास चित्त, स्वागत विदेशियों का देता महानंद है।
'जीवन' जिन्हें है लगी द्वेष की लगन भारी, देश की लगन से जिन्हें घृणा अमंद है।
ऐसे हैं अनेकों जहां अभी जयचंद कहां, कैसे कहें नहीं हिंद भाग्य द्वार बंद है।

[४]

ऋषिवत हैं रिशवत-ग्रहण में सङ्कोच नहीं, उदर उदार नित्य पावन विशाल है।
बात हैं बनाते यही बहुत हमारे लिए, जीते कोई पक्ष किंतु यहां गोटी लाल है।
'जीवन' पचाने वाला चन्दा को पचाता ही है, लीलता न मीनों को क्या नकली मराल?
चोटी को बचावें कैसे मिलेगी लँगोटी नहीं, चूर किए देता चित्त रोटी का सवाल है।

[५]

जाती है जगाई आग यत्न से बुझाई हुई, कहा जाता स्वाहा २ बोलो सानुराग है
और अभी चिता जहां जोरी गई हाल में थी, कहा जाता भूलने को हाय वही बाग़ है।
'जीवन' विसारें खुशीराम को बताओ कैसे, मिटा नहीं अभी खूनेमदन का दाग़ है।
थाम लो कलेजा और फैसला सुनादो तुम्हीं, ठीक त्याग शत्रु का या बंधु से विराग है?

[६]

'जीवन' न फन्दे में ऐसों के फँस जाना, जो हैं भेद बीज डाले देते प्रेम-खेत में।
देखो हमें फूट व्यस्त देख हैं विहँस रहे, बैरी बैठे हुए कूट नीति के निकेत में।
आओ धावा करें कूट फूट-किला टूट जावे, दावा फेर देंगे फलगुच्छ दिखा वेंत में।
तभी है प्रशंसा मित्र क्षीर-नीर सम होके, विश्व को बतादें पद्म-पुष्प खिला रेत में।

—जीवन

संतोष।

ले०—श्री राजनारायण चतुर्वेदी 'आजाद'

पृथ्वी पर विपुल वारि राशि विद्यमान हैं किंतु चातक का उस ओर तनिक भी लक्ष्य नहीं है। मेघ-निःसृत वारि-बिंदु से ही उसकी तृष्णा निवारित होती है, चित्त परितृप्त होता है। मास के अन्त में पूर्ण राशि के सुधापान

उसकी तृप्ति होती है। मनुष्य की प्रकृति भी ठीक इसी प्रकार है। सौभाग्य से मैंने जिसे पत्नीरूप में ग्रहण किया था उसके चरित्र में यही गुण समधिक विकाश प्राप्त हुआ था। इसी अल्प संतोष द्वारा उसने सिद्धि लाभ की थी।

सम्पत्तिशाली मनुष्य की अपेक्षा जो संसार के भार से दबे हुए हैं जिन को संसारयात्रा के कठिन मंज़िल को पार करने की चिंता लगी हुई है वह इस गुण का कहां तक समादर करते हैं यह लिखकर बतलाना कठिन है ऐसी गुणवती भार्या पाकर वह अम्लान बदन से संसार के समस्त क्लेश सह सकते हैं, एवम् संसार की अवस्था उन्नत करने में सक्षम हो सकते हैं। यदि कोई संसार में सुखी होने की इच्छा रखता हो तो मैं उसे अकपट हृदय से यह सलाह दे सकता हूँ कि वह ऐसी ही गुणवती भार्या का पाणिग्रहण करे अन्य गुणों के प्रति लक्ष्य करने की कोई आवश्यकता नहीं है।

मैं नितान्त हत भाग्य हूँ नहीं तो इस भांति क्षोभानल में दग्ध न होना पड़ता। पहिले जिस समय संसार क्षेत्र में प्रवेश किया उस समय उसका महत्व देखकर स्तमित हो गया। मुख पर चिन्ता की काली छाया छा गई--हृदय में रह रहकर चिन्ता की लहरें उठने लगीं कि इतनी अल्प आय से क्योंकर संसार संचालन करूंगा। किन्तु उस देवी ने मेरे हार्दिक भाव समझ हंस कर कहा —चिन्ता किस बात की—तुम जितना लाओगे मैं उसी से संसार चला लूंगी। देखना! लक्ष्मी स्वयं आयेगी, उस समय हृदय में कितना साहस, कितना बल हो आया था—नहीं कह सकता। निराशा के अथाह समुद्र में डूब रहा था। सहसा किसी ने आशा के उच्च मंच पर बैठा दिया। उसी घड़ी, उसी क्षण से शरीर के नस २ में जागृति की लहर बहने लगी। नई उमंग से फिर संसार क्षेत्र में कार्य्य आरम्भ किया।

रेल के ज़नाने कम्पार्टमेंट में दे समवयस्का एक साथ यात्रा कर रही थीं। उन में एक तो नाना प्रकार के बहुमूल्य अलंकार व आभूषणों से भूषित और दूसरी मामूली जेवरों से सुसज्जित थी। पहली तो इतनी सौभाग्यशालिनी होकर भी म्लान मुख नीरव —किन्तु दूसरी सरलता व आनन्द में निमग्न। पत्येक आरोही के संग हंस २ कर बातें करती थी। पहली स्त्री को देख दूसरी ने कुछ विस्मित होकर पूंछा कि "बहन, तुम इतने समीप बैठ कर भी मुझ से बातें क्यों नहीं करतीं? तुम्हारा मुख इतना मलीन क्यों है? मैं तुमको बिना हंसाये न छोड़ूंगी।"

पहली—(मुस्कराकर कातरभाव से) क्या बताऊं बहन! हंसी कहां से लाऊं? तुम्हारी तरह यदि मेरा भी भाग्य होता तो हंस २ कर ढेर लगा देती!

दूसरी—(साश्चर्य्य) यह क्या बहन! तुम इतने सुख सम्पत्ति की अधिकारिणी हो! मुझ गरीबनी से तुम्हारी तुलना क्योंकर हो सकती है!

पहली—(दीर्घ निश्वास खींच कर) माता पिता चाहे कितने ही धनी क्यों न हों-यदि प्रेम नहीं तो सब वृथा है। स्त्री के लियेपति प्रेम ही गहना है, आभूषण है एवं जीवन का सुख है। इस लिये मेरी अपेक्षा तुम सहस्रगुणा अधिक सौभाग्यवती हो। तुम्हारे पास सांसारिक दृष्टि से धन नहीं है बहुमूल्य अलङ्कार नहीं हैं-किन्तु फिर

भी कुछ दुख नहीं है। पति प्रेम का आस्वादन न करने से तुम्हारे मुख पर भी इतनी हंसी इतनी प्रफुल्लता न रहती। क्षुधा शान्त होने पर अमृत भी विष के समान हो जाता है। तुमको अलङ्कार की क्या आवश्यकता है?

इस घटना के पश्चात् जब जेवर बनवाने की बात चलती तो वह हंस कर उत्तर दिया करती:—मुझे भूख नहीं है, मैं तुम्हारा माल पुआ नहीं चाहती।

क्षुधा की निवृत्ति क्योंकर हुई यह विवाह से पूर्व एक दिन पुरोहित जी ने गद्गद स्वर से कहा था—बेटा! मैं अब वृद्ध हो गया हूं अधिक दिन कदाचित न जियूंगा आज जी में आया कि तुम से एक बात कहता जाऊं। देखो, भूलना मत, मैंने अपने जीवन मे अनेक विवाह करवाये हैं। कितनों को हंसते हुए देखा है और कितनों को रोते हुये भी देखा है। जगत में मनुष्य सदा अपनी अपेक्षा उत्तम वस्तु ही ढूंढ़ता है। और उसे पाकर अपने भाग्य को सराहता है। सम्भव है तुम राज कन्या की ओर निहार रहे हो किन्तु वह तुम्हारी ओर दृष्टिपात भी नहीं करती। किसी अन्य राजकुमार की ओर निहार रही है, और वह देखो! दूसरी तरफ एक गृहस्थ कन्या तुम्हारे रूप पर विमुग्ध होकर कैसे सतृष्ण भाव से तुम को देख रही है। तुम्हारा उसकी ओर तनिक भी लक्ष्य नहीं है। कहो! अब तुम किसको चाहते हो? यदि रोने की इच्छा हो तो आओ! तुम्हारा उस राजकुमारी से मिलन करादें और यदि जीवन को सुखमय बनाने की आकांक्षा हो तो उस गृहस्थ कन्या की उपेक्षा मत करो। तुम पुरुष हो। मानसिक दुःख क्षोभ एवं दुश्चिन्ता को सहस्रों उपाय से दूर कर सकते हो किन्तु नारी जाति के लिये स्वामी भिन्न और कोई उपाय नहीं है। पति प्रेम की तृष्णा निवृत न होने से उसके लिये सब वृथा है। नारी जाति को उसी सुख की आवश्यकता है। जो मनुष्य प्रेम रूपी मदिरा पिलाकर रमणी को वशीभूत करता है पतिव्रता स्त्री का स्वामी कहलाने योग्य है।

मैंने कुछ हंसकर उत्तर दिया "आपकी राय मे जो जितनी कुरूपा हो वह उतनी ही अधिक पतिव्रता होगी। सौंदर्य के प्रति आपको इतनी घृणा क्यों है? पुरोहित महाशय तनिक गम्भीर होकर बोले—तुम बालक हो, मेरी बात का मर्म ग्रहण नहीं कर सकते। सौंदर्य्य के लिये सौन्दर्य्य की आवश्यकता है।

राजकुमारी के लिए राजकुमार ही चाहिये। काग और इस का सम्मिलन नहीं हो सकता। इस नियम को व्यतिक्रम करने से एक ओर क्षोभ दूसरी ओर अशान्ति उत्पन्न होती है। अतुल रूप वाली रमणी से विवाह करके उसके हृदय मे क्षोभ उत्पादन करने का तुम्हें कोई अधिकार नहीं हैं। क्या उसके द्वारा सुखशान्ति प्राप्त करने की इच्छा रखते हो? स्वार्थी मनुष्य इस पर ध्यान नहीं देता। इसी से संसार में नित्य प्रति नाना प्रकार के अनर्थों की उत्पत्ति होती है।

मैंने फिर कहा—प्रकृति व प्रवृति अच्छी न होने से कुरूपा भी अपने को परम रूपवती समझ कर योग्य स्वामी का अनादर करती है। अस्तु, जो कुछ हो, आपके साथ मुझे तर्क करने की इच्छा नहीं है। केवल

इतना ही पूछना चाहता हूं कि इस विवाह से सुखी हो सकूंगा ?

उन्होंने उत्तर दिया "हां ! अवश्य हो सकोगे वह तुम से विवाह कर अपने को परम सौभाग्यवती समझेगी। तुम विद्वान हो, तुमने जो विद्या प्राप्त की वह शहर में सामान्य समझी जाने पर भी ग्रामवासियों के लिए आदरणीय वस्तु होगी। तुम विद्वान गुणवान एव स्वरूपवान हो तुम्हारे गुणों की प्रशंसा अपरजनों के सुनकर उसके हर्ष का सीमा न रहेगी। उच्चवंशीय होने के साथ २ जिस समय तुम्हारी उच्च शिक्षा की प्रशंसा उसके कानों में पड़ेगी उस समय तुम से बढ़ कर भाग्यशाली संसार में कौन होगा।

पुरोहित महाशय से यह भविष्यत वाणी सुन कर यही समझा था कि कदाचित अपने स्वार्थ के लिये ही ऐसा कर रहे हैं किन्तु जिस समय उनका कथन अक्षरशः सत्य प्रमाणित हुआ तो उनके प्रति कितनी श्रद्धा व कृतज्ञता उत्पन्न हुई थी, उसका वर्णन लेखनी द्वारा नहीं हो सकता।

आनन्दमयी के प्रभाव से विषाद एवं क्षोभ द्वारा कभी दुखित होना नहीं पड़ा। निराशारूपी अन्धकार उसी आनन्दमयी की ज्योति से निराकृत हो गया, इस भाव-मय जगत के मध्य में भाव एवं कल्पना के आवेग से अवश हो गया हूँ। गंभीर मेघ गर्जन में वीणा की झङ्कार सुनी है। अमा-निशा रूपी अन्धकार में प्रकृति सुन्दरी को हंसते हुए देखा है। इस प्रशान्त जगत के मध्य आनन्द-समाधि में मग्न था। बाहरी व्यापार समाधि भंग करने में सक्षम न हो सका। प्रेम रूपी हास्य से आनन्दरूपी धारा पतिनियत बहती रही। समझा था इसी भांति समस्त जीवन व्यतीत कर दूंगा। शांति तट पर जीवन रूपी निकुंज वन में प्राण विहङ्ग इसी भांति चिर दिन प्रेम राग गाता रहेगा। विषाद रूपी व्याध-वहां प्रवेश न कर सकेगा। भाव में यहां तक मग्न हो गया कि जीवन श्रोतकी ओर लक्ष्य करने का ध्यान ही नहीं हुआ। आज उसी भाव राज्य में आकर विषाद सागर के तट पर बैठा हुआ रुदन कर रहा हूं। अतीत स्मृति का ध्यान आते ही हृदय कांप उठता है। हृदय पाषाण से भी अधिक कठोर हो जाने पर यह दुःख उसके लिये असह्य है। मुझे सान्त्वना या प्रबोध की आकांक्षा नहीं है। इच्छा है तो यही कि काल श्रोत मुझे अनन्त सागर की ओर कब खींच ले जायगा।

मोहिनी के आंसू ।

ले०—श्रीयुत् सन्तलाल दाधिमप वैद्यराज ।

(गतांक से आगे)

‡

सरला ने हर बार रोका, परन्तु शंकर को अपने चौथेपन का हर समय ख्याल रहने लग गया था बात बात में वह अपनी मृत्यु का स्मरण करने लग गया था, इस लिए उस से रुका न गया आर इसी कारण सरला ने कुछ अधिक असहमत न हुई। जैसे जैसे सूर्य देव का उदयाऽस्त होता रहा वैसे वैसे ही विवाह दिन भी निकट आने लगा। इस समय तक दोनें बालक १८ और २० वर्ष की आयु के हुए। इन चार वर्षों के मध्य में दिन रात जैसा वृहदन्तर पड़ गया !

—निस्सन्देह शरीर से दोनें हृष्ट पुष्ट हो गए, बलवान-बुद्धिमान हुए, किन्तु पिता के आगे अभी बालक ही बने हुए हैं। वैसे तो भला उन पर शंकर नाराज़ ही क्यें हो ? दिन भर वे दुकान का काम करते रहें, शेष समय दोनें सेवा मे बितादें। पर फिर भी यदि शंकर उन्हें किसी बात पर झिड़क देता बिल्कुल बच्चों की भान्ति रोने को बैठ जाएँ। वैसे स्वस्थ्य बड़ा उत्तम हो भी क्यें नहीं—अनेकविध लोक-विपत्तियां पढ़ाई में होतीं देख, चार वर्ष से स्कूल से हटा लिया। तब से पढ़ाई की चिन्ता नहीं। मन लगा कर जो काम सीखने पर डटे, कुछ विद्या-बल था, बस-गिलोय और नीम चढ़ी' 'सोना और सुवासित' दानी और निरभिमानी' दो गुण ऊंचे ! उत्तरोत्तर कौशल से प्रसिद्ध कैसे न होते ?

जब कोई काम बनाते तो पिता को दिखा पूंछते :—

"क्यें जी, ऐसे हीं करें-न" तब तो शंकर उसमें अपनी समझ काम न करती देख, लज्जित सा हो, हक्का बक्का-सा हो रहता ! वह यह न समझता कि मैं अन्त्यज

‡

सूचना आजकल हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में स्वार्थीजनों द्वारा अत्याधिक कण्टकाकीर्ण कूड़ा फेंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक 'ज्योति के शृंखलाबद्ध अंकों का अवलोकन करें। प्रत्येक में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने न कराने के विषय में 'श्रीरमेश औषधालय, घास मण्डी लुधियाना के पते पर अपनी सकारण शुभ-सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिए प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं, यह निश्चय हो सके।

लेखक।

हूँ, प्रारब्ध का औत्कर्ष्य देख, शांति सुधा पी-पी कर, परम सन्तुष्ट होता। पहले कमाने वाला शँकर एकाकी ही था, अब उसी घर में एकसे-एक बढ़कर दो और हुए। त्रिगुण आय होन से शंकर के घर के आगे आज एक भैंस और गय्या खड़ी हुई अपने आप पूंछ के फटकारे से मक्खियां उड़ा रही है! पास पड़ोसियों को—सारे बड़े को छाछ लाभ सबको सुख !!

इन चार वर्षों मे शङ्कर की गृह गरिमा, उसके सजातीय जनों की विचार शक्ति के बाहर हो चली। सीधे साधे भोले भाले शँकर के सजातीय, उसके वैभव के अनुमान लगाने में अशक्त हुए। अटकल में कोई कुछ विचार छोड़ता है, कोई कुछ। शँकर भी लोगों के भ्रम को ताड़ गया, वह मन ही मन इस से खुश होता! कहता कि—अच्छा है भ्रम बना रहना उचित है!" पूछने पर लोगों को शंकर कहता कि—"भय्ये, ढोल की पोल सब ओर से बन्द रहे, तभी उसका बोल दूर तक जाता है! तभी लोगों को भला लगता है! शुभ-कार्यों में सब से प्रथम बुलाया भी तभी जाता है! भय्ये, पोल से बढ़कर दुनिया और क्या है?"

* * * *

मेरठ प्लेटफार्म से बाहर हो, गड्डे किराए कर, उन पर कुल सामान लदवा, उसी पर बच्चों को बिठाल, स्वयं बरातियों के संग शंकर पैदल चल पड़ा। चौदह पन्द्रह कोश की दूरी पर वह ग्राम था जहां इन्हें मध्यान्ह ढलते ढलते अवश्य पहुंच जाना था। प्रसन्नता और त्वरा सहित यह लोग चलते चलते मध्यान्होत्तर (चार बजे के समय) वहाँ प्राप्त हुए। ग्राम के इस ओर ही गड्डे ठहराए। बरातियों ने अपनी २ गठरी खोल, कपड़े बदले। सब तैयार हो चल पड़े। गांव के उस ओर मोचियों के घर थे। वहां प्राप्त होने के लिए, मार्ग गांव के मध्य में से जाता था। यह सब भी गड्डों को आगे किए गांव के बीच से चले। अहा! वह दृश्य कैसा रम्य प्रतीत होता था—अपने-अपने हाथ के बनाए जूते; गाढ़े की धोतियां, गाढ़े के ही कुरते, गाढ़े की ही कमरियाँ, पगड़ियाँ! कुछ एक नवयुवकों ने वसन्त का साम्राज्य देख कर, वसन्ती हाथों (?)—से विशेष शोभा बढ़ादी! प्रेमोल्लसित—हृदय हो, यह पगड़ियाँ सब अपने हाथों रंगी हैं—ऐसा प्रतीत होता है! सम्भव है, मनु भगवान के "सर्वं परवश दुःखं, सर्वमात्मवशं-सुखम्!"—

इस परमोपदेश ने इन के हृद्भवनों में स्थान प्राप्त किया हो? हाथों में तैल-धूआँ से कृष्णीकृत वंश यष्टिकाएँ! क्यों न हो—उद्योगियों का ही तो यह दल है, आलस्य पुञ्जों का नहीं! अस्तु! गाँव के उस ओर चट्टान में जा, डेरे डाले!

* * *

प्रायः इस गाँव में क्षत्रियों का बलवान संघ है। आज यहाँ के एक प्रतिष्ठित राजपूत ठाकुर साहिब की पुत्री का विवाह है। बरात आने वाली है। ठाकुर साहिब एवं अन्यान्य सम्बन्धी जन बरात की प्रतीक्षा में त्वरा-युक्त प्रबन्ध-लीन होरहे थे कि नाई ने आकर, इस प्रकार सन्देश सुनायाः—

"अन्नदाता जी, गाँव में से बरात गुज़र गई!"

ठाकुर—(विस्मय से) "किस की?"

नाई—(बेड़े की ओर कर संकेत कर) "इन मोचियों की"

ठाकुर—(सहसा उत्तेजित हो "गुज़र गई ? ओह ! आख़िर ढेढ़ ही तो हैं- न (फिर नाई से) "क्यों रे, प्रताप कहाँ है ?"

नाई—"बाहर साम्यिाना बाँध रहे हैं।"

ठाकुर साहिब यह सुन, बाहर निकले और बिगड़ कर, प्रतापसिंह से बोले-" क्यों रे, तुम कुछ भी ध्यान नहीं रखते ? तुम्हारे सरदार गाँव में से निकल चुके ! "

प्रताप—(अपने अग्रज बन्धु की ओर देख) " कौन ? "

ठाकुर—" ढेढ़ बरात निकाल लेगए ! "

प्रताप—(मोचियों की ओर अङ्गुली संकेत कर) " इन की ? "

ठाकुर—" हाँ, इन की बरात ! '

प्रताप—(क्रोध से अरुण हो) ' जो आज यह न समझे तो कल को शिर पर से राह करेंगे ! "

ठाकुर—" और क्या ? " (फिर कुछ सोच) " चलो, अभी मार मार कर, शिर गञ्जा करदो ! होश ठिकाने आजाएँ ! "

* * *

शंकर सजातियों के संग एक छोटी सी दरी पर, बैठा हुक्का पी रहा था। हुक्का पीने वाले हुक्केको चारोंओर से घेरे मण्डलाकार बैठे थे। सानन्द बातें करते थे कि अचानक शंकर की कमरमें 'धड़' से एक लट्ठी पड़ी जिसके मारे शंकर की कमर लचक गई। किन्तु साहस कर झट शंकर खड़ा हुआ और देखा कि पीछे पन्द्रह राजपूत लकड़ियां ताने खड़े हैं। त्रस्त हो, हाथ जोड़, बोला:—

" क्यों--अन्नदाता जी, हम तो आप के बाल बच्चे हैं !

—इसी अन्तर में प्रताप सिंहने एक लट्ठी और उठाई कि वीरेन्द्रसिंहने उसे रोक, कहा-"पूंछो तो, लम्डे का बाप कौन है ? " तब शंकर कांपता हुआ बोला--हुजूर के पैरों की ख़ाक का है, माई बाप ! कौन ग़लती हुई ? कह झुक पैरों में शिर रखने लगा। ठाकुर वीरेन्द्र सिंह वृद्ध शंकर की ओर देख दयार्द्र हो, अपनी हाथ की लकड़ी से ज़रा उसे ठुकरा कर, बोले-"उठ, उठ ! यह कहो- इधर (घर के आगे) से बे-पूंछे बरात ले आने को तुम्हें किसने कहा था ? "

शंकर गिरी हुई पगड़ी उठा कर, बगल में ले, कम्पित कर-बद्ध--गिड़ गिड़ा कर--बोला--"न किसी ने कहा, न रोका ही हुजूर ! " (फिर पैरों की ओर झुक) " अब तो माफ़ करो, माई बाप ! "

ठाकुर वीरेन्द्र सिंह नाक फुला, उस में से क्रोध-तप्त वायु को बाहर निकाल, बोले—"ढेढ कहीं के, जो जी चाहे कर लेते हैं ! " और प्रताप का हाथ पकड़ सहागत-जनों को भी संगले गाँवकी ओर लौट चले।

पीछे से शंकर ने आस पास के बरातियों से पूछा -"अरे, कुछ और तो गज़ब नहीं कर बैठे हो ? " परञ्च कुछ एक भोले बराती इस बात को समझे भी नहीं थे कि ' गाँव के अन्दर से बरात नहीं लानी चाहिए थी। आज ठाकुर साहिब की लड़की का विवाह है। और इनका मकान रास्ते के सामने ही है, जिधर से हम, आगए ! " विचारे त्रस्त-हृदय सब बोल पड़े--"नहीं तो"

—शंकर सुन, "तो बस, गांव के अन्दर से नहीं, आना चाहिए था ! " कह, झपट कर बच्चों को देखने, गड्डों की ओर चला, परञ्च वे बाहर जंगल गए हुए थे !

* * *

गङ्गा—" तू मुझे छंग (संग) ही ले

चलना, जब तू छुछलाल (सुसराल) चले।
सरस्वती—(झिड़कती हुई) "अच्छा-अच्छा, पगली !"

इस प्रकार जब दोनों बहनें सात और दश वर्ष की थीं, तब इन्हें इस तरह बातें करतीं इनकी माता देख, खूब ही हंसा करती पर भविष्य का कुछ पता न था। पिता न होने पर भी पितृवत् इनके चाचा के द्वारा इनका लालन पालन हुआ था, वह अबतक फतेहपुरी, दिल्ली' में एक जूतों के व्यापारी के यहां ठेके पर काम करता रहा। उसने यही उत्तम समझा।

इधर दोनों बहिनों में भी प्रेम की मात्रा उतनी ही थी, जितनी दोनों भैय्यों (कुन्दन माधव) में। इस समय इनकी अवस्था बारह और पन्द्रह वर्ष की थी। जोड़ी ऐसी बनी जैसी शंकर को सम्भावना भी न थी। अहा! सारे ही सुख के साज सजे!

सरस्वती घर की इञ्चार्ज हुई। रसोई का काम, लीपना, बुहारना, घर की सफाई, घर के सारे सामान की घटा-बढ़ी की चिन्ता आदि सब बातें सरला अपने से उसे कहीं अधिक उत्तम देखने लगी। गङ्गा केवल अपनी बड़ी बहिन, जो अचानक जिठानी बन गई है, और सास, इन दोनों को नहाते समय गात मल देती, और शयन काल में इन की देह दबादेती; बस, बारह २ घंटे के पश्चात दो ड्यूटियां देकर, शेष समय में बच्चों वाले खेल खेलकर, हसा-हंसाकर पेट फुला डालती। उस समय सरला का मनोमन्दिर संतोष से कैसा परिपूर्ण हुआ—जैसे धर्मात्माओं का उनकी इच्छानुकूल धर्मराज्य की स्थापना से भरता है! जिस भांति कर्मवीर सफलता प्राप्त कर, अपने को कृतकृत्य मानता है, शंकर भी वैसे ही कृतकृत्य सा हो बैठा!

अब शंकर ने सारी चिन्ताएं छोड़ दीं हिंदी अभ्यास अच्छा होने के कारण स्थूलाक्षरों की रामायण ले, पढ़ता रहता है। हुक्का पीता रहता है। अब चिलम भी नहीं भरनी पड़तीं, इसलिए कि गंगा तम्बाकू जलने नहीं देती, पहले ही ताजा कर रख देती है।

शौक लगा, सास से दोनों बहनों ने कसीदा निकालने का काम सीखना आरम्भ किया। बुद्धि दोनों की सुतीक्ष्ण थी अतः कुछ ही दिनों में नैपुण्य प्राप्त किया। अब तो तीनों मिल बैठतीं और "कौन संझा तक अधिक काम करे?" यों परस्पर दत्तचित्त हो, प्रतिस्पर्धा से बहुत कुछ काम कर डालतीं!

शंकर ने मकान की तंगी देख, दो कोठे और बनवा दिये। आगे उनके छप्पर डलवा, अन्दर सफेदी करवा, दोनों के रहने के लिए तैयार करवादिये। एक दिनकी बात है, शंकर खाना खाते कुन्दन और माधवसे कहने लगा-'भय्ये, काम तो ऐसे ही होता रहेगा, तुम दोनों बहुओं को दो २ घन्टे दिन में पढ़ाया करो। देखो न, साल भर इन्हें यहां रहते हो गया अभी भी 'जिनावर' कहती हैं, 'जानवर' कहना ही नहीं आता! 'मखमल' का 'मुखमल' कहती रहती हैं। भय्ये, इनकी पशुता दूर करो!' यह सुन दोनों लज्जित हुए परन्तु "गङ्गा को आना ही था-भागीरथ को यशोलाभ!"—इस जनश्रुति के अनुसार अब स्वतन्त्रता-सी प्राप्त हुई। चाहते तो पहले ही थे परन्तु अब स्पष्टतया पिता की आज्ञा मिल गई, एतदर्थ अपूर्व—औत्सुक्य-परता छागई!

दूसरे दिन की बात है, शंकर किसी कार्य-वश शहर गया था वहां से याद कर दो वर्ण-माला की पुस्तकें ले आया और दोनों बहुओं को दे, बोला—"अक्षर सीखना

शुरु करो और इन्हें झटपट समाप्त करने की चेष्टा करो। जब चिट्ठी पत्री लिखने, रामायण पढ़ने लगोगी, तब दोनों को सोने की अरसियां और सोने की अंगूठियां बनवा दूंगा।"

अब बहुओं की प्रसन्नता का क्या ठिकाना? दोनों की सुतीक्ष्ण बुद्धियां, चढ़ता उत्साह पीछे से लोभ का धक्का, सामने से प्रियतम मनोहर मूर्तियां का बैठकर, पढ़ाना! फिर क्या था—कुछ ही दिनों में जा, रामायण के हाथ मारा!!—एक दिन रात के १० बजने के समय अपने छोटे से परन्तु सुभूषित एवं सुसज्जित कमरे में गंगा ने डबल बत्ती वाली सामने दीवार पर लगी 'दीवारगिरी' तेज कर, कमरे में धूप-सा प्रकाश फैलाया हुआ था। गङ्गा स्वयं हलके अंगूरी वर्ण की धोती पहिने, दीवारगिरी की ओर मुख कर आराम कुर्सी पर निशंक लेटी हुई, अपने स्वाभाविक मृदुल मनोहर स्वर को और भी मन्द—मधुर बना, आज के पाठ को पढ़ने लगी। उस के प्राकृत-स्वर में मधुरता, मनोहरता एवं आकर्षण कुछ कम नहीं था। तिस पर स्वतन्त्र ध्यान से गाई हुई चौपाई, माता के पास भोजन करते हुए माधव के कान तक पहुंची। उसने माधव को उसी समय कमरे में उपस्थित होने को बाध्य किया। उसने हृत्तन्त्री के तार हिला दिये। वह सहसा व्यग्र हो उठा। इधर उधर ग्रास ले पानी पी चट अपने कमरे की ओर चला धीरे से द्वार के किवाड़ें खिसका, धीरे ही निश्शब्द-पाद कुर्सी के पीछे जा छुपा, उसने तिरछे होकर झाँका भी—उस समय गङ्गा का मुखाम्भोज, डबलबत्ती वाली 'दीवारगिरी' का पूर्ण प्रकाश पड़ने से, बाल-सूर्य-सम तप्तमा रहा था। वह आज्ञानावस्था में उसी तरह निश्शङ्क हुई लेटी रही और चौपाई पढ़ती रही। उस काल वह इस चौपाई को बड़े ही धैर्य के साथ, सुदीर्घ, सुस्पष्ट, एवं सुमधुर-स्वर में गा रही थी:—

"जय जय जय गिरिराज-किशो·····री।
जय महेश-मुखचन···चन्द····· ॥

—तब पीछे से माधव ने:-

"····· ·····
····· ·····चन्द्र-चको···री ॥"

कह, पूरी कर दी। अब तो गंगा झट उठ खड़ी हुई। माधव की ओर देख लज्जित सी हुई। होटों पर शुष्क हंसी ला, बोली:—

"कितनी देर के खड़े हो!"

यह सुन, माधव ने उसके मुख की ओर दृष्टि डाली। उसे उसके मुख-मयङ्क पर तब कुछ और ही आभा प्रतीत होने लगी। धोती की चौड़ी-काली-किनारी ने उस के गौर-मुख-मण्डल के चारों ओर हो, अकथनीय शोभा बढ़ादी थी। उसे देख माधव उस समय सारे संसार को भूल गया। आप उस कुर्सी पर बैठ गया और उस का हाथ अपने हाथ में ले, खैंच, पास ला बोला:-

"अभी ही तो"

गङ्गा—"तो ऐसे चुप के से क्यों आए?"

माधव—"हम ने सुना, चलती, चलती गाड़ी खाँचे में अटक गई, सो निकाल ने चले आए। क्यों, न आते क्या?"

तिस पर गङ्गा लज्जित हो, बोली-"वाह! आते क्यों-न?"

माधव—"तो अच्छा, आगे पढ़ो। पर पढ़ना वैसे ही स्वर से"

गङ्गा—[दो-तीन बार शिर हिला, होंठ पिच का] "न, पढ़ दूंगी। वैसे शरम आती है।"

माधव—(शिर के संकेत से) "वाह! शरम कैसी? दादा भी तो ऐसे ही पढ़ते हैं-न?"

गङ्गा-"उन्हें देखही मुझे गाना आया है। परन्तु मिले हुए अक्षर अभी मुझ से साफ़ नहीं पढ़े जाते। अब यही 'चन्द्र चकोरी' शब्द था-तीसरी बार पढ़ने से साफ़ होता!"

माधव—"यह कमी भी हट जाएगी। अच्छा, अब उसी तरह फिर सुनाओ तो, खाना खाते समय जब तुम्हारी चौपाई सुनी थी ईश्वर जाने, हम तो तभी हृदय-हीन-से हो गए थे!"

गङ्गा—[एक दम अपना शिर माधव के वक्ष पर रख] "अजी-हाँ!

तब माधव उस का अधरोष्ठ ज़रा पकड़े कर, बोला-

"सच ही, सच!"

कुछ क्षण के उपरान्त स्वामी की छाती में छुपे हुए मुख को ज़रा रगड़ कर, गङ्गा बोली—"तुम चाहते नहीं कि मैं पढ़ जाऊं"

तब माधव अपने दोनों हाथों से उस के मुख-मयंक को ऊपर को प्रकाश के सामने अपने मुख के पास खेंच, ला, बोला:—

"हट!"

गङ्गा—(बल से छुड़ा कर) "सच ही, दादा जी ने कहा—तब पढ़ाने लगे हो।"

माधव—"अरी, जी में तो बहुत पहले से थी पर ...."

बात समाप्त न होने दी, बीच में ही चट गङ्गा बोल पड़ी "देखो, बहिन जी अंग्रेजी पढ़ रही हैं। चौथी किताब भी आधी से अधिक खतम कर चुकीं!"

माधव—"अरी, अंग्रेजी में क्या धरा है? उस में ऐसी किताबें थोड़ा ही हैं-जैसी रामायण!"

गंगा-(गुनगुना कर) "नहीं, जरूर पढ़ूंगी"

माधव—(शीघ्रता से) "अच्छा, फिर कल से ही सही।"

गंगा तिस पर "अच्छी बात" कह, आगे रामायण का पाठ पढ़ने लगी। पढ़ने के कुछ देर पश्चात् पुस्तक सिराहने धर, अपने पलंग पर चित लेटे माधव के वक्ष पर, आप भी चित्त हो, शिर धर, बोली-"अच्छा, एक बात पूछती हूं, उत्तर दोगे?"

माधव—(सम्भ्रान्त-सा हो) "क्या बात?"

गम्भीरता से गंगा ने कहा-"तुम मुझे धमकाते क्यों नहीं। मास्टर तो धमकाते हैं, मारते हैं, तुम्हें भी मारना चाहिए?"

अब की बार माधव हृदय से हंस पड़ा। उसके दोनों हाथ अपने गले में डाल बल-पूर्वक उसका मुंह अपने मुख के पासला स्निग्ध-कपोलों पर प्रेमाङ्कुल कर, बोला-"तुम्हें क्या धमकाऊं? कुछ काम भी धमकाने का करो?"

गङ्गा निश्चल-निर्वाक् हो, बहुत देर तक वैसे ही पड़ी रही।

* * *

यह न अपना आदर गिनती है, न निरादर। जनता के न चाहने पर भी वर्ष में एक दौरा इस प्रान्त में लगा ही लेती है! निर्धन धनवान का, विद्वान् मूर्ख का, बालक जवान वा बूढ़े का स्त्री वा पुरुष का न विचार है। तेरा अभद्राऽगमन सुन, गाँव, कस्बे और शहर खाली हो जाते हैं।

हा अदेहे, दुष्ट, जनपदोध्वंसिनि! (प्लेग!) क्या यम की मृत्यु हुई वा वह असाध्य-व्याधि ग्रस्त हो अपने कार्य करने में अशक्त हुआ? तू किस के रिक्त स्थान पर नियुक्त हुई है? वा यमकी स्वयं से बका बनी है? निर्दयतरे! मानव रक्तचूषक दुश्शासकों[1] को भी तूने मात दिखादी! कम से कम वे निर्धनों के आगे तो लाचार हैं! मुर्गों से छोटे जीवों के तो वे ग्राहक नहीं होते! तू तो घर के चूहों तक की ग्राहक है!

निर्घृणतरे! ईश्वराज्ञा से यदि तू भारत के मनुष्यों की वृद्ध-संख्या को न्यून करने के लिए भी नियुक्त हुई हो तो संस्कारों के रोकने का भी तेरा निन्द्य कर्म क्यों है? तेरे भय से भीत जन तेरे हत-शवों की अन्येष्टि तक न कर पाते हैं। हा! दाह जैसे संस्कारों के रोकने में न जाने तेरा क्या अभीष्ट है? सम्भव है तू अपने निर्घृणतरस्वभाव का परिचय करा रही हो? गर्हिते! जनता कैसे न समझेगी कि "नगर-रक्षक" उपाधिधारी अधिकारी तेरे ही चेले हैं! तूने ही उन्हें शव दुर्दशा करने का पाठ पढ़ाया है!!

अवश्य शंकर वृद्ध था। परन्तु देह-बल में तरुणों का भी मान मार्दक था! चौंसठवाँ वर्ष होने से ही क्या है-वार्द्धक्य लक्षण एक न दीख पड़ता था! सरला को दोनों पुत्र नेत्रों की भांति सहायता देंगे, टांगों के सदृश चलाएंगे, हाथों के समान आवश्यकताएं पूरी करेंगे, सही। परन्तु उसका हृदेश तो हृदय-हीन-सा होगया! पाणि-ग्रहण के समय उपाध्याय ने अग्नियोग से दोनों के अन्तस्तल (हृदय) को एक कर दिया था!!

शंकर कभी गृहणी को छोड़ विदेश न गया था क्यों कि सरला उसके बिना रह न सकती थी; परन्तु अब तो काल-पाश-बद्ध शंकर निर्मोह हो, अबला सरला को पुत्रों के आधार पर अकेली छोड़, सदा के लिए वियुक्त हुआ! शंकर के परलोक-प्रयाण करने पर, सच पूछें तो सरला का जीवन निस्सार होगया! यह सब किया महामारीने!!

आज तीसरा दिन है। प्रेम-वश शंकरने दो गुथलियों में कुछ भेजा है-ऐसा प्रतीत होता है। बड़ी माधव के शिर पर है तो छोटी कभी सरला के गले में और कभी कुन्दन के गले में लटक जाती है। यह जो भी कुछ भेजा है, भेजा है तब जब सब अन्तिम रुलाई रोचुके! आ-जन्म के सञ्चित अश्रु बहाचुके! सन्तोष ने जब कुछ सहारा पहुंचा दिया! सरला का रिक्त हृदेश पा, जब धैर्य्य ने घरकर लिया!

गुथलियों को टटोला। अरे, इस में तो उस भीम-देह की अस्थियां हैं। दूसरी में भस्म! ओ! यह क्या हुआ? होता क्या-ऐसा प्रतीत होता है, जैसे विचारे वृद्ध को वियोग जन्य-प्रचण्ड अनल ने बलात् भस्म किया हो? अवश्य उस की अन्तरात्मा तक भी लपट पहुंची होगी? जिस से विचारा वृद्ध इनके गले लटूम कर यह बताता है कि "हमारे इस सन्ताप को परम-पावनी श्री भागीरथी दूर करने में समर्थ है। अब भी वियोगाऽनल दग्ध मेरी अस्थियों को सन्तोष-

[1] नगर के रक्षा-विभाग के अधिकारियों।

शान्ति-प्रद सुधा-सम गंग-नीर में यदि तुम छोड़, आओगे ! तो सम्भावना है कि अननुमेय शान्ति-सुधा का समास्वादन कर, परम सुख का अनुभव कर सकूं, यह मुझे पूर्ण-- विश्वास है ! " सो प्रतीत तो ऐसा ही होता है कि शंकर के हार्दिक भाव को समझ पतित पावनी श्री भगवती भागीरथी की ओर प्रस्थान किया हो।

* * *

उषा-काल से बहुत पूर्व ही गढ़मुक्तेश्वर स्टेशन से गंगा तट के लिए, आने जाने का फी सवारी पांच पांच आने तांगा किराये कर, थोड़ी देर में ही भव्य दर्शना भगवती श्री भागीरथी के पुन्य तट पर प्राप्त हुए। श्री मन्दाकिनी का वह किनारा, कार्तिक मास, शुक्ला चतुर्दशी की वह चन्द्र-चन्द्रिकाम्बरा रम्य-रात्रि, प्रातःकाल, खुली वायु के झोंके, ऐसे समय में इतने कठिन शीत से दावानल शांत हो सकता है, परञ्च वह सन्ताप नहीं जिस से संतप्त हो तीनों अत्युष्ण एवम् सुदीर्घ उच्छ्वास छोड़ रहे थे। आहें निकाल रहे थे! अरुणोदय की प्रतीक्षा करते, तीनों एक ठौर बैठे रहे। उनके उस आंतरिक संताप का विवरण कौन करे? जो—'अरुणोदय के साथ साथ शङ्कर का जो कुछ दग्धावशेष लिए बैठे हैं, वह भी सदा के लिए जुदा होने वाला है!' यह ध्यान करने से उत्तरोत्तर वृद्धिगत होता जा रहा था?

जितने यह लोग शौचादिक से निवृत्त हो, एकत्रित हुए तब तक बाल-सूर्य का अरुणाभास स्पष्ट विदित होने लगा। अब तो इधर उधर से पंडे लोगों ने यजमानों की खोज करनी आरम्भ की। एक ने पास आकर, इन से भी पूंछा:—'कहां से आए"?

कुन्दन—"देहली से"

पन्डा—"तो आइए, आगे को आजाइए"

यह सुन, तीनों आगे पीछे हो, झोंपड़ी के सामने से निकल, धारा के अत्यन्त समीप प्राप्त हुए। कपड़े उतार, नंगे हुए। सरला ने भी धोती बदली। उस समय वे वज्रपात के सदृश अपने दुस्सह-दुःख को श्रीभागीरथी की रम्य धारा में विचित्र तरल तरंगें देख भूले से थे। वे उस त्रिपथगा की काल तरल तर तरंगें प्रत्यक्ष संताप हरती हुई सी देख रहे थे। स्नानार्थ जो उद्यत हुए तो उस से पूर्व ही उन में से एक पंडे ने पूंछा—"कौन जात (जाति) हो?"

कुन्दन—"मोची हैं, जी !"

उपस्थित पण्डों की मण्डली ने रक्त-नेत्र कर, आवेश पूर्ण स्वर में कड़क कर कहा—"अरे! तुम्हारा नाश हो, तुम्हें सूझता नहीं? कहां घुसे ही चले आए?"

कुन्दन—"हम बिलकुल अजान हैं, जी ! जिधर कहो, बैठ जाएं? यह दादा जी के फूल डालने ....

बात समाप्त न होने दी कि बीच में ही दांत पीस, चिल्ला कर, एक पण्डे ने कहा—"जाओ, तुम्हारी एक तरफ कहीं? पटकने को और कहीं ठौर नहीं मिली?"

सरला—(नम्रता से) 'जी, हम तो परदेशी हैं। नाराज न हो।"

पण्डा मंडली—"अच्छा, अच्छा; जाओ, बाबा आफत दूर भी करो। उधर कहीं डाल दो!!"

यह सुन, तीनों ने फिर अपने अपने कपड़े उठाए और वहां से कुछ दूर पर जा, उसी

प्रकार पहन ओढ़ तीनों आगे पीछे भगवती श्री भागीरथी के अनुप्रवाह—तट ही तट (रेलवे पुल की ओर) चलने लगे। मार्ग में माधव ने चलते चलते पूंछा-"क्यों री मां हम दादा के फूल भी न बहा सकेंगे ? नहा भी न सकेंगे ?"

सरला—"देखो, भैये ! जहाँ से श्री गंगा माई आई हैं, और जहां तक जाएंगी, सब जगह क्या थोड़े ही पण्डे-लोग होंगे ? जहां कोई न होगा, वहां बहाएगे, नहायेंगे !"

इस भांति अपने अनुपम बाल लालों को समझाती हुई, बड़ी दूर जा, जहां मनुष्य मात्र यथार्थ में न था उस तट पर दोनों को संग लिए, प्राप्त हुई। पहले सब ने स्नान किए, फिर सजल-नयनों से पुष्प बहाने को उद्यत हुए।

× × ×

घर वही, वही बेड़ा और वही गांव परन्तु वही बात नहीं, जो अब से दो सप्ताह पूर्व थी। यहां आते ही भयानक काँड देखने सुनने में आने लगा। सरला दोनों को बुला पास बिठाल, अनवरुद्ध अश्रु-मौक्तिक-माला नयन-नलिनों से छोड़ती हुई, बोली—"भैये, यहां न रहना चाहिये। चाहे अपने मामा के चलो या कहीं और ?"

कुन्दन—(माधव की ओर देख) "भैये, जो कुछ विधाता ने किया वह तो हुआ ही। पर मां अब ठीक ही कह रही है। चलो, अब इस आग से निकल चलो। मामा बिना और अब ठिकाना भी कहां है ?"

—माधव कुछ उत्तर न दे सका। उसका गला रुंध गया। आंखें डबडबा आईं। अंत में पुक्का फाड़कर, बच्चों की भांति माता के घुटने पर शिर टेक, फूट फूट कर रोने लगा। कुन्दन अनाथ बालक की यह दशा देख कहां तक शांत स्थिरचित्त रह सकता था ? अपने दोनों हाथों से उसका शिर पकड़, "चुप रहो भैये, चुप रहो !" एक दो बार कह, पहले धीरे २ फिर गला पकड़ कर आप भी रोने लगा। दोनों अनाथ बालकों का यह आर्तनाद देख सरला भी दोनों को छाती के पास खेंच जोर जोर से विलाप करती, कुररी-सी करुण क्रन्दन करने लगी। इस हृदय विदारक आर्त-क्रन्दन को सुन एक दो पड़ोसी भी, जो अभी नहीं उठ भगे थे, उन के पास जा, उन्हें समझाने बुझाने लगे। परन्तु सदा बलवान की जय होती है ! ऐसे प्रचण्ड शोक वेग से कौन मानव-हृदय प्रति युद्ध कर विजयी हो सकेगा ? अंत में समझाना भूल गये और वे भी रोने लगे। उसी तरह शोकनद में निमग्न हुये बहुत काल के पश्चात्, जब शोक-वेग समुद्रबाढ़ के उतार के सदृश, कम हुआ तब कुन्दन वैसेही माता के वक्ष में मुंह छुपाये बिलबिलाता बोला—"हम नहीं रहेंगे इस घर में, मां ! चलो मामा के। वही इस समय हमारे ... ..."

सब कहने न पाया कि विचल हो, फिर पुक्का फाड़कर रो पड़ा। दोनों का शोक वेग कुछ ही कम हुआ था कि फिर कुन्दन के क्रंदन से गला फाड़ सब रो पड़े !

कुछ काल में जब स्वस्थ हुये तो गांव से एक मील की दूरी पर झोंपड़ियों का प्रबन्ध कर, जब तक १३ दिन पूरे न हो जाएं और दश दिन यहीं काटने का वहां विचार किया।

× × ×

आज शङ्कर के १३ दिन हो चुके। अब बहुत कुछ चित्त ने धैर्य धारण कर लिया।

जैसे हर घड़ी कोई न कोई रो देता था। अब वह बात नहीं। कुन्दन ने सरला की अनुमति से माधव को आज सन्ध्या की ट्रेन से मेरठ रवाना किया कि—दोनों बहुओं को ले आवे। और आप सब सामान गड्डों पर लदवा, मामा के यहां प्रस्थान किया। जब मामा एक रोज़ को बीच में आए थे तो कह चले थे कि पीछे २ आ जाओ मैं मकान आदि का प्रबन्ध करता हूँ।

उधर से माधव भी अपनी भाभी एवम् गृहणी को लिये गुड़गावां प्लेटफार्म से बाहर हो तांगा कर गांव की ओर चल पड़ा। छः सात मील की दूरी पर स्टेशन से यह गांव था। प्रातः दश बजे के चले; मध्यान्ह एक बजे के अनुमान घर पहुंचे। बहुओं ने प्रवेश से पूर्व ही आर्त-नाद करना प्रारम्भ किया, किन्तु फिर भी सरला धैर्य्य वाली थी—हृदय से सब को लगाए, समय बिताने लगी।

* * *

अभी दो मास भी व्यतीत न होने पाए हैं पिछली चोट का दर्द अभी कहां दूर हुआ है? वह कौन सा दिन गया है, जिसमें शकर की स्मृति में किसी न किसी ने आंसू न बहाए हों? यह कब इन नव-गृहस्थों में अनुभव किया था कि—दुःख के पीछे ही दुःख आया करता है! किन्तु भावी बलवती है। आज सरला को तीन दिन से तीव्र-ज्वर आ रहा है। खांसी-बलगम, दोनों पसलियों में दर्द! क्या ख़बर है दोनों बच्चों को कि माता को क्या हो रहा? कल सरला के भय्ये की सुसराल से अशुभ सूचना आई थी, जिस से वह तभी अजमेर को रवाना हो गया। न गांव में हकीम, न वैद्य-डाक्टर। क्या करें? बिचारे सपत्नीक दोनों, चारपाई के इधर-उधर बैठे रहे। 'सेक' के अतिरिक्त और कुछ भी उनके वश की बात नहीं थी।

ऊपर से रात होने को हुई। सरला ने प्रलाप (करना) आरम्भ किया। रोते-तड़फते दोनों ही रात भर चारपाई के इर्द-गिद बैठे रहे। यह दृढ़ विचार किया कि—प्रातः गुड़गांवा से डाक्टर लाएंगे। इधर अर्द्ध रात्रि पीछे कफ [बलगम] ने कण्ठ को रोक लिया। प्रातः चार बजे के समय श्वास के साथ 'घड़ घड़'घड़' होने लगी। परन्तु बिचारे दोनों भय्ये क्या जानें कि यह कफ की 'घबराहट' क्या सन्देश दे रही है?

हा! अन्त में वही हुआ, जो होना था। 'घड़घड़ाहट' सहसा बंद हुई। अन्यागार का भान्ति उसका जाज्वल्यमान हृदयगार सहसा शान्त हुआ!! उस दुखिया के दुःखों का एक बार ही अन्त हुआ!!!

चारों के आर्त नाद ने गांव के आंसू बहा दिए। ग्राम की रमणी-जनों ने भी आंचल में छिपे नेत्रों द्वारा आंसू बहा, समवेदना प्रकट की! परञ्च हा! यह दारुण-बज्रपात कैसे भी न रुक सका! बराबर ५ घन्टे तक दीन, अनाथ-से, बिचारे सपत्नीक भ्रातृ युगल सरला शव के समीप बैठे, रोते चिल्लाते रहे। अन्त में कुन्दन उठा; अश्रु पोंछ, बाहर निकला। और—"कोई भी समर्थ नहीं!" कह, दुर्दैव की लीला का अद्भुत दृश्य देखने लगा। अन्त में पार्श्व-वर्ति (पड़ास के) घर से एक रमणी आई है उसे देख, कुन्दन रोकर बोला—"देखो तो, श्वास ले जाती नहीं। कुछ बाकी है या नहीं? रमणी घर में जाकर, दूर से ही उस की मुखाऽकृति देखकर बोली—"इस में क्या धरा है, चांद! समर्थ होकर, बावले न बनो!" कुन्दन—"हां—जी! (नाक साफ़ कर) आज ही का दिन देखने 'समर्थ' हुए थे!"

रमणी—"बावले हो, मा-बाप सदा रहे हैं? इसकी मिट्टी ठिकाने लगाओ. चंदे!"

कुन्दन सुन, फिर बाहर निकला। इधर उधर देख, लौट कर आ, विकृत्य—विसंज्ञ-जैसे पड़े हुए माधव को बोला—"उठो, भय्ये! वहां तक ले चलने के लिए भी तुम और हम ही हैं। यहां! कोई तीसरा स-जातीय-जन भी नहीं!!

प्रारब्ध फिरी तो ऐसी फिरी कि उठा कर ले चलने के लिए जहां तीसरा (सजातीय पुरुष नहीं वहां सरला का देह-पात हुआ। मामा तीन दिनों से अजमेर गया। वहां केवल ३ ही घर। जिनमें से एक में दो विधवाएं, दूसरे में एक नन्हा सा अष्टवर्षीय बालक! तीसरे घर में उन का मामा सो अनुपस्थित। कुन्दन—"क्यों—भय्ये, कहां ले-चलें? हम तो जानते भी नहीं, कि धर है. श्मशान!"

माधव—(कुछ शान्त हो. आंखें पोंछ कर-जो हड़ के कुछ आगे एक दिन मुरदा जलता देखा था"

कुन्दन-चलो, फिर वहीं चलेंगे!"

* * * *

छतरी के पास से ज़रा ऊपर को उकस,-आज कौन?" फिर सामने की पाल पर चढ़, टक टकी लगाकर,— "ऐं···पुजारी जी!'

पुजारी-(स्वाफी को खींचोड़, उसी प्रकार स्वर से) "पुजारीजी को टीले (पाल) पर चढ़ाएगा? पागल नहीं तो! शोर ही शोर ख़ामांख़ा के लिए!!"

गोबिंद—"नहीं, मख़ौल नहीं। जरा आओतो"

पुजारी—(एक हाथ में चिलम लिए, दूसरे से स्वाफी लपेट, आकाश की ओर मुख कर, मुख से ऊपर चिलम कर, नीचे से उसमें फूंक मारते हुए) "आजा, गरम होले! जरा-सी-कंकरी है, जाती रहेगी!!

साधु—"आ जाओ, गुरू। नारायण-के दम लगालो।

गोबिंद--पुजारी के न आने पर, अन्य से) अरे राम-जी! ज़रा तूही यहां तक आ, भले-आदमी! देख तो·····रामजी (बीच ही में) "भाई अब तो आस (आशा) लगी हुई है। भला चाहे तो आजा, नहीं तो झींखेगा!"

किसी के भी न आने पर, स्वयं नीचे उतर, उस सुलफा मंडली में आ-बैठा-और बोला-"यार पुजारी! आज कोई गांव में मरी है! कहीं सुनी तो नहीं।"

पुजारी--"तू क्या सुनता? सुनाई ही तुझे अगले जन्म में दिया करेगा! (वार से आई चिलम को ले) मरी है न, चमारी, दिल्ली वाली!"

गोबिंद-"तो क्या यहां फुकवाओगे?"

पुजारी-(एक हाथ ऊची ज्वाला निकलती चिलम को दे)

"यहां, आए हैं, क्या?"

गोविद-"और तुम्हें रो क्यों रहा था, इत्ती (इतनी) देर से?"

पुजारी--"अच्छा? झटपट पी कर, चलो। हटाओ, उप्हें।

"कह, स्वयम जूता पहन, चल पड़े। इधर धूआं का कुल्ला साधू जी की दाढ़ी में भीर

'अब इसमें क्या धरा है?'-कह; चिलम औंधी कर प्रथम रामजी तदनुसार गोबिन्द

तत्पश्चात् साधु, सब आगे पीछे चल दिए। वहां पहुंच गोविंद ने जा, ललकारा:-

"अरे, यह तो मरी ही है, पर अपनी और इस की दुर्दशा कराने यहां क्यों आए?"

कुन्दन धर्षणा सुन, पीठ पीछे चार मनुष्य खड़े देख, त्रस्त हो बोला--"क्यों-जी?"

गोविन्द—(औद्धत्य से) "क्यों-जी' के बच्चे! (उंगली से ॥१ मील की दूरी का श्मशान दिखा) उधर ले जाओ।"

पुजारी-(अपने सहागत-जनों से) "अरे, एक तो यह बालक, दूसरे विदेशी, जानते नहीं! (फिर कुन्दन से) भाई बच्चो! यहां तो ब्राह्मण-बनिए-उज्जल जात (जाति)-आती हैं। तुम्हारा (वही दूसरा १॥ मील की दूरी वाला श्मशान उंगली से दिखा) वहां है।"

कुन्दन खड़ा हुआ,, पड़ी हुई लकड़ियों को दिखा, दीनता से बोला-"अजी, यह तो यहां गिर गईं। हमारे पास तीसरा मनुष्य नहीं। क्या करें, वहां कैसे ले जा सकेंगे?"

साधु- (यह दशा देख, दयार्द्र हो) "तीसरे नारायण-के हम भय्ये! चल!"

रामजी--(आर्द्र हृदय से अपना सूती धुस्सा गोविन्द को देकर) "चलो, भाई!")

पुजारी- (धीरे से उसे झट ही हाथ से रोक) "नीचों की मुरदनी में जाना पाप बताया है, सासतरों (शास्त्रों) ने!" (कान के पास यों कहा, तब रामजी ने अपना धुस्सा उलटा ले, धीरे से ही उत्तर दिया। "खैर, जाने दो")

उस समय साधु से न रुका गया। वह अरथी*की ओर संकेत कर,कुन्दन से बोला-"भय्या ओ! पहले इनको उठाले चलें। फिर सब लकड़ियां गड्ढा लाकर, मैं पहुंचा दूँगा अभी क्षण में। तुम वहीं बैठे रहना। घबराने का क्या काम है?"

माधव ने दीर्घ श्वास छोड़ कर कहा "पहले दादा तुम चले। मां, अब तुम भी जाती हो, पर देख जाओ, सामने ही तुम्हारे कैसी दुर्दशा हो रही है?" कहा, और मुख फाड़ रोने लगा। कुन्दन इस प्रकार अनाथ बालक को करुण-क्रन्दन करते देख, उसके पास जा बोला-"बावले माधव! चुप न करोगे क्या-?"तथा शोक-वश को रोकता हुआ उसे छाती से लगा-"चुप हो, मुन्ने! चुप हो! क्या बनता है, रोने से?" कह, समझाने लगा। परन्तु स्वयं ऐसा कहां बलिष्ठ था जो शोक वेग से द्वन्द्व-युद्ध कर, विजय पाता? अन्त में स्वयं भी 'हाय, मय्या!..... ..... हमारी कौन..... ..... फूट फूट कर, गला फाड़ कर रो पड़ा। दोनों का आर्तनाद सुन, इन चारों के हृदय भी कैसे स्थैर्य्य रख सकते थे, आंसू बहा ही दिए।

[अपूर्ण]

१—नारायण-के" का सपुट बात में लगाने का अभ्यास होता है।

१= शव की होली।

हिन्दू पति के समर्थन में

(In defence of Hindu Husband)

ले०—श्रीयुत प्रो० धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री, एम. ए. सम्पादक 'प्रभात'

बहुत दिन हुये मैंने एक समाचार पत्र में पढ़ा था कि एक बार विलायत में यह प्रश्न उठा था कि वहां की युरोपीय स्त्रियें काले (ऐशिया वासी) पतियों को क्यों अधिक तर पसन्द करती हैं, इस के उत्तर में वहां की स्त्रियों की ओर से कहा गया था कि काले लोग पति के कर्त्तव्य को निबाहना जानते हैं। मुझे पूरे शब्द याद नहीं रहे हैं पर भाव इससे कुछ मिलता जुलता था। मुझे सब से पहिली तो हैरानी इस बात पर थी कि विलायत की स्त्रियां काले पतियों को अधिक चाहती हैं, । बहुत कम लोग हैं जिन्हें इस बात का विश्वास आसके फिर भी यह वास्तविक सत्य है। विलायत की स्त्रियां चाहे वे किसी देश की हों हिन्दुस्तानियें से बहुधा विवाह प्रसन्नतापूर्वक करती हैं, परन्तु इन से भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि एशिया या हिन्दुस्तान के लोग पति के कर्त्तव्य को अधिक निबाहते हैं। सम्भव है कि जिस लेडीने ऐसा जवाब दिया हो उसके ध्यान में कुछ ऐसे दृष्टान्त हों जिस में किसी हिन्दुस्तानी ने किसी पाश्चात्य देशीय प्रेमिका पर मोहित होकर विवाह किया हो और उस पर सब कुछ वार दिया हो परन्तु सामान्य दृष्टि से देखा जावे तो पूर्वीय देशों के पति सब से अधिक बदनाम इस लिये हैं कि वे अपनी स्त्रियों के प्रति अपने कर्त्तव्य को नहीं पालन करते। बार २ हमें पश्चिम के लेखक और उपदेशक यही सुनाते हैं कि तुम लोग स्त्रियों का आदर करना नहीं जानते। पूर्वीय देश के पति स्त्री को केवल अपनी सेवा का साधन समझ कर उसके प्रति दासी का सा व्यवहार करते हैं। यहां तक कि पूर्वीय देशों में स्त्री का जीवन है ही केवल पति के लिये, हिन्दू स्त्री को पतिव्रता होने का उपदेश बार २ दिया जाता है और उसे बतलाया जाता है कि पति को ही ईश्वर समझे परन्तु पति को पत्नीव्रत का आदेश कभी नहीं किया जाता, इस लिये हिन्दू पत्नी के समर्थन में उसके गौरव के विषय में बहुत कुछ कहा जा सकता है। परन्तु हिन्दू पति का समर्थन क्यों कर हो सकता है? पति के रूप में एक हिन्दू का कुछ भी महत्व नहीं।

इस लेख में यही विवेचना करनी है कि क्या हिन्दू पति के समर्थन में कुछ भी कहा जा सकता है या नहीं? जहां तक संसारिक सुख और सहयोग का सवाल है पूर्वीय या हिन्दू स्त्री की दशा शोचनीय है, हिन्दू पति इस दृष्टि से एक युरोपीय पति से कहीं निकृष्ट है। युरोपीय पत्नी खान-पान में अपने पति के बराबर है। दोनों साथ २ खायेंगे उनका भोजन एक सा होगा। यह बात रहन सहन और वस्त्रभूषा के विषय में है। बल्कि बहुधा तो पति का बड़ा कर्त्तव्य सांसारिक विषयों में स्त्री की इच्छा की पूर्तिमात्र होता है, और वह रात दिन कमाता है इस लिये कि स्त्री की इच्छाओं की पूर्ति कर सके और वह गुलाम सा बना रहता है। सामाजिक

आमोद-प्रमोद की दृष्टि से भी स्त्री का दर्जा पति के बराबर या कुछ ऊंचा ही है। सिनेमा, थियेटर, पबलिक लेकचर, बालरूम सब में पत्नी भी पति के साथ ही जायगी, फलतः युरोपीय सभ्यता में पति कोई सांसारिक भोग नहीं भोग सकता जिस में पत्नी का हिस्सा न हो, बल्कि स्त्री वहां सांसारिक भोगों और सुखों में पति से बढ़ कर है। हिन्दू पत्नी की दशा ठीक इससे विपरीत है। वह विचारी कोई स्वादिष्ट भोजन नहीं खा सकता। कोई भोग नहीं भोग सकती। वह सब कुछ करती है तो अपने पति के लिये और पति से बचा हुआ जो कुछ हो उसे यज्ञावशेष के समान खा लेती है। यदि वह थोड़ा शृङ्गार करती है तो वह भी पति के लिये है। पाश्चात्य स्त्री के समान दर्शकों से प्रशंसा पाने के लिये नहीं है सामाजिक आमोद-प्रमोद से तो उस विचारी का कोई सम्बन्ध ही नहीं है, इस दृष्टि से युरोपीय पत्नी की अवस्था हिन्दू पत्नी की अपेक्षा कहीं उत्तम और बढ़ कर है। और इस लिये यह कहा जा सकता है कि हिन्दू पति एक युरोपीय पति की तुलना में घट कर है।

परन्तु यह केवल वहीं तक सच है जहां तक सांसारिक भोग और ऐन्द्रियिक सुख का सम्बन्ध है। निस्सन्देह इस दृष्टि से हिंदू पति अपने कर्त्तव्य से गिरा हुआ है और उसके समर्थन में कुछ नहीं कहा जा सकता। परन्तु पति कर्त्तव्य की एक दूसरी--इस से भी बढ़ कर—पहलू है हिंदू पति का मुख्य आदर्श अपनी पत्नी के प्रति उस की रक्षा करना सब से बढ़ कर उसके मान का रक्षा करना है। यहाँ तक कि हिंदू पति के मान और गौरव की केन्द्र उस की पत्नी है। उस की पत्नी एक प्रकार से उसके आत्म गौरव, प्रतिष्ठा और मान मर्यादा का सजीव बाह्य सशरीर रूप है। इस लिये एक ग्रामीण कहावत अब भी चली आती है कि "जिस की स्त्री नहीं उस की इज़्ज़त ही क्या"। वह घर के भीतर बेशक पीड़ित हो और उसे बढ़िया भोजन वस्त्र न मिलते हों परंतु वह फिर भी अपने पति का गौरव सम्मान रूप है। हिंदू पति इस बात को सह लेता है कि उस की पत्नी भोजन वस्त्र के कष्ट में बनी रहे परंतु अपनी पत्नी की मान मर्यादा पर ज़रा सीआंच आते ही वह क्या न कर डालेगा? बात की बात में प्राणों पर भी खेल जायगा। यदि स्वयं उसे कोई बुरा भला कहदे, अपमानित कर देना वह शायद सह लेगा परंतु अपनी पत्नी के विरुद्ध किसी को आंख उठाते भी देख कर उस का ख़ून उबल जायगा, उसकी सारी वीरता जाग उठेगी और उस में सिंह या हाथी का बल आ जायगा, क्यों कि वह समझता है-'स्त्री की रक्षा'। यह उस का पवित्र व्रत है, यह रक्षा शारीरिक, सांसारिक अर्थ में नहीं किंतु आत्मिक अर्थ में। और इस को वह अपने प्राण न्यौछावर करके भी करेगा। स्त्री की मानरक्षा के लिये साधारण रीति पर एक हिंदू पति जितना बड़ा आत्म समर्पण कर सकता है, जिस प्रकार वीर बन कर प्राणों को भी न्यौछावर कर सकता है वह साधारणतया एक युरोपीय पति नहीं कर सकता, हिंदू पति के सामने सांसारिक सुख सामग्री स्त्री के लिये उपस्थित कर देना उतना बड़ा कर्त्तव्य नहीं है जितना कि उस-की मान रक्षा करना। और हिंदू पति जब एक अबला स्त्री का हाथ पकड़ता है तब वह उस की मानरक्षा का व्रत ग्रहण करता है और उस पति के जीते जी उस स्त्री की ओर कोई आँख उठा कर नहीं देख सकता, कोई उसका बाल बांका नहीं कर सकता। इस लिये उत्तम भोजन न पाने पर भी सुन्दर वस्त्रालङ्कार न

होने पर भी वह गर्व्विता है सौभाग्यवती या सुहागिन है ! पर पति के न होने पर वही दुःखिता और अभागिनी है जिस के ऊपर से रक्षा का हाथ उठ गया है।

इस लिये सर्वथा यह कह देना कि हिंदू पति स्त्री के प्रति अपने कर्त्तव्य को नहीं निवाहता या केवल इस लिये, कि स्त्रियों को इस देश में सांसारिक सुख भोग की सामग्री उतनी प्राप्त नहीं होती, यह समझ लेना कि उन का इस देश में आदर नहीं है बड़ी भारी भूल है। स्त्री की मानरक्षा, स्त्री के गौरव को हिंदू पति जिस प्राणपन से निवाहना जानता है उस का उदाहरण कहीं ढूंढ़ने पर भी नहीं मिल सकता। हिंदू विवाह सम्बन्ध के अद्भुत सौंदर्य का गौरव यदि बहुत अंश तक हिंदू पत्नी को प्राप्त है तो किसी अंश तक हिंदू पति को भी अवश्य प्राप्त है।

निद्रा

ले०—प्रो० श्री सांभीराम जी एम० एस० सी०

["बीसवीं सदी का जीवन शास्त्र" नामक अपनी अप्रकाशित पुस्तक से]

पूरी निद्रा* बच्चों की वृद्धि तथा स्वास्थ्य के लिये उतनी ही आवश्यक है जितनी कि मुनासिब खूराक, ताज़ी हवा, तथा प्रकाश। अगर कोई माता अपने बच्चे को नियमित समय पर सुलाने का ध्यान रखती है तो वह अपने बच्चे को फुर्तीले अंगों वाला, और स्वस्थ दिमाग़ वाला बनाती है। निद्रा में शरीर की थकावट उतरती है और नवीन शक्ति संचित होती है। अतिरिक्त इसके शरीर में तन्तु‡ की मरम्मत होती है और शरीर की वृद्धि होती है।

भिन्न २ आयु के लिय निद्रा के समय की भिन्न २ मात्रा का होना आवश्यक है। इस लिये भारतीय माताओं के वास्ते निम्नलिखित फहरिस्त लाभदायक होगी:—

आयु	आवश्यक निद्रा (घन्टों में)
१ म मास	२२
२ य मास	२० से २२ तक
३ य मास	१८ से २० तक
६ ठा मास	१६ — ६ बजे सायं से ६ बजे प्रातः तक; २ घण्टे मध्यान्ह से पूर्व; २ घण्टे मध्यान्ह के पश्चात्
१ साल	१४ — ६ बजे सायं से ६ बजे प्रातःतक; १ घण्टा मध्यान्ह से पूर्व; १ घण्टा मध्यान्ह के पश्चात्
२ साल	सुबह की नींद कुछ छूट जाय तो छूट जाये, परन्तु दोपहर के बाद न छूटे।
४ साल से ५॥ तक	१३ घन्टे से १४ घन्टे तक
७ साल : :	१२॥ घन्टे
१० साल : :	१२ घण्टे

*Publice Health Rpt, IV Edition; sup. no. 10, Minnesota Farmers. Library.
‡Body tissues.

११ साल : : १२॥ घन्टे
१६ " के पश्चात् कम से कम ८ घन्टे

इस स्थान पर यह बताना अनुचित न होगा कि उपरोक्त अङ्क ठीक २ लेखानुसार हमेशा प्रयुक्त नहीं हो सकते। परन्तु उनके लगभग पहुंच कर जितना लाभ हो सके उतना ही प्राप्त कर लेना चाहिए। अमेरिका के लोग ऐसी फेहरिस्त से कैसे लाभ उठाते हैं इसके लिये "चाइलड वेल फेयर मेगज़ीन" का अनुवाद उदाहरणार्थ दिया जाता है।

*सेन्टपाल मिनिसोता की माताओं का आन्दोलन

हम ....स्कूल के बच्चों के माता पिता इस बात को अनुभव करते हुए कि हमारे बच्चों की अच्छी सेहत कभी कायम नहीं रह सकती जब तक कि उन्हें काफी वा बाक़ायदा निद्रा न दी जाय। इसलिये हम अपना उत्तरदायित्व स्वीकार करते हुये निद्रा के विषय में निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से पास करते हैं :—

(१) कि हम अपने बारह वर्ष की आयु तक के बच्चों को ८॥ बजे तक और १२ वर्ष से १५ वर्ष के बच्चों को ९ बजे से पहिले पहिले बिस्तरों पर लिटा देंगे। हमें पूर्ण विश्वास है कि ऐसा करने से हमारे स्कूलों के स्वास्थ्य तथा विद्या के स्टेन्डर्ड में वृद्धि होगी।

(२) कि हम अपने बच्चों की निद्रा के लिये स्वास्थ्याधिकारियों (मेडिकल ओथोरिटीज़) से निर्दिष्ट निम्नलिखित कम से कम आवश्यकताओं को पूर्ण करते हैं।

आयु (वर्ष)	(निद्रा घंटों में)
४ : : :	१२
५—७ तक : :	११—१२ तक
८—११ तक : :	१०—११ तक
१२—१४ तक :	१० घन्टे

प्रायः माताएं बच्चे की तीसरे पहर की नींद के महत्व को नहीं जानतीं और वे समझती हैं कि यदि तीसरे पहर एक घन्टा बच्चा कम सोवे तो रात्रि को एक घन्टा नियमित समय से पूर्व (अर्थात् यदि दो बजे की जगह तीन बजे सुलाया जावे और ४ बजे की जगह ५ बजे तक सोने दिया जाय) सुला देने से निद्रा पूरी हो जायगी। यह बात साधारण दृष्टि से तो युक्ति युक्त प्रतीत होती है परन्तु अनुभव के सरासर विरुद्ध है क्योंकि इस प्रकार के सुलाने से चार से पांच तक नींद की जगह बेचैनी हो जाती है अर्थात् बजाय लाभ के स्पष्ट हानि होती है।

बच्चे को अकेला ही सुलाना चाहिये। हिंडोले (झूला) में नहीं। परन्तु एक सन्दूक जैसे स्थान में सुलाना चाहिये सन्दूक जैसी चीज़ से यह अभिप्राय है कि एक छोटी चौकी जिसके चारों ओर से किनारे ऊंचे उठे हों ताकि बच्चा गिर न जाय। हिंडोले में जो बच्चे को हुलारा पड़ता रहता है उससे वही रोग होता है जो मनुष्य को जहाज की यात्रा में पीड़ित करता है। इसे अंगरेजी में सी सिकनैस कहते हैं। सन्दूक जैसी स्थिर शय्या पर लिटाने से नींद खूब आयेगी। यदि नींद में खराबी हो तो उसका कारण प्रायः भूख, प्यास, अपचन, कब्ज़ी, जुकाम अधिक आहार और ठण्ढ आदि समझना चाहिये।

कई नीम हक़ीम तजरबः से कोरी माताएं सुन सुनाकर ही बच्चों के जुकाम

*Child Welfare Mag. (America); Vol. XVIII No. II July 1924, Pages 512.

जुलाब व आंखों से पानी के बहने, तथा गठिया की बीमारियों में अफीम का प्रयोग करती हैं। फिर ऐसी भी माताएं हैं जो बच्चे को निद्रा न आने पर सुलाने के लिए अफीम खिलाती हैं। इन अवस्था में बच्चों को कई प्रकार की हानि होती हैं। उदाहरण के तौर पर अफीम के नशे में समय पर रोग का पता न लगना, खून का कम हो जाना, अनावश्यक नशे का लग जाना इत्यादि। योरोपियन देशों में बच्चों को अफीम खिलाना कानूनन मना किया जा रहा है, परन्तु भारत में अफीम के प्रयोग की प्रथा शोचनीय है।

जीवन तथा इस का उद्देश (१)

ले०—श्री डाक्टर राधाकृष्ण जी वी. एस, सी. एम. बी बीएस

भूमिका

प्रत्येक विज्ञान के अनुसार जीवन के उद्देश की भिन्न २ व्याख्या की जा सकती है। जैसे धर्म में यह मुक्ति है, समाज शास्त्र में समाज की उन्नति इत्यादि। परन्तु, आज हम ने यह देखना है कि जीवन-विद्या (Biology) में यह उद्देश्य क्या है ?

हम प्रति दिन देखते हैं कि पशु, पक्षी, मनुष्य, उत्पन्न होते हैं और मर जाते हैं। यह अवस्था वनस्पतियों की भी है, क्यों कि यद्यपि वृक्षों की आयु लम्बी है परन्तु उन की भी मृत्यु होती ही रहती है जैसे चने का पौदा धरती में उत्पन्न होता है और कुछ साल के पीछे सूख कर मर जाता है। सब से लम्बी आयु वाला बड़ का वृक्ष है। परन्तु कलकत्ता के वनस्पति उधान (Botanical gardon) में वह भी अब मृत्यु के समीप ही है। इस से स्पष्ट है कि वनस्पति, पशु, पक्षी, मनुष्य इत्यादि का शरीर नाशवान है, इस लिये जीवन का उद्देश्य इस अनित्य शरीर का रक्षण तथा पोषण नहीं है क्योंकि उद्देश्य कोई स्थिर और नित्य होना चाहिये।

इतना समझ लेने पर यह अवश्य विचार उठता है कि यदि शरीर संबन्धी उद्देश नहीं है तो फिर शरीर का क्या कार्य है ? इस पर अधिक लिखने की आवश्यक्ता इस लिये नहीं कि यह जानना सुगम ही है कि किसी उद्देश्य को पूरा करने के लिये कुछ साधन भी होने चाहियें। यह हमारा शरीर हम पर इस लिये नहीं ठूंसा गया कि हम इस को पालते पोसते रहें और अन्त में यह अग्नि या धरती मे सिपुर्द हो जाते प्रत्युत यह किसी अन्य उद्देश्य को पूरा करने के लिये ही हमें मिला है अर्थात् एक सहायक पदार्थ या साधन है।

उदेश्य क्या है ? यह जानने के लिये हमें शरीर की उत्पत्ति तथा रचना पर कुछ विचार करना पड़ेगा। शरीर की उत्पत्ति एक अत्यन्त सूक्ष्म अणु (जिस से केवल सूक्ष्म दर्शन-यंत्र से ही देख सक्ते हैं) से बननी आरंभ होती है। यह अणु माता तथा

पिता के उत्पादक अणुओं के संयोग से बनता और जननी के रक्त से पुष्ट होकर परिपक्व होता है, तथा वृद्धि प्राप्त करता है। इस अणु से शरीर का रक्त, मांस, मज्जा, अस्थि, त्वचा इत्यादि सब अंग बनते हैं और यह अणु स्वयमेव उत्पादक अणु ही रहता है। इस अणु से इसी प्रकार पुनः शरीर उत्पन्न होता है और यह अणु ही रहता हुआ पिता से पुत्र, और पुत्र से पौत्र में चला चलता है। निम्न चित्र इसे स्पष्ट कर देगा:—

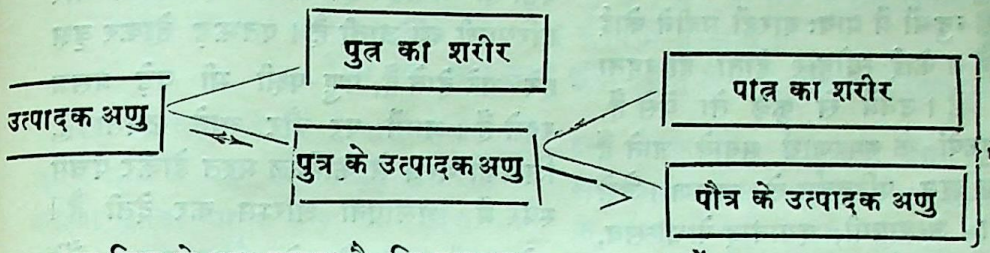

इस चित्र से पता लगता है कि वास्तव में पिता से पुत्र और सन्तान को परम्परा से उत्पादक अणु मिलते हैं और शरीर इन अणुओं की रक्षा तथा पोषण के लिए एक खोल सा है। ऐसा प्रतीत होता है कि शरीर इन उत्पादक अणुओं की रक्षा तथा पोषण करके और इन्हें सन्तान में पहुंचा कर अर्थात् अपना काम समाप्त करके नष्ट हो जाता है। इस से स्पष्ट है कि शरीर सन्तान उत्पत्ति का एक सहायक या साधन है और सन्तान उत्पत्ति ही लक्ष्य है। उद्देश्य स्थिर होना चाहिये और यह अणु नित्य है। अतः जीवन का उद्देश्य जीवन विद्या के अनुसार सन्तान उत्पत्ति है।

यह परिणाम इस लिये ठीक है कि जब हम सब जीवित वनस्पति तथा जन्तुओं के शरीर की रचना की तुलनात्मक निरीक्षण करते हैं तो यही सिद्धांत उन में भी पाया जाता है (जिनकी युक्तियां यहां देना उचित प्रतीत नहीं होता)

उपरोक्त वर्णन से निम्न बातों का पता लगता है:—

१. जीवन का उद्देश्य सन्तान उत्पत्ति है।
२. इस उद्देश्य के पूरा करने में निम्न साधन हैं:—

क माता तथा पिता का शरीर जिन से जिन से अणु मिलते हैं।

ख किसी व्यक्ति का अपना शरीर जो अणुओं का रक्षक, पोषक तथा वाहक है।

यह उद्देश्य ऐसा है जो भली तथा बुरी प्रकार दोनों रीतियों से पूरा होता है और कौन नहीं जानता कि उत्तम रीति से पूरा होना बुरी रीति की अपेक्षा सर्वथा और सर्वदा अच्छा है। अतः उत्तम सन्तानके लिये निम्न अवस्थायें होनी चाहियें:—

१. माता तथा पिता का उत्तम शरीर।
२ व्यक्ति का अपना उत्तम शरीर।
३. उत्तम उत्पादक अणु।
१. वंश की उत्तम अर्थात् शारीरिक अवस्था के लिए वंशीय स्वास्थवृत (Racial Hygiene) का ज्ञान हो चाहिये तथा
२. अपने शरीर के लिये वैयक्तिक तथा गृह स्वास्थवृत (Personal and Domestic Hygiene) का और
३. उत्तम उत्पादक अणुओं के लिये ब्रह्मचर्य तथा उत्तम आचार और विचार के सिद्धांत पता होने चाहियें।

(क्रमशः)

बसन्त--वर्णन

लेखिका—श्रीमती सरलादेवी विदुषी "विशारदा

हिन्दुओं में प्रायः बारहों महीने कोई न कोई त्यौहार होता ही रहता है। उनमें से कुछ तो ऐसे हैं, जो महापुरुषों के स्मरणार्थ मनाये जाते हैं और कुछ ऋतु परिवर्तन के कारण। जैसे रामनवमी, जन्माष्टमी, दयानन्द बोधोत्सव, होली, दिवाली और बसन्त अधिकांश ऋतु परिवर्तन के समय ही मनाये जाते हैं। इन में से मैं बसन्त पर ही कुछ लिखूंगी। माघ सुदी ५ का नाम 'बसन्त पंचमी' या 'श्री पंचमी' है। इसी दिन से बसन्त का आरम्भ माना जाता है। इस ऋतु में प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही मनोहर हो जाता है। चारों ओर हरियाली छा जाती है। पतझड़ होकर वृक्ष हरे भरे होते हैं, पशु-पक्षी भी बड़े प्रसन्न रहते हैं। आमों पर बौर आने लगता है, जिसकी गन्ध से कोकिल मस्त होकर पंचम स्वर में अलापना आरम्भ कर देती है। सरोवर में कमल खिलते और उन पर भौंरे गुनगुनाते हैं। वायु पुष्प-पराग से सुगन्धित हो जाता है, सूर्य्य उत्तरायण-पथ का पथिक बन जाता है। दिन बढ़ने और रात घटने लगती है। पं० रामचन्द्र जी शुक्ल ने बसन्त का वर्णन बड़ा ही अच्छा किया है:—

बन बाग तड़ाग लसैं चहुं ओर ।
लसैं नव-पल्लव सों लहरैं लहि कै तरु मन्द समीर झकोर ॥
कहूँ नव-किंशुक जाल सों लाल लखात घने बनखंड के छोर ।
परैं जहँ खेत सुनात तहां श्रमलीन किसानन को कल रोर ॥
लिपे खरिहानन में सुथरे पथ पार पयार के दूह लखात ।
मढ़े नव-मंजुल मौरन सों सहकार न आँगन मांहि समात ॥
भरी छबि सों छलकाय रहे मृदु सौरभ लै बगरावत बात ।
चरैं बहु ढोर कछारन में जहं गावत ग्वाल नचावत गात ॥
लदे कलियान औ फूलन सों कचनार रहे कहुं डार नवाय ।
भरो जहँ नीर धरा रस भीजि कै दीनी है दूब की गोट चढ़ाय ॥
ह्यो कलगान विहंगन को अति मोद भरो चहुं ओर सों आय ।
कढ़ैं लघु जन्तु अनेक भगैं पुनि पास की झाड़िन को झहराय ॥
डोलत हैं बहु भृङ्ग पतंग सरीसृप मंगल मोद मनाय ।
भागत झाड़िन सों कढ़ि तीतर पास कहूँ कछु आहट पाय ॥
नागन के फल पै कहुं कीर हैं भागत चौंच चलाय चलाय ।
धावत हैं धरिबे हित कीटन त्रास घनी चित चाह चढ़ाय ॥

कूकि उठै कबहूं कल कंठ सों कोकिल कानन में रस नाय।
गीध गिरैं छिति पै कछु देखत, चील रहीं नभ में मंडराय॥
श्यामल रेख धरे तन पै इत सों उत दौरि कै जाति गिलाय।
निर्मल ताल के तीर कहूँ बक बैठे हैं मीन पै ध्यान लगाय॥
चित्रित मन्दिर पै चढ़ि मोर रह्यो निज चित्रित पंख दिखाय।
ब्याह के बाजन बाजन की धुनि दूरि के गाँव में देति सुनाय॥
वस्तुन सो सब शान्ति समृद्धि रही बहु रूपन में दरसाय।
देखि इतो सुख-साज कुमार रह्यो हिय में अति ही हरखाय॥

इस से सिद्ध होता है प्राचीन काल में भारत भूमि में यह उत्सव बड़े समारोह से मनाया जाता था। उस समय देश धन-धान्य, सुख-समृद्धि सम्पन्न था। व्यापार और कलाकौशल की अच्छी उन्नति थी, संसार के बाज़ारों में भारत का माल दिखाई देता था, हर प्रकार से निश्चिन्तता थी। इस अवसर पर ऋषि एक बड़ा यज्ञ किया करते थे, उस में नवान्नों की तैयारी पर प्रसन्नता प्रदर्शित की जाती थी। यज्ञ से वायु शुद्ध होता और ऋतु बदलने के कारण होने वाले रोगों की निवृत्ति हो जाती थी। तत्कालीन राजा प्रजा के साथ मिलकर ऐसे उत्सव मनाते थे, उदाहरणतः चन्द्रगुप्त मौर्य के समय में 'चन्द्रिकोत्सव' विशेष रूप से मनाया जाता था। नगर में बन्दनवार और चन्दोवे बांधे जाते थे, हाथी घोड़े रथादि सजाये जाते। एक बार नीतिज्ञ चाणक्य के चातुर्य से नहीं मनाया गया था, उस के लिए निम्न लिखित शब्दों में दुःख प्रकाश किया गया थाः—

गज रथ बाजि सजे नहीं, बंधीं न बन्दनवार।
तने वितान न कहुँ नगर, रंजित कहूं न द्वार॥
नरनारी डोलत न कहुं फूल माल गल डार।
नृत्य वाद धुनि गीत नहिं सुनिय श्रवण मंझार॥

महाकवि कालिदास के समय में बसन्तोत्सव मनाने की प्रथा प्रचलित थीः—

इस में कामदेव की पूजा होती थी, उस समय भारत में स्वराज्य-प्राप्त था, नर-नारियों के मानस में नयी २ उमंगे तरंगित होती थीं, किन्तु आज कल भूखे भारत की यह बात नहीं है। अब न खाने को अन्न है और न पहिनने को वस्त्र। फिर भला बसन्तोत्सव कहां? भारत के लगभग आधे मनुष्यों को पेट भर अन्न भी नहीं जुड़ता और करोड़ों जन भूखों मरते हैं। विलियम डिग्बी ने लिखा है "चार करोड़ भारतवासियों को पेट भर अन्न न मिलने का बहुत पुराना रोग है, वे जनवरी से दिसम्बर तक नहीं जानते कि पेट भर भोजन किस चिड़िया का नाम है उन की दाह नहीं बुझती, उनकी भूख का कीड़ा नहीं, मरता"। आगे मि० ग्रियर्सन कहते हैं- "ज़िला गया में क़रीब २ सब मज़दूरों को और १० फी सदी काश्तकार या कुल ४५ फ़ीसदी मनुष्यों को पेट भर अन्न और ठीक वस्त्र नहीं मिलता। गया के ज़िले में कोई ख़ास त्रुटि नहीं है जो हालत गया के मजदूरों की है वही समस्त भारत की है इस हिसाब से यह सिद्ध हुआ कि १० करोड़ भारतवासी भूखों मरते हैं"। भारतीयों की दैनिक आमदनी की औसत प्रत्येक मनुष्य की प्रतिदिन की दो पैसे होती है। यहाँ १० वर्ष में लगभग दो करोड़ जन अकाल से मर गये। और पचास लाख भीख मांगने

वाले हैं, विलायत में यदि कोई भीख माँगे तो उस को दण्ड मिलता है, अमेरिका में बिना ३००) दिखाये कोई जहाज़ से उस भूमि में पैर नहीं रख सकता क्योंकि कहीं वह भीख न मांगने लगे, और देशों में काम करने वाले नहीं मिलते, किन्तु भारत में हजारों की संख्या में बेगारी मिलते हैं। जब खाने पहिनने को ही धन नहीं, तो फिर अब उत्सव ही कहां से मनाये जा सकते हैं? भूखों तो भक्ति भी नहीं हो सकती?

भूखे भक्ति न होय गुपाला।
यह लो अपनी कंठी माला॥

आज यहाँ यह कहने वाली:—

सरस आम की मंजरी हरितपीत कुछ लाल।
है सर्वस्व बसन्त तू शोभा तुही रसाल॥१॥
प्रथम दरस तेरो भयो मोंहि आज ही आय।
विनवति हौं तू हूजियो ऋतु को मंगलदाय॥२॥

—नारियाँ कहाँ से आवें? इन सूखे मुखों, सूखी हड्डियों और सूखे हृदयों में हपन, प्रहसन, मोहन और विकपन कहाँ से हों? हाँ मूर्छन पग पग पर विद्यमान है। आज तो किसी कवि के शब्दों में यही कहना पड़ता है:—

हाय! हम कैसे बसन्त मनावें।

हारसिंगार उजार भये हैं, ढाकहु ना पतियावें।
जरमन रंग कुरंग भयो है, रंग कहाँ से लावें॥
वैर विरोध परस्पर फैल्यो अरि सम घात लगावें
कैसे गले खुलि के हम मिलि हैं सोच संकोच सतावें॥

भूखे भगति न होय गुपाला राग रंगकस भावें,
पिपराई सगरे तन छाई क्यों पट पीत रंगावें
चुकत न देश दुःख अब रोये मनकी काहि सुनावें
रोवत रोवत गरि परि आयो मधुर गीत किमि गावें॥

हृदय से

अरे हृदय! तुम आज दुःखी हो, क्यों इतने रोते हो।
क्या वियोग से दुखी हुए हो, क्यों अधीर होते हो॥
सुखद मिलन के समय कहो क्यों, हर्ष मुदित हो जाते?
इस रोने हंसने में क्या तुम, मजा हृदय हो पाते॥

—धर्मचन्द खेमका "चन्द्र" रंगून

सभ्यता को सम्बोधन

ले०—प्रो० सत्यव्रत सिद्धान्तालङ्कार, सम्पादक "अलङ्कार"

हे पिशाचिनी! मैं तेरे रक्त-रञ्जित नखाग्रों को देखकर दुखी हो रहा हूं और तुझे दूर से घृणा भरी आंखों से देख रहा हूँ। मैं समझता था कि यह संसार मनुष्य की भोग्य वस्तु है, परन्तु हे सभ्यते! तूने मेरे विश्वास को तोड़ दिया है। जब से तेरा मनहूस मुख देखा है तब से जगत के सार-मनुष्य-का निरन्तर तिरस्कार हो रहा है, उसे हरेक कोने से अर्ध-चन्द्र देकर धकेला जा रहा है। तेरे आने से पहले मेरे प्यारे भारत के गाँव आबाद थे, जहां तहां पुरुष, स्त्री और बच्चे बसन्ती खेतों में घूमते दिखाई देते थे; मेरे देश के गांवों में रौनक थी, उन में रहने को जी करता था। परन्तु हे रौद्ररूपे! आज तेरे प्रवेश के अनन्तर मुझे गावों के गाँव खाली, सुनसान दिखाई दे रहे हैं। जो दो चार मूर्तियां झोंपड़ियों में बैठी हैं वे भूखी हैं, नङ्गी हैं, गृह शून्य हैं! मैंने पूछा ये आबाद घर क्यों बरबाद हो गए? यहां रहने वाले कहां उजड़ गए? पता चला कि उन्हें तेरी रक्त-पिपासा को बुझाने के लिए बलिदान का बकरा बनाकर तेरे उन मन्दिरों में पहुंचा दिया गया है जिन्हें 'शहर' के नाम से पुकारा जाता है। हे मनुष्य-द्रोहिणी! तेरी मानव समाज के प्रति भयङ्कर शत्रुता है। तूने मनुष्य का रुधिरपान करने के लिये कल्पना-देवी' को भी लजा देने वाले उपायों का अवलम्बन किया है। तेरे 'शहर' नाम-धारी मन्दिरों में तेरी अनेक मूर्तियां प्रतिष्ठित हैं। ओह! कैसा डरावना चेहरा है! पुराणों के राक्षस और राक्षसियां भी तेरी तुलना में देव और देवियां जान पड़ते हैं। सैकड़ों फीट लम्बे तेरे मुख से घण्टों तक काला ही काला धुआं निकला करता है। हे विकराल स्वरूपे! तेरा पेट ही बूचड़खाना है। तू जीते ही बलि-पशु को अपनी विशाल उदरदरीमें हड़प कर लेती है। अन्दर पहुंच कर वह न मरता ही है, न जीता ही है;—क्या क्रूरता की सीमा इससे भी परे जा सकती है?

* * * *

हे सभ्यते! तेरा मनुष्य से इतना द्रोह! कभी २ ऐसा मालूम पड़ने लगता है कि तू मनुष्य को सर्वथा निर्वासित करके ही दम लेगी! मैं तो पढ़कर आया था कि मनुष्य 'भोक्ता' है, प्रकृति का राजा है, प्रकृति मनुष्य के लिये है, यहाँ आकर यह देखा कि तूने उसे अपना 'भोग्य' बना लिया है, अपनी बेजान मशीन का पुर्ज़ा बना लिया है! आज मनुष्य के लिए कुछ नहीं, मनुष्य किसी के लिये, शायद तेरे लिए, जीता मालूम देता है। यह सम्पूर्ण विश्व का वैभव, हे डायिन! तू ने अपने लिये रोक रखा है। तू 'मनुष्य' को अपने शब्द-कोष में से मसलकर मिटा डालने की कोशिश कर रही है। मनुष्य की जहां २ जरूरत थी, वहां २ से तूने उसे हटा दिया है। मनुष्य कपड़ा बुनता था, अब तू उसके बगैर ही बुनने लगी है; मनुष्य खेती करता था अब तू यह काम भी उससे छीन रही है; मनुष्य अपनी कारीगरी से छोटी मोटी चीजें बनाता था, तू ने वह काम भी संभाल लिया है। संसार की प्रत्येक घटना से तू मनुष्य के हाथ को अलहदा करती चली जा रही है। सजीव मनुष्य के स्थान पर अपने निर्जीव प्रतिनिधि खड़े करने में तुझे आशा-तीत सफलता प्राप्त हो रही है। तूने मनुष्य

पर ऐसा नशा सवार कर दिया है कि वह अपने इस 'पराजय' की अवस्था को 'विजय' के नाम से पुकार रहा है! क्या यह मनुष्य की विजय है वा तेरी?—ओह! डूबने के अन्तिम क्षण में भी अफीमची अपने को तैरता हुआ समझ रहा है! क्या नशा इस से भी अधिक चढ़ सकता है? अरे मूर्ख मनुष्य! 'प्रकृति पर विजय' पाने की डींग मारना छोड़ दे। तू तो दिनों दिन पीछे ही कदम रखता चला जा रहा है। सारा मैदान तेरे हाथ से छिन गया है। आंखें रखते हुये भी अन्धे! इसी को तू अपनी विजय समझ रहा है?

* * * *

'प्रकृति पर विजय' अहा! कैसे मधुर शब्द हैं। समुद्र-मन्थन का सार 'अमृत' था। वर्तमान-सभ्यता का चिर-प्रतीक्षित मृदु फल यह 'प्रकृति विजय' है! परन्तु इस 'प्रकृति-विजय' के मोहन रूप पर से कभी पर्दा उठा कर भी देखा है? हे सभ्यता पिशाचिनी! तेरे मोह-जाल में फंसकर मानव-जगत उलझ रहा है। संसार के त्राण के लिये, धर्म के संरक्षण के लिये तेरे यथार्थ स्वरूप को प्रकट करता हूं, ज़रा पर्दा उठा कर तेरी शक्ल दुनियां को दिखाता हूँ, दुःख मत मानना!!

* * * *

शिमले की ऊंची चोटी पर सैकड़ों मजदूर एक विशाल-भवन के निर्माण करने में लगे हुए हैं। इसे बनाने में दस साल बीत चुके हैं। कहते हैं, यह एक राजा का महल बन रहा है। इस राजा की लाखों रुपया महीना निजू आमदनी है। राजा जब से गद्दी नशीन हुआ है तभी से बीमार रहता है। उसका मेदा कमज़ोर है, हाज़मा ठीक नहीं; आंखें काम नहीं देतीं; चलता मुशकिल से है। उसके राज्य में बीसियों का खून चूसा जाता है, पचासों को भूखा मारा जाता है, सैकड़ों को बेगार में पकड़ा जाता है, हज़ारों पर जुल्म किया जाता है और यह सब इस लिये कि यह जिन्दा मुर्दार शिमले की ठण्ढी हवा में इस जमीन के ऊपर कुछ अधिक दिन तक अपने बोझ को कायम रख सके। राजा का विशाल-भवन बन रहा है, बड़ा सुन्दर है, परन्तु इस भवन की गहरी खुदी हुई नीवों में गरीबों के खून के कतरे गिर चुके हैं। इसकी चमकीली सफेद दीवारों के पीछे छिपी एक२ ईंट में मकान के स्वामी के पाप देह-धारण कर सदा के लिये बैठ चुके हैं। बदसूरत औरत, मन लुभावने वस्त्र तथा आभूषण पहनकर अपने पर रीझ रही है! लाखों को भुलाकर, ओह! उन किसानों को बिलकुल भुलाकर जिनके मुखों से दाना २ छीन कर यह महल खड़ा किया जा रहा है, शिमले की इस ऊंची चोटी पर 'प्रकृति के विजय' की गगन-भेदी दुन्दुभि पिट रही है। अरे मूर्ख मनुष्य! यह तेरा विजय नहीं यह तो तेरा पराजय है। देख! जिन के अगों में बल है, जो जीवित है, उन के सामने से षटरस सम्पन्न भोजन की थाली को उठा लिया गया है। जो भोग नहीं सकते, जीते हुये भी मुर्दा हैं उनके चरणों में विश्व की श्री लोट पोट हो रही है। हे मायाविनी! तू परले दर्जे की छलिन है। मनुष्य की अन्तरात्मा का कतरा २ तूने सोख लिया है। अब इस अधमरे के इर्द-गिर्द तू ने ब्रह्मांड के चमत्कारों को लाकर ढेर कर दिया है। अरी! इसकी आत्मशक्ति को तो तू पी गई। इन चमत्कारों को लेकर यह क्या करेगा?—परन्तु तुझे क्या? तेरा तो यह काम ही है! पिसे हुवों को पीसने के इस महाघोर पाप को 'प्रकृति पर विजय'

का नाम दिया जाता है। मायाविनी सभ्यते! तेरे विकराल-स्वरूप की यह पहली झाँकी है

* * *

भारत के प्राय सभी वाइसराय, व्यक्ति रूप से, कोमल और दयालु हृदय के रहे हैं। सुनते हैं कि लार्ड हार्डिञ्ज को जब दिल्ली में बम्ब लगा था तब कुछ राजभक्तों ने म्यान में से तलवारें खींच वाइसराय के चरणों पर रख कर कहा था कि आज्ञा हो तो इसी क्षण दिल्ली को वीरान कर दिया जाय। असह्य वेदना से पीड़ित लार्ड हार्डिञ्ज के जिस हृदय से 'आह' तक नहीं निकली थी उस में इस बात को सुनकर पीड़ा उत्पन्न होने लगी। उसका हृदय कोमल था, वह अपने लिये निरपराधियों का खून बहता हुआ नहीं देख सकता था। परन्तु हे वज्र हृदय सभ्यते! तेरे चुङ्गल में फंसकर लार्ड हार्डिञ्ज पांच वर्ष तक लगातार भारत को परतन्त्रता की बेड़ियों में कसने का प्राणपन से यत्न करता रहा। लार्ड चैम्सफौर्ड बड़ा अच्छा आदमी था। उसके वैय्यक्तिक जीवन पर कौन दाग लगा सकता है? परन्तु हे सभ्यते! उसी तेरे लाडले पुत्र के शासन काल मे निहत्थों को इस तरह भून दिया गया जिस प्रकार चनों को भाड़ में भून दिया जाता है लार्ड रीडिंग न्याय की पताकाएं फहराता हुआ इस देश में पहुंचा परन्तु हे कलङ्किनी! तेरे सहवास से वह भी अपने माथे पर कलङ्क का टीका लगा कर ही यहां से वापिस हुआ! क्या व्यक्ति रूप से तीनों में कोई एक भी बुरा आदमी था? नहीं! परन्तु हे मनुष्यत्वापहारिणी सभ्यते! तूने इन्हें छूते ही मनुष्य न रहने दिया; तूने अपनी माया से इन्हें एक दम अपनी मशीन का पुर्ज़ा बना लिया। यही लोग जो अपने देश को पराये हाथों देख सिर के बाल नोंच २ कर पागल हो जाते, अपने देश में दूसरों को पैर पसारते देख उन्हें चोर या लुटेरा कहते और उनके पञ्जे से देश को छुड़ाये बगैर चैन तक न लेते, हे सभ्यते! बतला, क्या ये बड़े २ राजनीति धुरन्धर तुझे ही परमेश्वर मान कर मेरे देश की लूट में मजे से सब से बड़ा हिस्सा नहीं लेते रहे? हे गर्हितकृत्ये! तुझ में कोई ऐसा काला-जादू मालूम पड़ता है जिस से तू अच्छे से अच्छे व्यक्ति को बुरे से बुरा और कोमल से कोमल को कठोर से कठोर बना देती है। क्या मैं नहीं जानता कि दुनियां भर की क्रूर से क्रूर सरकारें नर्म से नर्म दिल वाले व्यक्तियों के समुदायों से बनी हुई हैं? ओह! क्या अन्धेर है! मनुष्य जो कुछ नहीं चाहता वही उसे करना पड़ता है। हृदय में प्रेम का समुद्र उमड़ते हुए भी हाथ से तलवार चलानी पड़ती है, दिल में खून के आंसू बहाते हुए भी होंठ खोल कर ज़बरदस्ती हंसना पड़ता है! हे क्रूरे! यह सब कुछ इस सत्वशून्य मनुष्य को इस लिये करना पड़ता है क्योंकि तू उसे खोखला बना गई है, उसके आत्मा को चाट गई है! हाय! इतना अत्याचार!!-परन्तु तुझे क्या? तेरा तो यह काम ही है! इसी घोरतम पाप को, इसी आत्महत्या को, 'प्रकृति पर विजय, का नाम दिया जाता है। अत्याचारिणी सभ्यते! तेरे विकराल स्वरूप की यह दूसरी झांकी है!!

* * *

सजे हुए बाज़ार कैसे सुन्दर प्रतीत होते हैं। मेलों के समय सारे शहर की दुकानें संसार के ऐश्वर्य से भरी हुई दिखाई देती हैं। एक २ वस्तु दर्शक को बांध कर खड़ी कर लेती है। परन्तु हे आडम्बर प्रिये! मैंने इन चमकीली चीजों के परमाणु परमाणु में प्रविष्ट होकर तेरा दिल दहलाने

वाला स्वरूप देखा है। ये बाजार नहीं, जूआ घर हैं; ये दुकाने नहीं, जुआरियों के अड्डे हैं। यहां पर बैठे हुए ये दुकानदार पले दर्जे के ठग हैं। एक ग़रीब मजदूर दिन भर पसीना बहा कर कमाई के चार आने गांठ में बान्धे हुए जब बाज़ार में से निकल जाता है तब इन सैकड़ों लखपतियों के महा-मस्तिष्क उस बेचारे के चार आने खींच निकाल कर अपनी २ जेब में रख लेने की विकट समस्या को हल करने में जुट जाते हैं। पैसे २ को जूए में जीतकर, पाई २ को ठगकर, कौड़ी २ का डाका मार कर ही तो इन्हों ने अपनी हवेली को खड़ा किया है; व्यापार इसी का तो नाम है, वे चौबीसों घण्टे इस ताक में न बैठे रहें तो क्या करें? क्या इन व्यापारियों, सेठों, साहूकारों में जीवन को सरस बना देने वाली वह चीज़ नहीं जिसे 'दिल' कहते हैं? ग़रीबों की तीखी 'आह' का बाण इन के सीनों में दर्द पैदा नहीं करता, क्या दिन-रात के इस जुए से, इस लूट से ये सुख की करवट सोते हैं? ओह! इन में दिल न होता तो ये अपने तुतलाते बच्चे को गोद में उठा कर न चूमते, इन के सीने में दर्द की जगह न होती तो खुद मुसीबत में पड़ कर न कराहते, रात को सुख की नींदे सोते होते तो दिन को इतना न बुड़ बुड़ाते! परन्तु क्या करें, हे सभ्यता पिशाचिनी! तेरे फन्दे में फंस कर ये बेचारे निर्जीव हो जाते हैं, तेरी मशीन के पुर्जे बन जाते हैं। तू अपने चञ्चल शृङ्गार से भोले मनुष्य की 'आत्मा' को चुरा लेने में सिद्ध-हस्त है। यह मूर्ख तेरी चालों में आकर अपनी प्रियतम वस्तु को, अपनेपनको, तेरे चरणों में समर्पित कर देता है। तूने मनुष्य के अमूल्य रत्न को लूट लिया है। यह मूढ़ तेरे लगाये मट्टी के ढेर को अपनी सम्पत्ति समझ रहा है और उस की रक्षा के लिये अपने सगे भाई के गले पर तेज़ छुरी लिये खड़ा है। हे वज्र-हृदये! यह सब तेरा ही किया हुआ है,.. परन्तु तुझे क्या? तेरा तो यह काम ही है! इसी घोरतम दासता को, इसी आत्म-विक्रय को 'प्रकृति पर विजय' का नाम दिया जाता है। हे सत्यानासिनी सभ्यते! तेरे कुत्सित स्वरूप की यह तीसरी झाँकी है!!

* *

मैंने बड़े २ विद्वानों को देखा। उन का दिमाग़ क्या था, एक ख़ासा पुस्तकालय था। हर समय यही बोला करते थे, 'इस पुस्तक में यह लिखा है, उस पुस्तक में वह लिखा है'। उनके दिमाग़ पर से किताबों के भारी बोझ को उठा कर मैंने अलहदा रख दिया तो उन्हें नख से शिख तक कोरा पाया। उनके 'जीवन' पर उन की 'विद्या' की कोई छाप न देखी। कई ऐसे मिले जिन्हों ने दिमाग़ को भी किसी तरह की तकलीफ़ नहीं दी थी। उन से जो कुछ पूछो उसी के लिये किसी 'लायब्रेरी' को दौड़ने लगते! किताब बन्द करदी तो दिमाग़ बन्द होगया, किताब गुम गई तो दिमाग़ गुम होगया, किताब जल गई तो दिमाग़ जल गया! किताबों के बगैर उन के दिमाग़ की कोई गति ही नहीं। ऐसे भी देखे जो छपी हुई चीज़ को परमात्मा समझते थे। छपा हुआ कुछ मिल जाना चाहिये, उनकी अकड़ को तोड़ने के लिये वह काफ़ी है! ऐसे अन्धे-सुजाखों को चकमा देने के लिये छापे खानों को बढ़ते देखा, अख़बारों को गिंजाइयों की तरह जन्मते देखा, किताबों के धड़ाधड़ ढेर लगते देखा। हे सभ्यता पिशाचिनी! तू मनुष्य की आंखों में किस कदर धूल झोंक रही है। अपने चारों तरफ लगे हुए अख़बारों और किताबों के पहाड़ को देख कर यह

नादान मनुष्य अपनी विज्ञता पर नाचने लगता है परन्तु हे मायाविनी! उसे क्या मालूम कि यही अखबारों और किताबों के ढेर उसकी मूर्खता के प्रतिबिम्ब हैं, उसी के उत्पन्न किये कूड़े-कर्कट के ढेर हैं। हे दुष्टे! तूने विद्यादेवी का खून किया है, तेरे हाथ 'सरस्वती' के रुधिर से रंगे हुए हैं, परन्तु फिर भी इस मूर्ख मनुष्य का मस्तक तेरी आराधना में झुका हुआ है। तूने 'ज्ञान' का नाश करके पुस्तकालय, वाचनालय और छापेखाने खोल दिये हैं, 'सौन्दर्य' का मुंह काला करके पाऊडरों और लैवेन्डरों की पूजा चलादी है, 'प्रेम' का मीठा रस निचोड़ कर उसे विलासियों के हाथ का खिलौना बना दिया है, 'संगीत' का गला घोंट कर ग्रामोफोन, थियेटर और सिनेमा को जगह देदी है, 'प्रकृति' को अजायब घर और चिड़ियाघर में कैद कर दिया है, 'धर्म' को मन्दिर, मस्जिद और गिर्जे में बेड़ी पहना कर बैठाल दिया है! हाय! आज मैं इस दुनियाँ में जीवन को ढूंढ रहा हूं, आत्मा की खोज कर रहा हूं, परन्तु मुझे मृत्यु के अतिरिक्त अन्य कुछ दिखाई नहीं देता। चारों तरफ मृत्यु का ताण्डव-नृत्य होरहा है, लाशों का ढेर लगा हुआ है, संसार एक विशाल श्मशान बना हुआ है! हे चाण्डालिनी सभ्यते! यह सब तेरा ही किया हुआ है,—परन्तु तुझे क्या? तेरा तो यह काम ही है! हे मूर्ख मनुष्य! इसी अपने सर्वस्व-संहार को तू 'प्रकृति पर विजय' के नाम से पुकारता है? सभ्यते! तेरे रौद्र रूप की यह चौथी झाँकी है!!

* * *

हे सभ्यते! मुझे बड़े २ मकानों से द्वेष नहीं, मैं शासन-व्यवस्था को घृणा की दृष्टि से नहीं देखता, बाज़ारों की चमचमाहट मेरे हृदय को नहीं दुखाती, पुस्तकों का बढ़ना मुझे अशान्त नहीं करता; मैं तो आहें इस लिये भर रहा हूँ क्योंकि ये सब कार्य मुझे खोखले दिखाई दे रहे हैं। तू बाहर की धनी है, अन्दर की निर्धन। तेरी रचना में ढोल की आवाज़ सुनाई देती है वीणा की मीठी झन्कार नहीं; ईंट और पत्थरों का निस्सार संग्रह दिखाई देता है, मोतियों की मृदुमाला नहीं; योजनों लम्बी सड़ी हुई लोथ मालूम पड़ती है, अविनश्वर अदृश्य आत्मा नहीं; राशि बहुत है माला नहीं। कोमल हृदय के अनेक मनुष्यों के मिलने से संसार में कोमलता की वृद्धि होनी चाहिये थी परन्तु सभ्यते! तेरे राज्य में मनुष्य जितने मिलते हैं उतना ही मनुष्यता के ऊंचे आदर्शों से अपने को खाली पाते हैं। व्यक्ति रूप से जो मनुष्य की मूर्ति होते हैं, मिल कर वे ही अन्याय तथा अत्याचार के अवतार बन जाते हैं, जिन के हृदय में दया का समुद्र उमड़ पड़ता है, तेरे सूखे समाज के सगठन में आकर वेही नृशंसता के स्वरूप बन जाते हैं। बहुत से मनुष्यों के मिलने से 'मनुष्य-समाज' बनना चाहिये परन्तु आज बहुत से 'मनुष्य' जब मिलते हैं तो तेरे जादू से 'पशु' बन जाते हैं। लोक में दो और दो मिल कर चार हुआ करते हैं परन्तु तेरे राज्य में दो मिल कर शून्य हो जाते हैं। सभ्यते! तेरा राज्य जितना बढ़ता जारहा है, मनुष्य उतना ही लुटा जा रहा है, भिखारी बन रहा है, अपने अमूल्य रत्नों को खो रहा है! हे विकराल रूपे! तेरे इस भयंकर स्वरूप को देख कर मानव समाज का हृदय धक् २ हो रहा है, उसका आशा-सूर्य निराशा के घनघोर बादलों में डूबा जा रहा है। कहते हैं, कृष्ण भगवान् ने अर्जुन को अपने नाना रूप दिखाकर विस्मित् कर दिया था; आज मैंने भी धर्म की ग्लानि तथा अधर्म

का अभ्युत्थान होते देख कर साधुओं के परित्राण तथा सभ्यता पिशाचिनी का विनाश करने के लिये उसके महारौद्र रूप की केवल चार झांकियें को प्रगट किया है। हे शोणित प्रिये! तेरे रक्त-रञ्जित हाथों को देख कर सारा मानव समाज आज दुःखी हो रहा है और तुझे दूर से घृणाभरी आँखों से देख रहा है!!

* * *

जब मैं सोचता हूँ कि सभ्यता पिशाचिनी का बहिष्कार किस प्रकार हो तो मेरा ध्यान एक दम अपने परम पावन देश की मातृशक्ति की तरफ खिंच जाता है। जिस प्रकार सूखे खेत को शुद्ध जल की धारा लहलहा देती है, जिस प्रकार जेठ-हाड़ की कड़ी गर्मी को मलयानल मन्द २ झोकों से शान्त कर देता है, जिस प्रकार धीमे २ प्रकाश दे रही दिये की बत्ती को घी की दो बूंदें जगा देती है, जिस प्रकार मशीन की कर्कश रगड़ को तेल का स्नेह बन्द कर देता है, उसी प्रकार मातृ-शक्ति का जादू खोखलेपन को भर देता है, शुष्क नीरस संसार को हरा भरा बना देता है, जीवन को नया रूप दे देता है। हे मातृशक्ति! तू सचमुच अन्दर की धनी है। तू वीणा की मधुर झन्कार है, मोतियों की मञ्जु माला है, अविनश्वर अदृश्य आत्मा है! दया की देवि! विधाता ने तेरा लावण्यभरा शरीर—निःस्वार्थ भाव, प्रेम, न्याय, परोपकार, सहिष्णुता के चुने चुने परमाणुओं से बनाया है,—तू ही अपने कोमल करों से विश्व के सूक्ष्म आत्म-सूत्र को जीवन की बारीक सुई में पिरो सकती है। यह जीवन तुझ से शुरू होता है, तेरी गोद में पलता है, तेरे कर-कमलों की छाया में बड़ा होता है, उन्हीं में खेलता है परन्तु फिर जाने कैसे सभ्यता पिशाचिनी के फन्दे में फंस कर तेरे बग़ीचे में लगी आत्म-बीज की कोमल २ कोपलों को—सत्य को, न्याय को, प्रेम को, दया को—अपने पावों तले कुचलने लगता है। हे देवि! अपने पुत्र की सुधि लो, अपने प्रेम के चुम्बक से इसे अपनी ओर खींच कर अपनी छाती से लगा लो। मैं तुम्हारे पुराने इतिहास को याद कर अपने देश के भाग्याकाश की ओर नज़र उठा कर देखता हूं और घनेघने बादलों को धीरे २ हटते देख रहा हूँ। अनेकों बार तुमने सभ्यता पिशाचिनी के 'आत्म-तत्व' पर होते हमलों को वीरता से रोका है। हे मातृशक्ति! सीता का रूप धारण कर तुम ने रावणकार में परिणत दानव-शक्ति का संहार किया था, द्रौपदी के शरीर में आकर तुमने दुष्ट दुर्योधन में अवतरित असुरता का वंशोच्छेद किया था, कलियुग में 'सभ्यता' का सौभाग्य नाम धारण करने वाली उसी पिशाचिनी को क्या तुम ऐसे ही छोड़ दोगी? मुझे पुरुषों में विश्वास नहीं रहा। पुरुषों ने ही तो अपने को सभ्यता के हाथों में बेच दिया है—पुरुषों ने हा तो 'आत्म-तत्व' का तिरस्कार किया है! हे परम पुनीत भारतदेश-की मातृशक्ति! तुम सृष्टि-सृजन-हारे परमात्मदेव की एकमात्र प्रतिनिधि हो, नव-जीवन का सन्देस लाने वाली दूतिनी हो, उषःकाल के बाल-सूर्य्य की तमोहन्त्री मीठी किरण हो, मैं अपने देश के कल्याण के लिये तुम्हारा आह्वान करता हूं! देवि! तुम देर से सो रही हो, अपनी असीम शक्तियों को भूली बैठी हो! मोह निद्रा को हटाओ और अपने दैवीय गुणों का भारत के खोखले शरीर में सञ्चार करो। माता के रूप में, पत्नीक के रूप में, बहिन के रूप में—जिस रूप में भी हो भारत के जर्जरित कलेवर को 'आत्म-रस' से भर दो, उसे अन्दर का धनी बनादो!

———

स्त्रियों का साम्राज्य

लेखिका—श्रीमती विद्यावती सेठ आचार्य्या कन्या गुरुकुल इन्द्रपुस्थ

ओ३म् समाज्ञी श्वशुरे भव समाज्ञीश्वश्वाभव ।
ननान्दरि समाज्ञी भव समाज्ञी अधिदेवृषु ॥

ऋ० मं० १० । अ० ७ । सू० ८५ । मं० ४६

"यद्यपि वह आधिपत्य जमाने में संकोच करती हैं और यद्यपिइस प्रकार की दासत्व शृंखला प्रेम के नवविकसित फूलों से गुंथी हुई भी होती है तथापि-हम चाहे जिस प्रकार इसको छिपाने की कोशिश करें परंतु यह सच है कि स्त्रियां हम पर हमेशः आधिपत्य रखती हैं" (टामसमोर)

"आह! क्या ही सौभाग्य की बात है कि ये स्त्रियां अपनी शक्तियों को प्रायः करके अधिकतर व्यवहार में नहीं लाती हैं यदि वह अधिक वर्तें तो हम में उन्हें रोकने की शक्ति नहीं है। वह जरा भी इच्छा प्रगट करें बस पुरुष तत्क्षण उनके पैरों पर गिरने लगते हैं, चाहे वह वृद्ध हों या कुरूपा हों सब एक ही बात है। यह मैं यथार्थ सत्य कह रहा हूं। कोई भी देवी जो बिल्कुल कुबड़ी न हो और उसे उचित अवसर मिले तो वह जिसे चाहे वर सक्ती है। हम तो केवल इतना ही धन्यवाद करते हैं कि ये प्रियतमायें खेतहर पशुओं की भांति अपनी शक्ति से परिचित नहीं हैं। यदि वह चाहें तो वह हमें सर्वथा दबा सक्ती हैं।" (थैकरी)

स्त्रियों की शक्ति कैसी विचित्र और अदम्य है। यद्यपि वह लहरों की तरह बह जाने वाली और बदलने वाली होती हैं तथापि वह समुद्र की भाँति शक्तिशालनी हैं। यद्यपि वह शीतल मन्द सुगन्ध वायु की भांति शान्त और नम्र हैं लेकिन वह विकट आँधी की भांति विकराल और दुर्दमनीय भी हैं। कुछ लोग इन देवियों को राजनैतिक अधिकार देने के पक्षपाती हो रहे हैं लेकिन इस क्षेत्र में इनकी जितनी शक्ति में कुछ न्यूनता रह भी गई है वह घरेलू जीवन में जितनी शक्ति यह वर्त लेती हैं उस से पूर्ण हो गई है, नहीं २ वह बढ़कर निकल गई है। लोग यदि स्त्रियों की शक्ति को छिपाना भी चाहें तो वह नहीं छिपा सकते क्योंकि वह शुरु से ही संसार में स्वेच्छाचारी सम्राट की शक्ति के समान आधिपत्य जमाये हुये हैं। और डाक्टर जानसन को जब यह कहा गया कि स्त्रियों को मताधिकार दिया जाय तो उन्हों ने इस भाव को बहुत तुच्छ समझ कर इसका निरादर कर दिया क्योंकि उनकी सम्मति में स्त्रियां तो हमेशः से सर्व शक्तिमती हैं। यह सर्वतन्त्र स्वतः-सिद्ध सिद्धान्त है कि "जो पालने को झुलाती है वही संसार पर राज्य करती है" और यह निर्विवाद है किसमग्र संसार के मनुष्य के आचार विचार को बनाने रूप शक्ति किसी न्यायाधीश या मताधिकार प्राप्त सज्जन की शक्ति से कहीं बढ़ कर है।

सभी काल में पुरुषों ने स्त्रियों के इस आधियत्य को स्वीकार किया है और उस की शक्ति के आगे शिर झुकाया है। क्षत्रिय योद्धा अपनी माता, पत्नी तथा बहिनों और कन्याओं के उत्तेजना पूर्ण मुस्कराहट के समाश्वासन से प्रेरित होकर बिना आगा पीछा सोचे एकाएक रणक्षेत्र में जा कूदते हैं या द्वन्द्व युद्ध के आह्वान को स्वीकार करते हैं। देवी सरस्वती की बीणा का मधुर राग आलापने वाली मानवी कोकिला की उपस्थिति में चारण और भाट अपनी बीणा से वह सुरीला राग निकालते हैं जो कि अन्यथा असम्भव था। कामदेव की पत्नी रति समान देवी के सान्दर्य को हृदय पटल पर धारण कर कुशल शिल्पी का हृदय उच्च पवित्र मनोवेशों से झंकारित हो जाता है और वह जैसा अनुपम चित्र खचित कर देता है वह अन्य किसी को सन्मुख रख कर करना असम्भव है। स्त्री प्रेम में आसक्त माँझी लोग अपार सागर को मंझा कर युद्धाग्नि को प्रदीप्त करते हैं या बहुत २ दूर देशों से अमूल्य रत्नों को भर कर लाते हैं। इतना ही नहीं। बड़े महान दार्शनिक तत्वों की खोज में लगे हुये जीवन, काल और भाग्य आदि दुर्जेय समस्याओं की सिद्धि में असफल हुये ज्ञानी लोग अपने संतप्त हृदय को स्त्री की मधुर मुस्क्यान से प्रशान्त करने में कृतकृत्य हुये हैं। यहां तक कि स्त्री के पवित्र चरित्र और पुण्यतम विनय से वशीभूत आप्त उपदेष्टा लोग धर्म की वेदी पर से ऐसे उच्च भावों को प्रगट करते हैं जोकि अन्यथा बिल्कुल असभव थे। कवि भवभूति उत्तर राम चरित में वर्णन करते हैं कि किस पवित्र भाव से राजर्षि जनक अरुंधती देवी को प्रणाम करते हैं। पाठक जरा शब्दों पर ध्यान दें :-

यया पूतं मन्ये निधिरपि पवित्रस्य महसः।
पतिस्ते पूर्वेषामापि खलु गुरुणां गुरुतमः॥
त्रिलोकी माङ्गल्यामवनितल लीलेन शरसा।
जगद्वन्द्यां देवी मुषसमिव वन्दे भगवतीम्॥

वह कहते हैं कि उषा के तुल्य आनन्द और प्रकाश देनेवाली त्रिलोक के लिये मंगल दायनी भगवती देवी जो आप हैं जिनके पति बनने से तुम्हारे स्वामी वशिष्ठ जो कि सर्व प्राचीन गुरुओं के भी श्रेष्ठ गुरु हैं और पवित्र ब्रह्म तेज की राशि हैं वह भी आपने को पवित्र मानते हैं उन को मैं पृथ्वी पर शिर झुकाकर प्रणाम करता हूं। देखिये कैसा महत्व है। कैसा गौरव है। क्या इससे बढ़ कर दर्जा किसी प्राणी का हो सकता है?

वास्तव में बात यह है कि पुरुष जाति पर स्त्री जाति का कितना और कैसा आधिपत्य है यह कहना बड़ा मुशकिल है और अत्युक्त दोषारोपण करने का स्थल तक बन जाता है। परन्तु आहा! कैसा शक्तिशाली कैसा स्थायी और कैसा सर्वतन्त्र यह प्रभाव है। उस के मुस्क्यान की उद्योत्स्ना में ही वह पलते समृद्धिशाली बनते और एक से एक बढ़ कर कार्य्य कर दिखाते हैं और उसी की भृकुटि चढ़ाने रूप अंधकार में वह सहम कर सूख जाते हैं। देवी स्वरूप माता, पत्नी तथा बहिन व पुत्री की सहायता और सहानुभूति के बिना परमात्मा के सर्वोत्तम पदार्थ भी हमारे लिये तुच्छ बन जाते हैं। यदि पुरुष देवियों के विश्वास पात्र हैं और यथार्थ में बन सके हैं तो वह चाहे निद्रा में भी हों तो भी खतरे से बाहर हैं। किन्तु यदि वह तिरस्कार और लानत के पात्र बन गये हैं तो वह चाहे जितने साव-

धान क्यों न बने कभी भी गिरावट से बच नहीं सक्ते। जब उन्हें देवी का सहारा रहता है और वह पुरुषकी ओर आशा लगाती है तो उनमें ही परिश्रम और युद्ध करने की अपूर्व शक्ति प्रादुर्भूत हो जाती है लेकिन यदि वह स्त्री-शक्ति उन से दूर हट कर खड़ी होती है और अलग २ रहती है तो उनका बल तिनके की तरह टूट जाता है चाहे उन्हें संसार के सारे मनुष्य मान्य की दृष्टि से देखें लेकिन उनमें गौरवका संचार नहीं होता लेकिन किसी देवी की दृष्टि में मान पाना दिमाग़ में अद्भुत शक्ति संचार कर देता है। यदि हमारी गृहणियां सच्चरित्रा पतिव्रता हैं तो हमारी जीवनतन्त्री मधुर सुरस स्वर से पूरित हो राग रागिणी आलापती हैं और हमारे जीवन की कालिमा रात्रि में भी तारों की चांदनी रहती ही है किन्तु हाय! यदि वही देवी दुश्चरित्रा हो कर हम से दग़ा करती है तो हमारे सामने सारा संसार नाचने लगता और रौरव नर्क के निविड़ अंधकार में पड़कर हम धक्के खाते और गिरते रहते हैं।

बिना पुरुषों के जाने हुये वह उनके ऊपर आधिपत्य रखती है बिना उनके विशेष इच्छा शक्ति के भी वह उनकी स्वामिनी रहती है। उस के आश्वासन से ही हमारे चिन्ता युक्त जीवन के अरण्य में वसन्त का आगमन होता है और उनकी निराशता के समुद्र में हंसी की तरंगें लहराने लगती हैं।

स्त्रियों की इस शक्ति स्त्रोत के क्या है?

१ पुरुष जातिपर स्त्रियोंकी यह शक्तिमत्त प्रकृति के अन्य तत्वों की भांति-अपने निश्चित नियमों में आवद्ध है। जिसका यदि हम चाहें तो विश्लेषण कर सक्ते हैं। निस्सन्देह सब से प्रारम्भिक स्रोत इसका तो इस बात में है कि परमात्मा ने स्त्री और पुरुष दोनों जातियों में बहुत घनिष्ट सम्बन्ध बना रखा है। स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर सम्बद्ध युगल हैं। परमात्मा ने उन्हें ऐसा ही बना दिया है अतः वह उसकी इच्छा को बदल नहीं सक्ती। स्त्री पुरुष में परस्पर आकर्षणशक्ति है जो एक दूसरे को खींचती हैं चाहें वह ज्ञान में या अनजान में हो यह इच्छा शक्ति तथा चुनाव का क्षेत्र ही नहीं है।

२ सौंदर्यशक्ति

यह एक दूसरी शक्ति है जोकि स्त्रियों के हाथ में है और जिसके द्वारा भी वह अपना आधिपत्य रखती हैं। एवोल्यूशन थियोरी वाले अर्थात विकासत् वाद वाले तो यह मानते हैं कि परमात्मा ने सृष्टि उत्पन्न करते समय स्त्रियों को पुरुषों से पीछे बनाया और यतः परमात्मा का हाथ सुघढ अधिक हो चुका था अतः पीछे बनी हुई स्त्री जाति पुरुष जाति की अपेक्षा अधिक सुन्दर बनी। उत्पत्ति का क्रम सर्वदा नीचे से उच्च पदार्थ की ओर, सरल से कठिन, और सुन्दर से अधिक सुन्दर की ओर है। अस्तु यतः प्राचीन और अर्वाचीन सभी दार्शनिक अपने २ ढंग से स्त्री के सौन्दर्य को मानते हैं अतः यह भी मानना चाहिये कि सौन्दर्य की शक्ति कम नहीं है।

३ स्त्री की पराधीनता और विश्वास।

यह एक बड़े महत्व का विषय है क्योंकि आधुनिक सभ्यता में स्त्री की पराधीनता जितनी बुरी समझी जाती है और इस पर जितने कटाक्ष होते हैं उतने शायद ही किसी बात पर होते हैं; तब यह कहना कि यह स्त्रियों की शक्ति है क्या ही उलटी बात है? परन्तु विज्ञ पाठक और पाठिकाओं! ज़रा धैर्य्य से इस विषय का मनन कीजिये और जो मैं आगे कहती हूं उसे ध्यान से पढ़िए किसी महापुरुष का कथन है कि "स्त्रियों की आकर्षण-शक्ति इसी में है कि वह

अपनी कमजोरी दिखला कर निरन्तर ही पुरुषों की उदारता को उत्तेजना देती रहती है जिसके कारण न केवल वह उन्हें उच्च ही बनाती हैं वरन् मनुष्यमें उच्चतम भावोंको भी उत्पन्न करती हैं। कमजोरी का स्वीकार करना अपने आप एक ऐन्द्रजालिक शक्ति रखता है।" हां तो स्त्रियों के पराधीन मन में भी वह हृदयग्राही शक्ति है जिसका प्रभाव हट नहीं सकता। उनका पराधीनत्व ही उनकी शक्ति जताने तथा स्थिर रखने का प्रमाणपत्र है। जिस प्रकार वृक्ष के साथ बेल लपटी रहती है उसी के सहारे बढ़ती फूलती फलती है, और यदि यह सहारा हटा लिया जावे तो वह सूखकर नष्ट भ्रष्ट हो जाती है। इसी प्रकार स्त्री पुरुष पर सहारा, पथप्रदर्शन, रक्षा, तथा पोषण के लिए निर्भर रहती है। उसके बिना उसका अस्तित्व नहीं रह सकता। पिता, भाई, पति, देवर, पुत्र किसी का सहारा अवश्य चाहिए, यही उनके जीवन का सार है। इसी में उनके महत्व का रहस्य छिपा हुआ है। पुरुष अपनी करुणा की पात्र स्त्री जाति की किसी भी आवश्यकता को निषेध ही नहीं कर सकता। यही विचार शेक्शपीयर जैसे महानुभाव कवियों को हुआ जब उसने यह शब्द लिखेः—

The men who bears an honourable mind Will scorn to treat a women lawlessly. कोई धर्मात्मा पुरुष किसी स्त्री के प्रति अत्याचार नहीं कर सकता। इसी प्रकार बालमीकि जी भी कहते हैं कि—"अवध्या सर्व भूतानां प्रमदाः क्षम्यतामिति" पुरुष का बल तो उसकी इच्छा शक्ति के ऊपर है किन्तु एक साध्वी स्त्री का बल उसका विशुद्ध प्रेम है। यदि यह सिद्धान्त उलट जावे तो अप्राकृतिक स्त्री पुरुष हो जाते हैं जिन्हें हम सभी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अतः स्त्रियों का आधिपत्य प्रेम और माधुर्य में ही है। चाहे लता और वृक्ष का उदाहरण पूर्णतया स्त्री पुरुष के सम्बन्ध में न घटता हो तथापि इस में कोई शक नहीं कि 'न स्त्री स्वातन्त्र्य मर्हति' यह स्त्रियों का स्थिर गुण है। जो दुष्ट हृदय वाली आत्मावलम्बी स्त्रियां अपनी स्वाधीनता जतलाती हुई पुरुष के प्रेम के सहारे के बिना अपने पैरों खड़े होना पसन्द करती हैं वह उनके विरोधियों के कैम्प में हैं अतः वह आवश्यकता के समय निस्सहाय—बिना परवाह की तथा अनावश्यक की भांति जीवन बिताती रहती हैं। वह साध्वी स्त्री नहीं है जो प्रेम का बदला न दे जो सहाय की आकांक्षा न रक्खे। करुणा, माधुर्य, सहारे रहना, आत्म-त्याग विश्वास यही तो स्त्रियों के सच्चे गुण हैं और इन्हीं के द्वारा ही स्त्रियों का साम्राज्य स्थिर तथा चिरस्थाई रहता है, इनकी ढल ओढ़कर वह हमेशा अजेय रहती हैं। अतः भारतीय महिलाओं को अपने इन शस्त्रों की रक्षा करके इन्हें संभाल कर रखना चाहिये।

वैज्ञानिक संसार।

भूमि का जलना

क्या कभी हमारे पाठकों ने भूमि को जलते देखा है? कहीं इस प्रश्न पर हमें पागल तो न समझा जायगा? कोयलों में आग लगती है, लकड़ी जलती है और तेल भी जलता है, परन्तु यह भूमि का जलना कैसा? आज हम भूमि के जलने की कुछ वास्तविक घटना का वर्णन करेंगे।

कुछ वर्ष बीते, बर्कडेल के निकट एक किसान ने बिना बुझे हुए चूने का ढेर लगा दिया। इस पर जल पड़ने से इतना ताप उत्पन्न हुआ कि इसके नीचे की भूमि में जो कि महीनों की कड़ी धूप से खूब सूख गई थी, आग लग गई। वायु के चलने से आग तीन एकड़ भूमि में भड़क उठी और इसे कितने ही फुट नीचे तक जला दिया।

दो बीते, इसी प्रकार की अग्नि इंगलैंड के एक स्थान पर भड़क उठी। यह लकड़ियों के एक ढेर के जलने से आरम्भ हुई और एक वृक्ष की जड़ों में पहुंच गई। पांच सप्ताह पीछे वृक्ष गिरकर भूमि पर गिर पड़ा। तब पता लगा कि आस पास की सारी जमीन में आग लगी हुई है। यह आग इतनी भड़की कि जबतक सर्दियों की वर्षा ने इसे बुझा न दिया यह बराबर जलती रही।

इस प्रकार की सब से बड़ी आग अमरीका के वाशिंगटन रियासत में सीटल के निकट लकड़ी के बुरादे में जो कि १० एकड़ भूमि पर फैला हुआ था, लग कर आरम्भ हुई। अग्नि भूमि के खूब नीचे तक पहुंच गई और इतना धुआं निकला कि जिसने मीलों तक वायु को विषमय बना दिया।

क्या कल वर्षा होगी।

कई स्थानों पर जहां लगातार वर्षा होती रहती है लोग इससे इतना तंग आ जाते हैं कि वह यह जानने को बड़े उत्सुक हो उठते हैं कि आने वाला दिन भी खुला होगा कि नहीं। क्या ऐसा जानने का कोई सुगम उपाय है?

सूर्यास्त के समय से दो घन्टा पीछे घरों से बाहर निकल कर देखो कि घास पर कोई ओस तो नहीं पड़ी। यदि काफी मात्रा में आस पड़ी हो तो समझ लो कि अगले दिन वर्षा न होगी। परन्तु ओस के न होने से यह न समझ लेना चाहिये कि अगले दिन अवश्य वर्षा होगी। कई कारण हो सकते हैं जो कि ओस पड़ने को रोक सकते हैं। अतः अन्य चिन्हों की ओर भी ध्यान देना चाहिये।

सायंकाल के समय छुपते समय यदि सूर्य लाल रंग का हो तो अगला दिन खूब खुला रहेगा। परन्तु इस चिन्ह से परिणाम निकालने में बड़ी सावधानी की आवश्यक्ता है। यदि लालिमा सूर्य से बहुत दूर तक ऊपर की ओर आकाश में फैली हो तो यह आंधी अथवा वर्षा का सूचक है। रात्रि को लाल रंग वाला चिन्ह तभी खुले दिन का द्योतक है यदि लाल रंग बहुत अधिक न हो। यह गोल पंखे की भांति फैला होना चाहिये, इसके सिरे टूटे फूटे न होकर स्पष्ट होने चाहियें।

पीले अथवा तांबे के रंग का सूर्यास्त इस बात का द्योतक है कि वर्षा निकट है। यदि दिन में वर्षा होती रही हो परन्तु, दोपहर पीछे आकाश में स्पष्ट २ इन्द्रधनुष के दर्शन हों तो पन्द्रह आने सम्भावना है कि दूसरे दिन वर्षा न होगी। और यदि प्रातःकाल भी सूर्योदय का रंग खाकी हो तो दिन खूब खुला रहेगा यह निश्चय जानो लाल सूर्योदय वर्षा का सूचक है।

दृष्टिहीन गायक

ब्रिटेनवासी प्रायः पक्षि-प्रिय होते हैं अतः रोयल सोसाइटी द्वारा जंगली पक्षियों की रक्षा के हेतु तथा उनके प्रति जो क्रूरता

का व्यवहार किया जाता है उनके निवारणार्थ प्रयत्न किया जा रहा है।

अद्यपि देशके कई प्रान्तोंमें बनवासी पक्षी जाल-बद्ध किये जाते हैं और नगरों में लाकर खिलाड़ियों द्वारा गाने की बाज़ियां लगा कर कई कष्टप्रद व्यवहार से सताये जाते हैं। प्रायः यह क्रूरता उनके अविचार का फल है किन्तु कभी २ यह व्यवहार निश्चित रूप से घृणोत्पादक होता है जो अक्षम्य है इन बाज़ियों में लिन्यट और चिफिञ्च नाम की सुरीली चिड़ियाँ को छोटे २ पिंजड़ों में बन्द करके दिवाल पर टांग देते हैं और इन पिंजड़ों पर इस प्रकार काले कपड़े उढ़ा दिये जाते हैं कि बहुत थोड़ी रोशनी अन्दर जाय। तब उन के मालिक उनके गान की लम्बाई पर तथा स्वरों की गणना और स्पष्टता पर शर्त लगाते हैं।

ऐसी बाज़ियों में जिस पक्षी की दृष्टि रोशनी न होने के कारण मन्द पड़ गई हो वे ही ज्यादा गाते और इनाम ले जाते हैं। इस अनुभव से कई एक मालिक अपने गायक पक्षियों की दृष्टि नाश कर देते हैं। यह अमानुषिक कार्य कोई ऐसे तरीके से किया जाता है कि जहां पक्षी दृष्टि बिहीन हो जाता है वहां उसकी आंख देखने वाले को बिलकुल स्वाभाविक प्रतीत होती है। कोई नहीं परख सकता कि यह अन्धा है। इसी कारण यह क्रूर कर्म जल्दी जाना नहीं जाता फिर भी अभियुक्त यदि पकड़ा जाता है तो दण्ड पाता है।

प्राकृतिक मणि।

(कृमि चक्षु के रंग)

प्युम्सिल वैनिआ के लिन्कननं विश्वविद्यालय के प्रोफेसर एस० एफ़० आरन 'साइन्टिफिक अमेरिकन' में लिखते हैं, कि प्रचलित विश्वास के प्रतिकूल रंग रूप में सब से सुन्दर खनिज धातुएं नहीं होतीं चाहे वह कितनी ही चिरस्थायी एवम् मूल्यवान् और शृंगारोपयोगी हों। और इसी भाँति सब से अधिक रंगों की चमक दमक न तो खानिज पदार्थों में न वनस्पति में, न फल फूलों में, न गर्म देश के पक्षियों के पंखों में, न सामुद्रिक सीप इत्यादि में और न ही बसन्त तथा हेमन्त के सुन्दर आकाश में होती है।

सब से अधिक स्वाभाविक रंग चमक दमक, निर्मलता, गहराई और प्रकाश तो कृमि की चक्षुओं में ही मिलता है।

बहुतों को यह कथन आश्चर्यजनक तथा तर्क-सिद्ध प्रतीत होंगी परन्तु जिज्ञासु के लिए यह एक प्रस्तुत सत्य है। केवल अपने सूक्ष्म वीक्षण यन्त्र को भिन्न २ छोटे २ कृमियों की आंखों पर डालने से ही यह बात स्पष्ट पता लग जायगी।

कोई हीरा, लाल, पुखराज, पन्ना वा मोती मनुष्य की आंख को वह ऐसी चमक पूर्ण अभायुक्त रंग नहीं देता जैसा कि कोई दो परों वाली मक्खियों में, तितलियों में बोट में वा घास के फुदकने वाले कीड़ों की आखों में दृष्टि गोचर होता है।

यह कथन घोड़े तथा हरिण पर बैठने वाली और हरे रंग के सिर वाली मक्खियों के विषय में विशेषरूप से उपयुक्त है। इनमें से कुछ एक जाति की मक्खियों की आखें केवल काली होती हैं परन्तु अन्य जातियों में इन्द्रधनुष के प्रत्येक रंग की आभा दिखाई देती है।

ऐसी भी मक्खियां होती हैं जिनके पर सूर्य्य के सात रंगों की चमक को मात करते हैं।

यदि किसी प्रकार कृमियों की यह आंखें चिर काल तक सुरक्षित रक्खी जा सकें—नन्हे २ कीड़े और अन्य कृमि इन को घुन की भान्ति खराब कर देते हैं—तो मणि प्रिय रमणियां और रसिकजन खनिज मखियें को छोड़ इन ही के पीछे दीवाने हो जायें।

चींटियों की गुप्त बातें

मनुष्यों की कितनी ही ऐसी छिपी जातियां हैं जिनकी रस्म रिवाज़ का हमें बहुत कम पता है किन्तु चींटियों के रहन सहन और आपस के बर्ताव का हमें बहुत कुछ ज्ञान है। फिर भी इस नन्हे से जीव की आपस की बोलचाल का समझना दुष्कर प्रतीत हुवा है।

म्युनिच के प्रोफेसर इडमन अपने क्रिया भवन में चींटियों के एक दलका जो कि एक कृत्रिम पहाड़ी पर बसती थीं अनुभव करते रहे हैं। उन्हों ने भोजन सामग्री की ढूढ़ खोज को ही चीटियों की एक दूसरेसे बात चीत का अवसर निश्चित कर अपने अध्ययन का ध्येय बनाया।

खाने की चीज़ का एक कारण पा जाने पर एक चींटी पहिले अपने आप उसे खींच ले जाने का उद्योग करने लगी परन्तु जब यह असम्भव प्रतीत हुआ तो वह छोटे से छोटे रास्ते से पहाड़ी पर सहायता लाने के लिये लौट गई।

चींटी पहाड़ी के ऊपर एक प्रकार का पहरेदारों का कमरा था जहां पर इस तरह की जल्दी बुलाहट के लिये चींटी दल हर समय तैय्यार रहता था। स्काउट—जिसको खाना मिला था अन्दर जाकर प्रत्येक चींटी अपने मुख के ऊपर के सींग सदृश्य वालों को मिलाकर सुसंवाद सुनाती है। चींटियां तितर बितर होकर इधर उधर घूमती हैं। इतने में स्काउट चींटी फिर दिखाई देती है। अब स्काउट चींटी सबसे आगे चलती है पीछे चींटियों की लम्बी पांत चलती है। जब वस्तु मिल जाती है तो उसको सब नन्हें २ कणों में विभाग कर लेते हैं।

'साइन्स' नामक पत्र में लिखता हुआ वैज्ञानिक वर्णन करता है कि कैसे उसने खाद्य पदार्थ के ऐसे स्थान पर कण छिटका दिये जहां पर कि स्काउट चींटी उनको ढूंढ़ सक्ती थी और कैसे उस नन्हीं सी चींटी ने जब २३ बार चींटी—पहाड़ी पर फेरे करके एक एक बचे हुवे कण को पहुंचा न लिया बिश्राम नहीं लिया।

पौधों को देख कर समय की पहिचान।

कुछ भिन्न २ पौधों और फूलों के स्वभाव के थोड़े से ज्ञान से यदि किसी की घड़ी बन्द होगई हो वा पास न हो और गाँवों में दौरा कर रहा हो तो सरलरीति से समयका अनुमान कर सक्ता है।

Goats beard अर्थात् कैनस का चौड़े २ पत्तों के बीच में जो चोटी वाला फूल खिलता है वह तड़के ३ बजे खिलता है और अपना मुख ११ बजे दिन के छिपा लेता है।

Cats ear के प्रायः सड़कों के किनारे छोटे २ फूल निकले होते हैं और प्रसिद्ध

Convolous ६ बजे सवेरे खिलते हैं। प्रायः बहुत से जंगली फूलों के उठने का समय यही है। पेन ७ बजे scarlet Junpernel आंख खोल देता है और एक घटे के बाद howkweed और Chickweed अपनी आंख खोलने का समय बताते हैं।

ठीक दोपहर को Nipplewort सो जाता है उसके बाद दो बजे Purple-Sandwort सोता है। तत्पश्चात् एक घण्टे बाद ३ बजे गेंदा आराम करता है और कमल ४ बजे शाम को बन्द हो जाते हैं।

प्रकृति के किसी अद्भुत कार्य्य क्रम के आधीन से प्रत्येक पौधे के कार्य्य का समय वा घण्टा भौंरों की आवश्यक्ता के अनुसार निश्चित होते हैं। इन असली भौंरे के बिना कहां कली और कहां फूल फल।

छत्रधारी चींटियां।

लण्डन के चिड़ियाघर में एक छतरी वाली चींटियों का उपनिवेश रानी और उसकी समस्त प्रजा सहित आया है।

यह रानी एक वास्तविक रानी है और सिवाय अंडे देने के उसको कुछ काम नहीं करना पड़ता। जितने अधिक अंडे वह देती है उतनी ही सर्वप्रिय बनती है। इसके उपलक्ष्य में वह हर समय अपने भक्तों से सेवित रहती है।

भोजन भी उस को बैठे बिठाये ला दिया जाता है परन्तु उसकी वेश भूषा की सजावट की सारी कुटुम्ब को चिन्ता रहती है क्योंकि इस रानी चींटी का डील डौल अपनी सबसे दीर्घकाय प्रजा चींटी से भी २० व ३० गुना बड़ा होता है प्रत्येक चींटी को उसके शृंगार भवन में कुछ न कुछ कार्य्य करना होता है।

छतरी वाली चींटी प्रायः अमेरिका में रहती हैं। यह जब अपने निवास में लगाने के लिये पत्तियां ले जाती हैं तब उनको सिरके ऊपर उठा कर चलती हैं जैसे कोई छतरी ले जाता है इस से इनका यह नाम पड़ा है। इनके बड़ा बल होता है। चार चींटी मिल कर अंडे के बराबर की मिट्टी का डाला खींच ले जाती हैं। घोंसला बड़े क्रमानुसार रक्खा जाता है और कोई सुस्त चींटी वहां नहीं जाने पाती। रानी एक बार चुनी जाकर बहुत कम बदली जाती हैं किन्तु यदि बदलने ही की आवश्यक्ता होती है तो प्रस्तुत रानी को एक ख़ास प्रकार की खाने की चीजें दी जाती हैं जिस से वह एक नया "रानी अंडा" देने के योग्य बनता है। यह नयी रानी अपनी मां का स्थान लेती है।

कुसुमोद्यान।

माया राज्य।

आश्चर्यजनक पुरातन अन्वेषण।

मैक्सिको के प्रशान्त महासागरिक तीर पर पश्चिम की ओर एक सहस्र योजन तक माया राज्य का विस्तृत विस्तार था। इसके अन्तर्गत माया राज्य की सभ्यता के तीन बड़े २ मुख्य केन्द्र मिले हैं। इनमें अगणित शिलाखण्ड और शिला लेख और नानाविधि अंकित प्रसाद मिलते हैं। किसी माया राजा का समाधि मण्डप भी दृष्टिगोचर हुआ है। इस मण्डप की दीवारों पर एक से एक उत्तम कौशल सूचक ६ चित्र दिखाई पड़ते हैं। मैक्सिको में प्राचीन मायाओं के वंशज आज भी-सहस्रों रोमन कैथलिक पादरियों से प्रभावित होने पर भी अपनी उन्हीं प्रतिमाओं की पूजा करते हुवे पाये जाते हैं। मि० ब्लूम को। जोकि अन्वेषकों में से एक थे। ऐसा प्रमाण मिला है जो कि यह सिद्ध करता है कि उस प्राचीन समय में भी माया जाति में ऐसे दन्तकार थे जोकि आजकल के डाक्टरों (Dentists) का अपनी कार्यकुशलता से मात करते थे। यह तो पूर्णरूप से निश्चित है कि माया लोग मट्टी के बर्तन बनाने में संसार की सब जातियों से अग्र गण्य थे।

मैक्सिको की 'शिहाज़ स्टेट' में 'इन्कैन्टो रैन्च' के पास टेशिबा नामक स्थान में प्राचीन सभ्यता का प्रथम केन्द्र प्राप्त हुआ है। इस से पहिले यहां कोई प्राचीन गवेषणिक नहीं पहुंचे थे। यहां के देशनिवासियों के अतिरिक्त बहुत कम लोग यहां आये होंगे। यह नगर टुलिहा नदी के किनारे एक अत्यन्त रमणीक स्थल पर बसा हुआ है। इसके स्तूप ऐसी जगह पर हैं जहां पत्थर की एक बड़ा दीवार सी नदी के मार्ग को रोकती हुई स्वाभाविक पुल का काम देती है। नदी बड़े बेग से इस दीवार से टकराती है और अपने मार्ग को बन्द पाकर दीवार के नीचे से निकल जाती है। इस रमणीय स्थान पर माया लोगों ने अपना एक बड़ा सुन्दर नगर बसाया था। खण्डरों के के खोजने पर अन्वेषकों को पहिले पहल प्रायः १२ फुट ऊंचे पत्थर के शिलाखण्ड मिले इनमें से कोई भी अंकित न था। प्रथम स्तूप की चोटी जहाँ कभी एक मन्दिर होता था। पर चढ़ने से इन्हें पता लगा कि एक १५०० वर्ष पुराने घर की छत भीतर धस गई है। बड़ी कठिनाइयों के पश्चात खोजकों ने बड़ी होशियारी से ऊपर के एक और कमरे में प्रवेश किया। यहां पर उनकी आशा फलवती हुई। यहां पर इन्हें सनिर्मित मिट्टी के चित्र विचित्र बर्तनों का एक समूह मिला जिन पर काले और नारङ्गी रङ्ग से नाना विधि के चित्र बनाये गये थे। इनमें से कुछ को छोड़कर बाकी प्रायः चिटके हुवे थे। फिर टूटी हुई छत के हिस्सों को हटा कर एक और प्रकार के बर्तना का समूह मिला। इनमें प्रत्येक बर्तन के नीचे गोल २ तीन पैर लगे हुये थे और इनके भीतर झुंझने की भान्ति कङ्कड़ डाले हुये थे जो कि हिलाने से बजते थे।

पहिले बर्तनों में एक गोल पेन्दा सा लगा हुआ था जैसा कि आज कल बहुत से प्यालों अथवा कटोरों में लगा रहता है।

इन कमरों के देखते भालते हुये कूड़े में से मि० ब्लूम को एक दान्त मिला। बड़े ध्यान स देखने पर ज्ञात हुआ कि दान्त के अन्दर एक प्रकार का काला मसाला भराहुआ है जो कि १५०० वर्ष के उपरान्त भी बिना किसीप्रकार खुरने भुरने के ज्यूं का त्यूं बना है। यह एक छेद म जो कि माया लोगों की एक विशेषता थी और जिसे वह सुन्दरता का सूचक समझते थे भरा हुआ था।

यह एक बड़ा प्रबल तथा अद्भुत प्रमाण है कि आज से १५०० वर्ष पूर्व माया लोग बिना आधुनिक शस्त्रों और बूटियों के ही बड़े दक्ष दन्तकार थे। मि० ब्लूम के विचार में छेद के बनाने की बिधि, दर्द मारने के साधन और भीतरी नसों को तकलीफ दिये बिना खराब न होने वाला मसाला बड़े भारी रहस्य हैं। भीतर का मसाला लोहे का बना हुआ है।

कई दिन के नितान्त श्रम और खोज के पश्चात् "ओकोसिंगो" की तराई में "कोपन हन युरास के खण्डहरों से भी बढ़ कर माया सभ्यता के विस्तृत विस्तारसूचक पांच सब से बड़े नवीन नगर मिले। जिनको देशी लोग 'चकालचिब' 'सेन्टा श्यरिसा' 'कोलोलटी', 'सैन ऐन्टानियें' और कन-पाम्टाई' के नाम से पुकारते हैं। जब यह लोग आकोसिंगो नगर में घुसे तो मिस्टर लाफार्ज—जो कि सदा इस खोज में रहते थे कि उन देशियों की अपेक्षा जिन्हें वह पहले देख चुके हैं अधिक सजे हुए देशी दिखलाई पड़े। घोड़े पर से कूद कर चबूतरे के ऊपर स्थित एक स्तम्भ के पास, जिसका कि उन्होंने बहुत दूर से लक्ष्य किया था, जा पहुंचे। यह एक माया वेदी का टुकड़ा था जिस पर १५० मूर्तिरूप अक्षर खुदे हुए थे। इन पुरातत्ववेत्ताओं ने एक दिन में नगर के अलग २ भागों में ६ भिन्न २ स्मारकों का पता लगाया जिन्हें देशी लोग भुवननिर्माण के कार्य में काम लाते रहे हैं।

एक चौखुन्टी वेदी एक घर में देहली के स्थान पर लगी हुई थी। मीनार के दो टुकड़े एक घर में दीवारों का काम देते थे। तीन मूर्तियां जिन पर लेख खुदे हुए थे एक गिरजे में कूड़ा करकट गिराने के स्थान में फेंकी हुई मिलीं। एक वेदी बहुत बुरी तरह टूटी हुई मिली। ऊपर के टुकड़ों का जिस में एक गोल छेद था, पहाड़ी की चोटी के ऊपर ले जाकर और उसके गोल छेद में एक क्रास फंसा कर एक कबर का निशाना बनाया गया था। दूसरे टुकड़े का मालिक इसे एक तालाब के किनारे लगाने लगा था। इन पर माया सम्वत् जो कि ४२२ ई० सम्वत् के लगभग था खुदा हुआ था। ऊंचे बन्द लगाकर उपत्यका के दोनों बीच में चोटियों को समतल करके दाहनी ओर कोलोलटी और बाई ओर कनपोम्टाई नगर बसाये गए थे सन्ट श्यरिसा जो कि टिब्बे और चबूतरों का एक समूह है, ओकोसिंगो के पास है। सैन अन्टोनियो जो कि अधिक मूल्यवान है वह तराई के दूसरे सिरे पर है। और टोनिनो बायीं ओर आको-सिंगो और सैन अन्टोनियो के बीच में है।

खोजकों ने टोनिनो में लगातार चार दिन के परिश्रम के पश्चात् १८ मनुष्य-मूर्तियां निकालीं जो कि रेतीले पत्थर पर खुदी हुई थीं। यह प्रायः स्वाभाविक कद अथवा इस

से एक फिट ऊंची थी और राजाओं तथा बड़े बड़े पुरोहितों का थीं। इनकी वेश-भूषा से ऐसा प्रतीत होता है कि यह खड़े होकर पूजा में मग्न हैं। इनके हाथों में पत्थर की छड़ियां हैं जिन पर सितारों की पंक्तियां खुदी हुई हैं। इन मूर्तियों के अंग अलंकार युक्त हैं। इन पर एक तिथि खुदी हुई मिलती है जो कि इस की सम्वत् के अनुसार १६ मई सन ४३२ बनती है। इन मूर्तियों के सम्बन्ध म यह एक विशेष बात है कि खड़ी हुई सब मूर्तियों के शिर कटे हुए हैं वेदी के ऊपर मूर्तियों के चेहरे तथा अन्य अंग भी किसी चीज़ से छीले हुये जान पड़ते हैं। यह दुष्टता स्पेन के पुराने पादरियों द्वारा ही की गई मालूम होती है। इनका उद्देश्य देशी लोगों को अपने स्मारकों को रखने तथा अपनी पुरानी वेदियों पर अपने ढंग से पूजा करने से रोकना था।

कापिटन तराई की एक बडी विशेषता वहां का एक यन्त्रकला का बड़ा भारी नमूना है जो कि प्राचीन माया लोगों की दक्षता को सूचित करता है। तराई के चारों ओर ऊंचे २ बन्द बनाये गये हैं जिस से कि दरिया अथवा नदियां पहाड़ों की जड़ों को खोखला न कर सकें। यह इस बात का एक और प्रमाण है कि १५०० वर्ष पहिले भी मनुष्य यन्त्र कला के उन तरीकों को काम में लाते थे जिन्हें आज कल के इंजीनियर काम में लाते हैं। कापिटन के चुर्गीघर में एक ऐसी वस्तु मिली है जोकि आजकल भी सब को चकित करती है। यह एक पत्थर है जिस पर कि मट्टी की तह जमी हुई थी। मट्टी साफ करने पर एक योधा की मूर्ति निकली जिसके हाथ में नेज़ा है। मि० ब्लूम के विचार में यह प्राचीन माया राजा चिनाज़ या बीन की मूर्ति है। स्यनान के मुख्य खण्डहरों में एक बहुत बड़ी रंगभूमि या क्रीडा क्षेत्र है जिस में पत्थर के कितने ही स्मारक हैं। पुराने माया इन्जिनियरों ने इस रंगभूमि को बनाते समय पहाड़ी की आकृति से विशेष लाभ उठाया है।

धर्म और विज्ञान

जनवरी के 'माडर्न रिव्यू' में दिये गये प्रबुद्ध भारत के विचार के अनुसार वह समय आ पहुंचा है जब कि धर्म और विज्ञान परस्पर मित्रता के रूप में गले मिलें। इस युग में इन के बीच की शत्रुता और झगड़ों को-जिन्होंने एक दूसरे के बीच बड़ी भारी खाँई खींच रक्खी थी-अब अवश्य घुल मिल जाना चाहिये और दोनों मित्र की तरह एक दूसरे पर विश्वास करके सत्य की खोज—जोकि दोनों का एक ही लक्ष्य है-के लिये एक दूसरे की सहायता करना चाहिये। हमारी समझ में इस झगड़े का कारण केवल ना समझी है जोकि यदि आपस में एक दूसरे के कार्य्यों और उपयोगों को भली प्रकार विचारने पर तुरन्त उड़ जायगी।

यह प्रमाणित किया जा सकता है कि धर्म और विज्ञान का-यद्यपि यह भिन्न२ मार्गों से चलते हैं परन्तु उद्देश्य एक ही है। सच कहो तो धर्म हमारे सन्मुख जो आदर्श रखता है वह विज्ञान के अन्तिम फल से विपरीत नहीं है। यह दोनों एक ही वस्तु के अलग अलग दृष्टि कोण से देखे हुये भिन्न २ रुप हैं। विज्ञान के आधुनिक अन्वेषणों द्वारा जीव की चेतनता तथा सारे ब्रह्माण्ड के ऊपर एक अखण्ड शक्ति की विद्यमानता का समर्थन हमारे कथन की सत्यता प्रमाणित करता है

जब कि वैदिक ऋषियों ने अपनी वज्र तुल्य कड़कती हुई वाणी से कहा कि वह महा प्रभु सच्चिदानन्द स्वरूप है तो उन्होंने अपनी आन्तरिक शक्ति के अनुभव रुप उसी सत्य के विषय में भविष्य वाणी की जिसको कि विज्ञान ने अभी जाना है। अतः जो हम दर्शाना चाहते हैं वह यह है कि कोई भी धर्म जोकि सत्य की नींव पर ठहरा हुआ है, फैल रहा है और उदारता पूर्ण है विज्ञान से भय भीत नहीं हो सक्ता। यह तो केवल संकीर्ण और अन्धपरम्परा से आच्छादित गिरजों और मन्दिरों का धर्म है जोकि विज्ञान की उन्नति पर भय सूचक झूठी चिल्लाहट करता है

"गौरांग खतरा"

The World to-marrow में प्रोफसर वाई लिखते हैं:—

उपनिवैशिक राज्य काल का अन्त आगया है। अब कोई जाति किसी अन्य जाति के आधिपत्य को स्वीकार नहीं करेगी। इस प्रकार अब दूसरों का भला नहीं किया जा सक्ता। यदि गौरांग जाति में कोई राज नीति शेष रह गयी है तब उसे इस प्रयत्न को खुलम खुल्ला छोड़ देना चाहिये और यह जानने का यत्न करना चाहिये कि मनुष्य जीवन के प्रत्येक भाग आत्मनिर्णय (Self determination) का क्या अर्थ है? यह यत्न न केवल योरोप निवासियों के ही लिये होना चाहिये वरन संसार के प्रत्येक कोने में फैल जाना चाहिये।

इस यत्न का यह स्पष्ट अभिप्राय होगा कि निज स्वार्थ के लिये लाभ और दूसरा के धन हरण के विचार को तिलांजली देनी होगी। यह सब जानते हैं कि तीव्र संघर्ष का केन्द्र वही स्थान है जहां कि स्वार्थ भाव सर्वोपरि है। यदि गोरों को चीन, भारत अथवा फिलपाईन द्वीप में निज स्वार्थ न हो तो इन देशों को स्वतन्त्रता देने में कोई आपत्ति नहीं रहती। यदि हम इस विचारसे सहमत नहीं हो सक्ते कि पृथिवी मनुष्य मात्र की उन्नति के लिये है, यदि हम इसका आपस में एक दूसरे की सहायता के लिये भोग नहीं कर सक्ते तब हमें भविष्य में जातियों में घोर संग्राम के लिये तय्यार रहना चाहिये। यदि हम संसार की आर्थिक बुनियाद को ठीक २ नहीं बना सक्ते, मनुष्य मात्र से मैत्री का भाव केवल शब्द मात्र ही रहेगा। और मनुष्य के मनों में जो मेल की संभावना विद्यमान है वह केवल कल्पना मात्र ही रहेगी।

इन दो मूल सिद्धान्तों की उन्नति और पुष्टि के लिये कि-स्वराज्य सब जातियों का जन्मसिद्ध अधिकार है और कि पृथिवी सब को मिल कर भोग करने की सामग्री है-यह परम आवश्यक है कि योरोप के बड़े २ राज्य इस बात की घोषणा करें कि अमुक निश्चित तिथि तक सब पराधीन जातियां स्वतन्त्र कर दी जायेंगी और इस अधिकार परिवर्तन की विधि भी साफ २ बतला दी जाय तथा सब संसार की एक आर्थिक महा सभा बुलाई जाय जो कि यह निश्चय करे कि सब की आवश्यकता अनुसार किस प्रकार आवश्यक वस्तुओं की वृद्धि और उनका बंटवारा किया जा सक्ता है। जब तक यह दो बातें नहीं की जाती भिन्न २ जातियों के बीच से कलह और द्वेष दूर नहीं होसक्ता।

धनुर्विद्या और स्त्रियां

धनुर्विद्या और गतका जोकि प्राचीन काल में शत्रु के संहार के लिये काम आते

आज कल जीवित हैं परन्तु अब इनका रूप खेल का हो गया और खेल भी इस प्रकार के जोकि स्त्री जाति को रुचिकर हो। जब अपनी मानरक्षा के लिये तलवार द्वारा द्वन्द युद्ध का प्रचार बन्द हो गया तो गतके ने इनका स्थान लिया जिससे कि कुमारों की शरीर को सीधी रख सके और आंखसे ठीक २ निशाना लगा सकें। आज कल अमरीका के के कितने ही नगरों में ऐसी स्त्री सभायें हैं जहाँ की कितनी ही अमीर स्त्रियां गतका खेलने में विशेष आनन्द लेती हैं। अमरीका के प्राचीन निवासियों का विषयुक्त तीर तो केवल अजायब घरों में ही दिखलाई देता है परन्तु धनुर्विद्या समितियों द्वारा पास किया हुआ तीर और कमान आज फुटबाल हाकी इत्यादि खेलों के विक्रेताओं से मिल सकता है। परन्तु इस से आजकल शत्रु के हृदय को निशाना नहीं बनाया जा सकता, वरन इसके लिये भी तुम्हें बना बनाया निशाना ही खरीदना पड़ेगा।

आजकल धनुर्विद्या बड़ी प्रिय बन रही है। (Woman citizen)

गुरुकुल।

जब से महात्मा गांधी ने आर्यसमाज पर अपनी सम्मति प्रकट की थी तब से राजनैतिक क्षेत्र में आर्यसमाजियों के प्रति कुछ विद्वेष सा फैल रहा था। परन्तु इस प्रकार अनुदार चित्त जनों को महात्मा गांधी जी के २२ जनवरी १९२६ के 'नव जीवन' में गुरुकुल शीर्षक के शब्दों पर ध्यान देने की बड़ी भारी आवश्यकता है। और आर्यसमाजियों को भी अपनी शक्ति का परिचय पाकर उसे स्थिर तथा उन्नत करने की ओर लगना चाहिए। ज्योति के प्रेमियों के लिये महात्माजी के उद्गार ज्यों के त्यों दिये जाते हैं:—

गुरुकुल शब्द एक पारिभाषिक शब्द हो गया है और उसका केवल अमुक प्रकार के आर्यसमाजी विद्यालयों के लिए ही प्रयोग किया जाता है। इन गुरुकुलों के सम्बन्ध में एक भाई लिखते हैं:—

"मैं गत ६ वर्षों से होमरूल, असहयोग हलचलों में शामिल होता आ रहा हूँ और उनका अनुभव कर रहा हूँ; और उतना ही आर्यसमाजियों का अनुभव करने का भी प्रयत्न करता हूँ क्योंकि मेरी यह मान्यता है कि यदि कुछ जीवन कहीं दिखाई देता है तो वह इसी में है। ज्यों ज्यों मैं असहयोग में गहरा उतरता जाता हूं और नवजीवन पढ़ता जाता हूँ त्यों त्यों मेरी श्रद्धा उस में दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। यहां देहली में देखा तो यहां के कन्या गुरुकुल की मुख्य अधिष्ठात्री देवी (विद्यावती सेठ, बी० ए०) भी खादी में बड़ी श्रद्धा रखती हैं और आप की परम भक्त हैं। हरद्वार गुरुकुल में देखा तो वहां के मुख्य अधिष्ठाता स्वयम् कात रहे थे और वे खुद अपने हाथ के कते सूत का बना हुआ कपड़ा पहनने की आशा रखते हैं। अभी जो खादी वे पहनते हैं उस का सूत उनकी माता ने काता था। इस लिए वह भी घर का ही था। कांगड़ी का भी यही हाल है। सूपा गुरुकुल का तो अभी आरम्भ ही है फिर भी वहां इसी दिशा में प्रयत्न किया जा रहा है। यहां (हरद्वार में) ऋषिकुल देखा तो उसमें इस दिशा में कोई प्रयत्न नहीं किया जा रहा है। अस्पृश्यों के बारे में पूछ ताछ की तो उत्तर मिला कि उनको छू सकते हैं लेकिन जब तक वे दूसरा जन्म न लें तबतक अध्ययन इत्यादि के

लिये उनको यहां कोई स्थान नहीं है। यह सुन कर मुझे बड़ा दुख हुआ। सनातनधर्म माने जाने वाले धर्म ने क्या कर दिया है?

अस्पृश्यों के सम्बन्ध में आर्यसमाज बड़ा प्रयत्न कर रही है। दक्षिण में एक इडपा जाति है, उसे ब्राह्मणों से ६४ गज दूर चलना पड़ता है। इस सीमा के अन्दर यदि कोई ब्राह्मण का घर हो तो चौका चूल्हा निकाल देना पड़ता है और यदि इस सीमा में कोई इडपा आ जाय तो भी यही होता है। इन लोगों में भी आर्यसमाजी काम कर रहे हैं।

ऊपर कही गई बातों को आप अच्छी तरह जानते हैं और आर्यसमाजियों के प्रति आपको प्रेम भी है। लेकिन प्रेमपूर्वक आप ने जो उनके दोष बताये थे उससे आपके अनुयायियों में बड़ी गलतफ़हमी फैली हुई है और वे उनके प्रति घृणा की दृष्टि से देखते हैं। अब भी आप इस संस्था के यदि दोष हों तो दोष और गुण हों तो गुण वतमानपत्र द्वारा जाहिर करेंगे तो बड़ा उपकार होगा और लोगों की गलतफ़हमी दूर होगी। आपने जो दोष बताये हैं उनका मैं सप्रेम स्वीकार करता हूँ लेकिन उनके गुणों को अधिक मानता हूँ। मैं समाजी नहीं हूँ लेकिन प्रेमी हूँ और आपके नवजीवन से मेरा प्रेम अधिक बढ़ता जा रहा है। जब अखिर अखिर आप सूरत जिले में गये थे उस समय आप सूपा गुरुकुल की मुलाकात को भी गये थे। आपके साथ जाने वाले भाइयों ने मुनसाड का न कुछ रिपोर्ट भी लिया था लेकिन उन्होंने सूपा गुरुकुल का नाम (कहीं छूत न लग जाय इस डर से या मैं नहीं जानता कि किस कारण से) भी न आने दिया था।"

मैं जानता हूं कि मुझे किसी के भी प्रति घृणा नहीं है, फिर आर्य्य समाजियों के प्रति कैसे हो सकती है? मैं हमेशा से आर्य्य समाजियों के सम्बन्ध में आया हूं और वह सम्बन्ध आज भी कायम है। हमारा सम्बन्ध या प्रेम जरा भी कम नहीं हुआ है इस लिए यदि मेरे लिखने से किसी के दिल में उनके प्रति घृणा उत्पन्न हुई हो तो मेरे लिए यह आश्चर्य और दुःख की बात है। आर्यसमाजियों की कृतियों के सम्बन्ध में यदि कोई मतभेद हो तो उससे उनकी देश सेवा भुलाई नहीं जा सकती है। उन्होंने जनता में नया जीवन डाला है। उन्होंने हिंदू धर्म में घुसे हुए कुछ दोषों का दर्शन कराया है, उन्होंने साहस किया है, स्त्री शिक्षा में बड़ा भारी हिस्सा दिया है। दलितों की सेवा की है, संस्कृत और हिंदी के अध्ययन को तरजीह दी है। ऋषि दयानन्द ने लड़कपन में ही माता के साथ सत्याग्रह करके जनता को ब्रह्मचर्य का पाठ सिखाया है, और इसका पवित्र स्मरण हमेशा ही ताजा रहेगा। विद्यादेवी जी के खादी प्रेम को मैं जानता हूं। उन्हें एक बुनना जानने वाला बहन भेजने का प्रयत्न कर रहा हूं। कांगड़ी गुरुकुल का और मेरा सम्बन्ध पुराना है। स्वामीजी की प्रेरणा से गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने खुद मिहनत करके दक्षिण अफ्रीका में मुझे कुछ धन भेजा था उसे मैं किसी प्रकार नहीं भुला सकता हूँ। वहां के अध्यापक खादी प्रेमी है यह भी मैं जानता हूँ। सूपा गुरुकुल का उल्लेख यदि नवजीवन में न आ सका तो उसका कारण लापरवाही नहीं है, घृणा तो हो ही नहीं सकती है। उल्लेख के अभाव की जबाबदेही या तो मुझ पर या महादेव देसाई पर ही हो सकती है। मैं तो यह जानता हूँ कि इसके लिए मैं जबाबदेह नहीं हूं और महादेव को

घृणा हो यह मैं असम्भव वस्तु मानता हूँ। लेकिन जहाँ हवागाड़ी की तरह सफर हो रही हो वहां किसी बात का उल्लेख करना रह जाय तो यह संभव है। सूपा गुरुकुल के प्रयत्न को मैं प्रशसनीय प्रयत्न मानता हूँ। उसके अधिष्ठाता के उत्साह के प्रति मेरा ध्यान आकर्षित हुआ था। उन्हीं के उत्साह के वश होकर मैंने वहां जाना स्वीकार किया था। मैंने यह देखा था कि वहां खादी के लिये अच्छा प्रयत्न किया जा रहाथा। मैं यह मानता हूं कि गुरुकुल भी शिक्षाविषय में अपनी तरफ से अच्छा हिस्सा दे रहे हैं। मैं उसकी उन्नति चाहता हूँ।

(नवजीवन)

मोहनदास करमचन्द गांधी

विचार प्रवाह

वायकोम सत्याग्रह

लगभग दो ढाई मास हुये, एसोसियेटेड प्रेस ने यह समाचार पत्रों में प्रकाशित किया था-"को चीन के समाचारों से विदित होता है, कि केरल अछूतोद्धार समिति ने वायकोम में सत्याग्रह समाप्त करने और वहां पर "पिकेटिंग" बन्द कर देने का निश्चय कर लिया है। कारण यह है कि सरकार ने मन्दिर की चारों सड़कें सब जातियों के लोगों के लिये खोल दी हैं। केवल ऐसे हिस्सों पर अछूतों को जाने का अधिकार नहीं मिला है, जो मन्दिर के साथ लगे हुवे हैं। इन हिस्सों के चारों ओर मन्दिर की ओर से दीवार बनाई जारही है, और ये मन्दिर की ही सम्पत्ति समझे जावेंगे। इन हिस्सों में जाने का अधिकार उन्हीं को होगा, जिन्हें वर्त्तमान समय में मन्दिर प्रवेश का अधिकार प्राप्त है। अब अछूतोद्धार समिति ने निश्चय किया है कि मन्दिरों में अब्राह्मणों के प्रवेश के प्रश्न को उठाया जाय।"

वायकोम सत्याग्रह की इस अपूर्व सफलता पर हम सत्याग्रहियों को बधाई देते हैं। चिरकाल तक निरन्तर संघर्ष के पश्चात् उन्हें यह सफलता प्राप्त हुई। इस से न केवल अछूतोद्धार के कार्य को बहुत अधिक प्रोत्साहना मिली है। अपितु सत्याग्रह की अपूर्व शक्ति भी प्रमाणित होगई है। हमें आशा है कि वायकाम में जिस कार्य का प्रारम्भ हुवा है, वह एक दिन भारत व्यापी आन्दोलन बन जायगा। अछूत कहे जाने वाले लोग अपने अधिकारों के लिये युद्ध करेंगे और विजय प्राप्त करके ही दम लेंगे। प्रसन्नता की बात है कि अछूतों की सहायता के लिये आर्य समाज के प्रचारक बड़े उत्साह से कार्य कर रहे हैं। उन्हें केवल ईसाइयों और मुसलमानों के पञ्जों से बचा रहे हैं, परन्तु उनके उद्धार के लिये भी निरन्तर उद्योग कर रहे हैं। आर्य समाजी हुवे २ अछूतों के अधिकारों के लिये संघर्ष होरहा है। ईसाई या मुसलमान होजाने पर अछूतों को अधिकार मिल जाते हैं, अभी तक आर्य्य समाजी होने पर उन्हें उनसे वञ्चित ही रखा जाता है। इसी लिये काल पाथी

आदि स्थानों पर सत्याग्रह तक की तैयारियां की जारही है । यह सब कुछ उचित है। हम इस बात से पूर्णतया सहमत हैं कि आर्य्य समाजी बन जाने पर भी अछूतों को वे सब अधिकार अवश्य मिल जाने चाहिये जो कि उन्हें ईसाई या मुसलमान बनने पर मिल जाते हैं । इस के लिये आन्दोलन वा सत्याग्रह—सब कुछ होना चाहिये । पर साथ में यह भी अवश्य ध्यान में रखना चाहिये कि आर्य समाज 'अछूतपन' को ही अनुचित समझता है । उसके मत में हिन्दू धर्म के अन्दर 'अछूतपन' को कोई स्थान ही नहीं है। इस लिये उसे यह प्रयत्न करना बहुत जरूरी है कि अछूतों को अन्य लोगों के समान अधिकार दिये जावें काल पाथी में अब तक आर्य्य समाज के प्रचारक इस बात का यत्न कर रहे हैं, कि आर्य्य समाजी बने हुवे अछूतों को अन्यों के समान अधिकार दिये जावें । इस के स्थान पर यदि यह आन्दोलन प्रारम्भ किया जावे कि अछूतों ही को अन्य लोगों के समान अधिकार दिये जावे, तो अधिक लाभ हैं । यह बात जहां वैदिक धर्म के अधिक अनुकूल है, वहां अधिक उपयोगी भी है । इसी के द्वारा वास्तविक अछूतोद्धार किया जासकेगा । कालपाथी के कार्य्य कर्त्ताओं की कठिनाई का हम अनुभव करते हैं । हम जानते हैं कि कार्यकर्त्ताओं और धन की कमी तथा ईसाइयों और मुसलमानों से सख्त मुकाबला होने के कारण उन्हें अपनी वर्तमान कार्य प्रणाली का अनुसरण करना अनिवार्य सा प्रतीत होता है, परन्तु अपने कार्य क्षेत्र को अधिक विस्तृत कर देने से उन्हें सहायता भी अधिक प्राप्त होसकती है । वायकोम सत्याग्रह की सफलता एक तरह से आर्य समाज की ही विजय है । यदि इस के सत्याग्रह आन्दोलन को और अधिक फैलाया जाय । तो छूतोद्धार के कार्य में बहुत सफलता हो सकती है ।

असली कालकोठरी

श्रीयुत एडवर्ड थाम्पसन ने एक नवीन पुस्तक लिखी है, जिस का नाम है, 'दि अदर साइड आफ दि मैडल' यानी तकमे का दूसरा पार्श्व' यह पुस्तक अनेक दृष्टियों से बहुत महत्त्व की है . अब तक सन सत्तावन के गदर की सारी जिम्मेवारी भारतीयों पर पर ही फेंकी जाती है, और यह भी कहा जाता है, कि भारतीयों ने अंग्रेजों पर बड़े क्रूर अत्याचार किये । प्रमाण के लिये सिराजुद्दौला की काल कोठरी उत्तर कानपुर का घातक कुआं पेश किये जाते हैं । इनके द्वारा अंग्रेज युवकों के हृदयों में भारतीयों के प्रतिद्वेष उत्पन्न किया जाता है । यदि ये घटनायें सत्य होती, तब तो कोई विशेष हानि नथी, परन्तु आश्चर्य यह है कि ये घटनायें या तो सर्वथा असत्य हैं और या बहुत बढ़ कर लिखी गई है अनेक बङ्गाली विद्वान कालकोठरी की घटना को निराधार सिद्ध कर चुके हैं । यह होने पर भी यह घटनायें इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में ज्यों की त्यों लिखी है और शिक्षित भारतीयों का विश्वास इस पर कम नहीं हुवा है। गदर के समय अंग्रेजों ने भारतीयों पर जो नृशंत अत्याचार किये हैं, उन पर कोई ध्यान भी नहीं देता । उन्हें कोई जानता तक नहीं। अब श्री एडवर्ड थाम्पसन की पुस्तक से लोगों की आंख खुलेंगी । उन्हें मालूम होगा कि असली काल कोठरी कलकत्ते में न हो कर अमृतसर में थी, और असली घातक कुआं डांडन कानपुर में न होकर अगनाला में था और इन दोनों में भारतीयों को अंग्रेजों ने पैशाचिक क्रूरता के साथ घात किया था। घटनाओं को विस्तार के साथ लिखने का

यहां पर स्थान नहीं है। जो लोग श्रीयुत थाम्पसन की पुस्तक पढ़ सकते हैं। अवश्य पढ़ें। इस लिये नहीं कि हम अंग्रेजों के प्रति द्वेष का प्रचार करना चाहते हैं। परन्तु इस लिये कि ऐतिहासिक सत्यता सर्वविदित होसके। झूठे इतिहास से भारतीय नवयुवक जितने गुलाम बन रहे हैं। उतने और किसी चीजसे नहीं। उनमें अपना जातीय अभिमान नष्ट हो रहा है और अंग्रेज़ जाति के प्रति अनुचित सम्मान और श्रद्धा उत्पन्न हो रही है। भारत के शिक्षित लोग अंग्रेजों के अन्दर दैवीय गुणों का अवलोकन करते हैं। उनके पदचिन्हों का अनुसरण करने में अभिमान समझते हैं। इतिहास का इससे अधिक दुरुपयोग नहीं किया जासकता।

लोकार्नो पैक्ट

यूरोप में लोकार्नो नाम का एक नगर है पिछले दिनों वहां पर इङ्गलैण्ड, फ्रांस, इटली, जैचोस्लाविका आदि शान्तिशाली राष्ट्रों के प्रतिनिधि एकत्रित हुवे थे। गत महायुद्ध के इन विजेता राष्ट्रों ने उस नगर में जर्मनी के साथ एक समझौता किया था, इसी लिये वह समझौता लोकार्नो पैक्ट कहलाता है। इस पैक्ट के अनुसार जर्मनी ने राष्ट्रसंघ (लीग आफ नेशन्स) का सदस्य होना स्वीकृत कर लिया है। साथ ही हरजाने आदि के सम्बन्ध में भी मित्रराष्ट्रों का जर्मनी के साथ समझौता होगया है। लोकार्नो पैक्ट पर इङ्गलैण्ड तथा अन्य मित्रराष्ट्रों के राजनीतिज्ञ बड़ी खुशियां मना रहे हैं। मि० चैम्परलेन को इसके लिये सब ओर से बधाइयां दी जारही हैं। जनता को बताया जारहा है कि लोकार्नो पैक्ट द्वारा संसार में युद्ध की सम्भावना और कम होगई है। जिन उच्च सिद्धान्तों के लिये गत महायुद्ध लड़ा गया था और जिन को सम्मुख रख कर राष्ट्रसंघ की स्थापना हुई थी। उनको कार्य्यरूप में परिणत करने में यह एक नवीन कदम है। परन्तु यदि अधिक गम्भीरता से देखा जाय तो लोकार्नो पैक्ट द्वारा युद्ध सम्भावना कम न होकर और बढ़ गई है। इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञ रूस के साथ जिस भावी संघर्ष की अभी से कल्पना कर रहे हैं, यह उसी के लिये तैय्यारी है। अन्तरार्शट्रीय राजनीति के विद्यर्थियों से यह छिपा नहीं है कि भावी महायुद्ध का केन्द्र यूरोप न होकर एशिया होगा। यद्यपि गत महायुद्ध भी साम्राज्यवाद की प्रवृत्तियोंके संघर्षके कारण उत्पन्न हुआथा परन्तु उसमें इङ्गलैण्ड का जगत्व्यापी साम्राज्यवाद नष्ट नहीं हुवा उसमें आष्ट्रिया-हंगरी के आधीन अनेक राष्ट्रीयताओं को ही स्वतन्त्र होने का अवसर मिल सका। जर्मनी ने इङ्गलैण्ड के साम्राज्यवाद का मुकाबला करना चाहा था, परन्तु उसे सफलता नहीं हुई। इसका यह अभिप्राय नहीं कि संसारके अन्य राष्ट्र इङ्गलैण्ड की बढ़ती हुई साम्राज्य लिप्सी को चुपचाप सहन कर रहे हैं। फ्रांस, अमेरिका, जैचोस्लाविका आदि सब देशों को साम्राज्यवाद का रोग एक ही प्रकार से हुवा है। इनको अपना साम्राज्य फैलाने के लिये एशिया और अफ्रीका में ही अवसर है। अतः इन महाद्वीपों में इन सब राष्ट्रों के हित आपस में टक्कर खाते हैं। परन्तु एक भारी कठिनता यह है कि एशिया के राष्ट्र भी अब नींद से जगने लगे हैं। वे भी होश संभाल रहे हैं और अपने अपने घर को व्यवस्थित करने लगे हैं इस पर भी मुश्किल यह है कि जापान और एशिया जो कि एशियाई शक्ति हैं और स्वयं भी साम्राज्य लिप्सु है

इन यूरोपियन शक्तियों का विरोध करने के लिये तत्पर हैं। पिछले दिनों रूस और जापान में एक सन्धि हुई थी, उसका यही प्रयोजन था। स्पष्ट है कि भावी में एशिया के साम्राज्यवाद पर जो महायुद्ध होगा, उस में रूस और जापान एक तरफ होंगे और यूरोपियन राष्ट्र दूसरी तरफ। इसी लिये इंगलैण्ड अपने पक्ष को खूब मजबूत कर रहा है और लोकार्नो पैक्ट द्वारा उस ने जर्मनी को भी अपने साथ बांध लिया है। इस दृष्टि से निस्सन्देह इङ्गलैण्ड के राजनीतिज्ञों को खुशी मानने का अवसर है। परन्तु यह नहीं कहा जासकता कि जर्मनी कब तक इस गुट में शामिल रह सकेगा। जर्मनी का बहुतसा लोकमत इस पैक्ट के विरुद्ध है। सेनापति हिंडनबर्ग ने इस पैक्ट को जर्मनी के लिये लज्जास्पद और अपमान जनक बतलाया है। इसी विरोध के कारण जर्मनी के प्रधानमंत्री श्री लूथर ने त्यागपत्र भी पेश किया था। अभिप्राय यह है कि जर्मनी का लोकमत अपने पुराणे शत्रुओं के साथ इस तरह हाथ मिलाने और उनकी कठपुतली बनने को तैय्यार नहीं है। केवल आर्थिक आवश्यकताओं से बाधित होकर जर्मन सरकार को इस पैक्ट पर हस्ताक्षर करने पड़े हैं। उधर रूस के राजनीतिज्ञों ने भी इसके लिये जर्मनी को ताना देना शुरु किया है। रूस और जर्मनी में कुछ समय व्यतीत हुआ सन्धि हुई थी। लोकार्नो पैक्ट के अनुसार राष्ट्रसङ्घ में सम्मिलित होकर जर्मनी इस बात के लिये बाधित है कि वह संघ के आदेशानुसार अवसर पड़ने पर रूस के साथ युद्ध करे। क्यों कि रूस सङ्घ का सदस्य नहीं है। इस हालत में रूस और जर्मनी की सन्धि का अभिप्राय ही क्या है? अतः रूस के राजनीतिज्ञों का लोकार्नो पैक्ट पर हस्ताक्षर करके जर्मनी ने विश्वासघात किया है, यह कहना सर्वथा न्यायसंगत है।

जर्मनी इङ्गलैण्ड वा अन्य मित्रराष्ट्रों का कब तक साथ निभा सकेगा, यह कह सकना कठिन है। परन्तु सम्भवाना यही है कि यह साथ क्षणस्थायी होरहेगा। जर्मनी और फ्रांस का पारस्परिक विरोध एक पैक्ट द्वारा दूर नहीं हो सकता। जर्मनी ब्रिटेन के साथ अपने पुराणे हित विरोध और साम्राज्यवाद में स्पर्धा को इतनी शीघ्र नहीं भुला सकता। क्या आश्चर्य है कि भावी महायुद्ध के शुरु होते ही जर्मनी उसी प्रकार इङ्गलेण्ड के गुट से अलग होजावे जिस तरह गत महायुद्धमें इटली जर्मनी के गुट से पृथक् होगया था।

इटली में एकसत्तात्मक शासन

३० नवम्बर को रोम से निम्नलिखित समाचार आया था "इटली की व्यवस्थापिका सभा ने बिना किसी विवाद के इस सरकारी प्रस्ताव को स्वीकृत कर लिया है कि प्रधानमंत्री व्यवस्थापिका सभा के प्रति उत्तरदायी न होकर राजा के प्रति उत्तरदायी हो।" इस प्रस्ताव के अनुसार इटली से लोकतना राजाका अन्त होगया है। अब श्री० मुसुलोनी राजा के प्रति जिम्मेवार हो कर अर्थात् पूर्णतया स्वेच्छाचारी और सर्वथा अनुत्तरदायी होकर इटलीका शासन करेंगे। गतमहायुद्धकी समाप्ति पर गगन भेदी आवाजों के साथ दुनियां को बतलाया जारहा था कि यह युद्ध स्वतन्त्रता, समानता और लोकसत्ता के लिये लड़ा गया है। इटली भी इन्हीं लोकसत्ता के सिपाहियों में से एक था परन्तु अब? आश्चर्य जनक परिवर्तन है। मित्रराष्ट्रों के वे ऊच्च सिद्धान्त कहाँ गये? राष्ट्रपति विल्सन के १४ सिद्धान्त केवल का-

गज पर ही लिखे रह गये। मुसुलेानी अपनी महत्त्वाकांक्षा की उच्चतम सीमा को पहुंच गया है। अब उसका पतन प्रारम्भ होगा। परन्तु यह पतन धीरे धीरे नहीं अपितु, एक दम और अचानक होगा। क्रान्ति से होगा। इसके चिन्ह दिखाई पड़ने लग गये हैं। इटली में गुप्त समितियां लगी हुई हैं। जातिकारी मुसुलेानी के विरुद्ध षड्यन्त्र कर रहे हैं। रूस की क्रांति से पूंजीपतियें और भूपपतियें की सत्ता का नाश हुवा था। इटली की इस क्रान्ति से किस का नाश होगा? क्या संसार व्यापी फैसोट प्रवृत्तियें का ?

राष्ट्रीय सप्ताह।

कानपुर में राष्ट्रीय सप्ताह बड़े समारोह के साथ मनाया गया। लाखों आदमी एकत्रित हुवे। राष्ट्रीय महासभा के सिवाय वर्जनें सम्मेलन और महासभाओं के अधिवेशन हुवे। यदि भीड़ की दृष्टि से देखा जाय, तेा इस में कोई शक नहीं कि राष्ट्रीय सप्ताह अपूर्व सफलता के साथ समाप्त हुवा। परन्तु लाखों के इस जनसमुद्र में कुछ बातें स्पष्ट रूप से दिखाई देरहीं थी। राष्ट्रीय सप्ताह में राष्ट्रीयता का सर्वथा अभाव था! राष्ट्रीयता की चिन्ह भूत खादी बहुत कम दिखाई पड़ती थी। प्रतिनिधियें तक के शरीरों पर विदेशी वस्त्र शेाभायमान थे। गांधी टेापी के स्थान पर मलमल की पगड़ियां और विलायती फैल्ट कैप दिखाई दे रहीं थीं। तिलक-नगर में आर्य समाज का जलूस निकला, सनातनियें का जलूस निकला, मुसलमानें का जलूस निकला, परन्तु कांग्रेसका जलूस! वह शायद सभानेत्री के आने पर पहले ही निकल चुका था। उस की राष्ट्रीय सप्ताह में कोई जरूरत नहीं समझी गई-या उसकी इच्छा ही किसी के दिल में उत्पन्न न हुई तिलक-नगर में एक संगीत मण्डली गारही थी-'वेदें का डङ्का दुनियां में बजवा देंगे' चारेां तरफ घिरी हुई जनता कहती थी-'बेालो! वैदिक धर्म की जय'। दूसरी टेाली गारही थी-'इस्लाम के लिये सिर तक कटा देंगे"। घिरी हुई जनता हर्ष से कहती थी-'अल्लेा-हो अकबर' इसी तरह सब जगह साम्प्रदायिक या जातिगत भजन और जयनाद सुनाई पड़ रहे थे। स्वराज्य की लहर या राष्ट्रीयता का नाद कहीं भी न सुनाई पड़ता था। कानपुर के उस भारी जनसमूह में घूमते हुवे एक दर्शक के लिये यह समझना कठिन था कि यह राष्ट्रीयता का समारोह है। कांग्रेस पिण्डाल में जाइये, वहां आप स्वराज्य-प्राप्ति के उपायें को सुनेंगे। मालूम होगा कि आप भारत की राष्ट्रीय महासभा में बैठे हैं। पर वहां से बहार निकल कर देखिये, जातिगत विद्वेष और साम्प्रदापिक भावों से सारा वायुमण्डल परिपूर्ण है। आर्य स्वराज्य-सभा के प्लेटफार्म पर मुसलमानों के विरुद्ध आग उगलीं जारही है, सनातन धर्म महामण्डल में आर्य समाज को गालियां सुनाई जारही हैं और अलीगढ़ की मुस्लीम लीग में भारत पर इस्लामी हुकूमत को फिर स्थापित करने के सुपने लिये जारहे हैं! आज राष्ट्रीय प्रप्ताह की यह दशा है! जब १९२१ के राष्ट्रीय सप्ताह से १९२५के राष्ट्रीय सप्ताह की तुलना कीजिये, आकाश और पाताल का अन्तर है ४वर्षों में भारत और का और होगया है। प्रतिक्रिया की एक वेगवती लहर सारे भारत पर चल रही है। देखें, इस लहर-को गुजारने में कितना समय लगता है।

राष्ट्रीय महासभा।

इस वर्ष राष्ट्रीय महासभा के सभापति पद को एक भारतीय महिला ने सुशोभित किया था। राष्ट्रीय महासभा के इतिहास में यह पहला ही अवसर था, जब कि एक भारतीय महिला ने इस उच्च पद को ग्रहण किया श्रीमती सरोजिनी नायडू ने सभानेत्री के कार्य का बड़ी योग्यता से सञ्चालन किया। उनका प्रारम्भिक भाषण बहुत ही योग्यता से पूर्ण था। सरोजिनी देवी की अपूर्व प्रतिभा और कवित्व शक्ति का अद्भुत चमत्कार उस में स्पष्टरूप से दिखाई पड़ रहा था। सभानेत्री ने भारत की वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति पर बहुत उत्तम प्रकाश डाला। देश के सम्मुख नवीन कार्य निर्दिष्ट करते हुये आपने ग्रामसुधार पर बहुत जोर दिया। ग्रामों के सुधार के लिये सच्चे देश भक्त कार्यकर्त्ताओं की आवश्यकता है, जो कि निःस्वार्थ भाव से कार्य करने के लिये तैय्यार हों। ग्रामसुधार के बिना भारत का उद्धार नहीं होसकता। भारत की वास्तविक जनता ग्रामों में ही निवास करती है। और उसमें राजनीतिक जीवन उत्पन्न किये बिना स्वराज्य मिलना सम्भव नहीं है। स्वराज्य दलने कौंसिलों में जो कार्य किया है, उसकी भी सभानेत्री महोदया ने बहुत प्रसंसा की। कौंसिलों के भारी कार्यक्रम के सम्बन्ध में आपने कहा कि देश की तरफ़ से संयुक्त मांग सरकार के सम्मुख रखी जा चुकी है। अब सरकार की बारी है कि वह उसका जवाब दे। हमारी भावी नीति सरकार के इसी उत्तर पर आश्रित है। यदि वो उत्तर संतोष जनक हो, तब तो अपनी वर्तमान नीति को दुहराने की हमें आवश्यकता होगी। और यदि बड़ी व्यवस्थापिक सभा के आगामी पत्र के अन्त तक हमें कोई उत्तर न मिले और या सन्तोषजनक उत्तर न मिले, तो राष्ट्रीय महासभा को निश्चय करना चाहिये कि कौंसिलें केसब सदस्य कौंसिलों को छोड़ कर बाहर चले आवें और कैलाश से कन्या कुमारी तक, तथा सिन्धु से ब्रह्म पुत्रा तक सम्पूर्ण देश को सरकार के साथ संघर्ष के लिये तैय्यार करें।

इसी प्रकार हिन्दू मुसलिम समस्या प्रवासी भारतवासी आदि सभी विषयों पर सभानेत्री के विचार अत्यन्त उपयुक्त और समयोचित थे।। सभानेत्री के भाषण से श्रोताओं के अन्दर नवीन उत्साह का संचार हुवा।

मुख्य प्रस्ताव।

राष्ट्रीय महासभा का मुख्य प्रस्ताव पं० मोतीलाल जी नेहरु ने पेश किया। प्रस्ताव बहुत लम्बा है, परन्तु उसके भाव को संक्षेप में इस प्रकार प्रगट किया जासकता है- "यह कांग्रेस सविनय आज्ञा भंग और सत्याग्रह में अपना विश्वास प्रगट करती है और समझती है कि सत्याग्रह ही स्वराज्य प्राप्ति का एक मात्र उपाय है, परन्तु देश अभी इसके लिये तैयार नहीं है। इस लिय कांग्रेस निश्चित करती है कि—

(क) जनता को सत्याग्रह के लिये तैयार करने के लिये राजनीतिक कार्य को हाथ में लिया जाय।

(ख) इस राजनीतिक कार्य का सिद्धान्त आत्म विश्वास को रखा जाय। इस सिद्धान्त के अनुसार निम्नलिखित कार्यक्रम को राजनीतिक कार्य्य के लिये स्वीकृत किया जाता है।

१—देश के अन्दर चरखे और खद्दर का प्रचार जातीगत एकता, अछूतोदार, शराब आदि मादक द्रव्यों का निषेध, श्रमियों और पूंजीपतियों तथा किसानों और जमींदारों में ठीक सम्बन्धों की स्थापना और भारतनिवासी तथा प्रवासी भारतियों के राष्ट्रीय, आर्थिक, व्यावसायिक और व्यापारिक हितों की रक्षा करना।

२—विदेशों में भारत के सम्बन्ध में ठीक ठीक खबरों का पहुंचाना।

३—व्यवस्थापिका सभाओं में राजनीतिक कार्य का आधार १८ फरवरी १९२३ और ८ सितम्बर १९२५ की राष्ट्रीय मांगों को बनाया जाय। इसके लिये

(१)—स्वराज्य दल शीघ्र ही सरकार को इस राष्ट्रीय मांग का उत्तर देने के लियेप्रेरित करेगा। यदि सरकार ने फरवरी मास (१९२६) के अन्त तक कोई उत्तर न दिया, अथवा यदि सरकार का उत्तर कांग्रेस की कार्यकारणी समिति के अनुसार सन्तोषजनक न हुवा, तो स्वराज्य दल के सदस्य सब व्यवस्थापिका सभाओं से बाहर चले आवेंगे।

(२)—इसके बाद स्वराज्यदल के सदस्य विशेष अवस्थाओं के बिना व्यवस्थापिका सभा में सम्मिलित न होंगे।

(३) कांग्रेस की कार्यकारिणी समिति अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी की एक बैठक बुलायगी, जो कि देश में करने के लिये एक कार्यक्रम तैयार करेगी। यही कमेटी यह भी निश्चय करेगी कि अगले निर्वाचन में कांग्रेस के उम्मीदवार किन शर्तों पर चुनाव के लिये खड़े हों। परन्तु यह शर्त स्थिर समझनी चाहिये कि सरकार से सन्तोषजनक उत्तर न मिलने पर सरकार की कृपा से प्राप्त कर स्वराज्यदल के उम्मीदवार स्वीकृत न करेंगे।

(४) यदि सरकार का उत्तर सन्तोषजनक हुआ तब भी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी ही भावी नीति का निर्धारण करेगी।'

पं० नेहरू जी के प्रस्ताव पर अनेक संशोधन पेश किये गये। परन्तु इनमें से मुख्य संशोधन 'प्रतियोगी सहयोग' की नीति के अनुयायियों की तरफ से पं० मदनमोहन मालवीय जी ने पेश किया बहुत बड़े बहुमत के साथ राष्ट्रीय महासभा ने मूल प्रस्ताव को स्वीकृत किया। जिस नीति का अनुकरण प्रारम्भ से ही स्वराज्यदल को करना चाहिये था, उसका निश्चय अब कानपुर में किया गया है। कौंसिलों द्वारा कुछ भी प्राप्त कर सकना असम्भव है। असहयोगीदल प्रारम्भ से ही यह कह रहा हैं। परन्तु स्वराज्यदल अपनी वाधानीति से सुधार के ढकोसले को तोड़ने की आशा रखता था। वह आशा पूरी नहीं हुई और कौंसिलों के कार्य की अनुपयोगिता जनता के सम्मुख स्पष्ट हो गई। इस हालत में यही उचित था कि कौंसिलों को छोड़ कर देश में वास्तविक कार्य को अपने हाथों में लिया जाय। प्रसन्नता की बात है कि कानपुर में यही निश्चय किया गया है। हमें पूरा विश्वास है कि फरवरी मास के अन्त तक भी सरकार राष्ट्रीय मांग का कोई उत्तर नहीं देगी। यदि सरकार के प्रमुखों के भाषणों को ही उत्तर समझा जाय, तब तो उसके सन्तोषजनक न होने में सन्देह ही क्या है? बड़ी व्यवस्थापिका सभा का उद्घाटन करते

हुये वायसराय ने और पिछले दिनों भारत-मन्त्री ने जो भाषण किये हैं, उनसे लिबरल दल तक भी सन्तुष्ट नहीं हैं। ब्रिटिश लोग शक्ति के उपासक हैं, शक्ति से दबते हैं, शक्ति के सामने सिर झुकाते हैं। एसेम्बली में पेश की गई शक्ति हीन माँगों की सरकार जरा भी परवाह नहीं करती। इस हालत में यह निश्चित है कि सरकार राष्ट्रीय मांग का कोई भी उत्तर न देगी। यदि फरवरी मास के बाद स्वराज्यदल ने कौंसिलें का खाला कर दिया और देश में विधायक कार्यक्रम का प्रारम्भ कर दिया तो निस्सन्देह बहुत बड़ी बात होगी। कौंसिलों से किसी भी तरह की आशा रखना मृगतृष्णा के समान है। उन का मोह त्याग कर, तथा दूसरों को भी उनका दुरुपयोग न करने देकर यदि देश को सत्याग्रह के लिये तैय्यार किया जाय तो कानपुर का यह प्रस्ताव इतिहास में स्मरणीय रहेगा।

प्रतियोगी-सहयोग।

कानपुरमें प्रतियोगी-सहयोग की बुरी तरह पराजय हुई। परन्तु प्रतियोगी सहयोग के नेता इस से निराश नहीं हैं। वे इसे सुचिन्ह समझते हैं। श्रीयुत केलकर ने बात चीत करते हुवे कहा था कि जो स्थिति गया में स्वराज्यवादियों की थी, वही अब हमारी है तब वे परिवर्तन वादी थे, अब हम परिवर्तन वादी हैं। शीघ्र ही हम इन नये अपरिवर्तन वादियों को पराजित करने में सफल होंगे। इसी के अनुसार श्री केलकर, जयकर, मुञ्जे आदि नेताओं ने प्रयत्न भी प्रारम्भ कर दिया है। प्रतियोगी सहयोग के प्रचार के ही लिये नेताओं ने व्यवस्थापिका सभाओं से त्याग-पत्र दे दिये हैं। श्रीयुत केलकर की आशा व भविष्यवाणी ठीक हो सक्ती है। पर उसके लिये एक शर्त है। यदि पं० नेहरू जी तथा उनके अनुयायी स्वराज्यदल ने अपने प्रस्ताव के अनुसार कार्य किया, यदि उन्हों ने देश में फिर से सत्याग्रह आन्दोलन को चलाने का दृढ़ निश्चय कर लिया तब तो श्री० केलकर को निराश ही होना पड़ेगा। देश कौंसिलों की निरर्थकता को खूब समझता है। साधारण जनता अब भी पहले ही की तरह कुर्बानी के लिये तैय्यार है। पर उनके लिये नेता चाहियें। नेता उत्साह शून्य हैं, निराश हैं या जातिगत झगड़ों में लगे हुवे हैं। यदि नेहरू जी इस अचेतनता को दूर कर १९२१ के दिन ला सके अथवा अपने अनुयायियों को कम से कम सच्चे दिल से ग्रामसुधार आदि के विधायक कार्यक्रम में प्रवृत्त कर सके, तब तो उनकी विजय निश्चय है। नहीं तो श्री० केलकर की भविष्य वाणी ही ठीक होगी। या तो स्वराज्यदल को उन पर चढ़ना होगा, या नीचे गिरना होगा। वह बीच में नहीं खड़ा रह सकता। प्रतियोगी-सहयोग नीचे की तरफ जाता है, पर यदि उनपर जाना असम्भव हुवा तो यह अवश्यभावी है। पं० मालवीय जी कांग्रेस में बार बार प्रतिनिधियों से कह रहे थे कि स्वराज्य दल कहता बहुत है, करता कम है। वायदे बड़े बड़े कर लेता है, पर उन्हें पूरा नहीं करता। अब तक निस्सन्देह स्वराज्यदल ने यही किया है। यदि आगे भी उसने यही किया, तब तो 'प्रतियोगी-सहयोग की विजय अनिवार्य है। कौंसिलों में स्वराज्य दल की वर्तमान नीति देर तक नहीं चल सकती उसे ऊपर या नीचे-किसी तरफ आवश्य जाना पड़ेगा।

कांग्रेस की भाषा-हिन्दुस्तानी

इस वर्ष राष्ट्रीय महासभा ने एक बहुत ही महत्त्व पूर्ण प्रस्ताव स्वीकृत किया है। वह है-हिन्दुस्तानी को कांग्रेस की भाषा बनाने का प्रस्ताव। भारत की राष्ट्रीयता पर इस से बड़ा कलङ्क और कौन सा हो सकता था कि उसकी राष्ट्रीय महासभा की भाषा अंग्रेजी समझी जाय। उसके कार्य्यालय का कार्य विदेशी भाषा में हो और नेतागण अंग्रेजी में देश के भाग्यों का निर्णय करें। प्रसन्नता की बात है कि इतनी देर बाद अब इस ओर ध्यान दिया गया है और हिन्दुस्तानी—जोकि देवनागरी और उर्दू लिपियों में लिखी जा सकेगी-कांग्रेस की भाषा के रूप में स्वीकृत कर लिया गया है। परन्तु प्रस्ताव अब स्वीकृत हुवा है, वह भी पूर्णतया सन्तोषजनक नहीं है। इसमें प्रान्तीय भाषाओं के सिवाय अंग्रेजी की भी काफी गुञ्जाइश रखी गई है। हिन्दुस्तानी को ही पूर्ण अधिकार का कुछ सज्जनों ने इस आधार पर विरोध किया कि बङ्गाल मद्रास आदि प्रान्तों की हिन्दुस्तानी मातृ भाषा नहीं है पर क्या इन सज्जनों से पूछ सकते हैं कि क्या अंग्रेजी आपकी मातृ भाषा है? हिन्दुस्तानी का तो अन्य प्रान्तीय भाषाओं से पर्याप्त घनिष्ट सम्बन्ध है। अंग्रेजी तो प्रत्येक भारतीय के लिये पूर्णतया विदेशी है। परन्तु उसके प्रयोग में किसी को संकोच या आशङ्का नहीं होती। जितनी देर में हमारे बड़े बड़े नेताओं ने अंग्रेजी का अभ्यास किया है, हिन्दुस्तानी का अभ्यास करने में इस का $\frac{१}{२०}$ भाग भी नहीं लगता फिर भी उन्हें उस में कठिनता होती है। अस्तु जो प्रस्ताव इस कांग्रेस ने हिन्दुस्तानी भाषा के सम्बन्ध में स्वीकृत किया है यदि उसका भी भावी में पालन किया जाय तो बहुत उन्नति की सम्भावना है।

प्रवासी भारतवासी

डा० अब्दुल रहमान के नेतृत्व में दक्षिणीय अफ्रीका के प्रवासी भारतीयों का जो डेपुटेशन इस समय भारत में भ्रमण कर रहा है। वह भी कानपुर कांग्रेस में सम्मिलित हुवा था। कांग्रेस ने अपने प्रवासी भाइयों के प्रति समुचित शब्दों में समवेदना प्रकट की और 'एरियाज़ रिजर्वेशन बिल' आदि विधानों का जो कि भारतीयों के साधारण मानवीय अधिकारों का भी अपहरण करने के लिये इस समय दक्षिण अफ्रीका की लोकसभा में प्रस्तुत हैं, घोर विरोध किया। इस प्रस्ताव को उपस्थित करते हुए महात्मा गांधी ने बहुत ही मर्म भेदी व्याख्यान दिया। महात्मा जी के भाषण के कुछ वाक्य इस प्रकार हैं—"भारतीयों का बहिष्कार करने के लिये जो कुछ भी किया जा सकता है, दक्षिण अफ्रीका की सरकार कर रही है। यह डेपुटेशन आप की सहायता मांगने के लिये आया है, और इस प्रस्ताव द्वारा हम पूर्ण सहायता देने का निश्चय करते है। अतः यह प्रस्ताव स्वीकृत करने से पूर्व आपको जान लेना चाहिये कि आप क्या स्वीकृत कर रहे हैं। यदि दक्षिण अफ्रीका के भारतीयों ने सत्याग्रह करने का निश्चय किया, तो भारत को आर्थिक तथा अन्य भांति की सहायता के लिये तैयार होना होगा। यद्यपि मैं देखने में बहुत कमजोर मालूम पड़ता हूं, पर दक्षिण अफ्रीका की खातिर सत्याग्रह करने के लिये मुझ में काफी शक्ति है। मैं आप को कहना चाहता हूँ कि 'एरियाज़ रिज़र्वेशन बिल' दक्षिण अफ्रीका में हमारे भाइयों के सिर पर

डैमोक्लीज़ की तलवार की तरह लटक रहा है मैं इस प्लेटफार्म से दक्षिण अफ्रीका के राजनीतिज्ञों को कहता हूँ कि यदि उन्होंने भारतीयों के साथ प्रारम्भिक माने गये न्याय तक करने में ज़रा भी संकोच किया तो वे अपनी बाइबल से इन्कार कर रहे होंगे और अपने ईश्वर की सत्ता तक से इन्कार कर रहे होंगे।

निस्सन्देह प्रवासी भारत वासियों का ही एक ऐसा प्रश्न है। जिस पर भारत के सब राजनीतिक दल एक मत हैं। क्या नरम और क्या गरम, क्या सहयोगी और क्या असहयोगी—सब इस प्रश्न पर सहमत हैं। भारतीयों को जाने दीजिये भारतीय सरकार भी इस प्रश्न पर भारतीयों के साथ पूर्ण सहमति रखती है। बड़ी व्यवस्थापिका सभा में भाषण करते हुए वायसराय ने स्पष्ट शब्दों में दक्षिण अफ्रीकन सरकारकी भारत विरोधिनी नीति की निन्दा की थी। वायसराय ने इसी भाषण में यहां तक कहा था कि दक्षिण-अफ्रीकन सरकार जिस नीति का अनुसरण कर रही है, वह ब्रिटिश साम्राज्य को एक सूत्र में बांधने वाले भावों के प्रतिकूल है! इस प्रकार सरकार और जनता सभी लोग प्रवासी भारवासियों के कष्टों को चिन्तित भाव से देख रहे हैं, पर सब निःसहाय हैं। भारतीय सरकार का विरोध भी इस सम्बन्ध में कुछ नहीं कर सकता। ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत दो तिहाई जनता की सरकार अशक्त है। एक साधारण उपनिवेश के विरुद्ध उसकी सब शक्तियां व्यर्थ हैं। इस से अधिक भारत का अपमान और क्या हो सकता है?

इस अवस्था में भारत को क्या करना चाहिये? दक्षिण अफ्रीका का विरोध करने का केवल एक ही तरीका है और वह तरीका है बदले का। कलकत्ता कार्पोरेशन ने इसके लिये मार्गप्रदर्शन का कार्य्य किया है। कार्पोरेशन ने एक प्रस्ताव स्वीकृत किया है कि जिस के अनुसार दक्षिण अफ्रीका के किसी गोरे निवासी को कलकत्ता कार्पोरेशन में कोई नौकरी नहीं मिलेगी और न ही उनको किसी प्रकार के ठेके दिये जावेंगे। इसी प्रकार दक्षिण अफ्रीका में बने किसी माल को कलकत्ता कार्पोरेशन न खरीदेगा और न प्रयोग करेगा।

बड़ी व्यवस्थापिका सभा में भी इसी प्रकार बदले का एक प्रस्ताव श्रीयुत गयाप्रसाद सिंह ने उपस्थित किया है। यद्यपि गृहसदस्य के अनुरोध से अभी उस पर विचार नहीं हुआ परन्तु, शीघ्रही वह प्रस्ताव पेश किया जायगा और आशा करनी चाहिये कि वह स्वीकृत भी हो जायगा। भारत के पास बदले के सिवाय इस समय कोई उपाय नहीं है। यद्यपि बदला भी स्वराज्य न होने के कारण बहुत समर्थ नहीं हो सकता, पर उसके सिवाय वर्तमान अवस्थाओं में अन्य कोई उपाय भी नहीं है।

कम्यूनिष्ट कान्फरेन्स

इस वर्ष कानपुर में अन्य अनेक सम्मेलनों और कान्फ्रेंसों के साथ 'प्रथम कम्यूनिस्ट कान्फ्रेंस' का भी अधिवेशन हुआ है, पत्रों में इस अधिवेशन की विशेष चर्चा नहीं हुई। कानपुर में भी बहुत कम जनता इस में सम्मिलित हुई। एक साधारण से शामियाने में कुछ सौ आदमियों की उपस्थिति में अखिल भारतीय प्रथम कम्यूनिष्ट कान्फरेन्स की गई। बड़े बड़े नेता इसमें शामिल नहीं हुवे। बहुतों ने इसे कुछ मनचलों की हिलचुल मात्र समझा। अब तक

तक भारत में कम्यूनिष्ट दल की जो अवस्था है, उसको देखते हुवे और अधिक आशा भी नहीं की जा सकती। परन्तु हमारा विश्वास है कि शीघ्र ही वह दिन आयगा जब 'कम्यूनिष्ट दल' भारत का सब से अधिक शक्तिशाली राजनीतिक दल बन जायगा। भारत में अमीरी और गरीबी का बड़ा भारी सवाल है। यहां के ताल्लुकेदार और राजा अब भी १४वीं सदी के हाकिम बने हुवे हैं। वे जनता को अपनी जूतियों से भी बदतर समझते हैं। गरीबों के पेट काट कर अपने विकिय शरीर को पालने में उन्हें जरा भी सङ्कोच नहीं होता। जेठ की गर्मी और माघ की कड़ी सर्दी में की गई किसानों की सारी मेहनत कुछ मोटे पेट वाले जमींदारों के पेट में चली जाती है। यह कहना अत्युक्ति नहीं है कि भारत की साधारण जनता सरकारी अधिकारियों की अपेक्षा अपने जमीदारों और ताल्लुकेदारों से अधिक तकलीफ पाती है। आजकल-जबकि सम्पूर्ण देश में सब प्रकार के दमन और अनुचित अधिकारों के विरुद्ध जोरदार आन्दोलन चल रहा है तब इन धनपतियों के दमन और अत्याचार को किस प्रकार सहा जा सकता है। आजकल के जातिगत आन्दोलनों का मूल बहुत कुछ वर्तमान जागृति भी है। इसी जागृति का परिणाम है कि जागृत हिन्दू मुसलमानों के दवाव को नहीं सह सकते, पञ्जाब के गरीब मुसलमान साहूकार हिन्दुओं के दवाव को नहीं सह सकते, दक्षिण के अछूत और अ-ब्राह्मण ब्राह्मणों के अनुचित अधिकार को नहीं देख सकते। जागृति एक क्षेत्र में नहीं हुवा करती वह सर्वतोमुखी होती है। जब जनता में ब्रिटिश शासकों के विरुद्ध भाव उत्पन्न होंगे, वे अपने राजनीतिक अधिकारों का अनुभव करेंगे-तब अन्य अत्याचारों को वे आसानी से नहीं सह लेंगे। इस लिये इस जागृति के काल में भारत की वास्तविक उन्नति के लिये किसानों को जमींदारों के विरुद्ध और श्रमियों को पूंजीपतियों के विरुद्ध अपने अधिकारों की रक्षा के लिये तैयार होना चाहिये। भारत का स्वराज्य इसके बिना प्राप्त नहीं होसकता। जमींदार और पूंजीपति ब्रिटिश राज्य के आधार स्तम्भ हैं। अमीर लोग स्वभाविक रूप से परिवर्तन पसन्द नहीं करते। इससे उनको हितों का विघात होता हैं। फिर उन की आय का आधार ही गरीबों पर अत्याचार है। स्वराज्य में वे ये अत्याचार न कर सकेंगे। इस लिये भारत में ब्रिटिश राज्य के सच्चे मित्र ये धन के स्वामी लोग ही हैं। अतः यहां साधारण जनता में कम्यूनिष्ट विचारों के प्रचार की बड़ी आवश्यकता है। स्मरण रखना चाहिये कि भारतीय स्वराज्य कभी भी जमींदारों और पूंजीपतियों का स्वराज्य नहीं हो सकता। अवश्य ही यहां पर भी रूस की तरह राजनीतिक स्वतन्त्रता के साथ साथ आर्थिक स्वतन्त्रता भी प्राप्त होगी। यह नहीं होसकता कि भारत में राजनीतिक स्वराज्य तो स्थापित होजावे, पर आर्थिक और व्यवसायिक दृष्टि से भारतीय जनता गुलाम ही बनी रहे। इन विचारों को सम्मुख रखते हुवे हमें विश्वास है कि भारत में कम्यूनिष्ट या साम्यवादी आन्दोलन के लिये बड़ा क्षेत्र है। यदि ठीक तरीके से इस आन्दोलन को सञ्चालित किया जाय, तो अवश्य ही बहुत कार्य किया जा सकता है। अजमेर के प्रतिनिधियों के निर्वाचन के झगड़े में पड़ कर पहली वार ही कम्यूनिष्ट लोगों ने अपने को बदनाम कर लिया। यह अच्छा नहीं हुवा। यदि वे अधिक बुद्धिमत्ता से कार्य करते, तो अधिक लोक प्रियता प्राप्त कर सकते। यद्यपि कानपुर में तो नहीं, पर इस के बाद

अब कम्यूनिष्ट पार्टी ने अपने कार्य को सुचारु रीति से प्रारम्भ कर दिया है। दिल्ली से कम्यूनिष्ट दल के प्रधान मन्त्री ने विज्ञप्ति प्रकाशित की है, जिसके अनुसार वर्तमान समय में दल किसानों और श्रमियों को संगठित करने का प्रयत्न करेगा। हम इस कार्य में साम्यवादियों की हृदय से सफलता चाहते हैं।

वायसराय का भाषण।

बड़ी व्यवस्थापिका सभा का उद्घाटन करते हुए वायसराय ने जो भाषण दिया है। वह उनके पहले भाषणों की तरह सारहीन और निराशाजनक है। राष्ट्रीय मांग को जिस उत्तर के लिये स्वराज्य दल बड़ी उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा कर रहा है, उसे वायसराय ने पूरी तरह ठुकरा दिया है। वायसराय यह चाहते हैं कि भारत के सब राजनीतिक दल हाथ जोड़ कर, घुटने टेक कर सरकार के सम्मुख खड़े होजायें और विनम्रस्वर से मिल कर प्रार्थना करें कि' हे हजूर माई बाप! हम पर कृपा करो, हम दीन हैं, हमें स्वराज्य का एक टुकड़ा और दे दो। यह करने पर ही वे संतुष्ट होंगे और समझेंगे कि अब भारतीयों ने सहयोग के लिये उत्कण्ठा प्रगट की है। असहयोग स्थगित किया जा चुका है, निरन्तर बाधारीति का अनुसरण करने की प्रतिज्ञा कर फासिलें में गई हुई स्वराज्य पार्टी ने परोक्षतः सहयोग का प्रारम्भ कर दिया है। लार्ड मेस्टन के शब्दों में भारत में आराम के साथ दिन कट रहे हैं। विद्यार्थी स्कूलों में पढ़ रहे हैं, सब सरकारी पद भरे हुवे हैं। किसान खेतों में शान्ति से हल चला रहे हैं। सब आराम हैं, चैन है। पर वायसराय महोदय को इस से भी संतुष्टि नहीं। वे तो भारत की राजनीतिक जागृति को पूरी तरह कुचला हुआ देखना चाहते हैं। कठिनता यही है कि राजनीतिक जागृति दम्भ से शान्त नहीं हुवा करती। यह ऐसी आग है, जिसको बुझाने का जितना भी यत्न किया जाय, वह बढ़ती ही जाती है। इस समय भारत की राष्ट्रीय महासभा ने सरकार को जो अन्तिम अवसर दिया है, यदि उसका फायदा न उठाया गया, तो निसन्देह १९२१ के दिनों की फिर पुनरावृत्ति होगी।

रायल कमीशन।

वायसराय ने अपने भाषण में एक रायल कमीशन की नियुक्ति की सूचना दी है, जो भारत में कृषि-सुधार की समस्या पर विचार करेगा। हमारी सरकार को आजकल कृषि सुधार की बड़ी फिकर है। भारत के अगले वायसराय भी कृषि के विशेषज्ञ बनाये गये हैं, उन्होंने अभी से कृषि सुधार की दुहाई देनी भी प्रारम्भ करदी है। भारत को कृषि प्रधान देश समझा जाता है। निस्सन्देह ब्रिटिश शासकों के प्रयत्न से भारत आज कृषि प्रधान देश बन गया है। परन्तु भारत सदा से कृषि प्रधान देश नहीं रहा है। पुराने समयों में यहां पर कृषि की तरह अन्य व्यवसाय भी बहुत उन्नत रहे हैं। भारत का वस्त्रव्यवसाय, नौकानयन आदि संसार भर में प्रसिद्ध रहा है। अब भी इस देश में व्यवसायों की उन्नति की पूरी गुञ्जाइश है। यहां कच्चा माल प्रभूतमात्रा में पैदा होता है। कोयले की भी यहां कमी नहीं है, फिर सञ्चालक शक्ति को उत्पन्न करने के लिये प्रकृति की तरफ़ से बड़े बड़े जलप्रपात हमको प्राप्त हैं, जिनसे विद्युत उत्पन्न कर बहुत सी शक्ति उत्पन्न की जा सकती है। यहां बेकार श्रमीजनता की माँग भी बहुत अधिक है, ये श्रमी बहुत बुद्धिमान और कार्यदक्ष हैं। इन अवस्थाओं के होते

हुवे कोई कारण नहीं समझ आता, जिस से कि इस देश को व्यवसाय-प्रधान बनाने का यत्न न किया जाय। यदि व्यवसायिक उन्नति के लिये रोयल कमीशन की उन्नति होती तब हमें कुछ सन्तोष भी होता। पर कृषि की उन्नति के लिये रोयल कमीशन की क्या ज़रूरत है, यह हमें समझ में नहीं आता। कृषि के ह्रास के क्या कारण हैं, यह विषय प्रायः सर्वविदित है। उसके लिये किसी विशेष अनुसन्धान की आवश्यकता नहीं है। सच बात तो यह है कि बृटिश शासक भारत को स्थिर रूप से दीप प्रधान रखना चाहते हैं। वे भारत को कच्चे पदार्थों की पूर्ति के लिये एक विस्तृत क्षेत्र बना देना चाहते हैं। इसी के लिये यह सब प्रयत्न किया जारहा है। फिर उनकी यह भी इच्छा है कि सर्वसाधारण जनता का ध्यान स्वराज्य से हट जाय और जनता बृटिश सरकार को अपना सच्चा हितचिन्तक समझने लगे। पर शोक यही है कि अब भारतीय लोग और अधिक धोखे में नहीं आसकते।

आर्य समाज की विजय

पाठकों को मालूम होगा कि पालघाट के सिटी मजिस्ट्रेट के सम्मुख एक बहुत ही महत्वपूर्ण मुकदमा चल रहा था। जो अछूत मुसलमान या ईसाई हो जाते हैं, वे खुली तरह हिजातियों के साथ निषिद्ध सड़कों पर आ जा सकते हैं। परन्तु यदि कोई अछूत आर्य समाजी हो जाय, तो उसको यह अधिकार नहीं मिलता था। मि० सङ्करन, जो कि पहले अछूत समझे जाते थे, आर्यसमाजी होगये और उन्होंने भी अन्य जातियों की तरह निषिद्ध सड़कों पर चलना शुरू किया। इस पर उनके ऊपर मुकदमा चलाया गया। प्रसन्नता की बात है कि सिटी मजिस्ट्रेट ने यह निर्णय देदिया है कि आर्यसमाज द्वारा शुद्ध किये गये अछूत अन्य द्विजातियों व मुसलमान ईसाइयों की तरह निषिद्ध सड़कों पर जासकते हैं। इस निर्णय से दक्षिणीय भारत में आर्यसमाज के लिये बहुत बड़ा मैदान खुल गया है। अब अछूतों को मुसलमान या ईसाई बनने का कोई प्रलोभन न रहेगा और वे अपने मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिये निःसङ्कोच आर्यसमाज की शरण में आसकेंगे।

टङ्कारा
में
श्री महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी की धूम

गत सप्ताह महर्षि की जन्म भूमि टङ्कारा नगर में पांच दिन तक बड़े समारोह से शताब्दी महोत्सव मनाया गया। यद्यपि मार्ग कुछ विकट है और तीन चार गाड़ियां भी बदलनी पड़ती हैं तथापि यात्रियों की आकृति से विदित होता था कि उनके चित्त कितने प्रफुल्लित हैं। जिस श्रद्धा और विश्वास को साथ लेकर पौराणिक जन गङ्गा यमुनादि तीर्थों पर स्नान करने जाते हैं। उससे भी कहीं अधिक श्रद्धा और भक्ति के सूत्र में आबद्ध आर्य्यजन महर्षि जन्म भूमि तीर्थ में प्रवेश कर रहे थे। इस आनन्द और प्रसन्नता का अनुभव वे ही कर सकते हैं, जिन्होंने इस परम पुनीत गङ्गा में स्नान किया है।

यद्यपि भारत के लाल की जन्मदातृ मां टङ्कारा की तत्कालीन दशा जानना अति दुष्कर है तथापि इस वर्तमान काल में भी नगरके विशाल, फाटक दीर्घ प्राचीर (फ़सील) इसकी उत्तमता का परिचय देते हैं कि किसी समय मोरवी स्टेट की राजधानी यही थी।

उत्सव का कार्य क्रम।

प्रथम दिवस ७ फ़रवरी को मुख्य मण्डप

में वृहद यज्ञ हुआ, इस के पश्चात् नगर कीर्तन किया गया और नगर कीर्तन के साथ २ अत्यन्त सत्कार पूर्वक मोरवी नरेश तथा वीरपुराधीश को स्टेशन से टङ्कारा शहर में लाया गया।

आपने जो शताब्दी महोत्सव में महती सहायता प्रदान की थी उसके उपलक्ष्य में आपको शताब्दी सभा ने अभिनन्दन पत्र दिया पश्चात् आपने धन्यवाद प्रगट करते हुए अपने भाषण में कहा कि मुझे बड़ा अभिमान है कि ऐसे महान् पुरुष ने मेरी स्टेट में जन्म लिया। इसके पश्चात् कई एक भाषण तथा भजन हुये।

शेष चार दिनों में कार्यक्रम अति मनोरञ्जक रहा भाषण प्रायः गुजराती भाषा में होते थे परन्तु गुर्जर भाषा में संस्कृत मिश्रित होने के कारण बहुत कुछ समझ में आ जाती थी और कई एक सन्यासी महात्माओं के उपदेश आर्य्य भाषा में होते थे। वर्ण व्यवस्थादि पर कई एक प्रस्ताव भी पास हुए, यह सब कार्य्यवाही मुख्य मण्डप में होती थी, दूसरे मंडपों में भी समय २ पर परिषदें होती रहीं। बीच २ में दो दिन महिला परिषदें हुई, यह परिषदे कई एक बम्बई तथा बड़ोदा की योग्य देवियों की अध्यक्षता होती में रहीं। इस में कई भाषण आर्य्य भाषा में हुए, इससे स्त्रियों पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ा।

अन्तिम शिवरात्रि के दिन महर्षि के सम्बन्धी आदियों तथा ऋषिगृह का परिचय कराया गया, जिस में महर्षि के वंश का केवल एक ही पुरुष जीवित था जो कि उन की बहिन के लड़केका पोता था दूसरे १०१ वर्ष के बूढ़े यवन जातीय इब्राहीम पटेल थे जो कि उन के घरके पास रहते थे, इस वृद्ध पुरुष से पूरा पता मिला कि महर्षि की जन्म भूमि टंकारा है आपने कहा कि मैं *ऊन्धरे वाले छोकरे मूल शंकर को जानता हूं मेरे साथ खेलता था और बड़ा झगड़ालू था पश्चात् महर्षि के वंशजमहाशय पोपट लाल ने ऋषि के वंश की वंशावली सुनाई जोकि महर्षि के घरसे निकला थी इससे जनता को और भी निश्चय हो गया कि महर्षि का जन्म भूमि वास्तव में टङ्कारा है। इस प्रकार से सफलता पूर्वक शताब्दी महोत्सव यज्ञ पूर्ण हुआ।

टंकारा

में आर्यसमाज की स्थापना।

शोक जब जगत् को प्रकाशित करने वाली ज्योति का प्रादुर्भाव टङ्कारा के अन्दर हुआ था उस समय त्याग की मूर्ति टङ्कारा भूमि ने चारों दिशाओं में ज्योति को भेजा किन्तु स्वयं अन्धकार में रह गई, अथवा यही कारण है कि प्रसुप्त मन्द ज्योति अपने पूर्ण यावन में आई तो इसका सर्वदा के लिये परित्याग करके देशान्तर को चली गई और फिर कभी मुंह नहीं दिखाया। पाठक! इस बात को पढ़ कर विस्मयान्वित होंगे कि महर्षि की जन्मभूमि में अब तक आर्यसमाज की स्थापना नहीं हुई थी, अब शताब्दी के अवसर पर आर्यसमाज की स्थापना हुई, पोपटलाल जी मन्त्री और कई ब्राह्मण जातीय जन सभासद हुये साथ ही एक संस्कृत पाठशाला की नींव भी डाली

* ऊन्धरा गुजराती भाषा में चूहे को कहते हैं

गई। महर्षि की शताब्दी महोत्सव ने टङ्कारा निवासी जनता को कितना प्रभावित और जाग्रत किया यह दर्शक जनही अनुभव करते हैं। वास्तव में महात्मा ऋषि लोग सब को बांट कर फिर स्वयं उप भोग करते हैं। भारतवर्ष के गांव २ में आर्य समाज स्थापित हुई किन्तु टङ्कारा में १०१ वर्ष के पश्चात् आर्यसमाज स्थापित हुआ। परमात्मा से प्रार्थना है कि टङ्कारा भूमि फले। ओर फूले और चिरकाल तक यश की भागी बनी रहे एक नहीं किन्तु अनेकों दयानन्दों को उत्पन्न करने वाली भूमि सिद्ध हो।

प्रश्नोत्तर

ले०—बुद्धिसागर वर्मा बी० ए०

१. नर्क क्या है ?	दुष्टा भार्या का सहवास।
२. स्वर्ग की प्राप्ति किस प्रकार हो सकती है?	सत्कर्म, सद्वचन और सत्यमनन से।
३. शत्रु कौन है ?	पापकर्म और असंयत इन्द्रियसमूह।
४. मित्र कौन है ?	इन्द्रिय निग्रह।
५. जीते जी कौन मर गया ?	जो भगवद्भक्ति से विमुख हुआ।
६. बिकट जाल कौनसा है ?	साँसारिक मायामोह का बन्धन।
७. नेत्र होते हुए भी अन्धा कौन हो जाता है ?	जो कामदेव के वशीभूत होकर स्त्रियों के पीछे मारा २ फिरता है।
८. कठिन रोगग्रस्त कौन है ?	भौतिक शरीर और लोकेष्णा में फंसी हुई आत्मा।
९. कठिन रोग की औषधि क्या है ?	भले बुरे की पहिचान।
१०. बहुमूल्य आभूषण कौन सा है ?	सत्याचरण और कर्तव्यपालन।
११. पुण्य तीर्थ कौन सा है ?	अन्तःकरण की पवित्रता और गुरुजनों की सेवा।
१२ संसार से बाहर कौन है ?	जिसका हृदय परमपिता की सच्ची भक्ति में संलग्न है।
१३. मूर्ख कौन है ?	जिसे भले बुरे का ज्ञान नहीं ?
१४. जीवन किस प्रकार व्यतीत करना चाहिये	पापाचरण से बचा कर।
१५. आयुपर्यन्त क्या करना चाहिय ?	विद्या की खोज और पुस्तकावलोकन।
१६. बुद्धि किस बात का पता नहीं लगा सकती	ईश्वर की माया, मनुष्य का भाग्य, त्रिया-चरित्र और धूर्तों की जालसाज़ी।
१७. सब से कठिन क्या है ?	निराशा।

ओस बिंदु

लेखक पं० श्याम नारायण मोहले बी०ए०

रवि उदय होने न पाया था अभी ईशान में।
निस्तब्धता थी छा रही चहुं ओर प्रकृत्योद्यान में ॥ १ ॥

शीतल पवन स्पर्श से थीं कुसुम डाली झूमतीं।
या कामिनीं कामान्ध हो निज प्रेमियों को चूमती ॥ २ ॥

संयोग जा निकला किधर ? एक वाटिका के बीच में।
कुछ दृष्टि आईं ओस बूंदें नव लता के बीच में ॥ ३ ॥

थी बिंदुकायें प्रकृति को मुक्तावली पहना रहीं।
या गोपिकायें कुञ्जनों में प्रेम रास रचा रहीं ॥ ४ ॥

भूल जाति निज चपलता दामिनी यदि देखती।
अभिमान अपनी स्वच्छता पर कामिनी भी छोड़ती ॥ ५ ॥

पर एक सम सौरभ किसी का जगत् में रहता नहीं।
है मान पाकर कौन वह अपमान जो सहता नहीं ॥ ६ ॥

बढ़ता गया क्रमशः अधिक ज्यों तेज सूर्य प्रकाश में।
होने लगीं जल विंदुकायें खिन्न तीव्र विकाश में ॥ ७ ॥

जल विंदु ही को खा गई पोषक धरा की रवि किरण।
बस जन्म जो लेता यहां होता अवश उस का मरण ॥ ८ ॥

हमारी मंजूषा

दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह-(सस्ती साहित्य माला) लेखक महात्मा गान्धी, अनुवादक श्री बैजनाथ जगन्नाथ मोयदे, प्रकाशक सस्ता साहित्य प्रकाशक-मण्डल अजमेर, पृष्ठ संख्या २७२ मूल्य ।≡)

अजमेर में कतिपय देशहितैषी सज्जनों ने मातृभाषा की उन्नति के लिये उपरोक्त मंडल की स्थापना की है। इस संस्था का उद्देश्य सर्व साधारण और शिक्षित-समुदाय स्त्री और बालक सब के लिये उपयोगी, अच्छी और सस्ती पुस्तकें प्रकाशित करना है। इस संस्था द्वारा प्रकाशित पुस्तकें केवल लागत मात्र पर दीजायेंगी। उपरोक्त पुस्तक इसका उदाहरण है। हम हिन्दी भाषा को इस सेवा के लिये संचालकों के कृतज्ञ हैं और आशा करते हैं कि प्रत्येक हिन्दी भाषा भाषी इस मण्डल की पुस्तकों का ग्राहक बन अपने ज्ञान की वृद्धि के इस सुअवसर पर अवश्य लाभ उठावेंगे।

पुस्तक के विषय में कुछ अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं। दक्षिण अफ्रीका का सत्याग्रह संसार के इतिहास में एक सदा स्मरणीय घटना है। ८ वर्ष तक यह सत्य युद्ध चलता रहा और अन्त में भारतीय वीर सैनिकों ने महात्मा गांधी के नेतृत्व में अपने पक्ष की सत्यता, निज स्वार्थत्याग, दृढ़ता और तप से अनेक कष्ट और बाधायें झेलते हुए विजय प्राप्त की इस युद्ध का इतिहास कितना रोमाञ्चकारी उत्साह वर्धक और मनोरञ्जक है यह प्रस्तुत पुस्तक के पाठ से ही पता लग सकता है। पुस्तक की बड़ी भारी विशेषता यह है कि इस सत्याग्रह का नेता स्वयं ही इसका लेखक है। अतः अफ्रीका के सत्याग्रह की इच्छा वास्तविक इतिहास है। इसके पाठ से हमें भारतीय राजनैतिक कार्यक्षेत्र में काम करने की कितनी सहायता मिलेगी यह कहना अनावश्यक है। भारत प्रेमी प्रत्येक नवयुवक को इसे अवश्य पढ़ना चाहिये।

भारत रमणीरत्न—लेखक श्री भाई परमानन्द जी प्रकाशक आकाशवाणी पुस्तकालय लाहौर, पृष्ठ संख्या २१७ मूल्य ॥≡)

कुछ वर्ष व्यतीत हुए भाई जी ने एक पुस्तक लिखी थी जो कि देश सेवा में आत्म बलिदान नाम से प्रकाशित हुई थी। इसी पुस्तक का परिवर्तित, परिवर्द्धित और संशोधित संस्करण अब उपरोक्त नाम से प्रकाशित हुआ है।

भाईजी ने यथा सम्भव पुस्तकको स्त्री उपयोगी बनाने का यत्न किया है। अतः पुस्तक की वर्णनशैली तथा भाषा बड़ी सरल है। भारत इतिहास की मुख्य २ घटनाओं को उदाहरण रूप लेकर लेखक ने यह बतलाने की चेष्टा की है कि इसमें देवियों का कितना भाग है। यदि यह कहा जाय कि यह पुस्तक इतिहासिक भारतीयों नारियों के कृत्यों निस्वार्थपरिता, उत्साह प्रेम और देश प्रेम की गाथा है तो अनुचित न होगा पुस्तक इतिहास है, जीवन चरित्र है, कथा है। स्त्रियों और कन्याओं के विशेष लाभ की है।

हिन्दू संगठन-लेखक भाई परमानन्द जी और प्रकाशक आकाशवानी पुस्तकालय लाहौर। पृष्ठ २१३ मूल्य ।)

आज भारत के राजनैतिक तथा सामाजिक आकाश में हिन्दू-संगठन एक बड़ा आवश्यकीय प्रश्न है। भारतीय सत्याग्रह की असफलता के कारणों में से हिन्दूजाति का असंगठन होना एक मुख्य कारण है। हमें भारतीय संग्राम में विजय प्राप्त नहीं हो सकती जब तक कि हिन्दू अपने आपसके वैरभाव, ईर्षा, द्वेष, को छोड़कर संगठित नहीं होते। इस संगठन आन्दोलन के नेताओं में भाई परमानन्द जी का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। पञ्जाब में भाई जी हिन्दू संगठन आन्दोलन के प्राण हैं यह कहना अनुचित नहीं। इस पुस्तक में इसके लेखक ने हिन्दू-सँगठन के इतिहास, इसकी आवश्यकता और इसकी प्राप्ति के उपायों पर अपने विचार प्रगट किये हैं जो कि प्रत्येक नर नारी को जिसके हृदय में हिन्दू जाति से तथा देश से प्रेम है पढ़ने और मनन करने योग्य है। पुस्तक उपयोगी और शिक्षादायक है।

आदर्श पति-लेखक श्रीयुत सन्तरामजी बी० ए० प्रकाशक श्री राजपाल सरस्वती आश्रम लाहौर, पृष्ठ १०० मूल्य ॥)

लेखक द्वारा लिखित 'आदर्श पत्नी' नामक पुस्तक की समालोचना ज्योति में प्रकाशक हो चुकी है। यह पुस्तक भी उसी ढंग पर लिखी गई है। हमारा गृहस्थ जीवन आज कल कितना दुखमय हो रहा है यह गृहस्थ आश्रम को हमारे प्राचीन शास्त्रकारों ने सर्वश्रेष्ठ आश्रम माना है। इसी के आधार पर वह अन्य आश्रम की स्थिति मानते हैं जितना उच्च, शुद्धि और पवित्र हमारा गृहस्थ जीवक होगा उतना ही हमारे अन्य आश्रम शुद्ध होंगे और हमारा सामाजिक जीवन उच्च होगा। इस सत्य की दृष्टि से हमारा वर्तमान गृहस्थ जीवन कितना गिरा हुआ है यह सब जानते हैं। बहुत कम ऐसे परिवार हैं जिन्हें हम सुखी परिवार कह सक्ते हैं और इस का मुख्य कारण गृहस्थ जीवन के कर्णाधार पति पत्नी की अनुभव हीनता है। वह यह नहीं जानते कि किस प्रकार हमें गृहस्थ जीवन में प्रवेशकर वर्तना चाहिये। वह अपने एक दूसरे का तथा अन्य सम्बन्धियों, मित्रों पड़ोसियों आदि से व्यवहार करने में कई प्रकार की भूलें कर जाते हैं जिससे कि उन का जीवन दुखमय बना रहता है। इस का विशेष कारण पति पत्नी का आपस में एक दूसरे को ठीक २ न समझना है। इस पुस्तक में लेखक ने इसी भूल की सुधार करने की चेष्टा की है पति को किस प्रकार अपना आचरण करना चाहिये यह बतलाया गया है। उस को अपना साधारण तथा व्यक्तिगत स्वभाव कैसा बनाना चाहिये डाह रूपी नाग से कैसे बचना चाहिये, आमदनी का कैसे प्रयोग करना चाहिये, मनोरञ्जन, स्वार्थ, सन्तान इत्यादि के सम्बन्ध में किस प्रकार चलना चाहिये इत्यादि अनेक २ बातें सूत्र रूप से बड़ी मनोरञ्जनक शैली में वर्णन की हैं। निज ग्रह को सुखमय और कण्टक रहित बनाने की इच्छा रखने वाले पुरुषों को पुस्तक का अवश्य पाठ करना चाहिये, इस में उन्हें कई प्रकार क्रियात्मक ढंग मिलेंगे जिनपर चलना अवश्य हितकर होगा।

वाल्मीक मुनि का जीवन चरित्र-लेखक भाई परमानन्द जी, प्रकाशक महाशय राजपाल सरस्वती आश्रम, अनारकली लाहौर पृष्ठ १६२ मूल्य ॥।)

रामायण के लेखक वाल्मीक के नाम से कौन हिन्दु अपरिचित है। यह पुस्तक उसी आदि कवि की जीवनी तथा उसके ग्रन्थ

रामायण की सरल, उपयोगी आलोचना है। किस प्रकार एक अज्ञात नीच कुल में जन्म लेकर, लुटेरे, और डाकूओं का जीवन व्यतीत कर महात्माओं के संसर्ग से बाल्मीक ऋषिपद को प्राप्त हुये यह मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद कहानी इस पुस्तक में दी गई है। आज कल की अछूतोद्धार समस्या को सुलझाने के लिये बाल्मीक के जीवन का मनन बड़ा उपयोगी है। पहले ६८ पृष्ठ में लेखक ने इतिहास से यह बतलाया है कि किस प्रकार अपने निज शुभ कर्मों द्वारा मनुष्य उच्च पद को प्राप्त करते रहे हैं और किसी प्रकार हिन्दू धर्म में व्यैक्तिक उन्नति का मार्ग बन्द नहीं रहा वरन देश काल और पात्र की योग्यता को ध्यान में रखकर हमारे पूर्वज सदा ही इसको सरल और सुगम बनाते आये हैं फिर इसी सिद्धान्त की पुष्टी में बाल्मीक का जीवन वृतान्त विस्तृत जितना भी मिल सका दिया गया है। शुद्धि हिन्दू संगठन तथा वर्णाश्रम धर्म पर भी प्रकाश डाला है अन्त में रामायण की आलोचनात्मक समीक्षा है जो कि बड़ी शिक्षादायक और मनोरञ्जक है। पुस्तक पठनीय है।

सैनिक--साप्ताहिक पत्र, सम्पादक श्री कृष्णदत पालीवाल, वार्षिक मूल्य ३)

यह हिन्दी भाषा का एक उच्च कोटि का साप्ताहिकपत्र है जोकि आगरासे प्रकाशित होता है प्रताप और प्रभाके पुराने सम्पादक हिन्दी के प्रतिष्ठित लेखक, निस्वार्थ देश प्रेमी श्रीयुत पालीवाल जी इसके सम्पादक हैं। अतः यह कहने की आवश्यकता नहीं कि इस का सम्पादान योग्यता पूर्वक होता है। राजनैतिक प्रश्नों पर उत्तम विचार पूर्ण और सारगर्भित लेखों और टिप्पणियों के अतिरिक्त इस पत्र की बड़ी विशेषता यह है कि इस में कसानों के हितकी अनेक बातें रहती हैं। उनके सम्बन्ध में देश में क्या हो रहा है, उनकी सामाजिक तथा आर्थिक दशा किस प्रकार सुधर सक्ती है। उन को क्या २ आवश्यक्ता हैं इत्यादि विषयों की इस पत्र में खूब चर्चा रहती है।

गत दिसम्बर में सैनिक का विशेषांक निकला है। इस अङ्क के सभी लेख विचार पूर्ण पठनीय है। गरीबों और अमीरों की लड़ाई, रिआया और सरकार की लड़ाई, गोरों और कालों की लड़ाई, कांग्रेस और नौकरशाही की लड़ाई, प्रेम और पीड़ा की लड़ाई, झांसी की रानी और अंग्रेजों की लड़ाई इत्यादि लेखों के शीर्षक ही इन के विस्तृत क्षेत्र, मनोरञ्जकता और उन्मादता को सूचित करते हैं। कोई दो दर्जन चित्र अङ्क की सुन्दरता को प्रकट करते हैं। अङ्क शिक्षाप्रद और संग्रहणीय हैं। हम पालीवाल जी को ऐसा उत्तम अङ्क निकालने पर बधाई देते हैं।

हम पत्र का हर्षपूर्वक स्वागत करते हैं और आशा करते हैं कि यह युवक सैनिक चिरकाल तक देश, जाति तथा मातृभाषा की सेवा करता रहेगा।

प्रताप का कांग्रेस अंक—कानपुर के सहयोगी प्रताप का गत कांग्रेस के अवसर पर एक विशेष अङ्क प्रकाशित हुआ। जिस में कि कांग्रेस का जन्म से लेकर आज तक का सचित्र इतिहास दिया गया। इस के अतिरिक्त कितने ही और शिक्षाप्रद और उपयोगी लेख प्रकाशित हुए। जिन में श्री प्रेमचन्द्र जी का इसलामी सभ्यता, भाई परमानन्द का प्रवासी भारतवासी तथा श्री नन्दकिशोर जी का अमीर अमानुल्ला खां विशेष उल्लेखनीय है। एक सचित्र लेख कानपुर नगर पर भी है जिसमें इस नगर सम्बन्धी जानने योग्य बातों को वर्णन

है। यह विशेष अंक सहयोगी की कीर्ति तथा शान के ठीक अनुकूल निकला है।

सरल रोगी परिचर्या शिक्षा।

अनुवादक श्रीयुत वैद्य सत्येश्वरानन्द लखेड़ा प्रकाशक पं० क्षेत्रपाल शर्मा मालिक सुखसञ्चारक कम्पनी मथुरा मूल्य ।) है।

पुस्तक का विषय उसके नाम से ही प्रकट है। लखेड़ा महाशय ने इसे बंगला भाषा के "शुश्रूषा" नामी पुस्तक से अनुवाद किया है। हिन्दी भाषा में ऐसी पुस्तकों का सर्वथा अभाव था उस कमी को पूरा करने से लखेड़ा महाशय धन्यवादार्ह हैं साथ ही साथ सुख संचारक कम्पनी के मालिक पं० क्षेत्रपाल शर्मा भी धन्यवाद के पात्र हैं। जिन की सहायता से लखेड़ा महाशय इस पुस्तक को प्रकाशित करने में समर्थ हुए हैं। पुस्तक सर्वसाधारण के काम की है। रोगी की सेवा किस प्रकार से करनी चाहिये? तथा रुग्णावस्था में पथ्यापथ्य का विचार तथा द्रव्यों के गुण दोष का विवेचन बहुत ही सरल तथा स्पष्ट भाषा में किया गया है। जिससे हर एक मनुष्य जो थोड़ा सा भी पढ़ा है, लाभ उठा सकता है। मेरे विचार में हर एक गृहस्थ को इसकी एक प्रति अपने घर में रखनी चाहिये, और उससे लाभ उठाना चाहिय।

अभ्यर्थना

धारण करें हम वस्तुएं भगवान् स्वदेशी।
महल में हों जेल में ध्रुव-ध्यान स्वदेशी॥
वसन स्वदेशी से आन बान स्वदेशी।
भरा रहे हृदय में भी अभिमान स्वदेशी॥
पात्र स्वदेशी में खान-पान स्वदेशी।
ढंग स्वदेशी हो गायें गान स्वदेशी॥
ईंट स्वदेशी बने मकान स्वदेशी।
हो तीस कोटि करों में कृपाण स्वदेशी॥
भारत-जनों में जगे ज्ञान स्वदेशी।
यज्ञोपवीत, हार हो परिधान स्वदेशी॥
बात सुनें हों पवित्र-कान स्वदेशी।
हृदय में भव्य-भाव हो निर्माण स्वदेशी॥
गद् गद् हों सुने सतत आख्यान स्वदेशी।
हाथ में लिए हैं निशान स्वदेशी॥
करें नित्य चित्त में अरमान स्वदेशी।
मरने पै मिले कफ़न व मकान स्वदेशी॥

"मुकुन्दु"

वनिता विनोद

स्त्री जगत।

रियासत मोरवी में महाराज ने स्त्रियों के लिये सहवास की न्यून से न्यून आयु १६ वर्ष निश्चित की है। यह कानून मोरवी नरेश की प्रजा वत्सलता और राज्य की जागृती का प्रमाण है।

पंजाब कौंसिल ने स्त्रियों को वोट देने का अधिकार दे दिया है। इसका अभिप्राय यह है कि स्त्रियां यदि चाहें तो वह मन्त्री पद तक पहुंच सक्ती हैं।

भोपाल की बेगम साहिबा ने इंगलैण्ड में महिलाओं की एक सभा में बोलते हुए कहा कि भोपाल राज्य में कानून शराब रोकने से लोगों की दशा सुधरी है। शराब हिन्दू और मुसलमान दोनों के धर्म के विरुद्ध है। शराब बन्द कर देने से राज्य को थोड़ी सी आर्थिक हानि अवश्य हुई है किन्तु प्रजा के अपार लाभ के सामने यह हानि नहीं के बराबर है।

बम्बई के मैशन होटल के एक गोरे मैनेजर ने अपनी मोटर से एक हिन्दुस्तानी स्त्री कुचल डाली। अदालत ने उसे १५०) रु० जुर्माने का दण्ड दिया! इसी गोरे ने एक भारतीय मज़दूर स्त्री को लात मारी थी। इस अपराध में उस पर १००) रु० जुर्माना हुआ। स्त्रियों की जान का कितना मूल्य है? यह बात दी गई सज़ा से स्वयम् स्पष्ट है।

हिन्दू विधवा लीग लखनऊ द्वारा जनवरी से लेकर दिसम्बर सन् १९२५ तक सात प्रतिष्ठित घरों की विधवाओं की शादियां हुईं जिनमें ३ कायस्थ, २ ब्राह्मण और २ खत्री जाति की थीं।

गत बड़े दिनों में अलीगढ़ में मुसलिम महाविद्यालय के भवन में श्रीमती जोहरा-फैज़ी की अध्यक्षता में भारतीय स्त्री सम्मेलन हुआ उसमें मुसलिम स्त्रियों के हित के अनेक प्रस्ताव पास हुये जैसा कि लड़कियों की शिक्षा अनिवार्य की जाय, उनके सामाजिक बन्धनों को ढीला किया जाय इत्यादि एक परदा सहभोज हुआ जिसमें ५०० महिलायें सम्मिलित हुईं यह पर्दा सहभोज ही प्रगट करता है कि अभी हमारी मुस्लिम महिलायें सामाजिक उन्नतिसे कितनी दूर हैं।

बड़ोदा में अखिल भारतीय व्यायामिक खेल तथा कर्तब हुये। जिसमें महारानी कन्या विद्यालय तथा महाविद्यालय की छात्राओं ने भी भाग लिया।

एक अमरीकन वृद्धा की अभी २ मृत्यु हुई है जो १०० वर्ष की आयु में भी अपनी आजीविका के लिये स्वयंश्रम करती थी। वह अपनी छोटी सी किश्ती को स्वय ही खेती थी। और उसमें बैठ शिकार किया करती थी।

जापानके भिन्न २ महिला सभाओं ने एक अखिल देशीय महिला सभा बनाई है जिसका उद्देश्य जापानी स्त्रियों को उनके अधिकारों, विशेष कर राजनैतिक अधिकारों की शिक्षा देना है। इसके लिये कितने ही व्याख्यान दिये जाते हैं। आशा की जाती है कि शीघ्रही जापानी स्त्रियों को कौन्सलोंके लिये मताधिकार प्राप्त हो जायगा।

म० जौनवेल ने जो कि सीरिया के नये कमिशनर नियत हुये हैं एक सीरियन पुरोहित की धर्मपत्नीको बैरुत नगर के चौक में अपने हाथसे तमग़ेसे अलंकृत किया। देवी के इस मान का कारण वह साहस है जो कि उसने एक हवाई जहाज़ से गिरे हुये सूचना पत्र को रशया के किले में घिरे हुये सिपाहियों तक पहुंचाने में प्रगट किया। इस कार्य्य के करते समय वह गोली से ज़खमी भी हुई।

जापान में निपन स्त्री महाविद्यालय और टोकियो स्त्री महाविद्यालय दो स्त्रियाँ के प्रसिद्ध कालिज हैं। इन दोनों और जिसन ज्योगक्कू नामक विद्यालय को विश्वविद्यालय में परिणित करने के लिये २२ लाख रुपया एकत्र करने के लिये बड़ा भारी प्रयत्न हो रहा है।

लेडी ह्नीवुड ने अभी २ लण्डन में वाशिंगटन को खरीदा है। ६ वर्ष पहिले होटल के मुख्य प्रबन्धक का काम आरम्भ किया था और वह आज ८ होटलों की प्रबन्धक है। जब उसने काम आरम्भ किया तो उसे केवल इतना ही तजरुबा था कि वह एक बड़े भारी कुल में खाने पिलाने का कार्य करती थी।

श्रीमती फ्लोरन्स केसलर जो कि राज का काम करने वाली एक गृहस्थी महिला है लास एन्गलिस के बैंक की डारैक्टर चुनी गयी है।

श्रीमती उमानैहरु के इलाहाबाद के गत म्युन्सिपल चुनावमें असफल रहनेपर सरकार ने उन्हें अपनी ओर कमेटीके लिये नियुक्त कर दिया परन्तु श्रीमती जी ने इस नियुक्ति को अस्वीकार कर दिया। आप का कहना है कि जब मुझे जनता का विश्वास प्राप्त करने में सफलता नहीं हुई तो मैं किस मुंह से जनता की कमेटी में बैठ सकती हूँ। श्रीमती जी ने मनुष्य सेवा का उच्च आदर्श हमारे सामने रखा है वह पुरुषों के लिये भी अनुकरणीय होना चाहिये।

अलीगढ़ में भारतीय मुसलमानों का एक शिक्षा परिषद हुई थी। इसमें महिलाओं के लिए भी एक ओर चिकों के पीछे बैठने का प्रबन्ध किया गया था। परन्तु ठीक समय पर उन्हें सूचना दी गई कि अब वह प्रबन्ध हटा दिया गया है और वह परिषद में सम्मिलित न हो सकेंगी। इस का बम्बई की श्रीमती अतिया बेगम ने गैलिरीसे खड़े होकर बड़े बड़े शब्दों में विरोध किया। तब वहां काफी हल्ला मच गया जो कि प्रधान के श्री० अतिया बेगम को बेदी पर आकर बोलने की आज्ञा देने से शान्त हुआ। श्रीमती ने अपने भाषण में कहा कि इस्लाम में ऐसी स्त्रियां हो चुकी हैं जिन्होंने कि राज्ञी, लेख का कवि और सन्त के रूप में अपनी उच्चता को प्रगट किया है। उसने युवक मुसलमानों से अपील की कि वह अपनी माताओं और बहिनों पर किये जाने वाले अत्याचारों को रोकें और अलीगढ़ ने स्त्री उन्नति के लिये कुछ भी नहीं किया। क्या मुसलमान इस अपील पर ध्यान देंगे।

तुर्की महिला सभा ने सरकार से प्रार्थना की है कि उन्हें तुर्की राजनैतिक विप्लव तुर्किस्तान में स्त्रियों की अवस्था बच्चों को किस तरह पालना चाहिये और घर का प्रबन्ध कैसे करना चाहिये इत्यादि विषयों पर मसजिदों में व्याख्यान देने की आज्ञा दी जाय। उन्होंने यह भी कहा है कि मैजिक लालटेन द्वारा जो चलती फिरती तसवीर दिखाई जाती हैं इन की निरीक्षिका एक स्त्री को बनाया जाय जिससे कि वह देख सके कि कोई तसवीर बिगाड़ने वाली तो नहीं दिखलाई जाती।

ब्रह्मचर्य्य

ले०—ब्र० शांति देवी कन्या गुरुकुल देहली।

पूज्य पाठिकाओ! आज कल भारतवर्ष की बहुत ही दशा गिर चुकी है इसका कारण केवल यही है कि ब्रह्मचर्य्य का अभाव। ब्रह्मचर्य के पालन करने से ही हमारे प्राचीन समय के आर्य्य नर-नारी इतने तेजस्वी और बलवान होते थे किन्तु इसके पालन न करने से हमारी आज इतनी अवस्था गिर गई कि जिस का वर्णन नहीं किया जा सकता। अब कुछ समय से यह तो चारों ओर सुनाई देता है कि ब्रह्मचर्य्य धारण करो परन्तु अब तक भी हमारी बहिनों का ध्यान इस ओर अच्छी तरह नहीं है कि ब्रह्मचर्य्य पालन करना चाहिये। इसलिये सब से पहले आपको यह जानना आवश्यक है कि ब्रह्मचर्य किसको कहते हैं और उससे क्या लाभ होते हैं? ब्रह्मचर्य उसे कहते हैं, कि जो जितेन्द्रिय होके ब्रह्म अथवा वेद विद्या के लिये तथा आचार्या कुल में जाकर विद्या ग्रहण करने के लिये प्रयत्न करे। ब्रह्मचर्य्य ही जीवन को जड़ है और इसका नाश ही मृत्यु है। "स्वामी दयानन्द जो कहते हैं" कि—न तस्य किंचिद प्राप्यमिति विद्धि नराधिप, वह्वयः कोट्यस्तु ऋषीणां च ब्रह्मलोके वसन्त्युत ॥१॥ सत्येरतानां सततंदन्तानामुर्द्धरेतसाम् ब्रह्मचर्य्य देहद्राजन् सर्वापापान्युपासितम् ॥२॥

अर्थात्–उसको कोई भी शुभ गुण अप्राप्त नहीं होता ऐसा तू जान कि जिसके प्रताप से अनेक करोड़ ऋषि ब्रह्मलोक अर्थात् सर्वानन्द स्वरूप परमात्मा में वास करते हैं और इस लोक में भी अनेक सुखों को प्राप्त होते हैं ॥१॥

जो निरन्तर सत्य में रमण, जितेन्द्रिय, शान्तात्मा, उत्कृष्ट, शुभगुण, स्वभावयुक्त और रोगरहित, पराक्रम सहित शरीर ब्रह्मचर्य्य अर्थात् वेदादि सत्यशास्त्र और परमात्मा की उपासना का अभ्यास कर्मादि करते हैं उनके वे सब उत्तम गुण बुरे काम और दुःखों को नष्ट कर सर्वोत्तम धर्मयुक्त कर्म और सब सुखों की प्राप्ति कराने हारे होते हैं। और इन्हीं के सेवन से मनुष्य उत्तम अध्यापक उत्तम विद्यार्थी हो सकते हैं ब्रह्मचर्य्य के पालन से मनुष्य का बल बढ़ता है और उसको धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष पदार्थों की प्राप्ति होती है। इनके पालन करने में पहिले कुछ कठिनता मालूम पड़ती है परन्तु अन्त में इसका परिणाम अत्यन्त फलदायक होता है। देखो! ब्रह्मचर्य्य के कारण ही प्राचीन समय में ऐसे वीर योधा उत्पन्न हुए थे जिसको सुनकर हमारे दिलों में विश्वास नहीं होता और सुनकर हमारे दिल आश्चर्य्यमय हो जाते हैं, यह आपने सुना होगा कि मेघनाद कहा करते थे कि मुझको कोई भी नहीं मार सकता। लेकिन उसको भी ब्रह्मचारी लक्ष्मण जी ने ब्रह्मचर्य्य के बल से एक क्षण में मार डाला। ब्रह्मचर्य्य के पालन न करने से मनुष्य बल हीन होकर स्वयम् ही नाश होजाता है।

ब्रह्मचर्य्य के पालन करने में हमें वैसे ही दृढ़ रहना चाहिये कि जैसे वेदवती ब्रह्मचर्य्य के पालन करने में दृढ़ रही थी इसका वर्णन कुछ संक्षेप में इस प्रकार है कि वह बन में रहकर तपस्या किया करती थी और अत्यन्त ही सुन्दरी थी। इसको देखकर रावण

का मन मोहित हो गया और उसको फंदे में फंसाने के लिये उसके पास गया। उस को बहुत लालच दिया। जब देखा कि वह नहीं मानती है, तब राजा रावण उसके केशों को पकड़ कर ले जाने लगा किंतु उस समय वेदवति ने अपने ब्रह्मचर्य्य के बल से केशों को छुड़ाया और रावण से कहा कि हे! अधम तूने मेरा ब्रह्मचर्य्य व्रत खण्डन किया है इस कारण मैं अब कदापि नहीं जीऊंगी। ऐसा कह कर पास ही जो अग्नि कुण्ड था वह उसमें कूद पड़ी।

प्रिय बहिनों तथा पाठिकाओं? इसी प्रकार हमें भी ब्रह्मचर्य्य के पालन करने में दृढ़ रहना चाहिये। इस से भी बढ़ कर एक और उदाहरण उपस्थित है जो कि आप सब को मालूम है वह है महर्षि स्वामी दयानन्द जी का। जब कि संसार की दशा बहुत गिर चुकी थी, और सब लोग स्त्रियों को पांव की जूती समझते थे और स्त्रीशूद्रौनाधीयताम् इस मन्त्र से शूद्र और स्त्रियों को विद्या से वंचित रखते थे। ऐसे समय में स्वामी दयानन्द जी ने भारत वर्ष में आकर सब को एकसा अधिकार दिया और ब्रह्मचर्य्य के पालन करने के साथ ही साथ 'यथेमां वाचं कल्याणी मावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्याँ शूद्राय चार्याय च स्वायचारणाय'। इस मन्त्र का भी प्रचार किया। स्वामीजी कहा करते थे कि ब्रह्मचर्य्य करो तब लोग कहा करते थे कि आपतो कहते हैं कि ब्रह्मचर्य्य करो परन्तु आप में तो कोई विशेष शक्ति नहीं है ऐसा सुनकर स्वामी जी ने भी समय पाकर लोगों को दिखाया कि ब्रह्मचर्य्य क्या है, एक बार कलकटर की गाड़ी कहीं जा रही थी उस समय स्वामी जी ने गाड़ी को अपने बाहुबलसे ऐसा रोका कि सब लोगों ने अत्यन्त ज़ोर लगाया परन्तु उस गाड़ी को कोई भी नहीं चला सका जब पीछे लौट कर देखा तो मालूम हुआ कि स्वामी दयानन्द जी ने गाड़ी पकड़ी हुई है। यह देख कर सब लोग धन्य २ कहने लगे। और एक बार स्वामी जी ने अत्यन्त जाड़ों के दिनों में पृथिवी पर बैठ करके अंगूठों को पृथिवी पर टेक कर ऐसा पसीना टपकाया कि सब लोग देख कर आश्चर्य में हो गये। पाठिकाओ? यह सब ब्रह्मचर्य्य का ही बल है। ब्रह्मचर्य्य की जितनी जड़ मज़बूत होगी उतना ही मनुष्य का जीवन दृढ़ होगा और जितनी जड़ कमजोर होगी उतना ही जीवन कमजोर होगा। ब्रह्मचारी का अर्थ है:—ब्रह्म का अर्थ वेद है। चारी का अर्थ पढ़ने वाला अर्थात वेद पढ़ने वाला॥ इस लिये ब्रह्मचर्य्य नियम का पालन करना अत्यावश्यक है जो नियम पालन करता है वह सदा सब वस्तुओं को प्राप्त कर लेता है॥ ब्रह्मचर्य्यस्य च गुणं शृणु त्वं सुधाधिया, आजन्म मरणाद्यस्तु ब्रह्मचारी भवेदिह॥ ६॥

भीष्म जी युधिष्ठिर से कहते हैं कि तुम ब्रह्मचर्य्य के गुणों को सुनो आजकल जो ब्रह्मचारी होता है उसको कोई दुःख नहीं होता ब्रह्मचर्य्य के हीन होने से आज कल भारत की ऐसी दशा हो रही है और संसार मे चारों ओर रोग ही रोग फैल रहा है। प्रिय बहिनों। इतनी गिरी हुई दशा से उठो? भारत का उद्धार करो, सोई हुई निद्रा से जागो जिस से हमारी तथा दूसरों की भी उन्नति हो। आशा है कि हमारे पाठक तथा पाठिकायें इससे लाभ उठावेंगे और इस पुण्य भूमि भारत को उन्नत करने का यत्न करेंगी मेरा फिर भी यही अन्तिम निवेदन कि ऋषि संदेश का पालन करो।

———

कन्या गुरुकुल समाचार

स्वास्थ्य ।

ब्रह्मचारिणियों का स्वास्थ्य इधर एक मास से बहुत उत्तम है। दुर्भाग्यवश चेचक का रोग जो कुल में फैल गया था उसका प्रभाव यद्यपि बहुत दिन रहा तथापि सभी रोगी कन्याएं स्वस्थ हो गईं और सभी पठन-पाठन में लग गई हैं। जो कन्याएं ६ सप्ताह तक पृथक् रहने के कारण पाठ में पीछे रह गई थीं उनके से उनके स्वास्थ्य को लक्ष्य में रखकर विशेष परिश्रम कराया जा रहा है ताकि वह पाठ में बराबर चल सकें।

पिछले टाइफाइड के केस के जो ३ कन्याएं स्वास्थ्य लाभ करने जलवायु परिवर्तनार्थ अपने २ घर चली गई थीं उन में से दोनों गुजराती कन्याएं तो वापिस आ गई हैं और पठन-पाठन में दत्तचित्त हैं।

पठन पाठन और चर्खा ।

विद्यालय अभी १० बजे से ३ बजे तक लगता है किन्तु श्रेणी वार क्रम से उसके बाद चर्खा क्लास होता है और कन्यायें प्रतिदिन चर्खा चलाना सीखती हैं। इस कार्य के लिये एक पञ्जाबी वृद्धा देवी नियुक्त की गई है।

जिन २ श्रेणियों की कन्याएं बिलकुल चर्खा चलाना नहीं जानती थीं वह भी तार निकालने लगी हैं।

व्यायाम और क्रीड़ा क्षेत्र ।

क्रीड़ा-क्षेत्र बिलकुल तैयार है झूले तथा कूदने फांदने और व्यायाम के सामान सब तैयार होकर लगा दिये जा चुके हैं। तीन बजे के बाद से अध्यापिकाओं के निरीक्षण में कन्यायें क्रीड़ा-क्षेत्र में खेलती हैं। अभी एक झूला और तैयार हो रहा है क्रीड़ा-क्षेत्र के सुसज्जित होने से कन्याओं के स्वास्थ्य पर उत्तम प्रभाव पड़ा है। अब नियमित-रूप से प्रतिदिन व्यायाम होती रहती है।

आचार्या जी की यात्रा ।

गुजराती उत्साही आर्य पुरुषों के अतुल उत्साह से इसवर्ष महर्षि की जन्मभूमि टंकारा में ऋषि बोधोत्सव मनाया गया यहाँ से श्री आचार्या जी तथा दो अध्यापिकाएं कुमारी चन्द्रवती देवी जी तथा कुमारी सीतादेवी जी भी जन्मभूमि महोत्सव के लिये टंकारा गई थीं। कुमारी चन्द्रवती जी तथा कुमारी सीतादेवी जी उत्सव समाप्ति पर कुल में लौट आई किन्तु श्री आचार्या जी अब तक कतिपय अनिवार्य बाधाओं के कारण बड़ौदा में ठहरी हुई हैं और वहाँ सेशान्ति निकेतनादि कुछ एक संस्थाओं को देखती हुई १०—१५ दिन पश्चात कुलमें लौट आयेंगी। आजकल स्थानापन आचार्या श्रीमती राधारानी जी मुख्याधिष्ठात्री हैं।

चिकित्सालय ।

श्री डाक्टर तुलसीराम जी तथा डाक्टर चुनीलाल जी के पुरुषार्थ से चिकित्सालय का कार्यशुरू से ही सुचारु रूप से चला आरहा था किंतु विगत यात्रा में दो तीन ब्रह्मचारिणियों को टाइफाइड हो जाने से स्थाई रूप से डाक्टर रखने का विचार किया गया इसके लिये डा० जैगोपाल जीरामनगर गुजरांवाला गुरुकुल की सेवा करने के लिये तय्यार थे किन्तु दुर्भाग्यवश वे कुछ अस्वस्थ हो गये

और अब तक भी आने का पूण विचार न कर सके।

कुछ मासों से श्री डाक्टर चुनीलाल जी ने स्थाई रूप से चिकित्सालय का काम अपने जुम्मे ले लिया था और प्रतिदिन २ घण्टे चिकित्सालय को दिया करते थे किंतु हाल ही में उनका स्थानान्तर लाहौर हो गया है डाक्टर जी का कुल प्रेम तथा समाज सेवा प्रशंसनीय है। उनके कुल विदा होने पर उन्हें कुल की ओर से एक अभिनन्दन पत्र तथा सह भोज दिया गया। डाक्टर जी की इससेवा के लिये हम उन्हें धन्यवाद दिये बिना न रहेंगे।

सम्प्रति कृपापूर्वक श्री डाक्टर तुलसी-राम जी ने पुनः चिकित्सालय का कार्य ले लिया है। यद्यपि डाक्टर जी का निवास स्थान कुल से अधिक दूर है और उन्हें आने में बड़ी कठिनता पड़ती है किन्तु कुल के प्रेम में आबद्ध होकर चिकित्सालय का निरीक्षण तथा चिकित्सादि का कार्य्य कर जाते हैं और चिकित्सालय का कार्य पूर्ववत् भली प्रकार चल रहा है। डाक्टर जी की इस प्रशंसनीय सेवा के लिये हम उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हैं।

वसन्तोत्सव—इस वर्ष विशेष रूप से वसन्तोत्सव मनाया गया। प्रातःकाल वृहद् यज्ञ किया गया और बाद को अध्यापिकाओं तथा ब्रह्मचारिणियों की सभा हुई जिसमें मनोहर भजन तथा उपदेश हुए। उसके पश्चात् सहभोज हुआ और मध्याह्न काल में अध्यापिकाएं कुछ ब्रह्मचारिणियों सहित यमुना तट की ओर भ्रमण करने गईं।

ऋषिबोधोत्सव—गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी ऋषिबोधोत्सव बड़े समारोह के साथ मनाया गया। सन्ध्या समय वृहद् यज्ञ तथा सभा की गई और बहुत सी ब्रह्मचारिणियों ने "ऋषिजीवन कथा" तथा उसी उपलक्ष्य में व्याख्यान दिये। कुल के चारों ओर रोशनी की गई। यद्यपि हवा बीच बीच में बाधक बनती थी तथापि उस "जीवन ज्योति" रात में प्रकाश न होना भी आश्चार्यान्वित था अतः दीपकों की टिमटि-माहट से कुल जगमगा रहा था।

ऋतु—सर्दियां गुजर रही हैं। आज कल प्रातः उतनी ठण्डक नहीं जितनी कि गत मास थी। प्रायः अधिक ब्रह्मचारिणी प्रातःकाल हवन में बिना गर्म चादरों के ही बैठती हैं। उद्यान में वसन्त की दिव्य छटा दिखाई पड़ने लगी है। वृक्षों पर नये हरे पत्ते निकल रहे हैं तथा गेंदे आदि के फूल खिल रहे हैं। बसन्त के कारण उद्यान की अपूर्व शोभा बढ़ रही है।

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र।

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियां, जाकटें और कुरते बहुत ही खूबसूरत फैंसी बनावट के मिलते हैं एकवार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महंगे जचें तो फ़ौरन वापिस भेजकर क़ीमत वापिस मंगा लीजिये क़ी० साड़ी बेल रेशम की किनारी दार ७) ८) ९) १०) १२) जरी किनारी १५)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं; और बालों का उखड़२ कर गिरना बन्द होता है की० ॥)

बच्चों के गले के लाकिट—ये लाकिट दांत सुगमतासे निकलने के लिये प्रसिद्ध हैं की० ॥।)

बालसुधा—गोद के बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शीशी ॥।)

महा सुगंधित तैल—माथे को सुगंधित और ठंडा करने वाला तैल कीमत १)

ब्रासलेट वाच।

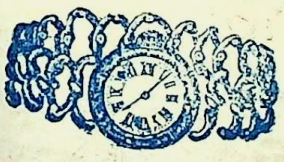

न० ३२ यह बिल्कुल ही नई फैशन की चीज़ है इसके बीच में एक छोटी सी जेब घड़ी है और इधर उधर चूड़ियां ऐसी तर्ज़ से बनाई गई हैं कि चाहे जैसे बड़े हाथ में पहिना लीजिये ठीक नाप की हो जावेगी हिन्दुस्तानी बड़े घरों की स्त्रियां भी इसे बहुत पसन्द करती हैं क्योंकि घड़ी की घड़ी और गहने का गहना है, पीतल पर सोने की गिल्ट वालीं का दाम ८) रु० जिसके चारों तरफ नग जड़े हैं दाम १०) रु० ॥

बालकों के फैंसी कुरते—इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है हर एक रङ्ग के क़ीमत ४) ५) ६) ७) ९) १०) यही ज़री के १५) २०) २५)

बोडी या जाकेट—ज़नानी चाहे जिस नाप की क़ीमत ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूची-पत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता:—

सुख संचारक कम्पनी,

मथुरा.

पं० नअन्तराम शर्मा के प्रबंध से सद्धर्म्म प्रचारक प्रेस दरियागंज देहली में छपा।

और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

A SELECTION IN OUR OFFICE CLOCKS

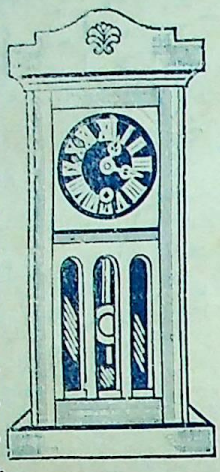

THE

MODERN

REGULATOR

One of our best Office clocks recently Imported.

The only Office Clocks, which is unequalled in the clock world. Made in wall nut superior case and with perfect mechanism. Give you correct time and guaranteed for five years.

WRITE NOW.

Price Rs. 5 Only

CAPTAIN WATCH Co., P. B. 165, MADRAS.

OUR STOCK TAKING SALE !
LOSE NOT THIS CHANCE !

To purchasers of the patent German Alarm Time-piece we are giving away one of our 18 carat Rolled Gold wrist watch with full leather as illustrated. Both these are guaranteed for five years Keeps correct time & handy. Both should be purchased at a time.

Rs. 10

—

Rs. 10

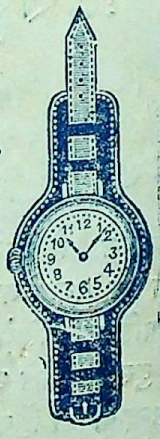

PURCHASED SEPARATELY

The German Alarm Time piece Rs. 5.
18 carat Rolled Gold wrist watch Rs. 7.

TRT ONCE **ONLY A FEW MORE**

CAN BE HELD FROM

THE ENGLISH EMPORIUM,

P. B. 105. **MADRAS.**

Regd. No. L. 1240.

वर्ष ६] फाल्गुण १९८२—मार्च १९२६ [खण्ड ६, संख्या ११

ज्योति

वार्षिकमूल्य ४॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए० स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) विदेश का मूल्य ६)

विषय सूची

—:(*:—

विषय		पृष्ठ
१. माता का प्रेम–ले०—" श्रीहरि "		४८५
२. सतानेवाला कौन है?–ले०–'एक जीव'		४८६
३. जीवन का उद्देश्य (२)–		
ले०–डा० राधाकृष्ण एम.बी.बी.एस		४९१
४. दिव्य वाणी–ले०—'निर्मल'		४९४
५. प्रश्नोत्तर–ले०–श्रीबुद्धिसागर वर्मा		४९५
६.उर्मिला (गल्प)		
ले०–श्री द्वारकाप्रसाद		४८३
७. मोहिनी के आंसू—ले०–सन्नलाल		
दाधिमथ वैद्यराज		५०८
८. महासभाओं की प्रचलित प्रथा–		
ले०–जगदीश चन्द्र शास्त्री	.....	५१२
९. हमारी मंजूषा	.....	५१५
१०. वैज्ञानिक संसार	.....	५१९
११. कुसुमोद्यान	.....	५२२
१२.कन्या गुरुकुल समाचार	.....	५२६
१३ वनिता विनोद	.....	५२८
१. स्त्री जगत्	.....	५२८
२. बालिका विनय	.....	५२९
३. कर्तव्य पालन	.....	५३०
४. सत्य	.....	५३२
५ उद्योग	.....	५३३
१४. विचार प्रवाह	.....	५३५

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—
१ वर्ष के लिये ४॥) है।
६ मास के लिये २॥) है।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है।
पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता। नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता हैं।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है। बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये। जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे। पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें। वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है। पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है। आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये। यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये। परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें।

वर्ष ६ | फाल्गुण १९८२ मार्च—१९२६ ई० | संख्या ११

माता का प्रेम

ले०—श्री० पं० श्रोहरि जी साहित्याचार्य, आचार्य हिंदीविद्यापीठ प्रयाग

हे अम्ब ! है अवलम्ब तुम सा, कौन इस संसार में ।
निःस्वार्थ-प्रणयिनि ! स्वार्थगन्ध न नेक तेरे प्यार में ॥
निज लाल के नव-नेह पर तन मन सुधन सब वारती ।
प्रिय-प्रान-दीपक-आरती, तू है सदैव उतारती ॥ १ ॥

* * *

हे पुण्य-प्रतिमें ! स्वर्ग क्या, अपवर्ग भी निःसार है ।
तेरे लिये बस पुत्र का वह, प्यार ही इक सार है ॥
तेरा परमपावन हृदय, वात्सल्य से अभिराम है ।
हे मात ! तेरे वर चरण में वार २ प्रणाम है ॥ २ ॥

सताने वाला कौन है?

लेखक—एक जीव.

ये कौन हैं जो मुझे अदृश्य तीरों से बार २ मार रहे हैं। तीरों के लगने पर मैं चारों तरफ़ चौंक चौंक कर देखता हूँ और ढूंढता हूँ, किन्तु किसी भी धनुर्धारी को नहीं देख पाता। फिर न जाने ये कौन हैं जो सभी ओर पूर्व, पश्चिम उत्तर और दक्षिणमें अपने निर्दयी तीरोंसे मेरे अंगों को छेदते जा रहे हैं। मैं बड़ा पीड़ितहो रहा हूँ। हाय, ये मुझे कब तक सताये जांयगे? एक तीर की पीड़ा अभी बन्द नहीं हो पाती कि इतने म दूसरा तीर आलगता है। एक ही दिन में कई बार घाव पर घाव लगते हैं। घावों से पीड़ित हो मैं बिलाता हूं और सोचने लगता हूँ कि मैं ज़िन्दा क्यों रह रहा हूँ? किन्तु आशा पीछा नहीं छोड़ती। जब कभी कुछ घड़ियां भी शान्ति से बीत जाती हैं तो समझने लगता हूँ कि शायद अब अच्छे दिन आगये। परन्तु फिर कहीं न कहीं से ऐसा तीर आलगता है कि सब भूल जाता है और मैं अपनी असली अवस्था में आ जाता हूं। इस तरह मैं रह रह कर सताया जा रहा हूं। हे राम, मैं क्या करूं!

* * * *

मैं अपना सताने वाला किसे कहूँ और किसे न कहूं। कौन वस्तु है जिस ओर से ये तीर नहीं बरस जाते? पहिले मैं बेशक किन्हीं प्राणियों और किन्हीं वस्तुओं को अपना दुःखदाता समझा करता था किन्तु अब धीरे२ जाना है कि यह सब संसार ही दुःख का घर है। क्यों कि संसार की सभी वस्तुयें एक २ वस्तु-चुभने वाली है। इस संसार में किसी दिशा में चले जाओ किसी दशा में रहो, ये सब अच्छी भली दीखने वाली वस्तुएं ही तीक्ष्ण तीर बरसाने लगती हैं। इतने काल के बाद भी मैं यह तो नहीं जान पाता हूं कि इन वस्तुओं में ये तीक्ष्ण तीर कहां से उपजते हैं, पर मैं इतना अवश्य देखता हूं कि इस संसार में सब कहीं ये तीर बरस रहे हैं।

* * * *

मैं व्याकुल हृदय सब जगहोंमें फिरता हूँ किन्तु इस वर्षा से रहित मरुभूमि कहीं नहीं मिलती जहां कि यह तीर वर्षा न होता हो। चाहें शिमले की ऊंचाई पर जा बसो, चाहें गंगातट की शरण लो, चाहें काबे की यात्रा करो, चाहें सब तीर्थों की परिक्रमा कर डालो। मैंने सब तपोवन भी छान डाले किन्तु इस तीर वर्षा का अन्त कहीं न पाया। वर्षा में मैंने समझा था कि शायद ग्रीष्म के दिनों में ये तीर चुभने बन्द हो जाँयगे, किन्तु इस वर्षा की कोई ऋतु भी न पायी। सभी ऋतुएं इसके लिये वर्षा ऋतु हैं। भ्रम ही से मैंने वसन्त ऋतु के सुखधाम और दुःख विश्राम होने का स्वप्न देखा और व्यर्थ ही सुखभरी प्रतीक्षा से गर्मी के क्लेश-वर्षा के लम्बे२ दिनों में शरद् ऋतु की बाट जोही।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

बालकपन में मैं समझता था कि विद्यालय (स्कूल) छोड़ उच्च विद्यालय (कालेज) जाने पर ये क्लेश बन्द हो जायंगे और उच्च विद्यालय (कालेज) में समझा था कि पढ़ाई छोड़ कर स्वतन्त्र होने पर अवश्य इन क्लेशों से छुटकारा हो जायगा। इसी तरह एक २ जगह में माना था कि इस जगह को छोड़ दूसरी जगह जाने से ये सब दुःख मिट जाँयगे और सदैव वर्त्तमान पेशे व वर्त्तमान स्थिति से तंग आये रह कर दूसरे पेशे व दूसरी स्थितिकी तोव्र इच्छा रखी थी। किन्तु हाय ये सब के सब झूठे सुपने थे। यह क्लेश वर्षा कहीं थमने वाली नहीं है।

यदि कहीं जाकर स्थिरता से बैठ जाता हूँ और बैठ कर इन तीरों के प्रहारों से बचने के लिये जो जो तदबीरें करता हूँ वे भी सब निष्फल जाती हैं। बचने के लिये मैं नयी २ आशा के साथ नयी २ आड़ें खड़ी करता हूँ किन्तु अन्त में देखता हूँ ये आड़ें ही तीर बरसाने लगती हैं। इस प्रकार न मुझे फिरते चैन है और न बैठ कर चैन है। हे भगवन्! मैं घबराया हुवा हूं। हे राम तुम्हीं बतलाओ इन से मैं कैसे बचूं, तुम्हीं बतलाओ ये सब जगह सताने वाले कौन हैं?

* * * *

कई बतलाते हैं कि मुझे सताने वाले स्वरुप में कोई अदृश्य तीर नहीं हैं किन्तु एक प्रकार के विषैले कीड़े हैं। इस दुःखमया दुनियां के आरम्भ में एक पिंडोरा नामी लड़की ने कौतूहलवश उस संदूक़ को खोल डाला था, जिसमें तीक्ष्ण डंकों वाले यह कीट पतंग दुनियां को दुःख देने के लिये भरे गये थे। हाय! ये ही वे उड़ने वाले कीड़े हैं जो मुझे हर जगह और हर समय अपने विषैले डंक मारते फिरते हैं। हे मेरे स्वामी! क्या यह क्लेश कभी ख़तम न होंगे? क्या दुनियां में अब कोई उपाय नहीं जिससे ये अदृश्य कीड़े फिर संदूक़ में बन्द किये जा सकें? क्या अनन्त काल के लिये मैं इन कीड़ों का भोज्य बना रहूँगा?

* * * *

"हे प्रभो! रक्षा करो, मैं मरा जाता हूँ। तीरों के मारे मेरा देह चलनी हुआ पड़ा है। मैं सारी दुनियाँ में मारा २ फिरा, किंतु कहीं भी चैन नहीं पड़ी। अब और कहां जाऊं! कहां पर आश्रय पाऊं? कुछ नहीं सूझता। चारों ओर से सताया जा रहा हूँ। अपने दुःख दाताओं का पता लगाते २ (और उन्हें न पाकर व्यर्थ चेष्टायें करते २) मैं मर मिटा हूं, अपने विदीर्ण हृदय को पकड़े २ संसार का कोना २ ढूंढ डाला। अब अधिक शक्ति नहीं है। क्या करूं? क्या अब कोई उपाय नहीं है? हे प्रभो! यदि तुम हो-स्वामी और रक्षक हो तो बचालो! मैं सदा के लिये मरा जाता हूं!"

* * * *

इस प्रकार से मैं न जाने कबसे चिल्लाता और बिलबिलाता रहा हूँ। व्याकुल हो इधर उधर तड़फता फिरा हूं। अन्त में आज बिलकुल थक कर और अधमरा होकर इस क्लेश वर्षा में ही बे बस पड़ गया हूं, और ज्यों ही अचानक अपनी उन बाहर देखने वाली, थकी हुई आंखों को, जिन्हें फाड़कर मैंने संसार भर में अपने सताने वालों को गहरी नज़र से ढूंढा, और जिन आंखों में अब अधिक शक्ति नहा रही है कि खुली रहें तथा चीज़ों को देख। मैंने विवश हो बाहर से बन्द कर लिया त्यों ही मुझे अन्तरीय दृश्य दीख पड़ा, मैं अपने अन्दर के दर्शन करके आज एक दम स्तब्ध रह गया! उन अपने तीर बरसाने वालोंको जिनकी खोज

में मैं सारा जहान ढूंढ कर निराश हो गया था आज मैंने अपने अन्दर ही, अपने अन्तःकरण में ही, तीर कमान कस खड़े हुवे पाया। और अधिक अन्तर्ध्यान होने से मुझे अब ज्ञान हो रहा है कि इनके हाथ में उन धनुष बाणों का पकड़ाने वाला मैं ही मूर्ख हूँ जिनके द्वारा मारा हुआ मैं आज तड़फ रहा हूँ

* * *

आज अन्दर देखने से दीख रहा है कि क्लेश वर्षा करने वाले वे बादल जिनका मुझे पता चलता था, मेरे हृदयाकाश में ही मण्डा रहे हैं और मैंने अपने कलेवर के ही वाष्प देकर उन बादलों को बनने दिया है अब पता लगता है कि पिंडोरा का सन्दूक कोई बाहर की चीज़ नहीं जो पिंडोरा के घर के दरवाजे पर रखी हुई थी किन्तु यह विषैले जन्तुओं वाला बाहर से सुन्दर और मनोहारी सन्दूक मेरे मन मन्दिर में ही खुला पड़ा है। और यदि सच कहूं तो मैंने ही यह स्वयं खोला है तथा अब मैं जानता हूं कि मैं ही चाहूं तो इसे बन्दकर सकता हूं।

* * * *

धन्य है आज का दिन! कृतकार्य हुआ आज से मेरा जीवन! सुफल हुये! आज वे मेरे अनादि कालीन पीड़ायें और मरणान्त क्लेश जिन से अत्यन्त पीड़ित होकर आज मैं विवश हुआ कि अपने अन्दर देखूं। अन्धकार का महान् समय बीत गया, और आज प्रकाश के शुभ दर्शन हुवे। उसे आज देख लिया, जिसकी तलाश में व्याकुल इधर उधर क्लेश भोगता फिरा।

आज दुःखदाता को पहिचान लिया है। मैं आज दृढ़ता से कहता हूं बाहर की कौनसी चीज़ है जो मुझे अब क्लेश पहुँचा सके। मुझे अब कौन सतायेगा, जब कि मैंने अपने दिल को हस्तगत कर लिया है। अब कौन डङ्क मारेगा जब कि मैंने वह सन्दूक बन्द कर दिया है। आज से सब क्लेश समाप्त हैं। क्या बात है कि आज से दुःख का एक भी तीर मुझे स्पर्श कर जाय, चाहे मैं महल को छोड़कर घन घोर जङ्गल में जा बसूं चाहे शिमले की कोठी से उतर कर रेगिस्तान की गर्मी में रहूं, चाहे सब कपड़े उतार कर हेमन्त की शीत में नङ्गा फिरना प्रारम्भ करूं। आजाओ, दुनियाँ की सब व्याधाओ आजाओ, देखूं कौनसी व्यथा है जो मुझे अब दुःखी कर सकती है?

* * *

मुझे वैरी समझने वालों के कटु वाक्य रूपी तीर मेरा क्या करेंगे यदि मैं उन्हें अपने भाइयों के प्यारे मुख वचन समझकर सुन लूंगा। कालकूट जहर मेरा क्या बिगाड़ेगा, यदि मैं उसे अमृत समझकर पी जाऊंगा। मेरे काल्पनिक शत्रुओं के फेंके हुवे ईंट पत्थर मेरे अङ्गों को क्या पीड़ा पहुंचायेंगे, यदि मैं उन्हें फूलों की वर्षा समझकर आनन्द से स्वीकार करता जाऊंगा।

* * * *

वे भयानक रोग जिन्हें मेरे पूर्व पाप कर्म बुला गये हैं अपनी असह्य पीड़ा और दर्दों के साथ आवें, और बड़ा खुश से चल आवें मुझे कोई परवाह नहीं क्योंकि मैं उन सब दुख दर्दों को अपनी शुभ सङ्कल्प शक्ति के पारस पत्थर से सुख और शान्ति में परिणत कर लूंगा।

और भी विपत्तियां और आफतें जो आना चाहें आवें, मैं इन परम सुख के पहुंचाने वाली सीढ़ियों पर पैर रखकर चढ़ता जाऊंगा और आनन्द से ऊपर देखूंगा कि परम सुख का सुन्दर मन्दिर नजदीक आता जा रहा है।

CC-0. Haridwar. Digitized by eGangotri

मेरे दरवाजे खुले हैं। सब तरह के कष्ट और क्लेशों को खुला निमन्त्रण है। वह निःशङ्क अन्दर घुस आवें। किन्तु अन्दर पहुँचते ही उन्हें अपना दुःखदायी और भयावह चोला उतार कर अपने सौम्य सुखद स्वरूप को स्वीकार करना पड़ेगा, जब कि उन को प्रभु के अटल नियमों के भेजे हुवे तथा उन्नति का संदेशा लाने वाले दूत समझकर मैं उन्हें आतिथ्य सत्कार से सम्मानित करूंगा।

* * * *

जब कि सारा जीवन भर मैं एक ही धुन में निमग्न रहूँगा तो कौनसा क्षण मिलेगा जब कि मैं किस अकर्मण्यता व चिन्ता को, क्लेश को, मुलाकात के लिये बुला सकूंगा। जब कि मैंने सदा के लिये दृढ़ता के के दुर्भेद्य कवच को धारण कर लिया होगा तो कौनसा मार्ग होगा जिससे दारुण दुख मुझे पीड़ित करने के लिये अन्दर घुस सकेगा। जब कि मेरे चारों दिशा का वायु मण्डल मेरी अहिंसाव्रत और अभयदान की सुगन्धि से परिपूर्ण हो रहा होगा तो मैं किधर से आशा करूं कि मुझे मारने के लिये किसी भय व त्रासके क्लेश कीटाणु का प्रवेश हो सकेगा। जब कि मैं सदैव ही अपने ऊपर आनन्द मय की घना छत्रछाया को अनुभव करता रहूँगा, तो कौनसा अवसर हो सकेगा जब कि शोक और रञ्ज ग़म की कड़ी धूप सन्तप्त करने के लिये मुझपर उतरेगी?

* * * *

निसन्देह जब मैं वेग से सत्य के मार्ग पर बढ़ता हुआ जा रहा हूँगा तो मार्ग में अड़ने वाली आपदा और मुसीबत की सांकलें टूट टूट कर गिरती जायेंगी।

वे विचार जोकि मेरे मनको मलीन और खिन्न करने के लिये आगे उलटे पैरों चुपके से लौट जायेंगे, जब कि देखेंगे कि मेरा मन एकाग्रता के अदृश्य सन्तरी से रक्षित है। जबकि मैं परमात्मा की आज्ञा को ही अपना लक्ष्य, उद्देश्य और आंखों का तारा मानकर उसी की ओर टकटकी लगाये अपने मार्ग पर जा रहा हूँगा तब कोई भी सम्भावना नहीं कि कभी इधर उधर जलनेवाली मनुष्य-प्रदत्त प्रतिष्ठा-लालसा की दुःख चिंताग्नि में पतित हो जाऊं।

ऐ अपने को शक्तिशाली समझने वाले अन्यायी! तेरे भीरू अत्याचार में क्या शक्ति हो सकती है? तू अपने अत्याचारों से मुझे क्या सता सकता है? मेरे शरीर को भले ही तू रैक (Rack) पर खिचवाले, कुत्तों से बोटी २ करके कटवाले, खाल उधड़वा के खौलते तेल में नमक मिर्च के साथ तलवा ले और जो कुछ सूझे उस उपाय से इस निश्चेतन शरीर की जितनी चाहे दुर्गति करता फिर, परन्तु तू मुझे कैसे सतायेगा? वह कौनसा शस्त्र है जिस चला कर तू मुझ सुख दुःख के अनुभव कर्ता पर अपने क्रूर अत्याचार करेगा! जब कि मेरा साधन मन मेरे ही साथ है। यदि तेरी अत्याचारी तलवार मुझे सताने के निश्चय से मुझ तक पहुंचेगी, तो वह निस्सन्देह मेरे शरीर पर ही लग कर रह जायगी तथा अपने घातक प्रहार का दुःख मुझ तक न पहुँचा सकने के कारण अपनी कमज़ोरी अनुभव करेगी।

* * * *

ये संसार की सरकारें मनुष्य के लिए बड़ी डरावनी चीजें मानी जाती हैं। संसार में बहुत से धार्मिकों पर इन सभ्य अत्या-

आत्मियों के किये हुए जुल्म प्रसिद्ध हैं इनके फिर दुबे अत्याचार ऐसे समझे जाते हैं कि जिनका इलाज प्रजा के पास नहीं है परन्तु भला धर्म-पथ के यात्री को कौन संसार में सता सकता है ?

धर्म कार्य्य करते हुए यदि कोई सरकार मुझे बलात् अन्याय से पकड़ कर कलंकित करना चाहेगी, तो उल्टा देखेगी कि सब जगह मेरा यश मुफ्त में फैल रहा है। मैं नहीं जानता कि उसके जेलखाने की ऊंची २ मोटी दीवारें मुझ स्वतन्त्र जीव को कैसे क़ैद कर सकेंगी ये जेल तो मेरा ध्यान मन्दिर बन जायेंगी। (आह ये वह जेल हैं जिन्हें कि बहुत से धर्मवीर अपनी चरण रज से पवित्र कर गये हैं, और इन्हें तीर्थ भूमि बना गए हैं।) उस समय मेरे हाथों और पैरों में पड़ी हुई हथकड़ियां और बेड़ियां मुझे क्या जकड़ सकेंगी, वे तो मेरे आभूषण बन कर मेरे हाथों और पैरों को अलंकृत कर रही होंगी !

* * *

हे राजाओ ! मानवशक्ति अधिक से अधिक कहां तक पहुंच सक्ती है। शायद अन्त में मृत्यु को ही क्लेश की पराकाष्ठा समझ कर तुम सताने के लिये मुझे मृत्युदण्ड की आज्ञा सुना दोगे, मैं तो हसता खेलता सूली की खूंटीपर अपना पुराना जीर्णचोला लटका हुवा छोड़ कर परम पिता के पास नया वस्त्र धारण करने के लिये आनन्दसे पहुंच जाऊंगा। इस से ज़्यादा और क्या हो सकता है।

हे राज्यशक्ति ! तू इस से ज्यादा मेरा और कुछ नहीं कर सकती, चाहे तू अपने पूरे साज समान के साथ मुझ पर आ, चाहे तू अपनी सुसज्जित डरावनी चतुरङ्गिणी फौज के साथ मुझे अकेले पर आक्रमण कर, चाहे तू अपनी भुवनों को कम्पानेवाली तोपों की परम्पराहट के साथ मुझ पर चढ़ आ।

ऐ मौत ! तू विकराल 'काल' कहलाता है। लोग कहते हैं कि "तू बड़ी डरावनी है, तेरा नाम सुनते ही दिल कांप उठते हैं। संसार के बड़े २ लोग मौत के आने पर छटपटाते मर गये उनकी कुछ न बन पड़ी"

किन्तु हे प्यारी मौत ! यह सब झूठ है। यदि तू ऐसा ही होती तो फांसी का हुक्म सुनने पर उस बगाली का आनन्द के मारे दो सेर भार क्यों बढ़ जाता ? यदि तू दुःख दायिनी ही होती तो मरते समय ऋषि दयानन्द का मुख अगाध आनन्द से प्रफुल्लित क्यों देखा जाता ?

सचमुच हे मृत्यु ! तू डरावनी नहीं है। तू तो विश्रामदायिनी और मुक्तिदायिनी है ! तू काले भैंस पर चढ़ी हुई भयानक काल दण्ड हाथ में लिये हुवे कोई रौद्र चीज़ नहीं है तू तो मुझे एक रमणीक सुन्दर बन्दरवारों से सजे हुवे द्वार के रूप में दीखती है जिसमें कि श्रान्त तपस्वी विश्राम की प्रफुल्लता पाने के लिये सुख से प्रवेश करते हैं और जिसमें होकर चरम देह वाले मुनिगण मंगलमय परमप्रभु के धाम में प्रवेश या उसकी प्यारी गोद का शरण पहुंचते हैं।

* * *

सच मुच आज से संसार के सब झूठे कष्ट 'इस जीव' की दृष्टि में लुप्त होगये। आज ज्यों ही समझा है कि पदार्थों को दुःखप्रद बनाने वाला मेरा अन्तःकरण है त्यों ही पृथ्वी तल का सब कष्ट-कालिमायें धुल गईं और सुखकारी प्रकाश-सुधा से चारों दिशायें पुत गयीं ! आज से इस जीवन मन्दिर के आकाश में कोई दुःख छाया नहीं पड़ सकती। आज से 'इस जीव' के अनन्त अविनाशी आनन्दमय जगत की कोई भी वस्तु बाधा नहीं डाल सकती। आहा ! सारा संसार आनन्द की ज्योति से जगमगा रहा है। ओ३म् आनन्द ! आनन्द ! आनन्द !

जीवन का उद्देश्य–(२)

लेखक–श्री डाक्टर राधाकृष्ण जी M. B. BSc. प्रिंसिपल मेडिकल कालेज गुरुकुल कांगड़ी,

स्वास्थ्य

(गतांक से आगे)

गत मास इसपर विचार हुआ था कि जीवनविद्या (Biology) के अनुसार जीवन का उद्देश्य संतान उत्पत्ति (Propagation of species) है और कि यह संतान उत्तम ही होनी चाहिये। हमने यह भी देखा था कि उत्तम संतान के लिये।

१. वैयक्तिक स्वास्थ्य (Personal-health)
२. वंशीय स्वास्थ्य (Racial-health) तथा
३. ब्रह्मचर्य्य (उत्तम उत्पादक अणुओं)

की आवश्यक्ता है, अतः इन विषयों पर क्रम से विचार करना आवश्यक है।

वैयक्तिक स्वास्थ्यवृत (Personal-hygiene)

यह वह विज्ञान (Science) है जिस से किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य उत्तम हो सकता है और इस से:—

१. जीवन लम्बा तथा गहरा हो जाता है अर्थात् यह ही नहीं कि आयु बढ़ जाती है प्रत्युत जितने वर्ष कोई मनुष्य जीता है वह अपने जीवन को स्वास्थ्य तथा शक्ति से पूर्ण अनुभव करता है।

२. मनुष्य रोगी नहीं होता क्योंकि रोग जहां स्वास्थ्य संबंधी नियमों के पालन न करने का परिणाम है वहां यह अल्प आयु, दुष्ट स्वास्थ्य, और उथले तथा निराशमय जीवन (Passimism) अतः का कारण भी है। वैयक्तिक स्वस्थ्यवृत रोगों को रोकने का साधन (Preventive medicine) भी है

३ स्वास्थ्य से मनुष्य का आचार (Character) भी उत्तम हो जाता है और मन तथा मस्तिष्क (mind and intellect) स्वच्छ हो जाते हैं। यही कारण है जिस से कई बार सुना जाता है कि स्वस्थ शरीर ही स्वस्थ हृदय का उत्तम मन्दिर है।

इस से स्पष्ट है कि वैयक्तिक स्वास्थ्यवृत का सबन्ध केवल शरीर के साथ ही नहीं प्रत्युत मन के साथ भी है। अतः इस विज्ञान के दो भाग हैं:—

१ शारीरिक स्वास्थ्यवृत।
२. मानसिक स्वास्थ्यवृत।

१. शारीरिक स्वास्थ्यवृत।

स्वास्थ्य को उत्तम बनाने तथा रखने को शारीरिक स्वास्थ्यवृत कहते हैं।

स्वास्थ्य क्या है इस का ज्ञान प्रायः प्रत्येक व्यक्तिको होता है चाहे कोई इस का वर्णन न भी कर सके परन्तु अनुभव सब करते हैं। स्वास्थ्य एक ऐसी अपूर्व वस्तु है जिसे लेने के लिये सब ही इच्छुक हैं। इस

केबिना धन, मान बुद्धि सब ही तुच्छ और अरोचक प्रतीत होते हैं। कौन नहीं जानता कि उत्तम स्वास्थ्य से जीवन आनन्दमय और सुखदायक हो जाता है। जो व्यक्ति स्वस्थ है उसे कोई भी कठिनता, बाधा या शक्ति भयभीत, साहस रहित या पराजित नहीं कर सकी। वास्तव में इन बातों को वह ही अनुभव कर सकते हैं जिन्हों ने एकबार स्वास्थ्य रुपी देवी के दर्शन कर लिये हों या जो स्वास्थ्य हीन होकर रोगी शय्या पर पड़ा अपनी दीन दशासे पीड़ित हो रहा हो। स्वास्थ्यबल है, शक्ति है, तेज है और जीवन है। इस से शरीर बलवान, सुन्दर, सुडौल होता है, हृदय बिशाल और पवित्र रहता है, मन स्वच्छ और बलवान् हो जाता है और आत्मा उच्च हो जाती है। स्वस्थ व्यक्ति को दुःख नहीं सताते। वह अपना जीवन घसीटता नहीं प्रत्युत इस का नायक बनता है। वह जीवन के आधीन नहीं प्रत्युत जीवन का स्वामी है। वह मनुष्य है अर्थात् यह नहीं कि वह केवल हाड़, मांस इत्यादि का बना एक पुतला है प्रत्युत उस के रोम २ में मनुष्यत्व है। वह काम करने में कायरों और आलस्यों की नांई दुःखी नहीं होता प्रत्युत काम में आनन्द प्राप्त करता है। बाधाओं को पहाड़ नहीं प्रत्युत जीवन को उत्तेजित करने का साधन समझता है जिस से उस ने अपने जीवन संग्राम में विजय प्राप्त करनी है।

स्वस्थ मनुष्य को चिन्ता, शोक, क्रोध, दुःख, आलस्य, क्षीणता इत्यादि नहीं सताते। यदि वह काम करते २ थकता है तो रोगी होने के लिये नहीं प्रत्युत सुखमय गहरी निद्रा का आनन्द उठाने के लिये।

ऐसे मनुष्य को देख कर किस का हृदय प्रसन्न नहीं होता? उसके बलयुक्त हाथोंसे हाथ मिला कर उसके स्वच्छ, चमकीले जीवन युक्त नेत्रों को देख कर, उस के मधुर स्वर को सुनकर किस व्यक्ति के अन्दर प्रसन्नता का संचार नहीं होता? और उसके समीप बैठकर या उस के स्पर्श से किस के अन्दर एक विचित्र आनन्दायक कंपन नहीं होती? उस की संगत से कौन अभागा साहस तथा उत्तेजना लेकर नहीं उठता कौन सा स्थान है जहां लोग उसे नहीं अपनाते या उसे नेता नहीं बनाते? उस के साहस, बल, तथा वीरता को देख कर कौन चकित नहीं रह जाता? जहां और लोग चिंता में निमग्न होकर यह ही विचार कर रहे होते हैं कि अमुक कार्य कैसे होगा वहां कौन सब को पछाड़ कर अनथक परिश्रम से दत्तचित्त होकर उस काम को कर लेता है?

आप कहेंगे कि क्या निर्बल व्यक्तियों ने इस जगत में कभी २ अद्भुत काम नहीं कर दिखाये? सत्य है, उन का मन बड़ा बलवान् था परन्तु क्या आप यह कल्पना नहीं कर सकते कि यदि उन का शरीर उत्तम होता और वह स्वस्थ होते तो वह और भी अधिक काम कर दिखाते। हम क्यों न इस प्रकार कहें कि उन निबल लोगों को जीवन में कुछ सफलता निर्बल शरीर के कारण कम हुई अन्यथा वह बहुत काम कर सकते? यदि महात्मा गांधी वर्तमान् गुणों से युक्त होने के अतिरिक्त बलवान भी होते तो क्या कुछ अधिक न कर दिखाते? और यदि अली बंदर्स बलवान न होते तो पता नहीं फिर क्या कर सकते थे?

स्वास्थ्य वास्तव में क्या है? यह कहना कठिन है। आप के सामने दो सेब हैं एक को आप चुन कर मोल ले लेते हैं दूसरे को

दुकान पर ही छोड़ आते हैं। आप ने एक को क्यों चुना इस का उत्तर आप यह ही देंगे कि वह अच्छा लगता है, संभवतः उस में गुणोंका वर्णन आप न कर सकें। वास्तव में आप ने अज्ञान में (unconsciously) ही यह जान लिया कि एक सेब स्वस्थ है और दूसरा अस्वस्थ। जानने वाला बता देगा कि सेब स्वस्थ इस लिये है कि यह भारी, साफ़ (Smooth) सुन्दर रंग युक्त तथा रस से भरा है। इसी प्रकार किसी मनुष्य को देख कर आप प्रसन्न हो जाते हैं और आप के ही नेत्रों में चमक सी आ जाती है परन्तु किसी दूसरेकी ओर एकबार देख कर दुबारा देखने का नाम तक नहीं लेते। क्यों इस लिये कि आप का हृदय अनुभव कर रहा है कि एक स्वस्थ है और दूसरा अस्वस्थ। एक पुरुष में पौरुष या स्त्री में स्त्रीत्व है और दूसरे इस से वंचित हैं। एक की आंखों में निर्मलता, कोमलता और चमक है दूसरे की आँखें क्रूर और अन्दर धसी हुई हैं। एक के गालों में लाली तथा उभार है दूसरे की गालें ज़रद तथा पिचकी हुई हैं, एक की त्वचा कोमल, बलयुक्त (Elastic) तथा स्वच्छ है दूसरे की खुरदरी, शुष्क तथा गदली है। एक के दांत सुन्दर चमकीले, क्रम में हैं दूसरी के भद्दे, काले और अनियमित (irregular) हैं। एक का शरीर भरा हुआ, सुडौल (symmetrical) है, दूसरेका अस्थियों का पिंजर और भद्दा है। एक के समीप जाने पर अपने अन्दर जीवन का संचार अनुभव होता है और दूसरेसे उस के दुर्गन्धयुक्त श्वास के अतिरिक्त कुछ प्राप्त नहीं होता बल्कि उससे घृणा उत्पन्न होती है। स्वस्थ मनुष्य के देखते ही प्रेम होता है। उससे बालक भयभीत होकर छिप नहीं जाते और न ही जीवन। जन्तु दुम दबाकर भागते हैं। प्रत्युत उसकी आंखों में ऐसा प्रेममय आकर्षण है कि बिछुड़ने में दुख होता है।

स्वास्थ्य मृत्यु के भय को भी दूरकर देता है। जिसने एक बार राजपूतों का इतिहास पढ़ा है उसे इस सिद्धांत के अनेक उदाहरण मिल जावेंगे।

यह कभी भी न समझें कि यदि आप में यह गुण नहीं हैं तो आप इस से सर्वदा के लिए वंचित ही रहेंगे। इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि आपको अपने माता पिता से भी उत्तम शरीर मिला होता तो आपका बहुत सौभाग्य था परन्तु यदि नहीं तो निराशा की कोई बात नहीं। स्वास्थ्य सब के लिये है क्योंकि स्वास्थ्य के साधन अर्थात उत्तम वायु, भोजन, व्यायाम, इत्यादि का सब उपयोग उठा सकते हैं, केवल साहस चाहिये। मत समझें कि निर्बल बलवान नहीं हो सकते। यदि ऐसा कहेंगे तो इसका अर्थ यह है कि आप प्रयत्न, साहस, तथा कर्म के गुणों का अनादर करते हैं। विश्वास जानिये कि अनेक निर्बल जगत् के प्रसिद्ध पहलवान बन गये हैं। स्थान के अभाव से उदाहरण देना कठिन है परन्तु एक ज्वलंत उदाहरण सैंडो (Sandow) था जो बाल्य अवस्था में यही नहीं कि स्वस्थ नहीं था प्रत्युत रोगी रहा करता था। नैपोलियन कहा करता था कि शब्द 'असंभव' को शब्द-कोष से ही निकाल डालो। वास्तव में स्वास्थ्य लाभ असंभव क्या जरा भी कठिन नहीं। केवल थोड़े से साहस की आवश्यकता है।

आगे चलकर विस्तार से स्वास्थ्य के साधनों पर विचार होगा। यदि आप पहिले ही स्वस्थ हैं तो इस स्वास्थ को स्थिर रखने

के यह साधन हैं। यदि आप अस्वस्थ हैं तो निराश न हों क्योंकि स्वास्थ्य लाभ के भी यही साधन हैं। आज से चिंता, शोक, भय, अप्रसन्नता छोड़ दें क्योंकि यह दुष्ट स्वास्थ्य के चिन्ह हैं। क्या आप अपने आप को शिथिल अनुभव करते हैं? क्या आप चलते चलते थक जाते हैं? क्या काम करने में आप का श्वास फूल जाता है? क्या आप गर्दन झुका कर चलते हैं? क्या आपके स्वभाव में चिड़चिड़ापन और क्रोध है? क्या आप की आंखों के आगे अन्धेरा आ जाता है और क्या आप को लोग घृणित दृष्टि से देखते हैं? तो अपने स्वास्थ के लिये तथा अपनी उत्तम सन्तान की आशा तथा इच्छा रखते हुए शारीरिक स्वस्थवृत के निम्न साधनों को नियम से पढ़ें। और उनका पालन करें। स्वास्थ्य फिर आपका ही है:—

१. उत्तम वायु तथा उसका सेवन (Air)
२. उत्तम भोजन तथा उसका सेवन (Food)
३. मल त्याग (Excretary functions)
४. उत्तम स्थिति (Posture)
५. स्नान तथा शारीरिक स्वच्छता।
६. व्यायाम, कार्य तथा विश्राम।

(क्रमशः)

दिव्य वाणी

—०—

लेखक-कविवर 'निर्मल'-प्रयाग

दोहा

बल विवेक साहस सदा, धार महा पुरुषत्व।
वैदिक वीरो! धीर धर, दिखलाओ वीरत्व॥

(कवित्त-घनाक्षरी)

धर्म्म ग्रन्थ वेद की प्रणाली का प्रचार करो,
सत्य अर्थ जानो बात छोड़ो छल-छन्द की।
मान-दान देके धर्म्म धारियों प्रतारियों को,
दिव्य छटा देखो ज्ञान--गौरव के चन्द की।
'निर्मल' विवेक--कंज मानस-सरोवर में,
फूले सदा छोड़ो बकवाद मतिमन्द की।
हिन्दुओ! इसी में देश जाति की भलाई भली,
मानो बात धर्म्म वीर देव दयानन्द की॥

प्रश्नोत्तर

ले०—श्री० बुद्धिसागर वर्मा बी० ए० विशारद

(गतांक से आगे)

१८—विद्या विहीन मनुष्य कैसा है ? जैसा पशु ।
१९—किन की सँगति से बचना चाहिये ? मूर्ख, दुराचारी, स्वार्थी, और नीच प्रकृति ।
२०—बिना सोचे कानसा काम करना चाहिये ? ईश्वर का स्मरण ।
२१—घोर शत्रु कान है ? कामदेव और क्रोधाग्नि का वेग ।
२२—अपूर्ण कानसी वस्तु रहती है ? सांसारिक सुखसमृद्धि की इच्छा ।
२३—दुःख का मूल क्या है ? सांसारिक काया मोह और एषणाओंका जाल ।
२४—मनुष्य श्रेष्ठ कैसे हो सकता है ? सद्व्यौहार से ।
२५—सच्ची माता कौन है ? सरस्वती (विद्या) जो मरणपर्यन्त पालन पोषण करती है ।
२६—उत्तम दान क्या है ? विद्या दान ।
२७—सुपुत्र कौन है ? जो विद्वान हो और कुल की उन्नति करे ।
२८—प्रत्येक आपत्ति को दूर करने वाला कौन है ? धैर्य, बुद्धि, विद्या, विवेक ।
२९—बिजली की तरह क्या है ? युवावस्था, धन, सम्पत्ति, शासन, और खल की प्रीति ।
३०—कौनसा कर्म सर्व श्रेष्ठ है ? जिससे मनुष्य मात्र का कल्याण हो ।
३१—बिना आग के मनुष्य को कौन जलाता है ? नीच की सेवा, कुपथ्य भोजन, क्रोधमुखी भार्या, मूर्ख पुत्र, दरिद्रता ।
३२—घोरतम पाप क्या है ? किसी सज्जन का मित्र बनकर उससे शत्रुता का व्यवहार करना ।
३३—लज्जा कहाँ २ दुखदायिनी होती है ? धनधान्य के प्रयोग में, विद्या सँग्रहण में आहार में और व्यवहार में ।
३४—भले आदमी की निन्दा कौन करता है ? जो उसके गुणों को नहीं पहिचानता ।
३५—बहादुर कौन है ? जो मृत्यु से भय नहीं खाता ।
३६—युवावस्था का शृँगार क्या है ? सादगी ।
३७—हल्के आदमी कौन है ? जिनके पेट में बात नहीं फूकती ।
३८—लक्ष्मी किसे त्याग देती है ? जो उसका सदुपयोग नहीं जानता ।
३९—प्रतिष्ठा चाहने वाले को क्या करना चाहिये ? उत्तम साथ नहीं छोड़ना चाहिये ।
४०—मनुष्य कौन है । जिसमें सहानुभूति है ।

४१—सज्जनों की विभूति किसलिये होतीहै? परोपकार के लिये।
४२—घर किसे त्याग देना चाहिये ? जिसके घर में माता न हो, या मधुरभाषिणी प्रीतिमयी भार्या न हो।
४३—कौन सा स्थान छोड़ देने योग्य है ? जहाँ अपना अनादर होता हो।
४४—मृत्यु से कौन नहीं डरता ? साधु, सती स्त्री, शूर।
४५—सती स्त्री क्या चाहती है ? अपने पति का सच्चा प्रेम।
४६—किन वस्तुओं को दूसरे पुरुष हाथ नहीं लगा सकते। पतिव्रता के कुचयुग्म, शेर की नखावलि, वीर पुरुष के शस्त्र, और कृपण का धन।

उर्मिला

ले०—श्रीयुत द्वारकाप्रसाद शुक्ल विशारद

"रात दिन तुम रोजगार ही के काम में लगे रहते हो। घर गृहस्थी की फिकर नहीं। लड़की स्यानी होने आयी। तुम्हारे कान में जूं तक नहीं रेंगती।" सेठ गुलाबचंद की स्त्री ने बड़े नोक झोंक के साथ कहा।

* * *

सेठगुलाबचंद सिर खुजलाते हुए बोले "स्यानी हो गई तो क्या करूं। इस साल व्यापार में भारी घाटा पड़ा है।

स्त्री—घाटा आया तो लड़की की शादी न करोगे। अरे? ज़रा लोक हंसाई से डरो। जात गैर जात सभी उंगली उठाने लगे हैं।

गुलाब—अरे तू मेरे सरीखे सेठ की स्त्री होकर भी गावदी है। सड़ी सी बात नहीं समझती। लड़की की शादी करके ही घाटा पूरा करूंगा।

स्त्री—कुछ भी करो। मेरी उर्मिला के लिये ऐसा घर वर खोजो जिस से उसे सब तरह का सुख मिले। माता को इसी बात से सुख मिलता है। मेरे आगे पीछे और कौन है। यही लड़को और मूलचन्द। लड़का मर्द बच्चा है अपने सुख का खुद इंतजाम कर सकता है। इसके सिवाय तुम उसके लिये काफीसे ज्यादा कमा रहे हो। बस चिंता है तो उर्मिला की शादी अच्छे घर में हो जाने से मैं सुख से मर सकूंगी।

गुलाब—यह सब मैं पहले से सोचे बैठा हूं। तुम कुछ भी फिकर न करो। सुना है सेठ बिहारीलाल की स्त्री का पीछा हो गया है। उनके लड़के बच्चे कोई भी नहीं हैं, बस उनके ही यहां शादी करूंगा। दोनों बातें होंगी। टोटा भी पूरा होगा और लड़की भी धनी घर ब्याही जायगी।

स्त्री—अच्छा उनकी उमर क्या है?

गुलाब—यही सिर्फ पचास साल की। कोई ज्यादा थोड़े है।

स्त्री—लेकिन उर्मिला तो अभी ग्यारह साल की है उसके बराबर की उमर का कोई वर तलाशो न?

गुलाब ने जरा तिनक कर कहा "तो दोनों बातें कहां हो सकती हैं। या तो धनी वर ही खोजो या कम उमर वाला ही।"

इतना सुन सेठानी बेचारी चुप हो रही। वह अपने पति के स्वभाव से परिचित थी। एक बार वे जो ठान लेते उसे अवश्य पूरा करते। रात निद्रा देवी की गोद में कटी।

सुबह उठ नित्य क्रिया से निपट सेठ जी ने पण्डित को बुलावा भेजा। पंडित जी ख़बर पा शीघ्र खड़ाऊं चटकाते हुए आ पहुंचे। सेठ जी गद्दी से उठे और बोले "पा लागूं पण्डित जी। आवो २ बहुत दिन में दर्शन दिये।"

पण्डित रमानाथ आशीर्वाद देते हुए बैठे और अपने बटुवे से सुपारी निकाल कतर २ कर मुख में रख चबाने लगे। फिर बोले "कहिये सेठ जी आज क्यों याद किया? क्या कथा वगैरह सुनने की तो नहीं ठाना है?"

गुलाबचन्द-पण्डित जी कन्या स्यानी होगई। आपने अभी तक कोई वर वगैरह तलाश नहीं किया!

पं—वाह आपने आज तक इस बात की चर्चा ही कहां चलाई। नहीं तो बेटी की शादी कभी की होगई होती।

अच्छा, कोई हर्ज नहीं। अब सही। सेठ बिहारीलाल की स्त्री हाल ही में गुजरी है। वे धनी भी हैं। उनका मान भी लोगों में खूब है। बस ठीक करलो न।

गुलाब—पंडितजी आपने कही तो ठीक; पर वे जरा स्याने हैं न।

पं—स्याने हैं तो क्या? पांच छह हजार रुपये भी तो मिलेंगे।

गुलाब—कुल पांच छह हजार! क्षमा कीजिये, पण्डित जी मेरी लड़की हजारों में देखने सुनने में एक है। अगर दस हजार भी मिले तो कुछ नहीं के बराबर हैं।

पं—इस तरह लड़की की शादी नहीं की जाती। जरासी बात पर तिनगने लगे। मैंने तो अभी उनका इरादा बताया है। अभी तो मैंने कोई कोशिश ही नहीं की। लेकिन बताओ तो सही मुझे क्या दोगे?

गुलाब--यदि आप पन्द्रह हजार में तय करायें तो एक हजार। और इस से कम में तो पांच सौ।

पं०—यह तो आपने बहुत थोड़ी रकम बताई। भाई इतने से तो मुझ से काम न हो सकेगा। कौन इतनी थोड़ी रकम के लिये ज़िल्लत उठावे। अच्छा बैठिये, मैं चला।

सेठ जी ने रामनाथ का हाथ पकड़ कर कर बैठा लिया और कहा "भाई रामनाथ! नाराज क्यों होते हो लड़की तो तुम्हारी ही है।" अच्छा कितने में भी ठीक हो मैं तुम्हें एक हजार रुपये दूंगा। मेरा भी ख्याल रखना जितनी ज्यादा रकम निकल सके निकालना।

पण्डित जी जरा सोच समझकर बोले-"भई तुम्हारे लिये इतने मेंही कोशिश करूंगा। तुम मेरे पुराने जजमान हो। तुम्हें यह कहने की कोई जरूरत नहीं कि मेरा भी ख्याल रखना। तुम कोई दूसरे थोड़े हो। अच्छा मैं आज ही जाऊंगा।"

(२)

लगभग आठ बजे का समय था। राय बिहारीलाल अपनी दूकान की गद्दी पर बैठे हुये मुनीमसे आये हुए पत्र पत्रादिकों को पढ़वा

रहे थे। इतने में ही पण्डित रमानाथ दूकान पर जा पहुंचे। सेठ जी ने उनका उचित आदर सत्कार किया। फिर उनके टिकने आदि के प्रबन्ध का भार नौकर को सौंप पण्डित जी को भेजा। शीघ्र काम समाप्त कर खुद भी पण्डित जी के पास जा पहुँचे और कहने लगे "कहिये पंडित जी कैसे आना हुआ? अबकी बार तो बहुत दिनों में दर्शन दिया। मजे में तो रहे?"

पं०--सेठ जी यहां से गये बहुत दिन हो गये थे। इसलिये आप लोगों से भेंट मुलाकात करने आगया।

बिहारी--पंडित जी आप से अगले वक्त मैंने जो कुछ चर्चा की थी क्या उसे एकदम भूल गये। या कुछ ठीक ठाक किया है?

पं०-वाह सेठ जी वाह। ऐसा भी कहीं हो सकता है। तुमतो मेरे अन्नदाताहो तुम्हारा काम भूल जाऊंगा? लेकिन एक बात है।

सेठ जी उकता कर बोले "जल्दी कह डालिये लम्बी भूमिका न बांधिये।

पं०—यही तो कठिन है, लड़की को मां राजी नहीं है तो बाकी सब ठीक है। हां जरा ज्यादह रुपये आपको खर्च करने पड़ेंगे लेकिन फिर ऐसा गुलाब का फूल आपके हाथ लगेगा कि बस जाने दीजिए कुछ पूंछिये मत। लड़की की मां का कहना है कि वर ज़रा बूढ़ा है।

सेठ जी-क्या कहा वर बूढ़ा है! अरे मैं अभी साठ ही बरस का हूँ। साठा सो पाठा बूढ़ा मैं कैसे हो गया? क्या बाल पकनेही से या दो एक दांत टूटने से कोई बूढ़ा हो जाता है? जिस वक्त मैं बालों में खिजाब लगाऊंगा और दाँत बनानेवाले डाक्टरसे दांत लगाऊंगा उस वक्त मुझे लोग सोलह वर्ष का ही समझेंगे।

पं०—रायसाहब आप तो सुनते ही नहीं अपनी ही धौंकते हो। हमारे लोगोंके यहां औरतों की बातें कौन सुनता है और कौन कदर करता है। सेठ जी तो राजी हैं पर पन्द्रह हजार मांगते हैं। इस से कम में राजी नहीं होने के।

सेठ जी-जाने दो पण्डितजी मेरे भगवान का दिया पैसा है तब फिकर ही क्या है? एक नहीं हज़ार शादी होंगी।

पं०—यह सच है कि हजार शादी होंगी पर लड़की ऐसी न मिल सकेगी। सब बातों में चतुर है सुन्दरता में उसकी शानी आज तक नहीं देखी।

सेठ जी—क्या सचमुच ही बहुत सुन्दर है? यदि यह बात है तो भई दो एक हजार और दे दूंगा' बस न काम हो जायगा? आप को तो मैं दो हजार देने को कह ही चुका हूँ। अब आपका काम है कि दस हजार में तय करा दो।

पं०—नहीं सेठ जी दस हजार में सेठ गुलाबचन्द काबूमें आने वाला नहीं है। (कुछ देर चुप रह कर) अच्छा एक बात कीजिए। बारह हजार खर्च कर हाथ से सोने की चिड़िया को न जाने दीजिये।

सेठ जी ने कहा-पण्डित जी आप कल तक ठहरिये। कुछ सोच समझ लूँ तब आप को जवाब दूंगा।

पण्डित रामनाथ कब नाहीं करने वाले थे। सेठ जी के यहां रहने से उत्तम उत्तम भोजन

आदि मिलते थे। यह उन्हें अपने घर में कब नसीब होता था। पण्डित जी मन ही मन बड़े खुश हो रहे थे। सोचते अब की तो पौ बारह हैं। एक हजार सेठ गुलाबचन्द से मिलेंगे और दो हजार यह बूढ़ा खूसट, ब्याह का इच्छुक देगा। बस काफी है। इसमें से आधी रकम से पण्डितानी के लिये सोने के गहने गढ़वा दूंगा। बस क्या पूछना है। अब पण्डितानी मुझे ताने मेहने न मार सकेगी। उल्टे अब मैं ही उस पर रोब गाठूंगा। पण्डितजी यों स्वार्थ की खिचड़ी पका रहे थे। उन्हें दीन दुनियां की फिकर ही न थी। न उन्हें यह सोचने का वक्त ही था कि वह लोभ वश एक अबोध बाला का जीवन बर्बाद करने जा रहा है।

(३)

बिलासपुर जिले में चांपा नामक एक जमींदारी है। यह चम्पकपुरी हस्दौ नदी के तीर पर बसी हुई है। बड़ी रमणीक तथा पुरानी बस्ती है। यहां व्यापारादि खूब होता है। यहां बहुत से अग्रवाल मारवाड़ी इसी कारण रहते हैं। उन सब में सेठ गुलाब चन्द का कारोबार अच्छा है। चांपा खास में दो दूकाने हैं। एक किराने की दूसरी कपड़े की बिक्री खूब होती है और यहीं से उन्हें विशेष आमदनी है। बन्टनीडीह, जांजगीर, खरसिया आदिमें भी इनकी दूकानें हैं। हमारे पाठकों को अगले परिच्छेदों के पढ़ने से इनके स्वभाव का बहुत कुछ परिचय मिल चुका है। ये बड़े लोभी, हठी तथा लीक वादी हैं। पैसे के लालच वश ऊंच नीच कार्य करने से तनिक भी नहीं हिचकते।

इनकी ही कन्या का नाम उर्मिला है। यह लड़की साधारणतया बड़े सरल एवं शान्त स्वभाव की है। मारवाड़ी घर में खास कर गुलाब सरीखे कन्जूसों के यहां कन्याओं की शिक्षा दीक्षा की बात सोचना ही निरर्थक है। इसी कन्या की शादी करके सेठ गुलाबचन्द रुपया कमाना चाहते हैं। इसके लिये वे रमानाथ को सेठ बिहारीलाल के पास भेज ही चुके हैं।

बिहारीलाल बिलासपुर जिले के एक सभ्रान्त मारवाड़ी हैं। जाति में इनका मान सम्मान भी खूब है। हाकिम हुकामों में इनकी पहुंच है। इसीलिए इन्हें सरकार ने राय साहब की पदवी दी है। किन्तु जब स्वराज्य पार्टी का जोर बढ़ने लगा और वे कौंसिलों की ओर अग्रसर हुए। तब ये भी कौंसिल की मेम्बरी प्राप्त करने की लालसा को दूर न कर सके। लेकिन बहुत आगा पीछा सोच ये ऊपरी ढंग से स्वराज पार्टी वालों से मिले रहे पर भीतरी हृदय से सरकार के ही खैर ख्वाह बने रहे और इसी कारण जनता ने इन्हें मैम्बर न चुना।

राय साहब ने दो ब्याह किये। ईश्वर ने धन धान्य से पूर्ण किया पर इन्हें बालक के मुख देखने का सौभाग्य न प्राप्त हुआ। एक २ कर दोनों औरतें इस असार संसार से कूच कर गईं। अब वे अपने तीसरे विवाह के करने की फिक्र में हैं। क्योंकिबिना सन्तान हुए वे किसी प्रकार पितृऋण से उऋण न हो सकते थे। लोगों के समझाने के लिये सन्तानोत्पति उत्तराधिकारी प्राप्त करने का मिस उनके पास अमोघ अस्त्र था।

जाति सुधारक बुरी तरह से इनके पीछे पड़ते थे। पर वे अपनी उपरोक्त दलीलों को पेश करते और उनके खंडनें को बिलकुल ही मान्य न करते थे। जहां तहां शादी के

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पैगाम भेजा करते थे। जाति के कागजों प्रस्तावों की ये कभी परवाह न करते थे। उनका कहना था कि ये सुधारक हुल्लड़ बाज हैं करना धरना कुछ नहीं कोरी डींगे हांका करते हैं। इनकी नजर सदा दूसरों के धन दौलत पर रहती है। इसीलिए ये मेरे पीछे पड़े रहते हैं। और सोचते हैं कि मैं शादी न करूंगा और न बाल बच्चा होगा बस जाति के नाम से ये मेरा मुफ़ी-माल दिलेबेरहम बनकर उड़ावेंगे। कुछ वर्षों तक इन्हें चन्दा इकट्ठे करने की जरूरत ही न पड़ेगी और न दर २ इसके लिये धूल छाननी पड़ेगी।

बहुत आगा पीछा सोच समझ कर राय साहब ने दूसरे दिन सुबह ही पण्डित जी से मिलकर उर्मिला की शादी की बात को कबूल कर लिया। पण्डित जी भी उचित दान दक्षिणा प्राप्त कर खुशी २ घर वापिस आये। खा पीकर खुश खबरी गुलाब चन्द सेठ को सुनायी। फिर क्या था शुभ लग्न विचारा गया और मास ही दो मास के अन्दर उर्मिला गुड़िया बनाकर ६० वर्ष के बुड्ढे गुड्डे के साथ ब्याह दी गई।

(४)

ऋतुराज वसन्त के दिन किसे सुहावने नहीं मालूम देते? संसार की समस्त वस्तुएं इसके रंग में रङ्ग जाती हैं। क्या स्त्री क्या पुरुष सब के हृदयों में नाना प्रकार की उमंगे उठती हैं। नाना प्रकार की भावनायें हृदय सागर में चक्कर मारती हैं। रात्रि का समय है, चन्द्र देव अपनी चांदनी से सब के हृदय को आनन्दित कर रहे हैं। यह देखिये यह कौन एक जगमगाते हुए कमरे की खिड़की से अपनी फुलवारी की ओर देख रही है? वायु अपने धीमें झकझोके से उस के ललाट पर लटों को बिखरा रहा है। वसन्ती वस्त्र धारण किये हुए है। ऐसा प्रतीत होता है कि खिड़कीसे दूसरा चन्द्रमा ऊगने वाला है जो आकाशस्थित चन्द्र की ज्योत्स्ना को मन्द करने का विचार कर रहा है। लेकिन देखिए वह कुछ कहती है।

"चन्द्रदेव मैंने सुना है कि तुम शीतलता के देनेवाले हो। क्या यह झूंठ है? न भी हो पर मेरे लिये तू अग्नि से भी अधिक गरम हो गया। क्यों नाहक जले को जलाते हो। मैं तो यों ही जल रही हूं। बस बहुत हो गया। अब दयाकर किरणों को शीतल करो। नहीं केवल तुम्हीं मेरा उपहास नहीं कर रहे हो। यह वसन्त ऋतु भी अग्नि में आहुति देने आया है। ओह! ऋतुराज तुम क्यों आये? यदि आना तुम्हारा जरूरी था तो अपने सखा को साथ नही लाना था। यदि ईश्वर! बिना इन वस्तुओं के तेरी सृष्टि का गुजर ही नहीं था तो कम से कम मुझे उसी बाल्यावस्था में बनाये रखना था, जिस से यह प्रचंड अग्नि आज मेरे हृदय में न लगती। नहीं इनका किसी का दोष नहीं। प्रकृति अपने समय में अपना काम करेगी। ओ निर्भय निर्दयी पिता ज़रा मेरी दुर्दशा देखो। साठ सालके बूढ़े के साथ रुपये के लोभमें फंसकर मेरा तुमने सर्वनाश किया। तुमने जान बूझ कर मेरी नैया अथाह सागर में डाल दी क्योंकर धीरज धरूं? क्या मुझे यों ही नीरस जीवन आजन्म व्यतीत करना पड़ेगा? संसार सुख का क्या मुझे कभी अनुभव न मिलेगा। न आज तक मैंने इसे जाना है। न आगे जानने का ही अवसर है। मेरा पति कौन है? एक पूर आई हुई नदी के किनारे का वृक्ष, मरघट घाट में शीघ्र डेरा जमानेवाला व्यक्ति! क्योंकर मैं हृदय की ज्वाला बुझाऊँ?

क्या समाज के, पिता के, जाति भाइयों के मुख पर कालिमा पोत कर ? नहीं कभी नहीं। ऐसा तो मुझ से न हो सकेगा। तो क्या आत्म हत्या कर ? नहीं यह भी निंदनीय ? ओह हृदय फट जाता है धीरज नहीं। हे ईश ! तूही रक्षा कर !!

यह कहते २ वह धड़ाम से अपने पलंग पर जा गिरी और अपनी अविरल अश्रुधारा से हृदयाग्नि को बुझाने का प्रयत्न करने लगी। इसी तरह रो धोकर उर्मिला अपने दिवस व्यतीत करने लगी? धन धान्य से गृह परिपूर्ण था। उसे भोजन, वस्त्र आभूषणादि की कमी न थी। जब तक उस में समझ न आई थी तब तक वह इन्हीं को सच्चा सुख समझती। लेकिन उपरोक्त हृदयोद्गार को पढ़कर पाठक अब जान ही गये होंगे कि उसे यह जीवन अब असह्य प्रतीत होने लगा है। पति को देखते ही उसके हृदय पर सांप लोट जाता। राय साहब बहुत कुछ नवरसिकों सरीखी बातें करते, ढंग फैलाते, पर इससे क्या ? कृत्रिम कृत्रिमनी है। चूसे हुए गन्ने का स्वाद ही क्या मिल सकता है।

साल ही भर में उर्मिला के माता पिता इस संसार से कूच कर गये। सिर पर वज्र-पात हुआ। लेकिन उसे इतना ही देखना बदा न था। दूसरा वर्ष समाप्त होने न पाया कि उसके बूढ़े रसिक पति ने भी इस रसमय संसार से अपना नाता तोड़ दिया। उर्मिला निरावलम्ब हो गई।

(५)

राय साहब बिहारीलाल के दूर के रिश्ते का एक भतीजा है। जिसका नाम बिसेसर लाल है। पढ़ा लिखा तो वह यों ही है। पर अपने पिता के जीवन काल में ही उसने अपना बाना अप टू डेट जेंटिलमैनों सा बना रक्खा था। केवल वेश भूषा ही ऐसी होती तो कोई कहना न था। उसके साथी संघाती भी एक से एक बढ़कर थे। कोई शराबी, तो कोई ऐय्यासी, कोई जुआरी इत्यादि। लेकिन यह अपने मां बाप का इकलौता बेटा था। इस कारण दोनों का उस पर असीम प्रेम था। बाप के मरने पर—उसे लाख डेढ़ लाख की जायदाद मिली पर साल ही भर के अन्दर उसने सब फूंक ताप बराबर कर दिया था।

इसके बाद वह अपने काका के घर अक्सर आया करता था। कभी कभी काका साहब इसकी अवस्था देख दुखित हो जाते और उसे कुछ न कुछ देते थे। वह काका की संपत्ति पर भी दांत गड़ाये हुए था। ज्योंही बिहारीलाल के मरने की खबर उसे मिली वह तुरन्त ही काकी के दुःख में सहानुभूति प्रकट करने को आ पहुँचा। काकी भी एक अवलम्ब पा अत्यन्त खुश हुई। सब काम काज बिसेसर ने बड़ी दक्षता से सम्हाला। लोग देखकर समझने लगे कि बिसेसर अब सम्हल गया है। एक बार का धक्का खाया हुआ है तभी देखो किस मुस्तैदी से काम कर रहा है। यही विश्वास उस अबोध बाला को भी हुआ। वह धीरे धीरे पूर्ण जायदाद का स्वामी बन बैठा।

किंतु कविवर तुलसीदास जी ने ठीक ही कहा है:—

जेहि कर जौन सुभाव, मिटै नहिं तन से।
नीम न मीठी होय, सिंचै गुड़ घी से॥

जब बिसेसरलाल के हाथ में सब कारबार आ गया तब सब लंगोटिया दोस्त

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आप ही आप फिर इकट्ठे होने लगे और वही रफ्तार बेढंगी जो पहले थी फिर भी जारी हुई। मोटर बग्घी आदि की भरमार हो गई। पुराना घर केवल दूकान के काम के लिये ही रखा गया। रहने के लिये अरया नदी के किनारे एक बढ़िया महल तैय्यार हुआ। उसके चारों ओर फुलवाड़ी लगाई गई। नई रोशनी के मुताबिक वह सजाया गया। नित्य प्रति वहां मजलिस बैठती। शराब के प्याले उड़ते। नाच रङ्ग होता। जुआ का भी सामा बांधता। इन बातों में मशगूल रहने के कारण बिसेसर सेठ को काम काज देखने की फुरसत न मिलती। नौकरों चाकरों ने हड़प शीला बनने का व्रत ठाना। इस तरह के अपव्यय से कारूं का खजाना भी खाली हो जाता है फिर बेचारे बिहारीलाल की कमाई किस विरते में थी। नालिश दायरें होने लगीं और कुरकी की भी नौबत आ पहुंची।

धीरे २ मुहल्ले भर में नाना तरह की अफवाहें सुनाई पड़ने लगी। उर्मिला अपने कमरे से अब बहुत कम बाहर निकलती। जब देखो तब अस्वस्थता का बहाना किये पड़ी रहती। बिसेसर का तो कुछ कहना ही नहीं। अब उसे नाना प्रकार की चिंताओं के साथ एक और हीं चिंता सवार थी। नाच, रङ्ग, मजलिस का अब नामोनिशान न दिखाई पड़ता था। इसके दो कारण हैं। पहला था पैसे की तंगी, दूसरा था उर्मिला का दिन व दिन रोग बढ़ना।

(६)

उर्मिला—क्यों कुछ मेरी भी फिक्र है? देखते नहीं दिन रात कमरे में कैद रहने के कारण मेरी क्या हालत हो गई है?

युवक—(सिर पर हाथ धरे हुए) हां यह तो मैं जानता हूं। एक पर एक विपत्ति आ पड़ती है। छिद्रेषु अनर्था बहुली भवन्ति।

उ०—ऐसे कहने से तो कुछ काम न सरेगा। कुछ उपाय सोचो। मान मर्य्यादा बच जाय। नहीं तो बस अब मैं चार दिन के बाद मुंह दिखाने योग्य भी न रहूंगी।

युवक—चिंता ग्रस्त होकर--मैंने एक बात सोची है। यदि तुम्हें ठीक जंचे तो वैसा ही करूंगा।

उ०—मैं ठीक समझूं! अच्छा बताओ तो सही वह तरकीब क्या है?

युवक—कल तुम अपना इलाज कराने के बहाने नौकर को लेकर चलो, मैं भी आकर पीछे से मिलूंगा। साथ जाने से और भी तो हल्ला मचेगा। बात के प्रकट हो जाने का भय है।

उ०—क्यों कहाँ जाना होगा? वहां कितने दिनों रहना पड़ेगा। अब तो लाज किसी प्रकार नहीं रह सकती। जो कुछ भी होना हो यहीं हो।

यु०—यह क्या कहती हो? क्या मैं तुम्हारा कोई दूसरा थोड़े ही हूँ। मैं तुम्हारा अपङ्गल थोड़े ही विचारता हूँ। तुम्हें कलकत्ते ले चलूंगा। वहाँ बहुत से डाक्टर, वैद्य, हकीम हैं। ऐसी औषधि दिलवाऊंगा कि बिना तकलीफ के सब काम रफा दफा हो जायगा।

उ०—जो कुछ भी ठीक समझो वही करो। मैंने तुम्हें आत्म समर्पण किया है। चाहे डुबावो चाहे उबारो। अच्छा मैं जाने के लिये तैयार हूँ। कल ही चली जाऊंगी।

यह उत्तर उर्मिला ने बहुत कुछ आगा पीछा सोचने के बाद दिया। वह बेचारी क्या जानती थी कि अब उसके और भी बुरे दिन आने वाले थे। उसकी संपति से मौज उड़ाने वाला, उसका सतीत्व भङ्ग करने वाला, दुराचारी अब उसे गड्ढे से निकालकर खन्दक में गिराने वाला है। वह बेचारी खुशी २ अपने खाट पर आराम से सो रही।

दूसरे दिन विसेसर ने अपने विश्वस्त नौकर गोविन्दू के साथ चुपचाप अपनी चाची को रवाना कर दिया। यहां यह गौगा मचा दिया गया कि विसेसर की चाची अपने मामा के घर अपनी बीमारी का इलाज़ कराने गई हैं। फिर भी लोगों ने नाना प्रकार के तर्क वितर्क करना आरम्भ किये। पर इससे क्या? विसेसर इन बातों पर ध्यान ही नहीं देता था। दो तीन दिन के बाद गोविन्दू भी लौट आया।

उर्मिला कलकत्ते शहर में अकेली निराधार थी, पास में एक पैसा भी न था। वह भूख से व्याकुल इधर उधर मारी २ फिरती थी। जिसे कभी सूर्य की किरणों ने देखा भी न था, जिसे वायु को स्पर्श करने के लिये विशेष परिश्रम करना पड़ता था वही गली २ मारी २ फिरती थी। किन्तु फिर भी लज्जा से सिकुड़ते हुए वह सड़क पर इधर उधर घूम रही थी। इतने में एक बग्घी सड़क पर से निकली। उसमें एक अधेड़ स्त्री, बगुले के पर के समान वस्त्र धारण किये हुए बैठी इधर उधर झांक रही थी। उसकी दृष्टि उर्मिला पर पड़ी। उसने गाड़ी रुकवाई और पूछा "बेटी तुम्हारा आना कहां से हुआ है। ऐसे बड़े शहर में अकेली क्यों फिर रही हो? तुम्हारे चेहरे मोहरे से तो जान पड़ता है कि तुम किसी उच्च घराने की हो। फिर यह दशा तुम्हारी क्यों? मन मलीन, तन छीन, किये घूम रही हो।"

उ०—बहिन क्या बताऊं अपने दुःख दर्द की कहानी तुम्हें सुनाकर क्यों दुखित करूं। आज चार दिन हुए मेरे मुंह में एक भी अन्न का सीधा नहीं गया है। मैं आश्रय हीन हूँ। यहां किसका आसरा लूं?

स्त्री—यदि बुरा न मानो तो मैं एक बात कहूँ। चलो तुम मेरे साथ चलो। मैं तुम्हें हर प्रकार का आराम पहुंचाऊंगी। अपनी सहोदरा भगिनी से भी तुम्हें बढ़कर समझूंगी। कहो क्या इरादा है?

उर्मिला बड़े सोच विचार में पड़ी। वह सोचने लगी, इस तरह कै दिन जी सकूंगी। न हो इसके साथ ही जाकर रहूं। इसकी खुशामद करूंगी। कम से कम पेट में अन्न तो डाल सकूंगी। ओफ मैंने न मालूम कितना रुपया उड़ाया। मेरे आश्रयमें कितनी औरतें पड़ी रहती थीं। भगवान् तुमने आज मुझे उचित सज़ा दी। डूबती को तिनके का सहारा मिला। स्त्री ने बड़े आदर के साथ उसे अपने साथ कर लिया। बग्घी एक बड़े आलीशान मकान के सामने जा लगी। वहां पहुंचते ही उर्मिला को यह जानने में विलम्ब न हुआ कि वह किस मुहल्ले में लाई गई है।

[७]

दिन ब दिन उस मुहल्ले के रहने वाली रमणियों से उर्मिला का हेल मेल बढ़ता गया। उसकी शिक्षा दीक्षा भी होने लगी। पहले तो उर्मिला को इस कार्य से घृणा मालूम होती। पर धीरे २ यह घृणा का भाव

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

काफूर होकर उड़ गया। उसे एक जड़ी पिलायी गई। जिससे गर्भपात बिना किसी कष्ट के हुआ। धीरे २ वह अपने असली रूप रंग में पहुंच गई। गाने बजाने में खूब निपुण हुई। और उसका नाम कलकत्ते की नामी वेश्याओं में गिना जाने लगा है।

शहर के गरीब, अमीर, दफ्तर के छोटे बाबू, बड़े बाबू, मुन्शी तथा मन चले वकील, हाकिम हुकाम सभी उसके दर्शनों के लिये आते। जिन्हें किन्हीं कारणों से मनोमिलाप पूर्ण करने का अवसर न मिलता वे उसके घर की फेरी कर ही अपने नेत्रों को सफल बनाते। उस कोकिल कण्ठा के गान सुनते, प्रेमालाप करते और जो योग्य प्रतीत होते वे अपने हृदय की जलन शांत करने की इज़ाजत पाते भेंट चढ़ाते, धुत्कारे जाते और फिर अपना सा मुंह ले घर को रवाने होते। बस जब देखो तब यही बातें होतीं। रात को इस नर्कपुरी का द्वार खुला रहता। एक आता और जाता दिखाई पड़ता कलकत्ते की सब वेश्यायें उर्मिला के रूप रंग सम्मोहन गुण के आगे मन्द पड़ गईं। इसे खासी आमदनी होती। दूर २ तक इस के नाम की शोहरत हो गई। ऊंची अट्टालिकाएं बनी। बस अब क्या था उर्मिला देवी की भांति पूजी जाने लगी।

धीरे २ पांच छः वर्ष व्यतीत हो गये। असहयोग आंदोलन ने उग्ररूप धारण किया बहुत से कालेज और स्कूल के विद्यार्थी अपनी २ पढ़ाई छोड इस आंदोलन में भाग लेने लगे। कुछ नवयुवक विद्यार्थियों ने मिलकर एक समिति कायम की। जिसका ध्येय यह था कि वेश्याओं को शिक्षा दे उन्हें सुमार्ग में लगाना। वे सोचते आखिर ये भारत की देवियां ही तो हैं। परिस्थिति में पड़कर उदर पालन के लिये उन्होंने यह व्यवसाय अख्तियार कर लिया है। वे इस गर्हित कार्य को कर स्वयं अपना लोक बिगाड़ती हैं और बहुत से नवयुवकों का जीवन बरबाद करती हैं यह विचार कर बहुत से उच्चाशय विद्यार्थियों ने इन्हें राह पै-लाने का काम उठा लिया।

दो युवक आपस में कुछ सलाह कर उर्मिला के दरवाजे पर आ डटे। दरवाजे पर एक बुड्ढा आदमी झूमता हुआ बैठा था जूते की आहट पा वह खड़ा हो गया और बड़े तपाक से आदाब बजाया। पर इन लोगों के चेहरे मुहरे तथा वेष भूषा को देख वह कुछ स्तम्भित सा हुआ। वह समझ गया कि हो न हो ये वेश्या सुधार समिति के सदस्य हैं। इतना वह मन ही मन सोच रहा था कि उसमें से एक युवक बोल उठा 'महाशय, क्या बाई जी को खबर कर दोगे? हम लोग उनसे मिलना चाहते हैं।'

वह आदमी खांसते हुए भीतर चला। बाई जी से सब कुछ समझा बुझाकर कहा। उर्मिला भी अकेली बैठी थी। उसका इरादा हुआ चलो आज इन्हीं लोगों से बातें कर दिल बहलाव करें। अगर कोई दूसरा मौका होता तो इन्हें मैं धता बता देती। खैर आने भी दो इन्हें खूब आड़े हाथों लूंगी। झट उसने उन्हें ऊपर लाने की आज्ञा दी। दोनों नवयुवक ऊपर पहुंचाये गये। उर्मिला ने देखते ही कहा "आइये जनाब, तशरीफ़ लाइये। बड़ी किस्मत से आज आप लोगों के दर्शन हुए। कहिए बन्दी को क्या हुक्म होता है। उसे सिर आंखों पर धर बजाने के लिये तैयार है।"

एक युवक ने बड़ी नम्रता से कहा "बहिन, हम लोग इसलिये नहीं आये कि

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

आप को कोई हुकम दें किन्तु इसलिये आये हैं कि आप से कुछ विनय करें। उसे यदि आप ठीक समझें तो उसके अनुसार चलें नहीं तो कोई ज़ोर थोड़े है।

दूसरा युवक—हम लोग परस्त्री को माता या बहिनवत् समझते हैं। और हर एक को यही समझना भी चाहिये। बात यह है कि बहिन इस कार्य का करना तुम छोड़ दो। क्या दूसरा कोई कार्य तुम नहीं कर सकती हो?

उ०—यह कहां की बेतुकी बात आपने चलाई आज ही मैं आप दो जनों को ऐसा देखती हूँ-जो मुझे बहिन कह कर संबोधित कर रहे हैं। नहीं तो जाने मन, दिलरुबा प्राणप्यारी की आवाज़ रात दिन मेरे कानों में गूंजा करती है। यह संसार मज़ा लूटने के लिए ही है। जब तक जीना तब तक सीना। फिर हम लोग तो देवी के समान पूजी जाती हैं। इसके समान आदरणीय और पैसा देने वाला अन्य रोजगार नहीं।

यु०—ठीक है तुम्हारा कहना पर यह तो सोचो क्या तुम्हारा यही आदर सब दिन बना रहेगा? यह जवानी चार दिन की चांदनी है। जब तक पुष्प में रस होता है मधुलोभी भौंरे मड़राया करते हैं। बाद में दूसरे पर उड़ जाते हैं। फिर कोई कैसा भी क्यों न हो तुम्हारे नयन कटाक्ष से विद्ध हो बरबाद हो जाता है इन सब का पाप किसके सिर पर है?

उ०—बात तो ठीक है पर इस कार्य के सिवाय अन्य कार्य क्या है? मैंने खुद स्वतन्त्र होकर यह कार्य तो अपनाया नहीं। विवश होकर मुझे इसे करना पड़ा फिर मैं इसे अब क्यों छोड़ूं, काफी पैसा मिल जाता है? चार आदमी चातक की तरहसे 'मुंह ताकते हैं।

नवयुवक—बहिन जो आदमी एक बार गड्ढे में गिर पड़े उसे क्या उठने का प्रयत्न न करना चाहिये अथवा और भी अधिकाधिक फंसने की कोशिश करना? ठीक है हम यह मानते हैं कि हमारे समाज में बहुत से दोष हैं जिनके कारण हमारी भगनियां इस कुकर्म में लिप्त होती हैं! मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ अब अधिक इस जघन्य कार्य में मत झुको।

(यह कहकर नवयुवक ने उर्मिला के पैर ज़ोर से पकड़ लिये।)

उर्मिला की बहिन सम्बोधन करते ही उसकी सुध बुध जाती रही थी। अब कर स्पर्श से उसकी विचित्र हालत हो गई। ऐसा मालूम हुआ कि कोई उसका परिचित उसे घने अन्धकार से हाथ पकड़ निकालना चाहता है पर वह उसे धक्का देकर डूबना ही पसन्द करती है। कुछ क्षण पत्थर की मूर्त्तिवत वह वैसी ही बैठी रही फिर उसने बड़े मुश्किल से अपने पैर छुड़ाकर उस नव युवक को पास ही की कुर्सी पर बैठा दिया और बचन दिया कि दो चार दिन इस पर विचार करलूं फिर मैं इसका जवाब दूँगी। किन्तु मैं आपसे कुछ पूंछना चाहती हूँ। क्या उसका ठीक उत्तर दोगे?

पास बैठे हुए नवयुवक ने कहा प्यारी बहिन सहर्ष पूछो। संसार में ऐसी कोई बात नहीं जिसे मैं न बता सकूं।

उर्मिला ने कहा 'मैं आपका पूर्ण परिचय पाना चाहती हूँ। क्या आप अपना परिचय देंगे?

युवक कुछ देर चुप रहा, मन में सोचने लगा कि बात क्या है? यह मुझे क्यों जानना चाहती है। जब से मैं यहां आया तब से यह बड़े गौर से मुझे निहार रही है। हाय मैं क्यों आया? यहां आतेही मेरे मन की एक विचित्र ही हालत हो गई। इसे देख चित्त बार २ चञ्चल हो उठता है। ऐसा मालूम होता है कि यह मेरी चिरपरिचित है। नहीं, कभी नहीं यह कलकत्ते की वेश्या है। यह अपने जाल में शायद मुझे फंसाना चाहती है। इनके चरित्र को समझना ज़रा टेढ़ी खीर है। इसी सोच विचार में वह पड़ा था कि उर्मिला ने कड़क कर कहा "ढोंगिये मैं सब समझ गई। सुधारक बनकर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हो। यह क्यों नहीं कहते कि तुम मेरे पदतल को देखने को लालयित थे इसी बहाने आये। पास में फूटी कौड़ी नहीं और इसी कारण सुधारक का बाना ले लिया है। हटो मेरे सामने से नहीं तो नौकर को बुलवाती हूँ। कान पकड़ कर निकलवा दूंगी। सच कहने को तैयार नहीं और बने हैं देश सेवक, वेश्या सुधारक! मेरे जीवन आनन्द को मिट्टी में मिलाने की कोशिश न करो। चुप चाप चले जाओ।

"बस देवि, बस क्षमा करो, अब आगे न बोलो। मैं सेठ गुलाबचन्द का लड़का मूलचन्द कभी ऐसा नहीं सुन सकता। मैंने अपनी बी० ए० की पढ़ाई केवल ढोंग रचने के लिये ही नहीं छोड़ी। बरन देश सेवा करने के लिये मेरा तन, मन, धन, मान अपमान सब न्योछावर है।

बस जो कुछ कहना था वह हम लोग कह चुके। यदि तुम्हें मंजूर हो तो ठीक—इस पर खूब विचार करना और यदि कुछ पूंछने की आवश्यकता पड़े तो बुला भेजना।"

यह कह मूलचन्द अपने नाम का कार्ड दे अपने मित्र सहित घर को रवाना हो गया। उर्मिला को काठ मार गया। कुछ क्षणोपरांत वह उठी। स्नान भोजन आदि से निपट अपने शयनागार में जा लेटी।

(८)

किसी को आज उर्मिला के कमरे में जाने की इजाजत न थी आज उसके हृदस्थल में भारी द्वन्द्व मचा था। एक पर एक प्रश्न उठते थे। वह सोचती:—

"मैं किस कुल में उत्पन्न हुई, कहां ब्याही गई। किस तरह बिसेसर ने मेरा नाश किया। उसीके कारण आज मुझे यह घृणित वेश्या वृत्ति धारण करनी पड़ी। सब दोष उसी पापी नर रूप शैतान का है। नहीं मेरा है। क्योंकि क्या मैं जन्म भर वैधव्य नहीं काट सकती थी? मैं तपस्विनी बन कर जीवन यापन कर सकती थी। कौन कहता है कि मेरा दोष है-नहीं किंचित मात्र नहीं है। यह दोष मारवाड़ी जाति के ऊपर है। इसके अतिरिक्त यदि यह कहा जाय कि हिन्दू समाज पर इस का दोष है तो कोई अत्युक्ति नहीं। उसने ऐसे पवित्र धर्म में कन्या तथा पुत्र विक्रय को क्यों प्रश्रय दिया? जिसके लोभ में फंसकर कन्या तथा पुत्रों के लोभी पिता माता अपना सन्तान को कुंवे में अंधों के सरीखे ढकेल देते हैं। यदि मेरे पिता में यह समझ होती और मेरा ब्याह एक साठ वर्ष के बूढ़े के साथ न करते तो आज मुझे इस वृति की शरण क्यों लेनी पड़ती?

ओफ! जिस समाज ने मुझे इस कार्यको करने के लिये बाध्य किया है स्त्री की छाती पर बैठकर मैं क्यों यह कार्य न करूं दलूं? इस में मुझे किस बात की कमी है?

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

बार नौकर चाकर हैं। जब जो चाहूँ करूं, किसी की रोक टोक नहीं। सर्वत्र मेरा मान है। मंदिर के पुजारी, मठों के मठाधीश, राजा महाराजा, सेठ साहूकार, गरीब, अमीर सब मेरी कोठी पर आ घंटों नाक रगड़ते हैं। पैसा देकर उल्लू बनते हैं फिर भी मैं उन्हें अपने पैर के जूते के समान ही समझती हूँ। गांठ में जब उनके कौड़ी नहीं रह जाती तब फटी जूती के समान निकाल बाहर करती हूँ।

इतना सब सोचती! पर एक बात उसके हृदय को रह २ कर शालती थी। वह यह थी कि उसका भाई मूलचन्द आया, वह जान गई फिर भी झपटकर वह उसके हृदय से न लग सकी। दूर ही से बात करती रही। मेरा भाई इतना पवित्र तथा महान् उद्देश वाला और वह हम पापात्माओं का सुधार करता फिरे। हम नीचों के पैर पकड़ता फिरे! फिर भी मैं इस कार्य को छोड़ने में आनाकानी करूं" यही उथल पुथल उसके हृदय में मचा हुआ था। अन्त में वह उठी और कागज़ कलम उठा कर पत्र लिखने बैठी।

"प्रिय बन्धु मूलचन्द।

तुम्हें यह पत्र पाकर आश्चर्य्य होगा। तुम्हें यह विचारना पड़ेगा कि इस पत्र का भेजने वाला कौन है। पत्र भेजने वाली मैं उर्मिला बाई, वेश्याओं की सरताज हूँ। पर नहीं अब वह नहीं। आपने मुझे बहिन अनजान में कहा, लेकिन ईश्वर का विधान और ही कुछ था। मैं आपकी बड़ी बहिन उर्मिला सेठ गुलाबचन्द की लड़की और राय बिहारी लाल की पत्नी थी। अपना पूर्ण विवरण न दे मैं सिर्फ़ यह कहना चाहती हूं कि विश्वास करो मैं तुम्हारी सगी बहिन हूँ। किन्तु यदि अब फिर से तुम मुझे मिलना चाहोगे तो न मिल सकोगे। न ऐसा करने की इच्छा ही करना। इस पत्र द्वारा मैं तुम्हें अपने अतुल्य संपत्ति को सौंपती हूं। शायद तुम्हें इसे ग्रहण करने से इन्कार होगा क्योंकि यह पाप की कमाई है। पर यह याद रखिये कि मैं इस धन को आप को नहीं दे रही हूँ। इसका उपयोग इस तरह करिये—सामाजिक कुप्रथाओं से सताई गई बिधवाओं की इससे सहायता कीजिये। इनके लिये आश्रम खोलिये इनके शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध करिये। सामाजिक बुराइयों के दूर करने का प्रयत्न कीजिये। पत्र पाते ही शीघ्रता करना, नहीं तो इस धन का भारी दुरुपयोग होगा। अन्य बालाएँ फंसाई जाकर इस व्यवसाय में लगाई जायगी। अब मैंने विचार लिया है कि मैं अब कुलंकलङ्किनी कारिस लगा हुआ मुख अब न दिखाऊंगी। पत्र पाकर मुझे एक दम भूल जाना। मैं तुम्हारी बहन कहाने योग्य कदापि नहीं। मेरी अन्तिम प्रार्थना है कि मेरे खोजने का वृथा प्रयत्न बिल्कुल न करना।"

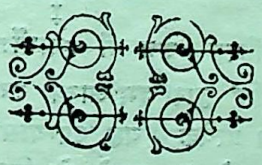

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मोहिनी के आंसू।

लेखकः—श्रीयुत सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज

[गतांक से आगे]

‡

आज पच्चीसवां दिन है, सरला को परलोक सिधारे। सरस्वती, और गङ्गा का रोते-रोते सोना, और रोकर ही उठना अभी गया नहीं। जब देखो-आंसुओं की झड़ी! उनकी ऐसी दशा देख, कुन्दन-माधव ने सब काम छोड़ दिए। भोजन भी घर में एक समय बने, और दोनों समय खालें। शेष समय में वे दोनों बाल गृही, दोनों बाल-बंधुओं को समझाते बुझाते उनका दिल बहलाते रहें। किन्तु कुछ भी हो, माता के परलोक-प्रयाण करने पर, दोनों बहिनों ने सरला को ही 'माता समझा हुआ था। इधर सरला भी उनसे कुछ कम प्रेम न रखती थी। कम रक्खे भी कैसे? जब वह यह जानती थी कि-'मेरे दोनों लालों की ये अर्द्धाङ्गिनियां हैं। अपने जीवन सुमनों के अर्द्धाङ्ग से प्रेम और अर्द्धाङ्ग से नहीं—यह कैसे हो सकता है! वह प्रेम ही नहीं जो अर्द्धाङ्ग से नहीं!! फिर भला वे उस स्नेह मयी देवी को सहसा कैसे भूल जाएं?

सरला के सामने उन्हें कभी अपनी माता याद नहीं आई, इसलिये कि वह उनकी आत्म-जननी से कहीं अधिक वात्सल्य बहुला वा प्रेम-प्रतिमा एवं नैरन्तर्येण हित-कर्त्री थी। अब तो कभी किसी की और किसी की स्मृति उनके हृदय-प्रसूनों के ऊपर ही धरी रहती है जिससे मुख पर से प्रहर्ष भाव उड़ा रहता है। हृदय के ऊपर शोक सर हिलोरें लेता रहता है इस लिये नयन-स्रोतों के आंसू सूखें तो, कैसे--?

मामा ने बहुतेरा रोका, परन्तु अब वह घर, वह गांव उन्हें काटने को दौड़ता था। दोनों भाइयों ने सम्मति कर, देहली निवास रखने को, देहली के प्रस्थान का निश्चय किया। भैंस और गाय बेच दी। सामान गड्डों पर लदवा, गुड़गांव आ गए। यहां मकान ले माधव भाभी और पत्नी समेत रहा। इसी अन्तर में कुन्दन देहली जा नई सड़क पर दुकान किराए ले, पास ही कूचे में मकान किराए ले, फिर गुड़गाँव आ, सब का सब ही ले गया।

‡

सूचना आजकल हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में स्वार्थीजनों द्वारा अत्याधिक कण्टकाकीर्ण-कूड़ा फैंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक 'ज्योति के शृंखलाबद्ध अंकों का अवलोकन करें। प्रत्येक में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास मण्डी लुधियाना के पते पर अपनी सकारण शुभ सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिए प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं, यह निश्चय हो सकें।

लेखक।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

शंकर एक सहस्र रुपए नक़द छोड़ गया था। अन्त समय के बताए हुए २५० रुपये सरला के थे। १५० रु० को भैंस, और गाय बिकीं। अन्त्येष्टि तथा सब के दिल्ली आ पहुंचने तक ५० रुपये खच हो चुके थे। ५० रुपये ही और खर्च के रख, शेष १३००) रुपये सेविङ्ग-बेङ्क में जमा कर दिए। अपनी थोड़ी पूंजी से दुकान पर काम करना आरम्भ किया। अढ़ाई रुपये के जूते में निश्चय सवा रुपया बचत का होता है। बस, दोनों मेहनती! क्रिया-कुशल दोनों! फिर क्या था-जो काम पर लगन से डटे—ठाठ-बाठ होने लगे। सब दुःख एक ओर और रुपये का सुख एक ओर! अच्छा खाएं अच्छा पहनें। सब क्लेश रुपये ने काट दिए, अब तो कुछ ही दिनों में सुनार और बज़ाज की दुकान के हफ्ते में ३-४ चक्कर काटने लगे।

शौक़ लगा माधव को बूट, फुल बूट आदि सीखने का एतदर्थ कुछ दिन एक दूकान पर काम सीखा, कौशल प्राप्त कर, घर की मशीनें मंगवा काम करने लगे।

* * * *

अब तो बड़ा ठाठ-बाट है। दूकान में बिजली और मकान में भी बिजली। आठ-दश नौकर काम करने वाले। बड़ा लम्बा चाड़ा साइन बोर्ड:—

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

इस समय माल का निकाल धड़ाधड़ है। यदि यही हाल बिक्री का रहा तो कुछ से कुछ बनेंगे? अब तो शङ्कर और सरला की याद चिरकाल में आती है, और कुछ ही क्षण के पश्चात् चली भी जाती है।

अब गंगा और सरस्वती के जीवन में सुख की मात्रा अधिक हो गई। उनकी धोतियां अपने जीवन में यदि चार दिन उनके पास रहतीं तो आठ दिन धोबी के और चार दिन नीलगर के! कमीजें यदि नीलगर के नहीं जातीं तो २ दिन उनके पास रह कर आठ दिन धोबी के विश्राम करतीं। और उनके योग्य होकर आतीं। सन्ध्या काल में इन के लिये आठ आठ आने के मोतिया-मोगरे के गजरे, कण्ठे, कर्णफूल आदि नवकुसुमाभरण आ जाते हैं। सम्भावना नहीं कि टूंक में ऐसी कोई साड़ी निकले, जिस पर ३) रु० गज से अल्प मूल्य के बेल, फीते आदि लगे हों? भुवन भावन भुवन-पति लीला-निधि लोक-नाथ की विलक्षण ही लीला है! उस मायापति की माया कौन जान सकता है?

उसे फ़ज़ल करते नहीं लगती बार
न हो उससे मायूस उम्मेदवार!

* * *

इन पाँच वर्षों में दूकान की अधिक प्रसिद्धि हो गई। सेठ लोगों के यहां से आर्डर पर आर्डर आने लगे। इसका कारण इनके हस्त लाघव के अतिरिक्त सुशीलता एवम् विद्या बल भी है शील एवम् विद्या बल से ग्राहकों को जिस प्रकार यह मुग्ध कर लेते हैं; सम्भावना नहीं कि और मोची कर सकें?

अभी भोजन कर, कुन्दन ने दूकान पर आ, कोट उतारा ही था कि एक कहार ने आकर कहा—"राय साहिब अपना जोड़ा मंगा रहे हैं।"

यह सुन, फिर कोट पहिन, टोपी ब्रुश से साफ़ करते कुन्दन ने उत्तर दिया—'चलिए, पीछे ही पीछे जोड़ा लेकर आता हूँ।"

यह सुन, कहार ने पीठ मोड़ी। इधर कुन्दन ने भी जोड़ा कागज़ में लपेट, उसे हाथ में ले, दूकान पर काम करने वाले एक लड़के से कहा—'मैं अभी आता हूं, रे! माधव आए तो खाना खाने भेज देना।" और चल दिया। चांदनी चौक से निकल एक कटले में घुसा। वहां सीधा दूकान पर जाकर, शिर झुका बोला—"राम, राम, राय साहिब!"

लालाश्याम सुन्दर जी दुकान के आगे खड़े कुन्दन को देख, दाढ़ में फँसी-छालियां निकालते बोले—"अच्छा?-ले आए, क्या?"

कुन्दन—" जी—हां, हुजूर!"

(लाला एक हाथ से गाव-तकिये का और दूसरे से घुटने का सहारा ले, खड़े हो जैसे सच्चे हृदय से कुन्दन का स्वागत करने उठे हों!) दुकानके आगे तख़्त पर जा बैठे। तर्जनी उंगली से तख़्त बजा, बोले—"यहां रख दो।"

कुन्दनने जूते कागज़ से खोल, एक बार दोनों तल्ले झाड़ने के साथ फूंक से गर्द उड़ा, वहां धरे। लाला जी ने नाड़ को बहुत नीची झुका, पैर के अङ्गठे द्वारा जूता उलटा-सीधा कर, देख,—भाल, बोले—"हूं..." फिर "अच्छा, भय्ये! बोलो?"

कुन्दन—" जो हुजूर दे दें। क्या आप से कुछ छुपा हुआ है?"

लालाजी—(दो-तीन बार शिर हिला) "नहीं—नहीं, फिर भी अपनी मरज़ी तो ज़ाहिर करनी चाहिए?"

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

इस प्रकार लाला जी से बातें हो ही रही थीं कि बीच में ही एक ने "बन्दगी, राय साहिब!" आ, कही।

लाला उत्तर में "बन्दगी, जनाब!" कह, मदन मोहन की ओर मुंह कर, बोले—"लो, भय्ये! तुम्हारे भी आगए।"

यह सुन, मदनमोहन ने वही से दृष्टि हटाई अब्दुररहमान की ओर देख, स्मित-पूर्व बोले—"अच्छा!... खूब आए! देखूं?—" और कर प्रसार किया। अब्दुररहमान तुरन्त अपने जूते का फ़ीता हाथ से खोल, जूता तख़्त के नीचे ही उतार, चट से मदनमोहन की सन्दूकड़ी (Cash Box) के पास जा, बैठा और एक जूते को हाथ में दे, बोला—"असली 'कानपुरी है!"

मदन—(सस्मित) "तुम्हारे हाथ जिस पर लगें वह असली क्यों न हो?"

अब्दुर—(दो-तीन बार शिर हिला) "क़सम ख़ुदापाक़ की, मख़ौल नहीं करता! चाहे दसों को दिखलालो!...

मदन—"हां-हां-हां! अच्छा, बोलो, पर ज़मीं-आसमान के कहीं तोल न तोलना?"

अब्दुर—"तोबाह २! अब तो यही बोलूंगा-जो बड़े-भाई साहिब मुट्ठी बन्दकर, देदें!"

मदन—(कुछ उत्तेजित हो) "तुमसे तैं करना भी यार एक मुल्क फ़तह करना है!"

यह सुन, अब्दुररहमान उठ, "खुदा जाने, आप शरमिन्दा करते हैं, और बिलकुल नाहक़!"-कह, चलने लगा तिस पर मदन मोहन ने पजामे के झटका दे, बिठाल, कहा:-

"कुछ तो कहो, भले मानस!"

अब्दुररहमान—"कहने-सुनने को रहने ही दें। अब तो यही जी में है कि साल भर के बाद एक मुश्त लिया करूं!...

मदन—"अच्छा, यार! इस बार तो ले जाओ"

अब्दुररहमान "अच्छा, देखिएगा-कहता हूँ, झूंठ बोलना, सूवर खाना है, साढ़े छः रुपये दिला दीजिए।...."

यह सुन, मदनमोहन लाला जी की ओर देख, बोला-"६॥ क़ीमत बताई है!"

लालाजी—(अब्दुररहमान की ओर देख) "मुनासिब समझ कर तैं करलो!...

अब्दुर—"अभी क़सम खाचुका हूं, झूंठ का काम नहीं! वैसे आप पैसा दे दीजिएगा, चूं नहीं करने का हूं!"

लाला—(मदन की ओर देख) "अच्छा, भय्ये! छः दे दो।" (कहा, फिर अब्दुररहमान की ओर देखा-) "क्यों?-"

अब्दुर—"मेरे से तो हुजूर कुछ न कहलवाएं, जो मरज़ी हो!"

लाला—(मदन को) "अच्छा, भय्ये! सवा छः देदो" यह सुन, मदन मोहन ने सन्दूकडी (Cash Box) से निकाल गद्दी के कोने पर धर, कहा-"यार, तुमने तो उठने-बैठने में सारी चांदनी (चादर) सुकोड़ ली!" हंस कर, अब्दुररहमान नांवा उठा जेब में डाल, "बन्दगी, जनाब!" कह, उठा और दुकान से बाहर निकल, कुन्दन के पास पड़े हुए अपने जूतों को अध-पहने खिंचेड़ता हुआ, शीघ्रता से चल दिया। इसके अनन्तर लाला जी ने फिर कुन्दन से बातें करनी आरम्भ कीं

"तुम भी बोलो भय्ये!"

कुन्दन—"एक ही बात कहूंगा, हुजूर से-पौने तीन रुपये!"

लाला—(मदन की ओर देख) "इसके मन की भी हम समझे, भय्ये! अढ़ाई रुपये देदो।" कह, वहां से उठ, फिर उसी तकिये की शरण में जा, गिरे। और कुन्दन की ओर देख, बोले-"उसी तरह काग़ज़ लपेट कर, किवांड़ों के सहारे धर दो।"

कुन्दन—"बहुत अच्छा, जी!"...

[क्रमशः]

महासभाओं की प्रचलित प्रथा

ले०—श्रीयुत जगदीशचन्द्र शास्त्री

हमारे देश में सर्वमान्य सम्मेलनों, सभाओं और महासभाओं का रूप रूढ़ि बनता जा रहा है। हम देखते हैं कि साल भर में किसी प्रसिद्ध नगर मे एक विशाल पट मण्डप बनाकर सहस्रों रुपये व्यय कर बड़ी शान शौकत के साथ चहल पहल में अपना उत्सवमात्र मना लेना हमारी बड़ी २ सभाओं का लक्ष्य बन गया है।

सभाओं का वर्तमान प्रोग्राम यद्यपि देश के मान्य नेताओं का बनाया हुआ है तथापि इस में अनेक त्रुटियां आदि से अब तक चली आ रही हैं। मैं यह नहीं कहता कि हमारे बुद्धिमान नेताओं ने कभी इन सम्मेलनों को वास्तविक सफल बनाने का यत्न नहीं किया।

देश की सब से बड़ी संस्था कांग्रेस (राष्ट्रीय महासभा) ने कई बार इसकी ओर ध्यान दिया है और संभव है कि अब भी उसके कर्णाधार (संचालकों) का ध्यान इस ओर होगा। परन्तु कौन इस बात को दावे से कह सकता है कि हम देश के सच्चे भक्त, सच्चे गरीब और सच्चे प्रतिनिधियों को आमन्त्रित करते हैं? हमारे प्रतिनिधि वही हैं जिन का पेट गरीबों के धन से भरता है, जोकि पश्चिमीय शिक्षा और सभ्यता के आजन्म गुलाम रहे हैं, जो प्लेटफार्म पर अनुप्रासात्मक तकरीर झाड़ते हुए अपने को भूल जाते हैं, अपनी प्रसिद्धि के आगे सारे सुधार और कार्यक्रम को भी स्वाहा कर देते हैं। मैं किसी पर आक्षेप नहीं करता, जोकि पहिले देश का काम करते हैं और पीछे किसी अन्य बात का ध्यान रखते हैं वे मेरे लिये श्रद्धा के पात्र हैं और मेरा नम्र मस्तक उनकी सेवा के लिये सर्वदा झुका ही रहेगा। मैं चाहता हूँ कि अपने लेख में महासभाओं के प्रोग्राम के एक २ अंश पर कुछ न कुछ प्रकाश डालूं और देश या जाति के नाविकों से प्रार्थना करूं कि अखिल भारतीय सम्मेलनों को एक शृंखला में लाकर उन्हें देश का सच्चा उपकारक सिद्ध होने दें।

हमारे प्रतिनिधि

सारे महासभाओं में प्रतिनिधियोंके चुनने की रीति पुरानी है। प्रतिनिधि हमारे प्रस्तावों को क्रियात्मक बनाने के ज़िम्मेवार हैं। उनकी सम्मति को हम 'लोकमत' कह सकते हैं। जब हम सुनते हैं कि अमुक नगर में अमुक महासभा का सम्मेलन होने वाला है तब पठित समाज तत्काल अपने अखबारों के ज्ञान को कार्य्यरूप में लाता है। फलतः प्रत्येक आदमी जोकि इस कला की थोड़ी सी भी दीक्षा ले चुका है प्रतिनिधि निर्वाचित हो जाता है। उसके घरेलू काम इतने चढ़े बढ़े हैं कि उनको अपने प्रतिनिधित्व का कोई ध्यान नहीं। उन लोगों (जिन के वह प्रतिनिधि हैं) का नाम ज्ञान भी शायद ही किसी प्रतिनिधि को हो। ५०, ६०, ७० या १०० आदमी में प्रायः एक प्रतिनिधि चुना जाता है। परन्तु शोक से कहना पड़ता है

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Haridwar. Digitized by eGangotri

कि वह प्रतिनिधि उनके दैनिक कर्मों का ध्यान तो क्या रक्खेगा वह उनके विचारों का ज़िम्मेवार नहीं कहला सकता। उदाहरणार्थ इस वर्ष दिल्ली में हिंदू महासभा का अधिवेशन हुआ है। मैं प्रत्येक प्रतिनिधि से पूछता हूँ कि इस वर्ष के प्रस्तावों का जनता से पालन करा सकोगे? हाँ, कहना सर्वथा झूंठ है और मैं इसे कभी नहीं मान सकता। यदि यह हमारे प्रतिनिधियों की कमजोरी है तो फिर 'हिन्दू महासभा' को महासभा का दम भरना छोड़ना पड़ेगा। हम में से प्रत्येक व्यक्ति को नागरिकता के अधिकारों का ज्ञान होना चाहिये और उसे प्रतिनिधियों के वोट देने का अधिकार तथा अपने ज़िम्मेवारी को जानना चाहिये।

हमारे प्रस्ताव

इस बात से मुझे इन्कार नहीं कि सम्मेलनों में बड़े २ महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव पास हो जाते हैं। किन्तु यह तो हममें से हर एक अपने हृदय से पूंछ सकता है कि वह उन प्रस्तावों को कितना पालन कर रहा है। एक लम्बा चौड़ा विवाद सर्वदा खड़ा रहता है। यह किसी का दोष नहीं क्योंकि संसार में प्रत्येक मनुष्य भिन्न २ विचारों को रखता है और मानवीय प्रकृति इस बात पर जोर देती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने पक्ष की पुष्टि में अपनी दलीलें पेश करे और लोगों को अपने पीछे लगावे।

मैं तो जानता हूं कि प्रत्येक वर्ष वही पुराने सुधारात्मक प्रस्ताव दूसरे, दूसरे शब्दों में पास हो जाते हैं। इसका आशय स्पष्ट है कि हमारे प्रतिनिधि हमारे प्रस्तावों के जिम्मेवार नहीं हैं। अछूतोद्धार के प्रस्ताव पर कहा जाता है कि "यदि गांव के लोग आज्ञा दें तो अछूतों को कुएं पर चढ़ने दो या देव मन्दिरों के दर्शन करने दो।" इस का आशय स्पष्ट है कि हमारे प्रतिनिधि और हमारे नेता उन गांव वालों के जिम्मेवार नहीं है। उन में कोई शक्ति नहीं कि वह हिंदुओं की सर्वमान्य महासभा का कथन उनको बलात् मनावें। क्या हमारे प्रतिनिधि कोरे और झूठे हैं जिन्होंने अछूतों के लिये करुण शब्द कहकर प्रस्ताव सब के सामने रक्खा और हृदयभेदक शब्दों में अनुमोदन कर सर्वसम्मति या बहुसम्मति से उस प्रस्ताव को पास कराया?

जहां प्रस्तावकों को स्वच्छन्दता न हो परन्तु संचालकोंको अपने मतभेदों का निवटारा करना हो वहां सहस्रों रुपयों का बोझ जनता के मत्थे मढ़ देना कौन सी न्याय संगत युक्ति है? ऐसी दशा में व्यक्ति समष्टि का कोई अर्थ नहीं। हमने समस्त अनुयायी मनुष्यों को संगठित करने के लिये एक उत्तरदात्री प्रतिनिधि बनाई है न कि रूठे व्यक्तियों को मानने के लिये। यदिऐसी अवस्था प्रस्तावकों तथा श्रोताओंकी आगामी महासभाओं में भी रहेगी तो मैं जनता से खुले तौर पर अपील करूंगा कि वह अपने२ घर का राज्य स्वयं करें, उनके संगठित होने का कोई अर्थ नहीं। यदि एक व्यक्ति सामूहिक मत को एक साथ ठुकरा देता है तो हमें चाहिये हम भी उसे ठुकरा दें। इस में सन्देह नहीं हमारा यत्न अपना मत पुष्टि करने का होता है फिर क्या कारण है कि हम दूसरे की बात को पुष्ट करने में झिझकते हैं? परन्तु आजकल इस सीमा का उल्लङ्घनहो चुका है। प्रस्तावों में प्रतिनिधियों की अपेक्षा नेता-

ओं और गर्मागर्म भाषणों के आधीन होती है। यदि एक पार्टी ने अपना लोहा मनवा लिया तो दूसरा पक्ष सर्वदा अपनी हांडी अलग ही चढ़ाने का यत्न करता है। लोग इस बात की धमकी देते हैं कि यदि अमुक प्रस्ताव सभामें रक्खा गया और पास होगया तो हम सभा से अलग हो जावेंगे। यह धमकी हिंदूमहासभा के पुनीत अवसर पर हमारे नेताओं की ओर से विधवा विवाह के प्रस्ताव पेश करने के नाम पर दी गई थी। कितने शर्म और खेद की बात है अपनी सभा, अपने प्रतिनिधि और अपने ही लोग! फिर इस अनुचित अहम्भाव का क्या उत्तर है? इसका कारण स्पष्ट है कि हिंदूमहासभा कुछ गिने चुने लोगों की पैतृक सम्पत्ति है। अरे भाई! सारी जनता एकत्रित रूप में 'महासभा कहलाती है या बिखरी तुम्हारी गिनी मूर्तियां?

शक्ति का अपव्यय

जिस नगर से महासभाओं को निमन्त्रण आता है उस नगर में स्वागतसमिति का संगठन लगभग तीन चार मास पूर्व होजाता है। उन की सामूहिक शक्ति बड़ी प्रबल होती है और जोश भी पर्याप्त होता है। यदि वह सारी शक्ति अपने प्रान्त के ग्राम संगठन में लगा दें तो उस महासभा का उस प्रान्त में आना सफल हो जावे। परन्तु यह मार्ग कण्टकाकीर्ण है। फूलों से सजे मार्ग पर भीनी २ गन्ध को सूंघते २ प्रत्येक आदमी खुशी से चल सकता है पर ऐसे माई के लाल विरलेही होते हैं जो काँटोको पारकर सच्चे यश के भागी बनें। स्वागताध्यक्ष और स्वागतसमिति का अध्यक्ष अपने कौशल से बनना सहज है परन्तु क्रियापाटव से बनना एक दम कठिन है। मेरा यह आशय नहीं कि स्वागताध्यक्ष स्वयं जाकर अपने अमूल्य समय का ग्रामों में दुरुपयोग करें परन्तु महासभा को प्रस्ताव पास करने का अवसर सदा ठीक अवसर पर हाथ आ जाना और क्रियात्मक कार्यों की कभी चिन्ता भी न होनी अवश्य खेद का सूचक है। किसी महा सभा ने लाखों या करोड़ों रुपये व्यय कर अपने प्रस्तावों को क्रियात्मक नहीं बनाया परन्तु कुछ देश के सच्चे लालों की निस्स्वार्थ सेवा के कारण वह अपने प्रस्तावों को कार्य रूप में ला सकी है। भारतवर्ष की सब से बड़ी महासभा (राष्ट्रीय महासभा गया) की सफलता उस के शान शौकत से नहीं हुई थी किन्तु उस में जिस कर्मवीर महात्मा के काम के भूखे चेलों द्वारा गांव, गांव के प्रत्येक नर नारी को स्वतन्त्रता का सन्देश और महात्मा के क्रियात्मक उपदेश सुनाकर महा सभा में बैठने के योग्य बनाया गया था उस से तथा योग्य बक्काओं की परीक्षा के कारण हुई थी। मेरी समझ में वहां इतना रुपया व्यय नहीं हुआ होगा जितना और सम्मेलनों तथा महासभाओं में होता है। हम अपनी सभा की सफलता पिण्डाल की चमक् दमक और प्रतिनिधियों को अच्छे भोजन के प्रबन्ध पर निर्भर समझते हैं। इस से स्पष्ट है कि हमारी सारी शक्ति फजूल के जमघट को एकत्रित करने में लग जाती है।

पंडाल का स्थान

सभाओं की सफलता में स्थान का एक बड़ा स्थान है। प्रायः इन का स्थान किसी शहर के आसपास की भूमि होती है। संभव है कि इस से शहर के मनुष्यों को विशेष लाभ होता हो परन्तु मेरी दृष्टिमें इस से कुछ हानि की भी संभावना है। ऐसे स्थानों पर शहर के निकट होने के कारण तमाशबीनों का जमाव हो जाता है। उनका कोई महासभा से विशेष प्रेम नहीं होता। वहां पर होने वाले

CC-0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सम्मेलनों में अपनी पार्टी के साथ हंसी, दिल्लगी करते फिरना उन का प्रधान उद्देश्य होता है। सचमुच वे इस बात के दोषी नहीं हैं क्योंकि उनकी मानसिक अवस्था प्रतिदिन की गुलामीमें विलास मय जीवन व्यतीत करना उन्हें अपना और बाकी सब पराया दीखता है। शहरों में ऐसे लोगों की संख्या बहुततायत से पायी जाती है और यहां पर अनेक इस प्रकार की आकर्षक चीजों का निर्माण किया जाता है जिस से सुनने वालों का ध्यानभी बलात् खिंच जाता है, अतएव हमें कुछ ग्रामों के बीच में इन उत्सवों को मनाना चाहिये। यदि ग्रामीण हमारे प्रतिनिधित्व से दूर भागते हैं तो हमें बलात् पकड़ने का अवसर हाथ आजावेगा और पिछले सालभर का उद्योग उस प्रान्त के ग्राम्य लोगों को समाजिक तथा राजनैतिक सुधार की घंटी बजा २ कर और उन्हें अपना साथी बनालेने पर सफल हो जावेगा। हमें जब पिडांल के लिये सहस्रों रुपये बिना किसी प्रयास के मिल सकते हैं तो क्या कारण है कि ग्रामीणों की खाद्य सामग्री और नागरिकों का धन हमारे प्रान्त में सम्मेलन को सफल नहीं बना देगा?

सुधार की आशा

इन विचारों के साथ मेरा निवेदन सारी भारतीय प्रजा से है कि जहाँतक हो जातीय तथा अन्तर्जातीय महासभाओं को छोड़ हिन्दू मात्र की एक मात्र सभा में अपनी महासभा सहित लीन होजावें। अपनी सम्मति को जनता की सम्मति के पीछे लगाकर पूर्ण सोच समझ के साथ आगे पैर बढावें। हमारे मार्ग काटों से भरे हैं और हमारी अवस्था शोचनीय है। इसी बात का विचार करते हुए भी हमें अपनी सन्तानों को अपने से से अच्छा बनाने का यत्न करना चाहिये।

एक बात और

आज कल प्रत्येक सभा अपनी उपाधि (अखिल भारतवर्षीय) रख लेती है। यह कोई हर्ष की बात नहीं परन्तु न जाने इससे वर्तमान तथा भविष्य में कितनी हानि होगी। अतएव जातीय, सामाजिक साहित्यिक; धार्मिक और राजनैतिक सभाओं के संचालकों तथा संचालकेच्छुओं से नम्र निवेदन है कि वे अनुसारयिता ही सर्वदा न बने रहें अपितु अनुसर्ता भी बनना सीखें।

हमारा मंजूषा

कवितावली—(सटीक) गोस्वामी तुलसीदास कृत, टीकाकार प्रो० लाला भगवानदीन, प्रकाशक, साहित्य सेवक कार्यालय ब्रह्मनाल काशी, पृष्ठ २८०, मू० १।)

कवितावली का गोस्वामी तुलसीदास जी की रचनाओं में एक बड़ा उच्च स्थान है। कई एक विद्वानों के मत में 'कवितावली' का रामचरितमानस से भी बढ़कर महत्व है। लेखक ने अपनी राम भक्ति का इस पुस्तक में सर्वश्रेष्ठ उदाहरण दिया है। भाव चित्रण और वर्तमान में इस ग्रन्थ में तुलसीदास जी ने जिस शक्ति का परिचय दिया है वह देखने योग्य है। तुलसी जी अलंकार चित्रण

में पूरे सिद्धहस्त हैं और उनकी यह बड़ी भारी विशेषता है जोकि बहुत कम कवियों को प्राप्त है कि उनके अलंकार स्वभाविक मधुर और सरस होते हैं। कवितावली में अलंकार रचना में तुलसी जी अपने सब ग्रन्थों में बढ़ गये हैं। इनकी उपमा, रूपक और उत्प्रेक्षायें बड़े मार्के की हैं। कहना नहीं होगा कि कवितावली को हिन्दी साहित्य और काव्य में वह स्थान प्राप्त है जो कि बहुत कम पुस्तकों को है। ऐसी पुस्तक की टीका कर श्री भगवान दीन जी ने हिन्दी भाषा पर बड़ा उपकार किया है। टीका पुस्तक के सर्वथा अनुकूल हुई है। टीकाकार ने कवितावली की विशेषताओं को बड़ी सरल रीति से समझाने का यत्न किया है। मूल छन्द के पहिले उसका नाम और लक्षण उसके नीचे मुख्य २ शब्दों का अर्थ और फिर बड़ी सरल भाषा में भावार्थ समझाया है। मुहावरों और कहावतों का भी स्पष्टार्थ किया गया है तथा अलंकार, और अन्य विशेष छात्रों का भी उल्लेख है। पुस्तक के आरम्भ में एक बड़ी उत्तम भूमिका में कवितावली सम्बन्धी जानने योग्य बातों पर प्रकाश डाला गया है। निसन्देह यह टीका विद्यार्थियों तथा कविता प्रेमियों के लिये बड़े काम की वस्तु है।

जयश्री—(उपन्यास)—लेखक व प्रकाशक श्री ज्ञानचन्द्र शास्त्री अध्यापक गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार, पृष्ठ संख्या २०८, मू० १)

यह उपन्यास एक ऐतिहासिक घटना के आधार पर लिखा गया है। कहते हैं कि सिंहलद्वीप के राजा ने कुछ नववयस्का सुन्दरियां, कुछ बहु मूल्य वस्त्र तथा अमूल्य रत्न बगदाद के खलीफा की सेवा में भेजे थे। तूफान के कारण यह जहाज़ दाहर महाराज सिंध के दैबाल प्रान्त की सीमा के अन्दर बह कर चला आया और चोर तथा डाकुओं ने लूट लिया। खलीफा ने दोष महाराज दाहर के सिर मढ़ा, जिसे महाराज ने बड़ी लापरवाही से टाल दिया। खलीफ़ा ने रुष्ट होकर एक बड़ा भारी सेना मुहम्मद बिन कासिम की अध्यक्षता में सिन्ध नरेश के विरुद्ध भेजी। देश द्रोह हिन्दुओं का पुराना अवगुण है। केवल जयचन्द ही ऐसा नहीं हुआ जिसने कि पृथ्वीराज के विरुद्ध मुहम्मद गौरी से मिलकर अपने देश का नाश किया। सिन्ध में दैबाल प्रान्त का गवर्नर की निजी स्वार्थ, ईर्षा कामातुरता और बदला निकालने के कुत्सित भावों से प्रेरित होकर अपने अधीश्वर महाराज दाहर के विरुद्ध कासम से जा मिला। इस घृणित आचार का जो फल होता है वही हुआ। दाहर का सर्वनाश हुआ और सिन्ध मुसलमानों के आधीन हो गया। इसी घटना को इस पुस्तक में उपन्यास का रूप देकर बड़ी मनोरंजक विधिसे वर्णन किया है। वीर, और शृङ्गार रस का उत्तम मिश्रण किया गया है। राजकुमारी जयश्री का चरित्र बहुत उत्तम रीति से खींचा गया है। उसे एक आदर्श रमणी के रूप में प्रगट किया गया है। उस के बाहुबल, पतिव्रत धर्म, देश सेवा, और निस्वार्थता पाठकों के हृदय को मुग्ध किये बिना नहीं रह सकते।

पुस्तक की भाषा परिमार्जन करने योग्य है। इसमें वह सरलता और सलिलता नहीं जिसकी हम उपन्यास की भाषा में आशा रखते हैं। इसमें एक भारीपन है जो कि स्थल स्थल पर खटकता है। मन्द २ समीर के स्थान पर तीव्र सुगन्ध युक्त वायु मस्तिष्क में विक्षोभ उत्पन्न करता है। वर्णन शैली में

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

कुछ अस्वभाविकता है। लेखक का यह प्रथम प्रयास प्रतीत होता है। आशा है आगे के लिये वह भाषा की सरलता और स्वाभाविकता की ओर अधिक ध्यान देंगे।

ग्रह का फेर—[उपन्यास] लेखक-श्री योगेन्द्रनाथ चौधरी, एम०ए०। अनुवादक श्री श्यामसुन्दर द्विवेदी "सुहृद", प्रकाशक चांद कार्यालय इलाहाबाद। पृष्ट १०६। मू० ॥)

मातृ पितृ विहीना अल्पवयस्का चिर-दुखिनी इन्दु इस पुस्तक की मुख पात्री हैं। छोटी सी आयु में ही उसका आचार हीन, और अत्याचारी नरेश से विवाह हो गया। दो वर्ष पश्चात् ही पतिदेव ने इस निर्दोष बालिका पर सन्देह कर इसे जन्म भर के लिये त्याग दिया। अब निराश्रय और असहाय इन्दु की रक्षा करने वाला इस संसार में कोई नहीं रहा। अतः वह पादरियों के आश्रम में आश्रय पाने के लिये विवश हुई। यहां पर ६ वर्ष पर्यन्त इसने नाना विषयों की शिक्षा प्राप्त कर विशेषरूप से मानसिक उन्नति की। अब अबोध बालिका का स्थान एक चतुर नाना गुण अलंकृता सुन्दरी ने ले लिया, जिसके हृदयमें सुखमय जीवन बिताने की आशा ने उथल पुथल मचादी। पादरियों के आश्रम से अब वह एक वृद्ध सज्जन की छोटी लड़की की अध्यापिका बनकर कल-कत्ते आई। इसी बीच उसको अपने पति तथा उसके मित्र की मृत्यु का समाचार मिल चुका था। अतः वह समझती थी कि अब इस संसार में उसकी जान पहिचान का कोई व्यक्ति शेष नहीं। ऐसी अवस्था में यदि वह पुनः आनन्द स्वप्न लेगी तो आश्चर्य ही क्या है? यहां पर आकर किस प्रकार वह एक लखपति बैरिस्टर की प्रेयसी तथा पत्नी बनी, किस प्रकार उस का "मृत" पति पुनः उसके जीवन क्षेत्र में आ कूदा, ईर्षा की कुत्सित चालों द्वारा उसके पूर्व पति की वास्तविक मृत्यु होना, नवीन पति का उसके आचरण पर सन्देह होना और एक पूर्व परिचित मित्र का अचानक उसके सन्मुख प्रगट हो उसकी सहायता, तथा रक्षा कर उसको पुनः सुख, शांति और वैभव के आसन पर बिठलाना इत्यादि घटनायें पुस्तक के पाठ से ही पता लग सकती हैं। पुस्तक निस्सन्देह मनोरंजक तथा रोचक है। पुस्तक में मानवी भावनाओं और विचारों का बड़ा सुन्दर और यथेष्ट चित्र खींचा गया है। निस्सन्देह पुस्तक एक सिद्धहस्त लेखक का परिचय देती है।

मनोहर ऐतिहासिक कहानियां—लेखक—श्री ज़हूरबख्श प्रकाशक "चांद" कार्यालय इलाहाबाद, पृष्ठ २३५। मूल्य १॥) सुन्दर पक्की कपड़े की जिल्द।

इस पुस्तक में अध्यापक ज़हूरबख्श जी ने १०७ बालोपयोगी कहानियों का संग्रह किया है। सब कहानियों का आधार वास्तविक सच्ची घटनायें हैं और इनकी सामग्री किसी देश विशेष अथवा धर्म विशेष से एकत्र नहीं की गई वरन जहाँ कहीं से भी लेखक को शिक्षाप्रद घटनाओं का मसाला मिला है उन्होंने उसे निस्संकोच ग्रहण किया है। कहानियां सब की सब रोचक और शिक्षाप्रद हैं। इनके सुनने में बच्चों का बड़ा मन लगता है और शनैः २ स्वयं उनके मनमें आगे क्या हुआ यह जानने की पिपासा उत्पन्न होती जाती है। इस अंश में यह कहानियाँ बाल बुद्धि के विकास में बड़ी सहायक हो सकती हैं। हमें आशा है कि जिस गृह में बालक बालिकायें हैं वहां इस पुस्तक को आदरणीय स्थान दिया जायगा।

मनोरञ्जक कहानियां—लेखक—अध्यापक जहूरबख्श और प्रकाशक 'चाँद' कार्यालय, पृष्ठ संख्या २०८ मूल्य १)

लेखक ने पुस्तक के आरम्भ में अपने वक्तव्य में लिखा है "·····इसकी रचना दस वर्ष से ऊपर की आयु वाले बालकों के लिये की गई है। कहानियों की भाषा अत्यन्त सरल, स्वाभाविक और बोल चाल की रखी गई है। कहानियों के लिखने का ढंग भी ऐसा रखा गया है, जिससे बालकों की जिज्ञासा बढ़े, स्मरण-शक्ति तथा विचार-शक्ति की वृद्धि हो, मनोरंजन के साथ शिक्षा भी मिले और उनमें पढ़ने का प्रेम उत्पन्न हो।"

हमें यह स्वीकार करते हुये हर्ष होता है कि लेखक का उपरोक्त दावा यथार्थ है। इन कहानियों में इन सब बातों को सत्य सिद्ध करने के लिये पर्याप्त सामग्री है। बालक इन कहानियों को इतने ध्यान से सुनते हैं कि सोना भी भूल जाते हैं। बालकों के चंचल मन को एकाग्र कर सोचने का स्वभाव डालने के लिये यह कहानियां बहुत ही उपयोगी हैं।

इस संग्रह की एक और विशेषता है। प्रायः सब कहानियां वही हैं जो कि हम अपनी दादी, नानी इत्यादि से सुनते आये हैं। अतः जहां इन कहानियों के संग्रह से हमारे बिखरे हुये साहित्य की रक्षा होती है वहां इसके पाठ से भारतीय मनोविज्ञान का भी पता चलता है। हम भारतीयों के मन में सेवा, वीरता, त्याग, श्रद्धा, भक्ति इत्यादि भाव क्या २ रूप धारण करते हैं और किस प्रकार हमारे चित्त को आकर्षित तथा कार्य्य में प्रेरित करते हैं वह इन कहानियों के पाठ से सहज में ही पता लग सकता है। पुस्तक संग्रहणीय है।

श्रीस्वामी दयानन्द सरस्वती जी का जीवन चरित्र—(भाषा कविता में) लेखक श्रीयुत कृष्ण आर्योपदेशक अमृतसर। प्रकाशिका श्रीमती विद्यावती दिल्ली [मैहरौली] प्रथम भाग पृष्ठ १८६। मू० ।॥), द्वितीय भाग पृष्ठ २६४ मू० ॥।=)

इस पुस्तक में लेखक ने कविता में ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र लिखने का यत्न किया है। भाषा तथा राग अथवा संगीत की दृष्टि से हम लेखक के प्रयास को सफल नहीं कह सकते। परन्तु यह विचारकर कि पुस्तक अशिक्षित अथवा अर्धशिक्षित जनता में दयानन्द के प्रति प्रेम तथा श्रद्धा उत्पन्न करने का एक उत्तम साधन होगी लेखक को ऋषि प्रेम के लिये बधाई देते हैं।

ऋषि दयानन्द पर नालिश—लेखक श्री कृष्ण आर्योपदेशक, मू० =)॥ इस ट्रैक्ट में यही दिखलाया गया है कि स्वामी दयानन्द ने विद्या प्रचार के लिये क्या किया।

देवदास—[सामाजिक उपन्यास] लेखक श्रीशरद्चन्द्र चट्टोपाध्याय, अनुवादक श्रीयुत अखौरी गंगाप्रसाद सिंह 'विशारद' प्रकाशक—चांद कार्य्यालय इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या १७८। मू० १)

शरद् बाबू बंगला भाषा के लब्ध प्रतिष्ठ लेखक हैं। मानव हृदय के भाव चित्रण में वह सिद्ध हस्त हैं। उनकी रचनाओं में शब्द जाल नहीं, वागाडम्बर नहीं। नुकीले तीव्र तीर के समान उनकी उक्तियां हृदयको बेधे देती हैं। देवदास एक सामाजिक उपन्यास है। उपन्यास क्या है मनुष्य के हृदय रूपी समुद्र तल पर उठती हुई उथल पुथल मचाने वाली लहरों का सजीव चित्र

है। नारी हृदय कितना गम्भीर है। कितना महान है, उसमें कितना संयम है और कितनी शक्ति है यह पार्वती के चरित्र से ही पता चलता है। वह सती तीव्र वेदना सहती है, हृदय छलनी हुआ पड़ा है परन्तु क्या मजाल कि मुंह से शब्द निकले? देवदास सामाजिक कुरीतियों की एक बड़ी आलोचना है, परन्तु पढ़ने वाला पढ़ते समय इसे नहीं देखता है। शरद बाबू इन कुरीतियों पर व्याख्यान नहीं देते, उन्हें दूर करने के लिये उपदेश नहीं देते, केवल उनका दारुण असह्य परिणाम ही अंकित करते हैं। वह पाठकों के हृदय पर तीव्र आघात पहुंचाते हैं परन्तु इसके कारण और इसके बचने के उपाय ढूढ़ना वह उनकी निज बुद्धि पर छोड़ते हैं। यह एक मनोविज्ञान सुधारक का विशेष रूप है जो कि हमें शरद बाबू की पुस्तक में दिखलाई देता है। जिस पाप को मनुष्य स्वयं पाप समझे, जिस बुराई को वह स्वयं किसी दूसरे की सहायता बिना उसके जघन्य नंगे रूप में देखले उस से वह अवश्य घृणा करेगा, अवश्य उससे परे रहेगा। देवदास की यह एक विशेषता है। सच्चा प्रेम और निस्वार्थ त्याग का चरित्र देखना हो तो इस उपन्यास को अवश्य पढ़ना चाहिये। अनुवादक भी प्रशंसा के पात्र हैं। पुस्तक को पढ़कर यह कोई नहीं कह सका कि यह अनुवाद है। कोई शब्द, कोई वाक्य न तो अटकता है और न चुभता है। अनुवाद बहुत ही सरस है। निस्सन्देह यह पुस्तक हिंदी साहित्य में एक बड़ी अनमोल वृद्धि है और प्रकाशक इसके लिये बधाई के पात्र हैं।

वैज्ञानिक संसार

पशुओं का हड्डियों से प्रेम

हमारे पाठकों ने किंचित देखा होगा कि कई एक पशुओं को हड्डियां खाने का स्वभाव पड़ जाता है। इसका क्या कारण है? अब तक इस विषय में कुछ पता न था। वह हड्डियों को बड़ी उत्सुकता से खोज करते रहते हैं और मिलने पर बड़े शौक़ से खाते हैं। यह देखा गया कि जिन पशुओं में यह अनुचित इच्छा और स्वाद पड़ जाता है तो उनकी शारीरिक अवस्था बड़ी खराब होती है, क़द छोटा रहता है और दूध देना कम हो जाता है। कभी २ तो सड़े हुये मांस से ढेपी-हुई हड्डियां तक खाई जाती हैं जिसका परिणाम यह होता है कि बहुधा उनके शरीर में विष पहुँच जाता है। अब यह पता लगा है कि ऐसे पशुओं में हड्डियों की इच्छा का कारण यह है कि उनके खाने में फासफोरस की मात्रा कम रहती है और दो चार सप्ताह में ही चोकर, कैलिसयम फास्फेट अथवा अन्य कोई फास्फेट मिलकर देने से उनकी यह कुप्रवृति और निर्बलता दूर हो जाती है।

मृत्यु सागर

पश्चिमीय एशिया में मृत्यु नाम की एक बड़ी झील है, यह भू मध्य सागर से १३०० फीट अधिक गहरी है। इसकी लम्बाई ४६ मील और अधिक से अधिक चौड़ाई ९॥ मील

है। गहराई एक गज से लेकर १३०० फीट तक है। इसके जल में १०० भाग पीछे २४ भाग लवण के घुले हैं और क्योंकि इसके जलों के बाहर निकलने के लिये कोई मार्ग नहीं है यह लवण की मात्रा बढ़ती ही जा रही है। अब एक महानुभाव ने यह विचार पेश किया है कि इस के जल को भाप बनाकर उड़ाकर इन घुले हुये लवण को अलग किया जाय क्योंकि यह लवण खाद के रूप में बड़े काम के हैं। यह अन्दाजा लगाया गया है कि मृत्युसागर से हम २,८००,०००,००० मन अपना खानेका नमक, ५६००,०००,०००,००० मन पोटैसियम क्लोराईड (खाद) और मैगनिसियम ब्रोमाईड औरअन्य कई रासायनिक द्रव्य इससे निकाल सकते हैं। यदि इन्हें व्यय करने का प्रबन्ध कर लिया जाय तो इनको इस सागर से निकालना कठिन काम नहीं क्योंकि इसके जलों को केवल पम्प द्वारा बाहर निकालकर और कम गहरे तालाबों में भर कर केवल मात्र सूर्य्य के ताप से उड़ाया जा सकता है और ठोस लवण पीछे रह जायेंगे।

गले पड़ने का आप्रेशन

मनुष्य के गले के अन्दर एक छोटी सी झिल्ली रहती है। यह ठण्ड लग जाने अथवा रेता, मट्टी इत्यादि किसी खुरदरी चीज़ के सम्पर्क से सूज जाती है। इसी को गले पड़ना कहते हैं। जब किसी व्यक्ति के बार २ गले पड़ते हों और किसी दवाई से चिरस्थायी लाभ न होता हो तो डाक्टर लोग इस झिल्ली को ही काट देने की सम्मति दिया करते हैं। उनका कहना है कि जब सूजने वाली चीज ही न रही तो गले क्या पड़ेंगे–न रहे बांस न बजे बांसरी। अमरीका के डाक्टर रिनाड का कथन है कि वह भी पहिले२ झिल्ली काटने के बड़े भारी समर्थक थे परन्तु अब उनका विचार बदल गया है। और वह कहते हैं रक्षा करने वाले इस अङ्ग को काट देने से पीछे से बड़े २ कष्ट उठाने पड़ते हैं। उनका अनुभव है कि ज़रा सा ध्यान देने से स्वाभाविक स्वस्थ अवस्था सदा बनाई जा सकती है। गले के भीतर जो कफ का स्थान है उस पर कई प्रकार के विषैले पदार्थ जम जाते हैं और इस से नानाप्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। यदि गले की झिल्ली अपना ठीक २ कार्य्य करती रहे तो यह इन विषैले पदार्थों को छान कर जाने से रोकती है। उनको नौ दस वर्ष का समय हुआ जब कि पहली बार इस ओर सफलता प्राप्त हुई। जबकि गले की झिल्ली काटने के स्थान में उसका इलाज करने से उन्होंने एक विशेष प्रकार के ज्वर को दूर किया फिर तो उनको लगातार सफलता मिलती रही। इस झिल्ली को भली प्रकार साफ करके इसके छिद्रों को ठीक २ खोलने से उन्होंने कई प्रकार के आंखों के, कानों के, गले के रोग, सिर दर्द और अन्य कई प्रकार के रोग को चंगा किया। एक बार तो उन्हें बहुत हीं आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त हुई। इस झिल्ली के ऊपर के भाग के छेद को जब वह खोल रहे थे तो सुई लग जाने से उस में से एक बून्द किसी तरल द्रव्य की निकल पड़ी। जिसका प्रभाव यह हुआ कि १५ मिनट के भीतर ही रोगी की दृष्टि स्पष्ट हो गई, यद्यपि इस से पहिले एक आँख से उसे कुछ भी नहीं सूझता था।

३००० वर्ष पहिले कैसी मौसम थी?

क्या कोई बता सकता है कि ३००० वर्ष पूर्व हमारे पुर्खा किस प्रकार के मौसम का अनुभव करते थे? इस पहेली का उत्तर बड़ा

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

सरल है। यदि वनस्पतिशास्त्र वैज्ञानिकों की कल्पना सत्य हो उनका मत है कि साधारण गणित और छोटी वस्तुओं को बढ़ा करके दिखाने वाले शीशे द्वारा यह बतलाया जा सकता है कि उस वर्ष कैसा मौसम था जब ज्यूलियस सीजर की मृत्यु हुई? अथवा क्या वह बड़ी गरमी के दिन थे जब कि इङ्गलैण्ड का Magna charta लिखा गया था?

पुराने समय के लोगा मनुष्यों ने अपने लेखों में मौसम का बहुत वर्णन किया है परन्तु इस मौसम को जानने के लिये वैज्ञानिकों को इन प्राचीन लेखों की आवश्यकता नहीं। जो लेख वह जानना चाहते हैं वह वृक्षों ने निज देह पर लिखे हैं। जब कि किसी पेड़ को काट डाला जाये तो उसके कटे हुये तने को देखने से पता लगेगा कि उसके मध्य से एक दूसरे को अपने भीतर घेरते हुये कितने ही गोल चक्कर बने हैं। प्रत्येक चक्कर वृक्ष की आयु के एक वर्ष की ओर संकेत करता है। इन वैज्ञानिकों के विचार में इन चक्करों के रेशों की मोटाई और बनावट को देखने से वह बतलता सक्ते हैं कि उस वर्ष अमुक मौसम जल्दी आरम्भ हुआ या अथवा देरी से, उस व ° गरमी अधिक पड़ी थी अथवा सरदी, वर्ष हुई थी अथवा नहीं।

इस प्रकार पुरानी मौसमों को हमारे ज्ञान को परिमित करने वाली वृक्षों की आयु है। परन्तु अब इङ्गलैन्ड में ऐसे वृक्ष हैं जो १५०० वर्ष पुराने हैं, टर्की में २००० वर्ष के आस्ट्रेलिया में कितने ही ३००० वर्ष से भी पुराने युकलिप्टस के वृक्षहैं।

चन्द्र-जन्म

प्रौफेसर रास्टल की सम्मति में चन्द्रमा उसी मसाले से बना है जिस से हमारी पृथवी बनी है। उन की कल्पना है कि सूर्य के आकर्षण से पृथवी पर से लगभग ३१ मील मोटा एक छिलका-जोकि इस के दोतिहाई भाग को ढंपे हुये था-उतर कर अलग होगया। सूर्य के आकर्षण द्वारा यह तभी तक सम्भव था जब तक कि पृथवी अभी कड़ी नहीं पड़ी थी, वरन् मोम की तरह नरम और लचकदार थी। चान्द के इस द्रव्य की अपनी आकर्षण शक्ति द्वारा फिर गोल शकल बनती गई। इस छिल्के उतरने से पृथवी पर महाद्वीप बन गये।

जब कोई तरल चीजों का मिश्रण जमने लगता है तो भारी चीज़ें नीचे बैठती जाती हैं और हल्की ऊपर आती जाती हैं। इस प्रकार पृथिवी का सब से ऊपरी भाग नीचे की अपेक्षा हल्का होना चाहिये। यह हल्का तो है परन्तु ऊपर का केवल एक तिहाई परत ही हलका है, दो तिहाई नीचे जैसा ही भारी है। इस का अभिप्राय यही तो नहीं कि यो तिहाई ऊपर के हलके छिल्के का चाँद बन गया और उसके नीचे कड़ा और भारी द्रव्य निकल आया।

एक जर्मन प्रोफैसर के विचार में अमरीका महाद्वीप कभी योरोप और अफरीका से जुड़ा हुआ था और आज कल की अवस्था में यह बहकर पहुंचा है। जब तक कि भारी पृथिवी इस प्रकार के छिल्के से ढंपी थी यह सम्भव नहीं था परन्तु यह छिल्का उतरने पीछे एक महाद्वीप का दूसरे से अलग होकर बट जाना समझ में आ सक्ता है।

आकृति से रोग की पहिचान

डाक्टर जार्ज डेपर के कथन के अनुसार मनुष्य के चेहरे की आकृति और बनावट से हम जान सक्ते हैं कि अमुक व्यक्ति को कौन २ रोगों से पीड़ित होने की सम्भावना है।

इस कल्पना से—जो कि रोग निदान की विधि में सर्वथा क्रान्ति उत्पन्न करदेगी—बड़ी २ आशा हैं।

ऐसा प्रतीत होता है कि गोरे व्यक्ति कालों की की अपेक्षा सर्व प्रकार की बीमारियों से अधिक बचे रहते हैं। एक मोटा गोल चेहरा यह दर्शाता है कि इस का स्वामी सम्भवतय जिगर के पित्त सम्बन्धी रोग से पीड़ित होगा। छोटे चौड़े चेहरे और एक दूसरे से दूर हटी हुई आंखें रक्त की कमी की सूचक हैं।

लम्बे आदमियों को क्षय रोग अधिक होता है और बहुत छोटे आदमियों को गुरदे की बीमारी का भय रहता है।

आँखों का रंग भी एक बड़ा आवश्यक चिन्ह है। भूरी आंखों वालों को क्षय रोग और रक्त की कमी को छोड़ कर शेष सभी रोगों का अधिक भय रहता है। इस कल्पना के अनुसार कानों की लम्बाई का भी स्वास्थ्य से बड़ा भारी सम्बन्ध है।

डाक्टर डेपर बड़ी सावधानी से यह भी कहते हैं कि यह आवश्यक नहीं कि विशेष शारीरिक अथवा मानसिक गुण रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने समूह से सम्बन्ध रखने वाले रोगों से अवश्य पीड़ित होगा। वह केवल यही कहते हैं कि उन्हें इन रोगों से अधिक खबरदार रहना चाहिये।

कुसुमोद्यान

[म० पृथिवीसिंह जी मन्त्री संरक्षक सभा ने यह नियम आदि हमारे पास प्रकाशनार्थ भेजे हैं ताकि सब संरक्षकों को पता लग सके और जो अभी तत सभासद नहीं बने हैं वह शीघ्र ही बन जावें।] (सम्पादिका)

नियम तथा उद्देश्य

कन्या गुरुकुल संरक्षक सभा दिल्ली

श्री आचार्य्य रामदेव जी के प्रधानत्व में कन्यागुरुकुल देहली के उन सज्जनों की जिन की कन्याएं कन्या गुरुकुल में शिक्षा पाती हैं एक सभा १६ नवम्बर सन् १९२५ को लगभग २ बजे हुई जिस में कन्यागुरुकुल संरक्षक सभा स्थापित की गई। सर्वसम्मति से उक्त सभा के नियम तथा उद्देश्य निम्न लिखित स्वीकार हुए:—

(१) इस सभा का नाम कन्या गुरुकुल संरक्षक सभा होगा।

(२) इस सभा का उद्देश्य कन्या गुरुकुल की उन्नति के साधनों पर विचार करके तदनुसार उचित कार्य्यवाही करना तथा उनकी ओर कन्या गुरुकुल के अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करना व उनको कन्या गुरुकुल के उद्देश्य पूर्ति में हर प्रकार की सहायता देना होगा।

(३) सर्व ब्रह्मचारिणियों के संरक्षक इस सभा के सभासद होंगे, परन्तु प्रत्येक संरक्षक को अधिकार होगा कि वह अपने स्थान में अपने किसी मित्र व सम्बन्धी को संरक्षक के अधिकार सौंप दे।

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

(४) इस सभा की एक कार्य्यकारिणी सभा होगी जिसका कार्यालय यथा सम्भव देहली में होगा और उसके सभासदों का निर्वाचन प्रतिवर्ष हुआ करेगा। और सभासदों में कन्या गुरुकुल के के स्थानीय सहायक मुख्याधिष्ठाता संयुक्त सभासद होंगे।

(५) कार्य्यकारिणी सभा का एक मन्त्री होगा जो संरक्षकों से पत्रव्यवहार करेगा तथा संरक्षक सभा का हिसाब किताब रखेगा।

(६) प्रत्येक संरक्षक का यह धर्म होगा कि वह कन्या गुरुकुल के प्रबन्ध तथा अधिकारियों के विरुद्ध समाचार पत्रों से अथवा अन्य प्रकार से कोई आन्दोलन न करे और इस नियम से कार्य्यकारिणी सभा भी बाधित होगी परन्तु प्रत्येक संरक्षक को अधिकार होगा कि वह कन्या गुरुकुल के प्रबन्ध तथा शिक्षा के सम्बन्ध में कन्या गुरुकुल की श्रीमती आचार्य्या जी से परामर्श करे। मन्त्री कार्य्यकारिणी सभा को स्वयं भी कन्याओं की शिक्षा तथा स्वास्थ्य के सम्बन्ध में प्रत्येक इस प्रकार का श्री आचार्या से परामर्श करने का अधिकार होगा।

(७) प्रत्येक संरक्षक को एक रुपया प्रतिवर्ष कार्य्यकारिणी सभा के मन्त्री के पास चन्दे के निमित्त भेजना होगा। जो कार्य्यकारिणी सभा के कार्यों में व्यय होगा। आवश्यकता पड़ने पर मन्त्री को विशेष चन्दा संरक्षकों से करने का अधिकार होग।

(८) प्रत्येक संरक्षकका यह मुख्य कर्तव्य होगा कि यथा सम्भव वह १०० रुपये प्रतिवर्ष स्वयं अथवा चन्दा करके कन्या गुरुकुल के कोष में जिस कार्य्य के लिये वह उचित समझे मन्त्री द्वारा जमा कराए।

(९) सर्व सम्मति से आगामी वर्ष तक के लिये—जो कन्या गुरुकुल के तृतीय वार्षिकोत्सव के ठीक पश्चात् तथा पुनः निर्वाचन तक समाप्त होगा—निम्न लिखित सभासद् तथा अधिकारी कार्य्य कारिणी सभा के निश्चित हुए:—

(१) ला० नारायणदत्त जी सहायक मुख्याधिष्ठाता कन्या गुरुकुल देहली।

(२) महाशय मलखासिंह जी देहली।

(३) बाबू पृथिवीसिंह जी हैडक्लर्क देहली फोर्ट देहली, मन्त्री।

(४) बा० द्वारिकाप्रशाद जी गोएल मुजफ्फर नगर।

(५) बा० रामचन्द्र जी स्टेशन मास्टर।

(६) ला० ईश्वरदास जी।

(७) बा० देवकीनन्दन जी देहली।

नोट—इस सभा का कोरम् तीन सभासदों का होगा और यह अपना सामयिक प्रधान स्वयं चुनेगी।

* ओ३म् *

दिल्ली

ता० ..... १९२ .

श्रीमान् _____

.....

नमस्ते,

संरक्षक सभा जिसकी स्थापना गत गुरुकुलोत्सव पर हुई थी, के नियम सूचनार्थ आपकी सेवा में भेजे जाते हैं, आशा है कि इन को स्वीकार कर और गुरुकुल तदनुकूल की उन्नति में सहायता देकर अनुगृहीत करेंगे।

चन्दा १) एक रुपया वार्षिक जो प्रति संरक्षक को देना निश्चय हुआ है यदि आप ने अभी तक न दिया हो तो कृपया शीघ्र भेज दीजियेगा।

संरक्षक सभा की ओर से आगामी को जिस विषय की सूचना समस्त संरक्षकों को देने की आवश्यकता होगी वह मासिक पत्र ज्योति द्वारा दी जाया करेगी – संरक्षक महाशय कृपाकर उसमें पढ़ लेने की कृपा किया करें।

किसी कन्या विशेष के सम्बन्ध में जिस किसी संरक्षक को कोई विशेष बात ज्ञात करनी हो वह कृपाकर मुझ से पत्र व्यवहार कर सहर्ष जान सकेंगे।

भवदीयः—

पृथ्वीसिंह मन्त्री,

पत्र व्यवहार करने का पता :—

पृथ्वीसिंह

HEAD CLERK,

Office of C. R. E,

DELHI FORT.

स्वागत गान

हे पूज्य ! स्वागत आप का, हम धन्य हैं कुल वासिनी।
कुल भूमि भी यह धन्य है, शुभ शान्ति कान्ति विलासिनी।
हे विश्व प्रेमिन् ! आप का, गुण गान हम क्या कर सकें।
किस विध प्रभो, लघु पात्र में सुख सिन्धु को हम भर सकें ॥१॥
अपने पवित्र चरित्र के, आदर्श को दिखला दिया।
किस भांति होती देश सेवा, तत्व यह सिखला दिया।
हे मातृ भू के लाल, जब तक भूमि जमुना जल बहे।
तब तक अचल यह, आप की शुभ कीर्ति भारत में रहे ॥ २ ॥
बनवासिनी हम हैं सभी उपहार फिर क्या ला सकें ?
इक प्रेम पावन, इस सुमन के वस्तु क्या फिर पा सकें।
जो कुछ हमारे पास है, वह भेंट धरतीं हम सभी।
स्वीकार कृपया कीजिये, यह प्रार्थना करतीं सभी ॥ ३ ॥

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

॥ स्वागत श्लोक (गान) ॥

धन्योऽयंसमयः कृतोऽद्य भवता, स्माकं कुले स्वागतः ।
मुख्या सौख्य मुपा गता शुभ शतम् साध्यापिका ध्यायति ॥
एता दीक्षित बालिका कलगिर गायन्ति कीर्तिं मुदा ॥
सर्वैतत् कुलवासिनः किल हृदा कुर्वन्ति ते स्वागतम् ॥१॥

समायातः कोऽयं वदसि "यमुना लाल इति चेत्, ॥
किमर्थं व्यर्थं त्वं नयसि किल कालं प्रति पलम् ॥
स्वदेशश्रद्धा ते हृदय विनिबद्धा गुणवती ॥
पुरश्चक्रं धृत्वा भ्रमय वसनायाशु नियतम् ॥२॥

चक्रं रज्जु निबद्ध मुद्धततरं धावत्य हो वेगतः ॥
सूते सूत्र मिदं करेण वलितं चक्रं नवा गच्छति ॥
गेयं गायति कर्णयोस्तु मधुरं वर्णं बिना बर्णना ॥
तत्सर्वं भवतामुदार यशसां राशिः समुज्रृम्भते ॥३॥

विक्रीणन्ति धनाशयात्तु वणिजो वस्त्राणि देशद्रुहः ॥
स्तेषामेष तवोपदेश विशदस्तोषाय पंथा न हि ॥
ज्ञात्वा तत्तु भवान् भयं न भजते चापल्यदोषं न वा ॥
सूत्राणां प्रणय प्रवीण ! भवता हर्षाय वाङ् मौनिता ॥४॥

रात्रौः दन्त कटाकटेति मनुजाः कुर्वंति शीतागमे ॥
भीता राजकरात् कृषीबलगणः अर्द्धोदरं भुञ्जते ॥
धिक्कारध्वनिरुद्धरो विधि वशादायाति देशान्तरात् ॥
तद्भावत्कं निभ प्रभाव रहिते मार्गे गते दुष्फलम् ५॥

नन्नु नृपति सभायाँ वाक् प्रवञ्चैर नेकैः सम धिक निजराज्यं,प्राज्ञ भावं भजन्ते
परमपरजना नामादृशानां त्वदीये प्रति पद मुद याशा वर्त्मनि स्नेह मेति ॥

*[ऊपरोक्त दोनों कवितायें सेठ जमुनालाल बजाज जी के स्वागत अवसर पर कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों द्वारा गायीं गईं थीं] सम्पादिका

कन्या-गुरुकुल समाचार

स्वास्थ

ब्रह्मचारिणियों का साधारण स्वास्थ्य बहुत उत्तम है। आज कल मौसिम यद्यपि प्रायः गर्म सर्द हो रही है फिर भी कोई कन्या रोगी नहीं है। और गत वर्षकी भांति जुकाम आदि भी नहा है। परमात्मा का इस असीम कृपा के लिये बड़ा धन्यवाद है।

पठन पाठन

पठन पाठन का कार्य्य सुचारू रूप से चल रहा है और कन्यायें शक्ति अनुसार अच्छी उन्नति कर रही हैं। कभी २ सर्दी हो जाती है इस लिये पढ़ाई का समय अभी १० से ३ तक ही है बदला नहीं है।

चर्खा और सिलाई

आश्रम में कन्यायें नित्य प्रति श्रेणी के अनुसार चर्खा और सिलाई सीखती हैं और बहुतेरी कन्याओं को चर्खा चलाना आगया है, कपड़े तो वह प्रथम से ही सीती रही हैं किन्तु अब आशा है कि बुनना सिखाने वाली देवी के आ जाने पर कन्यायें अपने हाथ से काते हुये सूत के कपड़े सियां करेंगी।

प्रसिद्ध दर्शक

चूंकि इन दिनों दिल्ली में कौंसिलों की बैठकें भी थीं और हिन्दू तथा मारवाड़ी अग्रवाल महासभायें भी हुईं अतः इस सम्बन्ध में आये हुये कई प्रसिद्ध सज्जन तथा देवियां यहां पर पधारे जिनमें से उल्लेख योग्य श्री कुमारी लज्जावती जी, भूत पूर्व आचार्या कन्या महाविद्यालय जलन्धर, धर्म पत्नी श्री लाला लाजपतराय जी, श्रीमान् त्याग मूर्ति सेठ जमुनालाल बजाज सपत्नीक तथा संस्कृत के परम विद्वान दक्षिणी पंडित चिन्तामणि वैद्य जी (संक्षिप्त रामायण तथा महाभारत के रचयिता) के नाम हैं। कहने की आवश्यक्ता नहीं कि उपरोक्त सभी सज्जन और देवियां यहां की शिक्षा, प्रबन्ध तथा स्वच्छता आदि से बहुत प्रसन्न और सन्तुष्ट हुये हैं।

सेठजी को अभिनन्दन पत्र

१६ मार्च को लगभग दो बजे श्रीमान् सेठ जमुनालाल जी ने गुरुकुल भूमि में पदार्पण किया और यतः उनको कार्य्याधिक्य से समय थोड़ा था तथापि बड़े ध्यान से श्रेणियों का निरीक्षण किया। कन्याओं से देश के वर्तमान प्रश्नों पर भी प्रश्न किये जिनका उत्तर आयु के अनुसार कन्याओं ने दिया। तत्पश्चात् आपने आश्रम आदि सब देखा।

फिर कन्याओं ने अपने मधुर स्वर से संस्कृत छन्दों में तथा आर्य्य भाषा की कविता में उनका अभिनन्दन किया। तत्पश्चात् सब से छोटी कन्या ने हाथ के कते सूत की बनी हुई सुन्दर माला पहिनाई और अभिनन्दन पत्र भेट किया। अभिनन्दन पत्र के छन्द इसी अङ्क में अन्यत्र प्रकाशित हैं। तत्पश्चात् कुमारी चन्द्रवती जी ने गुरुकुल की विशेषतायें बतलाते हुये अधिकारियों की तरफ से उनका स्वागत किया।

कन्या गुरुकुल पर सेठ जी का भाव।

"मैंने आज श्री चिन्तामणि राव वैद्य तथा अन्य मित्रों के साथ यह कन्यागुरुकुल देखा। आचार्य रामदेव जी तथा श्रीमती

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

विद्यादेवी जी के प्रयत्न से जो काम हुआ है वह प्रशंसनीय है। लड़कों के गुरुकुल बहुत से हैं परन्तु बालिकाओं के गुरुकुल देखने के मुझे बहुत कम अवसर मिले इसे देख कर मन को हर्ष हुआ। मुझे आशा है कि यह गुरुकुल दिन दिन वृद्धि पावेगा और उसके संचालकों के उद्देश्य सफल होंगे। तथा चर्खा और खादी का अधिक प्रचार होकर देश सेवा के लिये यह संस्था उत्तम साधन बनेगी।

जमुनालाल बजाज,
देहली तिथि चैत्र शु० ५ सं० ८२।

हरिद्वार गुरुकुलोत्सव पर।

यतः कई संरक्षक आग्रह कर रहे थे कि कांगड़ी गुरुकुल के उत्सव पर जब यह परिवार सहित पधारें तो उनकी कन्यायें वहां मिलने के लिये भेज दी जावें, क्योंकि दिल्ली आने का समय नहीं होगा और कन्यायें घर पर तो जाती नहीं हैं। अतः संरक्षकों को यह सूचना दी गई है कि जो २ कांगड़ी उत्सव पर कन्या को बुलाकर मिलना चाहें वह मार्ग व्यय ८) ३० मार्च तक अवश्य भेज दें तो कन्या को वहां ले जाने का प्रबन्ध किया जा सकेगा। पीछे प्रबन्ध होना मुशकिल है। आशा है कि संरक्षक लोग ध्यान देंगे।

स्थानाभाव

कन्या गुरुकुल खुले तीसरा वर्ष भी हो चला परन्तु अभी तक इसके लिये अपना स्थान ही नहीं लिया जा सका है। यह कोठी यद्यपि बहुत बड़ी है और तिस पर भी टीन आदि डाल कर कमरों की वृद्धि गुरुकुल की ओर से भी की गई है फिर भी आवश्यक्ता की पूर्ति नहीं हो रही है। आश्रम में सोने के कमरे भरे हुये हैं, बराण्डे भी पर्दे लगा कर बर्ते गये हैं, फिर भी यह हाल है कि आगामी वर्ष न तो जो श्रेणी बढ़ेगी उसके पढ़ने के लिये स्थान हैं और न और कन्याओं के रखने के लिये कमरे। यदि धूप तेज हो या वर्षा का जोर हो तो आज कल भी ऐसा स्थान नहीं है जहां पर सब कन्यायें एक साथ बैठ सकें। बराण्डों से ही गुजारा हो रहा है। इस दशा में आर्य्य जनता का कर्तव्य है कि इस गुरुकुल की ओर भी ध्यान दे और ऐसा प्रयत्न करें कि शीघ्र ही इनके लिये निजी भवन तैय्यार हो जावे जोकि कन्याओं की सब आवश्यक्ताओं को पूरा कर सके।

संरक्षक सभा।

कन्याओं के संरक्षकों ने गुरुकुल के कार्य में सहायता देने के लिये एक संरक्षक सभा नाम से समिति स्थापित की है जिसके नियम, उद्देश्य और प्रवेश पत्र इसी अंक में अन्यत्र प्रकाशित हैं।

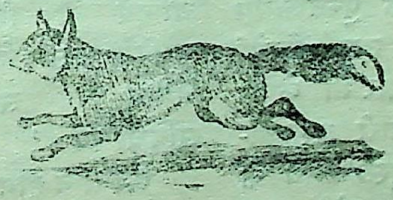

वनिता विनोद

स्त्री जगत्

उत्तरीय अफ्रीका के अधिकांश भाग में तौरेग नामक जंगली जाति बसती है जिन का मुख्य व्यवसाय ऊंटों पर चढ़ना और ऊंटों का रोज़गार करना है। इस जाति की स्त्रियाँ बिलकुल स्वतन्त्र फिरती हैं, पर्दा भी नहीं करतीं। किन्तु पुरुष लोग नकाब डालते हैं। स्त्रियां स्वयं अपना पति चुन लेती हैं और बच्चों को लिखना पढ़ना सिखाती हैं। वह सम्पत्ति की मालिक भी बन सकती हैं और विवाह के बाद भी उस सम्पत्ति पर पति का अधिकार कुछ नहीं होता। वर्ण और प्रभुता मातृकुल द्वारा चलती है।

११८ संतति की माता

यूनियन में एक ९९ वर्ष की वृद्धा जीवित है जिसके १२ पुत्र पुत्रियां, ५६ पोते पोतियां तथा ४९ परपोते आदि और एक सरपोता अर्थात् पांचवीं पीढ़ी का भी बालक उत्पन्न हो चुका है।

बड़ौदा महिला पुस्तकालय

यद्यपि साधारणतया गुजराती और महाराष्ट्र महिलायें पर्दे में नहीं रहतीं तथापि स्त्रियां होने के कारण एकान्त स्थान तो उन्हें क्या सभी स्त्रियों को चाहिये इसलिये बड़ौदा नगर में जहां पर सार्वजनिक पुस्तकालय का बड़ा विशाल भवन है और उसमें स्त्रियों का भी एक खास विभाग है फिर भी केवल महिलाओं का भी एक बड़ा भारी पुस्तकालय है। जो कि सार्वजनिक पुस्तकालय के ठीक सामने है। इसमें अपने भी बहुतेरे ग्रन्थ और मासिक पत्र हैं जोकि भारतीय भाषाओं में हैं और बड़े पुस्तकालय से भी मांग कर पढ़ने के लिये दिये जाते हैं। इसकी अधिष्ठात्री भी एक महिला ही हैं और इनकी सहायतार्थ एक सहायक भी हैं। यह पुस्तकालय बहुत सर्वप्रिय है। गत वर्ष इसमें लगभग ५०० देवियों के बीच में दश हज़ार से भी ऊपर पुस्तकें पढ़ने के लिये बांटी गई।

चर्खा स्त्रियों के सतीत्व का रक्षक

आचार्य्य राय महोदय ने कहा है कि "चर्खे और खादी के द्वारा हमारी गरीब बहिनें अपना पेट पालते हुये अपने शील की भी रक्षा कर सकेंगी"।

स्त्री शिक्षा पर सेठ जमुनालाल बजाज के विचार।

मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के सभापति के रूप में सेठ जी ने जो भाषण किया उसमें महिला सुधार के प्रश्न पर दृष्टि डालते हुए बतलाया कि "स्त्री शिक्षा के लाभ को हम दिन दिन समझ रहे हैं। पर शिक्षा का रूख पुस्तकों की अपेक्षा सदाचार की ओर अधिक रहना चाहिये। गृह-जीवन की आवश्यकता पर उसमें पूरा ध्यान देना चाहिये और शिक्षा प्रणाली ऐसी होनी चाहिये जिसमें स्त्रियों के शरीर, मन, और आत्मा की समान उन्नति की पूरी सुविधा रहे।"

कहना न होगा कि सेठ जी ने यह कन्या गुरुकुल दिल्ली के कार्य्य की ही अनजान में

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

प्रशंसा की है। आज कल प्रायः सभी भारतीय सभ्यताभिमानी सज्जन हृदय से यही चाहते हैं, परन्तु क्रियात्मक रूप से इसे कार्य्य में परिणत करने से डरते हैं। सौभाग्य की बात है कि आर्य्य समाज ने यह तजुर्वा आरम्भ किया है। परमात्मा बल दें कि यह यज्ञ पूर्ण हो।

अहमदाबाद म्युनिसिपैलिटी द्वारा कन्या पाठशालाओं में चर्खा

गत वर्ष अहमदाबाद की म्यूनिसिपैलिटी की ओर से दो अध्यापक चर्खे की ट्रेनिंग लेने के लिये लगाये गये थे जो कि स्थानीय कन्या पाठशालाओं में बुनना और कातना सिखा सकें। उन्हें छः महीने शिक्षा लेनी पड़ी और अब वहां के स्कूल में यह यह विषय अनिवार्य्य विषय बनने वाला है।

बालिका विनय

विनय कर जोड़कर हे नाथ! यह तुम से हमारी है।
सकल संसार में केवल हमें आशा तुम्हारी है॥
सुवर्णी बालिका हो यदि अशिक्षित, लाभ क्या उससे?
बुझाये प्यास क्या, जल-शून्य जो कंचन की झारी है॥
मिली शिक्षा न कुछ हमको तो आभूषण भी हैं दूषण।
अलङ्कारों से विद्या के महाशोभा हमारी है॥
न जाने किस तरह लीलावती के कृत्य को भूले।
गणित विद्या में जिस से बुद्धि विद्वानों ने हारी है॥
कहां है वो हमारी पथ-प्रदर्शक गार्गी, सीता।
ऋणी जिन के सदुपकारों की यह दुनियां ही सारी है॥
अगर माता पिता चाहें तो हम भी रूप हैं उनका।
हमीं हैं द्रौपदी, हम से अलग कब गान्धारी है॥
"जरूरत ही नहीं है बालिकाओं को पढ़ाने की"
जो यह कहते हैं उनके कण्ठ में यह इक कटारी है॥
कहां से पुष्प वो विकसित हों जो महकाएं भारत को।
असिंचित जल से विद्या के यहां प्रत्येक क्यारी है॥
प्रभो! दीजे दया करके हमें अब दान विद्या का।
तुम्हें दाता समझ कर हमने यह सारी पसारी है॥
नहीं कन्याओं की पर्वा, पढ़ाते हैं तो बेटों को।
मिटादो इसको हे भगवन्! बुरी यह रस्म जारी है॥
वही भारत हो फिर और हों वही भारत की ललनाएं।
वही हो जाय फिर दाता कि जो अबतक भिखारी है॥
सदा फूलें फलें यह और सुख सम्पन्न हो जीवन।
तेरे दरबार में भगवन्! यही अरजी हमारी है॥

"वेताव"

कन्या गुरुकुल की कन्याओं के लेख

[गत मास को ज्योति में स्थानाभाव से हमने केवल एक ही ब्रह्मचारिणी का लेख दिया था। किन्तु कन्याओं को उत्तेजना देने के हेतु यह आवश्यक प्रतीत होता है कि हम अपनी पाठिकाओं के सम्मुख उनके लेख यद्यपि कुछ त्रुटि पूर्ण भी हों तथापि प्रस्तुत करें ताकि वह भी इनकी योग्यता को जानें और भविष्य में यह कन्यायें और भी उत्तम निबन्ध लिखने की ओर लगें। अभी यह इन का प्रथम प्रयास ही है। प्रथम प्रयास में इस प्रकार बिना सहायता के लिखना भी इनके लिये प्रशंसनीय है।] सम्पादिका

कर्तव्य पालन

ले०—कुमारी शकुन्तला देवी।

पूज्य पाठिकाओ! कर्तव्य पालन एक ऐसी वस्तु है जिसका पालन करना हम लोगों का परमधर्म है और जिसके न पालन करने से हम लोगों की दृष्टि से गिर जाते हैं। और अपने कुचरित्र से नीच बन जाते हैं, कर्तव्य पालनका अभ्यास, छोटी ही आयुसे होना चाहिये, यदि छोटी आयु में सीखा जावेगा तो बड़ी आयु होने पर भी किया जायेगा। यह कर्तव्य पालन का विषय बड़ा कठिन है। यह स्वाभाव माता पिता से ही मिल सकता है, क्योंकि जब बच्चा ६,८साल तक माता ही के पास रहता है तो जैसा माता का स्वभाव होगा वह बच्चे पर पड़ेगा। माता जैसा बच्चे को सुशिक्षत बनाना चाहे बना सकती है बच्चे का दिल कच्चे घड़े के समान होता है जैसा घड़ा बन जाता है, चाहे टेढ़ा हो चाहे सीधा हो, परन्तु भट्टे में डाल देने से जब वह पक जावेगा तो यदि वह टेढ़ा होगा तो कभी भी सीधा नहीं हो सकता चाहे कितना भी पुरुषार्थ क्यों न करें। टूट जावेगा परन्तु सीधा कभी नहीं होगा, इसी प्रकार बच्चे का है। बच्चा जो कुछ छोटी आयु में सीख जाता है वह बात कभी नहीं भूलता। इस लिए यदि मनुष्य छोटी अवस्था से ही अभ्यास करता है वह बड़ा हो जाने पर अवश्यमेव ही करता है जिस मनुष्य ने कभी सुना तक भी न हो तो वह बड़ी अवस्था होने पर क्या करता है? कुछ भी नहीं कर सकता। जैसे किसी मनुष्य ने जन्म से गुड़ ही खाया हो तो वह मिश्री और कन्द का स्वाद कैसे जान सकता है? कर्तव्य यह है कि जैसे कोई वस्तु हो उसे हम न चुरायें। यह हमारा कर्तव्य है कि किसी दूसरे की वस्तु को बिना पूंछे अथवा कहे हाथ तक भी न लगायें और हमारा यह भी कर्तव्य है कि यदि कोई असहाय हो तो हम उस की रक्षा करनी चाहिए? मनुष्य का जीवन तो कर्तव्यों से भरा पड़ा है। जिधर देखो उधर कर्तव्य ही कर्तव्य दिखाई देते हैं जैसे पति और पत्नि का, राजा और प्रजाका, लड़के का पिता से इत्यादि, कर्तव्य भी न्याय से हो सकता है। धर्म का अनुष्ठान, पाप का त्याग मनुष्य मात्र का मुख्य कर्तव्य है। इस लिए धर्म और अधर्म का भेद जानने में हमें अपनी प्रकृति इस प्रकार सुधारनी चाहिए कि हमारी विचार शक्ति में कोई भी बाधा न हो सके। योग शास्त्र में भी परमार्थ साधन के नियम लिखे हैं। कर्तव्य पालनार्थ

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

एक मनुष्य ने अपने प्राणों को भी कुछ न समझ कर दूसरों की रक्षा की थी जिस का मैंकु छ शब्दों में वर्णन करती हूँ। एक जहाज़ समुद्र में डूबने लगा तो एक महा पुरुष ने अपना कर्तव्य समझ कर उस डूबते हुए जहाज़ को बचा लिया। उस का कर्तव्य था कि वह उसकी रक्षा करे वही उसने किया उसने अपने प्राणों को भी तुच्छ समझ करके रक्षा की। सहस्त्रों वरंच लाखों मनुष्य की जान बचाई। इसी तरह और उदाहरण भी आप के सन्मुख उपस्थित हैं वह यह कि एक बार एक लड़की पुल के नीचे गायें चरा रही थी कि उधर से रेलगाड़ी सामने आ रही थी। अचानक ही पुल टूट गया। जब उस कन्या ने देखा कि पुल भी टूट गया है और गाड़ी भी समीप आ रही है तब उसने उपाय सोचा। वह यह था कि चादर को खड़ी हो कर घुमाने लगी उसने अपने प्राणों को भी तुच्छ समझ कर हथेली पर प्राण रख कर निधड़क हो कर चादर घुमाने लगी। उधर जब ड्राइवर ने देखा तो वह लड़की के ऊपर बहुत क्रोधित हुआ और उसने गाड़ी ठहराली और लड़की से क्रोधित होकर के बोला कि तूने गाड़ी क्यों ठहराई? तब उस लड़की ने सारा वृत्तान्त कह सुनाया सारे वृतान्त को सुन कर ड्राइवर बहुत प्रसन्न हुआ और उस गाड़ी में से स्त्री पुरुषों ने उतर कर उस लड़की को बड़ा धन्यवाद दिया, उस गाड़ी में से एक स्त्री ने उस लड़की को पारितोषिक देना चाहा परन्तु उस लड़कीने स्वीकार न किया। उसने कहा कि "हे माता मेरा यह कर्तव्य था कि ऐसे संकट के समय रक्षा करती यही मैंने किया है" लोभ से तो मैंने यह कार्य्य किया ही नहीं है। यह सब ही का कर्तव्य है कि असहाय की रक्षा करनी चाहिए। आप ही देखिए उस लड़की ने अपना कर्तव्य समझ कर के उसका पालन किया नहीं तो सहस्त्रों वरंच लाखों मनुष्य की जान चली जाती। उस देवी को धन्य है जो कि अपने प्राणों को भी तुच्छ समझ कर डूबते हुए जहाज़ की रक्षा की। बहिनों तथा माताओं! हमको भी ऐसा ही बनना चाहिए यह नहीं कि हम किसी को पीड़ा दें या और दुःखों में डाल दें। नहीं नहीं हम किसी को दुःखी देख कर जहां तक हो सके उसके कष्ट निवारण करनेकी चेष्टा करें और यह भी नहीं कि लोभ में आकर करें। नहीं स्वार्थ रहित अपना कर्तव्य समझ करके करें, कर्तव्य पालन यह भी है कि माता पिता गुरु तथा आचार्य्य जो आज्ञा दें तो हमारा कर्तव्य है कि हम उन की आज्ञा को शिरोधार्य करें और कभी न हिचकायें चाहे कितना भी विपत्ति का समय क्यों न हो तब भी यह हमारा कर्तव्य है कि हम उनकी आज्ञा को उसी समय शिरोधार्य करें। और यह भी हमारा परम है कर्तव्य है कि जब माता पिता बूढ़े हो जायें तो हमें उनकी सेवा करना चाहिये यह हमारा मुख्य कर्तव्य है। और कई लोग ऐसे हैं कि मनुष्यवध करते हैं। उन के मनमें सरकार का भय होता है तो इस लिए वह ऐसा नीच कर्म करने से किंचित् हट जाते हैं नहीं तो उन के मन में कुछ भी दया नहीं आती है जब कि वह मनुष्यबध करते हैं लोभ के लिए उनके मनमें यह नहीं आता कि हमारा कर्तव्य है कि हम किसी की वस्तु को न चुरायें और मनुष्य हत्या तो कहां ठहरी? कहा तो यह गया है कि जो मनुष्य असयहाय हों हमें उनकी रक्षा करनी चाहिए परन्तु यहां क्या मनुष्यहत्या होती है। मनुष्य हत्या से बढ़कर कोई पाप नहा है इसी तरह एक मनुष्य ने तो एक जहाज़ डूब गया तो उसके मनुष्यों के प्राणों की रक्षा

की परन्तु दूसरे ने अपने कर्तव्य को नहीं समझा उस मनुष्य के प्राण चाहे चले जाते परन्तु उसका कर्तव्य था कि वह उस डूबते हुए जहाज़ की रक्षा करता जिस से लाखों मनुष्योँ की जान बचजाती परन्तु सने क्या किया कि अपने कर्तव्य को न जान कर केवल अपने प्राणों की रक्षा की। नहीं हमें ऐसा नहीं बनना चाहिए। जब भी हम किसी मनुष्य को भारी सँकट में पड़ा देखें तो हमारा कर्तव्य है कि हम उस की रक्षा करें। कर्तव्यपालन सब प्राणी मात्र को करना चाहिए। मेरी जो अशुद्धि रही हो उसे पाठक लोग क्षमा करें।

सत्य

लेखिका—कुमारी शान्ति देवी।

पहिले २ हमें यह ज्ञात होना चाहिये कि सत्य किसे कहते हैं और उसके क्या स्वरूप हैं? जो न्याय धर्म से युक्त और सृष्टि के अनुकूल हो वही सत्य कहलाता है। और सत्य के १३ स्वरूप हैं। सत्य समता, दम, अमत्सरता, क्षमा, लज्जा, सहनशीलता, अनसूया, त्याग, ध्यान, धैर्य्य सर्वदा दया, अहिंसा, हे राजेन्द्र! ये तेरह सत्य के स्वरूप हैं। यथा—

(१) सत्यञ्च समता चैव दमश्चैव न संशयः,
अमात्सर्यं क्षमा चैव ह्रीस्तितिक्षा न सूयता।
(२) त्यागो ध्यानमथार्यत्वं धृतिश्च सततं दया,
अहिंसा चैव राजेन्द्र सत्याकारास्त्रयोदश।

यह जितने भी स्वरूप हैं यदि इसका पालन किया जाय तभी मनुष्य सत्यवादी कहलाता है।

अब मैं सत्य के गुणों का वर्णन करती हूँ। इस संसार में सत्य से बढ़कर कोई धर्म नहीं। सत्य बोलना ही श्रेष्ठ कहा है, यथा 'सत्यस्य वचनं साधु न सत्यात् विद्यते परम्।'

सत्य स्वर्ग का सोपान है। इसलिये जिस सत्य पर चल कर ऋषि मुनि उस परमानन्द को प्राप्त हुए हैं उसी सत्य को हम ग्रहण करें, सत्य ब्रह्मचर्य्य का सार है। ऋषि दयानन्द का उदाहरण हमारे सामने है कि जिन्होंने जो सत्य को ग्रहण कर और ब्रह्मचर्य का पालन करके परमानन्द को प्राप्त किया। इसी प्रकार युधिष्ठिरादि सत्य बोलने के कारण स्वर्गगामी हुए। सत्य से मनुष्य संसार में विख्यात होता है। ऋषयश्चैव देवाश्च सत्य मेव हि मेनिरे।

ऋषि देवता लोगों ने सत्य ही को श्रेष्ठ समझा इसलिये आज तक भी इनका नाम विख्यात है। सत्य तो सज्जनों का धर्म और सनातन धर्म है। सत्य ही को नमस्कार करना चाहिये क्योंकि सत्य ही परमगति है। जैसे कहा है कि:-

सत्यं सत्सु सदा धर्मः, सत्यं धर्मः सनातनः।
सत्यमेव नमस्येत सत्यं हि परमागतिः॥

मनुष्यों का एक सत्य ही धर्म है, सत्य ही तप है, सत्य ही सनातन ब्रह्म है, सत्य प्रधान यज्ञ है, सत्य तो सब का प्रतिष्ठित है जैसे कहा है कि:—

सत्यं धर्मस्तपो योगः सत्यं ब्रह्म सनातनम्।
सत्यं यज्ञः परः प्रोक्तःसर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्॥

सत्य की गति को वही मनुष्य जान सकता है जो धर्मात्मा हो। धर्म के जानने वाले मनुष्यों ने सत्य को ही उत्तम माना है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सनातन धर्म का ज्ञान प्राप्त करना कठिन है परन्तु वह सत्य ही में स्थिर रहता है जैसे

सत्यार्जवं परं धर्म माहुर्धर्म विदोजनः।
दुर्ज्ञेयः शाश्वतो धर्मः सच सत्ये प्रतिष्ठितः॥

सत्य बोलना तो यजुर्वेद के ४० अध्याय के ३३ वें मन्त्र में भी आता है कि सब को सत्य बोलना चाहिये। असत्य का परित्याग करना चाहिये। सत्य एक ओर और दूसरी ओर अङ्ग उपांगों के सहित चारों वेदों का स्वाध्याय यह दोनों ही बराबर हैं। चारों वेदों के अध्ययन का जो फल होता है वह सत्य बोलने का भी है। जैसे श्लोक में भी आता है

चत्वार एकतो वेदाः सांगोपांगाः सविस्तराः।
स्वधीता मनुजव्याघ्र सत्यमेकं किलैकतः॥

पूज्य पाठिकाओ? जब कि सत्य की इतनी महत्ता है कि वेदों के साथ तुलना है तो हमें चाहिये कि हम सत्य के गुणों को जान कर उससे लाभ उठायें। संसार में सत्य के आश्रय से व्यवहार सम्पन्न होते हैं, सत्य धर्म के आश्रय से मनुष्य जो कर्म करता है उसके उसी कर्म को सफल समझना चाहिये। सत्य से साक्षी पवित्र होता है सत्य से धर्म बढ़ता है और धर्म की रक्षा होती है। इस लिये सब वर्ण के साक्षियों कों सर्वदा सत्य बोलना चाहिये। जैसे कहा है कि—

सत्येन पूयते साक्षी धर्मः सत्येन बर्धते।
तस्मात् सत्यंहि वक्तव्यं सब वर्णेषु साक्षिभिः

और यह भी नहीं कि कह दिया कि यह बात सत्य है, पर हो असत्य। ऐसा भी नहीं होना चाहिये। परन्तु जो देखा गया हो वही कहना सत्य कहा जाता है और कही हुई बात पर अटल रहना यही सत्य है।

असत्य से हानि--असत्य से हमें बहुत हानि होती है। असत्य बोलने से निन्दा होती है मनुष्य का सदा के लिये विश्वास चला जाता है जो मनुष्य मोह वश असत्य बोलता है उसका समूल नाश हो जाता है और इस लोक तथा परलोक का फल उसे नहीं मिलता जैसे कहा है कि।

समूल एव शुष्येत्स लोक द्वय फलं विना।
अनृतं यो वदेत् क्वापि पुरुषोपरिमोहितः॥

आज इसी असत्य के कारण ही संसार दुःख उठा रहा है। कई मनुष्य कहते हैं कि कुल धर्माः सनातनाः तो उनके मन में यह नहीं आता कि क्या हमारे पूर्वज असत्यवादी थे? कभी नहीं। उनके चाहे प्राण चले जाते थे चाहे कितनी विपत्तियां भोगनी पड़तीं परन्तु वह अपनी सत्य प्रतिज्ञा को कभी नहीं छोड़ा करते थे। हमें साक्षात् दृष्टान्त मिलता है भीष्म पितामह ने कितने कष्ट सहे परन्तु अपनी प्रतिज्ञा को सत्य कर दिखाया। इसी तरह रामचन्द्र जी ने अयोध्या का राज्य परित्याग कर दिया। पर सत्य प्रतिज्ञा नहीं छोड़ी। इसी तरह राजा हरिश्चन्द्र जी ने सत्य के ही कारण अपनी स्त्री पुत्र को बचा और अपने आप चांडाल के घर काम करने लगे इसलिये यदि कुल धर्म सनातन है यह भी माने तो चाहिये कि जैसे हमारे पूर्वज सत्य पर दृढ़ रहते थे इसी प्रकार हम भी रहें। जो अशुद्धि हो उसे पाठक क्षमा करें।

उद्योग

लेखिका -कुमारी सुलभा देवी।

प्रिय पाठिकाओ! आज कल भारतवर्ष पुरुषार्थ से हीन हो गया है उद्योग किस को कहते हैं! और उसके क्या भेद हैं! यह मैं आप

को बतलाना चाहती हूं। उद्योग का नाम पुरुषार्थ है और उसके चार भेद हैं? अप्राप्त की इच्छा (२) प्राप्त की भली प्रकार रक्षा करना। (३) रक्षित की बढ़ती (४) बढ़ाये हुये पदार्थों का धर्म में खर्चा करना यह उस के चार भेद हैं।

उद्योग से लाभ—उद्योग से हर प्रकार के लाभ ही लाभ हैं, इससे हमें कुछ भी हानि नहीं। इस कारण उद्योग करना प्रत्येक मनुष्य का परम कर्तव्य है कई इस प्रकार के मनुष्य हैं जो हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहते हैं और कहते हैं जो भाग्य में होगा सो मिल जायगा। परन्तु मनुष्य को अवश्य ही उद्योग करना चाहिये उद्यम से ही सब कार्य्य सिद्ध होते हैं बिना उद्यम के कोई मनोरथ सिद्ध नहीं होते जिस प्रकार यदि सोता हुआ शेर यह इच्छा करे कि मेरे मुंह में मृग आ जाय इसी प्रकार वह मनुष्य हैं जो हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहते हैं और कहते हैं कि जो भाग्य में होगा सो मिल जायगा इस प्रकार कहने वाले मनुष्यों को जो भाग्य में होता वह भी नहीं उन को मिलता जब तक कि आत्मा से पुरुषार्थ नहीं करते। श्री दयानन्द सरस्वती जी ने अपने पढ़ने के लिये कितने कष्ट उठाये उन सब कष्टों को संसार ही जानता है यदि वह उद्योग न करते और हाथ पर हाथ धर कर बैठे रहते तो उनको विद्या किस प्रकार प्राप्त हो सकती थी? देखो लेखराम जी अपने पढ़ने के लिये रात्रि को सड़कों की लैम्पों की मदद लिया करते थे। उद्योग ही के कारण वह पढ़ सके जैसे कई मनुष्य कहते हैं कि:—

पठितव्यम् तदपि मर्तव्यम् न पठितव्यम्।
तदपि मर्तव्यम् दन्तकटाकटेति किं कर्तव्यम्

जो मनुष्य उद्योग से हीन होते हैं वे ही कहा करते हैं। यदि सभी मनुष्य इस प्रकार करें तो देश की न जाने कौनसी बुरी दशा हो जाय परन्तु इस प्रकार के बहुतेरे मनुष्य हैं जो उद्योग को एक परम कर्तव्य मानते हैं। जैसे वेद में कहा है कि कुर्वन्ने वेह कर्माणि जिजीविषेच्छतँ समाः। जो मनुष्य सौ बरस तक जीने की इच्छा करता है वह उद्योग को करते सौ बरस तक जीने की इच्छा करे। जिस के ऊपर विपत्ती पड़ने पर दुःखी नहीं होता और सावधान होकर उद्योग करता रहता है, समय पड़ने पर दुःख भी उठाता है जिसकी आत्मा बड़ी प्रबल है और जो उद्यमी है उस की विपत्ति का नाश हो जाता है। इसी प्रकार जो मनुष्य उद्योग करतेरहते हैं उनको सर्वदा आनन्दही आनन्द प्राप्त होता है इस लिये प्रत्येक प्राणी को उद्योग करना आवश्यक है। जो याचक सारा दिन भीख मांगते रहते हैं उन याचकों से पूछना चाहिये कि क्या तुम्हारे में कार्य्य करने की शक्ति नहीं है? नहीं है परन्तु उनको केवल कुत्तों का तरह दुत्तकारे जाना ताथ गालियां सुनना ही अच्छा लगता है। उनको भीख मांगने से यही अच्छा है कि कहीं नौकरी करलें परन्तु उनको यह कार्य्य शोभा वाले नहीं लगते। केवल उनको दुत्तकारा जाना ही अच्छा लगता है। मनुष्य को उद्योग से कभी रहित नहीं होना चाहिये। उद्यम के करने वाले मनुष्यों को कभी भी दुःख नहीं होता जैसे कहा है कि:—

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान्रिपुः।
नास्त्युद्यम समे बन्धुः कृत्वायं नावसीदति॥

आलस्य शरीर में रहने वाला बड़ा भारी शत्रु है उद्यम के समान मनुष्यों का कोई मित्र नहीं है जिस उद्यम के करने से मनुष्य कभी दुःखी नहीं होता। और उद्योग ही लक्ष्मी की जड़

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

है उद्योग ही पुरुष संसार में बड़ा होता है और अनन्त सुख को प्राप्त करता है। उद्योग के करने से मूर्ख भी विद्वान् हो जाता है, और धीरे २ पर्वत भी चूर्ण हो जाता है, यह सब उद्योग ही की महिमा है। जो मनुष्य उत्साह से हीन हैं वे ही दीन हैं और वह सर्वदा शोक से व्याकुल रहते हैं। इस प्रकार के मनुष्यों के सभी मनोरथ नष्ट हो जाते हैं। जो मनुष्य भाग्य के भरोसे बैठे रहते हैं उनके कदापि मनोरथ सिद्ध नहीं होते विश्वामित्र ने भाग्य को त्याग कर पुरुषार्थ के द्वारा ही ब्रह्मज्ञानता प्राप्त की थी दूसरे प्रकार नहीं। जैसे कहा है:— "न दैवमिति संचिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः। अनुद्यमेन कस्तैलं तिलेभ्यः प्राप्तु मिच्छति।" कहते हैं कि भाग्य के भरोसे पर उद्योग को नहीं छोड़ना चाहिये। बिना उद्योग के कौन मनुष्य तिलों से तेल को पाता है? मनुष्य कहते हैं कि भाग्य ही के भरोसे सब कार्य्य सिद्ध होते हैं अतः मनुष्य को उद्योग करना निरर्थक है। स्नान, दान, बैठना, आदि जो कार्य्य हैं वह सब भाग्यही किया करेगा? उद्यमके करने पर यदि मनुष्य धन सुख और कीर्ति को प्राप्त न हो केवल अनर्थ ही अनर्थ हो फिर भी धीर पुरुष अपनी प्रतिज्ञा पर आरूढ़ रह कर कार्य्य को आरम्भ करते रहते है तो उन पुरुषों को अवश्यही उस उद्यम का फल प्राप्त हो जाता है। जैसे कहा है "उद्योगिनं पुरुष सिंह मुपैति लक्ष्मी, दैवेन देयमिति का पुरुषा वदन्ति। दैवं निहत्य कुरुपौरुषमात्मशक्त्या। यत्ने कृते यदि नसिद्धति कोऽत्रदोषः।" कहते हैं कि उद्योगी पुरुष ही को लक्ष्मी प्राप्त होती है जो मनुष्य कहते हैं कि दैव देगा यह कायर पुरुष कहाते हैं। दैव को मार कर आत्मा से से पुरुषार्थ करना चाहिये। यदि उद्योग करने पर भी सिद्ध न हो तो इस में मनुष्य का कुछ भी दोष नहीं केवल भाग्य ही का दोष है। यह श्लोक हमें स्पष्ट दर्शाता है कि प्रत्येक मनुष्य को उद्योग करना चाहिये यह मनुष्य का धर्म है मैं अपनी ओर से बारम्बार यही कहूँगी कि प्रत्येक को उद्योग करना चाहिये। जो मनुष्य उद्योग से रहित हैं उनका जीवन इस संसार में व्यर्थ है इस कारण उद्योग को परम कर्तव्य माना गया। अब मैं समाप्त करती हूं और जो कुछ भी मेरे से अशुद्धि होगी प्रिय पाठकायें मुझे क्षमा करेंगी।

विचार प्रवाह

हिन्दू महासभा

चिरकाल से हिन्दू महासभा की धूम मच रही थी हमारे दिल में भी विचार आते थे कि पता नहीं हिंदू महासभा का दिल्ली का अधिवेशन क्या २ खूबियाँ दिलायेगा। पर यहां तो यह बात हुई कि 'खोदा पहाड़ और निकला चूहा'। हम यह नहीं कहना चाहते कि हिन्दू महासभा के इस उत्सव का कुछ लाभ ही नहीं हुआ। हमारा तो केवल यह कहना है कि जितना पुरुषार्थ, जितना धन, जितना समय, इसके संगठन

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by

में लगाया गया उतना लाभ नहीं मिला। और होता भी कैसे? यहां तो अपनी २ ढपली अपना २ राग था। हिंदू जैसे २ विभिन्न सम्प्रदायों में बंटे हैं और जब तक प्रत्येक का व्यक्तित्व इतना पृथक है कि समष्टि रूप में वह सभा ही नहीं सक्ता तब तक संगठन कैसे हो सक्ता है?

प्रथम तो हिन्दू सभा के मुख्य २ कार्य अछूतोद्धार, शुद्धि, विधवा विवाह हिन्दी प्रचार आदि वही हैं जोकि सैकड़ों और हजारों की संख्या में स्थल२ पर आर्य समाजों द्वारा किये जा रहे हैं। और दिल्ली की इस बैठक में उन कार्यों के करने की नवीन विधि कुछ भी नहीं निकली। अतः यदि इन्हीं कार्यों के लिये इतना पुरुषार्थ था तो वह पिष्ट पेषण मात्र ही था।

दूसरे यदि कहा जाय कि आर्य्यसमाज एक सम्प्रदाय है हिन्दू महासभा के अन्तर्गत सारे भारतीय हिन्दू सम्मिलित हैं, अतः इस का मूल्य बहुत है। तो अछूत कान्फ्रेंस, सनातन धर्म सम्मेलन, अग्रवाल महासभा विधवा विवाह सहायक सभा आदि के अधिवेशनों के होते हुये हिन्दू महासभा के अस्तित्व की आवश्यक्ता का क्या समर्थन हो सक्ता है? हां एक समर्थन है। वह यह कि वह आर्य्य समाज और अन्य हिन्दू नाम धारी मतावलम्बियों के मध्य में एक हाफ़ वे हाऊस है। जिन्होंने मसूरी देखा है उन्हें उस केलाभ पता हैं मसूरी पहुंचने में कितनी देर है यह हाफ वे हाऊस तक पहुँचने न पहुंचने से अनुमान लगाया जाता है। इसी प्रकार विभिन्न मतावलम्बी उन्नति के पथ से अभी कितनी दूर हैं यह हिन्दू सभा में भाग लेने न लेने वाले सूचित कर रहे हैं। जिसने समष्टि के लाभ में अपने व्यक्तित्व को निमग्न नहीं कर दिया वह जाति क्या दावा कर सकती है कि वह संघशक्ति उत्पन्न करेगी? अच्छूतों को कुवें पर चढ़ाने, शिक्षणालयों में लेने और मन्दिर में जाने देने की प्रस्ताव पेश होते ही इन की संगठन शक्ति काफूर होगई। अच्छूतों के सम्बन्ध का यह प्रस्ताव इतना न्यायसंगत त्रुटि विहीन और समयानुकुलथा कि दिल्ली हिन्दूमहासभा में से किसी भी सनातन धर्मी को इस के विरुद्ध आवाज़ उठाने की आवश्यकता ही न थी। परन्तु बहुतेरे पिंडाल से बाहर उठ२ भागने लगे मानों उन पर बम्ब के गोले बर्साये जाने वाले हैं। जब हमारे कुछ देश बन्धुओं के दिल इतने अनुदार हैं तो संघ शक्ति की आशा दुराशा मात्र है।

सभापति राजा नरेन्द्रनाथ का भाषण छोटा तथापि युक्ति युक्त था। उन्होंने बहुत सा बल सीमा प्रान्त के हिन्दुओं की दशा विचारने तथा उन की रक्षा के उपायों पर लगाया। प्रस्तावोंमें से कई निरर्थक भी थे। आशा है कि हिन्दू महासभा के सदस्य अपने पुरुषार्थ और उस के फल पर विचार करके भविष्य में अधिक उपयोगी कार्य्य क्रम बनावेंगे।

अखिल भारतवर्षीय
मारवाड़ी अग्रवाल महासभा
सेठ जमुनालाल जी का भाषण
खादी पर बल

अखिल भारतीय अग्रवाल महासभा के दिल्ली अधिवेशन के सभापति के रूप में श्रीमान् सेठ जमुना लाल जी ने जो विचार प्रगट किये हैं वह उनके बिलकुल अनुरूप हैं। यद्यपि यह भाषण एक विशेष समूह के लिये था किन्तु कई विषयों पर जो उदार और

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सुन्दर भाव उन्होंने प्रगट किये हैं वह समस्त भारतीयों के लिये स्मर्ण रखने योग्य है। आपने समाज सुधार, व्यापार का आदर्श, गौरक्षा, विलासिता, बाल विधवा विवाह तथा खादी प्रचार आदि सभी उपयोगी और समयोचित कार्य्यों पर उदार भाव से दृष्टि डाली है। तथापि खादी के सम्बन्ध में जो भाव प्रगट किये हैं उन्हें सब के लाभार्थ यहां उद्धृत किया जाता है आशा है कि ज्योति के सभी पाठक इस पर ध्यान देंगे। वह कहते हैं:—

खादी

"मेरी राय में खादी ही एक ऐसी वस्तु है जिसका व्यापार भी देशहित के अनुकूल है और जिस में धन लगाना भी परम देश सेवा करना है। जब से भारत से चर्खा गया तब से मानो उसकी श्री चली गई। खादी से हम अपने श्रीहीन, गरीब, नंगे-भूखे भाइयों की झोंपड़ियों में आशा की किरणें भेज सकते हैं, उनसे अपना सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं और स्वयं अपने लिये भी अच्छा नीतिशुद्ध और प्रतिष्ठास्पद धन्धा पा सकते हैं। खादी से जीवन में सादगी आती है, नियमितता आती है। देश का करोड़ों रुपया जो बाहर के करोड़पतियों की धनवृद्धि करता है वह खादी की बदौलत देश में ही रह कर, गरीबों के घर में पहुँच कर, उनके रोटी-कपड़ों का ठिकाना लगावेगा। आचार्य राय ने बहुत ठीक कहा है कि जिस घर मे खादी सदर दरवाजे से प्रवेश करती है उसमे आडम्बर—फैशन और फजूलखर्ची चोर की तरह पिछले दर्वाजे से निकल भागते हैं। चरखे और खादी के द्वारा हमारी गरीब बहनें अपना पेटपालते हुए अपने शील की भी रक्षा कर सकेंगी। मैंने अपनी खादीयात्रा मे प्रत्यक्ष भी इसका अनुभव किया है और आप लोगों से भी अनुरोध है कि आप अवकाश निकाल कर खादी पैदा करने वाले केन्द्रों में जाकर स्वयं इसका अनुभव करें। मेरी राय मे आज इन स्थानों का महत्व किसी तीर्थ स्थान से कम नहीं है। खादी के द्वारा आर्थिक स्वतन्त्रता का प्रश्न हम जितना ही हल कर पावेंगे उतना ही नजदीक हम स्वराज्य को देखेंगे, इस विषय मे मुझे तिल मात्र भी सन्देह नहीं है। खादी से हमारा कपड़ों का खर्च और फैशन भी कम हो जायगा। हमारी गति विलासिता से हट कर जीवन को ऊंचा और कल्याणकारी बनाने की ओर होगी। अतएव मेरी राय मे हम व्यापारियों को खादी के काम में हर तरह से मदद देनी चाहिये। महात्मा जी ने खादी प्रचार के लिये एक चर्खासंघ कायम किया है, यह तो आप में से बहुतेरे जानते होंगे। उसको सहायता देकर आप खादी के प्रचार मे बहुत मदद कर सकते हैं मेरी आप सब लोगों से प्रार्थना है कि आप खुद खादी पहिनए। जिस तरह अपने घर का भोजन हमे रुचिकर और स्वादिष्ट जान पड़ता है और हम होटल के भोजन की अपेक्षा उसी को पसन्द करते हैं और स्वाभाविक समझते हैं, उसी प्रकार घर की बनी खादी हमे प्रिय होनी चाहिये। कम से कम हम अपने गांव, प्रान्त या देश की ही खादी पहिनने का संकल्प तो अवश्य करें। इसके अलावा हम स्वयं खादी की उत्पत्ति के कारखाने और बिक्री के भण्डार भी खोलें। चरखा-संघ को हर तरह से मदद दें। कम से कम खादी की संस्थाओं को बिना ब्याज रुपया तो अवश्य दें। राजस्थान खादी के लिए बड़ा अनुकूल क्षेत्र है।

ऐसा अनुमान है कि वहां सारे भारत से सस्ती खादी तैयार की जा सकती है। यह हम राजस्थानी व्यापारी तथा कार्यकर्ताओं के लिए लुभावनी वस्तु होनी चाहिये। हमें अपना रुपया और शक्ति दिल खोल कर खादी की उन्नति में वहां लगाना चाहिये। इस प्रकार खादी में स्वार्थ और परमार्थ दोनों हैं। मुझे इन दोनों के लिए इस युग में इससे बढ़कर कोई अच्छा साधन न हीं दिखाई देता "आम के आम गुठली के दाम" यह कहावत खादी-व्यवहार और खादी-व्यवसाय पर सोलहो आना घटती है। खादी की महिमा अब दिन दिन बढ़ती जाती है और जिसने एक बार इसे श्रद्धा के साथ अपनाया है उसने फिर नहीं छोड़ा है। खादी के आचार्य महात्माजी तो रोज ही खादी का गुण गाते है उससे अधिक मैं क्या कहूं। मैं तो अपने अनुभव से आप को यही कहना चाहता हूं कि खादी हमारे चरित्र-सुधार के लिये एक महान उपदेशक का काम करती है, देश की दरिद्रता मिटाने के लिए ईश्वरीय वरदान का काम करती है, और स्वराज्य को नजदीक लाने के लिए एक महान् नेता या सेनापति का काम करती है। वर्तमान भारत की मुक्ति खादी से ही है इस में मुझे कोई संदेह नहीं है।

जातीय सप्ताह

जातीय सप्ताह पास आ रहा है उसके सम्बन्ध में यंग इन्डिया की सम्मति यह है— "हमारे जातीय जीवन में यह अप्रेल ६ और १३ कभी भूलने वाले दिन नहीं हैं। सन् १९१९ के ६ अप्रेल ने वह अद्वितीय समारोह देखा जिस में हिन्दू मुसलमान तथा अन्य लोग स्वच्छन्दता से सम्मिलित हुये थे। वह दलित जातियों के लिये भी स्वतन्त्रता का दिन था। उस दिन सच्चे अर्थों में स्वदेशी की नींव पड़ी, उस दिन सारे देश ने सविनय अवज्ञा भंग की, उसी दिन समष्टिरुप से जनता में स्वातन्त्र्य और सहनशीलता के भाव फैल रहे थे।

१३ अप्रेल ने जलयांवाले बाग में हिन्दू मुसलमान और सिखों के रक्त की एक लाल नदी बहते हुये देखीं। उसी दिन एक कूडा-खाना समग्र भारत वर्ष के लिए राजनैतिक धर्म मन्दिर में बदल गया। और यह भारत वर्ष की आयु पर्य्यन्त रहेगा। उस दिन से आज तक कितनी ही घटनायें हो चुकीं हैं। सन् १९२१ में हमारी आशा उमंगे अपनी उच्चतम चोटी तक पहुंच गई थी मानो उसी क्षण टुकड़े २ होने के लिये थीं। उस समय से प्रवाह शान्त है। हमारे लिये आज कल अर्ध रात्रि का अंधेरा हो रहा है शायद हमें और भी निविड़ अन्धकार देखना बदा हो। लेकिन यह पुण्य सप्ताह अब भी हमारे लिये आशा का संचार करने वाला है, इस लिये हमें इसे धूम धाम से मानना चाहिये चाहे आज कल हम दो टुकड़ों में फटे हुये हैं, भारत सर्कार भी हमारी जातीय मांगो पर बिना ध्यान दिये ही दुत-कार रही है, चाहे वह कितने ही आवश्यक और न्याययुक्त क्यों न हों।

लेकिन परमात्मा की सृष्टि में अनन्त अंधकार कभी नहीं रहता। अतः हमें पूर्ण विश्वास है कि हमारी रात्रि का भी अन्त होगा। केवल हमें उसके लिये यत्न करना चाहिये।

हम जातीय सप्ताह किस प्रकार मनावें ?

क्या हड़ताल से ? नहीं। क्या सविनय अवज्ञा भङ्ग से ? नहीं। अभी नहीं। हम हिन्दू मुसलमानों के ऐक्य की भी न तो

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

घोषणा कर सकते हैं और न आनन्द मना सकतेहैं, क्योंकि हम दोनों जातियां एक दूसरे को अविश्वास की दृष्टि से देखते हैं और एक दूसरे के विरुद्ध अपने को संगठित करने में बजाय अपनी क्षमा शीलता और सहायता को काम में लाने के सर्कार की सहायता लेते हैं। इस लिये यह प्रश्न भी कुछ काल के लिये अपने आप सिद्ध होने के लिये छोड़ देना चाहिये। अछूतपन बेशक धीरे २ परन्तु निश्चय से दूर हो रहा है। और खद्दर ही केवल एक वस्तु है जिधर जनता का पुरुषार्थ लग सकता है और जिस को जनता समष्टिरूप से प्रदर्शन कर सकती हैं। इस वेदी पर सभी लोग एक साथ कार्य्य कर सकते हैं। अतः इसकी बिक्री के लिये संगठित रूप से प्रयत्न किया जा सकता है, चर्खा कातने वाले स्वयं सेवक बढ़ाये जा सकते हैं खद्दर के प्रचार के लिये देशबन्धु दास की स्मृति में जो फण्ड बना है उसके लिये दान एकत्र किया जासकता है और भी कई तरीके उत्सव मनाने के हो सकते हैं और स्थानीय कार्य्य कर्ताओं के ऊपर निर्भर है कि वह किस प्रकार जातीय सप्ताह मनावें। मैं तो उन्हीं सर्व जनिक कार्य्यों को सोच सकता हूँ जिन में लाखों जन भाग ले सकें, जोकि उन पुराने सात दिनों का स्मर्ण दिला सकें और जिससे स्वराज्य प्राप्त निकट होती जाय। और इन आवश्यकताओं को पूरा करने का साधन चर्खे के अतिरिक्त मुझे और कुछ सूझता ही नहीं।

अहा! एक चीज़ तो है जिसे हम सच्चे हृदय से और अच्छी तरह कर सकते हैं। इस से हम में खोया हुआ आत्माभिमान आयेगा और इससे हमें बाधाओं के रोकने का बल भी प्राप्त होगा। चर्खा ही एक ऐसी चीज है जिस में पुरुष स्त्री लड़के लड़कियां सभी धर्मों को और सभी वर्गों के लोग भाग ले सकते हैं। यही एक चीज अमीर ग़रीब के बीच में जोड़ने वाली चेन है और यही एक चीज है जो कि अधमरे किसानों की अन्धेरी और टूटी फूटी काल कोठरी में सूर्य्य की किरण पहुंचा सकेगी, अतः जिन्हें विश्वास है उन्हें चाहिये कि इस जातीय सप्ताह में खद्दर को सर्वप्रिय बनाने में अधिक उद्योग करें।

हम समझते हैं कि महात्मा जी के इस प्रोग्राम के साथ बहुत से नर नारी सहमत होंगे। अतः ज्योति के पाठक पाठिकाओं के सन्मुख उन के विचार ज्यों के त्यों रखे गये हैं हमें पूर्ण आशा है कि अपने २ स्थानों पर प्रत्येक जन खद्दर का प्रचार करने में यत्न वान होंगे और सारे सप्ताह स्वयं चर्खा चला कर और यदि सम्भव हो तो चर्खा दंगल संगठित करके कातने के कार्य्य को फैलाने में सहायक होंगे।

धनवान नर नारियों को उचित है कि वह सोने और चांदी के पदक (तमगे) बनवायें और सर्वोत्तम कातने वालों को प्रदान कर उन्हें उत्तेजना देवें और कम से कम इस एक सप्ताह तक कोई भी भारतीय विदेशी वस्त्रों को न पहिने और चाहे किसी उत्सव या समारोह में जावे तो भी शुद्ध खादी के ही वस्त्र धारण करके जावें। ताकि जातीय सप्ताह की पवित्र स्मृति उनके हृदयों पर अंकित रहे और उन्हें स्वराज्य के मार्ग पर चलने की ओर संकेत करती रहे।

चीन के मन्त्री की संस्कृत विद्या के प्रति श्रद्धा

यद्यपि संस्कृत हमारे भारत की प्रचीन मातृ भाषा है और कभी धारा प्रवाह बोली

जाती थी किन्तु आज कल इसका भाग्य सूर्य मन्द पड़ गया है। परन्तु हीरे की परख जौहरी ही जानता है। विदेशी देशों में इस की आज भी बड़ी क़दर है और प्राचीन ग्रन्थों के पढ़ने के लिये रुचि है। 'दि यंग ईस्ट नामक पत्रियें लिखता है कि मिस्टर बंग जंन-पांवाँ जो जापान में चीन के राजमन्त्री हैं वह टोकियो इम्पीरियल युनीवर्सिटी के डाक्टर यम, नेगाई की सहायता से संस्कृत विद्या का अभ्यास कर रहे हैं और अध्ययन करते २ सूत्र ग्रन्थों के चीनी अनुवाद की संस्कृत के सूत्रों के साथ तुलना भी करते जाते हैं।

हमारे नये वाइसराय लार्ड अर्विंग

भारत के नये वाइस राय लार्ड अर्विंग भारत के लिये चल पड़े हैं। आप ने विलायत से चलते समय रायटर को जो सम्वाद भेजा है उसका सारांश यह है कि वह भारत में अपने शासनकाल को बड़ी उत्सुकता से देखरहे हैं। उन्हें यह भी ज्ञान है कि उनके सामने जो कार्य्य है वह सुगम नहीं है लेकिन उन्हें विश्वास है कि भारत में उन्हें जिनके साथ वास्ता पड़ेगा उन के हार्दिक सहयोग से वह उन कठिनाइयों को पार करसकेंगे। और अपने शासन को वैसा ही सफल बनावेंगे जैसा कि लार्ड रेंडिंग ने अपना शासन बनाया। भारतीयों के लिये यह संन्देशा साफ है। कोई नृप होय हमें क्या हानि। चेरि छांड़ि न कहा उब रानी" अतः भारत का यदि कुछ सुधार होगा तो भारतीयों के अपने उद्योग से ही होगा। वाइसराय के परिवर्तन से नहीं। वाइसराय लोग सहयोग २ पुकारते रहते हैं परन्तु यह नहीं विचारते कि बकरे की मां कब तक शिन्नी चढ़ायेगी। भक्ष्य और भक्षक की प्रीति विपत्ति का ही कारण बनती है। जब तक भारतीयों की सम्मति की क़दर नहीं होती तब पूरा सहयोग असम्भव है।

सावधान

सब आर्य सज्जनों एवं देवियों को सूचित किया जाता है कि वह संस्कार चन्द्रिका का अवैदिक नक़ली संस्करण कम दाम देकर न खरीदें परन्तु हमेशा खरीदते समय याद रखें कि संस्कारचन्द्रिका का वैदिक संस्करण श्रीमान् राज्य रत्न आत्मा राम जी अमृतसरी ने लिखा है। वह वैदिक प्रेस अजमेर तथा बड़ौदा का छपा देखें और पृष्ठ संख्या भी उसकी ८५० से अधिक हैं। मूल्य उसका ३॥) था परन्तु अब २॥।) कर दियां है। इसमें प्रत्येक आर्य को शास्त्रोक्त १६ संस्कार करने की विधि तथा विज्ञानपूर्ण तर्क युक्त व्याख्यान मिलेगा। इसमें आधुनिक नए सेना युरोप अमेरिका के आविष्कार कर्त्ताओं के प्रमाणों से बताया गया है कि किस प्रकार एक दम्पति पुत्र प्राप्त कर सकते हैं। किन नियमों इत्यादि का पालन आवश्यक है। विस्तृत विषय सूची मुफ्त मंगवालें।

पृष्ठ सं० ८५० वज़न एक सेर पक्का मूल्य २॥।) डाक व्यय ॥) बढिय जिल्द वाली का मूल्य ४)।

जयदेव ब्रादर्स बड़ौदा।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

नियम पूर्वक रहना ही आरोग्यता का मूल है

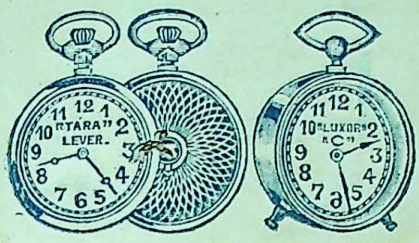

जो तुम्हें नियम में रहना हो तो आज ही मंगालो। हमारी १८ कैरेट रोल्ड गोल्ड डायल वाली पांच वर्ष की गारन्टी साथ, रजिस्टर्ड "तारा" पाकेट वाच।

दाम केवल ५) रुपये।

इस जेब की घड़ी को देखते ही मन खिंच जाता है और साथ में हमारी "पी" टाइमपीस उपहार में दी जायगी।

मिलने का पता:—

कैप्टन वाच कम्पनी,

पो० बाक्स नं० २५६, मद्रास।

☞ BE REST ASSURED

THAT OUR

WALL CLOCK

'TIC-TAK' (Regd.)

GIVE YOU PERFECT TIME.

OUR WALL CLOCK "TIK-TAK"

HAS EARNED A NAME THAT

CAN NOT BE BEATEN

PRICE Rs.

THREE Only.

Order now if you have not already orderd.

Peter Watch Co.,

Post Box No. 27,

MADRAS.

अपने बच्चे को फुटबाल खिलाओ।

तुम्हारा बच्चा बहुत मोटा ताज़ा और खुश मिज़ाज होगा यदि तुम हम से उसके लिये फुटबाल खरीदोगे!

खेल के सब तरह के सामान का स्टाक हमारे यहां है। जल्द आर्डर भेजिये।

बी० डी० गुप्ता,

पंच कुई रोड

दिल्ली।

पं० अतन्तराम के प्रबन्ध से सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में छपा।
और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पबलिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्ष ६] चैत १९८२—अप्रेल १९२६ Regd. No. L. 1240. [खण्ड ६, संख्या १२

वार्षिकमूल्य ४॥) सम्पादिका—विद्यावती सेठ बी०ए० स्त्रियों और विद्यार्थियों से ४)
प्रति संख्या ॥) विदेश का मूल्य ६)

विषय सूची ।

विषय		पृष्ठ
१. व्यापक		
	ले०—जगदीशचन्द्र शास्त्री	५४१
२. प्राचीन भारत में सम्पत्ति का अधिकार		
	ले०—"आर्य्य महिला"	५४२
३ विरह वेदना—ले०—श्रीराजनारायण		
	चतुर्वेदी 'आज़ाद' ...	५४४
४. मत भेद		
	ले०—श्री कुंवरसिंह	५४७
५. पाठविधि और ऋषि दयानन्द		
	ले०—जगदीशचन्द्र शास्त्री	५४६
६-किस भाँति सङ्गठन हो ?		
	ले०—पर्वताय पाषाण	५५३
७-मोहनी के आँसू		
	ले०—श्री सन्तलाल वैद्यराज	५५४
८. दयानन्दाष्टक		
	ले०—श्री पं० शीकाराम भट्ट	५६०
९. कुसुमोद्यान		
१०. हमारी मञ्जूषा		
११. वनिता विनोद		५७१
	१ स्त्री-जगत्	
	२ स्त्रियों का कर्त्तव्य	
	३ जीवन की एक विशेष घटना	
	४ अछूतोद्धार	
	५ कुमारी स्लेड	
१२—कन्या गुरुकुल समाचार		५८२
१३—विचार प्रवाह		५८४

ग्राहकों के लिये:—

(१) ज्योति प्रति अंग्रेज़ी मास की १५ को ग्राहकों को मिला करेगी ।

(२) भारत के लिये डा० व्य० सहित इस का वा० मूल्य—
१ वर्ष के लिये ४॥) है ।
६ मास के लिये २॥) है ।
विदेश के लिये इसका डा० व्य० सहित वार्षिक मूल्य ६) है ।
स्त्रियों और विद्यार्थियों से केवल ४) प्रति वर्ष है ।

(३) एक प्रति का मूल्य ॥) है ।
पुरानी प्रतियाँ सब नहीं मिलतीं, जो मिलती हैं उनका मूल्य ॥) से कम नहीं होता । नमूना मुफ्त नहीं मिलता आठ आने के टिकट आने पर भेजा जाता है ।

(४) ज्योति का वर्ष मई से अप्रेल तक और नवम्बर से अक्टूबर तक होता है । बीच में ग्राहक होने वाले को पूरे वर्ष की प्रतियाँ दी जाती हैं ।

(५) पत्र व्यवहार में ग्राहकों को अपना पता स्पष्ट और सुवाच्य लिपि में लिखना चाहिये । जिन पत्रों पर ग्राहक नं० न होगा वह निरुत्तर रहेंगे । पत्रोत्तर के लिये जवाबी कार्ड या दो पैसे का टिकट होना चाहिये ।

(६) भावी ग्राहकों को चाहिये कि रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजें । वी० पी० भेजने से ग्राहक को और हमें-दोनों को कष्ट पहुंचता है । पैसे अधिक लगने पर भी समय बहुत नष्ट होता है । आशा है भावी-ग्राहक-गण-हमारी प्रार्थना पर विशेष ध्यान देंगे ।

(७) पते के परिवर्तन की सूचना पत्र निकलने से १५ दिन पहिले मैनेजर के पास आनी चाहिये ।

(८) यदि कोई संख्या किसी ग्राहक को न पहुंचे तो पहिले अपने डाक घर से पूछना चाहिये । यदि पता न चले तो डाक घर से जो उत्तर आवे उसे प्रबन्धकर्त्ता के पास भेज देना चाहिये । परन्तु यह सूचना अगले अंक के निकलने से १५ दिन पूर्व तक मिलनी चाहिये अन्यथा दूसरी प्रति बिना मूल्य नहीं दी जायगी ।

मूल्य तथा प्रबंध सम्बन्धी पत्र मैनेजर, 'ज्योति' कोठी नं० ४ दरियागंज, देहली के पते पर आने चाहियें ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

वर्ष ६ | चैत्र १९८२ —अप्रेल १९२६ ई० | संख्या १२

* व्यापक *

(१)

विश्वरूप में तू विराट है,
तेजराशि का अतुल खान है।
कीट, कीट में व्याप्त, आप्त है,
वेदज्ञान का तू निधान है ॥

(२)

पक्षि शून्य वन सघन मध्य में,
डालि वृन्द जब डोलती रहें।
पक्षि संघ मिल चह चहा करें,
श्रान्त पान्थ सब शान्ति को सहें ॥

(३)

उस सघन विजन देश में विभो!
जब प्रकृति तप-ध्यान-तन्मना।
विश्व को अमित गीत में मिला,
बालवृद्ध सब एक सा बना ॥

(४)

धन्य है उस अनन्त शक्ति को,
है उपास्य इस विश्व में वही।
भांति भांति के रूप में रमा,
गान अपना मुझे सुना रही ॥

जगदीशचन्द्र शास्त्री

प्राचीन भारत में सम्पत्ति का अधिकार

ले०—आर्य महिला

प्राचीन काल में समाज को एक सूत्र में बांध कर एकता के बन्धन में जकड़ कर रखना एक-सम्बन्ध द्वारा ही होता था। एक खून के होने का भाव इतना प्रबल था कि कुटुम्ब के कुटुम्ब और जातियां परस्पर इसी सिमेन्ट से जुड़ी रहती थीं। एक आत्मा चार छै पीढ़ियाँ तक एक ही कुटुम्ब में प्रभावशाली रहती थीं। सपिंडता का भाव इतनी पीढ़ियों तक चलता जाता था और शारीरिक ऐक्य के होने से सम्पत्ति का अधिकार, खान, पान तथा परमात्मा की भक्ति के ढंग भी वही रहते थे। श्री माधवाचार्य्य ने देवलस्मृति का प्रमाण देते हुये लिखा है कि "यदि एक ही कुटुम्ब के सदस्य एक गृह में या अलग २ एक-कुटुम्ब बन कर रहते हों तो उन की चौथी पीढ़ी तक दायभाग का हिस्सा लगता है। चार पीढ़ी तक उस कुटुम्ब के लोग एक पिंड के होगे इस के पश्चात् उन में सपिंडता नहीं रहती अतः ऋषियों ने कहा है कि सपिंडता के न रहने से उनकी सम्पत्ति का भी बंट वारा होजाना चाहिये।"

सम्मिलित—कुटुम्बप्रथा की मुख्य २ बातें सम्मिलित धार्मिक कार्य्य, सम्मिलित भोजन, सम्मिलित आय और व्यय और न्यायालय के सम्मुख भी एक व्यक्तित्व का भाव यही हैं जो सबसे बड़ा बूढ़ा या सब से योग्य व्यक्ति होता था वही अपने कुटुम्ब का नेता बनता था और लोग चाहे कितने ही बूढ़े क्यों न हों स्वतन्त्ररूप से सम्पत्ति के आय व्यय के जिम्मेवार नहीं हो सकते थे। जब तक पिता माता जीवित रहते थे तब संतान को धन के व्यय करने की स्वाधीनता न थी। नारद स्मृति में लिखा है कि—"पत्नी, पुत्र, दास और सेवक यह सब परतन्त्र हैं। लेकिन कुटुम्ब का मुखिया जिसने अपने पूर्वजों से सम्पत्ति प्राप्त की है वही उसके आय व्यय के लिये स्वतन्त्र जिम्मेवार है।"

लेकिन यह बात नहीं भूलनी चाहिये कि इन दशाओं में कोई व्यक्ति विशेष सम्पत्ति का अधिकारी नहीं होता था वरन एक कुटुम्ब। इस लिये मुखिया के अधिकार भी तो अत्यन्त परिमित रहते थे। कुछ सम्पत्ति जैसे कि उधार लिया हुआ धन जमा किया हुआ धन तथा सम्मिलित सम्पत्ति इत्यादि ऐसे धन समझे जाते थे जो अत्यन्त दुरावस्था में भी जुदा नहीं किये जा सकते थे। पितृ पितामह से प्राप्त सम्पत्ति का उपभोग तो सन्तान कर सकती थी किन्तु उसे दान नहीं दे सकी थी और न बेंच सकी थी। स्मृति चन्द्रिका में लिखा है कि यज्ञावसिष्ठ, पृथ्वी, लिखित सनदें, भोजन, जल और स्त्रियाँ हजार पीढ़ियों तक भी प्रथक् नहीं की जा सकतीं। स्थावर सम्पत्ति के सम्बन्ध में कोई भी कार्य्य करना हो सभी उत्तराधिकारियों की सम्मति से किया जाना चाहिये। मिताक्षरा में लिखा है कि—यदि जमीन को जुदा २ करना हो तो वह पड़ोसी किसानों, जाति बांधवों, पड़ोस में रहने वालों और उत्तराधिकारियों की सम्मति बिना नहीं किया जा सकता। अत्यन्त दुरावस्था पड़ने पर

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ही ऐसा करना न्याय संगत है। कुटुम्ब के अधिकारों को भली भांति सुरक्षित रखते हुये ही धर्मार्थ जमीन का दान देना न्याययुक्त हो सकता हैं। ऐसा मालूम होता है कि हमारे यहां क्यों, ज्येष्ठता (प्रथम जो पैदा हुआ है वही कुटुम्ब का मुखिया रहेगा) यह रिवाज की प्रथा प्रचलित थी क्योंकि कुटुम्ब के कार्य्य कर्ताओं में एकता और अपृथकता का भाव का होना ऐसी केन्द्रित शक्ति की अपेक्षा करता है। पहिले पिता, फिर माता उसके बाद बड़ा पुत्र ही कुटुम्ब का मुखिया प्राचीन समय में हुआ करता था जो सब से बड़ा होता था वह छोटों के भरण पोषण का भार उठाने को बाध्य होता था। और छोटे उसे मान्य की दृष्टि से देखा करते थे। नाबालिग (अल्प आयु वाले) बच्चों की बड़ी सावधानी से रक्षा की जाती थी, इतना ही नहीं बुढ्ढों, असमर्थों और अंगहीन कुटुम्बियों की पूर्णतया रक्षा के लिये सम्मिलित कुटुम्ब बाध्य होता था। युरोप में जो आज कल दीनों की सहायता, तथा बुढ़ापे के लिये ज़िन्दगी बीमा कराने या दुर्घटना के लिये धन संग्रह के फंड खुले हैं उनके स्थान में हमारे यहाँ नित्य प्रति कुटुम्ब के दैनिक कार्य्य ही ऐसे होते थे जिन से यह आवश्यकतायें बखूबी पूरी हो जाया करती थीं। यदि भेद था तो केवल यह कि जहाँ पाश्चात्य देशों में धन ही सहायकर्त्ता और असहाय का सम्बन्ध जोड़ता है वहां हमारे यहाँ धर्मभाव और आध्यात्मिक उन्नति भी साथ २ जोड़ने वाले होते थे। वर्तमान समय में कुछ ऐसे तरीके प्रचलित हैं जिन से आन्तरिक भाव में यह बात विद्यमान रहती है कि कुटुम्बों को बनावटी तरीके से कम कर दिया जाय, क्षीण शक्ति वालों को पृथक रख दिया जाय और अनिच्छित लोगों को हटा दिया जाय। लेकिन हमारे प्राचीन भारत में जो न्यायाधीश थे उनके मस्तिष्क से न केवल यह भाव दूर ही थे वरन् वह प्राणि सम्बन्धी और आर्थिक भावों के साथ २ धार्मिक और आध्यात्मिक भावों को भी प्रधानता देते थे। वौद्धायन सूत्र अध्याय २ ३। ३६-४० में लिखा है कि न्यायाधीशों को नाबालिगों के हिस्सों और उसपर सूद जो मिले उस की भी बड़े ध्यान से रक्षा करनी चाहिये। जो लोग न्यायालयों में नहीं जा सकते अर्थात् अंधे, महामूढ़, दुराचारी तथा ऐसे रोगी जो स्वस्थ नहीं हो सकते इत्यादिकों को भोजन, वस्त्र, और शरण देकर उन की रक्षा करनी चाहिये। जो लोग कर्तव्य विमुख हैं अथवा कार्य्य छोड़ बैठे हैं उनकी रक्षा करनी चाहिये।

लेकिन यह अवस्था बहुत देर नहीं रही किन्तु थोड़े काल के बाद वयोवृद्धता का स्थान सम्पत्ति के बराबर २ अंश करने के भाव ने लेलिया। मनुजी ने अपने पुत्रों में बराबर २ सम्पत्ति बांटी अतः वयोवृद्धता के भाव जो मनुस्मृति में पाये जाते हैं वह वैदिक सभ्यता से पूर्व के हैं ऐसा कई पाश्चात्य विद्वानों का मत है। बहुत देर तक तो यह प्रथा चलती रही कि बड़े पुत्र को कुछ अधिक भाग दिया जाय लेकिन आपस्तम्भ ने इस के विरुद्ध आन्दोलन किया और यह बतलाया कि सम्पत्ति का अधिकार सब पुत्रों को बराबर २ है। आपस्तम्भ II, ६, १४, १५, १ में लिखा है कि इसलिये सभी पुत्र जो कि धर्मात्मा हों वह सम्पत्ति के अधिकारी हैं लेकिन जो उड़ाऊ खाऊ हो वह चाहे बड़ा पुत्र भी हो तो भी सम्पत्ति का उत्तराधिकारी नहीं बन सकता। वह अपने जीवन काल ही में अपने सब पुत्रों को बराबर अपना भाग बाँट दे लेकिन जो

नपुंसक, पागल या चांडाल हों उनको हिस्सा न दे"।

प्राचीन काल में एक कुटुम्ब केवल आर्थिक दृष्टि से ही एक न था वरन शिक्षा दीक्षा के आधार पर भी निर्भर था। नवयुवकों को उच्च आदर्शों की ओर ले जाने तथा आलसियों और आवारागर्दों के ऊपर रुकावट डालने का भी यह बड़ी उत्तम और प्रभावशाली साधन होता था। छोटे भाइयों को बड़े भाई की निजी उपार्जित सम्पति का भी भाग मिलता था यदि वह अपनी शिक्षा में उचित उन्नति करते थे।

"यदि विद्यानुपालिनः"। (मनु ९।२०४) वह सब भाई जो स्वभावतः बर्जित कार्यों को करते हों उनको दाय भाग न मिले। (मनु ९।२१४)। लेकिन इस बात में बड़ा भेद था कि कोई असमर्थ हो या दुराचारी हो। असमर्थों को हिस्सा तो नहीं मिलता था परन्तु उन्हें गुजारा मिलता था, लेकिन दुराचारियों को कुछ भी नहीं। परन्तु जहां दुराचारियों के कोई अधिकार नहीं रहता था वहां उनकी पत्नियों तथा सन्तानों को दाय भाग और भरण पोषण का अधिकार भी प्राप्त था देखो (नारद स्मृति १३ २१-२२)। दूसरी तरफ विवाह बिना सन्तानोत्पत्ति करनेवालों· स्वधर्म त्यागने वालो, साधुओं, सन्यासियों और आजन्म ब्रह्मचारियों तथा नास्तिकों से दाय भाग का अधिकार छीन लिया जाता था। जिस सिद्धान्त के आधार पर यह नियम बनाया गया था वह यह था कि सम्पत्ति यज्ञों के लिये होती है अतः जो लोग यज्ञों को नहीं कर सकते उनका कोई अधिकार नहीं कि वह दाय भाग को प्राप्त हों। उन्हें केवल भरण पोषण का ही अधिकार है। "यज्ञार्थ विहितं वित्तं" इस लिये वह उपयुक्त धार्मिक पात्र के पास ही रहें, स्त्री मूर्ख और धर्मच्युत जनों के हाथ में न रहे यह माधवाचार्य्य का मत है।

[शेष फिर]

विरह---वेदना।

(मधुर---मिलन)

लेखक---श्री० राजनारायण चतुर्वेदी 'आज़ाद'

स्त्री रूपी रत्न की प्राप्ति हुई, मरुभूमि मनोरम कानन में परिवर्तन हो गयी। सम्मिलन ही सौन्दर्य्य की उत्पत्ति, पवित्रता उसका सौरभ, अमृत उसकी परिणति है। प्रेम सिन्धु का मन्थन करने से जिस अमृत की उत्पत्ति हुई थी यह वही अमृत है इसका महात्म्य गान करने की शक्ति के परे है। जिसने इसका आस्वा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दन नहीं किया वह इसे हृदयङ्गम करने में असमर्थ है।

देवताओं की लीला मनुष्य की शिक्षा के लिये होती है किन्तु वह शिक्षा ग्रहण करना सहज नहीं है। क्षणिक भाव हो सकता है, चित्त विचलित हो सकता है किन्तु इतना ही यथेष्ट नहीं है। सम्मिलन का ध्यान व्रज की याद दिलाता है। राधा-गोविन्द की पवित्र स्मृति हृदय में जागृत हो उठती है। यमुना की प्रबल तरंगों में प्रेम रूपी तूफ़ान उठा। मयूर मयूरी का नृत्य दिखला व्रज में चिर बसंत स्थापित कर नन्दन कानन को पराहत कर दिया।

सम्मिलन के अपूर्व्व महात्मा का दर्शन कराया है श्री हर गौरि ने! जय हो तुम्हारी!! तुम्हीं ने प्रेम की समाधि योग का मार्ग दिखाया है। ज्ञान व पवित्रता की उन्नति भूमि में शांति समाहित भाव का अन्त दिखलाया है। ज्ञान के साथ प्रेम का अपूर्व सम्मिलन दिखलाया है। तुम्हारी जय ध्वनि चराचर विश्व-जगत में प्रति ध्वनित हो उठे।

हे मर्य्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र जी महाराज! हे जगदम्बे जनक नन्दिनी! तुम अयोध्या के देवता और तुम वहां की अधिष्ठात्री देवी हो। तुम्हारे चरणों में अनेकानेक प्रणाम! तुम ने संसार को प्रेम शिक्षा देने के लिये ही तो नरतन में अवतार लिया था। तुम्हारा आविर्भूत न होने से क्या नारि जाति के लिये पृथ्वी की छाया की भांति पति का अनुसरण करने का महात्मा प्राचीन कवि वर्णन करते। मां! राजप्रसाद के सुख सम्पत्ति ऐश्वर्य्य को लात मार कर दीन-हीन वेश में पति का अनुसरण करना, कांटों से परिपूर्ण पथ पर चलने में आनन्द अनुभव करना। शीत, ग्रीष्म और वृष्टि की परवाह न करने का महत्व तुम्हारे सिवा कौन बतला सकता है? भीषण मरुभूमि, उत्तप्त पृथ्वी भी तुम्हारा पथ अवरुद्ध नहीं करती। भगवान भुवन भास्कर का प्रचंड ताप भी तुम्हें कातर न कर सका। तृष्णा की भीषणा ज्वाला भी तुम्हें विचलित न कर सकी। हां-सच तो! तृष्णा से तुम क्योंकर विचलित होतीं तुम तो प्रेम निधि का अनुसरण कर रही थीं--तुम्हारे हृदय में तो गंगा या यमुना की पवित्र धारा बह रही है। तुम्हें क्या क्लेश हो सकता है? सम्मिलन रूपी आनन्द के आस्वादन द्वारा ही क्या इतना कष्ट सहन किया था। नहीं! क्योंकि जिस समय दुष्ट रावण ने तुम्हें हरण कर तुम्हारे हृदय में विरहाग्नि प्रज्वलित की थी उस समय किस भांति तुमने जीवन धारण किया था? मां तुम्हारे लिये मिलन अथवा विरह क्या! तुम्हारे हृदय में तो पूज्य पति की मनोहर मूर्त्ति चिर-विराजित थी। तुम उसी पवित्र मूर्ति के ध्यान में विरह कानन में भी मिलनरूपी अमृत का आस्वादन करती थी। मां! सम्मिलन में वियोग का नाम नहीं। क्या यही दिखाने के लिये तुमने अवतार लिया था?

दयाभाव

आह! आप बीती लिखते २ क्या लिख गया। संसार सागर में अकेला ही डूबता उतराता था किन्तु किसने आकर हृदय में अग्नि प्रज्वलित करदी पहिले तो प्रकृति की ओर दृष्टिपात भी नहीं करता था किन्तु आज उसकी छटा वर्णन करने में लेखनी

विश्राम करने का नाम ही नहीं लेती। सुना है, कि बाल्यकाल में माता की गोद में अठखेलियां करता। चंद्रमा की इच्छा करता। जिस वस्तु को मां न दे सकी उसे विधि के विधान ने लाकर सौंप दिया। उद्यान में पुष्प को खिलते देख कर चित्त प्रफुल्लित हो जाता था किन्तु तोड़ने जाकर उसकी शोभा देख कर अवाक हो गया। हृदयने कहा-"तोड़ो"—बुद्धि ने कहा—नहा अभी अर्द्ध विकसित कली है!

एक दिन विद्यालय से घर आ रहा था। राह में फुटपाथ पर एक मनुष्य अचेतावस्था में पड़ा हुआ था। बोलने की शक्ति नहीं थी बार २ जीभ निकालते हुए देखकर प्यासा होने का अनुमान किया। एक विद्यार्थी की सहायता से जल पिलाया। चैतन्य होने पर घर ले आया। उसकी अवस्था देखकर पत्नी ने रो दिया। आह! वह मधुर दृश्य आज भी नेत्रों के सन्मुख नाच रहा है। उसी दिन समझा कि वह साक्षात् करूणामयी देवी है।

देवी की सेवा सुश्रुषा से रोगी ने आरोग्यता लाभ की। वह जाति का अहीर था। स्वस्थ होने पर एक दिन उसने कहा कि माँ! संसार में मेरा कोई नहीं है — जब तक जीवित रहूँगा तब तक तुम्हारा पुत्र होकर रहूँगा। देवी ने प्रसन्नता पूर्वक पुत्रवत् उसका लालन पालन करना आरम्भ किया।

उपरोक्त घटना को कई वर्ष व्यतीत हो गये। पत्नी को कोई सन्तान नहीं थी। अहीर बालक ही एक मात्र पुत्रस्नेह का भागी था। उसे महेन्द्र कहकर पुकारती थीं! उसके लालन पालन करने में ही आनन्द बोध करती थीं! किन्तु दुर्दैव से वह भी न देखा गया! अचानक महामारी रोग ने महेन्द्र को इस असार संसार से उठा लिया। देवी के सुख साधन का एक मात्र साधन भी उससे न देखा गया।

जीवन के प्रणय परिच्छेद का इस प्रकार अन्त होगया। कौन जानता था? हृदयेश्वरी तुमने इस हृदय में नन्दन कानन की उत्पत्ति की शाखा को प्रेमवारि से सींचा? किन्तु आज वही नन्दन कानन श्मशान भूमि में परिणत हो गया। कौन जानता था। कि मुझे शेष जीवन दारूण क्षोभानल में दग्ध होना पड़ेगा' प्राणेश्वरी! तुमने कैसी निदारूण मर्म्म यातना देकर यहां से प्रस्थान किया। हाय! आज तुम कहां हो!!

आवेग

क्षुद्र मरुभूमि के निकट मेरी सामान्य कुटी अवस्थित थी। भाव रूपी कुसुम अभी प्रस्फूटित नहीं हुआ था? आशा रूपी नदी अभी प्रवाहित नहीं हुई थी। गम्भीरता नाम का कोई शब्द संसार में है या नहीं, नहीं जानता था, आवेग का अवलोकन कभी नहीं किया था। अभी तक यही सोचता था कि संसार में केवल वालुका राशि के गढ़ प्रस्तुत कर क्रीड़ा कौतुक, आमोद-प्रमोद करने आया हूं। हृदय में कभी भय का सञ्चार नहीं हुआ, निराशा की आंधी का थपेड़ा नहीं खाया। कर्म फल भोगने के निमित्त आया हूँ भोग कर चला जाऊंगा। मन की आकांक्षा जताने की आवश्यकता ही क्या है?

सहसा प्रभात संगति का मधुर गान श्रवण किया। समझा कि गन्तव्य स्थान पर आ पहुंचा। नेत्र खोल कर देखा कि किसी अपूर्व रम्य जगत में आ गया हूँ। सहसा

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

मालूम हुआ कि किसी की सुकोमल गोद में शयन कर रहा हूँ। उसी दिन समझा कि यह जगत बालू की भीति नहीं है। उस दिन से फिर वो मरुभूमि न देख सका। उसी दिन से इस आनन्दमय जगत का अधिवासी हुआ। उसी दिन से प्रेमावेग में पड़कर उस के गाम्भीर्य में डूब गया।

कौन जानता था कि देखते ही देखते एक दिन विषाद सागर में डूब जाना होगा?

इस क्षणिक स्वप्न में भूल कर निराशा रूपी अन्धकार में पृविष्ट हुआ। अतीति स्मृति के चितानल में कब तक दग्ध होना पड़ेगा॥

यह चितानल क्या निर्वापित न होगी? यह महापातकी कर्म फल कब तक भोगूंगा? हेसन्तापहारी प्रभो? इस शोकानल से रक्षा करो तुम्हारे सिवा हतभाग्य का और कोई उपाय नहीं है॥

(समाप्त)

मतभेद

लेखक—श्रीयुत कुंवरसिंह शाहपुर

इस महान् विश्व में प्रत्येक मनुष्य की प्रकृति का एकसा होना कुछ असम्भव सा प्रतीत होता है। प्रायः मनुष्यों की प्रकृतियां भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं। यदि किसी को मीठा प्रिय है तो किसीको कड़ुवा। तात्पर्य्य यह कि साधारणतया मनुष्य भिन्न भिन्न प्रकृति ले के इस पृथ्वी पर जन्म लेता है। यह बहुत कम देखने में आता है कि दो मनुष्यों की प्रकृतियां पूर्णतया मेल खाती हों। यहां तक तो ईश्वरीय लीला हुई कि उसने मनुष्यों की प्रकृतियां भिन्न भिन्न बनाई हैं। परन्तु कुछ मनुष्य तो जान बूझ कर अपनी प्रकृति बना लेते हैं। वह जिस किसी वस्तु को नहीं चाहते उसे घृणा की दृष्टि से देखने लगते हैं। वे कहने लगते हैं मुझे इसे छूते घृणा मालूम होती है देखने की कौन कहे। वे यह नहीं सोचते कि यह भी तो उसी महान प्रभु की बनाई हुई है। जिसने इनकी मनभावनी वस्तु बनाई है।

बाबू रामटहल जिला आजमगढ़ के प्रसिद्ध वकीलों में से हैं। ईश्वर की कृपा से आपको किसी वस्तु की कमी नहीं। आपके बड़े कुटुम्ब के अतिरिक्त तीन पुत्र और दो पुत्रियां हैं। आपके बड़े पुत्र का व्याह नवगांव जिला हमीरपुर के एक रईस की पुत्री से हुआ है। बहू का नाम श्यामा है। श्यामा सर्व गुण सम्पन्ना। पतिभक्ता रमणी है। सब गुणों से विभूषित होने पर भी विचारी का रंग कुछ साँवला है। इसके लिये वह विचारी क्या करे? यह तो ईश्वर प्रदत्त वस्तु है।

---

* यह गद्य-काव्य बंगला के 'वियोग वेदना' नामक पुस्तक से सहायता लेकर लिखा गया है अतः मैं उक्त पुस्तक के लेखक का अत्यन्त कृतज्ञ हूँ॥

है। सांवली होने पर भी श्यामा बड़ी सुन्दरी है। यदि उसे स्नेह का आगार कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा। छोटे बड़े समस्त कुटुम्बी उसके स्वभाव से बड़े ही प्रसन्न रहते हैं। पर कभी कभी उसके देवर लोग उसके सांवले रङ्ग की हंसी भी उड़ाया करते हैं।

सन्ध्या का समय है। सूर्य्यभगवान के अस्ताचल जाने में अभी कुछ समय का विलम्ब है। ऐसे ही समय हरिकिशन बाबू रामटहल के मंझले पुत्र "भाभी भाभी" कहते अन्दर आये। ये कालेज में शिक्षा पा रहे हैं। अभी हाल ही घर आये हैं। ये बड़े हंस मुख गौर वर्ण और एकहरे शरीर के सुन्दर युवा हैं। अभी आपका ब्याह नहीं हुआ है। इधर उधर के बातों के उपरान्त इन्होंने अपनी भाभी से कहा "क्यों भाभी भला काला भी कोई रङ्ग है? बुरा न मानना सच कहता हूँ मुझे काला रङ्ग देखते ही बुखार सा चढ़ आता है।"

श्यामा—क्यों न ऐसा कहोगे। तुम स्वयं तो गोर वर्ण के हो इसी लिये ऐसा कहते हो, पर मैं क्या कहूं मेरा तो यही बुखार चढ़ आने वाला काला रङ्ग है। बार बार क्यों तुम इसकी मीमांसा मुझ से कराने आते हो? घर में और लोग भी तो हैं उनसे क्यों नहीं पूछते? मुझसे इसी लिये पूछते हो कि तुम्हारे घर में मैं ही अकेली काले रङ्ग की हूँ!

हरिकिशन—वाह भाभी तू तो बड़ी जल्दी बुरा मान गई। मैंने तो वैसे ही अपने मन की बात कहा थी कुछ तुम्हें चिढ़ाने के लिये नहीं।

श्यामा—नहीं भइया! बुरा तो नहीं माना। यह तो ईश्वर की दी हुई बात है। यदि बुरा भी मानूं तो अब इसे बदल तो नहीं सकती। अब मैं काले से गोरी नहीं होने की। परन्तु भइया गौरे या काले चमड़े से क्या मनुष्य का हृदय देखना चाहिये कि वह काला या गोरा। मेरी समझ में काले चमड़े वालों को उनके रूप का घमंड नहीं होता उनका हृदय शीशे की भाँति स्वच्छ होता है परन्तु गोरे चमड़े वाले अपने रूप के ही घमंड में चूर रहते हैं उनका हृदय उतना स्वच्छ कभी भी नहीं हो सकता उनकी तो यही गती होती है कि "विष रस भरा कनक घट जैसे"! क्यों भइया राम, कृष्ण भी तो काले चमड़े वाले थे! तुम लोग उन्हें क्यों पूजते हो उनको घृणाकी दृष्टिसे क्यों नहीं देखते! उनको सदैव क्यों स्मरण किया करते हो! उनकी याद आने से तुम्हें बुखार तो नहीं चढ़ आता! उनके गुणों की ओर ही क्यों ध्यान देते हो उनके चमड़े का ख्याल क्यों नहीं करते।

हरिकिशन—वाह भाभी तुमने तो बड़ी अच्छी वक्तृता झाड़ी, मैं तो हैरान था कि तुम कहीं ये सब बात रट तो नहीं लाई हो! तुमने तो अपने मत का खूब ही समर्थन किया, पर मैं इतने परभी तुमसे सहमत नहीं! हमारा तुम्हारा अब भी मत भेद है!

श्यामा—ईश्वर ने चाहा तो भइया कभी तो सहमत हो जावोगे।

* * * *

बाबू हरिकिशन का ब्याह हुये डेढ़ महीना व्यतीत हो गया। अब ये घर पर ही

रहते हैं। उन की सुशीला देवी श्यामा देवी से भी काली है पर वे भी श्यामा देवी की तरह सुशिक्षिता और गुण सम्पन्ना रमणी हैं! वे अपने पतिदेव बाबू हरिकिशन को देव तुल्य समझती हैं। श्यामादेवी और उनका बड़ा ही हेल मेल है! वे श्यामा देवी को बड़ी भगिनी के सदृश मानती और उनका आदर सत्कार करती हैं! श्यामादेवी का तो कहना ही क्या सुशीला उनको प्राणों से भी प्रिय है!

एक दिवस श्यामा और सुशीला में किसी विषय पर बात हो रही थीं अकस्मात वही काले और गोरे का विषय फिर छिड़ गया! श्यामा ने उसी समय हरिकिशन को बुला भेजा और हंसते हुये उनसे पूछा, "क्यों भइया काले को देख कर अब तुम्हें बुखार तो नहीं चढ़ता?

हरिकिशन ने झेंपते हुए उत्तर दिया—नहीं भाभी अब मैं तुमसे पूर्णरूप से सहमत हूँ! अब मेरा कोई मतभेद नहीं!

श्यामा ने हस कर कहा—यह ईश्वर की इच्छा और तुम्हारा अनुभव मात्र है!

इस पर सब हंस पड़े!!

पाठविधि और ऋषि दयानन्द

ले०—श्री जगदीशचन्द्र शास्त्री

पाठविधि अर्थात् शिक्षाप्रणाली पर आर्य्यजगत् में एक बड़ा मतभेद है बड़े २ विद्वान् इसकी पेचीदगी में भूलभुलैयां की तरह भूले हुए हैं। वास्तव में शिक्षाप्रणाली मनुष्य के प्रारम्भिक जीवन की मूल है, यदि उसकी रक्षा यथारीति से गुण दोष के ज्ञान के साथ की गई तो सम्भव है कि उसके आधार से खड़े होकर छोटे २ पौदे भी एक न एक दिन एक विशाल वृक्ष का रूपधारण कर लेंगे।

ऋषि दयानन्द का जीवन आदर्श था। उन्होंने आदर्शवाद के आगे किसी बात की परवा नहीं की। इस विषय में उनके लिए राजा और रङ्क सभी एक कोटि के थे। ऋषि की लिखी पुस्तकों से हमें उसके विचारों का ज्ञान होता है परन्तु उसके जीवन से उसके क्रियात्मक जीवन का। बात भी ठीक है जो दूसरे को सच्चा बनाना चाहता है उसके लिये सर्वोत्तम साधन स्वयं सच्चा बनना है किन्तु जो केवल प्लेटफार्म पर गरज कर लच्छेदार भाषा में भाषण देकर जनता को मन्त्र मुग्ध कर लेते हैं वह निस्सन्देह जनता को मुग्ध कर लेंगे परन्तु उन्हें क्रियात्मक जीवन के विषम साँचे में ढालना उनके बस की बात नहीं। अन्य सुधारकों तथा ऋषि में यही भेद जान पड़ता है कि वह कहते थे पर करते नहीं थे। और यही कारण था कि वह अपने उद्देश्य को सफल नहीं कर सके।

ऋषि को आदर्श प्रिय मानते हुए हमें उनके जीवन की छानबीन करनी पड़ेगी! इसमें सन्देह नहीं कि ऋषि को शास्त्रदर्शक

कोई ठीक नहीं मिला और मिला भी तो चिरकाल के बाद। हम ऋषि के जीवन का स्वाध्याय करते हुये यह भूल जाते हैं कि मिनट २ में भी विद्याध्ययन से ज्ञान की वृद्धि होती है। ऋषि का जीवन सङ्कटमय बीता और आदिसे अंत तक भांति भांति की घटनाओं से पूर्ण था।

उनके जीवन के क्रमशः पांच विभाग हो सकते हैं—

जिनमें १—१४—१४—२२—२२—३६ ३६—३९—३९—६२।

उपर्युक्त पांचों विभागों में ३९ वर्ष तक का भाग विद्याध्ययन में बीता! प्रारम्भ के १४ वर्षों तक ऋषि ने मूलशङ्कर की अवस्था में ही यजुर्वेद तक पिता जी से पढ़ लिया था। उस समय की पाठविधि में यह कोई दोष में नहीं गिना जाता था कि १४ वर्ष के बालक को वेद किस प्रकार पढ़ाया जावे तदनुसार कुछ सारस्वतादि साधारण व्याकरण पढ़कर ऋषि ने इस प्रथम भाग को यजुर्वेद के पठन पर्य्यन्त लगाया? जीवन के द्वितीय भाग में मूलशङ्कर के घर में कई घटनाएं हुई। भगिनी तथा चाचा की मृत्यु अकालमृत्यु थी तो भी किसी का साहस मृत्यु से उन्हें लौटा लेने का नहीं। घर के आबाल-वृद्ध सभी रोते थे पर मूलशंकर के हृदय में नाना प्रकार की तरङ्गें उठ रही थी, वह जीवन मरण की कठिन पहेली को समझने का यत्न कर रहा था और जीवन की नश्वरता को ध्यान में रख अमरत्व की बूटी खोजना चाहता था। इसी प्रकार के कार्यों में ऋषि ने ८ वर्ष व्यतीत कर दिये। तीसरा भाग संकटमय है और इसको १४ वर्ष की कठिन तपस्या कह सकते हैं क्योंकि ऋषि ने पर्वतों के विषम भागों में, कंटकाकीर्ण घने रास्तों में नंगे पैर चल कर सच्चे गुरु की खोज की। उनके हृदय में विद्यार्थियों के प्रति अपार करुणा थी अन्यथा मठ मठ में गुरु भरे पड़े थे। पढ़ना पढ़ाना उनका प्रधान काम था। ऋषि एक युवक था और उसने संस्कृत विद्या के नाश का अतीव अनुभव किया। संसार में ऐसे लोगों की कमी नहीं जो पास की प्राप्त वस्तु का उपभोग यथावत आनन्द के साथ नहीं कर सकते अतएव यह कोई आश्चर्य्य की बात नहीं कि सहस्रों छात्र जो अपना जीवन लघु-कौमुदी में लगा देते हैं इस महान् हानि को अनुभव नहीं कर सके।

चौथा जीवन केवल ३ साल का है और सब से छोटा होते हुए भी सब से बड़ा है। उसमें अन्धे गुरु से आंख वाले ने शिक्षा ली थी। गुरु भी खोज़ में थे पर उन की विद्या का पात्र ही कोई नहीं था। वेदों के नाश का ध्यान कर मन ही मन जी मरोड़ कर रह जाते पर क्या करते कोई योग्य शिष्य नहीं मिला। वृद्धावस्था में अन्धे गुरू की मनोकामना सिद्ध हुई कि उनको आँख वाला शिष्य मिला।

कैसा स्वर्णीय अवसर था जब गुरु और शिष्य की विषम जोड़ी मिली। साईस घोड़े की नस नस पहचानता है अतएव गुरु को भी चीन्हने में देर न लगी और तीन ही साल में दयानन्द का ज्ञानकोष गुरु की भांति अक्षय हो गया!

अन्तिम जीवन के २६ सालों में ऋषि ने प्रचार का कार्य्य किया और पाठविधि का निर्माण काल यही होने पर भी वह आदर्श वाद की दृष्टि से हमारा ध्येय नहीं।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

यह तो ऋषि के जीवन से स्पष्ट ही है कि गुरु विरजानन्द के पास आने से पूर्व वे अनार्ष पुस्तकें पढ़ते थे और यह गुरु विरजानन्द का ही प्रथम उपदेश था कि अनार्ष ग्रन्थों को नहीं पढ़ना चाहिये। और विदाई के समय उन्होंने अपने शिष्य को भी यही उपदेश दिया था।

"मनुष्य कृत ग्रन्थों में देवताओं और ऋषियों की निन्दा है, ऋषिकृत ग्रन्थों में नहीं, इस कसौटी को हाथ से न छोड़ना"।

सचमुच ऋषि ने इस कसौटी को आमरण नहीं छोड़ा अतएव उन्होंने वेद के सदृश मान्य ब्राह्मण तथा उपनिषद और स्मृतिग्रन्थों का आदर करते हुए अनार्ष ग्रन्थों के लिये कटु से कटु शब्दों का प्रयोग किया। उन के हृदय में एक बड़ी वेदना थी कि जनता भेड़ों की भांति इधर उधर भटकरही है, वह उद्देश्य से च्युत होरही है। वास्तव में जनता लौकिक ग्रन्थों के चक्कर में पड़ वेदों को बिलकुल भूल गई थी पुराण और भागवत की कथा तो गली गली में होती थी पर वेदों के दर्शन करने वाले भी दुर्लभ थे। सब अपनी २ धुन में मस्त थे।

व्याकरण पढ़ने वालों ने लौकिक व्याकरण के पढ़ने में अपना सारा जीवन लगा दिया था पर वेदों का थोड़ा व्याकरण भी कोई न जानता था। यह 'संस्कृत का मध्ययुग' कहलाये तो कोई अनुचित नहीं होगा। यह काल महाभारत से लेकर स्वामी शंकराचार्य्य के समय तक कहला सकता है। इस काल में लौकिक व्याकरण के उत्तमोत्तम ग्रन्थ शेखर, मनोरमादियों का निर्माण हुआ। काव्य के उत्तमोत्तम ग्रन्थ रचे गये। कालिदास, भारवि, माघ, और श्रीह[1] जैसे बड़े २ विद्वान कवियों ने जन्म लिया परन्तु यह सारी उनकी भूल थी क्योंकि वे मार्ग भ्रष्ट होकर अकस्मात् किसी मार्ग को पकड़ चुके थे, उन के सभी अनुयायी उनके मत का समर्थन करते रहे और कई कट्टर आर्य समाज के शत्रु अब भी अपनी थोथी दलीलों से अपने मत को पुष्ट करने का यत्न करेंगे, पर सचाई सचाई ही है।

गत दिवाली पर (प्रकाश) हिन्दी के ऋष्यङ्ग में लाहौर के औरेण्टियल कालिज के प्रोफेसर महामहोपाध्याय पं० शिवदत्त शास्त्री ने लिखा था "यदि दयानन्द न होता तो आज वेदों का सर्वथा लोप होगया होता।" अस्तु! इसका आशय यह कदापि नहीं कि वे मूर्ख थे। और उनके ग्रन्थों को जला देना चाहिये। हम शब्दों की ओर दौड़ते हैं पर परिस्थिति और अवसर का बिलकुल ध्यान नहीं करते। स्वामी जी ने किस परिस्थिति में इन बातों को कठोर शब्दों में लिखा था यह उनकी लिखी हुई अन्यधर्मों की समालोचना से स्पष्ट होजायगा। स्वामी जी के सामने सहस्रों विद्यार्थियों के जीवनमरण का प्रश्न था उनको विद्यार्थियों की इस प्रवृत्ति को देख कर आन्तरिक वेदना होती थी।

एक ओर मनु भगवान् का निम्न श्लोक और दूसरी ओर समाज की यह प्रवृत्ति।

"योऽनधीत्य द्विजो वेदान्यत्र कुरुते श्रमम्।
स जीवन्नेव शूद्रत्वमाशु गच्छति सान्वय।"

जो द्विज वेद को न पढ़कर अन्य पुस्तकों में परिश्रम करते हैं वे जीते जी शूद्र बन जाते हैं। इन्हीं बातों का ध्यान रखकर ऋषि ने

[1] श्रीहर्ष

संस्कृत भाषा का पठन क्रम लिखते हुए सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में निम्न-लिखित प्रणाली का दिग्दर्शन करा दिया।

३ वर्ष व्याकरण शास्त्र

१ वर्ष { ८ मास वैदिककोश(निरुक्त)
४ ,,

१ वर्ष मनुस्मृति, रामायण, महाभारतादि
२ ,, षट्शास्त्र
६ ,, ब्राह्मणग्रन्थ तथा वेद
३ ,, आयुर्वेद
५ ,, सैनिकविद्या, गानविद्या, राजविद्या शिल्प आदि

२१ वर्ष

उपर्युक्त रीति से संस्कृत का पूर्ण ज्ञान २१ वर्ष में प्राप्त हो सकता है परन्तु स्वामी जी ने यह प्रणाली राष्ट्रभाषा संस्कृत मानकर बनाई है अन्यथा यदि वह हिन्दी आर्यभाषा को राष्ट्रभाषा बनाकर लिखते तो पहिले के वर्षों में हिन्दी के लिये अवश्य कोई न कोई समय निश्चित होता। किसी भाषा के व्याकरण व ज्ञान से पूर्व उस भाषा का सामान्यज्ञान होना परमावश्यक है परन्तु वर्त्तमान विश्वविद्यालयों की पाठ विधि में कई त्रुटियां है और यही कारण है कि बड़े २ व्याकरणाचार्य संस्कृत की कुछ पंक्तियों के लिखते हुए भी व्याकरण की मोटी २ अशुद्धियें कर जाते हैं। यह बात बिश्व विद्यालयों के लिये कितनी अपमानजनक है कि व्याकरणाचार्य केवल व्याकरण के ज्ञान में चूर हों उन्हें भाषा से कोई प्रयोजन नहीं और साहित्याचार्य लौकिक साहित्य की सभी पुस्तकों को पढ़ कर भी वेद के ज्ञान से शून्य हों।

संस्कृत के पण्डितों की परिभाषा यही है कि वह शास्त्रार्थ करना जानते हों और असत्य को सत्य सिद्ध करने का अन्त तक दुराग्रह करते जांये। अस्तु! स्वामीजी की बतायी पद्धति हमारे समक्ष है और हमें इसमें थोड़ा सा संशोधन करना पड़ेगा अर्थात् आरम्भ के दो वर्ष राष्ट्रभाषा के लिये छोड़ने पढ़ेंगे और पुनः १ वर्ष संस्कृतभाषा सीखने के लिये। मुझे पाठविधि के विषय में कहते हुए न तो गुरुकुल कांगड़ी की वर्तमान पाठविधि की पुष्टि करनी है न गुरुकुल वृन्दावन की।

मेरी दृष्टि में पाठ विधि एकही ठीक है वह उपर्युक्त संशोधन के साथ अपने आचार्य की बनायी विधि ही पसन्द है। अब यह संचालकों की इच्छा पर है कि वे इन विषयों को पृथक् २ पढ़ावें या एक साथ। विषय हमारे समक्ष हैं, और इनका मिश्रण करना हमारे अधिकार की बात है परन्तु ध्यान रहे कि ऋषि का उद्देश्य न बिगड़े। वेदों का अध्ययन करना हमारा परम-धर्म है। दूसरी बात यह है कि हमारी शिक्षापद्धति नवयुवकों को बेकार न बनादे। यह कौन कह सकता है कि स्वतन्त्रता अभी कितनी दूर है, पर गुलामी के नाम पर यदि शिक्षा दी गई तो शिक्षा का महत्त्व धूल में मिल जायगा। यह मार्ग इतना पेचीदा नहीं है जितना कि हम समझते हैं। नवयुवकों की बेकारी का प्रश्न उन विद्यालयों के लिये अवश्य जटिल है जिनके छात्रों का ध्येय ऐश, आराम से जीवन बिताना है परन्तु जिन विद्यालयों के छात्रों का ध्येय सादा जीवन है उनसे बेकारी दूर भागती है। छोटे कामों में अपने लिये उनको नौकरों की मोहताजी नहीं, वे कार्य करने में स्वयं शक्त हैं। पाठविधि के साथ हमें वह बात सदा ध्यान में रखनी चाहिये कि हमारे नवयुवक किसी भी पेशे को बुरा न समझें। व्यापार की दृष्टि से कोई काम

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

छोटा नहीं है और किसी भी काम में हमें घृणा नहीं करनी चाहिये। परतन्त्र अभागे देशों में तो बेपढ़े व्यापारी और दूकानदारों की कमी नहीं पर स्वतन्त्र देशों में वे व्यापार के अधिकारी नहीं और यही कारण है कि हमलोग परिश्रम करने पर भी व्यापार में सफल नहीं होते और दूसरे देशों के लोग हमारे ही धनसे मालामाल होजाते हैं।

शिक्षा की इन विशेषताओं के साथ मैं पाठकों का ध्यान उस आदर्शवादी, निस्पृह, सन्यासी की ओर आकर्षित करता हूँ जिस आदर्श को हम भी ध्येय बनाते हुए अपना दुखमय जीवन भी सुखमय बना सकेंगे।

देश के नवयुवको! यह पाठविधि ऋषि ने तुम्हारे हित के लिये बनाई है, यदि अब भी नहीं चेतोगे और वर्तमान स्कूल, कालिजों की थोथी शिक्षा की धुनमें रहोगे तो भारत सर्वदा विदेशियों से पादाक्रान्त रहेगा डूबते हुए नाविको अब भी सभल जाओ। तुम्हारे लिये ऋषि ने सच्चा मार्ग खोल दिया है। तुम पतित नहीं पर सर्वगुण-सम्पन्न हो, तुम बाहर का सुख, समृद्धि देख-कर फूले नहीं समाते, जरा देखो अन्दर और वहां कितना स्वर्गीय सुख है। कितना अतुल ऐश्वर्य जगमगा रहा है। अपने को मत भूलो और पूर्वजों की जीवनी देखो तुम्हें बहुत कुछ मिलेगा। इति।

❀ किस भांति संगठन हो ❀

[श्रीयुत पर्वतीय पाषाण]

सद्भाव से जहांपर खिलता न मन-सुमन हो,
शुचि-वेद का जहांपर होता न अध्ययन हो।
देवासुरी-रणस्थल हर झोंपड़ी, भवन हो,
दुर्भिक्ष रोग दानव करता जहां शयन हो?
भाई व भाइयों में कटता जहां सगन हो,
फिर उस जगह परस्पर किस भांति संगठन हो

* * ❀ *

अपस्वार्थ का जहां पर बहता प्रबल पवन हो,
निर्दोष-प्राणियों का होता जहां हनन हो-
बलहीन का सबल से होता जहां दमन हो,
अन्धेर के नगर में चौपट्ट का अयन हो।
जप-तप अनेक करके होता न दुःख दलन हो,
फिर उस जगह हमारा किस भांति संगठन हो?

* * * *

नारी-समाज का तो अतिशय जहां पतन हो,
बहुओं व बेटियों का बिकना जहां चलन हो।
विधवा, अनाथ, शिशुदल होता जहां यवन हो
कीड़े समान जिसका जीवन तथा मरन हो॥
जब दो सहोदरों में पारस्परिक जलन हो,
हम हिंदुओं का फिर हा! किस भांति संगठन हो

नोट – यह कविता "हृदय" से उद्धृत की गई है।

मोहिनी के आंसू।

लेखकः—श्रीयुत सन्तलाल दाधिमथ वैद्यराज

[गतांक से आगे]

आज सन्ध्या के ७ बजे ही कार्य-वश दुकान बंद कर, माधव समेत कुन्दन घर की ओर तैयार हुए। मार्ग में दोनों को मियां अब्दुररहमान ने आते देखा। वह शीघ्र ही मस्जिद से निकल, घर की ओर धीमी चाल से चलने लगा। उतनी देर में वे पास ही आगए। तब "कहिए, जनाब! मिजाज़ शरीफ़?" कह, हाथ मिलाने को बढ़ाए। इधर कुन्दन ने भी-"इनायत है। आप सुनाइएगा-ख़ैरियतहै?" कह सोल्लास पाणि पीड़न किया।

अब्दुररहमान—"नवाज़िस है!" कह, इधर उधरकी बातें करने लगा। इसी अन्तर में थोड़ा देर में कुन्दन के हृदय में कुछ गुदगुदी-सी होने लगी। उससे रहा न गया। वह लज्जित-सा हो, क्षीण-स्वर में कहने लगा "आप .....।" कहने ही पाया कि जिव्हा लड़ खड़ा गई। चालाक अब्दुररहमान तुरन्त ताड़ गया। वह अपने भाव को छिपा कर बोला—"फ़रमाइए फ़रमाइये?"

कुन्दन—(संकोच से) "...नहीं, वैसे आपसे कुछ नहीं कहता था। यहाँ की रिवाज को देखता हूं।"

इस बार अब्दुररहमान-खूब समझ गया। अपने भाव को वह चर्वित-पान के थूकने के बहाने और भी गहरा छिपा बोला—"जैसे।"

कुन्दन साहस कर बोला—"यही कि आप लोग दुकान के अन्दर तक चले जाते हैं, और यहां के लाला लोग कुछ नहीं कहते उनकी घिन (नफ़रत) काफूर हो रही है!"

अब्दुररहमान—"जनाब, यह टेढ़ा सवाल है!" कह, हाथ पकड़े, पास ही अपने मकान के सामने ले जा, बोला-"ठहरिए, बैठक का कुन्डा खोलता हूँ।"

---

‡

सूचना आजकल हिन्दी साहित्य-क्षेत्र में स्वार्थीजनों द्वारा अत्यधिक कण्टकाकीर्ण कूड़ा फेंका जा रहा है। यह 'उपन्यास' "ज्योति" द्वारा हम आर्य्य जगत् की भेंट कर रहे हैं। पाठक 'ज्योति' के शृंखलाबद्ध अंकों का अवलोकन करें। प्रत्येक में यह 'उपन्यास' क्रमशः प्रकाशित हुआ करेगा। सम्पूर्ण प्रकाशित होने पर, इसके प्रकाशित कराने न कराने के विषय में 'श्रीरमेश-औषधालय, घास मण्डी लुधियाना के पते पर अपनी सकारण शुभ सम्मति भेजें। हम इसे 'ज्योति' में इस लिए प्रकाशित करा रहे हैं कि यह आर्य-भाषा-साहित्य के धार्मिक-क्षेत्र में कुछ काम भी करेगा या नहीं, यह निश्चय हो सके।

लेखक।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुन्दन—" अजी, ज़रा काम था "

अब्दुर—(स्मित-पूर्व) "अम्मियां, बीबी ने बुलाया होगा कहीं ? आइए, डरिए नहीं। बहुत-से-बहुत ज़रा ख़फ़ा होलेंगी ! "

धूर्त की बातें सुन, कुन्दन लज्जित हुआ। इस-लिए कि-अनुज माधव समीप ही खड़ा था। कुछ जवाब नहीं दिया। इतनी ही देरमें झट से अन्दर से कुन्डा खोल, " आइएगा हुज़ूर-आली ! " कह, रूमाल से मख़मली गदेली वाली दो कुरसियाँ झाड़, विमल कर, बिछा दीं। कुन्दन और माधव, बिजुली से सुप्रकाशित, देदीप्यमान कमनीय कमरे के बाहर के विभाग में उन कुरसियों को खेंच, बैठ गये,। इधर, अब्दुररहमान भी अपनी चेयर को पास खेंच, बैठे और बोलेः—

" भाई साहिब, सुनिए-वे लाला लोग हैं, हिन्दू हैं। हमारा और उनका तो बराबरी का सा मुआमला है। वे हमसे एक बार नफ़रत करें, हम हज़ार बार दुदकार दें। बाकी वे तुम लोगोंसे तो तअल्लुक़ात नहीं रखसकते हिन्दू ' हिन्दू ' को ही नहीं चाहता, फिर भला नीच क़ौम को तो कैसे पास बिठालें ? तोबाह, तोबाह ! यह तंग दिली तो हम में ही नहीं है। हम हर एकको गले लगालेते हैं।"

यह सुन, कुन्दन शान्त हो रहा, परन्तु माधव के हृदय को इन दुर्वचनों ने व्रणित किया। गम्भीरता रखते रखते-भी बिन चाही उत्तेजना उस में आही गई। वह सम्हल, बोला —

"मुआफ़ी दीजिए, एक बात कहता हूँ।"

अब्दु०—(दाढ़ों में फंसी छालियां नि-कालता दो तीन बार इधर-उधर, (शिर हिला), " नहीं नहीं, फ़रमाइएगा। "

माधव—" काम तो हमारा और आपका बिलकुल एक ही है, कुछ भी फ़र्क़ नहीं। "

अब्दुर०—(कुटिल कटाक्ष कर) " ज.. हां, जनाब !, पर काम एक होने से क्या है ? एक जैसे नहीं समझे जाते। तुममें हममें वैसे फ़र्क़ बड़ा है ! "

माधव—" वह क्या ?-"

अब्दुर०—" लीजिए, आज हम आपको समझा ही देते हैं। (कह, सावधान हो, फिर बोला) आप में हम में ज़मीं-आसमान-जैसा फ़र्क़ है, साहिब ! देखिए-तुम्हारे चोटी ज़रूर होगी। हमारे नहीं है ! खुदा जाने-हमारे आगे हिन्दू बड़े चकराते हैं ! देखि-एगा-इस से भी बड़ा फ़र्क़ और दिखाता हूँ-जिस गाय को-हिन्दू और हिन्दूओं की नक़ल करने वाली आप-जैसी क़ौमें पूजती हैं, उसी को हम हिन्दूओं के आगे काट, काट कर बेचते रहते हैं। जिन बैलों और बच्छे-बच्छियों को हिन्दू और नक़ली-हिन्दू दिल से प्यारे समझते हैं, उन्हीं का गोश्त काट-काट कर—जहाँ जहां हलवाईयों की दुकानों पर हिन्दू लोग खाना खाते हैं वहां-वहां—उन्हीं की आंखों के आगे—हम बेचते रहते हैं। * उन्हीं (बच्छों बच्छियों) को दो बालिश्त चमड़े के कल तुम्हारे आगे ही लाला साहिब ने खुशी से हंसते-हंसते सवा छः रुपये दिए हैं—यह कल

* दिल्ली में, व पञ्जाब के अनेक शहरों में और भी अनेक स्थानों पर हलवाई की दुकानों के पास मांस मांस की दुकानें देखी गई हैं-लेखक।

१-'नक़ली-हिन्दू' शब्द व्यंग से कुन्दन की ओर ही संकेत है। वा अछूतों को ओर।

आप देख ही रहे थे। और लो—जिन ठाकुरों-पाकुरों को सब हिन्दू और नक़ली-हिन्दू पूजते, उनके आगे माथा रगड़ते फिरते हैं, हमारा मौक़ा लगे तो हम तोड़ने, फोड़ने और उन पर कारूरा (मूत्र) करने तक को तैयार रहते हैं। जब जब हमारा मौक़ा लगा—(मूर्तियां) तोड़ फोड़ कर टुकड़े कर डालीं। सैंकड़ों मन्दिरों को तोड़ कर, मसजिदें बनवालीं, जिन्हें न अब तक हिन्दू भूले हैं, और असलियत रखते हैंगे तो न आगे भूलेंगे। जहां कहीं हमारा ज्यादह ज़ोर रहा—इन के दरवाजों के आगे, घरों के अन्दर क़ब्रें बनवादीं, जिन्हें अब तक यह लोग पूज रहे हैं *। इनके कोठों और चौबारों को दीवारों और आलों में, कूचों के किनारों और चबूतरों पर यह लोग, अब तक मुतवातिर 'दीया' जलाते हैं, सय्यद-बादशाह की उस जगह पूजा करते हैं,* क्यों—नहीं क्या ? मतलब यह कि हम सिर्फ़ एक खुदा को सिर झुकाते हैं, आप लोग ईंट-पत्थर और क़ब्र पूज कर, हिन्दुओं की नक़ल करते हैं। दर, असल न आप का कोई मज़हब है और न आपकी कोई ज़ात !"

कुन्दन—किं-वक्तव्य-विमूढ़ हो, मूर्तिवत् निश्चल—निर्वाक् हुआ बैठा रहा। यों बल पाकर, अब्दुर रहमान फिर कहने लगा:—"वेद को यह सब से अच्छी, पाक किताब मानते हैं। उसे नंगे पाओं ढोल ढमके के साथ बाज़ारों में लिये घूमते हैं। जब हमें वह मिलता है तो हम उससे टट्टी के × × × साफ़ कर फेंकते हैं। जब हमारी हुकूमत (राज्य-सत्ता थी—इनकी वेद वगैरह मज़हबी किताबें, बगल के जनेऊ छीन, जला-जला कर मुद्दत तक पानी गरम (हमाम में) किया है। उस वक्त हमने इनके मुंह में थूका है। गाय का गोश्त भर दिया है *। इनके चन्दन चाटे हैं। इनकी जवान लड़कियें खूबसूरत औरतें जो देखीं, इन से छीन लीं। और अपने में मिलालीं गांव के गांव इनके ज़बरन अपने में मिलाए हैं. और हमने उनका ईंट पत्थर का पूजना सदा के लिए छुड़वाकर, एकखुदापाक़ की इबादत करनी उन्हें सिखा दी ज्यादह क्या खूबी वाला ज़बरदस्त हमारा मज़हब है. जिसके न कुबूल करने पर 'हक़ीक़त का सर धड़ से जुदा करने में गुरु-गोबिन्द सिंह के जिन्दे बच्चों को दीवार में खड़े-चिनवा देने में देर नहीं लगाई, जिन्हें पंजाब अब तक रोता है*। फिर भला हमारे मज़हब से हिन्दू घिन कर सकते हैं कभी नहीं। अब भी जहां हमारी ज्यादह आबादी है, इनकी जवान लड़कियें, बच्चे औरतें को पाक़ नहीं छोड़ते।

यह तो आप भी जानते हैं कि हम पाखाने के हाथ नहीं धोते। अगर लाला लोग एक दफ़ा टट्टी जाएं तो ५, ६ दफ़ा मिट्टी से रगड़-रगड़ धोते हैं, तुम भी उन्ही की भाँति कई बार मिट्टी से रगड़ रगड़ धोते हो, मगर हम से हाथ मिलाते उन्हें कोई परहेज़ नहीं।" कह, खिल खिला कर हंस पड़ा।

कुन्दन सुन, मन-ही मन-कहने लगा-"पाखाने के 'हाथ' ही क्या—अपना देश (* * *) भी टट्टी जाकर तुम नहीं-धोते ! पर समय की खूबी है"। बैसे मौन रहा। सच तो यह कि दोनों भैय्ये सुन, पश्चात्ताप करने लगे कि "कहां आ बैठे?"

*यह नज़ारा भी दिल्ली-अमरोहा आदि यवन प्रधान रियासतों में देखने ही योग्य हैं।

* हा लिखना पड़ता है-ले०

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

परन्तु बाल्य-भाव से माधव अप्रसन्नता प्रकट कर, बोला:- "चलो, भय्ये! देरी होती है"

अब्दुर०—(माधव की अप्रसन्नता देख) "अजी, जनाब! और क्या आप हमारे ही यहाँ रहने लगे हैं, जाएंगे तो सही। पर दिल में कहीं नाराज़ नहीं होना?"

माधव अपने देवों देवों एवं धर्म के प्रति निन्दित और घृणित शब्द प्रयोग करते देख, पछताने लगा था-कि कहां आ बैठे? परन्तु दिखाने में उस भाव को छिपा कर, "नहीं-नहीं" कह, शिर हिला दिया।

अब्दुर०—" नहीं-नहीं की बात नहीं। सुनिए-अब घर बीती सुनाता हूँ। पहले हम भी मोजी ही थे मुज़फ्फरनगर की तरफ के हम हैं। यह तीसरी पुश्त की बात है-हमारे दादा तीन भाई थे। वे यहीं रहा करते थे। उन दिनों (उसी पास की मस्जिद को दिखा) इसी मस्जिद में एक जईफ मौलवी रहा करते थे। वे बड़े ही बिचारे नेक दिल और आलिम थे। एक दिन की बात है— हमारे छोटे दादा से एक हिन्द बनियां छूया गया। तिस पर उसने उनको अपने कहारों से इतना पिटवाया-इतना पिटवाया, ओफ़! देखने वाले तोबाह करने लगगए। उस वक्त उन मौलवी साहिब को बड़ा रहम आया उन्होंने हमारे दादाओं को पास बुला कर समझाया। आखिर उन्होंने इस्लाम मजहब को अख्तियार किया। हमारे बड़े दादा फिर भी अलग रहे। खैर! उन दोनों में से एक की औलाद हम हैं, हमारे छोटे दादा की औलाद में से हमारे भाई और हैं वे फौज़ काज़ी के पास सब तरह का गोश्त बेचते हैं। काश तो वे और भी कर सकते थे मगर हिन्दुओं के बुरे बरताव से उन्हें नफ़रत हुई-यहां तक उन के दिल में ज़हर घुला रहा कि- कई साल तक उन्होंने सिर्फ गाय का ही गोश्त- बड़ी कसरत के साथ-बेचा। खैर! अब तो उनमें से एक ने चमड़े की थोक फ़रोसी के लिए दुकान भी करली है। सो भाई जान यह बुरा मानने की बात नहीं। चाहे तुम जबरदस्ती हिन्द बने जाओ- असिल में हिंदुओं से तुम्हारा कोई कौमी ताअल्लुक़ नहीं।"

—अब तक तो कुन्दन— माधव अप्रसन्न थे, परन्तु जब उसने अपनी पूर्व-कथा सुनाई तब तो वह हृदय हो, एकान्त चित से मीमांसा करने पर उतरे। जिस अप्रसन्नता के कारण उनके मुख पर अवहेलात्मिका घृणाविबोधिनी स्पष्ट-रेखाएं छागईं थीं-वह कर्पूर हुईं। अब तो विचारों की झंझावात से घिरे, इस प्रकार बातें करने लगे कुन्दन— "नहीं साहिब! है तो ताअल्लक। देखिए- व्रत पूजा देवताओं की मानना, सब हिंदुओं जैसी ही हैं!॥

—अब्दुररहमान ने समझ लिया कि—,आप चक्कर में!, किन्तु अपना भाव दबा, हंस कर ठट्ठा बना, कहा:—

"वाह, क्या खूब? मियां! तुम अपने आप हिन्दुओं की खुशामद करते रहो, वे तुम्हारी छायां से नफरत करते रहेंगे। हमें बहुत अच्छी तरह जानते हैं। देखिए- भैंस बकरी, घोड़े गधे, कुत्ते ख़रगोश वगैरह जानवर भी तुमसे अच्छे! इस लिए कि हिंदू लोग उन्हें अपने घरों के अन्दर पालते हैं, रखते हैं, पुचकारते हैं। रोटी टुकड़ा देना हो तो प्यार से पुचकार कर अपने हाथ से उन्हें खिलाते हैं। कुम्हार अपने गधों सेभी मुहब्बत करेंगे, पर तुमसे नहीं! भले-भले हिन्दू-लोग भी—खास

कर ब्याहमें—गधों को छूते हैं, पूजते हैं*। पर तुम्हें कोई भी हिन्दू कभी नहीं छू सकता! भाई, चाहे चोटी रक्खो, बरत (वत) करो, राम राम शिव-शिव (शिव शिव) करो, देवी (देवो) भैरों (भैरव) पूजो। उन्हें रिझाने के लिये कुछ भी नक़ल करके उन्हें दिखाओ। मगर जहां कहीं तुमसे वे ज़रा छूए और उन्होंने कपड़ों समेत गुशल किया! तुम इन्सानों से हैवान अच्छे! सच समझना, यार! जो तुम खुदापाक से दुआ भी मांग कर लगा लोगे—तब भी वे तुम्हें नहीं छूने के हैं!" कह, ज़ोर से खिल खिलाकर, हंस पड़ा।

——कुछ समय ठहर कर, फिर कहने लगा—"हमतो सब भुगते हुए हैं। देखिए—हमारे साथ सकड़े से कूए पर वे पानी भरेंगे, जिस में बराबर हम चमड़े की डोल-चियां (चाहे वे गो चर्म ही की क्यों न हों?) डालते-खेचते रहें, जिनके पानी की छींटें सीधी इनके बरतनों में पहुंचती रहती हों—पर तुम लोग इनके चौड़े-से-चौड़े कूए पर भी चढ़ नहीं सकते, तुम्हारे पास चाहे लोहे के डोल, पीतल की टोकनियां ही क्यों न हों? तुम्हारे कूए अलग; जिस में तुम गुशल करो वह तालाब या जोहड़ अलग; या जिस तालाब या जोहड़ के जिस तरफ तुम गुशल करो, वहां हिंदू न फटकेंगे और जहां वे न्हाते हों, तुम अपनी छाया नहीं डाल सकते अगर किसी न्हाए ब्राह्मन पर तुम्हारी कहीं छाया पड़ जाए तो वे तुम्हारा सर तुड़वादें! तुम्हारे कानों में उनके वेद सासतर (शास्त्र) का अचानक एक भी हरूफ गिर जाए कभी, और उनकी हुकूमत हो, तो वे तुम्हारे कानों में गलवा कर सिक्का भरवादें! ऐसी सजा दें जिससे फिर तुम कुछ भी कभी न सुन सको! इतमीनान के लिए तवारीख देखो—ऐसा ही पीछे हुआ। ज़रा आंखों के साथ दिमाग का कनेक्शन करके देखो—गांव में तुम्हारे मकान अलग मुर्दों के लिये क़ब्रस्तान को—जलाने वाली जगह को—क्या कहते हैं—शम···शप···कुन्दन—"शमशान"।

अब्दुररहमान—"हां···शमशान अलग इनके भगवान की मूर्तियों को तुम आंखों से देख नहीं सकते। शादी ग़मी में न यह तुम्हारे, न तुम इनके। बन्दा बसर है अगर तुम्हारा इनके यहां खाना खाने का मौका आभी पड़े, तो तुम्हें दर—नाली के पास—बिठाल कर, मिट्टी के बरतनों, पत्तों में खिलाएंगे। उस वक्त रोटी तो ख़ैर उन्होंने फेंकी और चट तमने ओटली। मगर जब पानी या दाल देते हैं तब तो ऐसे देते हैं, जैसे गन्दी-नाली में डालते हों! तिस पर भी जिस बरतन से डालते हैं, उसे भी तुमसा समझते हैं यानी उसे भी मांझ लेते हैं, रगड़ कर। अगर गन्दी-नाली का पानी पैर पर गिर जाए तब तो सिर्फ पैर ही धोते हैं और जो तुम्हारे छूए बरतन से भी उछल कर कोई बूंद इनके पैरों पर गिर पड़े तो कपड़ों समेत न्हाते हैं!! हां, एक बात है—आब-दस्त लेते वक्त जिस उंगली को पाख़ाना

* पंजाब-और मरु देश में यह प्रथा है कि विवाह में घुड़चढ़ी से पूर्व गधे को सुन्दर चुंदड़ो उढ़ा फूल नाल पहनाकर, घोड़ी चढ़ने से पूर्व आदर से अवश्य-मेव उससे पाद-स्पर्श कराते हैं। सम्भव है कभी बुजुर्ग चढ़ते हों!

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

छू (लग) जाता है, उस हाथ को पांच छः बार मिट्टी से रगड़ कर धोते हैं अगर तुमसे कहीं ये छूए जाएं तो जिस्म को कई बार मिट्टी में रगड कर नहीं धोते सिर्फ़ एक ही बार कपड़ों समेत न्हा लेते हैं। यानी गू (पाखाने) के बनिस्बत इतनी कुछ तुम्हारी इज्जत है!!···तोबाह—तोबाह!" कह बड़े बेग से हंस पडा। साथ में इन दोनों को भी हंसना पडा।—कुन्दन कुछ देर के पश्चात् बोला—"क्यों जी, मुसलमानों के लिए मांस खाना ज़रूरी है?"

अब्दु०—'अम्मियां' यह तो अपने अपने दिल की बात है। बहुतेरे हमारे भाई बिलकुल नहीं छूते, बहुतेरे हिन्दू—बड़े बड़े पण्डित, ब्राह्मन—खाते हैं। यह ख़ूब सवाल किया। दर असल गोश्त बड़ा कुव्वत-वख्श है। और 'घास चरने' में क्या धरा है? (एक मिनट चुप रह कर) ख़ुदा की शान है! घास खाने वाले बकरी, दुम्बे, भेड़ वगैरह जानवरों की तरह बहुत से इन्सान भी जिन्दगी बसर करते ही हैं! हज़ारों की तादाद में, बल्कि कई गुने ज्यादह ऐसे हैं जो इस्लाम के झन्डे के तले रहते हुए भी नहीं खाते।

माधव—"क्यों—जी, शराबभी पीते हैं?

अब्दु०—"ओफ़! ऐसा करना हमारे यहां बहुत बुरा कहा है!" इसके अनन्तर कुछ देर तक कमरे में सन्नाटा रहा। फिर अब्दुर्रहमान ने कहा—"सच तो यह है, मियां! दुनियां के अन्दर एक इस्लाम मज़हब ही ऐसा है, जो नीच से—भी—नीच कौम को गले लगालेता है। कोई भी हो, इसके झण्डे के तले एक दफ़ा आजाए, फिर भाई—भाई की तरह मेलमहब्बत हो जाती है! (कुछ सोच कर) थोड़े दिनों से हिन्दुओं में भी एक फ़िरक़ा चला है, जिसका नाम है—'आर्य-समाज'। मगर उस में धोखेबाज़ी, खुदग़रज़ी बड़ी है। वह अपने में दिखाने को तो मिला-लेते हैं, पर अन्दरूनी तौर से रखते हैं सब नफ़रत।"

माधव—"यह कैसे, जी!"

अब्दु०—"उनकी बातें साफ बताती हैं। जैसे एक मोची को उन्होंने शुद्ध कर अपने में मिलाया, तो उस वक्त तो उस के हाथ से लड्डू पट्ट किसी ने खाए, किसी ने आँखें बचा जेब में डाल लिए। लेकिन फिर वहाँ यह बात नहीं कि उस मोची के चूल्हे आगे जो पक्के, वह भी मोहब्बत से सब मिल खाएँ, सो नहीं। फिर तो अपने अपने चौके में अपना अपना दाल-भात! किसी का छू तक नहीं सकते 'छूत' का 'भूत' वहां से भी दूर नहीं! और दूसरे हम एक बात और बतादें कि इस वक्त जितनी समाजें हैं, और उनके जितने प्रेजी-डेन्ट हैं, उन प्रेजीडेन्टों और समाजों में कोई एक आधी ऐसी समाज या एक आधा प्रधान होगा जिसने अपनी ज़िन्दगी भर में किसी चूहड़े या भंगी को शुद्ध कर, उसके साथ सबाबिरादराना रस्में बरतीं हों! कई समाजें ऐसी हैं कि जब से खुली हैं; एक भी किसी भङ्गी या चूहड़े को शुद्ध न कर सकीं! कोरी बातें!! इससे भी बड़ी बात यह कि जो उस मोची या किसी 'शोधित' के लड़की हुई, तब या तो उसी तरह का 'शोधित' वरना उसे और भी आर्या ब्याह लेने की हिम्मत कर लेता है। परन्तु जो उसके कोई लड़का है या उसे खुद को औरत की ज़रूरत है तो वह आर्या में पूरी नहीं हो सकती। फिर चाहे मरते दम तक लंगोटा बांधे फिरे या उन्हीं की औरतें भगाकर, लड़कियां भगा कर, फिर इधर इसलाम के राज्य में आ

जाए या रन्डियों के यहां खे खाता फिरे पर वहां कुछ नहीं।"

कुन्दन—(दीर्घ श्वास ले अगड़ाई तोड़ें) "यह बड़ी खराबी की बात है।

अब्दु०—'जी हां, जितने यतीमखाने आर्यों ने खोले हुए हैं उनकी लड़कियां तो उसके औहदेदारों के रिश्तेदारों; मित्रों सिफ़ारिश की लबालब डाली लाने वालों में बट जाती हैं? ठिकाने लग जाती हैं। और जब 'लड़के' अट्ठारह साल के आज़ाद हो कर निकलते हैं तो ९० फी सदी कुपढ़, हरामखोर, मिट्टी के माधो 'बेकार' होते हैं; बस, वे फिर चकलों में चक्कर काटते हैं या अपनी समझदारी से उसी (यतीमखाने) की लड़कियां रात-बिरात में भगाते हैं या दुनिया में ऐसे गुजारा न देख कर, पीछे ईसाई या मुसलमान बनते हैं। चाहे दूसरी तरह यों कहें कि—ईसाई मुसलमानों को आर्य यतीमखानों से काम करने के लिए पले पलाये मिल जाते हैं।

—इसके उपरान्त सब निर्वाक्, निश्चल बैठे रहे। फिर कुन्दन ने कहा:- अच्छा—जी, चलें!,,

अब्दुर०—"मैं भला कह सकता हूँ।,,

—इतने में सब उठ खड़े हुए। दोनों भय्ये हाथ मिला चलने लगे। चलते हुओं को अब्दुररहमान ने कहा:—'जरा घर में बैठ कर सोचियेगा। और देख लीजियेगा। कहां तक की तै खोलकर पेश का है?.. उत्तर में दोनों कुछहंस पड़े। और चल पड़े।

दयानन्दाष्टक

ले० श्री पं० टीकाराम जी भट्ट बिशारद हल्दौर

दोहा

दिनकर अस्ताचल गये, दे दोषाकर राज।
खुल खेले खद्योत खल, चमका नखत समाज॥ १॥
कल मुख दीपक जल उठे, जागे दम्भी लैम्प।
नाची थी चल चञ्चला, नृप-मन्डल के कैम्प॥ २॥

छप्पय

लखि दोषाकर दम्भ, उमगती ऊषा आई।
आते हैं रविदेव, सूचना यह शुभ लाई॥
अरुण शिखा ध्वनि साध, उच्च-स्वर बांग लगाई।
उठो! उठो! वरवीर, करो उनकी पहुनाई।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दयानन्द-युग आगया, ज्ञान-मान-सम्पन्न हो ।
आडम्बर उड़ जायगा, दम्भ ढोंग अवसन्न हो ॥ १ ॥

* * *

दयानन्द-आदित्य उगा, भारत-नभ ऊपर ।
अन्धड़ ने सब साज, भगा हा हा हू हू कर ॥
मत-मजहब नक्षत्र, न कृत्रिम कान्ति दिखाते ।
दम्भी जीव-उलूक, न हू हू हूक सुनाते ॥
ज्ञान-प्रभा फैली अहा ! हृदय-कमल विकसित हुये ।
चक्रवाक-जन मग्न हैं, रजनीचर बिस्मित हुए ॥ २ ॥

* * *

गये फरिश्ते भाग, अर्श का मिला न पाया ।
जड़-पूजन जड़ कटी, मान चेतन ने पाया ॥
गुरुडम-कुल की पोल, खोल कर खूब दिखाई ।
गुरु द्वारों में हुई आज, जनता की भाई ॥
नर नारायण पुत्र हैं, यह मत ही निर्भ्रान्त है ।
जन्म जात सब शूद्र है, यही सत्य सिद्धान्त है ॥ ३ ॥

* * *

नर-नारी से ईश, विश्व की रचना करते ।
फिर भी नर-नृशंस, स्वत्व नारिन का हरते ॥
ज्ञान मान सम्पन्न नहीं थे, इन्हें बनाते ।
अशुचि अवगुण सनी, जननि की जाति बताते ॥
वेद-भानु की ज्योति से, अबलाओं को बल मिला ।
उनके मानस विमल का सुरभित बुद्धि पंकज खिला ॥ ४ ॥

* * *

धृष्ट, धूर्त, ठग, जार, साधु का रूप बनाकर ।
हरते थे धनमान, धर्म का ढोंग दिखाकर ॥

शठता के अवतार, बने थे पीर पुजारी ।
जिनके जाल विशाल, फंसे थे नर अरु नारी ॥
इन्द्रिय लोलुप थे बने, नृप-चन्द्र-सूर्य मनु-वंस ।
ब्रह्मचर्य यम-नियम थे, मानस सर के वरहंस ॥ ५ ॥

* * *

अपना भाषा वेश सभी था अहो भुलाया ।
घर का गाढा छोड, विदेशी मिल-मल भाया ॥
हिन्दी गन्दी जंची, देववाणी को भूल ।
फस इंगलिश मिस फंद, कमल भौंरें से फूल ॥
प्रभा-सु-वैदिक ज्ञान की हमें मिली तत्काल जब ।
देखा घर का कोष जो नहिं पत्थर हैं लाल सब ॥ ६ ॥

* * *

मिले दया आनन्द, मार्ग वह हमें दिखाया ।
भारत का दुर्दृश्य दिखा भरपेट रुलाया ॥
बतलाकर सदुपाय, मिटाया शोक हमारा ।
वैदिक-पथ यदि चलो, होय उद्धार तुम्हारा ॥
यही ईश का ज्ञान है, यही द्वार भव मुक्ति का ।
जिसने इसको पा लिया, उसे सोच क्या मुक्तिका ॥ ७ ॥

* * *

अब तक चलते रहे, जरा अब सोचो भाई ।
देखो तो मुंह मोड़, राह कितनी चल पाई ॥
है अब कितनी शेष, और आगे तय करनी ।
अरु किस किस गम्भीर नदी की धारा तरनी ॥
आई जन्म-शताब्दी, स्वच्छ पंथ दरसावनी ।
दयानन्द सरसावनी, गुरु गौरव नौका बनी ॥ ८ ॥

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

कुसुमोद्यान

गुरुकुल और खादी

श्रीपूज्य महात्मा गांधी जी ने १५ अप्रेल के हिन्दी नवजीवन में लिखा है :—

श्री सेठ जमुनालाल जी बज़ाज हरिद्वार से लिखते हैं :—

"दो दिन गुरुकुल कांगड़ी में रहा। वहां मुझे बड़ा सन्तोष हुआ कि खादी के वायु-मण्डल का अच्छा विस्तार किया जा सकता है। श्री रामदेवजी, देवशर्माजी, सत्यकेतु जी सेठी जी आदि बहुत से महाशय खादी और चरखे के प्रचार के पक्ष में हैं। बहुत ही थोड़ा प्रयत्न करने से मैं यहां चर्खासंघ के कुछ सभासद बना सका हूँ उनके नामों की सूची साथ है। मुझे आशा है कि दूसरे और भी बहुत से सभासद होंगे। गुरुकुल में आपके श्रद्धा और भक्ति का परिमाण अच्छा है। गुरुकुल कन्या महाविद्यालय देहली में भी चरखा शुरू कर दिया गया है और दिन प्रतिदिन उसमें उन्नति होने की आशा है।"

जमुनालाल जी की भेजी हुई सूची में ४० नाम हैं। नाम तो यहां नहीं दिये जा सकते। परन्तु उसका पृथक्करण अवश्य ध्यान देने योग्य है। उसमें प्रथम सभासद तो गुरुकुल के आचार्य हैं। पांच उपाध्याय हैं, सात नये स्नातक और वेदालङ्कार तथा विद्यालङ्कार उपाधि भूषित हैं। पांच चतुर्दश श्रेणी के ब्रह्मचारी हैं, चार द्वादश श्रेणी के और पांच एकादश श्रेणी के ब्रह्मचारी हैं, गुरुकुल में दो बहिन सभासद हुई हैं और देहली में तीन—विद्यावती सेठ (बी० ए०) आचार्या कन्या गुरुकुल और दूसरी दो अध्यापिका सीता देवी तथा चन्द्रवती देवी जी।

पंजाब के खादी निरीक्षक लिखते हैं :—

"आर्य समाजियों की तरफ़ से मुलतान छावनी में एक गुरुकुल है उसमें १४० विद्यार्थी हैं। उनके व्यवस्थापक ने सब विद्यार्थियों को खादी के ही कपड़े देने का निश्चय किया है। पहिले देशी मिलों के कपड़े उन्हें दिये जाते थे और उस में क़रीब २५८०) रु० खर्च होते थे। परन्तु अब हम लोगों ने उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने का भार अपने सिर लिया है और पहला हफ्ता दे भी दिया है और आनन्द की बात तो यह है कि उनके बजट में कोई रक़म बढ़ाये बिना ही उनको पूरे कपड़े दिये जा सकेंगे।

मुज़फ़रगढ़ में आर्य समाजियों का एक अनाथालय है और इसी ज़िले में एक गांव में गुरुकुल भी है। इन दोनों संस्थाओं को हमारी खादी एजन्सी उनकी आवश्यकतानुसार खादी पहुँचाती है।

इन सब संस्थाओं को मैं धन्यवाद देता हूँ।

(नवजीवन) मो० क० गांधी

भारतीय महिलायें

भारतीय देवियों की गुणगाथा करना सरल बात नहीं है। वैदिक मैगेजीन लिखता है कि:-

सर सी० पी० रामास्वामी अयर, ला मेम्बर मद्रास ने राइट आनरेबिल श्रीनिवास शास्त्री की अध्यक्षता में अभी एक निबन्ध पढ़ा जिसके बीच में उन्होंने प्राचीन भारतीय महिलाओं की योग्यता, कार्य कुशलता, तथा निपुणता का वर्णन करते हुए कहा कि:-

वैदिक कालीन देवियां

हमारी सभ्यता को बड़े ध्यान से अध्ययन करने वाले ऐतिहासिक भी इस विषय में बड़ी भारी ग़लतियां कर गये हैं। चूंकि उन्होंने अकस्मात् प्राप्त हुई इक्का दुक्का बातों पर ही अपना आधार रखा है। पाणिनी की अष्टाध्यायी केवल व्याकरण ही नहीं है वरन एक बड़ा भारी कोष है, स्पष्टतया तत्कालीन विचारों का इतिहास है और समाज की प्रारम्भिक दशा का क्रमबद्ध इतिहास है। जब महर्षि पाणिनि ने अपनी यह आश्चर्य जनक पुस्तक लिखी उस समय 'कठी' 'वह्वृची' आदि शब्दों की विद्यमानता इस बात की सूचक है कि स्त्रियां वेदों की कठशाखा का अध्ययन करती थीं, और बहुतेरी देवियां बहुत से वेद मन्त्रों के अर्थ करती थीं। पाणिनि की अष्टाध्यायी में 'पत्नी' शब्द की परिभाषा अर्थात 'पत्युर्नो यज्ञ संयोगे' इस बात का स्पष्ट सूचक है कि यज्ञों में—जोकि प्राचीन भारत में नैतिक जीवन के बड़े भारी मुख्य अंग माने जाते थे स्त्री पुरुषों के समान अधिकार और समान कर्त्तव्य थे।

वर्तमान समय में परिस्थितियों के भिन्न होने से हम यह नहीं समझने सकेते कि उस समय राजा दुष्यन्त के दर्बार में शकुन्तला का उपस्थित होना कितना स्वभाविक था। दमयन्ती पति की खोज में अकेले किस प्रकार यात्रा करती रही? और उत्तर राम चरित्र में महारानियों के महर्षि बाल्मीक के आश्रम में पधारने का वर्णन कैसे किया जा सका? हमारे साहित्य के पंडित ही जानते हैं कि यह सर्वसम्मत बात है कि नाटकों के खेलों के समय देवियां भी उपस्थित होती थीं; देवताओं के मन्दिरों में वह स्वच्छन्दता से जाया आया करती थीं और सच तो यह है कि महाभारत के जमाने में भी जबकि इन कि स्वच्छन्दता पर रुकावट पड़ती नज़र आने लगी थी—यह कहा जाता है कि वह खुले मुंह घूमती थी और उन्हें पूर्ण स्वतन्त्रता थी। भारतीय साहित्य का तीक्ष्ण दृष्टि पंडित किन्तु हमारी सभ्यता का निष्पक्ष आलोचक सर मोनियर विलियम्स रामायण में कैकेयी, कौशल्या और मन्दोदरी के वर्णनों को तथा महाभारत में द्रौपदी दमयन्ती के चरित्रों को उद्धृत करते हुए यह स्वीकार करता है कि यह देवियाँ हमें हेलन या पेनिलोप की अपेक्षा अधिक हृदय ग्राही और विदुषी प्रतीत होती हैं और वह गान्धारी की मार्मिक पति भक्ति का विशेष रूप से उल्लेख करते हैं जो अपने अन्धे पति के साथ पूर्ण सहानुभूति प्रगट करती हुई आंखों में पट्टी बांधकर निकला करती थी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

बौद्ध कालीन देवियां

महाराज अशोक का चचेरा भाई संघ मित्र लंकापुरी में गया था और वहाँ पर उसने दर्शन शास्त्र की एक पाठशाला खोली जिस में बहुत सी लंका की देवियां निपुणता प्राप्त करती रहीं।

कवि और वैज्ञानिक

भारत का सुप्रसिद्ध ज्योतिषी बराह मिहिर एक खन्ना नामक देवी का शिष्य बना था। इस देवी ने लंका की वहीं बसने वाली जातियों से ज्योतिष के प्रारम्भिक सिद्धान्त की शिक्षा प्राप्त की थी पीछे से उसे परिवर्द्धित किया था। अन्त में जब देवी ने अपने २ गवेषणों को पूर्ण कर लिया तो परस्पर विवाह करके विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक प्रसिद्ध रत्न बराह के घर रहने लगे थे।

रोटी कमाने वाली स्त्रियां

हिन्दू रिपब्लिक' लिखता है कि स्त्रियों के लिये काम करना नई बात नहीं है। अति प्राचीन काल से स्त्री जाति ने अपने हिस्से का कार्य हमेशः ही किया है और प्रायः करके आवश्यकता पड़ने पर दूसरा भी कार्य किया है जिन में बहुत सी वह बातें भी शामिल हैं जिन्हें आज कल के पण्डित शारीरिक और मानसिक दशा की दृष्टि से स्त्रियों को करने के अयोग्य सिद्ध करते हैं।

पुराने सिद्धान्त के अनुकूल जिसे आज-कल भी बहुत से लोग यथार्थ मानते हैं- आदर्श कुटुम्ब वह समझा जाता था जिसका केन्द्र एक ही रोटी कमाने वाला हो अर्थात पति और पिता। पत्नी का कर्तव्य कुछ २ उच्च घरानों को छोड़ सभी कुलों में यह था कि घर के शारीरिक बल से सम्बन्ध सभी कार्य करे और पति के साथ बच्चों के पालने पोषणे और चरित्र संगठन में भी भाग लेवे।

परन्तु चाहे कभी यह सिद्धान्त यथार्थ सिद्ध होता हो आजकल यह ठीक नहीं हो रहा है। आज दिन ८५००००० देवियां केवल अमरीका के संयुक्त प्रान्त में ही कमाने के काम में लगी हुई हैं। सारे देशों में जितने काम करने वालों की जनसंख्या है उस के $\frac{1}{4}$वां भाग यह स्त्रियाँ हैं और दिन प्रति दिन इन की संख्या तथा औसत भी बढ़ती जाती है। १८८० में इन की औसत १४.७ प्रति शतक थी तो १९२० में २७.१ प्रति शतक हो गई। आज दिन घरेलू नौकरों में स्त्रियों की संख्या ६४.२ प्रति शतक है, पेशों वालों में ४७.४ प्रति शतक, क्लर्कों में ४५.६ प्रति शतक। चार छोटे बड़े शहरों को मिला कर जहां ४०००० स्त्रियां काम करती थी कमाने वाली स्त्रियों का भागी $\frac{3}{4}$ था अर्थात् चौदह वर्ष से ऊपर आयु वाल सब स्त्रियों की कुल संख्या मिला कर उनका औसत २८ प्रति शतक था।

कहा जाता तो यह है कि काम करने वाली देवियां प्रायः करके वह कन्यायें हैं जो विवाह से पूर्व के कुछ वर्ष कमाने में लगा देती हैं। लेकिन मनुष्य गणना विभाग ने जो तालिका बनाई है कि और श्रम विभाग की जो रिपोर्ट है वह इस बात को ज़रा भी प्रमाणित नहीं करती। यह सच है कि ३५००००० देवियाँ रोटी कमाने में लगी हुई हैं जिन की आयु २५ वर्ष से कम है और इन का बड़ा भारी भाग अविवाहित भी हैं। लेकिन यह तो कुल संख्या का $\frac{3}{5}$ भाग ही बनती हैं। ८५००००० में से लगभग २० लाख तो विवाहित ही हैं॥

कंघियों का फैशन

हम सब लोग कङ्घियों को नित्य प्रति देखते और वर्तते हैं किन्तु इन का प्रचार कब हुआ कैसे हुआ यह बहुत कम लोग जानते होंगे। अतः ज्योति के पाठकों के विनोदार्थ हम चेम्बर्स जर्नल से इस सम्बन्ध में कुछ उद्धृत करते हैं:—

कङ्घियों के सब से प्राचीन नमूने जो कि मिले हैं और वृटिश तथा युरोप के इजाइब घरों में रखे गये हैं वह ईसा के जन्म से ४०००० वर्ष पूर्व के हैं जब कि मिश्र देश में द्वितीय राजवंश राज्य करता था। वह सब प्रायः काठ की बनी हैं (कभी २ हड्डी, हाथी दाँत या सोने की भी होती थीं) जिनके लम्बे भद्दे दांत बहुत छिदरे होते थे। जिन कंघियों में एक दो दांत होते थे उन के ऊपर नकशी भी की जाती थी। कभी तो पवित्र बैल की या किसी न किसी देवताकी तस्वीर खींची हुई होती थी। पैरिस के इजाइब घर में एक ऐसा नमूना है जो कि अर्ध चन्द्राकार है और ऐसा मालूम होता है कि आज कल की तरह शायद सिर में लगाने के कंघों का नमूना होगा न कि केवल बाल साफ़ करने का एक यन्त्र मात्र।

इस युगों से चली हुई प्रथा का लेखकों के प्रमाणों से हमें यह भी ज्ञान होता है कि स्पार्टा तथा युनान देशों के लोगों में बहुत प्रचार था। उनका कई ढंग से अपने बाल सजाने पर अधिक ध्यान था और न केवल स्त्रियाँ ही बाल सजाती थीं वरन् यह भी इतिहास बतांता है कि जब पुरुष लोग युद्ध में जाते थे तब योद्धाओं का यह नियम था कि वह एक स्थान पर ठहरते थे, बड़ी सावधानी से बालों को कंघी करते थे और इसे एक धार्मिक संस्कार सा मानते थे।

इसके कुछ समयके बाद इतिहास बतलाता है कि रोम की देवियाँ अपने बालोंको विविध भांति सजाने तथा बालों को इस भांति बनाने के लिये कि वह नकली शिर-कवच सुगमता से धारण कर सके बहुत प्रकार की काठ, हड्डी, दांत सोने, चाँदी, पुखराज आदि कीबनी हुई विविध शकलों की कंघियाँ वर्त्ता करती थीं। इस जमाने की जितनी कंघियां पाई गई हैं और सुरक्षित हैं उनमें से बहुतेरी उस समय की हैं जब कि ब्रिटेन में रोम का अधिपत्य था। उन की शकलें तथा जिस चीज़ की वह बनी है वह वस्तु भिन्न २ प्रकार की हैं। एक नमूना जो कि गिल्ड-हाल इजाइबघर मे बहुत अच्छी तरह रखा गया है उस का हत्था काठ का है। बहुत वर्ष हुये वह स्टाक एक्सचेन्ज के समीप खंडरों के खोदने से मिली थी।

इस के बाद मध्य कालीन समय तक जो कंघियां साधारण लोगों में वर्त्ती जाती थीं वह भद्दे दांतों वाली होती थीं और उन की शकलें तथा ढग बहुत सुन्दर नहीं होते थे। उस समय के सर्दार लोग बेशक बड़ी सुन्दर कंघियां वर्तते थे जिनपर खेलोंके या भांति २ के फूलों और फलोंके तथा कहानियोंके चित्र खिचें हुये होते थ। वह बहुत भारी होती थीं और बालों में लगानेके अयोग्य होती थीं।

अट्ठारहवीं शताब्दि के अन्त पर कछुवे की हड्डी की कँघियां वर्त्ती जाने लगी थीं जो कि अब भी उन घरानों में तथा इजाइब घरों में सुरक्षित रखी हुई हैं। यह बालों के सजाने के काम में भी आती थीं। वह इटली तथा स्पेन से आती थीं क्योंकि वहां की देवियों ने सब से पहिले इस सुन्दर नमूने को धारण करना स्वीकार किया था।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्पेन की उस ज़माने की कई कंघियें आज कल जो बालोंको सजाने के लिये तथा स्थान२ पर घुंघुरों को स्थिर रखने या सुन्दर बुर्के को स्थान पर रखने के लिये वर्ती जाती है उनके बहुत ही समान होती थीं। वह बड़े लम्बे दांतें वाली, बहुत सी चित्रकारी वाली होती थीं और चूंकि उनकी चौड़ाई बहुत ही होती थी अतः ९ या १० इन्च लम्बी होती थीं। उन पर लकीरे बहुत होती थीं, बहुतेरों पर बड़े सुन्दर २ गाथाओं के चित्र खिंचे रहते थे या तले पर सुन्दर वृक्षों के नमूने रहते थे।

लेकिन एक युरोप देश ही अकेला नहीं है जहां कि कङ्घियां पहिनी जाती हैं और बनती हैं। पूर्वीय देशों के कुछ बहुत प्राचीन कङ्घियोँ के नमूने भी रखे हुये हैं। वह बहुत सुन्दर हैं और प्रायः सभी पर कनशी बहुत भारी है और पाश्चात्य लोगों की रुचि के लिये बहुत गहन है। खास करके भारतीय कङ्घियां तो अपनी नकशी के लिये ही मशहूर हैं। चीन में भी अति प्राचीन भद्दी नकशी के समय २ बहुत सुन्दर और दुर्लभ आलेख्य की नकशी के नमूने भी मिलते हैं। जापानी यद्यपि कलाओं की सुन्दरता के लिये विख्यात हैं तथापि बड़े भारी नकशी की या बड़ी ऊंची दीवालों वाली कंघियां नहीं बनाते। उनकी पीठ हमेशा छोटी होती है इसलिये कमल के फूल, चेरी फूल, पत्तों की लहरिया, छपकुली, आदि लम्बे प्रकार के नमूनों को ही वह खींचते हैं।

चाहे पूर्व हो या पश्चिम कंघियां सर्वत्र पाई जाती हैं। अचम्भे की बात तो यह है कि स्त्रियों के पहिनने या सजावट के साधनों में से जो सर्वत्र प्रचरित वस्तु है वह कंघी है। लडंनकी बड़ी फैशनेबुल लेडी साहिबाओं के पास बाल साफ करने तथा सजावट के लिये लिये भी कंघियां हैं। पैरिस की बड़ी फैशन वाली लेडी बालोंको कछुवों की हड्डी की हीरे जड़ी सुन्दर कंघी धारण करती हैं। भारतीय महिलाओं के पास भी सोने या हाथी दांत की कंघियां होती हैं, जापानी देवियों के पास शंख, हाथी दाँत या जेड नांमक पत्थर या लाख के रंग से रंगी हुई कंघियां होती हैं और अफ्रीका आदि जातियोँ की देवियां यद्यपि अपने कपड़ों के सम्बन्ध में फैशन करना जानती ही नहीं तथापि अपने बालों को सुधारने के लिये मछली की हड्डी या नाक की हड्डीया भद्दी लकड़ी की बनी हुई कंघी को बर्तती हैं।

हमारी मंजूषा

मंगल प्रभात—लेखक श्रीयुत चण्डा प्रशाद जी "हृदयेश" प्रकाशक। 'चांद' कार्यालय इलाहाबाद। पृष्ठ संख्या ७२४, सुन्दर सुदृढ कपड़े की ज़िल्द बँधी पुस्तक का मूल्य ५)।

यह पुस्तक प्रकाशक के शब्दों में एक मौलिक सामाजिक उपन्यास है। हम यदि इसमें एक शब्द और बढ़ाकर इसे 'मौलिक सामाजिक मनोवैज्ञानिक उपन्यास' कहें तो चार शब्दों में पुस्तक का रूप और उद्देश्य आजाता है। हमने 'मनोवैज्ञानिक' शब्द जोड़ा है और हमारे विचार में यही इस उपन्यास की मुख्यता है। हृदयेशजी ने मानव हृदय के

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

भावचित्रण और भावनाओं के विश्लेषण में जिस पाण्डित्य का परिचय दिया है वह प्रशंसनीय है। योगी, यति, ब्रह्मचारी, गृहस्थी, धर्मात्मा और पापात्मा, स्त्री और पुरुष, युवा, बाल, वृद्ध इत्यादि किस प्रकार कब और किन विचारों से उत्तेजित होकर शुभ अथवा अशुभ काम में प्रवृत्त होते हैं इस की मानसिक विवेचना बड़ी योग्यता और सरलता से इस पुस्तक के पाठ से हमारी समझ में आ सकती है। मनुष्य के हृदयस्थ गूढतम भावों को इतनी सरलता, कोमलता और हृदयता से अङ्कित किया है कि चतुर चित्रकारकी चातुरी की सराहना किये बिना नहीं बनता।

पुस्तक मौलिक है इसमें सन्देह नहीं। सामाजिक समस्याओं को उपस्थित करने और उनके समाधान का ढंग निराला ही है। बाल विवाह, अनमेल विवाह समाज का स्त्रीजाति के प्रतिकूल अत्याचार, व्यवहार, और उसका दारुण परिणाम धर्म के रूपमें पाप का साक्षात्कार इत्यादि सामाजिक समस्यायें हैं जो हमारी जाति की जड़ को खोखला कर रही हैं धर्म की दुहाई देकर हमें इन के सुलझाने से अपितु उन पर विचार करने मात्र से रोका जाता है। इन धर्म की दुहाई देने वालों धर्म के ठेकेदारों के मानसिक भावों को—जब कि वह मुख से इन कुरीतियों के दूरीकरण का विरोध करते परन्तु मन में कुछ और विचारते हैं—प्रगट और चित्रित कर लेखक ने इन लोगों की स्वार्थमय वासनाओं का जो दिग्दर्शन कराया है वह ध्यान देने योग्य है। धर्मभ्रष्ट राधा का जो क्रमप्राप्त स्वाभाविक पतन दिखलाया है वह किस न्यायप्रिय समाज-दुख-पीड़ित व्यक्ति के हृदय को दो टूक न कर देगा? बम्बई में वेश्या बन जाने पर और अपने इस कर्म को बसन्त कुमार द्वारा "जघन्य व्यवसाय" शब्दों से सम्बोधन किये जाने पर राधा कहती है "जघन्य व्यवसाय? नहीं, मैं इसे जघन्य व्यवसाय नहीं मानती हूं। पर वह यदि जघन्य व्यवसाय है भी तो भी इसे स्वीकार कर मैं सुखी हूँ, जो समाज असहाय युवती को निर्बल बालपति के साथ बरबश बांध देता है जो रमणी के हृदय की समस्त आकांक्षाओं को अपनी दारुण व्यवस्था से कुचल डालना चाहता है, जिस समय सास ससुर अपनी पुत्र बधु पर असह्य अत्याचार करते हैं, वह समाज कौन से मुंह से वेश्या वृत्ति को जघन्य कर्म कहता है? हमारे क्या हृदय नहीं है? उस हृदय में क्या आकांक्षा, आशा, वासना और पिपासा नहीं है? पर समाज हमारे उस हृदय को अत्याचार की अग्नि में भस्मसात करता है और जब हम उस अग्नि की वेदना को न सहकर इस विशाल विश्व की रंगभूमि में अपने हृदय की परिशान्ति के लिये शैतान का आश्रय लेती हैं तब वह हमारे कर्म को जघन्य कर्म कहता है? कैसी निर्लज्जता है! कैसी नीचता है? कैसी कपट लीला है! जघन्यकर्मा शैतान उत्पीड़ित के रक्षा कर्म को जघन्य कहता है, इस से बढ़कर नीच निर्लज्जता और क्या हो सकती है?" कैसे मर्मभेदी शब्द हैं पर कितने सत्य!

भारत की सामाजिक कुरीतियों में विवश वैधव्य एक जटिल समस्या है। बाल विवाह का यह अवश्यम्भावि परिणाम है। कितने समाज सुधारक विधवा विवाह को ही इसका एक मात्र उपाय समझते हैं। हमें प्रसन्नता है कि लेखक ने इस साधारण प्रचलित परन्तु दोषपूर्ण उपाय का अवलम्ब नहीं लिया। बसन्तकुमार एक धर्म-रत्न नवयुवक है, उसका जीवन तपोमय है। प्राय से

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

उसे घृणा है । कर्तव्य का वह पुजारी है । वह बाल विधवा सुभद्रा की रूप माधुरी पर आसक्त हो जाता है, परन्तु अपनी इस वासना को पाप वासना समझता हुआ उसको प्रति क्षण दबाने का यत्न करता है। किस प्रकार धर्म और पाप का युद्ध इसके हृदय में भयंकर मार काट पैदा करता है यह लेखक ने बड़े विस्तार से अङ्कित किया है। तीव्र वासना के अग्निकुण्ड में वह जलता है। यदि लेखक चाहता तो सुभद्रा से उसका विवाह करवा कर उसके हृदय को भस्म करने वाली आग पर जल के छींटे छिड़क सकता था परन्तु उसने ऐसा नहीं किया। तापसी सुभद्रा को पुरुषों की वासना पर न्योछावर नहीं किया। यदि वह ऐसा करता तो कतिपय समाज सुधारकों की दृष्टि में किसी प्रकार भी अनुचित न था। लेखक ने इस विवाह को इस जटिल समस्या का एक मात्र सब प्रकार उचित समाधान न मानकर हमारे सन्मुख एक और कहीं उत्तम और पुण्यतम मार्ग रखा है, और वह मार्ग देश, जाति और दुखियों की निःस्वार्थ सेवा है। इस महान सागर में मानव हृदय की तीव्र से तीव्र वासनायें शान्त हो सकती हैं। यह ठीक है कि स्वर्गीय पंडित ईश्वर चन्द्र विद्यासागर से पहले विधवाओं के सन्मुख विवाह का प्रलोभन नहीं था। परन्तु उनका तपोमय जीवन केवल घर की चार दीवारी के भीतर निज कुटुम्बियों की सेवा ही में व्यतीत होता था जो कि उनकी आकांक्षाओं और शक्तियों के लिये कोई पर्याप्त क्षेत्र न था। शक्ति के क्षेत्र को समाज सेवा के रूप में विस्तृत कर लेखक ने विधवा समस्या का जो आदर्श हमारे सन्मुख रखा है आशा है उस पर पूर्ण विचार किया जायगा।

पुस्तक में केवल कुरीतियों पर ही विचार नहीं। किसी भी प्रकार की कुरीतियों को दूर करने की तीव्र इच्छा और कृत्यों में सदा का वास मनुष्य के हृदय में चाहे संयम तप और सेवा के भाव अवश्य उत्पन्न करदे पर वह उसका पूरा विकाश नहीं करता। पाप को दूर करना ही उपयुक्त नहीं वरन धर्म का सञ्चार भी अत्यन्तावश्यक है। मानव हृदय को उच्च, उत्तम और प्रशस्त बनाने के लिये उसका विशुद्ध, सुखमय और शान्त जलवायु में निवास उतना ही आवश्यक है जितना कि दुर्गन्धयुक्त, भ्रष्ट और गन्दे स्थान से परे रहना। लेखक ने पुस्तक में विशुद्ध प्रेम, तपोमय जीवन, निस्वार्थ सेवा बालस्नेह इत्यादि अनेक सुन्दर, कोमल और मधुर दृश्यों को चित्रित कर उपन्यास को आशामय शान्ति और सुख का कानन बना दिया है।

पुस्तक की भाषा शुद्ध, परिमार्जित और सरस है। शोक कि हम इसे सरल नहीं कह सक्ते। भाषा में कठिन, बहुत कम प्रयोग में आने वाले शब्दों और वाक्यों की इतनी भरमार है कि वह पढ़ते समय मन पर एक प्रकार का बोझ डालते हैं। लिखने की शैली में एक और दोष है। किसी भी विषय की विवेचना और विश्लेषण करते समय लेखक इतना विस्तार में चला जाता है कि कई बार मन ऊब जाता है। यह सत्य है कि लेखक के इस वर्णन में पाठक को अपने भावों का प्रतिरूप दिखलाई देता है परन्तु, आत्मसम्मान भी मनुष्य हृदय का एक गुण है। वह यह समझता है कि मैं भी कुछ हूँ। यदि लेखक प्रत्येक विषय, दृश्य अथवा घटना का इतना विस्तृत वर्णन न करके उसकी पूर्ति पाठकों पर छोड़ देता तो जहां लेखन शैली से बोझल

CC0. Gurukul Kangri Collection, Haridwar. Digitized by eGangotri

पन दूर हो जाता वहां इस में सरल सरसता भी अधिक आ जाती।

अन्त में हमें इतना ही कहना है कि यह उपन्यास हिन्दी भाषा में एक अमूल्य वृद्धि है। हमारे साहित्य में इसको उच्च स्थान मिलेगा। इसका उद्देश्य उच्च और महान है और इस की प्राप्ति के लिये बतलाये हुये साधन निर्मल और शुद्ध हैं। हम श्री चण्डी प्रसाद जी को उनकी इस कृति पर बधाई देते हैं। (र० न०)

२. किरण—अंग्रेजी की गल्पोंका अनुवाद। अनुवादक श्रीयुत ब्रजजीवनदासगुप्त प्रकाशक' 'सञ्जीवन ग्रन्थमाला' कार्यालय बुलानाला काशी। मूल्य ॥।) पृष्ट संख्या १२७ मोटे एन्टिक पेपर पर, छपाई साफ।

इस में अधिकतर अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक ए कोनेन डायल की लिखी गल्पों का संग्रह है। कुल मिलाकर पांच गल्पें हैं। गल्पें अधिकतर भावपूर्ण हैं। मानव जीवन के संस्कारों के प्रतिचित्र प्रायः प्रत्येक गल्प में वर्तमान हैं। अनुवाद साधारणतया अच्छा है। कहीं कहीं वामुहाविरा और रोचक है। पर कहीं कहीं मनगढन्त शब्दों की योजना खटकती है। जैसे उसका सिर रेशमी तकिये पर उठंगा हुआ था इत्यादि।

३ जवा—संपादिका-कृष्णाकुमारी। लेखक कविराज श्री प्रतापसिंह वैद्य विशारद। प्रकाशक गंगा-पुस्तकमाला, उसी की महिला मणि माला की यह आठवीं मणि है। मूल्य ॥।≠)। पृष्ट संख्या १५७ आकार मझोला छपाई सफाई अच्छी।

यह पुस्तक नाम ही से प्रसिद्ध है। इसमें स्त्रियों के मासिक धर्म से लेकर प्रसवपर्यन्त उन्हें आचार व्यवहार की उचित एवं उपयुक्त शिक्षा दी गई है। पुस्तक के अन्त में उपयोगी औषधियों के प्रयोग बताये गये हैं।

यह हमारे देश का दुर्भाग्य है कि स्त्रियां इस विषय में बिलकुल बेखबर रखी जाती हैं, तथा साधारण सी भूल चूक से उनका आगामी जीवन रौरव नर्क बनजाता है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं स्त्रियों के लिये लिखी गई है। वर्णन शैली बड़ी सुन्दर और विशद है। भाषा रोचक है। पुस्तक की उपादेयता को देखते हुए मूल्य भी अनुचित नहीं है। हम स्त्री संसार से सोग्रह अनुरोध करते हैं कि वे स्वयं पढ़ें और अपनी बालिकाओं को इस विषय की उचित शिक्षा दें। हम लेखक महोदय को उनके इस स्तुत्य परिश्रम के लिये धन्यवाद देते हैं।

४ रंगभूमि—उपन्यास—लेखक श्रीयुत प्रेमचन्द जी। सम्पादक श्री दुलारेलाल भार्गव प्रकाशक गंगा पुस्तक माला। दो भाग बिना जिल्द का मूल्य ५) पृष्ट संख्या ६३० छपाई सफाई मनोरंजक।

यह गंगा पुस्तक माला का चालीसवां पुष्प है। आरम्भ में दो पृष्ट का सम्पादकीय वक्तव्य है। और लेखक का सादा चित्र। यह कहने की आवश्यक्ता नहीं कि मुंशी प्रेमचन्द जी हिन्दी संसार के कितने सुप्रसिद्ध एवं प्रतिष्ठित लेखक हैं। हमें गर्व है कि हिन्दी भाषा की कोख ने रवीन्द्र, रैनाल्ड जैसा एक उपन्यास लेखक पैदा कर दिखाया है। मुंशीजी का यह गद्य काव्य हिन्दी संसार का चिरस्थायी रत्न है। इसकी समालोचना में जो कुछ लिखा जाय थोड़ा है। भाषा और भाव की दृष्टि से पुस्तक बहुत रुचिर सरस है। हमने तो इतनी सरस भाषा के इतने गंभीर दार्शनिक

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

विचार कहीं पढ़े नहीं। सोफिया, सूरदास दोनों ही सहृदय हैं। दोनों ही भावुक हैं, पर दोनों के चरित्र में जमीन और आसमान का अन्तर है। दार्शनिक विचार की गूढ़ गुत्थियों को जितना सुलझाने का सोफिया ने प्रयत्न किया है, उसके जीवनकी विचार शृंखला उतनी ही जटिल और अविस्पष्ट हो गई है। दूसरी तरफ सूरदास उतना ही सादा सुस्पष्ट कर्त्तव्योचित धारणाओं का स्वामी है। उसके जीवन की प्रत्येक तन्त्री कर्त्तव्य का निनाद कर रही है। राजा महेन्द्र कुमार जैसे विभवप्रिय को नीचा दिखाना नहीं सन्मार्ग पर लाने के लिए उसे कुछ परिश्रम नहीं करना पड़ा। मनुष्य अपनी प्रकृति का कितना दास होता है इसके उदाहरण कुंवर भरत सिंह, राजा महेन्द्र कुमार हैं। विनय के सोफिया के प्रति उत्कट प्रेम और परीक्षा में कर्त्तव्य युक्त होना मनुष्य जीवन की महत्ता और अवसाद के उत्कट प्रमाण हैं।

व्यावहारिक बुद्धि विचक्षण जानसेवक, विलासों की उत्कट दासी मिसेज़ जानसेवक, धर्म के आडम्बर प्रिय जीवन वाला जान सेवक का पिता, बातूनी नायकराम, ताहिर अली आदि अपने २ पार्ट के उत्कृष्ट सम्पादक हैं। रंगभूमि राजनीति धर्मनीति, समाज नीति का उदात्त अभिनय स्थान है। कहीं कृत्रिमता नहीं। कहीं विषय विशृंखलता नहीं। एक सा अचूक अनवरत प्रवाह है। हम इन थोड़े शब्दों में मुंशी जी की इस कृति को सफल, और उन्हें सांसार पारदर्शी कह कर विश्राम लेना चाहते हैं, और हिन्दी संसार से आशा करते हैं कि उनमें यदि कोई उपन्यास प्रेमी न हो तो भी, इसे अवश्य पढ़ेंगे। उदयशंकर भट्ट

वनिता विनोद

स्त्री जगत।

नर्सों और दाइयों की रजिस्ट्री।

मद्रास प्रान्त में एक कानून बनाया गया है जिसके द्वारा नर्सों और दाइयों की रजिस्ट्री कराना आवश्यक बन गया है। अब से तीन वर्ष के बाद जो नर्सें या दाइयां परीक्षोत्तीर्ण होकर या ट्रेनिंग लेकर अपना नाम रजिस्टर नहीं करायेंगी तो उन्हें किसी सर्कारी या अर्ध—सर्कारी हस्पतालों में कोई नौकरी नहीं मिलेगी। इससे तीन साल के बाद बच्चा जनाने सम्बन्धी सहायता में बड़ी उन्नति होगी।

तुर्किस्तान में एक देवी मेयर के पद पर।

श्रीमती कुदरत खानुम एक ६० वर्ष की वृद्धा महिला हैं जो कि सर्व सम्मति से तुर्किस्तान के एक गांव जिरमत की मेयर चुनी गई हैं। तुरकिस्तान में अभी पहिले पहिल ही मेयर का पद स्थिर हुआ है और उसकी पहिली अधिष्ठात्री एक देवी बनी हैं। यह देवी विधवा हैं और पढ़ना लिखना बिलकुल नहीं जानतीं। लेकिन उन्हें ग्राम के सारे नियम कंठस्थ हैं। अपनी

आजीविकार्थ यह अपनी बहू तथा दो पोतियों की मदद से खेती का सारा कार्य भी करता है। इनकी इस कार्य कुशलता से तुर्किस्तान के नारी मण्डल में मुसलमान स्त्रियों के लिये मताधिकार प्राप्त करने का आन्दोलन बड़ा उत्साह प्राप्त कर रहा है।

पुरुष पर्दे में।

अफरीका में तैरे रेगज़ एक जंगली जाति है जिसकी विशेषता यह है कि यद्यपि इस जाति के पुरुष युद्ध करने में बड़े कुशल हैं और बड़े वीर्यशाली और पराक्रमी हैं लेकिन इन में स्त्रियां ही सारा शासन कार्य और सब आवश्यकीय अधिकारों को करती हैं। पुरुष का नाम भी पिता पर न रखा जाकर माता पर रक्खा जाता है। इन में पुत्र सम्पत्ति का अधिकारी नहीं होता वरन् पुत्री ही उत्तराधिकारी मानी जाती है। पुरुष एक पत्नीव्रत धारण करते हैं किन्तु स्त्रियों को छै पतियों के करने का अधिकार है। और वहां पर पुरुष लोग मुंह ढांप कर निकलते हैं।

लेडी चैटर्जी और फेक्टरी कार्य

लेडी चैटर्जी एम० ए० डी०यस०सी० ने अभी लंडन की रायल सोसाइटी आफ आर्टस के सन्मुख एक निबन्ध पढ़ा है जिस में उद्योग धन्धों में लगे हुए भारतीय स्त्रियों और बच्चों की दशा का बड़ा उत्तम चित्र खींचा है और यह प्रगट होता है कि इस दशा पर उन्होंने गहरी दृष्टि डाली है और इस बात पर जोर लगाया है कि फैक्टरियों में स्त्रियां निरीक्षिका नियुक्त की जावें, कामों में लगे हुए व्यक्तियों के लिये पढ़ाई के भी घंटे रखे जावें और आराम के भी, उन्होंने यह भी कहा कि जाति का तथा व्यक्तियों का भी हित ध्यान में रखकर यह आवश्यक है कि सेवा की शर्तें कानूनद्वारा निश्चित हों और क्रियात्मक रूप से बर्ती भी जावें और उनके स्वास्थ तथा सतीत्व की रक्षा का भी उचित प्रबन्ध हो।

उड़िया प्रान्त की एक महिला श्रीमती निशालायक ने केम्ब्रिज विश्वविद्यालय की शिक्षिका की परीक्षा पास की है। प्रान्त में इस परीक्षा में जो पास हुये हैं उन में से यह पहिली महिला है।

जगन्नाथ पुरी में हिन्दू महासभा के आधीन बाबू गोप-बन्धूदासने एक विधवा आश्रम इस प्रकार का खोला है कि तीर्थ स्थान में जितनी भी विधवा हों अथवा अन्य भी अनाश्रय स्त्रियां हों उनको यहां आश्रय मिला करे।

चीनी स्त्रियों में ९० फीं सदी स्त्रियां अशिक्षिता हैं क्योंकि उनमें पुरानी स्त्रियों को तो पढ़ने लिखने की कुछ आवश्यक्ता ही नहीं मालूम होती थी। भारत की स्त्रियों की स्थिति इससे भी खराब है। यहां एक प्रतिशतक स्त्री ऐसी है जो लिखना पढ़ना जानती है।

स्त्रियों के कर्त्तव्य

ले०—सुशीला देवी गुप्ता पटियाला।

उस सर्वशक्तिमान् कृपालू परमपिता परमात्मा को कोटिशः धन्यवाद है कि जिस की असीम कृपा से हमें अपने भूले हुये पूर्व कर्त्तव्यों का ध्यान जागृत हो रहा है। हमारा अज्ञानान्धकार दूर होकर ज्ञान का संञ्चार हृदय में उल्लास पैदा कर रहा है। और हमें अपनी दुर्दशा और अनभिज्ञता पर दृष्टिपात करनेकी समर्थ्य होने लगी है।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

परन्तु शोक ! कि अभी हमें वास्तविक कर्त्तव्य का ज्ञान अच्छी तरह विदित नहीं हुआ है। बहिनों गृहस्थ एक राज्य का भार है, जैसे राजा के ऊपर एक प्रजा का भार होता है। अगर राजा अपने राजकार्य को उचित रीति से पालन नहीं करे तो उसके राज्य के नष्ट होने की सम्भावना है और उसके राज्य में कभी शान्ति स्थापित नहीं होती। इसी तरह अगर हम भी अपने राज्य कार्य्य में थोड़ी सी त्रुटि करदें तो हमारे गृहस्थ रूपी राज्य में कभी शान्ति नहीं होती। गृह किसे कहते हैं ? जिस में गृहणी हो जिस घर में गृहणी नहीं वह घर नहीं, यदि गृह में दस बीस मनुष्य हों तो भी उस गृह के कार्य्य में यह बात नहीं आती जो एक स्त्री के होने से होती है। गृहस्थ का भार उठाने की शक्ति गृहणी में ही होती है पुरुष इस कार्य्य के करने में सर्वदा अयोग्य देखे गये हैं।

जो स्त्री गृहस्थी के कार्य्य में योग्यता नहीं रखती, गृहस्थी का ज्ञान सम्पादन करने का प्रयत्न नहीं करती, वह गृहणी कहलाने योग्य नहीं। गृहस्थी का मुख्य कार्य्य गृह व्यवस्था है। अर्थात् घर का काम काज करना बाल बच्चों की देख भाल करना उनकी शिक्षा का प्रबन्ध करना, पति की सहायता करना, अपने से बड़ों की सेवा करना, गृह में शांति स्थापित रखना यथा लाभ सन्तोष रखना, यह बातें कुछ सरल नहीं हैं। इन कामों के लिये बुद्धि विद्या विचार की आवश्यकता है। गृह में कलह और दुःखों का मूल आलस्य और अशिक्षितता है। आलसी स्त्रियां कभी अपने गृह की उन्नति करके अपने कुटुम्बी लोगों को प्रसन्न नहीं कर सकतीं, स्त्रियां यदि आलस्य त्याग करके गृहस्थी के कामों में यथेष्ठ मन लगावें एवं हर समय परिश्रम से अपने परिवार वालों की सेवा करती रहें तो निश्चय है कि आजकल की भांति सास ससुर से बहू का विद्वेष न होने पावे।

आजकल के बड़े घरों की कन्यायें प्रायः विलासी और घर के काम काज करने में आलसी देखी जाती हैं, बहुत सी स्त्रियां गृहकार्य्य एवं रसोई करने के व्यापार को छोटे गृहों का कार्य्य समझती हैं"। ऐसा करने से गृह में विशृंखलता और चारों ओर अशांति का ही कारण हो जाता है। आलसी मनुष्य का मन और स्वास्थ्य बड़ी जल्दी खराब हो जाते हैं, वर्त्तमान जो हिस्टिरिया और सूतिका रोग हो रहे हैं वह इसी आलस्य का कारण है।

इस आलस्य में पड़कर स्त्री को अपनी ज़िन्दगी में सच्चा आनन्द उठाना कठिन ही नहीं वरन् असम्भव है, इस लिये हे बहिना ! सबसे पहिले अपने कर्त्तव्य पर विचार करने को इस दुष्ट आलस्य का परित्याग करना चाहिये।

भगिनिगणों ! संसार में जितने दुःख कष्ट और विपदा हैं उन सब को सहन करके गृहस्थ को सुख निकेतन बना डालना ही स्त्रियों का कर्त्तव्य है। दुःख चाहे कितना ही पड़े परन्तु तुम अपने धैर्य्य को कदापि नहीं छोड़ो कभी भी अधीर होकर अपने विचार बुद्धि को न गवांओ जिससे कि अपने कर्त्तव्य को भूल जाओ।

तुम्हारे सास श्वसुर व परिवार के लोग चाहे तुम्हारे साथ सदव्यवहार नहीं करें किन्तु तुम उस से क्षुब्ध न होओ और प्रयत्न करो कि जिस से उन्हें कुछ कहने का अवसर ही न प्राप्त हो। बहिनों अगर तुम

अपने इस कर्त्तव्य का पालन सच्चे मन से करोगी तो ईश्वर तुम्हारे कष्टों को अवश्य हरण करेंगे।

अगर तुमने अपने धैर्य्य को त्याग दिया और असंतोष से उसका पालन नहीं किया तो ईश्वर भी तुम से असन्तुष्ट हो जायेंगे। अतएव तुम को सर्वदा अपने धैर्य्य को अपना भ्राता समझना चाहिये। कभी इसका अपमान नहीं करना चाहिये। स्त्री में चतुराई अवश्य होनी चाहिये जो स्त्री चतुराई से काम नहीं लेती उन्हें अत्यन्त दुख भोगना पड़ता है स्त्री चाहे जितनी सुन्दर हो परन्तु अगर उसमें चतुराई नहीं हो तो उसे कोई प्यार नहीं करता उसका बड़ा निरादर होता है वह आदर की पात्री नहीं रहती। हर एक कार्य्य में चतुराई की आवश्यकता है इस चतुराई के द्वारा स्त्रियाँ अपने गृह को स्वर्ग बना लेती हैं, इस विषय में मैं एक चतुर बहू का वृतान्त लिखती हूं। जिसने अपनी चतुरता से अपनी कलह कारिणी सास को भी सरल स्वभाव वाली बना लिया था।

"एक ग्राम में एक ब्राह्मणी रहती थी उस के दो पुत्र थे बड़े का नाम केसरी और छोटे का नाम कपूर था, कपूर की बहू का नाम सुशीला था, उसका जैसा नाम था वैसी ही वह बुद्धिमती भी थी। गृह के समस्त कामों को ऐसे समयों में विभाजित कर दिया कि सास को भी लज्जित होना पड़ता था परन्तु सास मूर्खता वश इस को अभिमानी समझ कर अपने आप भी दण्ड देती थी और अपने पुत्र कपूर से भी दण्ड दिलवाना चाहती थी यह दोनों माता तथा पुत्र उसको दण्ड देने पर सन्नद्ध हुये परन्तु उस सुशीला बहू ने कारण जान कार्य्य की ऐसी युक्ति रची कि सास के सब कारण नष्ट हो गये परन्तु तब भी सास ने अपनी कुटिलता नहीं त्यागी और नित्य नवीन कारण विचारती रही एक दिन सासु ने बहू को कपूर लेने के लिये बाज़ार भेजा और सोचा कि देखूं अब इस की बुद्धिमता कि यह बनिये से कपूर किस तरह माँगती है क्योंकि इसके पति का नाम कपूर है और पति का नाम लेना वर्जित है। यह सोचकर बहू के पीछे २ उसके जेठ को भेजा कि सुनकर आओ कि यह बनिये से क्या कहती है? जेठ छुपकर के देखने लगा कि यह कैसे कपूर माँगती है बहू ने बनिये के पास जाकर किस बुद्धिमानी से कहा। उसने कहा—

शंख से उज्ज्वल शशिवरण,
आवे सुगन्ध सुवास।
वह बनिये मोहे तौलिदे,
लेन पठायी सास॥

बनिये ने कुछ देर सोच कर कहा, कि कपूर चाहिये तब बनिये ने पुड़िया बांधकर कपूर दे दिया जिसे लेकर वह बुद्धिमती चलदी। मार्ग में अपने जेठ को खड़ा देखकर आगे न जा सकी और एक स्थान पर बैठ गई घर पहुंचने के लिये उसे कुछ देर हो गई। तनन्तर यह घर पहुंची इसे देखकर सास बड़ी क्रोधित हुई कि आज तैने इतना समय कहाँ लगाया और अपशब्दों का उपयोग करने लगी। बहू ने हाथ जोड़कर कहा कि माता जी मेरी बिनय सुन लीजिये।

वैशाखे ऊपर लगे ग्रीषम को है मास।
सो ठाड़े थे गैल में, कैसे आती मात॥

प्यारी बहिनों देखो उस विदुषी बहू ने जेठ शब्द तक अपने मुख से उच्चारण नहीं किया। इस दोहे को सुनकर उसकी सास लज्जित हुई और अपनी मूर्खता पर पश्चा-

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

ताप करने लगी कि मैंने व्यर्थ ऐसी बुद्धिमती बहू को दुःख दिया ऐसी चातुर्य्यता देखकर जेठ की ईर्ष्या नष्ट हो गई और उसका आदर होकर चारो तरफ़ बड़ाई फैलगई।"

प्यारी बहिनों इस मोहिनी आभूषण को अङ्ग पर धारण कर अपनी तथा अपने कुटुम्ब की शोभा बढ़ाती रहो और अपने कर्त्तव्य को उचित रीति से पालन करती हुई अपनी नष्ट हुई मर्यादा को फिर से जागृत कर दो।

जीवन की एक विशेष घटना।

[लेखिका—अञ्जना देवी आर्य श्रीनगर]

आज पाठशाला में छुट्टी थी, इस लिये आज मैंने घर पर कुछ कन्याओं को बुला कर गणित तथा सीना पिरोना सिखाना चाहा, कन्यायें दिव्य समय पर पहुँच गई मैंने उनको गणित सिखाया पश्चात् सिलाई का समय आया तो कन्याओं ने कहा, कि हमें आप कुछ शिक्षा संबन्धी कथा आदि सुनावें, ताकि काम भी हो जावे और शिक्षा भी मिले मैंने कहा—अच्छा सुनो (एक कन्या जिसका नाम विमला है)

बिमला—अध्यापिका जी मैंने सुना है, कि आप पहिले इसाई थीं ?

मैं—हाँ तुम ठीक कहती हो, परन्तु उससे पहिले मैं हिंदू भी थी।

बिमला—अध्यापिका जी आपने कैसे धर्म परिवर्तन किया था और क्यों किया था ?

मैं—हिंदू समाज के उलटे, बुरे, बन्धनों से पीड़ित होकर ?

बिमला—अध्यापिका जी, क्या आप हमें इस विषय में बतलायेंगी ?

मैं—(एक लम्बी आह भर कर) क्यों नहीं सुनो मैं तुम्हें सुनाती हूँ छोटी आयु का तो मैं हाल जानती नहीं, पर यह जानती हूं कि मेरे पिता काशी में रहते थे मन्दिरों में कथा आदि किया करते थे, मैं कोई छः वर्ष की थी, जब मेरा विवाह होगया था, मेरे विवाह के पश्चात् मैंने फिर अपनी माता का घर नहीं देखा मेरे पति की आयु तीस पैंतीस वर्ष की थी मेरे विवाह के पूर्व ही से उन को क्षयरोग हो गया था, अतः एक वर्ष के भीतर ही परलोक की यात्रा को चल दिये। सास ने फकीरीबाना पहिना दिया, हाथ की चूड़ियां फोड़ दीं, बस मुसीबत का दिन शुरु हुआ, खुशी के बदले रोना नसीब हुआ अब मुझे कोई पूछता तक न था कुत्तों की तरह सदा दुतकारा करते थे मैं छोटी थी, मुझे क्या पता, कि मुझपर क्या मुसीबत आई है, इस लिये जब लड़कियों को हंसते खेलते देखती, तो मेरा दिल भी खेलने को चाहता पर मुझे कोई पास तक न आने देती, इस पर मैं प्रायः सारा दिन रोया करती थी जब मैं कुछ बड़ी हुई तो सास ने घर का हर एक काम मेरे सुपुर्द किया। अब मैं रात दिन काम में लगी रहती कपड़े धोती झाड़ू देती भोजन बनाती, पानी भरती अर्थात् सारा गृह कार्य

करती, परन्तु फिर भी मुझ से कोई भली प्रकार बात न करता, उलटा सदा ही दुत्कारा करते थे। मैं जितना प्रसन्न करना चाहती, वह उतना ही रुष्ट रहा करते इस पर मुझे बहुत दुख होता था मैं रात सोचा करती कि मैंने क्या किया जो ईश्वर ने मुझे नरक प्रदान किया, इससे अधिक तो नरक की यन्त्रणा न होती होगी।

अब मेरी आयु करीब चौदह वर्ष की थी मैं अब मानापमान समझती थी इसी से मुझे अब दिन प्रति दिन अधिक दुख प्रतीत होता था।

एक दिन मैं पानी लेने तालाब पर गई तो मुझे एक ईसाई स्त्री मिली मुझे देखकर प्रेम से बोली—तुम किस जगह रहती हो, तुम्हारा नाम क्या है मैंने उसे अपना नाम, स्थान बता दिया, मैंने जब से होश संभाली थी,तब से मेरे साथ कभी कोई प्रेम से न बोलता था। इस लिये उसके मीठे संबोधन से मुझे आंसू आ गये, और पैरों पड़ी। मुझे रोते देखकर वह बोली-तुम क्यों रोती हो?

मैं—मुझे विधवा कहते हैं, परन्तु मैं जानती नहीं, कि मेरा कब विवाह हुआ, और कब मैं विधवा बनी और जो मेरे साथ घटाव हुआ करता था, मैंने सब कह दिया उसने प्रेम दर्शाते हुए कहा यही तो हिंदू समाज में दुःख है कि लड़कियां जानती नहीं कि विवाह क्या होता है, तो विवाह कर आजन्म दुखी बना देते हैं हमारे में यही तो खूबियां हैं कि हम लड़कियों को बीस पचीस वर्ष तक पढ़ाते हैं, बाद में उनकी इच्छानुसार विवाह कर देते हैं; इसी प्रकार उसने मुझे बहुत बातें बताईं और फिर बोली—कि फिर मैं इसी समय में इसी स्थान पै तुम्हें कल मिलूंगी यह कहकर वह मुझे सान्त्वना देती हुई चली गई। मैं सारी रात सोचती रही, कि क्या ही अच्छा धर्म है क्या ही स्त्रियोंका स्वतन्त्रता है ओह? मैं कितना दुख उठा रही हूं दूसरे दिन मैं फिर पानी लेने तालाब पै गई वह स्त्री आज फिर मिली आज भी उसने मुझे अपनी बहुत बातें बताई अब वह मुझे नित्यही मिला करती थी। मैं भी उसके मिलने से सारा दुख भूल जाती थी। एक दिन उसने मुझे कहा-तुम हमारे साथ चलो हम तुम्हें भी अपने धर्म में शामिल, कर लेवेंगी फिर तुम इस नरक की भयानक यत्रणा से सदा के लिये छूट जाओगी पहले तो मैं झिझकी पर कवि के कथनानुसार—

बुभुक्षितः किं न करोति पापं, क्षीणा जना निष्करुणा भवन्ति॥

मैं उनके साथ चल पड़ी वह मुझे चर्च में ले गई और मुझे ईसाई बना लिया गया मुझे वह नित्य बाईबिल में से ईसामसीह की कथायें सुनाया करती थीं, मै वहां सुख से दिन काटने लगी।

वह मुझे अपनी भेषभूषा सिखाती थी मुझे इङ्गलिश सिखाती थी इसी प्रकार तीन चार वर्ष तक मैं उनके धर्म ग्रन्थों का अध्ययन करती रही अन्त मे एक दिन मुझ से प्रश्न हुआ, कि तुम विवाह करना चाहती हो, या मिशन का काम करोगी। मैंने मिशन का कार्य्य लिया, अतः मैं एक योरोपियन मिशनरी के साथ प्रचार के लिये बाहर निकली इसी प्रकार दो चार वर्ष तक मैं प्रचार करती रही, एक दिन हम दोनों एक मुहल्ले में पहुंची वहां कुछ स्त्रियां बैठी हुई थीं। हमने वहां जाकर वार्तालाप आरम्भ किया बहिनो! क्या कर रही हो? उन्हों ने पीछे हमें खड़े देखकर बैठने को स्थान दिया हम बैठ गईं,

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तो फिर बोलीं—हम तुम्हें एक गाना सुनाती हैं, यह कहकर गाना शुरू किया—

"मरियम के बेटे ईसा सुनना....."

इतना कह ही पाई थी, कि एक स्त्री जिसका नाम बेदवती था बोली—आपके गाने से कुछ लाभ न होगा। आप बातों से कहें?

मैं— कहिये क्या पूछती हैं।

वेदवती—मरियम कौन थी?

मैं—ईसा मसीह की माँ थी।

वेद—मसीह कौन था?

"मैं—खुदा का बेटा था, हमारे दुख दूर करने आया था।"

वेद-अर्थात् मरियम खुदा की औरत थी?

मैं—नहीं खुदा की तो कोई स्त्री नहीं थी।

वेद०— आप स्वयम् तो कह रही हैं, कि मसीह मरियम का पुत्र, और खुदा का भी पुत्र था।

मैं—नहीं? चूंकि कुमारी मरियम से उत्पन्न हुआ था, इस से ईसामसीह को हम खुदा का पुत्र मानते हैं (यह सुन सब स्त्री ज़ोर से हस पड़ीं)।

वेद०—आप गलती कर रही हैं कभी यह हो सकता है कि कुमारी कन्या के पुत्र हो, यह बात सिर्फ पाप छिपाने के लिये की गई है।

मैं—नहींजी! एक दूसरे पुरुष को जिसके साथ उसकी सगाई हो चुकी थी, रात को स्वप्न में खुदा ने कहा—कि जो मरियम के सन्तान होगी, वह पाक है, क्योंकि उसका देने वाला मैं हूँ। (फिर सब हस पड़ीं)

वेद०—अच्छा इस बात को छोड़ दो? अच्छा, क्या सिर्फ मसीह ही खुदा का पुत्र है, हम सब नहीं है?

मैं—हैं तो सही? परन्तु मसीह हमारे पाप दूर करने आया था।

वेद०—क्या बात को पलट दिया है? कहदो पहिले जो कुछ कहा वह ठीक नहीं है, खैर, जो मसीह हमारे पाप ले गया तो फिर पाप क्यों नज़र आरहा है? तब फिर नज़र न आना चाहिये था, यह तो उल्टा दिन प्रति दिन बढ़ ही रहा है।

मैं—हो सकता है, सारे पाप दूर न हुये हों। कुछ २ दूर होगये होंगे ही।

वेद०—तो फिर मसीह की क्या बड़ाई रह गई? क्या हमारे ऋषि महर्षि ऐसे न थे? यह तो मानी हुई बात है, जो नेक होगा, नेकी ही फैलायेगा महर्षि दयानन्द जी का जीवन चरित्र पढ़ो, तो आँख खुल जायगी। क्या उच्च जीवन था?

मैं—परन्तु जो ईसामसीह में ईमान नहीं लाते, वह मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकते।

वेद०—तो आपका मतलब है, कि सब ईसाई पाप से मुक्त हो गये, और मर कर अवश्य मोक्ष को प्राप्त करेंगे?

मैं—नहीं सब तो नहीं जिनके चरित्र अच्छे होंगे?

वेद०—तो इसी प्रकार हम भी मानते हैं, जो शुद्ध चरित्र होगा वह मोक्ष प्राप्त करेगा।

मैं—नहीं, जब खुदा के सामने हिसाब होगा, तो सिफारिश मसीह करेंगे, जो मसीह के प्रेमी होंगे वह स्वर्ग प्राप्त करेंगे।

वेद—जब कर्मों के आधार पर स्वर्ग नर्क प्राप्त होता है तो फिर मसीह की क्या आवश्यक्ता है कि हमारे कर्मों की वकालत करे? अच्छा जो मसीह पहिले से उत्पन्न हो के मर भी गये हैं उनका क्या फैसला होगा?

मैं—कर्मों के आधार पे।

तो फिर हमारा भी वैसे ही होगा?

मैं—नहीं आपका नहीं। आपका महा हो सकता जब तक कि मसीह पै ईमान न लाओ।

वेद—ठीक, अब फिर गलती रास्ता पकड़ा। कि चाहे कर्म कैसे बुरे हों सिर्फ मसीह पर ईमान लाने से मोक्ष प्राप्त होगा।

मैं—(अपनी सखिन से) सिस्टर कुछ तुम भी कहो मैं तो थक गई हूँ। मुझे पसीना पोंछते देख वेद ने कहा पंखा करूं?

मैं—(शर्मा कर) नहीं रहने दो।

मेरी साथिन—और न सही हम लोग हमदर्द तो बहुत हैं देखो जिन्हे तुम कुंए पै चढ़ते नहीं देते, पास बिठाने से नफरत करते हो हम उनको कितने प्रेम से अपनाते हैं? हमने पाठशालायें खोली? हस्पताल खोले? क्या२ नहीं किया, तुम लोगों के सुधारने को मारी मारी फिरती हैं।

वेद—आप यह सब कुछ अपने स्वार्थ से करती हैं, मुहब्बत आप लोगों में ये जो है वह दुनियाँ जानती है, पादरी लोग, दूसरे पादरियों को जिन्दा आरे से चिरवाते, आग में जलवाते रहे हैं।

मैं—खैर, हिन्दू क्या अपने भाइयों के प्रति कर रहे हैं!

वेद०—क्यों नहीं कर रहे, जिन के पास धन है सदाव्रत लगवाते हैं, धर्मशालायें खुलवाते हैं, कुए तालाब खुदवाते हैं, हमारे वेदों में जो मनुष्य के प्रति कर्म लिखे हैं आप के कहीं नहीं, रही छूआ छूत की बात, सो कमियां हर एक जाति में रही हैं। जो कमियां हैं, उनका हम सुधार करते हैं, दुनियाँ में नेक बद हर एक जातीय लोग होते हैं, जो नेक हैं, वह नेकी फैलाते हैं जो बुरे हैं, वह बुराई, भले उनका सुधार करते हैं। आपको क्या२ गनाऊं, हमारे यहां सन्यासी विरक्त भाव से देश में धर्म प्रचारका कार्य करते हैं, रोगों को बिना मूल्य औषधि बेचना कहां है विद्यालय, अनाथालय, विधवाश्रमादि देश जाति की सेवा करते हैं। आज गुरुकुलों में जो उच्च आदर्श की शिक्षा दी जाती है, क्या वही आदर्श शिक्षा का तुम लोगों के कालेज रखते हैं! कभी नहीं। किन्तु मैं कहूँगी कि जितने विद्यार्थी आपकी शिक्षा प्रणाली के अनुसार शिक्षा ग्रहण करते हैं, वही देश जाति की प्रायः गिरावट का मुख्य कारण हो रहे हैं, यदि कोई निर्पक्ष रूप से आपके बाइबल आदि धर्म ग्रन्थों के साथ वेदों की तुलना करे, तो ठीक सूर्य और दीपक का सामना होगा, फिर यदि वेदानुकूल जीवन व्यतीत करने से मनुष्य मोक्ष प्राप्त करता है, तो कैसे सिर्फ आपके मसीह पै ईमान लावे स्वर्ग मिल सकेगा।

मैं—(पसीना पोंछती हुई) अच्छा फिर कल मिलूंगी। चली आई मैं वहां से। अब वह मसीह जिसके नाम पर मैं जान देना चाहती थी मामूली मालूम होने लगा। बार२ उसकी बातें याद आतीं, तो दिल में ख्याल होता कि इन को अज़माना चाहिये ऐसा सोच सत्यार्थप्रकाश लेकर पढ़ने लगी।

मैं सहारनपुर जा रही थी, कि मार्ग में मेरी चिर परिचित् वही ईसाई स्त्री स्टेशन पर मिली मैं खद्दर की सफेद धोती पहरे थी मुझे देखते वह अवाक रह गई और बोली बहिन यह पहनावा कब से आरम्भ हुआ है?

मैं—जब से आप का साथ छूटा

वह बोली—फिर हिन्दू?

मैं—हां अपवित्रता छोड़ पवित्र हुई हूं। बहन स्त्री-बहिन साफ़ कहो तुमसे यह आशा नहीं था!

मैं—जब से मेरी वेदवती से बहस हुई उसी दिन से मेरामन कुछ खिन्न था। मैं सत्य असत्य का निर्णय करने के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने लगी फिर जब सत्य पक्ष लग

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

गया तो समाज मन्दिर में जाकर प्रार्थना की उन्होंने कृपाकर मेरा उद्धार किया। वह कुछ कहना ही चाहती थी, कि गाड़ी चल पड़ी और उसके मन की बात मन में रह गई, मैं सहारनपुर आकर आप भी पढ़ती रही और इस पाठशाला में पढ़ाती भी रही। आज सात वर्ष से यहीं हूं।

विमला—अध्यापिका जी आज तो बहुत उत्तम शिक्षा मिली, यह कहकर चली गई। मेरे मन में भाव उत्पन्न हुआ कि अपनी घटना जाति की सेवा में अर्पण करूं ताकि कुछ लाभ हो सके।

अछूतोद्धार

ले०—भानुदत्त 'ऋषि' हिन्दी प्रभाकर

रात्रि का समय है, चारों ओर निस्तब्धता छा रही है। अन्धकार का राज्य है। नगर का प्रत्येक घर रोशनी से जगमगा रहा है। नगर के बाहर एक टूटी फूटी झोंपड़ी है। वहां सड़क के लैम्प की मन्द किरणों के सिवाय किसी प्रकार की भी रोशनी दिखाई नहीं देती। इसी झोंपड़ी में एक मनुष्य अपनी स्त्री से कह रहा है—हाय क्या करूं ? सारा दिन काम की तलाश में फिरता रहा, भीख मांगी जो कुछ भी हो सकता था किया; परन्तु किसी ने एक पैसा भी न दिया। सभी मुझे नीच जाति का होने से दुत्कारते हैं। रमेश [वक्का का पुत्र] की चेचक निकली हुई है उसके बचने में भी सन्देह है। इसे कल शाम से होश भी नहीं आयी हाय ! इसके मुंह में एक घूंट दूध भी न दे सका। लड़की अलग भूख से कराह रही है। तू भी तीन रोज से बीमार है। क्या करूं ? सारे शहर में एक पण्डित बुधाराम का घर और है। सुनते हैं कि वह बहुत सज्जन तथा दयालु पुरुष हैं। सबेरे वहीं जाऊंगा। इतने में ही रुग्ण बालक ने ज़ोर से चिल्ला कर कहा, "अरे कुछ खाने को दो"। परन्तु वहां क्या था ? जो देते। माता पिता पत्थर सा दिल लेकर अपनी किस्मत को कोसने लगे।

सबेरा होते ही रमेश की मां ने रमेश के पिता से पण्डित जी के घर जाने के लिये कहा। पण्डित जी उस समय मन्दिर में पूजा करने जा रहे थे। उन्होंने अपने सामने एक चमार को आते देख कर अपशकुन समझा और अत्यन्त क्रोधित हुए। इतने में रमेश का बाप अति दीनतावश उन के पैर छूने के लिये आगे बढ़ा। पण्डित जी ने उसे आगे बढ़ते देखकर पास ही पड़ा हुआ डण्डा उठा लिया और इसके सिर पर ज़ोर से दे मारा। और कहा, "सबेरे सबेरे बमार का दर्शन हुआ है; न मालूम सारा दिन भोजन भी मिलेगा या नहीं।"

रमेश के बाप के सिर से खून की धारा बह निकली। उसने अपने सिर का फटा साफा सिर पर बांधा और किस्मत को रोता हुआ घर वापिस चला आया। घर में भूखे बच्चों की चीत्कार सुन सुन कर उस का हृदय फटने लगा। वह चुपचाप घर से बाहर सड़क के किनारे घुटनों में मुंह छिपा रोने लगा।

CCO. Gurukul Kangri Collection

इतने में ही सड़क पर से जाते हुए एक पादरी ने उसे रोते हुए देखा और कहा:—

"टुम को क्या हुआ हाय ?"

रमेश के बाप ने सिर उठा कर देखा कि एक साहिब खड़ा है। उसने समझा शायद इसे ही ईश्वर ने मेरी सहायता के लिये भेजा है। उसने अपना सारा हाल पादरी को कह सुनाया।

पादरी उसके साथ उसके यहां गया। डाक्टर को बुलवाया, दवाई की व्यवस्था की और खाने के लिए कुछ मोल लेने चला। इतने में रमेश के बाप ने कहा, "तुम कुछ लेने मत जाओ। जो कुछ देना हो नकद दे दो हम ले आवेंगे। तुम्हारे हाथ का खाने से हमारी बिरादरी वाले हमें अपनी बिरादरी से निकाल देंगे।

पादरी ने उसे समझाया कि तू बीमार है, तू चलेगा तो तुझे ग़श आ जावेगी। तू इन बिरादरी वालों की परवाह करता है जो तुझे दुत्कारते हैं और तेरा मदद तक नहीं करते ? यह कह कर साहिब दूध और कुछ रोटियां ले आया। बच्चों को दूध दिया और रमेश की मां ने भी रोटियां खाईं। रमेश का बाप इसी विचार में डोलता रहा कि खाऊं तो धर्म जाता है न खाऊं तो प्राण। उसने तीन दिन इसी सोच विचार में व्यतीत किये। वह अपने मन में कहने लगा कि "यह कैसा अच्छा आदमी है मेरे बच्चे की कितनी सेवा की है और उसे मरते मरते बचाया है। मेरी विपत्ति में किसी भी भाई बन्धु ने मेरी सुध नहीं ली। यह अवश्य ही कोई दैवी पुरुष है।" ३ दिन के व्रत के पश्चात् उसने मुंह में ग्रास डाला बच्चे की हालत अब आगे से कुछ अच्छी हो गई थी। डाक्टर रोज आकर देख जाता और दवाई देने को बता जाता। दिन में एक बार पादरी साहिब भी सहायता के लिये उपस्थित हो जाते। ईश्वर की कृपा से रमेश को पूरा आराम हो गया। और कमजोरी भी दस बारह दिन में दूर हो गई' साहिब ने रमेश के बाप को हाईस्कूल में घन्टा बजाने की नौकरी दिलवादी और रमेश को स्कूल में दाखिल करा दिया। हैडमास्टर से कहकर उस की फ़ीस माफ करा दी और उसे पुस्तकें मोल ले दीं।

रमेश का पिता इन सब बातों से पादरी का अत्यन्त कृतज्ञ हुआ और उसने एक दिन पादरी से कहा—"मैं क्या मेरी सात पीढ़ी में कोई भी तुम्हारे इस उपकार का बदला न दे सकेगा। परन्तु यदि मेरे योग्य कोई सेवा हुआ करे तो आज्ञा कर दिया करें।" इस पर साहिब ने कहा "अब तुम्हारी बिरादरी वाला आदमी तुमको अपना बिरादरी में शामिल नहीं करेगा, इस वास्ते तुम हमारी बिरादरी में शामिल हो जावो"

रमेश का पिता कुछ उत्तर न दे सका। वह इतना कृतघ्न न था। कि साहिब को इन्कार कर देता। उसने साहिब से कहा—"जो आज्ञा"।

इतवार को सवेरे २ पादरी इसके घर पर आया और उन्हें एक गाड़ी में बिठाकर गिरजे में ले गया और उन्हें क्रिश्चियन धर्मावलम्बी बना लिया।

रमेश बड़ा चतुर बालक था। कुछ ही दिनों के परिश्रम के पश्चात् उसे वज़ीफ़ा मिलने लगा और मैट्रिकुलेशन की परीक्षा में वह सर्व प्रथम निकला। बाप ने चाहा कि उसे नौकरी करावे; परन्तु पादरी ने कहा कि तुम इसे चार साल और पढ़ने दो।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

तुम्हारा इस में कुछ भी खर्च न होगा और उसे दो या तीन सौ मासिक की नौकरी मिल जावेगी। रमेश के पिता का गुजारा खूब अच्छी तरह हो जाता है। अब जब कभी वह अपनी पुरानी दशा को स्मरण करता है तभी अपनी पुरानी हिन्दू जाति को कोसता है। जहां कहीं भी वह कोई दीन दुःखिया देखता है उसकी सेवा तथा हर प्रकार से सहायता करता है और उसे ईसाई धर्म्म का उपदेश देता है।

हाय! कैसे कष्ट की बात है कि हम अपने भाइयों से प्रेम के बदले घृणा करते हैं। जिस से वह गौ ब्राह्मण की रक्षा छोड़ कर उसके घातक तथा द्वेषी बन जाते हैं। इस प्रकार केवल यह लोग ही हम से वियुक्त नहीं होते, प्रत्युत और २ मनुष्यों को भी विधर्मी बनाते हैं।

हा भारतीय नवयुवको! क्या अब भी अपनी जाति को न संभालोगे और उसे ऐसे घुनों से न बचाओगे?

—०—

कुमारी स्लेड

यूरोपीय सभ्यता के कष्ट

आश्रम में शांति मिली

सत्याग्रह आश्रममें आयी हुई फरांसीसी सेनापति की पुत्री कुमारी स्लेड अहमदाबाद महिला सभा का निमंत्रण पाकर वहां गयी थीं। वहां श्रीमती विद्यागौरी, श्रीमती नील कण्ठ प्रभृति से उनकी बातचीत हुई। भारत में आनेके बाद वे पहले पहल इस स्थान में गयी थी। बातचीतके सिलसिले में उन्होंने कहा—"इंगलैण्ड में मुझे शांति न मिली और यूरोपीय सभ्यता के कारण मुझे बड़ा दुःख हुआ। यूरोपीय महासमर की समाप्ति पर मुझे अनुभव हुआ कि आराम और आवश्यकताओं की वृद्धि ही जीवन के इस संग्राम का कारण है। मुझे यह मालूम होता है कि पाश्चात्य सभ्यता ही सारी बुराइयों की जड़ है।

दिन दिन मेरे मन की बेचैनी बढ़ती गयी इसी बीच मुझे महात्मा गांधी के उपदेशों को पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा जीवन की सरलता की उनकी अपील से मेरा हृदय आकृष्ट हुआ। मैंने गान्धीजी को लिखा और उन्होंने मुझे पहले घर पर जीवन के कड़े नियमों का पालन करने की आज्ञा दी। जब वह समय खतम हुआ तो मैं भारत आयी। यहांमें आश्रममें पूर्ण शांतिके साथ रह रही हूं और मेरे मनको विश्राम मिला है।"

उन्होंने यह भी कहा—"मेरे माता पिता मेरे इस कार्य से पूर्ण सहानुभूति रखते हैं, तथा मेरी माता जी ने तो खाली समय में घर पर चरखा कातना आरम्भ कर दिया है।"

पूंछने पर उन्होंने उत्तर दिया "अपने शेष जीवनमें मैं क्या करूंगी यह मैंने गांधी जी पर ही छोड़ दिया है। वे जो कुछ आज्ञा देंगे वही करूंगी। एक वर्षतक मैं कोई काम न करके आश्रम में ही अपने को कामके लिये तैयार करूंगी। उसके बाद मेरा विचार ग्रामों में कुछ करने का है। मैं भारत से प्रेम करती हूं और भारत की प्रत्येक वस्तु मुझे हृदय से प्रिय है। भारतीय जीवन की सादगी ने मुझे आकृष्ट किया और आश्रमके जीवन ने मुझे अनन्त शांति प्रदान की।

मुझे गांधी जी के बाबत जो कुछ मालूम हुआ वह सब श्री रोमेला की मार्फत मालूम हुआ। इससे अधिक मैं अपने पूर्व जीवनके सम्बन्ध में कुछ नहीं कहना चाहती।".

(आज)

CCO, Gurukul Kangri Coll

कन्या गुरुकुल समाचार

स्वास्थ्य

लग भग एक मास से ऋतु परिवर्तन के कारण ज्वर का प्रकोप थोड़ा बहुत समय २ पर यहां पर भी होता रहा है। किन्तु दो सप्ताह हुये तो रोगी शाला में ब्रह्मचारिणियों की अधिकता हो गई थी और दो तीन कन्याओं को टाइफाइड ज्वर हो रहा था परमात्मा का बड़ा धन्यवाद है कि अब मलेरिया ज्वर भी कम हो गया है और टाइफाइड के दोनों केस अच्छे हो रहे हैं। चेचक भी तीन कन्याओं को निकली थी परन्तु बहुत हल्की थी। उन्हें अलग रखा गया और वह अब बिल्कुल स्वस्थ हैं। और अब अन्य किसी को नहीं निकली क्योंकि सभी के टीका हो गया है।

पठन पाठन

विद्यालय आज कल प्रातः ६॥ बजे से ११-१० तक लगता है और दोपहर को २ बजे से ५ बजे तक कन्यायें पढ़े हुये पाठ का अध्ययन करती हैं। चूंकि धूप बड़ी तेज है अतः ५॥ बजे से पूर्व क्रीड़ा क्षेत्र में जाना डाक्टरों ने रोका हुआ है। ठीक ५॥ खेल शुरू होते हैं और ६॥ पर हवन संध्या, उसके बाद भोजन और ९ बजे शयन करती हैं। रात्रि को पढ़ना बन्द हो गया है।

षाण्मासिक परीक्षायें मई के अन्तिम सप्ताह में प्रारम्भ होंगी, अतः कन्यायें तैयारी में लगी हुई हैं।

चर्खा और सिलाई।

कार्य्य कर्तृ देवियों की कमी के कारण चर्खा और सिलाई एक मास से बन्द है। क्योंकि सिखाने वाली देवियों की ड्यूटी अन्य कार्य्यों तथा रोगीचर्य्या आदि में लगी हुई है।

अध्यापिकाओं की कमी

यों तो अध्यापिकाओं की कमी हमेशः बनी रहती है परन्तु आज कल विशेष रूप से कमी है। एक ही अध्यापिका को एक से अधिक श्रेणी एक साथ देखनी पड़ती है। श्रीमती बुद्धिमतीदेवी एक मास से इस कमी को पूर्ण कर रही थीं आवश्यक कार्य होने से वहभी चली गई हैं अतः पाठन कार्य्य में विघ्न हो रहा है।

जब तक कमी पूरी नहीं होती तब तक आवश्यकता है कि जो भी पढ़ी लिखी देवियें गृहस्थी भी हों और उनका लक्ष्य अध्यापिका बनना न भी हो तो भी देश की कन्याओं के हिताथे अपने समय का कुछ भाग कन्या गुरुकुल की सेवा में लगावें, और अपनी उच्च शिक्षा से कन्याओं की शिक्षा में सहायता प्रदान करें। चूंकि हमारे दुर्भाग्य से हमारी स्त्री जाति में शिक्षा का प्रचार बहुत नहीं है और पठित देवियों की संख्या थोड़ी होती है और मांग बहुत है अतः प्रत्येक शिक्षितादेवी का आज कल मुख्य कर्तव्य है कि जहां कहीं वह हों और कन्यागुरुकुल कीमांग उनके कान में पड़े तो वह तुरन्त इसको दो-चार महीने वर्ष में देने के लिये कटिबद्ध हो जायें और इस पुण्य कार्य में हाथ बटावें यदि ऐसा हो जाय तो दो-चार वर्षोंमें ही त्रुटि

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

पूरी हो सकेगी क्योंकि ऊंची श्रेणी की कन्यायें तैय्यार हो हो कर जब निकलने लगेंगी और कुल का ऋण चुकाना शुरू करेंगी तब कुल को फिर इतना कष्ट न होगा।

आवश्यक्ता।

इस समय कन्या गुरुकुल को कम से कम दो ज्यूनियर और दो सीनियर ट्रेंड या हिन्दी की अन्य कोई परीक्षा पास, अनुभवी सदाचारिणी देवियों की ज़रूरत है जो हिंदी, गणित, भूगोल, ड्राइंग तथा इतिहास भिन्न २ श्रेणियों को पढ़ा सकें।

एक विशारद या प्राज्ञ पास या उसकी योग्यता वाली संस्कृत अध्यापिका की भी आवश्यक्ता है। वेतन योग्यतानुसार अन्य पाठशालाओं की अपेक्षा कुछ अधिक भी दिया जा सकेगा। आने का मार्ग व्यय भी दे दिया जावेगा और रहने को स्थान भी।

पत्र व्यवहार निम्न पते पर शीघ्र करना चाहिये।

आचार्य्या कन्या गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ
कोठी नं० ४ दरियागंज
दिल्ली

कन्या गुरुकुल के लिये स्थायी भवन।

कन्या गुरुकुल का वर्तमान भवन किराये की कोठी में है और ३२५) मासिक तो किराये के ही देने पड़ते हैं इसके अतिरिक्त ऊपरसे और भी मरम्मत, सफैदी आदि सभी व्यय कुल को करने पड़ते हैं। तिस पर भी टिनशेड, छप्पर आदि भी गुरुकुल ने डाले हैं और फिर भी स्थान की तंगी बहुत है। यदि अपना स्थान होता तो छप्पर आदि में भी गुज़ारा करने पर वर्ष का ४ हज़ार रुपया तो इस तरह न व्यय होता। आज तीन वर्ष होने लगे हैं और अभी तक स्थान का निश्चय नहीं हुआ है। यदि अपनी जगह होती तो इन्ही १२ हज़ार रुपयों तथा और जो टीन शेड आदि में लागत लगी है उस से अपने स्थायी भवन का अधिकांश भाग तैयार हो गया होता। परन्तु सारे आर्य्य समाज की एकमात्र कन्याओं की संस्था कन्या गुरुकुल के लिये स्थान ही नहीं मिलता बड़े खेद और लज़्जा की बात है।

कन्या गुरुकुल को दिल्ली से हटाने का प्रश्न

कन्या गुरुकुल की संरक्षक सभा के मंत्री ने इस सम्बन्ध में एक सूचना प्रकाशनार्थ भेजी है उसे हम ज्योति द्वारा संरक्षकों की सेवा में प्रस्तुत करते हैं और आशा करते हैं कि सब संरक्षक शीघ्र ही पत्र द्वारा सम्मति देकर कृतार्थ करेंगे।

सूचना।

कन्यागुरुकुल देहली की कन्याओं के संरक्षकों से प्रार्थना है कि वे कृपा करके अपनी सम्मति शीघ्र प्रकाशित करें कि इस गुरुकुल को देहली में ही रक्खा जावे अथवा किसी अन्य स्थान में ले जाया जावे। यदि अन्य स्थान में ले जाने के पक्ष में हों तो हरीद्वार या राजपुर (जो देहरादून और मसूरी के बीच में है) यह दो स्थान ही तजवीज किये जा रहे हैं अतः इन में से कौनसा स्थान उन को पसन्द है। देहली में रखने के विरुद्ध मुख्य २ बातें नीचे लिखी जाती हैं:-

१ ग्रीष्म ऋतु में गरमी बहुत होती है वर्षा में जाड़ा बुखार (Malaria) बहुत फैलता है। जिस कोठी में इस समय गुरुकुल है वहां मच्छड़ बहुत हैं तथा यह पर्याप्त भी नहीं है। कमी को पूरा करने के वास्ते कुछ टीन

CCO, Gurukul Kangri Collection

के मकानात बनाए हुए हैं जिन की छत पर फूस और नीचे लकड़ी के तख्ते लगाने पर भी गरमी बहुत रहती है और स्वास्थ्य पर असर हुए बग़ैर नहीं रह सकता । प्रायः कन्यायें इसी कारण ज्वर ग्रस्त हो जाती हैं और उन की स्वास्थ्य और पढ़ाई की हानि होती है ।

२-देहली में गुरुकुल के वास्ते भूमि मिलना कठिन होता है । यदि मिल भी जावे तो शहर के निकट तो मूल्य बहुत होगा यदि जङ्गल में मिले तो कन्याओं की रक्षा का भार अधिक हो जाता है ।

३-देश की वर्तमान स्थिति में देहली में कन्याओं की रक्षा का भी प्रश्न जटिल प्रतीत होता है । कार्य्यकर्त्ताओं को इस के वास्ते जो परेशानी होती होगी वह तो स्वयम वे ही अनुभव कर सकते हैं ।

उपरोक्त बातें बाहर से दृष्टि डालने से मालूम होती हैं और कितनी कठनाइयाँ यहां है वह तो प्रबन्ध करने वाले ही जानते हैं । अतः स्थायी भवन का प्रबन्ध कराने के हेतु शीघ्र ही प्रयत्न करने की बड़ी भारी आवश्यकता है । और यह तब तक नहीं होता जब तक चारों ओर से इस के लिये आन्दोलन न किया जावे । इस विषय में हमारी बात चीत श्री आचार्य्य रामदेव जी से हुई हैं । और उनकी सम्मति से ही आप सब संरक्षक भाइयों की सम्मति मांगी जाती है । ताकि यदि संरक्षक महाशय भी देहली से गुरुकुल अन्यत्र लेजाने के पक्ष में हों तो गुरुकुल की कार्य्यकारिणी सभा में यह प्रस्ताव उपस्थित करने का उद्योग किया जावे ।

पृथ्वी सिंह
मन्त्री, क० गु० संरक्षक-सभा

❀ विचार प्रवाह ❀

कलकत्ते का दंगा ।

कलकत्ता इस समय विप्लव की अवस्था में है । शहर का सब कारोबार बन्द है । ट्राम कार और मोटरों का आना जाना ही बन्द है । हर एक को हर दम जान का खतरा बना रहता है । राह चलते आदमी कत्ल कर देना तो मामूली सी बात हो गई है । आज लगभग एक मास होने को आया है परन्तु दंगा अभी भीषण रूप में है । पुलिस के किये कुछ नहीं बना । सैनिक सहायता भी विफल हो गई । क्या सम्पूर्ण ब्रिटिश भारत के अमन चैन की दावेदार सरकार एक शहर के कुछ गुण्डों के उत्पात का दमन नहीं कर सकती ? आश्चर्य्य है ।

उत्तरदायी स्वराज्य के हामी भारतीय नेताओं के लिये जहाँ यह परीक्षा का समय है वहां विदेशी सरकार की शान्ति स्थापना की योग्यता का भी सवाल है । ब्रिटिश सरकार की नपुंसकता व बेपर्वाही का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है । जब बड़े बाज़ार में मस्जिद के पास पुलिस के थाने के नजदीक ही अशान्ति की चिनगारियां नज़र आई थीं उस समय पुलिस किस कुम्भ कर्णी नींद में सो रही थी ?

दंगा होने के ७-८ दिन बाद तक सैनिक सहायता की उपेक्षा भी अमन के लिये शासकों की जान बूझ कर बे परवाही करने का द्योतक है ।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

दङ्गे का सारा दोष हम ऐंग्लो इन्डियन पत्रों के अनुसार अपने हिन्दू मुस्लिम भाइयों पर थोप देते यदि इसका रूप अब तक एक सार्वजनिक विक्षोभ का होता। परन्तु हमें यह देख कर सन्तोष होता है कि दोनों कौमों के भद्र नागरिकों में कोई विद्रोह के भाव नज़र नहीं आये। विश्वस्त-रूप से मालूम हुआ है कि स्थान स्थान पर हिन्दू भाइयों ने जान को ख़तरे में डालते हुए भी मुसलमानों को आपत्ति से बचाया और कई मुसलमानों ने भी हिन्दुओं को मुसलमान गुण्डों के हथकण्डों से निकाला। बड़ा बाजार के मारवाड़ियों व बंगालियों ने तो खुले तौर पर आक्रान्त मुसलमानों को आश्रय दिया। अतः जिस तरह और दंगे होते हैं यह भी केवल कुछ छटे हुए गुण्डों का ही दंगा है। इनके दमन करने का उत्तरदातृत्व पुलिस का ही है। पुलिस का कर्त्तव्य है कि वह लोगों के जान माल की रक्षा करे। यदि इसमें वह असमर्थ है तो उसकी क्या ज़रूरत है?

ऐसी पुलीस की क्या आवश्यक्ता है जो अपने न्याय्य अधिकारों को मांगने के लिये खड़ी हुई निहत्थी भोली प्रजा को तो गोली बारूद से भून डाले और जब असली काम आये तो हाथ से हाथ मलती रहे।

हमें दुःख इतना ही है कि अभी तक हम में धार्मिक असहिष्णुता कूट २ कर भरी हुई है। इसके अतिरिक्त अभी तक हमारे नेताओं में नेतृत्व का मादा नहीं आया। अभी उन्हें अपने पर ही विश्वास नहीं तो जनता का नेतृत्व क्या करेंगे? कलकत्ते के दंगे ने हमारे राजनैतिक नेताओं की अकिञ्चनता को भी स्पष्ट कर दिया है।

धन्यवाद के पात्र वह हैं जो शान्ति पूर्वक आत्म रक्षा कर रहे हैं। सन्तोष यही है कि हिन्दुओं ने भी आत्म रक्षा का पाठ पढ़ लिया है।

पंजाब हिन्दू कान्फ्रेंस

अम्बाले में डा० मुञ्जे के सभापतित्व में पञ्जाब हिन्दू कान्फ्रेंस हो गई। डा० मुञ्जे का भाषण बहुत महत्व पूर्ण हुआ। आपकी विशेषता यह है कि आपके शब्दों में विशेष बल होता है। आपके भाव सत्य और स्पष्ट होते हैं। अतः कुछ कटुता का आ जाना स्वभाविक है। हिन्दू मुसलिम एकता के विषय में आपने महात्मा गांधी द्वारा संस्थापित एकता को एक झूठे स्वप्न की तरह बतलाया। कुछ ही अर्से में इस्लाम अपने सत्य स्वरूप में प्रगट हुआ। मालावार के मोपलाओं ने हैदर और टीपू सुल्तान के अवाशिष्ट कार्य को पूरा करने की ठानी। कोहाट के भीषण हत्याकाण्ड से तो यह कार्य्यक्रम एक निश्चित रूप में आ गया। वहां के मुसलमानों ने सुलाहनामें की जो शर्तें पेश की थीं उस से स्पष्ट मालूम होता था कि इस मारकाट का अभिप्राय कुछ गहरा है। यह केवल मुसलमानों का काफ़िरों को मारने का शौक ही नहीं है। शर्तें यह थीं कि या तो सब हिन्दू मुसलमान हो जायें और मुसलमानों के साथ कन्याओं का विवाह सम्बन्ध करें नहीं तो कोहाट से भाग जांय।

डा० मुञ्जेका कथन है कि यह शर्तें अधिकांश मुसलमानों की दिली इच्छा का प्रतिबिम्ब मात्र है।

डा० मुञ्जे के शब्द कठोर अवश्य हैं परन्तु दुर्भाग्य से प्रत्येक हिंदू इसकी सत्यता को अनुभव करने लगा है। राष्ट्रीय स्वतन्त्रता

CCO, Gurukul Kangri C...

के आन्दोलन में मुसलमानों का उपेक्षा भाव भी बिना कारण के नहीं है। प्रायः मुसलमान 'स्वराज्य' का अभिप्राय 'हिन्दू-राज्य' से लेने लगते हैं। इस अवस्था में हिन्दू राज्य और ब्रिटिश राज्य दोनों विदेशी राज्य हैं। अतः 'स्वराज्य' हो या 'ब्रिटिश राज्य उनकी दृष्टि में समान है। शायद वह तो 'इस्लाम राज्य' को ही स्वराज्य समझें। हमें उनकी मनोवृत्ति पर-यदि सचमुच यह उनकी मनोवृत्ति है-भारी दुःख है। इस बीसवीं सदी में भी भारतीय मुसलमान इतने पिछड़े हुए हैं कि उन्हें यह नहीं पता कि वर्त्तमान राष्ट्रीय निर्माण में मज़हब का कोई स्थान नहीं, धार्मिक अत्याचारों का जमाना गया। धर्म के नाम पर विधर्मियों को मारना बहशी पना है।

बिना किन्हीं पुष्ट प्रमाणों के हम यह स्थापना तो नहीं करना चाहते कि भारत के मुसलमान भारत में इस्लाम राज्य स्थापित करना चाहते हैं। और इसके लिये वह प्रयत्न कर रहे हैं। परन्तु यह अवश्य कहेंगे कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के आन्दोलन में मुसलमानों का पूर्ण सहयोग न देना भारतीय मुसलमानों की बुद्धिमत्ता नहीं है। यह उपेक्षा उन्हीं के लिये अपयश का कारण बनेगी। हम चाहते हैं कि मुसलमान डा० मुञ्जे के वास्तविक आशय को समझें और धार्मिक असहिष्णुता छोड़ कर स्वतन्त्रता के युद्ध में कन्धे से कन्धा मिलाकर चलें। साथ ही हिन्दू भी आत्मरक्षा करते हुये मुसलमान भाइयों का पूरा सहयोग लेने का प्रयत्न करें।

अन्त में आपने हिन्दुओं को यह भी कहा कि वह अपनी संकीर्णता को दूर करें। अछूतपने को हटायें। जात पांत के झगड़ों को दूर करें। डा० मुञ्जे का यह भी कथन है कि इस आपत्ति काल में अनुलोम-प्रतिलोम की विवाह मर्यादा को भी ढीला कर देना चाहिये। इसे आपद्धर्म रूप से हम स्वीकार करते हैं।

अन्त में हम यही कहेंगे कि पंजाब के हिन्दू और मुसलमान डा० मुञ्जे के यथार्थ आशयको ही लें। नहीं तो उनके शब्दों द्वारा उलझा हुई परिस्थिति सुलझने के स्थान में और भी उलझ जायगी।

आर्यसमाज और सर्कार।

आर्य समाज चारों ओर से विधर्मियों से घिरा हुआ है। उस पर सरकार भी उठते हुए आर्य समाज को अभी से कुचल देना चाहती है। हाल ही में मंसूरी, रोहतक आदि में उत्सवों के अवसर पर समाजों के नगरकीर्त्तन बन्द कर दिये गये। प्रधान युक्ति यह दी गई कि दंगे का डर है। क्यूंकि फ़तहपुर, अजमेर आदि स्थानों पर नगर-कीर्तन के समय मुसलमानों ने उपद्रव किया इस से अन्यत्र भी उपद्रव के कारण होने से यह बन्द किये जाने लगे। आज यदि हमारे नगरकीर्त्तनों से मुसलमानों में उत्तेजना पैदा होजाती है? तो कल वह हमारे आर्य्य होने से बिगड़ उठेंगे? उसका जिम्मेवार कौन होगा? क्या सरकार हमारा आर्य होना बन्द कर देगी? हम सरकार की इस अन्याय पूर्ण रीति का घोर विरोध करते हैं, और आशा करते हैं कि सरकार सार्वजनिक असन्तोष से प्रथम ही अपने निश्चय को पलट देगी। सरकार मुसलमानों को उभार कर आर्य समाजियों को दबाना चाहती है। सरकार इस अदूरदर्शिता का फल भोगेगी। यह वही अदूरदर्शिता है जो दो साल पहिले पूज्य महात्माजी ने की थी।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

महात्मा जी ने सरकार के विरुद्ध मुसलमानों के धार्मिक भावों को उत्तेजित किया था आज वही उत्तेजित धार्मिक कट्टरता सरकार का हथियार बन कर महात्मा जी के गले की फाँसी बन हुई है। सरकार उसी हथियार से आर्य समाज पर भी हाथ साफ़ करना चाहती है। सरकार को समझ रखना चाहिये। यही खूनी हथियार कभी सरकार के खून का भी प्यासा हो सकता है इतिहास सिद्ध कर चुका है कि मुसलमानों के धार्मिक जोश को उभारना साँप को दूध पिलाना है। जिन हाथों से आज मन्दिर टूट रहे हैं वह कभी गिरजा घरों पर भी चल सकते हैं। जो छुरियां आज हिन्दू काफिरों के गलों पर चल रही हैं उनका रुख क्रिस्तान काफिरों की ओर नहीं हो सकता यह दावा कौन कर सका है? अस्तु हमें सरकार से कुछ नहीं कहना। सरकार तो प्रबल का ही पक्ष लेती है। हमको तो अपने आपको शक्ति सम्पन्न करना। "प्रकर्ष तन्त्रा हि रणे जयश्री!" सब दलों के आर्य समाजियों को अपने २ भेद भाव दूर कर सरकार के इस अन्याय का प्रतिकार करना चाहिये भेद भाव दूर करने का इससे अच्छा अवसर और नहीं मिलेगा, इसस्वर्णीय अवसर को खो देना बड़ी भारी भूल होगी। अन्त में हम हर एक आर्य समाजी से विशेषतया आर्य समाजी नेताओं से यही अपील करना चाहते हैं कि वह अपनी शक्ति को पहिचाने और एक होकर संसार को दिखादें कि आर्य समाज अपने प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द का सच्चा शिष्य है। प्रार्थनाओं और विरोधक प्रस्तावों का जमाना गया। अब कुछ क्रियात्मक प्रतिकार करने का समय है। सब शक्तियाँ को एकत्र कर किसी एक जगह अहिंसात्मक सत्याग्रह को प्रारम्भ करने के लिये हमें कटि बद्ध हो जाना चाहिये।

पहिले पहल उसी जिले व प्रान्त के आर्य पुरुषों का सत्याग्रह प्रारम्भ करना चाहिये जहां नगरकीर्तन बन्द हुआ हो। हमें पूरी आशा है कि हम अपने न्याय बल से अवश्य विजय प्राप्त करेंगे।

"यतो धर्म स्ततो जयः"

साबरमती का समझौता

साबरमती के योगी की कुटियामें स्वराजी और प्रति सहयोगियों के नेताओं ने सब भेद भाव मिटा दिये—यह समाचार कौन भारतीय हर्ष से न सुनेगा। प्रतिसहयोगी दल स्वराज्य दल का ही भाग था। दोनों दलों में कोई मौलिक भेद नहीं था। मतभेद केवल मंत्रीत्व व अन्य सरकारी पदाधिकार स्वीकार करने में ही था। उसका निपटारा भी इस समझौते से हो गया कि जिस प्रान्तीय व्यवस्थापिका सभा के सदस्य उस प्रान्त के मन्त्रीत्व को शक्तिसम्पन्न और जिम्मेदारी का पद समझेंगे वहां पं० मोतालाल और जयकर की सहमति से मन्त्री पद भी स्वीकार किया जा सकेगा। अन्यथा नहीं। समझौते के शब्द बहुत सरल हैं। परन्तु उनका भाव बहुत गहरा है। और परिणाम बहुत रहस्यमय है।

पहिले तो यही सवाल उठता है कि यह समझौता इस अवसर पर इतनी शीघ्रता से किस लिये किया गया? इसका उद्देश्य बहुत सम्भव नवीन राष्ट्रीय दल से टक्कर लेने का हो सका है। यह भी हो सकता है कि स्वराज्य दल की घटती हुई शक्ति ने मोतीलाल जी को सुलहनामें के लिये बाधित कर दिया हो। परन्तु प्रतिसहयोगी दल समझाते पर कैसे उतारू हुआ? यह प्रश्न कुछ टेढ़ा सा प्रतीत होता है। नवीन राष्ट्रीय दल के कार्यक्रम से पूरी सहमति रखते हुए भी सहयोगी दल उससे न मिलकर किन कारणों से स्वराजियों की ओर झुका इसका अभी तक स्पष्टीकरण

नहीं हुआ। जयकर ने खुले तौर पर राष्ट्रीय दल से एकमत प्रकाशित किया है। तथापि उसमें शामिल न होकर स्वराजियों से मेल जोल करने का क्या रहस्य है अभी तक अज्ञात है।

कारणों के अस्पष्ट होने से परिणाम का रूप भी स्पष्ट नहीं हुआ। किसका हाथ ऊपर रहा? कौन विजयी रहा? वह भी केवल समझौते के शब्दों को देख कर निश्चय से नहीं कहा जा सका। प्रति सहयोगी दल भी विजयी कहा जा सका है क्योंकि कम से कम असहयोग के स्थान पर समझौते में प्रति सहयोग की नीति को सिद्धान्त रूप से स्वीकार कर लिया गया है। स्वराजियों की यह सिद्धान्त विषयक हार उनके नाम पर सदा के लिये कलंक का टीका बनी रहेगी। इसके अतिरिक्त राष्ट्र सभा के माने हुए असहयोग सिद्धान्त की अवहेलना के लिये भी स्वराजियों के सरदार पं० मोतीलाल जी ही जिम्मेवार होंगे। हां एक तरह से प्रतिसहयोगियों की भी हार हुई। क्योंकि मन्त्री पद के लिये तभी स्वीकृति हो सकती है यदि व्यवस्थापक सभा के सदस्य उसे अधिकार और शक्तिसम्पन्न समझें। और वर्तमान सुधारों के अनुसार मन्त्रीत्व केवल एक खिलौना ही है। अतः मंत्री पद ग्रहण करने का अवसर ही कभी न आयेगा और प्रति सहयोगियों का मत कभी क्रियारूप में आ न सकेगा। अस्तु हार जीत का सवाल नहीं। यह तो परिणाम से ही पता लगेगा। परन्तु यह हम साफ़ देख रहे हैं कि इसका परिणाम शुभ नहीं होगा।

जो कुछ भी हो यह तो स्पष्ट हो गया कि असहयोग की नीति के दावेदार स्वराजी असहयोगी नहीं प्रति सहयोगी हैं। हमें दुःख है कि एक समझौते पर पहुंचने के लिये राष्ट्रीय महासभा के माने हुए सिद्धान्तों को स्वराजियों ने ठुकरा दिया। परन्तु इतना हमें अवश्य सन्तोष है कि स्वराज्य दल का वास्तविकरूप जनता के सामने आगया। अब वह असहयोगी नहीं प्रति सहयोगी हैं। अभिप्राय यह कि उन्हें वर्तमान सरकार पर फिर विश्वास हो गया और वर्तमान सुधारों के मायाजाल में स्वराजियों की भोली भाली चिड़िया भी फंस गई।

कन्या गुरुकुल संरक्षक सभा

महाशय पृथ्वीसिंह जी मन्त्री संरक्षक सभा कन्यागुरुकुल लिखते हैं कि कृपा करके निम्न लिखित बात को "ज्योति" में स्थान देकर कृतार्थ करें:—

"कन्या गुरुकुल संरक्षक सभा के नियम संरक्षकों की सेवा में भेजे हुए तीन मास से अधिक बीत चुके परन्तु बहुत कम सज्जनों ने अभीतक अपना एक रुपया चन्दा भेजा है। सभा का अबतक का खर्च आमदनी से कहीं ज्यादा हो चुका है। वर्ष भर में केवल एक रुपया चन्दा कोई बड़ी बात नहीं। संरक्षकों का इस ओर ध्यान न देना प्रकट करता है कि उनको इस सभा से उदासीनता है। धन के बिना कोई कार्य्य चलना असम्भव है यदि संरक्षक महाशय चाहते हैं कि यह सभा उस उद्देश्य की पूर्ति में कुछ सहायक हो जिसको लक्ष्य में रखकर उन्होंने इसकी स्थापना की है तो उनका कर्त्तव्य है कि इसको दृढ़ बनावें। क्या मैं आशा करूं कि जिन सज्जनों ने अभी अपना चन्दा नहीं भेजा है वह शीघ्र भेजने की कृपा करेंगे।

दुःखकी बात है कि गतमार्च मास में सभा की अन्तरङ्ग में किसी भी सदस्य ने सम्मिलित होने की चेष्टा नहीं की—केवल बाबू रामचन्द स्टेशन मास्टर पधारे थे। परन्तु वह

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

सभा के नियत समय के कई घण्टे पीछे पहुंच सके। देहली में रहने वाले सदस्यों की अनुपस्थिति बहुत दुःख देने वाली है। यदि सदस्य महाशय इतनी उदासीनता प्रगट करेंगे तो सभा कुछ सफलता प्राप्त नहीं कर सकती।

हिन्दू मुस्लिम सम्बन्ध पर पं० मालवीय

दिल्ली में अभी महामना पंडित मालवीय जी ने हिन्दू मुस्लिम जनता के पारस्परिक मत भेदों पर ऐतिहासिक दृष्टि डालते हुये यह बतलाया है कि यह मत भेद क्यों होते हैं? इन की उत्पत्ति कैसे हुई और दोनों दलों के लोगों की नेताओं तथा जन साधारण की इस में कितनी जिम्मेवारी है? उन्होंने संक्षेप से और आवेग-रहित होकर सारी दशा का अध्ययन करके उन सब बातों पर प्रकाश डाला है जो बार २ लोगों के सन्मुख आती हैं और दोनों दलों को उत्तेजित करती हैं और कभी घातक दृश्यों को दिखलाया करती हैं।

मालवीयजी ने किसी एक दल को दोषी नहीं ठहराया और यह भी नहीं किया है कि अपने से विभिन्न मतवालों के ऊपर दोषारोपण किये हैं। उन्होंने अपने मधुर शब्दों में सभी लोगों को सचेत किया है कि वह पारस्परिक सम्बन्ध को कडुवा न बनावें और न "परमेश्वर के साथ प्रेम का दिखावा करके अपने भाइयों से द्वेष करें"। उन्होंने दुख भरे दिल से हिन्दू मुस्लिम जनता से पूंछा कि क्या तुममें कोई ऐसा है जो कि इन झगड़ों को रोकना नहीं चाहता? क्या कोई ईश्वर से न डरने वाला ऐसा व्यक्ति है जो कि इन झगड़ों को ज़ारी रखना चाहे? यदि, नहीं तो प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति का कर्त्तव्य है कि गुण्डा नामधारी अभागे झगड़ालुओं को जोकि उत्तेजना के अवसर पर घूम २ कर ऊधम उठाते हैं—ठीक रास्ते पर लाने का यत्न करते रहें। उन्होंने ठीक कहा कि परमात्मा के आगे तो वही मनुष्य दोषी हैं। जोकि असहिष्णुता और झगड़ों के बीज बोते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि वह मुसलमान जो एक हिन्दू पर किसी मसजिद से ईंट फैंकता है सब से अधिक उस प्रार्थना मन्दिर को भ्रष्ट करने वाला है। जिन व्यक्तियों की मुक्ति पारस्परिक बन्धुत्व में ही है वह धर्म और दीनका नाम लेकर एक दूसरे का गला घोंटते रहते हैं। परमात्मा तो सब का एक ही है चाहे मत भिन्न २ प्रकार के हैं। जब कि यह देश सभी सम्प्रदायों का है और जहां पर हिंदू, मुसलमान या ईसाई राज्य की सम्भावना नहीं है और जब तक एकता न हो तब तक स्वराज्य भी नहीं मिल सकता तब यहां पर परस्पर में विरोध और क्लेश क्यों हों? निश्चय है कि इन झगड़ों की मुख्य जिम्मेवारी उन गुण्डों पर नहीं है जो कि समय २ पर दुष्ट कार्य्यों के करने के साधन बन जाते हैं। यह उन लोगों का काम है जिन्हें कि अपनी शिक्षा और अपनी ट्रेनिंग से अधिक सभ्य और अधिक ज्ञानी होना चाहिये। यदि ध्यान से देखा जाय तो इन झगड़ों की जड़ में यह बात है कि प्रारम्भ में किसी पद, ओहदे या अधिकार के लिये साधारण स्पर्धा शुरू होती है उसके बाद उसको धर्म के नाम पर अधिक घृणित और अधिक दुःखदायी बनाकर अक्षम्य अपराध किये जाते हैं।

झगड़े की जड़ के खास कारणों पर विचार करते हुये आपने कहा कि शुद्धि, संगठन और मस्जिदों के सामने बाजा

बजाना यही मुख्य बातें मुसलमानों के मिज़ाज को बिगाड़ रही हैं और इन्हीं के कारण उत्पथ पर जाने वाले मुस्लिम नेता लोग पहिले तो चुपके २ परन्तु अब खिलाफत कान्फ्रेन्स के बाद खुले तौर से अपने मतावलम्बियों को उत्तेजित करते हैं। क्या इन बातों में कोई भी ऐसी बात है जिस के कारण हमारे जोशीले मुस्लिम नवयुवक हिन्दूओं को अपना 'भाई' कह कर सम्बोधन करने से इन्कार करें? पंडित जी ने स्पष्ट रूप से कहा कि एक धर्म से दूसरे में जाना लालच, ज़बरदस्ती तथा ठगी से तो होना नहीं चाहिये। लेकिन जब सभी धर्म इस रीतिको मानते और करते हैं और प्राचीन समय में भी हिन्दू इसे करते आये हैं तो अब शुद्धि के विरुद्ध आन्दोलन क्यों है? शुद्धि के माने यह हैं कि जो लोग कभी हिन्दू थे और अब पुनः हिन्दू होना चाहते हैं तो उन्हें हिन्दू धर्म में ले लिया जाय। अब जब कि सभी मतावलम्बी प्रायः दूसरे मतके लोगों को अपने मत में लाते रहते हैं तो हिन्दू बनाने में ही आपत्ति क्यों उठायी जाय?

संगठन के विषय में आपने कहा कि यह एकता लाने के अभि प्राय से किया जा रहा है और सभी जाति के लोगों को अत्याचार से बचाना इसका उद्देश्य है। मस्जिदों के सन्मुख बाजा बजाने के सम्बंध में आपने कहा कि यह हमारे मुसलमान भाइयों की नयी शिकायत बिल्कुल निस्सार है। यह बिल्कुल बच्चों वाली बात है और निराधार है। वर्षों से मस्जिदों के आगे बाजा बजता आया है। दिल्लीमें जामामस्जिद और फतेहपुरी में बाजा बन्द हो जाता है। लेकिन ४०वर्ष पूर्व जामा मस्जिद के सामने भी बैण्ड बाजा बजता था। इन दोनों के अतिरिक्त सैकड़ों और मस्जिदें हैं जिनके आगे अब भी बाजा बजता है। स्वयं एकता—सम्मेलन में मुसलमानोंके धार्मक नेताओंने मस्जिदोंके आगे बजा बजने पर एतराज़ नहीं किया। मौलाना शबीर अहमद तो मस्जिदों के आगे बाजा बनाने की रीति रहे ऐसा प्रस्ताव भी करने वाले थे। परन्तु समय नहीं रहा था सो नहीं पेश हुआ इत्यादि २। अन्त में आपने एक क्रियात्मक विधि इन झगड़ों के निपटारे की बताई और पंडितों और मौलवीयोंसे अपील कीजिनके कारण झगड़े उठखड़ होते हैं उन पर विचार करने के लिये दोनों मतों के लोगों की एकसमिति बनायें जोप्रचिलित रीतियों तथा अन्य अवश्यकीय बातों पर ध्यान रखती हुई झगड़ों के निवटारे का फैसला करे और दोनों पक्ष उस की निष्पत्ति को मानने पर वाध्य हों।

महात्मागांधी औरसंस्कृत भाषा

१३ मई के यंग इन्डिया में संस्कृत भाषा के सम्बन्ध में लिखते हुये महात्मा गांधी कहते हैं कि–"धार्मिक कार्य्यों में मेरे विचार में संस्कृत की उपेक्षा नहीं की जा सक्ती। अनुवाद चाहे कितने शुद्ध क्यों न हों स्वयं मन्त्रों का स्थान नहीं ले सक्ते, क्योंकि उनका अपना निजी आशय और ही है। दूसरी बात यह है कि अगर हम उन मन्त्रों को जो सैकड़ों वर्षों से संस्कृत में ही पढ़े जाते हैं आज प्रान्तीय भाषाओं में अनुवाद द्वारा ही पढ़ें तो हम उनके महत्व को घटाने वाले होंगे।

लेकिन मेरा स्पष्ट आशय यह है कि जो लोग मन्त्र पढ़ें या जो विधियां करें तो उन्हें प्रत्येक मंत्र के आशय और रीतियों का तात्पर्य्य अवश्य ज्ञात होना चाहिये। संस्कृत

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

भाषा के साधारण ज्ञान के बिना एक हिन्दू मनुष्य की शिक्षा ही अपूर्ण समझनी चाहिये। यदि संस्कृत शिक्षा का प्रचार न हो और संस्कृत में लोग ठीक रीति से पांडित्य प्राप्त न करेंगे तो हिन्दू धर्म का ही लोप हो जायगा। वर्त्तमान शिक्षा प्रणाली द्वारा हमने संस्कृत को क्लिष्ट बना छोड़ा है वास्तव में वह ऐसी है नहीं। परन्तु यदि होती भी तो धर्म का पालन तो और भी कठिन है। अतः जो लोग धार्मिक बुद्धि वाले हैं उन्हें चाहिये कि संस्कृत सीखने में चाहे कुछ साधन कठिन भी करने पड़ें तौ भी उन्हें सरल ही मानें।

ज्योति का ७ वां वर्ष।

इस अंक क बाद मई का अंक ज्योति के ७ वें वर्ष का प्रथम अंक होगा। ज्योति के पाठक और पाठिकाओं को यह सुन कर प्रसन्नता होगी कि ज्योति को स्थायी बनाने का प्रयत्न किया जा रहा है और यथा सम्भव उसे और भी अधिक उपयोगी, मनोरंजक और वैदिक धर्म के सिद्धान्तों की प्रचारिका बनाने पर बल लगाया जा रहा है। यद्यपि सांसारिक प्रलोभनों द्वारा यह आर्य्य जनता के चित्त को आकर्षण कर नहीं कर सकेगी क्योंकि इसका उद्देश्य न तो व्यापार की दृष्टि से धनोपार्जन का साधन बनना है जैसा कि आजकल के बहुतेरे पत्र पत्रिकाओं का है और न शृंगार रस सम्बन्धी लेख या चित्रों आदि का प्रयोग करके लोगों को अपनी ओर खींचना है—तथापि जो लोग स्वाभाविक वृत्ति वाले हैं और वर्त्तमान समाज में भोगेच्छा प्रवृत्ति तथा तामसी वृत्तियों के कुपरिणामों से अच्छी तरह परिचित हैं और अपने घर की देवियों तथा भद्र पुरुषों पर अच्छे संस्कार डालना चाहते हैं उनके पवित्र हृदयों को यह अवश्य अपनी ओर खींचेंगी। और हमें पूर्ण आशा है कि ज्योति आज नहीं तो कल प्रत्येक आर्य्या देवी और भद्र पुरुष के घर में अवश्य फैलकर अज्ञानान्धकार को विनष्ट करेगी।

क्षमा याचना।

हमें खेद है कि कई अनिवार्य्य कारणों से ज्योति इस वर्ष कभी २ समय पर प्रकाशित न हो सकी और यह अप्रैल मास की ज्योति भी देर से प्रकाशित है। इसी कारण मई की ज्योति को भी मई १५ के स्थान में मई की समाप्ति तक ग्राहकों की सेवा मे अवश्य पहुंचाने का यत्न किया जायगा। और भविष्य में यथा समय इसे प्रकाशित करने पर और अधिक ध्यान रक्खा जायगा। आशा है कि सदय हृदय ग्राहक लोग इस देरी को क्षमा करेंगे। और हमारे साथ सहयोग करते हुए ग्राहकों की संख्या बढ़ाकर इसे बलिष्ट बनाने मेंपुरुषार्थ करेंगे। जिन लोगों का चन्दा मई में समाप्त होता है उन्हें मईका अंक वी०पी जायगा। अतःग्राहक लोग कृपा करके अवश्य वी० पी० छुड़ा कर अनुग्रहीत करें।

आर्ष पाठावली

का

द्वितीय संस्करण

हाथों हाथ बिक रहा है।

यह पुस्तक स्त्रियों के पढ़ने के लिये बड़ी उपयोगी है। पुत्री पाठशालाओं में धर्म शिक्षा तथा इनाम के लिये इससे अच्छी और सुन्दर पुस्तक न मिलेगी।

शीघ्र आर्डर भेजिये।

प्रचारार्थ मू० घटा दिया है। एक प्रति ॥)

इकट्ठा लेने वालों कमीशन भी मिलेगा

मैनेजर ज्योति

कोठी नं० ४, दरबागंज दिल्ली।

स्त्रियों और कन्याओं के लिये

अपूर्व कार्ड !!

इनाम के लिये बड़ी अच्छी चीज़ !

आर्य्य भाषा में

सलाई के काम सीखने

के लिये

इतने सरल, सस्ते और उत्तम नमूने

हमारे यहां आज तक कहीं भी किसी ने नहीं बनाये।

जल्दी आर्डर भेज कर मंगाओ

सुचारू सूची शिल्प पत्रावली

पत्र नं० १	—सलाई का प्रारम्भिक प्रयोग	मूल्य	।)
पत्र नं० २	– सादी बड़ी बनयाइन	,,	=)॥
पत्र नं० ३	—पुरुषों का कुर्त्ता	,,	=)॥
पत्र नं० ४	– बालकों की ऊनी जर्सी दुरंगी	,,	=)
,, ५	– पुरुषों का लम्बा मोज़ा	,,	=)॥
,, ६	—पुरुषों का सरल दस्ताना	,,	=)॥
,, ७	—फूलदार कालर (दुरंगा)	,,	=)
,,	पुरुषों का बुन्दकी दार मोजा	,,	=)॥

मिलने का पता :—**ज्योति कार्य्यालय;**

कोठी नं० ४, दर्यागंज, दिल्ली।

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

स्त्रियों और बच्चों के लिये सुन्दर वस्त्र

(10471)

हमारे यहां स्त्रियों और बालकों के उपयोगी साड़ियाँ, जाकटें और कुरते बहुत ही खूबसूरत फ़ैसी बनावट के मिलते हैं। एक बार मंगाकर देखिये नापसन्द हों या महंगे जचें तो फौरन वापिस भेजकर कीमत वापिस मंगा लीजिये। की॰साड़ी बेल रेशम कीकिनारी दार ७। ८) ९) १०) १२)जरी किनारी १५)

बाल बढ़ाने वाला तैल—इसके लगाने से बाल बढ़ते हैं, काले रहते हैं, और बालों का उखड़ २ कर गिरना बन्द होता है की०॥)

बच्चों के गले के लाकिट—ये लाकिट दांत सुगमता सेनिकलने के लिये प्रसिद्ध हैं की०॥।)

बालसुधा--गोद के बच्चों को मोटा ताज़ा और तन्दुरुस्त बनाने की मीठी दवा कीमत फी शी० ॥।)

महासुगंधित तैल--माथे को सुगंधित और ठंढा करने वाला तैल कामत १)

बालकों के फैंसी कुरते-इनकी सुन्दरता देखने ही से सम्बन्ध रखती है। हर एक रंग के कीमत ४) ५) ६) ७) ९) १०) यही जरी के १५) २०) २५)

बोडी या जाकेट--जनानी चाहे जिस नाप की कीमत ४) ५) ६) यही जिस में सुनहरी काम हो रहा है ८) १०) १४) २०) २५) ३०)

पूरा हाल जानने के लिये बड़ा सूचीपत्र मंगाकर देखिये मुफ्त मिलेगा।

पता:—

सुख-संचारक कम्पनी

मथुरा.

ब्रासलेट वाच।

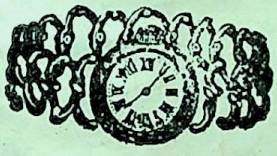

न० ३२ यह बिलकुल ही नई फैशन की चीज़ है इसके बाच में एक छोटी सी जेबघड़ी है। और इधर उधर चूड़ियां ऐसी तर्ज से बनाई गई हैं कि चाह जैसे बड़े हाथ में पहिना लीजिये ठीक नाप की हो जावेगी। हिन्दुस्तानी बड़े घरों की स्त्रियां भी इसे बहुत पसन्द करती हैं क्योंकि घड़ी की घड़ी और गहने का गहना है, पीतल पर सोने की गिलट वाली का दाम ८) जिसके चारों तरफ नग जड़े हैं दाम १०। रु०।

अपने बच्चे को फुटबाल खिलाओ।

तुम्हारा बच्चा बहुत मोटा ताज़ा और खुश मिज़ाज होगा यदि तुम हम से उसके लिये फुटबाल खरीदोगे!

11047

खेल के सब तरह के सामान का स्टाक हमारे यहां है। जल्द आर्डर भेजिये।

बी० डी० गुप्ता, ऐण्ड को०

पंच कुई रोड

दिल्ली।

पं० अनन्तराम के प्रबन्ध से सद्धर्म-प्रचारक यन्त्रालय देहली में छपा।
और बाबू त्रिभुवननाथ प्रिंटर व पब्लिशर ने ज्योति कार्यालय दिल्ली से प्रकाशित किया

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri

Computed
1999-2000

214-417
(350-357)

CCO, Gurukul Kangri Collection, Haridwar, Digitized by eGangotri